हृदन्तरज्ञान-तमो-वितान-निवारणं पण्डित-मण्डलीड्यम्। 卐 त्रिकालदर्शी प्रसरन्मयूखं 'मार्तण्ड पञ्चांग' मिदं चकास्तु॥

श्री शंकरः शं करोतु।

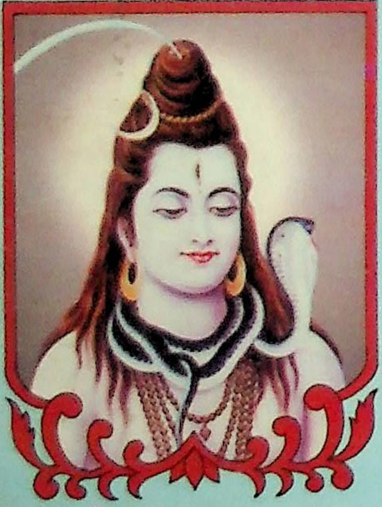

भीमाय व्योमरूपाय शब्दमात्राय ते नमः।
महादेवाय सोमाय अमृताय नमोऽस्तु ते॥

भारतीय एवं पाश्चात्त्य ज्योतिष के विषयों से अलंकृत

८५

शोधनिबन्ध विशेषांक

अखिल भारतोपयोगी

विक्रम संवत् २०७५, शक संवत् १९४०
सन् २०१८-२०१९, जय हिन्द संवत् ७१-७२

पंचांग-प्रवर्तकः

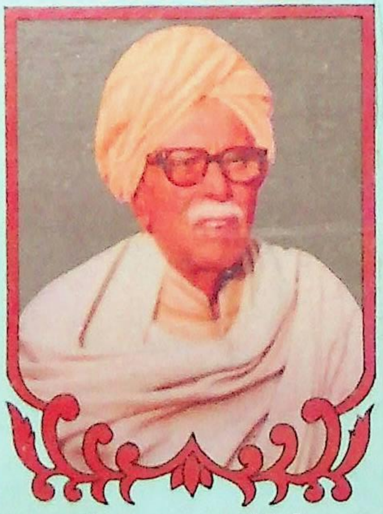

दैवज्ञरत्न राजज्योतिषी
स्व० पं० श्री मुकुन्दवल्लभ मिश्र ज्योतिषाचार्य

श्री मार्त्तण्ड पञ्चांगम्

राजा
सूर्य

मंत्री
शनि

पञ्चांगप्रवर्तक

अनेक ग्रंथों के यशस्वी लेखक स्व० पं० श्री मुकुन्दवल्लभ मिश्र ज्योतिषाचार्य

सम्पादक मण्डल

श्री प्रियव्रत शर्मा, M.A., सिद्धान्तज्योतिषाचार्य (बनारस), साहित्याचार्य, स्वर्ण-रजत पदक प्राप्त

दृक्सिद्धान्तभास्कर स्व० डॉ० शक्तिधर शर्मा M.Sc, Ph.D. (Nuclear Physics), (U.S.A), F.R.A.S. (LONDON), M.A., सिद्धान्तज्योतिषाचार्य (बनारस), तीन स्वर्ण पदक प्राप्त

ज्योतिर्भूषण श्री इन्दुशेखर शर्मा शास्त्री, M.A., ज्योतिषाचार्य,

गौरवशाली ९१ वाँ प्रकाशन वर्ष
स्थापित
संवत् १९८४

प्राप्ति स्थानः **रुचिका पब्लिकेशन्स**
टाईटल पर रुचिका पब्लिकेशन्स का होलोग्राम लगा हुआ देखकर ही पंचांग खरीदें।

मूल्य
110/-

सर्वाधिकार– 'M/S मार्तण्ड ज्योतिष कार्यालय, कुराली' द्वारा सुरक्षित हैं।

इस पञ्चाङ्ग के पाठकों के लिए आवश्यक निर्देशन

(i) इस पञ्चाङ्ग का निर्माण चण्डीगढ (U.T.) के रेखांश पू. 76° 52´, अक्षांश उ. 30° 44´ के आधार पर किया गया है। अत: विशेष निर्देश न किया गया हो तो सूर्योदय, सूर्यास्त से हमारा अभिप्राय यहां सर्वत्र इसी स्थल के सूर्योदय, सूर्यास्त से रहता है।

(ii) यहां सूर्योदय, सूर्यास्तकाल किरणवक्रीभवन संस्काररहित (Free from Refraction) है, जो सूर्यबिम्बकेन्द्र का क्रमश: पूर्वापरक्षितिज से वास्तविक सम्पर्कक्षण है। सूर्य के इस उदयास्तकाल को **ज्योतिषशास्त्रीय उदयास्तकाल** कहा जाता है। लग्नादि–साधनार्थ इष्टकालादि–ज्ञान के लिए इसी को प्रयोग में लाया जाता है। इन्हें दृश्य (लोकव्यवहारोपयोगी) बनाने के लिए इनमें (उदय एवं अस्तकाल में) लगभग 3½ मि. क्रमश: घटाने या जोड़ने होंगे।

(iii) भारतीय ज्योतिषानुसार यहां वार की प्रवृत्ति स्थानीय सूर्योदयकाल से मानी गई है, अत: यह जान लेना चाहिए कि– यहां रवि, चन्द आदि वार स्थानीय सूर्योदय से प्रारम्भ होकर परवर्ती सूर्योदय पर समाप्त होने वाले वार हैं। भारतीय ज्योतिषशास्त्र एवं धर्मशास्त्र में इसी वार का प्रयोग होता है। **ध्यान रहे**– सामान्य लोकव्यवहार में सर्वत्र प्रयोग में आने वाला वार, जो पाश्चात्य ज्योतिषानुसारी है, तो अंग्रेजी (Gregorian) तारीख के साथ रात्रि के 24घं 00मि (क्षेत्रीय स्टैं.टा.) पर ही बदल जाता है।

(iv) पंचांगगत सभी गणना ऋषियों, आचार्यों द्वारा अनुमोदित दृक्तुल्यपद्धति से की गई है।

(v) सर्वत्र निरयणगणना है। जहां कहीं सायनगणना का प्रयोग है, वहां इसका निर्देश कर दिया गया है। चित्रापक्षीय स्पष्ट (धूननसंस्कृत) अयनांशों को प्रामाणिक माना गया है।

(vi) यहां प्रयुक्त भा.स्टैं.टा. (I.S.T.) 82° 30´ पूर्व रेखांशीय स्थल का स्थानीय मध्यमकाल (L.M.T.) है।

(vii) यहां दी गई दैनिक लग्नसारणियां निरयण लग्नों का समाप्तिकाल बतलाती हैं।

(viii) यहां प्राचीन परम्परानुयायी दैवज्ञों के लिए चैत्र शुक्लादि 24 पक्षों वाला तिथ्यादि पंचांग घटी–पलों में तथा सामान्य जनों के व्यवहारार्थ नवीन प्रणाली वाला **'जनवरी, फरवरी'** आदि मासानुसारी तिथ्यादि पंचांग घंटा–मिनटों (भा.स्टैं.टा.) में दिया गया है। घटी–पलात्मक वाले पंचांगभाग में तिथ्यादि समाप्ति, ग्रहराशि–नक्षत्र प्रवेश आदि सभी काल घटी–पलों में दिए गए हैं, जो चण्डीगढ के सूर्योदय से व्यतीत घटी–पलात्मक काल बतलाते हैं। **किञ्च**– घण्टा–मिनटात्मक वाले पंचांगभाग में तिथ्यादि समाप्ति आदि सभी काल भा.स्टैं.टा. में हैं। यहां यह भी स्पष्ट हो जाना चाहिए कि– घण्टा–मिनटात्मक, जो काल रात्रि के 24घं–00मि के बाद पड़ता है, उसे पंचांग में 24 घ. जोड़कर उसी भारतीय ज्योतिषानुसारी वार में लिखा गया है, जो परवर्ती सूर्योदय तक रहता है। इसलिए ऐसे स्थलों पर दिए गए समय के घण्टा–मिनटों में से 24 घं. घटाकर शेष घं. मि. को सामान्य व्यवहार में प्रचलित (पाश्चात्य ज्योतिषानुसारी [illegible] वार का काल समझना चाहिए। **जैसे**– मान लीजिए– पंचांगानुसार एकादशी तिथि 10 मई शुक्रवार को 26 घं. 35 मि. (भा.स्टैं.टा.) पर समाप्त [illegible] अभिप्राय है– यह तिथि प्रचलित व्यवहारानुसारी 11 मई, शनिवार को रात्रि के 2 घं. 35 मि. (भा.स्टैं.टा.) पर समाप्त होगी।

(ix) घटी–पलात्मक पंचांगभाग वाले (24 पक्षों वाले) पृष्ठों पर नीचे की ओर बाईं और दाईं ओर लगभग साप्ताहिक (अष्टमी, अमा, पूर्णिमा के आसन्न दिनों के) प्रात: 5 घ. 30 मि. भा.स्टैं.टा. कालिक सूर्यादि स्पष्टग्रह दिए गए हैं। इनके नीचे इनकी कलादि दैनिक गति, इसके नीचे मा. (= मार्गी), व.(= वक्री), इसके नीचे उ. (= उदित), अ.(= अस्त) तथा सबसे नीचे इन ग्रहों के तात्कालिक नक्षत्रचरण निर्दिष्ट हैं।

(x) घटी–पलात्मक पंचांगभाग में करण केवल सूर्योदयव्यापी ही दिए गए हैं। यहां क्षीण तिथि–नक्षत्र–योगों के समाप्तिकाल ही दिए हैं, [illegible] प्रणाली की तरह इनके पूर्ण भोगकाल नहीं– यह ध्यान रहे।

(xi) जहां जिस तिथि–नक्षत्र व योग के आगे घटी–पलात्मक में 60 घ. 00 प. और घण्टा–मिनटात्मक में ––(डैश) लिखा गया है, उसकी वहां वृद्धि समझनी चाहिए और उसका घटी–पलात्मक तथा घण्टा–मिनटात्मक समाप्तिकाल परवर्ती वार में देखिए।

(xii) यहां दिए गए ग्रहों के भोगांश तथा शर भूकेन्द्रिक (Geo-centric) हैं।

इस पञ्चांग में प्रयुक्त सांकेतिक शब्द

अ.	–अस्त।
अं	–अंश।
उ.	–उदित, उत्तर।
क.	–कला।
कृ.	–कृष्णपक्ष, कृत्तिका(नक्षत्र)।
क्रां.सा.	–क्रान्तिसाम्य (महापात)।
गोधू.	–गोधूलि (लग्न)।
ति.	–तिथि।
द.	–दक्षिण।
दा.	–दानपूजन।
दि.	–दिन।
दि.ल.	–दिन का लग्न।
प्रा.	–प्रारम्भ।
भ.	–भद्रा।
मा.	–मार्गी।
मि.	–मिनट।
रा.	–राशि।
[illegible]	लग्न।
[illegible]	[illegible]
[illegible]	[illegible]
वि.	–विकला।
वै	–वैष्णवों के लिए।
[illegible]	–उन सबके लिए।
[illegible]	[illegible], शुक्रवार, शुक्र (ग्रह)।
सं.	–संक्रान्ति, संवत्।
सां.का.	–साम्पातिक काल।
स्मा.	–स्मार्तों के लिए।

इस पंचांग की तिथ्यादि, ग्रहभोगांश, शर, क्रान्ति, राशि–नक्षत्र–नक्षत्रचरण प्रवेश, उदयास्त, लोप–दर्शन तथा ग्रहण आदि की गणित **"प्रो. प्रियव्रत शर्मा, M.A. अभिजित् प्रकाशन, 59/6, P.O पंचकूला(हरियाणा), Pin-134 109** के निर्देशन में सम्पादित Computer Program द्वारा की जाती है।

M.A. ... प्रकाशन, 59/6, P.O पंचकुला(हरियाणा), Pin 134 109 के निर्देशन में सम्पादित
Computer Program द्वारा की जाती है।

इदन्तरसान-तमो-वितान-निवारणं पण्डित-मण्डलीद्रयम्। 卐 त्रिकालदर्शि प्रसरन्मयूखं 'मार्तण्ड पञ्चांग' मिदं चकास्तु॥

श्री शंकरः शं करोतु।

भीमाय व्योमरूपाय शब्दमात्राय ते नमः।
महादेवाय सोमाय अमृताय नमोऽस्तु ते॥

भारतीय एवं पाश्चात्त्य ज्योतिष के विषयों से अलंकृत

शोधनिबन्ध विशेषांक

विक्रम संवत् २०७५, शक संवत् १९४०
सन् २०१८-२०१९, जय हिन्द संवत् ७१-७२

पंचांग-प्रवर्तकः

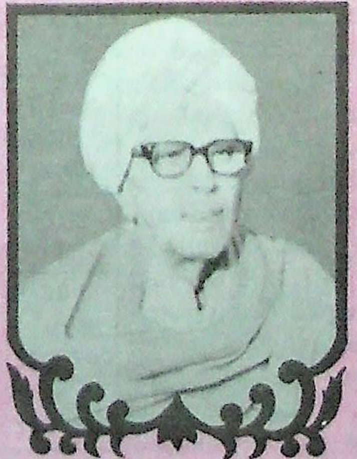

दैवज्ञरत्न राजज्योतिषी
स्व.पं.श्री मुकुन्दवल्लभ मिश्र ज्योतिषाचार्य

पूजा-पाठ व ज्योतिष पुस्तकों के लिए
卐 नाथ पुस्तक भण्डार
194, दरीबा कलां, दिल्ली-6, दूरभाष 23275344

श्री मार्त्तण्ड पञ्चांगम्

राजा सूर्य

मंत्री शनि

पञ्चांगप्रवर्तक
अनेक ग्रंथो के यशस्वी लेखक स्व. पं. श्री मुकुन्दवल्लभ मिश्र ज्योतिषाचार्य

सम्पादक मण्डल
श्री प्रियव्रत शर्मा, M.A., सिद्धान्तज्योतिषाचार्य (बनारस), साहित्याचार्य, स्वर्ण-रजत पदक प्राप्त
दृक्सिद्धान्तभास्कर स्व० डॉ० शक्तिधर शर्मा M.Sc., Ph.D.(Nuclear Physics),(U.S.A.), F.R.A.S.(LONDON), M.A., सिद्धान्तज्योतिषाचार्य(बनारस), तीन स्वर्ण पदक प्राप्त
ज्योतिर्भूषण श्री इन्दुशेखर शर्मा शास्त्री, M.A., ज्योतिषाचार्य

गौरवशाली ९१वीं प्रकाशन वर्ष
स्थापित
संवत् १९८४

प्रकाशक : अग्रवाल बुक डिपो (रजि.)
460, खारी बावली, दिल्ली -6 फोन : 23943254, 23936116

मूल्य
110/-

सर्वाधिकार-मै० मार्तण्ड ज्योतिष कार्यालय, कुराली द्वारा सुरक्षित

विशेष नोट : टाइटल पर होलोग्राम देखकर ही पंचांग खरीदें।

संक्षिप्त विषयसूची (सं. 2075 वि.)

विषय	पृष्ठ
पंचांग में प्रयुक्त सांकेतिक शब्द, आवश्यक निर्देशन	टा. पृ. 2
इनर टाइटल,	1
विषयसूची,	2
प्रमुख-प्रमुख एवं वर्गीकृत व्रतपर्व, सिक्खपर्व, अवकाश, मेले,	3-10
श्रीगणेश चतुर्थी/श्रीकृष्णजन्माष्टमी चन्द्रोदय,	11-12
संदिग्ध व्रतपर्व-व्यवस्था (सं. 2075 वि.),	13-20
गण्डमूल, पंचक,	21
अर्धकुम्भ योग-प्रयागराज	22
ग्रहण-विवरण	24-29
संवत् 2075 वि. की कुल जन्म-वर्ष-प्रश्न-कुण्डलियां	30-40
शनि-साढेसाती,	41
आकाशी कौंसिल (सं. 2075 वि.)	45-58
जलवायु एवं वर्षाविचार	59
व्यापारविमर्श (सं. 2075 वि.)	63-77
यंत्र, मंत्र, तंत्र—साधनाकाल एवं चमत्कार,	78-83
मानवजीवन पर ग्रहों का प्रभाव/ मुक्ति-उपाय	84-89
ग्रहरत्नों का मनुष्य जीवन पर प्रभाव	90-95
नव्वाब ख़ानखाना रचित राजयोग	96
पण्डितों के लिए साधारण जानकारी	99
प्रसूति लग्नविचार, नक्षत्र-राशिज्ञान चक्र आदि,	101-112
12 राशियों का मासिक फल (सं. 2075 वि.)	113-124
वर्षराजादि फल (सं.2075 वि.)	125-134
तिथ्यादि 26 पक्ष (सं. 2075 वि.)	135-160

विषय	पृष्ठ
घण्टा-मिनटात्मक तिथ्यादि (भा.स्टैं.टा.),	161-176
चन्द्रमा का नक्षत्र-चरणप्रवेश (सं 2075 वि.)	177
दैनिक ग्रहस्पष्ट, स्पष्टराहु,	182-197
चण्डीगढ़ में चन्द्रोदयास्त (सं. 2075 वि.)	198
यूरेनस आदि के भोगांश, भौमादि ग्रहों के क्रान्तिशर,	200
ग्रहों के निरयण राशि-नक्षत्र-चरणचार, वक्र-मार्ग/उदय-अस्त,	205-210
अक्षांशदि सारणी,	211-220
दैनिक लग्नसारिणी (चण्डीगढ़ के लिए),	221-226
प्रमुख-प्रमुख नगरों में लग्नों का समाप्तिकाल,	227
प्राचीन पद्धति से लग्न एवं दशमसाधन आदि,	228
सूक्ष्म लग्न एवं दशमलग्न स्पष्ट करने की नई सरल विधि, साम्पातिक काल कोष्ठक आदि,	232-237
विंशोत्तरी दशान्तर्दशा सारणी,	238
सूर्यसिद्धान्तीय एवं सूक्ष्म-शुद्ध वर्षप्रवेश सारणी, ग्रहशील चक्र,	239-241
आवश्यक मुहूर्त्त,	242-244
मेलापक-सारणी देखने की रीति और अष्टकूट-परिहार, मेलापक-सारणी	245-252
लग्न-गण्डान्त, विवाहमुहूर्त्त में दस दोष, दिक्शूलादि विचार, यात्रा मुहूर्त्तादि,	253-266
शुद्ध विवाहमुहूर्त्त (सं. 2075 वि.)	267-272
सं. 2076 में सम्भावित शुद्ध विवाहमुहूर्त्त	273
त्रिबलशुद्धि कोष्ठक (सं. 2075 वि.)	274
अशुद्ध विवाहमुहूर्त्त (सं. 2075 वि.)	277

विषय	पृष्ठ
मुण्डन, उपनयन, देवप्रतिष्ठा आदि मुहूर्त्त,	279
श्रीगणेश, शिव, गौरी आदि देवताओं के प्रतिष्ठा-मुहूर्त्त,	282
सर्वार्थसिद्धि आदि योग,	283

इसवर्ष की नई विशेष सामग्री

विषय	पृष्ठ
मानवजीवन पर ग्रहों का प्रभाव/ मुक्ति-उपाय	84-89
ग्रहरत्नों का मनुष्य जीवन पर प्रभाव	90-95
नव्वाब ख़ानखाना रचित राजयोग	96
पण्डितों के लिए साधारण जानकारी	99

शोधनिबन्ध विशेषांक *

विषय	पृष्ठ
फलित ज्योतिष—मेरी दृष्टि में	289-299
हमारे व्रत-पर्वों की तारीखों में मतभेद का कारण	300-303
विश्व के विभिन्न देशों में हिन्दू व्रतोत्सवों की तारीखों में अन्तर	304

* इस विशेषांक की विषयसूची के लिए पृष्ठ 287 भी देखें।

'अभिजित् प्रकाशन',
Kothi No. 59, Sector 6,
Panchkula (HARYANA)
की अब तक प्रकाशित पुस्तकों के विज्ञापनपृष्ठ बारे निर्देश पृष्ठ 287 पर देखें।

अनन्त श्रीविभूषित श्रीकांचीकामकोटि-पीठाधिपति, जगद्गुरु श्रीशंकराचार्य जी का शुभाशीर्वाद

(मुद्रा)

श्रीमत्परमहंस-परिव्रजाकाचार्यवर्य्य - श्रीमच्छंकर-भगवत्पाद-प्रतिष्ठित-श्रीकांचीकामकोटिपीठाधिप-जगद्गुरु-श्रीमच्चन्द्रशेखरेन्द्र-सरस्वती-श्रीपादै: क्रियते नारायणस्मृति:।

श्रीसदाशिव आप्टे-महोदयस्य शिष्यै: श्रीमुकुन्दवल्लभशर्मभि: प्रवर्तितम् अधुना श्रीप्रियव्रतशर्म-श्रीशक्तिधरशर्म-श्रीमदिन्दुशेखर-शास्त्रिभि: तन्त्रद्वारा शुद्ध-स्फुट-गणितरीत्या परिशोध्य स्वीकृतया दृग्गणितपद्धत्या सम्पाद्यते। एतत्पंचांगं धर्मशास्त्रसम्मतैकमात्र-दृग्गणितपद्धत्यनुसारि व्रत-पर्वादि-धार्मिक-कृत्यानुष्ठाने धार्मिकै: प्रयोज्यम्-इति सम्मन्यामहे। एतस्य सम्पादक: डॉ. शक्तिधरशर्मा ज्योतिष-गणितादि-विषयेषु महत्प्रागल्भ्यं भजते, इति अस्माभि: स: सप्रसादं "दृक्सिद्धान्तभास्कर: ' इति विरुदेन पूर्वमेव सभाजित:। अधुना श्रीमार्त्तण्ड-पंचांगमेतत् स्वर्णजयन्ती-महोत्सवमनुभवत्, अशेषास्तिक-लोकोपकारकं सत् श्रीचन्द्रमौलीश-कृपया प्रचुरं प्रचारं प्राप्नुयादित्याशास्महे।

काञ्चीक्षेत्रम् नारायणस्मृति:
'अनल' चैत्रामावस्या
(सन् १९७६ ई.)

आगामी वर्ष (सं. 2076 वि.) में विशेष—अगले वर्ष (सं. 2076 वि.) के 'श्री मार्त्तण्ड पंचांग में भी अनेक ज्ञानवर्धक विषय एवं महत्त्वपूर्ण विषयसामग्री देने का हमारा पूरा प्रयास रहेगा।— संपादक

अगले वर्ष (सं. 2076 वि.) के श्री मार्त्तण्ड पंचांग में
भी अनेक ज्ञानवर्धक विषय एवं महत्त्वपूर्ण विषयसामग्री देने का हमारा पूरा प्रयास रहेगा।— संपादक

प्रमुख-प्रमुख व्रत-पर्व (1 जनवरी, सन् 2018 ई. से 5 अप्रैल, सन् 2019 ई. तक)

(प्रो. प्रियव्रत शर्मा द्वारा रचित पुस्तक "व्रत-पर्व विवेक" पर आधारित)

जनवरी (सन् 2018 ई.)

इंग्लिश नववर्ष 2018 ई. प्रा.	1 जन.	चं.
पौषी पूर्णिमा	2 जन.	मं.
माघस्नान प्रारम्भ	2 जन.	मं.
श्रीगणेश (संकष्ट) चतुर्थी	5 जन.	शु.
लोहड़ी (पंजाब, हरियाणा, जम्मू-कश्मीर)	13 जन.	श.
मकर संक्रान्ति	14 जन.	र.
मौनी अमावस	16 जन.	मं.
गुप्त नवरात्र प्रारम्भ	18 जन.	गु.
गौरी तृतीया (गौतरी)	20 जन.	श.
वरद-तिल-कुन्द चतुर्थी	20 जन.	श.
श्रीपंचमी, वसन्त पंचमी	22 जन.	चं.
लक्ष्मी एवं सरस्वती पूजन	22 जन.	चं.
रथसप्तमी/आरोग्य सप्तमी (पूर्वारुणोदय वाली)	24 जन.	बु.
भीष्टमाष्टमी	25 जन.	गु.
गुप्त नवरात्र समाप्त	26 जन.	शु.
भीष्म द्वादशी	28 जन.	र.
माघी पूर्णिमा	31 जन.	बु.
माघस्नान समाप्त	31 जन.	बु.
खग्रास चन्द्रग्रहण	31 जन.	बु.

फरवरी (सन् 2018 ई.)

श्रीमहाशिवरात्रि व्रत	13 फर.	मं.
होलाष्टक प्रारम्भ	23 फर.	शु.
गोविन्द द्वादशी	27 फर.	मं.

मार्च (सन् 2018 ई.)

होलिकादहन	1 मार्च	गु.
होलाष्टक समाप्त	1 मार्च	गु.
वसन्तोत्सव	2 मार्च	शु.
होलामेला श्री आनन्दपुर सा. (पं.)	2 मार्च	शु.
वारुणीपर्व	15 मार्च	गु.
चान्द्र संवत् 2074 वि. पूर्ण	17 मार्च	श.
चान्द्र संवत् 2075 वि.प्रा.	18 मार्च	र.
वासन्त नवरात्र प्रारम्भ	18 मार्च	र.
वर्षफलश्रवण	18 मार्च	र.
तैलाभ्यंग/ध्वजारोहण	18 मार्च	र.
महाविषुव दिन	20 मार्च	मं.
गौरी तृतीया (गणगौर)	20 मार्च	मं.
आन्दोलन तृतीया	20 मार्च	मं.
श्री (लक्ष्मी) पंचमी	21 मार्च	बु.
हयव्रत	21 मार्च	बु.
नागपंचमी	22 मार्च	गु.
स्कन्दषष्ठी	22 मार्च	गु.
श्रीदुर्गाष्टमी, अशोकाष्टमी	24 मार्च	श.
श्रीरामनवमी	25 मार्च	र.
वासन्त नवरात्र समाप्त	25 मार्च	र.
नवरात्र-व्रतपारणा	26 मार्च	चं.
दोलोत्सव	27 मार्च	मं.
विष्णुदमनोत्सव	28 मार्च	बु.
अनंग त्रयोदशी	29 मार्च	गु.
श्रीमहावीर जयन्ती	29 मार्च	गु.
शिवदमनोत्सव	30 मार्च	शु.
वैशाख स्नान प्रारम्भ	31 मार्च	श.

अप्रैल (सन् 2018 ई.)

वैशाखी (पंजाब)	14 अप्रै.	श.
सोमवती अमा	16 अप्रै.	चं.
श्रीपरशुराम जयन्ती	18 अप्रै.	बु.
अक्षय तृतीया	18 अप्रै.	बु.
श्रीगंगा जन्म	22 अप्रै.	र.
श्रीजानकी जयन्ती	24 अप्रै.	मं.
श्रीनृसिंह जयन्ती	28 अप्रै.	श.
श्री कूर्म जयन्ती	29 अप्रै.	र.
वैशाखी पूर्णिमा	30 अप्रै.	चं.
श्रीबुद्ध जयन्ती, श्रीबुद्ध पूर्णिमा	30 अप्रै.	चं.
वैशाख स्नान समाप्त	30 अप्रै.	चं.

मई (सन् 2018 ई.)

भद्रकाली एकादशी (पं.)	11 मई	शु.
वटसावित्री व्रत (अमापक्ष)	15 मई	मं.
भावुका अमावस	15 मई	मं.
श्रीगंगा दशहरा	24 मई	गु.

जून (सन् 2018 ई.)

रम्भा तृतीया	16 जून	श.
अरण्यषष्ठी	18 जून	चं.
विन्ध्यवासिनी पूजा	18 जून	चं.
निर्जला एकादशी व्रत	23 जून	श.
वटसावित्री व्रत (पूर्णिमापक्ष)	27 जून	बु.

जुलाई (सन् 2018 ई.)

गुप्त नवरात्र प्रारम्भ	13 जुला.	शु.
रथयात्रा (पुरी)	14 जुला.	श.
कुमार षष्ठी	17 जुला.	मं.
विवस्वत् सप्तमी	18 जुला.	बु.
गुप्त नवरात्र समाप्त	21 जुला.	श.
श्रीविष्णुशयनोत्सव	23 जुला.	चं.
कोकिला व्रत	27 जुला.	शु.
शिवशयनोत्सव	27 जुला.	शु.
गुरु पूर्णिमा (व्यास पूजा)	27 जुला.	शु.
चातुर्मास्य व्रत-नियमादि प्रा.	27 जुला.	शु.
खग्रास चन्द्रग्रहण	27 जुला.	शु.

अगस्त (सन् 2018 ई.)

श्रावण शिवरात्रि	9 अग.	गु.
हरियाली अमावस	11 अग.	श.
मधुस्रवा तृतीया, संधारा तीज	13 अग.	चं.
नागपंचमी	15 अग.	बु.
श्रीदुर्गाष्टमी/दूर्वाष्टमी	18 अग.	श.
ऋक्- उपाकर्म	25 अग.	श.
रक्षाबन्धन (राखी)	26 अग.	र.
श्रावणी पूर्णिमा	26 अग.	र.
शुक्ल-कृष्ण यजु उपाकर्म	26 अग.	र.
श्री अमरनाथ यात्रा (ज.क.)	26 अग.	र.
कज्जली तृतीया	29 अग.	बु.
श्रीगणेश(संकष्ट) चतुर्थी	30 अग.	गु.
बहुला चतुर्थी	30 अग.	गु.

सितम्बर (सन् 2018 ई.)

श्रीकृष्ण जन्माष्टमी व्रत (स्मार्त)	2 सितं.	र.
श्रीकृष्ण जन्माष्टमी व्रत (वैष्णव)	3 सितं.	चं.
गोकुलाष्टमी (नन्दोत्सव)	3 सितं.	चं.
श्रीगुग्गा नवमी	4 सितं.	मं.
कुशोत्पाटिनी अमावस	9 सितं.	र.
पिठोरी अमावस	9 सितं.	र.
साम उपाकर्म	11 सितं.	मं.
गौरी तृतीया	12 सितं.	बु.
हरितालिका तृतीया	12 सितं.	बु.
कलंक चतुर्थी	12 सितं.	बु.
सिद्धिविनायक व्रत	13 सितं.	गु.
ऋषि पंचमी	14 सितं.	शु.
सूर्यषष्ठी व्रत	15 सितं.	श.
मुक्ताभरण सप्तमी	16 सितं.	र.
श्रीराधाष्टमी	17 सितं.	चं.
श्रीमहालक्ष्मी व्रत प्रारम्भ	17 सितं.	चं.
श्रीचन्द नवमी	18 सितं.	मं.
श्रीवामन जयन्ती	21 सितं.	शु.
श्रीअनन्त चतुर्दशी	23 सितं.	र.
प्रोष्ठपदी श्राद्ध	24 सितं.	चं.
पूर्णिमा श्राद्ध	24 सितं.	चं.
महालय प्रारम्भ	24 सितं.	चं.
पितृपक्ष प्रारम्भ	25 सितं.	मं.
चन्द्रषष्ठी व्रत	30 सितं.	र.

प्रमुख-प्रमुख व्रत-पर्व (1 जनवरी, सन् 2018 ई. से 5 अप्रैल, सन् 2019 ई. तक)

(प्रो. प्रियव्रत शर्मा द्वारा रचित पुस्तक "व्रत-पर्व विवेक" पर आधारित)

अक्टूबर (सन् 2018 ई.)

श्रीमहालक्ष्मी व्रत समाप्त	2 अक्टू.	मं.
मेला फल्गु	8 अक्टू.	चं.
गजच्छाया योग	8 अक्टू.	चं.
गजच्छाया योग	9 अक्टू.	मं.
महालय/श्राद्ध समाप्त	9 अक्टू.	मं.
शारद नवरात्र प्रारम्भ	10 अक्टू.	बु.
उपाङ्गललिता व्रत	13 अक्टू.	श.
सरस्वती आवाहन	14 अक्टू.	र.
सरस्वती पूजन	15 अक्टू.	चं.
श्रीदुर्गाष्टमी, महाष्टमी	17 अक्टू.	बु.
सरस्वती के लिए बलिदान	17 अक्टू.	बु.
महानवमी (पूजा, उपवास के लिए)	17 अक्टू.	बु.
महानवमी (बलिदान के लिए)	18 अक्टू.	गु.
नवरात्र समाप्त	18 अक्टू.	गु.
सरस्वती विसर्जन	18 अक्टू.	गु.
विजयादशमी (दशहरा)	18 अक्टू.	गु.
नवरात्रपारणा	19 अक्टू.	शु.
भरतमिलाप	19 अक्टू.	शु.
कोजागर व्रत	24 अक्टू.	बु.
शरत् पूर्णिमा	24 अक्टू.	बु.
महर्षि वाल्मीकि जयन्ती	24 अक्टू.	बु.
कार्तिकस्नान प्रारम्भ	24 अक्टू.	बु.
करक चतुर्थी (करवा चौथ)	27 अक्टू.	श.
अहोई अष्टमी (पंजाब)	31 अक्टू.	बु.

नवम्बर (सन् 2018 ई.)

गोवत्स द्वादशी	4 नवं.	र.
धन त्रयोदशी	5 नवं.	चं.
यम-प्रीत्यर्थ दीपदान	5 नवं.	चं.
श्रीहनुमान् जयन्ती (उ.भा.)	5 नवं.	चं.
नरक चतुर्दशी (पूर्वारुणोदय वाली)	6 नवं.	मं.
दीपावली, श्रीमहालक्ष्मीपूजा	7 नवं.	बु.
गोवर्धन पूजा, बलिपूजा	8 नवं.	गु.
अन्नकूट, गोक्रीड़ा	8 नवं.	गु.
यमद्वितीया, भाईदूज	9 नवं.	शु.
श्रीविश्वकर्मा पूजा	9 नवं.	शु.
सूर्यषष्ठी (बिहार)	13 नवं.	मं.
गोपाष्टमी	16 नवं.	शु.
अक्षय नवमी	16 नवं.	शु.
कूष्माण्ड नवमी	16 नवं.	शु.
भीष्म पंचक प्रारम्भ	19 नवं.	चं.
हरिप्रबोधोत्सव	19 नवं.	चं.
तुलसी विवाह	19 नवं.	चं.
चातुर्मास्य व्रत-नियमादि समाप्त	20 नवं.	मं.
वैकुण्ठ चतुर्दशी	21 नवं.	बु.
त्रिपुरोत्सव	22 नवं.	गु.
श्रीगुरुनानक जयन्ती	23 नवं.	शु.
कार्तिकस्नान समाप्त	23 नवं.	शु.
कार्तिक पूर्णिमा	23 नवं.	शु.
भीष्म पंचक समाप्त	23 नवं.	शु.
श्रीकालाष्टमी (भैरवाष्टमी)	29 नवं.	गु.

दिसम्बर (सन् 2018 ई.)

स्कन्द, गुहषष्ठी	13 दिसं.	गु.
चम्पा षष्ठी	13 दिसं.	गु.
मित्र सप्तमी	14 दिसं.	शु.
श्रीगीता जयन्ती	19 दिसं.	बु.
श्रीदत्त जयन्ती	22 दिसं.	श.

जनवरी (सन् 2019 ई.)

इंग्लिश नववर्ष 2019 ई. प्रा.	1 जन.	मं.
लोहड़ी (पंजाब, हरियाणा, जम्मू-कश्मीर)	13 जन.	र.
मकर संक्रान्ति	14 जन.	चं.
पौषी पूर्णिमा	21 जन.	चं.
माघस्नान प्रारम्भ	21 जन.	चं.
श्रीगणेश (संकष्ट) चतुर्थी	24 जन.	गु.

फरवरी (सन् 2019 ई.)

अर्द्धकुम्भ प्रयागराज	4 फर.	चं.
मौनी अमावस/सोमवती अमा	4 फर.	चं.
महोदय योग	4 फर.	चं.
गुप्त नवरात्र प्रारम्भ	5 फर.	मं.
गौरी तृतीया (गोंतरी)	8 फर.	शु.
वरद-तिल-कुन्द चतुर्थी	8 फर.	शु.
श्रीपंचमी, वसन्त पंचमी	9 फर.	श.
लक्ष्मी-सरस्वती पूजन	9 फर.	श.
रथसप्तमी (पूर्वारुणोदय वाली)	12 फर.	मं.
आरोग्य सप्तमी	12 फर.	मं.
भीष्माष्टमी	13 फर.	बु.
गुप्त नवरात्र समाप्त	14 फर.	गु.
भीष्म द्वादशी	16 फर.	श.
माघी पूर्णिमा	19 फर.	मं.
माघस्नान समाप्त	19 फर.	मं.

मार्च (सन् 2019 ई.)

श्रीमहाशिवरात्रि व्रत (शिवयोग)	4 मार्च	चं.
होलाष्टक प्रारम्भ	14 मार्च	गु.
गोविन्द द्वादशी	18 मार्च	चं.
होलिकादहन	20 मार्च	बु.
होलाष्टक समाप्त	21 मार्च	गु.
वसन्तोत्सव	21 मार्च	गु.
होलामेला श्री आनन्दपुर सा. (पं.)	21 मार्च	गु.

अप्रैल (सन् 2019 ई.)

वारुणी पर्व	2 अप्रैल	मं.
पिहोवा तीर्थ (हरि.)	3 अप्रैल	बु.
चान्द्र संवत् 2075 वि.पूर्ण	5 अप्रैल	शु.

प्रमुख-प्रमुख व्रत-पर्व

आगामी वर्ष (वि.सं. 2076) के लिए

नाम मेला/पर्व	तारीख
(सन् 2019 ई.)	
नवरात्र प्रारम्भ	6 अप्रैल
श्रीदुर्गाष्टमी	13 अप्रैल
श्रीरामनवमी	13 अप्रैल
मेष संक्रान्ति (वैशाखी)	14 अप्रैल
श्रीमहावीर जयन्ती (जैन)	17 अप्रैल
श्रीपरशुराम जयन्ती	7 मई
श्रीबुद्ध जयन्ती	18 मई
श्रीगंगा दशहरा	12 जून
गुरु पूर्णिमा	16 जुलाई
रक्षाबन्धन	15 अगस्त
संकष्ट चतुर्थी	19 अगस्त
श्रीकृष्ण जन्माष्टमी (स्मा.)	23 अगस्त
श्रीकृष्ण जन्माष्टमी (वै.)	24 अगस्त
श्राद्ध प्रारम्भ	13 सितं.
शारद नवरात्र प्रारम्भ	29 सितं.
श्रीदुर्गाष्टमी	6 अक्टू.
दशहरा (विजयादशमी)	8 अक्टू.
शरत् पूर्णिमा	13 अक्टू.
श्रीवाल्मीकि जयन्ती	13 अक्टू.
करक चतुर्थी (करवा चौथ)	17 अक्टू.
दीपावली	27 अक्टू.
भाईदूज	29 अक्टू.
श्रीगुरु नानक जयन्ती	12 नवं.
श्रीभैरवाष्टमी	19 नवं.
(सन् 2020 ई.)	
मकर संक्रान्ति	14 जन.
वसन्त पंचमी	29 जन.
श्रीगुरु रविदास जयन्ती	9 फर.
श्रीमहाशिवरात्रि व्रत	21 फर.

लाहड़ी (पंजाब, हरियाणा			पिहोवा तीर्थ (हरि.)	3 अप्रैल	बु.	श्रीगुरु रविदास जयन्ती	9 फर.
जम्मू-कश्मीर)	13 जन.	र.	चान्द्र संवत् 2075 वि.पूर्ण	5 अप्रैल	शु.	श्रीमहाशिवरात्रि व्रत	21 फर.

वर्गीकृत व्रत-पर्व (1 जनवरी, सन् 2018 ई. से 5 अप्रैल, सन् 2019 ई. तक)

एकादशी व्रत

(सन् 2018 ई.)

माघ कृष्ण	12 जन.
माघ शुक्ल	27 जन.
फाल्गुन कृष्ण	11 फर.
फाल्गुन शुक्ल	26 फर.
चैत्र कृष्ण	13 मार्च
चैत्र शुक्ल	27 मार्च
वैशाख कृष्ण	12 अप्रैल
वैशाख शुक्ल	26 अप्रैल
प्र. ज्येष्ठ कृष्ण	11 मई
प्र. (अ.) ज्येष्ठ शुक्ल	25 मई
द्वि. (अ.) ज्येष्ठ कृष्ण	10 जून
द्वि. (शु.) ज्येष्ठ शुक्ल	23 जून
आषाढ़ कृष्ण	9 जुलाई
आषाढ़ शुक्ल	23 जुलाई
श्रावण कृष्ण (स्मा.)	7 अगस्त
श्रावण शुक्ल	22 अगस्त
भाद्रपद कृष्ण	6 सितं.
भाद्रपद शुक्ल	20 सितं.
आश्विन कृष्ण	5 अक्टू.
आश्विन शुक्ल	20 अक्टू.
कार्तिक कृष्ण (स्मा.)	3 नवं.
कार्तिक शुक्ल	19 नवं.
मार्गशीर्ष कृष्ण	3 दिसं.
मार्गशीर्ष शुक्ल (स्मा.)	18 दिसं.
(सन् 2019 ई.)	
पौष कृष्ण	1 जन.
पौष शुक्ल	17 जन.
माघ कृष्ण	31 जन.
माघ शुक्ल	16 फर.
फाल्गुन कृष्ण	2 मार्च
फाल्गुन शुक्ल	17 मार्च
चैत्र कृष्ण (स्मा.)	31 मार्च

(स्मा. = स्मार्तों का व्रत)

वैष्णवों का व्रत स्मार्तों के व्रत के दिन से दूसरे दिन होता है। जिसके आगे "स्मा." नहीं लिखा है, वह व्रततिथि स्मार्त और वैष्णव दोनों के लिए है।

पक्षों का प्रारम्भ

(सन् 2018 ई.)

माघ कृष्ण	2 जन.
माघ शुक्ल	18 जन.
फाल्गुन कृष्ण	1 फर.
फाल्गुन शुक्ल	16 फर.
चैत्र कृष्ण	2 मार्च
चैत्र शुक्ल	18 मार्च
वैशाख कृष्ण	1 अप्रैल
वैशाख शुक्ल	16 अप्रैल
प्र. ज्येष्ठ कृष्ण	1 मई
प्र. (अ.) ज्येष्ठ शुक्ल	16 मई
द्वि. (अ.) ज्येष्ठ कृष्ण	30 मई
द्वि. (शु.) ज्येष्ठ शुक्ल	14 जून
आषाढ़ कृष्ण	29 जून
आषाढ़ शुक्ल	13 जुलाई
श्रावण कृष्ण	28 जुलाई
श्रावण शुक्ल	12 अगस्त
भाद्रपद कृष्ण	27 अगस्त
भाद्रपद शुक्ल	10 सितं.
आश्विन कृष्ण	26 सितं.
आश्विन शुक्ल	10 अक्टू.
कार्तिक कृष्ण	25 अक्टू.
कार्तिक शुक्ल	8 नवं.
मार्गशीर्ष कृष्ण	24 नवं.
मार्गशीर्ष शुक्ल	8 दिसं.
पौष कृष्ण	23 दिसं.
(सन् 2019 ई.)	
पौष शुक्ल	6 जन.
माघ कृष्ण	21 जन.
माघ शुक्ल	5 फर.
फाल्गुन कृष्ण	20 फर.
फाल्गुन शुक्ल	7 मार्च
चैत्र कृष्ण	21 मार्च

उत्तरी भारत में कृष्णादि एवं दक्षिणी भारत में शुक्लादि मासों का प्रचार है। ऊपर दिये गये पक्ष कृष्णादि हैं।

श्री सत्यनारायण व्रत

(सन् 2018 ई.)

पौष	1 जन.
माघ	31 जन.
फाल्गुन	1 मार्च
चैत्र	30 मार्च
वैशाख	29 अप्रैल
प्र. (अ.) ज्येष्ठ	29 मई
द्वि. (शु.) ज्येष्ठ	27 जून
आषाढ़	27 जुलाई
श्रावण	25 अग.
भाद्रपद	24 सितं.
आश्विन	24 अक्टू.
कार्तिक	22 नवं.
मार्गशीर्ष	22 दिसं.
(सन् 2019 ई.)	
पौष	20 जन.
माघ	19 फर.
फाल्गुन	20 मार्च

दशावतार जयन्तियां (सन् 2018 ई.)

श्रीमत्स्य जयन्ती	20 मार्च
श्रीरामनवमी	25 मार्च
श्रीपरशुराम जयन्ती	18 अप्रैल
श्रीनृसिंह जयन्ती	28 अप्रैल
श्रीकूर्म जयन्ती	29 अप्रैल
श्रीबुद्ध जयन्ती	30 अप्रैल
श्रीकल्कि जयन्ती	16 अग.
⊙ श्रीकृष्ण जन्माष्टमी	2 सितं.
श्रीवराह जयन्ती	12 सितं.
श्रीवामन जयन्ती	21 सितं.

⊙ अर्धरात्रिव्यापिनी अष्टमी के दिन ही श्रीकृष्ण जन्माष्टमी व्रत करना चाहिए। श्रीमद्भागवत एवं स्कन्द-विष्णु पुराण आदि इसी का समर्थन करते हैं।

श्री गणेशचतुर्थी व्रत

(सन् 2018 ई.)

माघ (संकष्ट चतुर्थी)	5 जन.
फाल्गुन	3 फर.
चैत्र	5 मार्च
वैशाख	3 अप्रैल
प्र. ज्येष्ठ	3 मई
द्वि. (अ.) ज्येष्ठ	2 जून
आषाढ़	1 जुलाई
श्रावण	31 जुलाई
भाद्रपद (संकष्ट चतुर्थी)	30 अग.
आश्विन	28 सितं.
कार्तिक	27 अक्टू.
मार्गशीर्ष	26 नवं.
पौष	25 दिसं.
(सन् 2019 ई.)	
माघ (संकष्ट चतुर्थी)	24 जन.
फाल्गुन	22 फर.
चैत्र	24 मार्च

श्रीसिद्धिविनायक चतुर्थी व्रत

(सन् 2018 ई.)

माघ	21 जन.
फाल्गुन	19 फर.
चैत्र	21 मार्च
वैशाख	19 अप्रैल
प्र. ज्येष्ठ	18 मई
द्वि. ज्येष्ठ	17 जून
आषाढ़	16 जुलाई
श्रावण	14 अग.
भाद्रपद	13 सितं.
आश्विन	12 अक्टू.
कार्तिक	11 नवं.
मार्गशीर्ष	11 दिसं.
(सन् 2019 ई.)	
पौष	10 जन.
माघ	8 फर.
फाल्गुन	10 मार्च

प्रदोष व्रत

(सन् 2018 ई.)

माघ कृष्ण	14 जन.
माघ शुक्ल (सोम)	29 जन.
फाल्गुन कृष्ण (भौम)	13 फर.
फाल्गुन शुक्ल (भौम)	27 फर.
चैत्र कृष्ण	14 मार्च
चैत्र शुक्ल	29 मार्च
वैशाख कृष्ण	13 अप्रैल
वैशाख शुक्ल	27 अप्रैल
प्र. ज्येष्ठ कृष्ण	13 मई
प्र. (अ.) ज्येष्ठ शुक्ल (शनि)	26 मई
द्वि.(अ.) ज्येष्ठ कृष्ण (सोम)	11 जून
द्वि. (शु.) ज्येष्ठ शुक्ल (सोम)	25 जून
आषाढ़ कृष्ण (भौम)	10 जुलाई
आषाढ़ शुक्ल	25 जुलाई
श्रावण कृष्ण	9 अग.
श्रावण शुक्ल	23 अग.
भाद्रपद कृष्ण	7 सितं.
भाद्रपद शुक्ल (शनि)	22 सितं.
आश्विन कृष्ण (शनि)	6 अक्टू.
आश्विन शुक्ल (सोम)	22 अक्टू.
कार्तिक कृष्ण (सोम)	5 नवं.
कार्तिक शुक्ल (भौम)	20 नवं.
मार्गशीर्ष कृष्ण (भौम)	4 दिसं.
मार्गशीर्ष शुक्ल	20 दिसं.
(सन् 2019 ई.)	
पौष कृष्ण	3 जन.
पौष शुक्ल	18 जन.
माघ कृष्ण (शनि)	2 फर.
माघ शुक्ल	17 फर.
फाल्गुन कृष्ण	3 मार्च
फाल्गुन शुक्ल (सोम)	18 मार्च
चैत्र कृष्ण (भौम)	2 अप्रैल

वर्गीकृत व्रत-पर्व (1 ज़नवरी, सन् 2018 ई. से 5 अप्रैल, सन् 2019 ई. तक)

मासिक शिवरात्रिव्रत

(सन् 2018 ई.)

माघ	15 जन.
फाल्गुन(श्रीमहाशिवरात्रि)	13 फर.
चैत्र	15 मार्च
वैशाख	14 अप्रैल
प्र. ज्येष्ठ	13 मई
द्वि. ज्येष्ठ	12 जून
आषाढ़	11 जुलाई
श्रावण	9 अग.
भाद्रपद	8 सितं.
आश्विन	7 अक्टू.
कार्तिक	6 नवं.
मार्गशीर्ष	5 दिसं.
(सन् 2019 ई.)	
पौष	4 जन.
माघ	2 फर.
फाल्गुन(श्रीमहाशिवरात्रि)	4 मार्च
चैत्र	3 अप्रैल

पूर्णिमा व्रत (सन् 2018 ई.)

(स्नान-दानार्थ, उदयव्यापिनी पूर्णिमा में)

पौष	2 जन.
माघ	31 जन.
फाल्गुन	1 मार्च
चैत्र	31 मार्च
वैशाख	30 अप्रैल
प्र. ज्येष्ठ	29 मई
द्वि. ज्येष्ठ	28 जून
आषाढ़	27 जुलाई
श्रावण	26 अग.
भाद्रपद	25 सितं.
आश्विन	24 अक्टू.
कार्तिक	23 नवं.
मार्गशीर्ष	22 दिसं.
(सन् 2019 ई.)	
पौष	21 जन.
माघ	19 फर.
फाल्गुन	21 मार्च

संक्रान्तियां

(सन् 2018 ई.)

माघ	14 जन.
फाल्गुन	12 फर.
चैत्र	14 मार्च
वैशाख	14 अप्रैल
ज्येष्ठ	14 मई
आषाढ़	15 जून
श्रावण	16 जुलाई
भाद्रपद	17 अग.
आश्विन	17 सितं.
कार्तिक	17 अक्टू.
मार्गशीर्ष	16 नवं.
पौष	16 दिसं.
(सन् 2019 ई.)	
माघ	14 जन.
फाल्गुन	13 फर.
चैत्र	14 मार्च

अमावस्याएं (स्नान-दानार्थ)

(सन् 2018 ई.)

माघ (भौमवती)	16 जन.
फाल्गुन	15 फर.
चैत्र (शनैश्चरी)	17 मार्च
वैशाख (सोमवती)	16 अप्रैल
प्र. ज्येष्ठ (भौमवती)	15 मई
द्वि. (अ.) ज्येष्ठ	13 जून
आषाढ़	13 जुलाई
श्रावण (शनैश्चरी)	11 अग.
भाद्रपद	9 सितं.
आश्विन (भौमवती)	9 अक्टू.
कार्तिक	7 नवं.
मार्गशीर्ष	7 दिसं.
(सन् 2019 ई.)	
पौष (शनैश्चरी)	5 जन.
माघ (सोमवती)	4 फर.
फाल्गुन	6 मार्च
चैत्र	5 अप्रैल

मासिक दुर्गाष्टमी व्रत

(सन् 2018 ई.)

माघ	25 जन.
फाल्गुन	23 फर.
चैत्र	24 मार्च
वैशाख	23 अप्रैल
प्र. ज्येष्ठ	22 मई
द्वि. ज्येष्ठ	20 जून
आषाढ़	20 जुलाई
श्रावण	18 अग.
भाद्रपद	17 सितं.
आश्विन	17 अक्टू.
कार्तिक	16 नवं.
मार्गशीर्ष	15 दिसं.
(सन् 2019 ई.)	
पौष	14 जन.
माघ	13 फर.
फाल्गुन	14 मार्च

मासिक कालाष्टमी व्रत

(सन् 2018 ई.)

माघ	8 जन.
फाल्गुन	7 फर.
चैत्र	9 मार्च
वैशाख	8 अप्रैल
प्र. ज्येष्ठ	8 मई
द्वि. ज्येष्ठ	6 जून
आषाढ़	6 जुलाई
श्रावण	4 अग.
भाद्रपद	3 सितं.
आश्विन	2 अक्टू.
कार्तिक	31 अक्टू.
मार्गशीर्ष (श्रीभैरवाष्टमी)	29 नवं.
पौष	29 दिसं.
(सन् 2019 ई.)	
माघ	27 जन.
फाल्गुन	26 फर.
चैत्र	28 मार्च

अरुणाय त्रयोदशी

श्रीसंगमेश्वर महादेव, अरुणाय (पिहोवा) के शिवत्रयोदशी पर्व (उदयव्यापिनी कृष्णा त्रयोदशी)

माघ (सन् 2018 ई.)	14 जन.
फाल्गुन	13 फर.
चैत्र	15 मार्च
वैशाख	14 अप्रैल
प्र. ज्येष्ठ	13 मई
द्वि. (अ.) ज्येष्ठ	12 जून
आषाढ़	11 जुलाई
श्रावण	9 अग.
भाद्रपद	7 सितं.
आश्विन	7 अक्टू.
कार्तिक	5 नवं.
मार्गशीर्ष	5 दिसं.
(सन् 2019 ई.)	
पौष	3 जन.
माघ	2 फर.
फाल्गुन	4 मार्च
चैत्र	3 अप्रैल

आश्विन कृष्णपक्ष के श्राद्ध

(सन् 2018 ई.)

प्रोष्ठपदी/❖ पूर्णिमा	24 सितं.	सप्तमी	1 अक्टू.	त्रयोदशी	7 अक्टू.
प्रतिपदा	25 सितं.	अष्टमी	2 अक्टू.	✳ चतुर्दशी	7 अक्टू.
द्वितीया	26 सितं.	❋ नवमी	3 अक्टू.	सर्वपितृ, अमावस, पूर्णिमा एवं अज्ञात मृत्युतिथि वालों का महालय श्राद्ध	8 अक्टू.
तृतीया	27 सितं.	दशमी	4 अक्टू.		
चतुर्थी	28 सितं.	एकादशी	5 अक्टू.		
भरणी श्राद्ध	28 सितं.	❊ द्वादशी/संन्यासियों का श्राद्ध	6 अक्टू.		
पंचमी	29 सितं.			नाना/नानी का श्राद्ध	9 अक्टू.
षष्ठी	30 सितं.	मघा श्राद्ध	6 अक्टू.		

❖ "जिनकी मृत्युतिथि पूर्णिमा हो, उनका महालय श्राद्ध प्रोष्ठपदी पूर्णिमा को करना चाहिए"—यह शास्त्रीय मत है। लेकिन पंजाब, हरियाणा आदि प्रदेशों में पूर्णिमा मृत्युतिथि वालों का महालय सर्वपितृ अमा को करने की लोक-परम्परा है।

❋ सौभाग्यवती स्त्री का श्राद्ध सर्वदा नवमी में ही किया जाता है, भले ही उसकी मृत्युतिथि कोई भी हो।

❊ संन्यासी का श्राद्ध हमेशा द्वादशी में ही किया जाता है, भले ही उसकी मृत्युतिथि कोई भी क्यों न हो।

✳ शस्त्र-विष आदि से मृतों (अपमृत्यु वालों) का श्राद्ध चतुर्दशी के दिन होता है, भले ही उनकी मृत्युतिथि कोई भी हो। चतुर्दशी में सामान्य मृत्यु वालों का महालय श्राद्ध अमावस्या में करना चाहिए।

फाल्गुन चैत्र	26 फर. 28 मार्च	फाल्गुन चैत्र	3 अप्रैल	लोक-परम्परा है।	मृत्युतिथि कोई भी क्यों न हो।	चाहिए।

वर्गीकृत व्रत-पर्व (1 जनवरी, सन् 2018 ई. से 5 अप्रैल, सन् 2019 ई. तक)

जैन व्रतपर्व

(सन् 2018 ई.)

श्रीमेरुत्रयोदशी	14 जन.
मर्यादा महोत्सव	24 जन.
आचार्य भिक्षु अभिनिष्क्रमण	25 मार्च
श्रीमहावीर जयन्ती	29 मार्च
श्रीमहावीर केवलज्ञान दिवस	25 अप्रैल
श्रीमहावीर च्यवन दिवस	18 जुलाई
तेरापन्थ स्थापना दिवस	27 जुलाई
चातुर्मास्य व्रत-नियम आदि प्रारम्भ	27 जुलाई
श्रीजयाचार्य निर्वाण दिवस	7 सितं.
पर्युषणपर्व प्रारम्भ	7 सितं.
संवत्सरी महापर्व	14 सितं.
श्रीकालू निर्वाण दिवस	15 सितं.
आचार्य श्रीतुलसी पट्टारोहण	18 सितं.
आचार्य भिक्षु निर्वाण दिवस	22 अक्टू.
श्रीमहावीर निर्वाण दिवस	7 नवं.
आचार्य श्रीतुलसी जन्म	9 नवं.
ज्ञानपंचमी	12 नवं.
चातुर्मास्य व्रत-नियमादि-समाप्त	23 नवं.
श्रीमहावीर दीक्षा दिवस	2 दिसं.
आचार्य श्रीतुलसी दीक्षा दिवस	27 दिसं.
जन्म श्रीपार्श्वनाथ जी	31 दिसं.
(सन् 2019 ई.)	
श्रीमेरुत्रयोदशी	2 फर.
मर्यादा महोत्सव	12 फर.

महापुरुषों के जन्मदिन

(सन् 2018 ई.)

श्रीरामानन्दाचार्य	8 जन.
स्वामी विवेकानन्द	12 जन.
योगिराज बा. श्रीलालदयाल	19 जन.
श्रीनेता जी सुभाषचन्द्र बोस	23 जन.
लाला लाजपतराय	28 जन.
श्रीगुरु रविदास जी	31 जन.
श्रीरामकृष्ण परमहंस	17 फर.
महर्षि दयानन्द सरस्वती	21 फर.
श्रीचैतन्य महाप्रभु	1 मार्च
श्रीवल्लभाचार्य	12 अप्रै.
डॉ. अम्बेडकर	14 अप्रै.
श्रीछत्रपति शिवाजी	17 अप्रै.
आद्य जगद्गुरु श्रीशंकराचार्य	20 अप्रै.
श्रीरामानुजाचार्य (उ.भा.)	21 अप्रै.
श्रीरवीन्द्रनाथ टैगोर	7 मई
श्रीमहाराणाप्रताप	16 जून
लो. मा. बालगंगाधर तिलक	23 जुलाई
गोस्वामी तुलसीदास जी	17 अग.
स्वामी शिवानन्द जी	8 सितं.
श्रीमहात्मा गांधी	2 अक्टू.
श्रीलालबहादुर शास्त्री	2 अक्टू.
महाराज अग्रसेन जी	10 अक्टू.
श्रीमाध्वाचार्य	19 अक्टू.
स्वामी रामतीर्थ	22 अक्टू.
श्रीजवाहर लाल नेहरू	14 नवं.
श्रीवीर वैरागी	21 नवं.
भगवान् श्रीसत्यसाईं बाबा	23 नवं.
(सन् 2019 ई.)	
स्वामी विवेकानन्द	12 जन.
श्रीनेताजी सुभाषचन्द्र बोस	23 जन.
श्रीरामानन्दाचार्य	27 जन.
लाला लाजपतराय	28 जन.
योगिराज बा. श्रीलालदयाल	6 फर.
श्रीगुरु रविदास जी	19 फर.
महर्षि दयानन्द सरस्वती	21 फर.
श्रीरामकृष्ण परमहंस	8 मार्च
श्रीचैतन्य महाप्रभु	21 मार्च

मुस्लिम त्योहार

(सन् 2018 ई.)

जन्म श्री हज़रत अली	11 अप्रैल
शब-ए-मिराज	15 अप्रैल
शब-ए-बरात	2 मई
रमज़ान का पहला दिन	17 मई
शहादत-ए-हज़रत अली	6 जून
शब-ए-कद्र	12 जून
जमतुल-विदा	15 जून
ईद-उल-फित्र	16 जून
इदुलज्जुहा (बकरीद)	22 अग.
मुहर्रम (ताज़िया)	21 सितं.
चेहल्म	30 अक्टू.
आखिरी चहार शम्बा	7 नवं.
शहादत-ए-इमाम हसन	7 नवं.
ईद-ए-मिलाद	21 नवं.
ईद-ए-मौलाद	26 नवं.
फतिहायज़दहुम	19 दिसं.
(सन् 2019 ई.)	
जन्म श्री हज़रत अली	21 मार्च
शब-ए-मिराज	4 अप्रैल

सूचना—सभी मुस्लिम त्योहार चन्द्रदर्शन (नया चाँद दिखाई देने) पर ही निर्भर करते हैं। कई बार स्थानभेद या आकाशीय वातावरण के कारण चन्द्रदर्शन की तारीख आगे-पीछे हो जाने पर इन मुस्लिम त्योहारों के दिन में एक दिन का अन्तर सम्भव है। इसकी सूचना T.V. आदि द्वारा प्रसारित कर दी जाती है।

क्रिश्चियन त्योहार

(सन् 2018 ई.)

इंग्लिश नया साल प्रारम्भ	1 जन.
पाम सण्डे	25 मार्च
गुड फ्राई डे	30 मार्च
ईस्टर सण्डे	1 अप्रै.
क्रिस्मस डे	25 दिसं.
(सन् 2019 ई.)	
इंग्लिश नया साल प्रारम्भ	1 जन.

क्या किससे पूछें?

'श्रीमार्त्तण्ड पञ्चांग' गत विषयों से सम्बद्ध अपनी शंकाओं का समाधान ऐसे प्राप्त करें।

'श्रीमार्त्तण्ड पञ्चांग' में सिद्धान्त, गणित, फलित, मुहूर्त, व्रतपर्व, तेजी-मन्दी आदि अनेक विषयों का समावेश रहता है। इन विषयों से सम्बद्ध शंकाएं हमारे जिज्ञासु पाठकों के मस्तिष्क में कई बार उत्पन्न होती हैं, जिनके समाधानार्थ वे ठीक से समझ नहीं पाते कि—किससे सम्पर्क साधा जाये। किस विषय की शंका के समाधानार्थ किससे सम्पर्क करना उचित है—यह हम यहां स्पष्ट किये देते हैं—

(i) तिथ्यादि पंचांग, ग्रहभोगांश, शर, क्रान्ति, राशि-नक्षत्र-नक्षत्रचरण-प्रवेश, वक्रता-मार्गिता, उदयास्त, लोप-दर्शन, ग्रहण, ग्रहयुति आदि खगोलीय चमत्कार, अयनांश, अक्षांश, रेखांश, लग्न, सन्दिग्ध व्रतपर्व-निर्णय, विवाहादि मुहूर्त्त तथा अन्य सभी सिद्धान्त-गणित-फलित-सम्बन्धी जिज्ञासाओं के शान्त्यर्थ मुझसे सम्पर्क करें।

उत्तर के लिए मुझे जवाबी पत्र या Postal Stamps आदि न भेजें। आपकी उचित शंकाओं का निवारण मैं अपने व्यय से ही करूंगा। लेकिन मैं इसके लिए किसी तरह से बाधित नहीं हूं, यह ध्यान में रखें।

प्रो. प्रियव्रत शर्मा, M.A., अभिजित् प्रकाशन, 59/6,
P.O. पंचकूला—134 109, Phone-0172-2565 303

(ii) राष्ट्रीय-अन्तर्राष्ट्रीय घटनाचक्र, राजनैतिक दलों के चुनाव चक्र में जय-पराजय, राजनेताओं का उत्थान-पतन, पाक्षिक-मासिक-वार्षिक फलादेश, यन्त्र-मन्त्र-तन्त्र रहस्य, वृष्टि, वायुमण्डल, अतिवृष्टि, अनावृष्टि, बाढ़, भूकम्प आदि दैवी एवं प्राकृतिक आपदा तथा विश्वशान्ति-विप्लव आदि से सम्बद्ध पंचांगगत भविष्यवाणियों के विषय में तथा जन्मकुण्डली, टेवा, प्रश्नलग्न आदि के निर्माण एवं इनकी फीस वगैरह की जानकारी एवं वायदा-हाज़र बाजार के चांस, सोना, चांदी, कॉपर आदि मैटल्स, चना, गेहूं, ग्वार आदि अनाज; तिल, सरसों, बिनौला आदि तिलहन तथा रुई, कपास, ऊन आदि जिन्स की पंचांग में प्रकाशित वार्षिक-मासिक-पाक्षिक-दैनिक तेज़ी-मन्दी-सम्बन्धी पूछताछ के लिए हमसे सम्पर्क कीजिये—

पं. इन्दुशेखर शर्मा, शास्त्री, M.A., ज्योतिषाचार्य,
पं. संयमी शर्मा, M.A., ज्योतिषाचार्य, धर्मशास्त्राचार्य,
श्रीमार्त्तण्ड ज्योतिष कार्यालय, कुराली,
जिला मोहाली (पंजाब), PIN 140 103,
Phone : 0160-2641277, 09988407010 ,

इसके अतिरिक्त पंचांग में प्रकाशित अन्य किसी लेख आदि के विषय में अपनी शंकाओं के निवारणार्थ उस लेख के लेखक से ही सम्पर्क करना चाहिए।

—सम्पादक मण्डल

सिक्ख पर्व (सं. 2075 वि.) (18 मार्च, 2018 ई. से 5 अप्रैल, 2019 ई. तक)

नाम श्रीगुरु साहिबान	पुरातन परम्परा [विक्रमी कैलेण्डर (तिथियों)] के अनुसार						नानकशाही कैलेण्डर अनुसार (ग्रेगोरियन तारीखों के अनुसार स्थिर)		
	प्रकाश दिवस		गुरयाई मिली		जोतीजोत समाए		प्रकाश दिवस	गुरयाई मिली	जोतीजोत समाए
	तिथि	तारीख	तिथि	तारीख	तिथि	तारीख	तारीख	तारीख	तारीख
श्री गुरु नानकदेव जी	कार्तिक शु.15	23 नवं.	—	—	आश्वि.कृ.10	4 अक्टू.	कार्तिक पू.	—	22 सितं.
श्री गुरु अंगददेव जी	वैशाख शु.1	16 अप्रैल	आश्वि.कृ.5	30 सितं.	चैत्र शु.4	21 मार्च	18 अप्रैल	18 सितं.	16 अप्रैल
श्री गुरु अमरदास जी	वैशाख शु. 14	29 अप्रैल	चैत्र शु. 1	18 मार्च	भाद्र.शु. 15	25 सितं.	23 मई	16 अप्रैल	16 सितं.
श्री गुरु रामदास जी	कार्तिक कृ. 2	26 अक्टू.	भाद्र.शु. 13	22 सितं.	भाद्र.शु. 3	12 सितं.	9 अक्टू.	16 सितं.	16 सितं.
श्री गुरु अर्जुनदेव जी	वैशाख कृ. 7	7 अप्रैल	भाद्र.शु. 2	11 सितं.	ज्ये. शु.4	17 जून	2 मई	16 सितं.	16 जून
श्री गुरु हर गोबिन्द जी	आषाढ़ कृ. 1	29 जून	ज्ये.कृ. 8	8 मई	चैत्र शु. 5	22 मार्च	5 जुलाई	11 जून	19 मार्च
श्री गुरु हरिराय जी	माघ शु. 13	17 फर.	चैत्र कृ. 13	3 अप्रैल	कार्ति.कृ. 9	2 नवं.	31 जन.	14 मार्च	20 अक्टू.
श्री गुरु हरकिशन जी	श्राव कृ. 9	6 अग.	कार्ति. कृ. 9	2 नवं.	चैत्र शु. 14	30 मार्च'18	23 जुलाई	20 अक्टू.	16 अप्रैल
श्री गुरु तेगबहादुर जी	वैशाख कृ. 5	5 अप्रैल 18	चैत्र शु. 14	30 मार्च'18	मार्ग. शु. 5	12 दिसं.	18 अप्रैल	16 अप्रैल	24 नवं.
श्री गुरु गोबिन्द सिंह जी	पौष शु. 7	13 जन.	मार्ग शु. 3	10 दिसं.	कार्ति. शु. 5	12 नवं.	5 जन.	24 नवं.	21 अक्टू.

ध्यान दें

'नानकशाही कैलेण्डर', जिसके अनुसार सभी सिक्खपर्वों का निर्णय अंग्रेजी तारीखों के आधार पर किया गया है, सन् 2003 ई. में लागू किया गया। चूंकि, सभी सिक्खपर्व विगत शताब्दियों से पुरातन परम्परा (विक्रमी कैलेण्डर/तिथियों) के अनुसार ही मनाये जाते रहे हैं, अतः कई सिक्ख सम्प्रदाय एवं पटना, नान्देड़ आदि गुरुद्वारा प्रबन्धक कमेटियां भी सिक्खपर्वों को 'पुरातन परम्परा वाले विक्रमी कैलेण्डर' के अनुसार ही मनाने के पक्ष में हैं। इस प्रकार इस विषय में उत्पन्न मतभेद को शान्त करने के लिए सिक्ख-धर्म की सर्वोच्च संस्था S.G.P.C. (शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबन्ध कमेटी) अमृतसर द्वारा पर्वों के निर्णय के लिए अब पुनः विक्रमी कैलेण्डर को ही मान्यता दी गयी है—यह ध्यान देने योग्य है।

पुरातन परम्परा के अनुसार इस वर्ष (सं. 2075 वि.) की संक्रान्तियां—वैशा. 14-4-18, ज्ये. 14-5-18, आषाढ़ 15-6-18, श्रावण 16-7-18 भाद्र. 17-8-18, आश्वि. 17-9-18, कार्तिक 17-10-18, मार्ग. 16-11-18, पौष 16-12-18, माघ 14-1-19, फाल्गुन 13-2-19, चैत्र 14-3-19,

नानकशाही कैलेण्डर के अनुसार संक्रान्तियां (सं. 2075 वि.)—इस कैलेण्डर के अनुसार चैत्र की संक्रान्ति हमेशा 14 मार्च को होती है, चैत्र से श्रावण तक के पांच महीने हमेशा 31-31 दिनों के और शेष 6 महीने हमेशा 30-30 दिनों के होते हैं, लीप इयर में फाल्गुन मास के 32 दिन माने गये हैं।

भारत सरकार के अवकाश (1 जनवरी, सन् 2018 ई. से 5 अप्रैल, सन् 2019 ई. तक)

(ध्यान दें—अवकाश की इस सूची को भारत सरकार के गजट की सूची से अवश्य मिला लें।)

(सन् 2018 ई.)		गुड फ्राई डे	30 मार्च	रक्षाबन्धन (राखी)	26 अग.	श्री गुरुनानक जयन्ती	23 नवं.
इंग्लिश नववर्ष प्रारम्भ	1 जन.	जन्म श्रीहजरत अली	1 अप्रैल	श्रीगणेश चतुर्थी	30 अग.	बलिदानदिन गुरु तेगबहादुर जी	12 दिसं.
मकर संक्रान्ति (बंगाल)	14 जन.	वैशाखी (पंजाब)	14 अप्रैल	श्रीकृष्ण जन्माष्टमी (वै.)	3 सितं.	क्रिसमस डे	25 दिसं.
पोंगल	14 जन.	विशु (केरल)	14 अप्रैल	मुहर्रम (ताजिया)	21 सितं.	(सन् 2019 ई.)	
भारतगणतन्त्र दिवस	26 जन.	श्रीबुद्ध जयन्ती	30 अप्रैल	जन्मदिन श्रीमहात्मा गांधी	2 अक्टू.	इंग्लिश नववर्ष प्रारम्भ	1 जन.
जन्मदिन श्रीगुरु रविदास जी	31 जन.	जमतुल विदा	15 जून	श्रीदुर्गाष्टमी	17 अक्टू.	जन्मदिन श्री गुरुगोबिन्द सिंह जी	13 जन.
श्रीमहाशिवरात्रि व्रत	14 फर.	इदुल-फित्र	16 जून	दशहरा	19 अक्टू.	मकर संक्रान्ति (बंगाल)	14 जन.
होला, वसन्तोत्सव	2 मार्च	रथयात्रा (पुरी)	14 जुलाई	श्रीवाल्मीकि जयन्ती	24 अक्टू.	पोंगल	15 जन.
गुड़ी पड़वा	18 मार्च	भारतस्वतन्त्रता दिवस	15 अग.	दीपावली	7 नवं.	भारतगणतन्त्र दिवस	26 जन.
श्रीरामनवमी	25 मार्च	इदुलज्जुहा	22 अग.	भाईदूज	9 नवं.	जन्मदिन श्रीगुरु रविदास जी	19 फर.
श्रीमहावीर जयन्ती (जैन)	29 मार्च	ओणम (केरल)	25 अग.	ईद-ए-मिलाद	21 नवं.	श्री महाशिवरात्रि व्रत	4 मार्च
						होला, वसन्तोत्सव	21 मार्च

श्रीरामनवमी	25 मार्च	इदुल[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	जन्मदिन श्रीगुरु रविदास जी	19 फर.
श्रीमहावीर जयन्ती (जैन)	29 मार्च	ओणम (केरल)	25 अग.	ईद-ए-मिलाद	21 नवं.	श्री महाशिवरात्रि व्रत	4 मार्च

पंजाब, हरियाणा, हिमाचल प्रदेश, जम्मू-कश्मीर व उ.प्र. के मेले (1 जनवरी, सन् 2018 ई. से 5 अप्रैल, सन् 2019 ई. तक)

नाम मेला/पर्व (सन् 2018 ई.)	तारीख
जनवरी सन् 2018 ई.	
लोहड़ी दाऊं (मोहाली) (पं.)	14 जन.
लोहड़ी ब्रिंदरख (रोपड़) (पं.)	14 जन.
मुक्तसर (पंजाब)	14 जन.
ब.सं.बा. अतर सिंह जी (रेरु साहिब) प्रा.	20 जन.
वसन्त पंचमी	22 जन.
ब. सं. बा. बख्शीश सिंह जी	26 जन.
ज.दि. गुरु हरिराय जी, सिंहपुरा-कुराली (पं.)	29 जन.
ब.सं.बा. अतर सिंह जी, (मस्तुआणां) (पं.) प्रा.	30 जन.
फरवरी सन् 2018 ई.	
बलिदान दिवस बाबा दीपसिंह जी शहीद सोलखियां (रोपड़-पं.)	10 फर.
श्रीमहाशिवरात्रि (मण्डी, हि.प्र.) प्रारम्भ	13 फर.
नीलकण्ठ महादेव (पौड़ी-गढ़वाल)	13 फर.
मार्च सन् 2018 ई.	
होला श्री आनन्दपुर साहिब (पं.)	2 मार्च
श्री गुरु रामराय (देहरादून)	6 मार्च
श्रीवीरमदास, बधौछी (पटियाला)	6 मार्च
शीतला माता (कुराली) पं.	8 मार्च
ज.दि.सं.बा. अंतर सिंह जी (नानकसर चीमा) प्रा.	15 मार्च
पिहोवा तीर्थ (हरियाणा)	16 मार्च
माईसर खाना (पंजाब)	23 मार्च
ज्वालामुखी (हरचोवाल-गुरदासपुर)	24 मार्च
ज.दि.सं.बा. निधानसिंह जी (श्री हजूरसाहिब वाले, ढींडसा (लुधि.)	25 मार्च
मेला माता कांसादेवी (कांसल, मोहाली) प्रा.	29 मार्च
मेला माता नैनादेवी, दाचर (करनाल)	30 मार्च
देवी मेला हथीहरा (कुरुक्षेत्र)	30 मार्च
अप्रैल सन् 2018 ई.	
पिंजौर (हरि.)	16 अप्रैल
कशाधा नहयाणी सह (कुल्लू) प्रा.	16 अप्रैल
ज.दि. भाई दित्तसिंह ज्ञानी	21 अप्रैल
समागम (8 दिन) हरिहरघाट, मणिकर्ण (हि.प्र.) प्रा.	24 अप्रैल
मेला पीर भीखनशाह (घड़ाम, पटियाला) प्रा.	28 अप्रैल
पीपल जातर (कुल्लू) प्रा.	29 अप्रैल
मई सन् 2018 ई.	
आनी आऊटर सिराज (कुल्लू) प्रा.	7 मई
ढूंगरी जातर (मनाली) प्रा.	14 मई
बंजार (कुल्लू) प्रा.	14 मई
ज.दि.सं.बा. तेजासिंह जी, बदरीपुर, पांवटा सा. (हि.प्र.) प्रा.	14 मई
साढ़ी जातर, नगर (हि.प्र.) प्रा.	18 मई
पुण्यतिथि सत्गुरु साईं टेऊँराम जी सप्तसरोवर भूपतवाला, हरिद्वार	20 मई
श्रीगंगा दशहरा	24 मई
जून सन् 2018 ई.	
पाण्डवों का बाड़ी मेला (सरयांझ) सोलन	15 जून
भून्तर (कुल्लू) प्रा.	15 जून
क्षीरभवानी (जम्मू-कश्मीर)	20 जून
सपोर यात्रा-धारलदा (उधमपुर)	22 जून
नमाणी एकादशी, नौवें गुरु, बरहे (बठि.) पं.	23 जून
पीपलू, ऊना (हि.प्र.)	23 जून
शुद्ध महादेवयात्रा (उधमपुर)	28 जून
यादगारी दिवस बीबी शरणकौर जी, गु. श्रीअमरगढ़ साहिब, श्रीचमकौर साहिब	29 जून
जुलाई सन् 2018 ई.	
ब.सं.बा. तेजासिंह जी, नानकसर चीमा (पं.)/बड़ू साहिब (हि.प्र.) प्रा.	1 जुलाई
ब.बा. सन्तोख सिंह जी/भा. दर्शन सिंह गुरुद्वारा जन्मस्थान नानकसर, चीमा प्रा.	9 जुलाई
धाटा गोशयन मेला (मण्डी, हि.प्र.) प्रा.	16 जुलाई
जयन्ती सत्गुरु साईं टेऊँराम जी सप्तसरोवर भूपतवाला, हरिद्वार	18 जुलाई
शरीक भवानी (जम्मू-कश्मीर)	21 जुलाई
गुरु पूर्णिमा, नदीपार आश्रम (कुराली) पं.	27 जुलाई
मुड़िया पूनौ (गोवर्धन), मथुरा (उ.प्र.)	27 जुलाई
उर्स माणकपुर शरीफ (मोहाली) प्रारम्भ	28 जुलाई
गाड़ा गोशयन मेला (मण्डी, हि.प्र.) प्रा.	30 जुलाई
अगस्त सन् 2018 ई.	
ब.सं.बा. निधानसिंह जी, ढींडसा (लुधि.)	4 अगस्त
ज.दि.सं.बा. ईशरसिंह जी (राड़ा सा. वाले), आलोवाल पटियाला	5 अगस्त
बरसी सं. बाबा प्यारासिंह जी, गु. श्री अमरगढ़ साहिब, चमकौर साहिब प्रा.	5 अगस्त
नागपंचमी (जैत), मथुरा (उ.प्र.)	15 अगस्त
श्रींनयना देवी (हि.प्र.)	18 अगस्त

पंजाब, हरियाणा, हिमाचल प्रदेश, जम्मू-कश्मीर व उ.प्र. के मेले (1 जनवरी, सन् 2018 ई. से 5 अप्रैल, सन् 2019 ई. तक)

नाम मेला/पर्व (सन् 2018 ई.)	तारीख
श्री चिन्तपूर्णी (हि.प्र.)	18 अगस्त
ब.सं.बा. हरचन्द सिंह लौंगोवाल	20 अगस्त
ब.सं.बा. ईशरसिंह जी (राड़ा सा. वाले) प्रा.	24 अगस्त
श्री अमरनाथ यात्रा (कश्मीर)	26 अगस्त
सितम्बर सन् 2018 ई.	
श्रीकृष्णजन्माष्टमी, मथुरा (उ.प्र.)	3 सितं.
ब.भा. दित्तसिंह ज्ञानी, नन्दपुर-कलौड़ (पं.)	6 सितं.
कैलाशयात्रा (कश्मीर) प्रा.	7 सितं.
श्रीगोसाईंआणां, कुराली (पंजाब)	11 सितं.
श्रीगणेशोत्सव (मण्डी, ऊना) हि.प्र. प्रारम्भ	13 सितं.
मेला पट्ट (कश्मीर) प्रारम्भ	14 सितं.
श्रीगर्गाचार्य जयन्ती	14 सितं.
मेला श्रीबलदेव छठ, पलवल, हरियाणा	15 सितं.
गरुणगोविन्द (छटीकरा, मथुरा) (उ.प्र.)	17 सितं.
श्रीवामन द्वादशी (अम्बाला, पट्टियाला)	21 सितं.
बाबा सोडल (जालन्धर)	23 सितं.
छपार (पं.)	23 सितं.
श्रीगोईंदवाल साहिब (तरनतारन) पं.	25 सितं.
अक्टूबर सन् 2018 ई.	
मेला फल्गुतीर्थ (हरि.)	8 अक्टू.
श्री आशापति यात्रा (कश्मीर) प्रा.	8 अक्टू.
श्रीज्वालामुखी (हि.प्र.)	17 अक्टू.
श्रीतारादेवी (हि.प्र.)	17 अक्टू.
ज्वालामुखी (हरचोवाल, गुरदासपुर) पं.	17 अक्टू.
दशहरा (कुल्लू) प्रा.	18 अक्टू.
पर्वत मेला (मण्डी-हि.प्र.)	18 अक्टू.

नाम मेला/पर्व (सन् 2018 ई.)	तारीख
श्रीशाकम्भरी देवी (उ.प्र.)	23 अक्टू.
मेला माता नयनादेवी, दाचर (करनाल)	23 अक्टू.
देवीमेला हथीहरा (कुरुक्षेत्र)	23 अक्टू.
ब.सं.बा. गुरुचरण सिंह जी, गु. अमरगढ़ साहिब, श्रीचमकौर साहिब	24 अक्टू.
नवम्बर सन् 2018 ई.	
भण्डारा श्री हरिओम् जी (माणकपुर शरीफ)	2 नवं.
दीपावली (अमृतसर)	7 नवं.
बाल मेला	14 नवं.
रेणुका (नाहन) हि.प्र.	19 नवं.
बाबा रुद्रानन्द, नारी (ऊना, हि.प्र.) प्रा.	19 नवं.
धनेश्वर मेला, सिरमौर (हि.प्र.)	19 नवं.
ज.दि. श्रीवीर वैरागी (नकोदर) (पं.)	21 नवं.
मेला बग्गीदेहरी कुण्डे लालोवाल (गुरदासपुर) प्रा.	22 नवं.
श्रीरामतीर्थ (अमृतसर-पं.)	23 नवं.
कपालमोचन (हरि.)	23 नवं.
श्रीपुष्करराज (राज.)	23 नवं.
दिसम्बर सन् 2018 ई.	
ब.सं.बा. विसाखासिंह, दुदेहर सा. (तारनतारन)	5 दिसं.
पुरमण्डल, देविकास्नान (जम्मू)	6 दिसं.
ब.सं.बा. रामसिंह/बूटासिंह नानकसर चीमा	18 दिसं.
ब. बीबी तेजकौर जी, मानपुर, फतेहगढ़ सा.	24 दिसं.
ज.दि.सं.बा. किशनसिंह जी (राड़ा सा. वाले), मसीतां (सिरसा-हरि.)	24 दिसं.
जोड़मेला श्रीफतेहगढ़ साहिब, (पं.) प्रा.	26 दिसं.
संगीत मेला बाबा हरवल्लभ (जालन्धर) प्रा.	28 दिसं.

नाम मेला/पर्व (सन् 2018 ई.)	तारीख
ब.सं.बा. किशन सिंह जी, गु. कर्मसर साहिब, राड़ा साहिब (लुधि.) प्रा.	30 दिसं.
जनवरी सन् 2019 ई.	
लोहड़ी दाऊं (मोहाली) (पं.)	14 जन.
लोहड़ी बिंदरख (रोपड़) (पं.)	14 जन.
मुक्तसर (पंजाब)	14 जन.
ब.सं.बा. अतरसिंह जी (रेरु साहिब) प्रा.	20 जन.
ब.सं.बा. बख्शीशसिंह जी	26 जन.
ब.सं.बा. अतरसिंह जी, (मस्तुआणां) (पं.) प्रा.	30 जन.
फरवरी सन् 2019 ई.	
वसन्तपंचमी	9 फर.
बलिदान दिवस बाबा दीपसिंह जी शहीद सोलखियां (रोपड़-पं.)	10 फर.
ज.दि. गुरु हरिराय जी, सिंहपुरा-कुराली (पं.)	17 फर.
मार्च सन् 2019 ई.	
श्रीमहाशिवरात्रि (मण्डी, हि.प्र.) प्रारम्भ	4 मार्च
नीलकण्ठ महादेव (पौड़ी-गढ़वाल)	4 मार्च
ज.दि.सं.बा. अतरसिंह जी, (नानकसर चीमा) प्रा.	15 मार्च
होला श्री आनन्दपुर साहिब (पं.)	21 मार्च
श्री गुरु रामराय (देहारादून)	25 मार्च
श्री वीरमदास, बधौछी (पटियाला)	26 मार्च
शीतला माता (कुराली) पं.	28 मार्च
अप्रैल सन् 2019 ई.	
पिहोवा तीर्थ (हरियाणा)	3 अप्रैल

दशहरा (कुल्लू) प्रा. | 18 अक्टू. | जोड़मेला श्रीफतेहगढ़ साहिब (पं.) प्रा. | 26 दिसं. | अप्रैल सन् 2019 ई.
पर्वत मेला (मण्डी-हि.प्र.) | 18 अक्टू. | संगीत मेला बाबा हरवल्लभ (जालन्धर) प्रा. | 28 दिसं. | पिहोवा तीर्थ (हरियाणा) | 3 अप्रैल

श्रीगणेश-चतुर्थी एवं श्रीकृष्णजन्माष्टमी व्रत

(भारत के कुछ प्रसिद्ध नगरों के लिए चन्द्रोदय (संवत् 2075 वि.), (भा. स्टैं. टा.)

नगर	श्री गणेशचतुर्थी चन्द्रोदय																										श्रीकृष्णजन्माष्टमी			
	03 अप्रैल 2018		03 मई 2018		02 जून 2018		01 जुला. 2018		31 जुला. 2018		30 अग. 2018		28 सितं. 2018		27 अक्टू. 2018		26 नवं. 2018		25 दिसं. 2018		24 जन. 2019		22 फर. 2019		24 मार्च 2019		स्मार्त 02 सितं. 2018		वैष्णव 03 सितं. 2018	
	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.
अजमेर	21	36	22	07	22	26	21	48	21	40	21	27	20	48	20	10	20	50	20	45	21	44	21	32	22	18	23	28	24	17
अमृतसर	21	42	22	16	22	35	21	56	21	42	21	23	20	37	20	50	20	38	20	34	21	40	21	32	22	24	23	19	24	06
अलवर	21	29	22	01	22	20	21	42	21	33	21	18	20	34	20	00	20	40	20	35	21	35	21	24	22	12	23	18	24	07
अलीगढ़	21	17	21	48	22	07	21	29	21	20	21	06	20	22	19	48	20	27	20	22	21	23	21	11	21	59	23	06	24	00
अहमदाबाद	21	40	22	09	22	28	21	52	21	46	21	37	20	56	20	25	21	05	20	59	22	00	21	40	22	23	23	42	24	32
अयोध्या	21	05	21	36	21	55	21	18	21	09	20	55	20	12	19	38	20	18	20	13	21	12	21	00	21	47	22	56	23	46
आगरा	21	23	21	54	22	13	21	35	21	26	21	12	20	29	19	55	20	34	20	29	21	30	21	18	22	05	23	13	24	02
इन्दौर	21	27	21	55	22	14	21	38	21	33	21	23	20	43	20	12	20	53	20	46	21	42	21	27	22	09	23	29	24	19
इलाहाबाद	21	05	21	35	21	54	21	17	21	10	20	58	20	15	19	42	20	22	20	17	21	15	21	02	21	47	23	00	23	50
उज्जैन	21	28	21	56	22	15	21	39	21	34	21	24	20	43	20	11	20	52	20	46	21	42	21	27	22	10	23	29	24	18
उदयपुर (रा.)	21	34	22	06	22	25	21	47	21	37	21	22	20	39	20	04	20	44	21	36	21	40	21	20	22	16	23	23	24	25
ऊना	21	36	22	10	22	29	21	50	21	07	20	48	20	31	19	54	20	02	20	29	21	34	21	26	22	19	23	13	23	38
कपूरथला	21	39	22	14	22	33	21	53	21	40	21	21	20	35	19	58	20	36	20	33	21	38	21	30	22	22	23	17	24	05
करनाल	21	30	22	03	22	23	21	44	21	32	21	15	20	30	19	55	20	33	20	29	21	32	21	23	22	13	23	13	24	01
कांगड़ा	21	36	22	10	22	29	21	54	21	50	21	16	20	28	19	52	20	29	20	28	21	32	21	25	22	48	23	11	23	38
कानपुर	21	12	21	43	22	02	21	24	21	17	21	03	20	20	19	47	20	26	20	21	21	20	21	08	21	54	23	04	23	54
कुरुक्षेत्र	21	32	22	05	22	25	21	45	21	33	21	16	20	31	19	55	20	33	20	29	21	33	21	23	22	14	23	14	24	01
कुल्लू	21	33	22	08	22	27	21	47	21	34	21	14	20	27	19	50	20	28	20	25	21	30	21	23	22	16	23	09	23	27
कोटा	21	29	21	59	22	19	21	41	21	34	21	22	20	40	20	07	20	48	20	42	21	40	21	27	22	12	23	25	24	13
कोलकाता	20	34	21	03	21	22	20	46	20	41	20	32	19	51	19	20	20	00	19	54	20	49	20	34	21	16	22	38	23	27
गुरदासपुर	21	40	22	15	22	34	21	54	21	41	21	21	20	34	19	57	20	35	20	31	21	37	21	30	22	23	23	16	24	03
ग्वालियर	21	21	21	52	22	11	21	34	21	26	21	13	20	29	19	56	20	36	20	31	21	30	21	17	22	03	23	14	24	03
चण्डीगढ़	21	32	22	06	22	25	21	46	21	34	21	16	20	30	19	53	20	32	20	28	21	32	21	23	22	15	23	12	24	00
चम्बा	21	38	22	13	22	32	21	52	21	38	21	18	20	30	19	53	20	31	20	28	21	34	21	27	22	21	23	12	24	00
चुरू	21	37	22	09	22	28	21	50	21	40	21	24	20	40	20	06	20	45	20	40	21	42	21	30	22	19	23	24	24	13
चेन्नई	20	58	21	21	21	40	21	07	21	09	21	09	20	34	20	08	20	51	20	42	21	28	21	07	21	39	23	24	24	16
जम्मू	21	43	22	19	22	38	21	58	21	43	21	23	20	35	19	58	20	35	20	32	21	39	21	32	22	26	23	17	24	04
जयपुर	21	32	22	03	22	22	21	44	21	35	21	22	20	38	20	05	20	44	20	39	21	39	21	27	22	14	23	23	24	12
जालन्धर	21	40	22	14	22	33	21	54	21	41	21	22	20	36	19	59	20	36	20	33	21	38	21	30	22	22	23	18	24	04
जैसलमेर	21	52	22	23	22	42	22	04	21	55	21	42	20	58	20	25	21	05	21	00	21	59	21	48	21	33	23	44	24	32
जोधपुर	21	42	22	13	22	32	21	59	21	46	21	33	20	50	20	17	20	57	20	51	21	51	21	39	22	25	23	35	24	24
दरभंगा	20	49	21	20	21	39	21	02	20	54	20	40	19	58	19	24	20	04	19	58	20	57	20	45	21	31	22	42	23	31
दिल्ली	21	28	22	00	22	20	21	41	21	31	21	15	20	31	19	56	20	35	20	30	21	32	21	22	22	11	23	14	24	02

श्रीगणेश-चतुर्थी एवं श्रीकृष्णजन्माष्टमी व्रत

(भारत के कुछ प्रसिद्ध नगरों के लिए चन्द्रोदय (संवत् 2075 वि.), (भा. स्टैं. टा.)

नगर	श्री गणेशचतुर्थी चन्द्रोदय																										श्रीकृष्णजन्माष्टमी			
																											स्मार्त		वैष्णव	
	03 अप्रैल 2018		03 मई 2018		02 जून 2018		01 जुलाई 2018		31 जुला. 2018		30 अग. 2018		28 सित. 2018		27 अक्टू. 2018		26 नव. 2018		25 दिस. 2018		24 जन. 2019		22 फर. 2019		24 मार्च 2019		02 सित. 2018		03 सित. 2018	
	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.
देहरादून	21	27	22	00	22	20	21	41	21	29	21	11	20	25	19	49	20	28	20	24	21	28	21	18	22	09	23	08	23	56
नाहन	21	30	22	04	22	23	21	44	21	32	21	14	20	28	19	52	20	30	20	26	21	30	21	21	22	13	23	10	23	58
पटना	20	51	21	21	21	41	21	04	20	56	20	44	20	01	19	28	20	08	20	02	21	16	20	48	21	33	23	01	23	35
पटियाला	21	34	22	07	22	26	21	47	21	35	21	18	20	32	19	56	20	34	20	31	21	34	21	25	22	16	23	15	24	02
पठानकोट	21	39	22	14	22	33	21	54	21	40	21	20	20	32	19	55	20	33	20	30	21	36	21	29	22	22	23	14	24	02
पूणे	21	30	21	56	22	15	21	40	21	38	21	33	20	55	20	26	21	08	21	01	21	52	21	34	22	12	23	43	24	34
फगवाड़ा	21	38	22	12	22	31	21	52	21	39	21	20	20	33	19	57	20	35	20	32	21	37	20	58	21	50	22	46	23	34
फिरोजपुर	21	12	21	46	22	05	21	26	21	13	20	55	20	08	19	32	20	10	20	07	21	11	21	03	21	54	22	51	23	39
बंगलौर	21	09	21	32	21	51	21	17	21	20	21	20	20	45	20	19	21	03	20	54	21	40	21	18	21	50	23	35	24	22
बरेली	21	19	21	51	22	10	21	32	21	22	21	06	20	22	19	47	20	26	20	22	21	23	21	12	22	01	23	05	23	54
बिलासपुर (हि.प्र.)	21	34	22	08	22	27	21	48	21	35	21	16	20	29	19	53	20	31	20	27	21	32	21	24	22	16	23	12	24	00
बीकानेर	21	43	22	15	22	34	21	56	21	46	21	31	20	47	20	13	20	52	20	48	21	49	21	38	22	53	23	31	24	20
बून्दी	21	31	22	01	22	20	21	43	21	35	21	23	20	41	20	08	20	48	20	42	21	41	21	28	22	13	23	26	24	14
भटिण्डा	21	40	22	13	22	32	21	53	21	41	21	54	20	38	20	02	20	41	20	37	21	41	21	31	22	22	23	21	24	09
भरतपुर	21	25	21,	57	22	16	21	38	21	29	21	15	20	31	19	57	20	37	20	32	21	32	21	20	21	06	23	16	24	04
भोपाल	21	20	21	49	22	08	21	32	21	26	21	16	20	35	20	04	20	44	20	38	21	34	21	19	22	02	23	21	24	11
मण्डी (हि.प्र.)	21	33	22	08	22	27	21	48	21	34	21	15	20	28	19	51	20	29	20	26	21	31	21	23	22	16	23	10	23	58
मथुरा	21	25	21	56	22	16	21	38	21	28	21	14	20	30	19	56	20	35	20	31	21	55	22	19	22	07	23	14	23	48
मुम्बई	21	34	22	01	22	20	21	45	21	43	21	37	20	59	20	30	21	.12	21	05	21	56	21	38	22	16	23	47	24	38
रोपड़	21	34	22	08	22	27	21	48	21	35	21	17	20	31	19	55	20	33	20	29	21	04	21	25	22	17	22	43	24	01
रोहतक	21	01	21	33	21	53	21	14	21	04	20	48	20	03	19	27	20	37	20	32	21	04	20	54	21	43	23	16	24	05
लखनऊ	21	11	21	42	22	01	21	23	21	15	21	01	20	17	19	44	20	23	20	18	21	18	21	06	21	53	23	02	23	51
लुधियाना	21	37	22	11	22	30	21	51	21	38	21	20	20	33	19	57	20	35	20	32	21	36	21	27	22	19	23	16	24	04
वाराणसी	21	00	21	30	21	50	21	12	21	05	20	53	20	11	19	38	20	18	20	12	21	10	20	57	21	42	22	56	23	45
शिमला	21	32	22	05	22	25	21	45	21	33	21	14	20	28	19	51	20	29	20	26	21	31	21	22	22	14	23	10	23	58
श्रीनगर (क.)	21	46	22	22	22	41	22	30	21	45	21	22	20	34	19	55	20	32	20	30	21	38	21	32	22	28	23	15	24	01
संगरूर	21	36	22	09	22	28	21	49	21	38	21	20	20	34	19	59	20	37	20	33	21	37	21	27	22	18	23	17	24	05
सहारनपुर	21	29	22	02	22	22	21	43	21	31	21	14	20	28	19	53	20	31	20	27	21	31	21	31	22	12	23	11	24	00
सीकर	21	35	22	07	22	26	21	48	21	38	21	24	20	40	20	06	20	45	20	41	21	41	21	30	22	17	23	24	24	12
हरिद्वार	21	26	21	59	22	18	21	39	21	28	21	11	20	25	19	49	20	28	20	24	21	27	21	18	22	08	23	08	23	56
हिसार	21	35	22	08	22	27	21	48	21	37	21	21	20	36	20	01	20	40	20	36	21	38	21	28	22	17	23	19	24	08
होशियारपुर	21	37	22	11	22	30	21	51	21	38	21	54	20	33	20	46	20	34	20	31	21	36	21	27	22	20	23	15	24	02

हिसार	21 35	22 08	22 27	21 48	21 37	21 21	20 36	20 01	20 40	20 36	21 38	21 28	22 17	23 19	24 08
होशियारपुर	21 37	22 11	22 30	21 51	21 38	21 54	20 33	20 46	20 34	20 31	21 36	21 27	22 20	23 15	24 02

सन्दिग्ध व्रत-पर्व-व्यवस्था (सं. 2075 वि.)

लेखक—प्रियव्रत शर्मा, 59/6 (अभिजित्), पंचकूला(हरियाणा)—134109

(यदि इस स्तम्भ में चर्चित या अन्य किसी व्रत-पर्व की तिथि के बारे में किसी को सन्देह/शंका हो तो पत्र देकर मुझसे स्पष्टीकरण मांग लेना चाहिए.—प्रियव्रत शर्मा)

(सर्वत्र भा.स्टैं.टा. दिया गया है।)

श्री(लक्ष्मी)पंचमी (चैत्र शुक्ल पंचमी)

यह व्रत चतुर्थीविद्धा चैत्रशुक्ल पंचमी को किया जाता है। धर्मशास्त्र का निर्णय है कि—स्कन्दव्रत के अतिरिक्त सभी व्रतों में पंचमी चतुर्थीविद्धा ली जाये। **'पुरुषार्थचिन्तामणि'** का वाक्य है—**" सा (पंचमी) च स्कन्दोपवासातिरिक्तोपवासे पूर्व(चतुर्थी)विद्धा ग्राह्या।"**

इस वर्ष 21 मार्च, '18 को चैत्र शु. पंचमी चतुर्थीविद्धा है, अतः यह व्रत इसी दिन होगा।

स्कन्दषष्ठी (चैत्र शुक्ल षष्ठी)

पंचमीविद्धा चैत्रशुक्ल षष्ठी के दिन यह व्रत किया जाता है। **इस वर्ष चैत्र शु. षष्ठी 22 मार्च, '18 को पंचमीविद्धा है, अतः इसी दिन यह व्रत लिखा गया है।**

श्रीदुर्गाष्टमी व्रत (चैत्रशुक्ल अष्टमी)

नवमीविद्धा चैत्रशुक्ल अष्टमी वाले दिन यह व्रत किया जाता है। इसी दिन भगवती दुर्गा का आविर्भाव माना जाता है। **'धर्मसिन्धु'** का वाक्य है—

" चैत्र शुक्लाष्टम्यां भवान्या उत्पत्तिः, तत्र नवमीयुता अष्टमी ग्राह्या।"

दूसरे दिन अष्टमी नवमीविद्धा न मिले, यानी यह वहां त्रिमुहूर्त्तल्प हो तो दुर्गाष्टमी पहले दिन होगी।

इस वर्ष दूसरे दिन (25 मार्च, '18 को) अष्टमी त्रिमुहूर्त्तल्प होने से नवमीविद्धा नहीं है, अतः उपरोक्त नियमानुसार श्रीदुर्गाष्टमी **इस वर्ष पहले दिन (24 मार्च, '18 को) ही मनायी जायेगी।**

श्रीसत्यनारायणव्रत (चैत्र पूर्णिमा)

इस वर्ष 30 मार्च, '18 को पूर्णिमा सूर्यास्त के बाद प्रदोषकाल को एक घण्टा के लिए व्याप्त कर रही है, जबकि 31 मार्च को वह सूर्यास्त (प्रदोषारम्भकाल) से 30 मि. पहले ही समाप्त हो जाती है, **अतः यह व्रत, जो नक्तव्रत माना गया है, 30 मार्च, '18 को ही माना जायेगा।**

श्री गंगादशहरा (प्र. ज्येष्ठ शुक्ल दशमी)

पूर्वाह्णव्यापिनी ज्येष्ठशुक्ल दशमी के दिन यह पर्व मनाया जाता है। **इस वर्ष यह 24 मई, '18 को ही पूर्वाह्णव्यापिनी है।** इसदिन चन्द्र कन्यास्थ और सूर्य वृषस्थ भी है, जो इसे माहात्म्य प्रदान करता है।

ध्यान रहे—'दशहरासुनोत्कर्षः'—वाक्यानुसार ज्येष्ठ अधिमास होने पर इस पर्व को अधिक ज्येष्ठ में ही मनाने का शास्त्रादेश है। कुछ स्थलों (तीर्थों) पर इसे शुद्ध ज्येष्ठ में ही मनाने की भी परम्परा है, लेकिन यह शास्त्रोल्लंघन है।

अरण्यषष्ठी (शुद्ध ज्येष्ठ शु. षष्ठी)

यह पर्व सप्तमीविद्धा ज्ये. शुक्ल षष्ठी के दिन मनाने का आदेश है, लेकिन इस वर्ष षष्ठी 19 जून, '18 को सूर्योदयानन्तर 3 मुहूर्त्त तक व्याप्त न होने के कारण सप्तमीविद्धा नहीं है, **अतः यह पर्व 18 जून, '18 को ही मनाना होगा।**

वटसावित्री व्रत (ज्येष्ठ पूर्णिमा)

यह व्रत उ.भारत में ज्येष्ठी अमा को और द.भारत में ज्येष्ठी पूर्णिमा को मनाया जाता है। दोनों परम्पराओं में यह व्रत चतुर्दशीविद्धा अमा या पूर्णिमा को

मनाया जाता है। **इस वर्ष शुद्ध ज्येष्ठ पूर्णिमा 27 जून, '18 को चतुर्दशीविद्धा है, अतः द.भारत में यह व्रत 27 जून, '18 को ही किया जायेगा।**

आषाढ़ गुप्त नवरात्र प्रारम्भ

नवरात्र का प्रारम्भ शुक्ल प्रतिपदा में किया जाता है। यदि प्रतिपदा मुहूर्त्त से न्यून हो या वह क्षीण हो (सूर्योदय का स्पर्श न करे) तो अमायुक्त प्रतिपदा के दिन नवरात्रारम्भ किया जाता है। इस वर्ष आषाढ़शुक्ल प्रतिपदा का क्षय है, अतः शास्त्रादेशानुसार **इस वर्ष 'आषाढ़ गुप्त नवरात्रारम्भ' अमायुक्त प्रतिपदा के दिन 13 जुला., '18 को ही होगा।**

श्रीसत्यनारायणव्रत (आषाढ़ी पूर्णिमा)

27, 28 जुला., '18 की मध्यरात्रि में भारत में '**दृश्य चन्द्रग्रहण**' होगा। इस ग्रहण का सूतक 27 जुला., '18 को 14 घं.54मि. पर प्रारम्भ होगा। यह सूतक इस दिन प्रदोषकाल में, जबकि सत्यनारायण पूजादि अनुष्ठान होता है, विद्यमान होगा। अतः सत्यनारायण-पूजनादि से पूर्व व्रती को स्नान कर लेना चाहिए। पूजन आदि में पक्व अन्न का यहां प्रयोग नहीं करना चाहिए—

"सर्वेषामेव वर्णानां-सूतकं राहुदर्शने।
स्नात्वा कर्माणि कुर्वीत शृतमन्नं विवर्जयेत्॥"

इस व्रत की पारणा 28 जुला., '18 को प्रातः सूर्योदय के बाद स्नान करके नित्यकर्म से निवृत्त होकर करनी चाहिए।

दूर्वाष्टमी व्रत (श्रावण शु. अष्टमी)

यह व्रत स्त्रियों द्वारा भाद्र. शुक्ल अष्टमी को किया जाता है।

इस व्रत को '**रौहिण**' मुहूर्त्त (दिन के नवम मुहूर्त्त) में व्याप्त अष्टमी में करने का निर्देश है। रौहिण मुहूर्त्त के समय ज्येष्ठा और मूलनक्षत्र न हों—यह भी शास्त्रनिर्देश है। यदि ये नक्षत्र किसी स्थिति में वर्जित करने असम्भव हों, तो इनके सम्पर्क में भी यह व्रत किया जा सकता है। अगस्त्य तारा के उदय (रात्रि में दृश्य) हो जाने पर इस व्रत का सर्वथा निषेध है (अगस्त्य तारा वर्षाऋतु की लगभग समाप्ति के दिनों में रात्रि के समय दक्षिण की ओर दिखाई देने लगता है)। **ध्यान रहे**—कन्यार्क भी इस व्रत में वर्जित है। सिंहस्थ सूर्य के काल में इस व्रत के अनुष्ठान को महत्त्व दिया गया है—

"शुक्ले भाद्रपदे मासि दूर्वा-संज्ञा तु साष्टमी।
सिंहार्के एव कर्त्तव्या न कन्यार्के कदाचन॥
सिंहस्थे सोत्तमा सूर्येऽनुदिते मुनिसत्तमे।" —*(स्कन्द)*

यदि भाद्र. शुक्ल अष्टमी से पहले ही अगस्त्य दृश्य हो जाये (रात्रि के समय आकाश में दिखाई देने लगे) तो शास्त्रकारों का कहना है कि—ऐसी स्थिति में भाद्रपद शुक्ल से निरन्तर पूर्ववर्ती ऐसे अन्य रौहिणव्यापिनी किसी भी कृष्ण या शुक्ल पक्ष की अष्टमी के दिन यह व्रत करना चाहिए, जबकि अगस्त्य तारा अस्त (अदृश्य) हो। इस वर्ष भाद्र. शुक्ल अष्टमी के दिन 17 सितं., '18 को अगस्त्य तारा उदित हो चुका होगा। उपरोक्त नियमानुसार पूर्ववर्त्ती पक्ष (भाद्र. कृष्ण) की अष्टमी के दिन (3 सितं., '18 को) भी इस व्रत के अनुष्ठान का विचार करना व्यर्थ है, क्योंकि 31° अक्षांश के पार्श्ववर्त्ती स्थलों पर इसी दिन अगस्त्य उदित हो रहा है। **अतः शास्त्रनिर्देशानुसार इस व्रत का अनुष्ठान इससे भी पूर्ववर्त्ती पक्ष (श्रावण शुक्ल) की रौहिणवर्त्ती अष्टमी के दिन (18 अग., '18 को) किया जायेगा, जबकि अगस्त्य अस्त है।**

भारत के विभिन्न अक्षांशीय स्थलों पर सं. 2075 वि. में दूर्वाष्टमी व्रत की तिथियां, जहां रौहिणव्यापिनी अष्टमी होगी और अगस्त्य अस्त होगा, नीचे कोष्ठक में दी जा रही हैं—

उत्तर अक्षांश	दूर्वाव्रत की तिथि, वार	तारीख
24° से 31°	श्रावण शुक्ल अष्टमी, शनिवार	18 अग., 2018
32° से 35°	भाद्र.कृष्ण अष्टमी, चन्द्रवार	3 सितं., 2018
36° और 37°.	भाद्र. शुक्ल अष्टमी, चन्द्रवार	17 सितं., 2018

सम्पर्क में भी यह व्रत किया जा सकता है। अगस्त्य तारा के उदय (रात्रि में दृश्य)

36° और 37°	भाद्र. शुक्ल अष्टमी, चन्द्रवार	17 सित., 2018

ध्यान दें—इस वर्ष 24° से कम अक्षांशीय स्थलों पर दूर्वाष्टमी व्रत श्रावण कृष्ण और आषाढ़ शुक्ल पक्षों में जा पड़ता है, जहां सूर्य कर्कस्थ है। दूर्वाव्रत में ऐसी तिथियां विचारणीय हैं। मैंने अपनी पुस्तक '**व्रत-पर्व विवेक**' में भी इस ओर संकेत किया है।

(भारत के प्रत्येक अक्षांश पर अगस्त्य तारा के उदय (दर्शन) और लोप (अस्त) होने की तारीखें 'व्रत-पर्व विवेक' में दी गयी हैं, वहां देखें।)

श्रावण शुक्ल एकादशी (पवित्रा एकादशी व्रत)

इस वर्ष श्रावण शुक्ल एकादशी पहले दिन षष्टि-घट्यात्मक है और दूसरे दिन भी वह (एकादशी) विद्यमान है। यहां द्वादशी का क्षय भी नहीं है। इस स्थिति में **नारद** के निम्न वाक्यानुसार स्मार्त्त और वैष्णव-दोनों को उत्तरवर्ती एकादशी के दिन ही एकादशी व्रत करना चाहिए—

"सम्पूर्णैकादशी यत्र प्रभाते पुनरेव सा।
सर्वैरेवोत्तरा कार्या परतो द्वादशी यदि॥"

इस निर्णयानुसार इस वर्ष 22 अगस्त, '18 को ही स्मार्त्त और वैष्णव दोनों का ही एकादशी व्रत लगाया गया है।

आश्विन-नवरात्रारम्भ (आश्वि. शुक्ल प्रतिपदा)

नवरात्रारम्भ शुक्ल प्रतिपदा के दिन करना चाहिए, अमा में इसे करना निषिद्ध है। यदि प्रतिपदा एक मुहूर्त्त से कम हो या उसका क्षय हो गया हो, तभी इस पर्व को पूर्ववर्ती अमा के दिन करना चाहिए—यह शास्त्रनिर्णय है—

" प्रतिपदो मुहूर्त्त-न्यूनव्याप्तौ सूर्योदयास्पर्शे वा दर्शयुताऽपिग्राह्या॥"
—(धर्मसिन्धु)

इस वर्ष आश्विन शुक्ल प्रतिपदा भारत के एक भाग में सूर्योदयानन्तर एक मुहूर्त्त से कम और दूसरे भाग में एक मुहूर्त्त से अधिक काल को व्याप्त करती है, जिससे देश के एक भाग में (जहां प्रतिपदा एक मुहूर्त्त से कम काल को व्याप्त करती है, वहां) यह नवरात्र आश्विन अमा को (9 अक्तू., '18 को) और जहां प्रतिपदा मुहूर्त्ताधिककाल-व्यापिनी है, वहां यह 10 अक्तू., '18 को प्रारम्भ होगा। [अगले पृष्ठ पर (चित्र 1) देखिये]। यहां अंकित 'क-ख' रेखा जहां से गुजरती है, वहां (10 अक्तू., '18 को) सूर्योदय 6 घं. 39 मि. पर होगा और प्रतिपदा मुहूर्त्त-व्यापिनी होगी। स्पष्ट है—इस रेखा से दायीं (पूर्व की) ओर ज्यों-ज्यों हम हटते जायेंगे त्यों त्यों सूर्य का उदय उत्तरोत्तर पहले (6 घं.39 मि. से पहले) होता जायेगा, जिसके परिणामस्वरूप, 10 अक्तू., '18 वाली आश्वि. शुक्ल प्रतिपदा का सूर्योदयानन्तरवर्त्ती काल भी उत्तरोत्तर बढ़ता जायेगा। (वह मुहूर्त्त से कहीं अधिक हो जायेगा)। जिसके परिणामस्वरूप, 'क-ख' रेखा से पूर्ववर्त्ती भारतप्रदेश में नवरात्रारम्भ इसी दिन (10 अक्तू., '18 को) ही मनाना होगा। ज्यों-ज्यों हम इस 'क-ख' रेखा से बायीं (पश्चिम की) ओर हटेंगे त्यों त्यों इस प्रतिपदा का सूर्योदयान्तरवर्त्ती काल उत्तरोत्तर घटता जायेगा, जिसके परिणामस्वरूप, इस प्रतिपदा का वहां काल मुहूर्त्ताल्प होने से नवरात्रारम्भ पूर्ववर्त्ती आश्विन अमा के दिन (9 अक्तू., '18 को) होगा। **इस प्रकार स्पष्ट है—इस वर्ष आश्विन नवरात्रारम्भ 'क-ख' रेखा से पूर्ववर्त्ती भारतभाग में 10 अक्तू., '18 को और पश्चिमवर्त्ती भारतभाग में 9 अक्तू., '18 को होगा।** आपका अभीष्ट नगर इस रेखा से पूर्व में है या पश्चिम में यह जानने के लिए उस नगर के अक्षांश-रेखांश के आधार पर उसका स्थान इस चित्र में ढूंढ़ना सरल है।

[भारत का यह मानचित्र देखने से स्पष्ट है कि—9 अक्तू., '18 को नवरात्रारम्भ केवल पश्चिमी राजस्थान के जैसलमेर, भीनमाल, बाड़मेर, शाहगढ़ आदि नगरों एवं पश्चिमी गुजरात के भुज, ध्रांगध्रा, अमरेली, जूनागढ़, जामनगर, राजकोट, सुरेन्द्रनगर, पोरबन्दर, गोण्डल आदि नगरों में ही होगा। शेष पूरे भारत में यह पर्व 10 अक्तू., '18 को ही मनाया जायेगा।]

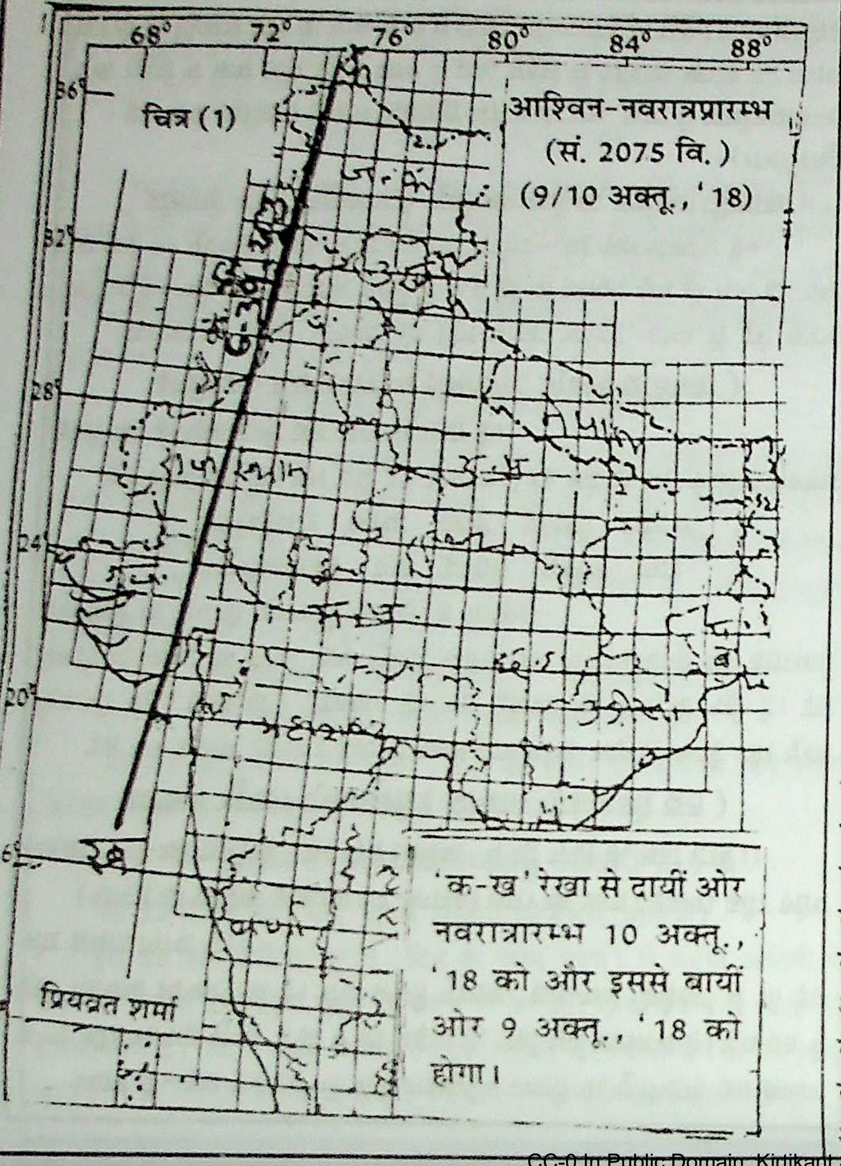

चित्र (1)

आश्विन-नवरात्रप्रारम्भ
(सं. 2075 वि.)
(9/10 अक्तू., '18)

'क-ख' रेखा से दायीं ओर नवरात्रारम्भ 10 अक्तू., '18 को और इससे बायीं ओर 9 अक्तू., '18 को होगा।

प्रियव्रत शर्मा

विजयादशमी (दशहरा)

यह पर्व अपराह्णव्यापिनी (दिनमान के चतुर्थ-पंचमभाग में व्याप्त) आश्विन शुक्ल दशमी में मनाया जाता है। यदि उस समय (अपराह्ण में) श्रवणनक्षत्र भी विद्यमान हो तो उसे महत्त्वाधायक माना जाता है। इस वर्ष 18 अक्तूबर को 15 घं. 29 मि. के बाद दशमी विद्यमान है। आगे दिया **'भारत-मानचित्र (2)' देखिये**—यहां अंकित 'क-ख' रेखा पर स्थित नगरों में 15 घं. 30 मि. पर '18 अक्तू., '18 को अपराह्ण समाप्त होगा। इस रेखा से पश्चिम में स्थित नगरों में अपराह्णकाल 15 घं. 30 मि. के बाद समाप्त होगा, जिससे इन नगरों में दशमी अपराह्णव्यापिनी प्राप्त होगी। इस दिन श्रवण नक्षत्र 24 घं. 33 मि. तक विद्यमान रहेगा, जिससे इस 'क-ख' रेखा से पश्चिम में अपराह्णव्यापिनी दशमी श्रवणयुता भी होगी। अत: यहां निर्विवाद रूप से **'विजयादशमी पर्व'** सिद्ध होता है। **ध्यान रहे**—इस 'क-ख' रेखा से पूर्वस्थ भाग में इस दिन (18 अक्तू., '18 को) अपराह्ण में श्रवणनक्षत्र तो विद्यमान है, लेकिन दशमी अपराह्ण में नहीं है, अत: वहां इस दिन (18 अक्तू., '18 को) शास्त्रनिर्णयानुसार विजयादशमी का योग नहीं बनता, क्योंकि श्रवण नक्षत्र इस विषय में महत्त्वाधायकमात्र है, निर्णायक नहीं। हां, 19 अक्तू., '18 को इस 'क-ख' रेखा से पूर्वस्थ नगरों में दशमी अपराह्णव्यापिनी के रूप में विद्यमान है, जिससे वहां इस दिन विजयादशमी पर्व का योग सिद्ध है।

इस भारत-मानचित्र (2) को देखिये। इस चित्र से स्पष्ट है, यहां दी गयी 'क-ख' रेखा से पश्चिम में स्थित जम्मू-कश्मीर के पश्चिमार्ध, हि.प्र. के भी पश्चिमार्ध, सम्पूर्ण पंजाब, सम्पूर्ण हरियाणा, चण्डीगढ़, दिल्ली, सम्पूर्ण राजस्थान, म.प्र. के पश्चिमार्ध, सम्पूर्ण गुजरात, पूर्वस्थ कुछ भाग के अतिरिक्त सम्पूर्ण महाराष्ट्र, डामन, डयू, गोवा, सम्पूर्ण कर्णाटक, सम्पूर्ण केरल, आन्ध्रप्रदेश के पश्चिमार्ध तथा लगभग सम्पूर्ण तामिलनाडू में 18 अक्तू., '18 को विजयादशमी मनानी होगी। वहां इस दिन दशमी श्रवण के साथ अपराह्णव्यापिनी है। लेकिन इस 'क-ख' रेखा से पूर्वस्थ भारतभाग में यह पर्व 19 अक्तू., '18 को मनाना होगा, क्योंकि वहां दशमी इसी दिन अपराह्णव्यापिनी प्राप्त है।

यह पर्व 19 अक्तू., '18 को मनाना होगा, क्योंकि वहां दशमी इसी दिन अपराह्णव्यापिनी प्राप्त है।

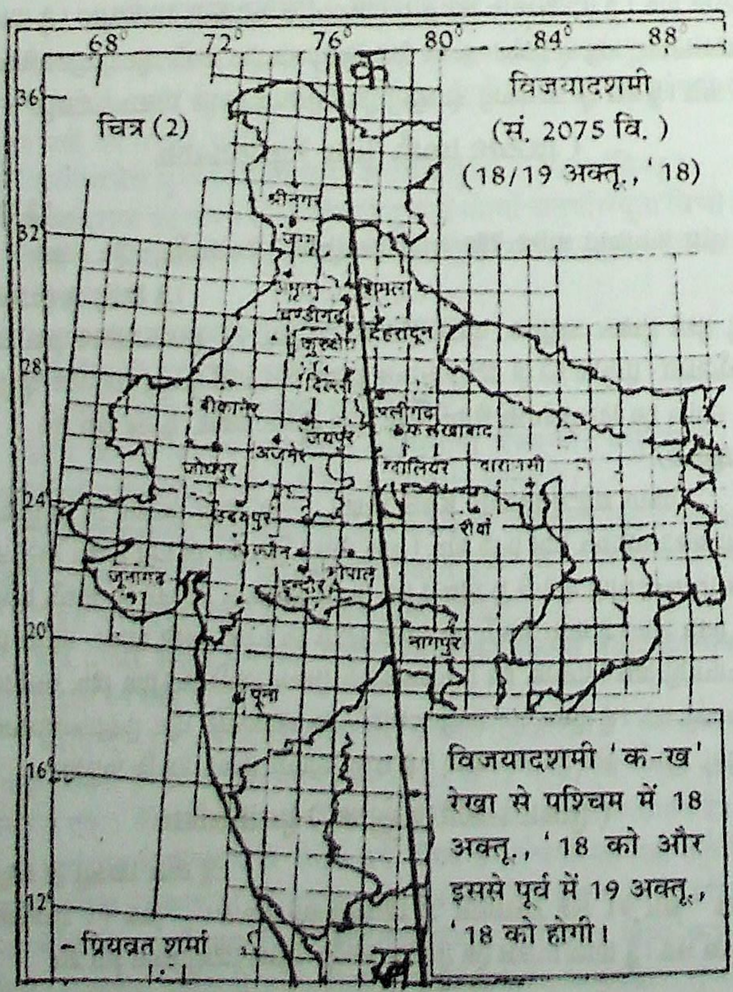
68°
72°
76°
80°
84°
88°
36°
32°
28°
24°
20°
16°
12°
क
ख
श्रीनगर
जम्मू
अमृतसर
शिमला
चण्डीगढ़
कुरुक्षेत्र
देहरादून
दिल्ली
बीकानेर
अलीगढ़
फर्रुखाबाद
जयपुर
अजमेर
जोधपुर
ग्वालियर
वाराणसी
उदयपुर
रीवाँ
उज्जैन
भोपाल
इन्दौर
जूनागढ़
नागपुर
पूना

चित्र (2)

विजयादशमी
(सं. 2075 वि.)
(18/19 अक्तू., '18)

विजयादशमी 'क-ख' रेखा से पश्चिम में 18 अक्तू., '18 को और इससे पूर्व में 19 अक्तू., '18 को होगी।

–प्रियव्रत शर्मा

इस उपरोक्त विवेचन का विशद स्पष्टीकरण इस प्रकार है–

इस वर्ष (सं. 2075 वि. में) 'विजयादशमी पर्व' भारत के इन आगे अंकित प्रदेशों, नगरों में (जो इस चित्र (2) में अंकित 'क-ख' रेखा से पश्चिम में स्थित हैं) 18 अक्तू., '18 को मनाना होगा–

पश्चिमी जम्मू-कश्मीर के कठुआ, अनन्तनाग, राजौरी, ऊधमपुर, जम्मू, श्रीनगर, बारामूला आदि नगर; **पश्चिमी हि.प्र.** के शिमला, सोलन, डल्हौजी, ऊना, नंगल, नालागढ़, मण्डी, कुल्लू, मनाली, बिलासपुर, चम्बा, धर्मशाला, कांगड़ा, हमीरपुर आदि नगर; **सम्पूर्ण पंजाब, सम्पूर्ण हरियाणा, चण्डीगढ़, दिल्ली, सम्पूर्ण राजस्थान, सम्पूर्ण गुजरात, पश्चिमी म.प्र.** के उज्जैन, इन्दौर, भोपाल आदि नगर, नागपुर, चन्द्रपुर, गोण्डिया, गढ़चिराली आदि पूर्वी भागस्थ कुछ नगरों के अतिरिक्त **सम्पूर्ण महाराष्ट्र, गोवा, डामन-ड्यू, सम्पूर्ण कर्णाटक, सम्पूर्ण केरल, पश्चिमी आन्ध्र प्रदेश** तथा लगभग **सम्पूर्ण तामिलनाडु**–

इन पूर्वोक्त प्रदेशों, नगरों के अलावा शेष सभी भारतीय प्रदेशों, नगरों में (जो चित्र (2) में 'क-ख' रेखा से पूर्व में स्थित हैं) यह पर्व 19 अक्तू., '18 को मनाना होगा।

आपका अभीष्ट नगर **इस चित्र (2)** में अंकित 'क-ख' रेखा से पूर्व में स्थित है या पश्चिम में–यह ज्ञात करने के लिए उस नगर के अक्षांश, रेखांश इसी पंचांग में दी गयी **'अक्षांशादि सारणी'** से ज्ञात कीजिये। **इस भारत-मानचित्र (2)** में अक्षांश और रेखांश की रेखाएं एक-एक अंश के अन्तर पर स्पष्टता से अंकित हैं। उनके आधार पर इस **चित्र (2)** में अपने अभीष्ट नगर का स्थान जानकर आप सरलता से यह जान सकते हैं कि–आपका वह नगर 'क-ख' रेखा से किस ओर स्थित है।

श्रीहनुमान् जयन्ती (उत्तर भारतीय)

(कार्त्ति. कृष्ण चतुर्दशी)

उ. भारत में अर्धरात्रिव्यापिनी कार्त्ति. कृष्ण चतुर्दशी के दिन श्री हनुमान जयन्ती मनायी जाती है। इस वर्ष यह चतुर्दशी 5 नवं., '18 को (5-6 नवं. की मध्यगतरात्रि में) अर्धरात्रि (निशीथ) के समय (24 घं. 5 मि. पर) विद्यमान

होगी। अतः उ. भारत में यह पर्व 5 नवं., '18 (चन्द्रवार) को मनाया जायेगा।

गोपाष्टमी (कार्त्तिक शुक्ल अष्टमी)

यह पर्व नवमीविद्धा कार्त्ति. शुक्ल अष्टमी को मनाया जाता है। **इस वर्ष यह अष्टमी 16 नवं., '18 को नवमीविद्धा है, तदनुसार इसे 16 नवं., 18 के दिन ही लिखा गया है।**

अक्षयनवमी (कार्त्तिक शुक्ल नवमी)

कार्त्तिक शुक्ल नवमी युगादि तिथि है। कृष्णपक्ष की मनु-युगादि तिथियां अपराह्णव्यापिनी और शुक्लपक्ष की पूर्वाह्णव्यापिनी ली जाती हैं। इस नियम के अनुसार यहां कार्त्तिक शुक्ल नवमी पूर्वाह्णव्यापिनी ली जायेगी। यहां दिनमान के दो समान-समान खण्ड करने पर पहले खण्ड को पूर्वाह्ण माना है। यदि दोनों दिन तिथि पूर्वाह्ण के एकदेश में व्याप्त हो, तो उस स्थिति में युगादि तिथिसम्बन्धी श्राद्ध के लिए पहला दिन ही स्वीकार किया जाये। यदि दोनों दिन पूर्वाह्णैकदेशव्यापिनी नवमी हो तो अष्टमी विद्धा लें—" **नवमी सर्वत्र अष्टमीविद्धैव ग्राह्या।** "

—*(धर्मसिन्धु)*

इस वर्ष कार्त्ति. शुक्ल नवमी दोनों दिन पूर्वाह्ण के एक देश को व्याप्त कर रही है, अतः इस नियमानुसार यहां नवमी अष्टमी विद्धा ही ली जायेगी। **एतदनुसार इस वर्ष अक्षयनवमी 16 नवं., '18 को होगी, क्योंकि नवमी इसी दिन अष्टमी से विद्ध है।**

ध्यान रहे—'**कूष्माण्ड**' नवमी की तिथि और उसके निर्णायक तत्त्व भी यही हैं।

कालाष्टमी (मार्ग. कृष्ण अष्टमी)

श्रीकालाष्टमी (श्रीभैरवाष्टमी) की तिथि के निर्णायक दो मत हैं। एक मत मध्याह्णव्यापिनी और दूसरा प्रदोषव्यापिनी मार्ग. कृष्ण अष्टमी के दिन '**कालाष्टमी**' मानता है। अधिकतर सम्प्रदाय प्रदोषव्यापिनी में इसे मान्यता देते हैं। यदि अष्टमी पहले दिन उभय(मध्याह्ण, प्रदोष) व्यापिनी और दूसरे दिन केवल मध्याह्णव्यापिनी हो तो पहले (उभयव्यापिनी वाले) दिन कालाष्टमी मनायी जाती है। यदि अष्टमी पहले दिन केवल प्रदोषव्यापिनी और दूसरे दिन उभयव्यापिनी हो तो दूसरे दिन यह पर्व होता है। अष्टमी यदि पहले दिन प्रदोषव्यापिनी न हो और वह दूसरे दिन केवल मध्याह्ण को ही व्याप्त करे तो भी यह पर्व दूसरे दिन होगा। यदि अष्टमी पहले दिन केवल प्रदोषव्यापिनी और दूसरे दिन मध्याह्णव्यापिनी हो तो पहले दिन (प्रदोषव्यापिनी वाले दिन) ही यह पर्व मनाना चाहिए, ऐसा **धर्मसिन्धुकार** आदि धर्मशास्त्रियों का निर्णय है—" **यदा पूर्वत्र प्रदोषव्याप्तिरेव, परत्र मध्याह्णव्याप्तिरेव तदा बहुशिष्टाचारानुरोधात् प्रदोषव्याप्त्यैव निर्णयो न मध्याह्णव्याप्त्या—इति भाति।** "—*(धर्मसिन्धु)*

इस वर्ष पहले दिन (29 नवं., '18 को) अष्टमी प्रदोषव्यापिनी है, वह दूसरे दिन (30 नवं., '18 को) केवल मध्याह्णव्यापिनी ही है, **अतः उपरोक्त धर्मसिन्धु-वचनानुसार यह पर्व पहले ही दिन (29 नवं., '18 को) मनाना होगा।**

प्रदोष व्रत (पौष शुक्ल त्रयोदशी)

इस वर्ष पौष शुक्ल त्रयोदशी 18 जन., '19 को 20 घं. 22 मि. से 20 घं. 27 मि. तक के प्रदोषकाल को व्याप्त कर रही है। दूसरे दिन 19 जन., '19 को तो वह प्रदोष को स्पर्श नहीं करती है। **अतः यहां प्रदोष व्रत 18 जन., '19 को ही किया जायेगा।**

संकष्ट चतुर्थी (माघ कृष्ण चतुर्थी)

इस वर्ष यह चतुर्थी दो दिन (23 व 24 जन., '19 को) चन्द्रोदय को स्पर्श नहीं कर रही है, अतः धर्मशास्त्र-निर्देशानुसार यहां 'संकष्ट चतुर्थी' व्रत दूसरे दिन (**24 जन., '19 को**) ही करना होगा—

" उभयदिने चन्द्रोदयव्यापित्वे तृतीयायुतैव ग्राह्या। दिनद्वये चन्द्रोदय-व्याप्त्यभावे परैव।"—*(धर्मसिन्धु)*

श्री/वसन्त पंचमी (माघ शुक्ल पंचमी)

श्रीपंचमी और वसन्त पंचमी—दोनों पर्व पूर्वाह्णव्यापिनी माघ शुक्ल पंचमी में मनाये जाते हैं। यदि पंचमी दोनों दिन पूर्वाह्णव्यापिनी हो तो पूर्वविद्धापंचमी के दिन इन पर्वों को मनाया जाता है—

" इयं परत्रैव पूर्वाह्णव्याप्तौ परा, अन्यथा पूर्वैव।" –*(धर्मसिन्धु)*

स्कन्दपुराण का वाक्य है—**" पंचमी तु सदा कार्या चतुर्थीसंयुता विभो।"**

देखिये—दिवोदास ने तो स्पष्ट शब्दों में चतुर्थीविद्धा माघशुक्ल पंचमी को प्रशस्य लिखा है—

" माघ शुक्ला पंचमी तु पूर्वविद्धा प्रशस्यते।"

पैठीनसि भी यही मत रखते हैं—

" प्रतिपत्पंचमी चैव कर्त्तव्या पूर्वसंयुता "

अपि च—युग्मवाक्य **'युग्माग्नि-युगभूतानां षण्मुन्योः वसुरन्ध्रयो।.... तिथ्योर्युग्मं महाफलम्।'** भी इसी मत का समर्थन करता है।

निर्णयसिन्धुकार का कथन है कि—माधव के मतानुसार पंचमी पूर्वविद्धा ग्राह्य है, लेकिन **हेमाद्रि** इसे परविद्धा ग्राह्य मानते हैं—

" इयं माधवमते पूर्वा ग्राह्या, हेमाद्रिमते परा।"

इस प्रकार स्पष्ट है—यहां धर्मशास्त्रियों का बहुमत पूर्वविद्धा पंचमी की ग्राह्यता के पक्ष में है।

ध्यान दें—इस वर्ष माघशुक्ल पंचमी 9 और 10 फरवरी, '19—दोनों दिन पूर्वाह्णव्यापिनी है। 9 फर. को यह 12 घं. 26 मि. से 12 घं. 37 मि. तक (पूर्वाह्ण-समाप्ति तक) केवल 11 मि. के लिए ही पूर्वविद्धा के रूप में विद्यमान है।

यहां यह विशेषरूप से ध्यान देने योग्य है—पंचमी का यह चतुर्थीवेध अल्पकालिक (केवल 11 मिनटात्मक ही) है। अतः यह वेध भारत के पश्चिमी भाग में ही रहेगा, पूर्वी भाग में नहीं। **भारत के पंजाब, हरियाणा, जम्मू-कश्मीर, हि.प्र., उ.खण्ड, पश्चिमी उ.प्र., दिल्ली, राजस्थान, प. मध्यप्रदेश, गुजरात, महाराष्ट्र, कर्णाटक, केरल, तामिलनाडु आदि पश्चिमस्थ प्रदेशों में पंचमी का चतुर्थीवेध रहेगा, जिससे इन प्रदेशों में ये दोनों पर्व 9 फर., '19 को मनाने होंगे।** भारत के शेष प्रदेशों में इन पर्वों को 10 फर. के दिन ही मनाना होगा, क्योंकि वहां पंचमी चतुर्थीविद्धा नहीं होगी। वहां केवल 10 फर. को ही वह पूर्वाह्णव्यापिनी है। स्पष्टता के लिए इस पर्व से सम्बद्ध नीचे दिया 'भारत मानचित्र' देखिये—

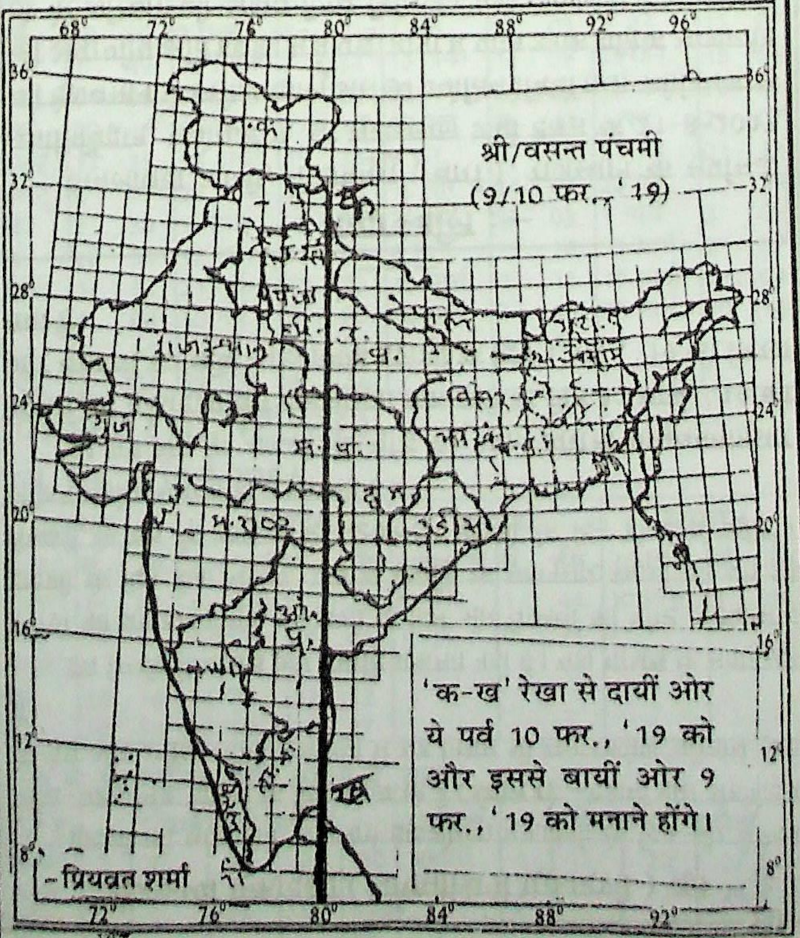

श्री/वसन्त पंचमी
(9/10 फर., '19)

'क-ख' रेखा से दायीं ओर ये पर्व 10 फर., '19 को और इससे बायीं ओर 9 फर., '19 को मनाने होंगे।

—प्रियव्रत शर्मा

यहां दिये इस चित्र में अंकित 'क-ख' रेखा से पश्चिम भाग में स्थित नगरों में ये पर्व 9 फर. को मनाने होंगे। इस रेखा से पूर्व में स्थित नगरों में तो ये पर्व 10 फर. को ही मनाये जायेंगे।

आपका अभीष्ट नगर इस 'क-ख' रेखा से पूर्व में है या पश्चिम में—यह ज्ञात करने के लिए उस नगर के अक्षांश, रेखांश इसी पंचांग में दी गयी '**अक्षांशादि सारणी**' से ज्ञात कीजिये। इस '**भारत-मानचित्र**' में अक्षांश और रेखांश की रेखाएं एक-एक अंश के अन्तर पर स्पष्टता से अंकित हैं। उनके आधार पर इस मानचित्र में अपने नगर का ठीक स्थान जानकर आप यह जान सकते हैं कि—वह नगर 'क-ख' रेखा से पूर्व में है या पश्चिम में।

जान लें—यह 'क-ख' रेखा जहां से गुजर रही है, वहां स्थित नगर-ग्रामों में 9 फर. को 12 घं. 26 मि. पर पूर्वाह्न समाप्त होगा।

होलिका-दहनकाल

इस वर्ष फाल्गुन पूर्णिमा 20 मार्च, '19 को ही प्रदोषव्यापिनी है और वह 21 मार्च, '19 को प्रातः 7 घं. 12 मि. पर समाप्त हो जाती है। 20 मार्च, '19 को भद्रा निशीथ से पूर्व 20 घं. 58 मि. पर समाप्त हो जाती है। इस स्थिति में प्रदोष का काल भद्रादूषित होने से उस समय होलिकादाह नहीं हो सकता। इस स्थिति में धर्मशास्त्र का प्रतिपादन है कि—होलिकादाह रात्रि में भद्रासमाप्ति पर, निशीथ से पूर्व करना चाहिए। '**धर्मसिन्धु**' कार का वचन है—

" परदिने प्रदोषस्पर्शाभावे पूर्वदिने यदि निशीथात् प्राग्भद्रासमाप्तिस्तदा भद्रावसानोत्तरमेव होलिकादीपनम् ॥"

इस प्रमाण वाक्यानुसार इस वर्ष 20 मार्च, '19 को भद्रा की समाप्ति पर 20 घं. 58 मि. के बाद निशीथ से पहले ही होलिकादाह किया जायेगा।

रात्रिमान के आधा को सूर्यास्तकाल में जोड़ने पर निशीथकाल प्राप्त हो जाता है।

चैत्रकृष्ण एकादशी (पापमोचिनी एकादशी) व्रत

द्वादशी की वृद्धि होने पर स्मार्त्त द्वादशीयुता एकादशी के दिन और वैष्णव षष्टि-घट्यात्मक द्वादशी के दिन व्रत करते हैं। **ध्यान रहे**—दशमी द्वारा अरुणोदय के वेध और अवेध—दोनों स्थितियों में यह नियम भी समानरूपेण चरितार्थ होता है।

इस स्थिति में **माधव** और **हेमाद्रि** एकमत नहीं हैं। यहां **माधव** के मतानुसार स्मार्त्तों का व्रत द्वादशीयुता एकादशी के दिन और वैष्णवों का षष्टि-घट्यात्मक द्वादशी के दिन होना चाहिए, जबकि **हेमाद्रि** के मतानुसार स्मार्त्तों का व्रत भी वैष्णवों के व्रत के साथ षष्टि-घट्यात्मक द्वादशी के दिन ही होना चाहिए। लेकिन यहां माधवमत ही बहुसम्मत है।

इस वर्ष चैत्र कृ. द्वादशी की वृद्धि है। **अतः उपरोक्त माधवमतानुसार स्मार्त्तों का एकादशी व्रत द्वादशीयुता एकादशी के दिन 31 मार्च, '19 को और वैष्णवों का षष्टि-घट्यात्मक द्वादशी के दिन 1 अप्रै., '19 को लिखा गया है।**

— — —

—: श्रद्धाञ्जलि :—

अमलावदा आली, मोखमपुरा (बाराँ), राजस्थान के सुप्रसिद्ध ज्योतिर्विद्वान्, वयोवृद्ध पं. श्री सुन्दरलाल शर्मा दैवज्ञ के 21-8-2017 को देहावसान से उनके श्रद्धालु असंख्य ज्योतिषप्रेमियों तथा ज्योतिषजगत् की अपूरणीय क्षति हुई है। मुझे प्रचुरमात्रा में प्राप्त उनके हार्दिक आशीर्वाद तो मेरे परिवार की अक्षय दिव्य निधि है। प्रभु से प्रार्थना है—वे उनकी दिवंगत आत्मा को अपने चरणों में स्थान दें और उनके परिवार-सदस्यों को उनका यह असह्य वियोग सहन करने की शक्ति।

—सश्रद्ध

प्रियव्रत शर्मा,

है।

प्रियव्रत शर्मा,

गण्डमूल नक्षत्रों का प्रारम्भ एवं समाप्तिकाल (भा. स्टैं. टा.)

(1 जनवरी, सन् 2018 से 5 अप्रैल, सन् 2019 ई. तक)

प्रारम्भ			समाप्त			प्रारम्भ			समाप्त			प्रारम्भ			समाप्त			प्रारम्भ			समाप्त		
2018 ई.	घं.	मि.	2018 ई.	घं.	मि.	2018 ई.	घं.	मि.	2018 ई.	घं.	मि.	2018 ई.	घं.	मि.	2018 ई.	घं.	मि.	2018-19 ई.	घं.	मि.	2018-19 ई.	घं.	मि.
4 जन.	6	07	6 जन.	2	15	2 मई	17	38	4 मई	22	32	29 अग.	18	48	31 अग.	20	46	25 दिस.	15	55	27 दिस.	11	41
13 जन.	10	14	15 जन.	16	19	12 मई	13	51	14 मई	12	30	7 सितं.	12	56	9 सितं.	8	01	3 जन.	11	03	5 जन.	15	07
23 जन.	8	08	25 जन.	8	21	20 मई	22	44	22 मई	20	28	16 सितं.	2	49	18 सितं.	7	34	13 जन.	11	05	15 जन.	13	55
31 जन.	17	35	2 फर.	12	58	30 मई	0	55	1 जून	5	52	26 सितं.	1	01	28 सितं.	2	22	22 जन.	2	27	23 जन.	20	46
9 फर.	16	55	11 फर.	22	59	8 जून	23	02	10 जून	22	29	4 अक्टू.	20	48	6 अक्टू.	17	10	30 जन.	16	40	1 फर.	21	07
19 फर.	13	37	21 फर.	14	01	17 जून	6	20	19 जून	2	46	13 अक्टू.	11	35	15 अक्टू.	15	33	9 फर.	17	30	11 फर.	21	12
28 फर.	3	51	1 मार्च	23	47	26 जून	7	07	28 जून	12	21	23 अक्टू.	8	47	25 अक्टू.	9	26	18 फर.	14	01	20 फर.	7	59
9 मार्च	0	45	11 मार्च	6	28	6 जुला.	6	53	8 जुला.	7	38	1 नवं.	2	34	2 नवं.	23	59	26 फर.	23	03	1 मार्च	3	06
18 मार्च	20	09	20 मार्च	19	44	14 जुला.	16	06	16 जुला.	11	12	9 नवं.	20	34	12 नवं.	0	02	8 मार्च	23	16	11 मार्च	2	57
27 मार्च	11	27	29 मार्च	8	39	23 जुला.	12	53	25 जुला.	18	21	19 नवं.	17	54	21 नवं.	18	30	18 मार्च	0	11	19 मार्च	19	04
5 अप्रै.	9	19	7 अप्रै.	14	32	2 अग.	13	12	4 अग.	14	59	28 नवं.	8	08	30 नवं.	5	20	26 मार्च	7	15	28 मार्च	10	10
15 अप्रै.	4	27	17 अप्रै.	3	12	11 अग.	2	54	12 अग.	21	26	7 दिसं.	4	35	9 दिसं.	8	07	5 अप्रै.	5	36	—	—	—
23 अप्रै.	17	03	25 अप्रै.	15	06	19 अग.	19	13	22 अग.	0	33	17 दिसं.	3	07	19 दिसं.	4	37						

पंचकों का प्रारम्भ एवं समाप्तिकाल (भा. स्टैं. टा.)

(1 जनवरी, सन् 2018 से 5 अप्रैल, सन् 2019 ई. तक)

प्रारम्भ			समाप्त			प्रारम्भ			समाप्त			प्रारम्भ			समाप्त			प्रारम्भ			समाप्त		
2018 ई.	घं.	मि.	2018 ई.	घं.	मि.	2018 ई.	घं.	मि.	2018 ई.	घं.	मि.	2018-19 ई.	घं.	मि.	2018-19 ई.	घं.	मि.	2019 ई.	घं.	मि.	2019 ई.	घं.	मि.
19 जन.	14	17	24 जन.	8	33	5 जून	4	33	9 जून	23	10	19 अक्टू.	14	01	24 अक्टू.	9	22	5 मार्च	1	44	10 मार्च	1	18
15 फर.	20	39	20 फर.	14	02	2 जुला.	11	07	7 जुला.	7	39	15 नवं.	22	17	20 नवं.	18	33	1 अप्रै.	8	21	—	—	—
15 मार्च	4	13	19 मार्च	20	08	29 जुला.	17	06	3 अग.	14	25	13 दिसं.	6	11	18 दिसं.	4	16						
11 अप्रै.	12	37	16 अप्रै.	4	05	25 अग.	23	14	30 अग.	20	01	9 जन.	13	14	14 जन.	12	52						
9 मई	20	59	13 मई	13	31	22 सितं.	6	10	27 सितं.	1	54	5 फर.	19	34	10 फर.	19	37						

रविवार-कैलेण्डर (1 जनवरी, सन् 2018 से 30 अप्रैल, सन् 2019 ई. तक)

2018 ई.	रविवार की तारीखें					2018 ई.	रविवार की तारीखें					2018 ई.	रविवार की तारीखें					2019 ई.	रविवार की तारीखें				
जनवरी	7	14	21	28	—	मई	6	13	20	27	—	सितम्बर	2	9	16	23	30	जनवरी	6	13	20	27	—
फरवरी	4	11	18	25	—	जून	3	10	17	24	—	अक्टूबर	7	14	21	28	—	फरवरी	3	10	17	24	—
मार्च	4	11	18	25	—	जुलाई	1	8	15	22	29	नवम्बर	4	11	18	25	—	मार्च	3	10	17	24	31
अप्रैल	1	8	15	22	29	अगस्त	5	12	19	26	—	दिसम्बर	2	9	16	23	30	अप्रैल	7	14	21	28	—

प्रयागराज में अर्द्धकुम्भ योग (4 फरवरी, सन् 2019 ई.)

"माघी अमावस के दिन यदि वृश्चिक में गुरु एवं सूर्य-चन्द्र (दोनों) मकर राशि में हों तो प्रयागराज में अर्द्धकुम्भ का योग बनता है।" इस महापुण्यप्रद योग के समय **'प्रयागराज'** में त्रिवेणी-संगम पर मन्त्रजाप, स्नान-दान आदि का भारी माहात्म्य है।

इस वर्ष (संवत् 2075 वि. में) माघी अमा के दिन 4 फरवरी, सन् 2019 ई. को गुरु वृश्चिक में व सूर्य एवं चन्द्र (दोनों) मकर राशि में होंगे। अत: इसदिन 4 फरवरी, सन् 2019 ई. को प्रयागराज में अर्द्धकुम्भ का योग बन रहा है।

अर्द्धकुम्भ पर पुरातन परम्परा के अनुसार महात्माओं के शाही स्नान के अवसर पर धर्मप्राण जनता पुण्यात्मा सन्तों के दर्शनों का लाभ प्राप्त कर सकेगी। षड्दर्शन के 13 अखाड़ों के संन्यासी सन्त, वैष्णव, उदासीन व निर्मल सम्प्रदाय के सन्त-महात्मा भी त्रिवेणी संगम पर शाही स्नानार्थ पधारेंगे। धर्मप्राण जनता भी निम्नांकित तिथियों में त्रिवेणी संगम पर महात्माओं के दर्शन एवं स्नान-दान-जाप आदि करके पुण्यार्जन कर सकती है।

इस पर्व की प्रमुख-प्रमुख स्नानतिथियां निम्नांकित हैं—

1. मकर संक्रान्ति (14 जनवरी, सन् 2019 ई.)।

2. पौष शुक्ल एकादशी (17 जनवरी, सन् 2019 ई.)।

3. पौष शुक्ल पूर्णिमा (21 जनवरी, सन् 2019 ई.)।

4. माघी अमावस्या (4 फरवरी, सन् 2019 ई.) (प्रमुख स्नानतिथि)—

अर्द्धकुम्भ प्रयागराज का प्रमुख स्नान इसी दिन (मौनी अमावस वाले दिन ही) होगा। इस अर्द्धकुम्भ का प्रमुख शाही स्नान माघी अमावस का ही माना जायेगा। इस दिन **'सोमवती अमा'** होने से स्नान-दानादि का विशेष महत्त्व शास्त्रों में वर्णित है और इसी दिन 7 बजकर 57 मिनट से लेकर सूर्यास्त पर्यन्त **'महोदय योग'** भी घटित होगा, जिससे स्नानादि का माहात्म्य इसदिन कोटिगुणा हो जायेगा।

5. माघ शुक्ल पंचमी (9 फरवरी, सन् 2019 ई.) (वसन्त-पंचमीदिन)।

6. माघ शुक्ल सप्तमी (12 फरवरी, सन् 2019 ई.)—

इसदिन रथ सप्तमी है। इसदिन सूर्योदय से पहले **'अरुणोदयकाल'** में त्रिवेणीसंगम में स्नान-दान का विशेष माहात्म्य पुराणों में वर्णित है।

7. कुम्भसंक्रान्ति-पुण्यकाल (13 फरवरी, सन् 2019 ई.)—

इसदिन मध्याह्न बाद तक कुम्भसंक्रान्ति का पुण्यकाल रहेगा।

8. माघी पूर्णिमा (19 फरवरी, सन् 2019 ई.)—

इसदिन तीर्थोदक स्नान का विशेष माहात्म्य माना गया है।

यह इस पर्व की अन्तिम स्नानतिथि होगी। इस दिन एक मास से चला आ रहा अर्द्धकुम्भ स्नान सम्पन्न हो जाता है।

पीछे हमने प्रमुख-प्रमुख सभी स्नानतिथियों की चर्चा कर दी है। सम्भव हो तो इन सभी स्नानतिथियों के दिन त्रिवेणी-संगमस्थल पर स्नान कर अक्षुण्ण पुण्य अर्जित करने का प्रयत्न करना चाहिए। जो लोग इसदिन कुम्भ पर्व पर एक मास तक प्रयाग में वास करेंगे, उन्हें पूरा माघ मास प्रतिदिन त्रिवेणी में स्नान करना ही चाहिए।

जो प्रयागराज न जा सकें, वे पुण्यलाभ कैसे करें?

जो श्रद्धालु लोग प्रयाग न जा सकें तो वे केवल माघ मास में अथवा केवल इस अर्द्धकुम्भ पर्व के दिन किसी भी समीपस्थ महानदी के संगम पर; वहां भी न जा सकें तो किसी महानदी में; वहां भी न पहुंच सकें तो किसी छोटी नदी में; वहां भी सम्भव न हो तो किसी समीपस्थ तालाब, बावड़ी में स्नान करें। यदि शारीरिक दुर्बलता के कारण बावड़ी आदि तक जाना भी सम्भव न हो तो घर पर ठण्डे पानी से; यदि रुग्णादि अवस्था में शीतल जल से भी स्नान करना कठिन हो तो गर्म जल से भी स्नान करके माघस्नान का फल प्राप्त किया जा सकता है। दयालु शास्त्रकारों द्वारा सर्वविध असमर्थ श्रद्धालुओं को भी माघस्नान का यथासम्भव फल प्राप्त कराने के लिए ऐसे उदार विकल्प दिये हैं। उल्लिखित असमर्थता की स्थिति में माघस्नानमन्त्र का उच्चारण करते हुए प्रयागराज (त्रिवेणी-संगम) का ध्यान करके जहां-कहीं भी स्नान करना चाहिए। समुद्रतटवर्ती लोगों को इस माघमास में समुद्रस्नान करना चाहिए; क्योंकि शास्त्रों में माघ में समुद्रस्नान को अतिप्रशस्त लिखा है—

"यत्र कुत्रापि यो माघे प्रयाग-स्मरणान्वित:।
करोति मज्जनं तीर्थे स लभेत परमं पदम्॥"

स्नान का काल

स्नान का सर्वोत्तम काल **'अरुणोदयकाल'** है (सूर्योदय से पहले पूर्वीक्षितिज में

स्नान-दान का विशेष माहात्म्य पुराणों में वर्णित है

7. कुम्भसंक्रान्ति-पुण्यकाल (13 फरवरी, सन् 2019 ई.)—

स्नान का काल

स्नान का सर्वोत्तम काल '**अरुणोदयकाल**' है (सूर्योदय से पहले पूर्वीक्षितिज में

जो प्रकाश नजर आता है, उसे '**अरुणोदयकाल**' कहते हैं)। अरुणोदयकाल में भी स्नान के लिए वह समय सर्वोत्कृष्ट है, जब तारे दिखाई पड़ रहे हों, इसके बाद सूर्योदय तक का काल, जब तारे छिप चुके हों, अपेक्षाकृत कुछ कम महत्त्व का है। सूर्योदय के बाद प्रात:काल स्नान के लिए सामान्य माना गया है—

"उत्तमं तु सनक्षत्रं लुप्ततारं तु मध्यमम्।
सवितर्युदिते भूप ततो हीनं प्रकीर्तितम्॥"

नारदपुराण में तो सूर्योदयानन्तर स्नान का भी माहात्म्य लिखा है—

"सम्प्राप्ते माघमासे तु तपस्विजनवल्लभे।
क्रोशन्ति सर्ववारीणि समुद्गच्छति भास्करे॥
पुनीमस्तस्य पापानि त्रिविधानि न संशयः॥"

इस अर्द्धकुम्भ पर्व के प्रमुख स्नान के दिन (4 फरवरी, 2019 ई. को) तो अरुणोदयकाल से लेकर सारा दिन सूर्यास्त तक त्रिवेणी में कभी भी स्नान किया जा सकता है; क्योंकि अर्द्ध-कुम्भयोग के कारण पूरा दिन पवित्र माना जाता है। स्नान करते समय **पद्मपुराण** के इस मन्त्र का जाप भी करना चाहिए—

"दु:खदारिद्र्-यनाशाय श्रीविष्णोस्तोषणाय च।
प्रात:स्नानं करोम्यद्य माघे पापविनाशनम्॥
मकरस्थे रवौ माघे गोविन्दाच्युत माधव।
स्नानेनानेन मे देव यथोक्तफलदो भव॥"

इस मन्त्र को मन-ही-मन जपते हुए श्रीविष्णु का ध्यान करते हुए स्नान करें। स्नान के समय बातचीत न करें।

दान—त्रिवेणी में माघ स्नान करके प्रतिदिन निर्धनों को तिल और शक्कर (चीनी) दान करें। इसमें तीन भाग तिल और चौथा भाग शक्कर होनी चाहिए। इस विषय में **नारदपुराण** का वाक्य है—

"अहन्यहनि दातव्यास्तिलाः शर्करयान्विताः।
त्रिभागस्तु तिलानां हि चतुर्थः शर्करयान्वितः॥"

इस समय तिल-शक्कर के लड्डू या तिल से बने खाद्य पदार्थ भी दान करें। इस पुण्यप्रद अवसर पर दान की भारी महिमा है। तिल, शक्कर के अलावा निर्धनों एवं सन्त-महात्माओं को श्रद्धापूर्वक तिलनिर्मित मिठाई, गर्म कम्बल, रेशमी आदि वस्त्र, अन्न, सुवर्ण आदि का भी यथाशक्ति दान करें। यह दान अर्द्ध कुम्भपर्व योग के दिन (4 फरवरी, 2019 ई. को) विशेषरूप से करना चाहिए। इस अर्द्ध कुम्भयोग में कलशदान का भी माहात्म्य है।

कर्त्तव्य और अकर्त्तव्य—माघस्नान के दिनों में इन्द्रियों को संयत रखकर नियमपूर्वक रहना चाहिए। काम, क्रोध और लोभ से दूर रहें। किसी भी प्रकार के पाप की ओर प्रवृत्ति से बचें। माघ-स्नानावधि में मूली, गाजर, शलगम आदि के प्रयोग का शास्त्रकारों ने निषेध लिखा है—

"माघे यत्नेन सन्त्याज्यं मूलकं मदिरोपमम्।
पितृणां देवतानां च मूलकं नैव दापयेत्॥"

माघस्नान के दिनों में एक मास तक शीत से बचने के लिए अग्नि का सेवन न करें। अग्नि का सेवन केवल होम (यज्ञ) के लिए ही किया जाना चाहिए, ऐसा शास्त्रादेश है—

"न वह्निं सेवयेत् स्नातो ह्यस्नातोऽपि वरानने।
होमार्थं सेवयेद् वह्निं शीतार्थं न कदाचन॥"

इस प्रकार शास्त्रोक्त विधि-निषेधों का अनुसरण करते हुए स्नान-दानादि द्वारा सर्वथा शुद्ध, निष्पाप एवं पुण्य अन्तरात्मा लिये हुए श्रद्धालुओं को प्रयागराज से लौटकर भविष्य में किसी प्रकार का मानसिक, वाचिक एवं शारीरिक पाप करने से सर्वथा विमुख रहने का पूरा प्रयत्न करना चाहिए, ताकि अर्द्ध-कुम्भ जैसे पर्व पर स्नान, जप, दान आदि से अर्जित महान् पुण्यसंचय बिखर न जाये—

"यत्नेन सञ्चितौ रक्षन् धर्मार्थौ नावसीदति।"

अर्द्ध कुम्भपर्व पर त्रिवेणीसंगम में स्नान एवं पूजनविधि

प्रमुखस्नान (4 फरवरी, 2019 ई.) के दिन प्रात: अरुणोदयकाल में दैनिक स्नान-सन्ध्यादि से निवृत्त होकर स्नानकर्ता यह संकल्प करे—

त्रिवेणीस्नानसंकल्प—"ओम् विष्णुः विष्णुः विष्णुः, अद्य ब्रह्मणो वयसो द्वितीयपरार्धे श्रीश्वेतवाराह-कल्पे जम्बूद्वीपे भारतवर्षे विरोधकृत्-संवत्सरे मकरस्थे सूर्ये वृश्चिकस्थे गुरौ माघमासे अमायां तिथौ चन्द्रवासरे अमुकगोत्रः अमुकनामाऽहम् अद्यावधि बोधाबोधपूर्वं कृतानां पापानां मार्जनाय जन्म-मरणावर्त्तान्मुक्तये च भगवत्याः त्रिवेण्याः गंगा-यमुना-सरस्वती-त्रय्याः शिव-धर्मराज-ब्रह्मणां च षोडशोपचारपूजां विधाय प्रयागतीर्थेऽस्मिन् त्रिवेणीपावनसंगमे स्नानमाचरिष्यामि।"

उपरोक्त संकल्पानुसार गंगा-यमुना-सरस्वती का एकत्र एवं शिव-धर्मराज-ब्रह्मा का एकत्र (अथवा सभी का पृथक्-पृथक्) षोडशोपचारपूजन करके त्रिवेणी में पुष्पांजलि-पूर्वक स्नान करते हुए यह मन्त्र पढ़ें—

"ओम् त्रिवेणि पापजातं मे हर मुक्तिप्रदा भव।"

स्नानानन्तर त्रिवेणी तट पर बैठ श्रीगंगा, यमुना और सरस्वती एवं शिव, धर्मराज, ब्रह्मा के स्तोत्र आदि का पाठ करें और **"ॐ नमः शिवाय"** मन्त्र का जाप करें।

ग्रहण-विवरण (सं. 2075 वि.)

गणक-परिलेखक—प्रियव्रत शर्मा

[इस ग्रहणगणित में मेरे प्रिय दौहित्र चि. प्रांशु चतुर्वेदी, B.A., L.L.B.(Hons.), L.L.M., Assistant District Attorney ने पर्याप्त सहयोग दिया है, तदर्थ उसे सर्वथा सुख-समृद्धिसम्पन्न शतोत्तर आयु के लिए मेरा आत्मिक सस्नेह आशीर्वाद है—प्रियव्रत शर्मा]

सं. 2075 वि. (18 मार्च, सन् 2018 ई. से 5 अप्रैल, सन् 2019 ई. तक की अवधि) में भूमण्डल पर निम्नांकित पांच ग्रहण घटित होंगे—

1. **खण्डग्रास सूर्यग्रहण (13 जुलाई, सन् 2018 ई.)**
2. **खग्रास चन्द्रग्रहण (27/28 जुलाई, सन् 2018 ई.)**
3. **खण्डग्रास सूर्यग्रहण (11 अगस्त, सन् 2018 ई.)**
4. **खण्डग्रास सूर्यग्रहण (6 जन., सन् 2019 ई.)**
5. **खग्रास चन्द्रग्रहण (21 जन., सन् 2019 ई.)**

ध्यान दें—उल्लिखित ग्रहणों में से केवल 27/28 जुला.2018 ई.वाला **खग्रास चन्द्रग्रहण ही भारत में दिखाई देगा।** शेष चारों ग्रहण यहा (भारत में) दिखाई नहीं देंगे।

भारत में अदृश्य (दिखाई न देने वाले) ग्रहणों का संक्षिप्त विवरण इस प्रकार है—

1. **खण्डग्रास सूर्यग्रहण (13 जुलाई, सन् 2018 ई.)**—यह ग्रहण 13 जुलाई, सन् 2018 ई. को भा.स्टैं.टा. के अनुसार 7 घं. 18 मि. से 9 घं. 43 मि. तक आस्ट्रेलिया के दक्षिणी भाग (विक्टोरिया व तस्मानिया द्वीप) में ही खण्डग्रास रूप में दिखाई देगा।

2. **खण्डग्रास सूर्यग्रहण**—11 अगस्त, सन् 2018 ई. को यह ग्रहण चाइना, मंगोलिया, कजाकिस्तान, रशिया एवं उत्तरी-ध्रुव के आसपास खण्डग्रास के रूप में भा.स्टैं.टा. के अनुसार 13 घण्टा 32 मि. से 17 घं. 0 मि. तक दिखाई देगा।

3. **खण्डग्रास सूर्यग्रहण (6 जन., सन् 2019 ई.)**—यह सूर्यग्रहण 6 जनवरी, सन् 2019 ई. को जापान, चाइना, रशिया में भा.स्टैं.टा. के अनुसार 5 घं. 4 मि. से 9 घं. 19 मि. तक खण्डग्रास के रूप में दिखाई देगा।

4. **खग्रास चन्द्रग्रहण (21 जन., सन् 2019 ई.)**—यह ग्रहण 21 जनवरी, सन् 2019 ई. को कजाकिस्तान, उजबेकिस्तान, अफगानिस्तान, ईरान, इराक, अरब, टर्की, यमन, ओम्मान, तुर्कमेनिस्तान, सूडान, अफ्रीका, अलास्का, उत्तरी एवं दक्षिणी अमेरिका, कनाडा, यूरोप, युक्रेन, ग्रीनलैण्ड आदि में दिखाई देगा।

इस ग्रहण के स्पर्श आदि का समय भा.स्टैं.टा. के अनुसार इस प्रकार होगा—

स्पर्श (ग्रहण-प्रारम्भ)	9 घं. 4 मि.
खग्रास-प्रारम्भ	10 घं. 11 मि.
ग्रहणमध्य	10 घं. 42 मि. (21 जन., सन् 2019 ई.)
खग्रास समाप्त	11 घं. 13 मि.
मोक्ष (ग्रहण समाप्त)	12 घं. 21 मि.

[ध्यान दें—उल्लिखित चारों ग्रहण भारत में कहीं भी दिखाई नहीं देंगे।]

भारत में दृश्य (दिखाई देने वाले) एकमात्र ग्रहण (चन्द्रग्रहण) का विस्तृत विवरण

खग्रास चन्द्रग्रहण (27/28 जुलाई, सन् 2018 ई.)—आषाढ़-शुक्ल पूर्णिमा, शुक्रवार को 27/28 जुलाई, सन् 2018 ई. की मध्यरात्रि में इस ग्रहण की 'खग्रास आकृति' पूरे भारत में दिखाई पड़ेगी। इस ग्रहण के स्पर्श आदि का काल (भा.स्टैं.टा. के अनुसार) इस प्रकार है—

	घं.	मि.
स्पर्श (ग्रहणप्रारम्भ)	23	54
खग्रास-प्रारम्भ	1	00
ग्रहणमध्य	1	54 (27/28 जुलाई, सन् 2018 ई.)
खग्रास समाप्त	2	43
मोक्ष (ग्रहण समाप्त)	3	49
ग्रहण का पर्वकाल	3 घं. 55 मि.	
ग्रहण का परमग्रास मान	1.6 प्रतिशत	

ग्रहण का सूतक—इस ग्रहण का सूतक 27 जुलाई, सन् 2018 ई. को 14 घं. 54 मि. (I.S.T.) पर प्रारम्भ होगा।

ग्रहण का राशिफल—यह ग्रहण मकर राशिगत उ.षा. नक्षत्र को स्पर्श करके श्रवण नक्षत्र में मोक्ष को प्राप्त होता है। स्पष्ट है कि—यह ग्रहण मकर राशिस्थ चन्द्र के समय (अर्थात् मकर राशि में ही) घटित हो रहा है। अतः मकर राशिगत उ.षा. एवं श्रवण नक्षत्र में जन्म लेने वाले किंवा मकर नामराशि वाले व्यक्तियों के लिए यह ग्रहण विशेष कष्टप्रद है।

जन्म किंवा नामराशि के आधार पर विभिन्न राशि वाले व्यक्तियों के लिए इस चन्द्रग्रहण का फल नीचे कोष्ठक में दिया जा रहा है—

मकर राशिस्थ चन्द्रग्रहण का फल

जन्म/नाम राशि	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चि.	धनु	मकर	कुम्भ	मीन
फल	सुख	अपमान	भारी कष्ट	स्त्री/पतिकष्ट	सुख	चिन्ता	कष्ट	धनलाभ	हानि	घात	हानि	लाभ

चन्द्रग्रहण का वारफल एवं माहात्म्य—यह ग्रहण मकर राशि में होने से स्नान, दान, जपादि के लिए विशेष महत्त्वपूर्ण है। मन्त्रजाप, दान-पूजा आदि इस समय विशेष फलप्रद लिखे हैं—"**बहुफलं जपदान-हुतादिके स्मृति-पुराणविदः प्रवदन्ति हि।**"

मकर राशि में ग्रहणफल—मकर राशि के ग्रहण में जलीय जीवों, राजनीतिज्ञों, प्रतिष्ठित व्यक्तियों के परिवारिक जनों एवं सर्वसाधारण (चतुर्थ श्रेणी के) कर्मचारियों, मन्त्रशास्त्रज्ञों, औषध-निर्माताओं, आयुध(शस्त्र)जीवियों (सैनिकों) एवं वृद्धपुरुषों को अनेकविध कष्टों का सामना करना पड़ता है—

"हन्यान्मृगे तु झष-मन्त्रि-कुलानि नीचान्।
मन्त्रौषधीषु कुशलान् स्थविरायुधीयान्॥"

—(*बृहत्संहिता*)

ग्रहणवेला में ग्रहदृष्टिफल—इस ग्रहण के समय मकरस्थ चन्द्र के साथ स्थित मंगल-केतु पर राहु-सूर्य एवं बुध की दृष्टि है। सूर्य-राहु का शनि के साथ 'षडष्टक-योग' भी बन रहा है। अतः राजनीतिज्ञों एवं शासक-शासित में भी कहीं संघर्षमय स्थिति बनेगी। कुछ प्रान्तों में भारी प्राकृतिक आपदा से जनधन-हानि के संकेत भी मिलते हैं। यहां चन्द्रमा क्रूर ग्रहयुत एवं सूर्य-राहु-दृष्ट होने से राजनीतिज्ञों के लिए भयावह है—"**क्रूर-संयुक्त-सूर्येद्वोर्ग्रहणे नृपतिक्षयः।**"

चन्द्रग्रहण मासफल—यह ग्रहण चान्द्रमास आषाढ़ में घटित होगा, अतः कुछ प्रान्त सूखाग्रस्त रहें, रोग-विशेष से जनजीवन त्रस्त रहे। फलहानि हो, लेकिन राष्ट्र में नये उद्योगादि दृष्टि से वर्ष शुभ रहे—

" आषाढ़े क्वचिदेव वर्षति घनो रोगोन्नलाभः क्वचित्।
वृक्षे मूल-फलान्निहंति सहसा वर्षं शुभं संभवेत्॥"

आगामी वर्ष (सं. 2076 वि. में) भारत में दृश्य ग्रहण

वि. सं. 2076 (6 अप्रैल, सन् 2019 ई. से 24 मार्च, सन् 2020 ई. तक की अवधि) में भूगोल पर ये तीन ग्रहण घटित होंगे—

1. **खग्रास सूर्यग्रहण (2/3 जुलाई, 2019 ई.)**
2. **खण्डग्रास चन्द्रग्रहण (17 जुलाई, 2019 ई.)**
3. **कंकण सूर्यग्रहण (26 दिसं., 2019 ई.)**

इनमें से 2/3 जुलाई, 2019 ई. वाले सूर्यग्रहण को छोड़कर शेष दोनों भारत में दृश्य होंगे।

खण्डग्रास सूर्यग्रहण (13 जुला., 2018) (भूगोल पर ग्रहण-घटनास्थल, स्पर्शकाल, परम ग्रासमान और कंकणाकृत्तिस्थल)	खण्डग्रास सूर्यग्रहण (11 अग., 2018) (भूगोल पर ग्रहण-घटनास्थल, स्पर्शकाल, और परम ग्रासमान)	खण्डग्रास सूर्यग्रहण (6 जन., 2019) (भूगोल पर ग्रहण-घटनास्थल, स्पर्शकाल, परम ग्रासमान और खग्रास-दृश्यस्थल)
चित्र (1) 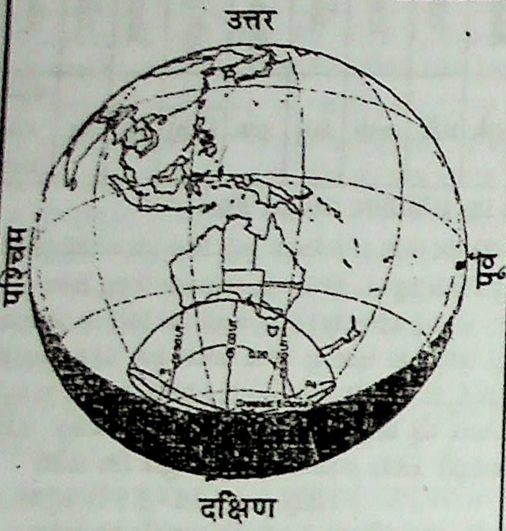	चित्र (2) 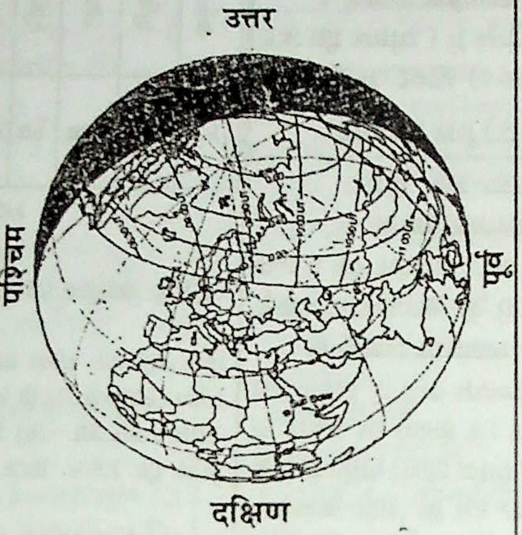	चित्र (3) 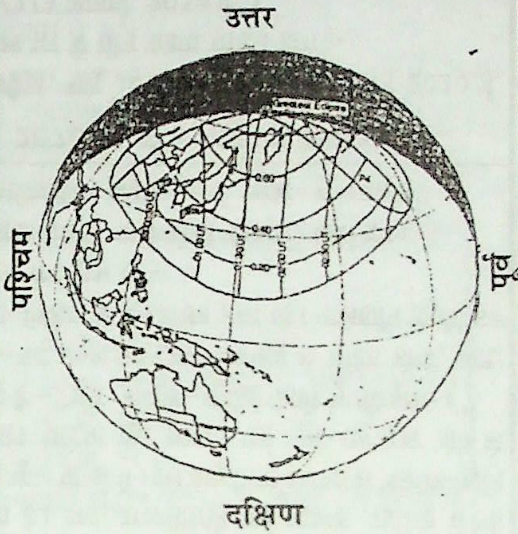
(i) दक्षिण से उत्तर की ओर जा रहीं वक्ररेखाओं पर स्पर्श का U.T. (Universal time) दिया गया है। इसमें 5 घं. 30 मि. जोड़ देने पर यह भा.स्टैं.टा. हो जायेगा। (ii) दूसरी वक्ररेखाओं पर परम ग्रासमान (प्रतिशत में) अंकित है।	(i) उत्तर से दक्षिण की ओर जा रहीं वक्ररेखाओं पर ग्रहण का स्पर्शकाल U.T. (Universal time) में है। इसमें 5 घं. 30 मि. जोड़ देने पर यह भा.स्टैं.टा. हो जायेगा। (ii) दूसरी वक्ररेखाओं पर ग्रहण का परम ग्रास (प्रतिशत में) अंकित है।	(i) उत्तर से दक्षिण की ओर जा रहीं वक्ररेखाओं पर ग्रहण स्पर्शकाल U.T. (Universal time) में है। इसमें 5 घं. 30 मि. जोड़ देने पर यह भा.स्टैं.टा. हो जायेगा। (ii) दूसरी वक्ररेखाओं पर प्रतिशत में परम ग्रासमान दिया गया है।

खग्रास चन्द्रग्रहण

(27/28 जुला., 2018)

स्पर्श, खग्रास आरम्भ-समाप्ति एवं मोक्ष की दिशाएं

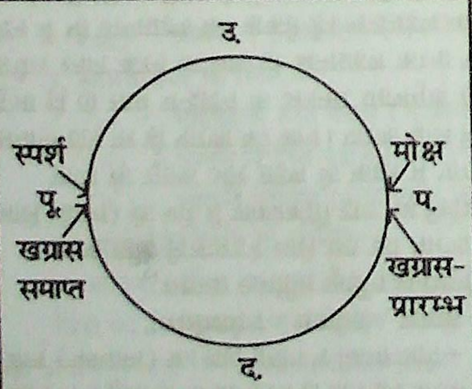
उ.
स्पर्श
पू.
खग्रास समाप्त
मोक्ष
प.
खग्रास-प्रारम्भ
द.

खग्रास चन्द्रग्रहण (27/28 जुला., 2018)

(यह ग्रहण भूगोल पर कहां ग्रस्तोदय, कहां ग्रस्तास्त, कहां सर्वथा अदृश्य और कहां सम्पूर्ण काल के लिए (स्पर्श से मोक्ष तक) दिखाई देगा—यह नीचे दिये इस भूगोल चित्र में देखिये)

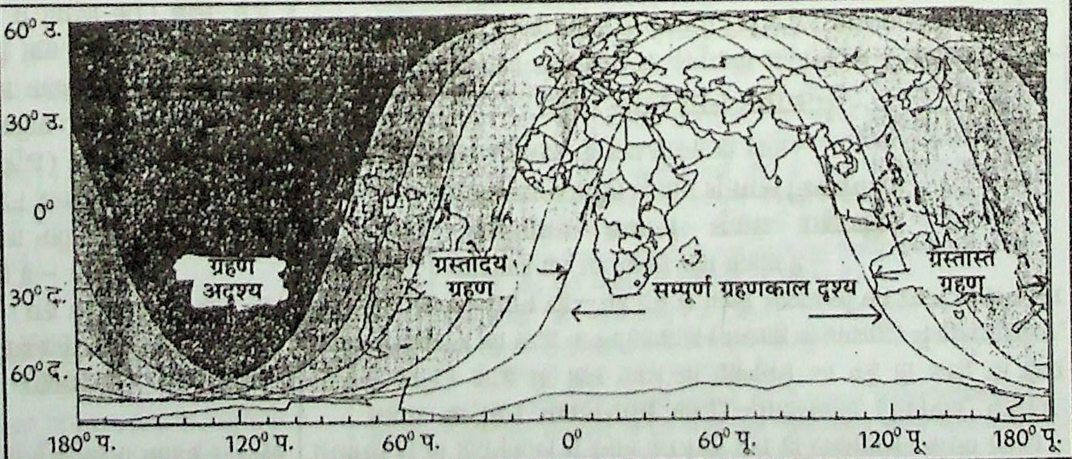
60° उ.
30° उ.
0°
30° द.
60° द.
ग्रहण अदृश्य
ग्रस्तोदय ग्रहण
सम्पूर्ण ग्रहणकाल दृश्य
ग्रस्तास्त ग्रहण
180° प.
120° प.
60° प.
0°
60° पू.
120° पू.
180° पू.

चन्द्रग्रहण के विषय में ज्ञातव्य कुछ बातें

चन्द्रग्रहण होगा या नहीं ?

यदि पूर्णिमान्त के समय सूर्य का राहु या केतु से अन्तर १३ अंश से कम हो तो चन्द्रग्रहण होने की सम्भावना रहती है। यदि यह अन्तर ९ अंश से कम हो तो चन्द्रग्रहण निश्चित रूप से होता ही है। यदि यह अन्तर १३ अंश से कम और ९ अंश से अधिक हो तो 'चन्द्रग्रहण होगा या नहीं'—इसका निर्णय चन्द्रग्रहणगणित करने पर ही हो पाता है।

चन्द्रग्रहण दिखाई पड़ेगा या नहीं ?

जहां पूर्णिमा सूर्यास्त से दो घण्टा पहले समाप्त हो रही हो, वहां चन्द्रोदय से पहले ही चन्द्रग्रहण खत्म होने की सम्भावना रहती है। जहां पूर्णिमा सूर्योदय के दो घण्टा बाद समाप्त हो रही हो, वहां चन्द्रग्रहण शुरू होने से पहले ही चन्द्रास्त हो जाने की सम्भावना रहती है। इन स्थितियों में 'उस स्थान पर चन्द्रग्रहण दिखाई पड़ेगा या नहीं'—इसका निर्णय चन्द्रग्रहण की गणित करने पर ही हो पाता है।

चन्द्रग्रहण के दिन चन्द्र का उदयास्त-काल

जिस दिन चन्द्रग्रहण ग्रस्तास्त हो, उस दिन के स्थानीय सूर्योदयकाल का ग्रहणमध्य-काल से अन्तर करके शेष को ३० से भाग दें। यदि सूर्योदयकाल ग्रहणमध्यकाल से अधिक हो तो लब्धि के मिनटों को सूर्योदयकाल में जोड़ने, अन्यथा घटाने पर स्थानीय चन्द्रास्त-काल प्राप्त होगा।

जिस दिन चन्द्रग्रहण ग्रस्तोदय हो,उस दिन के स्थानीय सूर्यास्तकाल का ग्रहण-मध्यकाल से अन्तर करके शेष को ३० से भाग दें। सूर्यास्तकाल ग्रहणमध्य-काल से अधिक हो तो लब्धि के मिनटों को सूर्यास्तकाल में जोड़ने, अन्यथा घटाने पर स्थानीय चन्द्रोदयकाल प्राप्त होगा।

इस उपरोक्त पद्धति से प्राप्त चन्द्रोदयास्तकाल में सामान्यत: दो मिनट से अधिक अशुद्धि नहीं होती।

" ग्रहण के दिन व्रतपर्वों का अनुष्ठान आदि कैसे करें "—अग्रिम पृष्ठों पर पढ़ें।

ग्रहण के दिन व्रत-पर्वों का अनुष्ठान एवं दैनिक पूजापाठ

(ग्रहण वाले दिन रक्षाबन्धन, दीपावली आदि पर्व आ पड़ें, तो सामान्यजन दुविधा में पड़ जाते हैं कि—उन पर्वों को किस समय मनाया जाये। उन्हें यह लेख पढ़ना चाहिए। उनकी दुविधा समाप्त हो जायेगी। —प्रियव्रत शर्मा)

उपाकर्म को छोड़कर शेष (सत्यनारायण व्रत, अमावस्या-पूर्णिमा का स्नान-दान, वटसावित्रीव्रत, गुरु पूर्णिमा, रक्षाबन्धन, नवरात्रारम्भ, घटस्थापन, दीपावली, होलिकादहन आदि) किसी भी व्रत-पर्व से सम्बद्ध अनुष्ठान पर सूर्य या चन्द्र ग्रहण का कोई प्रभाव नहीं पड़ता। इन (पूर्णिमा-अमावस्या को घटित होने वाले) व्रत-पर्वों से सम्बद्ध पूजा आदि का अनुष्ठान इनके ठीक अपने-अपने विहित (शास्त्रोक्त) काल में ग्रहण के सूतक और ग्रहण के समय में भी करना चाहिए—यह धर्मशास्त्रों का निर्देश है। यहां पर धर्मशास्त्रकारों द्वारा केवल यह विशेष बात कही गयी है कि—व्रतपर्व से सम्बद्ध पूजादि के अनुष्ठानकाल में ग्रहण लगा हुआ हो या ग्रहणवेध हो तो स्नान करके ही पूजा करनी चाहिए और शृत अन्न (पक्वान्न) का वहां प्रयोग न किया जाये—

" सर्वेषामेव वर्णानां सूतकं राहुदर्शने।
स्नात्वा कर्माणि कुर्वीत शृतमन्नं विवर्जयेत् ॥"

ग्रहण वाले दिन पड़ने वाले व्रत की पारणा (व्रत के अन्त में किये जाने वाले भोजन) के बारे में शास्त्रकारों द्वारा यह निर्देश है—

ग्रहण के सूतक और ग्रहण के काल में पारणा नहीं करनी चाहिए। ग्रहण समाप्त होने पर ही पारणा की जाये। पारणा वाले दिन प्रात: यदि चन्द्रमा ग्रस्तास्त हुआ हो तो सायं चन्द्रोदय के अनन्तर ग्रहणमुक्त (शुद्ध) चन्द्रबिम्ब को देखकर सचैल स्नान करने के बाद ही अन्नग्रहण करना चाहिए। बाल, वृद्ध, आतुर तो दिन में भी अन्नग्रहण कर सकते हैं। चन्द्रग्रहण यदि महानिशा (रात्रि के अष्टम मुहूर्त्त) में या महानिशा के बाद समाप्त हो तो दूसरे दिन सूर्योदय के बाद स्नान करके, नित्यकर्म से निवृत्त होकर 'शास्त्रोक्त काल में पारणा करे। बाल, वृद्ध, आतुर तो महानिशा के बाद भी अन्नग्रहण कर सकते हैं।

पारणा वाले दिन सूर्य ग्रस्तास्त हुआ हो तो व्रती को व्रत की पारणा दूसरे दिन सूर्योदय के बाद ग्रहणमुक्त (शुद्ध) सूर्यबिम्ब को देखकर सचैल स्नान करके, नित्यकर्म से निवृत्त होकर करनी चाहिए। बाल, वृद्ध, आतुर तो सूर्यास्त के बाद भी अन्नग्रहण कर सकते हैं।

ग्रस्त चन्द्रमा के अस्त होने पर प्रात:कालीन और ग्रस्त सूर्य के अस्त होने पर सायंकालीन नित्यकर्म (सन्ध्या-पाठादि) स्नान करके कर लेने चाहिएं—ऐसा शास्त्रनिर्णय है। इसी प्रकार ग्रस्त चन्द्र के अस्त होने पर तदनन्तरवर्ती दिन के व्रत-पर्व से सम्बद्ध तथा ग्रस्त सूर्य के अस्त होने पर तदनन्तरवर्ती प्रदोष आदि काल में किये जाने वाले व्रत-पर्वसम्बन्धी अनुष्ठान (पूजा आदि) स्नान करके ही करने चाहिएं। **जैसे**—दीपावली वाले दिन सूर्य ग्रस्तास्त हो तो प्रदोषकाल में स्नान करने के बाद ही लक्ष्मीपूजन करना होगा।

ग्रहण के दिन महालयादि श्राद्ध—महालयादि (पितृपक्ष, मासिक, वार्षिक आदि) श्राद्ध के दिन ग्रहण या ग्रहणवेध आ पड़े तो श्राद्ध के लिए आमन्त्रित ब्राह्मण को श्राद्ध के विहितकाल (मध्याह्न या अपराह्न) में दक्षिणासहित, अपक्वान्न ही दें। **ध्यान रहे**—यह देने से पहले श्राद्धकर्त्ता को स्नान अवश्य कर लेना चाहिए। धर्मशास्त्र का यह वाक्य यही कहता है—

" सर्वेषामेव वर्णानां सूतकं राहुदर्शने।
स्नात्वा कर्माणि कुर्वीत शृतमन्नं विवर्जयेत् ॥"

पितृतर्पणादि अनुष्ठान तो यहां करना ही होगा।

ग्रहण वाले दिन उपाकर्म

उपाकर्म के लिए चारों वेदों के अनुयायी धार्मिक लोगों के लिए पृथक्-पृथक् मास, तिथि, नक्षत्रों का धर्मशास्त्रों में निर्देश है। जैसे—

1. ऋग्वेदियों के लिए—
   (i) श्रावण मास में—श्रवणनक्षत्र (मुख्य उपाकर्मकाल), जो प्राय: श्रावण पूर्णिमा को घटित होता है।

(ii) श्रावण शुक्ल पंचमी (वैकल्पिक काल)।
(iii) श्रावण में हस्त नक्षत्र (वैकल्पिक काल)।

2. यजुर्वेदियों के लिए—

(i) श्रावण पूर्णिमा (मुख्यकाल)।
(ii) श्रावण शुक्ल पंचमी (वैकल्पिक काल)।
(iii) श्रावण में हस्त नक्षत्र (वैकल्पिक काल)।

3. सामवेदियों के लिए—

(i) भाद्रपद में हस्त नक्षत्र (मुख्यकाल)।
(ii) श्रावण में हस्त नक्षत्र (वैकल्पिक काल)।
(iii) श्रावणी पूर्णिमा (वैकल्पिक काल)।

4. अथर्ववेदियों के लिए—

श्रावणी पूर्णिमा या भाद्रपद पूर्णिमा (दोनों मुख्यकाल)।

जिस वेद के **"मुख्य उपाकर्मकाल"** वाले दिन (सूर्योदय से अर्धरात्रि तक की अवधि में कहीं भी) ग्रहणकाल का स्पर्श हो, उस दिन उस वेद के अनुयायी को अपने वेद के मुख्य उपाकर्मकाल में उपाकर्म नहीं करना चाहिए। इस स्थिति में उसके **"वैकल्पिक काल"** में ही उपाकर्म करना चाहिए। जिस "वैकल्पिक काल" वाले दिन सूर्य-संक्रान्ति का ग्रहण हो, उस वैकल्पिक काल में भी उपाकर्म निषिद्ध है। इस स्थिति में उसके दूसरे वैकल्पिक काल में उपाकर्म करना होगा। यदि मुख्यकाल और वैकल्पिक काल—दोनों ग्रहण एवं संक्रान्ति से दूषित हों तो शास्त्रकारों का कहना है कि—अपने वेद के अतिरिक्त अन्य किसी दूसरे वेद के लिए निर्धारित ग्रहण एवं संक्रान्ति के दोष से मुक्त मुख्य या वैकल्पिक उपाकर्मकाल में भी यथेच्छ उपाकर्म किया जा सकता है।

सामवेदियों के मुख्य उपाकर्म वाले दिन (भाद्रपद में हस्त वाले दिन) तो कभी ग्रहण नहीं होता, यह तो स्पष्ट ही है।

(यह लेख मेरी पुस्तक **"व्रतपर्व विवेक"** से उद्धृत है—प्रियव्रत)

पृष्ठ संख्या 272 **ग्रहयोग एवम् दाम्पत्य जीवन** साईज़ 24X 18 से. मी.
मिलानसम्बन्धी प्रत्येक समस्या का पूर्ण शास्त्रीय समाधान

लेखकः— प्रियव्रत शर्मा, एम.ए., सिद्धान्तज्योतिषाचार्य, साहित्याचार्य,

पुस्तक में छः अध्याय हैं। प्रथम अध्याय में अष्टकूट का विस्तृत विवेचन, द्वितीय में कुज (मङ्गली) दोष पर विस्तृत विमर्श, तृतीय में विवाहमुहूर्त के साधन की सुबोध प्रक्रिया, चतुर्थ अध्याय में भारत के 800 प्रसिद्ध नगरों के अक्षांश, रेखांश, स्टैं. अं., भारत के किसी भी नगर का सूक्ष्म दैनिक लग्नसमाप्तिकाल (भा. स्टैं. टा.) बतलाने वाली मौलिक सारणियां एवं सन् 1971 से 2000 ई. तक के चन्द्रसहित सूर्यादि सभी ग्रहों के सूक्ष्म राशिप्रवेशकाल (भा. स्टैं. टा.) दिए गए हैं, जिनकी मदद से 30 वर्षों में (1971 से 2000 ई. तक) पैदा हुए वर/कन्याओं की जन्मकुण्डली 10–15 मिनटों में ही बनाकर दैवज्ञ उनकी ग्रहस्थितियों का मिलान तथा अष्टकूटों के गुण आदि का निर्णय सरलता से कर सकता है। पांचवें और छठे अध्याय में शोधपूर्ण 11 निबन्ध हैं।

वर/कन्या के नक्षत्रचरणों के आधार पर 36 पृष्ठों पर फैली गुणमिलान— सारणी है, जिसमें सभी अष्टकूटों के गुण और दोष तथा उनके परिहार एक ही दृष्टि में तुरन्त जाने जा सकते हैं।

गण, षडष्टक, नाड़ी आदि दोषपूर्ण कूटों के बारे में उपलब्ध अनेक "नाड़ीदोषस्तु विप्राणाम्" आदि तथा मंगलदोष के बारे में प्रचलित "चन्द्र–मंगल संयोगे भौमदोषो न विद्यते"– आदि अनेक परिहारवाक्यों का सप्रपंच खण्डन–मण्डन किया गया है।

कुज (मंगली) दोष की मात्रा के सूक्ष्मतापूर्वक निर्णय के लिए 7 कुजदोष कोष्ठक दिए गए हैं, जिनकी मदद से मौखिक जोड़–घटाव द्वारा ही वर–कन्या के कुजदोष की मात्राओं के आंकिक मान कुछ एक मिनटों में ही जानकर, उनकी तुलना द्वारा विवाहसम्बन्ध की शक्याशक्यता का निर्णय किया जा सकता है।

पुस्तक का डाकव्यय सहित मूल्य Rs. 550/- M.O अथवा D.D. द्वारा नीचे लिखे पते पर अपना Address साफ–साफ लिखते हुए भेजिए। V.P.P. नहीं की जाएगी। द्वितीय संस्करण उपलब्ध है।

Mrs. Veena Chaturvedi, ABHIJIT PRAKASHAN,
Kothi No.59, Sector-6,
P.O. PANCHKULA, (Haryana)- PIN. 134 109
Phone- 0172- 2565 303

संवत् 2075 वि. की कुल जन्म–वर्ष–प्रश्न–मुहूर्त्त–कुण्डलियां

इन कुण्डलियों के श्रमसाध्य निर्माण में पूर्ण सहयोग के लिए ''श्रीमार्त्तण्ड ज्योतिष कार्यालय'– कुराली (पं.) के अनुभवी कार्यकर्त्ता **ग्राम सुन्हाड़–सौर, सोलन (हि.प्र.) निवासी प्रबुद्ध विद्वान् आचार्य श्रीकृष्ण शर्मा, शास्त्री, M.A., वेदाचार्य, साहित्याचार्य** को आशीर्वाद पुरस्सर धन्यवाद दिए बिना मैं नहीं रह सकता। **– प्रियव्रत शर्मा**

यद्यपि जातकपद्धति एवम् ताजिक ग्रन्थों में द्वारश–भाव–साधनपूर्वक बनाई गई भावकुण्डली द्वारा भावफलादेश कहने का निर्देश है, तथापि लगभग सभी दैवज्ञ जातक–जन्मकालिक, प्रश्नकालिक, वर्षप्रवेश–कालिक तथा विवाहादि मूहूर्त्तकालिक आदि राशि–कुण्डलियों को ही फलादेशार्थ प्रयुक्त करने की परम्परा बनाए हुए हैं। जन्म, प्रश्न, वर्षप्रवेश या मुहूर्त्तकालीन लग्नराशि को प्रथम भावराशि तथा तदुत्तरवर्ती राशियों को क्रमशः द्वितीय आदि भावों की राशियां मानकर बनाई गई जन्मकुण्डली द्वारा ही समस्त फलादेश कहने का बहुत बड़ा सम्प्रदाय फलित ज्योतिष में व्यापक प्रभाव बनाए हुए है। सच बात तो यह है–फलित में भावचक्र तो केवल सिद्धान्तरूप में ही दिखाई पड़ता है, इसका प्रयोगात्मक रूप तो लगभग लुप्त–सा ही हो गया है। इसे दृष्टि में रखते हुए यहां सं. 2075 वि. में बनने वाली सभी (कुल 213) कुण्डलियां दी जा रही हैं। **''किस तारीख के कितने बजे से, किस तारीख के कितने बजे तक''**–कौन–सी कुण्डली बनती है (यानी सूर्यादि ग्रह किन–किन राशियों में स्थित हैं), यह भारतीय स्टैंडर्ड टाईम अनुसार प्रत्येक कुण्डली के ऊपर यहां निर्दिष्ट है। इन कुण्डलियों के आधार पर दैवज्ञ लोग इस वर्ष में उत्पन्न होने वाले किसी भी जातक की जन्मकुण्डली (जन्मकालिक ग्रहस्थिति–कुण्डली), इस वर्ष घटित होने वाले वर्षप्रवेश–कालानुसारी वर्षप्रवेश–कुण्डली (वर्षप्रवेशकालिक ग्रहस्थिति–कुण्डली) तथा अभीष्टकालिक प्रश्नकुण्डली (प्रश्नकालिक ग्रहस्थिति–कुण्डली) एवं अभीष्ट विवाहादि मुहूर्त्तकालिक ग्रहस्थिति–कुण्डली तुरन्त जान सकेंगे और तात्कालिक स्थानीय लग्न ज्ञात कर इन ग्रहस्थिति–कुण्डलियों को लग्नकुण्डलियां अनायास ही बना सकेंगे।

ध्यान दें– यहां दी गई ये कुण्डलियां विवाहादि–मुहूर्त्तकालिक लग्नों के निर्णय में भी अत्यन्त उपयोगी सिद्ध हुई हैं। लग्ननिर्णयार्थ अपेक्षित ग्रहस्थितियों को ध्यान में रखते हुए यहां दी गई इन कुण्डलियों द्वारा दैवज्ञ स्वयं भी लग्न की शुद्धि–अशुद्धि का यथार्थ निर्णय अत्यन्त आसानीपूर्वक अनायास ही कर सकते हैं।

क्योंकि, ये कुण्डलियां भारतीय स्टैंडर्ड टाईमानुसार हैं, अतः भारत में इन्हें बिना किसी परिवर्तन के प्रयोग में लाया जाएगा। यदि इन्हें भारत से अन्य किसी देश के लिए प्रयोग में लाना हो तब उस देश के स्थानीय स्टैंडर्ड टाईम को भारतीय स्टैंडर्ड टाईम में बदलकर, इन्हें प्रयोग में लाइए।

स्पष्टता के लिए आगे उदाहरण दे रहे हैं। पहले भारतस्थलीय उदाहरण लेते हैं–

उदाहरण (1)– शिमला (H.P.) में 20 अगस्त, 2018 ई. को सायं 16 घं. 25 मि. (भा.स्टैं.टा.) पर उत्पन्न होने वाले/हुए जातक की जन्मकुण्डली ज्ञात करनी है?

क्योंकि, इस जातक का जन्म **''18 अगस्त 10 घं. 59 मि. से 20 अगस्त 21 घं. 40 मि.''** के मध्य हुआ है, अतः इसकी जन्मकालिक कुण्डली (ग्रहस्थिति– कुण्डली) यहां दी गई इसी कालावधि वाली कुण्डली के अनुरूप होगी। **किंच**– शिमला में 20 अगस्त को 16 घं 25मि. (भा.स्टैं.टा.) पर धनु लग्न है। अतः इस जातक की जन्मलग्न–कुण्डली यह बनी–

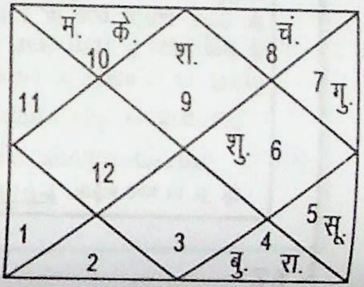

सकेंगे।

अतः इस जातक की जन्मलग्न—कुण्डली यह बनी—

अब भारतेतर देश का उदाहरण लेते हैं—

उदाहरण (2)— 1 फर., 2019 ई. को Oslo (Norway) में 0घं 15 मि. पर पैदा हुए/होने वाले जातक की जन्मलग्नकुण्डली ज्ञात करनी है ?

Oslo (Norway) में D.S.T. (ग्रीष्मकालीन समय) चलता है, जो क्षेत्रीय स्टैं.टा. से एक घंटा आगे रहता है। लेकिन इन दिनों (सर्दियों में) यह लागू नहीं होता। स्पष्ट है— इस जातक का यह जन्मसमय स्टैंडर्ड टाईम अनुसार है। Oslo (Norway) के स्टैं.टा. से भा.स्टैं.टा. 4 घं. 30 मि. आगे रहता है, अतः इस जातक की जन्मकालिक भारतीय तारीख 1 फरवरी, 2019 ई. और जन्मकाल 4 घं. 45 मि. (भा.स्टैं.टा.) बना। क्योंकि, इस जातक का जन्म भा.स्टैं.टा. अनुसार **"31 जनवरी, 18घं. 40मि. से 3 फरवरी, 06घं. 37मि."** के मध्य हुआ है, अतः इसकी जन्मकालिक—कुण्डली (ग्रहस्थिति— कुण्डली) यहां दी गई इसी कालावधि वाली कुण्डली के अनुरूप होगी। **किंच**— Oslo में इसके जन्म के समय लग्न तुला होगा। तदनुसार इसकी कुण्डली यह बनेगी—

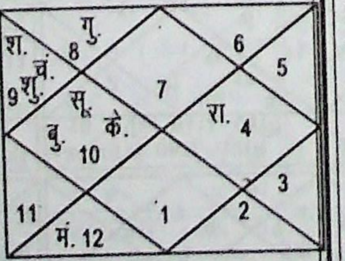

अब वर्षकुण्डली का उदाहरण दे रहे हैं—

उदाहरण (3)— भारत (हि.प्र.), सोलन में 15 अगस्त, 1974 ई. (गुरुवार) को 11घं. 14मि. (भा.स्टैं.टा.) पर जन्मे एवम् सम्प्रति मोहाली (पं.) में रहने वाले जातक की ई. सन् 2018—19 की वर्षकुण्डली जाननी है ?

इस जातक के गताब्द यहां 44 मिले और 45वां वर्षप्रवेश 15 अगस्त, 2018 ई.(बुधवार) को 17 घं. 57 मि. (भा.स्टैं.टा.) पर होगा।

क्योंकि, इस जातक का वर्षप्रवेश **"14 अगस्त 0 घं 39 मि. से 16 अगस्त 03 घं. 53मि."** के मध्य हुआ है, अतः इसकी वर्षकुण्डली (45वें वर्ष की) यहां दी गई इसी कुण्डली—अनुरूप होगी। **किंच**—इस जातक के निवासस्थान मोहाली (पं.) में इस समय (15 अगस्त, 2018 ई. को 17 घं. 57मि. पर) मकर लग्न है, अतः इस जातक की वर्षकुण्डली यह बनेगी—

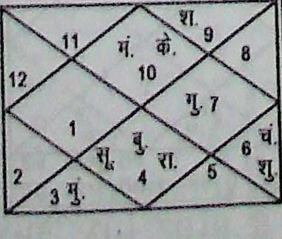

अब प्रश्नकुण्डली का उदाहरण भी ले लेते हैं—

उदाहरण (4)— मान लें, 20 अप्रैल 2018 ई. को 12घं. 30 मि. (भा. स्टैं.टा.) पर आपके पास चण्डीगढ़ (U.T.), भारत में आकर कोई प्रश्नकर्त्ता कार्यसिद्धि/असिद्धि का प्रश्न करता है। इसकी प्रश्नकुण्डली जाननी है ?

यहां प्रश्नकालिक तारीख 20 अप्रैल, 2018 ई. और प्रश्न—काल 12घं. 30मि. आगे इस स्तंभ में दिए गए **"20 अप्रैल 10 घं. 02 मि. से 22 अप्रैल 12 घं. 37 मि."** के मध्य पड़ता है, अतः यहां यह प्रश्नकुण्डली इसी अवधि के अंतर्गत आने वाली इस कुण्डली के अनुरूप होगी। **किंच**— यहां प्रश्नस्थल (चण्डीगढ़) में इस समय लग्न कर्क है, अतः यहां इस प्रश्नकर्त्ता की कुण्डली इसतरह बनेगी—

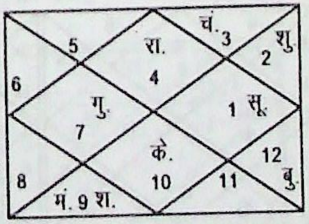

आगे मुहूर्तकुण्डली का उदाहरण ले रहे हैं—

उदाहरण (5) हमारे इस पंचांग (श्री मार्त्तण्ड) में 21 सितं., 2018 ई. को पृष्ठ 270 पर दिए मेष लग्न वाले विवाहमुहूर्त्त की कुण्डली जाननी है ?

इस लग्न (मेष) का काल इस दिन (21 सितं., 2018 ई. को) चण्डीगढ़ में 19 घं. 26 मि. से 20 घं. 59 मि. तक है और यह लग्नकाल इस स्तंभ के अन्तर्गत दिए गए **"19 सितं. 17 घं. 22 मि. से 22 सितं. 6 घं. 9 मि."** के मध्य पड़ता है, अतः यह मुहूर्त्तकुण्डली यहां दी इसी कुण्डली के अनुरूप इस तरह बनेगी—

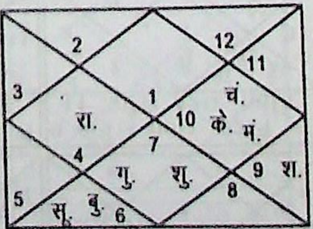

इस प्रकार पाठक समझ गए होंगे— जन्म, वर्षप्रवेश, प्रश्न, मुहूर्त्त आदि कालिक लग्नकुण्डलियां बनाना अत्यन्त सरल है।

ध्यान रहे— कुण्डली की ग्रहस्थिति (ग्रहों की राशि आदि) स्थानभेद से नहीं बदलती, केवल लग्न ही बदला करता है।

17 मार्च से 2 मई, सन् 2018 ई. (सर्वत्र भा. स्टैं. टा. दिया गया है।)

17 मार्च 13घ. 31मि. से
19 मार्च 20 घ. 07 मि.

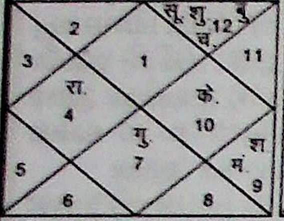
सू. शु.
12
बु.
च.
2
3
1
11
रा.
के.
4
10
गु.
श.
7
मं.
5
9
6
8

19 मार्च 20घ. 08मि. से
22 मार्च 00 घं. 47 मि.

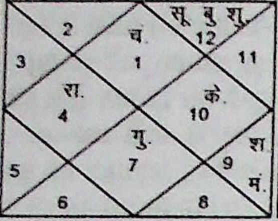
सू. बु. शु.
2
च.
12
3
1
11
रा.
के.
4
10
गु.
श.
5
7
9
मं.
6
8

22 मार्च 00घ. 48मि. से
24 मार्च 04 घं. 19 मि.

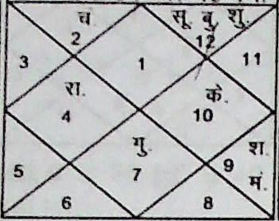
च
सू. बु. शु.
2
12
3
1
11
रा.
के.
4
10
गु.
श.
5
7
9
मं.
6
8

24 मार्च 04घ. 20मि. से
26 मार्च 07 घं. 15 मि.

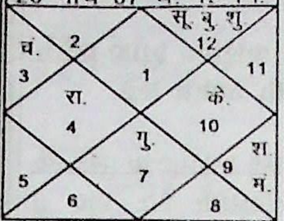
सू. बु. शु.
च.
2
12
3
1
11
रा.
के.
4
10
गु.
श.
5
7
9
मं.
6
8

26 मार्च 07घं. 16मि. से
26 मार्च 15 घं. 45 मि.

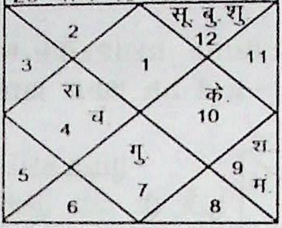
सू. बु. शु
2
12
3
1
11
रा
के.
4
च
10
गु.
श.
5
9
7
मं.
6
8

26 मार्च 15घ. 46मि. से
28 मार्च 10 घ. 00 मि.

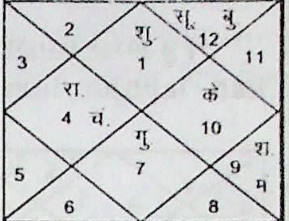
सू.
बु
2
शु.
12
3
1
11
रा.
के
4 च.
10
गु.
श.
5
7
9
म

28 मार्च 10घ. 01मि. से
30 मार्च 13 घं. 10 मि.

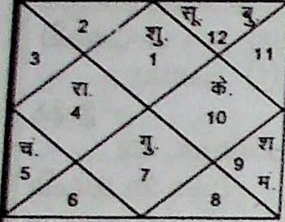
सू.
बु.
2
शु.
12
3
1
11
रा.
के.
4
10
च.
गु.
श
5
7
9
मं.
6
8

30 मार्च 13घ. 11मि. से
1 अप्रैल 17घं. 49मि.

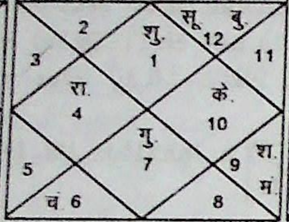
सू.
बु.
2
शु.
12
3
1
11
रा.
के.
4
10
गु.
श.
5
7
9
मं.
चं 6
8

1 अप्रैल 17घ. 50मि. से
4 अप्रैल 01घं. 09मि.

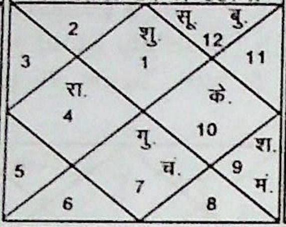
सू.
बु.
2
शु.
12
3
1
11
रा.
के.
4
10
गु.
श.
5
च.
9
7
मं.
6
8

4 अप्रैल 01घ. 10मि. से
6 अप्रैल 11घं. 41मि.

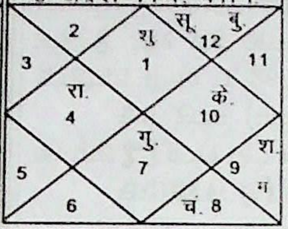
सू.
बु.
2
शु
12
3
1
11
रा.
के.
4
10
गु.
श.
5
7
9
म
6
चं. 8

6 अप्रैल 11घं. 42मि. से
9 अप्रैल 00घं. 21मि.

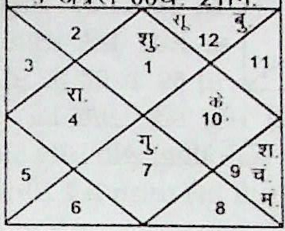
सू.
बु
2
शु.
12
3
1
11
रा.
के
4
10
गु.
श.
5
7
9 चं.
म.
6
8

9 अप्रैल 00घं. 22मि. से
11 अप्रैल 12घं. 36मि.

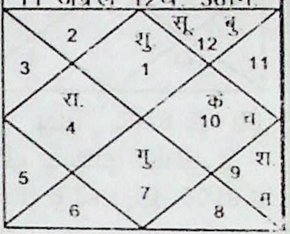
सू.
बु
2
शु.
12
3
1
11
रा.
के
4
10 च
गु
श.
5
9
7
म
6
8

11 अप्रैल 12घं. 37मि. से
13 अप्रैल 22घ. 02मि.

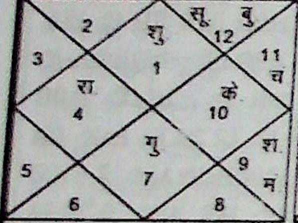
सू.
बु
2
शु
12
3
1
11
च
रा
के
4
10
गु
श
5
9
7
म
6
8

13 अप्रैल 22घ. 03मि. से
14 अप्रैल 08घ. 11मि.

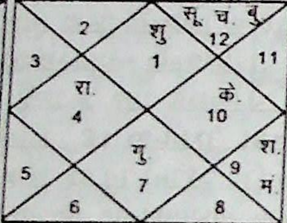
सू. च. बु.
2
शु
12
3
1
11
रा.
के.
4
10
गु
श.
5
9
7
मं.
6
8

14 अप्रैल 08घं. 12मि. से
16 अप्रैल 04घं. 04मि.

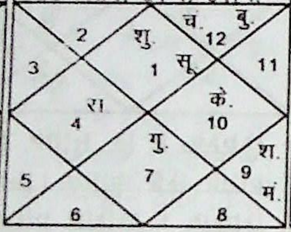
च.
बु.
2
शु.
12
3
1
सू.
11
रा
के.
4
10
गु.
श.
5
7
9
मं.
6
8

16 अप्रैल 04घं. 05मि. से
18 अप्रैल 07घं. 34मि.

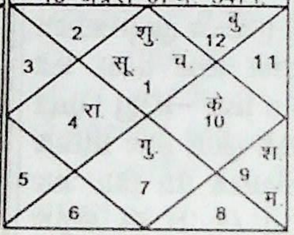
बु
2
शु.
12
3
सू.
च.
11
1
रा
के
4
10
गु.
श
5
9
7
म.
6
8

18 अप्रैल 07घ. 35मि. से
20 अप्रैल 02घं. 07मि.

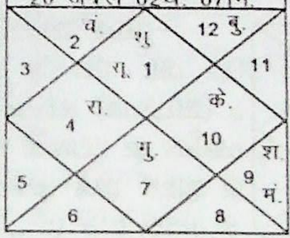
चं.
2
शु
12 बु.
3
सू. 1
11
रा.
के.
4
10
गु.
श.
5
7
9
मं.
6
8

20 अप्रैल 02घं. 08मि. से
20 अप्रैल 10घं. 01मि.

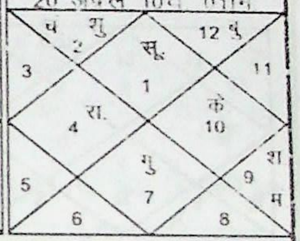
च
शु
2
12 बु
सू.
3
11
1
रा.
के
4
10
गु
श
5
9
7
म
6
8

20 अप्रैल 10घ. 02मि. से
22 अप्रैल 12घ. 37मि

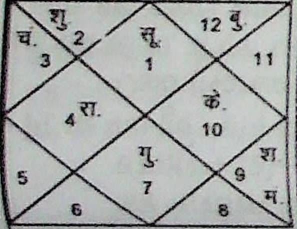
शु
च.
2
सू.
12 बु.
3
1
11
4 रा.
के.
10
गु.
श
5
9
7
म.
6
8

22 अप्रैल 12घ. 38मि. से
24 अप्रैल 15घ. 57मि.

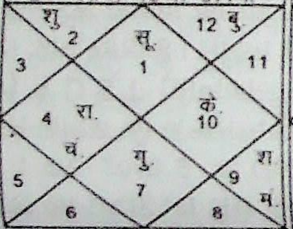
शु
2
सू.
12 बु.
3
1
11
4 रा.
के.
10
चं.
गु.
श.
5
9
7
म.
6
8

24 अप्रैल 15घ. 58मि. से
26 अप्रैल 20घं. 17मि.

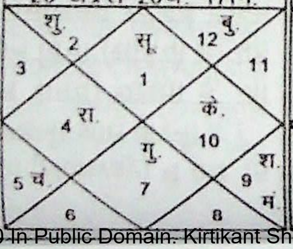
शु.
2
सू.
12 बु.
3
1
11
4 रा.
के.
10
गु.
श.
5 चं.
7
9
मं.
6
8

26 अप्रैल 20घं. 18मि. से
29 अप्रैल 01घं. 55मि.

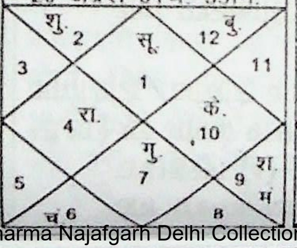
शु. 2
सू.
12 बु.
3
1
11
4 रा.
के.
10
गु.
श.
5
7
9
मं.
च 6
8

29 अप्रैल 01घ. 56मि. से
1 मई 09घं. 34 मि.

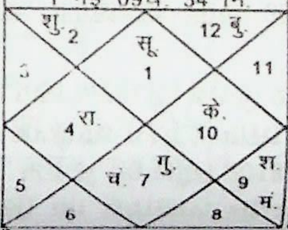
शु. 2
सू.
12 बु.
1
11
4 रा.
के.
10
गु.
श.
5
चं. 7
9
मं.
6
8

1 मई 09घ. 35मि. से
2 मई 16घं. 17मि.

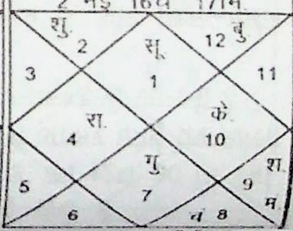
शु.
2
सू.
12 बु
3
1
11
रा.
के.
4
10
गु.
श.
5
9
7
म
6
चं 8

2 मई से 12 जून, सन् 2018 ई. (सर्वत्र भा. स्टैं.टा. दिया गया है।)

2 मई 16घं. 18मि. से 3 मई 19घं. 50मि.

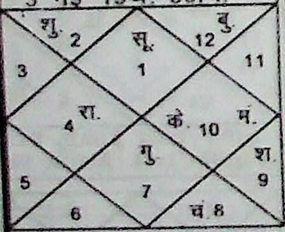
शु. 2
सू. 1
12 बु.
11
3
4 रा.
के. 10 मं.
गु. 7
श. 9
5
6
चं. 8

3 मई 19घं. 51मि. से 6 मई 8घं. 18मि.

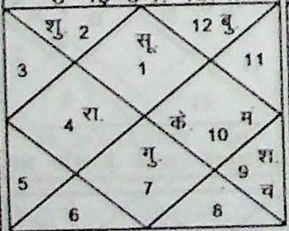
शु. 2
सू. 1
12 बु.
11
3
4 रा.
के. 10 मं.
गु. 7
श. 9 चं.
5
6
8

6 मई 8घं. 19मि. से 8 मई 20घं. 58मि.

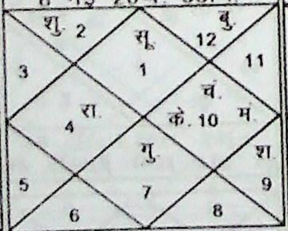
शु. 2
सू. 1
12 बु.
11
3
चं.
4 रा.
के. 10 मं.
गु. 7
श. 9
5
6
8

8 मई 20घं. 59मि. से 9 मई 17घं. 25मि.

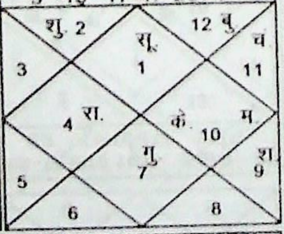
शु. 2
सू. 1
12 बु.
चं.
11
3
4 रा.
के. 10 मं.
गु. 7
श. 9
5
6
8

9 मई 17घं. 26मि. से 11 मई 07घं. 10मि.

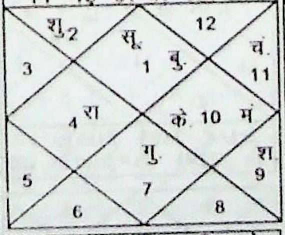
शु. 2
सू. 1 बु.
12
चं. 11
3
4 रा.
के. 10 मं.
गु. 7
श. 9
5
6
8

11 मई 07घं. 11मि. से 13 मई 13घं. 30मि.

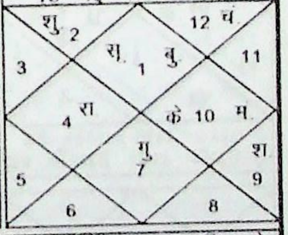
शु. 2
सू. 1 बु.
12 चं.
11
3
4 रा.
के. 10 मं.
गु. 7
श. 9
5
6
8

13 मई 13घं. 31मि. से 14 मई 20घं. 45मि.

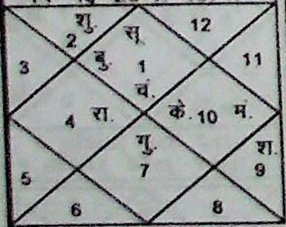
शु. 2
सू.
बु. 1
चं.
12
11
3
4 रा.
के. 10 मं.
गु. 7
श. 9
5
6
8

14 मई 20घं. 46मि. से 15 मई 05घं. 02मि.

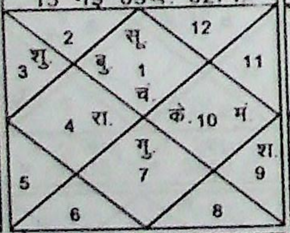
2
शु. 3
सू.
बु. 1
चं.
12
11
4 रा.
के. 10 मं.
गु. 7
श. 9
5
6
8

15 मई 05घं. 03मि. से 15 मई 16घं. 27मि.

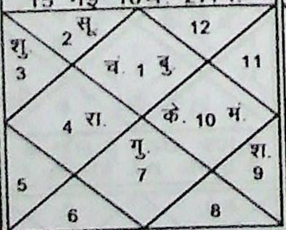
2 सू.
शु. 3
चं. 1 बु.
12
11
4 रा.
के. 10 मं.
गु. 7
श. 9
5
6
8

15 मई 16घं. 28मि. से 17 मई 17घं. 39मि.

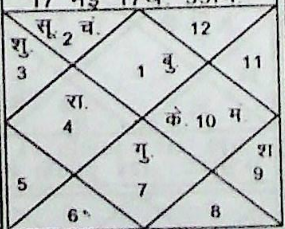
सू. 2 चं.
शु. 3
1 बु.
12
11
रा. 4
के. 10 मं.
गु. 7
श 9
5
6
8

17 मई 17घं. 40मि. से 19 मई 18घं. 52मि.

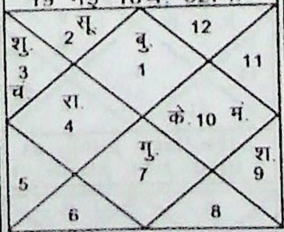
2 सू.
शु. 3 चं.
बु. 1
12
11
रा. 4
के. 10 मं.
गु. 7
श. 9
5
6
8

19 मई 18घं. 53मि. से 21 मई 21घं. 23मि.

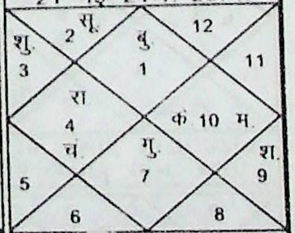
2 सू.
शु. 3
बु. 1
12
11
रा 4 चं.
के. 10 मं.
गु. 7
श. 9
5
6
8

21 मई 21घं. 24मि. से 24 मई 01घं. 49मि.

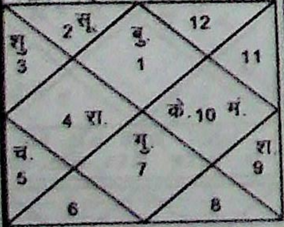
2 सू.
शु 3
बु. 1
12
11
4 रा.
के. 10 मं.
चं. 5
गु. 7
श. 9
6
8

24 मई 01घं. 50मि. से 26 मई 08घं. 13मि.

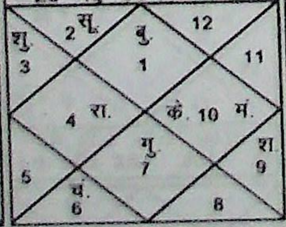
2 सू.
शु. 3
बु. 1
12
11
4 रा.
के. 10 मं.
गु. 7
श. 9
5
चं. 6
8

26 मई 08घं. 14मि. से 27 मई 08घं. 21मि.

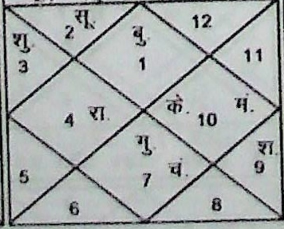
2 सू.
शु. 3
बु. 1
12
11
4 रा.
के. 10 मं.
गु. 7 चं.
श. 9
5
6
8

27 मई 08घं. 22मि. से 28 मई 16घं. 38मि.

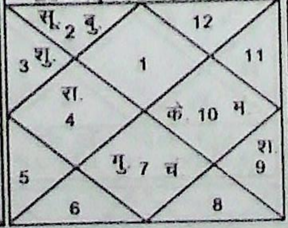
सू. 2 बु.
3 शु.
1
12
11
रा. 4
के. 10 मं
गु. 7 चं
श. 9
5
6
8

28 मई 16घं. 39मि. से 31 मई 03घं. 11मि.

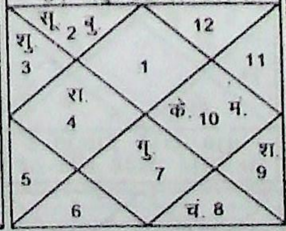
सू. 2 बु.
शु. 3
1
12
11
रा. 4
के. 10 मं.
गु. 7
श. 9
5
6
चं. 8

31 मई 03घं 12मि. से 02 जून 15घं 36मि.

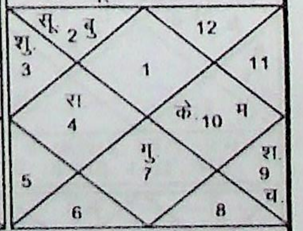
सू. 2 बु.
शु. 3
1
12
11
रा. 4
के. 10 मं
गु. 7
श. 9 चं.
5
6
8

02 जून 15घं. 37मि. से 05 जून 04घं. 32मि.

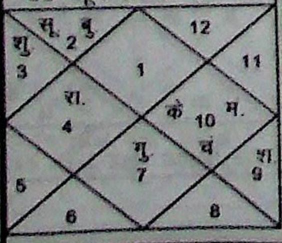
सू. 2 बु.
शु 3
1
12
11
रा. 4
के 10 मं.
गु. 7
चं.
श 9
5
6
8

05 जून 04घं. 33मि. से 07 जून 15घं. 41मि.

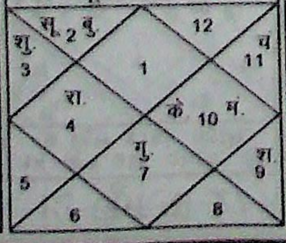
सू. 2 बु.
शु. 3
1
12
चं 11
रा. 4
के. 10 मं.
गु. 7
श. 9
5
6
8

07 जून 15घं. 42मि. से 09 जून 02घं. 40मि.

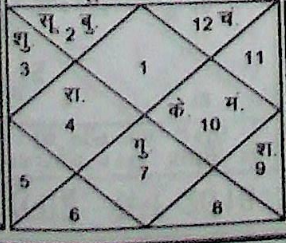
शु 3
सू. 2 बु.
1
12 चं.
11
रा. 4
के. 10 मं.
गु. 7
श. 9
5
6
8

09 जून 02घं. 41मि. से 09 जून 23घं. 09मि.

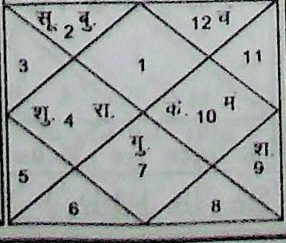
सू. 2 बु.
12 चं
3
1
11
शु. 4 रा.
कं. 10 मं
गु. 7
श. 9
5
6
8

09 जून 23घं. 10मि. से 10 जून 7घं. 31मि.

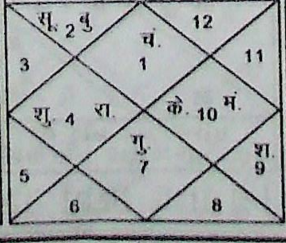
सू. 2 बु.
चं. 1
3
12
11
शु. 4 रा.
के. 10 मं.
गु. 7
श. 9
5
6
8

10 जून 7घं 32मि. से 12 जून 2घं 38मि.

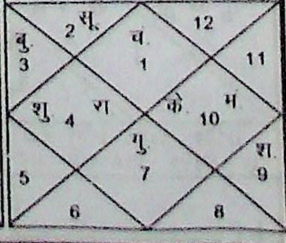
2 सू.
बु. 3
चं. 1
12
11
शु. 4 रा
के. 10 मं
गु. 7
श. 9
5
6
8

12 जून से 27 जुलाई, सन् 2018 ई. (सर्वत्र भा. स्टैं.टा. दिया गया है।)

12 जून 2घं. 39मि. से
14 जून 3घं. 24मि.

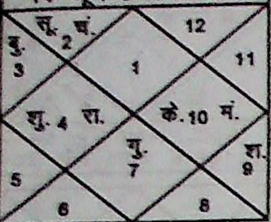
सू. 2 चं.
12
बु. 3
1
11
शु. 4 रा.
के. 10 मं.
गु. 7
श. 9
5
6
8

14 जून 3घं. 25मि. से
15 जून 11घं. 35मि.

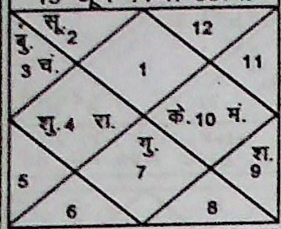
सू. 2
12
बु. 3 चं.
1
11
शु. 4 रा.
के. 10 मं.
गु. 7
श. 9
5
6
8

15 जून 11घं. 36मि. से
16 जून 3घं. 21मि.

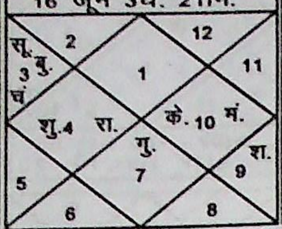
2
12
सू. बु. 3 चं.
1
11
शु. 4 रा.
के. 10 मं.
गु. 7
श. 9
5
6
8

16 जून 3घं. 22मि. से
18 जून 5घं. 18मि.

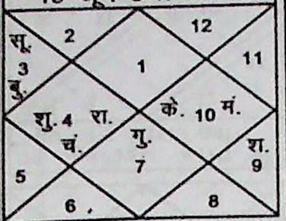
सू. 2
12
3 बु.
1
11
शु. 4 रा.
चं.
के. 10 मं.
गु. 7
श. 9
5
6
8

18 जून 5घं. 19मि. से
20 जून 7घं. 34मि.

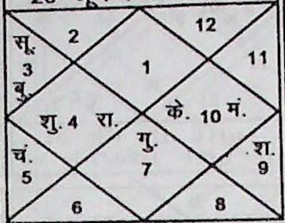
सू. 3 बु.
2
12
1
11
शु. 4 रा.
के. 10 मं.
गु. 7
श. 9
चं. 5
6
8

20 जून 7घं. 35मि. से
22 जून 13घं. 42मि.

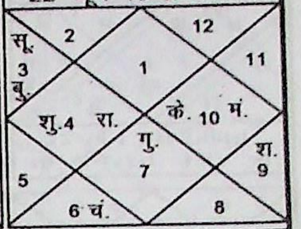
सू. 3 बु.
2
12
1
11
शु. 4 रा.
के. 10 मं.
गु. 7
श. 9
5
6 चं.
8

22 जून 13घं. 43मि. से
24 जून 22घं. 32मि.

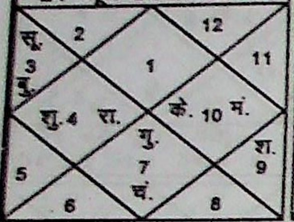
सू. 3 बु.
2
12
1
11
शु. 4 रा.
के. 10 मं.
गु. 7
चं.
श. 9
5
6
8

24 जून 22घं. 33मि. से
25 जून 18घं. 07मि.

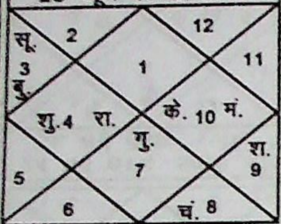
सू. 3 बु.
2
12
1
11
शु. 4 रा.
के. 10 मं.
गु. 7
श. 9
5
6
चं. 8

25 जून 18घं. 08मि. से
27 जून 9घं. 33मि.

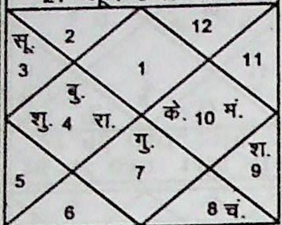
सू. 3
2
12
1
11
बु.
शु. 4 रा.
के. 10 मं.
गु. 7
श. 9
5
6
8 चं.

27 जून 9घं. 34मि. से
29 जून 22घं. 6मि.

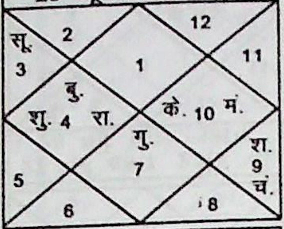
सू. 3
2
12
1
11
बु.
शु. 4 रा.
के. 10 मं.
गु. 7
श. 9 चं.
5
6
8

29 जून 22घं. 7मि. से
2 जुलाई 11घं. 6मि.

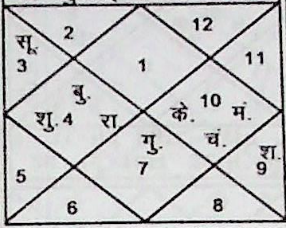
सू. 3
2
12
1
11
बु.
शु. 4 रा
के. 10 मं.
गु. 7
चं.
श. 9
5
6
8

2 जुलाई 11घं. 7मि. से
4 जुलाई 22घं. 53मि.

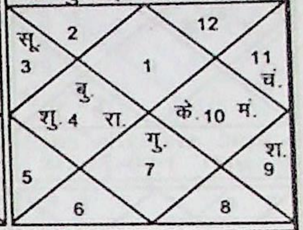
सू. 3
2
12
1
11 चं.
बु.
शु. 4 रा.
के. 10 मं.
गु. 7
श. 9
5
6
8

4 जुलाई 22घं. 54मि. से
5 जुलाई 2घं. 24मि.

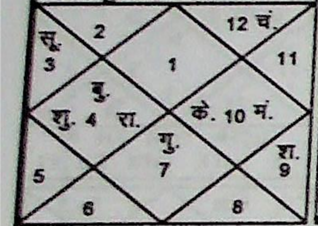
सू. 3
2
12 चं.
1
11
बु.
शु. 4 रा.
के. 10 मं.
गु. 7
श. 9
5
6
8

5 जुलाई 2घं. 25मि. से
7 जुलाई 7घं. 38मि.

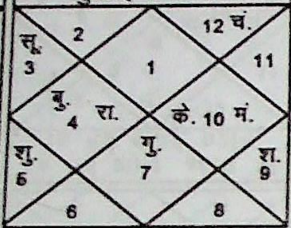
सू. 3
2
12 चं.
1
11
बु. 4 रा.
के. 10 मं.
गु. 7
श. 9
शु. 5
6
8

7 जुलाई 7घं. 39मि. से
9 जुलाई 12घं. 30मि.

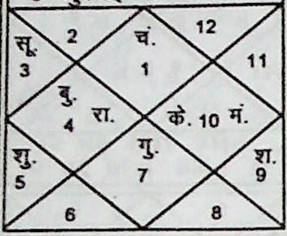
सू. 3
2
चं. 1
12
11
बु. 4 रा.
के. 10 मं.
गु. 7
श. 9
शु. 5
6
8

9 जुलाई 12घं. 31मि. से
11 जुलाई 14घं. 0मि.

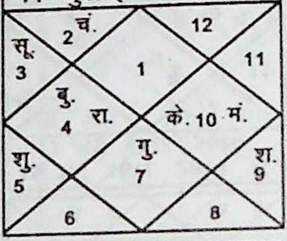
सू. 3
2 चं.
12
1
11
बु. 4 रा.
के. 10 मं.
गु. 7
श. 9
शु. 5
6
8

11 जुलाई 14घं. 01मि. से
13 जुलाई 13घं. 41मि.

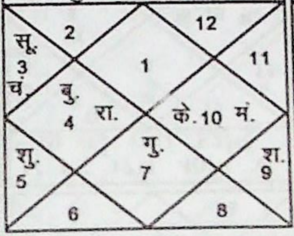
सू. 3 चं.
2
12
1
11
बु. 4 रा.
के. 10 मं.
गु. 7
श. 9
शु. 5
6
8

13 जुलाई 13घं. 42मि. से
15 जुलाई 13घं. 27मि.

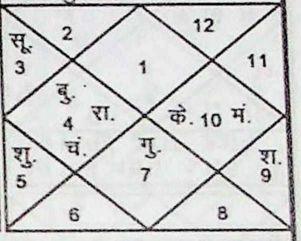
सू. 3
2
12
1
11
बु. 4 रा.
चं.
के. 10 मं.
गु. 7
श. 9
शु. 5
6
8

15 जुलाई 13घं. 28मि. से
16 जुलाई 22घं. 26मि.

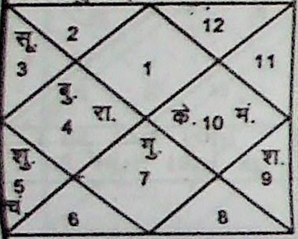
सू. 3
2
12
1
11
बु. 4 रा.
के. 10 मं.
गु. 7
श. 9
शु. 5 चं.
6
8

16 जुलाई 22घं. 27मि. से
17 जुलाई 15घं. 6मि.

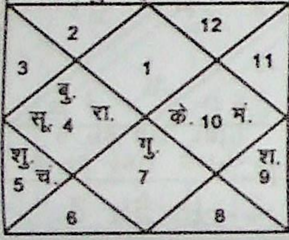
3
2
12
1
11
बु.
सू. 4 रा.
के. 10 मं.
गु. 7
श. 9
शु. 5 चं.
6
8

17 जुलाई 15घं. 7मि. से
19 जुलाई 19घं. 54मि.

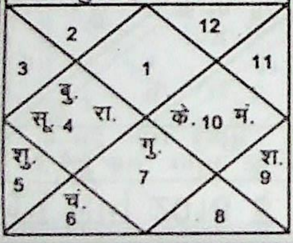
3
2
12
1
11
बु.
सू. 4 रा.
के. 10 मं.
गु. 7
श. 9
शु. 5
चं. 6
8

19 जुलाई 19घं. 55मि. से
22 जुलाई 4घं. 15मि.

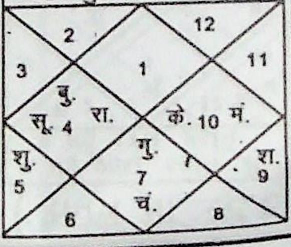
3
2
12
1
11
बु.
सू. 4 रा.
के. 10 मं.
गु. 7
चं.
श. 9
शु. 5
6
8

22 जुलाई 4घं. 16मि. से
24 जुलाई 15घं. 27मि.

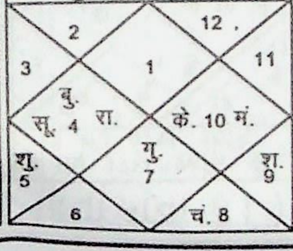
3
2
12
1
11
बु.
सू. 4 रा.
के. 10 मं.
गु. 7
श. 9
शु. 5
6
चं. 8

24 जुलाई 15घं. 28मि. से
27 जुलाई 4घं. 11मि.

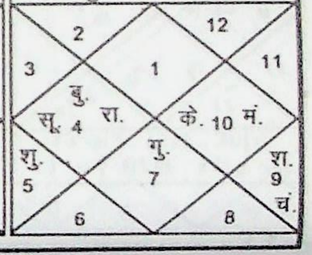
3
2
12
1
11
बु.
सू. 4 रा.
के. 10 मं.
गु. 7
श. 9
चं.
शु. 5
6
8

27 जुलाई से 10 सितंबर, सन् 2018 ई. (सर्वत्र भा.स्टैं.टा. दिया गया है।)

27 जुलाई 4घं. 12मि.से
29 जुलाई 17घं. 05 मि.

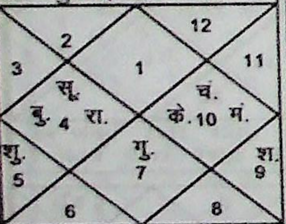
2 12 3 1 11 सू. चं. बु. 4 रा. के. 10 मं. शु. 5 गु. 7 श. 9 6 8

29 जुलाई 17घं. 06 मि.से
1 अगस्त 4घं. 53 मि.

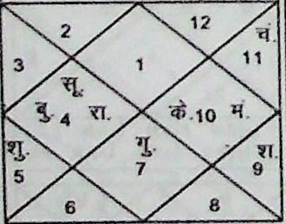
2 12 चं. 3 1 11 सू. बु. 4 रा. के. 10 मं. शु. 5 गु. 7 श. 9 6 8

1 अगस्त 4घं. 54 मि. से
1 अगस्त 12घं. 26 मि.

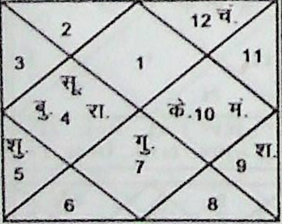
2 12 चं. 3 1 11 सू. बु. 4 रा. के. 10 मं. शु. 5 गु. 7 श. 9 6 8

1 अगस्त 12घं. 27 मि. से
3 अगस्त 14घं. 24 मि.

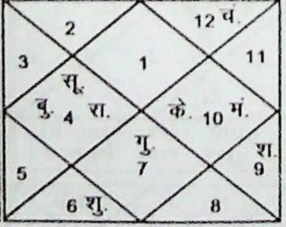
2 12 चं. 3 1 11 सू. बु. 4 रा. के. 10 मं. 5 गु. 7 श. 9 6 शु. 8

3 अगस्त 14घं. 25 मि.से
5 अगस्त 20 घं. 44 मि.

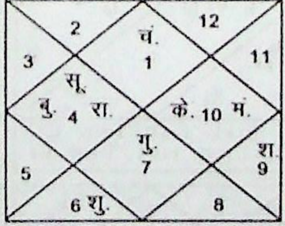
2 चं. 12 3 1 11 सू. बु. 4 रा. के. 10 मं. 5 गु. 7 श. 9 6 शु. 8

5 अगस्त 20 घं. 45 मि.से
7 अगस्त 23 घं. 48 मि.

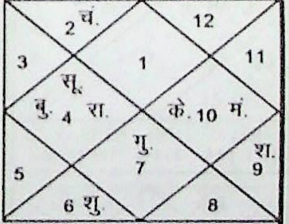
2 चं. 12 3 1 11 सू. बु. 4 रा. के. 10 मं. 5 गु. 7 श. 9 6 शु. 8

7 अगस्त 23 घं. 49 मि.से
10 अगस्त 0 घं. 24 मि.

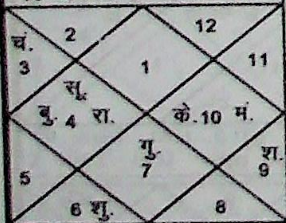
चं. 2 12 3 1 11 सू. बु. 4 रा. के. 10 मं. गु. 7 श. 9 5 6 शु. 8

10 अगस्त 0 घं. 25 मि.से
12 अगस्त 0 घं. 04 मि.

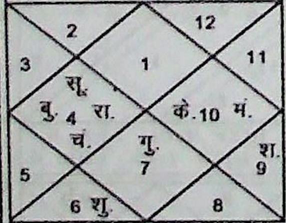
2 12 3 1 11 सू. बु. 4 रा. के. 10 मं. चं. गु. 7 श. 9 5 6 शु. 8

12 अगस्त 0 घं. 05 मि.से
14 अगस्त 0 घं. 38 मि.

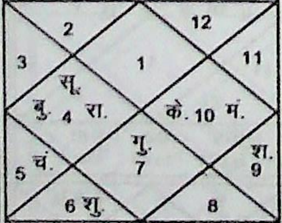
2 12 3 1 11 सू. बु. 4 रा. के. 10 मं. गु. 7 श. 9 5 चं. 6 शु. 8

14 अगस्त 0 घं. 39 मि.से
16 अगस्त 3घं. 53 मि.

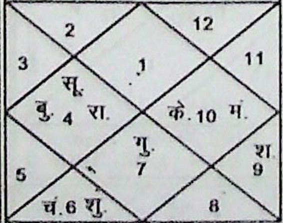
2 12 3 1 11 सू. बु. 4 रा. के. 10 मं. गु. 7 श. 9 5 चं. 6 शु. 8

16 अगस्त 3घं. 54 मि.से
17 अगस्त 6घं. 49 मि.

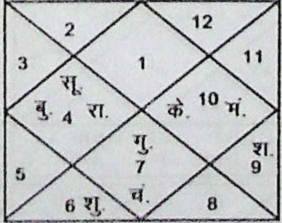
2 12 3 1 11 सू. बु. 4 रा. के. 10 मं. गु. 7 श. 9 5 6 शु. चं. 8

17 अगस्त 6घं. 50 मि.से
18 अगस्त 10घं. 58 मि.

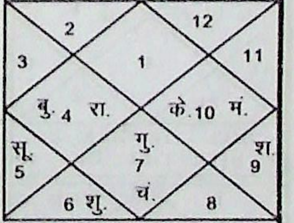
2 12 3 1 11 बु. 4 रा. के. 10 मं. सू. 5 गु. 7 श. 9 6 शु. चं. 8

18 अगस्त 10घं. 59 मि.से
20 अगस्त 21घं. 40 मि.

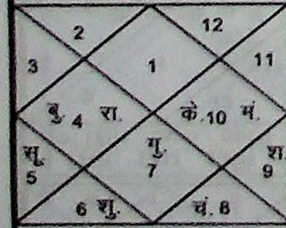
2 12 3 1 11 बु. 4 रा. के. 10 मं. सू. 5 गु. 7 श. 9 6 शु. चं. 8

20 अगस्त 21घं. 41 मि.से
23 अगस्त 10घं. 25 मि.

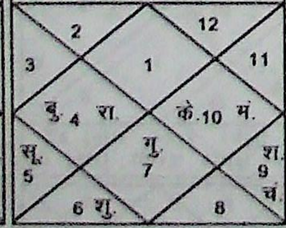
2 12 3 1 11 बु. 4 रा. के. 10 मं. सू. 5 गु. 7 श. 9 चं. 6 शु. 8

23 अगस्त 10घं. 26 मि. से
25 अगस्त 23घं. 13 मि.

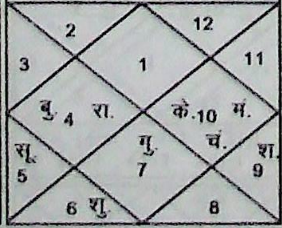
2 12 3 1 11 बु. 4 रा. के. 10 मं. सू. 5 गु. 7 चं. श. 9 6 शु. 8

25 अगस्त 23घं. 14 मि. से
28 अगस्त 10घं. 38 मि.

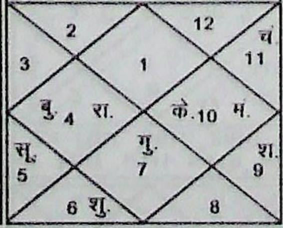
2 12 चं. 3 1 11 बु. 4 रा. के. 10 मं. सू. 5 गु. 7 श. 9 6 शु. 8

28 अगस्त 10घं. 39 मि. से
30 अगस्त 20घं. 0 मि.

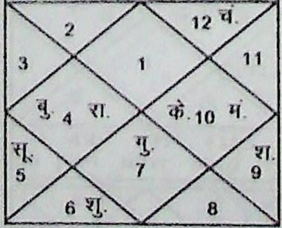
2 12 चं. 3 1 11 बु. 4 रा. के. 10 मं. सू. 5 गु. 7 श. 9 6 शु. 8

30 अगस्त 20घं. 01 मि. से
1 सित. 23घं. 26 मि.

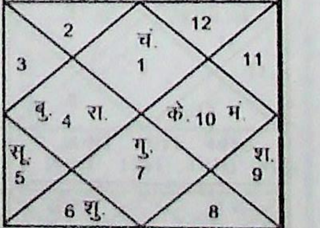
2 चं. 12 3 1 11 बु. 4 रा. के. 10 मं. सू. 5 गु. 7 श. 9 6 शु. 8

1 सित. 23घं. 27 मि. से
2 सित. 3घं. 0 मि.

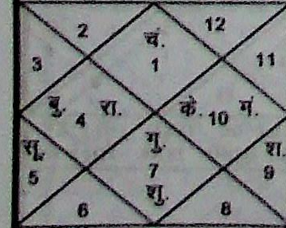
2 चं. 12 3 1 11 बु. 4 रा. के. 10 मं. सू. 5 गु. 7 शु. श. 9 6 8

2 सित. 3घं. 01 मि. से
2 सित. 20घं. 58 मि.

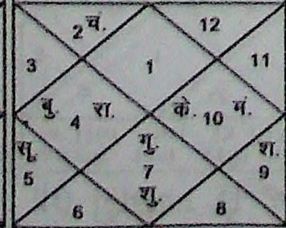
2 चं. 12 3 1 11 बु. 4 रा. के. 10 मं. सू. 5 गु. 7 शु. श. 9 6 8

2 सित. 20घं. 59 मि. से
4 सित. 7घं. 31 मि.

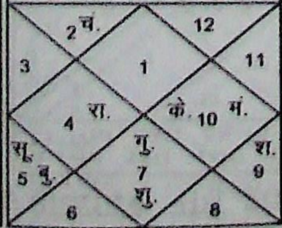
2 चं. 12 3 1 11 4 रा. के. 10 मं. सू. 5 बु. गु. 7 शु. श. 9 6 8

4 सित. 7घं. 32 मि. से
6 सित. 9घं. 44 मि.

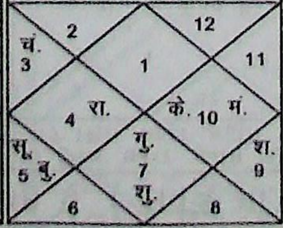
चं. 2 12 3 1 11 4 रा. के. 10 मं. सू. 5 बु. गु. 7 शु. श. 9 6 8

6 सित. 9घं. 45 मि. से
8 सित. 10घं. 28 मि.

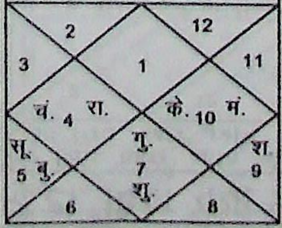
2 12 3 1 11 चं. 4 रा. के. 10 मं. सू. 5 बु. गु. 7 शु. श. 9 6 8

8 सित. 10घं. 29 मि. से
10 सित. 11घं. 07 मि.

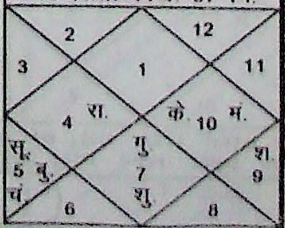
2 12 3 1 11 4 रा. के. 10 मं. सू. 5 बु. चं. गु. 7 शु. श. 9 6 8

10 सितंबर से 24 अक्तूबर, सन् 2018 ई. (सर्वत्र भा.स्टैं.टा. दिया गया है।)

10 सित. 11घं. 08मि. से
12 सित. 13घं. 30 मि.

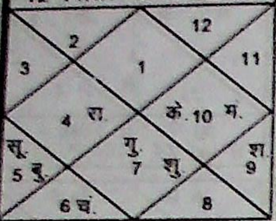
2
12
3
1
11
4 रा.
के.10 मं.
सू.
5 बु.
गु.
7 शु.
श.
9
6 चं.
8

12 सित. 13घं. 31मि. से
14 सित. 19घं. 13 मि.

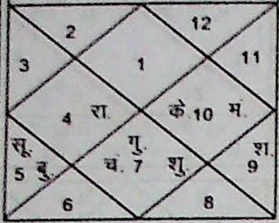
2
12
3
1
11
4 रा.
के.10 मं.
सू.
5 बु.
गु.
चं. 7 शु.
श.
9
6
8

14 सित. 19घं. 14मि. से
17 सित. 04घं. 53 मि.

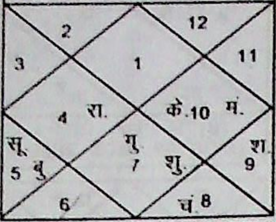
2
12
3
1
11
4 रा.
के.10 मं.
सू.
5 बु.
गु.
7 शु.
श.
9
6
चं.8

17 सित. 04घं. 54मि. से
17 सित. 06घं. 45मि.

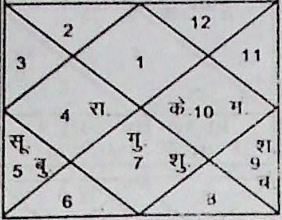
2
12
3
1
11
4 रा.
के.10 मं.
सू.
5 बु.
गु.
7 शु.
श.
9
चं.
6
8

17 सित. 06घं. 46मि. से
19 सित. 04घं. 14मि.

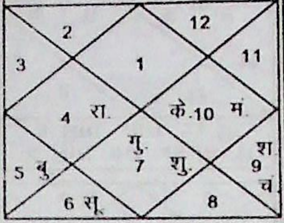
2
12
3
1
11
4 रा.
के.10 मं.
5 बु.
गु.
7 शु.
श.
9
चं.
6 सू.
8

19 सित. 04घं. 15मि. से
19 सित. 17घं. 21मि.

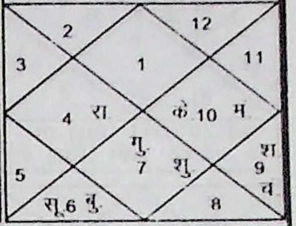
2
12
3
1
11
4 रा.
के.10 मं.
5
गु.
7 शु.
श.
9
चं.
सू.6 बु.
8

19 सित. 17घं. 22मि. से
22 सित. 06घं. 09मि.

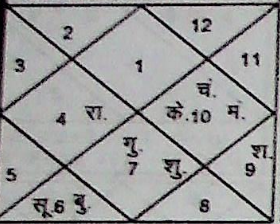
2
12
3
1
11
चं.
4 रा.
के.10 मं.
5
गु.
7 शु.
श.
9
सू.6 बु.
8

22 सित. 06घं. 10मि. से
24 सित. 17घं. 14मि.

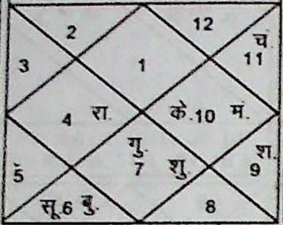
2
12
चं.
3
1
11
4 रा.
के.10 मं.
5
गु.
7 शु.
श.
9
सू.6 बु.
8

24 सित. 17घं. 15मि. से
27 सित. 01घं. 53मि.

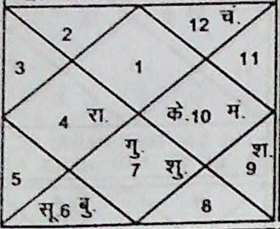
2
12 चं.
3
1
11
4 रा.
के.10 मं.
5
गु.
7 शु.
श.
9
सू.6 बु.
8

27 सित. 01घं. 54मि. से
29 सित. 08घं. 25मि.

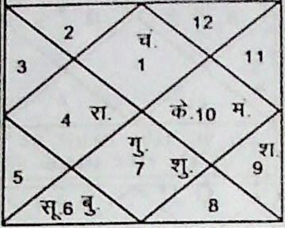
2
12
चं.
3
1
11
4 रा.
के.10 मं.
5
गु.
7 शु.
श.
9
सू.6 बु.
8

29 सित. 08घं. 26मि. से
1 अक्तू. 13घं. 17मि.

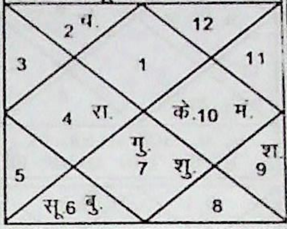
2 चं.
12
3
1
11
4 रा.
के.10 मं.
5
गु.
7 शु.
श.
9
सू.6 बु.
8

1 अक्तू. 13घं. 18मि. से
3 अक्तू. 16घं. 44मि.

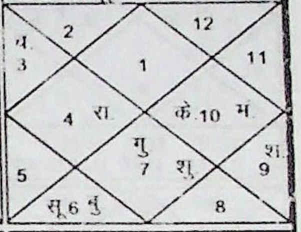
2
12
चं.
3
1
11
4 रा.
के.10 मं.
5
गु.
7 शु.
श.
9
सू.6 बु.
8

3 अक्तू. 16घं. 45मि. से
5 अक्तू. 19घं. 01मि.

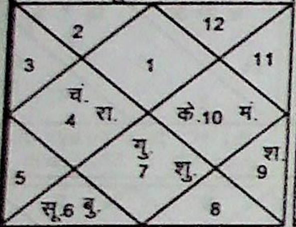
2
12
3
1
11
चं.
4 रा.
के.10 मं.
5
गु.
7 शु.
श.
9
सू.6 बु.
8

5 अक्तू. 19घं. 02मि. से
6 अक्तू. 12घं. 42मि.

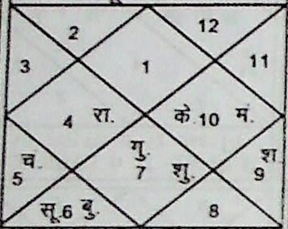
2
12
3
1
11
4 रा.
के.10 मं.
चं.
5
गु.
7 शु.
श.
9
सू.6 बु.
8

6 अक्तू. 12घं. 43मि. से
7 अक्तू. 20घं. 50मि.

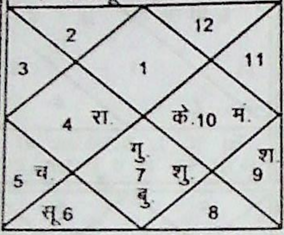
2
12
3
1
11
4 रा.
के.10 मं.
5 चं.
गु.
7
बु.
शु.
श.
9
सू.6
8

7 अक्तू. 20घं. 51मि. से
9 अक्तू. 23घं. 28मि.

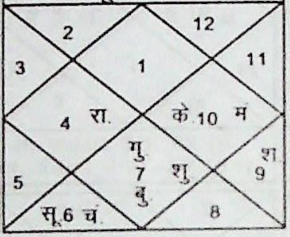
2
12
3
1
11
4 रा.
के.10 मं.
5
गु.
7
बु.
शु.
श.
9
सू.6 चं.
8

9 अक्तू. 23घं. 29मि. से
11 अक्तू. 19घं. 20मि.

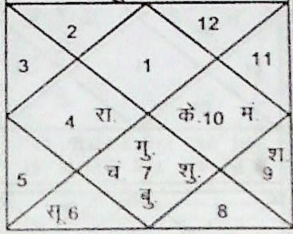
2
12
3
1
11
4 रा.
के.10 मं.
5
गु.
चं. 7
बु.
शु.
श.
9
सू.6
8

11 अक्तू. 19घं. 21मि. से
12 अक्तू. 4घं. 33मि.

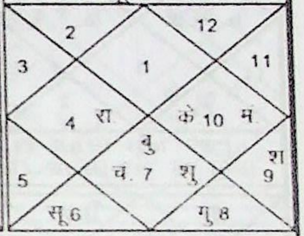
2
12
3
1
11
4 रा.
के.10 मं.
5
बु.
चं. 7 शु.
श.
9
सू.6
गु.8

12 अक्तू. 04घं. 34मि. से
14 अक्तू. 13घं. 13मि.

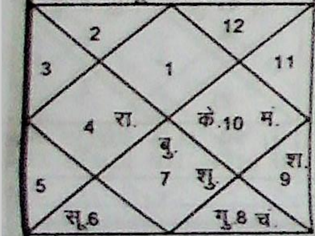
2
12
3
1
11
4 रा.
के.10 मं.
5
बु.
7 शु.
श.
9
सू.6
गु.8 चं.

14 अक्तू. 13घं. 14मि. से
17 अक्तू. 01घं. 07मि.

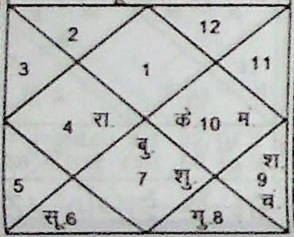
2
12
3
1
11
4 रा.
के.10 मं.
5
बु.
7 शु.
श.
9
चं.
सू.6
गु.8

17 अक्तू. 01घं. 08मि. से
17 अक्तू. 18घं. 43मि.

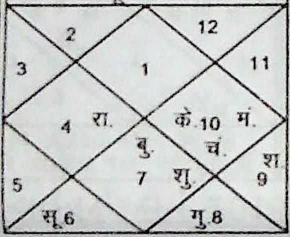
2
12
3
1
11
4 रा.
के.10 मं.
5
बु.
चं.
7 शु.
श.
9
सू.6
गु.8

17 अक्तू. 18घं. 44मि. से
19 अक्तू. 14घं. 00मि.

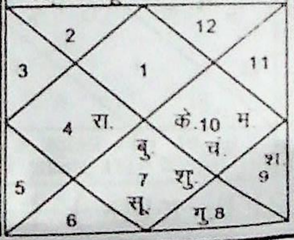
2
12
3
1
11
4 रा.
के.10 मं.
5
बु.
चं.
7 शु.
श.
9
6
सू.
गु.8

19 अक्तू. 14घं. 01मि. से
22 अक्तू. 01घं. 11मि.

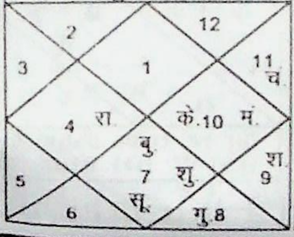
2
12
3
1
11
चं.
4 रा.
के.10 मं.
5
बु.
7 शु.
श.
9
6
सू.
गु.8

22 अक्तू. 01घं. 12मि. से
24 अक्तू. 09घं. 21मि.

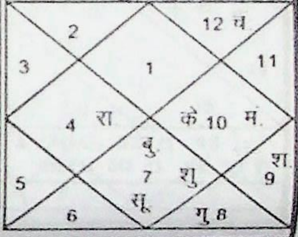
2
12 चं.
3
1
11
4 रा.
के.10 मं.
5
बु.
7 शु.
श.
9
6
सू.
गु.8

24 अक्तूबर से 10 दिसंबर, सन् 2018 ई. (सर्वत्र भा.स्टैं.टा. दिया गया है)

24 अक्तू. 09घं. 22मि.से
26 अक्तू. 14घं. 52मि.

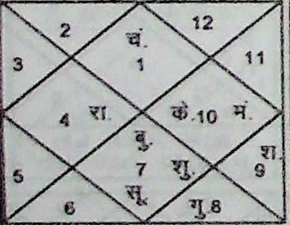
2
चं.
12
3
1
11
4 रा.
के.10 मं.
बु.
5
7 शु.
श.
9
6
सू.
गु.8

26 अक्तू. 14घं. 53मि.से
26 अक्तू. 20घं. 45मि.

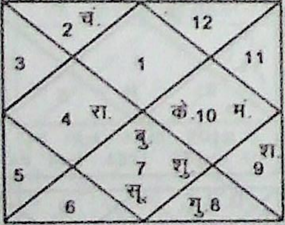
2 चं.
12
3
1
11
4 रा.
के.10 मं.
बु.
5
7 शु.
श.
9
6
सू.
गु.8

26 अक्तू. 20घं. 46मि.से
28 अक्तू. 18घं. 50मि.

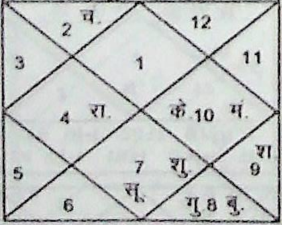
2 चं.
12
3
1
11
4 रा.
के.10 मं.
5
7 शु.
श.
9
6
सू.
गु.8 बु.

28 अक्तू. 18घं. 51मि.से
30 अक्तू. 22घं. 09मि.

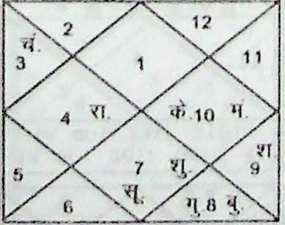
2
12
चं.
3
1
11
4 रा.
के.10 मं.
5
7 शु.
श.
9
6
सू.
गु.8 बु.

30 अक्तू. 22घं. 10मि.से
2 नव. 01घं. 15मि.

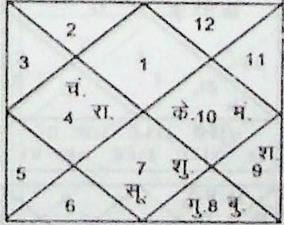
2
12
3
1
11
चं.
4 रा.
के.10 मं.
5
7 शु.
श.
9
6
सू.
गु.8 बु.

2 नव. 01घं. 16मि. से
4 नव. 04घं. 25मि.

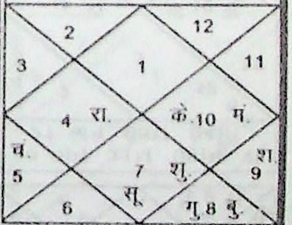
2
12
3
1
11
4 रा.
के.10 मं.
चं.
5
7 शु.
श.
9
6
सू.
गु.8 बु.

4 नव. 04घं. 26मि. से
6 नव. 08घं. 12मि.

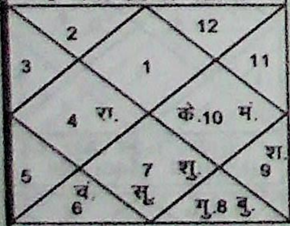
2
12
3
1
11
4 रा.
के.10 मं.
5
7 शु.
श.
9
चं.
6
सू.
गु.8 बु.

6 नव. 08घं. 13मि. से
6 नव. 08घं. 20मि.

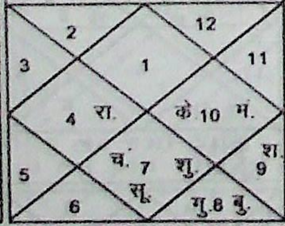
2
12
3
1
11
4 रा.
के.10 मं.
5
चं. 7 शु.
श.
9
6
सू.
गु.8 बु.

6 नव. 08घं. 21मि. से
8 नव. 13घं. 40मि.

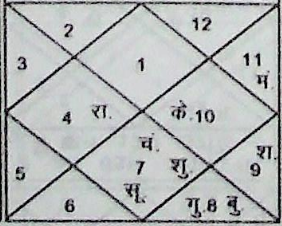
2
12
3
1
11
मं.
4 रा.
के.10
चं.
5
7 शु.
श.
9
6
सू.
गु.8 बु.

8 नव. 13घं. 41मि. से
10 नव. 21घं. 58मि.

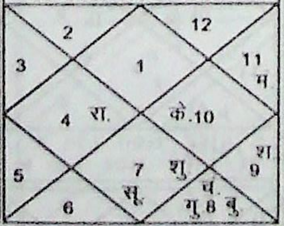
2
12
3
1
11
मं.
4 रा.
के.10
5
7 शु.
चं.
श.
9
6
सू.
गु.8 बु.

10 नव. 21घं. 59मि. से
13 नव. 09घं. 19मि.

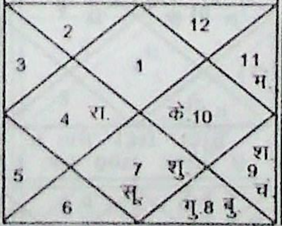
2
12
3
1
11
मं.
4 रा.
के.10
5
7 शु.
श.
9
चं.
6
सू.
गु.8 बु.

13 नव. 09घं. 20मि. से
15 नव. 22घं. 16मि.

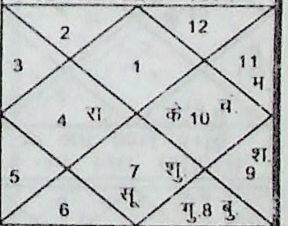
2
12
3
1
11
मं.
4 रा.
के.10 मं.
5
7 शु.
श.
9
6
सू.
गु.8 बु.

15 नव. 22घं. 17मि. से
16 नव. 18घं. 30मि.

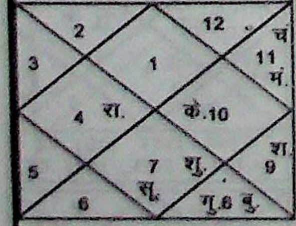
2
12
चं.
3
1
11
मं.
4 रा.
के.10
5
7 शु.
श.
9
6
सू.
गु.8 बु.

16 नव. 18घं. 31मि. से
18 नव. 10घं. 02मि.

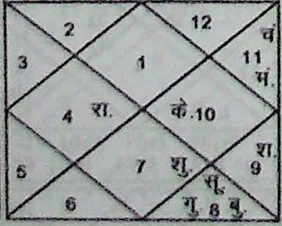
2
12
चं
3
1
11
मं.
4 रा.
के.10
5
7 शु.
सू.
श.
9
6
गु. 8 बु.

18 नव. 10घं. 03मि. से
20 नव. 18घं. 32मि.

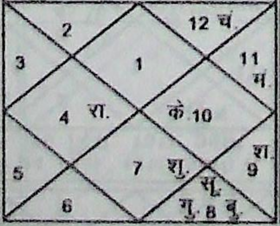
2
12 चं.
3
1
11
मं.
4 रा.
के.10
5
7 शु.
सू.
श.
9
6
गु. 8 बु.

20 नव. 18घं. 33मि. से
22 नव. 23घं. 34मि.

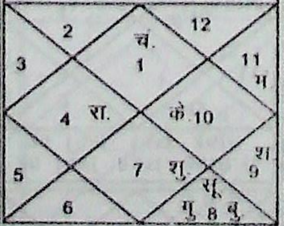
2
चं.
12
3
1
11
मं.
4 रा.
के.10
5
7 शु.
सू.
श.
9
6
गु. 8 बु.

22 नव. 23घं. 35मि. से
25 नव. 02घं. 18मि.

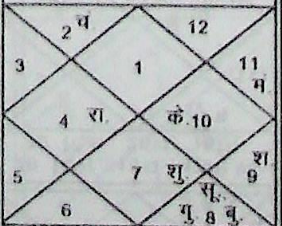
2 चं.
12
3
1
11
मं.
4 रा.
के.10
5
7 शु.
सू.
श.
9
6
गु. 8 बु.

25 नव. 02घं. 19मि. से
27 नव. 04घं. 15मि.

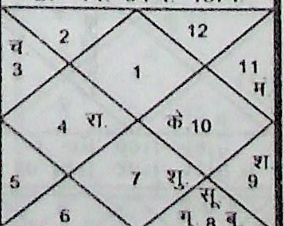
चं.
2
12
3
1
11
मं.
4 रा.
के.10
5
7 शु.
सू.
श.
9
6
गु. 8 बु.

27 नव. 04घं. 16मि. से
29 नव. 06घं. 37मि.

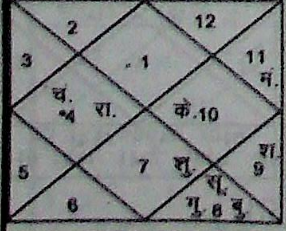
2
12
3
1
11
मं.
चं.
4 रा.
के.10
5
7 शु.
सू.
श.
9
6
गु. 8 बु.

29 नव. 06घं. 38मि. से
1 दिसं. 10घं. 03मि.

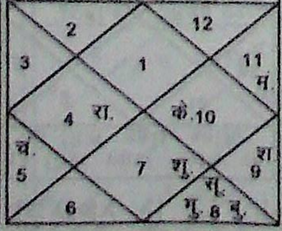
2
12
3
1
11
मं.
4 रा.
के.10
चं.
5
7 शु.
सू.
श.
9
6
गु. 8 बु.

1 दिसं. 10घं. 04मि. से
3 दिसं. 14घं. 51मि.

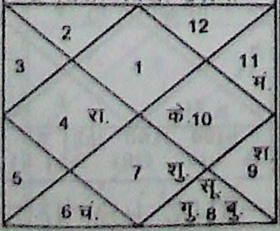
2
12
3
1
11
मं.
4 रा.
के.10
5
7 शु.
सू.
श.
9
6 चं.
गु. 8 बु.

3 दिसं. 14घं. 52मि. से
5 दिसं. 21घं. 21मि.

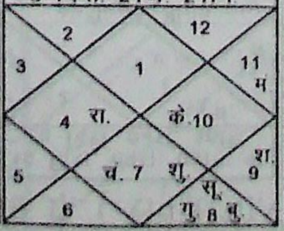
2
12
3
1
11
मं.
4 रा.
के.10
5
चं. 7 शु.
सू.
श.
9
6
गु. 8 बु.

5 दिसं. 21घं. 22मि. से
8 दिसं. 06घं. 05मि.

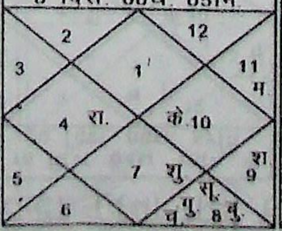
2
12
3
1
11
मं.
4 रा.
के.10
5
7 शु.
सू.
श.
9
6
चं. गु. 8 बु.

8 दिसं. 06घं. 06मि. से
10 दिसं. 17घं. 17मि.

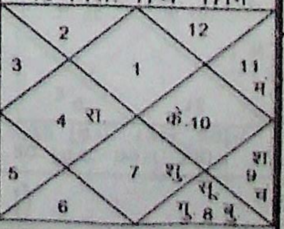
2
12
3
1
11
मं.
4 रा.
के.10
5
7 शु.
सू.
श.
9
चं.
6
गु. 8 बु.

10 दिसंबर से 21 जनवरी, सन् 2018–19 ई. (सर्वत्र भा.स्टैं.टा. दिया गया है।)

10 दिस. 17घं. 18मि. से
13 दिसं. 06घं. 10मि.

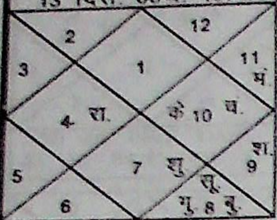
2
12
3
1
11 मं.
4 रा.
के.10 चं.
5
7 शु.
श. 9
सू.
6
गु. 8 बु.

13 दिसं. 06घं. 11मि. से
15 दिसं. 18घं. 37मि.

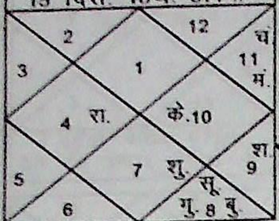
2
12
चं.
3
1
11 मं.
4 रा.
के.10
5
7 शु.
श. 9
सू.
6
गु. 8 बु.

15 दिस. 18घं. 38मि. से
16 दिसं. 09घं. 08मि.

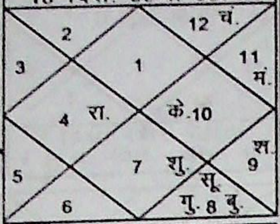
2
12 चं.
3
1
11 मं.
4 रा.
के.10
श. 9
5
7 शु.
सू.
6
गु. 8 बु.

16 दिसं. 09घं. 09मि. से
18 दिसं. 04घं. 15मि.

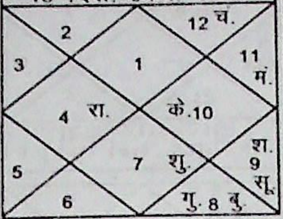
2
12 चं.
3
1
11 मं.
4 रा.
के.10
5
7 शु.
श. 9 सू.
6
गु. 8 बु.

18 दिसं. 04घं. 16मि. से
20 दिसं. 09घं. 57मि.

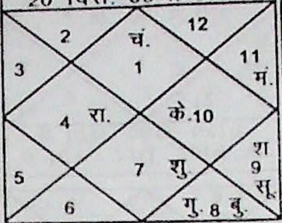
2
चं.
12
3
1
11 मं.
4 रा.
के.10
5
7 शु.
श 9 सू.
6
गु. 8 बु.

20 दिसं. 09घं. 58मि. से
22 दिसं. 12घं. 20मि.

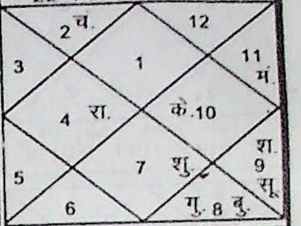
2 चं.
12
3
1
11 मं.
4 रा.
के.10
5
7 शु.
श. 9 सू.
6
गु. 8 बु.

22 दिस. 12घं. 21मि से
23 दिस. 12घं. 56मि.

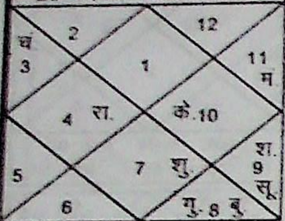
चं. 3
2
12
1
11 मं
4 रा.
के.10
5
7 शु.
श. 9 सू.
6
गु. 8 बु.

23 दिसं. 12घं. 57मि से
24 दिसं. 12घं. 58मि.

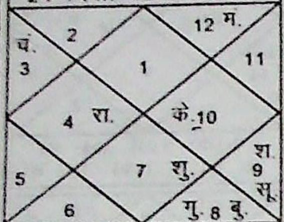
चं. 3
2
12 मं.
1
11
4 रा.
के.10
5
7 शु.
श. 9 सू.
6
गु. 8 बु.

24 दिसं. 12घं. 59मि से
26 दिसं. 13घं. 38मि.

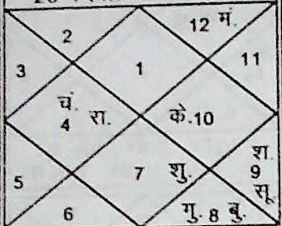
2
12 मं.
3
1
11
चं. 4 रा.
के.10
5
7 शु.
श. 9 सू.
6
गु. 8 बु.

26 दिसं. 13घं. 39मि से
28 दिसं. 15घं. 46मि

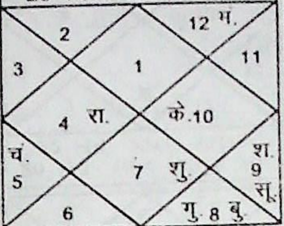
2
12 मं.
3
1
11
4 रा.
के.10
चं. 5
7 शु.
श. 9 सू.
6
गु. 8 बु.

28 दिस. 15घं. 47मि से
30 दिस. 20घं. 16मि.

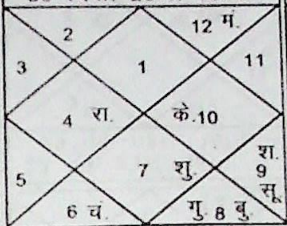
2
12 मं.
3
1
11
4 रा.
के.10
5
7 शु.
श. 9 सू.
6 चं.
गु. 8 बु.

30 दिसं. 20घं. 17मि से
1 जन. 09घं. 49मि.

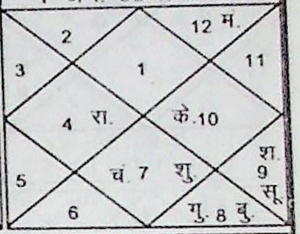
2
12 मं.
3
1
11
4 रा.
के.10
5
चं. 7 शु.
श. 9 सू.
6
गु. 8 बु.

1 जन. 09घं. 50मि. से
1 जन. 20घं. 40मि

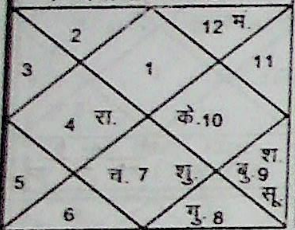
2
12 मं.
3
1
11
4 रा.
के.10
5
चं. 7 शु.
श. बु.9 सू.
6
गु. 8

1 जन. 20घं. 41मि. से
2 जन. 03घं. 21मि.

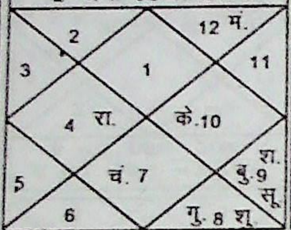
2
12 मं.
3
1
11
4 रा.
के.10
5
चं. 7
श. बु.9 सू.
6
गु. 8 शु.

2 जन. 03घं. 22मि. से
4 जन. 12घं. 52मि.

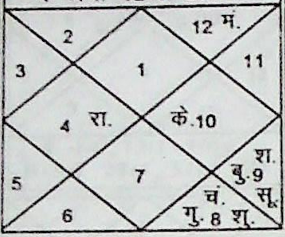
2
12 मं.
3
1
11
4 रा.
के.10
5
7
श. बु.9 सू.
चं.
6
गु. 8 शु.

4 जन. 12घं. 53मि. से
7 जन. 00घं. 23मि.

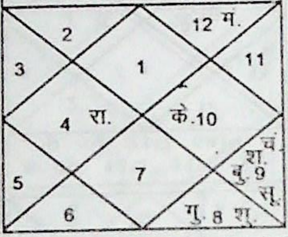
2
12 मं.
3
1
11
4 रा.
के.10
5
7
चं. श. बु.9 सू.
6
गु. 8 शु.

7 जन. 00घं. 24मि. से
9 जन. 13घं. 13मि.

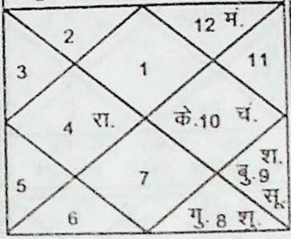
2
12 मं.
3
1
11
4 रा.
के.10 चं.
5
7
श. बु.9 सू.
6
गु. 8 शु.

9 जन. 13घं. 14मि. से
12 जन. 02घं. 01मि.

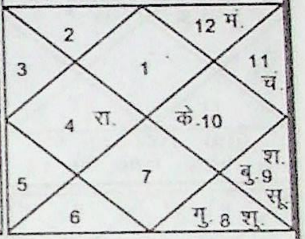
2
12 मं.
3
1
11 चं.
4 रा.
के.10
5
7
श. बु.9 सू.
6
गु. 8 शु.

12 जन. 02घं. 02मि. से
14 जन. 12घं. 51मि.

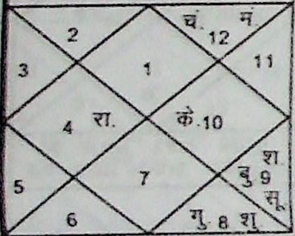
2
चं. मं. 12
3
1
11
4 रा.
के.10
5
7
श. बु.9 सू.
6
गु. 8 शु.

14 जन. 12घं. 52मि. से
14 जन. 19घं. 50मि.

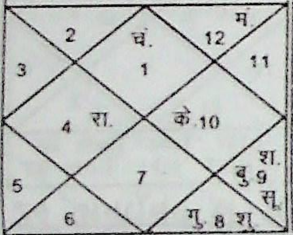
2
चं.
मं. 12
3
1
11
4 रा.
के.10
5
7
श. बु.9 सू.
6
गु. 8 शु.

14 जन. 19घं. 51मि. से
16 जन. 20घं. 07मि.

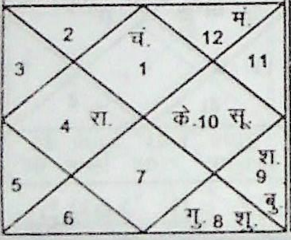
2
चं.
मं. 12
3
1
11
4 रा.
के.10 सू.
5
7
श. 9 बु.
6
गु. 8 शु.

16 जन. 20घं. 08मि. से
18 जन. 23घं. 31मि.

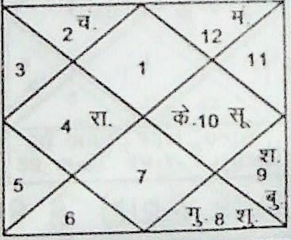
2 चं.
मं. 12
3
1
11
4 रा.
के.10 सू.
5
7
श. 9 बु.
6
गु. 8 शु.

18 जन. 23घं. 32मि. से
20 जन. 21घं. 04मि.

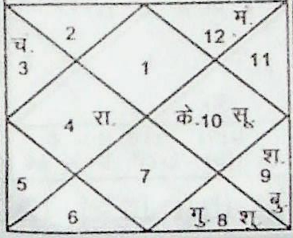
चं. 3
2
मं. 12
1
11
4 रा.
के.10 सू.
5
7
श. 9 बु.
6
गु. 8 शु.

20 जन. 21घं. 05मि. से
21 जन. 00घं. 04मि.

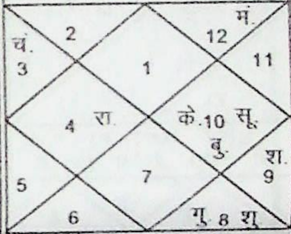
चं. 3
2
मं. 12
1
11
4 रा.
के.10 सू.
बु.
5
7
श. 9
6
गु. 8 शु.

21 जनवरी से 2 मार्च, सन् 2019 ई. (सर्वत्र भा.स्टैं.टा. दिया गया है।)

21 जन 00घ 05मि से
22 जन 23घ 30मि

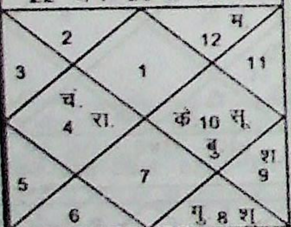
2
12 म
3
1
11
चं.
4 रा.
के 10 सू.
बु
श
9
5
7
6
गु 8 शु

22 जन 23घ 31मि से
24 जन 23घ 48मि

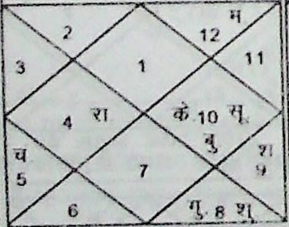
2
12 म
3
1
11
4 रा
के 10 सू.
बु
श
9
च
5
7
6
गु 8 शु

24 जन 23घ 49मि से
27 जन 02घ 38मि

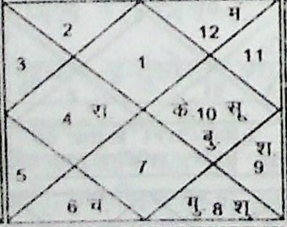
2
12 म
3
1
11
4 रा
के 10 सू.
बु
श
9
5
7
6 च
गु 8 शु

27 जन 02घ 39मि से
29 जन 08घ 57मि

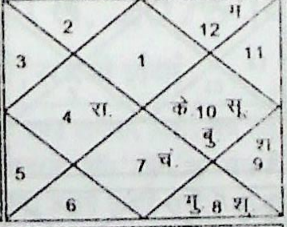
2
12 म
3
1
11
4 रा.
के 10 सू.
बु
श
9
5
7 चं.
6
गु 8 शु

29 जन 08घ 58मि से
29 जन 23घ 27मि

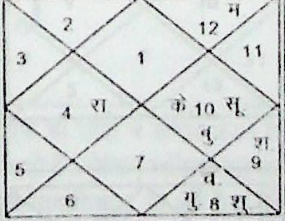
2
12 म
3
1
11
4 रा
के 10 सू.
बु
श
9
5
7
चं.
6
गु 8 शु

29 जन 23घ 28मि से
31 जन 18घ 39मि

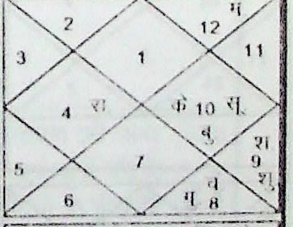
2
12 मं
3
1
11
4 रा
के 10 सू.
बु
श
9
शु
5
7
6
चं
गु 8

31 जन 18घ 40मि से
3 फर 06घ 37मि

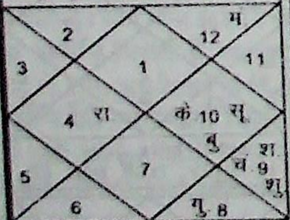
2
12 म
3
1
11
4 रा
के 10 सू.
बु
श.
चं 9
शु
5
7
6
गु 8

3 फर 06घ 38मि से
5 फर 19घ 33मि

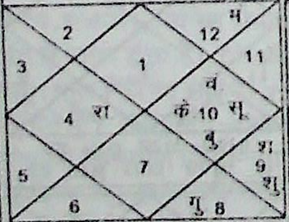
2
12 म
3
1
11
चं
4 रा
के 10 सू.
बु
श
9
शु
5
7
6
गु 8

5 फर 19घ 34मि से
5 फर 23घ 48मि

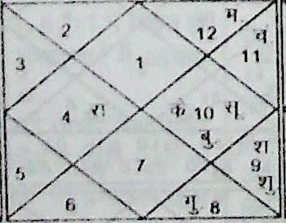
2
12 म.
चं
11
3
1
4 रा
के 10 सू.
बु
श
9
शु
5
7
6
गु 8

5 फर 23घ 49मि से
7 फर 10घ 09मि

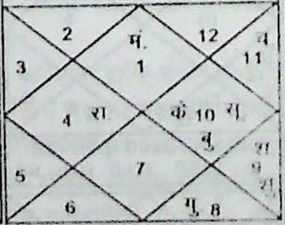
2
मं.
12
चं
11
3
1
4 रा
के 10 सू.
बु
श
9
शु
5
7
6
गु 8

7 फर 10घ 10मि से
8 फर 08घ 16मि

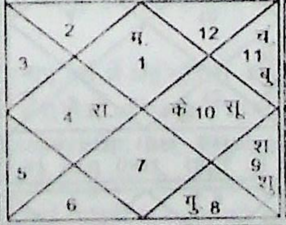
2
मं.
12
चं.
11
बु
3
1
4 रा
के 10 सू.
श
9
शु
5
7
6
गु 8

8 फर 08घ 17मि से
10 फर 19घ 36मि

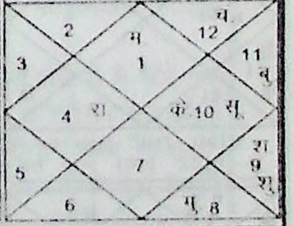
2
म
चं.
12
11
बु
3
1
4 रा
के 10 सू.
श
9
शु
5
7
6
गु 8

10 फर 19घ 37मि से
13 फर 04घ 17मि

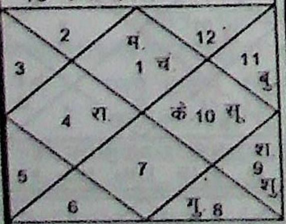
2
मं.
12
3
1 चं
11
बु
4 रा.
के 10 सू.
श
9
शु
5
7
6
गु 8

13 फर 04घ 18मि से
13 फर 08घ 47मि

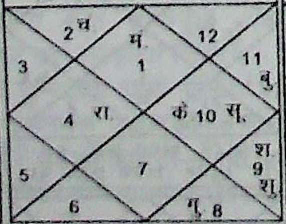
2 चं
मं.
12
3
1
11
बु
4 रा.
के 10 सू.
श.
9
शु
5
7
6
गु 8

13 फर 08घ 48मि से
15 फर 09घ 30मि

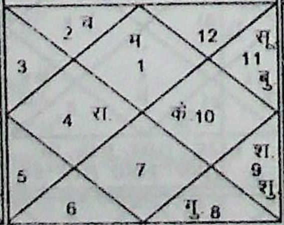
2 चं
म
12
सू.
11
बु
3
1
4 रा.
कं 10
श.
9
शु
5
7
6
गु 8

15 फर 09घ 31मि से
17 फर 11घ 22मि

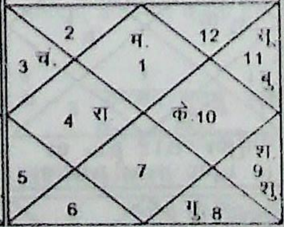
2
म.
12
सू.
3 चं.
1
11
बु
4 रा
के 10
श.
9
शु
5
7
6
गु 8

17 फर 11घ 23मि से
19 फर 11घ 01मि

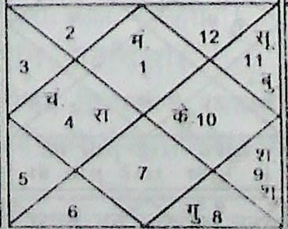
2
मं
12
सू.
3
1
11
बु
चं.
4 रा
के 10
श
9
शु
5
7
6
गु 8

19 फर 11घ 02मि से
21 फर 10घ 21मि

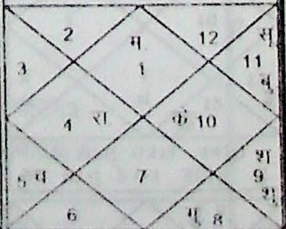
2
म
12
सू
3
1
11
बु
4 रा
कं 10
श
9
शु
5 च
7
6
गु 8

21 फर 10घ 22मि से
23 फर 11घ 25मि

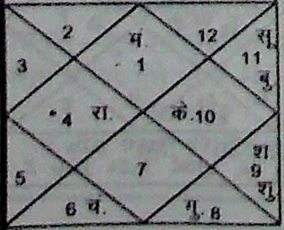
2
मं.
12
सू
3
1
11
बु
4 रा.
के 10
श
9
शु
5
7
6 चं.
गु 8

23 फर 11घ 26मि से
24 फर 22घ 44मि

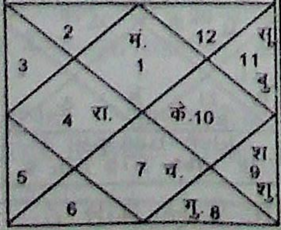
2
मं.
12
सू
3
1
11
बु
4 रा.
के 10
श
9
शु
5
7 चं.
6
गु 8

24 फर 22घ 45मि से
25 फर 08घ 58मि

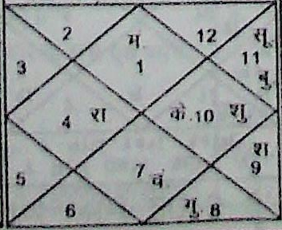
2
म
12
सू.
3
1
11
बु
4 रा
के 10 शु
श
9
5
7 चं
6
गु 8

25 फर 08घ 59मि से
25 फर 16घ 00मि

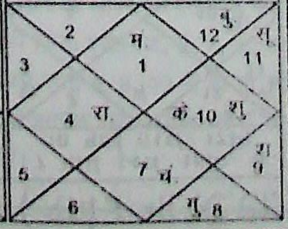
2
म
बु
12
सू.
3
1
11
4 रा.
के 10 शु
श
9
5
7 चं.
6
गु 8

25 फर 16घ 01मि से
28 फर 00घ 44मि

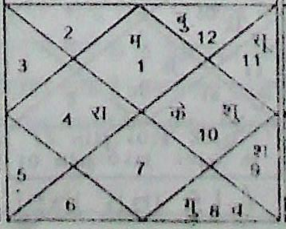
2
म
बु
12
सू.
3
1
11
4 रा
के 10
शु
श
9
5
7
6
गु 8 चं

28 फर 00घ 45मि से
2 मार्च 12घ 38मि

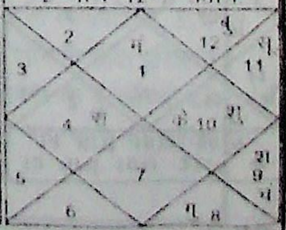
2
म
बु
12
सू
3
1
11
4 रा
के 10 शु
श
9
चं
5
7
6
गु 8

2 मार्च से 5 अप्रैल, सन् 2019 ई. (सर्वत्र भा.स्टैं.टा. दिया गया है।)

2 मार्च 12घं. 39मि. से
5 मार्च 01घं. 43मि.

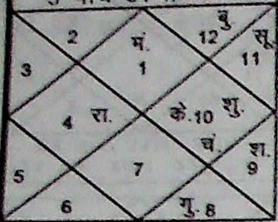
2
मं.
12
बु.
सू.
3
1
11
4
रा.
के.10
शु.
चं.
5
7
श.
9
6
गु. 8

5 मार्च 01घं. 44मि. से
7 मार्च 09घं. 35मि.

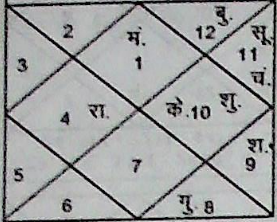
2
मं.
12
बु.
सू.
3
1
11
चं.
4
रा.
के.10
शु.
5
7
श.
9
6
गु. 8

7 मार्च 09घं. 36मि. से
7 मार्च 14घं. 14मि.

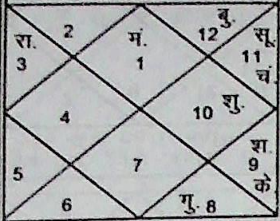
रा.
2
मं.
12
बु.
सू.
3
1
11
चं.
4
10
शु.
5
7
श.
9
के.
6
गु. 8

7 मार्च 14घं. 15मि. से
10 मार्च 01घं. 17मि.

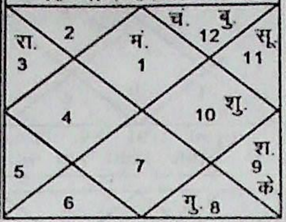
रा.
2
मं.
चं.
12
बु.
सू.
3
1
11
4
10
शु.
5
7
श.
9
के.
6
गु. 8

10 मार्च 01घं. 18मि. से
12 मार्च 10घं. 22मि.

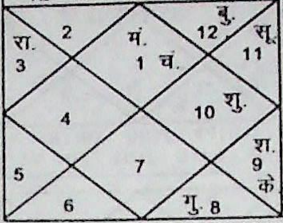
रा.
2
मं.
12
बु.
सू.
3
1 चं.
11
4
10
शु.
5
7
श.
9
के.
6
गु. 8

12 मार्च 10घं. 23मि. से
14 मार्च 16घं. 56मि.

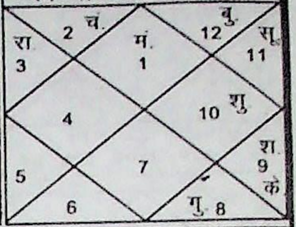
रा
2
चं.
मं.
12
बु.
सू.
3
1
11
4
10
शु
5
7
श.
9
के
6
गु. 8

14 मार्च 16घं. 57मि. से
15 मार्च 05घं. 39मि.

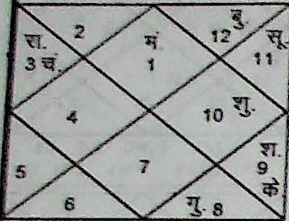
रा.
2
मं.
12
बु.
सू.
3 चं.
1
11
4
10
शु.
5
7
श.
9
के
6
गु. 8

15 मार्च 05घं. 40मि. से
15 मार्च 08घं. 57मि.

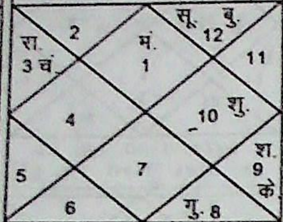
रा.
2
मं.
सू.
बु.
12
3 चं.
1
11
4
10
शु.
5
7
श.
9
के.
6
गु. 8

15 मार्च 08घं. 58मि. से
16 मार्च 20घं. 37मि.

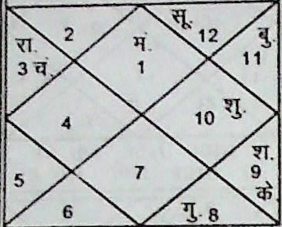
रा.
2
मं.
सू.
12
बु.
3 चं.
1
11
4
10
शु.
5
7
श.
9
के.
6
गु. 8

16 मार्च 20घं. 38मि. से
18 मार्च 21घं. 45मि.

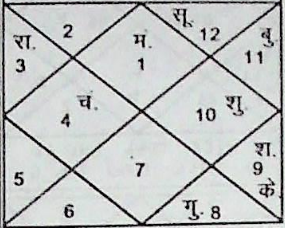
रा.
2
मं.
सू.
12
बु.
3
1
11
चं.
4
10
शु
5
7
श.
9
के.
6
गु. 8

18 मार्च 21घं. 46मि. से
20 मार्च 21घं. 34मि.

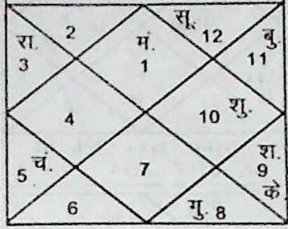
रा.
2
मं.
सू.
12
बु.
3
1
11
4
10
शु.
5 चं.
7
श.
9
के.
6
गु. 8

20 मार्च 21घं. 35मि. से
22 मार्च 03घं. 44मि.

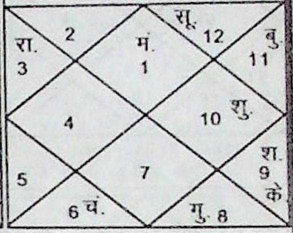
रा.
2
मं.
सू.
12
बु.
3
1
11
4
10
शु.
5
7
श.
9
के
6 चं.
गु. 8

22 मार्च 03घं. 45मि. से
22 मार्च 15घं. 05मि.

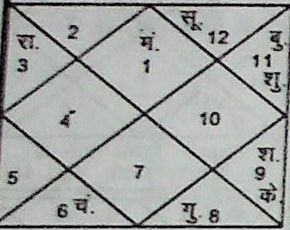
रा.
2
मं.
सू.
12
बु.
3
1
11
शु.
4
10
5
7
श.
9
के.
6 चं.
गु. 8

22 मार्च 15घं. 06मि. से
22 मार्च 22घं. 00मि.

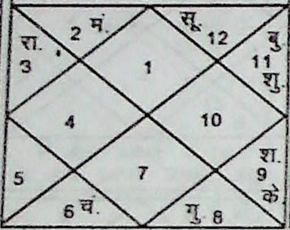
रा.
2 मं.
सू.
12
बु.
3
1
11
शु.
4
10
5
7
श.
9
के.
6 चं.
गु. 8

22 मार्च 22घं. 01मि. से
25 मार्च 01घं. 07मि.

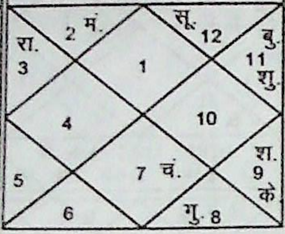
रा.
2 मं.
सू.
12
बु.
3
1
11
शु.
4
10
5
7 चं.
श.
9
के.
6
गु. 8

25 मार्च 01घं. 08मि. से
27 मार्च 08घं. 17मि.

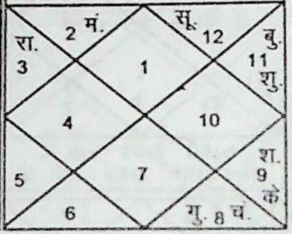
रा.
2 मं.
सू.
12
बु.
3
1
11
शु.
4
10
5
7
श.
9
के.
6
गु. 8 चं.

27 मार्च 08घं. 18मि. से
29 मार्च 19घं. 21मि.

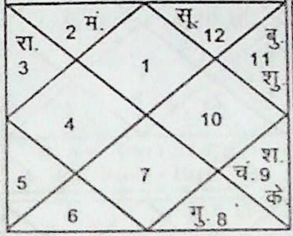
रा.
2 मं.
सू.
12
बु.
3
1
11
शु.
4
10
5
7
श.
चं.9
के.
6
गु. 8

29 मार्च 19घं. 22मि. से
29 मार्च 20घं. 04मि.

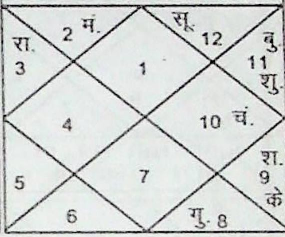
रा.
2 मं.
सू.
12
बु.
3
1
11
शु.
4
10 चं.
5
7
श.
9
के
6
गु. 8

29 मार्च 20घं. 05मि. से
01 अप्रैल 08घं. 20मि.

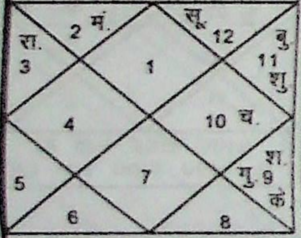
रा.
2 मं.
सू.
12
बु
3
1
11
शु
4
10 चं.
5
7
श.
गु. 9
के
6
8

01 अप्रैल 08घं. 21मि. से
03 अप्रैल 20घं. 46मि.

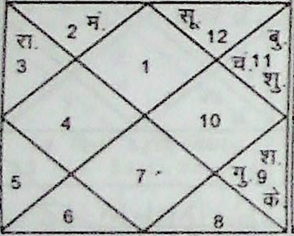
रा.
2 मं.
सू.
12
बु.
3
1
चं.11
शु.
4
10
5
7
श.
गु. 9
के.
6
8

03 अप्रैल 20घं. 47मि. से
05 अप्रैल 14घं. 20मि.

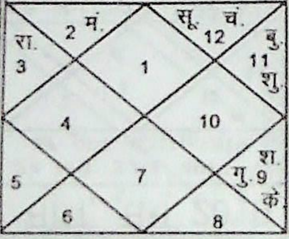
रा.
2 मं.
सू.
चं.
12
बु.
3
1
11
शु.
4
10
5
7
श.
गु. 9
के.
6
8

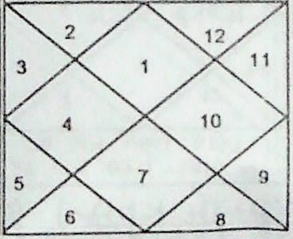
2
12
3
1
11
4
10
5
7
9
6
8

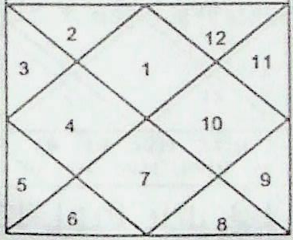
2
12
3
1
11
4
10
5
7
9
6
8

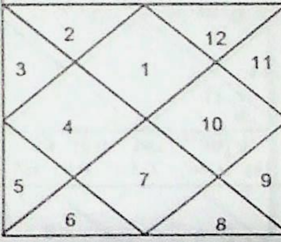
2
12
3
1
11
4
10
5
7
9
6
8

शनि की साढेसाती, ढैय्या एवं सुवर्णादि पादविचार और गुरु-राहु का गोचरफल (सं. 2075 वि.)

लेखक—इन्दुशेखर शर्मा, संयमी शर्मा,

जन्मकुण्डली में शनैश्चर का शुभ ग्रह से सम्बन्ध हो अथवा महादशा का अन्तर शुभ चल रहा हो तो ढैय्या और साढेसाती का अशुभ फल कम होता है। यदि चन्द्र, शनि जन्म में अशुभ ग्रहों से युक्त हों तो साढेसाती व ढैय्या महान् अशुभ, चिन्ता, अवनति, धनहानि, झगड़ा, कार्य में विघ्न, रोजगार में कमी, व्यर्थ कलह एवं रोग, पशु-पीड़ा आदि का कारण बनती है। यदि जन्मकुण्डल्नी में शनि अष्टमेश या मारकेश हो तो भी ढैय्या, साढेसाती विशेष अनिष्ट फलप्रद होती है। **यदि जन्म में शनि लग्नेश, पंचमेश, नवमेश होकर 3, 6, 11 में स्थित हो तो सुख-सम्पत्ति मिलती है, व्यापारादि में लाभ होता है।** शनि के अष्टकवर्ग में अधिक रेखाएं हों तो शुभ; कम रेखाएं हों तो अशुभ फल निश्चित होता है।

शनि की साढेसाती किसे कहते हैं? समझ लें—शनि की गोचर स्थिति को ध्यान में रखते हुए जब किसी व्यक्तिविशेष की जन्मराशि किंवा नामराशि से पहले, दूसरे या बारहवें स्थान में शनि हो तो गोचर ग्रहस्थिति के अनुसार जातक 'साढेसाती' के प्रभाव में रहता है, अर्थात् उस व्यक्ति पर साढेसाती चल रही होती है—

"द्वादशे जन्मगे राशौ द्वितीये च शनैश्चरः।
सार्धानि सप्तवर्षाणि तदा दुःखैर्युतो भवेत्॥"

व्यक्तिविशेष के लिए साढेसाती का फल इस प्रकार लिखा है—

"राशौ द्वादशे मूर्ध्नि जन्महृदये पादौ द्वितीये शनिः।
नानाक्लेशकरो हि दुर्जनभयं पुत्रान् पशून् पीडयेत्॥"

"शनि की ढैय्या" किसे कहते हैं? यह भी जान लें—गोचर अनुसार किसी व्यक्तिविशेष की जन्म राशि किंवा नामराशि से जब शनिदेव चौथे या आठवें स्थान पर हों तो उस व्यक्तिविशेष पर 'शनि की ढैय्या' चल रही है, ऐसा जानें। ढैय्या का फल इस प्रकार है—

"ढैय्या तु प्रददाति वै रविसुतश्चेद्राशेश्चतुर्थाष्टमे।
व्याधिं बन्धुविरोध-विदेशगमनं क्लेशं च चिन्ताधिकम्॥"

ध्यान दें—शुभ एवं क्रूरग्रहविचार में गुरु-शुक्र स्थितिविशेष-विचार से शुभ एवं शनि-मंगल अशुभ फलप्रद माने गये हैं—

"तेषामतीव शुभदौ गुरु-दानवेज्यौ।
क्रूरौ दिवाकरसुत-क्षितिभौ भवेताम्॥"

—*(फलितमार्त्तण्ड)*

शनि लगभग अढाई वर्ष तक एक ही राशि में संचार करने के कारण इसे 'मन्द' किंवा 'शनैश्चरति' इति 'शनि' की संज्ञा दी गयी है। लेकिन शनिग्रह की वक्र एवं मार्गी गति के कारण अनेकदा अपने अढाई वर्ष के काल में न्यूनाधिकता भी कर देता है। कभी-कभी शनि अपनी वक्र-मार्ग गति एवं शनि के अतिचार के कारण एक वर्ष में दो राशियों को भी स्पर्श कर लेता है, जोकि मेदिनी ज्योतिष एवं तत्तदराशि के व्यक्ति एवं देश के लिए कठिन परिस्थितियों को जन्म देता है।

अनेकदा शनि-मंगल दोनों क्रूर ग्रह वर्ष में वक्रगति से चलें या दोनों में से कोई एक वक्रगति से चलकर एकराशि-सम्बन्ध बना ले तो अधिक नेष्ट फलप्रद हो जाते हैं। ऐसी स्थिति में जातकविशेष को साढेसाती किंवा ढैय्या शारीरिक कष्ट, वायु-रक्त-पित्त-विकार, त्वचारोग, आर्थिक संकट, शत्रुपक्ष से मानसिक परेशानी, दुर्घटना से हानि आदि फल करते हैं। देश-विशेष के लिए राजनीतिज्ञों में विरोध, सत्तासंघर्ष, प्रतिष्ठित व्यक्ति की मृत्यु, आर्थिक/ सामाजिक अव्यवस्था, असन्तोष, भूकम्प, तूफान, दुर्भिक्ष आदि प्राकृतिक प्रकोप, सीमाप्रान्तों पर अशान्ति आदि आपदाएं उपस्थित करता है—"क्रूराः वक्राः महाक्रूराः"।

शनि-पादविचार

"जन्मांग-रुद्रेषु सुवर्णपादं द्विपञ्चनन्दे रजतस्य पादम्।
त्रि-सप्त-दिक् ताम्रपादं वदन्ति शेषेषु राशिष्विह लौहपादम्॥"

पादफल-विचार—

"लौहे धनविनाशः स्यात् सर्वं दुःखं च काञ्चने।
ताम्रे च समता ज्ञेया सौभाग्यं च राजते भवेत्॥"

शनि के राशि परिवर्तन के समय यदि चन्द्र 1, 6, 11 स्थान में हो तो स्वर्णपाद; 2, 5, 9 स्थान में हो तो रजतपाद; 3, 7, 10 स्थान में चन्द्र हो तो ताम्रपाद। यदि शनि के राशि परिवर्तन के समय चन्द्र 4, 8, 12 में हो तो लौहपाद होता है। स्वर्णपाद सभी प्रकार के दुःखों को देने वाला, रजतपाद सुख-सौभाग्यप्रद, ताम्रपाद मध्यम फलद एवं लौहपाद धन-धान्य का नाशक होता है।

धनुराशिस्थ शनि की साढेसाती एवं ढैय्या का विचार

26 अक्तूबर, सन् 2017 ई. को पू.षा. नक्षत्र एवं धनु:स्थ चन्द्र के समय 15 घं. 29 मि. पर शनिदेव पुन: धनु राशि में प्रविष्ट होकर सं. 2075 वि. के अन्त तक (किंवा आगे 24 जनवरी, सन् 2020 ई. तक) धनु राशि में ही रहेंगे।

धनुराशिस्थ शनि की साढेसाती एवं ढैय्या का फल

(26 अक्तूबर, सन् 2017 ई. से सं. 2075 वि. के अन्त तक के लिए)

राशि	ढैय्या या साढेसाती	पाद	साढेसाती		शुभाशुभ फल
			किस अंग पर	चढ़ती या उतरती	
वृष	ढैय्या	लौह	–	–	शरीरपीड़ा, रक्तविकार, स्त्री–परिवार-कष्ट, पशु–पुत्रपीड़ा, व्यापार में हानि, राजपक्ष से भय।
कन्या	ढैय्या	लौह	–	–	शरीरपीड़ा, रक्तविकार, स्त्री–परिवार-कष्ट, पुत्रकष्ट, पशुहानि, राजपक्ष से भय, कारोबार में हानि।
वृश्चिक	साढेसाती	रजत	पाद	उतरती	व्यापार में प्रगति, प्रभावक्षेत्र बढ़े, धन-धान्य-समृद्धि, सुख-सम्पदालाभ, घर में शुभ-मांगलिक कार्य, राजपक्ष से सम्मान।
धनु	साढेसाती	सुवर्ण	हृदय	–	शत्रु प्रबल, निजीजन-विरोध, रोगकष्ट, गृहक्लेश, वृथाव्यय, धनहानि से चिन्ता।
मकर	साढेसाती	लौह	मस्तक	चढ़ती	शरीरपीड़ा, रक्तपित्त-विकार, स्त्री–परिवारकष्ट, पशु-पुत्रपीड़ा, व्यापार में हानि, राजपक्ष से भय।

नोट—ऊपर दिये गये कोष्ठक में जिन राशियों का निर्देश (ज़िक्र) नहीं किया गया है, उन राशि वाले जातकों के लिए इस साल धनु राशिस्थ शनि की समयावधि में साढेसाती या ढैय्या नहीं है, यह समझ लें।

साढेसाती में प्रत्येक राशि के लिए शनि का सामान्यतया अशुभ फल कब होगा—

मेष राशि वालों के बीच के अढाई वर्ष खराब हैं। वृष को पहले अढाई वर्ष, मिथुन को अन्त के अढाई वर्ष, कर्क को बीच के अढाई वर्ष, सिंह को पहले 5 वर्ष, उनमें भी मध्य के अढाई वर्ष खराब हैं। कन्या को पहले 5 वर्ष, उनमें भी मध्य के अढाई वर्ष विशेष अशुभ हैं। तुला को आखिर के अढाई वर्ष, वृश्चिक को अन्तिम 5 वर्ष नेष्ट हैं, उनमें भी मध्य के अढाई वर्ष विशेष अशुभ हैं। धनु को प्रारम्भ के अढाई वर्ष, मकर को पहले 5 वर्ष, उनमें भी पहले अढाई वर्ष विशेष खराब हैं। कुम्भ को आदि एवं अन्त के पांच वर्ष, विशेषत: अन्त के अढाई वर्ष अधिक अशुभ हैं। मीन को पूरे साढेसात वर्ष नेष्ट हैं, उनमें भी अन्त के अढाई वर्ष विशेष अशुभ फल देने वाले होते हैं।

शनिजन्य नेष्टफल-शान्त्यर्थ शास्त्रीय उपाय

शनि की साढेसाती/ढैय्या के नेष्टफल की शान्ति के लिए शनि के बीज मन्त्र याँ वैदिक मन्त्र का 23,000 की संख्या में विधिपूर्वक जाप करें। तदुपरान्त दशांश हवानादि करें। शनिवार के दिन सतनाजा-दान, लौहपात्र में तैलदान, शनिस्तोत्र का पाठ करना/कराना श्रेयस्कर रहता है। इसके अतिरिक्त शुभ वेला में 'नीलम' रत्न एवं 'शनियन्त्र' धारण करना भी आश्चर्यजनक रूप से लाभप्रद रहता है। परन्तु रत्नधारण करने से पूर्व शनि के अंशादि का अध्ययन करवाकर किसी दैवज्ञ का परामर्श ले लेना श्रेयस्कर होगा।

शनि का बीज मन्त्र—"ॐ प्रां प्रीं प्रौं स: शनये नम:।"

प्रतिदिन 3 माला मन्त्रजाप करें। मन्त्रजाप से पहले "अमुक मासे, अमुक पक्षे, अमुक तिथौ, शनैश्चर-नेष्टफलशान्त्यर्थम् शनि-मन्त्रजापमहं करोमि"—इस प्रकार संकल्प करके शनि-मन्त्रजाप करें।

शनिवारी अमावस वाले दिन सूर्यास्तसमय (गोधूलि वेला में) शनि-मन्त्रजाप, स्तोत्र पाठ करें एवं तेल में मुंह देखकर, उसमें एक लौंग डालकर दान करें और सायंकाल पीपल के नीचे दीपक जलायें।

मन्त्रजाप की विधि—अनुष्ठान शनिवार को शुरु करें। सूर्यास्त-समय स्नान करके कम्बलासन पर बैठकर, पश्चिमाभिमुख होकर (पश्चिम की तरफ मुंह करके) लोहे के खुले बर्तन में जौ, लौंग एवं काले तिल प्रत्येक 200 ग्राम लेकर एक अंजलिभर चावल और 7 सुपारी रखें। मौली, धूप, लाल चन्दन, दो अपूप (पूड़े) भी सामने रख लें। मिट्टी के बर्तन में तेल का दीपक प्रज्वलित करें एवं एक स्टील का लोटा तेल से भरकर सामने रखकर **"ॐ प्रां प्रीं प्रौं स: शनये नम:"**—इस मन्त्र का कुल 23 हज़ार जाप करें। मन्त्रजाप पूर्ण होने के बाद सारी सामग्री, जो सामने रखी थी, को जलप्रवाह कर दें। तेलभरी गड़वी (लोटा) में लौंग डालकर शनि वाले डकौत को दें। सामग्री को जलप्रवाह करते समय निम्नांकित मन्त्र का उच्चारण करें—

"ॐ नम: कृष्णाय नीलाय शिति-कण्ठनिभाय च।
नम: कालाग्नि-रूपाय कृतान्ताय च ते नम:॥"

इस मन्त्रोच्चारण के बाद "दूर जाते हुए शनि को पृष्ठभाग" से नमस्कार करके घर को

जायें। किसी अच्छे विद्वान् दैवज्ञ के परामर्श से (कुण्डली दिखाकर) 'नीली' या 'नीलम' नग धारण करना भी ठीक रहेगा।

नीलम रत्न का काम देने वाली वनौषधि

शनिदोष निवारण के लिए अनेक व्यक्ति 'नीलम' धारण करते हैं, परन्तु सबको अनुकूल बैठने वाला शुद्ध 'नीलम' रत्न बहुत कम मिलता है। उसकी भले-बुरे की परीक्षा भी कठिन है और यह रत्न बहुमूल्य (महंगा) होता है। अत: सर्वसाधारण मनुष्य खरीद नहीं सकते। ऐसे व्यक्ति नीलम के अभाव में '**बिच्छू बूटी**' की जड़ का प्रयोग करें। बिच्छू बूटी हिमाचल प्रदेश में बहुत होती है। कोमल कांटेदार पत्तों को स्पर्श करने से वृश्चिकदंश जैसी पीड़ा होने लगती है। अत: इसका नाम बिच्छू बूटी है। शुक्लपक्ष शनिवार को प्रात: (यदि पुष्य नक्षत्र भी मिल जाये तो अत्युत्तम) बिच्छू बूटी की जड़ उखाड़कर ले आयें। पहले दिन शुक्रवार की सन्ध्या को निमन्त्रण दे आयें। इस जड़ के टुकड़े को चांदी के ताबीज में भरकर शनिमन्त्र से धारण करें। यह हर व्यक्ति का शनिदोष निवारण करती है।

शनिजन्य नेष्टफल-शान्त्यर्थ वैदिक मन्त्र

"ॐ शं नो देवीरभिष्टय आपो भवन्तु पीतये, शंय्योरभिस्त्रवन्तु नः। शं शनये नमः ॐ॥"

शनिजन्य नेष्टफल-शान्त्यर्थ शनैश्चर स्तोत्र

पिप्पलाद उवाच—

"ॐ नमस्ते कोणसंस्थाय पिंगलाय नमोऽस्तु ते।
नमस्ते बभ्रुरूपाय कृष्णाय च नमोऽस्तु ते॥
नमस्ते रौद्रदेहाय नमस्ते चांतकाय च।
नमस्ते यमसंज्ञाय नमस्ते सौरये विभो॥
नमस्ते मन्दसंज्ञाय शनैश्चर नमोऽस्तु ते।
प्रसादं कुरु देवेश दीनस्य प्रणतस्य च॥"

इस स्तोत्र का पाठ शनिवार को पीपल के नीचे बैठकर एवं अन्य दिनों में भगवान् शंकर से प्रार्थनापूर्वक शिवमन्दिर या घर में भी बैठकर प्रात: करने से साढेसाती व ढैय्या की दु:खद पीड़ा नहीं होती है, अनुभूत है।

शनिजन्य नेष्टफल परिहारार्थ तुलादान करायें—

विधि—शनि ग्रह से पीड़ित व्यक्ति अपने जन्मदिन पर व शनैश्चरी अमावस,शनिवार को दिन में लगभग 11/12 बजे गेहूं, काले चने, चावल, बाजरा, कालीदाल (माह), जौ, मूंग आदि (सात) अनाजों से अपने वजन के बराबर तौल कर दान (तुलादान) करें। साथ ही तेल में मुंह देखकर दक्षिणासहित शनि का दान लेने वाले (ढौंसी) को दे दें। बाद में तुलादान के समय पहने हुए कपड़े भी स्नान करके दान कर दें।

नोट—तुलादान से पहले यदि कोई बहुमूल्य आभूषण आदि शरीर पर धारण किया हुआ हो, वह भी पहले ही उतार दें, अन्यथा वह भी दान करना होगा।

सं. 2075 वि. में गुरु ग्रह का गोचर फल

गुरु का तुला राशि में प्रवेश

वि. संवत् 2074 में 12 सितम्बर, सन् 2017 ई., मंगलवार को प्रात: 6 बजकर 53 मि. पर कृत्तिका नक्षत्र, हर्षण योग एवं वृषस्थ चन्द्र के समय गुरुदेव तुला राशि में प्रविष्ट होकर 11 अक्तूबर, सन् 2018 ई. सायं 19 घं. 21 मि. तक तुला राशि में ही रहेंगे।

तुला राशिस्थ गुरु का प्रत्येक राशि के लिए शुभाशुभ फल

(12 सितम्बर, सन् 2017 ई. से 11 अक्तूबर, 2018 ई. तक के लिए)

राशि	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन
फल	सम्मान	रोगभय	सुख	धनहानि	शरीरकष्ट	धनलाभ	भय	आधि-व्याधि	प्रगति	लाभ होकर हानि	धनलाभ	धनहानि

तुलाराशिस्थ गुरु का सार्वजनिक फल

"तुलाराशिं गते जीवे ज्वर-व्याधिं विनिर्दिशेत्।
सर्वत्र सुभिक्षकं ज्ञेयं क्वचित् ज्ञेया महर्घता॥"

गुरु ग्रह का वृश्चिक राशि में प्रवेश

वि. सं. 2075 में आश्विन शुक्ल तृतीया गुरुवार, तदनुसार 11 अक्तूबर, सन् 2018 ई. को विशाखा नक्षत्र, प्रीति योग एवं तुला राशिस्थ चन्द्र के समय गुरुदेव 19 घं. 21 मि. पर वृश्चिक राशि में दाखिल होकर 29 मार्च, सन् 2019 ई. तक वृश्चिक राशि में ही रहेंगे।

वृश्चिक राशिस्थ गुरु का प्रत्येक राशि के लिए फल

(11 अक्तूबर, सन् 2018 ई. से 29 मार्च, सन् 2019 ई. तक के लिए)

राशि	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन
फल	धननाश	सम्मान	रोग	सुख	धनहानि	शरीर कष्ट	धनलाभ	भय	आधि-व्याधि	प्रगति	धनहानि	धनलाभ

वृश्चिकस्थ गुरु का सार्वजनिक फल

"वृश्चिके तु गुरौ याते दुर्भिक्षं तत्र जायते।
स्वल्पवृष्टिर्भवेत्तत्र भूयता नर-किल्विषैः॥

गृहे परस्परं वैरमष्ट-मासे न संशयः।
भाद्राश्विन-कार्त्तिकाख्यास्त्रयो मासा महर्घदाः॥"

गुरु का धनु राशि में प्रवेश

सं. 2075 वि. में चैत्र कृष्ण नवमी शुक्रवार, तदनुसार 29 मार्च, सन् 2019 ई. को उ.षा. नक्षत्र, शिवयोग एवं मकरस्थ चन्द्र के समय गुरुदेव 20 घं. 5 मि. (I.S.T.) पर धनु राशि में दाखिल होकर सं. 2075 वि. के अन्त किंवा आगे तक धनु राशि में ही रहेंगे।

धनु राशिस्थ गुरु का प्रत्येक राशि के लिए शुभाशुभ फल

(29 मार्च, सन् 2019 ई. से संवत् के अन्त तक के लिए)

राशि	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन
फल	धनलाभ	धननाश	सम्मान	रोग	सुख	धनहानि	शरीरकष्ट	धनलाभ	शत्रुभय	आधि-व्याधि	प्रगति	धनहानि

गुरुजन्य नेष्टफल-शान्त्यर्थ उपाय

गुरुग्रह जन्मांग में या गोचर में नेष्टफलप्रद हो तो—गुरुवार को (विशेषत: गुरुवारी अमावस वाले दिन) केले के वृक्ष को सींचना चाहिए। पीली वस्तु (चना, पीला फल, हल्दी) को पीले कपड़े में बांधकर दान करें। सोना, गुड़, शर्करा, लड्डू आदि द्वारा वृद्ध ब्राह्मण का यथाशक्ति सम्मान करें। गुरु ग्रह के बीजमन्त्र का 19 हज़ार जाप करें। गुरु का जपनीय बीज मन्त्र यह है—"ॐ ग्रां ग्रीं ग्रौं सः गुरवे नमः।" केसर किंवा हल्दी का तिलक धारण करें। पीला 'पुखराज' 5/7 रत्ती पुरुष दायें हाथ की एवं स्त्रियां बायें हाथ की तर्जनी अंगुली में धारण करें।

संवत् 2075 वि. में गोचरस्थ राहु का शुभाशुभ फल

राहु का कर्क राशि में प्रवेश

संवत् 2074 वि. में भाद्रपद कृष्ण पक्ष दशमी गुरुवार (तात्कालिक एकादशी), तदनुसार 18 अगस्त, सन् 2017 ई. को आर्द्रा नक्षत्र, वज्र योग एवं मिथुनस्थ चन्द्र के समय राहु कर्क राशि में 5 घं. 53 मि. पर प्रवेश करके 6 मार्च सन् 2019 ई. तक कर्क में ही रहेगा।

कर्कराशिस्थ राहु का प्रत्येक राशि के लिए शुभाशुभ फल

(18 अगस्त, सन् 2017 ई. से 6 मार्च सन् 2019 ई. तक के लिए)

राशि	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन
फल	अपमान	सौभाग्य	कलह	भय	विनाश	धनलाभ	कलह	दुःख	धननाश	राजभय	महासुख	धनहानि

राहु का मिथुन राशि में प्रवेश

सं. 2075 वि. में फाल्गुन शुक्ल प्रतिपदा गुरुवार, तदनुसार 7 मार्च, सन् 2019 ई. को 9 घं. 36 मि. पर पू.भा. नक्षत्र, साध्य योग एवं कुम्भस्थ चन्द्र के समय राहु मिथुन राशि में प्रविष्ट होगा और यह सं. 2075 वि. के अन्त तक मिथुन में ही रहेगा।

मिथुन राशिस्थ राहु का प्रत्येक राशि के लिए शुभाशुभ फल

(7 मार्च, सन् 2019 ई. से सं. 2075 वि. के अन्त तक के लिए)

राशि	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन
फल	सौभाग्य	कलह	भय	विनाश	धनलाभ	कलह	दुःख	धननाश	राजभय	महासुख	धनक्षय	अपमान

राहु जन्मांग या गोचर में नेष्ट फलप्रद हो तो—कम्बल, तिल-तैल, नारियल, लौंग एवं काले या भूरे रंग के वस्त्र में सतनाजा बांधकर दक्षिणासहित सायंकाल के समय दान करें। साथ ही कम्बलासन पर बैठकर राहु के बीजमन्त्र (ॐ भ्रां भ्रीं भ्रौं सः राहवे नमः) का 18 हज़ार की संख्या में जाप करें। शान्ति रहेगी। दैवज्ञ के परामर्श से राहुशान्त्यर्थ 'गोमेद' नग 5/7 रत्ती भी धारण कर लेना हितकर रहेगा।

अथ नवग्रह -स्तोत्रम्

"जपाकुसुम-संकाशं काश्यपेयं महाद्युतिम्। तमोऽरिं सर्वपापघ्नं प्रणतोऽस्मि दिवाकरम्॥
दधिशंखतुषाराभं क्षीरोदार्णव-सम्भवम्। नमामि शशिनं सोमं शम्भोर्मुकुटभूषणम्॥
धरणीगर्भसंभूतं विद्युत्कान्तिसमप्रभम्। कुमारं शक्तिहस्तं च मंगलं प्रणमाम्यहम्॥
प्रियंगु कलिकाश्यामं रूपेणाप्रतिमं बुधम्। सौम्यं सौम्यगुणोपेतं तं बुधं प्रणमाम्यहम्॥
देवानां च ऋषीणां च गुरुं कांचन-सन्निभम्। बुद्धिभूतं त्रिलोकेशं तं नमामि बृहस्पतिम्॥
हिमकुन्द-मृणालाभं दैत्यानां परमं गुरुम्। सर्वशास्त्रप्रवक्तारं भार्गवं प्रणमाम्यहम्॥
नीलांजनसमाभासं रविपुत्रं यमाग्रजम्। छायामार्त्तण्डसंभूतं तं नमामि शनैश्चरम्॥
अर्धकायं महावीर्यं चन्द्रादित्यविमर्दनम्। सिंहिकागर्भसंभूतं तं राहुं प्रणमाम्यहम्॥
पलाशपुष्पसंकाशं तारकाग्रहमस्तकम्। रौद्रं रौद्रात्मकं घोरं तं केतुं प्रणमाम्यहम्॥
इति व्यासमुखोद्गीतं यःपठेत्सुसमाहितः। दिवा वा यदि वा रात्रौ विघ्नशान्तिर्भविष्यति॥
नर-नारी-नृपाणां च भवेद् दुःस्वप्ननाशनम्। ऐश्वर्यमतुलं तेषामारोग्यं पुष्टिवर्धनम्॥"

***

आकाशी कौंसिल का विचार (सं. 2075 वि.)

(ग्रह-परिषद् एवं गोचर-ग्रहस्थिति के अनुसार भारत एवं अन्य देशों की आर्थिक एवं राजनैतिक स्थिति का सर्वेक्षण)

- ★ इस 'विरोधकृत्' संवत्सर में राजनीतिक संकट गहरायेगा, नये राजनैतिक गठजोड़ बनेंगे।
- ★ संवत्सर का राजा सूर्य व मन्त्री शनि होने से देश की आर्थिक स्थिति कुछ क्षेत्रों में चिन्तनीय रहेगी। सत्तारूढ़ दल का विपक्षी वर्ग से संघर्ष बढ़ेगा।
- ★ वर्ष-प्रवेश कुण्डली में शनि-मंगल की स्थिति अनेकत्र प्राकृतिक प्रकोप, भूकम्प, यान-दुर्घटना, दुर्भिक्ष आदि से इस वर्ष जन-धन-हानि करेगी।
- ★ मुस्लिम-देश कुण्डली एवं गुर्राफल विचार से यावन-राष्ट्रों को विषम स्थिति एवं बिखराव का सामना करना पड़े।
- ★ प्रदूषणजन्य कुफलों से निपटने के लिए एवं भयंकर मारक रोगों से बचाव के लिए सरकार को कठिन परिस्थितियों का सामना करना पड़े।
- ★ संवत् के अन्तिम चरण में राजनीतिक पार्टियों के सत्ता-संघर्ष के परिणाम आश्चर्यजनक रहेंगे। गठबन्धन की राजनीति अप्रभावी रहे।
- ★ यह वर्ष प्रतिष्ठित राजनीतिज्ञों के लिए संकटापन्न है, सुरक्षा के विशेष प्रबन्ध अपेक्षित हैं।
- ★ भारत में नयी प्रगतिप्रद योजनाएं एवं विशेष आयाम स्थापित होंगे, देश प्रगतिपथ पर अग्रसर होगा।
- ★ जापान, उ.कोरिया, चीन, अमेरिका आदि न्यूक्लीयर शक्तिसम्पन्न देश ग्रहस्थिति के अनुसार विश्वशान्ति के लिए खतरा सिद्ध होंगे।

"विमृश्य ग्रह-संस्थितिं मुनिवचः सिद्धान्तयित्वा स्फुटम्।
शास्त्रं शाकुनकं विचार्य नितरामालोच्य सत्संहिताः।
राष्ट्रे राज-समाज-धर्मविषये ह्युद्भाविनी या स्थितिः।
सा शम्भोः कृपया यथामति मया प्रागेव निर्णीयते॥"

"मनुष्य जीवन अनन्त आकाशव्यापी सौरजगत् की एक क्षुद्र प्रतिकृति है"—यह तथ्य भारतीय ही नहीं, पाश्चात्य विद्वान् भी स्वीकार करते हैं। मानव-जीवन एवं सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड का सौर जगत् के साथ एकत्व-सम्बन्ध होने से सौर जगत् के आकर्षण-विकर्षण, सिद्धान्त के अनुसार समय-समय पर मानव-जीवन एवं विश्वजनीन परिवर्तन स्वाभाविक एवं युक्तियुक्त हैं। ग्रहों की '**आकर्षण-विकर्षण**' रूपी दो अदृश्य शक्तियों द्वारा प्रकृति एवं जन-जीवन की मानसिक प्रवृत्ति में परिवर्तन से सम्पूर्ण विश्व का घटनाचक्र चलता ही रहता है। इस खोज में ऋषियों ने अथाह चिन्तन एवं सम्पूर्ण जीवन लगाकर ग्रहों एवं प्रकृति का गहन अध्ययन करके '**ज्योतिष शास्त्र**' का आविष्कार किया, जोकि आज भी अनुसन्धान का विषय है।

"संसार का प्रत्येक परमाणु एक निर्धारित नियम से विलग नहीं हो सकता। एक सूक्ष्मतम परमाणु में यदि तनिक भी अव्यवस्था किंवा अनुशासनहीनता आ जाये तो विराट् ब्रह्माण्ड एकक्षण के लिए भी न टिक सके। एक क्षणिक विस्फोट से अनन्त प्रकृति अग्निज्वालाओं से अतिरिक्त कुछ न रहे"—यह नियामक विधान किसी अदृश्य सत्ता के अस्तित्व को प्रमाणित करता है। इसी प्रकार यह सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड प्रभु के एक

निश्चित विधान के अनुसार ही चल रहा है। इस विधान का साक्षात्कृत् धर्मा ऋषियों ने जो अध्ययन व चिन्तन किया है, उसका परिणाम ही **'ज्योतिष'** है।

यह वेदांगरूप ज्योतिष गुरु-शिष्यपरम्परा आज तक जीवित है। इसका प्रमाण निरुक्त में स्पष्ट है–

साक्षात्कृत्धर्माणो वै ऋषयो बभूवुः। तेऽवरेभ्योऽसाक्षात्कृत्धर्मभ्य उपदेशेन मन्त्रान् सम्प्रददुः। उपदेशाय ग्लायन्तोऽवरे बिल्मग्रहणायेमं ग्रन्थं समाम्नासिषुर्वेदं वेदांगानि च॥

–(यास्काचार्य)

प्रत्येक ग्रह जब अपनी गति-स्थिति में अन्तर लाता है, तभी विश्व का घटनाचक्र प्रभावित होता देखा गया है। इस पृथ्वी पर जो कुछ भी घटित होता अनुभव करते हैं, वह सब ग्रहों के वक्र-मार्ग आदि के ही परिणाम हैं। इस ग्रहगतिजन्य संकेत के आधार पर ही अपनी मति के अनुसार विश्व में जो भी प्रतिवर्ष घटित होता है, **"श्रीमार्त्तण्ड पंचांग"** के माध्यम से प्रिय पाठकों के समक्ष उपस्थित करते हैं और यह इस प्रकाशन का 91वां गौरवपूर्ण वर्ष प्रारम्भ हो रहा है।

श्री वि. संवत् 2075 की ग्रहस्थिति के अनुसार विश्वजनीन घटनाओं की भविष्यवाणी प्रस्तुत करने से पहले हम अपने विद्वान्, प्रबुद्ध पाठकों का आभार व्यक्त कर देना उचित समझते हैं, जिन्होंने लगातार 90 वर्षों तक हमारी भविष्यवाणियों का सही मूल्यांकन करके हमें आज 91वें वर्षप्रवेश पर भी इस बारे में कुछ लिखने को प्रोत्साहित किया है। पाठको! आपका यह पंचांग अपनी सर्वांगशुद्ध गणित एवं आश्चर्यजनक भविष्यवाणियों के लिए भारत में ही नहीं, विदेशों में भी विश्रुत हो चुका है।

आपके इस लोकप्रिय पंचांग में प्रतिवर्ष प्रकाशित होने वाली आश्चर्यजनक, अव्यभिचरित भविष्यवाणियों में साधारण वर्ग के व्यक्ति से लेकर भारतरत्न श्रीजवाहरलाल नेहरु, श्रीमती इन्दिरा गांधी, प्रथम राष्ट्रपति डॉ. राजेन्द्र प्रसाद एवं अन्यगण्यमान्य प्रतिष्ठित ऐतिहासिक महापुरुषों की अभिरुचि रही है। आज भी यह पंचांग अपनी सफल, आश्चर्यचकित कर देने वाली भविष्यवाणियों तथा ग्रहण आदि पंचांग गणित की सूक्ष्मता, शुद्धि एवं शोध-निबन्धों के कारण भारत में ही नहीं, विदेशों में भी लोकप्रिय है और भारत में अग्रणी स्थान प्राप्त कर चुका है।

पाठको! 14 जून, 2016 ई. से पहले लिखी गयी भविष्यवाणियों की चर्चा हम गत वर्षों के पंचांगों में कर चुके हैं। अब उसके बाद सत्यसिद्ध भविष्यवाणियों की चर्चा हम आगामी संवत् 2075 वि. के पंचांग में कर देना युक्तिसंगत समझते हैं।

भविष्यवाणी —7 दिसम्बर, सन् 2016 ई. को श्रीमार्त्तण्ड पंचांग सं. 2073 वि. में की गयी भविष्यवाणी पृ. 45, कॉलम 2 पर इन शब्दों में की गयी थी–

"1 नवम्बर से लगभग 11 दिसम्बर, सन् 2016 ई. तक शनि की मंगल पर दृष्टि विश्व में भयंकर प्राकृतिक प्रकोप, उग्रवाद किंवा हिंसा आदि से जनधनहानि एवं दुःखद अघटित घटनाओं को जन्म देगी।"

इस भविष्यवाणी की सत्यता पर ध्यान दें–

19 नवम्बर सन् 2016 के 'अमर उजाला' के मुख्य पृष्ठ पर स्पष्ट लिखा था कि–"(भारतीय) सेना पर सबसे बड़ा आतंकी हमला, 17 जवान शहीद. (उड़ी) जम्मू-काश्मीर में सैन्य मुख्यालय पर हमला।"

भविष्यवाणी—सं. 2074 वि. की जगत् लग्नकुण्डली में—

जलराशि के स्वामी **चन्द्र का सूर्य के साथ समसप्तक 'जलशोषक'** योग बनता है, मंगल की शनि पर अष्टम दृष्टि भी कहीं अकाल का संकेत देती है। अतः शासन को देश में **'जल-सुविधा'** की तरफ विशेष ध्यान देना होगा, अन्यथा भारत के अनेक प्रान्तों में कहीं जल-वितरणसमस्या आपसी कलह का कारण बनने का योग है।

—(श्रीमार्त्तण्ड पंचांग, पृ. 52, कॉलम 1)

सत्यता—कावेरी जल से भड़की आग तामिलनाडु और कर्णाटक में उग्र हिंसा (13 सितम्बर, सन् 2016 ई.)-(अमर उजाला)

भविष्यवाणी—11 दिसम्बर, 2016 ई. तक शनि की मंगल पर दृष्टि भी विश्व में भयंकर प्राकृतिक प्रकोप, उग्रवाद-हिंसा आदि से जनधनहानि एवं दुःखद अघटित घटनाओं को जन्म देगी।

—(श्रीमार्त्तण्ड पंचांग, सं. 2073 वि., पृ. 45, कॉलम 2)

सत्यता—11 दिसम्बर, सन् 2016 ई. को नाइजीरिया में गिरजाघर की छत गिर गयी, 160 व्यक्ति मरे।

भविष्यवाणी—"श्री नरेन्द्र मोदी (P.M.) महोदय की नीति विदेशों से सकारात्मक-मधुर सम्बन्ध बनाने में सफल रहेगी। लेकिन इस वर्ष श्री मोदी एवं अन्य प्रतिष्ठित व्यक्तियों की सुरक्षा-व्यवस्था में ढील नहीं होनी चाहिए, क्योंकि अघटित घटना से

कष्टभय का योग है। जगत्-लगनकुण्डली में भारत की प्रभावराशि मकर पर गुरु की दृष्टि है। सूर्य-शुक्र उच्चस्थ हैं, अतः भारत की प्रतिष्ठा एवं गौरव उत्तरोत्तर बढ़ेगा।"

—(श्रीमार्त्तण्ड पंचांग, सं. 2074 वि., पृ. 52, कॉलम 1, अन्तिम पंक्तियां)

सत्यता—श्री नरेन्द्र मोदी (P.M. भारत) महाभाग ने अपनी कूटनीति से अमेरिका-इण्डोनेशिया एवं रूस आदि देशों के साथ सुदृढ़ मैत्री सम्बन्ध बनाकर एवं राष्ट्र को सशक्त बनाकर '**भारत को महाशक्ति**' के रूप में स्थापित कर दिया है।

भविष्यवाणी—"13 अक्तूबर से आगे शुक्र-शनि एवं सूर्य-शनि की पोजीशन अनुसार 15 दिसम्बर तक किसी प्रतिष्ठित व्यक्ति का पद रिक्त होने का योग है।"

—(श्रीमार्त्तण्ड पंचांग, सं. 2073 वि., पृ. 49, कॉलम 2)

सत्यता—1. तमिलनाडु की मुख्यमन्त्री सुश्री जयललिता जी का 5 दिसम्बर को निधन हुआ।

2. दिनांक 27-11-2016 ई. को क्यूबा के राष्ट्रपति कास्त्रो का निधन हुआ।

भविष्यवाणी—सं. 2073 वि. के श्रीमार्त्तण्ड पंचांग में पृष्ठ 50, कॉलम 1 पर 19वीं पंक्ति से आगे पढ़ें—"श्री मोदी की दूरदर्शिता से भारत की अर्थव्यवस्था को विशेष गति मिलेगी। राजनीति की गतिमत्ता के भी दूरगामी परिणाम होंगे। यह बात विपक्षीदलों को स्वीकार्य नहीं कि—एकवर्ष का समय सरकार के काम-काज का आकलन का अन्तिम मापदण्ड नहीं है। फिर भी भारत सरकार की रीति-नीति से सरकार के वायदों का बोध तो आगे होने का संकेत ग्रहस्थिति देती है।"

पृष्ठ 50, कॉलम 2 पर 19वीं पंक्ति से आगे की भविष्यवाणी—"15 नवम्बर से सूर्य-शनि (परस्पर शत्रुग्रह) दिसम्बर तक एकराशि में चलेंगे। यह ग्रहस्थिति शासनतन्त्र के सामने सिद्धान्तवादिता, आदर्शवाद वाली व्यावहारिक मजबूरियां हाजिर करेंगी। इस दौरान भाजपा एवं विपक्ष के बीच राजनीतिक संघर्ष शुरू होगा एवं R.S.S. पर भी विपक्ष के आक्षेप आयेंगे।"

इन पंक्तियों की सत्यता—8 नवम्बर, 2016 ई. को रात्रि में नोटबन्दी की घटना से विपक्ष ने लगभग दिसम्बर तक लोकसभा को संचालित नहीं होने दिया। यह भविष्यवाणी फलितशास्त्र की गरिमा का निदर्शन है।

चीन द्वारा तिब्बत-सिक्किम के सीमाप्रान्तों पर तनाव की भविष्यवाणी—श्रीमार्त्तण्ड पंचांग सं. 2074 वि. के पृष्ठ 58, कॉलम 1 पर निम्नांकित रूप में पढ़ें—

"संवत् 2074 वि. की ग्रहस्थिति विश्व में घटित प्रमुख बातों पर भी ध्यान आकर्षित करती है। इस वर्ष अप्रैल से जून 2017 ई. तक, 27 अगस्त से 29 नवम्बर, 2017 ई. तक एवं फरवरी से मार्च, 2018 ई. तक की ग्रहस्थिति उत्तरी कोरिया, ऑस्ट्रेलिया, चीन, पाकिस्तान आदि देश, अमेरिका, ब्रिटेन एवं भारत आदि देशों के लिए आगामी समय में हालात भयावह रहेंगे। जिससे विश्व के शान्तिप्रिय देश विनाश एवं अनिश्चय की ओर बढ़ेंगे। संयुक्तराष्ट्र के सामने भी यह एक समस्या बन सकती है। ऊपर निर्दिष्ट समय देश एवं विश्व के लिए अघटित घटनाओं वाले रहेंगे।"

स्पष्ट है कि—ब्रिटेन, फ्रांस आदि में उग्रवादी हमले से जनधनहानि हुई, भारत में भी छत्तीसगढ़, कश्मीर एवं अन्यत्र कई स्थानों पर उग्रवादियों द्वारा जनधनहानि से इस भविष्यवाणी की सत्यता स्पष्ट सिद्ध हुई।

बिहार में महागठबन्धन,समाजवादी पार्टी के बारे में की गयी भविष्यवाणी सं. 2074 वि. के पंचांग में पृ. 60, कॉलम 1 पर इस प्रकार की गयी थी--

समाजवादी पाटी—कुम्भ राशि का स्वामी शनि सारे संवत् में क्रूर ग्रह से किसी न किसी दृष्टि से मेल कर रहा है, अतः भरपूर प्रयत्न के बाद भी इस पार्टी को राजनैतिक दृष्टि से प्रगतिप्रद सफलता प्राप्त करना कठिन प्रतीत होता है।

बिहार में महागठबन्धन—के बारे में इतना ही लिख सकेंगे कि—ग्रहस्थिति पार्टी में कुछ वैमत्य पैदा करेगी, लेकिन सुधारात्मक योग स्थिति को नियन्त्रित करेंगे।

आप इस घटनाक्रम को देख चुके हैं, अतः इसकी सत्यता स्पष्ट सिद्ध है।

'जम्मू-कश्मीर' के बारे में की गयी भविष्यवाणी भी अक्षरशः सत्यापित हुई, जोकि पंचांग 2074 वि. के पंचांग, पृष्ठ 62 पर, कॉलम 2 में 'जम्मू-कश्मीर' शीर्षक के अन्तर्गत पढ़ें—"इस संवत् की ग्रहस्थिति में सभी आतंकी संगठन विशेषतः I.S.I. कश्मीर पर बड़ा हमला करेगा। कश्मीर के सीमाक्षेत्र अशान्त रहेंगे एवं यहां की शासन-सत्ता इस प्रान्त में शान्ति स्थापित करने में असमर्थ रहेगी। उग्रवाद के जघन्य अपराध पाक अधिकृत कश्मीर से आतंक की घुसपैठ जनधनहानि का कारण बनेगी। इस संवत् के उत्तरार्ध में पाक का सीमातिक्रमण संघर्ष का कारण भी बन सकता है।"

सं. 2074 वि. में पृष्ठ 52, कॉलम 1 पर स्टैंजा 2 की अन्तिम पंक्तियों में आश्चर्यजनक भविष्यवाणी पढ़ें—"संवत् 2074 वि. के प्रारम्भ से जुलाई, 2017 तक

की ग्रहस्थिति से भारत के कुछ प्रान्तों में I.S.I. द्वारा भारी जनधनहानि का संकेत मिलता है। इस उल्लिखित समयावधि में भारतीय सीमाप्रान्तों पर पाक-चीन-नेपाल-सीमावर्ती देशों की गतिविधियों एवं उग्रवादियों (I.S.I.) आदि से भी सावधान रहना आवश्यक है।"

आज चीन द्वारा सिक्किम एवं पाक द्वारा कश्मीर के सीमाप्रान्तों पर युद्धमय वातावरण बना दिया गया है--यह सार्वजनिक चर्चा का विषय है।

पाठको! स्थानाभाव के कारण इस वर्ष की सभी सफल भविष्यवाणियों की चर्चा नहीं कर पा रहे हैं, विद्वान् पाठक स्वयं ही मूल्यांकन करें।

श्रीमार्त्तण्ड पंचांग के माध्यम से की गयीं या की जा रहीं भविष्यवाणियों की सफलता का श्रेय जो आप हमें दे रहे हैं, वह सब पूर्वाचार्यों एवं ज्योतिषशास्त्र के मर्मज्ञ गुरुचरणों की कृपा ही है या जनता-जनार्दन के सौहार्द का परिणाम। हम उन पाठकों के भी आभारी हैं, जो विभिन्न प्रान्तों किंवा विदेशों से पत्राचार द्वारा भविष्यवाणियों की सफलता पर बधाई भेजकर हमें भावी वर्षों में ग्रहगतिजन्य संकेतों के आधार पर कुछ न कुछ लिखने के लिए प्रेरित करते रहते हैं।

संवत् 2075 वि. की ग्रहपरिषद् के अधिकारियों का विश्व पर प्रभाव

विज्ञान 'कार्य-कारण के सिद्धान्त' को ही प्राथमिकता प्रदान करता है। परन्तु असंख्य घटनाएं ऐसी हैं, जिनका कारण समझने एवं समझाने में चोटी के वैज्ञानिक भी अपने आपको सर्वथा असमर्थ पा रहे हैं। अतः सिद्धान्तों के व्यभिचारमात्र से ज्योतिष शास्त्र की वैज्ञानिकता का प्रतिवाद नहीं किया जा सकता। ज्योतिष चिरन्तन सत्यसिद्धान्तों पर आधारित एक विज्ञान है, जिसमें अभी अत्यधिक अनुसन्धान की आवश्यकता है।

जिस तरह पृथ्वी पर 'लोकतान्त्रिक राज्य' की स्थापना के लिए प्रधानमन्त्री आदि के चुनाव होते हैं और उन निर्वाचित व्यक्तियों के गुण-कर्म-स्वभाव-योग्यता का प्रभाव उनके अधिकृत क्षेत्रों एवं शासनतन्त्र पर पड़ता है, उसी प्रकार अखिलेश्वर प्रभु की इच्छा से निर्मित आकाशीय शिशुमार चक्रस्थ ग्रहों की परिषद् में संसारचक्र को चलाने के लिए प्रतिवर्ष दिव्य एवं अद्भुत शक्तिमती 'आकाशी कौंसिल' का निर्माण होता है। इस आकाशीय कौंसिल में ग्रहों की शुभाशुभ प्रकृति के अनुकूल संसार में जो उलट-फेर एवं अघटित घटनाएं घटित होती हैं; इस घटनाचक्र को त्रिकालज्ञ दैवज्ञों द्वारा लिखित ग्रन्थों के आधार पर वि. सं. 2075 की ग्रहस्थिति के अनुसार कुछ लिखने की चेष्टा कर रहे हैं।

संवत् 2075 वि. को शास्त्रों में '**विरोधकृत्**' नामक संज्ञा दी है। इसका फल संहिताग्रन्थों में इस प्रकार लिखा है—

> **"खण्डवृष्टिर्भवेद्देवि सस्य-हानिश्च जायते।**
> **कोंकणे मध्य-देशेषु विरोधश्चाहि-मण्डले॥"**

अर्थात्--देश में कहीं वर्षा, कहीं सूखा किंवा दुर्भिक्ष रहे। कहीं खड़ी फसलों को नुकसान हो व कहीं बाढ़ से भयंकर जनधनहानि के भी संकेत हैं। बिहार, म.प्र. एवं उत्तराखण्ड आदि प्रान्तों में प्राकृतिक प्रकोप, भूकम्प किंवा प्रलयंकारी दृश्य भी उपस्थित होंगे।

'**वर्षप्रबोध**' ग्रन्थानुसार विरोधकृत् संवत्सर में राजनैतिक दलों (पार्टियों) में गठबन्धन परस्पर विरोध किंवा स्वसत्ता-प्राप्ति हेतु देशहित में नहीं रहेगा।

राजनीतिज्ञों के लिए इस वर्ष (सं. 2075 वि.) का अन्तिम चरण अधिक स्वार्थपरक, सत्ता-लोलुपता वाला सिद्ध होगा। शासक एवं शासित में मतभेद नजर आयेगा एवं राजनैतिक दृश्य अजीब करवट बदलेगा, विपक्षीदल क्षुब्ध रहेंगे। परिणाम आश्चर्यजनक रहेंगे। यह सं. 2075 वि. की अन्तिम ग्रहस्थिति के आधार से स्पष्ट संकेत मिलता है।

संवत् 2075 वि. का राजा सूर्य होने से समयानुसार वर्षा न होने से खेती एवं फलादि को हानि पहुंचेगी। अनैतिक एवं आपराधिक कार्य अधिक होंगे। अनेकत्र भयंकर अग्निकाण्डों से पशुधन-पक्षी एवं जनधन की हानि होगी। इस वर्ष दो देशों के सीमाप्रान्तों पर सैन्यसंघर्ष से भयंकर अशान्ति पनपेगी। ऋतु-विपर्यय होने से गर्मी बहुत परेशानीकारक रहेगी। किसी विशिष्ट राजनीतिज्ञ किंवा प्रतिष्ठित व्यक्ति के निधन/हत्या से इस वर्ष भारी शोक व्याप्त होगा, परिणाम कष्टप्रद होंगे, क्योंकि 'निधनं नृपाणाम्' के योग भी बनते हैं।

इस संवत् 2075 वि. में '**मन्त्री का पद**' इस संवत् के राजा सूर्य के शत्रु शनि को प्राप्त हुआ है। अतः यह संवत् राजनैतिक कठिन परिस्थितियों को लेकर उपस्थित हो रहा है। विपक्षी पार्टियों द्वारा सत्ता-लोलुपतावश महागठबन्धन का गठन अन्ततः एक असफल प्रयास सिद्ध होगा। अतः यदि देशहितार्थ सकारात्मक कार्य करने में सत्तारूढ़ दल ने ढील की तो जनाधार एवं जनता का विश्वास क्षीण होगा, परिणाम दूरगामी होंगे। अतः देशहित को सर्वोच्च रखकर कार्य करना होगा, अन्यथा कटु परिणाम हो सकता है।

इस वर्ष का सस्येश चन्द्र होने पर अनेकत्र उचित एवं सुखद वर्षा से कृषकों एवं दालंवाना, तिलहन आदि के व्यापारियों के लिए यह वर्ष लाभप्रद रहे।

नोट—इस संवत् में सूर्य-शनि के सौर जगत् में राजा-मन्त्री पद पर विराजमान होने से भारत को कश्मीर-पाक-चीन-उत्तर कोरिया, नेपाल एवं बंगलादेश के सीमाप्रान्तों पर सुरक्षा की दृष्टि से बहुत सावधान रहना होगा।

संवत् 2075 वि. की गोचर ग्रहस्थिति एवं जगत्-लग्नकुण्डली की ग्रहस्थिति के अनुसार सांसारिक घटनाओं पर एक नज़र

वर्षेश (जगत्) लग्नकुण्डली
(संवत् 2075 वि.)

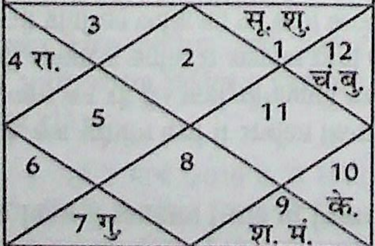

[14 अप्रै., 2018 ई., 8 घं. 12 मि. (I.S.T.)]

संवत् 2075 वि. में जगत्-लग्नगत ग्रहस्थिति के अनुसार लग्नेश शुक्र 12वें उच्चस्थ सूर्य के साथ गुरु की नज़र में है। जिससे विश्व में उग्रवाद से मुक्ति पाने के लिए भारत के सहयोगी देश सक्रिय होते दिखेंगे-

"निजोच्चे निजवर्गे वा
शुभः पापोऽपि वा भवेत्।
बलवान् दोषविच्छेत्ता
हरिरेको यथा गजान्॥"

उग्रवाद यद्यपि भयंकर रूप धारण करेगा, लेकिन इस्लामिक देशों को मुंह की खानी पड़ेगी।

वर्षेश कुण्डली में भारत की प्रभावराशि का मालिक शनि शत्रुग्रह व्ययेश एवं सप्तमेश मंगल के साथ मृत्युस्थान (अष्टम भाव) में एक साथ बैठा है। यह ग्रहस्थिति भारतीय सत्तापक्ष एवं राजनीतिज्ञों के लिए 2 मई, सन् 2018 ई. तक संकटापन्न स्थिति का संकेत देती है। आगे मंगल-केतु का एक राशिसम्बन्ध अक्तूबर, 2018 ई. तक अनेकत्र प्राकृतिक प्रकोप एवं प्रधान नेतृत्व किंवा विपक्ष के भी किसी व्यक्ति विशेष के लिए रोग व उग्रवादादि से कष्टप्रद, चिन्ताजनक स्थिति बनायेगा।

आगे नवम्बर के प्रारम्भ से लगभग 23 दिसम्बर, 2018 ई. तक शनि की मंगल पर दृष्टि विश्व में भारी अशान्ति का कारण बनेगी। उ. कोरिया, चीन, पाक, अमेरिका एवं अन्य यूरोपीय देशों में तथा भारत में भी सीमाप्रान्तों पर भारी युद्धात्मक परिस्थिति पैदा हो सकती है। इस समय प्राकृतिक प्रकोप किंवा उग्रवाद (I.S.I.) आदि से भारी जनधनहानि सम्भव है। तत्पश्चात् सन् 2019 ई. में जनवरी से संवत् के अन्त तक भारत में राजनैतिक परिवर्तन विपक्ष के लिए आश्चर्यजनक परिणाम वाले होंगे।

जगत् लग्नगत—ग्रहस्थिति से सार्वजनिक रूप से संकेत मिलता है कि—इस संवत् 2075 वि. के मध्य भारत, फ्रांस, अमेरिका, ब्रिटेन, रूस आदि प्रमुख देशों में अनेकत्र I.S.I. आदि किंवा इस्लामिक कट्टरवाद से भयंकर आपदा बनेगी, शासक एवं शासनतन्त्र असमर्थ मालूम देंगे। लेकिन मुस्लिम-राष्ट्रों में पनप रहे मुस्लिम कट्टरवाद की समाप्ति के लिए कुछ संगठित देश इस दैत्यरूपी कट्टरवाद से निपटने के लिए युद्धस्तर पर कार्य करेंगे।

इस वर्ष शनि की दृष्टि पश्चिमी देशों में होने से कहीं भूकम्प, समुद्री तूफान किंवा I.S.I. आदि द्वारा जनधनहानि के योग बन रहे हैं।

संवत् 2075 वि. की ग्रहस्थिति का यूरोप के देशों पर प्रभाव (एक संक्षिप्त सर्वेक्षण)

यूरोपीय देशों की कुण्डली नं. (1)

(1 जनवरी, सन् 2018 ई. से दिसम्बर 2018 ई. तक)

यूरोपीय देशों की कुण्डली (1)
1 जनवरी, 2018 ई.,
मध्यरात्रि 0 घं. 00 मि.

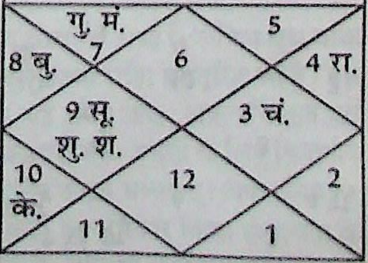

कुण्डलीगत ग्रहस्थिति एवं गोचर-ग्रहस्थिति के अनुसार अमेरिका, रूस, ब्रिटेन, फ्रांस, जर्मनी आदि में परमाणु एवं मारक-शस्त्रों के विरुद्ध आवाज उठेगी। मुस्लिम राष्ट्रों अफगानिस्तान, पाक अधिकृत कश्मीर एवं पाकिस्तान में पनप रहे इस्लामिक स्टेट के उग्रवाद के विरुद्ध देशों का एक संगठन खड़ा होगा, लेकिन आन्तरिक तौर पर बड़े राष्ट्र शस्त्रास्त्र-निर्माण में व्यस्त रहेंगे। क्योंकि उत्तरी कोरिया आदि के तानाशाह बड़े राष्ट्रों के लिए एक चेतावनी के रूप में खड़े रहेंगे। शनि-सूर्य की चन्द्र पर दृष्टि एवं मंगल की केतु पर दृष्टि समस्याओं के समाधान में बाधक रहेगी।

13 जनवरी, 2018 ई. को शुक्र मकर राशि में आयेगा एवं 14 जनवरी को सूर्य भी मकर राशि में आकर शनि एवं केतु के साथ मेल करेगा। इस समय सूर्य, शुक्र, केतु पर मंगल की दृष्टि भी है। इस समय उग्रवाद से या किसी हादसे में किसी प्रतिष्ठित व्यक्ति की हत्या (निधन) हो। कहीं उग्रवाद द्वारा भयंकर काण्ड, भूकम्प, तूफान, ज्वालामुखी विस्फोट, समुद्री तूफान आदि से जनधनहानि सम्भव है।

अक्तूबर/नवम्बर में किसी मेष नामराशि प्रधान देश की शासन-सत्ता में विशेष परिवर्तन आने से अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति में अप्रत्याशित परिवर्तन आने के योग हैं।

7 मार्च, सन् 2018 ई. को मंगल धनुराशि में आकर शनि के साथ 'एकराशि-सम्बन्ध' बनायेगा। यह स्थिति 30 अप्रैल, 2018 ई. तक प्रभावी रहेगी।

यह स्थिति विश्व में युद्धपरक वातावरण एवं अघटित घटनाओं, प्राकृतिक उत्पात, यान-दुर्घटनाओं एवं प्रतिष्ठित राजनीतिज्ञों के लिए भयावह है। प्रकृति के दोहन से उपजित एवं अन्य पर्यावरण-सम्बन्धित समस्याएं विश्व में संकटमय स्थिति पर विचार करने के लिए विवश करेंगी।

7 मार्च, 2018 के बाद 2 मई, सन् 2018 ई. तक यूरोपीय देशों में अघटित किंवा अप्रत्याशित दुःखद घटनाएं एवं जनधनहानि के योग बन रहे हैं। कहीं सीमाप्रान्तों पर सशस्त्र, सैन्य संघर्ष, कहीं प्राकृतिक उत्पात, कहीं आन्तरिक क्रान्ति से अशान्ति रहेगी। नेतृत्व चिन्तित किंवा किंकर्तव्य विमूढ़ रहेगा। किसी प्रतिष्ठित व्यक्ति को पद त्याग करने पर विवश होना पड़ेगा।

2 मई से मंगल मकर (उच्च राशि) में आकर राहु के साथ समसप्तकयोग बनायेगा। इसी मध्य 14/15 मई से 8 जून तक शुक्र-शनि का समसप्तकयोग चलेगा। फिर लगभग 6 नवम्बर से 23 दिसम्बर, सन् 2018 ई. के लगभग शनि अपने शत्रुग्रह मंगल पर विशेष दृष्टि रखेगा। कहने का तात्पर्य यह है कि—उल्लिखित समयावधियों में विश्व के प्रमुख देशों में भारी उलट-फेर एवं अघटित घटनाओं किंवा प्राकृतिक प्रकोप किंवा उग्रवादियों के जघन्य अपराधों से भारी अशान्ति बनेगी। इस समय जनता एवं शासकों को भी सुरक्षा की दृष्टि से सावधान रहना चाहिए—यह आवश्यक सूचना ग्रहगोचर के अनुसार दे देना उचित समझते हैं।

यूरोपीय देशों की कुण्डली नं. 2
(1 जनवरी, सन् 2019 ई. से दिसम्बर, सन् 2019 ई. तक)

कुण्डली(2)गत ग्रहस्थिति के अनुसार गुरु-बुध दोनों मंगल की राशि में एक साथ हैं--यह ग्रहस्थिति पश्चिमी भूभाग में कहीं युद्धात्मक स्थिति बना सकती है।

यूरोपीय देशों की कुण्डली (2)
1-1-2019,0 घं. 00 मि. (मध्यरात्रि)

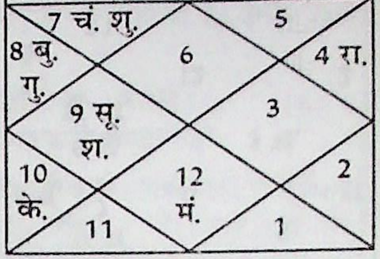

इस कुण्डली में बृहस्पति के क्षेत्र में सूर्य-शनि की सन्निधि बनती है। अतः अशान्त वातावरण एवं उग्रवादजन्य अपराधों से मुक्त होने में अनेक राष्ट्र परस्पर सहयोग तो देंगे, लेकिन कुछ मसले अशान्ति का कारण भी बनेंगे, जिससे उग्रवाद के पोषक तत्त्वों (संस्थाओं) एवं देशों को सबक मिलेगा।

ग्रहस्थिति के अनुसार उत्तरी कोरिया, पाक एवं चीन, रूस आदि देश अमेरिका की शान्ति एवं प्रभुत्व को क्षीण करने का प्रयास करेंगे। ब्रिटेन, फ्रांस, जर्मनी, उत्तरी कोरिया, चीन आदि द्वारा बिकसित मारक शस्त्रों के विरुद्ध आवाज उठेगी। अमेरिका द्वारा परिणाम संघर्षात्मक हो सकते हैं। कुछ मुस्लिम देशों व अन्य कुछ देशों में भी उग्रवादी शस्त्रास्त्रों के प्रयोग को गुप्तरूप से संचालित ही रखेंगे।

यह वर्ष कहीं युद्धात्मक स्थिति, प्राकृतिक प्रकोप, यान व अग्निकाण्ड आदि से जनहानि का संकेत देता है। प्रतिष्ठित राजनीतिज्ञों के लिए भयावह ग्रहस्थिति है।

प्रकृति के दोहन से उत्पन्न एवं अन्य पर्यावरण-सम्बन्धित समस्याएं भी विश्व के यूरोपीय देशों को संकटमय स्थिति का हल ढूंढ़ने के लिए विवश कर देंगी। परिणामस्वरूप, उत्तरी कोरिया, चीन, पाक आदि तथा अन्य कुछ मुस्लिम देश मारक क्षमता को बल देने वाले शस्त्रास्त्रों के निर्माण में व्यस्त रहेंगे। 22 मार्च, सन् 2019 ई. के बाद (विशेषत: 6 मई, सन् 2019 ई.) एवं अक्तूबर, 2019 ई. के आगे तक की ग्रहस्थिति विश्वशान्ति को क्षुब्ध करने वाली ही मालूम देती है—सर्वज्ञ तो प्रभु ही हैं।

संवत् 2075 वि. में मुस्लिम राष्ट्रों के हालात

मुस्लिम देशों की कुण्डली (नं. 1)
(22 सितम्बर, सन् 2017 ई. से 11 सितम्बर, सन् 2018 ई. तक)

इस वर्ष मुस्लिम-राष्ट्रों का राजा शुक्र होने से ईरान विश्व के प्रतिष्ठित देशों के साथ सम्बन्ध बनाकर अपनी आर्थिक एवं सामाजिक स्थिति प्रगति की तरफ ले जायेगा। लेकिन कुण्डली (नं.1) में गुरु-चन्द्रयोग कुछ यावन-राष्ट्रों में जागृति का सन्देश देता

है। लेकिन पाक की राशि कन्या में नीचाकांक्षी सूर्य की स्थिति एवं बुध का अतिचारी शुक्र के साथ मेल खराब स्थिति का संकेत देता है। प्रधान नेतृत्व पर सेना हावी रहेगी एवं सत्तासंघर्ष से परिवर्तन के योग बनते हैं।

मुस्लिम देशों की कुण्डली (1)
हिजरी सन् 1439 (1 मुहर्रम)

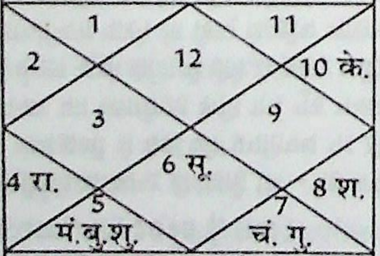

22 सितम्बर, सन् 2017 ई., शुक्रवार,
18 घं. 15 मि., (सूर्यास्तसमय) (I.S.T.)

13 अक्तूबर, सन् 2017 ई. से कन्या राशि का मंगल एवं मार्गशीर्ष शुक्लपक्ष में त्रयोदशी तिथिक्षय, दिसम्बर, 2017 ई. से संवत् के अन्त तक मुस्लिम राष्ट्रों में इस्लामी आतंकवाद एवं सैन्य बगावत तथा भयंकर प्राकृतिक आपदा भयंकर कष्ट का कारण बनेंगे।

इस्लामिक आतंकवाद से पाक, अफगानिस्तान, इराक, लीबिया, तुर्की, सीरिया आदि में हालात बदतर होते जायेंगे। साथ ही चीन, उत्तरी कोरिया आदि कुछ प्रधान देश भी इस बुरी स्थिति के लिए कुप्रेरणा के स्रोत सिद्ध होंगे।

लगभग 26 अक्तूबर से 28 नवम्बर, 2017 ई. एवं 7 मार्च, 2018 ई. से संवत् 2075 में लगभग 2 मई, सन् 2018 ई. तक की ग्रहस्थिति से संकेत मिलता है कि—दक्षिण-एशियाई क्षेत्र में अस्थिरता पैदा करने वाला एकमात्र पाकिस्तान तो है ही, भारत को सम्भावी शत्रु समझने वाला चीन भी परमाणु शस्त्रागार पाक को देगा। इस प्रकार हिन्द महासागर की ओर से भी सचेत रहना होगा।

सं. 2075 वि. के उत्तरार्ध में सऊदी अरब एवं ईरान में तनाव की स्थिति बनेगी, जिससे इराक, कोरिया एवं अन्य प्रमुख देश चिन्तित रहेंगे। इण्डोनेशिया एवं तुर्की में भी आतंकवादियों द्वारा जनधनहानि के योग जुलाई, 2018 ई. तक बनते हैं।

उल्लिखित समयावधि में मंगल की पोजीशन एवं 7 मार्च, सन् 2018 ई. से मई के लगभग तक शनि-मंगल का एकराशि-सम्बन्ध मुस्लिम देशों पाक, कतर, अफगानिस्तान, पाक अधिकृत कश्मीर, सिन्ध आदि में भयंकर आन्तरिक क्रान्ति का संकेत देता है। कुछ उग्रवादी तत्त्व इस्लाम के नाम पर मुस्लिम-राष्ट्रों के एकत्र होने का आह्वान करके यूरोप के देशों को भी अशान्त करेंगे। भारत भी उग्रवादियों के निशाने पर रहेगा, अनेकत्र जनधनहानि भी मार्च से मई, 2018 तक सम्भव है।

इस समयावधि में (मार्च, 2018 से संवत् 2075 वि. के अन्त तक) अनेकत्र उग्रवादियों की मार-धाड़ के साथ जलप्रलय से कहीं दुर्भिक्ष की स्थिति भी बनेगी।

ध्यान दें--उग्रवाद के विरुद्ध अमेरिका आदि किंवा वैश्विक सुरक्षा के लिए सीरिया, उत्तरी कोरिया, जापान, रूस, ईरान आदि देश भयावह स्थिति को बना सकते हैं।

मुस्लिम-देशों की कुण्डली नं. (2)

(12 सितम्बर, 2018 ई. से संवत् 2075 वि. के अन्त व कुछ आगे तक भी)

मुस्लिम देशों की कुण्डली (2)
हिजरी सन् 1440 (1 मुहर्रम)

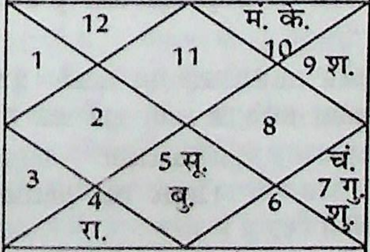

12 सितम्बर, सन् 2018 ई., बुधवार,
18 घं. 28 मि. (सूर्यास्त समय) (I.S.T.)

कुण्डली नं. (2) में लग्नेश शनि लग्न, योजनास्थान एवं अष्टम भाव को विशेष दृष्टि से देख रहा है, जोकि इस वर्ष उग्रवाद के स्वयंभू नेताओं के लिए भयावह परिस्थिति बनाता है। भारत की प्रभावराशि मकर में केतु एवं उच्च का मंगले भारत के शत्रुभूत मुस्लिम राष्ट्र-विशेष को हतप्रभ कर देगा। लेकिन कश्मीर के अंगभूत गिलगित-बाल्टिस्तान तथा सीमाप्रान्तीय विवादों पर भारत का पाकिस्तान एवं चीन के साथ परस्पर विवाद उग्ररूप धारण कर सकता है। गोचर ग्रहस्थिति के अनुसार कूटनीति किंवा युद्धात्मक परिस्थिति से ही कश्मीर की समस्या का हल सम्भव है।

कुण्डली नं. 2 के सप्तम भाव में '**बुधादित्य योग**' तो श्रेष्ठ है, लेकिन **बुध पाक की प्रभावराशि कन्या का स्वामी है और शनि की कन्या राशि पर दृष्टि भी है। इस समय बुध अस्त एवं मंगल से प्रभावित भी है।** यह समय पाक, अफगानिस्तान एवं पाक अधिकृत क्षेत्रों कश्मीर आदि के लिए एवं पाक-प्रशासक प्रमुख के लिए चिन्तनीय है। इस समय पूर्वोत्तर, दक्षिण-पश्चिमी भूभाग पर विशेष उपद्रव सम्भव है। अफगानिस्तान, ईरान, इराक, पाक, अफ्रीकन देश कतर आदि में कहीं उत्तराधिकार किंवा स्वतन्त्रता के लिए, कहीं प्राकृतिक प्रकोप एवं अनेकत्र उग्रवादजन्य-अपराधों से जनधनहानि के योग बनते हैं।

कुण्डली नं. (2) की गोचर ग्रहस्थिति के अनुसार 6 नवम्बर से 23 दिसम्बर, **2019 ई. तक शनि की मंगल पर विशेष दृष्टि होने से मुस्लिम-राष्ट्रों का उग्रवाद भयंकर जनधन-हानिकारक रहेगा।** आगे जनवरी, सन् 2019 के लगभग से संवत् 2075 वि. के अन्त तक का समय भी मुस्लिम-राष्ट्रों में कहीं शासनसत्ता में परिवर्तन एवं कहीं फौजी हकूमत का संकेत देता है। **आगे 6 मई, सन् 2019 ई. से 8 अगस्त, सन् 2019 तक का समय भी मुस्लिम-राष्ट्रों के शासकों के लिए अपने ही द्वारा संचालित उग्रवाद किंवा प्राकृतिक प्रकोप से भयंकर परिस्थिति का संकेत देता है।**

संवत् 2075 वि. की गोचर ग्रहस्थिति के अनुसार भारत एवं भारत-सरकार में घटित होने वाले घटनाचक्र का आकलन

सभी शुभाशुभ घटनाएं मनुष्य की पहुंच से बाहर समझी जाती हैं, लेकिन जो रहस्य साधारणत: इन्द्रियों की पहुंच से बाहर हैं अथवा भूत-भविष्य के गर्भ में निहित हैं, वे ज्योतिषशास्त्र द्वारा प्रत्यक्ष जान लिये जाते हैं। हमारे ऋषियों ने उसी ज्योतिषशास्त्र की रचना की है, जोकि भारत के लिए गौरव की बात है—

"ज्योतिषामयनं साक्षाद् यत्तद्ज्ञानमतीन्द्रियम्।
प्रणीतं भवता येन पुमान् वेद परावरम्॥"—(श्रीमद्भागवतपुराण)

इस प्रकार जगत्पिता की अदृश्य, अलौकिक शक्ति ग्रहों के आकर्षण-विकर्षण के आधार पर ब्रह्माण्ड को प्रभावित करती है, संचालित करती है। ग्रहगतिजन्य इस परिणाम को हम **"भवितव्यता"** किंवा **"ईश्वरेच्छा"** कहकर स्वीकार करते हैं।

स्वतन्त्र भारत का 71वां वर्ष

(14 अगस्त, 2017 ई. से 14 अग., सन् 2018 ई. तक)

भारत के 71वें वर्ष की ग्रहस्थिति के परिशीलन से स्पष्ट हो रहाहै कि—यह वर्ष भारत की शासनसत्ता के लिए देशहितार्थ नयी योजनाओं से देश को प्रगतिपथ पर ले जाने वाला है। क्योंकि, भारत की प्रभावराशि मकर का स्वामीग्रह शनि एवं गुरु मकर राशि पर विशेष दृष्टि डाल रहे हैं। लेकिन सूर्य-मंगल कर्क राशि में होने से मकर राशि को देख रहे हैं, अत: प्रगतिप्रद योजनाओं को कार्यान्वित करने के लिए केन्द्रीय शासन को भारी कठिनाइयों का सामना तो करना पड़ेगा। पुनरपि, जनहितार्थ कार्यों की प्रशंसा का भाजन सरकार रहेगी। **गोचर ग्रहस्थिति के अनुसार भारत इस वर्ष किंवा आगामी वर्षों में अन्तरिक्ष विज्ञान (Space-Science) में आश्चर्यजनक प्रगति करेगा। जिसमें अन्य कुछ देश भी सहायकरूप में मददगार रहेंगे।**

स्वतन्त्र भारत का 71वां वर्ष
14 अग., 2017 ई., 22 घं. 41 मि., (I.S.T.)

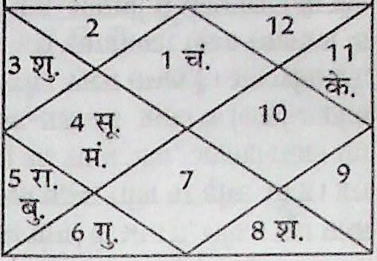

वृष राशि एवं भारत की प्रभावराशि मकर पर गुरु की दृष्टि होने से इजराइल-इण्डिया का मैत्रीसम्बन्ध चीन-पाक को अखरेगा, लेकिन भारत की नीति से शत्रुदेशों का उत्साह क्षीण किंवा हतप्रभ होगा। अफगानिस्तान एवं सैण्ट्रल एशिया से व्यापारिक सम्बन्धों में प्रगति होगी। भारत समृद्धि की ओर बढ़ेगा। वृश्चिक राशि में शनि होने से एवं 17 अगस्त, 2017 ई. को कर्क राशि में राहु के आने पर नीच मंगल के साथ राहु का सम्बन्ध होगा। इस वर्ष नेपाल, बंगलादेश, पाक आदि देशों से स्थिति विषम बन सकती है। महंगाई उत्तरोत्तर जनता को परेशान करेगी—

"कर्कराशि-स्थितो नित्यं तस्कराणां भयं भवेत्।
समर्घ सर्वधातूनां बंगदेशे महद्भयम्॥"

27 अगस्त से 13 अक्तूबर, सन् 2017 ई. तक शनि-मंगल का दशम-चतुर्थ-सम्बन्ध भारी प्राकृतिक आपदा का संकेत देता है। भूकम्प, विस्फोट, जलभय, तूफान आदि से जनधनहानि सम्भव है।

26 अक्तूबर से 29 नवम्बर, सन् 2017 ई. तक शनि-मंगल का परस्पर दृष्टि-सम्बन्ध प्रतिष्ठित व्यक्तियों के लिए एवं देश की सामाजिक एवं आर्थिक दृष्टि से चिन्तनीय रहेगा। साथ ही प्राकृतिक प्रकोप किंवा प्रतिष्ठित व्यक्ति के जीवन के लिए भी भयावह है।

मार्गशीर्ष शुक्लपक्ष में त्रयोदशी तिथिक्षय कहीं शासनसत्ता में परिवर्तन एवं देश में कहीं दुर्भिक्ष की स्थिति बनाये—

"मार्गशीर्षादि मासेषु शुक्लपक्षे तिथिक्षय:।
छत्रभंगं प्रजापीड़ां दुर्भिक्षं च समादिशेत्॥"

15 दिसम्बर को (मार्गशीर्ष कृष्णपक्ष में) सूर्य धनु राशि में आकर शनि के साथ मेल करेगा एवं पौषी अमावस (2 जनवरी, सन् 2018 ई. को) मंगलवारी होने से किसी प्रतिष्ठित व्यक्ति किंवा राजनीतिज्ञ का औहदा बदले या राजनीतिक

क्षेत्रीय पार्टियों में सत्ता हथियाने की लालसा से ध्रुवीकरण की प्रवृत्ति को बढ़ावा देगी। कुछ प्रधान पार्टियां आपसी तालमेल बनाकर आगे सत्ता के गलियारों में हलचल पैदा करेंगी।

माघ कृष्णपक्ष में पंचमी-छठ एवं अष्टमी शनि-रवि एवं मंगलवारी होने से कहीं देशविशेष, प्रान्त में तनावपूर्ण स्थिति रहे—

> **"षष्ठी-पंचमी चैव कृष्णा माघस्य अष्टमी।**
> **शन्यर्क-भौमसंयुक्ता तदा युद्धाकुला धरा॥"**

इस समयावधि में भारत में राजनीतिज्ञ एवं विभिन्न पार्टियां संयुक्त होकर शक्तिपरीक्षण की तैयारी करेंगी। लेकिन अधिक संयुक्त संगठन से सरकार का संचालन सम्भव नहीं।

23 फरवरी से 1 मार्च, सन् 2018 ई. तक बुध अतिचारी रहेगा एवं 7 मार्च को शनि-मंगल का एकराशि-सम्बन्ध देश की राजनैतिक परिस्थिति को सुदृढ़ शासनसत्ता देकर आश्चर्जनक परिणाम वाला सिद्ध होगा। लेकिनयह शनि-मंगल का सम्बन्ध देश के मूर्धन्य राजनीतिज्ञों के लिए कठिन एवं अघटित घटनापूर्ण भी रहेगा।

स्वतन्त्र भारत का 72वां वर्ष

(14 अगस्त, सन् 2018 ई. से सं. 2075 वि. के अन्त तक के लिए)

स्वतन्त्र भारत के 72वें वर्ष की ग्रहस्थिति

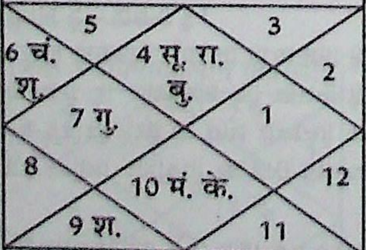

14/15 अग., 2018 ई., 4-50A.M. (I.S.T.).

स्वतन्त्र भारत के 72वें वर्ष की गोचर ग्रहस्थिति के अनुसार भारत शासन के समक्ष अनेकों समस्याएं पेश होंगी। वर्षलग्नेश चन्द्र अपने शत्रु शुक्र के साथ कन्या राशि में है। शुक्र नीच एवं केन्द्रेश-आयेश भी है, अत: कुछ अप्रत्याशित कारणों से देश की आर्थिक स्थिति में व्यवधान पैदा होगा। विशेषत: अक्तूबर, सन् 2018 ई. के बाद भारत अनुभव करेगा कि—भारत सहित उत्तरी कोरिया, चीन, पाक, ब्रिटेन, यू.एस., जापान आदि कुछ अन्य देश भी उग्रवादजन्य अपराधों के कारण बारूद के ढेर पर बैठे हैं। विश्वव्यापी पनप रहे I.S.I. आदि संगठनों के कारण एवं विस्तारवादी नीति, सैन्यशक्ति-प्रदर्शन, मारकक्षमता के शस्त्रों से त्रस्त कुछ देश एक **'अघोषित मिनि-विश्वयुद्ध'** की तरफ बढ़ेंगे, परिणाम विघातक होंगे। ऐसी गतिविधि में भारत की भूमिका प्रशंसनीय रहेगी। भारत की कूटनीति से मुस्लिम-देशों में बिखराव की स्थिति बनेगी और कुछ प्रमुख राष्ट्र मिलकर उग्रवाद पर नकेल डालने में समर्थ होंगे।

आगे 6 नवम्बर से लगभग दिसम्बर, 2018 ई. तक की समयावधि भारत सरकार के लिए चुनौतीपूर्ण रहेगी। इस समयावधि में शनि की मंगल पर दृष्टि राजनैतिक दृष्टि से प्रमुख राजनीतिज्ञों के लिए भयावह एवं उलझनपूर्ण रहेगी। सीमाप्रान्तों पर सुरक्षा व चीन, पाक की कुनीति एवं नापाक इरादों से भारत को कठिन परिस्थिति से सुलझना पड़ेगा।

7 मार्च, 2019 ई. के बाद राहु-शनि की स्थिति के कारण भारत के विपक्षी राजनैतिक गठबन्धन में पार्टियों के शीर्ष नेतृत्व के स्वर अलग-अलग नजर आयेंगे, जिससे विपक्ष की योजनाएं निष्फल हो जाने के योग हैं। सत्तारूढ़ दल पुन: प्रभाव पकड़ेगा।

ध्यान रहे—15 अगस्त से नवम्बर, सन् 2018 ई., 6 नवम्बर से 23 दिसम्बर, सन् 2018 ई. के मध्य, तत्पश्चात् 29 जनवरी, सन् 2019 ई. से संवत् 2075 वि. के अन्त तक की ग्रहस्थिति देश की सुरक्षा एवं राजनैतिक दृष्टि, प्राकृतिक प्रकोप से भी चिन्तनीय स्थिति का संकेत देती है। इस समय देश में राजनैतिक एकता एवं सीमाप्रान्तों पर सैन्य-समृद्धि एवं उग्रवाद से होने वाली जनधन की सम्भावनाओं से सावधान रहना नितान्त आवश्यक है। क्योंकि, मार्ग. शुक्लपक्ष में द्वादशी तिथि का क्षय है एवं माघ कृष्ण छठ शनिवारी है—

> "मार्गशीर्षादि मासेषु शुक्लपक्षे तिथिक्षय:।
> छत्रभंगं प्रजापीड़ां दुर्भिक्षं च समाचरेत्॥"

किसी प्रतिष्ठित व्यक्ति का पद रिक्त होने का भय है एवं कहीं युद्धभय व्याप्त हो।

संवत् 2075 वि. की गोचर ग्रहस्थिति का भारत पर प्रभाव

पाठको! ग्रहगतिजन्य प्रभाव से प्रताड़ित समस्त ब्रह्माण्ड, देश-समाज एवं व्यक्ति की स्थिति ठीक उस तिनके की भांति ही अनुभव की गयी है, तो वायुवेग से प्रताड़ित होकर अपने अस्तित्व को खोकर इधर-उधर भागता फिरता है। नैषधचरित में स्पष्ट लिखा है—

> "अवश्य भव्येष्वनवग्रह ग्रहा यया दिशा धावति वेधस: स्पृहा।
> तृणेन वात्येव तयानुगम्यते लोकस्य चित्तेन भृशाऽवशात्मना॥"
> —(*नैषधचरित*)

यह बात भी नितान्त सत्य है कि—ग्रहों की प्राकृतिक व्यवस्था में तनिक भी रूपान्तरण होने से दिग्दाह, उल्कापात, भूकम्प, अतिवृष्टि, अनावृष्टि, युद्ध, महामारी, अराजकता आदि उपद्रवों से संसार त्रस्त हो जाता है। अत: स्पष्ट है कि—आकाशीय पिण्डों (ग्रहों) का विश्वजनीन घटनाचक्र से कुछ सम्बन्ध अवश्य है—इस तथ्य को वैज्ञानिक, विचारक एवं बुद्धिजीवियों का एक बड़ा वर्ग स्पष्ट स्वीकार करता है।

ग्रहगतिजन्य संकेतों का अध्ययन करके हम मनीषी-महर्षियों के द्वारा निर्दिष्ट सिद्धान्तों के अनुसार भारत की राजनीति एवं अन्य पड़ोसी देशों के साथ सम्बन्धों पर अपने विचार लिखने की चेष्टा कर रहे हैं। विद्वज्जनों के आशीर्वाद की याचना है, क्योंकि ग्रहगतिजन्य संकेतों को ठीक-ठीक पकड़ने में अनेकदा चूक भी हो सकती है, तो विद्वज्जन स्वयं संकेत को सुधारकर हमें आशीर्वाद दें—प्रार्थना है।

संवत् 2075 वि. की प्रवेशकालीन कुण्डली

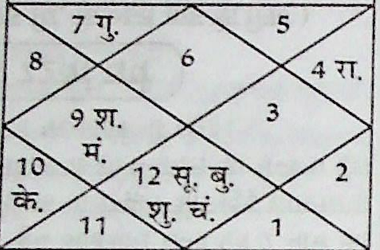

17 मार्च, सन् 2018 ई., 18 घं.41 मि. (I.S.T.)

संवत् 2075 वि. का शुभारम्भ कन्या लग्न में हुआ है। लग्नेश बुध नीच स्थिति में है व लग्न को देख तो रहा है। इस समय बुध राजनीति क्षेत्र (दशम भाव) का भी स्वामी होकर सूर्य-शुक्र और चन्द्र के साथ है। गुरु (अन्य देशों के साथ सम्बन्ध का सूचक) वक्री है। सूर्य, चन्द्र, शुक्र, बुध पर (अष्टमेश) मंगल की विशेष दृष्टि भी है।

सं. 2075 वि. भारतीय राजनीति एवं भारत के प्रतिष्ठित राजनीतिज्ञों के लिए भारी विकट परिस्थितियों एवं घटनाओं को लेकर आ रहा है।

चतुर्थ भाव में शनि-मंगल का एकत्र होना एवं दशम भाव पर इनकी पूर्ण दृष्टि होने से सीमाप्रान्तों पर कुछ देश अशान्ति का कारण बनेंगे। मुस्लिम देशविशेष की शासन-सत्ता में आश्चर्यजनक परिवर्तन होगा। भारत के दक्षिण-उत्तर एवं पश्चिमी सीमाप्रान्तों पर सैन्यबल प्रयोग करना अनिवार्य अनुभव होगा। मार्च से नवम्बर, 2018 ई. के प्रथम सप्ताह का मध्य-समय बहुत नाजुक है, विशेष ध्यान रखना है।

ग्रहस्थिति के अनुसार दक्षिण में महामारी, असम में हिंसा एवं पृथक् गोरखालैण्ड की मांग, पूर्वी एवं पश्चिमी सीमाओं पर चीन-पाक आदि से '**अघोषित युद्ध**' की स्थिति बनेगी। वर्षप्रवेश कुण्डलीगत ग्रहस्थिति के कारण पूर्वोत्तर में कहीं सत्तासंघर्ष, मध्य प्रदेश, बंगाल, असम, उ.खण्ड, पंजाब, महाराष्ट्र एवं देहली आदि में आतंकवाद व प्राकृतिक प्रकोप से भारी जनधनहानि आदि के योग हैं।

ग्रहस्थिति के अनुसार गुरु के वक्रत्वकाल में 11 सितम्बर, 2017 ई. से आगे लगभग जुलाई, सन् 2018 ई. के प्रथम सप्ताह तक भारत की राजनीति में विपक्षी पार्टियां एकजुट होकर '**राजनैतिक महागठबन्धन**' का मन बनाकर सत्ता हथियाने की नीति अपनायेंगी। लेकिन प्रमुख मुद्दों एवं नेतृत्व को लेकर यह गठन ढीला होता नजर आयेगा, देश का हित पीछे एवं सत्ताप्राप्ति का उद्देश्य प्रमुख होने से यह महागठबन्धन अन्तत: देशहित में नहीं रहेगा—ऐसा ग्रहस्थिति से संकेत मिलता है।

इस संवत् में ज्येष्ठ अधिक मास है। 2 मई, 2018 ई. को मंगल मकर राशि में आकर राहु के साथ समसप्तक बना रहा है। जोकि भारतीय शासकों के समक्ष कठिन राजनैतिक उलझनें प्रस्तुत करेगा। "**ज्येष्ठद्वये नृपध्वंस:**"—प्रमाणानुसार उग्रवाद से प्रधान, प्रतिष्ठित नेताओं को 6 नवम्बर, 2018 ई. के लगभग तक अपनी सुरक्षा-व्यवस्था को सुदृढ़ रखना अनिवार्य है—यह ग्रहगति से संकेत मिलता है।

23 दिसम्बर, सन् 2018 ई. से आगे कन्या (पाक की) राशि पर शनि-मंगल की दृष्टि एवं चीन की नामराशि मेष पर मंगल की दृष्टि भी परेशानीकारक है, सैन्यक्षमता एवं कूटनीति से कार्य करना ही बुद्धिमत्ता होगी। क्योंकि मोदी-सरकार के पाक को अलग-थलग करने के प्रयास से रूस, चीन एवं पाक का कूटनीतिक ध्रुवीकरण कदाचित् भारत के लिए ही चिन्ता का कारण न बन जाये। यह त्रिगुट केवल आर्थिक कारणों से ही नहीं, सांझे कूटनीतिक हितों की पूर्ति को भी अन्दरूनी तौर पर लक्षित करता है। इस संवत् में राहु, मंगल एवं शनि की स्थिति से संकेत मिलता है कि—I.S.I. दक्षिण एशिया में अपनी गतिविधि को बल देगा। ऐसी स्थिति में भारतसमेत इस पूरे इलाके को सजग रहना होगा। भारत में मेष-वृश्चिक मकर नामराशि वाले राजनीतिज्ञों को अपनी सुरक्षा को पूर्णतया सुव्यवस्थित रखना अनिवार्य है, अन्यथा कोई भी दु:खद घटना देश का अहित कर सकती है।

भारतीय गणतन्त्र का 69वां वर्ष

भारतीय गणतन्त्र के 69वें वर्ष की ग्रहस्थिति के अनुसार सुखेश मंगल अपनी राशि में प्रबल है। लेकिन लग्नेश सूर्य अपने शत्रु ग्रह शुक्र के साथ छठे भाव (शत्रुक्षेत्र) में बैठा है। **यह ग्रहस्थिति भारत गणतन्त्र के लिए नयी-नयी योजनाओं को कार्यान्वित**

करने के लिए एवं देश की प्राथमिकता 'आर्थिक स्थिति' को सुदृढ़ करने में भारी संकटों को उपस्थित करने वाली है। सीमाप्रान्त असुरक्षित किंवा अशान्त रहने से सुरक्षा-प्रबन्धन को मजबूत करने पर विशेष ध्यान देना होगा।

भारतीय गणतन्त्र की ग्रहस्थिति
26 जन. 2018 ई., 20 घं.43 मि. (I.S.T.)

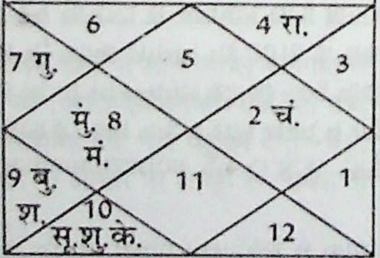

लेकिन मुंथेश मंगल गणतन्त्र का चतुर्थेश एवं नवमेश होकर केन्द्र में ही 'रुचक' योगकारक है, अतः भारत के यश एवं सुरक्षाप्रबन्धों में प्रगति होगी। भारत की गणना विश्व के प्रमुख देशों में होगी। गणतन्त्र के प्रधान नेता नव-निर्वाचित राष्ट्रपति देश को महिमामण्डित रखेंगे।

गणतन्त्र के चतुर्थ स्थान में मुंथेश के स्थित होने से भारतीय गणतन्त्र की रूस, यू.एस., जापान, इजराइल आदि मित्रदेशों के साथ मैत्री प्रगाढ़ होगी एवं भारत का वर्चस्व प्रबल रहेगा। यद्यपि सं. 2075 के प्रारम्भ से पूर्व ही शनि-मंगल की स्थिति एवं आगे नवम्बर, 2018 ई. के प्रथम सप्ताह तक मंगल-राहु के समसप्तकयोग की स्थिति सीमाप्रान्तों पर किंवा कश्मीर में चिन्ताजनक रहेगी, लेकिन भारतविरोधी राष्ट्रों (चीन-पाक आदि) की गति को क्षीण करने में सशक्त सिद्ध होगा। क्योंकि, मुंथेश-भाग्येश मंगल प्रबल है।

भारत के प्रमुख राजनैतिक दल

भाजपा-स्थापनाकालीन ग्रहस्थिति

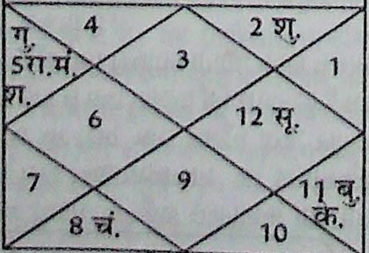

भारतीय जनता पार्टी—संवत् 2075 वि. के प्रारम्भ में ही गुरु वक्री हो गया है, 7 मार्च, सन् 2018 ई. को मंगल धनु राशि में आकर शनि के साथ मेल (एकराशि-सम्बन्ध) करेगा, यही स्थिति (एकराशि-सम्बन्ध) भाजपा की स्थापनाकालीन कुण्डली में भी है, यह ग्रहस्थिति लगभग 2 मई, सन् 2018 ई. तक भाजपा नेतृत्व के लिए अघटित घटनाचक्र को पेश करेगी। भाजपा नेता देश की स्थिति को नियन्त्रित करने एवं देश के विपक्षी नेताओं को सन्तुष्ट करने में असमर्थ मालूम देंगे, परिणाम दूरगामी होंगे।

लेकिन ज्येष्ठ, श्रावण, भाद्रपद एवं कार्तिक मास भारत के पूर्वोत्तरी भागों में एवं पश्चिमी देशों में भारी प्राकृतिक आपदा वाली ग्रहस्थिति लेकर आ रहे हैं। पाक, अफगानिस्तान, बंगलादेश, नेपाल, चीन से सीमाप्रान्त अशान्त होंगे। कठोर सैन्य-संघर्ष के लिए भाजपा को अन्य पार्टियों के साथ देशहित में संयुक्त निर्णय लेना पड़ेगा।

कांग्रेस पार्टी—गोचर ग्रहस्थिति एवं कांग्रेस कुण्डलीगत ग्रहस्थिति की समीक्षा करने पर स्पष्ट ज्ञात होता कि—मकरस्थ मंगल की मेष राशि में स्थित शनि पर विशेष दृष्टि है।

26 अक्टूबर, सन् 2018 से नवम्बर, सन् 2018 ई. तक की समयावधि में विपक्षी पार्टियां गठबन्धन बनाकर राजनीतिक दृष्टि से कांग्रेस पार्टी को आगे लाकर सत्तारूढ़ दल को अपदस्थ करने का कार्यक्रम बनायेंगी, लेकिन लगभग 7 मार्च, सन् 2019 ई. से आगे मई, 2019 ई. तक कांग्रेस पार्टी की स्थिति चिन्तनीय होगी, प्रधान नेतृत्व का स्वास्थ्य क्षीण हो या पार्टी के आन्तरिक विवाद उलझनें लगेंगे, जिससे सत्ता-प्राप्ति हाथ से खिसक जायेगी। 6 नवम्बर, सन् 2018 से संवत् के अन्त तक इस पार्टी के नेतृत्व के लिए समय कष्टप्रद मालूम देता है।

कांग्रेस-स्थापनाकालीन ग्रहस्थिति

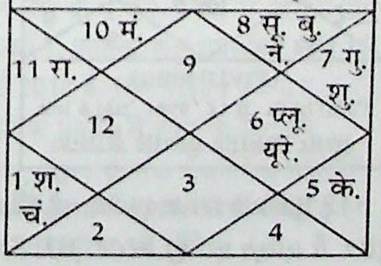

आम आदमी (आप) पार्टी—पार्टी की स्थापनागत ग्रहस्थिति के अनुसार नवमेश-दशमेश शनि द्वादश भाव में नीच है, जोकि मार्च, 2018 ई. से मई, 2018 ई. के लगभग शनि-मंगल के एकत्र होने की स्थिति में इस पार्टी के प्रभुत्व को क्षीण करेगा। लगभग 2½ वर्ष आगे तक 'आप' पार्टी की राजनैतिक चाल कोई विशेष महत्त्वपूर्ण प्रभावी नहीं।

गतवर्ष सं. 2074 वि. के पंचांग में पृष्ठ 59, कॉलम 2 पर इस पार्टी के बारे में जो भविष्यवाणी की गयी थीं, वह भी नीचे पढ़ें—

सं. 2074 वि. के प्रारम्भ में ही लग्नेश शुक्र, भाग्येश-कर्मेश शनि वक्री हालत में चल रहे हैं। इस संवत् में शनि-मंगल का षडष्टक, दशम-चतुर्थसम्बन्ध, समसप्तक एवं फरवरी, 2018 ई. से मार्च, 2018 ई. तक शनि-मंगल का सम्बन्ध इस पार्टी के लिए समस्यात्मक उलझनपूर्ण तो है ही। इस अवधि में श्रीकेजरीवाल को अपनी पार्टी को एकजुट रखने में कठिनाई रहेगी।

भारतीय राजनीति के क्षितिज पर सम्भावित "राजनैतिक महागठबन्धन"

बहुजन समाजपार्टी, समाजवादी पार्टी एवं बिहार के कुछ राजनैतिक दल तथा कांग्रेस–ये सब मिलकर सत्तापक्ष को घेरने के लिए '**महागठबन्धन**' को प्राथमिकता देने की चर्चा है। यद्यपि यह गठबन्धन सत्तापक्ष के लिए भारी मालूम देगा, लेकिन राजनैतिक मुद्दा इस महागठबन्धन के पास प्रबल न होने से तथा पार्टियों की सत्ता-लोलुपता, नेतृत्व में वरीयता आदि मुद्दे शनि-राहु एवं मंगल-शुक्र की स्थिति आगामी काल में शीघ्र ही मतभेद पैदा करके सत्तापक्ष को लाभ पहुंचा सकती है।

कुछ प्रतिष्ठित राजतनीतिज्ञ

जन्माङ्गकालिक ग्रहस्थिति श्रीनरेन्द्रमोदी

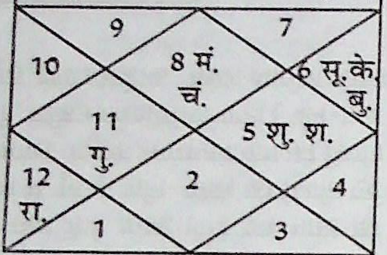

श्रीनरेन्द्रमोदी महाभाग—श्री नरेन्द्रमोदी जी का जन्म 17 सितम्बर, सन् 1950 ई. में गुजरात स्थित Vad Nagar (महेसाना) में 11 घं. 00 मि. A.M. पर हुआ। इनकी जन्मकालिक ग्रहस्थिति इस प्रकार है–

श्री मोदी जी के यथालब्ध जन्म-नक्षत्र के अनुसार चन्द्रमा की महादशा में शनि का अन्तर 30 सितम्बर, 2016 ई. तक चलेगा। सूक्ष्मता से विचार करने पर इस वक्त चन्द्र में शनि एवं शनि में भी केत्वन्तर 24/9/2016 ई. तक प्रभावी है। **तत्यश्चात् चिन्तनीय ग्रहस्थिति तो चन्द्र में शनि एवं शनि में सूर्य एवं चन्द्र में शनि एवं शनि में मंगल के प्रत्यन्तर में 18/4/2017 ई. तक रहेगी।** इन सभी अन्तर-प्रत्यन्तर के विचार से श्री मोदी जी की स्थिति विशेषरूप से कठिन परिस्थितियों/उलझनों से लदी मालूम देती है।

सो उल्लिखित ग्रहस्थिति के अनुसार Demonetization एवं G.S.T. लागू करके श्री मोदी जी ने अनेक विपक्षी-बाणों को झेला है। अब चन्द्र में शनि अन्तर में राहु का प्रत्यन्तर 13-7-2017 तक चलेगा; सं. 2075 वि. में शनि-मंगल की श्री नरेन्द्र मोदी जी के जन्माङ्ग में द्वितीय भाव (धनु) में स्थिति में, जोकि लगभग मई 2018 ई. तक प्रभावी रहेगी, श्री मोदी जी को शत्रु व उग्रवादजन्य कुचेष्टा से सावधान रहना होगा। तत्पश्चात् राहु-मंगल का समसप्तक, जोकि नबम्बर, सन् 2018 ई. तक प्रभावी रहेगा, इसमें श्री मोदी महाभाग को भारी राजनैतिक कठिनाइयों एवं विपक्षी विवादों को झेलना होगा।

ध्यान रहे—इस समयावधि में सुरक्षा-व्यवस्था को भी सुदृढ़ रखना अनिवार्य है। दु:खद घटनाएं घटित हो सकती हैं।

11 अक्तूबर, 2018 ई. से गुरु गोचर में वृश्चिक राशि में आकर श्री मोदी के भाग्यस्थान को उच्च दृष्टि से देखना शुरु करेगा। आप देशहितार्थ कार्य करके राष्ट्र को विश्व के राष्ट्रों में सर्वोच्च महिमामण्डित कर सकेंगे, इसका प्रभाव आपको पुन: भारत का नेतृत्व करने की स्थिति में लाकर खड़ा कर देगा।

सं. 2074 वि. के पंचांग में हमने घोषणा की थी कि–"...... जन्माङ्ग में भाग्येश-चन्द्र लग्न में नीच है, लेकिन स्वराशिस्थ मंगल यहां 'रुचक योग' तो बना ही रहा है, यह योग चन्द्रयोग में विशेष प्रभावी तो नहीं, फिर भी अनेक कठिनाइयों के बावजूद भी यहयोग श्री मोदी को सात्त्विक धर्मात्मा, शासन-व्यवस्था में कुशल शासक एवं राजातुल्य यशस्वी तो बनाता ही है–'शास्त्री-मन्त्रजपाधिकारकुशलो राजोऽथवा तत्समः।'

अत: श्री नरेन्द्रमोदी जी यशस्वी प्रधानमन्त्रियों की कोटि में कठिनाइयों से जूझकर भी देश को प्रगतिपथ पर अग्रसर रखेंगे एवं देश को आर्थिक, प्रशासनिक दृष्टि से समृद्ध देशों की कोटि में स्थापित करेंगे,–यह आगे समय बतलायेगा।"

(सं. 2074 वि. के पंचांग पृ. 60)

यह भविष्यवाणी सटीक सही साबित हुई है–यह तो जनता समझती है।

जन्माङ्ग श्रीमती सोनिया गांधी
जन्म 9 दिसं. 1946, 21 घं. 15 मि.(S.T.)
TURIN (ITALY)

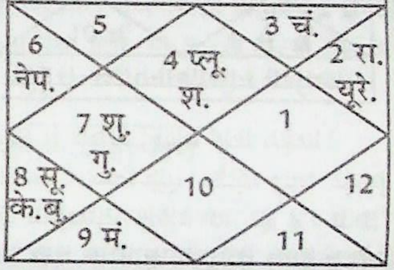

श्रीमती सोनिया गांधी—श्रीमती सोनिया गांधी जी के जन्माङ्ग में शनि शत्रुक्षेत्र (कर्क) में एवं लग्नेश चन्द्र व्यय स्थान में होने से शारीरिक स्वास्थ्य की दृष्टि से भारी कष्टप्रद परिस्थिति का संकेत है। इस वर्ष 7 मार्च, 2018 से मई, 2018 ई. तक एवं राहु-मंगल के समसप्तकयोग में 6 नवम्बर, सन् 2018 ई. तक का समय इनकी सेहत एवं राजनैतिक जीवन के लिए कठिन परिस्थितियों को लेकर आ रहा है।

ग्रहस्थिति के अनुसार इनकी अपनी ही **"पार्टी में विरोधी स्वर भी परेशानी का**

कारण बनेंगे। स्पष्ट है कि—आगे आने वाले समय में वंशवादी अधिकारों का युग समाप्ति की ओर बढ़ रहा है एवं स्वास्थ्य की दृष्टि से यह संवत् चिन्ताजनक अवश्य है।"—यह गतवर्ष भी हमने लिखा था।

राजनैतिक परिप्रेक्ष्य से देखें तो गोचर में वृश्चिक राशि में शनि-मंगल वक्रगति से एकसाथ हैं। सं. 2075 वि. में शनि-मंगल-राहु की स्थिति एवं इनकी पार्टी को तथा इनके परिवार को आगे सन् 2019 ई. तक तो सत्ताप्राप्ति तक नहीं पहुंचने देगी—ऐसा ग्रहस्थिति से संकेत मिलता है। यह गोचर ग्रहस्थिति के आधार पर लिखा है—सर्वज्ञ तो प्रभु ही हैं।

श्री राहुल गांधी—गोचर ग्रहस्थिति के अनुसार धनु राशि में शनि-मंगल के एकत्र होने से अपनी ही पार्टी की स्थिति को नियन्त्रित एवं संचालित करने में कठिनता पैदा करेगा। पार्टी में ही विरोधी स्वर सुनाई देंगे। लेकिन मई, 2018 ई. के बाद स्थिति बदलेगी। राजनैतिक परिस्थिति कुछ अनुकूल रहने के योग हैं। नया उत्साह-संचार नज़र आयेगा। क्योंकि, चन्द्र में सूर्य का अन्तर 27-10-17 तक चलेगा, यह इन्हें पार्टी में पदाप्ति-योग तो बनाता है। लेकिन भारत की सत्ता तक पहुंचना कठिन ही प्रतीत होता है।

जन्मकुण्डली श्रीराहुल गांधी
19 जून, 1970 ई., नई दिल्ली, 5-05 A.M.,

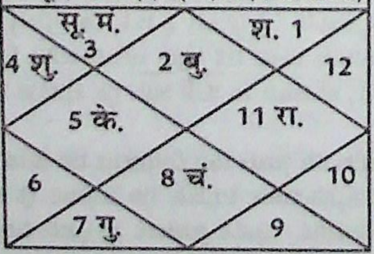

भारत के कुछ प्रान्त

पंजाब—इस प्रान्त की प्रभाव राशि मीन एवं नामराशि कन्या है। गोचर ग्रहस्थिति के अनुसार तुला-राशिस्थ गुरु पर शुक्र की विशेष दृष्टि है। यह ग्रहस्थिति प्रान्तीय शासनसत्ता के समक्ष मई, 2018 के प्रथम सप्ताह तक जनता में कुछ असन्तोष की भवना को उजागर करेगी। प्रान्त की आर्थिक स्थिति कमजोर होने पर भी शासक स्थिति को कण्ट्रोल में रखेंगे। लेकिन गुरु के क्षेत्र (धनु राशि) में शनि-मंगल का योग कहीं पूर्वोत्तर की तरफ देशद्रोही उग्रवादी तत्त्वों से हानि का संकेत देता है।

इस वर्ष मंगल-राहु का समसप्तक 6 नवं., सन् 2018 ई. तक चलेगा। यह समय कुछ अशान्तिपूर्ण रहे, लेकिन सुयोग्य शासक स्थिति पर नियन्त्रण रखेंगे। आगे 11 अक्तूबर, सन् 2018 ई. से संवत् के अन्त तक वृश्चिक राशि के गुरु की मीन राशि पर दृष्टि होने से यह प्रान्त शान्तिपूर्वक प्रगतिपथ पर अग्रसर रहेगा।

हरियाणा—इस प्रान्त की प्रभावराशि मीन एवं नामराशि मिथुन है। गोचर ग्रहस्थिति के अनुसार **'नव संवत्सरकालीन'** कुण्डली में सूर्य-बुध-शुक्र मीन राशि में ही हैं। प्रभाव राशीश गुरु का शुक्र के साथ राशि-व्यत्यय है। आन्तरिक अशान्ति एवं अस्थिरता को विपक्षी दल हवा देंगे, लेकिन **बुधादित्य-योग** प्रधान शासक को सही मार्गदर्शन द्वारा इस प्रदेश को स्थिरता प्रदान करेगा।

हां, धनु राशि में स्थित शनि एवं मंगल इस प्रान्त की प्रगति में बाधक एवं आन्दोलन आदि से जनजीवन को उपद्रवग्रस्त करेंगे, क्योंकि शत्रु ग्रहसहित शनि की मिथुन राशि पर विशेष दृष्टि है। यह स्थिति मई 2018 ई. तक परेशान करेगी।

2 मई, 2018 से आगे अक्तूबर तक प्राकृतिक प्रकोप से हानि के योग हैं।

तत्पश्चात् नवम्बर, सन् 2018 ई. से अप्रैल, 2019 ई. तक राजनैतिक गतिविधि एवं विपक्षी दलों की चाल से राजनैतिक दुविधा से प्रधान शासक परेशान रहेंगे। इस समयावधि में कई देशद्रोही किंवा उग्रवादी तत्त्व हानिकारक भी रहेंगे।

उत्तर प्रदेश—इस प्रान्त की नाम राशि वृष एवं प्रभाव राशि धनु है। यह संवत् यहां के प्रधान शासक के लिए भयंकर कठिनाइयों को लेकर आ रहा है। सं. 2075 वि. से पूर्व ही 27 अगस्त, 2017 को मंगल के सिंह राशि में आने पर एवं 12 सितं., 2017 ई. से गुरु के तुला में आने पर यहां साम्प्रदायिक एवं उग्रवादजन्य भयंकर आपदाओं का सामना करना पड़ेगा, जो भारी दुःखद परिस्थिति बना सकता है। आगे उ.प्र. की प्रभाव राशि धनु में शनि-मंगल का एकत्र होना मई, 2018 तक भी जनधनहानि का संकेत देता है। अनैतिक घटनाएं किंवा साम्प्रदायिक झगड़े इस प्रान्त की गरिमा एवं सुधारात्मक प्रक्रिया को पंगु बना देंगे।

इस वर्ष यहां के प्रधान शासकों को उग्रवादी गतिविधि से रक्षात्मक व्यवस्था को सुदृढ़ रखना नितान्त आवश्यक है। प्रधान नेता की योजनाएं एवं प्रयास इस प्रान्त के लिए प्रशस्य रहेंगे।

गतवर्ष के पंचांग में इस प्रान्त के बारे में जो भविष्यवाणी सं. 2074 के पंचांग पृ. 62 पर की गयी थी, वह अक्षरशः सत्य सिद्ध हुई। पढ़ें—

"इस साल शनि-मंगल-गुरु-शुक्र की स्थिति यहां भारी प्राकृतिक आपदा भूकम्प, तूफान, अग्निकाण्ड, यानदुर्घटना, साम्प्रदायिक दंगों, अवैध हथियारों के धन्धों आदि से जनधनहानि के दुःखद योग भी बना ही है। लेकिन प्रान्त की प्रगति

एवं शान्ति-व्यवस्था, परस्पर जातीय एवं साम्प्रदायिक सौहार्द की दृष्टि से उत्तर प्रदेश निरुत्तर-सा ही रहेगा।"

हिमाचल प्रदेश—इस प्रान्त की प्रभाव राशि मीन एवं नामराशि कर्क है। 2 मई से 6 नवं., सन् 2018 ई. तक मंगल का कर्क राशिस्थ राहु के साथ समसप्तकयोग इस प्रान्त को नयी-नयी योजनाओं से अग्रसर रखेगा। लेकिन प्रधान नेता की नामराशि वृष पर मंगल की दृष्टि एवं शनि की मंगल पर दृष्टि 23 दिसम्बर तक उलझनपूर्ण है। 5 फरवरी, सन् 2019 ई. से संवत् के अन्त तक की ग्रहस्थिति यहां की राजनैतिक स्थिति में बदलाव का संकेत देती है।

जम्मू-कश्मीर—इस प्रान्त की नामराशि मकर एवं प्रभावराशि तुला है।

पाठको! (गतवर्ष के) श्रीमार्त्तण्ड पंचांग (सं. 2074 वि.) में पृष्ठ 62, कॉलम 2 पर 'जम्मू-कश्मीर' शीर्षक के अन्तर्गत जो शब्दचित्र कश्मीर के बारे में दिया गया था, वह शत-प्रतिशत सत्य सिद्ध हो रहा है, पढ़ें—

"इस संवत् की ग्रहस्थिति में सभी आतंकी संगठन विशेषत: I.S.I. आदि कश्मीर पर बड़ा हमला करेंगे। कश्मीर के सीमाक्षेत्र अशान्त रहेंगे एवं यहां की शासन-सत्ता इस प्रान्त में शान्ति स्थापित करने में असमर्थ रहेगी। उग्रवाद के जघन्य अपराध पाक अधिकृत कश्मीर से आतंक की घुसपैठ जनधनहानि का कारण बनेगी। इस संवत् के उत्तरार्ध में पाक का सीमातिक्रमण संघर्ष का कारण भी बन सकता है।"

संवत् 2075 वि. की गोचर ग्रहस्थिति कश्मीर की राशि तुला पर मंगलयुत **'शनि की दृष्टि'** होने से कश्मीर-समस्या का हल सहज सम्भव नहीं। इस जलते सीमाप्रान्त पर पाक की कुदृष्टि इस संवत् में भयावह स्थिति को जन्म दे सकती है। ग्रहस्थिति से संकेत मिलता है कि—तिब्बत, कश्मीर एवं अन्य सीमान्त प्रदेश भारत के साथ पाक-चीन जिस स्थिति को जन्म दे रहे हैं, वह भारत एवं विश्वजनीन शान्ति के लिए भयावह सिद्ध होगी।

दिल्ली—क्षेत्र की प्रभावराशि मकर एवं नामराशि मीन है। मीन राशि का स्वामी गुरु 9 मार्च, 2018 से लगभग 10 जुलाई, 2018 तक वक्रगति से चल रहा है। 26 जून से 27 अगस्त, 2018 ई. तक मंगल भी वक्र है, अत: इन दिनों इस प्रान्त में भूकम्प किंवा उग्रवादियों द्वारा जघन्य भारी दु:खद घटनाएं सामने आयेंगी। इस समय प्रधान प्रतिष्ठित नेताओं को भी सुरक्षा-व्यवस्था को सजग रखना पड़ेगा। इस साल के प्रारम्भ से मई तक शनि-मंगल का एकत्र होना भी भारतीय सत्तारूढ़ दल को सीमाप्रान्तों पर भारी चिन्तनीय स्थिति में डाल देगा।

जनवरी से अप्रैल, सन् 2019 तक की ग्रहस्थिति से संकेत मिलता है कि—भारत की राजनीति पर पुन: सुयोग्य राजनीतिज्ञों का वरद हाथ रहेगा। जनता राजनीतिक वंशवाद से विमुख होती नजर आयेगी और भारत को चहुंमुखी प्रगति की ओर ले जाने वाला नेतृत्व उभरकर देशहित में काम करेगा।

पाठको! प्रभुकृपा से भूत-भविष्य में जो कुछ (ग्रहगोचरवश) अनुभव किया, आपके सामने रख दिया है। जो घटित हो चुका, वह आपने देख लिया। जो भविष्य है, उस पर आप भूतानुसन्धान के आधार पर विश्वास करें—

"समस्तमेतद् गतमागतं तथा भविष्यमप्यक्षरशो यथोत्तरम्।
निबोधितं शास्त्र-परम्परावशाद् भवादृशां भारतवासिनां पुर:॥"

लेख पूर्ण होने की तिथि—
4 जून, सन् 2017 ई.
रविवार, श्रीगंगादशहरा,

शुभचिन्तक-
इन्दुशेखर शर्मा, संयमी शर्मा,
श्रीमार्त्तण्ड भवन, मु. पो. कुराली,
(अजीतगढ़-मोहाली), (पंजाब)।

श्रीमार्त्तण्ड ज्योतिष कार्यालय कुराली (मोहाली) पंजाब के युवा-कर्मठ-विद्वान् कार्यकर्ताओं का पंचांग-प्रकाशन में भारी सहयोग वस्तुत: प्रशंसनीय है-

"श्रीमार्त्तण्ड ज्योतिष कार्यालय कुराली"

के प्रबन्धक, हमारे पूज्यपिता जी के प्रिय शिष्य चि. प्रेमचन्द शर्मा; ग्राम सुन्हाड़—सौर (सोलन) निवासी श्री कृष्ण शर्मा, शास्त्री, M.A., वेदाचार्य, साहित्याचार्य; नालाबलोग (पंचकूला) निवासी चि. सुरेशानन्द शर्मा, B.A., एवं चि. रविसन्धु (सुपुत्र राणा रणजीत सिंह जी) श्रीमार्त्तण्ड पंचांग (हिन्दी) की पाण्डुलिपि-लेखन एवं प्रूफरीडिंग आदि का काम बड़ी तत्परता, सावधानी और आदरभाव से करते हैं। पंचांग के प्रकाशन-कार्य का हमारा भार इन युवाओं के स्वत्व – भरे इस उत्साहपूर्ण सहयोग से काफी हल्का हुआ है। एतदर्थ इनके निरन्तर प्रगतिमय परम-उज्ज्वल भविष्य के लिए हमारा इन्हें सस्नेह आशीर्वाद है।

—प्रियव्रत शर्मा, इन्दुशेखर शर्मा,
सम्पादक—श्रीमार्त्तण्ड पञ्चाङ्ग

संवत् 2075 वि. में भारत की जलवायु एवं वर्षा–विचार

आगामी वर्षों की ग्रहस्थिति अनेक प्रान्तों में जलवायु एवं प्राकृतिक प्रकोप–विचार से भारी कठिन परिस्थिति को लेकर आ रही है:– पढ़ें इस लेख में

– संयमी शर्मा,

जलवायु एवं वर्षाविचार के मूलभूत सिद्धान्तों, मानवीय भूलों, प्रबन्धन की अदूरदर्शिता, प्राकृतिकस्रोतों का दोहन एवं प्राकृतिक रहस्यों की उपेक्षा विश्व के लिए जल्दी ही भयावह सिद्ध होगी–इसे जनता, नेतागण एवं देश की प्रबन्धन–समितियों को गम्भीरता से अतिशीघ्र लेना होगा, अन्यथा ''**यद्भावी न तद्भावी भावी चेन्न तदन्यथा**''–(जो होना है, वह होना ही है)– यह सोचकर कब तक प्राकृतिक आपदाओं का सामना कर पाएंगे– यह तो भगवान् ही जानें। लेकिन ग्रहचाल के अनुसार प्राकृतिक आपदाओं के भयंकर दुष्परिणाम शीघ्र ही स्थावर–जंगम जगत् को विनाश के कगार पर ले जाने वाले मालूम होते हैं। जलवायु–वर्षाविचार के साथ इस लेख में एतत्– सम्बन्धित आधारभूत रहस्यों की चर्चा भी सूक्ष्मरूप से की गई है।

जल, वायु, अनाज किंवा अन्य कृषि–उत्पादन–ये जीवनाधायिका–चतुष्टयी ही संवत्सर के फल की दिशा व दशा को निर्धारित करती है। यदि वर्ष के ये चार स्तम्भ सुदृढ़ हों तो वर्ष सुदृढ़, जनजीवन स्वस्थ एवं समृद्ध रहेगा– ऐसी मान्यता है। लेकिन ''जल एवं वायु''– ये संवत् के प्रमुख स्तम्भों में से हैं। इन्हीं के आधार पर ''अन्नस्तम्भ'' की कल्पना की जा सकती है। जलवायु के बिना प्राणियों के जीवनाधायक अन्न की भी उपज संभव नहीं। अतः सं. 2075 वि. के जलवायु का ग्रहयोग के आधार पर यहां संक्षिप्त निर्देश नीचे दे रहे हैं। आशा करते हैं, कि–यह संक्षिप्त लेख किसानों/बागवानो के लिए एक् दिशा–निर्देशक सिद्ध होगा।

गोचर–ग्रहस्थिति के अनुसार उत्तरी एवं दक्षिणी–ध्रुव, जोकि समस्त विश्व के मौसम को स्थिर रखने में सर्वोच्च भूमिका निभाते हैं, –ग्लोबल वार्मिंग' के कारण उत्तरी ध्रुव में बढ़ रहा तापमान आगे आने वाले लगभग 15/16 वर्षों की ग्रहस्थिति के अनुसार मंगल, शनि, राहु एवं केतु कुछ वर्षों में ही विश्व के लिए खतरे की घण्टी बजा सकते हैं। कहने का तात्पर्य यह है कि– **''ग्लोबल–वार्मिंग'' विश्व के जलवायु के लिए भयंकर किंवा विपरीत परिस्थितियां बनाएगी। जिससे ध्रुवों के आसपास के देशों को ही नहीं, बल्कि पूरी दुनिया को ही दुष्परिणाम झेलने पड़ेंगे।** अनेकत्र 'ऋतु–विपर्यय' अनुभव होने से वैश्विक तापमान किंवा प्रकृति में महानद, और अन्य जलस्रोत सूखने लगेंगे। समुद्र एवं महानदों के तटों पर प्रलयंकारी दृश्य उपस्थित होंगे। वृक्षों से ऑक्सीजन कम प्राप्त होने लगेगी–इत्यादि आश्चर्यजनक परिवर्तन होंगे। जिससे रोग बढ़ेंगे। मौसम में इस प्रकार के उतार–चढ़ाव प्रकृति के साथ चल रहे खिलवाड के कारण जारी हैं। प्रकृति में हो रहे असामान्य किंवा अप्राकृतिक परिवर्तन को समझने में तो आधुनिक वैज्ञानिक भी सकते में हैं। मौसम की अनिश्चितता से कृषिक्षेत्र में संभावित जोखिम कम करने के लिए सरकार को व्यापक रणनीति बनानी होगी।

सभी समुदायों के धार्मिक–ग्रन्थों में पर्यावरण–हितैषी बनने के लिए कहा गया है। मनुस्मृति में एक वृक्ष को दस पुत्रों के बराबर की संज्ञा दी गई है। कुरान कहती है कि जल ही जीवन है। 'वेद' पानी के महत्त्व की गाथाओं से भरे पड़े हैं। ईसाई समुदाय में भी प्रकृति–प्रेम को श्रेष्ठता प्रदान की गई है। इस वर्ष की गोचर ग्रह–स्थिति के अनुसार' अलनीनो गर्मी को बढ़ाएगा, परिणामस्वरूप कहीं सूखा, कहीं भयंकर बाढ़ से जनधनहानि का संकेत मिलता है। 'अलनीनो' ऐसी प्राकृतिक घटना है, जिससे प्रशांत महासागर

का गर्म पानी उत्तर एवं दक्षिणी अमेरिका की ओर फैलता है। परिणामस्वरूप, पूरी दुनिया का तापमान बढ़ेगा। मौसम का सामान्य जलवायु–चक्र बिगड़ जाता है, कहीं विनाशकारी बाढ़, कहीं सूखे के हालात बनते हैं। अमेरिका, U.K. आदि में गतवर्ष बाढ़ एवं उत्तर भारत में सूखा भी इन्हीं कारणों से संभव हुआ है।

आगे बर्फ के पिघलने से विश्व में समुद्री–तूफान आदि विनाशकारी लीलाएं देखने को भी मिलेंगी। आर्द्राप्रवेश कालीन ग्रहगति के अनुसार जम्मू–कश्मीर, गुजरात, बिहार, उत्तर–प्रदेश, उत्तराखण्ड, उड़ीसा, राजस्थान, मिजोरम आदि में इसवर्ष प्राकृतिक प्रकोप से हानि होगी। महाराष्ट्र (मुम्बई) में भी प्राकृतिक प्रकोप दिखाई देगा।

समुद्रतटवर्ती महानगरों एवं विश्व के देशों में इसवर्ष (सं. 2075 वि.) से ही विशेष प्राकृतिक प्रकोप से हानि के योग स्पष्ट दिखाई देने लगे हैं।

भारत में वर्षा के योग

जब सूर्य आर्द्रा नक्षत्र में प्रवेश करता है, लगभग उसी समय से भारत के प्रान्तों में वर्षा का आगमन ग्रहगोचर के अनुसार माना गया है। **ज्योतिष–शास्त्रानुसार वर्षा, वायुमण्डल, समुद्री–तूफान एवं चक्रवात आदि प्राकृतिक उत्पातों का विचार भी सूर्य के आर्द्राप्रवेश, रोहिणीवास एवं गोचर ग्रहस्थिति पर निर्भर करता है।** अतः सर्वप्रथम सूर्य की आर्द्राप्रवेशकालीन कुण्डली के आधार पर विचार करते हैं।

सं. 2075 में 'द्वितीय–ज्येष्ठशुक्ल' दशमी शुक्रवार, तदनुसार 22 जून, सन् 2018 ई. को चित्रानक्षत्र, परिघयोग एवं कन्यास्थचन्द्र के समय दिन में 11 घं 10 मि. के लगभग सूर्यदेव आर्द्रा–नक्षत्र में प्रविष्ट होंगे।

सूर्य की आर्द्राप्रवेश–कालीन ग्रहस्थिति इस प्रकार है:–

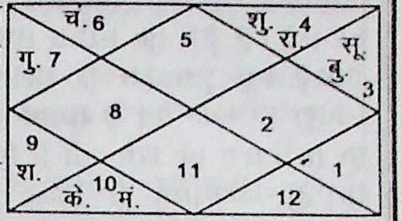

सूर्य का आर्द्रा नक्षत्र में प्रवेश दिन में होने से अनेकत्र वर्षा का अवरोध एवं दुर्भिक्ष की स्थिति बनेगी। सूर्य–बुध का शनि के साथ समसप्तक– योग एवं मकरस्थ मंगल–केतु के साथ सूर्य–बुध का षडष्टक कहीं भारी पेयजल संकट, एवं कृषियोग्य जल–संसाधन जुटाने में सरकार को विषम परिस्थिति का सामना करना पडेगा। परिणामस्वरूप, मंहगाई बढ़ेगी–

"समस्त–धान्य-वासांसि महर्घाणि भवन्ति हि ।"

कृषकवर्ग परेशान रहे, लेकिन उच्चस्थ मंगल का शुक्र के साथ समसप्तक होने से जनजीवनोपयोगी वस्तुओं की उपलब्धता मे शासनतंत्र भरपूर सहायक सिद्ध होगा –

"सर्वलोकाश्च भूपाश्च सन्तुष्टा स्युस्तदा भृशम् ।"

नोटः आर्द्राप्रवेश-कुण्डली में कर्क में शु. रा., मकर में मं. के.एव मीन का स्वामी गुरु शुक्र की राशि में होने से जलचर–राशियों की ग्रहस्थिति अनुकूल नहीं है, अतः असम, महाराष्ट्र, उडीसा, बंगाल, राजस्थान, कर्नाटक आदि में कहीं भयंकर बाढ़ आदि प्राकृतिक प्रकोप से भयंकर हानि, कहीं अकाल की स्थिति भी बनेगी।

इस संवत् का राजा सूर्य होने से अनेक क्षेत्रों में वर्षा न होने एवं जलवायु की प्रतिकूलता से खड़ी फसलों को हानि पहुँचेगी एवं बागवानी को नुकसान होगा। इसवर्ष शनि–राहु एवं मंगल की पोजीशन जंगलों एवं औद्योगिक क्षेत्रों में कई जगह भारी अग्निकाण्ड से जनधनहानि के भी योग बनाती है।

संवत् का मन्त्री शनि भी जलवायु के लिहाज से कहीं भयकर बाढ़ व सूखे का संकेत देता है। इसवर्ष का मेघेश शुक्र होने से वर्षा अच्छी होने का संकेत भी मिलता है।

चतुर्मेघों में इसवर्ष 'पुष्कर' नामक मेघ है–" पुष्करे **मन्दवृष्टिः स्यात्**" अर्थात् इस संवत् में वर्षा की कमी से अनेक प्रान्त दुर्भिक्ष से ग्रस्त रहेंगे। **नवमेघों** में भी 'पुष्कर' किंवा कुछ ग्रन्थों अनुसार 'द्रोण' नामक मेघ है, यह भी वर्षा की कमी एवं नानाविध भयंकर रोगों (महामारी आदि)से जनता को त्रस्त करे, मैडिकल विज्ञान भी परेशान रहे।

आवह आदि 'सप्तवायु-विचार' से इसवर्ष 'प्रवह' नामक वायु है। परिणामस्वरूप, अनेकत्र आंधी–तूफान, भूकम्प हो और कुछ प्रान्त बाढ़ वर्षा से परेशानी में रहें। दक्षिण–पश्चिमी भूभाग,असम, कश्मीर, उड़ीसा, गुजरात किंवा H.P. में कहीं भारी प्राकृतिक आपदा से विनाशलीला दिखाई देगी।

सं 2075 वि. के 'जलस्तम्भ' एवं 'वायुस्तम्भ' का विचार

इसवर्ष 'जलस्तम्भ' का अभाव है। अतः अकालस्थिति की संभावना कुछ प्रान्तों में बनेगी। पेयजल समस्या भी सरकार के लिए सरदर्द बनेगी।

इस संवत् में 'वायुस्तम्भ' 66.8 प्रतिशत होने से बादलों का संचालन बिगड़ेगा एवं वैश्विक तापमान आगामी वर्षों में भयंकर स्थिति बनाएगा।

गर्म हवाओं का प्रकोप आज की ही समस्या नहीं । इसके दूरगामी प्रभावों के प्रति हमें सावधान अभी से रहना होगा। ग्रहगोचर के अनुसार आगामी वर्षों में तापमान दो से चार डिग्री सैल्सियस तक बढ़ सकता है। यह मानवता एवं जीवन्त सृष्टिमात्र के लिए चुनौती है। वैज्ञानिकों को इस बारे में सावधान कर देना उचित समझते हैं। इस संवत् में 'रोहिणी' का वास 'सन्धि' में होने से कहीं खड़ी फसलें सूखेंगी,कहीं पेयजल का अभाव परेशान करेगा।

अब संवत् 2075 वि. की ग्रहस्थिति के अनुसार भारत का वर्षा-विचार संक्षेप से लिखना उचित समझते हैं, क्योंकि

**"वृष्टिमूला कृषिः सर्वा वृष्टिमूलं च जीवनम्।
तस्मादादौ प्रयत्नेन वृष्टिज्ञानं समाचरेत् ।।"**

– (कृषि पाराशर)

मासिक वृष्टि (सं 2075 वि. का) विवरण संक्षेप में इस प्रकार है:–

मार्च– 1 से 5, 7, 8 , 10, 13 से 16, 22, 24, 28, 30 एवं 31 मार्च को आसाम, महाराष्ट्र, पश्चिमी राजस्थान एवं कश्मीर में वायुवेग के साथ कहीं खण्डवृष्टि भी हो। लेकिन उत्तर भारत में तापमान बढ़ने लगेगा।

अप्रैल– अप्रैल 3, 6 से 9 एवं 14 से 16, 19, 20, 24 से 28 अप्रैल को बम्बई, प. राजस्थान, आसाम, उड़ीसा के कुछ भागों में कहीं बादलचाल किंवा खण्डवृष्टि के योग हैं।

मई– मई 1, 2, 9 से 11, 14, 15, 16, 18, 20, 21, 25 से 28 एवं 31 मई को महाराष्ट्र, भूटान, उड़ीसा, शिलांग, काठमाण्डु (नेपाल), जम्मू कश्मीर, उ. प्र. के कुछ भागों में, उ. खण्ड, बिहार एवं H.P. में अनेकत्र वायुवेग के साथ वर्षा के योग हैं। 25 मई के लगभग जोरदार हवा चले।

जून– जून 3, 4, 6, 8 से 13, 15, 16, 17, 19, 22 से 28 जून तक एवं 29 जून को हि.प्र., उ.खण्ड, उ.प्र., पंजाब, हरियाणा, चण्डीगढ़, दिल्ली, कश्मीर एवं भारत के दक्षिणी एवं पश्चिमी प्रान्तों में अनेकत्र वर्षा होगी। लेकिन मंगल राहु का वक्रत्व एवं शुक्र के सिहंस्थ होने से अनेक प्रान्त दुर्भिक्ष की चपेट में रहें। पेयजल की समस्या भी रहे। वक्री मंगल कुछ भूभाग पर अग्निकाण्ड से हानि की सूचना भी देता है। **"गर्जितोऽपि न वर्षति" अर्थात्** अनेक क्षेत्रों में बादलचाल, बादल गर्जना होने पर भी अनेकत्र सूखा रहे, ऐसा योग है।

जुलाई– जुलाई 4, 6, 7, 9 10 से 13 जुलाई, 14 से 25 जुलाई एवं 29, 30 जुलाई के लगभग भारत के अनेक प्रान्तों में कहीं भयंकर बाढ़, कहीं सूखा व दुर्भिक्ष आदि प्राकृतिक प्रकोप से हानि हो। हि.प्र., कश्मीर, उ. प्रदेश, उ. खण्ड, केन्द्रशासित राज्यों में एवं उ. भारत के प्रान्तों में भारी वर्षा होगी।

अगस्त– अगस्त 1 से 4, 14, 15, 17 से 20 अगस्त तक एवं 24, 25, 30, 31 अगस्त को दार्जीलिंग, विन्ध्यप्रदेश, उ. प्र., उ. खण्ड, कश्मीर, हि.प्र., पंजाब एवं हरियाणा आदि में अनेकत्र बादलचाल व वर्षा हो।

सितम्बर– सितम्बर 1 से 4, 9, 10 से 14, 17 से 23 एवं 26, 27,

28 सितम्बर को पश्चिमी प्रान्तों में कहीं बादलचाल किंवा वायुवेग से वर्षा हो, उ. भारत का तापमान गिरने लगे।

अक्तूबर– अक्तूबर 1, 4, 5, 6, 10, 11, 17, 18, 19, 21, 23, 24, 26, 27, 28, 30 एवं 31 अक्तूबर को आसाम, बंगाल, उ. प्रदेश के कुछ भागों में बादलचाल व वर्षा के योग हैं। कश्मीर, हि.प्र., उ. खण्ड आदि में वायुवेग के साथ कहीं खण्डवृष्टि किंवा कुछ उन्नत श्रृंगों पर हिमपात के भी योग हैं।

नवम्बर– नवम्बर 2, 3, 5, 6, 9, 10, 12, 14, 15, 16, 17, 19, 20, 22 एवं 26, 28 नवम्बर को उ. भारत भयंकर शीतलहर की चपेट में रहेगा। उ. भारत के कुछ भाग, राजस्थान एवं उ.प्र. में कहीं खण्डवृष्टि भी संभव है। अनेकत्र धुन्ध से यातायात बाधित होगा।

दिसम्बर– दिसम्बर 2 से 11 तक एवं 16, 17, 21, 22, 23, 24, 27, 28 एवं 29 दिसम्बर को समस्त उ. भारत शीत लहर की चपेट में रहेगा। कहीं–कहीं खण्डवृष्टि एवं धुन्द एवं हिमाचल आदि में भारी हिमपात से जनजीवन अस्त-व्यस्त रहे। जलवायु–विचार से कुत्रचित् यान–दुर्घटना के समाचार मिलेंगे।

जनवरी (सन 2019 ई.)– जनवरी 1, 2, 3, 4, 7, 8, 10, 11, 12 एवं 14 से 21 जनवरी तथा 24, 25, 26, 29, 30 जनवरी को उत्तरी भारत में शीत लहर एवं पर्वतीय भूभाग भारी बर्फबारी के कारण हिमाच्छादित रहेंगे। धुन्ध से रोड़ दुर्घटनाएं भी संभव हैं।

फरवरी – फरवरी 3, 4, 5, 6, 7, 10, 12 से 16 तक, 18, 19, 20, 21, 24, 25, 26 एवं 28 फरवरी को शिलांग, आसाम, तामिलनाडु, उ. खण्ड में कहीं बादलचाल व बूंदाबांदी हो। उ. भारत में हवा का जोर रहे एवं शीत का प्रभाव क्षीण हो। वसन्त के आगमन से वातावरण सुहावना रहे।

मार्च – मार्च 4 से 8, 11 से 18, 21, 22, 23, 27, 29, 30 एवं 31 मार्च को असम, महाराष्ट्र, प. राजस्थान किंवा कश्मीर, हि. प्र. में हवा के साथ खण्डवृष्टि हो। उ. भारत में गर्मी का प्रकोप बढ़ने लगेगा।

नोट करें– कि संवत् 2075 वि. के प्रारम्भ से लगभग जुलाई, सन् 2018 ई. के प्रथम सप्ताह तक गुरु–शुक्र वक्री रहेंगे। साथ ही लगभग 18 अप्रैल 2018 ई. तक गु. शु. का समसप्तक भी बनेगा, जोकि आगे वर्षाऋतु में कहीं भयंकर अकाल की स्थिति को बनाएगा--

"क्रूराणां सह सौम्यैश्च यदि स्यात् समसप्तकम्।
अनावृष्टिस्तदा ज्ञेया लोकपीडा महत्यपि।।"

किंच–संवत् के शुरु से लगभग मई के प्रारम्भ तक शनि–मंगल एक राशिस्थ रहेंगे, जोकि कहीं भयंकर तूफान, विस्फोट, अग्निकाण्ड, अनावृष्टि, वायुवेग एवं सरहदी इलाकों पर घोर अशान्ति का कारण बनेंगे–

"युद्धदौ शनि–माहेयौ तथा दुर्भिक्षकारकौ।"
किंच– "यमारयोः पवन–हुताशजं भयम्।"

नोट– शनि–मंगल का एकराशि–सम्बन्ध कभी–कभी आकालिक भयंकर वर्षा और दुर्भिक्ष का कारण भी बनता है। किसानों को सावधान रहना चाहिए-

"शनैश्चर–धरापुत्रावेकस्थौ वृष्टिकारकौ।"

मंगल 28 जून एवं शनि 19 अप्रैल 2018 ई. को वक्री हो जाते हैं। विशेषतः 4 सितम्बर तक इस ग्रहस्थिति का प्रभाव कहीं भयंकर सूखा, कहीं प्रलयंकारी वर्षा, प्राकृतिक प्रकोप किंवा भयंकर महामारी से जनजीवन को त्रस्त करने वाला है। 1 मई से लगभग 5 नवम्बर, 2018 ई. के मध्य मंगल–राहु का समसप्तक अनेक प्रान्तों किंवा विदेशों में भी यत्र–तत्र भयंकर अग्निकाण्ड, बादल फटना, समुद्री तूफान किंवा भूकम्प आदि से हानि का संकेत देते हैं।

5 नवम्बर से लगभग 23 दिसम्बर, सन् 2018 ई. तक शनि की मंगल पर विशेष दृष्टि भी वैश्विक पर्यावरण को दूषित करेगी– ऐसा वातावरण बन सकता है। उ. भारत का तापमान बदलने लगेगा।

व्यापार-विमर्श (संवत् 2075 वि.)

(संवत् 2075 वि. की ग्रहस्थिति के आधार पर व्यापारिक वस्तुओं एवं शेयर बाज़ारों में आने वाली तेज़ी एवं मन्दी का मासिक विवरण)

लेखक–इन्दुशेखर शर्मा, संयमी शर्मा,

संसार के सभी पदार्थों पर ग्रहों का नियन्त्रण है और सभी पदार्थों का समावेश बारह राशियों में है। जब ग्रह भ्रमण करता हुआ राशिभोग करता है, तो उस राशि में समाहित सभी व्यापारिक वस्तुएं ग्रहविशेष की प्रकृति के अनुसार प्रभावित होती रहती हैं। प्रभावित वस्तुओं में परिवर्तन आते हैं और इन्हीं परिवर्तनों से बाज़ारों में घटाबढ़ी होती है, जिसे हम **'तेज़ी-मन्दी'** कहते हैं।

हम यहां **'व्यापार विमर्श'** में ग्रहों का पूर्ण अध्ययन करके तेज़ी-मन्दी का मशवरा अपने ग्राहकों को देते हैं। व्यापारियो! निराश न हों। हमसे प्रत्यक्ष मिलें, आपकी उलझी हुई व्यापारिक समस्या का समाधान हम करेंगे।

व्यापारी सज्जनो! 1 जनवरी, सन् 2018 ई. से यदि आप प्रतिमास किसी भी जिन्स की दैनिक तेजी-मन्दी की रिपोर्ट या वायदा/हाजर बाज़ार का चांस अर्थात् सोना, चांदी, कॉपर आदि मैटल्स, चना, ग्वार आदि अनाज; तिल, तेल, सरसों किंवा बिनौला आदि तिलहन; जीरा, धनिया, हल्दी, लाल-कालीमिर्च, रुई एवं कपास में से किसी भी जिन्स की मासिक लिखित रिपोर्ट चाहते हैं तो फीस Rs. 5100/- (इक्यावन सौ रुपये) प्रतिमास प्रतिजिन्स के हिसाब से Advance भेजकर Report प्राप्त करें। एक वर्ष की प्रतिजिन्स फीस Rs. 51,000/- (इक्यावन हज़ार रु.) है।

Note: व्यापारियों से निवेदन है कि वे अपनी ग्रहचाल के अनुकूल होने पर ही व्यापार करें। व्यापार में किसी प्रकार की हानि के लिए सम्पादक/लेखक जिम्मेदार न होंगे।

संवत् 2075 वि. में ग्रहस्थिति के अनुसार तेज़ी-मन्दी का आकलन

संवत् 2075 वि. में तेज़ी-मन्दी का विस्तृत विवरण देने से पहले हम इस संवत् के नाम, वर्ष के राजा, मन्त्री, सस्येश, धान्येश, मेघेश आदि ग्रहपरिषद् का व्यापार पर क्या प्रभाव पड़ेगा? इसका संक्षिप्त विवरण प्रस्तुत कर देना प्रासंगिक समझते हैं, जोकि निम्नांकित है—

संवत् 2075 वि. का राजा **'सूर्य'** एवं मन्त्री **'शनि'** है। स्पष्ट है कि—राजा-मन्त्री दोनों परस्पर शत्रु ग्रह हैं। अत: यह वर्ष विश्व के व्यापारक्षेत्र में भारी उलट-फेर करने वाला है। राजनैतिक परिप्रेक्ष्य एवं प्राकृतिक प्रकोप के विचार से भी यह वर्ष विशेष संकटापन्न दृश्य को उपस्थित करने वाला है—ऐसा ग्रहगोचर से प्रतीत होता है। अत: व्यापारी बन्धुओं से हमारा अनुरोध है कि—अनाजों, तेलों के एवं वायदा व्यापारियों को बहुत सोच-समझ से काम करना होगा।

संवत् 2075 वि. में धान्येश भी **'सूर्य'** ही है, अत: जीरी, बाजरा, दालें, चना, गुड़, खाण्ड, तिलहन आदि पर्याप्त मात्रा में उपलब्ध होंगे। तिलहन, सोना, चांदी एवं चना आदि के व्यापारी ग्रहचाल के मुताबिक मशवरा प्राप्त करके उत्तम लाभ प्राप्त कर सकेंगे।

इस वर्ष मेघेश **'शुक्र'** होने से (सिंहस्थ शुक्र एवं शुक्र के उदयास्त-काल में भी) वर्षा की कमी अनुभव होगी या कुछ स्थानों पर प्रलयंकारी दृश्य उपस्थित होने से खड़ी फसलों की हानि भी महंगाई का कारण बनेगी। अनेक कृषिप्रधान क्षेत्र सूखाग्रस्त भी रहेंगे।

इस संवत् में चतुर्मेघों एवं नवमेघों में 'पुष्कर' नामक मेघ है। अतः पापकर्म (अनैतिक कार्य) अधिक हों, वर्षा की कमी से अनेकत्र दुर्भिक्ष की स्थिति बनेगी। नानाविध रोगों से जनजीवन त्रस्त रहेगा।

व्यापारी ध्यान दें—संवत् 2075 वि. में ग्रहों के वक्र/मार्ग, युति/प्रतियुति के अनुसार इस वर्ष चावल, गेहूं, चना, ग्वार आदि अनाज, गुड़, दालवाना, रुई, कपास, नरमा, मैंथा, तेल एवं सरसों आदि तिलहन, लाल-कालीमिर्च, जीरा, लौंग, सोना, चांदी में तेजी-मन्दी के भयंकर रिएक्शन्स आयेंगे। **दूर-दराज से आने वाले व्यापारी टेलीफोन से समय निश्चित करके आयें या सोना, चांदी, कॉपर आदि मैटल्स में से किसी भी धातु, अनाज, दालवाना, गुड़, शेयर बाज़ार या तिलहन की लिखित रिपोर्ट प्राप्त करने के लिए एक मास की फीस Rs. 5000/- (पांच हज़ार रु.) प्रतिजिन्स/प्रतिधातु के हिसाब से भेजकर आगामी मास की दैनिक तेज़ी-मन्दी की रिपोर्ट प्राप्त करें।**

नोट—संवत् 2074 वि. में 27 अग. से संवत् 2074 के अन्त तक भारी जलवायु विपरीतता (वर्षा की कमी आदि किंवा प्राकृतिक प्रकोप से) भारी हानि के योग हैं। इस समय ताजा मशवरा प्राप्त करें, जिसका प्रभाव सं. 2075 वि. के प्रारम्भिक समय में व्यापारियों को भी प्रभावित करेगा।

ध्यान दें—सं. 2075 वि. में आप दलहन, ग्वार, चना आदि अनाज एवं सोना-चांदी में अच्छी तेजी से लाभ ले सकेंगे, सम्पर्क में रहें।

सज्जनो! सू. बु. एवं शुक्र पर शनियुत मंगल की विशेष दृष्टि होने से संवत् 2075 वि. के प्रारम्भ से पहले तेल, तिलहन, तांबा, घी, दालवाना, रुई एवं शेयरों में तेज़ी से व्यापारी लाभ ले सकेंगे।

अप्रैल (सन् 2018 ई.)

अप्रैल के प्रारम्भिक दिनों में विशेषतः 3/4 अप्रैल को वक्री बुध के उ.भा. में दाखिल होने पर अनाजों, रुई, गुड़, खाण्ड, घी, तेल, तिलहन में मन्दे की अफवाह होने पर भी तेजी का रुख रहेगा; क्योंकि मीनस्थ सूर्य-बुध पर मंगल की विशेष दृष्टि है।

ध्यान दें—इस समय बड़ी तेजी की उम्मीद न रखें, क्योंकि शनियुत मंगल भी गुरु की राशि (धनु) में ही है। **वायदा व्यापारी तुरन्त लाभ लें।**

लगभग 6 अप्रैल से शुक्र भरणी नक्षत्र में आकर सोना, चांदी, अफीम, तिलहन, तेल, घी, उड़द, नारियल में मन्दी करेगा।

ध्यान दें—शुक्र पर गुरु की पूर्ण दृष्टि होने से बाजारों में अच्छी मन्दी बनेगी, सावधानी से काम करें।

8 अप्रैल के लगभग बुध के पूर्व में उदय होने पर रुई में जोरदार मन्दी का झटका आयेगा। गेहूं, चना आदि अनाज, दालवाना, तिल, घी, पाट, हैसियन, लालमिर्च, ज्वार, अरहर में घटाबढ़ी के बाद तेजी प्रधान रहेगी।

संक्षेप में—1 से 5 अप्रैल तक वायदा एवं हाजर बाजार तेज रहें। 6/8 अप्रैल तक मन्दे का झटका आये। 9 से 13 अप्रैल तक बाजार ऊपर-नीचे रहें। शेयर बाजारों में भयंकर तेजी और मन्दी के झटके आयेंगे।

14 अप्रैल को शनिवारी मेष संक्रान्ति एवं सूर्य का मेष राशि में शुक्र के साथ मेल होने से खाद्य तेल, अलसी, एरण्ड, सोया, सरसों आदि तिलहन, सोना, चांदी, तांबा, लाल चन्दन, नारियल, सुपारी, हींग, सूत, कपड़ा, मेथी, लौंग, इलायची एवं चना, गेहूं आदि अनाज तेज हों। इस समय रुई में भी मन्दी के बाद तेजी का झटका आयेगा।

ध्यान दें—मेष राशि का सूर्य 14 अप्रैल के लगभग घी, नारियल, सुपारी, बादाम, गुड़, खाण्ड, शक्कर, चांदी, सोना में तेजी करने वाला है।

15 अप्रैल को बुध मार्गी हो रहा है, अतः बाजारों का रुख अचानक बदल सकता है, सावधानी से काम करें। राजनैतिक कारण भी बाजारों में मन्दी का कारण बन सकते हैं। परिणामस्वरूप, रुई, चांदी, रेशम, तेल, अलसी, एरण्ड, गुड़, बिनौला, मूंगफली, कपूर, चन्दन एवं अगर आदि सुगन्धित चीज़ें मन्दी हों। लेकिन गेहूं, जौ, चना, चावल, दालें आदि अनाज तेज हो सकते हैं।

17 अप्रैल को शुक्र कृत्तिका नक्षत्र में आकर वायदा बाजारों में जोरदार मन्दी कर देगा। विशेषतः चांदी, चावल, तेल, तिलहन, सोना, हीरा, मणि, मोती आदि जवाहरात मन्दे रहें।

विशेष नोट—सोना-चांदी के व्यापारी 17/18 अप्रैल को बहुत सावधानी से काम करें, क्योंकि बिकवाली अधिक होने से सोना मन्दा हो सकता है। लेकिन इस समय स्टॉकिस्ट खूब माल पकड़ें, आगे उत्तम लाभ मिलेगा।

18 अप्रैल को शनि धनु राशि में वक्री हो जाता है, धनु राशि का मालिक गुरु भी शत्रु क्षेत्र में वक्री चल रहा है, अत: सिक्का, कली, सोना, चांदी, ज्वार, बाजरा, चावल, घी, तेल, अलसी, सरसों, तम्बाखू एवं सीमेण्ट में तेजी का झटका भी आ सकता है।

नोट—14 से 18 अप्रैल के अन्दर विशेषत: 14, 15 और 18 अप्रैल को वायदा एवं शेयर बाजारों में अच्छी तेजी से लाभ मिलने की उम्मीद है।

19 अप्रैल को शुक्र अपनी राशि वृष में आकर रुई, कपास, अनाजों एवं सोना-चांदी में अच्छी मन्दी के झटके लाकर तेजी करे। इस समय मन्दा आने पर, माल पकड़कर, तेजी में तुरन्त निकालकर, लाभ लें।

चूंकि, 19 अप्रैल को वक्री गुरु विशाखा-2 में दाखिल हो रहा है, अत: व्यापारी एकतरफा लाइन न समझें, बाजार के रुख को देखकर काम करें।

19 से 22 अप्रैल तक शेयर बाजारों में अच्छी मन्दी का झटका आ सकता है, क्योंकि 22 अप्रैल को मेदिनी ग्रह प्लूटो वक्री हो रहा है, अत: आगे 24 अप्रैल तक शेयरों के व्यापारी सावधान रहें।

25 अप्रैल को मंगल उ.षा. में एवं 26 अप्रैल को राहु पुष्य 4 में दाखिल होगा। इस समय मंगल वक्री शनि के साथ धनु राशि में है एवं राहु कर्क (चन्द्रमा की) राशि में है। केतु श्रवण 2 (मकर राशि) में है, अत: यह अच्छी तेजी का संकेत है। इस समय घी, गुड़, खाण्ड, शक्कर, तेल, तिलहन, दालवाना, अलसी, सूत, सण में अच्छी तेजी से लाभ लें। इस समय रुई में जोरदार तेजी का झटका आयेगा।

27 अप्रैल को सूर्य भरणी नक्षत्र में आकर लालमिर्च, सोना, गुड़, खाण्ड, तिल, तेल, सरसों, घी में तेजी बनाये। लेकिन 27 अप्रैल को ही रेवती नक्षत्र का बुध एवं 28 अप्रैल को रोहिणी नक्षत्र का शुक्र तेल, तिलहन, दालों, सोना, चांदी आदि धातुओं में अचानक मन्दा करे। मासान्त तक बाजार के रुख को देखकर काम करें।

मासान्त के दिनों में शेयर बाजार तेज रहें।

मई (सन् 2018 ई.)

मई के प्रारम्भ में ही 2 मई मंगलवार को मंगल अपनी उच्च (मकर) राशि में दाखिल होकर केतु के साथ मेल करेगा। राहु-मंगल इस समय समसप्तकयोग बना रहे हैं। अत: रुई, सोना, चांदी, तांबा, गुड़, घी, तेल, तिलहन एवं ऊन में तेजी से लाभ होगा, इस समय अच्छी तेजी बनेगी।

वायदा व्यापार एवं शेयर बाजारों में इस सप्ताह 2 से 7/8 मई तक तेजी से लाभ मिलेगा, क्योंकि शुक्र-शनि की परस्पर दृष्टि भी है।

9 मई को बुध अश्विनी नक्षत्र एवं मेष राशि में दाखिल होकर सूर्य के साथ मेल करेगा। जब बुध-सूर्य इकट्ठे होते हैं तो बुध तेजीकारक हो जाता है। गेहूं, ज्वार, बाजरा, चना, जौ, अलसी, मूंग, मोठ आदि अनाज तेज रहें। घी, गुड़, खाण्ड, तेल, तिलहन, रुई, कपौस, शक्कर, चीनी में भी तेजी-मन्दी के झटके आयेंगे। 10 मई को तेजी प्रधान रहे।

11 मई से 15 मई तक की ग्रहस्थिति जोरदार तेजी का संकेत देती है। 11 मई को सूर्य कृत्तिका में आयेगा। 14 मई को सूर्य वृष में आकर शुक्र की राशि में दाखिल होगा। ठीक, इसी दिन शुक्र मिथुन राशि में आकर शनि के साथ समसप्तकयोग बनायेगा। चांदी, सोना, गुड़, खाण्ड, शक्कर, कपास, रुई, सूत, बादाम, सुपारी, नारियल, तिल, तेल, सरसों, अलसी, एरण्ड, गेहूं, जौ, चना, मूंग, मोठ, चावल, अरहर, ग्वार, चना में तेजी से लाभ मिले।

शेयर बाजारों में जोरदार मन्दी के बाद 11 से 15 मई तक तेजी बनेगी। 11 से 15 मई तक वायदा व्यापार तेज रहे।

16 मई को वक्री गुरु विशाखा 1 में दाखिल होकर रुई, सूत, चांदी, सोना, सण, गुड़, खाण्ड एवं शक्कर में मन्दा करे। मूंग, उड़द, मोठ आदि अनाज एवं घी में तेजी बन सकती है।

18 मई को बुध भरणी नक्षत्र में प्रविष्ट होगा। 8 दिनों में चावल, गेहूं आदि

अनाजों में तेजी बनेगी। कहने का तात्पर्य यह है कि—लगभग 19 मई तक बाजार तेज रहें।

20 मई को शुक्र आर्द्रा नक्षत्र में दाखिल होगा। इस समय शुक्र पर गुरु की दृष्टि भी है। अत: वर्षा आदि से बाजारों का रुख अचानक पलट सकता है। अनाजों में 24 मई तक मन्दे का वातावरण बन सकता है—सावधानी से काम करें।

25 मई को सूर्य रोहिणी नक्षत्र में आकर बाजारों में तेजी बनायेगा। क्योंकि, सूर्य ग्रह रुई, एरण्ड, अलसी, मूंगफली, तेल, सरसों, कपासिया, सोना, चांदी, हल्दी, कालीमिर्च एवं शेयर बाजार—इन सबको प्रभावित करता है। अत: ये सब चीज़ें 25/26 मई तक अच्छी तेजी पकड़ेंगी।

27 मई को बुध वृष राशि में आकर बाजारों में साधारण मन्दी कर सकता है, लेकिन सूर्य के साथ बुध का मेल हमें तेजीकारक ही मालूम देता है।

27 मई को मंगल श्रवण नक्षत्र में आकर अनाज, रुई, सोना, चांदी में मामूली मन्दी का झटका देकर तेजी करेगा।

ध्यान दें—शेयर बाजारों में 25/26 मई को अच्छा मन्दा भी बनने का योग है।

30 मई को यूरेनस अश्विनी 3 में एवं 31 मई को बुध रोहिणी में आकर कुछ बाजारों में मन्दी करेगा। राई, अरहर, सण, ऊनी व रेशमी वस्त्र मन्दे होंगे, लेकिन रुई, कपास, सूत, सोना, चांदी, तिल, तेल, सरसों, चावल एवं गुड़, खाण्ड में तेजी का वातावरण रहे।

नोट करें कि—31 मई को शुक्र पुनर्वसु नक्षत्र में आ रहा है, अत: चावल आदि अनाज एवं बिनौला तो तेज रहेंगे। सोना, चांदी, रुई, कपास, सूत में पहले मन्दा आ सकता है, स्टॉक करें, फिर तेजी बनेगी।

जून (सन् 2018 ई.)

जून के प्रारम्भ में वायदा एवं हाजर बाजार में स्थिरता नहीं रहेगी। 5 जून को वक्री शनि के मूल नक्षत्र के चतुर्थ चरण में आने पर वायदा एवं हाजर बाजारों में एकदम तेजी का उछाला आयेगा। रुई, कपास, बिनौला, चांदी, रसकस, सेंधा नमक एवं सारे अनाज तेज रहेंगे।

नोट—5 जून से पहले ही स्टॉक करें, तभी 6 जून के लगभग तेजी से लाभ ले सकते हैं, क्योंकि इस समय शनि-शुक्र परस्पर एक-दूसरे को देख रहे हैं और सूर्य-बुध रोहिणी में हैं।

7 जून को बुध मृगशिरा में प्रविष्ट होगा एवं 8 जून को सूर्य भी मृगशिरा में आकर एकनक्षत्र एवं एकराशिसम्बन्ध बना लेगा। **इस योग को विशेष ध्यान में रखें, क्योंकि 8 जून को शुक्र कर्क राशि में आकर राहु के साथ मेल करेगा। साथ ही शुक्र-राहु का मंगल-केतु के साथ समसप्तकयोग भी बन रहा है।** अत: 7 से 9 जून तक दालवाना, अलसी, एरण्ड, तेल, घी, खाण्ड, शक्कर, रुई एवं अनाजों में अच्छी तेजी बने।

नोट—7 से 9 जून तक शेयर बाजार तेज रहें।

10 जून को बुध मिथुन राशि में दाखिल होगा।

विशेष नोट—जब बुध अकेला होता है तो यदि बाजार मन्दे की तरफ चल रहा हो तो मन्दे को बढ़ावा देता है, यदि तेजी का रुख हो, तो तेजी को बढ़ावा देता है, इसलिए बाजार के रुख को देखकर काम करें।

ध्यान दें—आगे बुध और शुक्र खासकर गुड़, खाण्ड, रुई, कपास, पाट, बारदाना, तिलहन, चावल एवं चांदी के व्यापार को प्रभावित करते हैं। लेकिन मिथुन राशि तेल-तिलहन की है। बुध अफवाहों से व्यापारियों की मनोवृत्ति को बढ़ावा देने वाला ग्रह है। इस वक्त वायदा बाजारों में जोरदार घटाबढ़ी चलेगी। यद्यपि मिथुन राशि का बुध मन्दीकारक माना है, लेकिन ग्रहस्थिति एवं दृष्टिसम्बन्ध से हमें दालों, घी, तेल, तिलहन, चीनी, रुई, कपास में तेजी या अचानक मन्दी मालूम देती है। गेहूं, चना, चावल तेज रहेंगे।

11 जून को शुक्र पुष्य नक्षत्र में आकर रुई, सूत, सण, रेशम, चावल, ऊन व धान्य में तेजी एवं शिंगरफ, अफीम, हींग, गुड़, खाण्ड, शक्कर में मन्दी करे।

13 जून को आर्द्रा नक्षत्र का बुध भी मौसम के लिहाज से गेहूं, तिल, उड़द, जौ, चना, मूंग एवं मोठ में मन्दा ही करे।

नोट—10 से 13 जून तक वायदा एवं शेयर बाजारों में जोरदार मन्दा आ सकता है। सावधानी से काम करें।

15 जून को सूर्य मिथुन राशि में आकर बुध के साथ मेल करेगा। यह योग जोरदार तेजी करने वाला है; क्योंकि शनि की सूर्य पर नज़र भी है। वायदा व्यापारी पाट, बारदाना, रेशम, सूत, कपास, रुई, सरसों, लोहा, तिल, तेल, गुड़, खाण्ड, शक्कर, चीनी, चावल, घी, मूंग, उड़द, गेहूं, चना आदि अनाज तेज रहेंगे। इस समय सोना-चांदी भी तेज रहें। यह तेजी उत्तम-मध्यमरूप से 16 जून तक चल सकती है।

18 जून को वक्री गुरु स्वाती 4 में आकर 17/18 जून के लगभग शेयर एवं वायदा बाजारों में जोरदार मन्दा कर सकता है। ताजा मशवरा प्राप्त करें। रुई एवं अनाजों में जोरदार मन्दा 21 जून तक उत्तम-मध्यमरूप से चलेगा।

22 जून को सूर्य आर्द्रा नक्षत्र में आयेगा। रुई, सूत, कपास, खल, अलसी, एरण्ड, मोती, गेहूं, चावल, चना, जौ एवं चांदी में तेजी का रुख रहे। सोने में घटाबढ़ी चले।

23 जून को रुई में मन्दी का संकेत मिलता है। 23 जून को शुक्र आश्लेषा में आकर अरहर एवं चावलों में भी मन्दी करे—ऐसा विचार है।

ध्यान दें—25 जून को कर्क राशि में बुध का शुक्र-राहु के साथ मेल एवं बुध-शुक्र-राहु का मंगल के साथ समसप्तकयोग अनाजों, दालें, चावल, गुड़, तिलहन, तेल एवं चांदी में जोरदार तेजी कर सकता है।

26 जून को मकरस्थ मंगल वक्रगति से चलने लगता है। इस समय शनि भी वक्री है। **मकरस्थ मंगल पर बुध-शुक्र-राहु की दृष्टि भी है।**

सोना-चांदी, रुई, अलसी, गेहूं, तांबा, लोहा एवं गुड़, घी, तेल-तिलहन में अच्छी तेजी बने।

27 जून को पुष्य नक्षत्र का बुध सोना-चांदी में मन्दी एवं रुई में घटाबढ़ी करे।

28 जून को पुष्य 3 का राहु एवं श्रवण 1 का केतु चांदी, गेहूं, अलसी आदि में तेजी करेगा।

29 से 30 जून तक बाजार ऊपर-नीचे चलेंगे।

शेयर बाजारों में मासान्त में अच्छी मन्दी एवं तेजी के झटके आयेंगे।

जुलाई (सन् 2018 ई.)

मासारम्भ की ग्रहस्थिति के अनुसार सूर्य-शनि का राहु-मंगल के साथ समसप्तक राजनैतिक दृष्टि से व्यापार को प्रभावित करने वाला है।

4 जुलाई को शुक्र मघा नक्षत्र एवं सिंह राशि में दाखिल होकर मंगल-केतु के साथ षडष्टक-योग बनायेगा। अत: जौ, चना, चावल, गेहूं, दालवाना, सोना, तांबा, लाल चन्दन, मजीठ, लालमिर्च, घी, गुड़, खाण्ड एवं शेयर बाजार तेजी की तरफ बढ़ेंगे। चांदी और रुई में पहले मन्दी आकर, फिर तेजी बनेगी।

6 जुलाई को पुनर्वसु नक्षत्र का सूर्य रुई, सोना, चांदी, गुड़, खाण्ड, कपास, बिनौला, एरण्ड, अलसी, सरसों, लाख एवं अन्य तिलहन व तेलों में तेजी करे और **सूर्य-शनि का समसप्तक एवं सूर्य-मंगल का षडष्टकयोग** ज्वार, मोठ, बाजरा, उड़द, चावल, नमक, सज्जी, हरड़, सुपारी, नारियल, माजू, मजीठ, सौंफ, गुग्गुल आदि में एवं अन्य किराना में अच्छी तेजी करेगा।

7 जुलाई को बुध आश्लेषा नक्षत्र में आयेगा। यहां भी रा. बु. का मं. के. के साथ दृष्टिसम्बन्ध तेल, तिलहन, गुड़, खाण्ड, शक्कर, घी, मूंग, मोंठ, मूंगफली में तेजी का ही संकेत देता है।

नोट—4 से 9 जुलाई तक तेल, तिलहन, घी, दालवाना आदि में अच्छी तेजी रहेगी। शेयर एवं सोना, चांदी के बाजार ठीक रहें।

10 जुलाई को तुला राशि में स्थित गुरु मार्गी हो रहा है। अचानक वायदा या हाजर व्यापार की लाईन बदल जायेगी, सावधानी से काम करें। अनाज, दालों, रुई, रेशम, पीतल, बारदाना एवं तांबा, सोना आदि में मन्दी बने। 13 जुलाई तक माल पकड़ें।

नोट—इस वक्त अगर शेयर मन्दे हों तो खरीदें, आगे उत्तम लाभ मिलेगा।

14 जुलाई को शनिवारी चन्द्रदर्शन चांदी, सोना, सूत, रुई एवं अनाजों में तेजी का संकेत देता है। लेकिन इसी दिन (14 जुलाई को ही) कर्क राशि में सूर्य प्रविष्ट होगा।

इस समय सूर्य-राहु एवं बुध का मंगल-केतु के साथ दृष्टिसम्बन्ध (पहले कुछ मन्दी के बाद) रुई, सूत, बादाम, सुपारी, गुड़, खाण्ड, शक्कर, तिल, नारियल, सरसों, घी, तेल, तिलहन, चांदी, सोना आदि में तेजीकारक रहेगा।

16 जुलाई को पू.फा. नक्षत्र में शुक्र के आने पर गेहूं, जौ, ज्वार, बाजरा, उड़द, मूंग, चना में कुछ मन्दी करेगा।

यह तेजी लगभग 18/19 जुलाई तक उत्तम-मध्यमरूप से चलेगी।

20 जुलाई को सूर्य पुष्य नक्षत्र में एवं 22 जुलाई को धनु राशिस्थित वक्री शनि मूल नक्षत्र के तीसरे चरण में दाखिल होगा। सूर्य-शनि का षडष्टकयोग चल रहा है। रुई, कपास, बिनौला, चांदी, गुड़, खाण्ड, शक्कर, नमक, प्रत्येक जाति के अनाज, तेल, तिलहन, सुपारी, सोंठ, गुग्गुल, हींग, हल्दी, लाख, सण, ऊनी वस्त्र, सिक्का, सोना एवं चांदी तेज रहेंगे लेकिन रुई में तेजी के बाद मन्दी बन सकती है।

नोट—इस मास में लगभग 20 से 25 जुलाई तक वायदा एवं शेयर बाजार तेज रहेंगे।

26 जुलाई को कर्क राशिस्थ बुध वक्री हो जाता है।

ध्यान दें—इस समय मंगल एवं शनि भी वक्री हैं। वक्री पोजीशन में बुध का मंगल के साथ सम-सप्तक एवं शनि के साथ षडष्टकयोग है।

राजनैतिक परिस्थिति का प्रभाव व्यापार पर दिखाई देगा। घी, गुड़, खाण्ड, शक्कर, चीनी, दालों, तेल, तिलहन में भारी तेजी सम्भव है। शेयर बाजारों में गिरावट के योग हैं।

27 जुलाई को वक्री मंगल उ.षा. में आकर चावल आदि सभी अनाज, दालों, घी, तेल, सरसों आदि तिलहन एवं रुई में अच्छी तेजी का झटका देगा।

29 जुलाई को शुक्र उ.फा. में आयेगा। इस समय सोना-चांदी में घटाबढ़ी चलेगी। गेहूं आदि अनाज एवं रुई में तेजी का ही रुख रहेगा।

नोट—20 से 31 जुलाई तक तेल, तिलहन, घी, गुड़, खाण्ड, चीनी एवं दालवाना के भाव तेज रहेंगे।

अगस्त (सन् 2018 ई.)

1 अगस्त को शुक्र कन्या राशि में दाखिल होगा, इस समय शनि की शुक्र पर विशेष दृष्टि रहेगी। मंगल-बुध-शनि-राहु—ये वक्री ही चल रहे हैं।

अगस्त के लगभग प्रथम सप्ताह में ही बुध का अस्त होना भी व्यापार को प्रभावित करेगा। रुई और चांदी में अच्छी मन्दी का झटका आकर तेजी बनेगी। सभी अनाज, गुड़, खाण्ड, घास, ऊनी व रेशमी वस्त्र महंगे होंगे। इन दिनों चावलों में विशेष तेजी आयेगी, लाभ उठायें।

अगस्त के प्रारम्भ में ही शेयर बाजारों में अच्छी मन्दी आने का योग है।

2 अगस्त को गुरु विशाखा के प्रथम चरण में एवं सूर्य आश्लेषा में प्रवेश करेगा। अत: आने वाले कुछ दिनों में ही सोना, चांदी, रुई, बिनौला, गेहूं, चावल, उड़द, चना, गुड़, शक्कर, घी, तेल, सभी तिलहन, मिर्च, मजीठ आदि में जोरदार तेजी बनेगी; क्योंकि विशाखा नक्षत्र में गुरु का होना एवं बुध-राहु के साथ सूर्य का मेल एवं सूर्य-बुध का एकनक्षत्र में होना तेजी करने वाला है। साथ ही सूर्य पर मंगल की दृष्टि भी है। यह ग्रहस्थिति सियासी हालात से भी तेजी करेगी।

7 अगस्त को मेदिनी ग्रह यूरेनस वक्री हो रहा है, अत: मौसम की विपरीतता भी तेजी का कारण बनेगी।

नोट—1 से 10 अगस्त तक वायदा एवं हाजर बाजारों में तेजी का ही रुख रहेगा। उचित समय पर लाभ लें, अन्तिम तारीखों की इन्तजारी न करें।

11 अगस्त को हस्त नक्षत्र में प्रविष्ट नीच शुक्र पर वक्री शनि की दृष्टि है। यहां बाजारों में एकदम मन्दे का झटका आयेगा।

ध्यान रहे—यदि इन दिनों दालें और अन्य अनाज मन्दे हों तो स्टॉक करें, आगे जल्दी ही उत्तम लाभ मिलेगा।

शेयर बाजार अचानक मन्दे हो सकते हैं, सावधान रहें।

11/12 अगस्त के लगभग सोना-चांदी में तेजी का रुख रहेगा। घी, गुड़, खाण्ड,

शक्कर में घटाबढ़ी चलेगी।

ध्यान दें—11 से 16 अगस्त के लगभग तक बाजार अस्थिर रहेंगे। वायदा व्यापारी इन दिनों तेजी में मन्दी एवं मन्दी में तेजी खेलकर लाभ लें।

17 अगस्त को सूर्य मघा नक्षत्र एवं सिंह राशि में प्रविष्ट होकर मंगल के साथ षडष्टकयोग बनायेगा। सिंह राशि सूर्य की राशि है। सिंह राशि के अन्तर्गत सोना, अनाज, कालीमिर्च एवं अलसी आदि के बाजार आते हैं। **'सूर्य ग्रह हमारे अनुभव के अनुसार रुई, एरण्ड, अलसी, मूंगफली आदि तिलहन, घी, सोना, शेयर बाजार, हल्दी तथा कालीमिर्च के बाजारों में तेजी करता है।'** गुड़, खाण्ड, शक्कर, सोना, चांदी में जोरदार तेजी बने।

शेयर बाजार तेजी की तरफ रहेंगे। यह तेजी 18 अगस्त तक रहेगी।

19 अगस्त को बुध के मार्गी होते ही बाजार पलट सकते हैं, सावधान रहें। रुई, चांदी में पहले मन्दी आकर तेजी आये। चांदी, गेहूं, जौ, चावल, चना, दालवाना प्राय: तेज रहें; क्योंकि बुध राहु के साथ है एवं मंगल से दृष्ट भी है। सभी तेल, तिलहन, घी में मन्दी का झटका आये तो स्टॉक करें, आगे लाभ मिलेगा।

नोट—19 से 24 अगस्त तक बाजार ऊपर-नीचे चलते रहेंगे। स्थिरता नहीं रहेगी।

24 अगस्त को शुक्र चित्रा में आकर सोना, चांदी एवं अनाजों में स्थिरता करेगा।

ध्यान दें—18 अगस्त तक व्यापारी तेजी से लाभ लें, बाद में 29 अगस्त तक बाजार काफी अविश्वंसनीय स्थिति में रहेंगे।

28 अगस्त को मकर राशि का मंगल मार्गी हो जाता है।

नोट करें कि—मंगल आदि ग्रहों के मार्गी होने पर जो पदार्थ पहले तेज हों, वे मन्दे हो जाते हैं। जो पदार्थ पहले मन्दे हों, वे तेजी की तरफ बढ़ने लगते हैं। यह बात ध्यान में रखकर व्यापार बढ़ायें।

इसलिए 28 अगस्त को मंगल के मार्गी होने पर रुई, चांदी, सोने में मन्दी बने। तेल, तिलहन, घी में मन्दी के बाद तेजी बनेगी।

विशेष नोट—मंगल के मार्गी होने पर 28 अगस्त से वायदा एवं शेयर बाजार उल्टे चलने लगेंगे, सावधान रहें।

30 अगस्त को राहु पुष्य के दूसरे चरण में एवं केतु उ.षा. 4 में प्रविष्ट होगा। इसी दिन सूर्य भी पू.फा. में आकर जीरा, सोना, गुड़, खाण्ड, शक्कर, सरसों, तिल, तेल, घी, तिलहन, गेहूं, ज्वार, बाजरा, चावल, ऊन, रुई, सूत एवं लवणादि रसपदार्थ तेज करेगा। चांदी में घटाबढ़ी रहे।

सितम्बर (सन् 2018 ई.)

मासारम्भ में 1 सितम्बर को ही शुक्र तुला राशि में आकर बृहस्पति के साथ एकराशिसम्बन्ध बना लेगा। दोनों परस्पर शत्रु ग्रह हैं। शुक्र विशेषत: रुई, कपास, गुड़, खाण्ड एवं चांदी, पाट, बारदाना, चावल, दालों, तेल, तिलहन के बाजारों को प्रभावित करता है।

जब गुरु के साथ शुक्र का मेल होता है तो बाजारों में जोरदार मन्दी का वातावरण बनता है, अत: बाजार का रुख देखकर ही काम करें।

हमारे विचार से इस समय रुई, अफीम में पहले तेजी, बाद में मन्दी बने। सोना मामूली तेज, चांदी में घटाबढ़ी, गुड़, खाण्ड में कुछ तेजी रहे।

2 सितम्बर को बुध मघा सिंह में दाखिल होकर सूर्य के साथ मेल करेगा। जब बुध सूर्य के क्षेत्र में सूर्य के साथ मेल करता है तो तेजीकारक हो जाता है। अत: सोना, चांदी, घी, तेल, सरसों आदि सभी तिलहन, दालें, अन्य (गेहूं, जौ, चना आदि) अनाज, रुई, वस्त्र, देवदारु—सभी पदार्थ तेजी की तरफ बढ़ेंगे। कपूर, गुड़, खाण्ड में कुछ मन्दी सम्भव है।

3 सितम्बर को गुरु विशाखा नक्षत्र के दूसरे चरण में दाखिल होगा। इस समय बाजार तेजी की तरफ जाने लगेगा। अनाज तेज होंगे। घी, तेल, चीनी, चावल, सोना, चांदी में तेजी बनेगी। आगे 8 सितम्बर तक उत्तम-मध्यमरूप से तेजी सम्भव है। इसी बीच **6 सितम्बर को शनि के मार्गी होने पर बाजार के रुख को देखकर व्यापार बढ़ायें।** 6 दिन में रुई मन्दी होकर, फिर तेज हो। दो मास में तिल, तेल, सरसों, हींग,

मिर्च तेज हों।

सितम्बर के दूसरे सप्ताह में लगभग 9 सितम्बर से सभी अनाजों में मन्दी का झटका आये तो माल पकड़ें। घी, रुई, सोना, चांदी, तेल, तिलहन में उठा-पटक रहे।

10 सितम्बर को बुध पू.फा. नक्षत्र में एवं इसी दिन शुक्र स्वाती नक्षत्र में प्रवेश करेगा। शुक्र विशेषतः गुड़, खाण्ड, रुई, कपास, तिलहन और चांदी के व्यापार को प्रभावित करता है। स्वाती का शुक्र दालवाना एवं अन्य 'अनाजों में मन्दी करे, गुड़, खाण्ड, चीनी, घी एवं रुई, कपास, तिलहन में तेजी-मन्दी के झटके देगा। 11/12 सितम्बर तक बाजार अस्थिर रहें।

13 सितम्बर को सूर्य उ.फा. में आकर बुध के साथ मेल करेगा। यह सिंह राशि में मंगल के साथ षडष्टकयोग बनाता है। यह अच्छी तेजी का योग है। रुई, कपास, रेशम, सूत, सोना, चांदी, लोहा, घी, तेल, अलसी, सरसों, एरण्ड आदि तिलहन और चावल, उड़द, ज्वार, सुपारी, नारियल, मूंज, बांर्स, नील आदि में तेजी बने। यह तेजी ठहरेगी नहीं, तुरन्त लाभ लें।

17 सितम्बर को सूर्य कन्या राशि में एवं 18 सितम्बर को बुध भी कन्या राशि में दाखिल होगा। इस प्रकार बुध की राशि में सूर्य-बुध का मेल एवं इन पर शनि की नज़र होने से घी, रुई, सुपारी, तिल, तेल, मजीठ, सोना, चांदी, उड़द, मूंग, मोठ, ग्वार, मसूर, अरहर आदि अनाजों में अच्छी तेजी करेगा। रुई, चांदी में घटाबढ़ी रहे। यह तेजी उत्तम-मध्यम तौर पर 22 सितम्बर तक चलेगी। **(शेयर बाजार मन्दे रहे)।**

23 सितम्बर को विशाखा के तीसरे चरण में गुरु के दाखिल होने पर बाजारों में मन्दी का रुख बनने लगेगा, सावधान रहें।

24 सितम्बर को बुध हस्त में आयेगा। बुध-सूर्य दोनों कन्या राशि में हैं। चूंकि 27 सितम्बर को सूर्य भी हस्त नक्षत्र में ही दाखिल होगा, अतः गेहूं आदि अनाजों में मन्दे की उम्मीद होने पर भी तेजी में रहें। जौ, ज्वार, गुड़, खाण्ड, कपास, रुई, सूत, जूट, नमक, हरड़, हल्दी, हींग, धनिया एवं क्षार-पदार्थों में तेजी करेगा। यह तेजी मासान्त तक चलेगी।

अक्तूबर (सन् 2018 ई.)

1 अक्तूबर को मेदिनी ग्रह प्लूटो मार्गी हो रहा है। 2 अक्तूबर को बुध चित्रा नक्षत्र में आ जाता है। रुई, चांदी में घटाबढ़ी के बाद तेजी आयेगी। इस प्रकार 5 अक्तूबर से शुक्र के वक्री होने पर घी, तेल, गुड़, खाण्ड, शक्कर, गेहूं, जौ, चना आदि तेज रहें। रुई में पहले तेजी, बाद में मन्दी आती है।

6 अक्तूबर को बुध तुला में आकर शुक्र और गुरु के साथ मेल करेगा। जब बुध शुक्र-गुरु के साथ किसी भी राशि में मेल करता है तो बुध शुभ फलप्रद हो जाता है। बुध अफवाह फैलाने वाला ग्रह है, इस प्रकार वायदा व्यापार में उठा-पटक ला देता है। **शुक्र की राशि में बुध वस्तुतः मन्दीकारक माना जाता है।** चांदी, अलसी, सरसों, एरण्ड, बिनौला, मूंगफली आदि तिलहन में यदि 6 से 8 अक्तूबर तक मन्दी आये तो माल पकड़ लें, अच्छा लाभ मिलेगा। लेकिन तुला राशि में बुध रुई, गुड़, खाण्ड, सोना एवं अफीम में तेजी करता है।

8 अक्तूबर के लगभग शेयर बाजारों में जोरदार मन्दा बन सकता है।

10 अक्तूबर को सूर्य चित्रा में एवं बुध स्वाती में आयेगा, चन्द्रदर्शन भी इसी दिन होने से तेजी का व्यापार करने से लाभ मिलेगा। रुई, सूत, सोना, चांदी, गुड़, खाण्ड, अरहर, गेहूं, चना, तिल, नारियल, सण, केसर, घी, नमक, तिल, तेल, सरसों आदि तिलहन तेज रहें।

11 अक्तूबर को गुरु विशाखा के चतुर्थ चरण एवं वृश्चिक राशि में दाखिल होगा। मंगल की राशि में यह ग्रहस्थिति महत्त्वपूर्ण है। सोना, चांदी, कपास, तांबा, कांसा, घी, तेल, सुपारी, सरसों, गुड़, खाण्ड, चीनी, नमक, नारियल में तेजी बनेगी। अनाजों एवं रुई में जोरदार मन्दी का झटका आकर कार्तिक में अच्छा लाभ होगा।

16 अक्तूबर को वक्री नेपच्यून शतभिषा 4 में आता है और **17 अक्तूबर को सूर्य तुला (अपनी नीच) राशि में आकर शुक्र-बुध के साथ मेल करेगा।** रुई, चांदी, गेहूं, जौ, चना, अलसी, सोना, तांबा, घी, तेल, तिलहन में तेजी बनेगी।

18 अक्तूबर को वक्री यूरेनस अश्विनी 2 में आकर सूर्य, बुध, शुक्र को भी

प्रभावित करेगा। अत: बाजार तेज रहेंगे।

18 अक्तूबर के लगभग ग्रहचाल के अनुसार सोना, चांदी, गुड़, सूत, कपड़ा, घी, तेल, अलसी, एरण्ड, बिनौला, मूंगफली आदि तिलहन मन्दे होंगे। रुई में अचानक तेजी का उछाल सम्भव है। 19 अक्तूबर को बुध विशाखा नक्षत्र में दाखिल होकर सभी **अनाजों एवं रुई के बाजारों में खास मन्दी करेगा।**

21 अक्तूबर को शनि मूल नक्षत्र के चौथे चरण में आकर रुई, कपास, बिनौला, चांदी, गुड़, खाण्ड (रसकस), सेंधा नमक एवं **प्रत्येक जाति के अनाज, दालवाना में जोरदार तेजी से लाभ करेगा।**

नोट—अनाजों, सोना, चांदी, रसकस आदि का स्टॉक शनि के मूल नक्षत्र में आने से पहले ही कर लेना चाहिए। इस समय वायदा व्यापारी तेजी खेलकर लाभ ले सकते हैं। यहां से आगे तेजी देने वाली ग्रहस्थिति है।

24 अक्तूबर को सूर्य स्वाती में एवं 25 अक्तूबर को मंगल धनिष्ठा में दाखिल होगा। 15 दिन तक रुई, सूत, सण, रेशम, कपड़ा, सोना, चांदी, गुड़, शक्कर, बिनौला, घी, चीनी, सुपारी, लालमिर्च, सूत, अलसी, सरसों, राई, हींग, अनाज एवं गुग्गुल तेज रहें।

26 अक्तूबर को बुध वृश्चिक राशि में आकर गुरु के साथ मेल करेगा। घी, तेल, सरसों, रुई, सोया, एरण्ड आदि तिलहन एवं दालवाना में तेजी प्रधान रहेगी। **वायदा व्यापारी सावधानी से काम करें,क्योंकि बुध-गुरु का मेल कुछ वायदा बाजारों में झटके की मन्दी भी ला सकता है।**

27 अक्तूबर को गुरु अनुराधा के प्रथम चरण में प्रविष्ट होगा। इस समय सोना, चांदी, कपास, रुई एवं अनाजों में मन्दा रहे।

ध्यान दें—29 अक्तूबर को बुध भी अनुराधा नक्षत्र में आ जाता है। इस प्रकार बुध-गुरु का एकराशि एवं एकनक्षत्रसम्बन्ध प्रमुख बाजारों में जोरदार उठा-पटक करेगा। हमारे विचारानुसार सोना, चांदी, दालवाना, रुई, कपास एवं अन्य बाजारों में भी मन्दी बने।

नोट—26 अक्तूबर से अक्तूबर के अन्त तक शेयर बाजार मन्दे रहेंगे।

30 अक्तूबर को वक्री शुक्र चित्रा में आयेगा व इस समय सूर्य-शुक्र का मेल हमें 31 अक्तूबर तक सोना, चांदी, दालों सभी अनाजों में तेजी करने वाला मालूम देता है, विचारपूर्वक काम करें।

नवम्बर (सन् 2018 ई.)

विशेष नोट—1 से 6 नवम्बर तक तेल, तिलहन, दालों एवं मोटे अनाजों, घी, चीनी, गुड़, खाण्ड, शक्कर एवं सोना, चांदी में अच्छी तेजी का योग है। विशेष विवरण इस प्रकार है—

1 नवम्बर को पुष्य नक्षत्र के प्रथम चरण में राहु एवं उ.षा. के तृतीय चरण में केतु प्रवेश करेगा। 2 नवम्बर को शुक्र-सूर्य की स्थिति भी अनाज, दालें, रुई, कपास, छुहारे, चन्दन, लोहा, मजीठ, चांदी, चावल, घी एवं सोने में तेजी का संकेत देती है।

6 नवम्बर को मंगल कुम्भ में एवं सूर्य विशाखा नक्षत्र में आयेगा। यह योग जोरदार तेजी करने वाला है। हमारे विचार से इन दिनों सोना, चांदी, सभी अनाज, गुड़, खाण्ड में तेजी रहे। जौ, गेहूं, मसूर, सूत, सरसों, तिल, एरण्ड, अलसी आदि तिलहन में घटाबढ़ी के बाद तेजी बनेगी। रुई और चांदी में काफी घटाबढ़ी चलेगी। सावधान रहें। हमारे विचार से 5 से 11 नवम्बर तक बाजारों में मन्दी प्रधान रहेगी।

8 से 11 नवम्बर तक की ग्रहस्थिति इस प्रकार है—

9 नवम्बर को चन्द्रदर्शन एवं 10 नवम्बर को ज्येष्ठा नक्षत्र का बुध शुक्र के साथ मेल कर रहा है। अत: सरसों, तिल, तेल, गेहूं, चावल, उड़द, चना, ऊनी वस्त्र व ऊन में मन्दी के बाद तेजी बनेगी। रुई, चांदी, सोना, गुड़, घी, चीनी एवं सभी प्रकार के अनाजों में मन्दी का झटका आयेगा।

12 नवम्बर को अनुराधा के दूसरे चरण में गुरु दाखिल होगा तथा **14 से 16 नवम्बर तक का समय व्यापारियों के लिए काफी महत्त्वपूर्ण है, सावधानी से काम करें।** इन दिनों सोना, चांदी, सभी अनाज, रुई, कपास, तांबा एवं ऊनी वस्त्र तेज रहेंगे।

14 नवम्बर के लगभग सोना, चांदी में मन्दी; रुई एवं शेयर बाजारों में तेजी का उछाल आयेगा।

16 नवम्बर के लगभग सूर्य के वृश्चिक राशि में आने पर रुई, तांबा, चांदी, सोना एवं ऊनी वस्त्र तेज होंगे।

17 नवम्बर को बुध वक्री होगा। इस समय बुध का मेल सूर्य एवं गुरु के साथ है। इसीदिन (17 नवम्बर को ही) मंगल शतभिषा नक्षत्र में आ रहा है। अत: गुड़, शक्कर, तिलहन, खाण्ड, घी, चीनी तेज रहें। गेहूं, जौ, चना आदि अनाज मन्दे रहें। रुई, सोना, चांदी में पहले मन्दी का झटका आकर, बाद में तेजी बनेगी।

19 नवम्बर को सूर्य अनुराधा में दाखिल होकर 14 दिनों में जौ, चना आदि अनाज, ऊन, सोना, चांदी, तांबा आदि धातुओं एवं लाल-कालीमिर्च में तेजी करेगा, **क्योंकि सूर्य, मंगल की राशि में बुध के साथ ही है।**

21 नवम्बर के लगभग बाजारों में एकदम मन्दी की लहर आने का योग है, इस सप्ताह सावधानी से व्यापार बढ़ावें। हमारे विचार से रुई में झटके से मन्दी बने। पाट, हैसियन एवं शेयर बाजार मन्दे रहें। चांदी में तेजी का रुख रहे।

21 नवम्बर के लगभग शेयर बाजार नीचे जायेंगे।

22 नवम्बर को वक्री बुध अनुराधा में आयेगा। इस समय गुरु एवं सूर्य भी अनुराधा नक्षत्र में ही हैं। अत: सूत, सण, रुई, सोना, चांदी एवं अनाजों में जोरदार तेजी-मन्दी के रिएक्शन आयेंगे। मन्दे में खरीदें, तेजी आते ही लाभ लें।

24 नवम्बर को नेपच्यून मार्गी होकर मौसम में शीत बढ़ायेगा। **27 नवम्बर को गुरु अनुराधा नक्षत्र के तीसरे चरण में एवं शनि पू.षा. नक्षत्र के प्रथम चरण में प्रवेश करेगा।** इस समय इमारती लकड़ी महंगी; अनाज मन्दे; कपास, जीरा, सरसों, जौ, ज्वार, बाजरा में तेजी से उत्तम लाभ मिलेगा। सोना, चांदी, तांबा एवं तेल, तिलहन में भी तेजी बनेगी। यह तेजी का रुख उत्तम-मध्यमरूप से 30 नवम्बर तक रहेगा।

नवम्बर के अन्तिम चरण में शेयर बाजार तेज होंगे।

दिसम्बर (सन् 2018 ई.)

मासारम्भ में ही 2 दिसम्बर को सूर्य ज्येष्ठा नक्षत्र एवं 5 दिसम्बर को वक्री बुध विशाखा में दाखिल होगा। सोना, चांदी, चावल, गेहूं, जौ, चना, अलसी, सरसों, एरण्ड, हींग, गुग्गुल, पारा, गुड़, खाण्ड तेज रहें। इस समय रुई में जोरदार मन्दा आ सकता है।

लगभग 3/4 दिसम्बर को गुड़, खाण्ड तेज रहेंगे एवं अनाजों में मन्दे का रुख रहे।

6 दिसम्बर को बुध के मार्गी होने पर बाजार मन्दे की तरफ रहेंगे, सावधान रहें। रुई में पहले मन्दी, बाद में तेजी, चांदी में घटाबढ़ी चले। 8 दिन में गेहूं, जौ, चना, चावल, बाजरा आदि अनाजों में तेजी बनेगी। लेकिन रेशम, तेल, अलसी, एरण्ड, नारियल, बिनौला, मूंगफली, कपूर, अगर, चन्दन आदि सुगन्धित पदार्थ एवं गुड़ मन्दे हों।

इसके बाद मंगल के पू.भा. नक्षत्र, बुध के अनुराधा में प्रवेश एवं चन्द्रदर्शन को दृष्टि में रखते हुए 8 दिसम्बर के लगभग तिल, तेल, मूंगफली, अलसी, बिनौला, सोया, एरण्ड, सरसों आदि तिलहन एवं रुई, सूत, **सोना, चांदी, तांबा आदि धातुओं में अच्छी तेजी से लाभ मिलेगा।**

ध्यान दें—9 से 20 दिसम्बर तक बाजारों में गोचर ग्रहस्थिति के अनुसार शेयर, वायदा व हाजर बाजार मन्दे रहेंगे। विवरण इस प्रकार है—

11 दिसम्बर के लगभग गुरु अनुराधा नक्षत्र के चतुर्थ चरण में आयेगा। अत: 9 से 15 दिसम्बर तक चावल, चांदी एवं सोने में तेजी के बाद 9 दिसम्बर के लगभग मन्दी बनेगी।

11 दिसम्बर को सोना, चांदी, कपास, रुई मन्दे रहेंगे। यह मन्दी उत्तम-मध्यम तौर पर 15 दिसम्बर तक प्रभावी रहेगी।

16 दिसम्बर को सूर्य मूल नक्षत्र एवं धनु राशि में प्रविष्ट होकर गुरु की राशि में शनि के साथ मेल करेगा। दोनों शत्रु ग्रह हैं। अत: रुई, कपास, सूत, सोना, चांदी, अलसी में तेजी का झटका आते ही लाभ लें; क्योंकि यहां शनि अस्त होने के लगभग 'क्षीण' है। तेजी के बाद मन्दा बनेगा।

21 दिसम्बर को शुक्र विशाखा में आकर रुई व अनाजों में तेजी का रुख बनायेगा। शुक्र खासतौर पर रुई, गुड़, खाण्ड, चीनी, घी, तिलहन, चांदी पर प्रभाव रखता है। लेकिन बुध ज्येष्ठा नक्षत्र में आकर 22 दिसम्बर को घी, गुड़, खाण्ड एवं चावलों में तेजीकारक रहे।

23 दिसम्बर को मंगल मीन राशि में आकर गुरु की दृष्टि में आ जाता है। अतः यहां विशेष तेजी में न रहें। प्रत्येक जाति के अनाज पहले तेज, बाद में मन्दे रहें। प्रायः सभी बाजार मन्दे रहेंगे, ऐसा विचार है। तेल, तिलहन, सोना, चांदी मन्दे रहें। 26 दिसम्बर को पू.भा. 2 का शनि अनाजों, अलसी, तिल, तेल, सरसों, मूंग एवं उड़द में तेजी करेगा। तदनन्तर 27 दिसम्बर को गुरु ज्येष्ठा नक्षत्र में आकर चांदी में मन्दी एवं सभी अनाजों में घटाबढ़ी कर सकता है, बाजार का रुख देखकर काम करें।

23 से 25 दिसम्बर तक शेयर बाजारों में जोरदार उठा-पटक चलेगी।

28 दिसम्बर को मंगल उ.भा. नक्षत्र में आकर देवदारु, चन्दन, कपूर आदि सुगन्धित चीजों, सोना, चांदी, रुई, ऊन, गेहूं, जौ, चना में तेजी करे।

29 दिसम्बर को सूर्य पू.षा. नक्षत्र में दाखिल होगा। यह शनि के साथ एकनक्षत्र-सम्बन्ध बनायेगा, जो कि बाजारों में जोरदार तेजी करेगा। तिल, तेल, सरसों, बिनौला, तोड़िया, सोया, एरण्ड, मूंगफली, घी, खाद्य तेल, गुड़, खाण्ड, हल्दी, ऊनी वस्त्र, सण एवं सोना-चांदी में अच्छी तेजी बनेगी। **यह तेजी मासान्त तक चलेगी।**

जनवरी (सन् 2019 ई.)

1 जनवरी (सन् 2019 ई.) को बुध मूल नक्षत्र एवं धनु राशि में दाखिल होगा। इसीदिन शुक्र वृश्चिक में आता है। ध्यान दें—बुध 1 जनवरी से सूर्य-शनि के साथ मेल करेगा। बुध अफवाहों का ग्रह है, झूठी-सच्ची अफवाहों से वायदा बाजारों में भयंकर तेजी-मन्दी कर देना बुध का काम है। साथ ही जब बुध सूर्य के साथ मेल करता है तो यह तेजीकारक हो जाता है। यहां शनि भी साथ है, अतः हमारा विचार यहां अच्छी तेजी का है। रुई, मूंगफली, अलसी, एरण्ड, बिनौला, सरसों आदि की फसल व पैदावार खराब हो जाने से बाजारों में तेजी बनेगी। वायदा व्यापारी तेजी से लाभ लेंगे। रुई, कपास, सूत, चांदी, गेहूं, जौ, चना, उड़द, मूंग, मोठ, बाजरा आदि अनाज एवं तिलहन में अच्छी तेजी रहेगी।

शेयर बाजार में लोहे के शेयर्स एवं बैंक शेयर्स तेज रहेंगे।

2 जनवरी को नेपच्यून पू.भा. में दाखिल होगा। इस समय मंगल मीन राशि में है। 3 जनवरी को राहु पुनर्वसु 4 एवं केतु उ.षा. 2 में प्रवेश करेगा। इस समय रुई, सरसों, अलसी, तिल, तेल, कपास, बिनौला आदि तिलहन, लोहा, छुहारा एवं अनाजों में तेजी बने।

नोट—यदि आपके पास इन चीजों का स्टॉक है तो तीसरे या छठे मास में तिगुना लाभ मिल सकता है।

4 जनवरी को अनुराधा नक्षत्र का शुक्र गुरु के साथ राशिसम्बन्ध बना रहा है। अतः गुड़, खाण्ड, घी, चीनी, दालों, चावल, नमक एवं अन्य बाजारों में भी मन्दी रहने के योग हैं।

7 से 10 जनवरी तक बुध की पोजीशन, चन्द्रदर्शन एवं 9 जनवरी को पू.षा. नक्षत्र में बुध के प्रवेशविचार से रुई, सभी अनाज, सोना, मटर, उड़द, मूंग, मेवाजात, घी एवं अन्य किराना की चीजों में जोरदार मन्दी और तेजी के झटके आयेंगे और 10 जनवरी तक मन्दी प्रधान रहेगी।

आगे 11 से 15 जनवरी तक मौजूदा ग्रहस्थिति के अनुसार बाजार तेज रहें, ऐसा विचार है।

11 जनवरी को सूर्य उ.षा. में आयेगा। इस समय बुध भी उ.षा. में ही होगा। शनि का साथ सू. बु. के साथ तेजी करेगा। 14 दिन में सोना, चांदी, उड़द, मूंग, चावल, चना, गेहूं, गुड़, खाण्ड, शक्कर, चीनी, कपास आदि तिलहन तेज रहें। इसी बीच 12 जनवरी को गुरु ज्येष्ठा नक्षत्र के दूसरे चरण में आकर चांदी में मन्दी करे।

14 जनवरी को सूर्य मकर राशि में प्रवेश करेगा। इस समय राहु के साथ सूर्य का समसप्तकयोग बन रहा है। घी, तेल, अलसी, गुड़, शक्कर, खाण्ड, रुई तेज रहें। दालों एवं अन्य अनाजों में यद्यपि मन्दे रहने की उम्मीद बनेगी, फिर भी हमें तेजी ही

मालूम देती है, सावधानी से काम करें।

16 जनवरी को रेवती नक्षत्र का मंगल गेहूं, चना, मूंग, मोठ, जौ, ज्वार, बाजरा के बाजारों में मन्दी करे। चांदी तेज रहे, सोना कुछ मन्दा एवं रुई में घटाबढ़ी के बाद तेजी बने।

17 जनवरी को शुक्र ज्येष्ठा नक्षत्र में आकर गुरु के साथ एकनक्षत्र-सम्बन्ध बना लेगा। अनाज कुछ तेज रहें। सोना, चांदी, चावल, हींग, सरसों, तिल, तेल आदि तिलहन एवं अन्य तेलों में मन्दी का वातावरण रहे।

18 जनवरी को बुध उ.षा. नक्षत्र में आकर सूर्य के साथ एकनक्षत्र-सम्बन्ध भी बनायेगा। अनाजों में मन्दे का माहौल रहे।

ध्यान दें—18 जनवरी के लगभग शनि के उदित होने पर बाजार मन्दे रहें। रुई, शेयर, अलसी, सरसों, एरण्ड, बिनौला, मूंगफली में बाजार जोरदार नीचे जायेंगे। लेकिन लहसुन, चावल, गुड़, खाण्ड तेज रहेंगे।

18 जनवरी के लगभग शेयर बाजार मन्दे होने का योग है।

20 जनवरी को बुध मकर राशि में आकर सूर्य और केतु के साथ मेल करेगा। यहां बुध का सूर्य के साथ सम्बन्ध तेजी का संकेत देता है। रुई, सोना, चांदी, तेल, तिलहन एवं सभी प्रकार के अनाजों में तेजी का वातावरण रहेगा।

24 जनवरी को सूर्य श्रवण नक्षत्र एवं शनि पू.षा. के तीसरे चरण में दाखिल होगा।

इन दिनों गेहूं, जौ, चावल, रुई, सूत, सण, सोना, चांदी, गुड़, खाण्ड, अलसी, कपास, लोहा, चन्दन, मजीठ, दाख, छुहारे, सुपारी आदि में तेजी बनेगी। **कपास, जीरा, सरसों, जौ, ज्वार में विशेष तेजी से उत्तम लाभ मिलेगा। स्टॉकिस्ट पहले ही स्टॉक कर लें।**

26 जनवरी को श्रवण नक्षत्र का बुध गुड़, खाण्ड, अलसी, चना, चावल में तेजी करे।

24 से 26 जनवरी तक शेयर बाजार तेज रहें।

29 जनवरी को शुक्र मूल नक्षत्र एवं धनु राशि में दाखिल होगा। इस प्रकार शुक्र एवं शनि—दोनों एकराशि में आ जाते हैं। शुक्र अनाजों का एवं शनि तेल, तिलहन एवं सोना, चांदी, लोहा-इनका प्रतिनिधि ग्रह है। अतः गेहूं, जौ, चना, दालवाना आदि अनाज, चांदी, सोना, तांबा आदि धातु और रुई, कपास, सूत में भी तेजी आये।

29 जनवरी को शेयर बाजार तेज रहेंगे।

30 जनवरी को गुरु ज्येष्ठा नक्षत्र के तीसरे चरण में प्रवेश करेगा। इस समय चांदी में मन्दी एवं अनाजों में घटाबढ़ी रहे।

फरवरी (सन् 2019 ई.)

मासारम्भ में बुध धनिष्ठा नक्षत्र में दाखिल होगा। यहां बुध मकर राशि में सूर्य एवं केतु के साथ है। **ध्यान दें—कि धनिष्ठा नक्षत्र का बुध यद्यपि बाजारों में मन्दीकारक है, फिर भी ग्रहगोचर के हिसाब से हमें चावल, दालों एवं तिलहन में तेजी मालूम देती है।** सोना, चांदी मन्दी रहें। रुई में जोरदार घटाबढ़ी रहे।

5 फरवरी को मंगल अश्विनी नक्षत्र एवं मेष राशि में दाखिल होगा। चूंकि मेष राशि मंगल की अपनी राशि है, अतः मन्दी का काम बन्द करके तेजी की तरफ ध्यान दें। वायदा एवं हाजर बाजारों में तूफानी तेजी के झटके आयेंगे।

ज्वार, बाजस, चना, मूंग, गेहूं, गुड़, खाण्ड, रुई, कपास, पाट, बारदाना में तेजी से लाभ मिलेगा। सोना, चांदी आदि धातुओं में कुछ मन्दी आकर, उत्तम तेजी बनेगी। **यह तेजी-मन्दी का प्रभाव 15 दिन में देखा जा सकेगा। विशेषतः 9 फरवरी तक बाजारों में तेजी से लाभ मिलेगा।**

6 फरवरी को सूर्य के धनिष्ठा में प्रवेश एवं चन्द्रदर्शन की दृष्टि से घी, तेल, गुड़, खाण्ड तेज रहें। अलसी, रुई, चांदी, घी, सोना एवं अनाजों में भी तेजी रहे।

7 फरवरी को बुध कुम्भ में आकर शनि की नजर में आ जाता है। अलसी, रुई, चांदी, घी, तेल, गुड़, खाण्ड एवं सभी अनाज, दालवाना, तिलहन में तेजी से लाभ रहे।

10 फरवरी को बुध शतभिषा नक्षत्र एवं शुक्र पू.षा. में दाखिल होगा। मूंग, मोठ, उड़द, तिल, तेल, सरसों एवं नमक आदि में मन्दा होकर, तेजी हो। सोना, चांदी मन्दे

स्थिति को ध्यान में रखें तो गेहूं आदि अनाजों,

रहें।

13 फरवरी बुधवार को सूर्य कुम्भ में आकर बुध के साथ मेल करेगा। इन पर इस समय शनि की नजर भी रहेगी, अत: यह योग बाजारों में जोरदार तेजी का ही रहेगा।

घी, सरसों, मूंगफली, सोया, एरण्ड, अलसी, बिनौला आदि तिलहन, दालवाना, तेल, गेहूं, चना, जौ, ज्वार, बाजरा, चीनी, गुड़, खाण्ड, शक्कर मन्दे रहें।

आगे 15 से 18 फरवरी तक बाजार मन्दे की तरफ रहेंगे।

15 फरवरी के लगभग वाली ग्रहस्थिति एवं 18 फरवरी को पू.भा. नक्षत्र में बुध के आने पर बाजार प्राय: मन्दे रहेंगे। सोना, चांदी, लोहा, तांबा तथा अनाजों में मन्दा रहे। रुई एवं शेयर बाजारों में भी मन्दा रहे।

15 फरवरी के लगभग शेयर बाजारों में मन्दा रहे।

19 फरवरी को सूर्य शतभिषा में आकर सोना, चांदी, सूत, सण, कपड़ा, तिल, तेल, एरण्ड, सरसों, हींग, जायफल, दाख, छुहारा, सोठ, हल्दी, गेहूं आदि अनाजों एवं गुड़ में तेजी करे।

20 फरवरी को गुरु ज्येष्ठा 4 एवं 21 फरवरी को शुक्र उ.षा. में दाखिल होगा। गुरु पर मंगल की विशेष दृष्टि है। रुई, अनाज, सोना, चांदी, अलसी, एरण्ड में अच्छी मन्दी के बाद तेजी रहे। गुड़, खाण्ड, अलसी, एरण्ड में भी मन्दी के झटके आकर, तेजी हो।

24 फरवरी को शुक्र मकर राशि में आकर, राहु की नजर में रहेगा। अफीम, गुड़, खाण्ड, घी एवं गेहूं, चना आदि अनाज सामान्यत: मन्दे रहें। रुई, चांदी में घटाबढ़ी के बाद तेजी ही रहे।

25 फरवरी को बुध मीन राशि में दाखिल होगा। साथ ही इसी दिन (25 फरवरी को ही) मंगल भरणी में एवं शनि पू.षा. 4 में दाखिल होगा। बुध पर इस समय गुरु की विशेष दृष्टि है। अत: यहां बुध की पोजीशन रुई, गुड़, खाण्ड, शक्कर में मन्दी एवं सोना, चांदी में पहले तेजी, फिर उतनी ही मन्दे करे। बिनौला तेज रहे।

शनि एवं मंगल की उल्लिखित स्थिति को ध्यान में रखें तो गेहूं आदि अनाजों, सोना, चांदी, रुई में तेजी आये। कपास, जीरा, सरसों, जौ, ज्वार में भी तेजी से उत्तम लाभ मिलेगा।

28 फरवरी को बुध उ.भा. में प्रविष्ट होगा। सोना, चांदी, तांबा, लोहा एवं अनाजों में मन्दे का रुख रहे। रुई के बाजारों में घटाबढ़ी चलेगी।

शेयर बाजारों में इस समय मन्दी रहे।

मार्च (सन् 2019 ई.)

मासारम्भ में कुम्भ राशि में स्थित सूर्य पर शनि की विशेष दृष्टि है। 4 मार्च को सूर्य पू.भा. में आयेगा एवं 5 मार्च को मीनस्थ बुध वक्री होगा। रेशम, सोना, चांदी, गेहूं, चना, उड़द, चावल, ज्वार, बाजरा, घी, सरसों, तिल, तेल, गुड़, खाण्ड, रुई, गुग्गुल में तेजी बनेगी।

ध्यान दें—5 मार्च को शुक्र श्रवण में दाखिल होकर तेजीकारक ही रहेगा। चांदी, सोना, गुड़, खाण्ड, शक्कर, मूंग, मोठ, उड़द एवं अन्य अनाजों, रुई में मन्दी का झटका आकर, तुरन्त तेजी बनेगी।

7 मार्च को पुनर्वसु के तीसरे चरण मिथुन में राहु एवं केतु उ.षा. 1 धनु राशि में प्रविष्ट होगा। इस समय मिथुन राशिस्थ राहु के साथ केतु एवं शनि का समसप्तक-योग भी बन रहा है। राहु की पोजीशन से मालूम होता है कि—प्राकृतिक प्रकोप से फसलों की पैदावार कम रहेगी, जिससे बाजारों में बड़ी तेजी सम्भव है। मिथुन के राहु में तेलवाना, रुई, कपास, चांदी, सोना आदि में एक बार तो झटके का मन्दा होता है।

ध्यान दें—राहु कई जिन्सों में भयानक मन्दी, कई जिन्सों में जोरदार तेजी करता है। बाजार के रुख को देखकर व्यापार बढ़ायें। गोचर ग्रहस्थिति के अनुसार तो चांदी, सोना, रुई, कपास, तेलवाना एवं दालवाना के व्यापारी तेजी से लाभ ले सकेंगे, फिर भी हमारी हिदायत है कि—बाजार के रुख के खिलाफ न चलें। अगर जोरदार मन्दा आता है तो भरपूर माल पकड़ें, आगे लाभ होगा।

6/7 मार्च के लगभग शेयर बाजारों में जोरदार मन्दा आने का योग है।

आगे 8 से 11 मार्च तक बाजार अस्थिर रहेंगे। अनाज, रुई, सोना, चांदी में घटाबढ़ी के बाद मन्दी रहे। सोना, चांदी, लोहा, तांबा एवं अनाजों में 11 मार्च को वक्री बुध के पू.भा. में आने पर मन्दा सम्भव है। यह घटाबढ़ी बाजारों में 13 फरवरी तक उत्तम-मध्यमरूप से चलेगी।

14 मार्च को सूर्य मीन राशि में आकर गुरु की नज़र में आ जायेगा। सूर्य एक दिन के लिए बुध के साथ मेल भी करेगा। तिल, तेल. अलसी, सरसों, गुड़, खाण्ड, शक्कर, रुई एवं सोना में कुछ तेजी आकर बाजार नीचे आयेंगे। अनाजों में पहले कुछ तेजी आकर, अचानक मन्दी बनेगी। चांदी, सोने में भी मन्दे का असर रहे।

15 मार्च को वक्री बुध कुम्भ में आकर शनि की नज़र में आ जाता है। घी, तेल, गुड़, खाण्ड, दालवाना, चना आदि अनाज, तेल, तिलहन के बाजार तेज रहेंगे। रुई और चांदी में उठा-पटक चले।

16 मार्च को शुक्र धनिष्ठा में आकर चावल, मूंग, मोठ, उड़द, ज्वार, बाजरा, चांदी, सोना, रुई, कपास तेज करे।

17 मार्च को कृत्तिका नक्षत्र का मंगल गेहूं, मूंग, मोठ, चावल, अरहर, तिल, तेल, सरसों, घी, चांदी, सूत में तेजी ही करेगा, रुई में तेजी आकर, मन्दी बने।

18 मार्च को सूर्य उ.भा. एवं 21 मार्च को शुक्र कुम्भ राशि में आयेगा। वायदा बाजार उथल-पुथल चलेंगे। 18 मार्च को अनाज, दालें, तिल, घी, तेल, तिलहन, गुड़, शक्कर, चांदी, सूत तेज होंगे। रुई में तेजी के बाद मन्दी बने। लेकिन 21 मार्च को रुई, चांदी, गुड़, खाण्ड, गेहूं, चना, जौ, ज्वार, बाजरा मन्दे रहेंगे।

22 मार्च को मंगल वृष राशि एवं यूरेनस अश्विनी 3 में आयेगा। इस समय शनि-मंगल का षडष्टकयोग राजनैतिक दृष्टि से व्यापार को प्रभावित करेगा। वायदा व्यापारी उत्तम तेजी से लाभ उठा सकेंगे। सभी अनाज, सोना, चांदी, रुई, कपास, सूत, केसर, तांबा, जस्ता आदि धातु तेज रहें। तिल, घी, लालमिर्च भी तेज रहें।

22 मार्च के लगभग शेयर बाजारों में तेजी से लाभ मिलेगा।

27 मार्च को शुक्र शतभिषा में आकर गुड़, खाण्ड, चावल, घी, सरसों, रुई, सोना, चांदी में तेजी करेगा।

28 मार्च को बुध मार्गी हो जाता है। बाजारों का रुख अचानक बदल सकता है। सावधानी से काम करें। रुई और चांदी में पहले मन्दी आकर, तेजी आये। तेल, तिल, खाद्य तेल, गुड़, घी, तिलहन सब मन्दे होंगे।

29 मार्च को गुरु मूल 1 धनु में शनि-केतु के साथ एकराशि-सम्बन्ध एवं राहु के साथ समसप्तकयोग भी बना रहा है। मंगल की गुरु पर विशेष दृष्टि भी है। यह योग भयंकर तेजी की सूचना देता है।

कुलथ, मूंग, मोठ, ज्वार, बाजरा, सोना, चांदी, गुड़, खाण्ड, शक्कर, नमक, अनाज, पाट, सण, कुष्ठ, तिल, तेल, घी, सोना, चांदी, पीतल, लोहा, तांबा, कांसा, सिक्का आदि में जोरदार तेजी सम्भव है। बाजार के रुख को समझकर काम करें।

नोट—वैसे शनि का गुरु के साथ मेल व मंगल की गुरु पर दृष्टि होने से हमें उल्लिखित चीजों में तेजी ही मालूम देती है।

धनु राशि में गुरु के आते ही यदि घी सस्ता हो तो स्टॉक करें, शीघ्र ही उत्तम लाभ होगा।

31 मार्च को रेवती नक्षत्र का सूर्य अलसी, सरसों, एरण्ड, मूंगफली, लहसुन, चावल, गेहूं, जौ, चना में तेजी करे।

(व्यापारियों के लिए विशेष सुविधा— अगले पृष्ठ पर)

–:व्यापारियों के लिए विशेष सुविधा:–
तेज़ी–मन्दी की प्रतिमास लिखित Advance Report

अर्थात् आगामी माह की दैनिक तेज़ी–मन्दी की लिखित रिपोर्ट

व्यापारी सज्जनो ! 1 जनवरी, सन् 2018 ई. से यदि आप प्रतिमास किसी भी जिन्स की दैनिक तेजी–मन्दी या वायदा–हाजर बाजार का चांस अर्थात् सोना, चान्दी, कॉपर आदि मैटल्ज़, चना, ग्वार आदि अनाज, तिल, तेल, सरसों किंवा बिनौला आदि तिलहन; जीरा, धनिया, हल्दी, लाल–कालीमिर्च, रुई एवम् कपास में से किसी भी जिन्स की मासिक लिखित रिपोर्ट चाहते हैं तो फीस **Rs.** 5100/- (इक्यावन सौ रु.) प्रतिमास, प्रतिजिन्स के हिसाब से भेजकर **Advance Report** प्राप्त करें। एकवर्ष की प्रतिजिन्स फीस **Rs.** 51000/- (इक्यावन हज़ार रु.) है।

ध्यान दें–यदि आप लिखित Report के अतिरिक्त प्रतिदिन Telephone से तेज़ी–मन्दी का विचार करना चाहते हैं तो उसकी फीस अलग से होगी।

नोट– पहली बार यदि प्रत्यक्ष मिलें तो अधिक सन्तोषजनक जानकारी मिल सकेगी। दूर से आने वाले व्यक्ति आने से पहले टेलिफोन करके आने का समय निश्चित कर लें।

पत्र या **M.O.** फार्म पर अपना नाम, पता एवम् फोन नं. साफ–साफ लिखें एवम् धनादेश किस जिन्स की तेज़ी–मन्दी जानने के लिए भेज रहे हैं– यह अवश्य लिखें। **M.O.** या **D.D.** भेजने के बाद आप अपना रजिस्ट्रेशन नंबर टेलिफोन से अवश्य प्राप्त करें।

Payment Advance आने पर ही अगले माह की रिपोर्ट भेजी जाएगी। **D.D.** या **M.O.** नीचे लिखे पते पर भेजें–

PHONE: 0160-2641 277
Mob. 0 99 88 40 7010

संयमी शर्मा , **M.A.**, ज्योतिषाचार्य, धर्मशास्त्राचार्य,
सुपुत्र पं. इन्दुशेखर शर्मा, शास्त्री, **M.A.**, ज्योतिषाचार्य,
श्री मार्त्तण्ड ज्योतिष कार्यालय ,कुराली – **PIN** 140 103
(मोहाली) पंजाब।

नोट:– गुरुवार को कार्यालय में अवकाश रहता है।

यन्त्र-मन्त्र-तन्त्र साधना के लिए महत्त्वपूर्ण काल

(1 जनवरी, सन् 2018 ई. से 5 अप्रैल, सन् 2019 ई. तक)

जप एवं यन्त्र-मन्त्र आदि की साधना के लिए शास्त्रों द्वारा बारह सायन संक्रान्तियों के पुण्यकाल तथा सूर्य-चन्द्र के क्रान्तिसाम्य (महापात) के काल को ठीक सूर्य-चन्द्रग्रहण के समान ही महत्त्वपूर्ण माना गया है। संहिता और ज्योतिषग्रन्थों में इस विषय के अनेक वचन उपलब्ध हैं। क्रान्तिसाम्य को तन्त्रादि की सिद्धि के लिए ऋषियों ने स्पष्टरूप से फलप्रद माना है। आचार्य भास्कर ने भी 'सिद्धान्त शिरोमणि' में कहा है कि क्रान्तिसाम्य के काल में विवाहादि मंगलकृत्य करना तो निषिद्ध है, लेकिन यदि इस समय जप, अनुष्ठानादि किया जाये, तो उसकी वृद्धि होती है— *"पातस्थितिकालान्तर्गतमंगलकृत्यं न शस्यते तज्ज्ञैः। स्नान-जप-होमदानादिकमत्रोपैति खलु वृद्धिम्॥"* यन्त्र-मन्त्र-तन्त्रों की साधना में विशेष रुचि रखने वाले पाठकों के लिए हम नीचे 1 जनवरी, 2018 ई. से 5 अप्रैल, सन् 2019 ई. तक की सायन संक्रान्तियों के पुण्यकाल तथा क्रान्तिसाम्य के प्रारम्भ और समाप्तिकाल (भा.स्टैं.टा.) दे रहे हैं। इन कालों में यन्त्र-तन्त्रों के निर्माण एवं मन्त्रजाप से वे अभीष्ट सिद्धि प्राप्त कर सकेंगे।

सूर्य और चन्द्रमा के ग्रहण के पर्वकाल को भी मन्त्रादि-साधना के लिए साधकों को उपयोग में लाना चाहिए। सायन संक्रान्तिपुण्यकाल, क्रान्तिसाम्य और सूर्य-चन्द्रग्रहण के पर्वकाल के अलावा मन्त्रादि साधना के लिए अर्धोदय, महोदय, महामहा-वारुणीपर्व, महावारुणीपर्व और वारुणीपर्व भी महत्त्वपूर्ण माने गये हैं। ये अर्धोदय आदि योग कभी-कभी ही आते हैं।

सावधान—यन्त्र-मन्त्र-तन्त्रों के प्रयोग को प्रभावशाली रूप में सद्यः फलप्रद बनाने के लिए शास्त्रविहित काल में साधना कीजिये, अन्यथा आगमशास्त्र पर साधक की निराधार अनास्था होने की पूर्ण आशंका है।

सायनसंक्रान्ति-पुण्यकाल (भा.स्टैं.टा.)

प्रारम्भ			समाप्त		
तारीख	घं.	मि.	तारीख	घं.	मि.
सन् 2018 ई.					
20 जन.	2	15	20 जन.	15	03
18 फर.	16	24	19 फर.	5	12
20 मार्च	15	22	21 मार्च	4	10
20 अप्रै.	2	18	20 अप्रै.	15	06
21 मई	1	21	21 मई	14	09
21 जून	9	13	21 जून	22	01
22 जुला.	20	06	23 जुला.	8	54
23 अग.	3	15	23 अग.	16	03
23 सितं.	1	00	23 सितं.	13	48
23 अक्टू.	10	29	23 अक्टू.	23	17
22 नवं.	8	07	22 नवं.	20	55
21 दिसं.	21	29	22 दिसं.	10	17
सन् 2019 ई.					
20 जन.	8	05	20 जन.	20	53
18 फर.	22	10	19 फर.	10	58
20 मार्च	21	04	21 मार्च	9	52

निरयण संक्रान्तियों के पुण्यकाल

सायन संक्रान्तियों के पुण्यकाल की भांति निरयण संक्रान्तियों के पुण्यकाल में भी यन्त्र-मन्त्रादि की साधना की जा सकती है, लेकिन सायन संक्रान्तियों का पुण्यकाल इसके लिए विशेष महत्त्व रखता है।

क्रान्तिसाम्य का प्रारम्भ और समाप्तिकाल (भा.स्टैं.टा.)

प्रारम्भ			समाप्त		
तारीख	घं.	मि.	तारीख	घं.	मि.
सन् 2018 ई.					
27 जन.	21	50	28 जन.	8	26
8 फर.	13	34	8 फर.	21	28
21 फर.	19	11	22 फर.	0	52
5 मार्च	12	11	5 मार्च	17	26
18 मार्च	20	07	19 मार्च	1	07
30 मार्च	18	18	30 मार्च	23	10
12 अप्रै.	23	17	13 अप्रै.	4	59
24 अप्रै.	22	46	25 अप्रै.	4	46
7 मई	20	18	8 मई	5	27
19 मई	13	40	20 मई	4	58
24 जुला.	8	50	25 जुला.	1	31
6 अग.	12	32	6 अग.	20	01
18 अग.	2	29	18 अग.	8	55
31 अग.	15	07	31 अग.	20	31
12 सितं.	8	53	12 सितं.	13	37
25 सितं.	17	24	25 सितं.	22	27
7 अक्टू.	19	44	8 अक्टू.	0	27
20 अक्टू.	19	55	21 अक्टू.	1	47

प्रारम्भ			समाप्त		
तारीख	घं.	मि.	तारीख	घं.	मि.
सन् 2018-19 ई.					
2 नवं.	2	52	2 नवं.	8	53
14 नवं.	16	14	15 नवं.	1	56
26 नवं.	12	17	27 नवं.	10	15
18 जन.	18	11	19 जन.	7	17
30 जन.	7	25	30 जन.	15	47
12 फर.	20	52	13 फर.	2	54
24 फर.	9	42	24 फर.	14	44
9 मार्च	21	34	10 मार्च	2	40
21 मार्च	21	48	22 मार्च	1	22
3 अप्रै.	23	13	4 अप्रै.	3	00

सूक्ष्म क्रान्तिसाम्य

सूर्य-चन्द्र की राशियों के अनुसार निर्धारित किये जाने वाले क्रान्तिसाम्य का प्रारम्भ-समाप्ति काल नितान्त स्थूल होता है। यहां दिया गया क्रान्तिसाम्य का प्रारम्भ-समाप्तिकाल महापातगणित द्वारा स्पष्ट किया गया है। यह सर्वथा सूक्ष्म है। विवाहादि मुहूर्तों में इसी सूक्ष्म क्रान्तिसाम्य के काल को ही वर्जित किया गया है।

सूर्य-चन्द्रग्रहण

ऊपर लिखे अनुसार यन्त्र-मन्त्र-तन्त्र साधना के लिए सूर्य एवं चन्द्र ग्रहणों का पर्वकाल विशेष महत्त्व रखता है। एतदर्थ पृष्ठ ..... 24 ... देखिये।

वारुणी पर्व (सन् 2018 ई.) (भा.स्टैं.टा.)

प्रारम्भ			समाप्त		
तारीख	घं.	मि.	तारीख	घं.	मि.
15 मार्च	17	12	15 मार्च	17	19
सन् 2019 ई.					
2 अप्रै.	8	38	2 अप्रै.	सूर्यास्त	
गजच्छाया योग (सन् 2018 ई.)					
8 अक्टू.	13	33	8 अक्टू.	सूर्यास्त	
9 अक्टू.	सूर्योदय		9 अक्टू.	9	17
महोदय योग (सन् 2019 ई.)					
4 फर.	7	57	4 फर.	सूर्यास्त	

ध्यान रहे—मन्त्रसाधना में उच्चारणादि की शुद्धि परमावश्यक है। उच्चारणादि की अशुद्धि साधक के लिए सुफलप्रद कदापि नहीं होती। मन्त्रोच्चारणादि की अशुद्धि व अनभिज्ञता स्पष्टरूप से वज्रपात-सम घातक (विनाशकारी) मानी गयी है—

> "मन्त्रो हीनः स्वरतो वर्णतो वा
> मिथ्या प्रयुक्तो न तमर्थमाह।
> स वाग्वज्रो यजमानं हिनस्ति
> यथेन्द्रशत्रुः स्वरतोऽपराधात्॥"

अनेक विद्वानों द्वारा अनुभूत यन्त्र-मन्त्र एवं तन्त्रों का चमत्कार (सं. 2075 वि.)

इस स्तम्भ के अन्तर्गत अनुभूत यन्त्र-मन्त्र-तन्त्र गतवर्षों से देते आ रहे हैं। इस स्तम्भ के अन्तर्गत दिये गये मन्त्रों को शुभ मुहूर्त्त में गुरुमुख से प्राप्त करके ग्रहणवेला, क्रान्तिसाम्य या सायन संक्रान्तियों के पुण्यकाल में दृढ़-निश्चयपूर्वक अनुष्ठान करके सिद्ध कर लेना चाहिए। **ध्यान रहे**—दीपमाला के समय एवं महाशिवरात्रि की महत्त्वपूर्ण-रात्रियों किंवा '**यन्त्र-मन्त्र-तन्त्रों के लिए महत्त्वपूर्ण साधनाकाल**' की उल्लिखित समयावधियों में इन मन्त्र-तन्त्रों को सिद्ध करके इनके चमत्कार आप अविलम्ब देख सकेंगे। यन्त्र-मन्त्रों के बल पर ही दैवज्ञ अपने वैदुष्य से अक्षुण्ण यश प्राप्त कर सकता है—"**सिद्धिर्भूषयते विद्याम्।**"

मन्त्र ऐसे दिव्य शब्दों का समूह है, जिसे दृढ़ इच्छाशक्तिपूर्वक उच्चारण एवं मनन से ही हम अलौकिक काम कर सकते हैं। चुने हुए गुप्त शब्द ही मन्त्र हैं। इनमें शब्दों को ऐसा क्रम दिया जाता है, कि उनके मौन या अमौन अवस्था में उच्चारणमात्र से शून्य महाकाश में एक विचित्र कम्पन उत्पन्न होती है, जिसमें अभीप्सित कार्यसिद्धि एवं रचनात्मक प्रबल-प्रछन्न शक्ति होती है—

"मननात् त्रायते यस्मात्तस्मात् मन्त्रः प्रकीर्तितः। जपात् सिद्धिर्जपात् सिद्धिर्जपात् सिद्धिर्न संशयः॥"

मन्त्रशास्त्र के अनुसार वेदमन्त्रों को ब्रह्मा ने शक्ति प्रदान की थी। तान्त्रिक प्रयोगों को भगवान् शिव ने शक्तिसम्पन्न किया। इसी प्रकार कलियुग में शिवावतार श्री शाबरनाथ जी ने शाबरमन्त्रों को अद्‌भुत शक्ति प्रदान की। शाबरमन्त्र अनमिल बेजोड़ शब्दों का एक समूह होता है, जोकि अर्थहीन मालूम देते हैं, परन्तु भगवान् शंकर जी के प्रताप से ये मन्त्र अवन्ध्य प्रभाव रखते हैं—"**अनमिल आखर अर्थ न जापू। प्रकट प्रभाव महेश प्रतापू॥**" अतः शाबरमन्त्रों को यथावत् उच्चारण करें, किसी प्रकार से इनमें न्यूनाधिकता न करें। **नोट**—मन्त्र का पुरुश्चरण गुरु की देख-रेख में गुप्तरुप से करें। प्रकट होने पर पुरुश्चरण अर्थहीन हो जाता है—"**गोपनीयं गोपनीयं गोपनीयं प्रयत्नतः।**"

स्वप्न में अभीष्ट प्रश्न के सही उत्तर जानने के लिए रुद्रमन्त्र-प्रयोग

मन्त्रः—"ॐ नमो भगवते रुद्राय मम कर्णरन्ध्रे प्रविश्य अतीतानागत-वर्तमानं सत्यं ब्रूहि सत्यं ब्रूहि स्वाहा।"

विधि—इस उल्लिखित मन्त्र का दस दिनों में दस-दस हजार जाप करें। अनुष्ठान पूर्ण होने पर दशांश आहुतियां देकर रुद्रदेव को प्रसन्न करें। फिर रात्रि में पवित्रावस्था में कुशासन पर बैठें एवं बायीं तरफ नीचे शयन करें। देवता आपके अभीष्ट प्रश्न का उत्तर स्वप्न में अवश्य देंगे।

स्वप्नेश्वर मन्त्र-प्रयोग

मन्त्रः—"ॐ नमो सकललोकाय विष्णवे प्रभविष्णवे विश्वाय विश्वरूपाय स्वप्नाधिपतये नमः।"

विधि—गुड़ाकेश (निद्रापति) श्री विष्णुभगवान् का ध्यान करके उल्लिखित मन्त्र का 1000 (एक हजार) बार जाप करें। फिर पूर्व की ओर सिर करके दाहिनी करवट लेट जायें। स्वप्न में प्रश्न का उत्तर सही मिलेगा।

स्वप्न में इच्छित-कार्य का उत्तर पाने के लिए स्वप्नेश्वरी देवी का मन्त्र

मन्त्रः—"ॐ क्षां क्षीं क्षें क्षूं क्षौं क्षः भगवति मम सर्वनिमित्त-ज्ञान-प्रकाशिनि वाग्वादिनि ममाभीप्सितं कार्यं कथय कथय स्वप्ने दर्शय-दर्शय ठः ठः नमः॥"

विधि—इस मन्त्र का जाप शुभ मुहूर्त्त में अर्धरात्रि में प्रारम्भ करें। अर्धरात्रि में 11 माला प्रतिदिन धूप-दीप-नैवेद्यादि-सहित पूर्ण विधि, विश्वास एवं श्रद्धा से करें। सरस्वती माता का ध्यान करके पाठ शुरु करें। ऐसा कुछ दिन करने पर देवी

इच्छित कार्य का उत्तर स्वप्न में ही बता देती है, यह अनुभूत है।

सट्टा-लॉटरी-फीचर प्रत्येक वस्तु की तेजी-मन्दी-ज्ञानार्थ एवं इच्छित कार्य के शुभाशुभ जानने के लिए स्वप्नेश्वर मणिभद्र का मन्त्र

मन्त्रः—**"ॐ नमो माणिभद्र-चेटकाय सर्वार्थ-सिद्धिकराय मम स्वप्ने दर्शनाय कुरु कुरु स्वाहा।"**

विधि—इस मन्त्र का जाप शुभ मुहूर्त में अर्धरात्रि से प्रारम्भ करें। ग्यारह दिन तक कनेर के पुष्पों को उल्लिखित मन्त्रों से नित्य 11 माला करते समय 1008 पुष्पों को अभिमन्त्रित करें। इस प्रकार मन्त्र के अधिष्ठात्री देव स्वप्न में साधक के इच्छित कार्य का उत्तर सही बता देते हैं—यह भी अनेकदा परीक्षित है।

शत्रुओं पर विजय प्राप्त करने के लिए व मुकद्दमा एवं राजकीय कार्यों में फतह हेतु अद्‌भुत-श्री बगुलामुखी मन्त्र प्रयोग

'सिद्धेश्वर तन्त्र' के अनुसार सर्वप्रथम माता बगुलामुखी का निम्नांकित रुप से ध्यान करें—

" सौवर्णासन-संस्थितां त्रिनयनां पीतांशुकोल्लासिनीम्,
हेमाभाङ्गरुचिं शशांक-मुकुटां स्रक्-चम्पक-स्रक्युताम्।
हस्तैर्मुद्‌गर-पाश-बद्धरसनां सम्बिभ्रतीं भूषणै-
र्व्याप्तां-बगुलामुखीं त्रिजगतां संस्तम्भिनीं चिन्तये॥"

इस प्रकार बगुलामुखी माता का ध्यान करके निम्नांकित मन्त्र का जाप विनियोग एवं अङ्गन्यासपूर्वक करें।

विनियोगार्थ मन्त्र (दायें हाथ में जल लेकर)—"ह्रीं ॐ अस्य श्री बगुलामुखि मन्त्रस्य नारद ऋषिः, बृहती छन्दः बगुलामुखी देवता, अभीष्ट-सिद्ध्यर्थं जपे विनियोगः।"

बगुलामुखी मन्त्रजाप से पूर्व अङ्गन्यास इसप्रकार करें—

"ॐ ह्रीं हृदयाय नमः।"

"ॐ बगुलामुखी शिरसे स्वाहा। ॐ सर्वदुष्टानां शिखायै वषट्। ॐ वाचं मुखं स्तम्भय कवचाय हुम्। ॐ जिह्वां कीलय नेत्र-त्रयाय वौषट्। बुद्धिं विनाशय ह्रीं ॐ स्वाहा अस्त्राय फट्॥"

मन्त्रः—**"ॐ ह्रीं बगलामुखी सर्वदुष्टानां वाचं मुखं पदं स्तम्भय, जिह्वां कीलय, बुद्धिं विनाशय ह्रीं ॐ स्वाहा।"**

इस मन्त्र को गुरुमुख से प्राप्त करें और किसी सिद्धस्थल पर गुरु की सन्निधि में इस का पुरुश्चरण करें।

विधि— पीले वस्त्र धारण करके हल्दी की गोटियों की माला बनाकर मन्त्रजाप शुभ मुहूर्त्त में प्रारम्भ करें। पूरी तरह जती-सती रहकर माता बगुलामुखी की पूर्व की ओर मुंह करके प्रियंगु—गेंदा, पीले कनेर आदि (पीतवर्ण) पुष्पों से विधिवत् पूजा करें एवं मन्त्रजाप के बाद हवन की सामग्री में भी पीले पुष्पों का प्रयोग करें—

"प्रियङ्गुकुसुमेनापि पीत-पुष्पैश्च होमयेत्।"

मन्त्रजाप से पहले आसनशुद्धि, भू-शुद्धि एवं अङ्गन्यास आदि करने चाहिएं।

इस प्रकार पूर्ण विधि सम्पन्न करके मन्त्रजाप सद्यः प्रत्यक्ष फलप्रद देखा गया है। यह मन्त्रजाप बहुत ही प्रत्यक्षफलद है।

इस अनुष्ठान के करने पर विरोधीपक्ष हतप्रभ हो जाता है, सर्वविध विघ्न-बाधाएं दूर होकर, गुप्त शत्रु से किंवा राजदरबार में विजयश्री प्राप्त होती है।

कर्जे से मुक्ति एवं धन-धान्यसमृद्धि के लिए श्रीगणेश मन्त्र

गणपति आदिदेव हैं। सर्वप्रथम सर्वत्र इनकी पूजा का ही महत्त्व है। **'अंगारकी चतुर्थी'** किंवा **'गणेश चतुर्थी'** वाले दिन धूप-दीप-नैवेद्य आदि से गणपतिपूजन करके निम्नांकित मन्त्र का जाप करें—

मन्त्रः—"ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं चिरचिर गणपतिवर वरदेयं मम वांछितार्थं कुरु कुरु स्वाहा।"

विधि—देसी घी का ज्योतिप्रकाश जरूर करें। विधिवत् पूजनोपचारान्तर इस मन्त्र का रुद्राक्ष या मूंगे की माला से दस हजार मन्त्रजाप करें। बाद में इसी मन्त्र से 108 आहुतियां डालें। गणपति की स्थापना मौली-आसन पर घर में करके मन्त्रजाप घर या मन्दिर में करें। आहुति पूर्ण होने पर गणेश जी की प्रदक्षिणा, पुष्पांजलि प्रदान करके दक्षिणार्पण करें। पूर्णाहुति एक सुपारी लेकर *सामग्रीसहित*

करें। इस प्रकार तीन पुरुश्चरण करने पड़ेंगे। 'गणेश-सहस्रनाम' का पाठ प्रतिदिन करें। कर्जे से मुक्ति एवं घर में धन-धान्यसमृद्धि की भरमार रहेगी।

सन्तानगोपाल (पुत्र-सन्तान-लाभार्थ सन्तानगोपाल) मन्त्र-प्रयोग

सर्वप्रथम दायें हाथ में जल लेकर कम्बल या कुशा के आसन पर बैठकर मन्त्रोद्घाटन के लिए विनियोग निम्नप्रकार से करें—

"अस्य सन्तानगोपाल-मन्त्रस्य नारद ऋषिः। अनुष्टुप् छन्दः श्रीकृष्णो देवः, ग्लौं बीजम्, नमः शक्तिः अभीष्ट (पुत्र) सन्तान-प्राप्त्यर्थं जपे विनियोगः।" (हाथ में लिये जल को छोड़ दें)—

फिर मन्त्रजाप से पूर्व अंगन्यास निम्नप्रकार से करें—

"ॐ देवकीसुतः हृदयाय नमः, वासुदेव जगत्पते शिरसे स्वाहा, देहि मे तनयं कृष्ण शिखायै वौषट्, त्वामहं शरणं गतः कवचाय हुम्। ॐ क्लीम् देवकीसुत गोविन्द वासुदेव जगत्पते। नेत्रत्रयाय वौषट्, देहि मे तनयं कृष्ण त्वामहं शरणं गतः अस्त्राय फट्॥"

मन्त्रजाप से पहले श्रीकृष्ण वासुदेव जी का ध्यान करें।

सन्तानगोपालमन्त्रः—

"ॐ क्लीम् देवकीसुत गोविन्द वासुदेव जगत्पते।
देहि मे तनयं कृष्ण त्वामहं शरणं गतः क्लीम् ॐ॥"

विधि—इस उल्लिखित मन्त्र का सवालाख जाप करें। तिल, घी एवं शहद को मिलाकर मन्त्रजाप के बाद 10 हजार आहुतियां दें। आम या ढाक की लकड़ी होमार्थ प्रयोग करें। एक हजार संख्या में तर्पण एवं एक सौ बार मार्जन करें। पूजा किंवा अनुष्ठानस्थान पर श्रीकृष्ण का बाललीला-युक्त चित्र रखें। संकल्प-पूर्त्यर्थ प्रार्थना करके पुरुश्चरण पूर्ण करें।

शीघ्र विवाह किंवा शीघ्र वर-प्राप्ति के लिए मन्त्र

मन्त्रः—"ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं सर्व-पूज्ये मंगल-चण्डिके देवि क्लीं श्रीं ह्रीं ॐ।"

विधि—इस मन्त्र की 3 माला प्रतिदिन करके पार्वतीमाता से शीघ्र विवाह हेतु प्रार्थना करें, शीघ्र दाम्पत्य सुख मिलेगा।

लक्ष्मीप्राप्ति के लिए कुबेर मन्त्र

धन-सम्पदा के अधिष्ठाता यक्षाधिपति श्री कुबेर की कृपा से ही धन-धान्य-सम्पदा का लाभ होता है। सर्वप्रथम श्री कुबेर का ध्यान इस प्रकार करें—

गारुड रत्न के सदृश, मनुष्यों द्वारा उठाये गये विमान पर विराजमान, कोशाधिपति, शिवजी के परम मित्र, सुन्दर मुकुट धारण किये हुए वरगद पर निवास करने वाले श्री कुबेर (किंवा गणेश) जी का स्मरण करता हूँ।

मन्त्रः—"ॐ यक्षाय कुबेराय वैश्रवणाय धन-धान्याधिपतये समृद्धिं मे देहि, दापय दापय स्वाहा।"

इस मन्त्र के जाप के बाद लाल पुष्पों से लक्ष्मी माता का ध्यान करें एवं कुबेर जी के निम्न मूल मन्त्र का जाप भी करें—

मन्त्रः—"ॐ श्रीं ॐ ह्रीं ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं वित्तेश्वराय नमः॥"

इस मन्त्र का जाप प्रतिदिन करने से उद्योग-व्यवसाय में मन लगेगा एवं अभूतपूर्व प्रगति के योग बनते हैं, अनुभव करें।

लक्ष्मीप्राप्ति के लिए अनुभूत मन्त्र प्रयोग

निम्नांकित मन्त्र को श्रद्धा एवं विश्वासपूर्वक दीपावली की रात्रि या ग्रहणकाल में यथाशक्ति जाप करें। नवरात्रों में इस मन्त्र का जाप चमत्कारी रहता है। इस मन्त्र का जाप करके श्रीसूक्त या निम्नांकित संक्षिप्त लक्ष्मीस्तोत्र का पाठ करपे से कारोबार में अभूतपूर्व प्रगति एवं घर में वैभव दिखाई देगा।

मन्त्रः—"ॐ श्रीं ह्रीं श्रीं कमले कमलालये प्रसीद प्रसीद श्रीं ह्रीं श्रीं ॐ महालक्ष्म्यै नमः॥"

इस मन्त्रजाप के बाद श्रीलक्ष्मी माता से निम्नांकित स्तोत्ररूप में प्रार्थना करें—

"त्रैलोक्य-पूजिते देवि कमले विष्णु-वल्लभे।
यस्य त्वमचला कृष्णे तथा भव मयि स्थिरा॥
ईश्वरी कमला लक्ष्मीरचला भूति हरि-प्रिया।
पद्मा पद्मालया सम्पदुच्चैः श्रीपद्मधारिणी।
द्वादशैतानि नामानि लक्ष्मीं सम्पूज्य यः पठेत्।
स्थिरा लक्ष्मी भवेत्तस्य पुत्र-दारादिभिःसह॥"

पंचदशी यन्त्र के प्रयोग

यह भगवती दुर्गा की शक्ति का अद्‌भुत शक्तिसम्पन्न यन्त्र है। इस यन्त्र की महिमा को तिब्बत-चीन एवं अरबराष्ट्र भी किसी न किसी रूप में स्वीकार करते हैं।

यन्त्र

२	७	६
९	५	१
४	३	८

नोट—इस यन्त्र को निम्नांकित मन्त्र का दीपावली आदि शुभ मुहूर्त्तों में पुरश्चरण करके सिद्ध अवश्य कर लें, तभी यन्त्रलेखन से चमत्कार अनुभव होगा।

मन्त्रः—

"ॐ सर्वमंगल-मांगल्ये शिवे सर्वार्थसाधिके।
शरण्ये त्र्यम्बके देवि नारायणि नमोऽस्तुते॥"

इस यन्त्र को ग्रहणवेला, गुरुपुष्यामृत, रविपुष्यामृत योग, दीपावली या महाशिवरात्रि की रात्रि में सिद्ध करें। इसके विभिन्न प्रयोगार्थ निम्नांकित विधियों से यन्त्र को लिखकर आश्चर्यजनक फल अनुभव किये गये हैं। देखिये—

1. शत्रु के वशीकरण के लिए:—कस्तूरी, केसर, कपूर की स्याही बनाकर अनार की लेखनी से इस यन्त्र को शुभ मुहूर्त्त में लिखकर दाहिनी भुजा में लाल कपड़े या ताबीज में मढ़ाकर लाल धागे से बांधें, शीघ्र ही आश्चर्यजनक फल मिलेगा।

2. सन्तान-प्राप्ति के लिए:—चमेली की लेखनी एवं अष्टगन्ध की स्याही से यन्त्र को लिखें। स्त्री की कमर में मौली से लाल कपड़े में शुद्धि-अवस्था में बांधें व तुरन्त लाभ लें।

3. शत्रुनाश के लिए:—लोहे की लेखनी एवं रुधिर की स्याही से यन्त्र लिखकर बायीं भुजा में बांधने से शत्रु परास्त होकर मित्रता की तरफ बढ़ने लगते हैं।

4. मुकद्दमे में विजय के लिए:—लालचन्दन व कुंकुम की स्याही बनाकर बबूल (कीकर) के काँटे की लेखनी से यन्त्र को लिखें। लाल धागे से गले में मंगलवार को धारण करें व मुकद्दमे में जाते समय अवश्य धारण करें, विजयश्री का लाभ होगा।

5. स्त्री (पत्नी) वशीकरणार्थ:—चम्पा की लेखनी बनाकर, गोरोचन, कुंकुम किंवा अगर-तगर की स्याही से यन्त्र लिखें। यन्त्र के नीचे नारी का नाम लिखें। चमत्कारी अनुभव लें।

नोट—इस प्रयोग को पराई स्त्री या कन्या के लिए प्रयोग न करें, वरना घर में तबाही एवं मातम होगा—यह नोट कर लें।

6. व्याधि एवं रोग-शान्ति के लिए:—मन्दार के दूध एवं गोरोचन की स्याही बनाकर, पारिजात की लेखनी से यन्त्र लिखकर 7 शनिवार एवं 11 मंगलवारों को जलप्रवाह करें। एक यन्त्र लाल धागे से गले में डालें।

7. लक्ष्मीप्राप्ति एवं व्यापार में वृद्धि के लिए:—केसर, रतनार एवं हल्दी की स्याही व तुलसी, अनार या हल्दी की कलम से इस यन्त्र को लिखकर दुकान या गल्ले में रखें। धनधान्य-समृद्धि रहेगी।

8. सम्मानप्राप्ति के लिए:—गुलाब की लेखनी एवं धतूरे या अष्टगन्ध की स्याही से यन्त्र को शुभवेला में लिखकर धारण करें, यश-मान-सम्मान प्राप्त होगा।

9. भूतप्रेत-बाधाशान्ति के लिए:—सूरजमुखी के फूल के रस की स्याही से एवं सूरजमुखी की लेखनी से इस यन्त्र को शुभ मुहूर्त्त में लिखें, बाधा-ग्रस्त व्यक्ति के गले में लाल कपड़े में बांध दें या घर में शुद्ध जगह बांध दें। बाधा से शान्ति मिलेगी।

दारिद्र्यनाशक तथा नवग्रहों की शान्ति हेतु एक सरलतम अनुभूत तान्त्रिक विधान

मन्त्र:—"ॐ नमो भास्कराय 'अमुकस्य' सर्वग्रहाणां पीड़ा-नाशनं कुरु कुरु स्वाहा।"

नोट—इस मन्त्र में जिस व्यक्ति-विशेष के लिए विधान करना है, **'अमुकस्य'** के स्थान पर उस व्यक्ति का नाम लें। अपने लिए पाठ करें तो 'अमुकस्य' की जगह 'मम' शब्द का प्रयोग करें।

विधि—आक, धतूरा, अपामार्ग (चिरचिटा) की जड़, दूब, बड़ व पीपल की जड़ें, शमी (खेजड़ी) आम एवं गूलर के पत्ते—ये सब चीजें एक मिट्टी के बर्तन में रखकर, उस पात्र में घी-दूध डाल दें। चावल, चना, मूंग, गेहूं, तिल, गोमूत्र, सफेद सरसों, कुशा, चन्दन-शहद, छाछ (मट्ठा)—ये सब वस्तुएं भी उसी कुल्हड़ (मिट्टी के बर्तन) में रखें। तत्पश्चात् शनिवार को सायंकाल 108 बार इस कुल्हड़ को उल्लिखित मन्त्र से अभिमन्त्रित करके एकान्त में किसी पीपल की जड़ के पास गाड़ दें। ऐसा करने से घोर पातक, दरिद्रता, ग्रहजन्य पीड़ा तत्काल समाप्त हो जाती है। इस विधान से अनेकों लाभान्वित हुए हैं—अनुभव करें।

कुछ तान्त्रिकप्रयोग

मुकद्दमे में विजय:—मार्गशीर्ष (अगहन) मास में अपामार्ग (चिरचिटा) की जड़ को शुभ नक्षत्र में उखाड़कर पीले या लाल धागे से दायीं भुजा पर बांध के कोर्ट-कचहरी में जायें तो निश्चित विवाद में विजय होगी।

सर्ववशीकरण तिलक:—शुद्ध सिन्दूर, शुद्ध केसर, शुद्ध गोरोचन—बराबर मात्रा में पीसकर साफ डिबिया में रखें। मस्तक पर इसका तिलक लगायें तो सम्मुखस्थ शासक, जज, स्त्री-पुरुष—सब मोहित (वशीभूत) हो जाते हैं, यह प्रयोग अनेकों विद्वानों द्वारा अनुभूत है।

अखण्ड भण्डार हेतु तान्त्रिक प्रयोग

दीपावली, शिवरात्रि के दिन या कृष्णपक्ष की अष्टमी, चतुर्दशी या गुरु-रवि-पुष्यामृग-योग में मयूरशिखा (एक जंगली जड़ी) लाकर, निम्नांकित मन्त्र द्वारा जड़ी को 108 बार अभिमन्त्रित करके सिन्दूर किंवा कस्तूरी का तिलक लगायें। धूप देकर इस जड़ी को तिजोरी में रखें। अखण्ड लाभ, अखण्ड भण्डार बना रहेगा।

मन्त्र:—"ॐ मयूरशिखा महासुखं सर्वकार्यं साधय साधय स्वाहा।"

नोट—देश के बड़े-बड़े उद्योगपतियों, सेठों, व्यापारियों की तिजोरियों में इस प्रकार की सिद्ध जड़ी लाल कपड़े में बांध कर रखी रहती है।

कारागार से मुक्ति हेतु शाबर मन्त्र

निम्नांकित मन्त्र से पहले गुड़ एवं आटे का पूड़ा बनाकर, केले के पत्ते पर रख लें। पूड़े पर कुंकुम से कैदी का नाम लिख दें। साधना करते समय केले के पत्ते को सामने रखकर, उस पर पुष्प चढ़ायें। मन्त्र जाप पूरा होने पर, उस पूड़े को रात्रि में ही निर्जन स्थान में रखकर, घर आ जायें। इस प्रकार प्रतिदिन कृष्णपक्ष में 15 दिन साधना करें। 15 दिन में सवालाख मन्त्रजाप पूर्ण होने पर उस आखिरी दिन बनाये हुए पूड़े को किसी कन्या को दिन में खिला दें। यथोचित वस्त्र-दक्षिणा भी दें। 108 हनुमान् चालीसा पढ़ें एवं इस मन्त्र का जाप करें। तुरन्त कैदी से मिलने हेतु प्रयास में सफलता मिलेगी।

रात्रि के समय लालकम्बल के आसन पर बैठकर, दक्षिण की ओर मुंह करके, निम्नांकित मन्त्र का जाप मूंगे की माला से करें। सवा लाख मन्त्रजाप करने पर यह आश्चर्यजनक प्रभाव दिखाता है।

मन्त्र:—"ॐ हनुमन्तवीर, वेग आवो, 'अमुक' बन्दी को बन्धन से छुड़ाओ। बेड़ी तोड़ो, ताला तोड़ो, सारे बन्धन तोड़ो। मोड़ो 'अमुक' बन्दी को बन्धन से छुड़ाओ। मेरी भक्ति गुरु की शक्ति फुरो मन्त्र ईश्वरो वाचा॥"

———

मानव-जीवन पर क्रूर (नेष्ट) ग्रहों का प्रभाव एवं मुक्ति के उपाय

लेखक—संयमी शर्मा

इस लेख में सभी ग्रहों के जन्म, प्रश्नाङ्ग या वर्षाङ्गकालिक किंवा दशान्तर्दशा के आधार पर होने वाले नेष्ट ग्रहजन्य कष्टों से मुक्ति प्राप्त करने के शास्त्रीय उपाय लिखे गये हैं। आशा है, कि दैवज्ञ इस लेख में निर्दिष्ट उपाय एवं पूजा-विधान से जनजीवन को नेष्ट ग्रहों से मुक्ति दिलाकर, निश्चित रूप से यश के भागी बन सकेंगे।—**सम्पादक**

जन्मकालिक ग्रहस्थिति का परिशीलन करने से यह बात नितान्त सत्यसिद्ध है कि—जातक के जन्मांग या प्रश्नांग में सभी ग्रह सौम्य नहीं होते, अतः नेष्ट ग्रह अपनी दशा या अपने भावान्तर्गत प्रभावानुसार किसी न किसी रोग से जातक के जीवन को दुर्धर बना देता है। इस लेख में इसी दृष्टि से हम प्रत्येक ग्रह के नेष्टफल का स्पष्टीकरण करके **उपायादि** लिख रहे हैं—

1. सूर्य नेष्ट हो तो—

"सदा शिरोरुग् ज्वर-बुद्धिदीपनम्,
क्षयातिसारादिक-रोगसंकुलैः।
नृपाल-देवावनि-देव-किन्नरैः
करोति चित्त-व्यसनं दिवाकरः॥"

अर्थात्—यदि सूर्य नेष्टफलप्रद हो तो नित्य सिर में पीड़ा, ज्वर रोग एवं बुद्धि को विकृत करता है। क्षय (तपेदिक), अतिसार (दस्त) इत्यादि रोग-समूहों से एवं राजा, देव एवं ब्राह्मणों के रोष से परेशानी होती है।

सूर्य-नेष्टफल-शान्त्यर्थ—

सूर्य का 7000 (सात हजार) संख्या में मन्त्रजाप करें। जप का प्रारम्भ शुक्लपक्ष के रविवार को शुभ मुहूर्त्त में सूर्योदय से करें।

सूर्य का मन्त्र—

"ॐ ह्रां ह्रीं ह्रौं सः सूर्याय नमः।"

पाठ करते समय तांबे के बर्तन में शुद्ध जल, चावल, लाल चन्दन, लाल कनेर के फूल, गंगाजल एवं गुड़ से भरकर लालपात्र को लाल वस्त्र किंवा आम के पत्तों से ढककर रखें।

निम्नांकित सूर्य के निमित्त दान वस्तुओं को भी पास में रखें और पाठान्त में इनका दान करें। वस्तुएं ये हैं—

गेहूं, लाल चन्दन, गुड़, लालपुष्प, लालवस्त्र, घी, लालरंग की गाय, सोना, ताम्रपत्र, नारियल एवं मिष्ठान्न।

सूर्य नेष्टफलप्रद हो तो **सूर्य का रत्न माणिक्य** (माणिक, Ruby) धारण करने से उत्तम लाभ मिलेगा, क्योंकि इस रत्न के अधिष्ठाता—**'सूर्यनारायण'** ही हैं।

माणिक की पहचान—इसे कांच के बर्तन में रखने से इसके चारों ओर हल्की किरण दिखाई देगी। **अपिच**—इस रत्न को यदि गाय के दूध में रखें तो दूध का रंग गुलाबी दिखाई देगा। शुद्ध माणिक चिकना, पानीदार, भारी व कनेर के पुष्प जैसा लालरंग का होता है।

धारणविधि—**'माणिक'** रत्न को रवि-पुष्यामृत योग (इतवार वाले दिन पुष्य नक्षत्र हो,उस दिन) में या रविवार को सूर्य की होरा में, उ.फा. किंवा उ.षा. नक्षत्र में सोने या तांबे की अंगूठी में मढ़ाकर अनामिका अंगुली में धारण करें। रत्नधारण करने के बाद गायत्री मन्त्र की 3 माला एवं तीन माला सूर्यमन्त्र की करें।

लाभ—राजकीयक्षेत्रों में प्रतिष्ठा, भाग्योदय, सन्तानलाभ, प्रभावक्षेत्र में वृद्धि, हृद्रोग व नेत्रकष्ट से मुक्ति, रक्तचाप एवं दुर्बलता आदि से राहत मिले।

विशेष—मेष, कर्क, सिंह, तुला, वृश्चिक एवं धनु लग्न में जन्मे व्यक्तियों को **माणिक्य** धारण करना लाभप्रद रहता है। नीचस्थ सूर्य (तुलाराशिस्थ सूर्य) हो तो **माणिक्य** अवश्य धारण करें।

2. चन्द्र नेष्ट हो तो—

"पाण्डुदोषो जलदोष-कामला
पीनसादि रमणी-कृतामयैः।
कालिकासुर-सुवासिनी-गलै-
राकुलं च कुरुते तु चन्द्रमाः॥"

अर्थात्—चन्द्र नेष्टफलप्रद हो तो जातक पाण्डुरोग (पीलिया रोग), जलोदर, कामला, नासिकाजन्य रोग, स्त्री-संसर्गजन्य रोग एवं स्त्री व यक्ष-राक्षसादि गणों से चित्त में विभ्रम अथवा अस्थिरता का वातावरण बनता है।

चन्द्र-नेष्टफल-शान्त्यर्थ—

चन्द्रमा के बीजमन्त्र का 11000 (ग्यारह हजार) बार जाप करके दशांश हवन करना श्रेयस्कर रहेगा। मन्त्रजाप का प्रारम्भ पूर्णिमा या शुक्लपक्ष के सोमवार को शुभ मुहूर्त्त में करना चाहिए।

चन्द्रमा का बीजमन्त्र—

"ॐ श्रां श्रीं श्रौं सः चन्द्रमसे नमः।"

चन्द्रमा के निमित्त निम्न वस्तुओं का दान भी मन्त्रजाप के बाद स्वस्थ रहने की भावना से प्रार्थनापूर्वक करें।

दान-वस्तुएं—सफेद चन्दन, शंख, कपूर, घी, दही, चावल, मिश्री, श्वेत वस्त्र, श्वेत पुष्प, मिठाई, चांदी, चीनी, खीर के दान के बाद यथाशक्ति दक्षिणा दें।

चन्द्रशान्ति हेतु कुछ अन्य प्रयोग—

(i) यदि चन्द्र अशुभ स्थिति में हो तो चांदी के बर्तन में भोजन करें एवं अपनी चारपाई के पायों में चांदी के कील ठुकवाने चाहिएं।

(ii) सफेद मोती की माला या चांदी की अंगूठी में **मोती** मढ़ाकर चिचली अंगुली में धारण करें।

(iii) कांच का बर्तन प्रयोग में न लायें।

(iv) पानी में कच्चा दूध डालकर सोमवार को चन्द्रमन्त्र बोलते हुए शिवलिंग का अभिषेक करायें या पीपल सींचें।

चन्द्ररत्न धारण करें—चन्द्रग्रह-नेष्टफल-शान्त्यर्थ **मोती** चांदी की अंगूठी में मढ़ाकर, शुक्लपक्ष के सोमवार को या पूर्णिमा के दिन चन्द्रहोरा में गंगाजल से धोकर कनीष्ठिका अंगुली में धारण करें।

लाभ—मन की शान्ति, स्मरणशक्ति बढ़े। मूर्छा, मिर्गी, उन्माद (पागलपन), रक्त-उदर-विकार, पथरी एवं दन्तरोग से राहत मिलती है।

विशेष—मेष, वृष, मिथुन, कर्क, तुला, वृश्चिक एवं मीन राशि वाले जातकों को मोती धारण करना शुभ रहता है। मानसिक शक्ति का विकास, सौन्दर्य, स्त्री/धनसुख-लाभ भी प्राप्त होता है।

शुद्ध (सुच्चे) मोती की पहचान—मोती चिकना, हल्का, कान्तियुक्त होता है। गोमूत्र में रखने पर खण्डित नहीं होता। पानी से भरे कांच के बर्तन में मोती रखने से पानी में से किरणें निकलने लगती हैं। मोती के अभाव में **चन्द्रकान्त-मणि** या **श्वेत पुखराज** भी धारण कर सकते हैं।

3. मंगल नेष्ट हो तो—

यदि जन्मांग, प्रश्नांग किवा वर्षलग्न या दशान्तर्गत मंगल नेष्टफलप्रद हो तो निम्नांकित रोगों/परेशानियों का कारण बनता है—

" पीनबीज-कफ-शस्त्र-पावक-
ग्रन्थिरुग्-ब्रण-दरिद्रजामयैः।
वीर-शैव-गण-भैरवादिभि
र्भीतिमाशु कुरुते धरासुतः॥"

अर्थात्—यदि मंगल अरिष्ट फलप्रद हो तो अण्डकोष सम्बन्धित रोग, कफ आदि से कष्ट, शस्त्र से (किवा शत्रु से) चोटभय, अग्निकाण्ड से हानि, ग्रन्थिरोग (कैंसर आदि से कष्ट) घाव का रिसना, दारिद्र्य से मन की परेशानी से जातक कष्ट पाता है।

मंगल-नेष्टफल-शान्त्यर्थ—

मंगल ग्रह के बीजमन्त्र का 10,000 (दस हजार) संख्या में जाप करें। मन्त्रजाप शुक्लपक्ष के मंगलवार को प्रारम्भ करें।

मंगल ग्रह का बीजमन्त्र—

"ॐ क्रां क्रीं क्रौं सः भौमाय नमः।"

मंगलवार को सोना, चांदी या तांबे की अंगूठी में चिचली अंगुली के साथ वाली अंगुली में **मूंगा** धारण करें।

मूंगाधारण विधि—शुक्लपक्ष के मंगलवार को मृगशिरा, चित्रा, धनिष्ठा नक्षत्र किवा मेष, मकर, वृश्चिक लग्न में, ६, ८, १०, १२ रत्ती वजन का **मूंगा** सोना या तांबे की अंगूठी में मढ़ाकर धारण करें। यदि क्रोध बढ़ने की सम्भावना हो तो मूंगा चांदी में धारण करें। तत्पश्चात् निम्न वस्तुओं की दानादि प्रक्रिया प्रारम्भ करें।

मंगल-नेष्टफल-शान्त्यर्थ दान में देय वस्तुएं—

गेहूं, लाल फल, लाल बैल, घी, मूंगा, लालवस्त्र, केसर, नारियल, गुड़ से बने पूए या रोटी, मसूर आदि का दान युवा ब्राह्मण को ही दें। भौमवती अमावस को गायों को गुड़ खिलायें।

भौमशान्ति हेतु कुछ अन्य उपाय—

(i) मूंगा धारण करना सम्भव न हो तो तांबे का कड़ा धारण करें।

(ii) मंगलवार को घर में गुलाब का पौधा लगावें। रात को तांबे के बर्तन में पानी सिरहाने रखकर प्रातः गुलाब के पौधे को सींचें। ऐसे 108 बार करें।

(iii) मंगल के व्रत करें, गुड़ से बना पक्वान्न किसी अपाहिज को दें।

(iv) लाल रंग की गाय या कुत्ते को गुलगुले मंगलवार को दें।

(v) रामभक्त श्री हनुमान् जी को मंगलवार वाले दिन मन्दिर जाकर बदाना चढ़ावें।

मूंगे के लाभ—श्रेष्ठ मूंगा धारण करने से भूमि का लाभ, भाई का सुख, निरोगता, कुष्ठ व त्वचारोग,रक्तविकार से मुक्ति मिलती है। भूतप्रेत-बाधा दूर हो। वायु-कफ-हृदयरोग-उदर विकार के लिए प्रवाल-पिष्टी-मूंगे की भस्म उपयोगी है।

विशेष—कर्क, सिंह, तुला, वृश्चिक, मकर, कुम्भ, मीन राशि व लग्न वालों को मूंगा धारण करना लाभप्रद है। मंगल नीच हो तो सफेद मूंगा भी लाभप्रद रहता है।

4. बुध नेष्ट हो तो—

बुध ग्रह यदि जन्मांग-वर्षांग किंवा प्रश्नांग में नेष्टफलप्रद हो तो निम्नांकित रोगों से परेशान करता है—

> **"गुह्योदरादृश्य-समीर-कुष्ठ-**
> **मन्दाग्नि-शूल-ग्रहणी-रुगाद्यैः।**
> **बुधादि-विष्णुप्रियदास-भूतै-**
> **रतीव दुःखं शशिजः करोति॥"**

अर्थात्—बुध अरिष्ट फलप्रद हो तो गुप्त रोग, उदर-व्याधि, अदृश्य-वायु (पैरेलैसिस आदि) रोग, कोढ़ (कुष्ठ) रोग, अजीर्ण, शूलरोग, ग्रहणी (Loose motion) आदि रोगों से परेशानी देता है। **किंच**—विष्णुजी के अव्यक्तदासों को नेष्ट बुधग्रह अत्यन्त दुःखद होता है।

बुध अशुभ होने से भगवान् विष्णु का ध्यान करके शुक्लपक्ष में जेठे बुधवार से बुध ग्रह के बीजमन्त्र का जाप प्रारम्भ करना चाहिए। इस बीज मन्त्र की जपसंख्या 19000 (उन्नीस हजार) होनी चाहिए।

बुध का बीजमन्त्र—

"ॐ ब्रां ब्रीं ब्रौं सः बुधाय नमः।"

नेष्ट बुध-शान्त्यर्थ कुछ अन्य उपाय—

(i) हरे रंग का पन्ना सोने की अंगूठी में बुधवार को गंगाजल से धोकर,बुधमन्त्र से अभिमन्त्रित कराकर, कनिष्ठिका अंगुली में धारण करें।

(ii) हरे रंग के फल दान करें। हरे रंग के वस्त्र भी पहनें।

(iii) हरे रंग के फल एवं चूड़ियां किसी कन्या को दें।

(iv) कांसे के छोटे-छोटे 2/3 टुकड़े हरे रंग के वस्त्र में बांधकर पूजास्थल में रखें।

बुध के रत्न पन्ना की धारणविधि—पन्ना ३, ६ या ७ रत्ती का लेकर शुक्लपक्ष में बुधवार को आश्लेषा, ज्येष्ठा, रेवती, पू.फा. किंवा पुष्य नक्षत्र के समय सोने की अंगूठी में मढ़वाकर धारण करें। तत्पश्चात् पीछे दिये बुधमन्त्र की 5 माला जाप करें।

शुद्ध पन्ने की पहचान—यह रत्न स्वच्छ, पारदर्शी, कोमल, चिकना व हरे रंग का, सुन्दर,चमकदार होता है। इसे शीशे के गिलास में साफ पानी में डालने पर हरी किरणें दिखाई देती हैं। असली पन्ना हाथ में रखने पर आंखों को शीतलता देता है।

बुध के निमित्त दानयोग्य वस्तुएं—

मूंगी, हरे फल, हरे फूल, छोटी इलायची, कांस्यपात्र, पन्ना रत्न, सोना, हाथी-दांत, हरी सब्जी, हरा कपड़ा एवं गाय के लिए हरा चारा।

पन्ने के लाभ—पन्ना धारण करने से स्मरणशक्ति एवं बुद्धि प्रखर होती है। यह रत्न जादू-टोना, रक्तविकार से मुक्त करता है। दमा, नेत्ररोग, गुर्दे के विकार, मानसिक विकलता किंवा बहुमूत्र रोग से राहत मिलती है।

विशेष—वृष, मिथुन, मकर व मीन राशि वाले व्यक्तियों को पन्ना धारण करना चाहिए। यह रत्न विद्या-बुद्धि में प्रखरता एवं व्यापार में प्रगतिकारक है। यह सुखकारक एवं आरोग्यप्रद है।

5. गुरु नेष्ट हो तो—

जब जातक की कुण्डली-वर्षलग्न, प्रश्नांग व दशान्तर्दशा में गुरु ग्रह नेष्टफलप्रद हो तो निम्नांकित रूप से कष्टप्रद रहता है—

> **"आचार्य-देव-गुरु-भूसुर-शापदोषैः**
> **शोकं च गुह्यरुजमिन्द्रगुरुः करोति॥"**

अर्थात्—गुरु के नेष्टफलप्रद होने से आचार्य, देवता, गुरु (आयुवृद्ध, विद्यावृद्ध व्यक्ति) किंवा सदाचारी तपस्वी ब्राह्मणादि की उपेक्षा किंवा अपमानजन्य शापादि से जातक को गुप्त (तिल्ली, पीलिया आदि) रोगों से शोकातुर होकर जीवनयापन करना पड़ता है।

गुरु के नेष्टफल-शान्त्यर्थ उपाय—

शुक्लपक्ष में गुरुवार वाले दिन बृहस्पति ग्रह के बीजमन्त्र का जाप करना चाहिए। गुरु ग्रह के बीजमन्त्र का 19000 (उन्नीस हजार) मन्त्रजाप करना चाहिए।

बीजमन्त्र—**"ॐ ग्रां ग्रीं ग्रौं सः गुरवे नमः।"**

गुरुग्रह-शान्त्यर्थ कुछ अन्य उपाय—

(i) केसर का मस्तक पर तिलक लगायें या केसर की पुड़िया जेब में रखें।

(ii) गुरु-पुष्य योग में केले की जड़ का अंश दायीं भुजा या सीधे हाथ पर धारण करें। (सोना या चांदी में जड़ाकर भी धारण कर सकते हैं।)

(iii) गुरु ग्रह के सर्वोत्तम सुख के लिए पीला (असली) '**पुखराज**' धारण करें।

पुखराज की पहचान—पुखराज चिकना, हाथ में लेने पर भारी, पारदर्शी होता है एवं कसौटी पर घिसने पर इसकी चमक में वृद्धि होती है। यदि असली पुखराज को चौबीस घण्टे दूध में रखा जाये तो चमक या पीलेपन में अन्तर नहीं आता।

पुखराज-धारणविधि—पुखराज ३, ५, ७, ९ या १२ रत्ती वजनी हो, सोने की अंगूठी में मढ़वाकर गुरु-पुष्यामृत योग में या शुक्लपक्ष के वीरवार वाले दिन पुनर्वसु, विशाखा, पू.भा. नक्षत्र में धारण करें।

पुखराज की जगह (यदि पुखराज धारण करने में असमर्थ हों तो) गुरु का उपरत्न '**सुनैहला**' भी पुखराज की तरह धारण किया जा सकता है। इष्टदेव का स्मरण करके किसी विद्वान् ब्राह्मण से पुखराज की पूजा एवं शुद्धि कराकर पहनें। पहनने के बाद गाय को चारा डालें एवं गुरु के निमित्त निम्न दानादि विधान करें।

गुरु के निमित्त दान-वस्तुएं—

(हल्दी से रंगे) पीले चावल, पुखराज, चने की दाल, केला आदि पीले फल एवं पीले फूल, बेसन के लड्डू, पीलावस्त्र, शक्कर, लवण एवं मिठाई दान करें।

पुखराज के लाभ—पुखराज धारण करने से प्रेतबाधा से मुक्ति मिले, गृहस्थ किंवा स्त्रीसुख की बाधाएं दूर हों। चिकित्साशास्त्र के अनुसार पुखराज की भस्म शहद या केवड़ा में मिलाकर अनुभवी वैद्य के परामर्श से सेवन करने पर तिल्ली, पाण्डुरोग, खांसी, दन्तरोग, पीलिया, बवासीर, मन्दाग्नि एवं पित्तज्वर आदि रोग भी शान्त हो जाते हैं।

विशेष—मेष, धनु, मीन, कर्क एवं वृश्चिक राशि वालों के लिए पुखराज धारण करना लाभदायक है।

यदि किसी छोटे-मोटे कीट ने काट लिया हो तो पुखराज को घिसकर लगाने से भी लाभ अनुभव किया गया है।

६. शुक्र नेष्ट हो तो—

जन्मांग आदि में शुक्र ग्रह के नेष्टफलप्रद होने से जातक को क्या कष्ट उठाने पड़ते हैं?—यह जानिये—

"कान्ता-विकार-जनि मेह-रुजा सुराद्यैः।
स्वेष्टाङ्गना-जन-कृतैर्भयमासुरेज्यः ॥"

अर्थात्—शुक्र अरिष्टफलप्रद हो तो स्त्री संसर्ग से होने वाले अनेक प्रकार के गुप्तरोग, प्रमेह, फिरंग रोग आदि भयंकर रोग एवं ऐशोइशरत में शराब आदि सेवन से क्षय (टी.बी.) आदि रोग, अपने इष्टमित्रों की एवं स्व किंवा परस्त्री आदि की संगति किंवा छूआछूत से जातक असाध्य रोगों से ग्रस्त हो जाता है।

शुक्र-शान्त्यर्थ कुछ उपाय—

(i) चांदी के दीपक में कपूर व चन्दन की अगरबत्ती जलायें।

(ii) कमरे में सफेद वस्त्र एवं सफेद पर्दे लगायें। घर में तुलसी के पौधे लगायें, पूजा करें।

(iii) पांच शुक्रवार दूध दान करें एवं गाय को गुड़ दें।

(iv) पंचमी या अष्टमी को 5 कन्याओं को भोजन करायें।

(v) शुक्र का यन्त्र चांदी के पत्र पर लिखकर निर्जन स्थल पर नीम के वृक्ष के नीचे दबायें।

(vi) शुक्रमन्त्र का प्रतिदिन पाठ करें।

शुक्र का बीज मन्त्र—

"ॐ द्रां द्रीं द्रौं सः शुक्राय नमः।"

इस मन्त्र का जाप शुक्लपक्ष के शुक्रवार को प्रातः-सायं शुभ मुहूर्त में प्रारम्भ करें।

शुक्र के दानार्थ वस्तुएं—चांदी, दूध, दही, घी, सोना, मिसरी, श्वेत वस्त्र, सफेद फूल, मिष्ठान्न एवं दक्षिणा दें।

शुक्र का रत्न 'हीरा'—हीरा बहुमूल्य रत्न है, इसे गले में सोने की चेन में या अंगुली में शुक्रवार को शुक्रमन्त्र से अभिमन्त्रित करके धारण करें।

हीरा रत्न की पहचान—

(i) हीरे को यदि पिघले घी में डाला जाये तो घी जमने लगता है।

(ii) धूप में हीरा रखने पर इन्द्रधनुष जैसी किरणें निकलती हैं।

(iii) अंधेरे में हीरा चमकता है।

हीरा धारण करने की विधि—शुक्लपक्ष में, शुक्रवार, शुभ घड़ी (मुहूर्त) में भरणी, पुष्य, पू.फा. किंवा पू.षा. नक्षत्र के समय सोने की अंगूठी में धारण करें। हीरा धारण करने से पहले हीरा रत्न की किसी विद्वान् पण्डित से हीरे का जागरण कराना एवं शक्तिसम्पन्न बनाना जरूरी है, अन्यथा हानि भी कर सकता है।

हीरे के लाभ—हीरे का ज्योतिर्विज्ञान एवं चिकित्साशास्त्र में अत्यधिक महत्त्व है। हीरा धारण करने से प्रभावक्षेत्र बढ़ता है। सर्वत्र सफलता, मनोबल प्रबल होकर रोग-निरोधक क्षमता बढ़ती है। व्यावसायिक तरक्की एवं बड़े लोगों से मेल-मुलाकात होती है। शारीरिक दुर्बलता, वीर्यविकार, हृद्रोग, सूखारोग, नपुंसकता एवं मानसिक रोगों में विशेष रूप से हीरा भस्म सेवन करने पर आश्चर्यजनक रूप से प्रभावकारी सिद्ध होती है।

विशेष—वृष, मिथुन, कन्या, तुला, मकर राशि वाले व्यक्तियों के लिए हीरा रत्न शुभप्रद है। यह रत्न मध्यमा अंगुली में धारण करें।

7. शनि नेष्ट हो तो—

जन्मांग-वर्षलग्न, प्रश्नांग किंवा महादशान्तर्दशा में यदि शनि नेष्टफलप्रद हो तो निम्नांकित प्रमाणानुसार कष्टप्रद होता है—

" दारिद्र्य-दोष-निजकर्म-पिशाच-चौरैः ।
क्लेशं करोति रविजः सहसन्धि-रोगैः॥"

अर्थात्—नेष्ट शनि घर में दरिद्रता को देता है। व्यवसाय में हानि, अपने भी पराये हो जाते हैं, शुभ कार्य में मन नहीं लगता। वृत्ति पैशाची (खानपान दूषित) हो, चोरी ठगी से हानि, पूर्वजन्म के कर्मफल भी भोगने पड़ते हैं। शरीर में विशेषत: घुटने आदि सन्धि-स्थल वायुरोग से पीड़ित होते हैं। इस दशा में जातक पक्षाघात से भी पीड़ित देखे गये हैं।

शनि-शान्त्यर्थ कुछ उपाय—

(i) शनि का व्रत व शनिस्तोत्र का पाठ करें।

(ii) नीलम रत्न धारण करें या काले घोड़े की नाल (खुरी), जो दायें पैर की हो, उसका छल्ला बनाकर धारण करें। या पुरानी नौका की कील का छल्ला बनाकर मध्यमा अंगुली में धारण करें।

(iii) शनिवार को नीले वस्त्र धारण करें।

(iv) अपने खाने में से पहले रोटी निकालकर काले कुत्ते को दें।

(v) शनिवार कच्ची लस्सी से पीपल सींचा करें। सूर्यास्त के बाद सरसों के तेल का चौमुखा दीपक पीपल के नीचे जलायें। दक्षिणमुखी हनुमान् जी की आराधना करें।

शनि का बीज मन्त्र—

" ॐ प्रां प्रीं प्रौं सः शनये नमः ।"

इस बीजमन्त्र का जाप शनिकष्ट से मुक्ति के लिए रामबाण है। शुक्लपक्ष या अमावस वाले दिन शनिवार को इस मन्त्र का जाप शुरु करें। 23 हजार मन्त्र जाप करने से शान्ति लाभ होगा। मन्त्रजाप के बाद निम्न वस्तुओं का दान करें।

शनि के दानार्थ वस्तुएं—

नीलम रत्न, तेल से पूर्ण लोहे की कटोरी मुंह देखकर दें। उड़द, सरसों का तेल, काले वस्त्र में काले तिल, चमड़े का जूता, छतरी, भैंस, कस्तूरी, नीले फूल—इनमें से यथासम्भव दान करें।

शनि का रत्न नीलम—

नीलम कीमती रत्न है, इसे धारण करने से पहले नीले कपड़े में बांधकर रात्रि में सो जायें। यदि शुभ दृष्टान्त हो तो धारण करें, अन्यथा दानादि से ही काम चलायें।

नीलम रत्न की पहचान—नीलम को यदि गाय के दूध में रखा जाये तो दूध का रंग नीला लगने लगता है। यदि पानी भरे कांच के गिलास में नीलम रखा जाये तो पानी में नीली किरणें दिखाई देंगी।

नीलम रत्नधारण-विधि—नीलम ३, ५, ७, ९ या १२ रत्ती लेकर लोहे की अंगूठी अथवा सोने की अंगूठी में मढ़ाकर शुक्लपक्ष के शनिवार को, शतभिषा नक्षत्र में मध्यमा अंगुली में धारण करें।

लाभ—नीलम धारण करने से धन-धान्य-समृद्धि, यश, कीर्ति, सर्विस, व्यवसाय एवं वंशवृद्धि हो। औषधरूप से नीलम से दमा, क्षय, कुष्ठरोग, अजीर्ण, ज्वर, खांसी, नेत्ररोग किंवा मस्तिष्क-विकृति में भी लाभ होता है।

विशेष—नीलम हमेशा 24 घण्टे बाद प्रभाव दिखाता है। इसकी अनुकूलता-ज्ञानार्थ रुई में नीलम रात को सिरहाने रखकर सो जाना चाहिए। यदि गलत स्वप्न आयें या कोई विकार हो तो नीलम न पहनें। नीलम मकर, कुम्भ राशि वालों को धारण करना यश-मान देने वाला है।

8. राहु नेष्ट हो तो—

राहु नेष्ट ग्रहों के साथ हो या क्रूर ग्रहों के प्रभाव से नेष्टफलप्रद हो, जन्मांग, वर्षलग्न, प्रश्नांग आदि से इस ग्रह के नेष्टफल का ज्ञान करके इससे रोगज्ञान इस प्रकार जानें—

" करोत्यपस्मार-मसूरि-रज्जू-
क्षुद्रकृमि-प्रेत-पिशाच-भूतैः।
उदबन्धनाच्चारुचि-कुष्ठरोगै
विधुन्तुदश्चाति भयं करोति॥"

अर्थात्—नेष्टग्रहों से युक्त राहु किंवा नेष्टफलप्रद राहु अपस्मार (मिर्गी रोग), ब्रह्मसुतली, शीतला प्रकोप, पेट में कीड़े, प्रेत पिशाचपीड़ा, कोष्ठबद्धता से भोजन में अरुचि एवं कुष्ठादि त्वचा रोगों से जीवन को दुर्धर बना देता है।

राहु-शान्त्यर्थ कुछ उपाय—

यदि राहु अशुभ फलप्रद हो तो निम्न उपाय करें—

(i) काले व नीले वस्त्र धारण न करें।

(ii) प्रतिदिन चपाती (रोटी) पर दही, चीनी रखकर कौए व काले कुत्ते को देते रहें।

(iii) बुधवार शाम को एवं शनिवार को सात कच्चे कोयले राहु का बीजमन्त्र बोलते हुए जल में प्रवाहित करें।

राहु का बीजमन्त्र—

"ॐ भ्रां भ्रीं भ्रौं सः राहवे नमः।"

इस मन्त्र का जाप अठारह हजार बुधवार या शनिवार को करें। मन्त्रजाप करने के बाद दानादि प्रक्रिया (सूर्यास्त बाद) रात्रि में करें। यदि रात में दान लेने वाला न मिले तो रात्रि में दान-संकल्प करके दूसरे दिन दे दें।

राहु के दान की वस्तुएं—

सात अनाज, तेल, स्वर्ण या चांदी का नाग, उड़द, लौहशस्त्र (चाकू आदि), काला वस्त्र, तिल, गोमेद, नारियल, लौंग, मिठाई व दक्षिणा भी दें।

राहु का रत्न गोमेद—गोमेद का रंग गोमूत्र जैसा होता है।

गोमेदधारण-विधि—राहु के नेष्टफल की शान्ति के लिए गोमेद रत्न को शनिवार किंवा बुधवार सायंकाल के समय गंगाजल-दूध से धोकर स्वाती-शतभिषा-आर्द्रा नक्षत्र के समय पंचधातु अथवा लोहे की अंगूठी में धारण करना चाहिए। रत्न धारण करने के बाद बीजमन्त्र का जाप करके सप्तधान्य एवं काले कम्बल का दान करना चाहिए। इस रत्न को मध्यमा अंगुली में धारण करें।

गोमेद के लाभ—मुकद्दमा आदि राजकीय कामों में विजय, धनसम्पदा की वृद्धि, त्वचा रोगों से मुक्ति एवं मानसिक तनाव से राहत मिलती है।

विशेष—जिस व्यक्ति की कुण्डली में १, ६, ७, ९वें भाव में राहु हो तो गोमेद अवश्य धारण करें। केन्द्र या त्रिकोण में राहु-केतु केन्द्रेश किंवा त्रिकोणेश के साथ हों तो ये छायाग्रह उत्तम लाभप्रद सिद्ध होते हैं—

"यदि केन्द्रे त्रिकोणे वा निवसेतां तमोग्रहौ।
नाथेनान्यतरेणापि सम्बन्धाद्योग-कारकौ॥"

9. केतु नेष्ट हो तो—

केतु जन्मांगादि में नेष्टफलप्रद हो तो जातक निम्न शारीरिक कष्टों से दुःखी रहता है—

"कण्डु मसृरि रिपु कृत्रिम कर्म-रोगैः
स्वाचार-हीन लघुजाति गणश्च केतुः॥"

अर्थात्—केतु अरिष्टफलप्रद हो तो खुजली, खस्सड़ (छोटी माता), मसूरिका, शत्रुजनित तथा पूर्वजन्मकृत कर्म रोगों से परिपीड़ित रहता है। नेष्ट केतु जातक को चरित्रहीन बनाता है एवं नीच व्यक्तियों द्वारा परेशान किंवा अपमानित भी कराता है या नीच व्यक्तियों की संगत कराता है।

केतु-शान्त्यर्थ कुछ उपाय—

(i) शनिवार किंवा बुधवार सायंकाल काले तिल एवं कच्चे कोयले पानी में प्रवाहित करें।

(ii) कुत्ते को दूध पिलायें एवं गाय को हराचारा डालें।

(iii) चींटियों को तिल-चावल डालें एवं रामनाम की गोलियां मछलियों को डालें।

केतु का बीजमन्त्र—

"ॐ स्त्रां स्त्रीं स्त्रौं सः केतवे नमः।"

इस बीजमन्त्र का जाप 17 हजार बार करना चाहिए।

मन्त्रजाप के बाद निम्नांकित वस्तुओं का दान करें—

लहसुनिया रत्न, सप्तधान्य, लोहा, नारियल, काले वस्त्र में काले तिल, तेल, चाकू, मिठाई एवं दक्षिणा दें।

केतुरत्न लहसुनिया—लहसुनिया को 'Cat's Eye' भी कहते हैं। बुधवार को लहसुनिया पुष्य, अश्विनी या मूल नक्षत्र के समय अष्टधातु में मढ़ाकर कनिष्ठिका (छोटी अंगुली) में धारण करें। अंगूठी बुध-शनिवार को ही धारण करें। अष्टधातु में यह खराब नहीं करता।

लहसुनिया की पहचान—यदि इसे हड्डी पर रखें तो 2/4 दिन में हड्डी में छेद कर सकता है।

लहसुनिया के लाभ—लहसुनिया धारण करने से बुद्धि सत्कर्म में लगेगी। प्रेतपीड़ा-कुसंग शत्रु एवं रोग से मुक्ति प्राप्त होगी।

विशेष—सन्तानसुख, धनवृद्धि, बुद्धिविकास हेतु लहसुनिया अत्यन्त लाभप्रद है।

नवग्रहों से सम्बन्धित रत्नों का मनुष्यजीवन पर प्रभाव, 'रत्न–शुद्धिपरीक्षण' एवं नवग्रहजन्य–दोष–शान्त्यर्थ "दिव्य वनौषध–प्रयोग"

लेखक–संयमी शर्मा

प्रायः पूर्णचन्द्र की स्थिति में समुद्र का गाम्भीर्य डोल जाता है। ज्वारभाटा के कारण शान्त किंवा अपनी सीमा का अतिक्रमण न करने के लिए प्रसिद्ध समुद्र में भी ज्वारभाटा से विक्षोभ पैदा हो जाता है। यह सततसत्य है कि– विश्व की प्रत्येक वस्तु का प्रभाव जीवन्त–प्राणी पर पड़ता ही है। " **पृथ्वी के गर्भ से हजारों साल परिपक्वावस्था में प्राप्त रत्नों की प्राप्ति भी हमारे जीवनपर प्रभाव डालती है** "–यह शास्त्रों में प्रत्येक ग्रह से सम्बन्धित–रत्नों से हमारे अनुभव में आई है।

पुरातन ग्रन्थों के अनुसार रत्नों की उत्पत्ति दैत्यराज–बलि एवं दधीचि के शरीर से हुई है। प्रत्येक रत्न की उत्पत्ति इनके अंगविशेष से हुई है, अतः ये रत्न जिस–जिस अंग से उत्पन्न हुए हैं, उस–उस अंग के लिए अधिक उपयोगी हैं। लेकिन आधुनिक भूगर्भ–शास्त्री इन्हें कोल–माईन एवं समुद्र में हजारों साल तपते रहने के बाद पत्थरों, हड्डियों, कोल आदि के परिवर्तन से प्राप्त होते हैं– ऐसा मानते हैं।

सूर्य–सभी ग्रहों का राजा ' **सूर्य** ' यदि स्वराशि में (सिंहस्थ) हो किंवा उच्च हो एवं नवांश में अच्छी स्थिति में किंवा वर्गोत्तम हो तो जातक को धन–धान्य–समृद्धि, मान–सम्मान, प्रभावक्षेत्र में प्रगति, सुबुद्धि एवं प्रतिष्ठत पदाप्ति देने वाला होता है। कुटुम्ब में सुख–शान्ति एवं परिवार में अपनी दशा–अवान्तर में शुभकार्य कराता है। नेत्ररोग के लिए सूर्य की पूजा, नेत्रोपनिषद् का पाठ रामबाण औषध है– यदि सूर्य शुभलक्षण युक्त हो।

सूर्य के शुभलक्षण–

" अमल–वपुरवक्रमंडलः स्फुटं विपुलामल–दीर्घ–दीधितिः।
अविकृत–तनुर्वर्ण–चिह्नभृज्जगति करोति शिवं दिवाकरः।।"

अशुभ–सूर्य की दशा में जीवन में अनेकों उलझनें, राजसी–आपदाएं, मानहानि, सेहत में बिगाड़, अग्निभय, यात्रा में कष्ट, निजीजन–विरोध, मानसिक उलझनें, वृथा कल्पना से भय, धनहानि आदि फल देखने को मिलते हैं। दिल की बीमारी का भय भी सताता है।

शान्त्यर्थ सोने की अंगूठी में **विधिपूर्वक 'माणिक्य'** (माणक) मनुष्य **दाएं हाथ की 'अनामिका अंगुली' में, स्त्री बाएं हाथ की अनामिका में 'रवि–पुष्यामृत योग' में हस्त–रवि योग में धारण करें, चामत्कारिक फल अनुभव होगा।**

माणिक्य– पुरातन किंवदन्तियों के अनुसार यह रत्न **'रक्त'** से पैदा हुआ है।

यह रत्न रक्त–रोग–नाशक, रक्तवर्धक, रक्तचापग्रस्त रोगियों के लिए लाभप्रद है। **'सूर्य'** ग्रह की शान्ति के लिए इसे धारण किया जाता है, शनि–राहु एवं शुक्र सूर्य के शत्रु हैं, अतः इनके रत्न माणिक्य के साथ धारण नहीं करने चाहिएं।

माणिक्य रत्न परीक्षा–

(i) असली **'माणक'** कठोर, पारदर्शक, चिकना, सुड़ौल, कुछ भारीपन लिए हुए होता है।

(ii) किसी पत्थर पर इसे घिसने पर यह घिसता नहीं, न ही सहज में टूटता है; अपितु चमक बढ़ जाती है।

(iii) असली **माणक यदि बन्द कमल की कली में** रखदें, तो एक घन्टे में कमल खिल जाता है।

(iv) माणिक्य को बर्फ के टुकड़े के पास रखें, आवाज हो तो रत्न असली है, अन्यथा नकली।

(v) यदि माणक को कांच के बर्तन में रख कर देखा जाय तो कांच में से लाल किरणें धूप में निकलती नजर आएंगी।

सूर्य का वनौषध उपचार– श्वेतार्क (सफेद आक) की जड़ चान्दी में मढ़ाकर इतवार को लाल धागे से गले में डालें।

चन्द्र– " चन्द्रमा मनसो जातः "– चन्द्रमा मानसिक स्थिति को प्रभावित करता है। शुभयुक्त चन्द्र उच्चस्थ–चन्द्र किंवा गजकेसरी योग में चन्द्र मानसिक शक्ति, उत्साह प्रदान करता है, एवं शुभकार्यों में मन लगाता है। ललित कला में रुचि, संगीत–मित्र एवं स्त्रियों से मधुर सम्बन्ध बनाता है। धार्मिक–कार्यों में वृद्धि एवं शुभ कार्य सम्पन्न कराता है।

अशुभ चन्द्र– अशुभयुक्त, नीच किंवा नीच–नवांशक चन्द्र अपनी दशा में धनहानि, मानसिक–बौद्धिक–विकार करता है। वायुरोग, शूगर की बीमारी करता है। लाभ की आशा में निराशा, निजीजनों के सहयोग से वञ्चित रहें। अचानक कष्टभय, कलंक से मन अशांत, जोखिम, अग्नि–चौरभय किंवा प्रियजन वियोग से कष्ट प्रदान करता है।

शान्त्यर्थ :– सोमवार को रोहिणी नक्षत्र के समय शुद्ध मोती चान्दी की अंगूठी में धारण करें।

असली मोती के लक्षणः–

(i) असली मोती सफेद, चमकदार, अपारदर्शी होता है। यह कमजोर, नाजुक होता है। मोती धारण करने से चिन्ता दूर होती है एवं मन शान्त होता है।

(ii) 12 घण्टे तक गोमूत्र में पड़ा रहने पर यदि असली है तो टूटेगा नहीं, वरना टूट जाएगा।

(iii) मोती को सफेद कांच के बर्तन में पानी डालकर रखदें, उस पानी में से हल्की–हल्की सफेद रंग की किरणें निकलती मालूम देंगी।

चन्द्रजन्य नेष्टफल–शान्त्यर्थ वन्यौषध–उपचार–

जंगल से पलाश वृक्ष(खांकरा) की जड़ का टुकड़ा या शाखा का टुकड़ा लेकर चान्दी की अंगूठी या तावीज में मढ़ाकर सोमवार को दूध से धोकर सफेद धागे से गले में डालें।

मंगल ग्रह–

मंगल ग्रह का फल– प्रायः मंगल ग्रह पांच मुखों में कष्टप्रद लिखा है। जिसके जन्माङ्ग में मंगल वक्री विभिन्न नक्षत्र में हो तो सामान्य प्रजा के लिए कष्टकारक लिखा है।

हां, उच्चस्थ मंगल देश–विशेष की राजनीति के लिए प्रगतिप्रद है। दिमाग के मरीज गले में मूंगे की माला धारण करें, लाभ होगा।

नीच–वक्री मंगल खाने–पीने की चीजों में रोग फैलाता है। खड़ी फसलों को हानि, रोड़–दुर्घटनाएं कराता है। अनैतिककार्य, मुखरोग का कारण भी बनता है।

जन्माङ्ग में अशुभ मंगल की दशा हो किंवा गोचर में भी मंगल अशुभ हो तो जातक को कठिनाइयों में उलझाता है। क्रोध से हानि, अकारण–विवाद, रुधिर–विकार, रक्त–कैंसर, त्वचा–रोग, मित्रों से अनबन एवं नए–नए शत्रु पैदा होते हैं।

शान्त्यर्थ– मंगल ग्रह के नेष्टफल–शान्त्यर्थ मंगलवार को अनुराधा–नक्षत्र में सोने या तांबे की अंगूठी में लालरंग (रुधिरवर्ण) का मूंगा धारण करें।

मूंगा–परीक्षा–मूंगा रत्न पृथ्वी से प्राप्त होने वाला रत्न नहीं। यह समुद्र के अन्दर वनस्पतिजन्य रत्न है। इसका प्रमुख तत्त्व कैल्शियम कार्वोनेट है।

(i) नकली मूंगा भारी होता है, इसके घिसने से शीशे के घिसने जैसी आवाज आती है।

(ii) यह अपारदर्शी होता है। इसके घिसने पर चमक में अन्तर नहीं आता।

(iii) यदि मूंगे को दूध में डालें तो लालरंग की झलक आती है।

मूंगा मस्तिष्क पर बांधने से सरदर्द ठीक हो जाता है।

वन्य औषध से मंगल–जन्य नेष्टफल–शान्त्यर्थ– खैर (सोमवृक्ष) की जड तांबे के ताबीज में मढ़ाकर मंगलवार को धारण करें।

बुध ग्रह– यह वाणी एवं मातृपक्ष का कारक ग्रह है। बुध बालग्रह है। जिस किसी भी प्रभावी–ग्रह की दृष्टि या युति में आता है, वैसा ही फल करने लगता है। वक्री–मार्गी की स्थिति जीवन में विशेष उथल–पुथल करती है।

अशुभ बुध– धनहानि, सम्बन्धियों से अनबन, स्वास्थ्य में विगाड़, गुप्त–शत्रुभय, मित्र–वियोग, आर्थिकहानि, राजपक्ष से भयकारक रहता है एवं खांसी, हृदयरोग जैसी बीमारियां भी करता है।

बुधग्रह नेष्टफल शान्त्यर्थ–पन्ने की अंगूठी दाहिने हाथ की चिचली अंगुल में बुधवार को धारण करने सें स्त्री के गर्भपात नहीं होता। पन्ना नग 5/7 रत्ती बुधवार को धारण करें। यह नग हरे रंग का मयूर–पुच्छ जैसा होता है।

पन्ना–परीक्षण–

(i) यह नग निर्दोष नहीं मिलता। नकली में जर्दी नहीं होती, रेशे रूखे और श्वेत होते हैं।

(ii) ठीक पन्ने की किरणें धूप में रखने पर चारों ओर बिखरने लगती है।

(iii) पन्ने की परछाई किसी सफेद वस्त्र पर डालें तो वस्त्र पर हरा रंग झलकेगा।

(iv) पानी से भरे कांच के बर्तन में डालने से हरे रंग की किरणें निकलती दिखाई देंगी।

(v) पन्ना हाथ में लेने पर यदि हल्का प्रतीत हो तो नकली समझें।

वन्य औषध से बुध के नेष्टफल की शान्ति– पुठकण्डा (अपामार्ग) की जड़ बुधवार को हरे धागे से गले में बांधें। चान्दी में मढ़ाकर डाल सकते हैं।

गुरुग्रह– गुरुग्रह अत्यधिक महत्त्वपूर्ण माना गया है लेकिन यदि यह केन्द्रेश (1, 4, 7, 10 भावों का मालिक) हो तो यह अधिक नेष्ट माना जाता है। शुभ गुरु यश–कीर्ति, उच्चविचार एवं अच्छी पदवी प्रदान करता है। लेकिन पंचमेश होकर विवाहोपरान्त पहली सन्तान के सुख से वञ्चित भी करता है।

अशुभ गुरु बुद्धिविकार एवं मानसिक परेशानी भी करता है। कुटुम्ब में अशान्ति एवं आर्थिक संकट भी प्रदान करता है।

शान्त्यर्थ– 3 से 5 या 7 रत्ती स्वर्ण रंग का (पीला) पुखराज गुरु–पुष्यामृत योग में गंगाजल दूध से धोकर सोने की अंगूठी में दाए हाथ की तर्जनी अंगुली में धारण करें।

पुखराज–परीक्षण–

(i) असली पुखराज पारदर्शी, चिकना एवं समतल होता है।

(ii) सूर्य–प्रकाश में सफेद वस्त्र पर पुखराज की छाया डालें तो वस्त्र पर पीली आभा दिखाई देगी।

(iii) गोबर में पुखराज रगड़ने पर चमक में कोई अन्तर नहीं आता।

गुरुग्रह–शान्त्यर्थ वनौषध प्रयोग– गुरुवार को पीपल सींचा करें, पीले फल शिवमन्दिर में दें। पीपल की दाढ़ी या पीपल की जटा का छोटा टुकड़ा चान्दी के तावीज में मढ़ाकर गंगाजल दूध से धोकर पीले धागे से गले में डालें।

शुक्रग्रह–

शुक्र 'ऐश्वर्य–वैभव एवं विलासितापूर्ण जीवन का प्रतीक है। शुभ–शुक्र जीवन में बहुत सुख–सुविधाएं प्रदान करता है। शुक्र धनलाभ, स्त्री–सन्ततिसुख देता है।

अशुभ शुक्र गुह्यांग पीड़ा, वीर्यविकार, स्त्रीकष्ट, व्यर्थ–धनहानि, सन्ततिकष्ट, मस्तिष्क में विकृति, मित्र–विरोध एवं मातृपक्ष के लिए भी कष्टप्रद रहता है।

हीरा (Diamond)– शुक्र ग्रह से सम्बन्धित रत्न है। इसे दधीचि की अस्थि से उत्पन्न माना गया है। यह रत्न अस्थि–रोग–निवारणार्थ प्रयोग में लाना चाहिए। शत्रुग्रह (सूर्य–चन्द्र) का रत्न हीरे के साथ भूलकर भी न पहिनें, हानि ही होगी।

विवाह के बाद सन्तान होने तक स्त्री यह रत्न धारण न करे अन्यथा सन्तानहानि या कुसंस्कारी सन्तान से परेशानी रहेगी।–**"पुत्रकामः वज्रं न परिदध्यात्"**। इस रत्न का स्वामी शुक्र है। वृष एवं तुला राशि वाले पुरुष इस रत्न को धारण कर सकते हैं। दया, अहिंसा, शान्ति–सुलह एवं क्षमा इत्यादि उच्चगुण का स्वामी शुक्र है।

हीरा रत्न का परीक्षण– यह रत्न सभी रत्नों से कठोर होता है। उत्तम हीरा सफेद रंग का होता है। हथौड़े से प्रहार करने पर भी सरलता से टूटता नहीं। यह रत्न अन्य रंगों में भी पाया जाता है।

परीक्षण–

(i) पिघले घी में हीरा डालने पर घी जल्दी ही जम जाता है।

(ii) गर्मदूध में हीरा डाल देने पर जल्दी ही दूध शीतल हो जाता है।

(iii) सूर्य की रौशनी में रखने पर इसकी चमक कई गुणा बढ़ जाती है।

(iv) उत्तम क्वालिटी का हीरा पानी में तैरता है एवं अन्धेरे में प्रकाश देता है।

हीरे के अभाव में **'स्फटिक मणि'** धारण करें।

हीरा रत्न न धारण करने की सामर्थ्य वाले व्यक्ति प्राकृतिक वनौषध **'गूलर (औदुम्बर)'** की जड़ शुक्रवार को सफेद धागे से गले में डालें।

शनिग्रह– यह क्रूरग्रहों की कोटि में आता है। लेकिन जब शनि उच्चस्थ होकर शुभग्रहयोग से शुभंकर होता है तो जीवन में लहर ला देता है। यदि शनि जन्मकाल में अशुभ किंवा मंगलादि ग्रहों के साथ मेल करता है तो जीवन में कष्टमय एवं दुर्घटनाकारक रहता है। विरोधीपक्ष प्रवल, शत्रुभय, राजभय, धनहानि, रक्तविकार, चर्मरोग, फोड़े–फुंसी आदि से भी परेशानी होती है।

शनि–जन्य कष्ट–शान्त्यर्थ– 3, 5 या 7 रत्ती नीलम सोने में या त्रिलोह (सोने, चान्दी, तांबे की जगह लोहे) में शनिवार को मध्यमा अंगुली में धारण करें। **ध्यान दें**– नीलम शनिवार को श्रवण नक्षत्र में धारण करें।

नोट– यह रत्न नीले रंग का होता है। इसे धारण करने से पहले नीले कपड़े के टुकड़े में बांधकर शनिवार को अपने गले या बाजु में रात्रि समय बांध लें। यदि स्वप्न शुभ दिखाई दे या दिन में बांधने पर अनुकूल वातावरण रहे, मन प्रसन्न रहे, तो ही सोने या चान्दी में धारण करें, अन्यथा नहीं। क्योंकि यह रत्न अपना शुभाशुभ प्रभाव शीघ्र ही दिखाता है। **इसकी शुद्धि–परीक्षा निम्नांकित विधि से करें**–

(i) पानी से भरे कांच के गिलास में नीलम रखने पर नीली किरणें निकलती नजर आएंगी।

(ii) धूप में इस रत्न की चमक कई गुणा बढ़ जाती है।

(iii) पूर्णिमा की रात्रि में (चन्द्र–प्रकाश में) नीलम की छाया दूध में से देखी जाए तो दूध नीले रंग का प्रतीत होता है।

(iv) नीलम अपने आकार से हल्का प्रतीत होता है।

(v) **'मोनोब्रोमो नेफथलीन'** में नीलम को डुबोकर उसके पीछे एक सफेद कागज लगाकर प्रकाश (उसकी किरणों) को देखें, असली में सीधी धारियां एवं नकली में वक्र धारियां नजर आएंगी– यह भी शुद्धि–परीक्षण विधि है।

नीलम की जगह वन्य–औषध प्रयोग–

(i) **शमी वृक्ष की जड़ या बिच्छुबूटी को लेकर चांदी या**

रांगा के ताबीज में मढ़ाकर शनिवार को शनिमन्त्र से अभिमन्त्रित करके गले में या बाजु में धारण करें, आश्चर्यजनक परिणाम मिलेंगे।

राहुग्रह– यह ग्रह शुभग्रह के साथ शुभ किंवा अशुभग्रह के साथ अशुभ फल देता है–

"यद्यदभावगतौ वापि यद्यदभावेश–संयुतौ।
तत्तद् फलानि प्रबलौ प्रदिशेतां तमोग्रहौ।।"

केन्द्र किंवा त्रिकोण में, केन्द्रेश या त्रिकोणेश के साथ मेल करने पर हमेशा भाग्योदय–कारक किंवा तरक्की देने वाला, धन–धान्य सम्पदा देने वाला माना गया है–

"यदि केन्द्रे त्रिकोणे वा निवसेतां तमोग्रहौ।
नाथेनान्यतरेणापि सम्बन्धाद्योगकारकौ।।"

अशुभ राहु घरेलू झगड़े, मुकद्दमेबाज़ी, सन्ताप, कुटम्ब में जीवहानि, त्वचारोग, उदरविकार, चोटभय, यात्रा में भारी कष्टप्रद आदि परिणाम देता है।

शान्त्यर्थ–त्रिलोह में, चान्दी या सोने में 3 या 6 रत्ती गोमेद बुधवार को (सायं सूर्यास्त से पहले) उ.फा. नक्षत्र में काले या नीले धागे में धारण करें।

गोमेद का परीक्षण– यह रत्न प्रकाश का दुहरावर्तन करता है। इसका गुरुत्व 4.8 के लगभग होता है।

वन्य–औषध प्रयोग– दूर्वा (दुब्ब) के कुछ अंश लेकर राहु–मन्त्र का जाप करते हुए बुधवार को तावीज में मढ़ाकर धारण करें। दूर्वा यदि पीपलवृक्ष की छाया में से ली जाए तो अधिक फलवती रहेगी।

केतु– शुभस्थान एवं शुभग्रह के साथ केतु मानसिक–शान्ति एवं सुखलाभ देता है। राहु की तरह ही इसका फल समझें। अशुभ हो तो शरीरकष्ट, मनस्ताप, आर्थिक संकट एवं अनेक प्रकार के रोगों को जन्म देता है। इसकी महादशा में लड़ाई–झगड़े एवं गुप्त शत्रु से बचें।

शान्त्यर्थ– वैदूर्य (लहसुनिया) 3 या 6 रत्ती बुधवार या गुरुपुष्यामृत योग में (त्रिधातु की अंगूठी में) धारण करें। आसमानी रंग का धागा उपयुक्त रहेगा।

लहसुनिया–परीक्षण–

(i) लहसुनिया बिल्ली के नेत्र के समान कान्ति एवं लकीरों वाला होता है। इसलिए इसे Cat's Eye भी कहा जाता है।

(ii) यह रत्न सफेद धारी वाला एवं पीली आभा से युक्त भी होता है।

वन्य औषध–प्रयोग– कुशा का छोटा अंश कभी भी शनिवार या बुधवार को चान्दी में मढ़ाकर गंगाज–दूध से धोकर धारण करें। यदि कुशा को **'कुशोत्पाटिनी अमावस'** वाले दिन विधिपूर्वक ग्रहण किया जाए तो उत्तम रहेगा।

हमें पूर्ण विश्वास है कि– उल्लिखित रत्नों की जगह वन्य–औषधियों के प्रयोग से गरीब–वर्ग भी बहुमूल्य रत्नों के शुभफल को प्राप्त कर सकता है।

रत्नों की पहचानः वैसे तो शुद्ध प्राकृतिक रत्न भी दोषपूर्ण हो सकते हैं। जिस रत्न में दरार हो, लकीर हो, बाल जैसी रेखा हो, रत्न के कटाव की सतहें चिकनी न हों, किनारे बेढंगे हों, उनमें असंतुलन हो– वे दोषपूर्ण होते हैं।

इसके अलावा बाजार में नकली और रासायनिक रत्नों की भरमार है। इनकी पहचान निम्नलिखित ढंग से करनी चाहिए।

नकली रत्नों की पहचानः– एक घण्टा या दो घण्टे कड़ी धूप में रखें, फिर उस पर एक बूंद पेट्रोल गिराएं। टूट जाए तो नकली है। कांच के बने रत्न भारी होते हैं और उनका रंग हर जगह एक जैसा होता है, परन्तु प्राकृतिक रत्न में रंग हल्का–गहरा होता है।

वन्यौषधियों (जड़ी–बूटियों) से नवग्रहों की शान्ति का एक अन्य विधान

जैसा कि हम उल्लिखित लेख में नवग्रहशान्ति का उपचार लिख चुके हैं, उसी प्रकार जड़ीबूटियों से भी नवग्रह–शान्ति की एक विधा यहां और देना प्रासंगिक समझते हैं। शास्त्रीय–विधि के अनुसार ये नवग्रह शान्ति–प्रयोग विहंगम दृष्टि से नीचे लिख रहे हैं। ये प्रयोग ऋषि–मुनियों द्वारा अभिमत एवं प्रदर्शित है–

(1) **यदि सूर्य नेष्टफलप्रद हो तो** सूर्य मन्त्र (**ॐ ह्रां ह्रीं ह्रौं सः सूर्याय नमः**) का जाप करें एवं बिल्ववृक्ष (बिलपत्थर) की जड़ गुलाबी धागे में इतवार वाले दिन गले में या दांई बाजू में धारण करें।

(2) **यदि चन्द्र नीच या नेष्टग्रहों के सम्पर्क में कष्टप्रद हो तो**– चन्द्र मन्त्र (**ॐ श्रां श्रीं श्रौं सः चन्द्रमसे नमः**) का जाप करें एवं पलाशवृक्ष की जड़ का टुकड़ा सफेद डोरे से सोमवार को गले में धारण करें।

(3) **यदि भौम (मंगल) ग्रह नेष्टफलप्रद या मंगलीक होने से विवाहकार्य में बाधक हो तो** मंगल मन्त्र (**ॐ क्रां क्रीं क्रौं सः भौमाय नमः**) का जाप करें एवं **'अनन्तमूल की जड़'** लाल डोरे में मंगलवार को गले या बाजू में धारण करें।

(4) **यदि बुध नेष्टफलप्रद हो तो** बुध ग्रह मन्त्र (" **ॐ ब्रां ब्रीं ब्रौं सः बुधाय नमः** ") का जाप करें एवं विधारा की जड़ हरे डोरे में बुधवार को धारण करें।

(5) **यदि गुरुग्रह नेष्टफलप्रद हो तो** गुरु ग्रह मन्त्र (" **ॐ ग्रां ग्रीं ग्रौं सः गुरवे नमः** ") का जाप करके केले की जड़ का अंश लेकर पीले डोरे में गुरुवार को धारण करें।

(6) **यदि शुक्रग्रह नेष्टफलप्रद हो तो " ॐ द्रां द्रीं द्रौं सः शुक्राय नमः "** इस मन्त्र का जाप करके गूलर (औदुम्बर) की जड़ या सरपोंखा की जड़ को सफेद डोरे में बांध कर धारण करें।

(7) शनि पीड़ाकारक व शत्रु–ग्रह मंगल–सूर्यादि के साथ मेल करले तो " ॐ प्रां प्रीं प्रौं सः शनये नमः"– इस मन्त्र का जाप करके बिच्छु–बूटी की जड़ काले या नीले डोरे में धारण करें।

(8) **यदि छायाग्रह राहु कष्टप्रद हो तो " ॐ भ्रां भ्रीं भ्रौं सः राहवे नमः"** इस मन्त्र का जाप करके सफेद चन्दन का अंश नीले कपड़े में बुधवार को धारण करें।

(9) **यदि केतु कष्टप्रद हो तो " ॐ स्रां स्रीं स्रौं सः केतवे नमः"** इस मन्त्र का जाप करके अष्टगंध को आकाशीय–रंग के डोरे में गले में धारण करें।

अब नीचे नवग्रहों के नेष्टफल से मुक्ति के लिए पंचदशी यंत्र लिख रहे हैं। इस यन्त्र को नवग्रहों के स्तोत्र का पाठ करते समय **अष्टगन्ध से भोजपत्र पर** शिवरात्रि, दीपावली, ग्रहण, सायन–संक्रान्ति किंवा गुरुपुष्यामृत योग में विधिवत् लिखें या अष्टधातु के पत्र पर लिखाकर पूजास्थल में रखें, घर–परिवार में सुखमय वातावरण–निरोगता एवं प्रगति रहेगी।

यन्त्र इस प्रकार है –

८ ॐ ह्रीं केतवे नमः	१ ॐ ह्रीं सूर्याय नमः	६ ॐ ह्रीं शुक्राय नमः
३ ॐ ह्रीं भौमाय नमः	५ ॐ ह्रीं गुरवे नमः	७ ॐ ह्रीं शनये नमः
४ ॐ ह्रीं बुधाय नमः	९ ॐ ह्रीं केतवे नमः	२ ॐ ह्रीं सोमाय नमः

नव्बाव खानखाना-रचित राजयोगों का विवरण

यवन-शासनकाल में दैवज्ञ **'नव्बाव खानखाना'** फलित ज्योतिष के सिद्धहस्त **'दैवज्ञ शिरोमणि'** माने जाते थे। इनके द्वारा रचित योगों में फारसी के शब्दों का प्रयोग इन श्लोकों को समझने में कठिनाई पैदा करता है, लेकिन इन श्लोकों में फलित शास्त्र के अनुभूत योगों के सार इन राजयोगों को यवनाचार्य के निजी अनुभव कहें—यह विद्वज्जन ही निर्णय करें? इसे सर्वसाधारणगम्य बनाने के लिए हिन्दी-अनुवादसहित यहां प्रकाशित कर रहे हैं, ताकि फलितशास्त्र में रुचि रखने वाले दैवज्ञ लाभान्वित हो सकें। ध्यान दें—व्याकरण की दृष्टि से इसमें कोई Correction नहीं की गयी, यथालब्ध Manuscript ही प्रकाशित किया गया है।—**संयमी शर्मा**

"यदा माहताबो भवेन्माल-खाने
मिरीखोऽथवा मुस्तरी बरब्तखाने।
अतारिद् विलग्ने भवद्बरख्शपूर्णो
भवेद्दानदारोऽथवा बादशाहः ॥१॥"

अर्थात्—जिस जातक के जन्मसमय जन्मलग्न से चन्द्रमा द्वितीय भाव में तथा मंगल या गुरु (इनमें से कोई एक) दशम भाव में हो एवं लग्न में बुध हो तो वह व्यक्ति दानवीर (धनाढ्य) या बादशाह होता है।

"भवेदाफताबो यदा षष्ठखाने
पुनर्दैत्य-पीरोऽथ केन्द्रे गुरुर्वा।
सुजातः शुतर्फी लताज्याह याढ्यो।
जरी जर्जरावस्यदातश्चिरायुः ॥२॥"

अर्थात्—जन्मसमय यदि छठे भाव में सूर्य हो, शुक्र या गुरु केन्द्र (१, ४, ७, १०वें भाव) में हो तो वह व्यक्ति अपने खानदान में प्रतिष्ठित, गुणी, कार, हाथी, घोड़े आदि सुख-सुविधाओं से सम्पन्न, जरीदार (सुन्दर) वस्त्र पहनने वाला, लज्जावान्, धनवान् एवं दीर्घायु होता है।

"यदा चश्मखोरा भवेद्दोस्त-खाने
ततो मुस्तरी दोस्तखानेऽथ लग्ने।
अतारिद् धनस्थो बृहत्-साहिबी स्याद्-
बृहत् सुमखमल्ख जानासु-पूर्णः ॥३॥"

अर्थात्—यदि चतुर्थभाव में शुक्र या गुरु या चतुर्थ अथवा लग्न में गुरु एवं धनस्थान (द्वितीय भाव) में बुध हो तो जातक गण्यमान्य, प्रतापी, उत्तम वेषभूषा वाला एवं धनाढ्य होता है।

"तृतीये भवेदाफ्ताबस्यपुत्रो
यदा माहताबस्य पुत्रो विलग्ने।
भवेन्मुस्तरी केन्द्रखाने नराणाम्
बृहत्साहिबी तस्य ताले रुजुः स्यात् ॥४॥"

अर्थात्—यदि जातक के तृतीय स्थान में शनि, लग्न में बुध किंवा गुरु केन्द्रस्थ (१, ४, ७, १०वें भाव में) हो तो जातक बहुत प्रभावशाली, भाग्यवान, राजातुल्य होता है।

"यदा मुस्तरी पंच-खाने मिरीखो
यदा बरब्तखाने रिपौ आफताबः।
नरो वा अकूफो भवेत्कुञ्जरेशो
बृहद्रोशनो वाहिनी वारणाढ्यः ॥५॥"

अर्थात्—यदि जन्मांग से पंचम भाव में गुरु, दशम भाव में मंगल एवं छठे भाव में सूर्य हो तो वह व्यक्ति बुद्धिमान्, अथाह सम्पदायुक्त, नानाविध वाहनों से युक्त, प्रतापी होता है।

"अतारिद् विलग्ने सुखे माहताबो
गुरुर्बरब्त-खाने तमो लाभखाने।
जहानस्य खूबी भवेन्नेकबख्तः
खजाना गजाढ्यो मुलुक्साहिबी स्यात् ॥६॥"

अर्थात्—यदि जातक के जन्मांग में बुध, चतुर्थ भाव में चन्द्रमा, दशम भाव में गुरु एवं आयस्थान (एकादश भाव) में तमग्रह (राहु किंवा केतु) हो तो जातक विश्वप्रसिद्ध, सत्कर्म में प्रवृत्त रहने वाला, कोषाधिपति (धन-धान्य से समृद्ध), हाथी, कार आदि सुन्दर सवारियों का मालिक, राजातुल्य, महाधनी होता है।

"यदा देवपीरो भवेद् बरब्तखाने
पुनर्दैत्यपीरोऽथवा स्व-प्रखाने।
अतारिद् विलग्ने तृतीये मिरीखः
शनिर्लाभ-खाने नरः काबिलः स्यात ॥७॥"

अर्थात्—जन्मलग्न से यदि दशम भाव में गुरु, स्वराशि का शुक्र, लग्नस्थ बुध, तृतीय भाव में मंगल एवं एकादश भाव में शनि हो तो जातक सर्वगुणसम्पन्न एवं काबिल (प्रशंसनीय) होता है।

"हमल्माहताबो व्यये आफताबो
यदा मुस्तरी केन्द्रखाने त्रिकोणे।
भवेन्मानवो देव-तेजस्कराढ्यो
बृहत्साहिबी बरब्तखूबी कमालः ॥८॥"

अर्थात्—यदि जातक के जन्मलग्न से सातवें भाव में चन्द्रमा, द्वादश भाव में सूर्य एवं केन्द्र (१, ४, ७, १०वें भाव) किंवा त्रिकोण (पंचम-नवम भाव) में गुरु ग्रह हो तो जातक गण्यमान्य, प्रतापी, समय की नाजुकता को समझने वाला एवं प्रख्यात (प्रशंसनीय) होता है।

"खजाना गजाढ्यो भवेल्लश्कराढ्यो
जहान-प्रियो मुस्तरी जायखाने।
मिरीखोऽथ लाभे बुधः पंजखाने
शनिः शत्रुखाने नरः काबिलः स्यात् ॥९॥"

अर्थात्—यदि गुरु स्त्रीभाव (सप्तम) में, आयस्थान (एकादश भाव) में मंगल, पंचम भाव में बुध एवं छठे भाव में शनि हो तो जातक विशाल सेना वाला, धनाढ्य, शत्रुओं पर विजय प्राप्त करने वाला बहुत काबिल शासक व्यक्ति होता है।

"कभर् केन्द्रखाने शनिः शत्रुखाने
त्रिकोणेऽथवा मुस्तरी चश्मखोरा।
स जातो नरः साबिरः सद्गुणज्ञो
भवेच्छायरो मालदारोऽथ खूबी ॥१०॥"

अर्थात्—यदि जन्मांग में चन्द्र केन्द्र में, शनि छठे भाव में, गुरु या शुक्र त्रिकोण (५, ९ भाव) में हो तो मनुष्य सन्तोषी, सद्गुणों से युक्त, शायर (कवित्व-शक्तिसम्पन्न), धनाढ्य एवं विशिष्ट व्यक्तित्व वाला होता है।

" मिरीखोऽथवा रवेशशम्तौलिखाने
गुरुर्मीत-राशौ जया-माहताबः।
भवेज्जन्मकाले यदा चश्मखोरो
जुलीखः प्रहर्ता जहान-प्रचण्डः ॥११॥"

अर्थात्—यदि जन्मलग्न से मंगल द्वितीय भाव में, गुरु अष्टम भाव में, चन्द्रमा सप्तम (स्त्री) भाव में एवं जन्मलग्न में शुक्र हो तो जातक शत्रुओं को पराजित करने वाला, विश्वविख्यात, प्रतापी होता है।

"धनस्थः कुमुद्बन्धुः षष्ठे रविः स्यात्
सखव्योम्नि विच्चेति विद्वान् कविश्च।
बृहत्सावरी शालमखमल् बनातः
शुतुर्फी-लफानूस-तम्बू-कनातः ॥१२॥"

अर्थात्—यदि जन्मांग से द्वितीय भाव में चन्द्रमा, छठे भाव में सूर्य, चतुर्थ भाव में बुध, दशम भाव में शुक्र हो तो जातक विद्वान्, कवित्व-शक्तिसम्पन्न, प्रभावशाली, न्यायाधीश, सुन्दर परिधानप्रिय, साधारण वास में भी राजसी गुणों से युक्त होता है।

"आयुखाने चश्मखोरा मालखाने च मुस्तरी।
राहुजो पैदामखाने शाह होवे मुल्क का ॥१३॥"

अर्थात्—जन्मलग्न से अष्टम भाव में शुक्र, द्वितीय भाव में गुरु, लग्नस्थ राहु हो तो जातक देश का राजा बनता है।

"यदा मुश्तरी कर्कटे वा कमाने
यदा चश्मखोरा जमी वा समाने।
तदा ज्योतिषी क्या लिखे क्या पढ़ेगा
हुआ बालका बादशाही करेगा ॥१४॥"

अर्थात्—जन्मांग में यदि गुरु कर्क या धनु राशि में हो एवं शुक्र दशम या द्वितीय भाव में हो तो दैवज्ञ को ऐसे जातक के फलादेश के लिए कुछ कहने-लिखने की आवश्यकता नहीं। क्योंकि वह जातक तो निश्चय ही सम्राट् बनेगा।

"यदि चश्मखोरा भवेल्लग्नखाने
तदा मुश्तरी बरब्तखाने विलग्नात्।
स जातः शुतुर्फी-लजाती-हयाढ्यो
जरी जर्जरी वक्तदाता चिरायुः ॥१५॥"

अर्थात्—यदि जन्मलग्न से दशम भाव में बृहस्पति और लग्न में शुक्र हो तो वह व्यक्ति चतुरंगिणी (हाथी, घोड़े, रथ, पैदल) सेना से युक्त, सुन्दर वस्त्र धारण करने वाला, धनी एवं दीर्घायु शासक होता है।

"आफताबो मालखाने यस्य जन्मनि च ध्रुवम्।
सकल रोजी मुश्किल पड़ै फांके मुफ्लिसम् ॥१६॥"

अर्थात्—जन्मलग्न से द्वितीय भाव में सूर्य हो तो जातक सभी व्यवसायों (व्यापार)

में असफलता प्राप्त करके कष्टमय जीवन व्यतीत करता है। फाकापरस्ती भी वहन करनी पड़ती है।

"यदा शत्रुखाने पड़े उच्च का।
करे ख़ाक दौलत फिरै जाबजा॥१७॥"

अर्थात्—जब जन्मलग्न से छठे भाव में उच्च का सूर्य बैठा हो तो वह मनुष्य अपनी या अपने पूर्वजों की संचित सारी सम्पदा को बेचकर भटकता फिरता है।

"आयुस्थाने चश्मखोरा मालखाने च मुश्तरी।
सबाब् खाने चन्द्रदीपम् बादशाहम्बर्बरी॥१८॥"

अर्थात्—यदि जन्मलग्न से अष्टम स्थान में शुक्र और द्वितीय स्थान में गुरु एवं नवम भाव में चन्द्रमा हो तो जातक राजा का वजीर (मन्त्री) होता है।

"हमल् आफताबो वृषे माहताबो
यदा मुश्तरी केन्द्रखाने त्रिकोणे।
भवेन्मानवो दौलतो लश्कराढ्यो
बृहत्साहिबी तस्य खूबी कमालः॥१९॥"

अर्थात्—यदि जन्मसमय सप्तम भाव में मेष का सूर्य हो, वृष राशि में चन्द्रमा एवं केन्द्र किंवा त्रिकोण में गुरु हो तो जातक धनाढ्य, विशाल सेना का स्वामी, प्रभावशाली एवं अनेक विशेषताओं से युक्त यशस्वी होता है।

"हमल् आफताबो वृषे माहताबो
त्रिकोणेऽपि वा मुश्तरी-चश्मखोरा।
नरो जायते राहरासन् गुणज्ञो
भवेच्छायरो मालदारोऽति खूबी॥२०॥"

अर्थात्—जिस जातक के जन्मांग में सप्तम स्थानस्थ मेष का सूर्य हो, चन्द्र वृष में, त्रिकोण में गुरु या शुक्र हों तो वह मनुष्य अनेक शास्त्रों के रहस्य का ज्ञाता, कवित्व शक्तिसम्पन्न (शायर), गुणी, रूपवान् एवं धनाढ्य होता है।

"यदा मुश्तरी कर्कटे वा कमाने
झषे खेटपुत्रो वसेत् कारखाने।
समं वीक्षते खूब खेटा समस्ताः
भवेन्मर्दवं दर्दयन्तु दयालुः॥२१॥"

अर्थात्—यदि जन्मांग में गुरु कर्क या धनु राशि का हो, द्वितीय भाव में मीन राशि का शनि हो और ये सभी शुभ ग्रहों से दृष्ट या युक्त हों तो जातक सामर्थ्यवान्, दूसरे से सहानुभूति रखने वाला, दयालु होता है।

"यदा भाग्यमालिक भले घर पड़ै
कमाकर सुदौलत खज़ाने भरै।
करेंगे जबक्शी अमीरी सुफल
बज़ीरी अमीरी करै बेफिकर॥२२॥"

अर्थात्—यदि भाग्येश (नवमेश) उत्तम स्थान (अर्थात् अपने उच्च, मूलत्रिकोण, स्वराशि, मित्रगृह इत्यादि शुभ स्थान) में हो तो वह जातक अपने विवेक से अकूत सम्पत्ति/धन से खजाने भर लेता है और आनन्दपूर्वक, बेफिक्र होकर सुख से जीवन व्यतीत करता है एवं वजीर होकर राजतुल्य जीवन व्यतीत करता है।

"यदा चश्मखोरा भवेद् हफ्तखाने
शशी दोस्तखाने मिरीखोऽथ नक्रे।
सुरत् कमालो नरो दीनदारो
गनीम-प्रहन्ता जहान-प्रचण्डः॥२३॥"

अर्थात्—जब जन्मांग में शुक्र सप्तम स्थान में, चन्द्रमा चतुर्थ में एवं मंगल मकर राशि में हो तो वह मनुष्य अत्यन्त सुन्दर, कामुक, परम दयालु, शत्रुओं का दमन करने वाला, विश्व में परम प्रतापशाली राजा के रूप में प्रसिद्ध होता है।

"जमीजोऽथ नक्रे शनौ मौतखाने,
गुरौ माहराशौ जरे माहताबः।
भवेज्जन्मकाले नरो वा उदारो
गनीम-प्रहन्ता जहान-प्रचण्डः॥२४॥"

अर्थात्—यदि जन्मांग में मंगल मकर में,शनि मृत्यु स्थान (अष्टम भाव में),गुरु कर्क राशि में, चन्द्र द्वितीयस्थ हो तो जातक उदार, दयालु, शत्रुओं का नाश करने वाला, प्रतापी एवं विश्वविख्यात होता है।

"यदा मुश्तरी केन्द्रखाने त्रिकोणे,
यदा वक्तखाने रिपौ आफताबः।
अतारिद् विलग्ने नरो वक्तपूर्णः,
तदा दानदारोऽथवा बादशाहः॥२५॥"

अर्थात्—यदि जन्मांग में गुरु केन्द्र (१, ४, ७, १०वें भाव) या त्रिकोण (५, ९वें भाव) में हो, सूर्य छठे या दशम भाव में हो, बुध लग्न में हो तो जातक समय का सदुपयोग करने वाला, धनी, दानी एवं बादशाह होता है।

ज्योतिष एवं कर्मकाण्ड के जिज्ञासु पण्डितों के लिए कुछ साधारण जानकारी

पंचक-विचार (पंचकों में क्या कुछ करना निषिद्ध है ?) –

ध्यान दें—धनिष्ठा उत्तरार्द्ध से रेवती नक्षत्र तक पांच नक्षत्रों को '**पंचक**' संज्ञा दी गयी है। इन नक्षत्रों में कौन से कार्य वर्ज्य हैं—यह स्पष्ट करना प्रासंगिक है। पचंकों में (कुम्भ- मीनस्थ चन्द्र के समय) खाट बुनना, काष्ठ-संग्रह, मकान पर लकड़ी की छत डालना, लकड़ी का फर्नीचर खरीदना एवं दक्षिण-दिशा की तरफ यात्रा करना—ये सब वर्जित हैं।

पंचकों में मृत व्यक्ति (प्रेत) का दाह-संस्कार भी कुशा द्वारा निर्मित '**पांच पुत्तलिका**' बनाकर मृत व्यक्ति के साथ ही करना चाहिए। यहां पंचकों के नियमों का उल्लंघन मुहूर्त ग्रन्थों में बहुत अशुभ लिखा है-

"धनिष्ठा-पंचके त्याज्य स्तृणा -काष्ठादि-संग्रहः।
त्याज्या दक्षिण-दिग्यात्रा गृहाणां छादनं तथा॥
शय्या-वितानं प्रेतादि-क्रियां काष्ठ-तृणार्जनम्।
याम्य-दिग्गमनं न कुर्याच्चन्द्रे कुम्भे च मीनगे॥"

ध्यान रहे—विवाह, मुण्डन, गृहारम्भ, गृहप्रवेश, वधूप्रवेश, उपनयन, रक्षाबन्धन एवं भाईदूज आदि पर्वों/मुहूर्तों में पंचक-नक्षत्रों की विचारणा मुहूर्त-ग्रन्थकारों ने कहीं नहीं लिखी। अत: इस बारे में भ्रान्ति में न पड़ें।

गण्डमूल नक्षत्रों में जन्म एवं शान्तिविधान

राशिचक्र के परिशीलन से स्पष्ट है, कि भचक्र में तीन ऐसी स्थितियां आती हैं, जब राशि एवं नक्षत्र एकसाथ समाप्त होते हैं। इन (पूर्ववर्ती) नक्षत्रों की इस स्थिति को '**गण्ड नक्षत्र**' संज्ञा दी गयी है। नक्षत्र के समाप्त होते ही अग्रिम राशि एवं नक्षत्र का प्रारम्भ होने से परवर्ती इन नक्षत्रों को '**मूल**' नक्षत्रों के नाम से जाना गया है।

देखिये—कर्क राशि एवं आश्लेषा नक्षत्र एकसाथ समाप्त होते है, तत्पश्चात् मघा नक्षत्र एवं सिंह राशि का प्रारम्भ होता है। अत: **आश्लेषा गण्ड** एवं **मघा मूल नक्षत्र** हुआ।

वृश्चिक राशि के साथ ज्येष्ठा नक्षत्र समाप्त है, यहीं से मूल नक्षत्र एवं धनु राशि का उद्‌गम होने से **ज्येष्ठा गण्ड** एवं **मूल नक्षत्र** मूल होगा।

इसी प्रकार मीन राशि एवं रेवती नक्षत्र एक साथ समाप्त हो जाते हैं, तत्पश्चात् मेष राशि एवं अश्विनी नक्षत्र का प्रारम्भ होने से **रेवती गण्ड** एवं **अश्विनी मूल नक्षत्र** माना जायेगा। इस प्रकार अश्विनी, आश्लेषा, मघा, ज्येष्ठा, मूल एवं रेवती – ये गण्डमूल नक्षत्र हैं—यह स्पष्ट हो गया।

'**गण्डमूल नक्षत्र**' **क्यों अशुभ माने गये हैं?** आयुर्वेद एवं अन्य शास्त्रों में '**सन्धिक्षेत्रों को मर्मस्थल**' माना गया है। यदि मर्मस्थलों पर चोट लगे तो सद्य: मृत्यु सम्भव है। इसी प्रकार **गण्डमूल नक्षत्र भी सन्धिस्थल माने गये हैं**, अत: शास्त्रों में ऋषि-मुनियों ने इन गण्डमूल नक्षत्रों के दुष्परिणाम से बचने एवं जातकों की सुखी-जीवनचर्या के लिए इन गण्डमूल नक्षत्रों की शान्ति कराना आवश्यक माना है।

गण्डमूल-शान्त्यर्थ मन्त्रप्रयोग

(i) रेवती नक्षत्रशान्ति—(स्वामित्व पूषा)

मन्त्र—ॐ पूषन् तव व्रते वयं नरिष्येम कदाचन स्तोतारस्तु इहस्मसि। ॐ पूष्णे नम:। (जपसंख्या पांच हजार)।

(ii) अश्विनी नक्षत्रशान्ति—(स्वामित्व अश्विनीकुमार)

मन्त्र—ॐ अश्विना तेजसा चक्षु: प्राणेन सरस्वती वीर्यम्। वाचेन्द्रो बलेनेन्द्राय दधुरिन्द्रियम्। ॐ अश्विनीकुमाराभ्यां नम:। (जपसंख्या 5000)।

(iii) मघा नक्षत्रशान्ति—(स्वामित्व पितर)

मन्त्र—ॐ पितृभ्य: स्वधायिभ्य: स्वधा नम: पितामहेभ्य: स्वधायिभ्य: स्वधा नम:। प्रपितामहेभ्य: स्वाधायिभ्य: स्वधायिभ्य: स्वधा नम:। अक्षन्ना पित्रोमीमदन्त पितरोऽतीतृपन्त पितर: शुन्धध्वम्॥ ॐ पितृभ्यो नम:॥ (मन्त्रजाप-संख्या 10,000)।

(iv) ज्येष्ठा नक्षत्रशान्ति—(स्वामित्व इन्द्र)

मन्त्र—ॐ त्रातारमिन्द्रमवितारमिन्द्रं हवे हवे सुह्व शूरमिन्द्रम् हयामि शक्रं पुरुहूतमिन्द्र स्वस्तिनो मघवा धात्विन्द्र:। ॐ शक्राय नम:॥ (जपसंख्या 5000)।

(v) आश्लेषा नक्षत्रशान्ति—(स्वामित्व सर्प)

मन्त्र—ॐ नमोऽस्तु सर्पेभ्यो ये केच पृथिवी मनु:, ये अन्तरिक्षे ये दिवितेभ्य: सर्पेभ्यो नम:। ॐ सर्पेभ्यो नम:॥ (जपसंख्या 10000)।

(vi) मूल नक्षत्रशान्ति—(स्वामित्व राक्षस)

मन्त्र—ॐ मातेव पुत्र पृथिवी पुरीष्यमणि स्वेयोनावभारूषा। तां विश्वेदेव-र्ऋतुभि: संवदान: प्रजापति विश्वकर्मा विमुञ्चतु॥ ॐ निर्ऋतये नम:॥ (जपसंख्या 5000)।

नोट—ध्यान दें कि ये सारे छहों गण्डमूल नक्षत्र दशा-विचारानुसार बुध एवं केतु के अन्तर्गत आते हैं अथवा यूं कहिये कि इन छहों नक्षत्रों पर बुध व केतु की दशाएं ही होती हैं। आश्लेषा, ज्येष्ठा, रेवती नक्षत्रों में जन्म होने पर बुधदशा व अश्विनी, मघा, मूल नक्षत्रों में जन्म होने पर केतु की दशा होती है अत: आश्लेषा, ज्येष्ठा, रेवती में जन्म होने पर इनके दशा-स्वामी बुध का मन्त्र(**ॐ ब्रां ब्रीं ब्रौं स: बुधाय नम:**)जाप 19,000 करें। तत्पश्चात् दशांश हवन अपामार्ग या पीपल की समिधा से करें।

अश्विनी, मघा, मूल में जन्म होने पर इनके दशास्वामी केतु के—"**ॐ स्रां स्रीं स्रौं स: केतवे नम:**" मन्त्र का जाप 17000 करें। कुशा या पीपल की समिधा से दशमांश हवन करें।

अभुक्तमूल नक्षत्रविचार

ज्येष्ठा नक्षत्र की अन्तिम चार घटी (किसी के मत से ज्येष्ठा की एक घटी) एवं मूल नक्षत्र की प्रारम्भिक चार घटी, विशेषत: आधी घटी—ये अभुक्तमूल नक्षत्र की अवधियां ही **अभुक्तमूल** नक्षत्रों के नाम से जानी जाती हैं। उक्त नक्षत्रों की निर्दिष्ट विशेष कालावधियों में यदि किसी बच्चे का जन्म हो तो उसका परित्याग कर दें या 8 वर्ष तक दूर रखें। लेकिन यह सम्भव नहीं है, अत: बच्चे को 6 मास अथवा 27 दिन तक तो पिता से दूर रखें, पिता बच्चे का मुख न देखे। इस बारे में शास्त्र वचन है—

"घनगण्डे दरिद्रोऽपि शान्तिं कुर्यात् स्व-शक्तित:।
अन्यथा नाशमाप्नोति चाभुक्तर्क्षे विशेषत:।"

गण्डमूल नक्षत्रों में जन्म का फल

मूल नक्षत्र में जन्म होने पर—

मूल नक्षत्र के प्रथम चरण में यदि बालक का जन्म हो तो पिता के लिए जातक कष्टप्रद रहे। **द्वितीय चरण** में माता के लिए एवं **तृतीय चरण** में धन-ऐश्वर्य के लिए हानिकारक होता है। मूल नक्षत्र के चतुर्थ चरण में जातक शुभ फलप्रद माना गया है।

यदि मूल नक्षत्र के प्रथम चरण में बालिका (कन्या) का जन्म हो तो कन्या विवाहोपरान्त ससुर, द्वितीय चरण में सास एवं तृतीय चरण में ससुर एवं पितृपक्ष (दोनों कुलों) के लिए नेष्ट फलप्रद मानी जाती है। चतुर्थ चरण में जन्म शुभ माना है।

आश्लेषा नक्षत्र में जन्म होने पर—

आश्लेषा नक्षत्र का **प्रथम चरण** बालक के लिए शुभ, **द्वितीय चरण** धन-ऐश्वर्य के लिए हानिप्रद एवं **तृतीय चरण** माता के लिए अशुभ किंवा चतुर्थ चरण में जन्मा जातक पिता के लिए कष्टप्रद है।

यदि आश्लेषा नक्षत्र में कन्या का जन्म हो तो प्रथम चरण शुभ (सुख-समृद्धिप्रद) तथा दूसरा-तीसरा एवं चतुर्थ चरण सास के लिए विघातक (कष्टप्रद) माना है।

मघा नक्षत्र में जन्म होने पर—

मघा के **प्रथम चरण** में जन्मे जातक एवं जातिका माता को, **द्वितीय चरण** में पिता को भारी कष्टप्रद होते हैं। मघा **तृतीय चरण** में सुख-समृद्दि हो एवं **चतुर्थ चरण** में जन्मे जातक धन-धान्यसमृद्धिप्रद लिखे हैं।

ज्येष्ठा नक्षत्र में जन्म होने पर—

ज्येष्ठा नक्षत्र के प्रथम चरण में बालक का जन्म हो तो बड़े भाई के लिए नेष्ट फलप्रद है, **द्वितीय चरण** में जन्म हो तो छोटे भाई के लिए कष्टप्रद है। **तीसरे चरण** में माता के लिए एवं **चतुर्थ चरण** में जातक अपने शरीर-स्वास्थ्य के लिए कष्टप्रद रहे।

यदि **ज्येष्ठा नक्षत्र** के प्रथम चरण में कन्या का जन्म हो तो बड़े भाई एवं विवाहोपरान्त अपने जेठ (पति के बड़े भाई) के लिए विघातक रहे। **द्वितीय चरण** में अपने छोटे भाई किंवा देवर के लिए अशुभ रहे। **ज्येष्ठा के तृतीय चरण** में अपनी माता/सास के लिए, चतुर्थ चरण में बालिका देवर के लिए शुभ लिखी है।

ज्येष्ठा और मूल नक्षत्र में जन्म का अशुभ फल प्रतिपादक शास्त्रवचन इस तरह है। देखिये—

"सुत: सुता वा नियतं श्वसुरं हन्ति मूलज:।
तदन्त्य-पादजो नैव तथाऽश्लेषान्त्य-पादज:॥"

रेवती नक्षत्र में जन्म होने पर—

रेवती नक्षत्र के प्रथम तीन चरणों में जन्मे जातक (बालक-बालिका दोनों) का फल पूर्णरूपेण शुभ, राज्यपक्ष से लाभप्रद, धन-धान्यवृद्धि देने वाला होता है। लेकिन रेवती के चतुर्थ चरण में जन्मे बच्चे अपने शरीर-स्वास्थ्य के लिए कष्टप्रद होते हैं।

अश्विनी नक्षत्र में जन्म होने पर—

अश्विनी का प्रथम चरण पिता के लिए कष्टप्रद है—"**अश्विन्या: प्रथमे पादे निश्चितं बाध्यते पिता।**" शेष तीन चरण परिवार में धन-ऐश्वर्यवृद्धि, राजपक्ष से लाभ एवं मान-सम्मानप्रद रहते हैं।

प्रसूति-लग्न विचार

मेष–जन्मसमय मेष लग्न हो, तो माता का पूर्व या पश्चिम में सिर, उपसूतिका दो या तीन, प्रसव में माता को कष्ट अधिक, पाद से प्रसव, भूमि में घर के पूर्व भाग में जन्म हुआ, बालक जन्मोपरान्त दीर्घ शब्द से रोया। माता ने लाल एवम् मीठा भोजन किया था। वस्त्र लाल, मलिन थे। ४। ११। १६। ४४। ५८ वर्षों में बालक कष्ट पावे, इन वर्षों के प्रारम्भ में तुलादान, गोदान, मृत्युञ्जय जप कराना श्रेष्ठ है। इन वर्षों से बचे, तो १०० वर्ष जीवे।

वृष– माता का दक्षिण में सिर, उपसूतिका ३ या ४, जन्मोपरान्त दो और आईं, जन्मते ही बालक दीर्घ शब्द से रोया, गौरवर्ण, अधोमुख, पाद से प्रसव, घर से पूर्व में सूतिका–स्थान, श्वेत स्वच्छ वस्त्र, जन्म से पहले माता ने शुष्क शाकादि भोजन किया। १। २८। ३३। ४४। ६१ वर्षों में बालक कष्ट पावे। इन वर्षों के प्रारम्भ में महामृत्युञ्जय का जाप और ब्राह्मणभोजन करवाना श्रेष्ठ है। इन वर्षों से बचे, तो ९० वर्ष जीवे।

मिथुन– माता का सिर पश्चिम में, उपसूतिका ३ या ५, माता का हरा या जीर्ण वस्त्र, सिर से प्रसव, मुख ऊपर को, जन्मते ही दीर्घ शब्द किया, नाल छूटा था, घर के आग्नेय भाग में जन्म, माता ने पहले लवणयुक्त विचित्राल्प भोजन किया, दूध कम उतरे। ८। १०। १४। ३८। ५८ वर्षों में बालक कष्ट पावे। इन वर्षों के आरम्भ में शिवार्चन और मृत्युञ्जय का जप करवाएं। यदि इन वर्षों से बचे, तो ८६ वर्ष जीवे।

कर्क–माता का उत्तर में सिर, उपसूतिका ५ या ८, बालक जन्मते ही छींका, नाल छूटा, भूमि पर जन्म, घर के दक्षिण भाग में प्रसवस्थान, माता के वस्त्र श्वेत व लाल, माता ने प्रसव से पहले मधुर व शीतल भोजन किया था, दीपक उठाया गया, बालक के वामाग में लहसुन आदि का चिह्न, देर से रोया। ५। २५। ४०। ५८। ६२– इन वर्षों में बालक कष्ट पावे। इनसे बचे तो १०० वर्ष जीवे। कष्टकारक वर्षों के प्रवेश के समय तुलादान, छायादान और मृतसञ्जीवनी मन्त्र का जाप करवाना कल्याणप्रद है।

सिंह– माता का पश्चिम या पूर्व में सिर, मलिन या लाल वस्त्र, शुष्क कसैला या खट्टा भोजन किया था, जन्मसमय स्त्री ३, पीछे से १ आई, दीपक स्थिर रहा, बालक जन्मते ही तुरन्त रोया, घर के दक्षिण भाग में प्रसवस्थान। ५। १३। २८। ३६। ४८– इन वर्षों में बालक कष्ट पावे। इनसे बचे तो ६७ वर्ष जीवे। कष्टकारक वर्षों के प्रवेश होते ही श्रीसूर्यनारायण के मन्त्र का जाप या आदित्यहृदय का पाठ और ब्राह्मणों को मीठा भोजन करावे तो कल्याण रहेगा।

कन्या–माता का दक्षिण में सिर, रक्त जीर्ण वस्त्र, मिष्ठान्न बासी चीज या बड़े आदि का भोजन, जन्मसमय स्त्री ३ या ५, दीपक हाथ में उठाया गया, बालक ने जन्मते ही अर्द्ध शब्द किया, घर के नैर्ऋत्यकोण में सूतिका–स्थान। ४। १६। २३। ३६। ५५– ये वर्ष कष्टकारक हैं। यदि इन वर्षों से बचे तो १०० वर्ष जीवे।

तुला– माता का सिर पश्चिम या पूर्व को, श्वेत जीर्ण वस्त्र, भुना हुआ अन्न, ठंडा जल या कोई मामूली चीज क्रोधपूर्वक खाई थी। जन्मसमय स्त्री ३ या ६, वहां एक कन्या भी हो, दीपक उठाया गया, बालक जन्मसमय कुछ ठहरकर अर्धशब्द करके रोया, घर के पश्चिमभाग में सूतिकास्थान। ८। १५। ३१। ३५। ६२। ६४– इन कष्टकारक वर्षों के प्रारम्भ में नवग्रहों का दान, हवन, जप करवाना श्रेष्ठ है। यदि इन वर्षों से बचे तो ७५ वर्ष जीवे:

वृश्चिक–माता का दक्षिण या उत्तर में सिर, रक्त या दग्ध वस्त्र, कष्ट अधिक, अमधुर मामूली क्रोधपूर्वक भोजन, जन्मसमय स्त्री २ या ३, पीछे से भी २ आईं, दीपक स्वस्थान में टिका रहा, बालक जन्मोत्तर देरी से रोया। छींक भी किया, दीर्घ केश, घर के पश्चिमभाग में प्रसवस्थान। ११। २८। ३८। ५२। ६२– इन कष्टकारक वर्षों के प्रारम्भ में मृत्युञ्जय जप और तुलादान कराना श्रेष्ठ है। यदि इन वर्षों से बचे तो १०० वर्ष जीवे।

धनु–माता का सिर पश्चिम या पूर्व को, पीत या रक्त वस्त्र, पक्वान्नादि भोजन, जन्मसमय स्त्री १ या ५, दीपक हाथ में उठाया गया, बालक जन्मोत्तर तत्काल दीर्घ शब्द से रोया और छींक भी किया, घर के वायव्यकोण में सूतिकास्थान। २। १०। १८। ३१। ३८। ४२। ६७– इन वर्षों के आरम्भ में शिवार्चन, महामृत्युञ्जय जप, ब्राह्मणभोजन श्रेष्ठ है। यदि इन वर्षों से बचे तो ८१ वर्ष जीवे।

मकर– माता का सिर दक्षिण में, ऊपर काला व जीर्ण कमजोर वस्त्र; गुड़, दुग्ध, कसैला भोजन, ठण्डा जलपान किया था। जन्मसमय स्त्रियां २, पीछे से एक आई। दीपक हाथ में उठाया गया। बालक जन्मोत्तर अर्धशब्द से रोया और छींक भी किया, घर के उत्तरभाग में पुराना सूतिकास्थान। ५। १३। २७। ३६। ५७। ६३। ८७– इन कष्टकारक वर्षों से बचे, तो ९५ वर्ष जीवे। कष्टकारक वर्षों के शुरु मे शिवार्चन, मृतसंजीवनी आदि का जाप रखे।

कुम्भ–माता का सिर पश्चिम को, जीर्ण, धुम्रवर्ण वा कुरूप वस्त्र, मधुर–शीत शाकादि का भोजन, कष्ट अधिक, जन्मसमय पास स्त्रियां ४, दो स्त्री पीछे से आईं, उन में एक स्त्री गर्भिणी भी हो, दीपक स्वास्थान मे टिका रहा, बालक जन्मोत्तर अर्द्धशब्द से रोया, वामांग में कोई चिह्न भी हो, घर के उत्तरभाग में सूतिका–गृह। २। २८। ३३। ४८। ६४– इन कष्टकारक वर्षों के प्रारम्भ मे तुलादान, गोदान, मृत्युञ्जयजप हितकारक है। इन वर्षों से बचे तो ९० वर्ष जीवे।

मीन– माता का सिर उत्तर में, पीत या मलिन वस्त्र, विचित्र अल्प भोजन, जन्मसमय स्त्री २ या ५, दीपक हाथ में उठाया व जलाया गया था, बालक जन्मोत्तर देरी से रोया, घर के ईशान में सूतिका–स्थान। १। ८। १३। ३६। ४८– इन कष्टकारक वर्षों के प्रारम्भ में ग्रह–शान्ति–हवन, मृतसञ्जीवनीमन्त्र का जप कराना श्रेष्ठ है। यदि इन वर्षों से बचे तो ८३ वर्ष जीवे। **स्मरण रहे**–अधिकांश जिस लग्न के लक्षण मिलें – वही बालक का जन्मलग्न जानना चाहिए, क्योंकि यह साधारण लग्न के फल बलाबल के कारण सभी नहीं मिल सकते।

पितृपरोक्ष जन्मज्ञान– (१) जन्मलग्न को चन्द्रमा न देखे, (२) बुध–शुक्र के मध्य में चन्द्रमा हो, (३) लग्न में शनि चन्द्रमा से अदृष्ट हो, (४) भौम सप्तम, चन्द्रमा लग्न को न देखता हो– इन चारों योगों में से एक भी योग में उत्पन्न हुए बालक का पिता के परोक्ष में जन्म कहना चाहिए।

जन्मकुण्डली में दिशाज्ञान– प्रथम भाव पूर्व, द्वितीय–तृतीय ईशान, चतुर्थ उत्तर, पञ्चम–षष्ठ वायव्य, सप्तम पश्चिम, अष्टम–नवम नैर्ऋत्य, दशम दक्षिण, एकादश तथा द्वादश भाव को आग्नेय समझना चाहिए।

प्रसूतिस्थान से पाकशालादि का विचार

जन्मकुण्डली में सूर्य, मंगल जिस दिशा में हों, वहां अग्निस्थान (पाकगृह) जानना चाहिए। इसी तरह चन्द्रमा से जलस्थान, बुध से भण्डार, गुरु से धनस्थान, शुक्र से देवस्थान और शनि से अशुभ मैला स्थान जानना चाहिए। दोहा– लग्ननाथ जो केन्द्र में तीन दिशा को द्वार। वा लग्न दिशि जानिए कहत बुद्धि आगार।। केन्द्र (१। ४। ७। १०) स्थान में एक से अधिक ग्रह हों तो उनमें, जो बली (स्वराशि, मित्रोच्च, व मूलत्रिकोण राशि का) केन्द्रस्थान में स्वमित्र, शुभ के नवांश में स्थित ग्रह हो, उसकी दिशा में अथवा लग्नपति की दिशा में सूतिकागृह का द्वार होता है।

ग्रहों की दिशा–सूर्य की पूर्व, चन्द्र की वायव्य, भौम की दक्षिण, बुध की उत्तर, गुरु की ईशान, शुक्र की आग्नेय, शनि की पश्चिम और राहु, केतु की नैर्ऋत्य।

चन्द्रात्तैलज्ञानम्– चन्द्रमा से दीप के तैल का ज्ञान होता है, जैसे रात्रि का जन्म है और जन्मकाल पर चन्द्रमा के कम अंश व्यतीत हुए हैं, तो दीपक में तैल ज़्यादा कहना। यदि चन्द्रमा आधी राशि भोग कर चुका हो, तो दीपक में आधा तैल कहें। यदि चन्द्रमा शीघ्र ही दूसरी राशि पर बदलने वाला हो तो बहुत ही कम तैल कहना।

सो०– तनुस्थान शशि जाई, वा शशि षष्ठे भवन में, शिशुजन्म तब आई, तब कही दीपकतैल नहीं। सित–शनि दशमें धाम, पंचम तनुपै चन्द्रमा, शिशुजन्म में तब वाम, दीपकतैल सौं युक्त कहि।

लग्नाद्दीपवर्तिज्ञानम्– जन्मलग्न के कम अंश हों तो बड़ी बत्ती कहें, अधिक अंश हों तो छोटी कहें।

चन्द्रलग्नांतर्गतैर्ग्रहैःस्युरुपसूतिकाः– यदि लग्न की निर्बलता के कारण लग्न फलानुसार उपसूतिका का पूरा पता न लगे तो जन्मकाल में लग्न से चन्द्रपर्यन्त जितने ग्रह हों, उतनी ही उपसूतिका कहना। परन्तु जब कोई ग्रह चन्द्रमा के साथ हो तो उसके अंश देखें। यदि उसके अंश चन्द्रमा से कम हों तो उसकी गणना करे, अन्यथा उसे नहीं जोड़ें। इस प्रकार जो ग्रह लग्न मे हो और उसके अंश लग्न से अधिक हों तब ही उसकी संख्या जोड़ें, अन्यथा नहीं जोड़ें। लग्न–चन्द्रांतर्गत कोई ग्रह वक्र या उच्च का हो तो तीन गुणा करें और स्वराशि, स्वनवमांश, स्वद्रेष्काण मे हो तो द्विगुण करें, इसी प्रकार जितने ग्रह नीच राशि के, अस्त होवें, उनका आधा करके उपसूतिकाओं मे जोडने से ठीक उपसूतिका स्त्रियों की संख्या का ज्ञान होगा। इसमें भी विशेष यह ध्यान रखने योग्य है, कि– वह लग्न, चन्द्रांतर्गत ग्रह लग्न के भोगांश से सप्तमभावपर्यन्त होवे तो सूतिकागृह से बाहर समीप में, और सप्तमभाव से लग्न के भुक्तांशपर्यन्त हों तो सूतिका के समीप में अन्दर जानना चाहिए। उन ग्रहों में जो शुभ ग्रह वहां हों तो, धर्मशील, सौभाग्यवती स्त्रियां कहें, अशुभ ग्रहों से विधवा, दुश्चरित्रा कहें।

शय्या–शिर व पादविचार

"लग्नदिशि शय्या शिरस्त्रिषट्क्रान्त्येषु पादाः।" लग्न की दिशा की तरफ पलंग का सिरहाना कहें। अर्थात् १। २ लग्न में पूर्व, ३ में अग्निकोण, ४। ५ मे दक्षिण, ६ में नैर्ऋत्य, ७। ८ मे पश्चिम, ९ में वायव्यकोण, १०। ११ में उत्तर और १२ लग्न में ईशान कोण की तरफ जाने। तीसरा, छठा, नौवां, बारहवां स्थान पाये जानना चाहिए। इन स्थानों मे से जिन स्थानों मे पाप ग्रह हों, वहां सूतिका के पलंग का पाया फटा, टूटा समझना चाहिए।

दो०– मीन–मिथुन–सिंह–तुला–मेष होय तत्काल।
अन्तरिक्ष भयो बालक, शेषे भूमि विशाल।।

अथचिह्नज्ञानम्– दोहा–षट्त्रिकोण वा लग्न रवि बुध भाषे धरि ध्यान। वामे कुछ लहसन अहै गर्गवचन परमाण।। भानु तथा सौरी तनधन कुंज कण्टक चन्द। बालक के षट् अंगुली भाषत कविकुलवृन्द। तनु स्थान में शुक्र हो अष्टम जावे राहु। वामकर्ण वा मस्तके अवश चिह्न दरशाह।। सुहृद भाव में कवि तव भौम वा सौरी लग्न। वामपाद के चिह्न को भाषत ज्योतिषमग्न।। नौमे पांचे भृगु बसे तनु व चौथे मन्द। मृत्यु जावे बुध गुरु उदरे चिह्न भणंद।"

प्रसवकष्ट दूर हो– प्रसवकाल से पहले शुक्लपक्ष की चतुर्दशी को प्रातः सूर्योदय से पहले सहदेवी या अपामार्ग (पुठकण्डा) की जड़ें लाकर, घृतयुक्त गुग्गुल की धूनी देकर कटि में बांधे और साथ ही "ॐ मुक्ताः आशा विपाशाश्च मुक्ताः सूर्येण रश्मयः। मुक्ताः **सर्वभयाद् गर्भमेहि माचिर–माचिर स्वाहा।।**"– इस मन्त्र से सात बार शुद्ध जल अभिमन्त्रित करके गर्भिणी स्त्री को पिलावे तो सुख से शीघ्र ही प्रसव होगा। अगर तीस का यंत्र भी अनार की कलम से कांसे की थाली में लिख, धोकर पिला देवें तो गर्भिणी को कोई भय न होवे, बच्चा बिना कष्ट पैदा होवे। **स्मरण रहे कि**– पहले उपरोक्त मंत्र तथा **यन्त्र** ग्रहण के समय या दीपमाला की रात्रि को मन्त्र का जाप करके तथा यन्त्र को लिखकर सिद्ध कर लें, तब कष्ट को मिटाता है।

बालक के लिए अरिष्ट

दो०:– "धूनाष्टमतनु पाप खग, बरहै शशि जो खीन। कण्टक शुभ खग ना बसै, वेगि ताहियमलीन।। बसैचन्द्रा द्वादसे अष्टभवन दो पाप। एक मास में शिशु मरे मातु–पिता संताप।। लग्नाष्टम शशि राहुयुत जन्मसमय जो पाप। एक मास में शिशु मरे मातु–पिता संताप।। लग्नाष्टम शशि राहुयुत जन्मसमय जो पाव। बालक दशवासर जिये कहत बुद्धि गुण भाव।।"

अथकाणयोगः– "तनु धन व्ययपतियुक्त भृगु आई बसै त्रिकधाम। वा शशि धन कवि पाप युत, ताहि नेत्र बेकाम। सार्कशुक्र तनुनाथयुक्त भवन बसै त्रिक जाय। जन्म अन्ध यह योग है भाषत बुध समुदाय।। तात मात भ्राता तनय मातुल त्रिकघर नाथ।। चन्द्र भौम जो द्वादशे वाम नैन की हान।। भानु राहु दहनों नयन, बुधजन कहत बखान।।"

मूक योगः– "पञ्चमेश गुरुयुक्त त्रिक मूक बाल तब होय। जौ न भौमपतियुक्त गुरु त्रिकहि मूक कहि सोय।। शुक्र त्रिके गुरु सिंह अज दशम भानु कुज वास। मूक होय संशय नहीं बुधजन करत प्रकाश।।"

दुःखदयोग–रिपु मृत्यु द्वादश गेह में पापयुक्त लग्नेश। जन्मसमय जाके परे ताको अंग कलेश।। पापयुक्त तनुभवन में रिपु मृत्युप के ईश। यथा जोग जाके परे तनु मुख विश्वाबीस।। पापग्रहयुत लग्नपति परै लग्न में आय। वीर्यहीन नर होय तो अधिक व्याधि रुजताय।।

बन्धनयोग– क्रूर रहै धन नवम व्यय और पञ्चम आगार। सो नर सूर कसूर करि निवसै कारागार।।

सर्पवेष्टितयोग– यदि अष्टमेश लग्न में राहुसहित हो तो बालक सर्पवेष्टित अर्थात् सर्प जैसे नाल से वेष्टित पैदा होता है।

यमल जन्मयोग–चतुष्पद राशि (मेष, वृष, सिंह, मकर का पूर्वार्द्ध और धनु के

उत्तराद्ध) का सूर्य होवे, शेष ग्रह बलवान् होकर द्विस्वभावराशि के लग्न में स्थित हो तो यमल अर्थात् दो बच्चों का इकट्ठा जन्म कहें। अथवा आधानलग्न (गर्भ वाले दिन का लग्न) का स्वामी लग्न में हो तो यमल का जन्म होता है।

माता बच्चे को त्याग दे– शनि, मंगल से ५/७/९ स्थान में चन्द्रमा हो तो माता बालक को त्याग दे, यदि गुरु देखता हो तो त्याग देने पर भी दीर्घायु हो।

मृत्यु–समय–विचार – जिन अरिष्ट योगों में मरणकाल नहीं कहा गया, उन अरिष्ट योगकारक ग्रहों में जो ग्रह बली हो, वह जन्मकाल में जिस राशि में स्थित हो उस राशि में जब चन्द्रमा आता है, तब मृत्यु कहें। अथवा– जन्मकाल में जिस राशि में चन्द्रमा स्थित हो, जब फिर उसी राशि में चन्द्रमा आता है, तब मृत्यु होनी बताएं। अथवा चन्द्रमा जब लग्नराशि में आता है, तब मृत्यु का होना कहें। अथवा वर्ष के भीतर जब जिस योगयुक्त स्थान में जाकर चन्द्रमा बली हो और पापग्रहों द्वारा देखा जाता हो, तब मृत्यु कहनी चाहिए। किन्तु जब तक आयु का विचार न हो सके, तब तक अन्य विचार करना निरर्थक है, इसलिए आयु का प्रथम विचार करें, फिर मृत्यु कहे।

सुखदयोग – अंगधीश निज लग्न में बुध गुरु कवि के संग। या केन्द्र गृह दो परे तो जानो सुख संग।। जन्मलग्न में उच्च ग्रह जो काहु के होय। मित्रदृष्टि ता पर परे सर्वसुखी नर होय।।

क्लीब (नपुंसक) योगः – दशम भवन भृगृ मन्द दोउ क्लीब योग तब जान। शुक्रभवन से रिष्फ षट् मन्द बसे क्लिब भान।।

कुष्ठयोग :– लग्नप बुध कुज शशियुते राहुयुक्त या केतु। श्वेतकुष्ठ को योग यह वरणत गुणी सचेतु।। भौम भास्कर मन्दयुक्त रक्तकृष्ण कह कुष्ठ। लग्नाधिप रविसाथ त्रिक तापगण्ड अतिरुष्ट।। जलजगंडयुत, चन्द जो ग्रन्थिगड कुजसाथ। पित्त रोग तब जानियो बुध त्रिकयुत तनुनाथ। आमरोग गुरुयुक्त त्रिक क्षयोरोग भगसून। यमतम शिखि वा युक्त त्रिक, दिन प्रति रुजि कहि दून।।

केमद्रुम योग :– आगे–पीछे चन्द्र के जो ना परै ग्रह कोय। केमद्रुम यह योग है सब धन हरे खोय।। उच्च चन्द्र शुभयुक्त दृग् केन्द्रधाम में होय। तब केमद्रुम शुभ कहे दोष न मानो कोय।।

स्त्रीजातक

क्रूरलग्नयुक्त क्रूर जो, स्वामी दृष्टि नहीं होय। सो कन्या कुल गरल है भूलि न व्याहेउ कोय।। जाके कुज दशम बसै ऋणी होय पति तासु। लग्न राहु शनि सातवे पति जीवे नही जासु। क्रूरयुक्त लग्नेश जो पापग्रहों के बीच। सो कन्या व्यभिचारिणी बुधवर कहै कुज नीच। राहु शुक्र जो लग्न में कन्या को पति और। पापदृष्टि शनि सातवे कन्या वास कुठौर। लग्न बीच शनि कुज तमसि निर्धन स्वेच्छाचारि। सप्तम कुज राण्ड कहै पति को तजि तमारि। छटे आठवें चन्द्र जो क्रूर पर निज अन्न। भौम आठवें भवन में सो पति करै है भंग।। राहु सातवे लग्न कुज कंटक शुभ सो हीन। ताको पति जीवित रहे वर्ष दो या तीन।। द्वादशाष्ट कुज क्रूरयुत राहु बसै त्रिकधाम। राण्ड होय कुछ दिवस में कहत गणक गुणग्राम।। पापग्रहों के बीच मे लग्न होय वा चन्द। सो त्रिय नासे कुलो दुवो भाषत कविकुलवृन्द।। सप्तम भृगु जाके बसै सो कुल दोषी नारि। रूपवती तनु भृग बसै बुधजन कहत विचारि।

वैधव्य–विषकन्यायोग :– चौ.–रविवार द्वितीया जो होय। आश्लेषा ताहि दिन मे जोय।। १ ।। कृत्तिका होय शनिश्चर वार–साते तिथि को करो विचार ।। २ ।। होय शतभिषा मंगलवार। कहो द्वादशी तिथि निर्धार।। ३।। इन योगन में कन्या होय। निश्चय विधवा जाने सोय।।४।। जन्मलग्न द्वै शुभग्रह होय। एक पाप ग्रह नभ (१०) में जोय ।।५।। शत्रु क्षेत्र में द्वै ग्रैह मानो। ता कन्या को विधवा जानो।। ६।। अश्लेषा द्वितीया को होय। मदवारयुत लीजो जोय।।७।। परे शतभिषा मंगलवार। साते तिथि लीजो निर्धार ।। ८।। रविवार द्वादशी जो होय। नक्षत्र विशाखा जानो होय ।। ९।। ऐसो योग लखी जो परै। तो कन्या को विधवा करै ।। १०।। दो0– धर्मसदन में भूमिसुत जन्मसदन शनि जान। सूर्य होत सुतसदन में कन्या विधवा मान।। ११।।

वैधव्य–विषकन्याभंगयोग :– जन्मलग्न या चन्द्र ते शुभग्रह सप्तम होय। अथवा सप्तम लग्नपति सुभगा कन्या होय।।

काकवन्ध्यादि योग :– ज्ञे अष्टमे काकबन्ध्यामन्दार्कावष्टमे बन्ध्या। अष्टमे जीवे वा शुक्रे नष्टगर्भा वा मृतापत्या।।

स्त्रीणां राजयोगाः – चौपाई– केन्द्रधाम नभगा शुभ होई नरतनु पाय कलत्र समोई। रानी होय बहुत धन ताके मन प्रसन्न होई है सुत वाके–चन्द्रज तुग बसे तनु जाई लाभ धन गुरु आवे धाई। सो तिय होय नृपति की नारी जन विख्यात होय सुकुमारी। जो षड्वर्ग शुद्ध गुरु होई शशि दृग् केन्द्र में भवन में होई।। ऐसे योग जन्म सुकुमारी रानी होय सदन धनभारी।। **दोहा–** कर्क चन्द्रमा सातवें जीवदृष्टि परिपूर। पुत्र पौत्र धन भूरयुत ताको पति नृप शूर।। लाभभवन सित चन्द्र जो सोमज सप्तम भौम। सुरगुर परिपूर्ण लखे रानी होई है तौन।।

स्त्रीणां पुत्रभावविचार :– पञ्चमे शुभदृष्टे च पञ्चमाधिपतावपि। केन्द्रकोणे तदा नारी बहुपुत्रवती भवेत्।।

अशुभ प्रसवमास :– कार्तिक में स्त्री, भाद्रपद में गौ, मार्गशीर्ष में हथनी, श्रावण में गधी व घोडी, माघ में भैस, ज्येष्ठ में बिल्ली, वैशाख मे ऊँटनी, पौष में बकरी, चैत्र में कुतिया के बच्चे जन्में तो 6 मास में पिता व घरवाले की मृत्यु अथवा महाभय होता है। माघ मे बुधवार को भैस, श्रावण में दिन के समय घोडी प्रसूति हो तो महाभय शीघ्र हो। स्मरण रहे कि– यहां सर्वत्र सौरमासग्रहण है। प्रसूता गौ आदि का तत्क्षण दानकर, व्याहृतिमन्त्रो से घृतयुक्त श्वेत सरसों का हवन करे, बच्चा जन्मे तो कार्तिकशान्ति करने से शुभ होता है।

त्रिखलजन्मफल :– यदि तीन कन्याओं के पश्चात् पुत्रोत्पत्ति हो अथवा तीन पुत्रों के पश्चात कन्या का जन्म हो तो त्रिखल नामक दोष के कारण कन्या माता को, लडका पिता को भय, धनहानि आदि कष्टप्रद होते है। कृपणता छोड़कर त्रिखलशान्ति करे तो शुभ होता है। तीन अन्न, तीन वस्त्र, तीन धातु (सोना, चान्दी, तांबा) दान करें।

बालक की दन्तोत्पत्ति का फल

बालक के जन्मते ही दान्त निकले हों तो माता–पिता को अरिष्ट, ऊपर की पंक्ति में दांत से युक्त जन्म ले तो अधिक अरिष्ट, प्रथम–बार ऊपर की पंक्ति में दांत निकले तो मातृपक्ष को भय हो, मामा शान्ति करे। पहले मास में दांत निकले तो शरीर नष्ट, द्वितीय में छोटा भ्राता नष्ट, तृतीय में भगिनी नष्ट, चतुर्थ मे भाई नष्ट, पाचवें में ज्येष्ठबन्धु नष्ट, छठे में बहुभोग, सातवें में पितृसुख, आठवें में पुष्टि, ९वें में धनी, १०वें में सुख, ११वें में सुख, १२वें में निकले तो धनी हो।

अथैकनक्षत्रजनन–फलम् :– वृद्धगर्ग कहते हैं, कि यदि भ्राताओं व पिता–पुत्र, माता वा कन्या का एक नक्षत्र हो तो दोनों की अथवा एक की अवश्य मृत्यु होती है। यहां स्वर्णदान से कल्याण होता है।

जन्मकुण्डली से विशेष विचार

लघुभ्राता का जन्मसमय जानना :– (१) जन्मलग्न स्पष्ट में दशम भाव का स्पष्ट जोड़ें, जो राशि हो उस पर जब गोचर में गुरु आए तो भाई या बहन का जन्म होता है। (२) यदि भ्रातृ–प्रतिबन्धक योग न हो तो तृतीयेश, तृतयस्थ ग्रह की दशा में छोटे भ्राता का जन्म होता है।

भ्राता के कष्ट (खतरे) का समय जानना

(1) जन्मलग्न के स्पष्ट में से तृतीयेश के स्पष्ट को घटाएं, शेष राश्यादि का जो नक्षत्र हो उस नक्षत्र पर जब गोचर में शनि आता है, तब भाई या बहन को कष्ट होता है।

(२) लग्नेशस्पष्ट में से तृतीयेशस्पष्ट घटाएं, शेष में से दशमेशस्पष्ट और मंगल स्पष्ट घटाएं– शेष राशि में जब गोचर का शनि आता है तब, भ्रातृकष्ट होता है।

(३) लग्नेश, तृतीयेश, दशमेश, भौम– इन चारों स्पष्टों को जोडकर, जो राश्यादि हो उसके नवांश राशि में जब गोचर का शनि होता है, उस काल में भ्रातृकष्ट होता है।

(४) लग्नेश, तृतीयेश, दशमेश और भौम को जोड़कर, जो राश्यादि हो उसके द्रेष्काणराशि में जब गोचर का गुरु होता है, तब भ्रातृकष्ट जानिए।

माता की मृत्यु का समय जानना :–जन्म के सूर्य में से चन्द्रस्पष्ट को घटाएं, शेष की राशि में या त्रिकोणराशि में या उस शेष राशि के नवांशराशि में जब गोचर का शनि व गुरु होगा, तब माता की मृत्यु का समय जानें।

अथ कन्याजन्मनि मूलचक्रम्

स्थानम्	शीर्षे	मुखे	कण्ठे	हृदये	बाहूवोः	हस्ते	गुह्योः	जंघाः	जान्वोः	पादे
घटी	४	६	५	५	५	४	९	४	४	१०
फलम्	पशुना.	धनना.	धनला.	कुटिला	धनला.	दयावती	कामिनी	मातृना.	भ्रातृना.	वैधव्य

अथ कन्याजन्मनि नक्षत्रफलम्

जन्म नक्षत्र	मूल (१/२/३ च.)	आश्लेषा (२/३/४ च.)	ज्येष्ठा	विशाखा (४ च.)
फलम्	ससुरहानिः	सासनाशः	ज्येष्ठनाशः	देवरनाशः

सुतः सुता वा नियतं श्वशुरं हन्ति मूलजः। तदन्त्यपादजो नैव तथाश्लेषाद्यपादजः।।

तिथिगण्डान्त– पूर्णा तिथियों के अन्त की ७ घड़ी, नन्दा तिथियों की शुरु की दो–दो घड़ी तिथिगण्डान्त होता है। यह गण्डान्त जन्म, यात्रा, विवाह में भयप्रद होता है।

अथ गण्डमूलनक्षत्राणि

अश्विनी	आश्लेषा	मघा	ज्येष्ठा	मूल	रेवती

कोष्ठकोक्त ये छः नक्षत्र गण्डमूल कहलाते हैं। इन नक्षत्रों में उत्पन्न होने वाला बालक अथवा बालिका माता, पिता, कुल और अपने शरीर का नाश करने वाला होता है। यदि अपना शरीर नष्ट होने से बच जाए, तो धन तथा घोड़ों का स्वामी होता है।

गण्डमूल में उत्पन्न पुत्र का छः मास अथवा २७ दिन तक पिता को दर्शन नहीं करना चाहिए; तत्पश्चात् शान्ति करके विधि से मुख देखना कल्याणप्रद है।

मूल और आश्लेषा नक्षत्र के चरणों में जन्मफल

मूल पाद	फल	आश्लेषा पाद	फल
१	पितृनाश	४	पितृनाश
२	मातृनाश	३	मातृनाश
३	धननाश	२	धननाश
४	शान्ति से सुख	१	शान्ति से सुख

अथ मूल पुरुषचक्रम्

स्थानं	मूर्ध्नि	मुखे	स्कन्धे	बाह्वोः	हस्ते	हृदये	नाभौ	गुह्योः	जान्वोः	पादयोः
घटी	५	७	४	८	४	९	२	१०	६	६
फलम्	राजा	पि. मृ.	बली	बली	दानी	मन्त्री	ज्ञानी	कामी	मतिमा.	मतिमा.

मूलजनने वृक्षविभागफलम्

विभाग	मूल	स्तम्भ	त्वचा	शाखा	पत्र	पुष्प	फल	शिखा
घटी	७	८	१०	११	१२	५	४	३
फल	मूलनाश	वंशनाश	मातृ–क्लेश	मातुल–नाश	मन्त्री–पद	मन्त्री–पद	विपुल–लाभ	अल्प–जीवन

अथ मूलनिवासचक्रम्

जन्ममासानुसारेण	वै. ज्ये. मार्ग. फा.	चैत्र, श्रा. का. पौ.	आषा. आश्वि. मा. भा.
जन्मलग्नानुसारेण	२/५/८/११	३/६/९/१२	१/४/७/१०
मूलनिवासस्थानम्	पाताले	भूमौ	स्वर्गे
फलम्	शुभम्	कुलनाशः	शुभम्

मूल का निवास मास व लग्नानुसार– दोनों प्रकार से भूमि पर आए तो महाभयप्रद होता है। यहां अन्य एक प्रकार से स्वल्पभय होता है। तृतीया, दशमी, षष्ठी–शनि–भौम–समन्विता। शुक्ला चतुर्दशी मूले जातःसंहरते कुलम्।। यत्र गण्डे क्रूरयुते महादोषकरो भवेत्। शुभग्रहसमायोगे ईषच्छुभकरं भवेत्।। दिनक्षये व्यतीपाते व्याघाते विष्टिवैधृतौ। शूले गण्डातिगंडे च परिघे यमघण्टके।। ब्रह्मदण्डे मृत्युयोगे प्राप्ते गंडदिने शिशुः। जातो हन्ति कुलं सर्वं तस्मात् कुर्वीत शान्तिकम्।। यथा सर्पविषं चैव मन्त्रश्रवणाद्विलीयते। तथैव गंडदोषोऽपि विधानेन विलीयते।। रत्नैः शतौषधीमूलैः सप्तमृद्भिः प्रपूर्यते। शतच्छिद्रं घटं तस्मान्निसृतेन जलेन हि।। बालकस्यापि तत्स्नाने विप्रैः सम्पादिते सति। जपहोमप्रदानेन कृते स्यान्मंगलं ध्रुवम्।। विरुद्धावयवे मूले विधिरेव स्मृतो बुधैः। मुनीनां वचनं सत्यं मन्तव्यं क्षेममीप्सुभिः।।

अथाभुक्तमूलविचारः– ज्येष्ठा नक्षत्र की अन्तिम चार घटी (किसी के मत से एक घटी) एवं मूल नक्षत्र की आदि की चार घटी विशेष आधी, अभुक्तमूल कहलाता है।

इस समय जो बच्चा जन्म ले, उसका परित्याग कर दें या आठ वर्ष; असमर्थ हों तो ६ मास अथवा २७ दिन तक पिता मुख न देखे।

धनगंडे दरिद्रोऽपि शांतिं कुर्यात्स्वशक्तितः। अंन्यथा नाशमाप्नोति चामुक्तर्क्षे विशेषतः।।

गण्डमूलोत्पन्न बालक का जन्मकाल फल

समय	प्रातः	दिन में	रात्रि में	सन्ध्या में
नक्षत्र	सभी गण्डमूल नक्षत्र	मूल, ज्ये.	मघा, आश्ले.	रे. अश्वि.
फल	पशु हानि	पिता को भय	माता को भय	शरीर को भय

अथ पुरुष जन्मकुण्डल्यां भावस्थ–ग्रह फलानि

भाव		सूर्य	चन्द्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	केतु
तनु	1	अंगपीड़ा	कान्तिसुख	रक्तकोप	सुखी	विद्वान्	सुखी	दुःखी	रोगी	सकाम
धन	2	धननाश	सम्पत्तिवान्	ऋणी	धनी,गुणी	धनागम	धनी	धनहानि	निर्धन	खल
सहज	3	नीरोगी	कीर्तिमान्	विक्रमी	अरिमर्दन	पापी	पापी	पराक्रमी	विक्रमी	शूर
सुहृत्	4	दुःखी	सुखभोगी	दुःखी	सुखी	सुखी	सुखी	दुःखी	मातृहानि	दुःखी
सुत	5	सुतहानि	धनी,पुत्रवान्	पुत्रहीन	अल्पपुत्र	प्रतापी	धीमान्	पुत्रहीन	कुमति	मूर्ख
शत्रु	6	शत्रुनाश	अल्पायु	शत्रुनाश	रोगी	कामी	रोगी	शत्रुजित्	सबल	सबल
स्त्री	7	स्त्रीदुष्टा	सुभार्यावान्	स्त्रीनाश	धर्मज्ञ	सुभार्या	कामी	स्त्रीकुलटा	स्त्रीरोगी	स्त्रीहानि
मृत्यु	8	अल्पायु	योगी	शरीरपीड़ा	गुणी	नीचस्व	नीच	नेत्ररोगी	रोगी	क्लेशयुक्त
धर्म	9	दुष्टमति	धर्मात्मा	पापरत	सुखी	धार्मिक	तपस्वी	दुष्टबुद्धि	दैन्ययुक्त	पापी
कर्म	10	शूर	तेजयुक्त	तेजस्वी	कीर्तिमान्	सम्पत्तिवान्	संपत्ति	पराक्रमी	मानी	पितृहीन
लाभ	11	धनी	धनी	धनी	धनी	सुलाभ	सुमति	धनवान्	सुख्यात	धनी
व्यय	12	दुष्टस्वभाव	कामी	पतितदार	दरिद्र	खल	रोगी	दुःखी	पतित	दुर्जन

अथ स्त्रीजन्मकुण्डल्यां भावस्थ–ग्रहफलानि

भाव		सूर्य	चन्द्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	केतु
तनु	1	क्रोधिनी	गतायु	विधवा	सौभाग्या	सती	ससुखा	बन्ध्या	पुत्रहीना	दुःखिनी
धन	2	दरिद्रा	बहुधना	बन्ध्या	धनाढ्या	धनाढ्या	सुभगा	दुःखिनी	दरिद्रा	दुःखार्ता
सहज	3	सुसुता	सुखिनी	विसहजा	पुत्रवती	सुसहजा	धनाढ्या	सुदक्षा	सवित्ता	रोगिणी
सुहृत्	4	सपीड़ा	दुर्भगा	दुःखार्ता	सुगृहा	सुखिनी	सुखिनी	हृद्रोगा	रोगार्त्ता	मातृहानि
सुत	5	विपुत्रा	ससुखा	विपुत्रा	धीकांतियुता	सुगुणा	पुत्रवती	विपुत्रा	विपुत्रा	अपुत्रा
शत्रु	6	सुखिनी	सरोगा	अरोगा	सकोपा	सापदा	दरिद्रा	गुणज्ञा	सधना	धनयुता
पति	7	दुःखार्ता	पतिप्रिया	विधवा	पतिव्रता	कीर्तियुता	पतिप्रिया	विधवा	दुःखिता	विधवा
मृत्यु	8	विधवा	रोगिणी	विधर्मा	कृतघ्ना	सरोगा	विसुखा	दुःखिनी	विधवा	दुःखिनी
धर्म	9	धर्मज्ञा	सुखिनी	दुःखिनी	सुभोगा	पुत्राढ्या	धर्मरता	बन्ध्या	बन्ध्या	शोकयुक्ता
कर्म	10	सुकर्मा	धर्मज्ञा	कुपुत्रा	सत्कर्मा	साधवी	सधना	पापिनी	दुष्कर्मा	पापिनी
लाभ	11	सधना	गुणज्ञा	सुलाभा	पतिव्रता	सुपुत्रा	सुपुत्रा	सुलाभा	नीरोगा	सुभगा
व्यय	12	क्रोधिनी	हीनांगी	खला	कृशांगी	सुव्यया	सुव्यया	मूढा	दुष्टा	रोगिणी

अश्विनीजातस्य फलम्–अश्विनी नक्षत्र के प्रथम चरण में जन्म हो तो पिता को भय, द्वितीय में सुखैश्वर्य, तृतीय में मन्त्रीतुल्य, चतुर्थ में नृपतिसमान होता है।

मघाफलम्– मघा के प्रथमचरण में जन्म हो तो माता या मातृपक्ष को हानि, दूसरे में पिता को भय, तीसरे में सुख, चतुर्थ चरण में धन, विद्यालाभ होंगे।

ज्येष्ठापादफलम्– प्रथम चरण में बड़े भाई को नेष्ट, द्वितीय में छोटे का नाश, तृतीय में माता का नाश, चतुर्थ में अपने बाप का नाश होता है। " ज्येष्ठाद्यपाद जो ज्येष्ठं हन्ति बालो न बालिका। न बालिका तु मूलक्षै मातरं पितरं तथा।"

रेवतीपादफलम् –रेवती के प्रथम चरण में जन्म हो तो नृपसमान, दूसरे में मंत्री या मुख्तार, तीसरे में सुख–सम्पत्तियुक्त, चतुर्थ चरण में अनेक कष्ट हों।

अथ मातृसुखनाश–योग– (१) पाप ग्रहयुक्त चन्द्रमा सातवें भाव में हो, (२) चन्द्रमा से सातवें पापयुक्त शुक्र हो, (३) पापग्रहों के बीच चन्द्रमा हो अथवा चन्द्रमा से चौथे–सातवें पापग्रह हो, (४) तीसरे अथवा सातवें स्थान में सूर्य और लग्न में मंगल हो, (५) चौथे भाव में शनि पापग्रहों से ही दृष्ट हो– इन पांचों में से एक भी योग मिले तो माता को भय हो, जप–दान करना चाहिए।

पितृनाशयोग– (१) सूर्य, मंगल दसवें वा नवम में गए हों, (२) दशमेश रवि, मंगल से युक्त हो, (३) शत्रुराशि का मंगल १०वें हो, (४) पापग्रह से युक्त सूर्य सातवें हो– इन चार योगों में से एक भी योग हो तो पिता को भय हो।

भ्रातृनाशयोग– भ्रातृ गृह को ईश जो भौम संग त्रिक होय। जाके ऐसे योग है भ्रातृहीन नर होय।।

सन्तानसुखनाशयोग– गुरु ते पंचम गेहपति, जाय परे त्रिकभाव। ऐसा योग जो लखि परे ताकि पुत्र अभाव। पुत्र धर्म अरु लग्नपति जाय परे त्रिकधाम। जन्म समय या योग ते सदा पुत्र की हान।

रोगिणी स्त्रीयोग– शुक्र और सूर्य सप्तम, पंचम और नवम में हों तो स्त्री प्रायः रोगयुक्त रहती है।

नीचयोग – सहज सप्तम धनसदन में क्रूर बसे खग आई। भवन पांचवें गुरु बसै नीच जाति मनसाई।। सिंहलग्न जन्मे शिशु सप्तम शनि विकराल। म्लेच्छ होय कुछ दिवस में यदपि ब्रह्म को बाल। जिनके बुध भग राहुसंग सप्तमभाव विराज। लहै सर्वदा राजसुख होवे वेश्यावाज।।

गोचरग्रहाणां द्वादशभाव–फलबोध–चक्रम्

भाव→ ग्रह↓	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12
सूर्य	स्थाननाश	भय	श्रीप्राप्ति	मानभंग	दैन्य	विजय	यात्रा	पीड़ा	सुकृतिनाश	सिद्धि	धनलाभ	द्रव्यनाश
चन्द्र	अन्नलाभ	धननाश	सुख	रोग	कार्यनाश	धनलाभ	स्त्रीलाभ	रोग	धर्मलाभ	सुख	धनलाभ	धननाश
मंगल	शत्रुभीति	धननाश	धनलाभ	शत्रुभय	धननाश	धनलाभ	द्रव्यनाश	शत्रुभय	शत्रुभय	शोक	धनलाभ	धननाश
बुध	बन्धन	धनलाभ	शत्रुभय	पशुलाभ	सुख	स्थानलाभ	पीड़ा	धनलाभ	पीड़ा	सख	धनलाभ	धननाश
गुरु	भय	धनलाभ	क्लेश	धननाश	सुख	शोक	राजमान	पीड़ा	सुख	दैन्य	धनलाभ	पीड़ा
शुक्र	शत्रुनाश	धनलाभ	सुख	धनलाभ	पुत्रलाभ	शत्रुभय	शोक	धनलाभ	वस्त्रलाभ	दुःख	धनलाभ	धनलाभ
शनि	भय	धननाश	ऐश्वर्य	शत्रुभय	पुत्रनाश	धनलाभ	दोष	पीड़ा	धर्मनाश	दौर्मनस्य	धनलाभ	धननाश
राहु	हानि	धननाश	धनलाभ	वैर	शोक	श्रीप्राप्ति	कलह	मृत्यु	दुःख	वैर	सुख	शोक
केतु	रोग	वैर	सुख	भय	सुख	धनलाभ	कलह	रोग	पाप	शोक	कीर्ति	शत्रुभय

जारजयोग – भानुचन्द्रतनु ना लखै लग्नप लखै न लग्न। सो शिशु है पर पुरुष को भाषत ज्योतिषमग्न।। रवि कुज गुरु तिथि अष्टमी चौथ चतुर्दशी सार। तीन उत्तर जन्म में तब शिशु कहो परार।।

पूतनाग्रस्तलक्षण एवं शान्ति–

बहुत मैले बिछौने पर अकेली जगह में छोटे बच्चे को सुला देने से पूतना नाम राक्षसी का उसमें प्रवेश होने से बच्चा बीमार हो जाता है। तब पूतना की बलि निकालने से अच्छा होता है। जब कभी बच्चा बैठे–बैठे गिर पडे, या यूं मालूम हो कि–किसी के पीटने से गिरा है और मूर्छा आ गई है अथवा एकाएक कोई रोग हो गया है तब जानो, कि– उसे महा पूतना ने ग्रसा है। यदि कोई लाभादि के वश में आकर वनदेवता या नागदेवता का तिरस्कार कर दे तो उसके बालक में ऊर्ध्वपूतना प्रवेश कर लेती है। यदि कोई मनुष्य अपनी ऋतुस्नाता स्त्री का गमन करने के पश्चात् स्नान न करे या बिना ऋतु के सगम करके हाथ मुंह न धोवे और माता अपवित्र अवस्था में ही बालक के साथ सो जावे तो बालक्रांता नाम की राक्षसी का दोष होगा। बच्चे को इतर फुलेल और फूलमाला पहिनाकर बाहिर जाने से रेवती ग्रही का दोष होता है। सिर खुले, जूठे बाल को संध्या के समय सोने से भी रेवती का आवेश हो जाता है। संध्या के समय जमीन पर सोने से अथवा खेलने से बालक को पुष्प रेवती का दोष होता है। कदाचित् बालक खेलता–खेलता गिर जाए अथवा उसे उल्टी हो या हाथ–पांव नहीं धुले हो तब उसे शुष्क रेवती का आवेश होता है। जूठा खाने और देवता के स्थान पर मल–मूत्र करने से शकुनी ग्रही बालक को पकड लेती है। जो नित्यकर्म संध्या–वंदनादि नहीं करते या जो लोग पक्षियों को पालते हैं, जन्मान्तर में उनके बालकों पर शिशुमुण्डिका राक्षसी का दोष हो जाता है। फिर उसका पूजन और बलि, धूपादि दान करने से शान्ति होती है।

अथग्रहाणामेक भोगफल–समयादि ज्ञानम्

ग्रहाः	सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा. के.
एकार्थभोग	मास 1	दिन 2¼	मास 1½	मास 1	मास 12	मास 1	मास 30	मास 18
फलसमयः	आदौ	अन्ते	आदौ	सदा	मध्ये	मध्ये	अन्ते	अन्ते
गतव्यराशेः प्राक्फलम्	मास 5	घटी 3	दिन 8	दिन 7	मास 2	दिन 7	मास 6	मास 3

अथ ग्रहतुष्ट्यर्थ धारणाय मणयः

सु.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
माणिक्यम्	मुक्ताफलम्	प्रवालम्	पन्ना	पुष्परागः	हीरा	नीलमः	गोमेदम्	रौप्यम्
विद्रुमम्	रौप्यम्	विद्रुमम्	सुवर्णम्	मुक्ताफलम्	लोहम्	वैडूर्यम्	लाजवर्तः	लाजवर्तः

उद्वर्तनम्– दूर्वा, कुटकी, नीम के पत्ते, तज–इनका उबटना बालक के शरीर में मलकर पीछे पीपल के पत्ते, मुलही, लसूडे के पत्ते– इनका काढा बनाकर स्नान कराए, तो यह रोग दूर होगा।

चेष्टाः– जिस बालक के नखों और दांतों में विकार हो, नींद नहीं आए, डर लगे, मन में उद्वेग रहे, शरीर में दुर्गन्ध उठे, अनेक प्रकार की चेष्टा करे, बल अधिक हो जाए–उसे ग्रहाविष्ट जानना चाहिए

सर्वबालग्रह–शान्त्यर्थं देवालये ज्योतिर्दर्शनं निवासश्च तत्ररात्रौ – "ॐ हिनस्ति दैत्यतेजांसि स्वनेनापूर्य या जगत्। सा घण्टा पातु नो देवि पापेभ्यो नः सुतानिव।।"– इत्यस्य जापः, ततोऽनेनैव मन्त्रेण सदीप दधिमाषान्नबलिदाने घण्टाबन्धने च सर्वबालग्रहशान्तिः।।

अथ बालरक्षाविधि (प्रयोगसारे)– यदि दुष्टदृष्टि (नजरादि दोषों) के कारण बालक के शरीर में कोई रोग, कष्ट हो जाए तो– "ॐ वासुदेवो जगन्नाथः पूतनातर्जनो हरिः। रक्षतु त्वरितं बालं मुञ्च मुञ्च कुमारकम्।। १।। कृष्ण रक्ष शिशुं शंख–मधुकैटन–मर्दन। प्रात –सङ्गव–मध्याह्न–सायाह्नेषु च सन्ध्ययोः।। २।। महानिशि सदा रक्ष कंसारातिं निषूदन। यद्गोरजः पिशाचांश्च ग्रहान् मातृग्रहानपि।। ३।। बालग्रहान्विशेषेण छिन्धि छिन्धि महाभयान्। त्राहि त्राहि हरे नित्यं त्वद्रक्षाभूषितं शिशुम्।। ४।। – इन चारों मंत्रों से अभिमंत्रित की गई गौ के गोबर की शुद्ध भस्म को बालक के मस्तक, कण्ठ, हृदयादि अंगों में लगाने से बालक का कष्ट दूर होगा।

बाल कष्टावली चक्रम्

किस समय कौन पूतना ग्रस्त करती है	मूर्ति–निर्माणार्थ द्रव्य	पूजनद्रव्य	बलि–विधान व समय	स्नान, पूजा, मार्जनमंत्र	धूप
प्रथम दिन–मास–वर्ष में योगिनी	नदी के दोनों किनारों की मृत्तिका	श्वेतचन्दन, तिलक, श्वेतपुष्प, 5 रंग की झंडी 5, दीपक 5, आटे के सतिए 5, कपूर, लोहवान,	श्वेतभात, 5 पूर्ण पोली (सुहाली) 1 प्रहर दिन चढ़े पूर्व दिशा में चौरास्ते पर रखें,	ॐ ब्रह्माविष्णुश्च रुद्रश्च स्कन्दो वै श्रवणस्तथा। रक्षन्तु त्वरितं बालं मुञ्च मुञ्च कुमारकम्।।	राई, खस, आक के फूल, बिल्ली और मनुष्य के बाल, निम्बपत्र, गोघृत
द्वितीय दिन–मास–वर्ष में सुनन्दना	एक सेर चावलों का आटा	10 दीपक, 10 झण्डी, पुष्प, चावलों के आटे के सतिए 10,	भात एक सेर, आटे के पूड़े, मत्स्य व बकरे का मांस, संध्यासमय, पश्चिम दिशा में चौरास्ते पर रखें,	ॐ नमश्चामुण्डायै विच्चे ह्रां ह्रां ह्रीं ह्रीं हूं हूं स्थानाद्राझया स्वाहा।	
तृतीय दिन–मास–वर्ष में पूतना	एक सेर चावलों का आटा	रक्तचन्दन, रक्तपुष्प, श्वेत–ध्वजा, दीपक 10, गेहूं के आटे के सतिए 10,	एक सेर लालभात, आधा सेर पूर्ण पौली, पश्चिम दिशा में किसी वृक्ष के नीचे रखें,	सुनन्दना विधानोक्त	लहसुन, गोश्रृंग, सांप की कांचली, नीम के पत्ते, पुरुष और बिल्ली के बाल, गोघृत।
चतुर्थ दिन–मास–वर्ष में मुख मंडिका	तिल–चूर्ण एक सेर	श्वेतपुष्प, श्वेतध्वजा 5, दीपक, मिल सके तो अर्जुन वृक्ष के पुष्प,	भात, सेर आटे के पूड़े, आधा सेर पूर्ण पौली, सायं, पश्चिम दिशा में किसी वृक्ष के नीचे रखें,	सुनन्दना विधानोक्त	
पंचम दिन–मास–वर्ष में विडालिका	एक सेर चावलों का आटा	श्वेतचन्दन, श्वेतपुष्प, दीपक 5, श्वेत ध्वजा 5, गेहूं के आटे के सतिए,	श्वेत भात, 7 पूड़ियां, सायंकाल पश्चिम दिशा में वृक्ष के नीचे रखें,	ॐ भगवती ह्रीं ह्रीं ह्रीं हुं हुं मुञ्च रक्षा कुरु कुरु बलि गृहाण अस्त्र ठः ठ चामुंडे सर्वारि चण्डिके ठः ठः स्वाहा।	
षष्ठ दिन–मास–वर्ष में षट्कारिका	नदी के दोनों किनारों की मिट्टी	श्वेतचन्दन, श्वेतपुष्प, दीपक 5, श्वेतध्वजा 5,	भात, 5 मिठाई, 5 सुहाली, 7 पूड़ियां, 1 प्रहर दिन चढ़े पूर्व में चौरास्ते पर रखें,	योगिनी विधानोक्त	कूठ, गुग्गुल, राई, हाथीदांत, घृत।
सप्तम दिन–मास–वर्ष में कालिका	चावल का आटा एक सेर	श्वेतचन्दन, श्वेतपुष्प, दीपक 5, श्वेतध्वजा 5,	भात, 7 पूड़िया, सायकाल पश्चिम में चौरास्ते पर मौन होकर रखें,	विडालिका विधानोक्त	
अष्टम दिन–मास–वर्ष में कामिनी	नदी के दोनों किनारों की मिट्टी	रक्तचन्दन, 5 रंग की झंडी 5, दीपक 5,	गेहूँ की रोटी, मसूर की दाल, हरासाग, छागमांस, संध्या में चौरास्ते पर रखें,	विडालिका विधानोक्त	
नवम दिन–मास–वर्ष में मदना	एक सेर गेहूं का आटा	चन्दन, पुष्प, 5 दीपक, 5 रंग की झंडी 5,	भात, मत्स्यमांस, पापड़ी, सुहाली, उत्तर में प्रात चौरास्ते पर रखें	ॐ नमो भगवते वासुदेवाय कृष्णाय मंडलबलिमादाय हन् हन् हुं फट् स्वाहा।	गोश्रृंग, लहसुन, सांप की कांचली, नीम के पत्ते, पुरुष और बिल्ली के बाल, राई, गोघृत।
दशम दिन–मास–वर्ष में रेवती	एक सेर गेहूं का आटा	रक्तपुष्प, 25 झण्डी, 25 दीपक, 25 सतिए,	गुड़ के घी भुने चावल, गौघृत, सायं, दक्षिण में चौरास्ते पर रखें,	ॐ नमो भगवते वैश्वदेवाय हन् हुं फट् स्वाहा।	
एकादश दिन–मास–वर्ष में सुदर्शना	काले उड़दों का आटा एक सेर	श्वेतपुष्प, 25 दीपक, 25 सफेद झण्डी, 25 आटे के सतिए,	श्वेतभात, 7 पूड़े, सुहाली 7, सायं व प्रातः दक्षिण में चौरास्ते पर रखे,	ॐ नमो भगवते रावणाय चन्द्रहास, वज्रहस्ताय ज्वल ज्वल दुष्ट ग्रहादीन् ॐ ह्रीं फट् स्वाहा।	
द्वादश दिन–मास–वर्ष में अद्भुता	चावलों का आटा एक सेर	13 दीपक, 13 झण्डी, 13 सतिए आटे के,	सुहाली, पूड़े 7, पूड़िया 7, मत्स्य मांस, पापड़ी, सायंकाल दक्षिण में चौरास्ते पर रखें,	ॐ नमो नारायणाय ज्वलद्धस्ताय हन् हन् शोषय शोषय मर्दय मर्दय तापय तापय हुँ हुँ हुँ हन् हन् दुष्टानां ह्रां ह्रां स्वाहा।	

अथ बालपूतना–विधान

यहां लिखे बाल–कष्टावली चक्रोक्त हर एक बलिदान के पीछे मार्जन शिखास्थान– स्पर्श निम्न–लिखित मन्त्रों द्वारा एक ही प्रकार से होता है, बलिदान–विधि तीन दिन निरंतर करें। चौथे दिन पलाश, अश्वत्थ, बिल्व, गूलर, मिल सके तो कपित्थ– इनके पत्रों को उबालकर बालक को मंत्र–पाठपूर्वक स्नान करावें। तदनन्तर कल्याणार्थ यथाशक्ति भिक्षुकों को तथा कुत्ते आदि जीवों को मिष्ठान भोजन कराएं। तदनन्तर "ओं द्यौः शांतिरन्तरिक्ष..........." इत्यादि शांतिमंत्रों व मार्जनमंत्रों से कुशा से छींटे देने के अनन्तर बालक की शिखा या शिखास्थान स्पर्शपूर्वक यह मत्र पढ़ें– " ओं रक्ष रक्ष महादेव नीलग्रीव जटाधर। ग्रहैस्तु सहितो रक्ष मुञ्च मुञ्च कुमारकम्।।

"ओं सर्वमातर इमं ग्रहं संहरंतु हुं रोदय–रोदय, स्फोटय –स्फोटय स्वाहा। गर्ज–गर्ज सः गृहाण–गृहाण आमर्दय– आमर्दय हीम्–हीम् हन् हन् एवं सिद्धिरुद्रो ज्ञापय स्वाहा।।"

अथ नक्षत्र-कष्टावली

रोग-नक्षत्र	रोगशान्त्यर्थ दान	नक्षत्रपादवशाद् रोगदिन-संख्या				रोगशान्त्यर्थ जपनीय मन्त्र	रोगनिवृत्त्यर्थ बलि
		1	2	3	4		
अश्विनी	भोजनदान	9	11	1	20	मृत्युञ्जयमंत्र	घोड़ी के मुख में सात व्रीही धान्य दें।
भरणी	गो-अन्नादि दान	0	80	40	11	यमायतवेति मंत्रः	हाथी के मुख में तिल चावल दें।
कृत्तिका	स्वर्णदान	9	11	16	28	अग्निर्मूर्धेति	कछुए के मुख में घी दें।
रोहिणी	घृतदान	3	9	18	30	ब्रह्मायर्येति	सर्प को दूध-दही खिलाएं।
मृगशिरा	तिलदान	9	5	7	10	इमं देवेति मंत्र	खरगोश को दूध पिलाएं।
आर्द्रा	गोदान	0	18	0	0	नमस्ते रुद्र इति मंत्र	बकरे के मुख में रक्त डालें।
पुनर्वसु	पीतलदान	7	14	2	21	अदितिर्द्यौरिति मन्त्रः	सूअर को धान्य खिलाएं।
पुष्य	तैलान्नदान	6	7	10	21	बृहस्पतेति मन्त्रः	बकरे के मुख में दही डालें।
आश्लेषा	गो-अजादि दान	0	0	41	0	नमोस्तुसर्पेति मन्त्रः	बिलाब को दूध पिलाएं।
मघा	वस्त्राज्यदान	15	7	17	20	पितृभ्य इति मन्त्रः	बन्दर को तिल उड़द खिलाएं।
पू.फा.	भोजनदान	0	15	0	30	भगम्प्रणेति मन्त्रः	ऊंट के मुख में शहद दें।
उ.फा.	अन्नदान	7	14	7	60	दध्यावद्धेति मन्त्रः	गाय को शाक खिलाएं।
हस्त	तैलदान	15	17	15	0	उदत्यं जातवेदेति मन्त्रः	भैंसे को कमल के फूल खिलाएं।
चित्रा	दुग्धदान	11	9	9	16	त्वष्टा तुरगेति मन्त्रः	बाघ के लिए तगर-धतूरे के फूल वन में रखें।
स्वाती	गौघृतदान	60	17	30	0	वायोरग्नेति मन्त्रः	भैंसे को गुड़, चावल खिलाएं।
विशाखा	गौ-स्वर्णदान	15	0	4	13	इंद्राग्नी इति मन्त्रः	बाघ के मुख में गुड़, भात की बलि दें।
अनुराधा	गौघृतदान	60	12	36	30	नमो मित्रेति मन्त्रः	बकरे को कुल्थीसहित भात, गुड़ दें।
ज्येष्ठा	तिलदान	69	9	6	4	त्रातारमिन्द्रमिति मन्त्रः	बंदरों को गुड़, तिल डालें।
मूल	रौप्यपात्रदान	0	9	15	6	माता पुत्रेति मन्त्रः	बिलाब को दूध पिलाएं।
पू.षा.	गोमुक्तादान	0	15	24	10	आपोधर्मेति मन्त्रः	कछुए के मुख में नागरमोथे की बलि दें।
उ.षा.	भोजनदान	30	24	26	16	विश्वेदेवेति मन्त्रः	गौ को धान्य डालें।
श्रवण	श्रीफलदान	60	24	6	9	विष्णोरराटेति मन्त्रः	भैंसे के मुख में रक्त, मीठा की बलि दें।
धनिष्ठा	अश्वान्नदान	15	4	20	21	वसोः पवित्रेति मन्त्रः	मनुष्य के मुख में दहीं, अन्न की बलि दें।
शतभिषा	भोजनान्नदान	4	45	3	22	वरुणस्तम्भेति मन्त्रः	गौ को चावल खिलाएं।
पू.भा.	भोजनदान	0	12	21	19	अहिर्बुध्न्येति मन्त्रः	कौए के मुख में फल की बलि छोड़ें।
उ.भा.	अन्नदान	10	3	9	15	अहिर्बुध्न्येति मन्त्रः	गाय को चावल खिलाएं।
रेवती	फलदान, कन्यापूजन	18	10	9	20	पूषन्नयेति मन्त्रः	हाथी के मुख में पूरी-पूओं की बलि छोड़ें।

ज्वालामुखी योग

तिथि	१	५	६	९	१०
नक्षत्र	मूल	भरणी	कृत्तिका	रोहिणी	आश्लेषा

जन्मे सो जीवे नहीं बसै जो उजड़ जाय। चूड़ा पहिरे कामिनी चटपट विधवा होय। गए गए ना बुहरे कूए नीर सुकाय।

पुत्रोत्पत्ति का समय

(1) जन्मलग्नेश व पुत्रेश के स्पष्ट को जोड़ें। योगफल के राश्यादि और नवांश की राशि में या इन दोनों की त्रिकोण राशि में जब गोचर का गुरु होता है, तब पुत्र-संतान उत्पन्न होती है।

(2) चंद्र, लग्न, गुरु- इन तीनों से पंचमस्थानेश या नवमस्थानेश की दशान्तर्दशा मे पुत्रसंतानोत्पत्ति होती है।

विवाह (स्त्रीसुख) होने का समय

(1) जन्मलग्नेश, सप्तमेश को जोडकर जो राशि हो, उस राशि में जब गोचर का गुरु हो, तब विवाह होता है।

(2) चन्द्रराशीश और अष्टमेश को जोड़ने पर प्राप्त राशि मे जब गोचर का गुरु आए, तब विवाह होता है।

(3) लग्नेश का नवांशेश जिस राशि में हो, उस राशि से द्वितीयभाव में जब गोचर मे गुरु-चन्द्र होते हैं, तब विवाह होता है।

(4) शुक्र-चन्द्र व सप्तमेश की दशान्तर्दशा में विवाह होता है।

पिता के खतरे का समय

(1) गुलिक स्पष्ट से सूर्य स्पष्ट घटाएं, शेष राशि के त्रिकोण में जब गोचर का शनि हो, तब पिता की मृत्यु होती है।

(2) सूर्य से 1/2/7/12 भाव में जो पापग्रह हो, उस की दशान्तर्दशा में पिता की मृत्यु होती है।

नोट- इस कष्टावली में प्रत्येक नक्षत्र का जपनीय मंत्र पृथक्-पृथक् लिखा है, उसे न जप सकें तो महामृत्युंजय मन्त्र ही जपें। जिस नक्षत्र के जिस चरण में पहले रोग उत्पन्न हुआ है, उस चरणानुसार कष्ट व दिन जानें, शून्य से विशेष भय जानें। दान, जप करें। जिस नक्षत्र मे रोग पैदा हुआ है, उसे यहां कष्टावली में रोगनक्षत्र का नाम दिया गया है। रोगनक्षत्र को जानकर, इन कोष्ठकों में लिखा उपाय एवं यथाशक्ति दान करने से रोग शान्त होगा। 'रोग निवृत्त्यर्थ बलिदान' वाले कॉलम में घोडी, हाथी आदि के मुख में बलि देने के लिए लिखा है, वह गेहूं के आटे की वैसी ही आकृति बनाकर (मन में हाथी आदि की धारणा करके) उसके मुख में बलिद्रव्य देकर धूप-दीपादि करके आटे की आकृति को जल में प्रवाहित कर दें- ऐसा तीन दिन करें। साथ ही दान और जप भी करें।

रोगोत्पत्तौ कुयोगाः

(1) रोग के शुरूआती दिन में जन्मराशि, नक्षत्र, लग्न में या राशि व लग्न से आठवें चन्द्र या यमघंट कुयोग हो।

(2) सूर्यवार को मघा, द्वादशी या भरणी, अनुराधा नक्षत्र हो।

(3) सोमवार को आर्द्रा या उ. षा. नक्षत्र हो।

(4) मंगलवार को कृत्तिका, मघा व शतभिषा या नन्दा (1/6/11) तिथि हो।

(5) बुधवार को अश्विनी, विशाखा या भद्रा (2/7/12) तिथि, आश्लेषा हो।

(6) गुरुवार छठ व शतभिषा या ज्येष्ठा व मृग. या जया (3/8/13) तिथि व मघा, हस्त हो।

(7) शुक्रवार–अष्टमी व अश्विनी या आश्ले., श्रवण या रिक्ता (4/9/14) तिथि, आर्द्रा या धनिष्ठा हो।

(8) शनिवार को नवमी व पू. षा. या हस्त व पू. भा. या पूर्णा (5/10/15) तिथि व भरणी हो।

(9) सूर्य, मंगल, शनि वारों को 4। 6। 9। 12/14/30 तिथि, भरणी, कृत्ति. आर्द्रा, आश्लेषा, पूर्वा. 3, विशा., ज्ये., धनि., शत. नक्षत्र हों तो मृत्युतुल्य कष्ट होता है।

परञ्च– जन्मपत्र में मारकेश का और भी विचार कर लेना चाहिए। क्योंकि– बिना मारकेश आए मृत्यु तो होती ही नहीं। हां– ऐसे योग में कष्ट ज़रूर मृत्युतुल्य होता है। उपरोक्त योगों में से किसी भी एक योग में रोगारम्भ होते ही तुलादान, गोदान तथा मृत्युञ्जयजप करना कल्याणप्रद है।

बाल–रक्षार्थ धूप

राई, लाख, नीम के पत्ते, बांस का छिल्का, लहसुन, शिवजी पर चढ़े हुए फूल, अगर, गाय का घी–इन सब को मिलाकर धूप देने से सब पूतना तथा अन्य बालग्रह दूर हो जाते हैं। धूप देते समय "खुं खुर्दनं हुं फट् स्वाहा–" इस मन्त्र का उच्चारण करें।

अथ रोगत्रिनाड़ी चक्रम्

प्रथमा	आर्द्रा	पू.फा.	उ.फा.	अनु.	ज्ये.	धनि.	शत.	भर.	कृ.
मध्या	पुन.	मघा	हस्त	विशा.	मूल	श्रवण	पू.भा.	अश्वि.	रो.
अन्त्या	पुष्य	आश्ले.	चित्रा	स्वा.	पू.षा.	उ.षा.	उ.भा.	रेव.	मृ.

सूर्यनक्षत्र, दिन, जन्म और नाम नक्षत्र रोगत्रिनाड़ीचक्र में एक ही नाड़ी पर हों तो असाध्य रोगी का मरण होता है। मरने को हो तो प्रतिदिन देखने से जिस दिन यह योग मिले, उसी दिन निःसन्देह रोगी की मृत्यु कहनी चाहिए। यह रोगत्रिनाड़ी चक्र यात्रा तथा रण के समय वर्जित करना चाहिए।

कालस्य मुखदंष्ट्रा ज्ञानम्

दिननक्षत्र से नामनक्षत्र 5/13/23 संख्या का हो तो काल का मुख होता है और उसी प्रकार 10/18वां नक्षत्र दंष्ट्रा (दाढ़) होती है। काल के मुख में दाढ़ में जिस दिन गोचर में नक्षत्र प्राप्त हो, उस दिन अत्यन्त रोगग्रस्त पुरुष की हालत मृत्युपर्यन्त होती है। रोग पर, सर्पादि दर्शन पर, विग्रह–युद्ध में जाने पर काल के मुख–दंष्ट्रा में नक्षत्र हो तो अशुभ होता है।

कालांगचक्र से शुभाशुभ फलज्ञान

यदि किसी व्यक्ति के अंङ्गविशेष में पीड़ा, कष्ट, घाव, फोड़ा आदि चर्मविकार किंवा वायु–विकारादिजन्य कोई कष्ट हो तो तात्कालिक प्रश्नकुण्डली लगाकर, निम्नलिखित कालांगचक्र में दिए भावों के अनुसार उस पीड़ित भाव को देखें। यदि उस भाव में कोई अशुभ ग्रह हो, किंवा वह भाव खलदृष्ट, अस्त, नीच तथा शुभग्रह की दृष्टि से रहित हो तो समझें, कि उस अवयव में और विशेष कष्ट की संभावना है। शान्ति के लिए उस ग्रह की शान्ति कराएं। यदि प्रश्नकुण्डली में पीड़ित भाव शुभग्रह से युक्त किंवा शुभग्रहदृष्ट हो तो रोग (कष्ट) शीघ्र निवृत्त हो जाएगा।

कालांगचक्र

भाव	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12
अंङ्ग	सिर	मुख	भुजाएं	हृदय	उदर	कटिभाग	बस्ति/मूत्राशय	लिङ्ग/गुदा	जंघाएं	घुटने	पिण्डलियां	पाद–युगल

तिथिकष्टावली यन्त्रम्

तिथि	तिथीश	कष्ट–दिन	बलि	दान
1	अग्नि	12	शर्कराज्यबलि	घृतदान
2	ब्रह्मा	5	पायसबलि	भोजनदान
3	काम	7	घृतान्नबलि	रक्तवस्त्रदान
4	गणेश	16	मोदकान्नबलि	मूंगादान
5	सर्प	21	पायसबलि	दुग्धदान
6	स्कन्द	12	मोदकान्नबलि	चित्रवस्त्रदान
7	सूर्य	8	पायसबलि	ताम्रपात्रदान
8	ईश्वर	13	नानाभक्ष्यबलि	पीतवस्त्रदान
9	दुर्गा	18	मिष्ठान्नबलि	रक्तवस्त्रदान
10	यम	25	कृशरान्नबलि	नीलवस्त्रदान
11	विश्वेदेव	7	मोदकान्नबलि	पीतवस्त्रदान
12	विष्णु	7	मोदकान्नबलि	श्वेतवस्त्रदान
13	काम	10	दधिशर्कराबलि	सुवर्णदान
14	शिव	60	मिष्ठान्नबलि	क्षौद्रशाकभोजन
15	चन्द्र	3	दध्योदनबलि	रौप्यदान
30	पितर	18	अपूपकान्नबलि	उत्तमान्नभोजन

वारकष्टावली–यंत्रम्

वार	वारेश	क.दि.	बलि व दान
सू.	रुद्र	5	पायसबलि, सूर्यदान
चं.	गौरी	8	नानाभक्ष्यबलि, चन्द्रदान
मं.	स्कन्द	5	दुग्धबलि, भौमदान
बु.	विष्णु	7	मुद्गान्नबलि, बुधदान
बृ.	ब्रह्मा	5	घृतपक्वबलि, गुरुदान
शु.	इन्द्र	7	तिलयवाज्यमधुबलि, शुक्रदान
श.	यम	15	माषान्नबलि, शनिदान

ग्रहगोचराद्यैर्दशा-क्रमाद्यैर्ग्रह-कृतानिष्ट-फल-शमनार्थं प्रत्येक-ग्रहाणां दान-पदार्थाः												जपसंख्या	जपनीयमन्त्राः	दानसमय	हवनसमिधः
सूर्य	माणिक	सुवर्ण	ताम्र	गेहूं	गुड़	घी	रक्तवस्त्र	केसर	रक्तपुष्प	मूंग, रक्तगाय	रक्तचन्दन	7000	ॐ ह्रां ह्रीं ह्रौं सः सूर्याय नमः	उदय	अर्क
चन्द	मोती	सुवर्ण	रजत	चावल	मिसरी	दही	श्वेतवस्त्र	शंख	श्वेतपुष्प	कर्पूर, श्वेतबैल	श्वेतचन्दन	11000	ॐ श्रां श्रीं श्रौं सः चन्द्राय नमः	सन्ध्या	पलाश
भौम	मूंगा	सुवर्ण	ताम्र	मसूर	गुड़	घी	रक्तवस्त्र	केसर	रक्तकनेर	कस्तूरी, रक्तबैल	रक्तचन्दन	10000	ॐ क्रां क्रीं क्रौं सः भौमाय नमः	घटी 2 शेषदिन	खदिर
बुध	पन्ना	सुवर्ण	कांसी	मूंग	खांड	घी	हरावस्त्र	हाथीदांत	सर्वपुष्प	कर्पूर, शस्त्र	फल	19000	ॐ ब्रां ब्रीं ब्रौं सः बुधाय नमः	घटी 5 शेषदिन	अपामार्ग
गुरु	पुखराज	सुवर्ण	कांसी	दालचने	खांड	घी	पीतवस्त्र	हल्दी	पीतपुष्प	पुस्तक, घोड़ा	पीतफल	19000	ॐ ग्रां ग्रीं ग्रौं सः गुरवे नमः	सन्ध्या	अश्वत्थ
शुक्र	हीरा	सुवर्ण	रजत	चावल	मिसरी	दूध	श्वेतवस्त्र	सुगंध	श्वेतपुष्प	दधि, श्वेतघोड़ा	श्वेतचन्दन	16000	ॐ द्रां द्रीं द्रौं सः शुक्राय नमः	सूर्योदय	उदुम्बर
शनि	नीलम	सुवर्ण	लोहा	उड़द	कुल्थी	तेल	कृष्णवस्त्र	कस्तूरी	कृष्णपुष्प	कृष्णांग भैंस	उपानह	23000	ॐ प्रां प्रीं प्रौं सः शनये नमः	मध्याह्न	शमी
राहु	गोमेद	सुवर्ण	सीसा	तिल	सरसों	तिल	नीलवस्त्र	खड्ग	कृष्णपुष्प	कंबल, घोड़ा	शूर्प	18000	ॐ भ्रां भ्रीं भ्रौं सः राहवे नमः	रात्रि	दूर्वा
केतु	लहसुनिया	सुवर्ण	लोहा	तिल	सप्तधान्य	तेल	धूम्रवस्त्र	नारियल	धूम्रपुष्प	कंबल, बकरा	शस्त्र	17000	ॐ स्रां स्रीं स्रौं सः केतवे नमः	रात्रि	कुशा
मुन्था	मोती	सुवर्ण	कांसी	चावल	सुवर्ण	घी	श्वेतवस्त्र	कपूर	श्वेतपुष्प	मसरी, श्वेतचन्दन	हाथीदांत	मुन्थेशवत्	मुन्थेशमन्त्रः	मुन्थेशकाल	मुन्थेशवत्

नवग्रहों के व्रत की विधि

यदि किसी व्यक्ति का कोई ग्रह गोचर से या दशा–अन्तर्दशा से खराब चल रहा हो तो निम्नलिखित प्रकार से उस ग्रह का शास्त्रोक्त व्रत–विधान ब्रह्मचर्यपूर्वक करने से अशुभ फल की निवृत्ति होती है।

रविवार के व्रत की विधि–सूर्य का व्रत रविवार को करें। यह व्रत शुक्लपक्ष के पहले (जेठे) रविवार से आरम्भ करके वर्षपर्यन्त तीस या कम से कम 12 व्रत करें। उस रोज़ केवल गेहूं की रोटी, घी और लालखाण्ड के साथ या गेहूं का गुड़ से बना दलिया या हलवा इलायची डालकर दान करके शेष का दिन में ही सूर्यास्त से पहले भोजन करें। नमक बिल्कुल न खाएं। भोजन से पूर्व हो सके तो लालवस्त्र पहनकर ऊपर चक्रोक्त बीज–मन्त्र की माला का जप करें। तदनन्तर सूर्य को गन्धाक्षत, रक्तपुष्प दूर्वायुक्त अर्घ्य प्रदान करें। अपने मस्तक में लालचन्दन का तिलक करें। जब व्रत का अन्तिम रविवार हो तो हवन–पूर्णाहुति के बाद ब्राह्मण को भोजन कराएं। ऐसा करने से सूर्य का अशुभ फल शुभ फल में परिणत हो जाएगा। तेजस्विता बढेगी। नेत्ररोग, चर्मरोग एवम् अन्य शारीरक रोग भी शान्त होंगे।

सूर्यशान्ति का सरल उपचार :–लाल वस्तुओं का विशेष उपयोग करें– जैसे– लालचादर, परना तथा ताबे की अंगूठी का पहनना।

सोमवार के व्रत की विधि– चन्द्रमा का व्रत शुक्ल–पक्ष के प्रथम (जेठे) सोमवार को प्रारम्भ करके 54 या 10 व्रत करें। व्रत के दिन श्वेत वस्त्र धारण करके ऊपर चक्रलिखित बीज–मन्त्र की 11 या 3 माला जप करें। सफेद फूलों से पूजन करके सफ़ेद चन्दन का तिलक करें। मध्याह्न के समय नमक के बिना दही–चावल, घी, खाण्ड का यथाशक्ति दान करके स्वयं भोजन करें। जब व्रत का अन्तिम सोमवार हो, उस दिन हवन–पूर्णाहुति करके खीर–खाण्ड से ब्राह्मण व बटुकों को भोजन कराएं। इस व्रत के करने से व्यापार में लाभ, मानसिक कष्टों से शान्ति होती है। विशेष कार्यसिद्ध्यर्थ भी यह पूर्ण फलदायक होता है।

चन्द्रशान्ति का सरल उपचार :– सफेद जुराब, रुमाल, सफेद वस्त्र, दूध, दहीं का उपयोग, चान्दी की अंगूठी पहनना।

मंगलवार के व्रत की विधि :– यह व्रत शुक्ल पक्ष के प्रथम (जेठे) मंगलवार से प्रारम्भ करके 21 या 45 व्रत करने चाहिएं। हो सके तो यह व्रत आजीवन रखें। बिना सिला हुआ लालवस्त्र धारण करके बीजमन्त्र की 1, 5, या 7 माला जप करें। नमक सेवन न करें, यह ज़रूरी है। उस दिन गुड़ से बने हलवे का या लड्डुओं का दान करें और स्वयं भी खाएं। गुड़ से बना कुछ हलवा आदि बैल को भी खिलाएं। मंगलवार का व्रत ऋण–हर्ता तथा सन्तति–सुखप्रद है। जब व्रत का अन्तिम मंगलवार हो, उस दिन हवन–पूर्णाहुति करके लालवस्त्र, तांबा, मसूर, गुड़, गेहूं तथा नारियल का दान करें। ब्राह्मणों तथा बच्चों को मीठा भोजन कराएं।

मंगलशान्ति का सरल उपचार :– लालरंग की वस्तुओं का उपयोग, रात को लालवस्त्र पहनें, तांबे के बर्तनों का प्रयोग, तांबे की अंगूठी पहनना।

बुधवार का व्रत :– इस व्रत को शुक्ल पक्ष के प्रथम (जेठे) बुधवार से प्रारम्भ कर 21 या 45 व्रत करें। हरा वस्त्र धारण करके बीज–मन्त्र की 17 या 3 माला जप करना चाहिए। उस दिन भोजन में नमकरहित, खाण्ड–घी से बने पदार्थ, जैसे– मूंगी का बना हुआ हलवा, मूंगी की बनी मीठी पंजीरी या मूंगी के लड्डुओं का दान करें। फिर तीन तुलसीपत्र, गंगाजल या चरणामृत के साथ लेकर स्वयं भी उपरोक्त पदार्थ खाएं। व्रत के अन्तिम बुधवार को हवन–पूर्णाहुति करके छोटे बच्चों या अन्नहीन भिक्षुक को मूंगीयुक्त भोजन कराकर हरा वस्त्र, मूंगी आदि का दान भी करें। इस व्रत से विद्या, धन–लाभ, व्यापार में तरक्की तथा स्वास्थ्यलाभ होता है। अमावस का व्रत करने से भी बुध ग्रहजन्य नेष्टफल से मुक्ति मिलती है।

बुधशान्ति का सरल उपचार :– हरा रंग, हरे वस्त्र तथा शृंगार की अन्य वस्तुएं, हरा रुमाल आदि रखना, कांसी के बर्तन में भोजन, बुधाष्टमी का व्रत।

बृहस्पति के व्रत की विधि :– यह व्रत शुक्ल पक्ष के प्रथम (जेठे) गुरुवार से आरम्भ करें। तीन वर्षपर्यन्त या 16 व्रत करें। उस दिन पीतवस्त्र धारण करके बीज–मन्त्र की 11 या तीन माला जप करें। पीतपुष्पों से पूजन–अर्घ्य दानादि के बाद भोजन में चने के बेसन की घी–खाण्ड से बनी मिठाई, लड्डू या हल्दी से पीले या केसरी चावल आदि ही खाएं और इन्हीं का दान करें। जब व्रत का अन्तिम गुरुवार हो तो हवन–पूर्णाहुति के बाद ब्राह्मण व बटुकों को लड्डूभोजन कराएं। स्वर्ण, पीत–वस्त्र, चने की दाल आदि का दान करें। यह व्रत विद्यार्थियों के लिए बुद्धि तथा विद्याप्रद है। धन की स्थिरता तथा यशवृद्धि करता है। अविवाहितों के लिए स्त्री प्राप्तिप्रद सिद्ध होता है।

बृहस्पतिशान्ति का सरल उपचार :– पीले वस्त्र, रुमाल आदि, पीले फूल धारण करना, सोने की अंगूठी पहनना।

शुक्र के व्रत की विधि :– इस व्रत को शुक्ल पक्ष के प्रथम (जेठे) शुक्रवार से प्रारम्भ कर, 31 या 21 व्रत करें। श्वेत वस्त्र धारण करके बीजमन्त्र की 3 या 21 माला जपें। भोजन में चावल, खाण्ड या दूध से बने पदार्थ ही सेवन करें। यही पदार्थ यथाशक्ति सम्भव हो तो एकाक्षी (एक आंख वाले) भिक्षुक को या श्वेत गाय को दें। जब व्रत का अन्तिम शुक्रवार हो, तब हवन–पूर्णाहुति के बाद खीर–खाण्ड से बने पदार्थ ब्राह्मणबटुकों को खिलाएं। चांदी, श्वेतवस्त्र, खाण्ड, चावल का दान करें। इस व्रत से स्त्रीसुख एवं ऐश्वर्य की वृद्धि होती है।

शुक्रशान्ति का सरल उपचार :–सफेद वस्त्र, सफेद रुमाल, सफेद फूल धारण करना आदि, गाय को हरा घास या पेड़ा देना, शिवपूजन।

शनि के व्रत की विधि :– इस व्रत को शुक्ल पक्ष के प्रथम (जेठे) शनिवार से आरम्भ करे। व्रत 51 या 31 करने चाहिएं। व्रत के दिन काला वस्त्र धारण करके बीजमन्त्र की 19 या तीन माला का जप करें। फिर एक बर्तन में शुद्ध जल, काले तिल, काले फूल या लवंग (लौंग), गङ्गाजल तथा शक्कर, थोड़ा दूध डालकर पश्चिम की ओर मुंह करके पीपल–वृक्ष की जड़ में डाल दें। भोजन में उड़द के आटे का बना पदार्थ, पंजीरी, कुछ तेल से पका हुआ पदार्थ कुत्ते व गरीब को दें तथा तेलपक्व वस्तु के साथ केला व अन्य फल स्वयं प्रयोग में लाना चाहिए। यही पदार्थ दान भी करें। व्रत के अन्तिम शनिवार को हवन–पूर्णाहुति के बाद तेल में पकी हुई वस्तुओं को देने के बाद काला वस्त्र, केवल उड़द तथा देसी (चमड़े का) जूता तेल लगाकर दान करें। इस व्रत से सब प्रकार की सांसारिक परेशानी दूर हो जाती है। झगडे में विजय होती है। लोह–मशीनरी, कारखाने वालों के व्यापार में उन्नति होती है।

शनिशान्ति का सरल उपचार :– घर के परदे, जूते, जुराब, घड़ी का पट्टा, रुमाल आदि काले रंग के धारण करें।

राहु–केतु के व्रत की विधि :– शुक्ल पक्ष के प्रथम (जेठे) शनिवार से ही यह व्रत भी शुरु करना चाहिए। व्रत 18 करें। काला वस्त्र धारण करके 18 या 3 बीजमन्त्र की माला जपें। तदनन्तर एक बर्तन में जल, दूर्वा और कुशा लेकर, पीपल की जड़ में डालें। भोजन में मीठा चूरमा, मीठी रोटी, समयानुसार रेवड़ी, भुग्गा, तिल के बने मीठे पदार्थ सेवन करें और यही दान में भी दें। रात को घी का दीपक जलाकर पीपल की जड़ में रख दें। इस व्रत से शत्रुभय दूर होता है तथा राजपक्ष से विजय मिलती है।

राहु–केतुशान्ति का सरल उपचार :– नीला रुमाल, नीला घड़ी का पट्टा, नीला पैन, लोहे की अंगूठी पहनें।

ग्रहों के अरिष्ट-निवृत्त्यर्थ स्नानविधि

यथा सिद्धौषधैः रोगाः नश्येयुर्मन्त्रतो भयम्।।
तथा स्नान–विधानेन ग्रह–दोषः प्रणश्यति।।

रवि ग्रह के दोष की शान्ति के लिए कभी–कभी व्रत के दिन बिल्ववृक्ष की जड़, देवदारु, मुलट्ठी, लाल फूल, केसर पानी में उबालकर स्नान करें। चन्द्र शान्त्यर्थ **सोमवार** के व्रत के दिन खिरनी की जड़, श्वेत चन्दन, सिप्पी, पञ्चगव्य उबालकर स्नान करें। ऐसे ही मंगलव्रत के दिन अनन्तमूल, रक्त चन्दन, मौलश्री, लाल फूल–ये सब उबालकर; **बुधव्रत** के दिन गोबर, मधु, चावल, विधारा; **गुरुव्रत** के दिन भारंगी, मुलट्ठी, श्वेत सरसों, मालती पुष्प; **शुक्रव्रत** के दिन इलायची, मजीठ तथा शनिव्रत के दिन काले तिल, सौंफ, सुरमा, अमरवेल, सफेद बिनौला– उबालकर स्नान करें। ऐसे ही राहु–केतु की शान्ति के लिए शनिवार के दिन देवदारु, सरसों तथा लोहबान उबालकर स्नान करें, तो ग्रहशान्ति मिलती है।

नोटः– स्नानोक्त कोई वस्तु उपलब्ध न हो, तो जो वस्तु मिले उससे ही स्नान करें।

सर्वग्रह किंवा सर्वविधशान्ति के लिए सामान्य औषधस्नान

लाजवन्ती (छुई–मुई), कूट, खिलां, कांगनी, जौ, सरसों, देवदारु, हल्दी, सर्वौषधि, लोध– इन औषधियों के जल एवं सतीर्थोदक स्नान करने से सब ग्रहों की पीड़ा नष्ट होती है तथा पूर्व जो दान कह चुके हैं, उनके करने से शान्ति मिलती है। गुरुवचन, देवता, ब्राह्मणों की वदना, वेदादि श्रवण, साधुओं से बातें, मन की शुद्धता, जप, दान, होम तथा यज्ञ के करने से दुष्ट स्थानों मे स्थित ग्रह पीडा नही करते।– (श्रीपतिः)।

शनिविचार-अथ लघुकल्याणी (ढैया) फलम्:-

कल्याणी प्रददाति वा रविसुते राशेश्चतुर्थाष्टमे व्याधिः
बन्धुविरोधं देशगमनं क्लेशं च चिन्ताधिकम्।
मृत्युं चैव करोति चापि मनुजं दुःखादि–वह्नेर्भयं
लोहशस्त्रभयं सदैव–असुखं कुर्यादसौ सर्वदा।। १।।

वृहत्कल्याणी साढेसाती फलम् :-........राशौ द्वादश (12) मूर्ध्नि जन्म (1) हृदये पादौ द्वितीये (2) शनिः। नानाक्लेशकरोऽति दुर्जनभयं पुत्रान्पशून्पीडयेत्।। हानिः स्यान्मरणं विदेशगमनं सौख्यं च साधारणम् , रामात्ऋद्धिविनाशनं प्रकुरुते तुर्याष्टमे वाऽथवा।। २।।

सप्तधान्य– उड़द, मूंगी, गेहूं, चने, जौ, धान्य (तंडुल), कंगनी।

अष्टगंध-स्याही :–अगर, कस्तूरी, कुंकुम, कर्पूर, चन्दन, टोपीदार लौंग, गोरोचन, देवदारु।

अष्टगंध-धूप– अगर, छरीला, जटामासी, कर्पूर–कचरी, गुग्गुल, देवदारु, गोघृत, सफेद चन्दन।

नक्षत्र–राशिज्ञान–चक्र

राशि→	मेष			वृष			मिथुन			कर्क			सिंह			कन्या			तुला			वृश्चिक			धनु			मकर				कुम्भ			मीन		
नक्षत्र→ चरण ↓	अश्विनी	भरणी	कृत्तिका	कृत्तिका	रोहिणी	मृगशिरा	मृगशिरा	आर्द्रा	पुनर्वसु	पुनर्वसु	पुष्य	आश्लेषा	मघा	पू.फा.	उ.फा.	उ.फा.	हस्त	चित्रा	चित्रा	स्वाती	विशाखा	विशाखा	अनुराधा	ज्येष्ठा	मूल	पू.षा.	उ.षा.	उ.षा.	अभिजित	श्रवण	धनिष्ठा	धनिष्ठा	शतभिषा	पू.भा.	पू.भा.	उ.भा.	रेवती
प्रथम चरण	चू	ली	अ	०	ओ	वे	०	कु	के	०	हु	डी	मा	मो	टे	०	पू	पे	०	रू	ती	०	ना	नो	ये	भू	भे	०	जू	खी	गा	०	गो	से	०	दू	दे
द्वितीय चरण	चे	लू	०	ई	वा	वो	०	घ	को	०	हे	डू	मी	टा	०	टो	ष	पो	०	रे	तू	०	नी	या	यो	धा	०	भो	जे	खू	गी	०	सा	सो	०	थ	दो
तृतीय चरण	चो	ले	०	उ	वी	०	क	ङ	ह	०	हो	डे	मू	टी	०	पा	ण	०	रा	रो	ते	०	नू	यी	भा	फ	०	जा	जो	खे	०	गू	सी	दा	०	झ	चा
चतुर्थ चरण	ला	लो	०	ए	वू	०	की	छ	०	हि	डा	डो	मे	टू	०	पी	ठ	०	री	ता	०	तो	ने	यू	भी	ढ	०	जी	खा	खो	०	गे	सू	०	दी	ञ	चि

राशिज्ञाने विशेषः– नक्षत्र व राशि में 'श' और 'स' तथा 'व' और 'ब' में कोई भेद नहीं होता। जिसके नाम का पहला अक्षर संयुक्त हो, वहां प्रथमाक्षर ग्रहण करें– **संयोगजाक्षरे नाम्नि ग्राह्यं तत्रादिमाक्षरम्।**

ध्यान दें – नामों का प्रारम्भ ङ, ञ, ण अक्षरों से नहीं होता। यदि नक्षत्र के आधार पर इन अक्षरों से नाम प्रारम्भ हो रहा हो तो 'ङ' की जगह 'घ', 'ञ' की जगह 'दु', तथा 'ण' की जगह 'पू' से प्रारम्भ करें। ऐसा करने से भेद नहीं होता।

"बहूनि यस्य नामानि नरस्य स्युः कथञ्चन। ततः पश्चाद्भवं नाम ग्राह्यं स्वर–विशारदैः ।। प्रसुप्तो भाषते येन येनागच्छति शाब्दितः। तस्य नामाद्यवर्णे या मात्रा स स्वर एव हि।।

अथ जन्मराशि-नामराश्योः प्रधानता निर्णीयते–

विवाहे सर्वमांगल्ये यात्रादौ ग्रहगोचरे। जन्मराशेः प्रधानत्वं नामराशिं न चिन्तयेत्।। देशे ग्रामे गृहे युद्धे सेवायां व्यवहारके।। नामराशेः प्रधानत्वं जन्मराशिं न चिन्तयेत्।। काकिण्यां वर्गशुद्धौ च दाने द्यूते ज्वरोदये। मन्त्रे पुनर्भूवरणे च नामराशेः प्रधानता।। कुर्यात्षोडशकर्माणि जन्मराशौ बलान्विते। सर्वाण्यन्यानि कर्माणि नामराशौ बलान्विते।। विवाह घटनं चैवं लग्नजं ग्रहजं बलम्। काममाकृचिन्तयेत् सर्वं जन्म न ज्ञायते यदा।।

अभिजित्निर्णय :– वैश्यप्रान्त्यांघ्रिः श्रुति–तिथि–भागतोऽभिजित्स्यात्।।

"उत्तराषाढ़ा का चौथा चरण और श्रवण का पहला १५वां भाग जोड़कर उसके चार भाग करें। उसको अभिजित् का एक चरण मानकर नाम रखने आदि के विचार में उपयोग करें। उत्तराषाढ़ा के तीन चरणों के ही चार भाग करके उत्तराषाढ़ा का एक–एक चरण मानो। श्रवण का १५वां भाग छोड़कर जो शेष रहे, उसके चार भाग करें; उसको श्रवण के १–१ चरण मानें। सामान्य गणक के ज्ञानार्थ ही यह यहां लिखा गया है।

राशिज्ञानम्– चू ल अ मेषः, इ वो वृषः, क घ ङ छ ह मिथुनम्।।
हीडो कर्कः, माटे सिंहः, टो ष ण ठ पो कन्या।।
राते तुला, तो ना यू वृश्चिकः, ये घफढभे धनुः।।
भोजा खागी मकरः, गुशद : कुम्भः दीथझञची मीनः।।

इस राशिज्ञान में प्रत्येक राशि के आदि और अन्त का अक्षर है और जहां जो अक्षर बदलता है, वहां वह अक्षर भी ले लिया गया है। जैसे–मेष में पहला अक्षर 'चू' लेने से अश्विनी के तीन चरण (चू चे चो) का ग्रहण होता है और 'ल' से (ला ली लू ले लो) पांचों का ग्रहण हुआ अर्थात् एक चरण (चौथा) अश्विनी का और चतुर्थ चरण पर्यन्त भरणी का ग्रहण हुआ और 'अ' से कृत्तिका का प्रथम चरण– इन नौ चरणों की एक राशि मेष हुई। इसी तरह अन्य राशियों का ज्ञान करें।

विशेष– जहां 'ज्ञ' का उच्चारण 'ज्ञ' होता है वहां ज्ञान चन्द्र का नक्षत्र उ.षा. और जहां इसका उच्चारण 'ग्य' होता है, वहां ज्ञान चन्द्र का नक्षत्र धनिष्ठा माना जाएगा। क्योंकि 'ज' और 'ग' वर्ण क्रमशः उ.षा. और धनिष्ठा नक्षत्र में पड़ते हैं।

नोटः–चन्द्रमा की राशि एवम् नक्षत्र के अनुसार जातक का नाम रखने में फलितज्ञ को काफी आसानी रहती है। नाम जानने से ही ज्योतिषी जातक के जन्मसमय चन्द्रमा की राशि एवम् नक्षत्र जान लेता है तथा फलितशास्त्र में काफी महत्त्वपूर्ण फलादेश चन्द्रमा की स्थिति पर ही निर्भर है। इसका एक वैज्ञानिक रहस्य भी है। निकटतम होने से चन्द्रमा का प्रभाव भूस्थित वनस्पति एवम् प्राणियों पर अन्य सभी ग्रहों की अपेक्षा अधिक होता है। ज्वारभाटा लाने में भी चन्द्रमा की देन सूर्य की देन से दुगुनी है। चन्द्रमा का ज्वार–भाटांक सूर्य के ज्वार–भाटांक से दुगुना है। चन्द्रमा के भगणकाल का स्त्री के मासिक धर्म से साक्षात् सम्बन्ध है। आजकल वैज्ञानिकों ने कुछ प्रयोग भी किए हैं, जिससे अचर जगत् (वनस्पति आदि) पर चन्द्रमा का प्रभाव स्पष्ट रूप से ज्ञात होता है। अतः जन्मपत्र आदि के अभाव में चन्द्रमा की स्थिति से ही फलादेश करने की परिपाटी फलितज्ञों में है।

नवीन फलितवेत्ता जन्मपत्र की अंग्रेज़ी तारीखों के हिसाब से भी फलादेश करने लग गए हैं। इस पद्धति में सायन सूर्य की राशि के आधार पर ही फलादेश होता है, जबकि चन्द्रमा की राशि के आधार पर फलादेश करना अधिक उपयुक्त है। अतः प्राचीन फलित–शास्त्रियों ने जन्मकालीन चन्द्रमा की स्थिति को जन्मराशि का नाम दिया है। हमारे ज्योतिष के अनुसार इसका विशेष महत्त्व भी है।

बारहं राशियों का मासिक फलादेश एवं संक्रान्ति–फलादेश (सम्वत् 2075 वि.)

वैशाख मास

मेषसंक्रान्ति (14 अप्रैल से 13 मई, सन् 2018 ई.)

संक्रान्ति–कालीन गोचर ग्रहस्थिति फल– लग्नस्थ सूर्य– शुक्र परस्पर शत्रु ग्रह होने से अफगानिस्तान आदि देशों में एवं द्वितीयेश शुक्र सूर्य के साथ हतप्रभ होने से ईराक, इरान, लीबिया आदि में उग्रवाद से भयकर जनधनहानि होगी। मकर राशि का स्वामी शनि मंगल के साथ होने से भारत के सीमा प्रान्तों पर भी चिन्ताजनक स्थिति का सामना करना पडेगा। शनि की कन्या राशि पर विशेष दृष्टि पाक एवं अन्यदेशीय शासकों के लिए भयावह है। वैशाख में तेल, तिलहन, मिर्च, गुड़, घी, रुई में जोरदार तेजी रहेगी।

वैशाख–सक्रान्तिकालीन ग्रहस्थिति

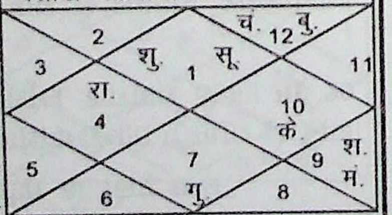

मेषसंक्रान्ति–प्रवेशकाल= 14 अप्रैल, 2018 ई. को 08घं. 12 मि. (I.S.T.), मु. 45, पुण्यकाल 14 घं. 12 मि. तक,

वैशाख–मास में प्रत्येक राशि के लिए फल

मेष–सेहत ठीक रहे, वाहन से चोटभय, निजी लोगों से अनबन, सम्पदा–सम्बन्धी झगडों से दूर रहें। सन्तान–सुख, धोखेबाजों से दूर रहें। **अप्रैल** 14, 15, 23, 24; **मई** 1, 2, 3, 11, 12, 13 अशुभ ।

वृष–नेत्रकष्टभय, धनलाभ हो, निजी लोगों से अनबन, मित्र सहायक हों, स्त्रीपक्ष से चिन्ता, कारोबार में रुकावट । **अप्रैल** 16, 17, 25, 26; **मई** 4, 5 अशुभ ।

मिथुन– सेहत ठीक, आय से व्यय अधिक, मित्र एवं बन्धु–सुख, सन्तान हेतु शुभ मे खर्च, स्त्रीकष्ट या मानसिक उलझन से परेशानी। **अप्रैल** 18, 19, 27, 28; **मई** 6, 7, 8 अशुभ ।

कर्क– वायुरोग, शरीर में दर्द, कारोबार ठीक रहे, भ्रातृसुख, राजपक्ष से लाभ, पुराने झंझट से दूर रहें, यात्रा में कष्ट, कार्यान्तर से लाभ। **अप्रैल** 20, 21, 22, 29, 30; **मई** 9, 10 अशुभ ।

सिंह – सेहत ठीक रहे, अर्थलाभ होकर व्यय अधिक हो, मित्र–बन्धु–कष्ट, वृथा विवाद से दूर रहें। स्त्रीपक्ष से चिन्ता, कारोबार कमजोर रहे। **अप्रैल** 14, 15, 23, 24; **मई** 1, 2, 3, 11, 12, 13 अशुभ।

कन्या– सेहत ठीक, गुप्त चिन्ता, भाई–मित्र–पक्ष से चिन्ता, स्त्रीपक्ष से सहयोग, कार्यान्तर व स्थानान्तर का विचार । **अप्रैल** 16, 17, 25, 26; **मई** 4, 5 अशुभ ।

तुला– राजपक्ष से चिन्ता दूर, स्त्रीसुख, सम्पत्ति–विवाद एवं घरेलु झंझट से बचें। निजीजनों से अनबन, सेहत ठीक रहे। **अप्रैल** 18, 19, 27, 28; **मई** 6, 7, 8 अशुभ।

वृश्चिक– रक्त–पित्तविकार, आर्थिक संकट, मानसिक परेशानी बढ़े, स्त्रीपक्ष से लाभ, कारोबार में रद्दोबदल का विचार बने। **अप्रैल** 20, 21, 22, 29, 30; **मई** 9, 10 अशुभ ।

धनु– क्रोध बढ़े, वृथाव्यय हो, चोरों से सावधान, निजीजनों का सहयोग रहे। सम्पत्तिसुख, स्त्रीकष्ट, कार्यान्तर से लाभ मिले, यात्रा सुखद रहे। **अप्रैल** 14, 15, 23, 24; **मई** 1, 2, 3, 11, 12, 13 अशुभ ।

मकर– पेट में खराबी, नेत्र पीड़ा, अर्थलाभ हो, मित्र–बन्धु–सुख, स्त्रीपक्ष से चिन्ता, कारोबार में सुधार हो। **अप्रैल** 16, 17, 25, 26; **मई** 4,5 अशुभ।

कुम्भ–संक्रमण (Infection) से परेशानी बढ़े, आय से व्यय अधिक, निजी बन्धु–मित्रों का सहयोग रहे। विरोधी पक्ष कमजोर, स्त्रीपक्ष शुभ रहे। **अप्रैल** 18, 19, 27, 28; **मई** 6, 7, 8 अशुभ ।

मीन– कफ–वायुरोग, आर्थिक स्थिति ठीक, वृथा व्यय हो, मित्रों से मनमुटाव, सन्तान पक्ष से चिन्ता रहे। स्त्रीपक्ष से सुख, कारोबार में रुकावटें आएं। **अप्रैल** 20, 21, 22, 29, 30; **मई** 9, 10 अशुभ।

ज्येष्ठ मास

वृषसंक्रान्ति (14 मई से 14 जून, सन् 2018 ई.)

संक्रान्तिकालीन गोचर ग्रहस्थिति का फल– लग्नस्थ शुक्रक्षेत्र का सूर्य समर्थ देशों को उग्रवाद–शान्ति के लिए प्रेरित करे । क्योंकि, गुरु छठे भाव मे होकर चन्द्र एवं कर्मस्थान को देख रहा है एवं कर्मेश शनि, गुरु के क्षेत्र में है। मकर राशि में उच्चस्थ मंगल केतु के साथ होने से भारत में नए नियम एवं सुधारात्मक प्रक्रिया बल पकड़ेगी। मुस्लिम राष्ट्रविशेष में आन्तरिक स्थिति बिमड़ेगी एवं सत्तापरिवर्तन भी हो। चीनी, तिलहन, कॉटन, गुड़, घी आदि खाद्य पदार्थ तेज रहें।

ज्येष्ठ-संक्रान्तिकालीन ग्रहस्थिति

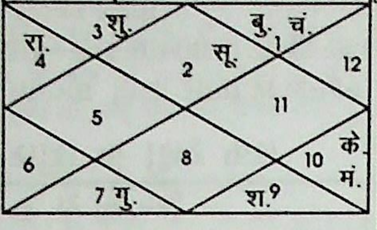

वृषसंक्रान्ति–प्रवेशकाल=14 मई, 2018 ई.को 29घं.3मि. (I.S.T.), मु. 15, पुण्यकाल अगले दिन मध्याह्न तक,

ज्येष्ठ मास में प्रत्येक राशि के लिए फल

मेष– ऐशो–इशरत में मन लगे, आर्थिक स्थिति में सुधार हो, निजी लोगों से मन अशान्त, सम्पत्तिकलह, स्त्रीसुख, कारोबार ठीक। मई 20, 21, 29, 30; **जून** 8, 9 अशुभ ।

वृष – वायुपीड़ा, वृथाव्यय हो, बन्धु से सहयोग, सन्ततिसुख, स्त्रीपक्ष से शान्ति, राजभय, मासान्त में चोटभय । मई 14, 15, 22, 23, 31; **जून** 1, 2, 10, 11 अशुभ ।

मिथुन – सिर व नेत्रकष्ट, मित्र–बन्धु का सहयोग रहे, स्त्रीकष्ट, शत्रु कमजोर रहें। मासान्त में आय से व्यय अधिक हो। **मई** 16, 17, 24, 25; **जून** 3, 4, 12, 13 अशुभ ।

कर्क– सेहत गड़बड़, अर्थहानिभय, सन्तान हेतु विशेष खर्च, नीच व्यक्ति से अपमानभय, मासान्त ठीक रहे। **मई** 18, 19, 26, 27, 28; **जून** 5, 6, 7, 14 अशुभ ।

सिंह– कारोबार में लाभ, सम्पत्ति–वादविवाद में न उलझें, मित्र–बन्धु से धोखा, कार्यान्तर का विचार । **मई** 20, 21, 29, 30; **जून** 8, 9 अशुभ ।

कन्या– सेहत ठीक, पुरातन मसले सुलझें, मित्र–बन्धु का सहयोग रहे, स्त्रीपक्ष से लाभ मिले। नए उद्योग का विचार बने। **मई** 14, 15, 22, 23, 31; **जून** 1, 2, 10, 11 अशुभ ।

तुला – रक्त–पित्तविकार, आय से व्यय अधिक हो, निजीजनकष्ट, सन्तान–स्त्री पक्ष से सुख, कारोबार में रद्दोबदल हो, लेकिन मासान्त शुभ। **मई** 16, 17, 24, 25; **जून** 3, 4, 12, 13 अशुभ ।

वृश्चिक– गुप्त चिन्ता, रक्तविकार से परेशानी, व्यय अधिक, मित्र–बन्धुसहयोग रहे। स्त्रीपक्ष से लाभ, कारोबार सुधरे । **मई** 18, 19, 26, 27, 28; **जून** 5, 6, 7, 14 अशुभ ।

धनु– सिर व नेत्रपीडा, अचानक धनलाभ हो, मित्र–कष्ट से चिन्ता, यात्रा में चोट से बचें। कारोबार ठीक, सन्तान–स्त्रीपक्ष से शुभ समाचार मिले। **मई** 20, 21, 29, 30; **जून** 8, 9 अशुभ ।

मकर– सेहत ठीक, अर्थलाभ हो, मित्र–बन्धुसुख, सन्तानपक्ष से चिन्ता, स्त्रीकष्ट, कारोबार में वृद्धि के उपाय हों। **मई** 14, 15, 22, 23, 31; **जून** 1, 2, 10, 11 अशुभ ।

कुम्भ– वायुविकार, अर्थलाभ, लेकिन विशेष व्यय हो, जमीन–जायदाद पाने के योग, संतान व नई योजना हेतु विशेष खर्च हो। **मई** 16, 17, 24, 25; **जून** 3, 4, 12, 13 अशुभ ।

मीन– सेहत ठीक, अर्थलाभ होकर हानिभय, निजीलोगों से अनबन, स्त्रीपक्ष से सहयोग, कारोबार में रद्दोबदल के बाद सुधार हो। **मई** 18, 19, 26, 27, 28, **जून** 5, 6, 7, 14 अशुभ ।

आषाढ़ मास

मिथुन–संक्रान्ति (15 जून से 15 जुलाई, सन् 2018 ई.)

संक्रान्तिकालीन गोचर ग्रहस्थिति का फल–लग्नेश बुध सूर्य के साथ शुभ है। गुरु की दृष्टि जनता एवं राजनीतिज्ञों के लिए विकास एवं देश में उत्तम परिस्थिति के लिए यश प्राप्त कराएगी। नवमेश शनि की नवम भाव पर विशेष दृष्टि एवं यहां गुरु की दृष्टि भी विश्व के लिए शुभंकर मालूम होती है। आर्थिक समृद्धि के साथ देश प्रगतिपथ पर रहेगा। इस मास में असम, कश्मीर, पाक के बलूचिस्तान में उग्रवादी तत्त्व सक्रिय रहें। अनाज–दालें, घी, तिलहन एवं चीनी तेज रहे।

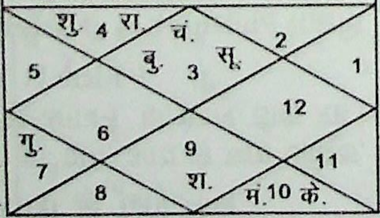
आषाढ-संक्रान्तिकालीन ग्रहस्थिति

मिथुनसंक्रान्ति-प्रवेशकाल=15 जून, 2018 ई.को 11घं. 36मि. (I.S.T.), मु. 45, पुण्यकाल 17घं 36 मि. तक,

आषाढ़ मास में प्रत्येक राशि के लिए फल

मेष– राजपक्ष में भय, धनलाभ होकर हानिभय, कर्जा सिर चढे, सन्तान पक्ष से सुख, अपमानभय, यात्रा में चोटभय । **जून** 16, 17, 25, 26; **जुलाई** 5, 6, 14, 15 अशुभ ।

वृष– वायुविकार, शत्रु हतप्रभ, अचानक कष्टभय, आर्थिक संकट रहें, निजीलोगों से अनबन, मित्रमिलाप, स्त्रीकष्ट से चिन्ता । **जून** 18, 19, 27, 28, 29; **जुलाई** 7, 8, 9 अशुभ ।

मिथुन– मित्र–बन्धुसुख, सेहत ठीक, स्त्री व सन्तति कष्ट, यात्रा सुखद रहे। मासान्त में आय से व्यय अधिक हो। **जून** 20, 21, 22, 30; **जुलाई** 1, 2, 10, 11 अशुभ ।

कर्क– वायु–विकार, अर्थलाभ, सन्तान हेतु विशेष खर्च हो, स्त्रीसुख, कारोबार में सुधार हो। **जून** 15, 23, 24; **जुलाई** 3, 4, 12, 13 अशुभ ।

सिंह–सेहत ठीक, मित्र–बन्धुकष्ट, स्त्रीसुख, कारोबार ठीक, जमीन–जायदाद का लाभ हो । **जून** 16, 17, 25, 26; **जुलाई** 5, 6, 14, 15 अशुभ ।

कन्या– रक्त–पित्तविकार, भाई–बन्धु से अनबन, स्त्रीपक्ष शुभ, कारोबार में वृद्धि, यात्रा में सावधान रहें, कष्टभय है। **जून** 18, 19, 27, 28, 29; **जुलाई** 7, 8, 9 अशुभ ।

तुला– चोटभय, भाई–मित्र का सहयोग रहे, सन्तान–स्त्रीपक्ष शुभ, कारोबार सुधरे। **जून** 20, 21, 22, 30; **जुलाई** 1, 2, 10, 11 अशुभ।

वृश्चिक– शारीरिक कष्ट, नेत्र पर चोटभय, बन्धुसुख, आर्थिक लाभ हो, गुप्त शत्रु से सावधान रहें, मासान्त में विशेष खर्च हो। **जून** 15, 23, 24; **जुलाई** 3, 4, 12, 13 अशुभ ।

धनु– सेहत ठीक, अर्थलाभ, लेकिन खर्च अधिक हो, भाई–बन्धु का सहारा मिले, कार्यान्तर व स्थानान्तर का विचार बने, स्त्रीपक्ष से चिन्ता रहे। **जून** 16, 17, 25, 26; **जुलाई** 5, 6, 14, 15 अशुभ ।

मकर– वायुविकार, धनलाभ होकर हानिभय, मित्र–बन्धुसुख, मानसिक शान्ति, यात्रा में सावधान, चोटभय है। **जून** 18, 19, 27, 28, 29; **जुलाई** 7, 8, 9 अशुभ ।

कुम्भ– उदर विकार, गुप्त शत्रु से भय, स्त्रीपक्ष में लाभ, कारोबार में रुकावट, कार्यान्तर का विचार, घरेलु झंझटों से दूर रहें। **जून** 20, 21, 22, 30; **जुलाई** 1, 2, 10, 11 अशुभ ।

मीन–सेहत गड़बड़, अर्थलाभ होकर हानिभय, निजीजनों से वैमनस्य, स्त्रीपक्ष से चिन्ता, कारोबार में बाधा से मन परेशान रहे। **जून** 15, 23, 24; **जुलाई** 3, 4, 12, 13 अशुभ ।

श्रावण मास

कर्कसंक्रान्ति (16 जुलाई से 16 अगस्त, सन् 2018 ई.)

संक्रान्तिकालीन गोचर ग्रहस्थिति का फल–लग्नेश चन्द्र धनस्थान में चतुर्थेश शुक्र के साथ है, नई योजनाएं लागु होंगी। देश समृद्धि पथ पर अग्रेसर होगा। नवमेश गुरु एवं दशमेश मंगल की 10वें दृष्टि भारत को विश्व में प्रभावशाली पद पर स्थापित करेगी। पाकिस्तान एवं मुस्लिम देश– विशेष में कहीं आन्तरिक क्रान्ति एवं विघटन की स्थिति बने। गुड़, घी, रुई, चीनी एवं तेलों में तेजी रहे।

श्रावण–संक्रान्तिकालीन ग्रहस्थिति

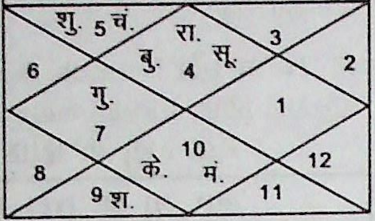

कर्कसंक्रान्ति–प्रवेशकाल=16जुलाई, 2018 ई. को 22घं. 27मि(I.S.T.), मु. 30, पुण्यकाल मध्याह्न बाद,

श्रावण मास में प्रत्येक राशि के लिए फल

मेष–उदरविकार, स्थानान्तरण का योग, आय से व्यय अधिक, मित्रों से मदद, सम्पत्ति–चिन्ता, स्त्री से अनबन, कारोबार ठीक रहे। **जुलाई** 22, 23, 24; **अगस्त** 1, 2, 3, 10, 11 अशुभ ।

वृष– वायुरोग से परेशानी, बन्धुसुख, मित्र–मिलाप, सन्तति चिन्ता, स्त्रीसुख, कारोबार ठीक, मासान्त में व्यय अधिक। **जुलाई** 16, 17, 25, 26; **अगस्त** 4, 5, 12, 13 अशुभ ।

मिथुन– गुप्तचिन्ता, आर्थिक स्थिति सुधरे, निजीजन–सहयोग, सन्ततिकष्ट, स्त्रीसुख, मासान्त में परेशानी बढे। **जुलाई** 18, 19, 27, 28, 29; **अगस्त** 6, 7, 14, 15 अशुभ ।

कर्क– सेहत ठीक, लेकिन अचानक यात्रा में कष्टभय है। अर्थलाभ हो, भाई–बन्धु को कष्ट, सन्तानपक्ष से खुशी, शुभ समाचार। **जुलाई** 20, 21, 30, 31; **अगस्त** 8, 9, 16 अशुभ ।

सिंह– त्वचा (skin) रोग, आय से व्यय अधिक, नई योजना से लाभ, अचानक राजभय से सावधान रहें। **जुलाई** 22, 23, 24; **अगस्त** 1, 2, 3, 10, 11 अशुभ ।

कन्या– सेहत ठीक– शनि का दान करें। कारोबार ठीक, धनलाभ, मासान्त में खर्च अधिक, स्त्रीपक्ष शुभ, विद्यार्थियों को मंगल का दान ठीक रहे। **जुलाई** 16, 17, 25, 26; **अगस्त** 4, 5, 12, 13 अशुभ ।

तुला– संयम से रहें, घरेलु झगड़े–झंझट से बचें। वाहनसुख, धनलाभ पर्याप्त हो, शत्रु सिर उठाएं, स्त्री से कष्ट, कारोबार ठीक रहे। **जुलाई** 18, 19, 27, 28, 29; **अगस्त** 6, 7, 14, 15 अशुभ ।

वृश्चिक– रक्तविकार से परेशानी, अर्थलाभ होकर हानि, यात्रा शुभद रहे, मित्र–बन्धुसुख, सन्तान से चिन्ता, स्त्रीसुख, कारोबार ठीक रहे। **जुलाई** 20, 21, 30, 31; **अगस्त** 8, 9, 16 अशुभ ।

धनु– शरीर में वायुविकार से कष्ट, सन्तानपक्ष से चिन्ता, गुप्त शत्रु से सावधान, कार्यान्तर व स्थानान्तर का विचार बने। **जुलाई** 22, 23, 24; **अगस्त** 1, 2, 3, 10, 11 अशुभ ।

मकर– सेहत ठीक, राजपक्ष से विजय, भाई–बन्धुकष्ट, स्त्रीपक्ष से लाभ रहे, कारोबार में लाभ मिले। **जुलाई** 16, 17, 25, 26; **अगस्त** 4, 5, 12, 13 अशुभ ।

कुम्भ– जमीन–जायदादसम्बन्धी झगड़े सिरदर्द बनें, निजी लोगों से अनबन, शत्रु बढ़े, वाहन से चोटभय है, कारोबार प्रायः ठीक रहे। **जुलाई** 18, 19, 27, 28, 29; **अगस्त** 6, 7, 14, 15 अशुभ ।

मीन– धनहानिभय, गुप्त चिन्ता से परेशानी, सन्तानपक्ष से खुशी, स्त्रीकष्ट, आय से व्यय अधिक रहे। **जुलाई** 20, 21, 30, 31; **अगस्त** 8, 9, 16 अशुभ ।.

भाद्रपद मास

सिंहसंक्रान्ति (17 अगस्त से 16 सितंबर, सन् 2018 ई.)

संक्रान्तिकालीन गोचर ग्रहस्थिति का फल– सूर्य–मंगल का षडष्टक कहीं अग्निकाण्ड से भयानक स्थिति को बनाए। मं. रा. का समसप्तक मुस्लिम देश में इस्लामिक धर्मान्धता से हानि करे। भारत में कहीं प्रतिष्ठित व्यक्ति का पद रिक्त हो। पुनरपि,भारत गणतन्त्र में सौहार्द एवम् सुख–समृद्धि के लिए राजनीतिज्ञ प्रयत्नशील रहेंगे। सीमाप्रान्तों पर सैन्यबल को सचेत रहना होगा। सभी अनाज, तिल, गुड़, तिलहन एवं दालें तेज रहें।

भाद्रपद-संक्रान्तिकालीन ग्रहस्थिति

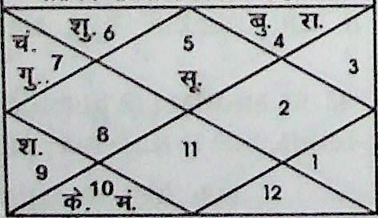

सिंहसंक्रान्ति–प्रवेशकाल=17अगस्त,2018 ई.को 6घं. 50मि.(I.S.T.), मु. 30, पुण्यकाल 12 घं. 50 मि. तक,

भाद्रपद मास में प्रत्येक राशि के लिए फल

मेष–सेहत ठीक, अर्थलाभ होकर हानि हो, निजीजन–सहयोग, अच्छे लोगों से मेल हो, सन्तति–कष्टयोग, राजपक्ष शुभ, कारोबार ठीक रहे। **अगस्त** 19, 20, 29, 30; **सितंबर** 6, 7, 8, 15, 16 अशुभ ।

वृष– धनलाभ होकर हानिभय, मित्रों से मेल, सन्तान से सुख, स्त्रीपक्ष से लाभ, कारोबार ठीक, आय से व्यय अधिक हो। **अगस्त** 21, 22, 23, 31; **सितंबर** 1, 9, 10 अशुभ ।

मिथुन– सेहत ठीक, अर्थलाभ, निजीजनों से अनबन, वायुविकार, स्त्रीसुख, शत्रु प्रबल, कारोबार ठीक रहे। **अगस्त** 24, 25; **सितंबर** 2, 3, 11, 12 अशुभ ।

कर्क– उदरविकार, धनलाभ, निजीजनों व मित्रों से मेल, सम्पत्तिविवाद, सन्तान हेतु विशेष खर्च, स्त्रीकष्ट, कारोबार कुछ ठीक हो। **अगस्त** 17, 18, 26, 27, 28; **सितंबर** 4, 5, 13, 14 अशुभ ।

सिंह– सेहत गड़बड़, धनलाभ होकर हानिभय, सम्पत्तिविवाद, वायुरोग, स्त्रीकष्ट, गुप्त शत्रु से भय रहे। **अगस्त** 19, 20, 29, 30; **सितंबर** 6, 7, 8, 15, 16 अशुभ ।

कन्या– सेहत ठीक, धनहानि, निजीजनों से अनबन, नई योजनाएं असफल, कारोबार में तरक्की हो। **अगस्त** 21, 22, 23, 31; **सितंबर** 1, 9, 10 अशुभ ।

तुला– सेहत कुछ ढीली, कर्जा सिर चढ़े, वृथा–विवाद से बचें, कारोबार गड़गड़, कार्यान्तर व स्थानान्तर का विचार । **अगस्त** 24, 25; **सितंबर** 2, 3, 11, 12 अशुभ ।

वृश्चिक– सेहत गड़बड़, अर्थलाभ, निजीजन व मित्र–बन्धु–कष्ट, नई योजना व कार्यान्तर से लाभ, वैभव में मन लगे। **अगस्त** 17, 18, 26, 27, 28; **सितंबर** 4, 5, 13, 14 अशुभ ।

धनु– सेहत ठीक, धनलाभ, खर्च अधिक, गुप्त चिन्ता, वंशवृद्धि, शुभ समाचार, स्त्रीसुख, मासान्त कष्टप्रद रहे। **अगस्त** 19, 20, 29, 30; **सितंबर** 6, 7, 8, 15, 16 अशुभ ।

मकर– सिर व नेत्र–कष्ट, स्त्रीपक्ष से चिन्ता, कारोबार कमजोर, आय से व्यय अधिक, सन्तानार्थ विशेष व्यय हो। **अगस्त** 21, 22, 23, 31; **सितंबर** 1, 9, 10 अशुभ ।

कुम्भ–सेहत ठीक, निजीजन–सहयोग मिले, नई योजना बने, यात्रा में लाभ, स्त्रीकष्ट, गुप्त शत्रु से सावधान रहें। वृथा व्यय हो। **अगस्त** 24, 25; **सितंबर** 2, 3, 11, 12 अशुभ ।

मीन– वायुविकार, धनलाभ हो, अच्छे लोगों से मेल, सन्ततिपक्ष से चिन्ता, कारोबार में कुछ रद्दोबदल हो। **अगस्त** 17, 18, 26, 27, 28; **सितंबर** 4, 5, 13, 14 अशुभ ।

आश्विन मास

कन्यासंक्रान्ति (17 सितम्बर से 16 अक्तूबर, सन् 2018 ई.)

संक्रान्तिकालीन गोचर ग्रहस्थिति का फल—लग्नस्थ सूर्य पर शनि की विशेष दृष्टि कहीं साम्प्रदायिक किंवा उग्रवादजन्य अशान्ति व प्राकृतिक प्रकोप का संकेत देती है। धनस्थान में गुरु–शुक्र का योग देश की आर्थिक स्थिति में सुधार का संकेत देता है। गुरु–शुक्र की स्थिति एवं दोनों नवमेश–सुखेश होने से देश में निर्मित वस्तुओं का व्यापार प्रगतिप्रद रहेगा। शनि–राहु का षडष्टक सीमाप्रान्तों पर अशान्ति का संकेतक भी है। रुई, खाद्य तेल, घी, गुड़, चीनी, तिल, नारियल तेज रहें।

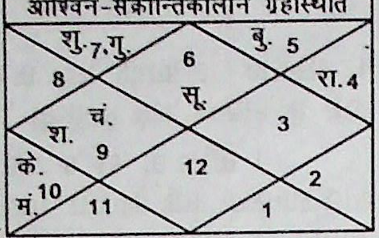
आश्विन-संक्रान्तिकालीन ग्रहस्थिति

कन्या–संक्रान्ति प्रवेशकाल=17 सितं.,2018 ई.को 6घं. 46मि. (I.S.T.), मु. 30, पुण्यकाल 12 घं. 46 मि. तक,

आश्विन मास में प्रत्येक राशि के लिए फल

मेष– सेहत ठीक, धनलाभ हो, भाई–बन्धु–मित्र से लाभ, सन्तान-पक्ष से कुछ चिन्ता, स्त्रीपक्ष शुभ, धार्मिक शुभ कार्य हो। **सितम्बर** 25, 26; **अक्तूबर** 4, 5, 12, 13, 14 अशुभ।

वृष– वायुविकार, अर्थलाभ होकर हानि, भ्रातृकष्ट, मित्र से धोखाभय, सन्तानसुख, स्त्रीपक्ष से लाभ, कार्यान्तर व स्थानान्तर का विचार बने। **सितम्बर** 17, 18, 19, 27, 28; **अक्तूबर** 6, 7, 15, 16 अशुभ।

मिथुन– वायुविकार, धनलाभ, उत्साह बढ़े, सन्ततिकष्ट, स्त्रीपक्ष से चिन्ता, कारोबार पूर्ववत्, खर्च विशेष हो। **सितम्बर** 20, 21, 29, 30; **अक्तूबर** 1, 8, 9 अशुभ।

कर्क– धनलाभ होकर हानिभय, मन अशान्त, गुप्त चिन्ता, निजीजन–सहयोग, विरोधी प्रबल, कर्जा सिर चढ़े। **सितम्बर** 22, 23, 24; **अक्तूबर** 2, 3, 10, 11 अशुभ।

सिंह– सेहत ठीक, यात्रा में सुख, नई योजना से हानि, भाग्य साथ न दें, कारोबार कमजोर, स्त्रीकष्ट, सन्तानसुख। **सितम्बर** 25, 26; **अक्तूबर** 4, 5, 12, 13, 14 अशुभ।

कन्या– वायुविकार, अर्थहानि, वृथाव्यय, कार्यान्तर से लाभ, स्त्रीसुख, कारोबार में प्रगति हो। **सितम्बर** 17, 18, 19, 27, 28; **अक्तूबर** 6, 7, 15, 16 अशुभ।

तुला– सेहत ठीक, धनलाभ, निजीजनों से अनबन, गृहकलह, गुप्त चिन्ता, खर्च अधिक, कारोबार ठीक। **सितम्बर** 20, 21, 29, 30; **अक्तूबर** 1, 8, 9 अशुभ।

वृश्चिक–सेहत ठीक, धनलाभ, उत्साह बढ़े, अपमानभय, कारोबार ठीक, नए कारोबार की योजना बने। **सितम्बर** 22, 23, 24; **अक्तूबर** 2, 3, 10, 11 अशुभ।

धनु– रक्त–पित्तविकार, धनलाभ होकर हानि, सन्ततिसुख, स्त्रीकष्ट, कारोबार कुठ ठीक रहे। **सितम्बर** 25, 26; **अक्तूबर** 4, 5, 12, 13, 14 अशुभ।

मकर– नेत्र व उदरविकार, क्रोध वढ़े, वृथा–विवाद से दूर रहें, मित्र–बन्धुसुख, सम्पत्ति लाभ, कारोबार में बाधा आए। **सितम्बर** 17, 18, 19, 27, 28; **अक्तूबर** 6, 7, 15, 16 अशुभ।

कुम्भ–वायुविकार, निजीजन–सहयोग, सन्ततिचिन्ता, स्त्रीसुख, कारोबार कुछ ठीक, खर्च अधिक हो। **सितम्बर** 20, 21, 29, 30; **अक्तूबर** 1, 8, 9 अशुभ।

मीन– वायुविकार, धनहानि, निजीजन-सुख, सन्तानपक्ष से चिन्ता, विरोधी कमजोर, स्त्रीपक्ष से लाभ, कारोबार में रद्दोबदल हो। **सितम्बर** 22, 23, 24; **अक्तूबर** 2, 3, 10, 11 अशुभ।

कार्त्तिक मास

तुलासंक्रान्ति (17 अक्तूबर से 15 नवम्बर, सन् 2018 ई.)

संक्रान्तिकालीन गोचर ग्रहस्थिति का फल– सूर्य नीचस्थ है। शनि और मंगल की पोजीशन उग्रवाद किंवा भूकम्प आदि प्राकृतिक प्रकोप से कहीं जनधनहानि करे। कन्या– राशि पर शनि की विशेष दृष्टि है, अतः पाक में अराजकता से सत्ता को खतरा होगा। हत्याकाण्ड आदि घटनाओं से सीमावर्ती क्षेत्र क्षुब्ध रहें। किसी विशिष्ट व्यक्ति का पद रिक्त हो। गुरु–शुक्र की स्थिति समुद्र तटवर्ती क्षेत्रों के लिए नेष्ट है। ग्रहस्थिति के अनुसार तेल, गुड़, घी, चीनी एवं अन्य खाद्य वस्तुओं में तेजी रहे।

कार्त्तिक-संक्रान्तिकालीन ग्रहस्थिति

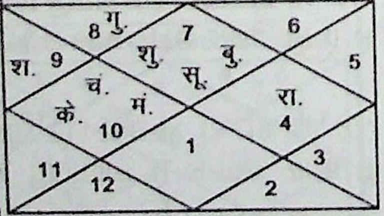

तुलासंक्रान्ति–प्रवेशकाल=17 अक्तूबर, 2018 ई.को 18घं. 44मि.(I.S.T.) मु. 45, पुण्यकाल मध्याह्न बाद,

कार्तिक मास में प्रत्येक राशि के लिए फल

मेष– रक्त–पित्तविकार, चोरी व ठगी से बचें। गुप्त शत्रु से सावधान, निजीजनों से अनबन, सन्तान–स्त्रीपक्ष से चिन्ता, कारोबार बिगड़े। **अक्तूबर** 22, 23, 31; **नवम्बर** 1, 9, 10 अशुभ।

वृष– मन अशान्त, गुप्त चिन्ता, अर्थलाभ होकर हानि हो, सन्तान व स्त्रीपक्ष से सुख, कारोबार में हानि, कार्यान्तर का विचार बने। **अक्तूबर** 24, 25, 26; **नवम्बर** 2, 3, 11, 12 अशुभ।

मिथुन– सिर व नेत्रकष्ट, कर्जा सिर चढ़े, मन अशान्त, घरेलु झंझटों से दूर रहें, स्त्रीकष्ट, कार्यान्तर से हानिभय है। **अक्तूबर** 17, 18, 19, 27, 28; **नवम्बर** 4, 5, 13, 14, 15 अशुभ।

कर्क– गुन्त चिन्ता, क्रोध बढ़े, गृहकलह, शत्रु प्रबल, कारोबार कमजोर, वृथा घरेलु झंझटों से बचें। **अक्तूबर** 20, 21, 29, 30; **नवम्बर** 6, 7, 8 अशुभ।

सिंह– वाहन से यात्रा में चोट-भय, सेहत गडबड़, धनलाभ होकर अधिक व्यय, निजीजनों से अनबन, नई योजना, कारोबार कमजोर रहे। **अक्तूबर** 22, 23, 31; **नवम्बर** 1, 9, 10 अशुभ।

कन्या– सेहत ठीक, स्वतन्त्र कार्य में हानि, गृहकलह, सन्तान हेतु विशेष खर्च, स्त्रीसुख, कारोबार में रद्दोबदल हो। **अक्तूबर** 24, 25, 26; **नवम्बर** 2, 3, 11, 12 अशुभ।

तुला– वायुविकार, कारोबार ठीक, उत्साह बढ़े, घरेलु झंझट से अशान्ति, स्त्री–सन्तानपक्ष से चिन्ता हो। **अक्तूबर** 17, 18, 19, 27, 28; **नवम्बर** 4, 5, 13, 14, 15 अशुभ।

वृश्चिक– सेहत ठीक, अर्थहानि, उत्साह बढ़े, स्त्रीकष्ट, कारोबार में रुकावट, खर्च अधिक, विलासिता में मन लगे। **अक्तूबर** 20, 21, 29, 30; **नवम्बर** 6, 7, 8 अशुभ।

धनु– सेहत बिगड़े, धनलाभ, आय से व्यय अधिक हो, कारोबार कमजोर, शत्रु बढ़े, कार्यान्तर व स्थानान्तर का विचार। **अक्तूबर** 22, 23, 31; **नवम्बर** 1, 9, 10 अशुभ।

मकर– गुप्त चिन्ता, निजीजनों से अनबन, स्त्रीसुख, सन्तति से परेशानी, कारोबार ठप्प। **अक्तूबर** 24, 25, 26; **नवम्बर** 2, 3, 11, 12 अशुभ।

कुम्भ– रक्त–पित्तविकार, धनहानि, मित्र–बन्धु से सहयोग, शत्रु से परेशानी, स्त्रीकष्ट, कारोबार कुछ ठीक। **अक्तूबर** 17, 18, 19, 27, 28; **नवम्बर** 4, 5, 13, 14, 15 अशुभ।

मीन– सेहत ठीक, धनलाभ, लेकिन अचानक वृथा व्यय हो, स्त्रीपक्ष से चिन्ता, घरेलु झंझट, गुप्त शत्रु से सावधान रहें। **अक्तूबर** 20, 21, 29, 30; **नवम्बर** 6, 7, 8 अशुभ।

मार्गशीर्ष मास

वृश्चिकसंक्रान्ति (16 नवम्बर से 15 दिसम्बर, सन् 2018 ई.)

संक्रान्तिकालीन गोचर ग्रहस्थिति का फल— शनि, राहु एवं मं.–राहु का षडष्टकयोग राजनीतिज्ञों में परस्पर संघर्षात्मक स्थिति बनाता है। कहीं साम्प्रदायिक उपद्रव, कहीं राष्ट्रविशेष में सत्तापरिवर्तन, पाक में बलोच–गिलगित आदि में उपद्रव एवं भयंकर तूफान, भूकम्प आदि से हानि के योग बनेंगे। वृश्चिक, तुला, धनु, कुम्भ एवं सिंह राशि के लिए यह मास कष्टप्रद रहे। खाद्य तेल, गुड़, नारियल, दूध, तिल एवं दालचीनी में तेजी रहेगी।

मार्गशीर्ष-संक्रान्तिकालीन ग्रहस्थिति

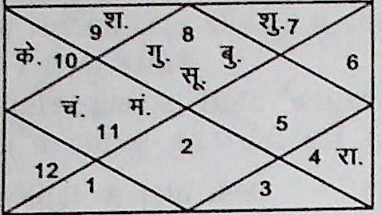

वृश्चिकसंक्रान्ति–प्रवेशकाल=16 नवम्बर, 2018 ई.को 18घं. 31मि. (I.S.T.), मु. 15, पुण्यकाल मध्याह्न बाद,

मार्गशीर्ष मास में प्रत्येक राशि के लिए फल

मेष— सेहत गड़बड़, अर्थलाभ, निजीजन से अनबन, यात्रा में चोटभय, सन्तान–सुख, कारोबार में सुधार हो। **नवम्बर** 18, 19, 20, 27, 28; **दिसम्बर** 6, 7 अशुभ ।

वृष— वात–पित्तविकार, कार्यान्तर से लाभ, घरेलु झंझट, मित्रों से सहयोग, स्त्रीपक्ष से चिन्ता, स्थानान्तर का विचार बने। **नवम्बर** 21, 22, 29, 30; **दिसम्बर** 8, 9, 10 अशुभ ।

मिथुन— उदरविकार, धनहानि, वृथाव्यय, भाई–बन्धुसुख, सन्तान–स्त्रीकष्ट, पार्टनरशिप में हानि, कार्यान्तर का विचार बने। **नवम्बर** 23, 24; **दिसम्बर** 1, 2, 3, 11, 12 अशुभ ।

कर्क— चोटभय, अर्थलाभ होकर हानिभय, मित्र–बन्धुसुख, सन्तान–स्त्रीपक्ष से चिन्ता, कारोबार में घाटा। **नवम्बर** 16, 17, 25, 26; **दिसम्बर** 4, 5, 13, 14, 15 अशुभ ।

सिंह— वायुविकार, सट्टे आदि से धनहानि, सन्तानकष्ट, शत्रु प्रबल, घरेलु झंझट, सम्पत्तिविवाद से बचें। **नवम्बर** 18, 19, 20, 27, 28; **दिसम्बर** 6, 7 अशुभ ।

कन्या— रक्त–पित्तविकार, कर्जे से बचें, धनहानि से मन चिन्तित, मित्र से अनबन, सन्ततिकष्ट, स्त्रीसुख । **नवम्बर** 21, 22, 29, 30; **दिसम्बर** 8, 9, 10 अशुभ ।

तुला— सेहत ठीक, लेकिन क्रोध को शान्त रखें। वृथा विवाद से बचें, राजपक्ष से कष्टभय, निजीजन से अनबन, कार्यान्तर से लाभ । **नवम्बर** 23, 24; **दिसम्बर** 1, 2, 3, 11, 12 अशुभ ।

वृश्चिक— वायुरोग, धनहानि, व्यय अधिक, सन्तानपक्ष व नई योजना से लाभ, कारोबार प्रायः ठीक रहे। **नवम्बर** 16, 17, 25, 26; **दिसम्बर** 4, 5, 13, 14, 15 अशुभ ।

धनु— उदर–विकार, स्त्री–पुत्र हेतु विशेष खर्च हो, नीच व्यक्ति से हानिभय, मित्र–बन्धु से सुख, मासान्त में लाभ हो। **नवम्बर** 18, 19, 20, 27, 28; **दिसम्बर** 6, 7 अशुभ ।

मकर— क्रोध न करें, हानिभय, स्त्रीपक्ष से कष्ट, भ्रातृसुख, धनलाभ होकर विशेष व्यय हो, कारोबार में रुकावट हो। **नवम्बर** 21, 22, 29, 30; **दिसम्बर** 8, 9, 10 अशुभ ।

कुम्भ— वायुविकार, धनलाभ हो, भाई–बन्धुसुख, सन्ततिकष्ट, शत्रु कमजोर, स्त्रीपक्ष शुभ, कारोबार कुछ ठीक न चले। **नवम्बर** 23, 24; **दिसम्बर** 1, 2, 3, 11, 12 अशुभ ।

मीन— सेहत ठीक, आय–व्यय बराबर, निजीजन–कष्ट, नई योजना से हानि, कार्यान्तर व स्थानान्तर का विचार। स्त्री–सन्तान से चिन्ता । **नवम्बर** 16, 17, 25, 26; **दिसम्बर** 4, 5, 13, 14, 15 अशुभ ।

पौष मास

धनुसंक्रान्ति (16 दिसम्बर, 2018 से 13 जनवरी, 2019 ई.)

संक्रान्तिकालीन गोचर ग्रहस्थिति का फल– लग्न (धनु) में शनि–सूर्य हैं एवं लग्नेश गुरु द्वादश भाव (खर्च खाने) में होने से जनता में महंगाई एवं अन्य कारणों से राजनीतिज्ञों के प्रति रोष बढ़ेगा। कुछ प्रान्तों में साम्प्रदायिक तनाव एवं देशद्रोही अंसरों(तत्त्वों) से अशान्ति बनेगी। सख्त कदम उठाने पड़ेंगे। मुस्लिम राष्ट्रविशेष में कहीं स्थिति नाजुक बन सकती है। रुई, कपास, ऊन, तिल, लौंग, उड़द, गुड़ एवं दालवाना में तेजी रहे।

पौष-संक्रान्तिकालीन ग्रहस्थिति

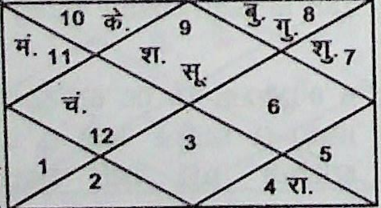

धनुसंक्रान्ति–प्रवेशकाल=16 दिसम्बर, 2018 ई.को 9घं. 9मि. (I.S.T.), मु. 45, पुण्यकाल 15 घं 9 मि. तक,

पौष मास में प्रत्येक राशि के लिए फल

मेष– समय परेशानी वाला है, शनि–मंगलवार को चोट से बचें। अर्थिक संकट बढ़े, मित्र से मदद, संतान–स्त्री चिन्ता, भातृचिन्ता, धैर्य से काम लें। **दिसम्बर** 16, 17, 25, 26; **जनवरी** 2, 3, 4, 12, 13 अशुभ ।

वृष– उदर किंवा नेत्रपीड़ा, कर्जा बढ़े, लेकिन कारोबार एवं बन्धु की मदद से लाभ रहे। सन्तति–सुख, स्त्रीकष्ट, मासान्त में विशेष खर्च। **दिसम्बर** 18, 19, 27, 28; **जनवरी** 5, 6 अशुभ।

मिथुन– क्रोध बढ़े, अर्थलाभ हो, मित्र व निजीजन–सहयोग, उत्साह बढ़े, सजकार्य में सफलता, कारोबार ठीक रहे। **दिसम्बर** 20, 21, 22, 29, 30; **जनवरी** 7, 8, 9 अशुभ।

कर्क– सेहत ठीक, कारोबार में कुछ लाभ, भाई–बन्धु से लाभ, सन्ततिकष्ट, स्त्रीपक्ष से चिन्ता, मासान्त में खर्च अधिक हो। **दिसम्बर** 23, 24, 31; **जनवरी** 1, 10, 11 अशुभ ।

सिंह–रक्त–पित्तविकार, धनलाभ हो, मित्र से अनबन, सन्तानकष्ट, स्त्रीसुख, कार्यान्तर से लाभ, आय से व्यय अधिक हो। **दिसम्बर** 16, 17, 25, 26; **जनवरी** 2, 3, 4, 12, 13 अशुभ ।

कन्या– वायु–विकार, धन–लाभ होकर हानिभय, निजीलोगों से सम्पत्तिविवाद, घरेलु झंझट, स्त्रीपक्ष से लाभ, कारोबार में रद्दोबदल हो। **दिसम्बर** 18, 19, 27, 28; **जनवरी** 5, 6 अशुभ।

तुला– सेहत ठीक, अर्थिक संकट का सामना करना पड़े, मित्रवर्ग से मदद, सन्तानसुख, स्त्रीकष्ट, कारोबार कमजोर रहे। **दिसम्बर** 20, 21, 22, 29, 30; **जनवरी** 7, 8, 9 अशुभ।

वृश्चिक– उदरविकार, अचानक हानिभय, मित्र–बन्धु से लाभ, स्त्रीकष्ट, कारोबार में सुधार । **दिसम्बर** 23, 24, 31; **जनवरी** 1, 10, 11 अशुभ ।

धनु– संयम से रहें, अपमान भय है। वृथा व्यय, भाई–मित्र से लाभ, सन्तान–स्त्रीपक्ष से चिन्ता, कारोबार ठीक चले। **दिसम्बर** 16, 17, 25, 26; **जनवरी** 2, 3, 4, 12, 13 अशुभ ।

मकर– सेहत ठीक, धनलाभ, भाई–बन्धु से सहयोग, सन्तान–कष्ट, स्त्रीसुख, कारोबार ठीक । **दिसम्बर** 18, 19, 27, 28; **जनवरी** 5, 6 अशुभ।

कुम्भ– सेहत ठीक, शुभ समाचार, धनलाभ, मित्र–बन्धु से मनमुटाव, स्त्रीसुख, कारोबार में सुधार हो। **दिसम्बर** 20, 21, 22, 29, 30; **जनवरी** 7, 8, 9 अशुभ।

मीन– सेहत ठीक, अर्थलाभ होकर हानि हो, मित्र–बन्धु से विरोध, सम्पत्तिविवाद, स्त्री व सन्तानसुख, नए उद्योग का विचार बने। **दिसम्बर** 23, 24, 31; **जनवरी** 1, 10, 11 अशुभ ।

माघ मास

मकरसंक्रान्ति (14 जनवरी से 12 फरवरी, सन् 2019 ई.)

संक्रान्तिकालीन गोचर ग्रहस्थिति का फल– लग्नस्थ सूर्य, केतु. एवं लग्नेश शनि के व्यय स्थान में होने से किसी विशिष्ट व्यक्ति को परेशानी का सामना करना पड़े। मिथुन एवं कन्या राशि पर श. मं. की दृष्टि सीमा–प्रान्तों पर अतिक्रमण से वातावरण को अचानक अशान्त बनाए तथा मुस्लिम देश विशेषरूप से प्रभावित होंगे। प्राकृतिक प्रकोप एवं रोगविशेष से जनता में कहीं भारी परेशानी रहे। गुड़, घी, रुई, सोना, चाँदी, ताँबा, तिलहन तेज रहें।

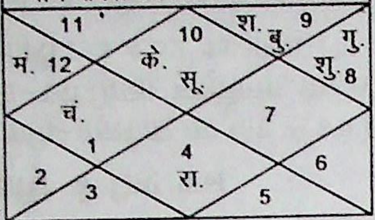
माघ-संक्रान्तिकालीन-ग्रहस्थिति

मकरसंक्रान्ति–प्रवेशकाल=14 जनवरी, 2019 ई.को 19घं. 51मि. (I.S.T.), मु. 30, पुण्यकाल मध्याह्न बाद और अगले दिन मध्याह्न तक,

माघ मास में प्रत्येक राशि के लिए फल

मेष– रोगभय, अर्थलाभ होकर वृथा खर्च, बन्धुसुख, सम्पत्तिविवाद, सन्तानसुख, नई योजना से लाभ, स्त्रीपक्ष से चिन्ता, कारोबार में बाधा आए । **जनवरी** 14, 21, 22, 29, 30, 31; **फरवरी** 8, 9, 10 अशुभ।

वृष– कफ–वायुविकार, आर्थिक स्थिति कमजोर, मित्रों से मदद मिले, सन्तानपक्ष शुभ, नई योजना से लाभ, स्त्री–कष्ट, कारोबार में सुधार की योजना । **जनवरी** 15, 16, 23, 24; **फरवरी** 1, 2, 11, 12 अशुभ।

मिथुन– बिगडे काम बनें, कर्ज सिर चढे, जमीन–जायदाद लाभ, स्त्री–सन्तान को कष्ट, कार्यान्तर का विचार । **जनवरी** 17, 18, 25, 26; **फरवरी** 3, 4, 5 अशुभ।

कर्क– गुप्तचिंता, शूगर से कष्ट, आर्थिक स्थिति सुधरे, निजी–जनसुख, यात्रा में कष्ट, कार्यान्तर से लाभ। **जनवरी** 19, 20, 27, 28; **फरवरी** 6, 7 अशुभ।

सिंह– सेहत ठीक, धनलाभ, खर्च अधिक हो, मित्र–बन्धुकष्ट, स्त्रीसुख, नई योजना में बाधा, कारोबार कमजोर रहे। **जनवरी** 14, 21, 22, 29, 30, 31; **फरवरी** 8, 9, 10 अशुभ।

कन्या– कफ–वायुविकार, अर्थलाभ होकर हानि हो, निजीजनों से अनबन, स्त्रीपक्ष से लाभ, कारोबार पूर्ववत् । **जनवरी** 15, 16, 23, 24; **फरवरी** 1, 2, 11, 12 अशुभ।

तुला– उदरविकार, आय से व्यय अधिक हो, मित्र–बन्धुसुख, सन्तानपक्ष ठीक, स्त्रीकष्ट, कार्यान्तर से लाभ हो। **जनवरी** 17, 18, 25, 26; **फरवरी** 3, 4, 5 अशुभ।

वृश्चिक– सेहत बिगडे, धनलाभ, बन्धुसुख, शत्रु प्रबल, सम्पत्तिलाभ, कारोबार में प्रगति हो। **जनवरी** 19, 20, 27, 28; **फरवरी** 6, 7 अशुभ।

धनु– धनलाभ होकर हानिभय, निजीजन–सहयोग, सन्तानपक्ष से परेशानी, सम्पत्तिलाभ की योजना, स्त्रीपक्ष से मदद हो। **जनवरी** 14, 21, 22, 29, 30, 31; **फरवरी** 8, 9, 10 अशुभ।

मकर– सेहत ठीक, धनलाभ अच्छाहो, मित्र से अनबन, सन्तान सुख, स्त्रीकष्ट, कार्यान्तर से लाभ हो। **जनवरी** 15, 16, 23, 24, **फरवरी** 1, 2, 11, 12 अशुभ।

कुम्भ– सेहत ठीक रहे, अर्थलाभ होकर हानिभय, मित्र–बन्धुकष्ट, स्त्री एवं सन्तानपक्ष शुभ, आय से व्यय अधिक हो। **जनवरी** 17, 18, 25, 26; **फरवरी** 3, 4, 5 अशुभ।

मीन– रोगभय, राजपक्ष से भय, आर्थिक संकट बढे, भाई–बन्धु से सहयोग मिले, स्त्री को वायुरोग से कष्ट, कारोबार ठीक रहे। **जनवरी** 19, 20, 27, 28; **फरवरी** 6, 7 अशुभ।

फाल्गुन मास

कुम्भसंक्रान्ति (13 फरवरी से 13 मार्च, सन् 2019 ई.)

संक्रान्तिकालीन गोचर ग्रहस्थिति का फल– कुम्भरथ सूर्य पर शनि की एवं मंगल की राहु पर दृष्टि राजनैतिक दृष्टि से कुछ चिन्तनीय है, अघटित घटनाएं अशान्ति का कारण बनेंगी। राजनीतिज्ञ नए संगठन बनाने (तोड़–फोड़) मे लगेंगे। इस समय विरोधी देश सीमातिक्रमण, किंवा अशान्ति का वातावरण बना सकते हैं। शनि–राहु का षडष्टक एवं मं. रा. का दशम–चतुर्थ सम्बन्ध राष्ट्राध्यक्षों के लिए कठिन परिस्थितियों को उपस्थित करेगा। खाद्यान्न, तेल, तिलहन, घी, चीनी एवं कपास, लौंग, जीरा के भाव तेज रहेंगे।

फाल्गुन-संक्रान्तिकालीन ग्रहस्थिति

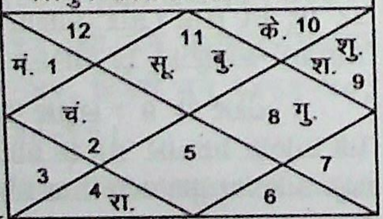

कुम्भसंक्रान्ति–प्रवेशकाल=13 फरवरी, 2019 ई.को 8घं. 48मि. (I.S.T.),
मु. 30, पुण्यकाल 14घं. 48 मि. तक,

फाल्गुन मास में प्रत्येक राशि के लिए फल

मेष– कष्टभय, गुप्तचिन्ता, अचानक अर्थलाभ, शत्रुपक्ष कमजोर, अच्छे लोगों से सहयोग, नई प्रगतिप्रद योजना बने, कारोबार बढ़े। **फरवरी** 18, 19, 26, 27; **मार्च** 8, 9 अशुभ ।

वृष– सेहत ठीक, धनलाभ हो, भाई–बन्धुसुख, सन्तान व स्त्रीपक्ष से चिन्ता, कारोबार ठीक, नए उद्योग लगें। **फरवरी** 20, 21, 28; **मार्च** 1, 2, 10, 11 अशुभ ।

मिथुन– सेहत ठीक, हौसला बुलन्द रहे, धनलाभ अच्छा हो, मित्र–बन्धु से कुछ अनबन, मासान्त में आय से व्यय अधिक हो । **फरवरी** 13, 14 22, 23; **मार्च** 3, 4, 12, 13 अशुभ ।

कर्क– उलझे मसले हल हों, आय से व्यय अधिक, भाई को कष्ट, राजपक्ष से जय, स्त्रीसुख, कार्यान्तर व स्थानान्तर का विचार बने। **फरवरी** 15, 16, 17, 24, 25; **मार्च** 5, 6, 7 अशुभ ।

सिंह– वायुविकार, वृथाव्यय, मित्र–बन्धु से लाभ, पुराने झंझट सुलझें। स्त्री–सुख, शुभ कार्य हो । **फरवरी** 18, 19, 26, 27; **मार्च** 8, 9 अशुभ ।

कन्या– पेट में विकार, धनलाभ होकर हानिभय, भाई–बन्धु से सुख, स्त्रीकष्ट, सन्तानपक्ष शुभ, शुभ कार्य हो, कारोबार ठीक हो। **फरवरी** 20, 21, 28; **मार्च** 1, 2, 10, 11 अशुभ ।

तुला– सेहत ठीक रहे, धनलाभ हो, निजीजन से अनबन, मित्र–बन्धु से मेल, विद्या में सफलता, अकारण कलह से सावधान, कारोबार ठीक । **फरवरी** 13, 14, 22, 23; **मार्च** 3, 4, 12, 13 अशुभ ।

वृश्चिक– वायुरोग, अर्थलाभ होकर हानिभय, निजीजन–सुख, नई असफल योजना, शुभ कार्य हो, कार्यान्तर से लाभ हो। **फरवरी** 15, 16, 17, 24, 25; **मार्च** 5, 6, 7 अशुभ ।

धनु– मधुमेह (शूगर) से परेशानी, धनलाभ पर्याप्त हो, मित्र से अनबन, सन्तानकष्ट, स्त्रीसुख, कार्यान्तर का विचार बने। **फरवरी** 18, 19, 26, 27; **मार्च** 8, 9 अशुभ ।

मकर– सेहत ठीक, धनलाभ होकर हानिभय, स्त्रीपक्ष से सुख–लाभ, कार्यान्तर से लाभ मिले। **फरवरी** 20, 21, 28, **मार्च** 1, 2, 10, 11 अशुभ ।

कुम्भ– सुखलाभ, गुप्त शत्रु से भय, आर्थिक हानि से अशान्ति, मित्र से सहयोग, सन्तानपक्ष से सुख, नई योजना, कारोबार ठीक रहे। **फरवरी** 13, 14, 22, 23; **मार्च** 3, 4, 12, 13 अशुभ ।

मीन– उदरविकार, भाई–बन्धु से सहयोग, नई लाभप्रद योजना बने, स्त्रीपक्ष से चिन्ता, अपमानभय, आय से व्यय अधिक रहे। **फरवरी** 15, 16, 17, 24, 25; **मार्च** 5, 6, 7 अशुभ ।

चैत्र मास

मीनसंक्रान्ति (14 मार्च से 13 अप्रैल, सन् 2019 ई.)

संक्रान्तिकालीन गोचर ग्रहस्थिति का फल– लग्न में ही गुरुक्षेत्र में सूर्य–बुध राष्ट्रहित में नई योजनाएं बनाएंगे। शनि–राहु का समसप्तक किसी दुर्घटना का संकेत देता है। गुरु–चन्द्र की स्थिति राष्ट्रीय गरिमा को उज्ज्वल करेगी। धनस्थान में मेषस्थ मंगल आर्थिक स्थिति को ठीक करेगा। भारत के विदेशों से सम्बन्ध मधुर होंगे। दालदाना, अन्य अनाज, तेल, तिलहन, रुई, घी आदि में मन्दे का रुख रहे।

चैत्र-संक्रान्तिकालीन ग्रहस्थिति

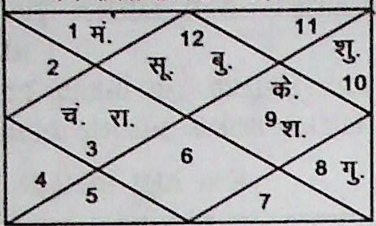

मीनसंक्रान्ति–प्रवेशकाल=14 मार्च, 2019 ई.को 29घं. 40मि. (I.S.T.),
मु. 15, पुण्यकाल अगले दिन मध्याह्न तक,

चैत्र मास में प्रत्येक राशि के लिए फल

मेष– पुराने झंझट हल हों, सेहत प्रायः ठीक,आर्थिक लाभ ठीक रहे, भाई सुख, मित्र से अनबन, नए विवाद से बचें, लाभप्रद योजना बने, कारोबार ठीक रहे। **मार्च** 17, 18, 25, 26; **अप्रैल** 4, 5, 13 अशुभ ।

वृष– क्रोध न करें, हानिभय है, धनलाभ हो, निजीजन–सहयोग, यात्रा में कष्ट, मित्रकष्ट, शुभ कार्य हो, मासान्त शुभ। **मार्च** 19, 20, 27, 28, 29; **अप्रैल** 6, 7, 8 अशुभ ।

मिथुन– वायुविकार, अचानक स्त्रीपक्ष से लाभ, कारोबार ठीक, मासान्त में विशेष खर्च। **मार्च** 14, 21, 22, 30, 31; **अप्रैल** 9, 10 अशुभ ।

कर्क– नेत्र व सिर–पीडा, धनलाभ होकर हानिभय, भ्रातृसुख, स्त्रीकष्ट, कार्यान्तर व स्थानान्तर का विचार बने। **मार्च** 15, 16, 23, 24; **अप्रैल** 1, 2, 3, 11, 12 अशुभ ।

सिंह– वायुविकार, धन–हानिभय, भाई–बन्धुसुख, सन्तानसुख, स्त्रीपक्ष से चिन्ता, कार्यान्तर से लाभ । **मार्च** 17, 18, 25, 26; **अप्रैल** 4, 5, 13 अशुभ ।

कन्या– रक्त–पित्तविकार, धनलाभ होकर हानिभय, स्त्रीपक्ष से लाभ, कारोबार ठीक रहे, मित्र से सहयोग, सन्तान से चिन्ता रहे। **मार्च** 19, 20, 27, 28, 29; **अप्रैल** 6, 7, 8 अशुभ ।

तुला– धनहानि, गुप्त चिन्ता, कर्जा सिर चढ़े, भाई से सहयोग, मित्रों से अनबन, स्त्रीकष्ट, अशुभ समाचार, मासान्त मे लाभ की स्थिति बने। **मार्च** 14, 21, 22, 30, 31; **अप्रैल** 9, 10 अशुभ ।

वृश्चिक– क्रोध न करें, हानिभय, घरेलु झंझट बढ़ें, कार्यान्तर का विचार, भ्रातृ–सुख, मित्रकष्ट, स्त्रीपक्ष शुभ रहे। **मार्च** 15, 16, 23, 24; **अप्रैल** 1, 2, 3, 11, 12 अशुभ ।

धनु– अचानक कष्टभय, यात्रा में सावधान रहें, मासमध्य में शुभलाभ, शनि–राहु का दान करें, कारोबार मे लाभ हो। **मार्च** 17, 18, 25, 26; **अप्रैल** 4, 5, 13 अशुभ ।

मकर– रोगभय, धनलाभ होकर खर्चा अधिक हो, कर्जा उठाना पड़े, मित्र–बन्धुकष्ट, सन्तानसुख, स्त्रीकष्ट, मासान्त शुभ रहे। **मार्च** 19, 20, 27, 28, 29; **अप्रैल** 6, 7, 8 अशुभ ।

कुम्भ– शत्रु कमजोर, सुख–लाभ हो, कारोबार ठीक, धनलाभ हो, मित्र से मिलाप, घरेलु झंझटों से बचें। **मार्च** 14, 21, 22, 30, 31; **अप्रैल** 9, 10 अशुभ ।

मीन– सेहत ठीक, व्यर्थ के विवाद में न उलझें, भाई से लाभ, सन्तान के पक्ष से चिन्ता, सम्पत्तिलाभ हो। **मार्च** 15, 16, 23, 24; **अप्रैल** 1, 2, 3, 11, 12 अशुभ ।

वर्षराजादि फल-विचार (संवत् 2075 वि.)

(सन् २०१८-१९ ई. की ग्रहपरिषद् का विवरण)

कल्पादि से गतवर्ष १९७२९४९११९, सृष्टि संवत् १९५५८८५११९, श्रीविक्रम संवत् २०७५, शक संवत् १९४०, श्रीकृष्ण जन्मसंवत् ५२५४, कलि संवत् ५११९, सप्तर्षि संवत् ५०९४, श्री जैन महावीर-निर्वाण संवत् २५४३-४४, श्रीबुद्ध संवत् २६४१-४२, हिजरी सन् १४३९-४०, फसली सन् १४२५-२६, ईस्वी सन् २०१८-१९।

वर्षारम्भ में गुरुमान से शिव(रुद्र)विंशति का "विरोधकृत्" नामक संवत्सर है। यह 'वराहमिहिर' द्वारा निर्दिष्ट 'नवम युग' किंवा शिव(रुद्र)विंशति का चतुर्थ संवत्सर है। इसका फल शास्त्रों में इस प्रकार लिखा है—

"खण्डवृष्टिर्भवेद् देवि सस्यहानिश्च जायते।
कोंकणे मध्यदेशेषु विरोधश्चाहिमण्डले॥"

अर्थात्—'विरोधकृत्' संवत्सर में कहीं खण्डवृष्टि (छिट-पुट वर्षा), कहीं सूखा, कहीं वर्षा या स्वल्प वर्षा की स्थिति बनती है, जिससे कहीं (भयंकर) सूखा (दुर्भिक्ष), कहीं खड़ी फसलों को हानि पहुंचेगी। यह स्थिति कोंकण, नागपुर किंवा मध्य भूभाग पर अधिक प्रभावी रहेगी।

'वर्ष-प्रबोध' ग्रन्थ में **'विरोधकृत्'** नामक संवत्सर का फल इस प्रकार लिखा है—

"विरोधकृद्वत्सरे तु परस्परं विरोधिनः।
सर्वे जना नृपाश्चैव मध्य-सस्या तु मेदिनी॥"

अर्थात्—शासक किंवा राजनैतिक दल परस्पर (देशहित को उपेक्षित करके) अपनी पार्टी-हितार्थ (सत्ता-प्राप्त्यर्थ) झगड़ते रहें किंवा शक्तिपरीक्षण के लिए कटिबद्ध रहें। राजनीतिज्ञों के लिए यह वर्ष अधिक विरोधपूर्ण एवं अघटित घटनाओं वाला रहेगा, जैसाकि संवत्सर के नाम से ही संकेत मिलता है। वर्षा (जल) की कमी से कहीं दुर्भिक्ष रहे, जनता त्रस्त हो, खाद्य पदार्थों की उपलब्धता भी कम होगी। शासक एवं शासित में इस संवत्सर में मतभेद बढ़ेगा, जिससे राजनैतिक परिदृश्य भी बदलता नजर आयेगा। परिणाम आश्चर्यजनक होंगे।

सं. २०७५ वि. का राजा (ग्रहपरिषद् का प्रधान) **सूर्य, मन्त्री शनि, सस्येश** (चौमासी फसलों के स्वामी) **चन्द्र, धान्येश** (शीतकालीन फसलों के स्वामी) **सूर्य, मेघेश** (मौसम, वर्षा—पानी के स्वामी) **शुक्र, रसेश** (गुड़, खाण्ड, रसकस आदि के स्वामी) **बुध, नीरसेश** (सर्वविध धातु आदि व्यापार के स्वामी) **चन्द्र, फलेश** (फल-फूल आदि के स्वामी) **गुरु, धनेश** (धन-दौलत एवं खजाना के स्वामी) **चन्द्र** एवं **दुर्गेश** (सुरक्षा एवं प्रतिरक्षा के स्वामी) **शुक्र** हैं।

संवत् २०७५ वि. के उल्लिखित पदाधिकारियों का फल इस प्रकार है—

(१) संवत्सर २०७५ वि. के राजा 'सूर्य' का फल—

"तीक्ष्णोऽर्कः स्वल्प-सस्यश्च गतमेघोऽति तस्करः।
बहूरग-व्याधिगणो भास्कराब्दो रणाकुलः॥"

अर्थात्—सूर्य के संवत्सरेश होने से इस संवत् (२०७५ वि.) में कृषि एवं फलादि का उत्पादन कम हो, समयानुसार वर्षा न होने से खड़ी फसलों को हानि पहुंचे। चोर, पाखण्डी एवं अपराधवृत्ति के व्यक्तियों का प्रभाव बढ़ेगा। नानाविध असाध्य रोग, अग्निकाण्ड एवं घातक शस्त्रास्त्रों का उग्रवादियों द्वारा सर्वत्र किंवा सीमाप्रान्तों पर खुला प्रयोग हो। शासकों एवं आम जनता में मतभेद उजागर होंगे। जंगलों में आग द्वारा वन्य सम्पदा की हानि, शिशिर में भी सर्दी कम एवं साल में अधिक गर्मी होगी। जंगली

जानवरों एवं सरीसृप (रेंगने वाले) जीवों का बस्तियों में प्रवेश हो, सदाचारी लोगों को कष्ट एवं दुर्भिक्ष आदि से अनेकत्र पशुहानि आदि फल इस संवत्सर में देखने को मिलेंगे। एक जगह सूर्य राजा के फल में **"निधनं नृपाणाम्"** भी लिखा है। अत: किसी विशिष्ट व्यक्तिविशेष के निधन से भी इस वर्ष शोक व्याप्त होगा।

(२) मन्त्री 'शनि' का फल—

"रविसुते यदि मन्त्रिणि पार्थिवा विगत-शीलवशाद् बहुदु:खदा:।
न जलदा जलदा जनतापदो जनपदेषु सुखं धनजं क्वचित्॥"

अर्थात्—शनि संवत्सर का मन्त्री होने से अपने कर्त्तव्य एवं परम्परा की उपेक्षा करके शासकों के लोकविरुद्ध एवं नीतिविरुद्ध व्यवहार से जनता किंवा अन्य राजनीतिज्ञों में कष्ट से असन्तोष व्याप्त होगा। बादल वर्षा कम करें। विरले ही वर्ग समृद्ध किंवा सुखी होंगे। अधिकत्र आर्थिक समृद्धि बाधित ही रहेगी।

(३) सस्येश 'चन्द्र' का फल—

"सस्याधिपे शीतकरे प्रजासुखं मेघ: पयो मुंचति गोपतोषम्।
देव-द्विजानां च वशं वदत्वं धरा तदा धान्य-घनौघपूर्णा॥"

अर्थात्—इस संवत् का सस्येश चन्द्र होने से कृषकों किंवा गोपालकों एवं दुधारू पशुओं के लिए सुखद वर्षा हो। देवताओं एवं द्विजातियों का सम्मान व सर्वत्र धन-धान्य-वृद्धि हो।

(४) धान्येश 'सूर्य' का फल—

"सूर्ये धान्याधिपे जाते स्वल्प-तोयप्रदा घना:।
माष-मुद्ग-तिलादीनां महर्घं जायते ध्रुवम्॥"

अर्थात्—सूर्य के धान्येश होने पर वर्षा कम हो, अनेकत्र दुर्भिक्ष की स्थिति भी बनने के योग हैं। माह-मूंग आदि दलहन, तिल व तिलहन आदि में तेजी का वातावरण रहे।

(५) मेघेश 'शुक्र' का फल—

"भृगुसुतो जलदस्य पतिर्यदा जलयुता जलदा दिवि शोभिन:।
धन-निधानयुता नरपालका अपि च ते जनता-सुखकारका:॥"

अर्थात्—वर्षा सुखद एवं पर्याप्त हो, फसल एवं सभी कृषि-कर्म से प्राप्त उत्पादन अच्छा होने से राजकोष में वृद्धि हो एवं जनकल्याणार्थ शासक नीति निर्धारित करें।

(६) रसेश 'बुध' का फल—

"रसपतौ द्विजराजसुते नृणां सुलभता फल-खाद्य-घृतादिनाम्।
प्रमुदिता जनता बहुलालनाद् बहुजलं न चलं नृप-शासनम्॥"

अर्थात्—बुध-रसेश हो तो फल, घी एवं अन्य खाद्य पदार्थ सहज में उपलब्ध हों। राजकीय नीति-निर्धारण एवं लुभावने कार्यक्रमों से जनता प्रसन्न हो। वर्षा पर्याप्त किंवा प्रचुर मात्रा में हो। शासन स्थिर बना रहे।

(७) नीरसेश 'चन्द्र' का फल—

"श्वेत-वर्णवतां लोके मुक्ता-रजत-वाससाम्।
अर्घवृद्धि: प्रजायेत शशांके नीरसाधिपे॥"

अर्थात्—चन्द्रमा के नीरसेश होने से मोती, चांदी, वस्त्र किंवा रुई आदि सभी सफेद रंग की वस्तुओं में तेजी का वातावरण रहे।

(८) फलेश 'गुरु' का फल—

"सुरगुरुर्फल-नायकतां गतो गतभया वनभूमि-महाद्रुमा:।
यजन-याजनकोत्सवा संकुला: श्रुति-विचारपराश्च द्विजातय:॥"

अर्थात्—गुरु के फलेश होने से जनता भयमुक्त रहे। वन्य जड़ी-बूटी, कृषिकर्म एवं फल-फूल वृक्षादि की उपज उत्तम रहे। यज्ञ-याज्ञिक एवं नानाविध मांगलिक कार्य हों, जनता में धार्मिक भावना रहे। जनता श्रुति-स्मृति(संविधान)पूर्वक व्यवहार करे।

(९) धनेश 'चन्द्र' का फल—

"धनपतिमृग-लांछनके यदा रस-चयान् क्रय-विक्रयतो धनम्।
वसन-शालि-सुगन्ध-घृतादिकं वसुभवेदथ शासन-मंगलम्॥"

अर्थात्—धनेश चन्द्र होने से रस (गुड़, शक्कर, चीनी, घी आदि) पदार्थों के स्टॉक एवं पेय, मिठाई आदि के व्यापार से लाभ मिलता है। वस्त्र, चावल, सुगन्धित पदार्थ, घी एवं तेल-तिलहन के व्यापार से व्यापारी लाभ लेते हैं तथा जनता कानूनों का सहर्ष पालन करते हुए समुचित करों का भुगतान करके देश की समृद्धि एवं मंगलकामना करती है।

(१०) दुर्गेश 'शुक्र' का फल—

"भृगुसुतो यदि कोट्टपतिर्भवेद् बहुसुखं कुशलं च तदा मतम्।
वसु-विभूतिकरं नयशासनमथ वने भवनेऽपि च शं समम्॥"

अर्थात्—शुक्र दुर्गेश होने से यह संवत्सर जनता में सुख, धन-धान्यसमृद्धि, सुव्यवस्थित शासन के साथ सर्वत्र शान्ति वाला रहे।

नोट—यद्यपि संवत् के इन दशाधिकारियों का फल सर्वत्र अनुभव किया गया है, किन्तु विशेषतः **राजा का फल** कश्मीर, अफगानिस्तान एवं बराड़ देश में, **मन्त्री का फल** आन्ध्र, वाल्हीक, उज्जैन एवं मालवा में, **सस्येश** का पौण्ड्र, विदर्भ में, **धान्येश** का गुजरात, नर्मदा के तटवर्ती प्रदेश एवं मध्यप्रदेश में, **मेघेश** का मगध एवं बंगाल में, **रसेश** का कोंकण एवं गोवा में, **नीरसेश** का मालवा व बिहार में, **धनेश** का राजस्थान एवं बाड़मेर में, **फलेश**, **दुर्गेश** एवं राजा का फल सब जगह विशेष होता है।

वर्षा आदि के विश्वामान

वर्षाविश्वा ११, धान्य ७, तृण १३, शीत ७, तेज १७, वायु १३, वृद्धि १५, क्षय १५, विग्रह ११, क्षुधा ११, तृषा ५, निद्रा १३, आलस्य ७, उद्यम १५, शान्ति १५, क्रोध १३, दम्भ ६, लोभ ३, मैथुन १५, रस ९, फल १३, उत्साह ११, उग्रता ९, पाप ९, पुण्य १५, व्याधि १५, व्याधिनाश १३, आचार १३, अनाचार १, मृत्यु १५, जन्म ७, देशोपद्रव १३, देशस्वास्थ्य १, चौर ७, चौरनाश १७, अग्नि १५, अग्निशान्ति १, उद्भिज्ज १३, जरायुज ३, अण्डज ७, स्वेदज १३, टिड्डी १९, तोता १९, मूषक १३, सोना १३, तांबा १५, स्वचक्र १७, परचक्र ५, वृष्टि ७, वृष्टिनाश १५ एवं संवत्-विश्वा २० हैं।

चतुर्मेघविचार—आवर्तकादि चतुर्मेघों में सं. २०७५ वि. में '**पुष्कर**' नामक मेघ है।

फल—पुष्कर नामक मेघ होने से इस वर्ष कन्दमूल फल अधिक मात्रा में प्राप्त न हों, पापकर्म की वृद्धि हो। नानाविध रोगों से जनता परेशान रहे। "**पुष्करे मन्दवृष्टिः स्यात्**"—प्रमाणानुसार वर्षा की कमी अनुभव हो।

नोट—नवमेघों एवं चतुर्मेघों में '**मेघचतुष्टय**' का अधिक महत्त्व है।

नवमेघविचार—इस वर्ष (सं. २०७५ वि. में) नवमेघों में भी '**पुष्कर**' नामक ही मेघ है।

फल—"नैव कन्दमूल-विवृद्धिर्जायते विविध-पातक-वृद्धिः।
रोगतो जनकृशत्वमनल्पं पुष्करे जलधरे जलमल्पम्॥"

अर्थात्—कन्दमूल फल कम हों। पापकर्म अधिक हों। नानाविध रोगों से जनता परेशान रहे। वर्षा की कमी से अनेकत्र दुर्भिक्ष की स्थिति बने।

'**संवत्सर-संहिता**' ग्रन्थ में निर्दिष्ट सूत्र के अनुसार सं. २०७५ वि. में नवमेघों में '**द्रोण**' नामक मेघ भी सिद्ध होता है।

द्रोण मेघ का फल इस प्रकार है—"द्रोणे वृष्टिः समा भवेत्" अर्थात् वर्षा मध्यम होने से जल की समस्या सहज में हल नहीं होगी। कृषिकर्म के लिए भी पर्याप्त जल उपलब्ध न होने से अनेकत्र दुर्भिक्ष बने। लेकिन '**वर्ष-प्रबोध**' में इसका फल भिन्न प्रकार से है—राजा लोगों के खजाने भरपूर रहें। पृथ्वी धन-धान्य से पूर्ण एवं वर्षा भी उत्तम हो—'**देवराजो भवेत्सत्पयोदः।**'

आवह आदि सप्तवायु-विचार—इस वर्ष वायुसप्तक में '**प्रवह**' नामक वायु है।

फल—'**प्रवह**' नामक वायु अनेकत्र आंधी, तूफान, समुद्री-सुनामी एवं समुद्र तटवर्ती देशों में भारी परेशानी पैदा करे। कहीं भूकम्प, बाढ़, वर्षा से जनधनहानि भी हो। प्रवह वायु कुछ प्रान्तों में बादलों को स्थानान्तरित करके वर्षा में अवरोधक भी है। '**प्रवह**' नामक वायु प्रकृष्ट वेग व भूमध्यगत तरंगों से प्राकृतिक प्रकोप के रूप में कहीं ज्वालामुखी विस्फोट, पर्वतीय भूभाग एवं अन्यत्र भी विध्वंसकारी रहेगी। दक्षिण-पश्चिमी भूभाग किञ्च कश्मीर, उड़ीसा, असम, गुजरात, हि. प्रदेश में कहीं भारी प्राकृतिक प्रकोप, भूस्खलन, भूकम्प आदि से भारी हानि सम्भव है।

अनन्तादि-अष्टनागविचार—अनन्तादि अष्टनागों में इस वर्ष '**शंख**' नामक नाग है।

फल—वर्षा मध्यम है। राजनीतिज्ञों (राजनीतिक पार्टियों) में परस्पर मतभेद उजागर हों। प्रतिष्ठित व्यक्ति के जीवन को खतरा है। कहीं शासनसत्ता में परिवर्तन का शंखनाद हो। यावनराष्ट्र-विशेष में सत्ताहस्तान्तरण हो।

सुबुध्नादि द्वादशनागविचार—सुबुध्नादि द्वादश नागों में इस वर्ष '**नरेन्द्र**' नामक नाग है।

फल—"यत्र संवत्सरे नागो नरेन्द्रो नामतः शुभः।
तदा स्यान्निखिला पृथ्वी प्रभूत जलपूरिता॥"

अर्थात्—'**नरेन्द्र**' नामक नाग में वर्षा बहुत अधिक हो। उत्तरप्रदेश, मध्यप्रदेश, राजस्थान के सूखे इलाकों में भी वर्षा हो। कुछ प्रान्त बाढ़ से पीड़ित भी हो सकते हैं।

संवत् २०७५ वि. का वाहन—इस संवत् का राजा सूर्य होने से संवत् का राजा '**घोड़ा**' (**अश्व**) है।

फल—संवत्सर का वाहन '**घोड़ा**' होने से शासकों में राजनैतिक मतभेद किंवा राजनैतिक हत्याकाण्ड हों। सत्तासंघर्ष हों। वर्षा के असामयिक होने किंवा न्यूनता से कुछ क्षेत्र अकालग्रस्त रहें। **किञ्च**—भूकम्प आदि प्राकृतिक प्रकोप से भारी जनधनहानि एवं बाजारों में महंगाई का रूख रहे—

"राजानो विग्रह-ग्रस्ता वृष्टिनाशो महर्घता।
भूमिकम्पोऽतिकष्टं च हयारूढ़े तु वत्सरे॥"

सं. २०७५ वि. में अधिक मास

सं. २०७५ वि. में १६ मई से १३ जून तक ज्येष्ठ (चान्द्रमास) '**अधिक मास**' रहेगा। दो अमावस्याओं के मध्य संक्रान्ति न होने से इसे अधिकमास की संज्ञा दी गयी है—"**असंक्रान्तिमासोऽधिमासः स्फुटं स्यात्।**" इसे '**पुरुषोत्तम मास**' किंवा '**मलमास**' भी कहते हैं। इसमें दानविधान का विशेष महत्त्व लिखा है।

फल—"**द्विज्येष्ठे नृपविग्रहः।**" किञ्च—"**ज्येष्ठद्वये नृपध्वंसो धान्यनिष्पत्तिरुत्तमा॥**"

अर्थात्—इस वर्ष ज्येष्ठ अधिकमास होने से अचानक शत्रुकृत षड्यन्त्र से प्रतिष्ठित व्यक्ति का पद रिक्त हो किंवा नेतृत्व में परिवर्तन हो। चावलादि अनाजों की फसल उत्तम हो।

किञ्च—

"रोगपीड़ा भवेज्ज्येष्ठे यज्ञदानादिकं बहु।
राजानस्तत्र नश्यन्ति प्रधान-पुरुषक्षयः॥"

संवत् २०७५ वि. के चार स्तम्भ

(१) **जलस्तम्भ**—(चैत्र शुक्ल प्रतिपदा को रेवती नक्षत्र) शून्य प्रतिशत (अभाव) है।

(२) **तृणस्तम्भ**—(वैशाख शुक्ल प्रतिपदा को भरणी नक्षत्र) ११.६ प्रतिशत है।

(३) **वायुस्तम्भ**—(ज्येष्ठ शुक्ल प्रतिपदा को मृगशिरा नक्षत्र) ६६.८ प्रतिशत है।.

(४) **अन्नस्तम्भ**—(आषाढ़ शुक्ल प्रतिपदा को पुनर्वसु नक्षत्र) ५२.३ प्रतिशत है।

ये उल्लिखित चार स्तम्भ देश के कुशल-क्षेम-ज्ञानार्थ विशेष महत्त्व रखते हैं; क्योंकि सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड की सत्ता जल, वायु, अन्न एवं तृण (जड़ी-बूटियों) आदि पर

ही निर्भर है। संवत् के शुभारम्भ पर देश की प्राकृतिक व्यवस्था के नियामक इन चार स्तम्भों का आकलन आवश्यक समझा गया है।

(१) जलस्तम्भ—इस वर्ष जलस्तम्भ का अभाव होने से सं. २०७५ वि. में अनेक प्रान्तों में वर्षा की कमी किंवा वर्षा के अभाव से फसलों को हानि पहुंचेगी, कुछ स्थलों पर अकाल (दुर्भिक्ष) की स्थिति से सरकार को साधन जुटाने पड़ेंगे। पेयजल की समस्या कुछ प्रान्तों में गम्भीर रूप धारण करेंगी। **जलस्तम्भ के अभाव से अभिप्राय यह भी है** कि—जल (बादल-फटना, समुद्री-तूफान आदि) विपरीत परिस्थितियों किंवा मारक स्थितियों में तो जलस्तम्भ हानिकारक रहेगा, लेकिन कृषि, सिंचाई एवं पेयजल के रूप में कठिन समस्याओं वाला ही रहेगा। वैशाख शुक्ल प्रतिपदा का अभाव (क्षय) इस स्तम्भ को नगण्य बना रहा है, जोकि व्यापारी, कृषकवर्ग एवं शासकों को चिन्तनीय स्थिति में खड़ा करता है।

(२) तृणस्तम्भ—इस वर्ष तृणस्तम्भ ११.६ प्रतिशत होने से यह स्तम्भ भी काफी चिन्तनीय है। ध्यान दें, जलस्तम्भ का अभाव भी तृणस्तम्भ को प्रभावित करता है—**"पर्जन्यादन्न-सम्भवः"**। यहां पर तृण से खाद्यान्न एवं पशुचारा आदि से अभिप्राय है। इस वर्ष खाद्यान्नों (चावल, ग्वार, गेहूं आदि) की कमी, महंगाई से जनजीवन परेशान रहेगा। भूसे से निकलने वाले अनाज, कृषि, जड़ी-बूटियां, सब्जियां, फल आदि की पैदावार कम व क्षीण होने से औषध-जगत् भी प्रभावित होगा।

(३) वायुस्तम्भ—इस संवत् में संवत् का आधारभूत **'वायुस्तम्भ' ६६.८ प्रतिशत** होने से शुभ है। लेकिन जलस्तम्भ का अभाव वायुस्तम्भ के प्रबल होने से भूगर्भान्तर्गत सीस्मोग्राफिक वेव्स को प्रभावित कर सकता है, जिससे जून से अक्टूबर तक विश्व में भयानक भूकम्प, ज्वालामुखी-विस्फोट, समुद्री-तूफान से अनेकत्र हानि भी सम्भव है। गर्म हवाओं से नानाविध रोग भी रहें। मानसून अव्यवस्थित होने से जनजीवन क्षुब्ध रहे।

(४) अन्नस्तम्भ—इस संवत् में **अन्नस्तम्भ ५२.३ प्रतिशत** होने से मध्यम-मानेन ठीक है। घरेलू उत्पाद एवं खड़ी फसलों से लाभार्थ सरकार का प्रयास कृषकों के लिए हितकर रहेगा। लेकिन सरकार खाद्यान्नों की कमी की पूर्ति करने एवं व्यापारिक वर्ग तथा किसान वर्ग को सन्तुष्ट करने में असमर्थ रहेगी।

निष्कर्ष—इस संवत् में जलस्तम्भ का अभाव एवं तृणस्तम्भ के बहुत कमजोर होने से यह वर्ष कृषक वर्ग, व्यापारिक जगत् एवं शासक वर्ग के लिए चिन्तनीय है। खड़ी फसलों की हानि, खाद्यान्नों की कमी एवं भयंकर प्राकृतिक आपदाओं से हानि इस वर्ष दुःखद सिद्ध होगी। देश की आर्थिकं एवं सामाजिक स्थिति के सुधारार्थ शासन-तन्त्र पूरा प्रयास करेगा। सीमाओं पर भारी सुरक्षाप्रबन्ध आवश्यक हैं।

आर्षमान विचार (सं. २०७५ वि. की रक्षा के लिए चार दुर्ग)

(१) प्रथम आर्ष—(अक्षय तृतीया को **रोहिणी** नक्षत्र) ४.६ प्रतिशत है।

(२) द्वितीय आर्ष—(गत संवत् २०७४ वि. में पौष अमा को **मूल** नक्षत्र) १८.५ प्रतिशत है।

(३) तृतीय आर्ष—(श्रावण पूर्णिमा को **श्रवण** नक्षत्र) का अभाव है।

(४) चतुर्थ आर्ष—(कार्तिक पूर्णिमा को **कृत्तिका** नक्षत्र) ७८.५ प्रतिशत है।

नोट—उल्लिखिंत चारों आर्षमान इस संवत्सर में जनजीवन एवं देश की सुरक्षा, कानूनव्यवस्था, आर्थिक समृद्धि, सामाजिक शान्ति, सर्वविध समृद्धि किंवा नैतिक मूल्यों को सुनिश्चित करते हैं। ये भी संवत्सर के मर्मस्थल माने जाते हैं।

(१) प्रथम आर्ष—वैशाख शुक्ल तृतीया का कुलमान २१ घं. ४५ मि. एवं इस दिन रोहिणी नक्षत्र ४.६ प्रतिशत है।

फल—देशरक्षार्थ इस वर्ष यह स्तम्भ बहुत कमजोर है। भारत को सैन्यबल सुदृढ़ कर सीमाप्रान्तों पर सुरक्षा की दृष्टि से सावधान रहना होगा। लेकिन नये कार्यक्रम, नयी योजनाओं से देश समृद्धि-पथ पर तो अग्रसर रहेगा। सीमाप्रान्तों पर सुरक्षा की दृष्टि से अधिक व्यय करना पड़ेगा।

(२) द्वितीय आर्ष—सं. २०७४ वि. में पौष अमा का कुलमान २६ घं. ३१ मि. एवं मूल नक्षत्र १८.५ प्रतिशत है।

फल—भारत को पूर्व एवं उत्तर की ओर से शत्रुदेश की गतिविधि से सावधान रहना होगा; क्योंकि शत्रुदेश की गतिविधि शान्ति को भंग करेगी। जनता नानाविध रोगों से परेशान रहे, शासन को जनहितार्थ विशेष ध्यान देना होगा। जलवायु-विकार एवं

सैन्यबल की शस्त्रास्त्र-कार्यक्षमता चिन्तनीय रहे, पाक आदि में अशान्ति रहे। प्राकृतिक आपदाओं से भारी जनधनहानि के संकेत हैं।

(३) तृतीय आर्ष—इस संवत् में श्रावण पूर्णिमा का कुलमान २६ घं. १० मि. है। इस दिन श्रवण नक्षत्र का अभाव है।

फल—राजनीतिज्ञों के कार्य देशहितार्थ न होकर नये-नये घोटाले उजागर होंगे। केन्द्रीय शासनतन्त्र सत्ता को बनाये रखने के लिए प्रयत्नशील रहेगा। आर्थिक संकट देश के सामने उपस्थित होगा। कश्मीर, बंगलादेश, चीन के सीमाप्रान्त चिन्तनीय स्थिति बना सकते हैं। यह स्तम्भ भी देश के लिए चिन्तनीय स्थिति वाला है।

(४) चतुर्थ आर्ष—इस वर्ष कार्तिक पूर्णिमा का कुलमान २२ घं. १५ मि. है एवं कार्तिक पूर्णिमा को कृत्तिका नक्षत्र ७८.५ प्रतिशत है।

फल—चतुर्थ दुर्ग सुदृढ़ होने से देश गरिमा एवं सैन्यसमृद्धि की दृष्टि से गौरवान्वित होगा। विदेशों में देश का मान-सम्मान बढ़ेगा। लेकिन राजस्थान, नेपाल-बॉर्डर, लंका, कश्मीर, चीन, असम, उत्तराखण्ड, बिहार आदि में प्राकृतिक प्रकोप से हानि के योग हैं।

गोचर ग्रहस्थिति के अनुसार स्तम्भचतुष्टय के कमजोर होने से देश में जुलाई से आगे संवत् २०७५ वि. के अन्त तक भयंकर प्राकृतिक आपदाओं का सामना करना पड़ेगा।

वर्ष रक्षाकारक चार दुर्ग (आर्ष) एवं चारों स्तम्भ इस संवत् में देश की प्रगति में राजनैतिक पार्टियों की स्वार्थपरकता, असुरक्षित सीमाप्रान्त एवं प्राकृतिक प्रकोपजन्य हानि से भारी बाधा के संकेत देते हैं, सर्वज्ञ तो प्रभु ही हैं।

दोहा—"अखैतीज रोहिणी न होई, पौष अमावस मूल न जोई।
राखी श्रवणो हीन विचारो, कार्त्तिक पुण्यो कृत्तिका टारो।
महीमाह खलबली प्रकाशै, कहै भड्डली साख विनाशै॥"

संवत् २०७५ में रोहिणी का वास

(वर्षा एवं जलवायुविचार में विशेष)

सं २०७५ वि. में **'मेष संक्रान्ति'** १४ अप्रैल, सन् २०१८ ई., शनिवार, उ.भा. नक्षत्र, ऐन्द्र योग एवं मीन राशिस्थ चन्द्र के समय लग रही है, अतः रोहिणी का वास **'सन्धि'** में है।

फल—"खण्डवृष्टिस्तु सन्धिषु" अर्थात् सन्धिगत रोहिणी कहीं वर्षा, कहीं सूखा करती है। अतः **भारत के कुछ प्रान्त इस वर्ष वर्षा किंवा पेयजल के संकट का सामना करने को विवश होंगे।** लेकिन कुछ प्रान्त जलमग्न होने से क्षतिग्रस्त रहें।

समय किंवा संवत्सर का वास—रोहिणी का वास सन्धि में होने से **समय का वास 'वैश्य' के घर** है।

फल—संवत्सर का वास 'वणिक्'-गृह में होने से देश व्यापारक्षेत्र में प्रगति करेगा। नयी योजनाएं देश को आर्थिक दृष्टि से समृद्धि की ओर अग्रसर करेंगी।

संवत् २०७५ वि. में शनि की नज़र का फल

संवत् २०७५ वि. में शनि धनु राशि में ही रहेगा। अतः शनि की दृष्टि पश्चिम की तरफ ही रहेगी। पश्चिमी प्रान्तों एवं पश्चिमी देशों में कहीं भयंकर भूकम्प, समुद्री-तूफान (सुनामी) एवं कहीं अफगानिस्तान, बलूचिस्तान, पाक एवं अन्य मुस्लिम देशों व शासकों के लिए शासनतन्त्र के विरुद्ध सत्तापरिवर्तनार्थ आन्दोलन, ज्वालामुखी-विस्फोट, हवाई हादसे किंवा उग्रवाद से भारी जनधनहानि के योग नज़र आते हैं। **भारत भी इस वर्ष शनि की दृष्टि से अप्रभावित नहीं रह सकेगा।** कुम्भ, तुला, वृश्चिक, धनु, वृष एवं मिथुन राशि के नेताओं के लिए यह वर्ष विशेष उलझनें लेकर उपस्थित हो रहा है। **संवत् २०७५ वि. में २५ जनवरी, २०१८ ई. को शनि के धनु राशि में प्रविष्ट हो जाने से यह समय वृश्चिक, धनु, तुला एवं कुम्भ राशि वाले राजनीतिज्ञों के लिए तो विशेषरूप से भयावह है। सुरक्षाव्यवस्था को सुदृढ़ रखना आवश्यक है, दुर्घटना सम्भव है।** कहीं दुर्भिक्ष, कहीं बाढ़ से हानि व कहीं राजनैतिक उलटफेर (सत्तापरिवर्तन) भी हों—

"शनैश्चरः क्रमात्पश्यन् तत्तद्देशान् प्रपीडयेत्।
दुर्भिक्ष-देशभंगाद्यैर्विग्रहो राजविड्वरैः॥"

संवत् २०७५ वि. में विशेष अमायोगः—

(१) सोमवती अमावस्या दो हैं—

(i) वैशाख कृष्ण पक्ष (१६ अप्रैल, सन् २०१८ ई.)

(ii) माघ कृष्ण पक्ष (४ फरवरी, सन् २०१९ ई.)

(२) भौमवती अमावस्या भी दो हैं—

(i) प्र. ज्येष्ठ कृष्णपक्ष (१५ मई, सन् २०१८ ई.)

(ii) आश्विन कृष्णपक्ष (९ अक्टूबर, सन् २०१८ ई.)

(३) शनैश्चरी अमावस्या दो हैं—

(i) श्रावण कृष्ण पक्ष (११ अगस्त, सन् २०१८ ई.)

(ii) पौष कृष्ण पक्ष (५ जन., सन् २०१९ ई.)

नोट—सोमवती अमावस्या के दिन चावल आदि अन्न, घी, दूध का दान दक्षिणासहित करें। इस दिन गंगा आदि पवित्र नदियों में स्नान-दान का विशेष महत्त्व है।

मंगलवारी अमा को गुड़ गायों को खिलायें एवं इस दिन लाल वस्त्र, स्वर्णादि के दान का भी विशेष महत्त्व है।

शनैश्चरी अमा को तुलादान, तेलदान, काले तिल, काला कपड़ा एवं काली दाल दान करें।

ध्यान दें—उल्लिखित अमावस्याओं में दान एवं तीर्थस्थान/पूजन आदि का विशेष महत्त्व है। साथ ही अधिकाधिक पंचांगों का योग्य ब्राह्मणों को तीर्थ पर या अन्यत्र भी दान करना पुण्यप्रद लिखा है। सभी अमावस्याओं पर पूर्वजों को पिण्डदान करने का विधान है।

इस वर्ष की विशेष अमावस्याओं का माहात्म्य

1. इस वर्ष सोमवार को दो अमावस्याएं हैं। '**स्कन्दपुराण**' के अनुसार शिव-मन्दिर में जाकर भगवान् शंकर की पंचोपचारपूजा-पूर्वक सोमेश्वर महादेव का ध्यान करके अनन्तकोटि यज्ञों का फल प्राप्त करें—

> **"अमा सोमेन संयुक्ता कदाचिद्यदि लभ्यते।**
> **तस्यां सोमेश्वरं पूज्य कोटियज्ञ-फलं लभेत॥"**

सोमवती अमावस्या को गंगा आदि नदियों किंवा तीर्थों पर स्नान, जप, होम, ब्रह्म-भोजन, पितृतर्पण से कुटुम्ब में वृद्धि एवं सुख-समृद्धि प्राप्त होती है।

2. इस वर्ष भौमवती अमावस्याएं भी दो हैं। 'मुहूर्त चिन्तामणिकार' ने सोम-मंगलवारी अमाओं को '**पुष्कर योग**' की उपमा दी है। इन दिनों किये गये दान, यज्ञ एवं मन्त्रजाप सूर्यग्रहण में किये गये दान के बराबर महत्त्वपूर्ण लिखे हैं। मंगलवारी अमावस में जपदान आदि का फल सहस्र गोदान के बराबर लिखा है—

> **"अमावस्या भवेद् वारे यदा भूमिसुतस्य वै।**
> **जाह्नवीस्नान-मात्रेण गोसहस्र-फलं लभेत॥"**

– (हेमाद्रौ शातातपः)

> **"सोमवारेण संयुक्ता अमावस्या यदा भवेत्।**
> **तदाऽनन्तफलं श्राद्धं पितृणां दत्तभक्षणम्॥"**

'**शनैश्चरी अमा**' पूर्वजन्म पापनाशार्थ एवं ग्रहरोग-शान्त्यर्थ उपयोगी मानी गयी है।

संवत् २०७५ वि. में शरत् सस्य- जातकविचार

सं. २०७५ वि. में प्रथम ज्येष्ठ कृष्ण पक्ष अमावस, सोमवार, तदनुसार १४/१५ मई, सन् २०१८ ई. को भरणी नक्षत्र, सौभाग्य योग एवं **मेषस्थ चन्द्र के समय सूर्यदेव वृष राशि में** ५ घं. ०३ मि. पर प्रविष्ट होंगे।

ध्यान रहे— गर्मी में बोई जाने वाली तथा सर्दी में तैयार होने पर काटी जाने वाली फसलें चावल, मूंग, ज्वार, बाजरा, कपास, अरहर, तिल, तोड़िया, सूरजमुखी, ग्वार, गन्ना, मक्का आदि **"खरीफ फसलों"** को '**शरत्सस्य**' कहा जाता है।

शरत्सस्यजातक कुण्डली
(१५ मई, सन् २०१८ ई., ५ घं. ३ मि.)

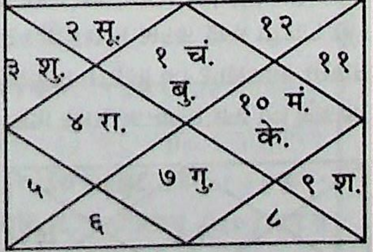

शरत्सस्यकुण्डली में सूर्य से सप्तमेश मंगल (लग्नकालिक केन्द्र में) उच्च का होकर केतु के साथ है एवं सूर्य से तृतीस्थ राहु मंगलदृष्ट है, सूर्य-शनि का षडष्टकयोग भी बन रहा है, अतः **शारद-धान्य महंगे ही रहें। आगे चलकर खड़ी फसलों को हानि पहुंचेगी,** पहले ही स्टॉक करें। मिथुन में सूर्य के आने पर इसका शनि के साथ

समसप्तक एवं मंगल के साथ षडष्टकयोग बनेगा तो महंगाई और जोर पकड़ेगी।

किञ्च—"क्रूरान्तस्थः सूर्यो वृषस्थोऽपि नाशयति सस्यम्।
पापः सप्तमराशौ जातं जातं विनश्यति॥"

अर्थात्—शरत्सस्यजातक कुण्डली में जब मंगल एवं बुध के साथ सूर्य का मेल व दृष्टि होगी एवं सूर्य से सप्तम शनि-मंगल किंवा राहु आदि क्रूर ग्रह भी होंगे तो बाजरा, ज्वार, अरहर, तेल, तिलहन, कपास की उपज औसत से कम होगी। अनेकत्र अवर्षण/अतिवर्षण से खड़ी फसलें भी नष्ट हो जाती हैं। स्टॉकिस्ट लाभ लेते हैं। यह योग इस वर्ष भी घटित होने को है।

संवत् २०७५ वि. में ग्रीष्मसस्य- जातकविचार

ग्रीष्मसस्य जातक कुण्डली
(१६ नवं., २०१८ ई.) १८ घं.३१ मि. (I.S.T.)

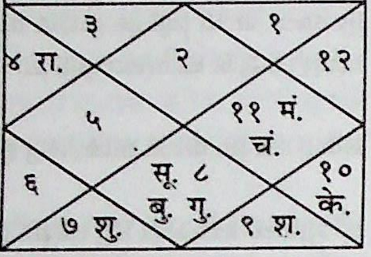

सं. २०७५ वि. में कार्तिक शुक्ल अष्टमी, शुक्रवार (तात्कालिकी नवमी), तदनुसार १६ **नवम्बर, सन् २०१८ ई. को शतभिषक् नक्षत्र, व्याघात योग एवं कुम्भस्थ चन्द्र के समय १८ घं. ३१ मि. (भा. स्टैं. टा.) पर सूर्यदेव वृश्चिक राशि में प्रविष्ट होंगे।**

फल—वृश्चिकस्थ सूर्य गुरु-बुध के साथ है, सूर्य से द्वितीय शनि, बारहवें शुक्र एवं चतुर्थ चन्द्र-मंगल हैं, अतः प्राकृतिक प्रकोप से खड़ी फसलों को हानि होगी, कई जगह फसलों की बुवाई दूसरी बार भी करनी पड़े—

"क्रूरान्तस्थः सूर्यो वृश्चिकसंस्थो विनाशयति सस्यम्।"

किञ्च—"अर्थस्थाने क्रूरः सौम्यैरनीक्षितः प्रथमजातम्।
सस्यं निहन्ति पश्चादुप्तं निष्पादयेद् व्यक्तम्॥"

ये योग गेहूं, जौ, चना आदि की फसल अच्छी होने पर भी खराब होने का संकेत देते हैं, जिससे महंगाई बढ़ेगी।

सूर्य का आर्द्रानक्षत्र में प्रवेश

सूर्य आर्द्रा-प्रवेशकालिक कुण्डली
२२ जून, सन् २०१८ ई.,
११ घं.११ मि. (I.S.T.)

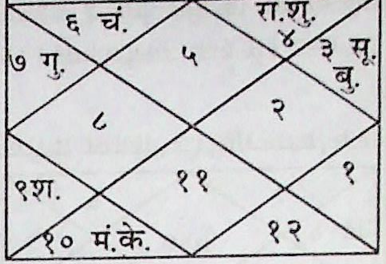

सं. २०७५ वि. में द्वितीय ज्येष्ठ शुक्ल दशमी, शुक्रवार, तदनुसार २२ जून, सन् २०१८ ई. को चित्रा नक्षत्र, परिघ योग एवं कन्यास्थ चन्द्र के समय ११ घं. ११ मि. (भा. स्टैं.टा.) पर सूर्यदेव **आर्द्रा** नक्षत्र में प्रविष्टि होंगे।

सूर्य दिन में लगभग ११ बजकर ११ मि. पर आर्द्रा नक्षत्र में प्रवेश करेगा, अतः इस वर्ष अनेक प्रान्त सूखाग्रस्त रहेंगे–**"दिवार्द्रां याति चेद्भानुर्जलभक्षण-कारकः।"** अनाज, अन्य उपयोगी वस्तुएं महंगी होंगी–**"समस्त धान्यवासांसि महर्घाणि भवन्ति हि।"** फिर भी चित्रा नक्षत्र, कन्यास्थ चन्द्र एवं शुक्रवार को आर्द्रा में सूर्य का प्रवेश जनता को जनजीवनोपयोगी वस्तुओं की उपलब्धता सरकार के सहयोग से कराता रहेगा। वर्षा का अवरोध एवं दुर्भिक्ष से अनेक प्रान्त परेशान रहें। आर्द्रा-प्रवेशकुण्डली में सूर्य, बुध का शनि के साथ समसप्तक एवं मंगल के साथ षडष्टक-योग, सीमाप्रान्तों पर अशान्ति का कारण बने। कुछ राष्ट्रों के साथ विरोध होने से आवश्यक साधनों एवं वस्तुओं की उपलब्धता बाधित हो सकती है। लेकिन शासनतन्त्र की कुशलता जनता को परेशान न होने देगी–**"सर्वलोकाश्च भूपाश्च सन्तुष्टा स्युस्तदा भृशम्।"**

शुभ संवत् २०७५ वि. का शुभारम्भ

शुभ संवत् २०७५ वि. की प्रवेश-
कालीन कुण्डली

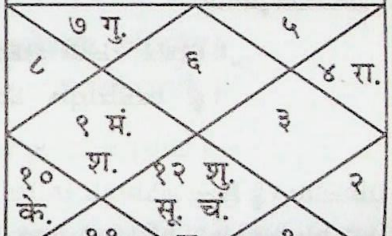

१७ मार्च, सन् २०१८ ई., १८ घं.४१ मि. (I.S.T.)

सं. २०७४ वि. में चैत्र कृष्ण अमावस, शनिवार, तदनुसार १७ मार्च, सन् २०१८ ई. को पू.भा. नक्षत्र, शुभ योग एवं मीनस्थ चन्द्र के समय १८ घं. ४१ मि. (भा. स्टैं. टा.) पर सं. २०७५ वि. का शुभारम्भ कन्या लग्न में होगा।

फल—संवत् २०७५ वि. का शुभारम्भ कन्या लग्न में हो रहा है। लग्नेश बुध की लग्न

पर पूर्ण दृष्टि है। मीन राशि में स्थित सूर्य, शुक्र, चन्द्र भी लग्न को विशेष दृष्टि से देख रहे हैं। शनि व मंगल धनु में बैठकर सूर्य-शुक्र, बुध, दशम भाव एवं लग्न को प्रभावित कर रहे हैं। इस प्रकार शनि-मंगल की स्थिति एवं एक साथ होना सीमाप्रान्तों पर अशान्ति का कारण बनेगा। किसी मुस्लिम देशविशेष के मानचित्र किंवा प्रभुसत्ता में आश्चर्यजनक परिवर्तन सम्भव है। दक्षिणी सीमाप्रान्त, पश्चिमी उत्तरी सीमाएं भी अशान्त रहें। कहीं भयंकर दुर्भिक्ष किंवा जलविवाद, समुद्री-सीमातिक्रमण से युद्धात्मिका स्थिति बने। नववर्षप्रवेश कन्या लग्न में होने से घी, तेल आदि एवं खाद्यान्न महंगे हों। दक्षिण में महामारी, बंगाल में उपद्रव, पश्चिम में युद्ध की स्थिति बने। पूर्वोत्तर में सत्ता-संघर्ष, मध्यप्रदेश, बंगाल, असम, उ.खण्ड, महाराष्ट्र एवं महानगरों में आतंकवाद व प्राकृतिक प्रकोप से भारी जनधनहानि हो।

"मारिर्दक्षिण देशे स्यात्तथा बंगेष्युपद्रवः।
लोके दुःखं विजानीयात् पश्चिमे ननु विग्रहः॥"

अर्थात्—दक्षिण में महामारी, बंगाल में उपद्रव, पश्चिमी(यावन)देशों में युद्धमय वातावरण रहे, अनाज महंगे रहें।

किञ्च—कन्या लग्न में नववर्ष का शुभारम्भ एवं शनि-मंगल का धनु राशि में होना पश्चिम एवं उत्तर-पूर्व में सीमाप्रान्तों पर उग्रवादजन्य उपद्रव एवं रोगभय, प्राकृतिक (भूकम्प, सुनामी आदि) उत्पात से हानिभय भी रहेगा।

वर्षेश(जगत्)लग्न-कुण्डली

जब सूर्य निरयण मेष राशि में प्रवेश करता है, तो तात्कालिक लग्न 'जगत् लग्न' कहलाता है। संवत् २०७५ वि. में वैशाख कृष्ण त्रयोदशी, शनिवार, तदनुसार **१४ अप्रैल, सन् २०१८ ई. को ८ घं. १२ मि. (भा.स्टैं.टा.)** पर उ.भा. नक्षत्र, ऐन्द्र योग एवं मीनस्थ चन्द्र के समय **सूर्यदेव मेष राशि में प्रविष्ट होंगे।**

फल—वृष लग्न में 'जगत् लग्न' का उदय हुआ है। लग्नेश शुक्र उच्चस्थ सूर्य के साथ व्ययस्थान में गुरु से दृष्ट है। लेकिन भारत की प्रभावराशि मकर का मालिक शनि, मंगल के साथ है एवं मकर में केतु है, यह स्थिति भारत को विश्वस्तर पर महिमामण्डित तो कर सकती है, लेकिन पाक, चीन आदि देशों के साथ संघर्ष की स्थिति से सीमाप्रान्त अशान्त रहेंगे। कन्या राशि पर मंगलयुत शनि की विशेष दृष्टि होने से पाक के लिए समय चिन्ताजनक रहे।

जगत् लग्न में धनु राशिस्थ मंगल-शनि का सम्बन्ध होने से मुस्लिम राष्ट्रों में प्राकृतिक आपदा (समुद्री-तूफान, विस्फोट, भूकम्प) किंवा उग्रवादजन्य भारी जनधन-हानि के योग हैं।

वर्षेश(जगत्)लग्न-कुण्डली
१४ अप्रैल, सन् २०१८ ई.
८ घं. १२ मि. (I.S.T.)

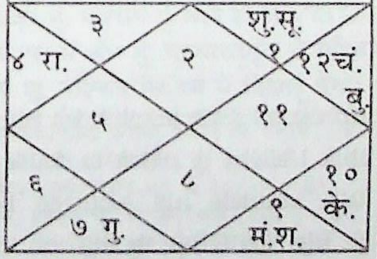

सूर्य-शुक्र का गुरु के साथ समसप्तक-योग देश के लिए शुभ है। लेकिन सीमाप्रान्तों पर चीन आदि से यह अशान्त वातावरण बना सकता है। उच्चस्थ सूर्य व दिन के समय जगत् लग्नप्रवेश होने से विदेशों के साथ सौहार्दपूर्ण वातावरण बनता है—

"निजोच्चे निजवर्गे वा शुभः पापोऽपि वा भवेत्।
बलवान् दोषविच्छेत्ता हरिरेको यथा गजान्॥"

जगत् लग्नानुसार—आषाढ़, भाद्रपद, मार्गशीर्ष, पौष, माघ मास विश्व में विशेष घटनापूर्ण एवं विषम परिस्थितियों को लेकर उपस्थित होंगे।

अपने जन्मलग्न से द्वादश भावों में जगत्लग्न का फल इस प्रकार जानिये—

(१) प्रथम भाव से शरीर सुख, (२) धनागम, (३) कुटुम्बवृद्धि (पारिवारिक सुख), (४) मित्र व बन्धुसुख, (५) सन्ततिसुख, (६) शत्रु की पराजय, (७) स्त्री-सुख, (८) रोगभय, मृत्युभय, (९) धर्म-कर्म में प्रवृत्ति किंवा धनलाभ, (१०) धन व सम्मानप्राप्ति, (११) लाभ किंवा अन्य सुख-साधनप्राप्ति तथा (१२) बारहवें भाव से कष्ट व आर्थिक संकट का ज्ञान प्राप्त करें—

"जन्मोदये देहसुखं धनेऽर्थलाभस्तृतीये च कुटुम्बवृद्धिः।
तुर्ये सुहृत्सौख्यमथात्मजाप्तिं पुत्रे रिपौ शत्रु-पराजयःस्यात्॥
स्त्री-सौख्याप्तिर्भवति मदने मृत्युरुग्भीश्च रन्ध्रे।
धर्मार्थाप्तिस्तपसि दशमे वित्तसौख्यं पदाप्तिः॥

लाभे लाभः सुख-धनचयो दुःख-दारिद्र्यमन्त्ये।
पुंसोर्मेषे प्रविशति रवौ जन्मलग्नाद् विलग्ने॥"

यदि 'जगत् लग्न' अपने 'जन्मलग्न' से ६, ८ या १२वें भावों में यत्किञ्चित् भी पापी ग्रह के प्रभाव में हो तो वह वर्ष कष्टप्रद किंवा अशुभ रहेगा, ऐसा जानें।

जगत्लग्न से व्यक्तिगत फलविचार

जन्मकुण्डली में लग्न बलवान् हो तो जन्मराशि से जगत्लग्न जिस राशि पर आये, वह भाग शुभग्रह या भावेश से दृष्ट या युक्त हो तो उस वर्ष में उस भाव की वृद्धि कहनी चाहिए। यदि पापग्रह की दृष्टि या योग हो तो उस भाव की हानि कहें। जन्मलग्न, ज़न्मराशि एवं अपने वर्षलग्न से वर्षेश(जगत्)लग्न आठवें या बारहवें हो तो वह वर्ष उस व्यक्ति के लिए शुभ नहीं होगा।

इसी प्रकार देश एवं ग्राम के शुभाशुभ विचार के लिए भी समझना चाहिए।

गुर्रा-फल (सन् २०१७-१८ ई.)

इस्लामी मतानुसार एक (यकम) मुहर्रम से ही नया हिजरी सन् प्रारम्भ होता है। उस दिन जो वार होता है, वही इस्लामी मतानुसार (उसी वार से सम्बन्धित ग्रह ही) साल का राजा होता है, जो "गुर्रा" नाम से जाना जाता है।

वि.सं. २०७४ में आश्विन शुक्ल द्वितीया, तदनुसार २३ सितम्बर, सन् २०१७ **ई. को 'यकम-मुहर्रम' शुक्रवार को है। अतः नये मुस्लिम हिजरी सन् १४३९ का आगाज शुक्रवार को होने से इस मुस्लिम साल (हिजरी सन् १४३९) का बादशाह शुक्र ही होगा।**

शुक्रवारी गुर्रा का फल—अफ्रीका, सीरिया, इराक, ईरान, उत्तरी कोरिया, पाक के बलूचिस्तानक्षेत्र एवं कश्मीर आदि में स्थिति गम्भीर होगी। कहीं भयानक रोग, कहीं युद्धमय वातावरण, आन्तरिक क्रान्ति, सत्तापरिवर्तन, प्राकृतिक आपदा से जनधनहानि भी सम्भव है।

वि. सं. २०७५ में भाद्रपद शुक्ल तृतीया, तदनुसार १२ सितम्बर, सन् २०१८ ई. को 'यकम-मुहर्रम' के दिन मुस्लिम हिजरी सन् १४४० का आगाज होगा। अतः इस हिजरी सन् (१४४०) का बादशाह बुध ग्रह ही होगा।

बुधवारी गुर्रा का फल—महंगाई उत्तरोत्तर असह्य हो जायेगी। गुड़, खाण्ड, घी आदि में विशेष तेजी रहे। साम्प्रदायिक सौहार्द बिगड़ेगा। जनता उपद्रवों के कारण स्थानान्तरण के लिए विवश हो। रोगों एवं आकाल आदि प्राकृतिक प्रकोपों से जनजीवन त्रस्त रहे।

लाभ-व्यय चक्र (विंशोत्तरी-मतानुसार)

(संवत्सर २०७५ वि. का राजा सूर्य है)

राशि	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन
लाभ	१४	८	१४	८	११	१४	८	१४	११	५	५	११
व्यय	११	५	२	१४	११	२	५	११	२	५	५	२

लाभ-व्यय देखने की विधि—अपनी राशि के लाभ-व्यय-अंकों को जोड़कर उसमें से १ घटाकर शेष को ८ से भाग देने पर यदि १ बचे तो आमदन, २ बचे तो सुख-लाभ, ३ बचने पर क्लेश, ४ शेष रहने पर बीमारी से परेशानी, ५ शेष आने पर अपयश, ६ शेष बचने पर इज्जत, ७ शेष आने पर सफलता और ० (शून्य) शेष रहने पर हानि होगी—ऐसा जानें।

"इतीदं वत्सरफलं वत्सरादि तिथौ शुभम्।
यः श्रृणोति नरो भक्त्या स सुखी वत्सरं भवेत्॥"

विशेष—चैत्र शुक्ल प्रतिपदा से दस दिन तक नीम के कोमल पत्ते, नीम की मंजरी या निमौली का चूर्ण, सेंधा नमक, इमली, कालीमिर्च, हींग, अजवायन, जीरा, तुलसीदल—ये सब कूट-पीसकर इच्छानुसार खाण्ड या शक्कर में मिलाकर शर्बत बनाकर प्रातः सेवन करने से रक्तविकार, वात-पित्त एवं कफजन्य कष्टों एवं कुष्ठरोग से मुक्ति मिलती है।

— — —

श्री वि.सं. २०७५, शाक १९४०, चैत्र शुक्ल पक्ष १

दिनमान		तिथि	वार	समाप्ति-काल		नक्षत्र	समाप्ति-काल		योग	समाप्ति-काल		करण	समाप्ति-काल		तारीखें प्र.	अं.	श.	मु.	चन्द्रराशि-प्रवेशकाल			चण्डीगढ़ (भा.स्टैं.टा.) सूर्योदय		सूर्यास्त		स्पष्ट सूर्य प्रातः ५घं. ३० मि. (भा.स्टैं.टा.)				(१८ से ३१ मार्च, सन् २०१८ ई.) उत्तरायण, दक्षिण-उत्तरगोल, वसन्त ऋतु।
घ.	प.			घ.	प.		घ.	प.		घ.	प.		घ.	प.	चैत्र	मार्च	फाल्गुन	ज.उ.स.		घ.	प.	घं.	मि.	घं.	मि.	रा.	अं.	क.	वि.	२४ मार्च को बु. पश्चिम में अस्त हो जायेगा। प्रातः श. मं. पूर्व कपाल में और गु. याम्योत्तरवृत्त से पश्चिम में होगा। सायं शु. पश्चिम क्षितिज में दिखाई देगा।
२९	४८	१	र.	२९	५६	उ.भा.	३४	१	शु.	३१	५३	किं.	०	६	५	१८	२७	२९	मीन			६	३३	१८	२८	११	३	१३	४६	सूर्य उ.भा. में ३/३७, चान्द्र संवत्सर २०७५ वि. प्रारम्भ, (A)
२९	५३	२	चं.	२८	२३	रेव.	३४	१	ब्र.	२७	४७	कौ.	२८	२३	६	१९	२८	३०	मेष	३४	१	६	३२	१८	२९	११	४	१३	२८	पंचक समाप्त ३४/०१, चन्द्रदर्शन, मु. ३०,
२९	५८	३	मं.	२५	४१	अश्वि.	३३	३	ऐं.	२२	५४	ग.	२५	४१	७	२०	२९	र.१	मेष			६	३१	१८	३०	११	५	१३	९	भ. ५४/०८ बाद, सूर्य सायन मेष में ३८/०७, (B)
३०	३	४	बु.	२२	२७	भर.	३१	११	वै.	१७	२२	वि.	२२	२७	८	२१	३०	२	वृष	४५	४६	६	२९	१८	३०	११	६	१२	४७	भ. २२/२७ तक, हयव्रत, श्री(लक्ष्मी)पंचमी (देखें पृ. 13)
३०	७	५	गु.	१८	२८	कृत्ति.	२९	१	वि.	११	२०	बा.	१८	२८	९	२२	चै.१	३	वृष			६	२८	१८	३१	११	७	१२	२३	बुध वक्री ५८/२०, नागपंचमी, स्कन्द षष्ठी (देखें पृ. 13), (C)
३०	१२	६	शु.	१४	०	रोहि.	२६	१५	प्री. आ.	४ ५८	५४ ८	तै.	१४	०	१०	२३	२	४	मिथुन	५४	४३	६	२७	१८	३२	११	८	११	५६	विरोधकृत् संवत्सर
३०	१७	७	श.	९	११	मृग.	२३	१०	सौ.	५१	१०	व.	९	११	११	२४	३	५	मिथुन			६	२६	१८	३२	११	९	११	२८	भ. ९/११ से ३६/३८ तक, बुध पश्चिम में अस्त १८ घं. (D)
३०	२१	८	र.	४	५	आर्द्रा	१९	४९	शो.	४४	३	ब.	४	०५	१२	२५	४	६	मिथुन			६	२४	१८	३३	११	१०	१०	५७	श्रीरामनवमी (पुनर्वसु नक्षत्र १४ घं.२० मि. बाद), नवरात्र समाप्त,
अवम		९	र.	५८	४४	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	नवमी तिथिक्षय,
३०	२६	१०	चं.	५३	२०	पुन.	१६	११	अ.	३६	४१	तै.	२६	०२	१३	२६	५	७	कर्क	२	१०	६	२३	१८	३४	११	११	१०	२३	शुक्र अश्वि. मेष में २३/२७, नवरात्र-पारणा,
३०	३१	११	मं.	४७	५५	पुष्य	१२	४३	सु.	२१	३३	व.	२०	३७	१४	२७	६	८	कर्क			६	२२	१८	३४	११	१२	९	४८	भ. २०/३७ से ४७/५५तक, दोलोत्सव, कामदा एकादशी व्रत (स.),
३०	३५	१२	बु.	४२	३७	आश्ले.	९	१०	धृ.	२२	२१	ब.	१५	१६	१५	२८	७	९	सिंह	९	१०	६	२१	१८	३५	११	१३	९	१०	श्रीविष्णुदमनोत्सव,
३०	४०	१३	गु.	३७	३८	मघा	५	४८	शू.	१५	२०	कौ.	१०	०७	१६	२९	८	१०	सिंह			६	१९	१८	३५	११	१४	८	३०	अनंग त्रयोदशी, प्रदोषव्रत, श्रीमहावीर जयन्ती (जैन),
३०	४५	१४	शु.	३३	१२	पू.फा.	२	४८	गं.	८	४१	ग.	५	२५	१७	३०	९	११	कन्या	१७	१०	६	१८	१८	३६	११	१५	७	४८	भ. ३३/१२ बाद, मंगल पू.षा. में ५२/२७, श्री शिवदमनोत्सव, (E)
३०	४९	१५	श.	२९	३४	उ.फा. हस्त	० ५९	२९ ७	वृ. ध्रु.	२ ५७	३३ १४	वि.	१	२३	१८	३१	१०	१२	कन्या			६	१७	१८	३७	११	१६	७	३	भ. १/२३ तक, सूर्य रेवती में ३१/२५, यूरेनस अश्वि. २ में (F)

(A) वासन्त (चैत्र) नवरात्र प्रारम्भ, वर्षफलश्रवण, तैलाभ्यंग, ध्वजारोहण, निम्बपत्र-प्राशन, गुड़ी पड़वा, चन्द्रव्रत, (B) उत्तर गोल प्रारम्भ, महाविषुव दिन, गौरी तृतीया (गणगौर), आन्दोलन तृतीया, श्री मत्स्य जयन्ती, रजब मु. प्रारम्भ, (C) शक चैत्र (संवत्सर १९४०) प्रारम्भ, (D) ३२ मि., श्री दुर्गाष्टमी (देखें पृ 13), अशोकाष्टमी, (E) श्री सत्यनारायण व्रत (देखें पृ. 13),(F) ९/१७, चैत्री पूर्णिमा, वैशाखस्नान प्रारम्भ, श्री हनुमान् जयन्ती (द.भा.),

ग्रह स्पष्ट, प्रातः ५ घं.३० मि. (I.S.T.), २५ मार्च,

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
११	२	८	११	६	११	८	३	९
१०	१४	१०	२२	२८	२८	१४	१८	१८
१०	४७	२	३२	४३	१४	३३	२३	२३
५७	२६	२६	४३	२५	८	५९	४८	४८
५९	८४९	३३	१८	३	७४	२	३	३
२७	४०	४२	३९	१	९	१७	११	११
		मा.	व.	व.	मा.	मा.	व.	व.
		उ.	अ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
३	३	४	२	३	४	१	१	३
उ.भा.	आर्द्रा	मूल	रेव.	विशा.	रेव.	पू.षा.	आश्ले.	श्रवण

कुण्डली सूर्योदय (२५ मार्च)

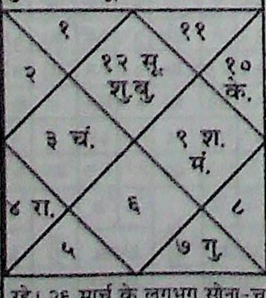

लोकभविष्य—इस चान्द्रमास में पांच शुक्र एवं पांच शनिवार हैं। शुक्र दुर्गेश है, सुरक्षाव्यवस्था सुदृढ़ होगी, शत्रु देश की गतिविधि से सचेष्ट रहना होगा। शनि को इस संवत् का मन्त्रिपद प्राप्त है, अतः आन्तरिक, राजनैतिक किंवा साम्प्रदायिक मतभेद शासकों को भारी परेशानी में डाल देंगे एवं कुछ प्रान्तों एवं देश-विशेष में युद्धमय वातावरण बने और अनेकत्र भूकम्प, अग्निकाण्ड आदि प्राकृतिक प्रकोप एवं रोगविशेष से हानि भी होगी। इस संवत् की ग्रहपरिषद् की दृष्टि से "राजा-रवि, मन्त्री शनि, पितापुत्र-संयोग। युद्ध-उपद्रव-अग्निभय जग में बढ़ेंगे रोग॥"

ग्रहचाल और बाज़ार का रुख—पक्षारम्भ में सूत, सोना, रुई, घी, गुड़, खाण्ड, शक्कर, तिलहन, जौ, चना तेज रहें। लगभग २२ से ३० मार्च तक हरेक व्यापारिक चीजों में उठा-पटक के बाद तेजी रहे। २६ मार्च के लगभग सोना-चांदी में जोरदार तेजी का झटका आयेगा।

आकाश-लक्षण—मार्च २२, २३, २४, २६, २७ एवं ३० मार्च को आसाम, महाराष्ट्र, पं. राजस्थान एवं कश्मीर में वायुवेग रहे एवं कहीं खण्ड-वृष्टि भी हो। उ.भारत में तापमान बढ़ने लगे।

कुण्डली सूर्योदय (३१ मार्च)

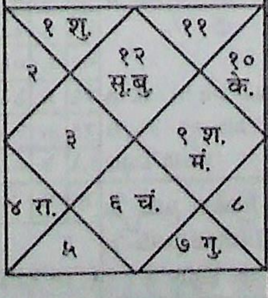

ग्रह स्पष्ट, प्रातः ५ घं.३० मि. (I.S.T.), ३१ मार्च,

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
११	५	८	११	६	०	८	३	९
१६	९	१३	११	२८	५	१४	१८	१८
७	२५	२३	१४	२२	३८	४६	४	४
३	३०	३	११	४२	२७	११	४४	४४
५९	८११	३३	४७	४	७३	१	३	३
१४	४७	४	३०	२	५६	४३	११	११
		मा.	व.	व.	मा.	मा.	व.	व.
		उ.	अ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
४	४	१	१	३	२	१	१	३
उ.भा.	उ.फा.	पू.षा.	रेव.	विशा.	अश्वि.	पू.षा.	आश्ले.	श्रवण

श्री वि.सं. २०७५, शाक १९४०, वैशाख कृष्ण पक्ष २

(१ से १६ अप्रैल, सन् २०१८ ई.)
उत्तरायण, उत्तरगोल, वसन्त ऋतु।

९ अप्रैल को बु. पूर्व में उदित होगा। इस समय श. मं. याम्योत्तरवृत्तासन्न और गु. पश्चिम कपाल में होगा। शु. सायं पश्चिम क्षितिज में होगा।

दिनमान		तिथि	वार	समाप्ति-काल		नक्षत्र	समाप्ति-काल		योग	समाप्ति-काल		करण	समाप्ति-काल		तारीखें प्र.	अं.	श.	मु.	चन्द्रराशि-प्रवेशकाल			चण्डीगढ़ (भा.स्टैं.टा.) सूर्योदय		सूर्यास्त		स्पष्ट सूर्य प्रातः ५घं. ३० मि. (भा.स्टैं.टा.)				
घ.	प.			घ.	प.		घ.	प.		घ.	प.		घ.	प.	चैत्र	अप्रैल	चैत्र	रजब		घ.	प.	घं.	मि.	घं.	मि.	रा.	अं.	क.	वि.	
३०	५४	१	र.	२७	१	चित्रा	५८	५९	व्या.	५२	५४	कौ.	२७	१	१९	१	११	१३	तुला	२८	५४	६	१६	१८	३७	११	१७	६	१७	अप्रैल प्रारम्भ,
३०	५८	२	चं.	२५	५१	स्वा.	६०	०	ह.	४९	४४	ग.	२५	५१	२०	२	१२	१४	तुला			६	१५	१८	३८	११	१८	५	२८	भ. ५६/०३ बाद,
३१	३	३	मं.	२६	१५	स्वा.	०	१७	व.	४७	५१	वि.	२६	१५	२१	३	१३	१५	वृश्चिक	४७	२१	६	१३	१८	३९	११	१९	४	३८	भ. २६/१५ तक, वक्री बुध उ.भा. में ७/५८, श्री गणेशचतुर्थी व्रत,
३१	८	४	बु.	२८	२१	विशा.	३	१६	सि.	४७	१६	बा.	२८	२१	२२	४	१४	१६	वृश्चिक			६	१२	१८	३९	११	२०	३	४५	
३१	१२	५	गु.	३२	५	अनु.	७	४९	व्य.	४७	५६	कौ.	०	१३	२३	५	१५	१७	वृश्चिक			६	११	१८	४०	११	२१	२	५१	
३१	१७	६	शु.	३७	१४	ज्येष्ठा	१३	५२	व.	४९	३६	ग.	४	३९	२४	६	१६	१८	धनु	१३	५२	६	१०	१८	४०	११	२२	१	५५	भ. ३७/१४ बाद, शुक्र भरणी में १३/२२,
३१	२१	७	श.	४३	२३	मूल	२०	५९	प.	५१	५६	वि.	१०	१८	२५	७	१७	१९	धनु			६	९	१८	४१	११	२३	०	५७	भ. १०/१८ तक,
३१	२६	८	र.	४९	५४	पू.षा.	२८	४२	शि.	५४	३०	बा.	१६	३९	२६	८	१८	२०	मकर	४५	३९	६	७	१८	४२	११	२३	५९	५७	
३१	३०	९	चं.	५६	९	उ.षा.	३६	२१	सि.	५६	५०	तै.	२३	०२	२७	९	१९	२१	मकर			६	६	१८	४२	११	२४	५८	५६	बुध पूर्व में उदित ६ घं. ६ मि.,
३१	३५	१०	मं.	६०	०	श्रव.	४३	१८	सा.	५८	२८	ब.	२८	४८	२८	१०	२०	२२	मकर			६	५	१८	४३	११	२५	५७	५३	भ. २८/४८ बाद,
३१	३९	१०	बु.	१	२८	धनि.	४९	१	शु.	५९	२	वि.	१	२८	२९	११	२१	२३	कुम्भ	१६	२३	६	४	१८	४४	११	२६	५६	४८	भ. १/२८ तक, पंचक प्रारम्भ १६/२३,
३१	४४	११	गु.	५	२५	शत.	५३	७	शु.	५८	११	बा.	५	२५	३०	१२	२२	२४	कुम्भ			६	३	१८	४४	११	२७	५५	४१	वरूथिनी एकादशी व्रत (स.), श्री वल्लभाचार्य जयन्ती,
३१	४८	१२	शु.	७	३६	पू.भा.	५५	२९	ब्र.	५६	११	तै.	७	३६	३१	१३	२३	२५	मीन	४०	४	६	१	१८	४५	११	२८	५४	३३	प्रदोष व्रत,
३१	५३	१३	श.	७	५८	उ.भा.	५६	७	ऐं.	५२	४०	व.	७	५८	वै.१	१४	२४	२६	मीन			६	०	१८	४५	११	२९	५३	२३	भ. ७/५८ से ३७/१७ तक, सं. सूर्य अश्वि. मेष में ५/३०,(A)
३१	५७	१४	र.	६	३६	रेव.	५५	१३	वै.	४७	५३	श.	६	३६	२	१५	२५	२७	मेष	५५	१३	५	५९	१८	४६	०	०	५२	११	पंचक समाप्त ५५/१३, बुध मार्गी २२/०७,
३२	२	३०	चं.	३	३९	अश्वि.	५३	४	वि.	४२	४	ना.	३	३९	३	१६	२६	२८	मेष			५	५८	१८	४७	०	१	५०	५७	सोमवती अमा,

(A) मु. ४५, पुण्यकाल १४ घं. १२ मि. तक, वैशाखी (पं.),

ग्रह स्पष्ट, प्रातः ५ घं.३० मि. (I.S.T.),
८ अप्रैल,

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
११	८	८	११	६	०	८	३	९
२३	२०	१७	१३	२७	१५	१४	१७	१७
५९	४२	४४	२	४५	२८	५७	३९	३९
५७	४०	२०	३८	५७	५४	२४	१८	१८
५८	७०८	३२	३५	५	७३	०	३	३
५९	४६	६	११	१७	३८	५७	११	११
		मा.	व.	व.	मा.	मा.	व.	व.
		उ.	अ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
रेव. ३	पू.षा. ३	पू.षा. २	उ.भा. ३	विशा. ३	भर. १	पू.षा. १	आश्ले. १	श्रवण ३

कुण्डली सूर्योदय (८ अप्रै.)

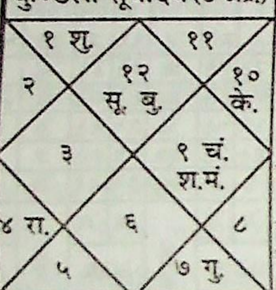

लोकभविष्य—मेष संक्रान्ति का उदय सूर्योदय के लगभग होने से देश-विशेष में प्राकृतिक आपदाओं व रोगों से जन-जीवन अस्त-व्यस्त रहे—"**सूर्योदये विशति चेज्जगतो विपत्यै: ।**" इस चान्द्रमास में पांच इतवार होने से कहीं दुर्भिक्ष की स्थिति बने, कहीं शासनतन्त्र में उलटफेर किंवा उग्रवादजन्य विभीषिका से हानि भी सम्भव है—

"**पंचार्कवारे दुर्भिक्षं छत्रभंगं महद्भयम् ।**"

शनि-मंगल का एक राशिस्थ होना भी सीमाप्रान्तों पर चीन-पाक द्वारा अशान्ति का कारण बनेगा।

ग्रहचाल और बाज़ार का रुख—पक्षारम्भ में लगभग ८ अप्रैल तक सोना, चांदी, रुई के भाव मन्दे रहें। ६ अप्रैल के लगभग चना, मूंग, मोठ, ज्वार, बाजरा आदि अनाज एवं दालवाना में तेजी बनेगी। १४/१५ अप्रैल को सभी तेल, तिलहन, लौंग, इलायची एवं अनाजों में अच्छी तेजी से वायदा व्यापारी लाभ लेंगे। पक्षान्त में रुई, चांदी में उठा-पटक से मन्दी व तिलहन एवं सुगन्धित चीजें मन्दी हों। अनाज तेज रहेंगे।

आकाश-लक्षण—अप्रैल ३, ६, ७, ८, ९ एवं १४ से १६ अप्रैल के लगभग मुम्बई, पश्चिमी राजस्थान एवं हि.प्र. के कुछ भागों में कहीं बादलचाल किंवा खण्डवृष्टि हो। उत्तरी भारत में तापमान बढ़ने लगेगा।

कुण्डली सूर्योदय (१६ अप्रै.)

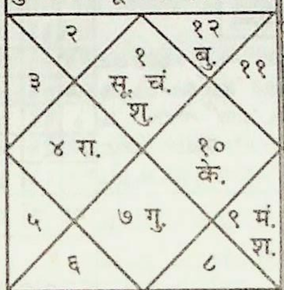

ग्रह स्पष्ट, प्रातः ५ घं.३० मि. (I.S.T.),
१६ अप्रैल,

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
०	०	८	११	६	०	८	३	९
१	०	२१	१०	२६	२५	१५	१७	१७
५०	४८	५६	४१	५९	१७	२	१३	१३
५७	४८	५४	६	५६	५	१२	५२	५२
५८	८३०	३०	५	६	७३	०	३	३
४४	४६	५१	४४	१८	२२	९	११	११
		मा.	मा.	व.	मा.	मा.	व.	व.
		उ.	उ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
अश्वि. १	अश्वि. १	पू.षा. ३	उ.भा. ३	विशा. ३	भर. ४	पू.षा. १	आश्ले. १	श्रवण ३

श्री वि.सं. २०७५, शाक १९४०, वैशाख शुक्ल पक्ष ३

(१७ से ३० अप्रैल, सन् २०१८ ई.)
उत्तरायण, उत्तरगोल, वसन्त-ग्रीष्म ऋतु।

प्रातः बु. पूर्व क्षितिज में, श. मं. याम्योत्तवृत्त में और गु. पश्चिम कपाल में होगा। सायं शु. पश्चिम में होगा।

दिनमान घ.	दिनमान प.	तिथि	वार	समाप्ति-काल घ.	समाप्ति-काल प.	नक्षत्र	समाप्ति-काल घ.	समाप्ति-काल प.	योग	समाप्ति-काल घ.	समाप्ति-काल प.	करण	समाप्ति-काल घ.	समाप्ति-काल प.	तारीखें प्र. वैशाख	तारीखें अं. अप्रैल	तारीखें श. चैत्र	तारीखें मु. रज्जब	चन्द्रराशि-प्रवेशकाल	घ.	प.	चण्डीगढ़ (भा.स्टैं.टा.) सूर्योदय घं.	सूर्योदय मि.	सूर्यास्त घं.	सूर्यास्त मि.	स्पष्ट सूर्य प्रातः ५घं. ३० मि. (भा.स्टैं.टा.) रा.	अं.	क.	वि.	
अवम		१	चं.	५९	३१	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	प्रतिपदा तिथिक्षय,
३२	६	२	मं.	५४	३०	भर.	४९	५८	प्री.	३५	२६	बा.	२७	००	४	१७	२७	२९	मेष			५	५७	१८	४७	०	२	४१	४१	शुक्र कृत्ति. में ६/४२, चन्द्रदर्शन, मु. १५, श्रीशिवाजी जयन्ती,
३२	१०	३	बु.	४८	५४	कृत्ति.	४६	१८	आ.	२८	१५	तै.	२१	४२	५	१८	२८	शा.१	वृष	४	८	५	५६	१८	४८	०	३	४८	२३	शनि वक्री ०/५२, अक्षय तृतीया, श्रीपरशुराम जयन्ती, (A)
३२	१५	४	गु.	४३	२	रोहि.	४२	२०	सौ.	२०	४६	व.	१५	५८	६	१९	२९	२	वृष			५	५५	१८	४९	०	४	४७	२	भ. १५/५८ से ४३/०२ तक, वक्री गुरु विशा. २ में ५/५,(B)
३२	१९	५	शु.	३७	९	मृग.	३८	२१	शो.	१३	११	ब.	१०	०५	७	२०	३०	३	मिथुन	१०	२१	५	५४	१८	४९	०	५	४५	४०	सूर्य सायन वृष में ७/०, ग्रीष्म ऋतु प्रारम्भ, श्रीशंकराचार्य जयन्ती,
३२	२३	६	श.	३१	२७	आर्द्रा	३४	३३	अ. सु.	५ ५८	४१ २२	कौ.	४	१८	८	२१	वै.१	४	मिथुन			५	५३	१८	५०	०	६	४४	१६	श्री रामानुजाचार्य जयन्ती, अगस्त्य अस्त, शक वैशाख प्रारम्भ,
३२	२७	७	र.	२६	३	पुन.	३१	५	धृ.	५१	२२	व.	२६	०३	९	२२	२	५	कर्क	१६	५५	५	५२	१८	५१	०	७	४२	४९	भ. २६/०३ से ५३/३३ तक, प्लूटो वक्री ३७/३०, श्री गंगाजन्म,
३२	३२	८	चं.	२१	३	पुष्य	२८	०	शू.	४४	४४	ब.	२१	०३	१०	२३	३	६	कर्क			५	५१	१८	५१	०	८	४१	२०	
३२	३६	९	मं.	१६	३०	आश्ले.	२५	२२	गं.	३८	२८	कौ.	१६	३०	११	२४	४	७	सिंह	२५	२२	५	५०	१८	५२	०	९	३९	४९	श्रीजानकी जयन्ती,
३२	४०	१०	बु.	१२	२४	मघा	२३	१२	वृ.	३२	३५	ग.	१२	२४	१२	२५	५	८	सिंह			५	४९	१८	५३	०	१०	३८	१६	भ. ४०/३७ बाद, मंगल उ.षा. में २३/५५,
३२	४४	११	गु.	८	५०	पू.फा.	२१	३४	ध्रु.	२७	९	वि.	८	५०	१३	२६	६	९	कन्या	३६	१४	५	४८	१८	५३	०	११	३६	४१	भ. ८/५० तक, राहु पुष्य ४, केतु श्रव. २ में ३८/३०, (C)
३२	४८	१२	शु.	५	५२	उ.फा.	२०	३३	व्या.	२२	१४	बा.	५	५२	१४	२७	७	१०	कन्या			५	४७	१८	५४	०	१२	३५	३	सूर्य भरणी में ४५/३०, बुध रेवती में ५४/२०, प्रदोषव्रत,
३२	५२	१३	श.	३	३३	हस्त	२०	१६	ह.	१७	५५	तै.	३	३३	१५	२८	८	११	तुला	५०	२६	५	४६	१८	५५	०	१३	३३	२४	शुक्र रोहि. में ३/५०, श्रीनृसिंह जयन्ती,
३२	५६	१४	र.	२	९	चित्रा	२०	५४	व.	१४	११	व.	२	९	१६	२९	९	१२	तुला			५	४५	१८	५५	०	१४	३१	४३	भ. २/०९ से ३१/५८ तक, श्रीकूर्म जयन्ती, श्रीसत्यनारायण व्रत,
३३	०	१५	चं.	१	४८	स्वाती	२२	३६	सि.	११	३५	ब.	१	४८	१७	३०	१०	१३	तुला			५	४४	१८	५६	०	१५	३०	०	बुद्ध पूर्णिमा, श्रीबुद्ध जयन्ती, वैशाखस्नान समाप्त,

(A) शावान मु. प्रारम्भ, (B) शुक्र वृष में ५०/३२, (C) मोहिनी एकादशी व्रत (स.),

ग्रह स्पष्ट, प्रातः ५ घं.३० मि. (I.S.T.), २३ अप्रैल,

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
०	३	८	११	६	१	८	३	९
८	९	२५	१३	२६	३	१५	१६	१६
४१	५४	२९	१	१३	४१	१	५१	५१
२०	४९	४	३	३४	४३	१२	३७	३७
५८	८४०	२९	३७	६	७३	०	३	३
२९	३५	३३	२१	५९	४	३२	११	११
		मा.	मा.	व.	मा.	व.	व.	व.
		उ.	उ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
अश्वि. ३	पुष्य २	पू.षा. ४	उ.भा. ३	विशा. २	कृत्ति. ३	पू.षा. १	आश्ले. १	श्रवण ३

कुण्डली सूर्योदय (२३ अप्रै.)

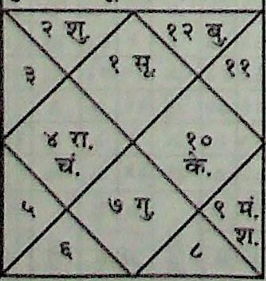

लोकभविष्य—इस पक्ष में गुरु एवं शनि वक्रगति से चल रहे हैं। शनि-मंगल का शुक्र के साथ षडष्टक एवं शुक्र का गुरु के साथ षडष्टक कहीं अकाल, कहीं भयंकर प्राकृतिक प्रकोप, यान-दुर्घटना किंवा अनैतिक घटनाओं का कारण बनेगा। महंगाई उत्तरोतर बढ़ेगी, जिससे केन्द्रीय शासनसत्ता से जनता का भरोसा क्षीण होगा।

ग्रहचाल और बाज़ार का रुख—पक्षारम्भ में तिलहन, रुई, सूत, चांदी, सोना आदि में मन्दे का रूख रहे। वायदा बाजार तेज रहेंगे। १७/१८ अप्रैल को सोना, चांदी के बाजार मन्दे रहें।

आगे २० से २७ अप्रैल तक सभी बाजार, घी, शक्कर, तेल, तिलहन, अनाज, सूत, सण, रुई, दालवाना आदि में अच्छी तेजी से लाभ मिले। पक्षान्त में मन्दी बने।

कुण्डली सूर्योदय (३० अप्रै)

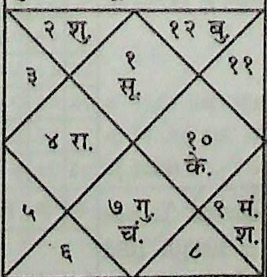

ग्रह स्पष्ट, प्रातः ५ घं.३० मि. (I.S.T.), ३० अप्रैल,

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
०	६	८	११	६	१	८	३	९
१५	१५	२८	१८	२५	१२	१४	१६	१६
२९	१	५१	३६	२३	२०	५५	२९	२७
५९	७	३८	५४	९	९	२८	२२	२२
५८	७६१	२८	६०	७	७२	१	३	३
१५	१३	५	४८	२६	४४	१२	११	११
		मा.	मा.	व.	मा.	व.	व.	व.
		उ.	उ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
भरणी १	स्वा. ३	उ.षा. १	रेवती १	विशा. २	रोहि. १	पू.षा. १	पुष्य ४	श्रवण २

आकाश-लक्षण—अप्रैल १९, २०, २४ से २८ के लगभग आसाम, राजस्थान, उड़ीसा, उ.प्र. के कुछ भाग, मुम्बई एवं हि.प्र. के कुछ भागों में कहीं मेघगर्जना किंवा खण्डवृष्टि हो।

नोट—धनु राशि में शनि वक्री होने से "गर्जितोऽपि न वर्षति"—प्रमाणानुसार आगे कुछ प्रान्त अकालग्रस्त रहेंगे।

श्री वि.सं. २०७५, शाक १९४०, प्र.ज्येष्ठ कृष्ण पक्ष ४															तारीखें				चन्द्रराशि-प्रवेशकाल			चण्डीगढ़ (भा.स्टैं.टा.)				स्पष्ट सूर्य प्रातः ५घं. ३० मि. (भा.स्टैं.टा.)				(१ से १५ मई, सन् २०१८ ई.) उत्तरायण, उत्तरगोल, ग्रीष्म ऋतु। प्रातः बु. पूर्व क्षितिज में, मं. याम्योत्तरवृत्त में, श. इससे पश्चिम में और गु. पश्चिम क्षितिज में होगा। सायं शु. को पश्चिम में देखें।
दिनमान		तिथि	वार	समाप्ति-काल		नक्षत्र	समाप्ति-काल		योग	समाप्ति-काल		करण	समाप्ति-काल		प्र. वैशाख	अं. मई	श. वैशाख	मु. शाबान				सूर्योदय		सूर्यास्त						
घ.	प.			घ.	प.		घ.	प.		घ.	प.		घ.	प.						घ.	प.	घं.	मि.	घं.	मि.	रा.	अं.	क.	वि.	
३३	४	१	मं.	२	३९	विशा.	२५	३२	व्य.	९	४९	कौ.	२	३९	१८	१	११	१४	वृश्चिक	९	४१	५	४३	१८	५७	०	१६	२८	१५	मई प्रारम्भ,
३३	८	२	बु.	४	५४	अनु.	२९	४९	व.	९	८	ग.	४	५४	१९	२	१२	१५	वृश्चिक			५	४२	१८	५७	०	१७	२६	२८	भ. ३६/४२ बाद, मंगल मकर में २६/३०,
३३	१२	३	गु.	८	३०	ज्येष्ठा	३५	२६	प.	९	३१	वि.	८	३०	२०	३	१३	१६	धनु	३५	२६	५	४१	१८	५८	०	१८	२४	४०	भ. ८/३० तक, श्रीगणेशचतुर्थी व्रत,
३३	१६	४	शु.	१३	२३	मूल	४२	१०	शि.	१०	५३	बा.	१३	२३	२१	४	१४	१७	धनु			५	४०	१८	५९	०	१९	२२	४९	
३३	२०	५	श.	१९	१६	पू.षा.	४९	४३	सि.	१३	१	तै.	१९	१६	२२	५	१५	१८	धनु			५	३९	१८	५९	०	२०	२०	५८	
३३	२३	६	र.	२५	४२	उ.षा.	५७	३१	सा.	१५	३७	व.	२५	४२	२३	६	१६	१९	मकर	६	४१	५	३९	१९	०	०	२१	१९	५	भ. २५/४२ से ५७/५३ तक,
३३	२७	७	चं.	३२	४	श्रव.	६०	०	शु.	१८	१६	ब.	३२	०४	२४	७	१७	२०	मकर			५	३८	१९	०	०	२२	१७	१०	
३३	३१	८	मं.	३७	४५	श्रव.	५	१	शु.	२०	२८	बा.	४	५४	२५	८	१८	२१	कुम्भ	३८	२६	५	३७	१९	१	०	२३	१५	१५	पंचक प्रारम्भ ३८/२६,
३३	३४	९	बु.	४२	६	धनि.	११	३०	ब्र.	२१	४७	तै.	९	५५	२६	९	१९	२२	कुम्भ			५	३६	१९	२	०	२४	१३	१८	बुध अश्वि. मेष में २९/३५, शुक्र मृग. में ५/३०,
३३	३८	१०	गु.	४४	४२	शत.	१६	२९	ऐं.	२१	५२	व.	१३	२४	२७	१०	२०	२३	कुम्भ			५	३५	१९	२	०	२५	११	१९	भ. १३/२४ से ४४/४२ तक,
३३	४१	११	शु.	४५	१७	पू.भा.	१९	३६	वै.	२०	२६	ब.	१४	५९	२८	११	२१	२४	मीन	३	५९	५	३५	१९	३	०	२६	९	१९	सूर्य कृत्ति. में ३१/३२, अपरा एकादशी व्रत (स.), भद्रकाली(A)
३३	४५	१२	श.	४३	५१	उ.भा.	२०	४३	वि.	१७	२३	कौ.	१४	३४	२९	१२	२२	२५	मीन			५	३४	१९	४	०	२७	७	१८	
३३	४८	१३	र.	४०	३१	रेव.	१९	५४	प्री.	१२	४६	ग.	१२	११	३०	१३	२३	२६	मेष	१९	५४	५	३३	१९	४	०	२८	५	१६	भ. ४०/३१ बाद, पंचक समाप्त १९/५४, प्रदोषव्रत,
३३	५१	१४	चं.	३५	३५	अश्वि.	१७	२३	आ. सौ.	६ ५९	४५ ३०	वि.	८	०३	ज्ये.१	१४	२४	२७	मेष			५	३३	१९	५	०	२९	३	१२	भ. ८/०३ तक, सं. सूर्य वृष में ५८/४५, मु. १५, पुण्यकाल (B)
३३	५४	३०	मं.	२१	२४	भर.	१३	३०	शो.	५१	२५	च.	२	२९	२	१५	२५	२८	वृष	२७	११	५	३२	१९	६	१	०	१	७	भावुका अमा, वटसावित्री व्रत (अमापक्ष), भौमवती अमा, (C)

(A) एकादशी (पं.), (B) अगले दिन मधयाह्न तक, शुक्र मिथुन में ३८/०२, (C) शनैश्चर जयन्ती,

ग्रह स्पष्ट, प्रातः ५ घं.३० मि. (I.S.T.), ८ मई,

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
० २३ १५ १४	९ २२ १६ ३९	९ २ २९ १७	११ २७ ५७ ३०	६ २४ २२ ४१	१ २२ ० ४२	८ १४ ४३ १७	३ १६ ३ ५६	९ १६ ३ ५६
५८ ३	७२० ३४	२६ ०	८१ ५	७ ३९	७२ २२	१ ५५	३ ११	३ ११
		मा.	मा.	व.	मा.	व.	व.	व.
		उ.	उ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
भरणी ३	श्रवण ४	उ.षा. २	रेव. ४	विशा. २	रोहि. ४	पू.षा. १	पुष्य ४	श्रवण २

कुण्डली सूर्योदय (८ मई)

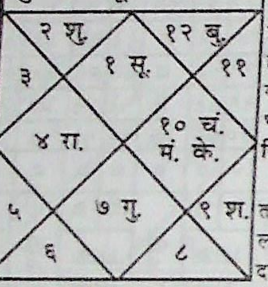

लोकभविष्य—भारत की प्रभावराशि मकर में उच्चस्थ मंगल का राहु के साथ समसप्तक है। भारतीय शासनसत्ता के समक्ष महंगाई, विपक्षी दल द्वारा प्रगति में बाधा, किसी प्रतिष्ठित व्यक्ति का पद रिक्त होना आदि से भयावह स्थिति है। इस पक्ष में मंगलवारी अमावस भी कहीं सीमाप्रान्तों पर अशान्ति, दुर्भिक्ष, प्राकृतिक आपदा से हानि एवं भारी परेशानी का कारण बने, "राज्यभ्रंशो राजयुद्धं क्लेशानां च विवर्धनम्। अपघातोऽल्पवृष्टिश्च क्षयश्चार्थस्य भूमिजे॥"

ग्रहचाल और बाज़ार का रूख—१ से ८ मई तक सोना, चांदी, तांबा, गुड़, चीनी, घी, तिलहन लगभग तेज रहें। ९/१० मई के लगभग सभी वायदा बाजार, गेहूं, चना, ज्वार, जौ, सोना, चांदी, दालवाना, तेल, तिलहन आदि में जोरदार मन्दी के रियेक्शन्ज आने लगे। ११ मई से पक्षान्त तक अनाजों को छोड़कर शेष बाजार तेज रहें।

आकाश-लक्षण—मई १, २, ९ से ११ एवं १४, १५ मई को पूर्वी उड़ीसा, उत्तराखण्ड, उ.प्र. के कुछ भाग, हि.प्र., मुम्बई, भूटान, सिक्किम, असम एवं केरल के कुछ भागों में बादलचाल किंवा कहीं-कहीं वर्षा के योग हैं। १, २, ९, १४ को वायुवेग रहे।

कुण्डली सूर्योदय (१५ मई)

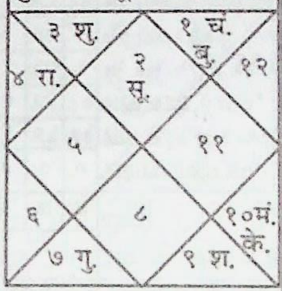

ग्रह स्पष्ट, प्रातः ५ घं.३० मि. (I.S.T.), १५ मई,

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
१ ० १ ६	० २३ २४ ४०	९ ५ २४ ४७	० ८ ११ २४	६ २३ २९ १६	२ ० २६ १४	८ १४ २७ ५९	३ १५ ४१ ४०	९ १५ ४१ ४०
५७ ५३	८६८ २३	२३ ४५	९६ १८	७ ३४	७२ १	२ ३१	३ ११	३ ११
		मा.	मा.	व.	मा.	व.	व.	व.
		उ.	उ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
कृत्ति. २	भरणी ४	उ.षा. ३	अश्वि. ३	विशा. २	मृग. ३	पू.षा. १	पुष्य ४	श्रवण २

श्री वि.सं. २०७५, शाक १९४०, प्र.(अधि.) ज्येष्ठ शुक्ल पक्ष ५

(१६ से २९ मई, सन् २०१८ ई.)
उत्तरायण, उत्तरगोल, ग्रीष्म ऋतु ।

२६ मई को बु. पूर्व में अदृश्य हो जायेगा। प्रातः मं. याम्योत्तरवृत्त से पश्चिम में और श. पश्चिम कपाल में होगा। सायं गु. को पूर्व में और शु. को पश्चिम क्षितिज में देखें।

दिनमान		तिथि	वार	समाप्ति-काल		नक्षत्र	समाप्ति-काल		योग	समाप्ति-काल		करण	समाप्ति-काल		तारीखें प्र.	अं.	श.	मु.	चन्द्रराशि-प्रवेशकाल			चण्डीगढ़ (भा.स्टैं.टा.) सूर्योदय		सूर्यास्त		स्पष्ट सूर्य प्रातः ५घं. ३० मि. (भा.स्टैं.टा.)				
घ.	प.			घ.	प.		घ.	प.		घ.	प.		घ.	प.	ज्येष्ठ	मई	वैशाख	शाबान		घ.	प.	घं.	मि.	घं.	मि.	रा.	अं.	क.	वि.	
३३	५८	१	बु.	२२	२१	कृत्ति.	८	३८	अ.	४२	४५	ब.	२२	२१	३	१६	२६	२९	वृष			५	३१	११	६	१	०	५९	०	चन्द्रदर्शन, मु. ४५, वक्री गुरु विशा. १ में १३/३२, (A)
३४	१	२	गु.	१४	५१	रोहि. मृग.	३ ५७	११ ३६	सु.	३३	५०	कौ.	१४	५१	४	१७	२७	र.१	मिथुन	३०	२२	५	३१	११	७	१	१	५६	५२	रमजान मु. प्रारम्भ,
३४	४	३	शु.	७	१६	आर्द्रा	५२	१२	धृ.	२४	५७	ग.	७	१६	५	१८	२८	२	मिथुन			५	३०	११	८	१	२	५४	४२	भ. ३३/३५ से ५९/५४ तक, बुध भर. में ७/५०,
अवम		४	शु.	५९	५४	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	चतुर्थी तिथिक्षय,
३४	७	५	श.	५३	६	पुन.	४७	१८	शू.	१६	२२	ब.	२६	३०	६	१९	२९	३	कर्क	३३	२८	५	३०	११	८	१	३	५२	३०	
३४	१०	६	र.	४७	२	पुष्य	४३	७	गं.	८	१७	कौ.	२०	०४	७	२०	३०	४	कर्क			५	२९	११	९	१	४	५०	१७	शुक्र आर्द्रा में ११/५५,
३४	१३	७	चं.	४१	५०	आश्ले.	३९	४९	वृ. ध्रु.	० ५४	४९ ८	ग.	१४	२६	८	२१	३१	५	सिंह	३९	४९	५	२९	११	१०	१	५	४८	२	भ. ४१/५० बाद, सूर्य सायन मिथुन में ५/४०,
३४	१५	८	मं.	३७	३७	मघा	३७	२८	व्या.	४८	१४	वि.	९	४३	९	२२	ज्ये.१	६	सिंह			५	२८	११	१०	१	६	४५	४६	भ. ९/४३ तक, शक ज्येष्ठ प्रारम्भ,
३४	१८	९	बु.	३४	२२	पू.फा.	३६	७	ह.	४३	९	बा.	५	५९	१०	२३	२	७	कन्या	५०	५५	५	२८	११	११	१	७	४३	२८	
३४	२१	१०	गु.	३२	७	उ.फा.	३५	४४	व.	३८	५१	तै.	३	१४	११	२४	३	८	कन्या			५	२७	११	११	१	८	४१	८	श्रीगंगा दशहरा (देखें पृ.13),
३४	२३	११	शु.	३०	५१	हस्त	३६	११	सि.	३५	२२	व.	१	२९	१२	२५	४	९	कन्या			५	२७	११	१२	१	९	३८	४७	भ. १/२९ से ३०/५१ तक, सूर्य रोहिणी में २२/१२, (B)
३४	२६	१२	श.	३०	३५	चित्रा	३७	५३	व्य.	३२	३९	ब.	०	४३	१३	२६	५	१०	तुला	६	५९	५	२६	११	१३	१	१०	३६	२४	बुध पूर्व में अस्त ५ घं. २६ मि., शनिप्रदोष व्रत,
३४	२८	१३	र.	३१	११	स्वाती	४०	२७	व.	३०	४५	कौ.	०	५७	१४	२७	६	११	तुला			५	२६	११	१३	१	११	३४	०	मंगल श्रवण में ४८/२२, बुध वृष में ७/२०,
३४	३०	१४	चं.	३३	७	विशा.	४४	३	प.	२९	४०	ग.	२	१३	१५	२८	७	१२	वृश्चिक	२८	४	५	२६	११	१४	१	१२	३१	३५	भ. ३३/०७ बाद,
३४	३३	१५	मं.	३६	०	अनु.	४८	४४	शि.	२९	२७	वि.	४	३३	१६	२९	८	१३	वृश्चिक			५	२५	११	१४	१	१३	२९	९	भ. ४/३३ तक, श्रीसत्यनारायण व्रत,

(A) ज्येष्ठ मल (अधिक) मास प्रारम्भ, (B) बुध कृत्तिका में २६/१०, पुरुषोत्तमा एकादशी व्रत (स.),

ग्रह स्पष्ट, प्रातः ५ घं.३० मि. (I.S.T.), २२ मई,

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
१	४	९	०	६	२	८	३	९
६	४	८	२०	२२	८	१४	१५	१५
४५	४२	३	९	३७	४९	८	११	११
४५	२३	२०	४४	११	१३	४२	२५	२५
५७	८२७	२१	११६	७	७१	३	३	३
४२	३९	७	२	१२	३७	४	११	११
		मा.	मा.	व.	मा.	व.	व.	व.
		उ.	उ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
४	२	४	३	१	१	१	४	२
कृत्ति.	मघा	उ.षा.	भर.	विशा.	आर्द्रा	पू.षा.	पुष्य	श्रवण

कुण्डली सूर्योदय (२२ मई)

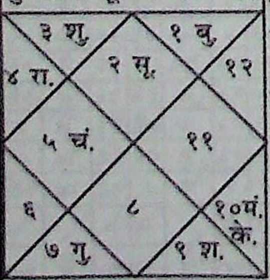

लोकभविष्य—शनि-शुक्र एवं मंगल-राहु का समसप्तक प्रधान नेताओं के सामने देश में घटित दुर्भिक्ष, महंगाई एवं कश्मीर, असम, केरल, म.प्र. आदि में पनप रहा उग्रवाद भारी कठिनाइयां लेकर आयेगा। बुधवारी प्रतिपदा आगे वर्षा के अभाव से दुर्भिक्ष का संकेत देती है—"प्रतिपत्सर्वमासेषु बुधे दुर्भिक्षकारिणी। ज्येष्ठमासे विशेषेण वृष्टिभंगाय जायते ॥"

ग्रहचाल और बाज़ार का रुख—पक्षारम्भ से लगभग १७ मई तक सभी धान्य, मूंग, उड़द, मोठ, तिल, घी आदि तेज रहें। रुई, चांदी, सोना, सूत, सण, गुड़, खाण्ड, शक्कर मन्दे रहें। १८ मई से कुछ बाजार तेज रहें। लेकिन २० से २६ मई के लगभग तक मन्दी के झटके सम्भव हैं। २७ से २९ मई तक बाजारों में जोरदार तेजी बने।

आकाश-लक्षण—मई १६, १८, २०, २१, २५ से २९ तक महाराष्ट्र (मुम्बई), भूटान, उड़ीसा, शिलांग, काठमाण्डु, जम्मू-कश्मीर, उ.प्र. के कुछ भाग, उत्तराखण्ड, बिहार एवं हि.प्र. में वायुवेग के साथ वर्षा के योग हैं। २५ मई के लगभग हवा का जोर रहे।

कुण्डली सूर्योदय (२९ मई)

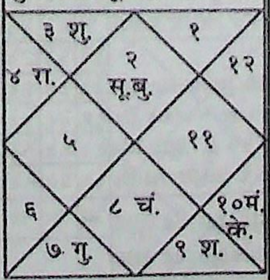

ग्रह स्पष्ट, प्रातः ५ घं.३० मि. (I.S.T.), २९ मई,

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
१	७	९	१	६	२	८	३	९
१३	६	१०	३	२१	१७	१३	१४	१४
२९	४०	२२	४९	४८	९	४५	५७	५७
८	४१	१२	४०	३७	१३	५५	९	९
५७	७३९	१८	१२४	६	७१	३	३	३
३२	४७	४	४४	३६	१०	३१	११	११
		मा.	मा.	व.	मा.	व.	व.	व.
		उ.	अ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
२	२	१	३	१	४	१	४	२
रोहि.	अनु.	श्रवण	कृत्ति.	विशा.	आर्द्रा	पू.षा.	पुष्य	श्रवण

श्री वि.सं. २०७५, शाक १९४०, द्वि.(अधि.) ज्येष्ठ कृष्ण पक्ष ६

(३० मई से १३ जून, सन् २०१८ ई.)
उत्तरायण, उत्तरगोल, ग्रीष्म ऋतु।

बु. अस्त है। प्रातः मं. याम्योत्तरवृत्त से पश्चिम में और श. पश्चिम कपाल में होगा। सायं गु. को पूर्व में और शु. को पश्चिम क्षितिज में देखें।

दिनमान घ.	दिनमान प.	तिथि	वार	समाप्ति-काल घ.	समाप्ति-काल प.	नक्षत्र	समाप्ति-काल घ.	समाप्ति-काल प.	योग	समाप्ति-काल घ.	समाप्ति-काल प.	करण	समाप्ति-काल घ.	समाप्ति-काल प.	तारीखें प्र. ज्येष्ठ	तारीखें अं. मई	तारीखें श. ज्येष्ठ	तारीखें मु. रमजान	चन्द्रराशि-प्रवेशकाल	घ.	प.	चण्डीगढ़ (भा.स्टैं.टा.) सूर्योदय घं.	सूर्योदय मि.	सूर्यास्त घं.	सूर्यास्त मि.	स्पष्ट सूर्य प्रातः ५घं. ३० मि. (भा.स्टैं.टा.) रा.	अं.	क.	वि.	
३४	३५	१	बु.	३९	५८	ज्ये.	५४	२७	सि.	३०	४	बा.	८	०	१७	३०	९	१४	धनु	५४	२७	५	२५	११	१५	१	१४	२६	४१	यूरेनस अश्वि. ३ में ५९/५०,
३४	३७	२	गु.	४४	५९	मूल	६०	०	सा.	३१	३०	तै.	१२	२९	१८	३१	१०	१५	धनु			५	२५	११	१६	१	१५	२४	१२	बुध रोहि. में ५६/१०, शुक्र पुन. में २४/१७,
३४	३९	३	शु.	५०	५०	मूल	१	८	शू.	३३	३७	व.	१७	५५	१९	जू.१	११	१६	धनु			५	२४	११	१६	१	१६	२१	४२	भ. १७/५५ से ५०/५० तक, जून प्रारम्भ,
३४	४१	४	श.	५७	१३	पू.षा.	८	३५	शू.	३६	१३	ब.	२४	०१	२०	२	१२	१७	मकर	२५	३२	५	२४	११	१७	१	१७	११	११	श्रीगणेशचतुर्थी व्रत,
३४	४३	५	र.	६०	०	उ.षा.	१६	२५	ब्र.	३९	०	कौ.	३०	२६	२१	३	१३	१८	मकर			५	२४	११	१७	१	१८	१६	३९	
३४	४४	५	चं.	३	४०	श्रव.	२४	१२	ऐं.	४१	३६	तै.	३	४०	२२	४	१४	१९	कुम्भ	५७	५४	५	२४	११	१८	१	१९	१४	६	पंचक प्रारम्भ ५७/५४,
३४	४६	६	मं.	९	४१	धनि.	३१	२१	वै.	४३	३५	व.	९	४१	२३	५	१५	२०	कुम्भ			५	२४	११	१८	१	२०	११	३३	भ. ९/४१ से ४२/१० तक, वक्री शनि मूल ४ में २/५०,
३४	४८	७	बु.	१४	३९	शत.	३७	२१	वि.	४४	३४	ब.	१४	३९	२४	६	१६	२१	कुम्भ			५	२४	११	१९	१	२१	८	५९	
३४	४९	८	गु.	१८	४	पू.भा.	४१	४२	प्री.	४४	१२	कौ.	१८	०४	२५	७	१७	२२	मीन	२५	४८	५	२३	११	१९	१	२२	६	२४	बुध मृग. में २/३७,
३४	५०	९	शु.	१९	३४	उ.भा.	४४	६	आ.	४२	१६	ग.	१९	३४	२६	८	१८	२३	मीन			५	२३	११	१९	१	२३	३	४९	भ. ४९/१७ बाद, सूर्य मृग. में १७/१२, शुक्र कर्क में ५३/१५,
३४	५२	१०	श.	१८	५९	रेव.	४४	२६	सौ.	३८	३८	वि.	१८	५९	२७	९	१९	२४	मेष	४४	२६	५	२३	११	२०	१	२४	१	१३	भ. १८/५९ तक, पंचक समाप्त ४४/२६, वक्री प्लूटो (A)
३४	५३	११	र.	१६	१८	अश्वि.	४२	४४	शो.	३३	२२	बा.	१६	१८	२८	१०	२०	२५	मेष			५	२३	११	२०	१	२४	५८	३७	बुध मिथुन में ५/२२, पुरुषोत्तमा एकादशी व्रत (स.),
३४	५४	१२	चं.	११	४१	भर.	३९	१५	अ.	२६	३६	तै.	११	४१	२९	११	२१	२६	वृष	५३	७	५	२३	११	२१	१	२५	५६	०	शुक्र पुष्य में ४३/५२, सोमप्रदोष व्रत,
३४	५५	१३	मं.	५	२७	कृत्ति.	३४	१९	सु.	१८	३३	व.	५	२७	३०	१२	२२	२७	वृष			५	२३	११	२१	१	२६	५३	२३	भ. ५/२७ से ३१/४१ तक,
अवम		१४	मं.	५७	५६	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	चतुर्दशी तिथिक्षय,
३४	५६	३०	बु.	४९	३४	रोहि.	२८	१९	धृ. .शू.	९ ५९	३२ ५२	च.	२३	४५	३१	१३	२३	२८	मिथुन	५५	२	५	२३	११	२२	१	२७	५०	४५	बुध आर्द्रा में १२/२७, ज्येष्ठ मल (B)

(A) पू.षा. ४ में ११/५०, (B) (अधिक) मास समाप्त ,

ग्रह स्पष्ट, प्रातः ५ घं.३० मि. (I.S.T.), ७ जून,

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
१ २२ ६ २४	१० २४ ४२ १८	९ १२ ४६ २०	१ २३ १४ ५०	६ २० ५३ ११	२ २७ ४७ १४	८ १३ १२ २१	३ १४ २८ ३२	९ १४ २८ ३२
५७ २४	७७३ ०	१३ १६	१३१ ५७	५ ३३	७० ३३	३ ५९	३ ११	३ ११
		मा.	मा.	व.	मा.	व.	व.	व.
		उ.	अ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
रोहि. ४	पू.भा. २	श्रवण १	रोहि. ४	विशा. १	पुन. ३	मूल ४	पुष्य ४	श्रवण २

कुण्डली सूर्योदय (७ जून)

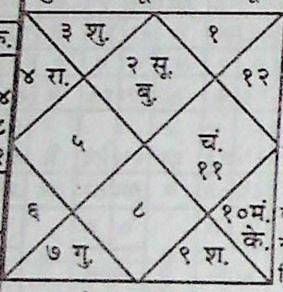

लोकभविष्य—इस चान्द्रमास में पांच बुध एवं पांच गुरुवार होने से राजनीतिज्ञों द्वारा जनता की सुख-सुविधा के लिए प्रयास होंगे। लेकिन पांच गुरुवार भी इस चान्द्रमास में होने से पश्चिमी देशों में कहीं जनसंहार व उग्रवादजन्य परेशानी रहे—"विग्रहः पश्चिमे देशे खड्गयुद्धं च जायते।" इस पक्ष में मूल नक्षत्र का शनि नानाविध रोगों से पीड़ाकारक ही है—"यदि मूलगतः सौरिः बहुपीड़ां प्रजायते। पशूनां च नराणां च रोगपीड़ा-महत्यपि॥"

ग्रहचाल और बाज़ार का रुख—३१ मई के लगभग रुई, कपास, सूत, सोना, चांदी, तिलहन, चावल, गुड़, खाण्ड, बिनौला, नमक ५ जून तक तेज रहे। ६ से १० जून तक बाजार अस्थिर किंवा मन्दे रहें। ११ जून को अलसी, गुड़, घी में अच्छी घटाबढ़ी। १२ जून के लगभग तेजी का झटका आकर, बाजार मन्दे रहें।

आकाश-लक्षण—मई ३१, जून ३, ४, ६ एवं ८ से १३ जून तक उत्तराखण्ड, हि.प्र., जम्मू-कश्मीर, उ.प्र., उड़ीसा, बिहार एवं उत्तरी भारत के कुछ भागों में वायुवेग के साथ वर्षा के योग हैं। पर्वतीय भूभागों में कहीं जलाप्लाव से हानि भी हो।

कुण्डली सूर्योदय (१३ जून)

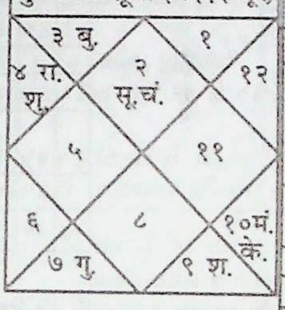

ग्रह स्पष्ट, प्रातः ५ घं.३० मि. (I.S.T.), १३ जून,

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
१ २७ ५० ४४	१ १६ २३ ८	७ १३ ५६ ४३	२ ६ १४ ३२	६ २० २१ ५७	३ ४ ४९ २३	८ १२ ४७ ५३	३ १४ ९ २७	९ १४ ९ २७
५७ २१	८१५ १२	९ २९	१२५ ३५	४ ४१	७० ५	४ १३	३ ११	३ ११
		मा.	मा.	व.	मा.	व.	व.	व.
		उ.	अ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
मृग. २	रोहि. २	श्रवण २	मृग. ४	विशा. १	पुष्य १	मूल ४	पुष्य ४	श्रवण २

श्री वि.सं. २०७५, शाक १९४०, द्वि.(शुद्ध) ज्येष्ठ शुक्ल पक्ष ७

(१४ से २८ जून, सन् २०१८ ई.) उत्तर-दक्षिणायन, उत्तरगोल, ग्रीष्म-वर्षा ऋतु।

१७ जून को बु. पश्चिम में उदित होगा। प्रातः मं. पश्चिम कपाल में और श. पश्चिम में होगा। सायं शु. पश्चिम क्षितिज में और गु. पूर्व कपाल में होगा।

दिनमान		तिथि	वार	समाप्ति-काल		नक्षत्र	समाप्ति-काल		योग	समाप्ति-काल		करण	समाप्ति-काल		तारीखें प्र.	अं.	श.	मु.	चन्द्रराशि-प्रवेशकाल			चण्डीगढ़ (भा.स्टैं.टा.) सूर्योदय		सूर्यास्त		स्पष्ट सूर्य प्रातः ५घं. ३० मि. (भा.स्टैं.टा.)				
घ.	प.			घ.	प.		घं.	प.		घ.	प.		घ.	प.	ज्येष्ठ	जून	ज्येष्ठ	रमज़ान		घ.	प.	घं.	मि.	घं.	मि.	रा.	अं.	क.	वि.	
३४	५६	१	गु.	४०	४६	मृग.	२१	४१	गं.	४९	५५	किं.	१५	१०	३२	१४	२४	२९	मिथुन			५	२३	११	२२	१	२८	४८	६	
३४	५७	२	शु.	३१	५५	आर्द्रा	१४	५३	वृ.	३९	५१	बा.	६	२०	आ.१	१५	२५	३०	कर्क	५४	५४	५	२३	११	२२	१	२९	४५	२६	चन्द्रदर्शन मु. ४५, सं. सूर्य मिथुन में १५/३२, मु. ४५, (A)
३४	५८	३	श.	२३	२६	पुन.	८	११	ध्रु.	३०	२४	ग.	२३	२६	२	१६	२६	श.१	कर्क			५	२४	११	२३	२	०	४२	४६	भ. ४९/३२ बाद, रम्भा तृतीया, श्रीमहाराणा प्रताप जयन्ती (B)
३४	५८	४	र.	१५	३८	पुष्य आश्ले.	२ ५७	२१ १८	व्या.	२१	२६	वि.	१५	३८	३	१७	२७	२	सिंह	५७	१८	५	२४	११	२३	२	१	४०	५	भ. १५/३८ तक, बुध पश्चिम में उदित ११घं.२३ मि., (C)
३४	५९	५	चं.	८	४९	मघा	५३	२५	ह.	१३	११	बा.	८	४९	४	१८	२८	३	सिंह			५	२४	११	२३	२	२	३७	२३	वक्री गुरु स्वाती ४ में ०/४७, नेप्च्यून वक्री ५९/००, (D)
३४	५९	६	मं.	३	१२	पू.फा.	५०	५३	व.	६	१२	तै.	३	१२	५	१९	२९	४	सिंह			५	२४	११	२३	२	३	३४	४०	भ. ५८/५७ बाद, बुध पुन. में ५३/१७,
अवम		७	मं.	५८	५७	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	सप्तमी तिथिक्षय,
३४	५९	८	बु.	५६	७	उ.फा.	४१	४६	सि. व्य.	० ५५	१३ २३	वि.	२७	३२	६	२०	३०	५	कन्या	५	२८	५	२४	११	२४	२	४	३१	५६	भ. २७/३२ तक,
३४	५९	९	गु.	५४	४५	हस्त	५०	५	व.	५१	४४	बा.	२५	२६	७	२१	३१	६	कन्या			५	२४	११	२४	२	५	२९	१२	सूर्य सायन कर्क में २५/३३, दक्षिणायन एवं वर्षा ऋतु प्रारम्भ,
३४	५९	१०	शु.	५४	४८	चित्रा	५१	४७	प.	४९	१२	तै.	२४	४६	८	२२	आ.१	७	तुला	२०	४६	५	२५	११	२४	२	६	२६	२७	सूर्य आर्द्रा में १४/२५, शक आषाढ़ प्रारम्भ,
३४	५९	११	श.	५६	९	स्वाती	५४	४८	शि.	४७	४३	व.	२५	२८	९	२३	२	८	तुला			५	२५	११	२४	२	७	२३	४२	भ. २५/२८ से ५६/०९ तक, शुक्र आश्ले. में १२/०७, (E)
३४	५९	१२	र.	५८	४३	विशा.	५८	५९	सि.	४७	१२	ब.	२७	२६	१०	२४	३	९	वृश्चिक	४२	५०	५	२५	११	२४	२	८	२०	५६	
३४	५८	१३	चं.	६०	०	अनु.	६०	०	सा.	४७	३२	कौ.	३०	३१	११	२५	४	१०	वृश्चिक			५	२५	११	२५	२	९	१८	९	बुध कर्क में ३१/४७, सोमप्रदोष व्रत,
३४	५८	१३	मं.	२	२२	अनु.	४	१३	शु.	४८	३९	तै.	२	२२	१२	२६	५	११	वृश्चिक			५	२६	११	२५	२	१०	१५	२१	मंगल वक्री ५२/५५,
३४	५७	१४	बु.	६	५७	ज्ये.	१०	२२	शु.	५०	२४	व.	६	५७	१३	२७	६	१२	धनु	१०	२२	५	२६	११	२५	२	११	१२	३४	भ. ६/५७ से ३९/३९ तक, बुध पुष्य में ३४/४७, (F)
३४	५७	१५	गु.	१२	२१	मूल	१७	१६	ब्र.	५२	४०	ब.	१२	२१	१४	२८	७	१३	धनु			५	२६	११	२५	२	१२	९	४५	राहु पुष्य ३, केतु श्रवण १ में ३३/१७,

(A) पुण्यकाल १७ घं. ३६ मि. तक, (B) (राज.), शव्वाल मु. प्रारम्भ, (C) बलिदान-दिन श्रीगुरु अर्जुनदेव जी, (D) अरण्य षष्ठी, (देखें पृ.13), विन्ध्यवासिनी पूजा, (E) निर्ज़ला एकादशी व्रत (स.), (F) वट सावित्री व्रत (पूर्णिमा पक्ष) (देखें पृ.13.), श्रीसत्यनारायण व्रत,

ग्रह स्पष्ट, प्रातः ५ घं.३० मि. (I.S.T.), २० जून,

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
२	४	९	२	६	३	८	३	९
४	२८	१४	२०	१९	१२	१२	१३	१३
३१	४८	४८	१३	५२	५८	१७	४७	४७
५६	३४	५३	१३	२३	११	५४	१२	१२
५७	८११	४	१११	३	६१	४	३	३
१६	४६	४०	२२	३४	२८	२२	११	११
		मा.	मा.	व.	मा.	व.	व.	व.
		उ.	उ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
४	१	२	१	४	३	४	४	२
मृग.	उ.फा.	श्रवण	पुन.	स्वाती	पुष्य	मूल	पुष्य	श्रवण

कुण्डली सूर्योदय (२० जून)

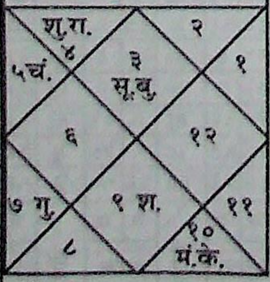

लोकभविष्य—सूर्य-शनि का समसप्तक शासनतन्त्र एवं जनता के लिए परेशानीकारक है। बुध का उदय पश्चिम में होने से उत्पात से हानि हो—**"नोत्पात परित्यक्तः चन्द्रजो व्रजत्युदयम्।"** प्राकृतिक उत्पात, कहीं अत्यधिक वर्षा, कहीं सूखा, कहीं तूफान व भूकम्प एवं यान-दुर्घटना आदि से जन-धनहानि हो। पाक, बंगलादेश, चीन आदि की गतिविधि सीमाप्रान्तों पर चिन्तनीय रहे। किसी राष्ट्र में सत्ता-हस्तान्तरण का योग है।

ग्रहचाल और बाज़ार का रुख—१५ से १७ जून के लगभग तेल, तिलहन, गुड़, शक्कर, घी, रुई, दालवाना एवं सभी अनाज, सोना, चांदी तेज रहें। १८ से २७ जून तक सोना, चांदी एवं सभी व्यापारिक वस्तुओं में उठा-पटक के साथ बाजार मन्दे रहें। २८ जून से पक्षान्त तक सोना, चांदी, लोहा, तांबा, तेल, तिलहन, दालवाना सब तेज रहेंगे।

आकाश लक्षण—१५, १६, १७, १९, २२ से २८ जून तक पंजाब, हरियाणा, हि.प्र., चण्डीगढ़, दिल्ली, उत्तराखण्ड, उ.प्र., महाराष्ट्र, उड़ीसा, केरल, असम में अनेकत्र वायुवेग के साथ वर्षा के योग हैं।

कुण्डली सूर्योदय (२८ जून)

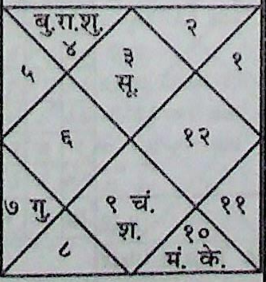

ग्रह स्पष्ट, प्रातः ५ घं.३० मि. (I.S.T.), २८ जून,

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
२	८	९	३	६	३	८	३	९
१२	९	१५	४	१९	२२	११	१३	१३
९	५६	५	०	२८	१०	४२	२१	२१
४५	७	४८	१७	३५	५८	४१	४५	४५
५७	७१२	१	९२	२	६८	४	३	३
११	४२	१३	५८	१२	३६	२५	११	११
		व.	मा.	व.	मा.	व.	व.	व.
		उ.	उ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
२	३	२	१	४	२	४	४	२
आर्द्रा	मूल	श्रवण	पुष्य	स्वाती	आश्ले.	मूल	पुष्य	श्रवण

श्री वि.सं. २०७५, शाक १९४०, आषाढ़ कृष्ण पक्ष ८

(२९ जून से १३ जुलाई, सन् २०१८ ई.)
दक्षिणायन, उत्तरगोल, वर्षा ऋतु ।

प्रातः मं. पश्चिम में और श. पश्चिम क्षितिज में होगा। सायं बु. शु. पश्चिम में और गु. पूर्व कपाल में होगा।

दिनमान		तिथि	वार	समाप्ति-काल		नक्षत्र	समाप्ति-काल		योग	समाप्ति-काल		करण	समाप्ति-काल		तारीखें प्र.	अं.	श.	मु.	चन्द्रराशि-प्रवेशकाल			चण्डीगढ़ (भा.स्टैं.टा.) सूर्योदय		सूर्यास्त		स्पष्ट सूर्य प्रातः ५घं. ३० मि. (भा.स्टैं.टा.)				
घ.	प.			घ.	प.		घ.	प.		घ.	प.		घ.	प.	आषाढ़	जून	आषाढ़	शव्वाल		घ.	प.	घं.	मि.	घं.	मि.	रा.	अं.	क.	वि.	
३४	५६	१	शु.	१८	२१	पू.षा.	२४	४५	ऐं.	५५	१८	कौ.	१८	२१	१५	२९	८	१४	मकर	४१	४२	५	२७	१९	२५	२	१३	६	५७	
३४	५५	२	श.	२४	४३	उ.षा.	३२	३४	वै.	५८	४	ग.	२४	४३	१६	३०	९	१५	मकर			५	२७	१९	२५	२	१४	४	८	भ. ५७/५५ बाद,
३४	५४	३	र.	३१	८	श्रवण	४०	२२	वि.	६०	०	वि.	३१	०८	१७	जु.१	१०	१६	मकर			५	२७	१९	२५	२	१५	१	१९	भ. ३१/०८ तक, श्रीगणेशचतुर्थी व्रत, जुलाई प्रारम्भ,
३४	५३	४	चं.	३७	१२	धनि.	४७	४७	वि.	०	४४	ब.	४	१०	१८	२	११	१७	कुम्भ	१४	९	५	२८	१९	२५	२	१५	५८	३१	पंचक प्रारम्भ १४/०९,
३४	५२	५	मं.	४२	२९	शत.	५४	२३	प्री.	२	५९	कौ.	९	५०	१९	३	१२	१८	कुम्भ			५	२८	१९	२५	२	१६	५५	४२	
३४	५१	६	बु.	४६	३४	पू.भा.	५९	४५	आ.	४	३१	ग.	१४	३१	२०	४	१३	१९	मीन	४३	३४	५	२९	१९	२५	२	१७	५२	५४	भ. ४६/३४ बाद, शुक्र मघा सिंह में ५२/२०,
३४	४९	७	गु.	४९	४	उ.भा.	६०	०	सौ.	५	१	वि.	१७	४९	२१	५	१४	२०	मीन			५	२९	१९	२५	२	१८	५०	५	भ. १७/४९ तक,
३४	४८	८	शु.	४९	४२	उ.भा.	३	३१	शो.	४	१२	बा.	१९	२३	२२	६	१५	२१	मीन			५	२९	१९	२५	२	१९	४७	१७	सूर्य पुन. में १३/२२,
३४	४६	९	श.	४८	२१	रेव.	५	२३	अ. सु.	१ ५७	५३ ५८	तै.	१९	०१	२३	७	१६	२२	मेष	५	२३	५	३०	१९	२४	२	२०	४४	३०	पंचक समाप्त ५/२३, बुध आश्ले. में ८/२५,
३४	४५	१०	र.	४५	१	अश्वि.	५	१९	धृ.	५२	२८	व.	१६	४१	२४	८	१७	२३	मेष			५	३०	१९	२४	२	२१	४१	४३	भ. १६/४१ से ४५/०१ तक,
३४	४३	११	चं.	३९	५१	भर. कृत्ति.	३ ५९	२० ३३	शू.	४५	२९	ब.	१२	२५	२५	९	१८	२४	वृष	१७	३१	५	३१	१९	२४	२	२२	३८	५६	योगिनी एकादशी व्रत (स.),
३४	४१	१२	मं.	३३	५	रोहि.	५४	१९	गं.	३७	१३	कौ.	५	२८	२६	१०	१९	२५	वृष			५	३१	१९	२४	२	२३	३६	९	गुरु मार्गी ४२/३५, भौमप्रदोष व्रत,
३४	४०	१३	बु.	२५	५	मृग.	४७	५८	वृ.	२७	५६	व.	२५	०५	२७	११	२०	२६	मिथुन	२१	१२	५	३२	१९	२४	२	२४	३३	२३	भ. २५/०५ से ५०/३९ तक,
३४	३८	१४	गु.	१६	१३	आर्द्रा	४०	५४	धु.	१७	५६	श.	१६	१३	२८	१२	२१	२७	मिथुन			५	३२	१९	२३	२	२५	३०	३७	
३४	३६	३०	शु.	६	५२	पुन.	३३	३३	व्या. ह.	७ ५७	३२ ०७	ना.	६	५२	२९	१३	२२	२८	कर्क	२०	२१	५	३३	१९	२३	२	२६	२७	५१	आषाढ़ गुप्त नवरात्र प्रारम्भ (देखें पृ.14),

ग्रह स्पष्ट, प्रातः ५ घं.३० मि. (I.S.T.), ६ जुलाई,

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
२	११	९	३	६	४	८	३	९
१९	१५	१४	१५	१९	१	११	१२	१२
४७	५५	३४	१६	१५	१६	७	५६	५६
१७	५०	५८	४३	५८	२८	३२	१९	१९
५७	७७३	७	७३	०	६७	४	३	३
१२	३०	१३	२१	४६	३८	२०	११	११
		व.	मा.	व.	मा.	व.	व.	व.
		उ.	उ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
आर्द्रा ४	उ.भा. ४	श्रवण २	पुष्य ४	स्वाती ४	मघा १	मूल ४	पुष्य ३	श्रवण १

कुण्डली सूर्योदय (६ जुलाई)

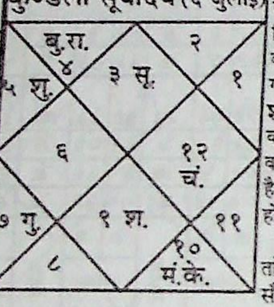

लोकभविष्य—वक्री मंगल का स्वभावत: वक्री राहु के साथ समसप्तक एवं शनि-सूर्य का परस्पर दृष्टिसम्बन्ध पश्चिमी प्रान्तों किंवा पश्चिमी राष्ट्र (विशेषत: मुस्लिम राष्ट्र) में अन्तरकलह, युद्धमय वातावरण से समीपस्थ राष्ट्रविशेष की शान्ति भंग करे। मंगल वक्री गति से चल रहा है—"**भौमे वक्रे त्वनावृष्टिर्राहुः स्यादग्निकारकः। शनौ वक्रे प्रजापीड़ा गुरौ वक्रे नृपक्षयः॥**" अत: कहीं अग्निकाण्ड, कहीं अनावृष्टि से भयंकर दुर्भिक्ष की स्थिति का सामना करना पड़े; क्योंकि इस पक्ष में सिंहस्थ शुक्र भी वर्षा में भारी अवरोध का सूचक है। जनता महंगाई से परेशान रहे एवं प्रतिष्ठित व्यक्ति का पद रिक्त होने का भय है।

ग्रहचाल और बाज़ार का रुख—४ जुलाई के लगभग सोना, तांबा, चना, चावल, जौ आदि अन्न, दालवाना, हरड़, सुपारी, नारियल, सौंफ एवं अन्य किराना तेज रहें। यह तेजी ८ जुलाई तक रहे।

कुण्डली सूर्योदय (१३ जुलाई)

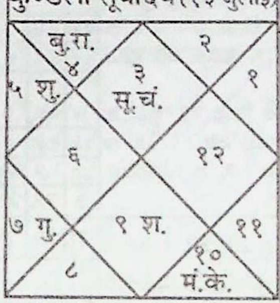

ग्रह स्पष्ट, प्रातः ५ घं.३० मि. (I.S.T.), १३ जुलाई,

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
२	२	९	३	६	४	८	३	९
२६	२४	१३	२२	१९	९	१०	१२	१२
२७	४८	२९	५१	१४	७	३७	३४	३४
५०	२४	५७	४३	२४	२	४१	३	३
५७	११०	११	५३	०	६६	४	३	३
१५	४९	५२	१	३१	३९	१	११	११
		व.	मा.	मा.	मा.	व.	व.	व.
		उ.	उ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
पुन. २	पुन. २	श्रवण २	आश्ले. २	स्वाती ४	मघा ३	मूल ४	पुष्य ३	श्रवण १

आकाश-लक्षण—जून २९, जुलाई ४, ६, ७, ९ एवं १० से १३ तक हि.प्र., उत्तराखण्ड, उ.प्र., पंजाब, हरियाणा, चण्डीगढ़, दिल्ली, कश्मीर, भारत के दक्षिणी एवं पश्चिमी प्रान्तों में अनेकत्र वर्षा हो, लेकिन कुछ प्रान्तों में बादलचाल रहे। परन्तु शुक्र के सिंहस्थ होने से सूखा रहने के समाचार भी मिलेंगे।

श्री वि.सं. २०७५, शाक १९४०, आषाढ़ शुक्ल पक्ष १															तारीखें				चन्द्रराशि-प्रवेशकाल			चण्डीगढ़ (भा.स्टैं.टा.)				स्पष्ट सूर्य प्रातः ५घं. ३० मि. (भा.स्टैं.टा.)				(१४ से २७ जुलाई, सन् २०१८ ई.) दक्षिणायन, उत्तरगोल, वर्षा ऋतु।
दिनमान		तिथि	वार	समाप्ति-काल		नक्षत्र	समाप्ति-काल		योग	समाप्ति-काल		करण	समाप्ति-काल		प्र.	अं.	श.	मु.				सूर्योदय		सूर्यास्त						प्रातः मं. पश्चिम में होगा। सायं श. पूर्व क्षितिज पर, गु. याम्योत्तरवृत्तासन्न, शु. पश्चिम में और बु. पश्चिम क्षितिजासन्न देखा जा सकता है। २७ जुला. को भारत में खग्रास चन्द्रग्रहण दिखाई देगा।
घ.	प.			घ.	प.		घ.	प.		घ.	प.		घ.	प.	आषाढ़	जुलाई	आषाढ़	शव्वाल		घ.	प.	घं.	मि.	घं.	मि.	रा.	अं.	क.	वि.	
अवम		१	शु.	५७	२८	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	प्रतिपदा तिथिक्षय,
३४	३३	२	श.	४८	२४	पुष्य	२६	२२	व.	४६	५८	बा.	२२	५६	३०	१४	२३	२९	कर्क			५	३३	१९	२३	२	२७	२५	६	चन्द्रदर्शन, मु. १५, रथयात्रा (श्रीजगदीश रथोत्सव) पुरी (A)
३४	३१	३	र.	४०	२	आश्ले.	१९	४५	सि.	३७	२४	तै.	१४	१३	३१	१५	२४	जि.१	सिंह	१९	४५	५	३४	१९	२२	२	२८	२२	२०	जिल्काद मु. प्रारम्भ,
३४	२९	४	चं.	३२	४५	मघा	१४	४	व्य.	२८	४३	व.	६	२३	श्रा.१	१६	२५	२	सिंह			५	३४	१९	२२	२	२९	१९	३५	भ. ६/२३ से ३२/४५ तक, सं. सूर्य कर्क में ४२/१३, (B)
३४	२७	५	मं.	२६	५०	पू.फा.	९	४०	व.	२१	१०	बा.	२६	५०	२	१७	२६	३	कन्या	२३	४८	५	३५	१९	२२	३	०	१६	५०	कुमार षष्ठी,
३४	२४	६	बु.	२२	३२	उ.फा.	६	४९	प.	१४	५५	तै.	२२	३२	३	१८	२७	४	कन्या			५	३६	१९	२१	३	१	१४	५	विवस्वत् सप्तमी,
३४	२२	७	गु.	११	५९	हस्त	५	४१	शि.	१०	५	व.	११	५९	४	१९	२८	५	तुला	३५	४१	५	३६	१९	२१	३	२	११	२१	भ. १९/५९ से ४९/३७ तक,
३४	१९	८	शु.	११	१५	चित्रा	६	२०	सि.	६	४२	ब.	११	१५	५	२०	२९	६	तुला			५	३७	१९	२०	३	३	८	३६	सूर्य पुष्य में ११/३७,
३४	१६	९	श.	२०	१६	स्वाती	८	४४	सा.	४	४४	कौ.	२०	१६	६	२१	३०	७	वृश्चिक	५६	३७	५	३७	१९	२०	३	४	५	५२	गुप्त नवरात्र समाप्त,
३४	१४	१०	र.	२२	५३	विशा.	१२	४४	शु.	४	५	ग.	२२	५३	७	२२	३१	८	वृश्चिक			५	३८	१९	१९	३	५	३	८	भ. ५४/५३ बाद, वक्री शनि मूल ३ में २८/४७, सूर्य (C)
३४	११	११	चं.	२६	५२	अनु.	१८	५	शु.	४	३२	वि.	२६	५२	८	२३	श्रा.१	९	वृश्चिक			५	३९	१९	१९	३	६	०	२५	भ. २६/५२ तक, हरिशयनी एकादशी व्रत (स.), श्रीविष्णु (D)
३४	८	१२	मं.	३१	५६	ज्ये.	२४	३२	ब्र.	५	५१	बा.	३१	५६	९	२४	२	१०	धनु	२४	३२	५	३९	१९	१८	३	६	५७	४१	
३४	५	१३	बु.	३७	४४	मूल	३१	४३	ऐं.	७	५३	कौ.	४	५०	१०	२५	३	११	धनु			५	४०	१९	१८	३	७	५४	५८	प्रदोष व्रत,
३४	२	१४	गु.	४३	५९	पू.षा.	३९	२१	वै.	१०	२०	ग.	१०	५२	११	२६	४	१२	मकर	५६	१८	५	४०	१९	१७	३	८	५२	१६	भ.४३/५९ बाद, बुध वक्री १२/११, ग्रहणवेध,
३३	५९	१५	शु.	५०	२२	उ.षा.	४७	९	वि.	१३	२	वि.	१७	११	१२	२७	५	१३	मकर			५	४१	१९	१७	३	९	४९	३४	भ. १७/११ तक, वक्री मंगल उ.षा. में १९/३५, आषाढ़ी (E)

खग्रास चन्द्रग्रहण
२७ जुलाई

(A) (पुष्य नक्षत्र १६ घं. ६ मि. तक), (B) मु. ३०, पुण्यकाल मध्याह्न बाद, शुक्र पू.फा. में ४८/२०, (C) सायन सिंह में ५२/१०, नवरात्र-पारणा, (D) शयनोत्सव, शक श्रावण प्रारम्भ, (E) पूर्णिमा, चातुर्मास्य व्रत-नियमादि प्रारम्भ, गुरु पूर्णिमा (व्यासपूजा), श्रीशिवशयनोत्सव, कोकिला व्रत, श्रीसत्यनारायण व्रत (देखें पृ. 14), खग्रास चन्द्रग्रहण (भारत में दृश्य) (देखें पृ. 24),

ग्रह स्पष्ट, प्रातः ५ घं.३० मि. (I.S.T.), २० जुलाई,

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
३	६	९	३	६	४	८	३	९
३	५	११	२७	१९	१६	१०	१२	१२
८	१३	५६	४८	२१	५०	९	११	११
३६	४८	१०	९	४४	१०	२९	४८	४८
५७	७७१	१५	२६	९	६५	३	३	३
१६	३५	५	४६	४५	२७	५१	११	११
		व.	मा.	मा.	मा.	व.	व.	व.
		उ.	उ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
पुन. ४	चित्रा ४	श्रवण १	आश्ले. ४	स्वाती ४	पू.फा. ३	मूल ३	पुष्य ३	श्रवण १

कुण्डली सूर्योदय (२० जुला.)

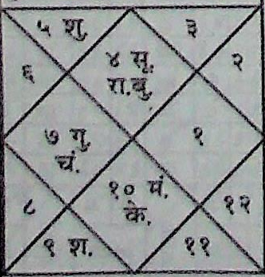

लोकभविष्य—इस चान्द्रमास में पांच शुक्रवार होने से प्रजा में सब तरह से सुख-शान्ति रहे। नानाविध रोगों के उपचार के साधनों पर सरकार ध्यान दे। जन-जीवन को सुधारने में राजनीतिज्ञों का योगदान प्रशंसनीय रहेगा, लेकिन कर्क राशि में राहु, वक्री बुध एवं सूर्य के साथ वक्री मंगल का समसप्तक कहीं भारी प्राकृतिक आपदा, दुर्भिक्ष, कहीं बाढ़, कहीं उग्रवादजन्य अशान्ति से परेशानीकारक रहे। २० से २७ जुलाई के लगभग कहीं भूकम्प से हानि भी सम्भव है।

ग्रहचाल और बाज़ार का रुख—पक्षारम्भ में रुई, सूत, सोना, चांदी, बादाम, तेल, तिलहन तेज रहें। अनाज, दालवाना में कुछ मन्दी रहे। २० से २७ जुलाई तक सभी तेल, खाद्य तेल, तिलहन, हल्दी, सोना, चांदी, रुई, नमक, घी, गुड़, खाण्ड तेज रहें। अनाज, दालवाना में भी तेजी रहे। २१ से २६ जुलाई तक वायदा व्यापारी तेजी से लाभ लेंगे।

कुण्डली सूर्योदय (२७ जुला.)

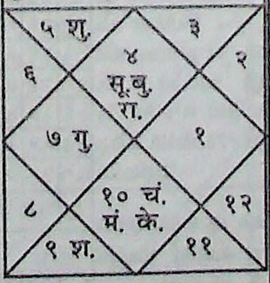

ग्रह स्पष्ट, प्रातः ५ घं.३० मि. (I.S.T.), २७ जुलाई,

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
३	९	९	३	६	४	८	३	९
९	०	१०	२९	१९	२४	९	११	११
४९	३८	५	१९	३७	२४	४३	४९	४९
३४	२९	२८	१	४५	९	३८	३२	३२
५७	७०७	१६	६	२	६४	३	३	३
१८	५०	२३	३१	५८	००	२८	११	११
		व.	व.	मा.	मा.	व.	व.	व.
		उ.	उ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
पुष्य २	उ.षा. २	श्रवण १	आश्ले. ४	स्वाती ४	पू.फा. ४	मूल ३	पुष्य ३	श्रवण १

आकाश-लक्षण—जुलाई १४, १५, १६, १७, २०, २१, २२, २४, २५ एवं २६ जुलाई के लगभग राजस्थान, उड़ीसा, असम, केरल, हि.प्र., कश्मीर, उ.प्र., उत्तराखण्ड एवं उत्तर भारत में वर्षा के योग हैं। कहीं बाढ़ से जनधनहानि के योग भी बने।

श्री वि.सं. २०७५, शाक १९४०, श्रावण कृष्ण पक्ष १०															तारीखें				चन्द्रराशि-प्रवेशकाल			चण्डीगढ़ (भा.स्टैं.टा.)				स्पष्ट सूर्य प्रातः ५घं. ३० मि. (भा.स्टैं.टा.)				(२८ जुलाई से ११ अगस्त, सन् २०१८ ई.) दक्षिणायन, उत्तरगोल, वर्षा ऋतु । १ अग. को बु. पश्चिम में लुप्त हो जायेगा। प्रातः मं. पश्चिम क्षितिज में दिखाई देगा। सायं श. पूर्व में, गु. याम्योत्तरवृत्त के पास तथा शु. इससे पश्चिम की ओर होगा।
दिनमान		तिथि	वार	समाप्ति-काल		नक्षत्र	समाप्ति-काल		योग	समाप्ति-काल		करण	समाप्ति-काल		प्र. श्रावण	अं. जुलाई	श. श्रावण	मु. जिल्काद				सूर्योदय		सूर्यास्त						
घ.	प.			घ.	प.		घ.	प.		घ.	प.		घ.	प.						घ.	प.	घं.	मि.	घं.	मि.	रा.	अं.	क.	वि.	
३३	५६	१	श.	५६	३६	श्रव.	५४	४८	प्री.	१५	४३	बा.	२३	२९	१३	२८	६	१४	मकर			५	४२	१९	१६	३	१०	४६	५२	ग्रहणवेध,
३३	५३	२	र.	६०	०	धनि.	६०	०	आ.	१८	१२	तै.	२९	३०	१४	२९	७	१५	कुम्भ	२८	३०	५	४२	१९	१५	३	११	४४	१२	पंचक प्रारम्भ २८/३०, शुक्र उ.फा. में ७/७, अशून्य शयन (A)
३३	४९	२	चं.	२	२५	धनि.	२	३	सौ.	२०	१८	ग.	२	२५	१५	३०	८	१६	कुम्भ			५	४३	१९	१४	३	१२	४१	३२	भ. ३४/५७ बाद, ग्रहणवेध,
३३	४६	३	मं.	७	२९	शत.	८	३५	शो.	२१	४७	वि.	७	२९	१६	३१	९	१७	मीन	५७	५६	५	४३	१९	१४	३	१३	३८	५३	भ. ७/२९ तक, श्रीगणेशचतुर्थी व्रत,
३३	४३	४	बु.	११	३६	पू.भा.	१४	१३	अ.	२२	२९	बा.	११	३६	१७	अ.१	१०	१८	मीन			५	४४	१९	१३	३	१४	३६	१५	शुक्र कन्या में १६/४७, बुध पश्चिम में अस्त १९ घं.१३ मि., (B)
३३	३९	५	गु.	१४	३०	उ.भा.	१८	३८	सु.	२२	११	तै.	१४	३०	१८	२	११	१९	मीन			५	४५	१९	१२	३	१५	३३	३८	गुरु विशाखा १ में २७/५५,
३३	३६	६	शु.	१५	५७	रेव.	२१	३९	धृ.	२०	४५	ब.	१५	५७	१९	३	१२	२०	मेष	२१	३९	५	४५	१९	१२	३	१६	३१	२	भ. १५/५७ से ४५/५२ तक, पंचक समाप्त २१/३९, (C)
३३	३२	७	श.	१५	४७	अश्वि.	२३	३	शू.	१८	१	ब.	१५	४७	२०	४	१३	२१	मेष			५	४६	१९	११	३	१७	२८	२८	
३३	२९	८	र.	१३	५५	भर.	२२	४७	गं.	१३	५६	कौ.	१३	५५	२१	५	१४	२२	वृष	३७	२७	५	४६	१९	१०	३	१८	२५	५४	
३३	२५	९	चं.	१०	२१	कृत्ति.	२०	५०	वृ.	८	२८	ग.	१०	२१	२२	६	१५	२३	वृष			५	४७	१९	९	३	१९	२३	२२	भ. ३७/४६ बाद,
३३	२२	१०	मं.	५	१२	रोहि.	१७	२०	ध्रु. व्या.	१ ५३	४४ ४७	वि.	५	१२	२३	७	१६	२४	मिथुन	४५	३	५	४८	१९	८	३	२०	२०	५१	भ. ५/१२ तक, यूरेनस वक्री ४१/२२, कामिका एकादशी व्रत (स्मा.),
अवम		११	मं.	५८	३९	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	एकादशी तिथिक्षय,
३३	१८	१२	बु.	५०	५५	मृग.	१२	२७	ह.	४४	५१	कौ.	२४	४७	२४	८	१७	२५	मिथुन			५	४८	१९	७	३	२१	१८	२२	कामिका एकादशी व्रत (वै.),
३३	१४	१३	गु.	४२	२०	आर्द्रा पुन.	६ ५९	२९ ४७	व.	३५	१०	ग.	१६	३७	२५	९	१८	२६	कर्क	४६	२९	५	४९	१९	६	३	२२	१५	५३	भ. ४२/२० बाद, प्रदोषव्रत, श्रावण-शिवरात्रि,
३३	१०	१४	शु.	३३	१५	पुष्य	५२	४१	सि.	२५	२	वि.	७	४७	२६	१०	१९	२७	कर्क			५	४९	१९	६	३	२३	१३	२६	भ. ७/४७ तक,
३३	६	३०	श.	२४	३	आश्ले	४५	३५	व्य.	१४	४४	ना.	२४	०३	२७	११	२०	२८	सिंह	४५	३५	५	५०	१९	५	३	२४	११	०	शुक्र हस्त में १/५०, हरियाली अमा , शनैश्चरी अमा,

(A) व्रत, ग्रहणवेध, (B) अगस्त प्रारम्भ, (C) सूर्य आश्ले. में ८/४५,

ग्रह स्पष्ट, प्रातः ५ घं.३० मि. (I.S.T.), ५ अगस्त,

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
३ १८ २५ ५७	० २१ २३ ५	९ ७ ४१ ५	३ २५ ३० १८	६ २० १० ३३	५ ३ ५१ २६	८ ९ १४ ४६	३ ११ २० ५५	९ ११ २० ५५
५७ २८	८१७ २६	१४ ५८	४४ २३	४ २८	६१ ४३	२ ५२	३ ११	३ ११
		व.	व.	मा.	मा.	व.	व.	व.
		उ.	अ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
आश्ले. १	भर. ३	उ.षा. ४	आश्ले. ३	विशा. १	उ.फा. ३	मूल ३	पुष्य ३	श्रव. १

कुण्डली सूर्योदय (५ अग.)

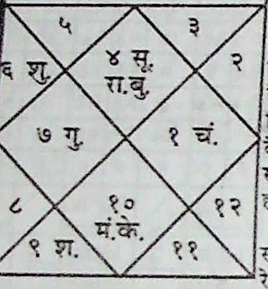

लोकभविष्य—शुक्र कन्या राशि में आकर शनि की दृष्टि में आ जाता है। कहीं खड़ी फसलों को हानि पहुंचे, जन-जीवनोपयोगी वस्तुओं एवं खाद्यान्नों की महंगाई से जनता परेशान रहे—"**कन्याराशिंगते शुक्रे सर्वं सस्यं विनश्यति। महर्घाणि तु धान्यानि शालिश्चैव विशेषतः॥**" इस पक्ष की प्रतिपदा अमावस दोनों शनिवारी हैं एवं कर्क राशि में चतुर्ग्रहीयोग बन रहा है, अतः प्राकृतिक प्रकोप किंवा कहीं सीमाप्रान्तों पर भारी अशान्ति से हानि के योग हैं—"**अथवा दैवयोगेन शनिवारो भवेद्यदि। जलशोषः प्रजानाशश्छत्र-भंगोऽपि संभवः।** कहीं दुर्भिक्ष, प्रजाकष्ट किंवा प्रतिष्ठित व्यक्ति का पद रिक्त हो।

ग्रहचाल और बाज़ार का रुख—२९ जुलाई से १ अगस्त तक सोना, चांदी में घटाबढ़ी, अनाज, गुड़, खाण्ड, दालवाना, ऊनी व रेशमी वस्त्र तेज रहें। १ अगस्त के लगभग चावलों में विशेष तेजी का झटका आयेगा। पाट, हैंसियन एवं शेयर मन्दे रहें। ३ अगस्त से अनाज, तिलहन, दलहन, गुड़, शक्कर, घी तेज रहें। पक्षान्त में बाजार मन्दे रहें।

आकाश-लक्षण—जुलाई २९, ३०, अगस्त १ से ४ एवं ११ अगस्त के लगभग भारत के अनेक प्रान्तों में कहीं बाढ़, कहीं सूखा व दुर्भिक्ष की स्थिति बने। हि.प्र., कश्मीर, उत्तराखण्ड, उ.प्र., चण्डीगढ़, दिल्ली एवं कहीं अन्यत्र भी भारी वर्षा के योग हैं।

कुण्डली सूर्योदय (११ अग.)

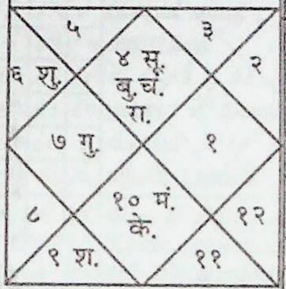

ग्रह स्पष्ट, प्रातः ५ घं.३० मि. (I.S.T.), ११ अगस्त,

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
३ २४ ११ ०	३ १८ १८ २९	९ ६ १७ ४६	३ २० ५३ १	६ २० ३१ ४२	५ ९ ५७ २१	८ ८ ५८ ४६	३ ११ १ ५१	९ ११ १ ५१
५७ ३५	१०५ २७	१२ ६	४२ ४३	५ २५	५९ ५३	२ २४	३ ११	३ ११
		व.	व.	मा.	मा.	व.	व.	व.
		उ.	अ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
आश्ले. ३	आश्ले. १	उ.षा. ३	आश्ले. २	विशा. १	उ.फा. ४	मूल ३	पुष्य ३	श्रवण १

श्री वि.सं. २०७५, शाक १९४०, श्रावण शुक्ल पक्ष ११

(१२ से २६ अगस्त, सन् २०१८ ई.)
दक्षिणायन, उत्तरगोल, वर्षा-शरद् ऋतु।

१८ अगस्त से बु. प्रातः पूर्व में दृश्य हो जायेगा। सायंकाल पूर्व में श. मं. और पश्चिम में गु. शु. को देखें।

दिनमान		तिथि	वार	समाप्ति-काल		नक्षत्र	समाप्ति-काल		योग	समाप्ति-काल		करण	समाप्ति-काल		तारीखें				चन्द्रराशि-प्रवेशकाल			चण्डीगढ़ (भा.स्टैं.टा.)				स्पष्ट सूर्य प्रातः ५घं. ३० मि. (भा.स्टैं.टा.)				
															प्र.	अं.	श.	मु.				सूर्योदय		सूर्यास्त						
घ.	प.			घ.	प.		घ.	प.		घ.	प.		घ.	प.	श्रावण	अगस्त	श्रावण	जिल्काद		घ.	प.	घं.	मि.	घं.	मि.	रा.	अं.	क.	वि.	
३३	३	१	र.	१५	८	मघा	३८	५९	व. प.	४ ५५	३६ ०	ब.	१५	०८	२८	१२	२१	२९	सिंह			५	५१	१९	४	३	२५	८	३५	चन्द्रदर्शन, मु. ३०,
३२	५९	२	चं.	६	५३	पू.फा.	३३	१४	शि.	४६	१२	कौ.	६	५३	२९	१३	२२	जि.१	कन्या	४६	५८	५	५१	१९	३	३	२६	६	११	मधुस्रवा तृतीया (सन्धारा तीज), जिल्हिज्ज मु. प्रारम्भ,
अवम		३	च.	५९	४४	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	तृतीया तिथिक्षय,
३२	५५	४	मं.	५३	५९	उ.फा.	२८	४४	सि.	३८	२९	व.	२६	५२	३०	१४	२३	२	कन्या			५	५२	१९	२	३	२७	३	४९	भ. २६/५२ से ५३/५९ तक,
३२	५१	५	बु.	४९	५७	हस्त	२५	५०	सा.	३२	८	ब.	२१	५८	३१	१५	२४	३	तुला	५५	५	५	५३	१९	१	३	२८	१	२७	नागपंचमी, भारत स्वतन्त्रता दिवस,
३२	४७	६	गु.	४७	५१	चित्रा	२४	४७	शु.	२७	१८	कौ.	१८	५४	३२	१६	२५	४	तुला			५	५३	१९	०	३	२८	५९	७	श्रीकल्कि जयन्ती,
३२	४३	७	शु.	४७	४७	स्वाती	२५	४२	शु.	२४	५	ग.	१७	४९	भा.१	१७	२६	५	तुला			५	५४	१८	५९	३	२९	५६	४७	भ. ४७/४७ बाद, सं. सूर्य मघा सिंह में २/२०, मु. १५, (A)
३२	३९	८	श.	४९	४१	विशा.	२८	३५	ब्र.	२२	२७	वि.	१८	४४	२	१८	२७	६	वृश्चिक	१२	४१	५	५४	१८	५८	४	०	५४	२९	भ. १८/४४ तक, बुध पूर्व में उदित ५ घं.५४ मि., (B)
३२	३४	९	र.	५३	२०	अनु.	३३	१५	ऐं.	२२	१५	बा.	२१	३०	३	१९	२८	७	वृश्चिक			५	५५	१८	५७	४	१	५२	११	बुध मार्गी ९/५८,
३२	३०	१०	चं.	५८	२२	ज्ये.	३९	२२	वै.	२३	१६	तै.	२५	५१	४	२०	२९	८	धनु	३९	२२	५	५६	१८	५६	४	२	४९	५५	
३२	२६	११	मं.	६०	०	मूल	४६	३२	वि.	२५	१२	व.	३१	२०	५	२१	३०	९	धनु			५	५६	१८	५५	४	३	४७	४०	भ. ३१/२० बाद,
३२	२२	११	बु.	४	१९	पू.षा.	५४	१५	प्री.	२७	४२	वि.	४	१९	६	२२	३१	१०	धनु			५	५७	१८	५३	४	४	४५	२५	भ. ४/१९ तक, पवित्रा एकादशी व्रत (स.) (देखें पृ.15),
३२	१८	१२	गु.	१०	४५	उ.षा.	६०	०	आ.	३०	२४	बा.	१०	४५	७	२३	भा.१	११	मकर	११	१२	५	५७	१८	५२	४	५	४३	१२	सूर्य सायन कन्या में ९/१५, शरद् ऋतु प्रारम्भ, प्रदोषव्रत, (C)
३२	१३	१३	शु.	१७	११	उ.षा.	२	४	सौ.	३३	१	तै.	१७	११	८	२४	२	१२	मकर			५	५८	१८	५१	४	६	४१	१	शुक्र चित्रा में ५९/३२,
३२	९	१४	श.	२३	१४	श्रव.	९	३५	शो.	३५	१७	व.	२३	१४	९	२५	३	१३	कुम्भ	४३	१०	५	५८	१८	५०	४	७	३८	५०	भ. २३/१४ से ५५/५५ तक, पंचक प्रारम्भ ४३/१०, (D)
३२	५	१५	र.	२८	३७	धनि.	१६	३१	अ.	३७	०	ब.	२८	३७	१०	२६	४	१४	कुम्भ			५	५९	१८	४९	४	८	३६	४१	रक्षाबन्धन (राखी), श्री अमरनाथ यात्रा (जम्मू-कश्मीर), (E)

(A) पुण्यकाल १२ घं. ५० मि. तक, गोस्वामी तुलसीदास जयन्ती, (B) श्रीदुर्गाष्टमी, दूर्वाष्टमी (देखें पृ.14), (C) शक भाद्रपद प्रारम्भ, (D) ऋक् उपाकर्म, श्रीसत्यनारायण व्रत, (E) शुक्ल-कृष्ण-यजु उपाकर्म,

ग्रह स्पष्ट, प्रातः ५ घं.३० मि. (I.S.T.), १८ अगस्त,

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
४ ० ५४ २९	६ २७ ६ ३३	९ ५ ६ ५०	३ १७ ३० १	६ २१ २० ४२	५ १६ ४८ ५१	८ ८ ४३ ४९	३ १० ३९ ३६	९ १० ३९ ३६
५७ ४३	७५१ ५५	६ १७	४ ५८	६ २६	५७ १२	१ ४७	३ ११	३ ११
		व.	व.	मा.	मा.	व.	व.	व.
		उ.	अ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
१ मघा	३ विशा.	३ उ.षा.	१ आश्ले.	१ विशा.	३ हस्त	३ मूल	३ पुष्य	१ श्रवण

कुण्डली सूर्योदय (१८ अग.)

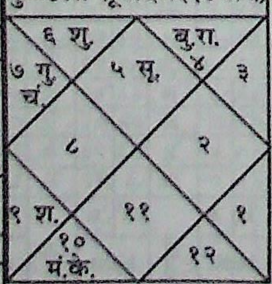

लोकभविष्य—इस चान्द्रमास में पांच रविवार एवं पांच शनिवार होने से कहीं दुर्भिक्ष से जनता परेशान रहे—"पंचार्कवारे दुर्भिक्षम्।" किञ्च—शनिजन्य नेष्ट फल कश्मीर एवं महानगरों में, पश्चिम में कहीं भूकम्प, साम्प्रदायिक उपद्रव, विस्फोट, किंवा अन्य प्राकृतिक आपदा से जनधनहानि के योग बनते हैं। श्रावण शुक्ल में तृतीया तिथिक्षय होने से आगे कार्तिक मास में किसी विशिष्ट व्यक्ति का पद रिक्त हो या सत्ताहस्तान्तरण की घटना स्तब्ध कर सकती है—"**श्रावणे शुक्ल पक्षे च क्षीणा क्वापि तिथिर्भवेत्। तदा वै कार्तिके मासे छत्रभंगस्तदा भवेत्॥**" लेकिन श्रावण शुक्ल सप्तमी को स्वाती नक्षत्र होने से उत्तरी भारत में सुभिक्ष रहे—"**श्रावणे शुक्ल सप्तम्यां स्वातियोगः सुभिक्षकृत्।**"

कुण्डली सूर्योदय (२६ अग.)

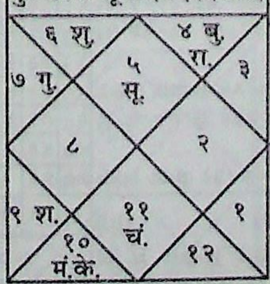

ग्रह स्पष्ट, प्रातः ५ घं.३० मि. (I.S.T.), २६ अगस्त,

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
४ ८ ३६ ४२	१० ३ ७ १७	९ ४ ३० ४५	३ २० २१ ०	६ २२ १६ ४	५ २४ १३ ६	८ ८ ३२ ४	३ १० १४ १०	९ १० १४ १०
५७ ५२	७२२ ३७	० ५३	५४ ५९	७ ३२	५३ ११	१ ४	३ ११	३ ११
		व.	मा.	मा.	मा.	व.	व.	व.
		उ.	उ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
३ मघा	३ धनि.	३ उ.षा.	२ आश्ले.	१ विशा.	१ चित्रा	३ मूल	३ पुष्य	१ श्रवण

ग्रहचाल और बाजार का रुख—१४ अगस्त के लगभग बाजार पलट सकते हैं। तेल, तिलहन, चांदी तेज रहें। १७ अगस्त से रुई, चांदी, मूंग, ज्वार, बाजरा, तिलहन एवं लालमिर्च तेज रहें। १९ अगस्त के लगभग वायदा एवं शेयर बाजार अनिश्चित रहेंगे, सावधानी से काम करें।

आकाश-लक्षण—अगस्त १४, १५, १७ से २०, २४ अगस्त के लगभग पंजाब, चण्डीगढ़, हि.प्र., उ.प्र., कश्मीर, उ.खण्ड किंवा महाराष्ट्र में वायुवेग के साथ कहीं वर्षा के योग हैं। राजस्थान, बिहार, बंगाल, उड़ीसा, म.प्र. आदि में कुछ क्षेत्र सूखाग्रस्त रहें।

श्री वि.सं. २०७५, शाक १९४०, भाद्रपद कृष्ण पक्ष १२

(२७ अगस्त से ९ सितम्बर, सन् २०१८ ई.)
दक्षिणायन, उत्तरगोल, शरद् ऋतु ।

बु. ७ सितम्बर को पूर्व में अस्त हो जायेगा। सायं श. मं. पूर्व में और गु. शु. पश्चिम कपाल में दिखाई देंगे।

दिनमान घ.	दिनमान प.	तिथि	वार	समाप्ति-काल घ.	समाप्ति-काल प.	नक्षत्र	समाप्ति-काल घ.	समाप्ति-काल प.	योग	समाप्ति-काल घ.	समाप्ति-काल प.	करण	समाप्ति-काल घ.	समाप्ति-काल प.	तारीखें प्र. भाद्रपद	तारीखें अं. अगस्त	तारीखें श. भाद्रपद	तारीखें मु. जिल्हिज्जा	चन्द्रराशि-	प्रवेशकाल घ.	प्रवेशकाल प.	चण्डीगढ़ (भा.स्टैं.टा.) सूर्योदय घं.	सूर्योदय मि.	सूर्यास्त घं.	सूर्यास्त मि.	स्पष्ट सूर्य प्रातः ५घं. ३० मि. (भा.स्टैं.टा.) रा.	अं.	क.	वि.	
३२	१	१	चं.	३३	७	शत.	२२	३९	सु.	३८	१	बा.	०	५२	११	२७	५	१५	कुम्भ			६	०	१८	४८	४	९	३४	३४	मंगल मार्गी १६/३०,
३१	५६	२	मं.	३६	३८	पू.भा.	२७	४९	धृ.	३८	१६	तै.	४	५२	१२	२८	६	१६	मीन	११	३७	६	०	१८	४७	४	१०	३२	२७	
३१	५२	३	बु.	३९	३	उ.भा.	३१	५७	शू.	३७	४०	व.	७	५०	१३	२९	७	१७	मीन			६	१	१८	४५	४	११	३०	२३	भ. ७/५० से ३९/०३ तक, कज्जली तृतीया,
३१	४८	४	गु.	४०	११	रेव.	३४	५८	गं.	३६	११	ब.	९	४१	१४	३०	८	१८	मेष	३४	५८	६	१	१८	४४	४	१२	२८	२०	पंचक समाप्त ३४/५८, सूर्य पू.फा. में ५२/१०, राहु (A)
३१	४३	५	शु.	४०	२४	अश्वि.	३६	५०	वृ.	३३	४५	कौ.	१०	२१	१५	३१	९	१९	मेष			६	२	१८	४३	४	१३	२६	१९	
३१	३९	६	श.	३९	१५	भर.	३७	२८	ध्रु.	३०	२०	ग.	९	४९	१६	सि.१	१०	२०	वृष	५२	२७	६	२	१८	४२	४	१४	२४	२०	भ. ३९/१५ बाद, शुक्र तुला में ४३/३२, सितम्बर प्रारम्भ,
३१	३४	७	र.	३६	५०	कृत्ति.	३६	५३	व्या.	२५	५५	वि.	८	०२	१७	२	११	२१	वृष			६	३	१८	४१	४	१५	२२	२३	भ. ८/०२ तक, बुध मघा सिंह में ३७/२०, श्रीकृष्ण (B)
३१	३०	८	चं.	३३	१०	रोहि.	३५	३	ह.	२०	२९	बा.	५	०	१८	३	१२	२२	वृष			६	४	१८	४०	४	१६	२०	२८	गुरु विशा. २ में ०/१३, श्रीकृष्ण जन्माष्टमी व्रत (वै.), (C)
३१	२५	९	मं.	२८	१८	मृग.	३२	१	व.	१४	४	तै.	०	४४	१९	४	१३	२३	मिथुन	३	४०	६	४	१८	३८	४	१७	१८	३५	भ. ५५/१९ बाद, श्रीगुग्गा नवमी,
३१	२१	१०	बु.	२२	२०	आर्द्रा	२७	५३	सि. व्य.	६ ५८	४३ ३४	वि.	२२	२०	२०	५	१४	२४	मिथुन			६	५	१८	३७	४	१८	१६	४४	भ. २२/२० तक,
३१	१६	११	गु.	१५	२५	पुन.	२२	५०	व.	४९	४४	बा.	१५	२५	२१	६	१५	२५	कर्क	९	९	६	५	१८	३६	४	१९	१४	५५	शनि मार्गी २६/२६, अजा एकादशी व्रत (स.),
३१	१२	१२	शु.	७	४६	पुष्य	१७	५	प.	४०	२६	तै.	७	४६	२२	७	१६	२६	कर्क			६	६	१८	३५	४	२०	१३	७	भ. ५९/४२ बाद, बुध पूर्व में अस्त ६ घं. ६ मि., (D)
अवम		१३	शु.	५९	४२	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	त्रयोदशी तिथिक्षय,
३१	७	१४	श.	५९	२९	आश्ले	१०	५६	शि.	३०	५५	वि.	२५	३६	२३	८	१७	२७	सिंह	१०	५६	६	६	१८	३३	४	२१	११	२२	भ. २५/३६ तक,
३१	३	३०	र.	४३	३०	मघा पू.फा.	४ ५८	४४ ५४	सि.	२१	२८	च.	१७	३०	२४	९	१८	२८	सिंह			६	७	१८	३२	४	२२	९	३८	पिठोरी अमा, कुशोत्पाटिनी अमा,

(A) पुष्य २, केतु उ.षा. ४ में २६/०, श्रीगणेश (संकष्ट) चतुर्थी व्रत (चन्द्रोदय देखें पृ.11), बहुला चतुर्थी, (B) जन्माष्टमी व्रत (स्मार्त), रोहिणी योग/जयन्ती योग, (चन्द्रोदय देखें पृ.11,), (C) गोकुलाष्टमी (नन्दोत्सव),अगस्त्य उदित, (D) प्रदोषव्रत, पर्युषण पर्व (जैन),

ग्रह स्पष्ट, प्रातः ५ घं.३० मि. (I.S.T.), ३ सितम्बर,

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
४ १६ २० २९	१ १४ ५६ ५५	९ ४ ४६ २३	४ ० ३३ ५०	६ २३ ११ ४६	६ १ १ १	८ ८ २६ १६	३ ९ ४८ ४४	९ ९ ४८ ४४
५८ ७	८३१ ४२	५ ३४	११ १५	८ ३१	४७ ५३	० १७	३ ११	३ ११
		मा.	मा.	मा.	मा.	व.	व.	व.
		उ.	उ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
पू.फा. १	रोहि. २	उ.षा. ३	मघा १	विशा. १	विशा. ३	मूल ३	पुष्य २	उ.षा. ४

कुण्डली सूर्योदय (३ सितं.)

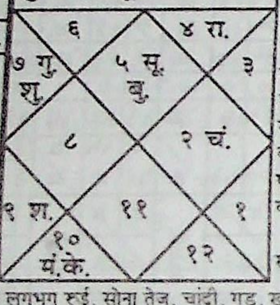

लोकभविष्य—इस चान्द्रमास में पांच सोमवार भारत के लिए शुभ फलप्रद हैं। फिर भी म.प्र., महाराष्ट्र, आसाम, झारखण्ड में उग्रवादजन्य नरसंहार से सरकार को सावधान रहना होगा। गुरु-शुक्र एक राशिस्थ हैं—“गुरु-शुक्रौ यदैकस्थौ नरयुद्धं तदा भवेत्। अकाले वा भवेद् वृष्टिर्जगत्यां नात्र संशयः॥” इस चन्द्रमास में पांच मंगलवार भी मुस्लिम राष्ट्रों के लिए भयावह हैं। पाक, अफगानिस्तान, सीरिया, साऊदी अरब आदि राष्ट्र में आन्तरिक कलह एवं सीमाप्रान्तों पर अशान्ति का कारण बनेंगे—“यत्र मासे महीसूनोः जायन्ते पंचवासराः। रक्तेन पूरिता पृथ्वी छत्रभंगस्तदा भवेत्॥” कहीं प्रतिष्ठित व्यक्ति का निधन व हत्या किंवा सत्ता हस्तान्तरण भी सम्भव है।

ग्रहचाल और बाज़ार का रुख—२९/३० अगस्त को नमक, अनाज, रुई, अलसी, सूत, सण, घी, तेल, शक्कर तेज रहें। १ से ३ सितम्बर के लगभग रुई, सोना तेज, चांदी, गुड़, खाण्ड मन्दे रहें। ४ से ६ सितम्बर के मध्य बाजारों में अस्थिरता, ९ सितम्बर के लगभग बाजार मन्दे हों। भाद्र. अमावस इतवारी है, अत: घी महंगा हो—“भाद्रमासे त्वमावास्यायां रवौ घृत-महर्घता।”

आकाश-लक्षण—अगस्त २९, ३०, ३१, सितम्बर १ से ४ एवं ९ सितम्बर को नेपाल, दार्जीलिंग, विन्ध्यप्रदेश, उ.प्र. एवं उत्तराखण्ड के कुछ भागों में बादलचाल व खण्डवृष्टि हो।

कुण्डली सूर्योदय (९ सितं.)

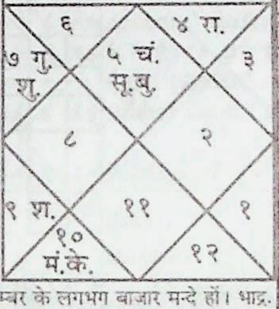

ग्रह स्पष्ट, प्रातः ५ घं.३० मि. (I.S.T.), ९ सितम्बर,

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
४ २२ ९ ३९	४ ११ ४६ ४७	९ ५ ३१ ३१	४ ११ ११ ६	६ २४ १२ ३५	६ ५ ३६ १३	८ ८ २५ ५९	३ ९ २९ ३९	९ ९ २९ ३९
५८ १८	८८६ ३८	१० १३	११२ ४७	९ १२	४२ ४८	० १८	३ ११	३ ११
		मा.	मा.	मा.	मा.	मा.	व.	व.
		उ.	अ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
पू.फा. ३	मघा ४	उ.षा. ३	मघा ४	विशा. २	चित्रा ४	मूल ३	पुष्य २	उ.षा. ४

ी वि.सं. २०७५, शाक १९४०, भाद्रपद शुक्ल पक्ष १३

नमान		तिथि	वार	समाप्ति-काल		नक्षत्र	समाप्ति-काल		योग	समाप्ति-काल		करण	समाप्ति-काल		तारीखें प्र.	अं.	श.	मु.	चन्द्रराशि-प्रवेशकाल			चण्डीगढ़ (भा.स्टैं.टा.) सूर्योदय		सूर्यास्त		स्पष्ट सूर्य प्रातः ५घं. ३० मि. (भा.स्टैं.टा.)				(१० से २५ सितम्बर, सन् २०१८ ई.) दक्षिणायन, उत्तर-दक्षिणगोल, शरद् ऋतु। बु. अस्त है। सायं मं. पूर्व में, श. पूर्व कपाल में और गु. शु. पश्चिम कपाल में होंगे।
.	प.			घ.	प.		घ.	प.		घ.	प.		घ.	प.	भाद्रपद	सितम्बर	भाद्रपद	ज़िल्हिज्ज		घ.	प.	घं.	मि.	घं.	मि.	रा.	अं.	क.	वि.	
०	५८	१	चं.	३६	१०	उ.फा.	५३	४८	सा.	१२	२५	किं.	९.	५०	२५	१०	११	२९	कन्या	१२	३०	६	८	१८	३१	४	२३	७	५७	बुध पू.फा. में ६/५५, शुक्र स्वाती में २८/२०,
०	५४	२	मं.	२९	५१	हस्त	४९	५१	शु. शु.	४ ५६	४ ४४	बा.	३	००	२६	११	२०	३०	कन्या			६	८	१८	३०	४	२४	६	१७	चन्द्रदर्शन, मु. ३०, साम उपाकर्म, मेला डेरा बाबा श्री गोसाईं (A)
३०	४९	३	बु.	२४	५६	चित्रा	४७	२५	ब्र.	५०	४०	ग.	२४	५६	२७	१२	२१	मु.१	तुला	१८	२४	६	९	१८	२८	४	२५	४	३९	भ. ५३/२१ बाद, श्रीवराह जयन्ती, हरितालिका तृतीया, (B)
३०	४५	४	गु.	२१	४६	स्वाती	४६	४९	ऐं.	४६	६	वि.	२१	४६	२८	१३	२२	२	तुला			६	९	१८	२७	४	२६	३	२	भ. २१/४६ तक, सूर्य उ.फा. में ३६/२०, श्री विनायक (C)
३०	४०	५	शु.	२०	३४	विशा.	४८	१३	वै.	४३	८	बा.	२०	३४	२९	१४	२३	३	वृश्चिक	३२	४१	६	१०	१८	२६	४	२७	१	२७	ऋषि पंचमी, संवत्सरी महापर्व (जैन),
३०	३६	६	श.	२१	२६	अनु.	५१	३६	वि.	४१	४७	तै.	२१	२६	३०	१५	२४	४	वृश्चिक			६	१०	१८	२५	४	२७	५९	५४	सूर्यषष्ठी व्रत,
३०	३१	७	र.	२४	१८	ज्ये.	५६	४९	प्री.	४१	५५	व.	२४	१८	३१	१६	२५	५	धनु	५६	४१	६	११	१८	२३	४	२८	५८	२३	भ. २४/१८ से ५६/३४ तक, मुक्ताभरण (सन्तानसप्तमी) व्रत,
३०	२६	८	चं.	२८	५१	मूल	६०	०	आ.	४३	१५	ब.	२८	५१	आ.१	१७	२६	६	धनु			६	११	१८	२२	४	२९	५६	५३	सं. सूर्य कन्या में १/२७, मु. ३०, पुण्यकाल १२घं.४६ मि. (D)
३०	२२	९	मं.	३४	४०	मूल	३	२५	सौ.	४५	२६	बा.	१	४५	२	१८	२७	७	धनु			६	१२	१८	२१	५	०	५५	२५	बुध कन्या में ५५/०७, श्रीचन्द नवमी (उदासीन सम्प्रदाय महोत्सव),
३०	१७	१०	बु.	४१	७	पू.षा.	१०	५७	शो.	४८	२	तै.	७	५३	३	१९	२८	८	मकर	२७	५५	६	१३	१८	१९	५	१	५३	५८	
३०	१२	११	गु.	४७	३७	उ.षा.	१८	४६	अ.	५०	३७	व.	१४	२२	४	२०	२९	९	मकर			६	१३	१८	१८	५	२	५२	३३	भ. १४/२२ से ४७/३७ तक, पद्मा एकादशी व्रत (स.),
३०	८	१२	शु.	५३	३७	श्रव.	२६	११	सु.	५२	४७	ब.	२०	३७	५	२१	३०	१०	कुम्भ	५१	५२	६	१४	१८	१७	५	३	५१	१०	पंचक प्रारम्भ ५१/५२, वामन द्वादशी, श्रवण द्वादशी, श्रीवामन जयन्ती,
३०	३	१३	श.	५८	४२	धनि.	३३	९	धृ.	५४	१६	कौ.	२६	१०	६	२२	३१	११	कुम्भ			६	१४	१८	१६	५	४	४९	४८	शनिप्रदोष व्रत,
२९	५९	१४	र.	६०	०	शत.	३८	५६	शू.	५४	५२	ग.	३०	३९	७	२३	आ.१	१२	कुम्भ			६	१५	१८	१४	५	५	४८	२८	गुरु विशा. ३ में ५१/१५, सूर्य सायन तुला में २/५२, दक्षिण (E)
२९	५४	१४	चं.	२	३७	पू.भा.	४३	३१	गं.	५४	३०	व.	२	३७	८	२४	२	१३	मीन	२७	२९	६	१५	१८	१३	५	६	४७	१०	भ. २/३७ से ३३/५६ तक, बुध हस्त में २४/५२, (F)
२९	४९	१५	मं.	५	१५	उ.भा.	४६	५२	वृ.	५३	९	ब.	५	१५	९	२५	३	१४	मीन			६	१६	१८	१२	५	७	४५	५४	महालय प्रारम्भ, पितृपक्ष प्रारम्भ, प्रतिपदा का श्राद्ध,

(A) आणां (कुराली) पं., (B) गौरी तृतीया, हरितालिका चतुर्थी, कलंक चतुर्थी (चन्द्रदर्शन निषिद्ध) चन्द्रास्त २० घं. ३३ मि., मुहर्रम (हि. सन् १४४०) प्रारम्भ, (C) चतुर्थी, श्रीसिद्धि विनायक व्रत, (D) तक, बुध उ.फा. में ८/१५, श्रीराधाष्टमी, श्रीमहालक्ष्मी व्रत प्रारम्भ, (E) गोल प्रारम्भ, विषुवदिन, श्री अनन्त चतुर्दशी व्रत, शक आश्विन प्रारम्भ, (F) श्रीसत्यनारायण व्रत, प्रोष्ठपदी पूर्णिमा, पूर्णिमा श्राद्ध,

ग्रह स्पष्ट, प्रातः ५ घं.३० मि. (I.S.T.), १७ सितम्बर,

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
४ २९ ५६ ५४	८ ० १७ ५७	९ ७ १३ ३६	४ २६ २१ २०	६ २५ २९ ७	६ १० ४८ ५३	८ ८ ३१ ६	३ १ ४ १४	९ १ ४ १४
५८ ३२	७२४ २७	१५ ५३	११२ ३६	१० १	३३ ४५	१ ५	३ ११	३ ११
		मा.	मा.	मा.	मा.	मा.	व.	व.
		उ.	अ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
उ.फा. १	मूल १	उ.षा. ४	पू.फा. ४	विशा. २	स्वाती २	मूल ३	पुष्य २	उ.षा. ४

कुण्डली सूर्योदय (१७ सितं.)

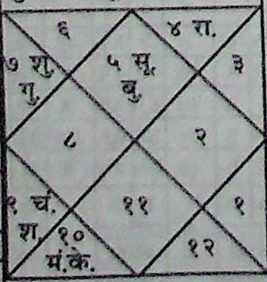

लोकभविष्य—इस चान्द्रमास में पांच चन्द्रवार एवं पांच मंगलवार हैं। भाद्र. शुक्ल छठ शनिवार का अनुराधा नक्षत्र देश की समस्याओं को विपक्ष तूल देगा। लेकिन सूर्य-बुध के कन्या में (बुधादित्ययोग) होने से प्रमुख राजनीतिज्ञ देश को प्रगतिपथ पर ले जाने में सक्षम रहेंगे। लेकिन जन-जीवनोपयोगी वस्तुओं में महंगाई से तो जनसामान्य परेशान रहेगा ही।

ग्रहचाल और बाज़ार का रुख—पक्षारम्भ में बाजार मन्दे रहें। १३ से २० सितम्बर तक जौ, चना, गेहूं, गुड़, शक्कर, खाण्ड, हल्दी, कपास, रेशम, सोना, चांदी, घी, तेल, तिलहन तेज होंगे।

कुण्डली सूर्योदय (२५ सितं.)

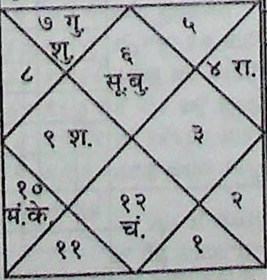

ग्रह स्पष्ट, प्रातः ५ घं.३० मि. (I.S.T.), २५ सितम्बर,

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
५ ७ ४५ ५६	११ ६ २२ ४१	९ १ ३८ ३	५ १० ५९ ४	६ २६ ५१ ५२	६ १४ ३७ ५३	८ ८ ४२ २७	३ ८ ३८ ४८	९ ८ ३८ ४८
५८ ४६	७६० १४	२० ४१	१०५ ३८	१० ४५	२१ २१	१ ५१	३ ११	३ ११
		मा.	मा.	मा.	मा.	मा.	व.	व.
		उ.	अ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
उ.फा. ४	उ.भा. १	उ.षा. ४	हस्त १	विशा. ३	स्वाती ३	मूल ३	पुष्य २	उ.षा. ४

आकाश-लक्षण—१० से १४ सितम्बर एवं १७ से २३ सितम्बर तक भारत के उत्तर-पश्चिमी क्षेत्रों में बादलचाल एवं खण्डवृष्टि हो। हि.प्र. एवं कश्मीर के कुछ हिस्सों में हिमपात के समाचार मिलेंगे।

श्री वि.सं. २०७५, शाक १९४०, आश्विन कृष्ण पक्ष १४

(२६ सितम्बर से ९ अक्तूबर, सन् २०१८ ई.)
दक्षिणायन, दक्षिणगोल, शरद ऋतु।

पक्षान्त में बु. सायं पश्चिम में दृश्य हो जायेगा। सायंकाल मं. पूर्व कपाल में, श. याम्योत्तरवृत्तासन्न, शु. पश्चिम क्षितिज पर और गु. इससे कुछ ऊपर उठा होगा।

दिनमान		तिथि	वार	समाप्ति-काल		नक्षत्र	समाप्ति-काल		योग	समाप्ति-काल		करण	समाप्ति-काल		तारीखें प्र.	अं.	श.	मु.	चन्द्रराशि-प्रवेशकाल			चण्डीगढ़ (भा.स्टैं.टा.) सूर्योदय		सूर्यास्त		स्पष्ट सूर्य प्रातः ५घं. ३० मि. (भा.स्टैं.टा.)				
घ.	प.			घ.	प.		घ.	प.		घ.	प.		घ.	प.	आश्विन	सितम्बर	आश्विन	मुहर्रम		घ.	प.	घं.	मि.	घं.	मि.	रा.	अं.	क.	वि.	
२९	४५	१	बु.	६	३९	रेव.	४९	४	धृ.	५०	५३	कौ.	६	३९	१०	२६	४	१५	मेष	४९	४	६	१७	१८	१०	५	८	४४	४०	पंचक समाप्त ४९/०४, मंगल श्रव. में १/४२, द्वितीया का श्राद्ध,
२९	४०	२	गु.	६	५४	अश्वि.	५०	१३	व्या.	४७	४६	ग.	६	५४	११	२७	५	१६	मेष			६	१७	१८	९	५	९	४३	२८	भ. ३६/३० बाद, सूर्य हस्त में १४/५२, तृतीया का श्राद्ध,
२९	३६	३	शु.	६	६	भर.	५०	२५	ह.	४३	५३	वि.	६	६	१२	२८	६	१७	मेष			६	१८	१८	८	५	१०	४२	१८	भ. ६/६ तक, श्रीगणेशचतुर्थी व्रत, चतुर्थी का श्राद्ध, भरणी श्राद्ध,
२९	३१	४	श.	४	२३	कृत्ति.	४९	४८	व.	३९	२०	बा.	४	२३	१३	२९	७	१८	वृष	५	१९	६	१८	१८	७	५	११	४१	११	पंचमी का श्राद्ध,
२९	२६	५	र.	१	५२	रोहि.	४८	२५	सि.	३४	८	तै.	१	५२	१४	३०	८	१९	वृष			६	१९	१८	५	५	१२	४०	५	भ. ५८/३४ बाद, षष्ठी का श्राद्ध, चन्द्रषष्ठी व्रत,
अवम		६	र.	५८	३४	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	षष्ठी तिथिक्षय,
२९	२२	७	चं.	५४	३४	मृग.	४६	१९	व्य.	२८	२२	वि.	२६	३४	१५	अ.१	९	२०	मिथुन	१७	२६	६	२०	१८	४	५	१३	३९	२	भ. २६/३४ तक, प्लूटो मार्गी २/५८, सप्तमी का श्राद्ध, (A)
२९	१७	८	मं.	४९	५२	आर्द्रा	४३	३२	व.	२२	१	बा.	२२	१२	१६	२	१०	२१	मिथुन			६	२०	१८	३	५	१४	३८	१	बुध चित्रा में १०/३५, अष्टमी का श्राद्ध, श्रीमहालक्ष्मी व्रत समाप्त,
२९	१२	९	बु.	४४	३२	पुन.	४०	७	प.	१५	८	तै.	१७	१२	१७	३	११	२२	कर्क	२६	०	६	२१	१८	२	५	१५	३७	३	नवमी का श्राद्ध, सौभाग्यवती श्राद्ध,
२९	८	१०	गु.	३८	३९	पुष्य	३६	७	शि. सि.	७ ५९	४५ ५८	व.	११	३५	१८	४	१२	२३	कर्क			६	२१	१८	०	५	१६	३६	७	भ. ११/३५ से ३८/३९ तक, दशमी का श्राद्ध,
२९	३	११	शु.	३२	१९	आश्ले.	३१	४१	सा.	५१	५१	ब.	५	२९	१९	५	१३	२४	सिंह	३१	४१	६	२२	१७	५९	५	१७	३५	१३	शुक्र वक्री ४५/३५, एकादशी का श्राद्ध, इन्दिरा एकादशी व्रत (स.),
२८	५९	१२	श.	२५	४४	मघा	२६	५९	शु.	४३	३६	तै.	२५	४४	२०	६	१४	२५	सिंह			६	२३	१७	५८	५	१८	३४	२१	बुध तुला में १५/५०, द्वादशी का श्राद्ध, संन्यासियों का श्राद्ध, (B)
२८	५४	१३	र.	१९	८	पू.फा.	२२	१७	शु.	३५	२४	व.	१९	०८	२१	७	१५	२६	कन्या	३६	७	६	२३	१७	५७	५	१९	३३	३२	भ. १९/०८ से ४५/५९ तक, त्रयोदशी का श्राद्ध, (C)
२८	४९	१४	चं.	१२	५०	उ.फा.	१७	५३	ब्र.	२७	३२	श.	१२	५०	२२	८	१६	२७	कन्या			६	२४	१७	५६	५	२०	३२	४५	चतुर्दशी/अमा एवं अज्ञात मृत्युतिथि वालों का श्राद्ध, (D)
२८	४५	३०	मं.	७	१०	हस्त	१४	९	ऐं.	२०	१५	ना.	७	१०	२३	९	१७	२८	तुला	४२	४०	६	२४	१७	५४	५	२१	३२	०	बुध पश्चिम में उदित १७ घं. ५४ मि., महालय (पितृपक्ष) (E)

(A) अक्टूबर प्रारम्भ, (B) मघा श्राद्ध, शनिप्रदोष व्रत, (C) अपमृत्यु वालों (शस्त्र/विषादि से मृतों) का श्राद्ध, (D) सर्वपितृ श्राद्ध, फल्गु योग (११ घं. ३२ मि. बाद), मेला फल्गु/पिहोवा तीर्थ (हरि.), गजच्छाया योग (१३ घं. ३३ मि. बाद), (E) समाप्त, भौमवती अमा, नाना-नानी का श्राद्ध, गजच्छाया योग(९ घ. १७ मि. तक),

ग्रह स्पष्ट, प्रातः ५ घं.३० मि. (I.S.T.), २ अक्तूबर,

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
५ १४ ३८ ३	२ ९ २१ ३६	९ १२ १३ ३७	५ २२ ५९ ३	६ २८ ८ ४७	६ १६ २७ ८	८ ८ २७ २१	३ ८ १६ ३३	९ ८ १६ ३३
५९ १	८४० ४४	२४ १२	९९ १७	११ १९	७ २६	२ २९	३ ११	३ ११
		मा.	मा.	मा.	मा.	मा.	व.	व.
		उ.	अ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
२	१	१	४	३	३	३	२	४
हस्त	आर्द्रा	श्रवण	हस्त	विशा.	स्वाती	मूल	पुष्य	उ.षा.

कुण्डली सूर्योदय (२ अक्तू.)

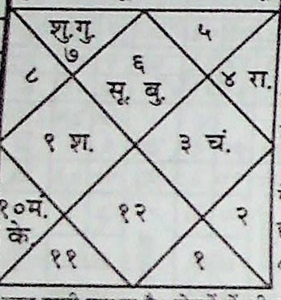

लोकभविष्य—रा.मं. का समसप्तक चल रहा है। शु. गु. बु.—ये तीनों ग्रह तुला राशि में हैं। कहीं भूकम्प, समुद्री तूफान, विस्फोट आदि आपदाओं से हानि के समाचार मिलें। कहीं राजनैतिक अस्थिरता से अशान्ति किंवा असामयिक वर्षा से कहीं फसलों को हानि पहुंचे। मंगलवारी अमावस होने से मुस्लिम राष्ट्रविशेष में आन्तरिक अशान्ति, हत्याकाण्ड व सेना का दबदबा बढ़े।

ग्रहचाल और बाज़ार का रुख—२७ सितम्बर से ५ अक्टूबर तक गेहूं, जौ, ज्वार, गुड़, खाण्ड, कपास, रुई, सूत, नमक, हींग, धनिया, हल्दी, घी, तेल, तिलहन, ग्वार में अच्छी तेजी के झटके आयेंगे। ६ से ८ अक्टूबर तक रुई, चांदी, अलसी, एरण्ड, बिनौला, मूंगफली में कुछ मन्दी सम्भव है। शेयरों में भी मन्दी का झटका आये।

कुण्डली सूर्योदय (९ अक्तू.)

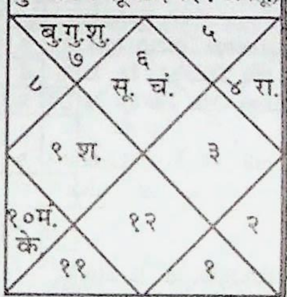

आकाश-लक्षण—सितम्बर २६, २७, २८, अक्टूबर १, ४, ५, ६ को पश्चिमी भागों में कहीं बादलचाल, वायुवेग से वर्षा हो। उत्तर भारत में तापमान में गिरावट अनुभव होगी।

ग्रह स्पष्ट, प्रातः ५ घं.३० मि. (I.S.T.), ९ अक्तूबर,

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
५ २१ ३२ १	५ १९ २७ ४७	९ १५ १२ २१	६ ४ १६ ५०	६ २९ २९ २७	६ १६ ३१ २३	८ ९ १६ ४४	३ ७ ५४ १८	९ ७ ५४ १८
५९ १७	८४१ ५०	२७ १५	९३ ४२	११ ४८	८ ४८	३ ८	३ ११	३ ११
		मा.	मा.	मा.	व.	मा.	व.	व.
		उ.	अ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
४	३	२	४	३	३	३	२	४
हस्त	हस्त	श्रवण	चित्रा	विशा.	स्वाती	मूल	पुष्य	उ.षा.

श्री वि.सं. २०७५, शाक १९४०, आश्विन शुक्ल पक्ष १५

(१० से २४ अक्टूबर, सन् २०१८ ई.)
दक्षिणायन, दक्षिणगोल, शरद्-हेमन्त ऋतु।

१७ अक्टूबर को शु. पश्चिम में अस्त हो जायेगा। सायं मं. याम्योत्तरवृत्त के पास, श. इससे पश्चिम में और गु. बु. पश्चिम क्षितिज में दिखाई देंगे।

दिनमान		तिथि	वार	समाप्ति-काल		नक्षत्र	समाप्ति-काल		योग	समाप्ति-काल		करण	समाप्ति-काल		तारीखें प्र.	अं.	श.	मु.	चन्द्रराशि-प्रवेशकाल			चण्डीगढ़ (भा.स्टैं.टा.) सूर्योदय		सूर्यास्त		स्पष्ट सूर्य प्रातः ५घं. ३० मि. (भा.स्टैं.टा.)				
घ.	प.			घ.	प.		घ.	प.		घ.	प.		घ.	प.	आश्विन	अक्टूबर	आश्विन	मुहर्रम		घ.	प.	घं.	मि.	घं.	मि.	रा.	अं.	क.	वि.	
२८	४०	१	बु.	२	३२	चित्रा	११	२८	वै.	१३	५१	ब.	२	३२	२४	१०	१८	२१	तुला			६	२५	१७	५३	५	२२	३१	१७	चन्द्रदर्शन, मु. १५, सूर्य चित्रा में ४६/५७, बुध स्वाती में (A)
अवम		२	बु.	५९	१३	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	द्वितीया तिथिक्षय,
२८	३६	३	गु.	५७	३५	स्वा.	१०	१०	वि.	८	३५	तै.	२८	२४	२५	११	१९	स.१	वृश्चिक	५५	११	६	२६	१७	५२	५	२३	३०	३६	गुरु विशा. ४ वृश्चिक में ३२/१७, सफर मु. प्रारम्भ,
२८	३१	४	शु.	५७	५०	विशा.	१०	३४	प्री.	४	४०	व.	२७	४२	२६	१२	२०	२	वृश्चिक			६	२६	१७	५१	५	२४	२९	५७	भ. २७/४२ से ५७/५० तक,
२८	२७	५	श.	५९	५९	अनु.	१२	४८	आ.	२	१७	ब.	२८	५५	२७	१३	२१	३	वृश्चिक			६	२७	१७	५०	५	२५	२९	२०	उपांगललिता व्रत,
२८	२२	६	र.	६०	०	ज्येष्ठा	१६	५६	सौ.	१	२१	कौ.	३२	००	२८	१४	२२	४	धनु	१६	५६	६	२८	१७	४९	५	२६	२८	४४	शुक्र-वार्धाक्य प्रारम्भ १७ घं. ४५ मि., सरस्वती आवाहन,
२८	१८	६	चं.	४	०	मूल	२२	४१	शो.	१	४८	तै.	४	०	२९	१५	२३	५	धनु			६	२८	१७	४७	५	२७	२८	११	सरस्वती पूजन,
२८	१३	७	मं.	९	२८	पू.षा.	२९	४३	अ.	३	२०	व.	९	२८	३०	१६	२४	६	मकर	४६	३८	६	२९	१७	४६	५	२८	२७	४०	भ. ९/२८ से ४२/३८ तक, वक्री नेप्च्यून शत. ४ में २०/१५,
२८	९	८	बु.	१५	४९	उ.षा.	३७	२५	सु.	५	३७	ब.	१५	४९	का.१	१७	२५	७	मकर			६	३०	१७	४५	५	२९	२७	१०	सं. सूर्य तुला में ३०/३५, मु. ४५, पुण्यकाल मध्याह्न बाद,(B)
२८	४	९	गु.	२२	२५	श्रव.	४५	७	धृ.	८	८	कौ.	२२	२५	२	१८	२६	८	मकर			६	३१	१७	४४	६	०	२६	४२	वक्री यूरेनस अश्वि. २ में २७/०७, सरस्वती विसर्जन, (C)
२८	०	१०	शु.	२८	३४	धनि.	५२	११	शू.	१०	२५	ग.	२८	३४	३	१९	२७	९	कुम्भ	१८	४६	६	३१	१७	४३	६	१	२६	१५	पंचक प्रारम्भ १८/४६, बुध विशा. में २४/२८, नवरात्र- (D)
२७	५५	११	श.	३३	४२	शत.	५८	८	गं.	१२	३	व.	१	०८	४	२०	२८	१०	कुम्भ			६	३२	१७	४२	६	२	२५	५१	भ. १/०८ से ३३/४२ तक, शनि मूल ४ में ५९/४२, (E)
२७	५१	१२	र.	३७	२५	पू.भा.	६०	०	वृ.	१२	४२	ब.	५	३३	५	२१	२९	११	मीन	४६	३९	६	३३	१७	४१	६	३	२५	२८	
२७	४६	१३	चं.	३९	३३	पू.भा.	२	३६	ध्रु.	१२	९	कौ.	८	२९	६	२२	३०	१२	मीन			६	३३	१७	४०	६	४	२५	७	सोमप्रदोष व्रत,
२७	४२	१४	मं.	४०	५	उ.भा.	५	३२	व्या.	१०	२२	ग.	९	४९	७	२३	का.१	१३	मीन			६	३४	१७	३९	६	५	२४	४७	भ. ४०/०५ बाद, सूर्य सायन वृश्चिक में २५/४७, हेमन्त (F)
२७	३८	१५	बु.	३९	१०	रेव.	६	५८	ह.	७	२३	वि.	९	३७	८	२४	२	१४	मेष	६	५८	६	३५	१७	३८	६	६	२४	३०	भ. ९/३७ तक, पंचक समाप्त ६/५८, सूर्य स्वाती में १२/५०,(G)

शुक्र अस्त १७ अक्तू.

(A) २९/३७, शारद (आश्विन) नवरात्र प्रारम्भ (देखें पृ.15), महाराजा अग्रसेन जयन्ती, (B) शुक्र पश्चिम में अस्त १७ घं. ४५ मि., महाष्टमी, श्रीदुर्गाष्टमी, सरस्वती के लिए बलिदान, महानवमी, (उपवास/पूजा के लिए), (C) नवरात्र समाप्त, महानवमी (बलिदान के लिए), विजयादशमी (दशहरा) (देखें पृ. 16,), आयुध पूजन, अपराजिता पूजन, सीमोल्लंघन, (D) पारणा, श्रीमाध्वाचार्य जयन्ती, भरत-मिलाप, (E) पापांकुशा एकादशी व्रत (स.), (F) ऋतु प्रारम्भ, शक कार्तिक प्रारम्भ, (G) कोजागर व्रत, शरत् पूर्णिमा, श्रीसत्यनारायण व्रत, महर्षि श्री वाल्मीकि-जयन्ती, कार्तिकस्नान प्रारम्भ,

ग्रह स्पष्ट, प्रातः ५ घं.३० मि. (I.S.T.), १७ अक्तूबर,

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
५ २९ २७ ११	९ २ ९ ३	९ १९ ० ५६	६ १६ २६ १	७ १ ५ ३७	६ १४ १५ २३	८ ९ ४४ ९	३ ७ २८ ५२	९ ७ २८ ५२
५९ ३२	७०७ ५२	३० ९	८७ ५४	१२ १७	२६ ५२	३ ४८	३ ११	३ ११
		मा.	मा.	मा.	व.	मा.	व.	व.
		उ.	उ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
२ चित्रा	२ उ.षा.	३ श्रवण	३ स्वाती	४ विशा.	३ स्वाती	३ मूल	२ पुष्य	४ उ.षा.

कुण्डली सूर्योदय (१७ अक्तू.)

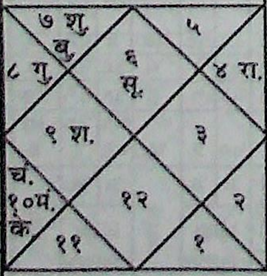

लोकभविष्य—प्रतिपदा, पूर्णिमा एवं तुलासंक्रान्ति बुधवारी हैं। तुला राशि में बुध, सूर्य एवं शुक्र एक साथ होने से सभी वस्तुओं में भयंकर तेजी बने एवं वर्षा के अभाव से फसलें नष्ट हों—"एकराशौ यदा यान्ति सौम्य-शुक्र-दिनाधिपाः। सर्वधान्य-महर्घत्वं मेघाः स्वल्पजलप्रदा॥" एकादशी शनिवारी होने से कहीं सत्ता में आश्चर्यजनक परिवर्तन, राजनेता का निधन हो, प्राकृतिक आपदा किंवा दहशत के कारण नगर-ग्रामादि से पलायन हो; क्योंकि मूल नक्षत्र का शनि प्रजा में अनेक रोगों से कष्टप्रद होता है। चोरी-रोगादि से परेशानी भी रहे—"एकादश्यां शनौ तस्मिन् छत्रभंगोऽथवा भुवि। नगर-ग्रामभंगः स्यात् वैरि-चौराद्युपद्रवाः॥"

ग्रहचाल और बाज़ार का रुख—पक्षारम्भ में रुई, सूत, सोना, चांदी, गुड़, खाण्ड, अरहर, गेहूं, चना, घी, तेल, तिलहन, सभी धातुएं तेज हों। १७/१८ अक्टूबर एवं २१, २३, २४ अक्टूबर के लगभग वायदा बाजार तेज रहें। १८/१९ अक्टूबर को मन्दी का झटका आये।

आकाश-लक्षण—अक्टूबर १०, ११, १७, १८, १९, २१, २३ एवं २४ को श्रीलंका, आसाम, बंगाल एवं उ.प्र. के कुछ भागों में बादलचाल व वर्षा के योग हैं। उ.भारत एवं हिमाचल प्रदेश, उत्तराखण्ड आदि में शरद् ऋतु का अनुभव होगा।

कुण्डली सूर्योदय (२४ अक्तू.)

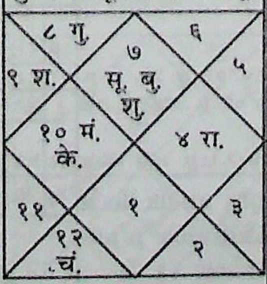

ग्रह स्पष्ट, प्रातः ५ घं.३० मि. (I.S.T.), २४ अक्तूबर,

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
६ ६ २४ ३२	११ २७ ५२ ४७	९ २२ ३८ २८	६ २६ २५ १७	७ २ ३२ ३९	६ १० ३४ ५	८ १० १२ २६	३ ७ ६ ३७	९ ७ ६ ३७
५९ ४५	७१५ ३२	३२ १३	८२ १७	१२ ३७	३६ ६	४ २१	३ ११	३ ११
		मा.	मा.	मा.	व.	मा.	व.	व.
		उ.	उ.	उ.	अ.	उ.	अ.	अ.
४ चित्रा	४ रेवती	४ श्रवण	२ विशा.	४ विशा.	२ स्वाती	४ मूल	२ पुष्य	४ उ.षा.

(२५ अक्टूबर से ७ नवम्बर, सन् २०१८ ई.)
दक्षिणायन, दक्षिणगोल, हेमन्त ऋतु ।

शु. ३१ अक्टूबर से प्रातः पूर्व में दृश्य हो जायेगा। सायं मं. याम्योत्तरवृत्तासन्न, श. पश्चिम कपाल में और बु. गु. पश्चिम क्षितिजासन्न देखे जा सकते हैं।

श्री वि.सं. २०७५, शाक १९४०, कार्तिक कृष्ण पक्ष १६																	तारीखें				चन्द्रराशि-प्रवेशकाल			चण्डीगढ़ (भा.स्टैं.टा.)				स्पष्ट सूर्य प्रातः ५घं. ३० मि. (भा.स्टैं.टा.)				
दिनमान		तिथि	वार	समाप्ति-काल		नक्षत्र	समाप्ति-काल		योग	समाप्ति-काल		करण	समाप्ति-काल		प्र. कार्तिक	अं. अक्टूबर	श. कार्तिक	मु. सफर				सूर्योदय		सूर्यास्त						
घ.	प.			घ.	प.		घ.	प.		घ.	प.		घ.	प.						घ.	प.	घं.	मि.	घं.	मि.	रा.	अं.	क.	वि.	
२७	३३	१	गु.	३७	०	अश्वि.	७	५	व. सि.	३ ५८	२० २५	बा.	८	०५	९	२५	३	१५	मेष			६	३६	१७	३७	६	७	२४	१४	मंगल धनि. में १४/३२,
२७	२९	२	शु.	३३	५३	भर.	६	६	व्य.	५२	४६	तै.	५	२७	१०	२६	४	१६	वृष	२०	४२	६	३६	१७	३६	६	८	२४	१	बुध वृश्चिक में ३५/२५,
२७	२५	३	श.	३०	२	कृत्ति.	४	१७	व.	४६	३६	व.	१	५८	११	२७	५	१७	वृष			६	३७	१७	३५	६	९	२३	५०	भ. १/५८ से ३०/०२ तक, गुरु अनु. १ में ४१/१३, (A)
२७	२१	४	र.	२५	४१	रोहि. मृग.	१ ५९	५५ ८	प.	४०	६	बा.	२५	४१	१२	२८	६	१८	मिथुन	३०	३२	६	३८	१७	३४	६	१०	२३	४१	शुक्र उदित ३१ अक्तू.
२७	१६	५	च.	२१	२	आर्द्रा	५६	७	शि.	३३	२१	तै.	२१	०२	१३	२९	७	१९	मिथुन			६	३९	१७	३३	६	११	२३	३४	बुध अनु. में ७/४०,
२७	१२	६	मं.	१६	११	पुन.	५२	५८	सि.	२६	२८	व.	१६	११	१४	३०	८	२०	कर्क	३८	४५	६	३९	१७	३२	६	१२	२३	२९	भ. १६/११ से ४३/४२ तक, वक्री शुक्र चित्रा में २४/२२,
२७	८	७	बु.	११	१४	पुष्य	४९	४४	सा.	१९	३०	ब.	११	१४	१५	३१	९	२१	कर्क			६	४०	१७	३१	६	१३	२३	२६	शुक्र पूर्व में उदित ६ घं ४० मि., अहोई अष्टमी (पंजाब-हरियाणा),
२७	४	८	गु.	६	१३	आश्ले.	४६	२७	शु.	१२	२९	कौ.	६	१३	१६	न.१	१०	२२	सिंह	४६	२७	६	४१	१७	३१	६	१४	२३	२६	राहु पुष्य १, केतु उ.षा. ३ में १९/२०, नवम्बर प्रारम्भ,
२७	०	९	शु.	१	११	मघा	४३	१२	शु. ब्र.	५ ५८	२७ २८	ग.	१	११	१७	२	११	२३	सिंह			६	४२	१७	३०	६	१५	२३	२७	भ. २८/४१ से ५६/११ तक,
अवम		१०	शु.	५६	११	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	दशमी तिथिक्षय,
२६	५६	११	श.	५१	१८	पू.फा.	४०	३	ऐ.	५१	३४	ब.	२३	४५	१८	३	१२	२४	कन्या	५४	१७	६	४३	१७	२९	६	१६	२३	३१	शुक्रबाल्य समाप्त ६ घं. ४० मि., रमा एकादशी व्रत (स्मार्त),
२६	५२	१२	र.	४६	४२	उ.फा.	३७	८	वै.	४४	५४	कौ.	१९	००	१९	४	१३	२५	कन्या			६	४३	१७	२८	६	१७	२३	३७	रमा एकादशी व्रत (वैष्णव), गोवत्स द्वादशी,
२६	४८	१३	च.	४२	३६	हस्त	३४	४०	वि.	३८	३७	ग.	१४	३९	२०	५	१४	२६	कन्या			६	४४	१७	२७	६	१८	२३	४५	भ. ४२/३६ बाद, धन त्रयोदशी, सोम प्रदोष व्रत, (B)
२६	४४	१४	मं.	३९	१५	चित्रा	३२	५४	प्री.	३२	५४	वि.	१०	५५	२१	६	१५	२७	तुला	३	४०	६	४५	१७	२७	६	१९	२३	५५	भ. १०/५५ तक, सूर्य विशा. में ३२/४७, मंगल कुम्भ (C)
२६	४०	३०	बु.	३६	५४	स्वाती	३२	६	आ.	२७	५७	च.	८	०४	२२	७	१६	२८	तुला			६	४६	१७	२६	६	२०	२४	७	दीपावली, श्रीमहालक्ष्मी पूजन, श्रीमहावीर निर्वाण दिवस (जैन),

(A) श्रीगणेशचतुर्थी व्रत, करक चतुर्थी (करवा चौथ), (चन्द्रोदय देखें पृ.11), (B) श्रीहनुमान्-जयन्ती (उ.भा.) (देखें पृ..17), यमप्रीत्यर्थ दीपदान, (C) में ४/०,
नरक चतुर्दशी (पूर्वारुणोदय वाली),

ग्रह स्पष्ट, प्रातः ५ घं.३० मि. (I.S.T.), १ नवम्बर,

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
६	३	९	७	७	६	८	३	९
१४	१८	२७	६	४	५	१०	६	६
२३	२३	३	५२	१४	४७	४९	४१	४१
२८	२४	५	३१	४९	७	१६	११	११
६०	८४५	३४	७२	१२	३२	४	३	३
१	४२	८	११	५७	३९	५५	११	११
		मा.	मा.	मा.	व.	मा.	व.	व.
		उ.	उ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
स्वाती ३	आश्ले. १	धनि. २	अनु. २	अनु. १	चित्रा ४	मूल ४	पुष्य २	उ.षा. ४

कुण्डली सूर्योदय (१ नवं.)

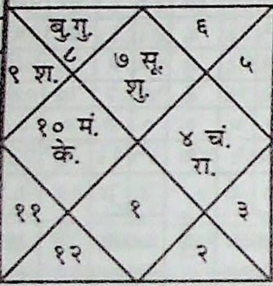

लोकभविष्य—इस चान्द्रमास में पांच गुरुवार हैं एवं शनि की मंगल पर विशेष दृष्टि भी है। पश्चिमी प्रान्तों एवं देशविशेष में साम्प्रदायिक कलह, उपद्रवों से वातावरण अशान्त रहे—"**यत्र मासे पंचवारा जायन्ते च बृहस्पतेः। विग्रहः पश्चिमे देशे खड्गयुद्धं च जायते॥**" बुध- गुरु दोनों वृश्चिक राशि में हैं, अतः घी, तेल, तिलहन एवं सभी अनाज महंगे होंगे। चीन, पाक, अफगानिस्तान, बंगलादेश एवं उत्तरी कोरिया आदि में वातावरण अशान्त बनेगा एवं उग्रवाद से जनधनहानि भी सम्भव है।

ग्रहचाल और बाज़ार का रुख—पक्षारम्भ से २६ अक्टूबर तक रुई, घी, तेल, सरसों आदि तिलहन, खाद्य तेल तेज रहेंगे। २७ से ३० अक्टूबर तक सोना, चांदी, रुई, कपास के बाजार कुछ नीचे आ सकते हैं। ३१ अक्टूबर से ५ नवम्बर तक रुई, सोना, चांदी, सूत, चावल, घी, छुहारे आदि मेवाजात में तेजी बने।

कुण्डली सूर्योदय (७ नवं.)

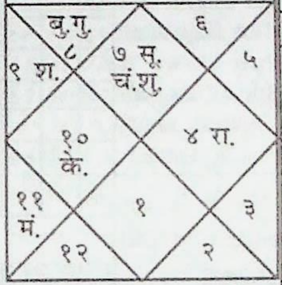

ग्रह स्पष्ट, प्रातः ५ घं.३० मि. (I.S.T.), ७ नवम्बर,

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
६	६	१०	७	७	६	८	३	९
२०	१२	०	१३	५	२	११	६	६
२४	५	३१	३३	३३	५६	१९	२२	२२
९	३५	०	२३	०	२४	४८	६	६
६०	८०३	३५	५७	१३	२१	५	३	३
१४	५५	२१	२५	८	३४	१९	११	११
		मा.	मा.	मा.	व.	मा.	व.	व.
		उ.	उ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
विशा. १	स्वाती २	धनि. ३	अनु. ४	अनु. १	चित्रा ३	मूल ४	पुष्य १	उ.षा. ३

आकाश-लक्षण—अक्टूबर २६, २७, २८, ३०, ३१ एवं नवम्बर २, ३, ५, ६ के लगभग कश्मीर, हि.प्र., उत्तराखण्ड आदि में कहीं बादलचाल एवं वायुवेग के साथ वर्षा एवं हिमपात भी हो।

श्री वि.सं. २०७५, शाक १९४०, कार्तिक शुक्ल पक्ष १७

(८ से २३ नवम्बर, सन् २०१८ ई.)
दक्षिणायन, दक्षिणगोल, हेमन्त ऋतु ।

११ नवं. को गु. तथा २१ नवं. को बु. पश्चिम में अस्त हो जायेगा। प्रातः शु. को पूर्व में देखें। सायं मं. याम्योत्तरवृत्त में और श. पश्चिम में होगा।

दिनमान		तिथि	वार	समाप्ति-काल		नक्षत्र	समाप्ति-काल		योग	समाप्ति-काल		करण	समाप्ति-काल		तारीखें प्र. कार्तिक	अं. नवम्बर	श. कार्तिक	मु. सफर	चन्द्रराशि-प्रवेशकाल			चण्डीगढ़ (भा.स्टैं.टा.) सूर्योदय		सूर्यास्त		स्पष्ट सूर्य प्रातः ५घं. ३० मि. (भा.स्टैं.टा.)				
घ.	प.			घ.	प.		घ.	प.		घ.	प.		घ.	प.						घ.	प.	घं.	मि.	घं.	मि.	रा.	अं.	क.	वि.	
२६	३६	१	गु.	३५	५२	विशा.	३२	३२	सौ.	२४	०	किं.	६	२३	२३	८	१७	२१	वृश्चिक	१७	१७	६	४७	१७	२५	६	२१	२४	२१	गुरुवार्धक्य प्रारम्भ १७ घं. २३ मि., गोवर्धन-पूजा, (A)
२६	३३	२	शु.	३६	२१	अनु.	३४	२६	शो.	२१	१३	बा.	६	०६	२४	९	१८	३०	वृश्चिक			६	४७	१७	२४	६	२२	२४	३७	चन्द्रदर्शन, मु. ३०, यमद्वितीया (भाई दूज), विश्वकर्मा पूजा,
२६	२९	३	श.	३८	३०	ज्येष्ठा	३७	५७	अ.	१९	४०	तै.	७	२५	२५	१०	१९	र.१	धनु	३७	५७	६	४८	१७	२४	६	२३	२४	५४	बुध ज्येष्ठा में ३०/३७, रबि-उल-अव्वल मु. प्रारम्भ,
२६	२५	४	र.	४२	१७	मूल	४३	१	सु.	१९	२४	व.	१०	२३	२६	११	२०	२	धनु			६	४९	१७	२३	६	२४	२५	१३	भ. १०/२३ से ४२/१७ तक, गुरु अस्त १७ घं. २३ मि.,
२६	२२	५	चं.	४७	३१	पू.षा.	४९	२८	धृ.	२०	१८	ब.	१४	५४	२७	१२	२१	३	धनु			६	५०	१७	२३	६	२५	२५	३३	गुरु अनु. २ में १/३५, ज्ञान पंचमी (जैन),
२६	१८	६	मं.	५३	४८	उ.षा.	५६	५३	शू.	२२	६	कौ.	२०	३९	२८	१३	२२	४	मकर	६	१४	६	५१	१७	२२	६	२६	२५	५५	सूर्यषष्ठी व्रत (बिहार), गुरु अस्त ११ नवम्बर
२६	१४	७	बु.	६०	०	श्रव.	६०	०	गं.	२४	२७	ग.	२७	०९	२९	१४	२३	५	मकर			६	५२	१७	२१	६	२७	२६	१९	
२६	११	७	गु.	०	३०	श्रव.	४	३९	वृ.	२६	५४	व.	०	३०	३०	१५	२४	६	कुम्भ	३८	३२	६	५३	१७	२१	६	२८	२६	४४	भ. ०/३० से ३३/४३ तक, पंचक प्रारम्भ ३८/३२,
२६	८	८	शु.	६	५६	धनि.	१२	११	ध्रु.	२८	५८	ब.	६	५६	मा.१	१६	२५	७	कुम्भ			६	५३	१७	२०	६	२९	२७	१०	सं. सूर्य वृश्चिक में २१/०५, मु. १५, पुण्यकाल मध्याह्न बाद, (B)
२६	४	९	श.	१२	२९	शत.	१८	४७	व्या.	३०	११	कौ.	१२	२९	२	१७	२६	८	कुम्भ			६	५४	१७	२०	७	०	२७	३७	मंगल शत. में ८/४५, बुध वक्री ०/२२,
२६	१	१०	र.	१६	३६	पू.भा.	२३	५८	ह.	३०	१४	ग.	१६	३६	३	१८	२७	९	मीन	७	५०	६	५५	१७	२०	७	१	२८	६	भ. ४७/४५ बाद,
२५	५८	११	चं.	१८	५४	उ.भा.	२७	२५	व.	२८	५३	वि.	१८	५४	४	१९	२८	१०	मीन			६	५६	१७	१९	७	२	२८	३६	भ. १८/५४ तक, सूर्य अनु. में ४७/२०, हरिप्रबोधिनी (C)
२५	५५	१२	मं.	१९	१८	रेव.	२९	१	सि.	२६	३	बा.	१९	१८	५	२०	२९	११	मेष	२९	१	६	५७	१७	१९	७	३	२९	८	पंचक समाप्त २९/०१, भौमप्रदोष व्रत, चातुर्मास्य (D)
२५	५२	१३	बु.	१७	५२	अश्वि.	२८	५१	व्य.	२१	४८	तै.	१७	५२	६	२१	३०	१२	मेष			६	५८	१७	१८	७	४	२९	४०	बुध पश्चिम में अस्त १७ घं. १८ मि., वैकुण्ठ चतुर्दशी,
२५	४९	१४	गु.	१४	४७	भर.	२७	९	व.	१६	१७	व.	१४	४७	७	२२	मा.१	१३	वृष	४१	३०	६	५९	१७	१८	७	५	३०	१४	भ. १४/४७ से ४२/३६ तक, वक्री बुध अनु. में ४०/०, (E)
२५	४६	१५	शु.	१०	२४	कृत्ति.	२४	१२	प.	९	४३	ब.	१०	२४	८	२३	२	१४	वृष			६	५९	१७	१८	७	६	३०	५०	कार्तिक पूर्णिमा, मेला पुष्करराज (राज.), भीष्म पंचक (F)

(A) अन्नकूट, बलिपूजा, गोक्रीड़ा, (B) शुक्र मार्गी २३/४०, गोपाष्टमी (देखें पृ.18), अक्षय नवमी (देखें पृ.18), कूष्माण्ड नवमी, (C) एकादशी व्रत (स.), तुलसी विवाह, हरिप्रबोधोत्सव, भीष्म पंचक प्रारम्भ, (D) व्रत-नियमादि समाप्त, (E) सूर्य सायन धनु में १८/५१, श्रीसत्यनारायण व्रत, त्रिपुरोत्सव, शक मार्गशीर्ष प्रारम्भ, (F) समाप्त, श्रीगुरुनानक जयन्ती, कार्तिक स्नान समाप्त,

ग्रह स्पष्ट, प्रातः ५ घं.३० मि. (I.S.T.),
१६ नवम्बर,

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
६ २९ २७ १२	१० ३ ३३ ५३	१० ५ ५५ ३५	७ ११ १७ ३५	७ ७ ३२ २	६ १ ७ ५३	८ १२ ९ ४७	३ ५ ५३ २९	९ ५ ५३ २९
६० २७	७१६ ४४	३६ ५२	५ ३	१३ ११	० ७	५ ५०	३ ११	३ ११
		मा.	मा.	मा.	मा.	मा.	व.	व.
		उ.	उ.	अ.	उ.	उ.	अ.	अ.
विशा. ३	धनि. ४	धनि. ४	ज्ये. १	अनु. २	चित्रा ३	मूल ४	पुष्य १	उ.षा. ३

कुण्डली सूर्योदय (१६ नवं.)

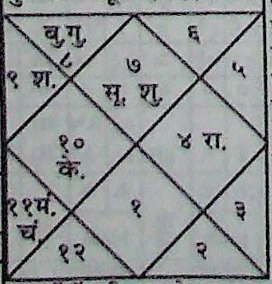

लोकभविष्य—बुध-गुरु दोनों इस पक्ष में अस्त हो जाते हैं। शुक्र-बुध वक्रगति में हैं। अतः दक्षिण-पश्चिमी भूभाग पर प्राकृतिक प्रकोप, भूकम्प, तूफान आदि से हानि सम्भव है। अनुराधा नक्षत्र का सूर्य एवं कार्तिक शुक्ला पंचमी सोमवार को होने से उत्तरभारत के लिए शुभ रहेगी—"**कार्तिकस्य सिते पक्षे पंचम्यां सोमवासरः। नर-नारी-नृपाणां च सर्वत्र सुखदो भवेत्॥**" लेकिन गुरु-बुध अस्त होकर राष्ट्रनायकों के लिए संकटापन्न स्थिति का संकेत देते हैं। अनेक क्षेत्र सरकार को सूखाग्रस्त घोषित करने पड़ेंगे।

ग्रहचाल और बाज़ार का रुख—पक्षारम्भ में ८ से १० नवम्बर तक तेल, तिलहन, चावल, उड़द, चना, ऊन, रुई, चांदी, सोना, घी, गुड़, खाण्ड में तेजी बने। १२ से १५ नवम्बर तक सोना, चांदी, रूई, शेयर मन्दे हों। १६ नवम्बर को कुछ तेजी आकर, पक्षान्त तक बाजारों में अस्थिरता रहे।

आकाश-लक्षण—नवम्बर ९, १०, १२, १४, १५, १६, १७, १९, २० एवं २२ को हरियाणा, चण्डीगढ़, दिल्ली, हि.प्र., जम्मू-कश्मीर एवं उत्तराखण्ड में वायुवेग के साथ कहीं खण्डवृष्टि, कहीं बादलचाल हो। उ.भारत में शीतलहर जोड़ पकड़ेगी एवं हि.प्र. में हिमपात से यातायात बाधित होगा।

कुण्डली सूर्योदय (२३ नवं.)

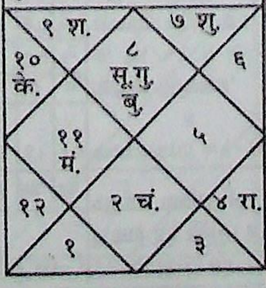

ग्रह स्पष्ट, प्रातः ५ घं.३० मि. (I.S.T.),
२३ नवम्बर,

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
७ ६ ३० ५२	१ ३ २६ ४१	१० १० १६ २७	७ १६ २४ ५८	७ ९ ५ ३०	६ १ ५७ ४०	८ १२ ५१ ४१	३ ५ ३१ १४	९ ५ ३१ १७
६० ३७	८४८ २७	३७ ४५	६४ ३२	१३ २३	१६ ०	६ १०	३ ११	३ ११
		मा.	व.	मा.	मा.	मा.	व.	व.
		उ.	अ.	अ.	उ.	उ.	अ.	अ.
अनु. १	कृत्ति. ३	शत. २	अनु. ४	अनु. २	चित्रा ३	मूल ४	पुष्य १	उ.षा. ३

श्री वि.सं. २०७५, शाक १९४०, मार्गशीर्ष कृष्ण पक्ष १८

(२४ नवम्बर से ७ दिसम्बर, सन् २०१८ ई.)
दक्षिणायन, दक्षिणगोल, हेमन्त ऋतु ।

६ दिसं. को गु. और ३ दिसं. को बु. प्रातः पूर्व में दिखाई देने लगेंगे। इनसे ऊपर शु. चमक रहा होगा। सायं मं. पश्चिम कपाल और श. पश्चिम क्षितिज में होगा।

दिनमान घ.	दिनमान प.	तिथि	वार	समाप्ति-काल घ.	समाप्ति-काल प.	नक्षत्र	समाप्ति-काल घ.	समाप्ति-काल प.	योग	समाप्ति-काल घ.	समाप्ति-काल प.	करण	समाप्ति-काल घ.	समाप्ति-काल प.	तारीखें प्र. मार्गशीर्ष	तारीखें अं. नवम्बर	तारीखें श. मार्गशीर्ष	तारीखें मु. र.उ.अ.	चन्द्रराशि-प्रवेशकाल	घ.	प.	चण्डीगढ़ (भा.स्टैं.टा.) सूर्योदय घं.	सूर्योदय मि.	सूर्यास्त घं.	सूर्यास्त मि.	स्पष्ट सूर्य प्रातः ५घं. ३० मि. (भा.स्टैं.टा.) रा.	अं.	क.	वि.	
२५	४३	१	श.	५	१	रोहि.	२०	२३	शि. सि.	२ ५४	२१ ३०	कौ.	५	१	९	२४	३	१५	मिथुन	४८	१५	७	०	१७	१७	७	७	३१	२७	नेप्च्यून मार्गी ५९/१५, गुरु उदित ६ दिसम्बर
अवम		२	श.	५९	२	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	द्वितीया तिथिक्षय,
२५	४०	३	र.	५२	४३	मृग.	१६	१	सा.	४६	२०	व.	२५	५२	१०	२५	४	१६	मिथुन			७	१	१७	१७	७	८	३२	५	भ. २५/५२ से ५२/४३ तक,
२५	३७	४	चं.	४६	२२	आर्द्रा	११	२७	शु.	३८	८	ब.	१९	३२	११	२६	५	१७	कर्क	५३	४	७	२	१७	१७	७	९	३२	४५	श्रीगणेशचतुर्थी व्रत,
२५	३५	५	मं.	४०	१४	पुन.	६	५६	शु.	३०	३	कौ.	१३	१८	१२	२७	६	१८	कर्क			७	३	१७	१७	७	१०	३३	२६	गुरु अनु. ३ में ०/१५, शनि पू.षा. १ में २७/५७,
२५	३२	६	बु.	३४	२८	पुष्य आश्ले.	२ ५८	४२ ५६	ब्र.	२२	१६	ग.	७	२१	१३	२८	७	१९	सिंह	५८	५६	७	४	१७	१७	७	११	३४	१०	भ. ३४/२८ बाद,
२५	३०	७	गु.	२९	१४	मघा	५५	४०	ऐं.	१४	५२	वि.	१	५१	१४	२९	८	२०	सिंह			७	४	१७	१६	७	१२	३४	५४	भ. १/५१ तक, श्रीभैरवाष्टमी (कालाष्टमी) (देखें पृ.18),
२५	२८	८	शु.	२४	३४	पू.फा.	५३	०	वै.	७	५६	कौ.	२४	३४	१५	३०	९	२१	सिंह			७	५	१७	१६	७	१३	३५	४०	
२५	२५	९	श.	२०	३३	उ.फा.	५१	०	वि. प्री.	१ ५५	२९ ३६	ग.	२०	३३	१६	दि.१	१०	२२	कन्या	७	२५	७	६	१७	१६	७	१४	३६	२८	भ. ४८/५३ बाद, दिसम्बर प्रारम्भ,
२५	२३	१०	र.	१७	१३	हस्त	४९	४३	आ.	५०	१६	वि.	१७	१३	१७	२	११	२३	कन्या			७	७	१७	१६	७	१५	३७	१७	भ. १७/१३ तक, सूर्य ज्येष्ठा में ५७/४५,
२५	२१	११	चं.	१४	४०	चित्रा	४९	१३	सौ.	४५	३५	बा.	१४	४०	१८	३	१२	२४	तुला	१९	२०	७	८	१७	१६	७	१६	३८	८	बुध पूर्व में उदित ७ घं. ८ मि., उत्पन्ना एकादशी व्रत (स.),
२५	१९	१२	मं.	१२	५८	स्वाती	४९	३६	शो.	४१	३५	तै.	१२	५८	१९	४	१३	२५	तुला			७	९	१७	१६	७	१७	३९	०	शुक्र स्वाती में २/१५, भौमप्रदोष व्रत,
२५	१७	१३	बु.	१२	१३	विशा.	५१	०	अ.	३८	२४	व.	१२	१३	२०	५	१४	२६	वृश्चिक	३५	३२	७	९	१७	१६	७	१८	३९	५३	भ. १२/१३ से ४२/२३ तक, वक्री बुध विशा. में ३०/०७,
२५	१६	१४	गु.	१२	३४	अनु.	५३	३२	सु.	३६	५	श.	१२	३४	२१	६	१५	२७	वृश्चिक			७	१०	१७	१६	७	१९	४०	४७	बुध मार्गी ४९/१३, गुरु उदित ७ घं. १० मि.,
२५	१४	३०	शु.	१४	७	ज्येष्ठा	५७	१८	धृ.	३४	४३	ना.	१४	०७	२२	७	१६	२८	धनु	५७	१८	७	११	१७	१६	७	२०	४१	४३	

ग्रह स्पष्ट, प्रातः ५ घं.३० मि. (I.S.T.).
३० नवम्बर,

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
७ १३ ३५ ४३	४ १३ २५ ३५	१० १४ ४२ ५७	७ ७ ३० २७	७ १० ३९ १७	६ ४ ३० ३७	८ १३ ३५ ४८	३ ५ ८ ५८	९ ५ ८ ५८
६० ४७	८३६ २०	३८ २९	६८ ३०	१३ २४	२९ ४	६ २८	३ ११	३ ११
		मा.	व.	मा.	मा.	मा.	व.	व.
		उ.	अ.	अ.	उ.	उ.	अ.	अ.
अनु. ४	पू.फा. १	शत. ३	अनु. २	अनु. ३	चित्रा ४	पू.षा. १	पुष्य १	उ.षा. ३

कुण्डली सूर्योदय (३० नवं.)

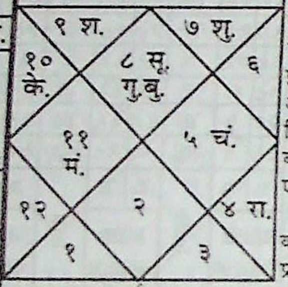

लोकभविष्य—इस चान्द्रमास में पांच शनिवार हैं, शनि की मंगल पर विशेष दृष्टि है, अतः राष्ट्रीय प्रतिष्ठित नेतृत्व के समक्ष कठिन परिस्थितियां उपस्थित होंगी। सीमाप्रान्तों पर शत्रुदेशों की गतिविधि चिन्तनीय रहेगी—"**शनेश्च पंचकं दृष्टवा पाताले कम्पते फणी। ईशानदेशभंगश्च वह्निदाहो महर्घता॥**" भूकम्प, विस्फोट, अग्निकाण्ड आदि प्राकृतिक उत्पातों से जनधनहानि हो। अमावस के दिन वृश्चिक राशि में चतुग्रही योग भी शासनतन्त्र के समक्ष पाक-बंगलादेशकृत उपद्रवों से कई प्रश्नचिह्न उपस्थित करेगा। सीमाप्रान्तों एवं महानगरों की रक्षा आवश्यक है।

ग्रहचाल और बाज़ार का रुख—पक्षारम्भ में सोना, चांदी, रुई, कपास में मन्दे का रुख बनकर २८ नवम्बर से ३ दिसम्बर तक प्रत्येक बाजार, सोना, चांदी, तेल, तिलहन, गुड़, खाण्ड में तेजी बनेगी। ६ दिसम्बर को अनाज तेज रहें, तेल, तिलहन में कुछ मन्दे का रूख बने। ७ दिसम्बर तेजी का दिन है।

आकाश-लक्षण—नवम्बर २६, २८ दिसम्बर, २, ३, ४, ५, ६, ७ को उत्तरी भारत भयंकर शीतलहर की चपेट में रहेगा। धुन्ध से अनेकत्र यातायात बाधित होगा। पर्वतीय भूभाग हिमपात से कटा रहे। उ.भा., राजस्थान एवं उ.प्र. में कहीं खण्डवृष्टि भी सम्भव है।

कुण्डली सूर्योदय (७ दिसं.)

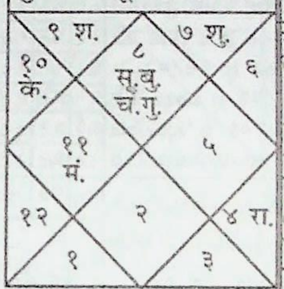

ग्रह स्पष्ट, प्रातः ५ घं.३० मि. (I.S.T.),
७ दिसम्बर,

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
७ २० ४१ ४५	७ १७ ८ ५९	१० १९ १४ १२	७ ३ १ २२	७ १२ १२ ५७	६ ८ २५ ५४	८ १४ २१ ४९	३ ४ ४६ ४३	९ ४ ४६ ४३
६० ५७	७५२ २३	३९ ६	६ १३	१३ २०	३९ ८	६ ४२	३ ११	३ ११
		मा.	मा.	मा.	मा.	मा.	व.	व.
		उ.	उ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
ज्ये. २	ज्ये. १	शत. ४	विशा. ४	अनु. ३	स्वाती १	पू.षा. १	पुष्य १	उ.षा. ३

श्री वि.सं. २०७५, शाक १९४०, मार्गशीर्ष शुक्ल पक्ष १९

(८ से २२ दिसम्बर, सन् २०१८ ई.)

दक्षिण-उत्तरायण, दक्षिणगोल, हेमन्त-शिशिर ऋतु।

१६ दिसं. को श. पश्चिम में लुप्त हो जायेगा। प्रातः बु. गु. पूर्व क्षितिज में और इनसे ऊपर शु. दिखाई देगा। सायं मं. पश्चिम कपाल में होगा।

दिनमान		तिथि	वार	समाप्ति-काल		नक्षत्र	समाप्ति-काल		योग	समाप्ति-काल		करण	समाप्ति-काल		तारीखें प्र. मार्गशीर्ष	अं. दिसम्बर	श. मार्गशीर्ष	मु. र.उ.अ.	चन्द्रराशि-प्रवेशकाल			चण्डीगढ़ (भा.स्टैं.टा.) सूर्योदय		सूर्यास्त		स्पष्ट सूर्य प्रातः ५घं. ३० मि. (भा.स्टैं.टा.)				
घ.	प.			घ.	प.		घ.	प.		घ.	प.		घ.	प.						घ.	प.	घं.	मि.	घं.	मि.	रा.	अं.	क.	वि.	
२५	१२	१	श.	१६	५९	मूल	६०	०	शू.	३४	२१	ब.	१६	५९	२३	८	१७	२९	धनु			७	१२	१७	१७	७	२१	४२	४०	चन्द्रदर्शन, मु. ३०, मंगल पू.भा. में ६/०, बुध अनु. में १२/३०,
२५	११	२	र.	२१	९	मूल	२	१७	गं.	३४	५८	कौ.	२१	०९	२४	९	१८	र.१	धनु			७	१२	१७	१७	७	२२	४३	३८	गुरुबाल्य समाप्त ७ घं. १० मि., रवि उस्सानी मु. प्रारम्भ,
२५	९	३	चं.	२६	३१	पू.षा.	८	२८	वृ.	३६	२५	ग.	२६	३१	२५	१०	१९	२	मकर	२५	१२	७	१३	१७	१७	७	२३	४४	३६	भ. ५९/४० बाद,
२५	८	४	मं.	३२	४९	उ.षा.	१५	३८	ध्रु.	३८	३२	वि.	३२	४९	२६	११	२०	३	मकर			७	१४	१७	१७	७	२४	४५	३६	भ. ३२/४९ तक, गुरु अनु. ४ में ५७/५५,
२५	७	५	बु.	३९	३८	श्रव.	२३	२३	व्या.	४०	५९	ब.	६	१३	२७	१२	२१	४	कुम्भ	५७	२१	७	१४	१७	१७	७	२५	४६	३६	पंचक प्रारम्भ ५७/२१, बलिदानदिन श्रीगुरु तेगबहादुर जी,
२५	६	६	गु.	४६	२४	धनि.	३१	१४	ह.	४३	२४	कौ.	१३	०१	२८	१३	२२	५	कुम्भ			७	१५	१७	१८	७	२६	४७	३७	चम्पा षष्ठी (महाराष्ट्र), गुहषष्ठी, स्कन्द षष्ठी,
२५	५	७	शु.	५२	३०	शत.	३८	३५	व.	४५	२०	ग.	१९	२७	२९	१४	२३	६	कुम्भ			७	१६	१७	१८	७	२७	४८	३८	भ. ५२/३० बाद, मित्रसप्तमी,
२५	४	८	श.	५७	२१	पू.भा.	४४	५२	सि.	४६	२३	वि.	२४	५५	३०	१५	२४	७	मीन	२८	२७	७	१६	१७	१८	७	२८	४९	४०	भ. २४/५५ तक,
२५	४	९	र.	६०	०	उ.भा.	४९	३५	व्य.	४६	१३	बा.	२८	५५	पौ.१	१६	२५	८	मीन			७	१७	१७	१९	७	२९	५०	४२	सं. सूर्य मूल धनु में ४/४०, मु. ४५, पुण्यकाल १५घं.९ मि.(A)
२५	३	९	चं.	०	२९	रेव.	५२	२७	व.	४४	३४	कौ.	०	२९	२	१७	२६	९	मेष	५२	२७	७	१८	१७	१९	८	०	५१	४४	पंचक समाप्त ५२/२७,
२५	३	१०	मं.	१	३६	अश्वि.	५३	१८	प.	४१	१९	ग.	१	३६	३	१८	२७	१०	मेष			७	१८	१७	१९	८	१	५२	४७	भ. ३१/०८ बाद, मोक्षदा एकादशी व्रत (स्मार्त),
२५	२	११	बु.	०	४१	भर.	५२	१२	शि.	३६	३०	वि.	०	४१	४	१९	२८	११	मेष			७	१९	१७	२०	८	२	५३	५१	भ. ०/४१ तक, मोक्षदा एकादशी व्रत (वै.), श्रीगीता जयन्ती,
अवम		१२	बु.	५७	४७	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	द्वादशी तिथिक्षय,
२५	२	१३	गु.	५३	८	कृत्ति.	४९	२१	सि.	३०	१३	कौ.	१५	२७	५	२०	२९	१२	वृष	६	३७	७	१९	१७	२०	८	३	५४	५४	प्रदोषव्रत,
२५	२	१४	शु.	४७	३	रोहि.	४५	५	सा.	२२	४०	ग.	२०	०५	६	२१	३०	१३	वृष			७	२०	१७	२१	८	४	५५	५९	भ. ४७/०३ बाद, शुक्र विशा. में ५३/१८, सूर्य सायन मकर (B)
२५	२	१५	श.	३९	५५	मृग.	३९	४५	शु.	१४	९	वि.	१३	२९	७	२२	पौ.१	१४	मिथुन	१२	२९	७	२०	१७	२१	८	५	५७	३	भ. १३/२९ तक, बुध ज्येष्ठा में ३५/०३, श्रीसत्यनारायण (C)

(A) तक, शनि अस्त १७ घं. १९ मि., (B) में ५१/२३, उत्तरायण एवं शिशिर ऋतु प्रारम्भ, (C) व्रत, श्रीदत्त जयन्ती, शाक पौष प्रारम्भ,

ग्रह स्पष्ट, प्रातः ५ घं.३० मि. (I.S.T.), १५ दिसम्बर,

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
७ २८ ४९ ४२	१० २३ २३ ३८	१० २४ २९ १	७ ७ ४१ ८	७ १३ ५१ १३	६ १४ १० ३६	८ १५ १६ १२	३ ४ २१ १६	९ ४ २१ १६
६१ २	७२३ २	३९ ३९	६० २६	१३ ११	४७ ३९	६ ५५	३ ११	३ ११
		मा.	मा.	मा.	मा.	मा.	व.	व.
		उ.	उ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
ज्ये. ४	पू.भा. २	पू.भा. २	अनु. २	अनु. ४	स्वाती ३	पू.षा. १	पुष्य १	उ.षा. ३

कुण्डली सूर्योदय (१५ दिसं.)

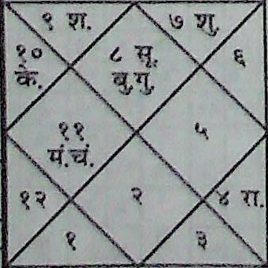

लोकभविष्य--इस पक्ष में पूर्णिमा एवं प्रतिपदा शनिवारी हैं, शनि का अस्त भी इसी पक्ष में है, गुरु का उदय भी दुर्भिक्ष की सूचना देता है। कुछ प्रान्तों में भारी दुर्भिक्ष एवं कहीं साम्प्रदायिक उपद्रव, उग्रवादियों द्वारा हत्याकाण्ड एवं भूकम्प, सुनामी आदि प्राकृतिक प्रकोप द्वारा भारी संकटापन्न स्थिति का संकेत मिलता है--"गुरु-शुक्रोदयश्चास्तो यदा वै मार्गशीर्षके। देशान्तरं हि गच्छन्ति तदा क्षुत्पीडिता जनाः॥" सूर्य-शनि का धनु राशि में मेल भी प्रतिष्ठित व्यक्तिविशेष के लिए भारी सावधानी का है एवं सीमावर्ती कोई देश आक्रामक रुख बनायेगा, जिससे शासनतन्त्र को सुरक्षाउपाय सुसन्नद्ध रखने होंगे। इस समय प्रधान नेताओं की सुरक्षा का विशेष ध्यान रखना आवश्यक है।

ग्रहचाल और बाजार का रुख--८ से ११ दिसम्बर तक सोना, चांदी, रुई, अनाज मन्दे रहें। ९ से ११ दिसं. तक विशेष मन्दी रहे। १६ दिस. को रुई, कपास, सूत, तिल, तेल, सोना, चांदी में तेजी का झटका आकर रुई, अनाज एवं शेयर मन्दे हों। २२ दिसं. को सभी बाजार तेज होंगे।

आकाश-लक्षण--दिसम्बर ८, ९, १०, ११, १६, १७, २१ एवं २२ दिस. को उ.भारत में भयंकर शीतलहर चलेगी। धुन्ध से यातायात रुद्ध होगा। ९, १६, १७, २१, २२ दिसं. को हि.प्र., कश्मीर, उ.खण्ड आदि में भारी हिमपात एवं उ.भारत के कुछ भागों में खण्डवृष्टि भी हो।

कुण्डली सूर्योदय (२२ दिसं.)

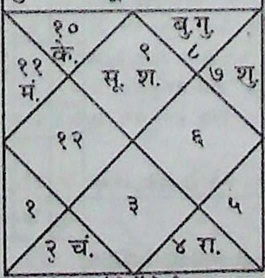

ग्रह स्पष्ट, प्रातः ५ घं.३० मि. (I.S.T.), २२ दिसम्बर,

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
८ ५ ५७ ६	१ २५ ५० ९	१० २९ ७ ३६	७ १५ ४८ ६	७ १५ ३० ५७	६ २० ०१ ५२	८ १६ ४ ५५	३ ३ ५९ १	९ ३ ५९ १
६१ ५	८८० ४५	३९ ५९	७८ ३५	१२ ५९	५३ १६	७ १	३ ११	३ ११
		मा.	मा.	मा.	मा.	मा.	व.	व.
		उ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.	अ.
मूल २	मृग. १	पू.भा. ३	अनु. ४	अनु. ४	विशा. १	पू.षा. १	पुष्य १	उ.षा. ३

श्री वि.सं. २०७५, शाक १९४०, पौष कृष्ण पक्ष २०															तारीखें				चन्द्रराशि-प्रवेशकाल			चण्डीगढ़ (भा.स्टैं.टा.)				स्पष्ट सूर्य प्रातः ५घं. ३० मि. (भा.स्टैं.टा.)				(२३ दिसं. २०१८ ई. से ५ जन. २०१९ ई.) उत्तरायण, दक्षिणगोल, शिशिर ऋतु ।
दिनमान		तिथि	वार	समाप्ति-काल		नक्षत्र	समाप्ति-काल		योग	समाप्ति-काल		करण	समाप्ति-काल		प्र.	अं.	श.	मु.				सूर्योदय		सूर्यास्त						श. अस्त है। प्रातः बु. गु. शु. पूर्व में तथा सायं मं. पश्चिम कपाल में होगा।
															पौष	दिसम्बर	पौष	र.उ.स.												
घ.	प.			घ.	प.		घ.	प.		घ.	प.		घ.	प.						घ.	प.	घं.	मि.	घं.	मि.	रा.	अं.	क.	वि.	
२५	२	१	र.	३२	७	आर्द्रा	३३	४५	शु. ब्र.	४ ५५	५५ २०	बा.	६	०१	८	२३	२	१५	मिथुन			७	२१	१७	२२	८	६	५८	८	मंगल मीन में १४/०,
२५	२	२	चं.	२४	२	पुन.	२७	३०	ऐं.	४५	३८	ग.	२४	०२	९	२४	३	१६	कर्क	१४	२	७	२१	१७	२२	८	७	५९	१४	भ. ५०/०३ बाद,
२५	२	३	मं.	१६	४	पुष्य	२१	२२	वै.	३६	७	वि.	१६	०४	१०	२५	४	१७	कर्क			७	२२	१७	२३	८	९	०	२०	भ. १६/०४ तक, श्रीगणेशचतुर्थी व्रत,
२५	३	४	बु.	८	३१	आश्ले	१५	४१	वि.	२७	४	बा.	८	३१	११	२६	५	१८	सिंह	१५	४१	७	२२	१७	२३	८	१०	१	२७	शनि पू.षा. २ में ५४/२०, जोड़मेला श्रीफतेहगढ़ साहिब (पं.),
२५	३	५	गु.	१	४१	मघा	१०	४६	प्री.	१८	३९	तै.	१	४१	१२	२७	६	१९	सिंह			७	२३	१७	२४	८	११	२	३४	भ. ५५/५० बाद, गुरु ज्ये. १ में १६/१७,
अवम		६	गु.	५५	५०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	षष्ठी तिथिक्षय,
२५	४	७	शु.	५१	६	पू.फा.	६	४९	आ.	११	५	वि.	२३	२८	१३	२८	७	२०	कन्या	२१	०	७	२३	१७	२५	८	१२	३	४२	भ. २३/२८ तक, मंगल उ.भा. में १३/११,
२५	५	८	श.	४७	३८	उ.फा.	४	२	सौ. शो.	४ ५८	२७ ५०	बा.	१९	२२	१४	२९	८	२१	कन्या			७	२३	१७	२५	८	१३	४	५०	सूर्य पू.षा. में १०/०७,
२५	६	९	र.	४५	२९	हस्त	२	२९	अ.	५४	१६	तै.	२१	३३	१५	३०	९	२२	तुला	३२	१३	७	२४	१७	२६	८	१४	५	५९	
२५	७	१०	चं.	४४	४०	चित्रा	२	१५	सु.	५०	४३	व.	१५	०५	१६	३१	१०	२३	तुला			७	२४	१७	२७	८	१५	७	८	भ. १५/०५ से ४४/४० तक,
२५	८	११	मं.	४५	१०	स्वाती	३	१८	धृ.	४८	११	ब.	१४	५५	१७	ज.१	११	२४	वृश्चिक	४९	५५	७	२४	१७	२७	८	१६	८	१८	बुध मूल धनु में ६/०५, शुक्र वृश्चिक में ३३/१२, (A)
२५	९	१२	बु.	४६	५५	विशा.	५	३६	शू.	४६	३६	कौ.	१६	०२	१८	२	१२	२५	वृश्चिक			७	२४	१७	२८	८	१७	९	२८	नेप्च्यून पू.भा. १ में ४१/३०,
२५	१०	१३	गु.	४९	५०	अनु.	९	५	गं.	४५	५४	ग.	१८	२२	१९	३	१३	२६	वृश्चिक			७	२५	१७	२९	८	१८	१०	३८	भ.४९/५० बाद, राहु पुन. ४, केतु उ.षा. २ में ११/१३, (B)
२५	१२	१४	शु.	५३	५१	ज्येष्ठा	१३	४०	वृ.	४६	२	वि.	२१	५०	२०	४	१४	२७	धनु	१३	४०	७	२५	१७	३०	८	१९	११	४९	भ. २१/५० तक, शुक्र अनु. में ५३/२२,
२५	१३	३०	श.	५८	५२	मूल	११	१५	ध्रु.	४६	५५	च.	२६	२१	२१	५	१५	२८	धनु			७	२५	१७	३०	८	२०	१२	५९	शनैश्चरी अमावस,

(A) सफला एकादशी व्रत (स.), जनवरी (इंग्लिश नववर्ष २०१९ ई.) प्रारम्भ, (B) प्रदोष व्रत,

ग्रह स्पष्ट, प्रातः ५ घं.३० मि. (I.S.T.), २९ दिसम्बर,

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
८ १३ ४ ५२	५ ७ ५८ ४५	११ ३ ४८ १२	७ २५ २३ ५८	७ १७ १ ४	६ २६ २८ २१	८ १६ ५४ १६	३ ३ ३६ ४५	९ ३ ३६ ४५
६१ ९	८२३ १८	४० १४	८६ ४	१२ ४३	५७ ३५	७ ४	३ ११	३ ११
		मा.	मा.	मा.	मा.	मा.	व.	व.
		उ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.	अ.
४ मूल	४ उ.फा.	१ उ.भा.	३ ज्ये.	१ ज्ये.	२ विशा.	२ पू.षा.	१ पुष्य	३ उ.षा.

कुण्डली सूर्योदय (२९ दिसं.)

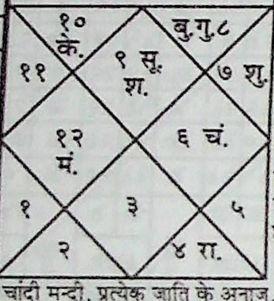

लोकभविष्य—इस पक्ष में मीनस्थ मंगल पर गुरु की विशेष दृष्टि है, तुलास्थ शुक्र पर मंगल की विशेष दृष्टि है, अतः सरकार महंगाई पर कण्ट्रोल पाने में सफल होगी। लेकिन शनि-सूर्य-बुध-चन्द्र पक्षान्त में एकत्र हैं, अतः विपक्ष किंवा शत्रुदेश की गतिविधि से प्रधान नेतृत्व चिन्तित रहे, सुरक्षा की दृष्टि से भी राजनीतिज्ञों को सावधान रहना होगा—"**चत्वारः पंच वा खेटा बलिनस्त्वेकराशिगाः। राज्ञां बहुभयं दद्युररिभिर्दुखदा मताः॥**" अमावस को शनिवार एवं पू.षा. नक्षत्र है, अतः आगामी वर्ष केन्द्रीय शासनसत्ता के लिए कठिन परिस्थितियों वाला रहे एवं परीक्षा की घड़ी वाला सिद्ध होगा—"**पूर्वाषाढ़ा तथा ज्येष्ठाऽमावस्यां पौषमासके। वाराः शनि-कुजादित्या भाविवर्ष-विनाशकाः॥**"

ग्रहचाल और बाज़ार का रुख—पक्षारम्भ में २९ दिसम्बर तक चांदी मन्दी, प्रत्येक जाति के अनाज, तेल, तिलहन, गुड़, घी, ऊनी वस्त्र तेज रहें। १ जनवरी (सन् २०१९ ई.) को वायदा बाजारों में झटके से तेजी बनेगी। लेकिन तेजी में तुरन्त लाभ लें, तेजी ठहरेगी नहीं। २ से ४ जनवरी तक बाजारों में उठापटक रहे।

आकाश-लक्षण—दिसम्बर २३, २४, २७, २८, २९ एवं जनवरी (सन् २०१९ ई.) १, २, ३, ४ को उ.भारत शीतलहर की चपेट में रहे। पर्वतीय भूभाग भारी बर्फबारी के कारण हिमाच्छादित रहे। यातायात बाधित रहे।

कुण्डली सूर्योदय (५ जन.)

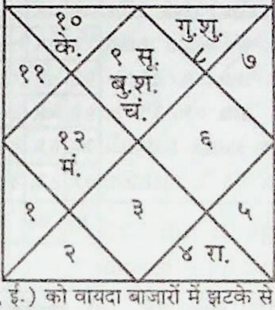

ग्रह स्पष्ट, प्रातः ५ घं.३० मि. (I.S.T.), ५ जनवरी,

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
८ २० १३ १	८ ८ २८ ८	११ ८ ३० २५	८ ५ ३९ ९	७ १८ २९ ५	७ ३ २१ ५१	८ १७ ४३ ५२	३ ३ १४ २९	९ ३ १४ २९
६१ ११	७२५ ४९	४० २६	९० ०	१२ २३	६० ५२	७ ६	३ ११	३ ११
		मा.	मा.	मा.	मा.	मा.	व.	व.
		उ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.	अ.
३ पू.षा.	३ मूल	२ उ.भा.	२ मूल	१ ज्ये.	१ अनु.	२ पू.षा.	४ पुन.	२ उ.षा.

श्री वि.सं. २०७५, शाक १९४०, पौष शुक्ल पक्ष २१

(६ से २१ जनवरी, सन् २०१९ ई.)
उत्तरायण, दक्षिणगोल, शिशिर ऋतु।

९ जन. को बु. पूर्व में अस्त और १९ जन. को श. उदित हो जायेगा। प्रातः गु. शु. पूर्व में और सायं मं. पश्चिम कपाल में होगा।

दिनमान		तिथि	वार	समाप्ति-काल		नक्षत्र	समाप्ति-काल		योग	समाप्ति-काल		करण	समाप्ति-काल		तारीखें				चन्द्रराशि-प्रवेशकाल			चण्डीगढ़ (भा.स्टैं.टा.)				स्पष्ट सूर्य प्रातः ५घं. ३० मि. (भा.स्टैं.टा.)				
															प्र. पौष	अं. जनवरी	श. पौष	मु. र.उ.सा.				सूर्योदय		सूर्यास्त						
घ.	प.			घ.	प.		घ.	प.		घ.	प.		घ.	प.						घ.	प.	घं.	मि.	घं.	मि.	रा.	अं.	क.	वि.	
२५	१५	१	र.	६०	०	पू.षा.	२५	४३	व्या.	४८	२७	किं.	३१	४७	२२	६	१६	२९	मकर	४२	२८	७	२५	१७	३१	८	२१	१४	१०	यूरेनस मार्गी ४६/२२, प्लूटो उ.षा. १ में ३०/४४,
२५	१७	१	चं.	४	४२	उ.षा.	३२	५५	ह.	५०	३०	ब.	४	४२	२३	७	१७	३०	मकर			७	२५	१७	३२	८	२२	१५	२१	चन्द्रदर्शन, मु. ४५,
२५	१९	२	मं.	११	११	श्रव.	४०	३७	व.	५२	५३	कौ.	११	११	२४	८	१८	ज.१	मकर			७	२५	१७	३३	८	२३	१६	३१	जमद-उल-अव्वल मु. प्रारम्भ,
२५	२१	३	बु.	१८	२	धनि.	४८	३०	सि.	५५	२१	ग.	१८	०२	२५	९	१९	२	कुम्भ	१४	३४	७	२५	१७	३३	८	२४	१७	४२	भ. ५१/२६ बाद, पंचक प्रारम्भ १४/३४, बुध पू.षा में (A)
२५	२३	४	गु.	२४	५१	शत.	५६	११	व्य.	५७	३१	वि.	२४	५१	२६	१०	२०	३	कुम्भ			७	२५	१७	३४	८	२५	१८	५२	भ. २४/५१ तक,
२५	२५	५	शु.	३१	१३	पू.भा.	६०	०	व.	५९	२६	बा.	३१	१३	२७	११	२१	४	मीन	४६	३३	७	२५	१७	३५	८	२६	२०	१	सूर्य उ.षा. में १४/४७,
२५	२७	६	श.	३६	३८	पू.भा.	३	१३	प.	६०	०	कौ.	३	५५	२८	१२	२२	५	मीन			७	२५	१७	३६	८	२७	२१	१०	गुरु ज्ये. २ में २३/०,
२५	२९	७	र.	४०	४१	उ.भा.	९	१०	प.	०	२३	ग.	८	३९	२९	१३	२३	६	मीन			७	२५	१७	३७	८	२८	२२	१९	भ. ४०/४१ बाद, लोहड़ी (पंजाब, हरियाणा, जम्मू-कश्मीर),(B)
२५	३२	८	चं.	४३	०	रेव.	१३	३८	शि. सि.	० ५८	११ ३६	वि.	११	५०	मा.१	१४	२४	७	मेष	१३	३८	७	२५	१७	३८	८	२९	२३	२७	भ. ११/५० तक, पंचक समाप्त १३/३८, सं. सूर्य मकर (C)
२५	३४	९	मं.	४३	२०	अश्वि.	१६	१६	सा.	५५	२९	बा.	१३	१०	२	१५	२५	८	मेष			७	२५	१७	३९	९	०	२४	३४	पोंगल(द.भा.),
२५	३७	१०	बु.	४१	३७	भर.	१६	५७	शु.	५०	४६	तै.	१२	२८	३	१६	२६	९	वृष	३१	४८	७	२५	१७	३९	९	१	२५	४०	मंगल रेवती में ५९/४५,
२५	४०	११	गु.	३७	५४	कृत्ति.	१५	३९	शु.	४४	३१	व.	९	४५	४	१७	२७	१०	वृष			७	२४	१७	४०	९	२	२६	४५	भ. ९/४५ से ३७/५४ तक, शुक्र ज्येष्ठा में ३६/१७, (D)
२५	४२	१२	शु.	३२	२५	रोहि.	१२	३१	ब्र.	३६	५१	ब.	५	०१	५	१८	२८	११	मिथुन	४०	१८	७	२४	१७	४१	९	३	२७	५०	बुध उ.षा. में ३०/०, प्रदोष व्रत (देखें पृ.18),
२५	४५	१३	श.	२५	२५	मृग.	७	४७	ऐं.	२८	०	तै.	२५	२५	६	१९	२९	१२	मिथुन			७	२४	१७	४२	९	४	२८	५५	शनि उदित ७ घं. २४ मि.,
२५	४८	१४	र.	१७	१८	आर्द्रा पुन.	१ ५४	४७ ५६	वै.	१८	१५	व.	१७	१८	७	२०	३०	१३	कर्क	४१	४०	७	२४	१७	४३	९	५	२९	५८	भ. १७/१८ से ४२/५२ तक, बुध मकर में ३४/१२, (E)
२५	५१	१५	चं.	८	२६	पुष्य	४७	३८	वि. प्री.	७ ५७	५३ १४	ब.	८	२६	८	२१	मा.१	१४	कर्क			७	२३	१७	४४	९	६	३१	१	पौषी पूर्णिमा, माघस्नान प्रारम्भ, शक माघ प्रारम्भ,

(A) ५९/२०, बुध पूर्व में अस्त ७ घं. २५ मि., (B) अवतार दिन श्री गुरुगोबिन्द सिंह जी, (C) में ३१/०५, मु. ३०, पुण्यकाल मध्याह्न बाद और अगले दिन मध्याह्न तक, मकर संक्रान्ति, (D) पुत्रदा एकादशी व्रत (स.), (E) सूर्य सायन कुम्भ में १७/४२, श्रीसत्यनारायण व्रत,

ग्रह स्पष्ट, प्रातः ५ घं.३० मि. (I.S.T.),
१४ जनवरी,

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
८	११	११	८	७	७	८	३	९
२९	२६	१४	१९	२०	१२	१८	२	२
२३	९	३५	२५	१८	४२	४७	४५	४५
२८	११	६	१८	१७	५२	२३	५२	५२
६१	७५१	४०	९४	११	६३	७	३	३
७	६	३६	२	४८	५९	१	११	११
		मा.	मा.	मा.	मा.	मा.	व.	व.
		उ.	अ.	उ.	उ.	अ.	अ.	अ.
उ.षा. १	रेवती ३	उ.भा. ४	पू.षा. २	ज्ये. २	अनु. ३	पू.षा. २	पुन. ४	उ.षा. २

कुण्डली सूर्योदय (१४ जन.)

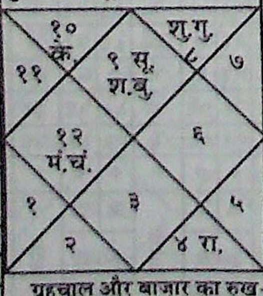

लोकभविष्य—इस पक्ष में मकरस्थ सूर्य बुध का राहु के साथ समसप्तकयोग बन रहा है। देश की सुरक्षा-व्यवस्था को सुदृढ़ बनाने के लिए शस्त्रास्त्रों के निर्माण एवं संग्रह के लिए विशेष खर्च करना पड़ेगा—"शनिक्षेत्रे यदा भानुरस्त्रास्त्रस्य महर्घता। शनौ भौमे गुरुक्षेत्रे रोगपीड़ा महत्यपि॥" मंगलक्षेत्र में गुरु-शुक्र एवं शनि-बुध-सूर्य की स्थिति के अनुसार रोगों से जन-जीवन परेशान रहे। चीन, पाक, बंगलादेश, उ. कोरिया एवं अन्य मुस्लिम राष्ट्रों से अशान्ति से मुक्ति पाने के लिए भारत को भी शस्त्रास्त्रयुक्त सैन्यबल को तैयार रखना पड़ेगा। अमेरिका एवं ब्रिटेन की नीति भी आगे विश्वसनीय नहीं रहेगी। १८ से २१ जनवरी (सन् २०१९ ई.) तक किसी प्रान्त या देशविशेष में प्राकृतिक आपदा (भूकम्प, समुद्री-तूफान, विस्फोट आदि) किंवा शत्रुकृत नेष्ट गतिविधि से भारी कष्ट के योग हैं।

कुण्डली सूर्योदय (२१ जन.)

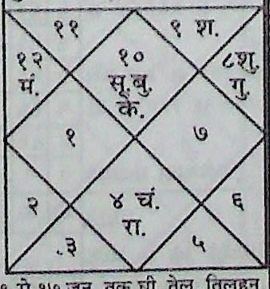

ग्रहचाल और बाज़ार का रुख—१० जनवरी तक सभी वायदा एवं हाजर बाजार ऊपर-नीचे रहेंगे। ११ से १७ जन. तक घी, तेल, तिलहन, गुड़, खाण्ड, सोना, चांदी एवं शेयर बाजार मन्दे हों। २०/२१ जन. को बाजार उठेंगे।

आकाश-लक्षण—जन. ७, ८, १०, ११, १२ एवं १४ से २१ जन. के लगभग भयंकर शीतलहर से उ. भारव ठिठुरेगा। पर्वतीय प्रान्तों में हिमपात एवं कुछ प्रान्तों में बादलचाल व खण्डवृष्टि भी सम्भव है।

ग्रह स्पष्ट, प्रातः ५ घं.३० मि. (I.S.T.),
२१ जनवरी,

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
९	३	११	९	७	७	८	३	९
६	३	१९	०	२१	२०	१९	२	२
३१	२४	१९	३४	३९	१६	३६	२३	२३
२	५९	२५	४	२६	३३	४	३७	३७
६१	९११	४०	९७	११	६५	६	३	३
३	३	३८	४०	१८	५१	५२	११	११
		मा.	मा.	मा.	मा.	मा.	व.	व.
		उ.	अ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
उ.षा. ३	पुष्य १	रेवती १	उ.षा. २	ज्ये. २	ज्ये. २	पू.षा. २	पुन. ४	उ.षा. २

श्री वि.सं. २०७५, शाक १९४०, माघ कृष्ण पक्ष २२

(२२ जनवरी से ४ फरवरी, सन् २०१९ ई.)
उत्तरायण, दक्षिणगोल, शिशिर ऋतु ।

बु. अस्त है। प्रातः श. पूर्व क्षितिज में और इससे ऊपर गु. शु. दिखाई देंगे। सायं मं. पश्चिम कपाल में होगा।

दिनमान		तिथि	वार	समाप्ति-काल		नक्षत्र	समाप्ति-काल		योग	समाप्ति-काल		करण	समाप्ति-काल		तारीखें प्र. माघ	अं. जनवरी	श. माघ	मु. ज.उ.अ.	चन्द्रराशि-प्रवेशकाल			चण्डीगढ़ (भा.स्टैं.टा.) सूर्योदय		सूर्यास्त		स्पष्ट सूर्य प्रातः ५घं. ३० मि. (भा.स्टैं.टा.)				
घ.	प.			घ.	प.		घ.	प.		घ.	प.		घ.	प.						घ.	प.	घं.	मि.	घं.	मि.	रा.	अं.	क.	वि.	
अवम		१	चं.	५९	१३	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	प्रतिपदा तिथिक्षय,
२५	५४	२	मं.	५०	७	आश्ले.	४०	२०	आ.	४६	४०	तै.	२४	४०	९	२२	२	१५	सिंह	४०	२०	७	२३	१७	४५	९	७	३२	३	
२५	५७	३	बु.	४१	३०	मघा	३३	२८	सौ.	३६	२९	व.	१५	४८	१०	२३	३	१६	सिंह			७	२३	१७	४६	९	८	३३	५	भ. १५/४८ से ४१/३० तक,
२६	१	४	गु.	३३	४८	पू.फा.	२७	२६	शो.	२७	०	ब.	७	३४	११	२४	४	१७	कन्या	४१	५	७	२२	१७	४७	९	९	३४	६	सूर्य श्रव. में २०/४७, शनि पू.षा. ३ में २५/०७, (A)
२६	४	५	शु.	२७	२०	उ.फा.	२२	३६	अ.	१८	३१	कौ.	०	३४	१२	२५	५	१८	कन्या			७	२२	१७	४७	९	१०	३५	६	
२६	७	६	श.	२२	२४	हस्त	१९	१६	सु.	११	१३	व.	२२	२४	१३	२६	६	१९	तुला	४८	१३	७	२१	१७	४८	९	११	३६	६	भ. २२/२४ से ५०/४८ तक, बुध श्रव. में ३८/०५, (B)
२६	११	७	र.	१९	१२	चित्रा	१७	३७	धृ.	५	१७	ब.	१९	१२	१४	२७	७	२०	तुला			७	२१	१७	४९	९	१२	३७	६	अर्द्धकुम्भ पर्व-प्रयाग-राज-४ फरवरी
२६	१४	८	चं.	१७	५२	स्वा.	१७	४७	शू. गं.	० ५७	४८ ४४	कौ.	१७	५२	१५	२८	८	२१	तुला			७	२१	१७	५०	९	१३	३८	४	
२६	१८	९	मं.	१८	२१	विशा.	१९	४४	वृ.	५६	३	ग.	१८	२१	१६	२९	९	२२	वृश्चिक	४	६	७	२०	१७	५१	९	१४	३९	२	भ. ४९/२७ बाद, शुक्र मूल धनु में ४०/२०,
२६	२१	१०	बु.	२०	३४	अनु.	२३	२०	ध्रु.	५५	३५	वि.	२०	३४	१७	३०	१०	२३	वृश्चिक			७	१९	१७	५२	९	१५	४०	०	भ. २०/३४ तक, गुरु ज्ये. ३ में ६/३०,
२६	२५	११	गु.	२४	१७	ज्येष्ठा	२८	२३	व्या.	५६	८	बा.	२४	१७	१८	३१	११	२४	धनु	२८	२३	७	१९	१७	५३	९	१६	४०	५७	षट्तिला एकादशी व्रत (स.),
२६	२९	१२	शु.	२९	१२	मूल	३४	३१	ह.	५७	२९	तै.	२९	१२	१९	फ.१	१२	२५	धनु			७	१८	१७	५४	९	१७	४१	५३	फरवरी प्रारम्भ,
२६	३२	१३	श.	३५	२	पू.षा.	४१	३१	व.	५९	२४	ग.	२	०७	१०	२	१३	२६	मकर	५८	२१	७	१८	१७	५५	९	१८	४२	४८	भ. ३५/०२ बाद, शनिप्रदोष व्रत, मेरु त्रयोदशी (जैन),
२६	३६	१४	र.	४१	२८	उ.षा.	४९	३	सि.	६०	०	वि.	८	१५	२१	३	१४	२७	मकर			७	१७	१७	५६	९	१९	४३	४२	भ. ८/१५ तक, बुध धनि. में २२/४०,
२६	४०	३०	चं.	४८	१२	श्रव.	५६	५०	सि.	१	४२	च.	१४	५०	२२	४	१५	२८	मकर			७	१६	१७	५६	९	२०	४४	३६	मौनी अमा, सोमवती अमा, अर्धकुम्भ पर्व (प्रयागराज) (C)

(A) श्रीगणेश(संकष्ट)चतुर्थी व्रत (देखें पृ.18) (चन्द्रोदय देखें पृ.11), (B) भारत गणतन्त्र दिवस, (C) (देखें पृ.22), महोदय योग ७ घं. ५७ मि. बाद,

ग्रह स्पष्ट, प्रातः ५ घं.३० मि. (I.S.T.),
२८ जनवरी,

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
९	६	११	९	७	७	८	३	९
१३	१५	२४	१२	२२	२८	२०	२	२
३८	४	३	१०	५६	२	२३	१	१
५	५०	५३	२०	४५	९	४१	२१	२१
६०	७८३	४०	१०१	१०	६७	६	३	३
५८	३२	३८	५९	४२	२०	४१	११	११
		मा.	मा.	मा.	मा.	मा.	व.	व.
		उ.	अ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
श्रवण २	स्वाती ३	रेवती ३	श्रवण १	ज्ये. २	ज्ये. ४	पू.षा. ३	पुन. ४	उ.षा. २

कुण्डली सूर्योदय (२८ जन.)

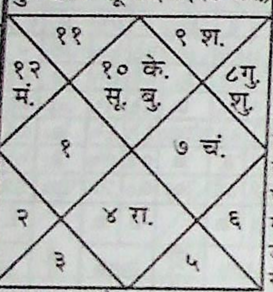

लोकभविष्य—माघ कृष्ण पक्ष में पंचमी-छठ एवं सप्तमी क्रमशः शुक्र-शनि-इतवार को होने से कहीं युद्धाग्नि प्रज्वलित होगी एवं प्राकृतिक आपदाओं से जनजीवन भी अशान्त होगा—"**षष्ठी च पंचमी चैव कृष्णा माघस्य सप्तमी। शुक्रार्कि-रवि-संयुक्ता तदा युद्धाकुलाधरा॥**" इस पक्ष में शुक्र-शनि दोनों गुरुक्षेत्र में आ जाते हैं, अतः महंगाई एवं अन्य एतद्देशीय समस्याएं प्रधान शासकों को परेशान करेंगी। कहीं दुर्भिक्ष एवं विपक्षी प्रहार केन्द्रीय शासन को विचलित कर सकते हैं—"**यदा धनुराशिस्थौ विद्येते शनि-शुक्रकौ। महर्घं च विजानीयात् सर्वं सस्यं विनश्यति॥**" इस चान्द्रमास में पांच मंगलवार होने से किसी प्रान्त एवं महानगर में शत्रुदेश से प्रेरित उग्रवाद से भारी जनधनहानि हो एवं भूकम्प आदि प्राकृतिक प्रकोप से भी हानि के योग बन रहे हैं, सरकार सावधान रहे।

कुण्डली सूर्योदय (४ फर.)

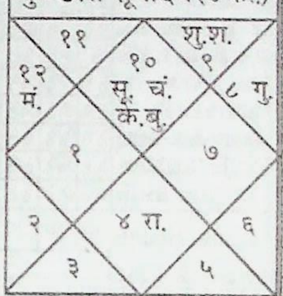

ग्रह स्पष्ट, प्रातः ५ घं.३० मि. (I.S.T.),
४ फरवरी,

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
९	९	११	९	७	८	८	३	९
२०	११	२८	२४	२४	५	२१	१	१
४४	१६	४८	१८	९	५७	९	३९	३९
३७	४१	२१	१	४०	९	५२	६	६
६०	७०८	४०	१०६	१०	६८	६	३	३
५२	१४	३८	२७	१	३०	२७	११	११
		मा.	मा.	मा.	मा.	मा.	व.	व.
		उ.	अ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
श्रवण ४	श्रवण १	रेवती ४	धनि. १	ज्ये. ३	मूल २	पू.षा. ३	पुन. ४	उ.षा. २

ग्रहचाल और बाज़ार का रुख—२४ से २६ जन. तक अनाज, रुई, सूत, सोना, चांदी, लोहा, गुड़, खाण्ड, मजीठ, दाख, छुहारे, जीरा, तिलहन, दालें तेज रहें। जन. २९, ३०, ३१ एवं फरवरी ३ को बाजार तेज रहें।

आकाश-लक्षण—जनवरी २४, २५, २६, २९, ३० एवं फरवरी ३, ४ को शीत का प्रभाव उ. भारत में रहेगा, लेकिन कुछ प्रान्तों में वायुवेग एवं खण्डवृष्टि के योग भी हैं।

श्री वि.सं. २०७५, शाक १९४०, माघ शुक्ल पक्ष २३

(५ से १९ फरवरी, सन् २०१९ ई.)
उत्तरायण, दक्षिणगोल, शिशिर-वसन्त ऋतु।

१५ फर. से बु. सायं पश्चिम में दिखाई देगा। इस समय मं. पश्चिम कपाल में होगा। प्रातः श. पूर्व में, गु. शु. से नीचे दिखाई देगा।

दिनमान		तिथि	वार	समाप्ति-काल		नक्षत्र	समाप्ति-काल		योग	समाप्ति-काल		करण	समाप्ति-काल		तारीखें प्र.	अं.	श.	मु.	चन्द्रराशि-प्रवेशकाल			चण्डीगढ़ (भा.स्टैं.टा.) सूर्योदय		सूर्यास्त		स्पष्ट सूर्य प्रातः ५घं. ३० मि. (भा.स्टैं.टा.)				
घ.	प.			घ.	प.		घ.	प.		घ.	प.		घ.	प.	माघ	फरवरी	माघ	ज.उ.अ.		घ.	प.	घं.	मि.	घं.	मि.	रा.	अं.	क.	वि.	
२६	४४	१	मं.	५४	५८	धनि.	६०	०	व्य.	४	९	किं.	२१	३५	२३	५	१६	२९	कुम्भ	३०	४७	७	१६	१७	५७	९	२१	४५	२८	पंचक प्रारम्भ ३०/४७, मंगल अश्वि. मेष में ४१/२२, (A)
२६	४८	२	बु.	६०	०	धनि.	४	४१	व.	६	३५	बा.	२८	१६	२४	६	१७	३०	कुम्भ			७	१५	१७	५८	९	२२	४६	१९	चन्द्रदर्शन, मु. १५, सूर्य धनि. में २८/५०,
२६	५२	२	गु.	१	३४	शत.	१२	१५	प.	८	५१	कौ.	१	३४	२५	७	१८	ज.१	कुम्भ			७	१४	१७	५९	९	२३	४७	९	बुध कुम्भ में ७/२०, जमद उस्सानी मु. प्रारम्भ,
२६	५६	३	शु.	७	४०	पू.भा.	११	२१	शि.	१०	४४	ग.	७	४०	२६	८	१९	२	मीन	२	३९	७	१३	१८	०	९	२४	४७	५८	भ. ४०/२१ बाद, गौरी तृतीया (गोंतरी), वरद-तिल-कुन्द चतुर्थी,
२७	०	४	श.	१३	२	उ.भा.	२५	४२	सि.	१२	४	वि.	१३	०२	२७	९	२०	३	मीन			७	१३	१८	१	९	२५	४८	४५	भ. १३/०२ तक, श्री(लक्ष्मी)पंचमी (देखें पृ.19), (B)
२७	४	५	र.	१७	२२	रेव.	३१	३	सा.	१२	३१	बा.	१७	२२	२८	१०	२१	४	मेष	३१	३	७	१२	१८	२	९	२६	४९	३१	पंचक समाप्त ३१/०३, बुध शत. में ४८/५५, शुक्र (C)
२७	८	६	चं.	२०	२३	अश्वि.	३५	२	शु.	१२	१५	तै.	२०	२३	२९	११	२२	५	मेष			७	११	१८	२	९	२७	५०	१५	
२७	१३	७	मं.	२१	५०	भर.	३७	३०	शु.	१०	४२	व.	२१	५०	३०	१२	२३	६	वृष	५२	५०	७	१०	१८	३	९	२८	५०	५८	भ. २१/५० से ५१/४१ तक, आरोग्य सप्तमी, रथ सप्तमी (D)
२७	१७	८	बु.	२१	३२	कृत्ति.	३८	१४	ब्र.	७	४९	ब.	२१	३२	फा.१	१३	२४	७	वृष			७	९	१८	४	९	२९	५१	३९	सं. सूर्य कुम्भ में ४/०७, मु. ३०, पुण्यकाल १४ घं.४८मि. (E)
२७	२१	९	गु.	१९	२४	रोहि.	३७	१०	ऐं. वै.	३ ५७	३१ ४५	कौ.	१९	२४	२	१४	२५	८	वृष			७	९	१८	५	१०	०	५२	१८	माघ गुप्त नवरात्र समाप्त,
२७	२५	१०	शु.	१५	२७	मृग.	३४	२१	वि.	५०	३६	ग.	१५	२७	३	१५	२६	९	मिथुन	६	०	७	८	१८	६	१०	१	५२	५५	भ. ४२/३७ बाद, बुध पश्चिम में उदित १८घं. ६मि., नवरात्र-पारणा,
२७	३०	११	श.	९	४८	आर्द्रा	२९	५६	प्री.	४२	१३	वि.	९	४८	४	१६	२७	१०	मिथुन			७	७	१८	७	१०	२	५३	३१	भ. ९/४८ तक, जया एकादशी व्रत (स.), भीष्म द्वादशी,
२७	३४	१२	र.	२	४०	पुन.	२४	९	आ.	३२	४६	बा.	२	४०	५	१७	२८	११	कर्क	१०	४१	७	६	१८	७	१०	३	५४	५	प्रदोष व्रत,
अवम		१३	र.	५४	२१	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	त्रयोदशी तिथिक्षय,
२७	३८	१४	चं.	४५	१६	पुष्य	१७	२१	सौ.	२२	३२	ग.	११	४८	६	१८	२९	१२	कर्क			७	५	१८	८	१०	४	५४	३८	भ. ४५/१६ बाद, बुध पू.भा. में २०/३७, सूर्य सायन मीन (F)
२७	४३	१५	मं.	३५	४८	आश्ले.	९	५६	शो.	११	५०	वि.	१०	३२	७	१९	३०	१३	सिंह	९	५६	७	४	१८	९	१०	५	५५	८	भ. १०/३२ तक, सूर्य शत. में ४०/३५, माघी पूर्णिमा, (G)

(A) माघ गुप्त नवरात्र प्रारम्भ, (B) वसन्त पंचमी (देखें पृ. 19), श्रीलक्ष्मी/सरस्वती-पूजा, (C) पू.षा. में २१/४०, (D) पूर्वारुणोदय वाली, मर्यादा महोत्सव, (E) तक, भीष्माष्टमी, (F) में ५३/४२, वसन्त ऋतु प्रारम्भ, (G) श्रीसत्यनारायण व्रत, श्री गुरु रविदास जयन्ती, माघस्नान समाप्त,

ग्रह स्पष्ट, प्रातः ५ घं.३० मि. (I.S.T.), १३ फरवरी,

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
९	१	०	१०	७	८	८	३	९
२९	०	४	१०	२५	१६	२२	१	१
५१	३९	५३	२९	३५	१८	६	१०	१०
३१	२	५१	१९	५७	१३	२९	२९	२९
६०	७१६	४०	१०७	९	६१	६	३	३
३१	४४	३४	५४	१	३६	४	११	११
		मा.	मा.	मा.	मा.	मा.	व.	व.
		उ.	अ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
धनि. २	कृत्ति. २	अश्वि. २	शत. २	ज्ये. ३	पू.षा. १	पू.षा. ३	पुन. ४	उ.षा. २

कुण्डली सूर्योदय (१३ फर.)

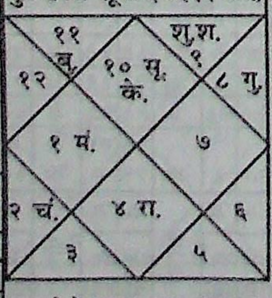

लोकभविष्य—इस पक्ष में कुम्भस्थ सूर्य पर शुक्रयुक्त शनि की विशेष दृष्टि है एवं मंगल की भी राहु पर विशेष दृष्टि है, राहु-सूर्य का षडष्टक योग भी चल रहा है। इस ग्रहस्थिति के अनुसार मुस्लिम राष्ट्रों में पनप रहे 'इस्लामिक राष्ट्रवाद' एवं उग्रवाद को समाप्त करने के लिए शान्तिप्रिय देश एकजुट होकर समाप्त करने की योजना बनायेंगे। इस समय उग्रवादियों का रुख मिथुन, मकर, कन्या, कुम्भ राशिप्रधान देशों को I.S.I. वाले या अन्य ग्रुप निशाना बनायेंगे। इस समय राष्ट्र के प्रमुख नेताओं/नेतृत्व की सुरक्षा-व्यवस्था को सुदृढ़ रखना होगा। मेषस्थ मंगल, शुक्र-शनि का मेल से सूर्य की स्थिति प्राकृतिक आपदा से जनधनहानि एवं कहीं दुर्भिक्ष का संकेत देती है।

ग्रहचाल और बाजार का रुख—पक्षारम्भ से सोना, चांदी आदि धातु, रुई, कपास, पाट, बारदाना, गुड़, घी, ज्वार, बाजरा, चना, दालवाना ३ फरवरी तक तेज रहें। १० से १८ फरवरी तक बाजार मन्दे रहें। १९ फरवरी के लगभग दाख, छुहारा, हल्दी, सोना, चांदी एवं तिलहन के बाजार तेज हों।

आकाश-लक्षण—फरवरी ५, ६, ७, १०, १२ से १६ एवं १८, १९ फरवरी को हवा का जोर रहे, उ. भारत के कुछ भागों में कहीं बादलचाल किंवा खण्डवृष्टि हो। मौसम में परिवर्तन अनुभव होगा।

कुण्डली सूर्योदय (१९फर.)

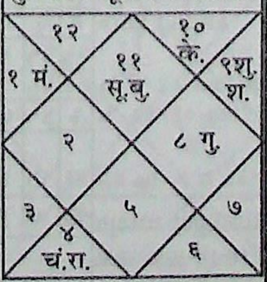

ग्रह स्पष्ट, प्रातः ५ घं.३० मि. (I.S.T.), १९ फरवरी,

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
१०	३	०	१०	७	८	८	३	९
५	२६	८	२०	२६	२३	२२	०	०
५५	२८	५७	५९	२८	१७	४२	५१	५१
९	३५	१	३४	१५	२०	८	२४	२४
६०	११६	४०	१८	८	७०	५	३	३
२९	२६	२९	१९	१७	१२	४६	११	११
		मा.	मा.	मा.	मा.	मा.	व.	व.
		उ.	उ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
धनि. ४	आश्ले. ३	अश्वि. ३	पू.भा. १	ज्ये. ३	पू.षा. ३	पू.षा. ३	पुन. ४	उ.षा. २

श्री वि.सं. २०७५, शाक १९४०, फाल्गुन कृष्ण पक्ष २४

(२० फरवरी से ६ मार्च, सन् २०१९ ई.)
उत्तरायण, दक्षिणगोल, वसन्त ऋतु।

प्रातः शु. पूर्व में, श. पूर्व कपाल में और गु. इससे ऊपर उठा होगा। सायं मं. पश्चिम कपाल में और बु. पश्चिम क्षितिजासन्न होगा।

दिनमान		तिथि	वार	समाप्ति-काल		नक्षत्र	समाप्ति-काल		योग	समाप्ति-काल		करण	समाप्ति-काल		तारीखें प्र. फाल्गुन	तारीखें अं. फरवरी	तारीखें श. फाल्गुन	तारीखें मु. ज.उ.सा.	चन्द्रराशि-प्रवेशकाल			चण्डीगढ़ (भा.स्टैं.टा.) सूर्योदय		सूर्यास्त		स्पष्ट सूर्य प्रातः ५घं. ३० मि. (भा.स्टैं.टा.)				
घ.	प.			घ.	प.		घ.	प.		घ.	प.		घ.	प.						घ.	प.	घं.	मि.	घं.	मि.	रा.	अं.	क.	वि.	
२७	४७	१	बु.	२६	२३	मघा पू.फा.	२ ५५	२१ १	अ. सु.	० ५०	५८ २२	बा.	१	०५	८	२०	१	१४	सिंह			७	३	१८	१०	१०	६	५५	३८	गुरु ज्ये. ४ में २१/३१, शक फाल्गुन प्रारम्भ,
२७	५२	२	गु.	१७	२९	उ.फा.	४८	२९	धृ.	४०	२२	ग.	१७	२९	९	२१	२	१५	कन्या	८	१९	७	२	१८	११	१०	७	५६	६	भ. ४३/३० बाद, शुक्र उ.षा. में ४१/१०,
२७	५६	३	शु.	९	३२	हस्त	४३	१०	शू.	३१	१८	वि.	९	३२	१०	२२	३	१६	कन्या			७	१	१८	११	१०	८	५६	३२	भ. ९/३२ तक, श्रीगणेशचतुर्थी व्रत,
२८	१	४	श.	२	५७	चित्रा	३९	२६	गं.	२३	२९	बा.	२	५७	११	२३	४	१७	तुला	११	६	७	०	१८	१२	१०	९	५६	५७	
अवम		५	श.	५८	३	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	पंचमी तिथिक्षय,
२८	५	६	र.	५५	१३	स्वाती	३७	३८	वृ.	१७	१०	ग.	२६	३८	१२	२४	५	१८	तुला			६	५९	१८	१३	१०	१०	५७	२०	भ. ५५/१३ बाद, शुक्र मकर में ३९/२५,
२८	१०	७	चं.	५४	३२	विशा.	३७	५४	ध्रु.	१२	३०	वि.	२४	५२	१३	२५	६	१९	वृश्चिक	२२	४०	६	५८	१८	१४	१०	११	५७	४२	भ. २४/५२ तक, मंगल भर. में २६/३७, बुध मीन में (A)
२८	१४	८	मं.	५५	५९	अनु.	४०	१५	व्या.	९	३२	बा.	२५	१५	१४	२६	७	२०	वृश्चिक			६	५७	१८	१४	१०	१२	५८	२	
२८	१९	९	बु.	५९	२३	ज्येष्ठा	४४	३३	ह.	८	११	तै.	२७	४२	१५	२७	८	२१	धनु	४४	३३	६	५६	१८	१५	१०	१३	५८	२२	
२८	२३	१०	गु.	६०	०	मूल	५०	२७	व.	८	१६	व.	३१	५४	१६	२८	९	२२	धनु			६	५५	१८	१६	१०	१४	५८	३९	भ. ३१/५४ बाद, बुध उ.भा. में २३/०२,
२८	२८	१०	शु.	४	२४	पू.षा.	५७	३२	सि.	९	३१	वि.	४	२४	१७	मा.१	१०	२३	धनु			६	५३	१८	१७	१०	१५	५८	५५	भ. ४/२४ तक, मार्च प्रारम्भ,
२८	३३	११	श.	१०	३०	उ.षा.	६०	०	व्य.	११	३४	बा.	१०	३०	१८	२	११	२४	मकर	१४	२८	६	५२	१८	१७	१०	१६	५९	१०	विजया एकादशी व्रत (स.),
२८	३७	१२	र.	१७	१३	उ.षा.	५	२०	व.	१४	५	तै.	१७	१३	१९	३	१२	२५	मकर			६	५१	१८	१८	१०	१७	५९	२३	प्रदोष व्रत,
२८	४२	१३	चं.	२४	६	श्रव.	१३	१९	प.	१६	४४	व.	२४	०६	२०	४	१३	२६	कुम्भ	४७	१५	६	५०	१८	१९	१०	१८	५९	३५	भ. २४/०६ से ५७/२५ तक, पंचक प्रारम्भ ४७/१५, (B)
२८	४६	१४	मं.	३०	४५	धनि.	२१	८	शि.	१९	१५	श.	३०	४५	२१	५	१४	२७	कुम्भ			६	४९	१८	१९	१०	१९	५९	४५	बुध वक्री ४२/३०, शुक्र श्रवण में ७/१०,
२८	५१	३०	बु.	३६	५४	शत.	२८	३१	सि.	२१	२६	च.	३	४९	२२	६	१५	२८	कुम्भ			६	४८	१८	२०	१०	२०	५९	५३	

(A) ५/२, शनि पू.षा. ४ में ४२/१०, (B) सूर्य पू.भा. में ५६/५५, श्रीमहाशिवरात्रि व्रत (शिवयोग १३ घं. ३२ मि. बाद),

ग्रह स्पष्ट, प्रातः ५ घं.३० मि. (I.S.T.), २६ फरवरी,

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
१०	७	०	११	७	९	८	३	९
१२	७	१३	०	२७	१	२३	०	०
५८	१९	४०	५९	२३	३०	२१	२९	२९
२	३०	०	५६	२८	३५	१७	१	१
६०	७६३	४०	६३	७	७०	५	३	३
२०	२४	२२	१३	२१	४७	२१	११	११
		मा.	मा.	मा.	मा.	मा.	व.	व.
		उ.	उ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
शत. २	अनु. २	भरणी १	पू.भा. ४	ज्ये. ४	उ.षा. २	पू.षा. ४	पुन. ४	उ.षा. २

कुण्डली सूर्योदय (२६ फर.)

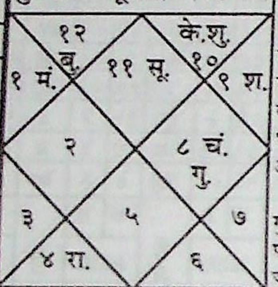

लोकभविष्य—शनि-राहु का षडष्टक है व शनिक्षेत्र में स्थित सूर्य पर शनि की विशेष दृष्टि है व शुक्र-राहु का समसप्तकयोग भारत के असम, केरल, म.प्र., महाराष्ट्र, उत्तराखण्ड एवं कश्मीर में कहीं उग्रवादजन्य अपराधों, किंवा सीमाप्रान्तों पर शत्रुदेशकृत गतिविधि से शान्ति भंग करे। कुछ प्रान्तों में दुर्भिक्ष एवं कुछ में आकालिक वर्षा से हानि के योग हैं। फाल्गुन कहीं प्रतिष्ठित राजनेता के लिए भयावह परिस्थिति वाला है, सुरक्षा-व्यवस्था को सावधान रखना आवश्यक है।

ग्रहचाल और बाज़ार का रुख—पक्षारम्भ से २३ फरवरी तक गुड़, खाण्ड, घी, सोना, चांदी में सामान्यतः मन्दा रहे। २४ से २७ फरवरी तक अनाज, सोना, चांदी, रुई, कपास, जीरा, सरसों, जौ, ज्वार एवं शेयर तेज होंगे। ४ से ६ मार्च तक सारी धातुएं, सभी अनाज, घी, तेल, तिलहन, मसाले तेज रहेंगे।

आकाश-लक्षण—फरवरी २०, २१, २४, २५, २६, २८ व मार्च ४ से ६ के मध्य श्रीलंका के पूर्वी छोर, शिलांग व अन्य कुछ भागों में बादलचाल व बूंदाबांदी हो। उत्तरभारत में हवा का जोर रहे, वसन्त ऋतु का सुहावना वातावरण बने।

कुण्डली सूर्योदय (६ मार्च)

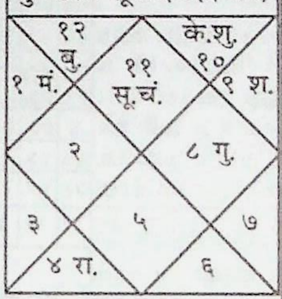

ग्रह स्पष्ट, प्रातः ५ घं.३० मि. (I.S.T.), ६ मार्च,

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
१०	१०	०	११	७	९	८	३	९
२०	१३	१९	५	२८	१०	२४	०	०
५९	४१	२	३१	१८	५८	२	३	३
५३	४७	३०	२७	१३	५२	२०	४३	४३
६०	७१५	४०	६	६	७१	४	३	३
६	४७	१५	४७	१०	१८	५०	११	११
		मा.	व.	मा.	मा.	मा.	व.	व.
		उ.	उ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
पू.भा. १	शत. ३	भर. २	उ.भा. १	ज्ये. ४	श्रवण १	पू.षा. ४	पुन. ४	उ.षा. २

श्री वि.सं. २०७५, शाक १९४०, फाल्गुन शुक्ल पक्ष २५

(७ से २१ मार्च, सन् २०१९ ई.)

उत्तरायण, दक्षिण-उत्तरगोल, वसन्त ऋतु।

पक्षारम्भ में ही बु. पश्चिमास्त हो जायेगा। प्रातः पूर्व में शु., पूर्व कपाल में श. और याम्योत्तरवृत्त के पास गु. होगा। सायं मं. पश्चिम कपाल में देखा जा सकता है।

दिनमान		तिथि	वार	समाप्ति-काल		नक्षत्र	समाप्ति-काल		योग	समाप्ति-काल		करण	समाप्ति-काल		तारीखें				चन्द्रराशि-प्रवेशकाल			चण्डीगढ़ (भा.स्टैं.टा.)				स्पष्ट सूर्य प्रातः ५घं. ३० मि. (भा.स्टैं.टा.)				
															प्र. फाल्गुन	अं. मार्च	श. फाल्गुन	मु. ज.उ.सा.				सूर्योदय		सूर्यास्त						
घ.	प.			घ.	प.		घ.	प.		घ.	प.		घ.	प.						घ.	प.	घं.	मि.	घं.	मि.	रा.	अं.	क.	वि.	
२८	५६	१	गु.	४२	२२	पू.भा.	३५	१७	सा.	२३	८	किं.	९	३८	२३	७	१६	२९	मीन	१८	४०	६	४७	१८	२१	१०	२१	५९	५९	राहु पुन. ३ मिथुन, केतु उ.षा. १ धनु में ७/०२, बुध (A)
२९	०	२	शु.	४७	१	उ.भा.	४१	१६	शु.	२४	१५	बा.	१४	४१	२४	८	१७	३०	मीन			६	४५	१८	२२	१०	२३	०	४	चन्द्रदर्शन, मु. ४५, अवतार दिन श्रीरामकृष्ण परमहंस,
२९	५	३	श.	५०	४५	रेव.	४६	२४	शु.	२४	४२	तै.	१८	५२	२५	९	१८	र.१	मेष	४६	२४	६	४४	१८	२२	१०	२४	०	६	पंचक समाप्त ४६/२४, रजब मु. प्रारम्भ,
२९	१०	४	र.	५३	२८	अश्वि.	५०	३४	ब्र.	२४	२६	व.	२२	०६	२६	१०	१९	२	मेष			६	४३	१८	२३	१०	२५	०	७	भ. २२/०६ से ५३/२८ तक,
२९	१४	५	चं.	५५	३	भर.	५३	३८	ऐं.	२३	२०	व.	२४	१५	२७	११	२०	३	मेष			६	४२	१८	२४	१०	२६	०	५	वक्री बुध पू.भा. में १५/०५,
२९	१९	६	मं.	५५	२२	कृत्ति.	५५	३०	वै.	२१	२०	कौ.	२५	११	२८	१२	२१	४	वृष	९	१६	६	४१	१८	२४	१०	२७	०	१	
२९	२४	७	बु.	५४	१९	रोहि.	५६	२	वि.	१८	१९	ग.	२४	५०	२९	१३	२२	५	वृष			६	३९	१८	२५	१०	२७	५९	५५	भ. ५४/१९ बाद,
२९	२९	८	गु.	५१	४८	मृग.	५५	८	प्री.	१४	११	वि.	२३	०३	चै.१	१४	२३	६	मिथुन	२५	४८	६	३८	१८	२६	१०	२८	५९	४७	भ. २३/०३ तक, सं. सूर्य मीन में ५७/३४, मु. १५, (B)
२९	३३	९	शु.	४७	४८	आर्द्रा	५२	४७	आ.	८	५४	बा.	१९	४८	२	१५	२४	७	मिथुन			६	३७	१८	२६	१०	२९	५९	३६	वक्री बुध कुम्भ में ५/५२,
२९	३८	१०	श.	४२	२३	पुन.	४९	२	सौ. शो.	२ ५४	२६ ४८	तै.	१५	०५	३	१६	२५	८	कर्क	३५	६	६	३६	१८	२७	११	०	५९	२४	शुक्र धनि. में १८/५५, होलाष्टक १४ से २१ मार्च
२९	४३	११	र.	३५	४०	पुष्य	४४	१	अ.	४६	१३	व.	९	०२	४	१७	२६	९	कर्क			६	३५	१८	२८	११	१	५९	९	भ. ९/०२ से ३५/४० तक, मंगल कृत्तिका में २१/०२, (C)
२९	४७	१२	चं.	२७	५५	आश्ले	३८	१	सु.	३६	४८	ब.	१	४७	५	१८	२७	१०	सिंह	३८	१	६	३३	१८	२८	११	२	५८	५१	सूर्य उ.भा. में १८/३७, सोमप्रदोष व्रत, गोविन्द द्वादशी,
२९	५२	१३	मं.	१९	२५	मघा	३१	२१	धृ.	२६	५१	तै.	११	२५	६	१९	२८	११	सिंह			६	३२	१८	२९	११	३	५८	३२	
२९	५७	१४	बु.	१०	३४	पू.फा.	२४	२४	शू.	१६	३८	व.	१०	३४	७	२०	२९	१२	कन्या	३७	३८	६	३१	१८	३०	११	४	५८	११	भ. १०/३४ से ३६/०९ तक, सूर्य सायन मेष में ५२/२२, (D)
३०	१	१५	गु.	१	४४	उ.फा.	१७	३९	गं. वृ.	६ ५६	३१ ४९	ब.	१	४४	८	२१	३०	१३	कन्या			६	३०	१८	३०	११	५	५७	४७	शुक्र कुम्भ में ५३/०७, होलाष्टक समाप्त, वसन्तोत्सव, (E)

(A) पश्चिम में अस्त १८ घं. २१ मि., (B) पुण्यकाल अगले दिन मध्याह्न तक, होलाष्टक प्रारम्भ, (C) आमलकी एकादशी व्रत (स.), (D) उत्तरगोल प्रारम्भ, महाविषुव दिन, होलिका-दहन (२० घं. ५८ मि. बाद) (देखें पृ..20), श्रीसत्यनारायण व्रत, (E) जन्मदिन श्रीचैतन्य महाप्रभु, होला मेला श्री आनन्दपुर साहब (पं.),

ग्रह स्पष्ट, प्रातः ५ घं.३० मि. (I.S.T.), १४ मार्च,

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
१० २८ ५९ ४७	१ २३ ३४ २०	० २४ २३ ५७	११ १ ४ ३३	७ २९ ३ १०	९ २० ३० ४२	८ २४ ३८ ५८	२ २९ ३८ १८	८ २९ ३८ १८
५९ ४९	८१३ २२	४० ५	५६ १६	४ ५३	७१ ४१	४ १५	३ ११	३ ११
		मा.	व.	मा.	मा.	मा.	व.	व.
		उ.	अ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
३ पू.भा.	१ मृग.	४ भर.	४ पू.भा.	४ ज्ये.	४ श्रवण	४ पू.षा.	३ पुन.	१ उ.षा.

कुण्डली सूर्योदय (१४ मार्च)

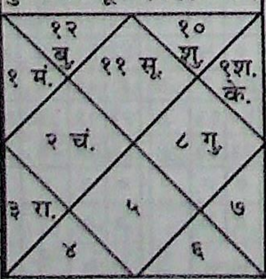

लोकभविष्य—इस पक्ष में राहु एवं शनि का परस्पर दृष्टिसम्बन्ध (समसप्तक) जनजीवनोपयोगी वस्तुओं में महंगाई से जनाक्रोश को बढ़ावा देगा—"राहुर्मिथुन-राशिं चेदेवं लक्षणमादिशेत्। घृतं च सर्वधान्यानि महर्घाणि भवन्ति हि॥" शनि की सूर्य पर दृष्टि प्रधान शासकों एवं मुस्लिम राष्ट्रों के लिए भयावह तो है, लेकिन मकर राशि में शुक्र एवं अष्टमी की कुण्डली में उच्च चन्द्र पर गुरु की दृष्टि भारत के लिए शुभ ही है। भारत में सत्तापरीक्षण एवं राजनैतिक गरमाहट जोर पकड़े।

ग्रहचाल और बाज़ार का रुख—७ से ११ मार्च तक चावल, अन्य अनाज, रुई, सोना, चांदी में जोरदार मन्दी किंवा तेजी के झटके आयेंगे। वायदा बाजार मन्दा रहे। १४ से १८ मार्च तक बाजार खूब तेज होंगे। २१ मार्च के लगभग अचानक बाजार मन्दे होंगे।

आकाश-लक्षण—मार्च ७, ८, ११, १४ से १८ एवं २१ मार्च के लगभग म.प्र, बंगाल, आसाम आदि में कहीं बादलचाल व बूंदाबांदी हो। उत्तरी भारत में वायुवेग रहे, मौसम में गरमी अनुभव होगी।

कुण्डली सूर्योदय (२१मार्च)

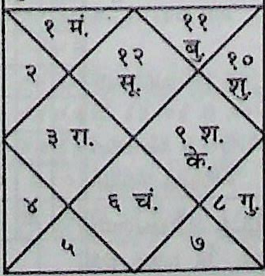

ग्रह स्पष्ट, प्रातः ५ घं.३० मि. (I.S.T.), २१ मार्च,

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
११ ५ ५७ ४७	५ ४ ५७ ५२	० २९ ४ ६	१० २४ ४७ ४५	७ २९ ३३ ५३	९ २८ ५३ १८	८ २५ ७ १	२ २९ १६ ३	८ २९ १६ ३
५९ ३४	८१५ ३९	३९ ५६	४१ ११	३ ४२	७१ ५७	३ ४१	३ ११	३ ११
		मा.	व.	मा.	मा.	मा.	व.	व.
		उ.	अ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
१ उ.भा.	३ उ.फा.	१ कृत्ति.	२ पू.भा.	४ ज्ये.	२ धनि.	४ पू.षा.	३ पुन.	१ उ.षा.

श्री वि.सं. २०७५, शाक १९४०, चैत्र कृष्ण पक्ष २६

(२२ मार्च से ५ अप्रैल, सन् २०१९ ई.)
उत्तरायण, उत्तरगोल, वसन्त ऋतु।

पक्षारम्भ से ही बु. प्रातः पूर्व में दृश्य हो जायेगा। इस समय शु. पूर्व में, श. पूर्व कपाल में और गु. याम्योत्तरवृत्त में होगा। सायं मं.पश्चिम में दिखाई देगा।

दिनमान घ.	दिनमान प.	तिथि	वार	समाप्ति-काल घ.	समाप्ति-काल प.	नक्षत्र	समाप्ति-काल घ.	समाप्ति-काल प.	योग	समाप्ति-काल घ.	समाप्ति-काल प.	करण	समाप्ति-काल घ.	समाप्ति-काल प.	तारीखें प्र. चैत्र	तारीखें अं. मार्च	तारीखें श. चैत्र	तारीखें मु. रजब	चन्द्रराशि-प्रवेशकाल	घ.	प.	चण्डीगढ़ (भा.स्टैं.टा.) सूर्योदय घं.	सूर्योदय मि.	सूर्यास्त घं.	सूर्यास्त मि.	स्पष्ट सूर्य प्रातः ५घं. ३० मि. (भा.स्टैं.टा.) रा.	अं.	क.	वि.	
अवम		१	गु.	५३	२७	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	प्रतिपदा तिथिक्षय,
३०	६	२	शु.	४६	७	हस्त	११	३३	धु.	४७	५९	तै.	११	४७	९	२२	१	१४	तुला	३८	५०	६	२८	१८	३१	११	६	५७	२२	मंगल वृष में २१/३५, यूरेनस अश्वि. ३ में ३६/१५, (A)
३०	११	३	श.	४०	१२	चित्रा	६	३४	व्या.	४०	१८	व.	१३	०९	१०	२३	२	१५	तुला			६	२७	१८	३१	११	७	५६	५४	भ. १३/०९ से ४०/१२ तक,
३०	१५	४	र.	३६	३	स्वा.	३	७	ह.	३४	४	ब.	८	०७	११	२४	३	१६	वृश्चिक	४६	४४	६	२६	१८	३२	११	८	५६	२५	श्रीगणेशचतुर्थी व्रत,
३०	२०	५	चं.	३३	५८	विशा.	१	३१	व.	२९	२९	कौ.	५	०	१२	२५	४	१७	वृश्चिक			६	२५	१८	३३	११	९	५५	५३	
३०	२५	६	मं.	३४	५	अनु.	२	५	सि.	२६	३८	ग.	४	१	१३	२६	५	१८	वृश्चिक			६	२३	१८	३३	११	१०	५५	२०	भ: ३४/०५ बाद,
३०	२९	७	बु.	३६	२२	ज्येष्ठा	४	५१	व्य.	२५	२८	वि.	५	१३	१४	२७	६	१९	धनु	४	५१	६	२२	१८	३४	११	११	५४	४५	भ. ५/१३ तक, शुक्र शत. में २६/२८,
३०	३४	८	गु.	४०	३२	मूल	९	३२	व.	२५	४९	बा.	८	२७	१५	२८	७	२०	धनु			६	२१	१८	३५	११	१२	५४	८	बुध मार्गी ३२/५०, श्रीशीतलाष्टमी, मेला शीतला माता (कुराली) पं.,
३०	३९	९	शु.	४६	१०	पू.षा.	१५	५१	प.	२७	२२	तै.	१३	२१	१६	२९	८	२१	मकर	३२	३९	६	२०	१८	३५	११	१३	५३	३०	गुरु मूल १ धनु में ३४/२३,
३०	४३	१०	श.	५२	४१	उ.षा.	२३	१६	शि.	२९	४२	व.	१९	२५	१७	३०	९	२२	मकर			६	१९	१८	३६	११	१४	५२	४१	भ. १९/२५ से ५२/४१ तक,
३०	४८	११	र.	५९	२७	श्रव.	३१	१२	सि.	३२	२३	ब.	२६	०४	१८	३१	१०	२३	मकर			६	१७	१८	३७	११	१५	५२	७	सूर्य रेव. में ४६/३०, पापमोचिनी एकादशी व्रत (स्मार्त) (देखें पृ.20),
३०	५३	१२	चं.	६०	०	धनि.	३९	४	सा.	३५	१	कौ.	३२	४३	१९	अ.१	११	२४	कुम्भ	५	१२	६	१६	१८	३७	११	१६	५१	२४	पंचक प्रारम्भ ५/१२, पापमोचिनी एकादशी व्रत (वैष्णव),(B)
३०	५७	१२	मं.	५	५९	शत.	४६	२५	शु.	३७	१६	तै.	५	५९	२०	२	१२	२५	कुम्भ			६	१५	१८	३८	११	१७	५०	३८	वारुणी योग(८ घं. ३८ मि. से सूर्यास्त तक), भौमप्रदोष व्रत,
३१	२	१३	बु.	११	४६	पू.भा.	५२	५६	शु.	३८	५३	व.	११	४६	२१	३	१३	२६	मीन	३६	२५	६	१४	१८	३८	११	१८	४९	५१	भ. ११/४६ से ४४/११ तक, मेला पिहोवा तीर्थ (हरि.),
३१	७	१४	गु.	१६	३६	उ.भा.	५८	२८	ब.	३९	४५	श.	१६	३६	२२	४	१४	२७	मीन			६	१२	१८	३९	११	१९	४९	१	
३१	११	३०	शु.	२०	२२	रेव.	६०	०	ऐं.	३९	४७	ना.	२०	२२	२३	५	१५	२८	मीन			६	११	१८	४०	११	२०	४८	१०	चान्द्र संवत्सर २०७५ वि. पूर्ण,

(A) बुध पूर्व में उदित ६ घं. २८ मि., शक चैत्र (संवत् १९४१) प्रारम्भ, (B) अप्रैल प्रारम्भ,

ग्रह स्पष्ट, प्रातः ५ घं.३० मि. (I.S.T.), २८ मार्च,

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
११	८	१	१०	७	१०	८	२	८
१२	१०	३	२१	२९	७	२५	२८	२८
५४	५७	४३	५९	५६	१७	३१	५३	५३
८	१४	८	३०	८	४५	४	४७	४७
५९	७२४	३९	०	२	७२	३	३	३
२१	५१	४७	२९	२८	१२	५	११	११
		मा.	व.	मा.	मा.	मा.	व.	व.
		उ.	उ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
उ.भा. ३	मूल ४	कृत्ति. ३	पू.भा. १	ज्ये. ४	शत. १	पू.षा. ४	पुन. ३	उ.षा. १

कुण्डली सूर्योदय (२८ मार्च)

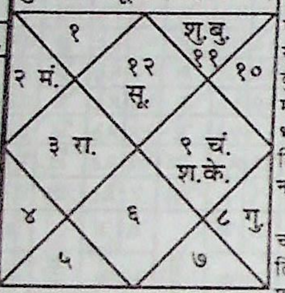

लोकभविष्य—इस चान्द्रमास में पांच शुक्रवार हैं। प्रजा में सुख-शान्ति रहे। महंगाई पर कण्ट्रोल हो एवं जनहितार्थ योजनाओं की घोषणा हो—"शुक्रस्य पंचवाराः स्युर्यत्र मासे निरन्तरम्। प्रजावृद्धिः सुभिक्षं च सुखं तत्र प्रवर्धते॥" शनि-गुरु का राहु के साथ समसप्तक कुछ मोटे अनाजों में अस्थायी तेजी करके जनजीवनोपयोगी चीजों में मन्दी करेगा—"धनुराशिं गते जीवे गोधूमादि-महर्घता। वर्षाकाले भवेत्तत्र समर्घं च तिलं गुड़म्॥" मूल नक्षत्र का गुरु कहीं दुर्भिक्ष किंवा युद्धभय की स्थिति बना सकता है—"गुरुर्मूलनक्षत्रे मासद्वये न वर्षणम्। परतः खण्डवृष्टिः स्यात् नृपाणां दारुणो रणः॥"

ग्रहचाल और बाजार का रुख—२२ से २७ मार्च तक सोना, चांदी, तांबा, रुई, कपास, शेयर, गुड़, खाण्ड, चावल, घी, तेल, तिलहन, सभी अनाज तेज हों। लेकिन २९ मार्च के लगभग गुड़, घी एवं अनाजों में मन्दी का झटका सम्भव है।

कुण्डली सूर्योदय (५ अप्रै.)

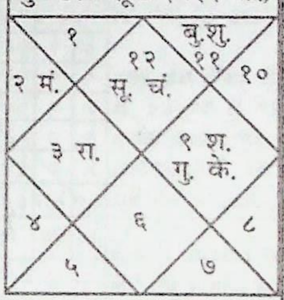

ग्रह स्पष्ट, प्रातः ५ घं.३० मि. (I.S.T.), ५ अप्रैल,

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
११	११	१	१०	८	१०	८	२	८
२०	१६	९	२४	०	१६	२५	२८	२८
४८	३७	०	२१	१०	५६	५३	२८	२८
१०	७	४९	६	४०	७	१७	२२	२२
५९	७४४	३९	३८	०	७२	२	३	३
६	३०	३७	१८	५९	२४	२३	११	११
		मा.	मा.	मा.	मा.	मा.	व.	व.
		उ.	उ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
रेवती २	उ.भा. ४	कृत्ति. ४	पू.भा. २	मूल १	शत. ४	पू.षा. ४	पुन. ३	उ.षा. १

आकाश-लक्षण—मार्च २२, २३, २७, २९, ३०, ३१ को असम, मुम्बई, प. राजस्थान एवं कश्मीर में तेज हवाओं के साथ खण्डवृष्टि हो। उत्तरी भारत में गरमी का प्रकोप बढ़ने लगेगा।

"चन्द्रमौलि शंकर चरण बार-बार सिरनाय। संवत् यह पूरण कियो गिरा-गणेश मनाय॥"

श्री वि. सं 2074 तिथ्यादि पंचांग (भा. स्टैं. टा.) जनवरी, सन् 2018 ई.

मास पक्ष	जनवरी	तिथि	वार	समाप्ति-काल		नक्षत्र	समाप्ति-काल		योग	समाप्ति-काल		चन्द्रराशि – प्रवेशकाल			चण्डीगढ़				दिल्ली				जयपुर				वाराणसी				तारीख	भद्रा, ग्रहराशि, नक्षत्र–प्रवेश एवं पर्वोत्सवादि (सर्वत्र भा. स्टैं. टा. दिया गया है।)
				घं.	मि.		घं.	मि.		घं.	मि.		घं.	मि.	सूर्योदय घं.	मि.	सूर्यास्त घं.	मि.	सूर्योदय घं.	मि.	सूर्यास्त घं.	मि.	सूर्योदय घं.	मि.	सूर्यास्त घं.	मि.	सूर्योदय घं.	मि.	सूर्यास्त घं.	मि.		
पौष शु.	1	14	चं.	11	44	मृग.	14	52	शु./ ब्र.	9 29	46 23	मिथुन			7	24	17	28	7	18	17	31	7	20	17	40	6	48	17	15	1	भ. 11/44 से 21/49 तक, इंग्लिश नववर्ष सन् 2018 ई. (A)
	2	15/	मं.	7	54	आर्द्रा	11	47	ऐं.	25	2	कर्क	27	32	7	24	17	28	7	18	17	32	7	20	17	41	6	48	17	16	2	यूरेनस मार्गी 19/44, पौषीपूर्णिमा, माघस्नान प्रारम्भ,
माघ कृष्ण	3	1 2	बु.	28 24	8 37	पुन./ पुष्य	8 30	48 7	वै.	20	52	कर्क			7	25	17	29	7	19	17	32	7	20	17	42	6	48	17	16	3	माघ कृष्णपक्ष प्रारम्भ, प्रतिपदा तिथिक्षय, गुरु विशाखा 2 में 30/12,
	4	3	गु.	21	32	आश्ले.	27	53	वि.	17	1	सिंह	27	53	7	25	17	30	7	19	17	33	7	21	17	43	6	48	17	17	4	भ. 11/04 से 21/32 तक,
	5	4	शु.	19	0	मघा	26	15	प्री.	13	37	सिंह			7	25	17	30	7	19	17	34	7	21	17	43	6	49	17	18	5	श्रीगणेश(संकष्ट)चतुर्थी व्रत
	6	5	श.	17	9	पू.फा.	25	20	आ.	10	44	कन्या	31	13	7	25	17	31	7	19	17	35	7	21	17	44	6	49	17	19	6	बुध मूल धनु में 19/45,
	7	6	र.	16	4	उ.फा.	25	9	सौ./ शो.	8 30	26 46	कन्या			7	25	17	32	7	19	17	35	7	21	17	45	6	49	17	19	7	भ. 16/04 से 27/55 तक,
	8	7	चं.	15	46	हस्त	25	45	अ.	29	42	कन्या			7	25	17	33	7	19	17	36	7	21	17	45	6	49	17	20	8	शनि पूर्व में उदित 7/25,
	9	8	मं.	16	15	चित्रा	27	4	सु.	29	12	तुला	14	20	7	25	17	34	7	19	17	37	7	21	17	46	6	49	17	21	9	
	10	9	बु.	17	25	स्वाती	29	0	धृ.	29	11	तुला			7	25	17	35	7	19	17	38	7	21	17	47	6	49	17	21	10	भ. 30/17 बाद, सूर्य उ.षा. में 31/16, शुक्र उ.षा. में 23/09,
	11	10	गु.	19	10	विशा.	–	–	शू.	29	33	वृश्चिक	24	48	7	25	17	35	7	19	17	39	7	21	17	48	6	49	17	22	11	भ. 19/10 तक,
	12	11	शु.	21	22	विशा.	7	27	गं.	30	13	वृश्चिक			7	25	17	36	7	19	17	39	7	21	17	49	6	49	17	23	12	षट्तिला एकादशी व्रत (स.),
	13	12	श.	23	52	अनु.	10	14	वृ.	31	3	वृश्चिक			7	25	17	37	7	19	17	40	7	21	17	49	6	49	17	24	13	शुक्र मकर में 14/45, लोहड़ी (पंजाब, हरि., ज.क.),
	14	13	र.	26	31	ज्येष्ठा	13	14	ध्रु.	–	–	धनु	13	14	7	25	17	38	7	19	17	41	7	21	17	50	6	49	17	24	14	भ. 26/31 बाद, सं. सूर्य मकर में 13/46, मु. 30, (B)
	15	14	चं.	29	11	मूल	16	19	ध्रु.	7	58	धनु			7	25	17	39	7	19	17	42	7	21	17	51	6	49	17	25	15	भ. 15/51 तक,
	16	30	मं.	–	–	पू.षा.	19	22	व्या.	8	54	मकर	26	7	7	25	17	40	7	19	17	43	7	21	17	52	6	49	17	26	16	मंगल वृश्चिक में 29/13, बुध पू.षा. में 20/07, मौनी अमा.(C)
	17	30	बु.	7	47	उ.षा.	22	18	ह.	9	46	मकर			7	24	17	41	7	19	17	43	7	21	17	52	6	49	17	27	17	
माघ शुक्ल	18	1	गु.	10	12	श्रव.	25	2	व.	10	29	मकर			7	24	17	41	7	19	17	44	7	21	17	53	6	49	17	27	18	माघ शुक्लपक्ष प्रारम्भ, चन्द्रदर्शन, मु. 30, गुप्त नवरात्र प्रारम्भ,
	19	2	शु.	12	22	धनि.	27	27	सि.	11	1	कुम्भ	14	17	7	24	17	42	7	18	17	45	7	21	17	54	6	49	17	28	19	पंचक प्रारम्भ 14/17,
	20	3	श.	14	11	शत.	29	31	व्य.	11	18	कुम्भ			7	24	17	43	7	18	17	46	7	20	17	55	6	49	17	29	20	भ. 26/52 बाद, सूर्य सायन कुम्भ में 8/39, गौरी तृतीया (D)
	21	4	र.	15	33	पू.भा.	31	6	व.	11	16	मीन	24	45	7	23	17	44	7	18	17	47	7	20	17	56	6	49	17	30	21	भ. 15/33 तक, शुक्र श्रवण में 13/37,
	22	5	चं.	16	25	उ.भा.	–	–	प.	10	51	मीन			7	23	17	45	7	18	17	48	7	20	17	57	6	48	17	31	22	मंगल अनु. में 14/41, श्री(लक्ष्मी)पंचमी, वसन्त पंचमी, (E)
	23	6	मं.	16	40	उ.भा.	8	8	शि.	9	59	मीन			7	23	17	46	7	17	17	49	7	20	17	57	6	48	17	31	23	
	24	7	बु.	16	17	रेव.	8	33	सि./ सा.	8 30	37 45	मेष	8	33	7	22	17	47	7	17	17	49	7	19	17	58	6	48	17	32	24	भ. 16/17 से 27/45 तक, पंचक समाप्त 8/33, सूर्य (F)
	25	8	गु.	15	13	अश्वि.	8	21	शु.	28	22	मेष			7	22	17	48	7	17	17	50	7	19	17	59	6	48	17	33	25	बुध उ.षा. में 21/01, भीष्माष्टमी,
	26	9	शु.	13	32	भर./ कृत्ति.	7 30	29 2	शु.	25	30	वृष	13	11	7	21	17	49	7	16	17	51	7	19	18	0	6	47	17	34	26	गुप्त नवरात्र समाप्त, भारतगणतन्त्र दिवस,
	27	10	श.	11	15	रोहि.	28	4	ब्र.	22	11	वृष			7	21	17	49	7	16	17	52	7	18	18	0	6	47	17	34	27	भ. 21/52 बाद, बुध मकर में 25/02, गुरु विशाखा 3 में (G)
	28	11/ 12	र.	8 29	28 18	मृग.	25	42	ऐं.	18	31	मिथुन	14	55	7	20	17	50	7	15	17	53	7	18	18	1	6	47	17	35	28	भ. 8/28 तक, जया एकादशी व्रत (वै.), भीष्म द्वादशी, (H) द्वादशी तिथिक्षय,
	29	13	चं.	25	53	आर्द्रा	23	3	वै.	14	36	मिथुन			7	20	17	51	7	15	17	54	7	18	18	2	6	46	17	36	29	बुध पूर्व में अस्त 7/20, सोमप्रदोष व्रत,
	30	14	मं.	22	23	पुन.	20	18	वि./ प्री.	10 30	31 25	कर्क	14	59	7	19	17	52	7	14	17	54	7	17	18	3	6	46	17	37	30	भ. 22/23 बाद, ग्रहणवेध,
	31	15	बु.	18	56	पुष्य	17	35	आ.	26	26	कर्क			7	19	17	53	7	14	17	55	7	17	18	4	6	45	17	37	31	भ. 8/39 तक, शुक्र धनिष्ठा में 28/25, माघी पूर्णिमा (I)

(A) प्रारम्भ, श्रीसत्यनारायण व्रत, (B) पुण्यकाल सारा दिन, मकर संक्रान्ति, प्रदोष व्रत, मेरु त्रयोदशी (जैन), (C) भौमवती अमा., (D) (गौंतरी), वरद-तिल-कुन्द चतुर्थी, (E) श्रीलक्ष्मी/ सरस्वती पूजन, (F) श्रवण में 9/30, शनि मूल 4 में 30/32, रथ सप्तमी (पूर्वारुणोदय वाली), आरोग्य सप्तमी, (G) 21/32, जया एकादशी व्रत (स्मा.), (H) त्रिस्पृशा महाद्वादशी, (I) माघस्नान समाप्त, श्रीसत्यनारायण व्रत, खग्रास चन्द्रग्रहण (भारत में दृश्य), श्रीगुरु रविदास जयन्ती,

श्री वि. सं 2074 तिथ्यादि पंचांग (भा. स्टैं. टा.) फरवरी, सन् 2018 ई.

मास पक्ष	फरवरी	तिथि	वार	समाप्ति-काल		नक्षत्र	समाप्ति-काल		योग	समाप्ति-काल		चन्द्रराशि - प्रवेशकाल			चण्डीगढ़				दिल्ली				जयपुर				वाराणसी				तारीख	भद्रा, ग्रहराशि, नक्षत्र--प्रवेश एवं पर्वोत्सवादि (सर्वत्र भा. स्टैं. टा. दिया गया है।)
															सूर्योदय		सूर्यास्त		सूर्योदय		सूर्यास्त		सूर्योदय		सूर्यास्त		सूर्योदय		सूर्यास्त			
				घं.	मि.		घं.	मि.		घं.	मि.		घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.		
फाल्गुन कृष्ण	1	1	गु.	15	43	आश्ले.	15	5	सौ.	22	40	सिंह	15	5	7	18	17	54	7	13	17	56	7	16	18	4	6	45	17	38	1	फाल्गुन कृष्णपक्ष प्रारम्भ, शुक्र पश्चिम में उदित (A)
	2	2	शु.	12	54	मघा	12	58	शो.	19	16	सिंह			7	18	17	55	7	13	17	57	7	16	18	5	6	44	17	39	2	भ. 23/45 बाद, ग्रहणवेध,
	3	3	श.	10	36	पू.फा.	11	23	अ.	16	20	कन्या	17	6	7	17	17	56	7	12	17	58	7	15	18	6	6	44	17	40	3	भ. 10/36 तक, बुध श्रवण में 8/30. (B) शुक्र उदित 1 फरवरी
	4	4	र.	8	58	उ.फा.	10	28	सु.	13	57	कन्या			7	16	17	57	7	12	17	59	7	15	18	7	6	43	17	40	4	शुक्रबाल्य समाप्त 17/54,
	5	5	चं.	8	5	हस्त	10	17	धृ.	12	10	तुला	22	29	7	16	17	57	7	11	17	59	7	14	18	7	6	43	17	41	5	
	6	6	मं.	8	1	चित्रा	10	53	शू.	11	1	तुला			7	15	17	58	7	10	18	0	7	13	18	8	6	42	17	42	6	भ. 8/01 से 20/23 तक, सूर्य धनिष्ठा में 12/45,(C)
	7	7	बु.	8	45	स्वाती	12	15	गं.	10	29	तुला			7	14	17	59	7	10	18	1	7	13	18	9	6	42	17	42	7	
	8	8	गु.	10	13	विशा.	14	19	वृ.	10	30	वृश्चिक	7	45	7	13	18	0	7	9	18	2	7	12	18	10	6	41	17	43	8	
	9	9	शु.	12	16	अनु.	16	55	ध्रु.	10	58	वृश्चिक			7	12	18	1	7	8	18	2	7	11	18	10	6	41	17	44	9	भ. 25/30 बाद,
	10	10	श.	14	44	ज्येष्ठा	19	52	व्या.	11	44	धनु	19	52	7	12	18	2	7	7	18	3	7	11	18	11	6	40	17	44	10	भ. 14/44 तक,
	11	11	र.	17	24	मूल	22	59	ह.	12	41	धनु			7	11	18	3	7	7	18	4	7	10	18	12	6	39	17	45	11	बुध धनिष्ठा में 7/59, शुक्र शत. में 19/38, विजया (D)
	12	12	चं.	20	5	पू.षा.	26	3	व.	13	39	धनु			7	10	18	3	7	6	18	5	7	9	18	13	6	39	17	46	12	सं. सूर्य कुम्भ में 26/48, मु. 45, पुण्यकाल अगले (E)
	13	13	मं.	22	35	उ.षा.	28	56	सि.	14	32	मकर	8	48	7	9	18	4	7	5	18	6	7	9	18	13	6	38	17	46	13	भ. 22/35 बाद, मंगल ज्येष्ठा में 9/56, भौमप्रदोष (F)
	14	14	बु.	24	46	श्रव.	–	–	व्य.	15	12	मकर			7	8	18	5	7	4	18	6	7	8	18	14	6	37	17	47	14	भ. 11/40 तक, बुध कुम्भ में 27/24,
	15	30	गु.	26	35	श्रव.	7	31	व.	15	37	कुम्भ	20	39	7	7	18	6	7	4	18	7	7	7	18	15	6	37	17	48	15	पंचक प्रारम्भ 20/39,
फाल्गुन शुक्ल	16	1	शु.	27	57	धनि.	9	42	प.	15	42	कुम्भ			7	6	18	7	7	3	18	8	7	6	18	15	6	36	17	48	16	फाल्गुन शुक्लपक्ष प्रारम्भ,
	17	2	श.	28	51	शत.	11	27	शि.	15	27	मीन	30	29	7	6	18	8	7	2	18	9	7	6	18	16	6	35	17	49	17	चन्द्रदर्शन, मु. 30, अवतारदिन श्रीरामकृष्ण परमहंस,
	18	3	र.	29	17	पू.भा.	12	46	सि.	14	51	मीन			7	5	18	8	7	1	18	9	7	5	18	17	6	34	17	50	18	बुध शत. में 20/07, सूर्य सायन मीन में 22/48,(G)
	19	4	चं.	29	15	उ.भा.	13	37	सा.	13	53	मीन			7	4	18	9	7	0	18	10	7	4	18	17	6	33	17	50	19	भ. 17/16 से 29/15 तक, सूर्य शत. में 17/12,
	20	5	मं.	28	46	रेव.	14	2	शु.	12	34	मेष	14	2	7	3	18	10	6	59	18	11	7	3	18	18	6	33	17	51	20	पंचक समाप्त 14/02,
	21	6	बु.	27	50	अश्वि.	14	1	शु.	10	53	मेष			7	2	18	11	6	58	18	11	7	2	18	19	6	32	17	51	21	
	22	7	गु.	26	29	भर.	13	34	ब्र./ ऐं.	8 30	52 32	वृष	19	23	7	1	18	12	6	57	18	12	7	1	18	19	6	31	17	52	22	भ. 26/29 बाद, शुक्र पू.भा. में 11/23, राहु आश्ले. (H)
	23	8	शु.	24	43	कृत्ति.	12	42	वै.	27	52	वृष			7	0	18	12	6	56	18	13	7	0	18	20	6	30	17	53	23	भ. 13/36 तक, होलाष्टक प्रारम्भ, होलाष्टक प्रारम्भ 23 फरवरी
	24	9	श.	22	36	रोहि.	11	28	वि.	24	55	मिथुन	22	43	6	59	18	13	6	55	18	14	6	59	18	21	6	29	17	53	24	
	25	10	र.	20	10	मृग.	9	53	प्री.	21	43	मिथुन			6	57	18	14	6	54	18	14	6	59	18	21	6	28	17	54	25	भ. 30/49 बाद, बुध पू.भा. में 23/32,
	26	11	चं.	17	29	आर्द्रा/ पुन.	8 30	2 0	आ.	18	20	कर्क	24	31	6	56	18	15	6	53	18	15	6	58	18	22	6	28	17	54	26	भ. 17/29 तक, आमला एकादशी व्रत (स.),
	27	12	मं.	14	39	पुष्य	27	51	सौ.	14	49	कर्क			6	55	18	15	6	52	18	16	6	57	18	22	6	27	17	55	27	गोविन्द द्वादशी, भौमप्रदोष व्रत,
	28	13	बु.	11	46	आश्ले.	25	44	शो.	11	16	सिंह	25	44	6	54	18	16	6	51	18	16	6	56	18	23	6	26	17	55	28	

(A) 17/54, ग्रहणवेध, (B) श्रीगणेश चतुर्थी व्रत, ग्रहणवेध, (C) शुक्र कुम्भ में 11/59, (D) एकादशी व्रत (स.), (E) दिन मध्याह्न तक, (F) व्रत, श्री महाशिवरात्रि व्रत
(G) वसन्त ऋतु प्रारम्भ, (H) 1, केतु श्रवण 3 में 23/10.

श्री वि. सं. 2074-75 तिथ्यादि पंचांग (भा. स्टैं. टा.) मार्च, सन् 2018 ई.

मास पक्ष	मार्च	तिथि	वार	समाप्ति-काल		नक्षत्र	समाप्ति-काल		योग	समाप्ति-काल		चन्द्रराशि-प्रवेशकाल			चण्डीगढ़				दिल्ली				जयपुर				वाराणसी				तारीख	भद्रा, ग्रहराशि नक्षत्र-प्रवेश एवं पर्वोत्सवादि (सर्वत्र भा. स्टैं. टा. दिया गया है।)
															सूर्योदय		सूर्यास्त		सूर्योदय		सूर्यास्त		सूर्योदय		सूर्यास्त		सूर्योदय		सूर्यास्त			
				घं.	मि.		घं.	मि.		घं.	मि.		घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.		
फाल्गु शुक्ल	1	14/ 15	गु.	8 30	57 21	मघा	23	47	अ./ सु.	7 28	47 27	सिंह			6	53	18	17	6	50	18	17	6	55	18	24	6	25	17	56	1	भ. 8/57 से 19/39 तक, श्रीसत्यनारायण व्रत, (A) पूर्णिमा तिथिक्षय,
चैत्र कृष्ण	2	1	शु.	28	5	पू.फा.	22	7	धृ.	25	23	कन्या	27	46	6	52	18	17	6	49	18	18	6	54	18	24	6	24	17	56	2	चैत्र कृष्णपक्ष प्रारम्भ, शुक्र मीन में 11/42, शनि (B)
	3	2	श.	26	18	उ.फा.	20	55	शू.	22	42	कन्या			6	51	18	18	6	48	18	18	6	53	18	25	6	23	17	57	3	बुध मीन में 6/54,
	4	3	र.	25	8	हस्त	20	16	गं.	20	29	कन्या			6	50	18	19	6	47	18	19	6	52	18	25	6	22	17	57	4	भ. 13/42 से 25/08 तक, सूर्य (C)
	5	4	चं.	24	39	चित्रा	20	17	वृ.	18	49	तुला	8	11	6	49	18	20	6	46	18	19	6	51	18	26	6	21	17	58	5	बुध पश्चिम में उदित 18/20, (D)
	6	5	मं.	24	57	स्वाती	21	3	ध्रु.	17	45	तुला			6	47	18	20	6	45	18	20	6	50	18	27	6	20	17	58	6	
	7	6	बु.	26	0	विशा.	22	34	व्या.	17	16	वृश्चिक	16	7	6	46	18	21	6	44	18	21	6	49	18	27	6	19	17	59	7	भ. 26/00 बाद, मंगल मूल धनु में 18/29, प्लूटो उ.षा. (E)
	8	7	गु.	27	45	अनु.	24	45	ह.	17	20	वृश्चिक			6	45	18	22	6	43	18	21	6	48	18	28	6	18	17	59	8	भ. 14/52 तक, मेला श्रीशीतला माता (कुराली) पं.,
	9	8	शु.	30	1	ज्येष्ठा	27	27	व.	17	51	धनु	27	27	6	44	18	22	6	42	18	22	6	47	18	28	6	17	18	0	9	गुरु वक्री 10/17, नेप्च्यून पू.भा. 1 में 9/48, श्रीशीतलाष्टमी,
	10	9	श.	—	—	मूल	30	28	सि.	18	41	धनु			6	43	18	23	6	41	18	23	6	46	18	29	6	16	18	0	10	
	11	9	र.	8	35	पू.षा.	—	—	व्य.	19	40	धनु			6	42	18	24	6	39	18	23	6	44	18	29	6	15	18	1	11	भ. 21/54 बाद,
	12	10	चं.	11	14	पू.षा.	9	34	व.	20	37	मकर	16	19	6	40	18	24	6	38	18	24	6	43	18	30	6	14	18	1	12	भ. 11/14 तक,
	13	11	मं.	13	41	उ.षा.	12	30	प.	21	23	मकर			6	39	18	25	6	37	18	24	6	42	18	30	6	13	18	2	13	बुध रेवती में 14/50, पापमोचिनी एकादशी व्रत (स.),
	14	12	बु.	15	46	श्रव.	15	6	शि.	21	49	कुम्भ	28	13	6	38	18	26	6	36	18	25	6	41	18	31	6	12	18	2	14	पंचक प्रारम्भ 28/13, सं. सूर्य मीन में 23/42, (F)
	15	13	गु.	17	19	धनि.	17	12	सि.	21	52	कुम्भ			6	37	18	26	6	35	18	25	6	40	18	31	6	11	18	3	15	भ. 17/19 से 29/49 तक, शुक्र रेवती में 21/19, (G)
	16	14	शु.	18	18	शत.	18	44	सा.	21	27	कुम्भ			6	35	18	27	6	34	18	26	6	39	18	32	6	10	18	3	16	मेला पिहोवा तीर्थ (हरि.),
	17	30	श.	18	41	पू.भा.	19	43	शु.	20	35	मीन	13	31	6	34	18	28	6	33	18	27	6	38	18	32	6	9	18	4	17	शनैश्चरी अमा, चान्द्र संवत्सर 2074 वि. पूर्ण,
चैत्र शुक्ल	18	1	र.	18	32	उ.भा.	20	9	शु.	19	18	मीन			6	33	18	28	6	31	18	27	6	37	18	33	6	8	18	4	18	चैत्र शुक्ल प्रारम्भ, सूर्य उ.भा. में 8/0, चान्द्र संवत्सर 2075 वि. (H)
	19	2	चं.	17	53	रेवती	20	8	ब्र.	17	39	मेष	20	8	6	32	18	29	6	30	18	28	6	36	18	33	6	7	18	5	19	पंचक समाप्त 20/8, चन्द्रदर्शन, मु. 30,
	20	3	मं.	16	50	अश्वि.	19	44	ऐं.	15	40	मेष			6	31	18	30	6	29	18	28	6	35	18	34	6	6	18	5	20	भ. 28/9 बाद, सूर्य सायन मेष में 21/46 उत्तर गोल प्रारम्भ, (I)
	21	4	बु.	15	28	भरणी	19	1	वै.	13	26	वृष	24	48	6	29	18	30	6	28	18	29	6	34	18	34	6	5	18	6	21	भ. 15/28 तक, हयव्रत, श्री(लक्ष्मी)पंचमी (देखें पृ.13),
	22	5	गु.	13	51	कृत्ति.	18	4	वि.	11	0	वृष			6	28	18	31	6	27	18	29	6	33	18	35	6	4	18	6	22	बुध वक्री 29/48, नागपंचमी, स्कन्द षष्ठी (देखें पृ.13), (J)
	23	6	शु.	12	3	रोहि.	16	57	प्री./ आ.	8 29	25 42	मिथुन	28	20	6	27	18	32	6	26	18	30	6	31	18	35	6	3	18	7	23	
	24	7	श.	10	6	मृग.	15	42	सौ.	26	54	मिथुन			6	26	18	32	6	25	18	31	6	30	18	36	6	2	18	7	24	भ. 10/6 से 21/5 तक, बुध पश्चिम में अस्त 18/32, (K)
	25	8/ 9	र.	8 29	2 54	आर्द्रा	14	20	शो.	24	2	मिथुन			6	24	18	33	6	23	18	31	6	29	18	36	6	1	18	7	25	श्रीरामनवमी (पुनर्वसु 14/20 बाद), नवरात्र समाप्त, नवमी तिथिक्षय,
	26	10	चं.	27	43	पुन.	12	55	अ.	21	7	कर्क	7	16	6	23	18	34	6	22	18	32	6	28	18	37	6	0	18	8	26	शुक्र अश्विनी मेष में 15/46, नवरात्र-पारणा,
	27	11	मं.	25	32	पुष्य	11	27	सु.	18	11	कर्क			6	22	18	34	6	21	18	32	6	27	18	37	5	59	18	8	27	भ. 14/37 से 25/32 तक, दोलोत्सव, कामदा एकादशी व्रत (स.),
	28	12	बु.	23	24	आश्ले.	10	1	धृ.	15	17	सिंह	10	1	6	21	18	35	6	20	18	33	6	26	18	38	5	58	18	9	28	श्रीविष्णुदमनोत्सव,
	29	13	गु.	21	23	मघा	8	39	शू.	12	28	सिंह			6	19	18	35	6	19	18	33	6	25	18	38	5	57	18	9	29	अनंग त्रयोदशी, प्रदोष व्रत, श्रीमहावीर जयन्ती (जैन),
	30	14	शु.	19	35	पू.फा.	7	27	गं.	9	47	कन्या	13	11	6	18	18	36	6	18	18	34	6	24	18	39	5	55	18	10	30	भ. 19/35 बाद, मंगल पू.षा. में 27/17, श्रीशिव-दमनोत्सव, (L)
	31	15	श.	18	7	उ.फा./ हस्त	6 29	30 56	वृ./ ध्रु.	7 29	20 11	कन्या			6	17	18	37	6	16	18	34	6	23	18	39	5	54	18	10	31	भ. 6/51 तक, सूर्य रेवती में 18/51, यूरेनस अश्विनी 2 में (M)

होलाष्टक समाप्त
1 मार्च

(A) होलिका-दहन (19/39 बाद), जन्मदिन श्रीचैतन्य महाप्रभु, होलाष्टक समाप्त, (B) पू.षा. 1 में 23/35, वसन्तोत्सव, होला महल्ला श्री आनन्दपुर साहिब (पं.), (C) पू.भा. में 23/35, बुध उ.भा. में 26/35, शुक्र उ.भा. में 27/55, (D) श्रीगणेशचतुर्थी व्रत, (E) 1 में 16/01, (F) मु. 30, पुण्यकाल मध्याह्न बाद, प्रदोष व्रत, (G) वारुणी योग (17/12 से 17/19 तक), (H) प्रारम्भ, वासन्त (चैत्र) नवरात्र प्रारम्भ, वर्षफलश्रवण, तैलाभ्यंग, ध्वजारोहण, निम्बपत्र-प्राशन, गुड़ी पड़वा, चन्द्रव्रत, (I) महाविषुव दिन, गौरी तृतीया (गणगौर), आन्दोलन तृतीया, श्रीमत्स्य जयन्ती, (J) शक संवत्सर 1940 प्रारम्भ, (K) अशोकाष्टमी, श्रीदुर्गाष्टमी (देखें पृ.13), (L) श्रीसत्यनारायण व्रत (देखें पृ.13), (M) 10/0, चैत्री पूर्णिमा, वैशाखस्नान प्रारम्भ, श्रीहनुमान् जयन्ती (द.भा.),

श्री वि. सं. 2075 तिथ्यादि पंचांग (भा. स्टैं. टा.) अप्रैल, सन् 2018 ई.

मास पक्ष	अंग्रे	तिथि	वार	समाप्ति-काल		नक्षत्र	समाप्ति-काल		योग	समाप्ति-काल		चन्द्रराशि-प्रवेशकाल			चण्डीगढ़				दिल्ली				जयपुर				वाराणसी				तारीख	भद्रा, ग्रहराशि नक्षत्र-प्रवेश एवं पर्वोत्सवादि (सर्वत्र भा. स्टैं. टा. दिया गया है।)
															सूर्योदय		सूर्यास्त		सूर्योदय		सूर्यास्त		सूर्योदय		सूर्यास्त		सूर्योदय		सूर्यास्त			
				घं.	मि.		घं.	मि.		घं.	मि.		घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.		
वैशाख कृष्ण	1	1	र.	17	4	चित्रा	29	51	व्या.	27	26	तुला	17	50	6	16	18	37	6	15	18	35	6	22	18	40	5	53	18	10	1	वैशाख कृष्ण पक्ष प्रारम्भ,
	2	2	चं.	16	35	स्वाती	—	—	ह.	26	8	तुला			6	15	18	38	6	14	18	36	6	20	18	40	5	52	18	11	2	भ. 28/39 बाद,
	3	3	मं.	16	44	स्वाती	6	22	व.	25	22	वृश्चिक	25	10	6	13	18	39	6	13	18	36	6	19	18	41	5	51	18	11	3	भ. 16/44 तक, वक्री बुध उ.भा. में 9/24, श्रीगणेशचतुर्थी व्रत,
	4	4	बु.	17	32	विशा.	7	31	सि.	25	7	वृश्चिक			6	12	18	39	6	12	18	37	6	18	18	41	5	50	18	12	4	
	5	5	गु.	19	1	अनु.	9	19	व्य.	25	21	वृश्चिक			6	11	18	40	6	11	18	37	6	17	18	42	5	49	18	12	5	
	6	6	शु.	21	3	ज्येष्ठा	11	42	व.	26	0	धनु	11	42	6	10	18	40	6	10	18	38	6	16	18	42	5	48	18	13	6	भ. 21/3 बाद, शुक्र भरणी में 11/31,
	7	7	श.	23	30	मूल	14	32	प.	26	55	धनु			6	9	18	41	6	8	18	38	6	15	18	43	5	47	18	13	7	भ. 10/17 तक,
	8	8	र.	26	5	पू.षा.	17	36	शि.	27	56	मकर	24	22	6	7	18	42	6	7	18	39	6	14	18	43	5	46	18	14	8	
	9	9	चं.	28	34	उ.षा.	20	39	सि.	28	50	मकर			6	6	18	42	6	6	18	39	6	13	18	44	5	45	18	14	9	बुध पूर्व में उदित 6/6,
	10	10	मं.	—	—	श्रव.	23	24	सा.	29	28	मकर			6	5	18	43	6	5	18	40	6	12	18	44	5	44	18	14	10	भ. 17/37 बाद,
	11	10	बु.	6	40	धनि.	25	40	शु.	29	41	कुम्भ	12	37	6	4	18	44	6	4	18	41	6	11	18	45	5	43	18	15	11	भ. 6/40 तक, पंचक प्रारम्भ 12/37,
	12	11	गु.	8	13	शत.	27	18	शु.	29	22	कुम्भ			6	3	18	44	6	3	18	41	6	10	18	45	5	42	18	15	12	वरूथिनी एकादशी व्रत (स.), श्रीवल्लभाचार्य जयन्ती,
	13	12	शु.	9	4	पू.भा.	28	13	ब्र.	28	30	मीन	22	3	6	1	18	45	6	2	18	42	6	9	18	46	5	41	18	16	13	प्रदोष व्रत,
	14	13	श.	9	12	उ.भा.	28	27	ऐं.	27	4	मीन			6	0	18	45	6	1	18	42	6	8	18	46	5	40	18	16	14	भ. 9/12 से 20/55 तक, सं. सूर्य अश्वि. मेष में 8/12, (A)
	15	14	र.	8	38	रेवती	28	5	वै.	25	9	मेष	28	5	5	59	18	46	6	0	18	43	6	7	18	47	5	39	18	17	15	पंचक समाप्त 28/5, बुध मार्गी 14/50,
	16	30/	चं.	7	27	अश्वि.	27	12	वि.	22	48	मेष			5	58	18	47	5	59	18	43	6	6	18	47	5	39	18	17	16	सोमवती अमा,
वैशाख शुक्ल		1		29	47																											वैशाख शुक्ल पक्ष प्रारम्भ, प्रतिपदा तिथिक्षय,
	17	2	मं.	27	45	भरणी	25	56	प्री.	20	8	मेष			5	57	18	47	5	58	18	44	6	5	18	48	5	38	18	18	17	शुक्र कृत्तिका में 8/38, चन्द्रदर्शन, मु. 15, श्रीशिवाजी जयन्ती,
	18	3	बु.	25	30	कृत्ति.	24	27	आ.	17	14	वृष	7	35	5	56	18	48	5	57	18	45	6	4	18	48	5	37	18	18	18	शनि वक्री 7/17, अक्षय तृतीया, श्रीपरशुराम जयन्ती,
	19	4	गु.	23	8	रोहि.	22	51	सौ.	14	13	वृष			5	55	18	49	5	56	18	45	6	3	18	49	5	36	18	19	19	भ. 12/19 से 23/8 तक, वक्री गुरु विशाखा 2 में 7/57, (B)
	20	5	शु.	20	46	मृग.	21	14	शो.	11	10	मिथुन	10	2	5	54	18	49	5	55	18	46	6	2	18	49	5	35	18	19	20	सूर्य सायन वृष में 8/42, ग्रीष्म ऋतु प्रारम्भ, श्रीशंकराचार्य जयन्ती,
	21	6	श.	18	28	आर्द्रा	19	42	अ./	8	9	मिथुन			5	53	18	50	5	54	18	46	6	1	18	50	5	34	18	20	21	श्रीरामानुजाचार्य जयन्ती, अगस्त्य अस्त,
									सु.	29	13																					
	22	7	र.	16	17	पुन.	18	18	धृ.	26	25	कर्क	12	38	5	52	18	51	5	53	18	47	6	0	18	51	5	33	18	20	22	भ. 16/17 से 27/17 तक, प्लूटो वक्री 20/52, श्रीगंगा जन्म,
	23	8	चं.	14	16	पुष्य	17	3	शू.	23	44	कर्क			5	51	18	51	5	52	18	47	5	59	18	51	5	32	18	20	23	
	24	9	मं.	12	26	आश्ले.	15	58	गं.	21	13	सिंह	15	58	5	50	18	52	5	51	18	48	5	58	18	52	5	31	18	21	24	श्रीजानकी जयन्ती,
	25	10	बु.	10	46	मघा	15	6	वृ.	18	51	सिंह			5	49	18	53	5	50	18	49	5	58	18	52	5	31	18	21	25	भ. 22/3 बाद, मंगल उ.षा. में 15/23,
	26	11	गु.	9	20	पू.फा.	14	25	ध्रु.	16	39	कन्या	20	18	5	48	18	53	5	49	18	49	5	57	18	53	5	30	18	22	26	भ. 9/20 तक, राहु पुष्य 4, केतु श्रवण 2 में 21/12, (C)
	27	12	शु.	8	7	उ.फा.	14	0	व्या.	14	40	कन्या			5	47	18	54	5	48	18	50	5	56	18	53	5	29	18	22	27	सूर्य भरणी में 23/59, बुध रेवती में 27/31, प्रदोष व्रत,
	28	13	श.	7	12	हस्त	13	52	ह.	12	56	तुला	25	56	5	46	18	55	5	47	18	50	5	55	18	54	5	28	18	23	28	शुक्र रोहिणी में 7/18, श्रीनृसिंह जयन्ती,
	29	14	र.	6	37	चित्रा	14	6	व.	11	28	तुला			5	45	18	55	5	46	18	51	5	54	18	54	5	27	18	23	29	भ. 6/37 से 18/33 तक, श्रीकूर्म जयन्ती, श्रीसत्यनारायण व्रत,
	30	15	चं.	6	28	स्वाती	14	46	सि.	10	22	तुला			5	44	18	56	5	45	18	52	5	53	18	55	5	27	18	24	30	श्रीबुद्ध पूर्णिमा, श्रीबुद्ध जयन्ती, वैशाखस्नान समाप्त,

(A) मु. 45, पुण्यकाल 14/12 तक, वैशाखी (पं.), (B) शुक्र वृष में 26/8, (C) मोहिनी एकादशी व्रत (स.),

श्री वि. सं. 2075 **तिथ्यादि पंचांग (भा. स्टैं. टा.)** **मई, सन् 2018 ई.**

मास पक्ष	मई	तिथि	वार	समाप्ति-काल		नक्षत्र	समाप्ति-काल		योग	समाप्ति-काल		चन्द्रराशि-प्रवेशकाल			चण्डीगढ़				दिल्ली				जयपुर				वाराणसी				तारीख	भद्रा, ग्रहराशि नक्षत्र-प्रवेश एवं पर्वोत्सवादि (सर्वत्र भा. स्टैं. टा. दिया गया है।)
															सूर्योदय		सूर्यास्त		सूर्योदय		सूर्यास्त		सूर्योदय		सूर्यास्त		सूर्योदय		सूर्यास्त			
				घं.	मि.		घं.	मि.		घं.	मि		घं.	मि	घं.	मि.	घ.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.		
प्र. ज्येष्ठ कृष्ण	1	1	मं.	6	48	विशा.	15	56	व्य.	9	39	वृश्चिक	9	35	5	43	18	57	5	45	18	52	5	52	18	55	5	26	18	24	1	प्रथम ज्येष्ठ कृष्ण पक्ष प्रारम्भ,
	2	2	बु.	7	40	अनु.	17	38	व.	9	21	वृश्चिक			5	42	18	57	5	44	18	53	5	52	18	56	5	25	18	25	2	भ. 20/22 बाद, मंगल मकर में 16/18,
	3	3	गु.	9	5	ज्येष्ठा	19	51	प.	9	29	धनु	19	51	5	41	18	58	5	43	18	53	5	51	18	56	5	24	18	25	3	भ. 9/5 तक, श्रीगणेशचतुर्थी व्रत,
	4	4	शु.	11	1	मूल	22	32	शि.	10	1	धनु			5	40	18	59	5	42	18	54	5	50	18	57	5	24	18	26	4	
	5	5	श.	13	22	पू.षा.	25	32	सि.	10	52	धनु			5	39	18	59	5	41	18	55	5	49	18	58	5	23	18	26	5	
	6	6	र.	15	55	उ.षा.	28	39	सा.	11	54	मकर	8	19	5	39	19	0	5	41	18	55	5	49	18	58	5	22	18	27	6	भ. 15/55 से 29/12 तक,
	7	7	चं.	18	28	श्रव.	—	—	शु.	12	56	मकर			5	38	19	0	5	40	18	56	5	48	18	59	5	22	18	27	7	
	8	8	मं.	20	43	श्रव.	7	37	शु.	13	48	कुम्भ	20	59	5	37	19	1	5	39	18	56	5	47	18	59	5	21	18	28	8	पंचक प्रारम्भ 20/59,
	9	9	बु.	22	27	धनि.	10	12	ब्र.	14	19	कुम्भ			5	36	19	2	5	38	18	57	5	47	19	0	5	20	18	28	9	बुध अश्विनी मेष में 17/26, शुक्र मृग. में 7/48,
	10	10	गु.	23	28	शत.	12	11	ऐं.	14	20	कुम्भ			5	35	19	2	5	38	18	58	5	46	19	0	5	20	18	29	10	भ. 10/58 से 23/28 तक,
	11	11	शु.	23	42	पू.भा.	13	25	वै.	13	45	मीन	7	11	5	35	19	3	5	37	18	58	5	45	19	1	5	19	18	29	11	सूर्य कृत्तिका में 18/12, अपरा एकादशी व्रत (स.), भद्रकाली एकादशी (पं.),
	12	12	श.	23	6	उ.भा.	13	51	वि.	12	31	मीन			5	34	19	4	5	36	18	59	5	45	19	1	5	19	18	30	12	
	13	13	र.	21	46	रेवती	13	31	प्री.	10	40	मेष	13	31	5	33	19	4	5	36	18	59	5	44	19	2	5	18	18	30	13	भ. 21/46 बाद, पंचक समाप्त 13/31, प्रदोष व्रत,
	14	14	चं.	19	47	अश्वि.	12	30	आ./ सौ.	8 29	15 21	मेष			5	33	19	5	5	35	19	0	5	44	19	3	5	18	18	31	14	भ. 8/47 तक, सं. सूर्य वृष में 29/3, मु. 15, पुण्यकाल अगले दिन (A)
	15	30	मं.	17	18	भरणी	10	56	शो.	26	6	वृष	16	28	5	32	19	6	5	34	19	1	5	43	19	3	5	17	18	32	15	भावुका अमा, वटसावित्री व्रत (अमापक्ष), भौमवती अमा, शनैश्चर जयन्ती,
प्र. (अधि.) ज्येष्ठ शुक्ल	16	1	बु.	14	28	कृत्ति.	8	59	अ.	22	37	वृष			5	31	19	6	5	34	19	1	5	43	19	4	5	17	18	32	16	प्रथम (अधिक) ज्येष्ठ शुक्ल पक्ष प्रारम्भ, चन्द्रदर्शन, मु. 45, (B)
	17	2	गु.	11	27	रोहि./ मृग.	6 28	48 33	सु.	19	3	मिथुन	17	40	5	31	19	7	5	33	19	2	5	42	19	4	5	16	18	33	17	
	18	3/ 4	शु.	8 29	25 28	आर्द्रा	26	23	धृ.	15	29	मिथुन			5	30	19	8	5	33	19	2	5	42	19	5	5	16	18	33	18	भ. 18/56 से 29/28 तक, बुध भरणी में 8/38, चतुर्थी तिथिक्षय,
	19	5	श.	26	44	पुन.	24	25	शू.	12	2	कर्क	18	53	5	30	19	8	5	32	19	3	5	41	19	5	5	15	18	34	19	
	20	6	र.	24	18	पुष्य	22	44	गं.	8	48	कर्क			5	29	19	9	5	32	19	4	5	41	19	6	5	15	18	34	20	शुक्र आर्द्रा में 10/15,
	21	7	चं.	22	13	आश्ले.	21	24	वृ./ ध्रु.	5 27	49 8	सिंह	21	24	5	29	19	10	5	31	19	4	5	40	19	6	5	14	18	35	21	भ. 22/13 बाद, सूर्य सायन मिथुन में 7/45,
	22	8	मं.	20	31	मघा	20	28	व्या.	24	46	सिंह			5	28	19	10	5	31	19	5	5	40	19	7	5	14	18	35	22	भ. 9/22 तक,
	23	9	बु.	19	13	पू.फा.	19	54	ह.	22	43	कन्या	25	50	5	28	19	11	5	31	19	5	5	39	19	7	5	14	18	36	23	
	24	10	गु.	18	18	उ.फा.	19	45	व.	21	0	कन्या			5	27	19	11	5	30	19	6	5	39	19	8	5	13	18	36	24	श्रीगंगा दशहरा (देखें पृ.13),
	25	11	शु.	17	47	हस्त	19	59	सि.	19	35	कन्या			5	27	19	12	5	30	19	6	5	39	19	9	5	13	18	37	25	भ. 6/2 से 17/47 तक, सूर्य रोहिणी में 14/20, बुध कृत्तिका में (C)
	26	12	श.	17	40	चित्रा	20	36	व्य.	18	30	तुला	8	14	5	26	19	13	5	29	19	7	5	38	19	9	5	13	18	37	26	बुध पूर्व में अस्त 5/26, शनिप्रदोष व्रत,
	27	13	र.	17	58	स्वाती	21	37	व.	17	44	तुला			5	26	19	13	5	29	19	7	5	38	19	10	5	13	18	38	27	मंगल श्रवण में 24/47, बुध वृष में 8/22,
	28	14	चं.	18	40	विशा.	23	3	प.	17	18	वृश्चिक	16	39	5	26	19	14	5	29	19	8	5	38	19	10	5	12	18	38	28	भ. 18/40 बाद,
	29	15	मं.	19	49	अनु.	24	55	शि.	17	12	वृश्चिक			5	25	19	14	5	28	19	9	5	38	19	11	5	12	18	39	29	भ. 7/15 तक, श्रीसत्यनारायण व्रत,
द्वि. (अ.)	30	1	बु.	21	24	ज्येष्ठा	27	12	सि.	17	27	धनु	27	12	5	25	19	15	5	28	19	9	5	37	19	11	5	12	18	39	30	द्वितीय (अधिक) ज्येष्ठ कृष्ण पक्ष प्रारम्भ, यूरेनस अश्विनी 3 में 29/21,
ज्ये. कृ.	31	2	गु.	23	24	मूल	—	—	सा.	18	1	धनु			5	25	19	16	5	28	19	10	5	37	19	12	5	12	18	39	31	बुध रोहिणी में 27/53, शुक्र पुन. में 15/8,

(A) मध्याह्न तक, शुक्र मिथुन में 20/46, (B) वक्री गुरु विशाखा 1 में 10/56, ज्येष्ठ मल (अधिक) मास प्रारम्भ, (C) 15/55, पुरुषोत्तमा एकादशी व्रत (स.),

श्री वि. सं. 2075 तिथ्यादि पंचांग (भा. स्टैं. टा.) जून, सन् 2018 ई.

मास पक्ष	दिन	तिथि	वार	समाप्ति-काल		नक्षत्र	समाप्ति-काल		योग	समाप्ति-काल		चन्द्रराशि-प्रवेशकाल			चण्डीगढ़				दिल्ली				जयपुर				वाराणसी				तारीख	भद्रा, ग्रहराशि नक्षत्र-प्रवेश एवं पर्वोत्सवादि (सर्वत्र भा. स्टैं. टा. दिया गया है।)
															सूर्योदय		सूर्यास्त		सूर्योदय		सूर्यास्त		सूर्योदय		सूर्यास्त		सूर्योदय		सूर्यास्त			
				घं.	मि.		घं.	मि.		घं.	मि.		घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.		
द्वि. (अधि.) ज्येष्ठ कृष्ण	1	3	शु.	25	44	मूल	5	52	शु.	18	52	धनु			5	24	19	16	5	28	19	10	5	37	19	12	5	11	18	40	1	भ. 12/34 से 25/44 तक,
	2	4	श.	28	17	पू.षा.	8	50	शु.	19	54	मकर	15	37	5	24	19	17	5	28	19	11	5	37	19	12	5	11	18	40	2	श्रीगणेशचतुर्थी व्रत,
	3	5	र.	—	—	उ.षा.	11	58	ब्र.	21	0	मकर			5	24	19	17	5	27	19	11	5	37	19	13	5	11	18	41	3	
	4	5	चं.	6	52	श्रव.	15	5	ऐं.	22	2	कुम्भ	28	33	5	24	19	18	5	27	19	12	5	37	19	13	5	11	18	41	4	पंचक प्रारम्भ 28/33,
	5	6	मं.	9	16	धनि.	17	56	वै.	22	50	कुम्भ			5	24	19	18	5	27	19	12	5	36	19	14	5	11	18	42	5	भ. 9/16 से 22/16 तक, वक्री शनि मूल 4 में 6/32,
	6	7	बु.	11	15	शत.	20	20	वि.	23	13	कुम्भ			5	24	19	19	5	27	19	12	5	36	19	14	5	11	18	42	6	
	7	8	गु.	12	37	पू.भा.	22	4	प्री.	23	4	मीन	15	42	5	23	19	19	5	27	19	13	5	36	19	15	5	11	18	42	7	बुध मृग. में 6/26,
	8	9	शु.	13	13	उ.भा.	23	2	आ.	22	18	मीन			5	23	19	19	5	27	19	13	5	36	19	15	5	11	18	43	8	भ. 25/6 बाद, सूर्य मृग. में 12/16, शुक्र कर्क में 26/41,
	9	10	श.	12	59	रेवती	23	10	सौ.	20	51	मेष	23	10	5	23	19	20	5	27	19	14	5	36	19	16	5	11	18	43	9	भ. 12/59 तक, पंचक समाप्त 23/10, वक्री प्लूटो पू.षा. 4 में 10/7,
	10	11	र.	11	54	अश्वि.	22	29	शो.	18	44	मेष			5	23	19	20	5	27	19	14	5	36	19	16	5	11	18	44	10	बुध मिथुन में 7/32, पुरुषोत्तमा एकादशी व्रत (सं.),
	11	12	चं.	10	4	भरणी	21	5	अ.	16	2	वृष	26	39	5	23	19	21	5	27	19	15	5	36	19	16	5	11	18	44	11	शुक्र पुष्य में 22/56, सोमप्रदोष व्रत,
	12	13/ 14	मं.	7 28	34 34	कृत्ति.	19	7	सु.	12	48	वृष			5	23	19	21	5	27	19	15	5	36	19	17	5	11	18	44	12	भ. 7/34 से 18/4 तक, चतुर्दशी तिथिक्षय,
	13	30	बु.	25	13	रोहि.	16	43	धृ./ शू.	9 29	12 20	मिथुन	27	25	5	23	19	22	5	27	19	15	5	36	19	17	5	11	18	45	13	बुध आर्द्रा में 10/22, ज्येष्ठ मल (अधिक) मास समाप्त,
द्वि. (शुद्ध) ज्येष्ठ शुक्ल	14	1	गु.	21.	42	मृग.	14	4	ग.	25	21	मिथुन			5	23	19	22	5	27	19	16	5	36	19	17	5	11	18	45	14	द्वितीय (शुद्ध) ज्येष्ठ शुक्ल पक्ष प्रारम्भ,
	15	2	शु.	18	10	आर्द्रा	11	21	वृ.	21	23	कर्क	27	22	5	23	19	22	5	27	19	16	5	36	19	18	5	11	18	45	15	चन्द्रदर्शन, मु. 45, सं. सूर्य मिथुन में 11/36, मु. 45, पुण्यकाल (A)
	16	3	श.	14	46	पुन.	8	43	ध्रु.	17	33	कर्क			5	24	19	23	5	27	19	16	5	37	19	18	5	11	18	46	16	भ. 25/13 बाद, रम्भा तृतीया, श्रीमहाराणा प्रताप जयन्ती (राज.),
	17	4	र.	11	39	पुष्य/ आश्ले.	6 28	20 19	व्या.	13	58	सिंह	28	19	5	24	19	23	5	27	19	17	5	37	19	18	5	11	18	46	17	भ. 11/39 तक, बुध पश्चिम में उदित 19/23, बलिदान-दिन (B)
	18	5	चं.	8	55	मघा	26	46	ह.	10	43	सिंह			5	24	19	23	5	27	19	17	5	37	19	19	5	12	18	46	18	वक्री गुरु स्वाती 4 में 5/43, नेप्च्यून वक्री 29/0, अरण्य षष्ठी, (C)
	19	6/ 7	मं.	6 28	41 59	पू.फा.	25	45	व.	7	53	सिंह			5	24	19	23	5	28	19	17	5	37	19	19	5	12	18	46	19	भ. 28/59 बाद, बुध पुन. में 26/43, सप्तमी तिथिक्षय,
	20	8	बु.	27	51	उ.फा.	25	18	सि./ व्य.	5 27	29 33	कन्या	7	35	5	24	19	24	5	28	19	17	5	37	19	19	5	12	18	47	20	भ. 16/25 तक,
	21	9	गु.	27	19	हस्त	25	26	व.	26	6	कन्या			5	24	19	24	5	28	19	18	5	37	19	19	5	12	18	47	21	सूर्य सायन कर्क में 15/37, दक्षिण अयन एवं वर्षा ऋतु प्रारम्भ,
	22	10	शु.	27	20	चित्रा	26	8	प.	25	5	तुला	13	43	5	25	19	24	5	28	19	18	5	38	19	19	5	12	18	47	22	सूर्य आर्द्रा में 11/11,
	23	11	श.	27	52	स्वाती	27	20	शि.	24	30	तुला			5	25	19	24	5	28	19	18	5	38	19	20	5	13	18	47	23	भ. 15/36 से 27/52 तक, शुक्र आश्ले. में 10/16, निर्जला एकादशी व्रत (स.),
	24	12	र.	28	54	विशा.	29	1	सि.	24	18	वृश्चिक	22	33	5	25	19	24	5	29	19	18	5	38	19	20	5	13	18	48	24	
	25	13	चं.	—	—	अनु.	—	—	सा.	24	26	वृश्चिक			5	25	19	25	5	29	19	18	5	38	19	20	5	13	18	48	25	बुध कर्क में 18/8, सोमप्रदोष व्रत,
	26	13	मं.	6	22	अनु.	7	7	शु.	24	53	वृश्चिक			5	26	19	25	5	29	19	18	5	39	19	20	5	13	18	48	26	मंगल वक्री 26/36,
	27	14	बु.	8	13	ज्येष्ठा	9	34	शु.	25	35	धनु	9	34	5	26	19	25	5	29	19	19	5	39	19	20	5	14	18	48	27	भ. 8/13 से 21/18 तक, बुध पुष्य में 19/21, वट सावित्री व्रत (D)
	28	15	गु.	10	23	मूल	12	21	ब्र.	26	30	धनु			5	26	19	25	5	30	19	19	5	39	19	20	5	14	18	48	28	राहु पुष्य 3, केतु श्रवण 1 में 18/45,
आषाढ़ कृष्ण	29	1	शु.	12	47	पू.षा.	15	21	ऐ.	27	34	मकर	22	7	5	27	19	25	5	30	19	19	5	40	19	20	5	14	18	48	29	आषाढ़ कृष्ण पक्ष प्रारम्भ,
	30	2	श.	15	20	उ.षा.	18	29	वै.	28	41	मकर			5	27	19	25	5	30	19	19	5	40	19	20	5	15	18	48	30	भ. 28/37 बाद,

(A) 17/36 तक, (B) श्रीगुरु अर्जुनदेव जी, (C) (देखें पृ.13), विन्ध्यवासिनी-पूजा, (D) (पूर्णिमा पक्ष) (देखें पृ.13), श्रीसत्यनारायण व्रत,

श्री वि. सं. 2075 तिथ्यादि पंचांग (भा. स्टैं. टा.) जुलाई, सन् 2018 ई.

मास पक्ष	जुलाई	तिथि	वार	समाप्ति-काल		नक्षत्र	समाप्ति-काल		योग	समाप्ति-काल		चन्द्रराशि-प्रवेशकाल			चण्डीगढ़				दिल्ली				जयपुर				वाराणसी				तारीख	भद्रा, ग्रहराशि नक्षत्र-प्रवेश एवं पर्वोत्सवादि (सर्वत्र भा. स्टैं. टा. दिया गया है।)
															सूर्योदय		सूर्यास्त		सूर्योदय		सूर्यास्त		सूर्योदय		सूर्यास्त		सूर्योदय		सूर्यास्त			
				घं.	मि.		घं.	मि.		घं.	मि.		घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.		
आषाढ़ कृष्ण	1	3	र.	17	55	श्रव.	21	36	वि.	—	—	मकर			5	27	19	25	5	31	19	19	5	40	19	20	5	15	18	48	1	भ. 17/55 तक, श्रीगणेशचतुर्थी व्रत,
	2	4	चं.	20	21	धनि.	24	35	वि.	5	45	कुम्भ	11	7	5	28	19	25	5	31	19	19	5	41	19	20	5	15	18	48	2	पंचक प्रारम्भ 11/7,
	3	5	मं.	22	28	शत.	27	14	प्री.	6	40	कुम्भ			5	28	19	25	5	32	19	19	5	41	19	20	5	16	18	48	3	
	4	6	बु.	24	6	पू.भा.	29	23	आ.	7	17	मीन	22	54	5	29	19	25	5	32	19	19	5	41	19	20	5	16	18	48	4	भ. 24/6 बाद, शुक्र मघा सिंह में 26/25,
	5	7	गु.	25	7	उ.भा.	—	—	सौ.	7	29	मीन			5	29	19	25	5	32	19	19	5	42	19	20	5	16	18	48	5	भ. 12/37 तक,
	6	8	शु.	25	22	उ.भा.	6	53	शो.	7	10	मीन			5	29	19	25	5	33	19	19	5	42	19	20	5	17	18	48	6	सूर्य पुन. में 10/50,
	7	9	श.	24	50	रेवती	7	39	अ./	6	15	मेष	7	39	5	30	19	24	5	33	19	18	5	43	19	20	5	17	18	48	7	पंचक समाप्त 7/39, बुध आश्ले. में 8/52,
									सु.	28	41																					
	8	10	र.	23	31	अश्वि.	7	38	धृ.	26	30	मेष			5	30	19	24	5	34	19	18	5	43	19	20	5	18	18	48	8	भ. 12/10 से 23/31 तक,
	9	11	चं.	21	27	भरणी/	6	50	शू.	23	42	वृष	12	31	5	31	19	24	5	34	19	18	5	44	19	20	5	18	18	48	9	योगिनी एकादशी व्रत (स.),
						कृत्ति.	29	20																								
	10	12	मं.	18	46	रोहि.	27	15	गं.	20	25	वृष			5	31	19	24	5	35	19	18	5	44	19	20	5	18	18	48	10	गुरु मार्गी 22/33, भौमप्रदोष व्रत,
	11	13	बु.	15	34	मृग.	24	43	वृ.	16	42	मिथुन	14	1	5	32	19	24	5	35	19	18	5	44	19	20	5	19	18	48	11	भ. 15/34 से 25/48 तक,
	12	14	गु.	12	2	आर्द्रा	21	54	ध्रु.	12	43	मिथुन			5	32	19	23	5	36	19	17	5	45	19	19	5	19	18	47	12	
	13	30/	शु.	8	18	पुन.	18	58	व्या./	8	34	कर्क	13	42	5	33	19	23	5	36	19	17	5	45	19	19	5	20	18	47	13	आषाढ़ गुप्त नवरात्र प्रारम्भ (देखें पृ.14)
आषाढ़ शुक्ल		1		28	32				ह.	28	24																					आषाढ़ शुक्ल पक्ष प्रारम्भ, प्रतिपदा तिथिक्षय,
	14	2	श.	24	55	पुष्य	16	6	व.	24	21	कर्क			5	33	19	23	5	37	19	17	5	46	19	19	5	20	18	47	14	चन्द्रदर्शन, मु.15, रथयात्रा (श्री जगदीश रथोत्सव) पुरी, (पुष्यनक्षत्र 16/6 तक),
	15	3	र.	21	35	आश्ले.	13	28	सि.	20	32	सिंह	13	28	5	34	19	22	5	37	19	17	5	46	19	19	5	21	18	47	15	
	16	4	चं.	18	41	मघा	11	12	व्य.	17	4	सिंह			5	34	19	22	5	38	19	16	5	47	19	18	5	21	18	46	16	भ. 8/8 से 18/41 तक, सं. सूर्य कर्क में 22/27, मु. 30, (A)
	17	5	मं.	16	19	पू.फा.	9	27	व.	14	3	कन्या	15	7	5	35	19	22	5	38	19	16	5	47	19	18	5	22	18	46	17	कुमार षष्ठी,
	18	6	बु.	14	36	उ.फा.	8	19	प.	11	34	कन्या			5	36	19	21	5	39	19	16	5	48	19	18	5	22	18	46	18	विवस्वत् सप्तमी,
	19	7	गु.	13	36	हस्त	7	53	शि.	9	38	तुला	19	55	5	36	19	21	5	39	19	15	5	48	19	17	5	23	18	46	19	भ. 13/36 से 25/28 तक,
	20	8	शु.	13	19	चित्रा	8	9	सि.	8	18	तुला			5	37	19	20	5	40	19	15	5	49	19	17	5	23	18	45	20	सूर्य पुष्य में 10/16,
	21	9	श.	13	44	स्वाती	9	7	सा.	7	31	वृश्चिक	28	16	5	37	19	20	5	40	19	14	5	49	19	17	5	23	18	45	21	गुप्त नवरात्र समाप्त,
	22	10	र.	14	47	विशा.	10	44	शु.	7	15	वृश्चिक			5	38	19	19	5	41	19	14	5	50	19	16	5	24	18	44	22	भ. 27/35 बाद, वक्री शनि मूल 3 में 17/9, सूर्य सायन सिंह में (B)
	23	11	चं.	16	24	अनु.	12	53	शु.	7	27	वृश्चिक			5	39	19	19	5	41	19	13	5	50	19	16	5	24	18	44	23	भ. 16/24 तक, हरिशयनी एकादशी व्रत (स.), श्रीविष्णु-शयनोत्सव,
	24	12	मं.	18	25	ज्येष्ठा	15	28	ब्र.	8	0	धनु	15	28	5	39	19	18	5	42	19	13	5	51	19	15	5	25	18	44	24	
	25	13	बु.	20	45	मूल	18	21	ऐं.	8	49	धनु			5	40	19	18	5	42	19	12	5	51	19	15	5	25	18	43	25	प्रदोष व्रत,
	26	14	गु.	23	16	पू.षा.	21	25	वै.	9	49	मकर	28	12	5	40	19	17	5	43	19	12	5	52	19	14	5	26	18	43	26	भ. 23/16 बाद, बुध वक्री 10/32, चन्द्रग्रहण-वेध,
	27	15	शु.	25	50	उ.षा.	24	32	वि.	10	54	मकर			5	41	19	17	5	44	19	11	5	52	19	14	5	26	18	42	27	भ. 12/33 तक, वक्री मंगल उ.षा. में 13/31, आषाढ़ी पूर्णिमा, (C)
श्रावण कृष्ण	28	1	श.	28	20	श्रवण	27	37	प्री.	11	59	मकर			5	42	19	16	5	44	19	11	5	53	19	13	5	27	18	42	28	श्रावण कृष्ण पक्ष प्रारम्भ, चन्द्रग्रहण-वेध,
	29	2	र.	—	—	धनि.	—	—	आ.	12	59	कुम्भ	17	6	5	42	19	15	5	45	19	10	5	53	19	13	5	27	18	41	29	पंचक प्रारम्भ 17/6, शुक्र उ.फा. में 8/33, अशून्य शयन व्रत, (D)
	30	2	चं.	6	40	धनि.	6	31	सौ.	13	50	कुम्भ			5	43	19	14	5	45	19	9	5	54	19	12	5	28	18	41	30	भ. 19/41 बाद, चन्द्रग्रहण-वेध,
	31	3	मं.	8	43	शत.	9	10	शो.	14	26	मीन	28	54	5	43	19	14	5	46	19	9	5	54	19	11	5	28	18	40	31	भ. 8/43 तक, श्रीगणेशचतुर्थी व्रत,

खग्रास चन्द्रग्रहण
27 जुलाई

(A) पुण्यकाल मध्याह्न बाद, शुक्र पू.फा. में 24/54, (B) 26/30, नवरात्र-पारणा, (C) चातुर्मास्य व्रत-नियमादि प्रारम्भ, गुरु पूर्णिमा (व्यासपूजा), श्रीशिव-शयनोत्सव, कोकिला व्रत, श्रीसत्यनारायण व्रत (देखें पृ.14), खग्रास चन्द्रग्रहण (भारत में दृश्य) (देखें पृ.24), (D) चन्द्रग्रहण-वेध,

श्री वि. सं. 2075 **तिथ्यादि पंचांग (भा. स्टैं. टा.)** **अगस्त, सन् 2018 ई.**

मास पक्ष	अगस्त	तिथि	वार	समाप्ति-काल		नक्षत्र	समाप्ति-काल		योग	समाप्ति-काल		चन्द्रराशि-प्रवेशकाल			चण्डीगढ़				दिल्ली				जयपुर				वाराणसी				तारीख	भद्रा, ग्रहराशि नक्षत्र-प्रवेश एवं पर्वोत्सवादि (सर्वत्र भा. स्टैं. टा. दिया गया है।)
															सूर्योदय		सूर्यास्त		सूर्योदय		सूर्यास्त		सूर्योदय		सूर्यास्त		सूर्योदय		सूर्यास्त			
				घं.	मि.		घं.	मि.		घं.	मि.		घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.		
श्रावण कृष्ण	1	4	बु.	10	23	पू.भा.	11	25	अ.	14	44	मीन			5	44	19	13	5	46	19	8	5	55	19	11	5	29	18	39	1	शुक्र कन्या में 12/27, बुध पश्चिम में अस्त 19/13,
	2	5	गु.	11	33	उ.भा.	13	12	सु.	14	37	मीन			5	45	19	12	5	47	19	7	5	55	19	10	5	29	18	39	2	गुरु विशाखा 1 में 16/35,
	3	6	शु.	12	8	रेवती	14	25	धृ.	14	3	मेष	14	25	5	45	19	12	5	47	19	7	5	56	19	9	5	30	18	38	3	भ. 12/8 से 24/7 तक, पंचक समाप्त 14/25, सूर्य आश्ले. में 9/15,
	4	7	श.	12	5	अश्वि.	14	59	शू.	12	58	मेष			5	46	19	11	5	48	19	6	5	56	19	9	5	30	18	38	4	
	5	8	र.	11	21	भरणी	14	53	गं.	11	21	वृष	20	45	5	46	19	10	5	49	19	5	5	57	19	8	5	31	18	37	5	
	6	9	चं.	9	56	कृत्ति.	14	7	वृ.	9	10	वृष			5	47	19	9	5	49	19	4	5	57	19	7	5	31	18	36	6	भ. 20/54 बाद,
	7	10/	मं.	7	53	रोहि.	12	44	ध्रु./	6	29	मिथुन	23	49	5	48	19	8	5	50	19	4	5	58	19	7	5	31	18	35	7	भ. 7/53 तक, यूरेनस वक्री 22/21, कामिका एकादशी व्रत (स्मा.),
		11		29	15				व्या.	27	19																					एकादशी तिथिक्षय,
	8	12	बु.	26	10	मृग.	10	47	ह.	23	45	मिथुन			5	48	19	7	5	50	19	3	5	58	19	6	5	32	18	35	8	कामिका एकादशी व्रत (वै.),
	9	13	गु.	22	45	आर्द्रा/	8	24	व.	19	53	कर्क	24	25	5	49	19	6	5	51	19	2	5	59	19	5	5	32	18	34	9	भ. 22/45 बाद, प्रदोष व्रत, श्रावण-शिवरात्रि,
						पुन.	29	44																								
	10	14	शु.	19	8	पुष्य	26	54	सि.	15	50	कर्क			5	49	19	6	5	51	19	1	5	59	19	4	5	33	18	33	10	भ. 8/56 तक,
	11	30	श.	15	27	आश्ले.	24	5	व्य.	11	44	सिंह	24	5	5	50	19	5	5	52	19	0	6	0	19	3	5	33	18	33	11	शुक्र हस्त में 6/34, हरियाली अमा, शनैश्चरी अमा,
श्रावण शुक्ल	12	1	र.	11	54	मघा	21	26	व./	7	41	सिंह			5	51	19	4	5	52	18	59	6	0	19	3	5	34	18	32	12	श्रावण शुक्ल पक्ष प्रारम्भ, चन्द्रदर्शन, मु. 30,
									प.	27	51																					
	13	2/	चं.	8	37	पू.फा.	19	9	शि.	24	20	कन्या	24	39	5	51	19	3	5	53	18	59	6	1	19	2	5	34	18	31	13	मधुस्रवा तृतीया (संधारा तीज),
		3		29	45																											तृतीया तिथिक्षय,
	14	4	मं.	27	28	उ.फा.	17	22	सि.	21	16	कन्या			5	52	19	2	5	53	18	58	6	1	19	1	5	35	18	30	14	भ. 16/37 से 27/28 तक,
	15	5	बु.	25	51	हस्त	16	13	सा.	18	44	तुला	27	54	5	53	19	1	5	54	18	57	6	2	19	0	5	35	18	29	15	नागपंचमी, भारत स्वतन्त्रता दिवस,
	16	6	गु.	25	2	चित्रा	15	48	शु.	16	49	तुला			5	53	19	0	5	55	18	56	6	2	18	59	5	35	18	28	16	श्री कल्कि जयन्ती,
	17	7	शु.	25	1	स्वाती	16	11	शु.	15	32	तुला			5	54	18	59	5	55	18	55	6	3	18	58	5	36	18	28	17	भ. 25/1 बाद, सं. सूर्य मघा सिंह में 6/50, मु. 15, पुण्यकाल (A)
	18	8	श.	25	47	विशा.	17	20	ब्र.	14	53	वृश्चिक	10	59	5	54	18	58	5	56	18	54	6	3	18	57	5	36	18	27	18	भ. 13/24 तक, बुध पूर्व में उदित 5/54, श्री दुर्गाष्टमी, दूर्वाष्टमी (B)
	19	9	र.	27	15	अनु.	19	13	ऐं.	14	49	वृश्चिक			5	55	18	57	5	56	18	53	6	4	18	56	5	37	18	26	19	बुध मार्गी 9/54,
	20	10	चं.	29	16	ज्येष्ठा	21	41	वै.	15	14	धनु	21	41	5	56	18	56	5	57	18	52	6	4	18	56	5	37	18	25	20	
	21	11	मं.	—	—	मूल	24	33	वि.	16	1	धनु			5	56	18	55	5	57	18	51	6	5	18	55	5	38	18	24	21	भ. 18/28 बाद,
	22	11	बु.	7	40	पू.षा.	27	39	प्री.	17	2	धनु			5	57	18	53	5	58	18	50	6	5	18	54	5	38	18	23	22	भ. 7/40 तक, पवित्रा एकादशी व्रत (स.) (देखें पृ 15),
	23	12	गु.	10	15	उ.षा.	—	—	आ.	18	7	मकर	10	26	5	57	18	52	5	58	18	49	6	6	18	53	5	38	18	22	23	सूर्य सायन कन्या में 9/39, शरद् ऋतु प्रारम्भ, प्रदोष व्रत,
	24	13	शु.	12	50	उ.षा.	6	47	सौ.	19	10	मकर			5	58	18	51	5	59	18	48	6	6	18	52	5	39	18	21	24	शुक्र चित्रा में 29/47,
	25	14	श.	15	16	श्रवण	9	48	शो.	20	5	कुम्भ	23	14	5	58	18	50	5	59	18	47	6	7	18	51	5	39	18	20	25	भ. 15/16 से 28/21 तक, पंचक प्रारम्भ 23/14, ऋक् उपाकर्म, (C)
	26	15	र.	17	26	धनि.	12	36	अ.	20	47	कुम्भ			5	59	18	49	6	0	18	46	6	7	18	50	5	40	18	19	26	रक्षाबन्धन (राखी), श्री अमरनाथ यात्रा (ज.क.), शुक्ल कृष्ण-यजु उपाकर्म,
भाद्रपद कृष्ण	27	1	च.	19	15	शत.	15	3	सु.	21	12	कुम्भ			6	0	18	48	6	0	18	45	6	7	18	49	5	40	18	18	27	भाद्रपद कृष्ण पक्ष प्रारम्भ, मंगल मार्गी 19/36,
	28	2	मं.	20	39	पू.भा.	17	8	धृ.	21	19	मीन	10	39	6	0	18	47	6	1	18	43	6	8	18	48	5	40	18	17	28	
	29	3	बु.	21	38	उ.भा.	18	48	शू.	21	5	मीन			6	1	18	45	6	1	18	42	6	8	18	47	5	41	18	16	29	भ. 9/8 से 21/38 तक, कज्जली तृतीया,
	30	4	गु.	22	9	रेवती	20	1	गं.	20	30	मेष	20	1	6	1	18	44	6	2	18	41	6	9	18	45	5	41	18	15	30	पंचक समाप्त 20/1, सूर्य पू.फा. में 26/53, राहु पुष्य 2, केतु (D)
	31	5	शु.	22	12	अश्वि.	20	46	वृ.	19	32	मेष			6	2	18	43	6	2	18	40	6	9	18	44	5	42	18	14	31	

(A) 12/50 तक, गोस्वामी तुलसीदास जयन्ती, (B) व्रत (देखें पृ. 14), (C) श्रीसत्यनारायण व्रत, (D) उ.षा. में 16/25, श्री गणेश(संकष्ट)चतुर्थी व्रत (चन्द्रोदय देखें पृ. 11), बहुला चतुर्थी,

श्री वि. सं. 2075 तिथ्यादि पंचांग (भा. स्टैं. टा.) सितम्बर, सन् 2018 ई.

मास पक्ष	सितम्बर	तिथि	वार	समाप्ति-काल		नक्षत्र	समाप्ति-काल		योग	समाप्ति-काल		चन्द्रराशि-प्रवेशकाल			चण्डीगढ़				दिल्ली				जयपुर				वाराणसी				तारीख	भद्रा, ग्रहराशि नक्षत्र-प्रवेश एवं पर्वोत्सवादि (सर्वत्र भा. स्टैं. टा. दिया गया है।)
															सूर्योदय		सूर्यास्त		सूर्योदय		सूर्यास्त		सूर्योदय		सूर्यास्त		सूर्योदय		सूर्यास्त			
				घं.	मि.		घं.	मि.		घं.	मि.		घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.		
भाद्रपक्ष कृष्ण	1	6	श.	21	44	भरणी	21	2	धृ.	18	11	वृष	27	1	6	2	18	42	6	3	18	39	6	10	18	43	5	42	18	13	1	भ. 21/44 बाद, शुक्र तुला में 23/27,
	2	7	र.	20	47	कृत्ति.	20	48	व्या.	16	25	वृष			6	3	18	41	6	3	18	38	6	10	18	42	5	42	18	12	2	भ. 9/16 तक, बुध मघा सिंह में 20/59, श्रीकृष्ण जन्माष्टमी व्रत (A)
	3	8	चं.	19	20	रोहि.	20	5	ह.	14	15	वृष			6	4	18	40	6	4	18	37	6	11	18	41	5	43	18	11	3	गुरु विशाखा 2 में 6/9, श्रीकृष्ण जन्माष्टमी व्रत (वै.), गोकुलाष्टमी (B)
	4	9	मं.	17	23	मृग.	18	53	व.	11	42	मिथुन	7	32	6	4	18	38	6	4	18	36	6	11	18	40	5	43	18	10	4	भ. 28/12 बाद, श्री गुग्गानवमी,
	5	10	बु.	15	1	आर्द्रा	17	14	सि./ व्य.	8 29	46 30	मिथुन			6	5	18	37	6	5	18	34	6	11	18	39	5	44	18	9	5	भ. 15/1 तक,
	6	11	गु.	12	15	पुन.	15	13	व.	25	29	कर्क	9	45	6	5	18	36	6	5	18	33	6	12	18	38	5	44	18	8	6	शनि मार्गी 16/40, अजा एकादशी व्रत (स.),
	7	12/ 13	शु.	9 29	12 59	पुष्य	12	56	प.	22	16	कर्क			6	6	18	35	6	6	18	32	6	12	18	37	5	44	18	7	7	भ. 29/59 बाद, बुध पूर्व में अस्त 6/6, प्रदोष व्रत, पर्युषण पर्व (जैन), त्रयोदशी तिथिक्षय,
	8	14	श.	26	42	आश्ले.	10	29	शि.	18	28	सिंह	10	29	6	6	18	33	6	6	18	31	6	13	18	36	5	45	18	6	8	भ. 16/21 तक,
	9	30	र.	23	31	मघा/ पू.फा.	8 29	1 41	सि.	14	42	सिंह			6	7	18	32	6	7	18	30	6	13	18	35	5	45	18	5	9	पिठोरी अमा, कुशोत्पाटिनी अमा,
भाद्रपक्ष शुक्ल	10	1	च.	20	35	उ.फा.	27	39	सा.	11	6	कन्या	11	8	6	8	18	31	6	7	18	29	6	14	18	33	5	45	18	4	10	भाद्रपद शुक्ल पक्ष प्रारम्भ, बुध पू.फा. में 8/54, शुक्र स्वाती में 17/28,
	11	2	मं.	18	4	हस्त	26	4	शु./ शु.	7 28	46 50	कन्या			6	8	18	30	6	8	18	27	6	14	18	32	5	46	18	3	11	चन्द्रदर्शन, मु. 30, साम उपाकर्म, मेला डेरा बाबा श्री गोसाईं (C)
	12	3	बु.	16	7	चित्रा	25	7	ब्र.	26	25	तुला	13	31	6	9	18	28	6	8	18	26	6	14	18	31	5	46	18	2	12	भ. 27/29 बाद, श्रीवराह जयन्ती, हरितालिका तृतीया, गौरी तृतीया, (D)
	13	4	गु.	14	52	स्वाती	24	53	ऐं.	24	36	तुला			6	9	18	27	6	9	18	25	6	15	18	30	5	47	18	1	13	भ. 14/52 तक, सूर्य उ.फा. में 20/41, श्रीविनायक चतुर्थी, (E)
	14	5	शु.	14	23	विशा.	25	27	वै.	23	25	वृश्चिक	19	14	6	10	18	26	6	9	18	24	6	15	18	29	5	47	18	0	14	ऋषि पंचमी, संवत्सरी महापर्व (जैन),
	15	6	श.	14	45	अनु.	26	49	वि.	22	53	वृश्चिक			6	10	18	25	6	10	18	23	6	16	18	28	5	47	17	59	15	सूर्य षष्ठी व्रत,
	16	7	र.	15	54	ज्येष्ठा	28	54	प्री.	22	57	धनु	28	54	6	11	18	23	6	10	18	21	6	16	18	27	5	48	17	57	16	भ. 15/54 से 28/50 तक, मुक्ताभरण (सन्तान) सप्तमी व्रत,
	17	8	चं.	17	44	मूल	—	—	आ.	23	30	धनु			6	11	18	22	6	11	18	20	6	17	18	25	5	48	17	56	17	सं सूर्य कन्या में 6/46, मु. 30 पुण्यकाल 12/46 तक, बुध उ.फा. (F)
	18	9	मं.	20	4	मूल	7	34	सौ.	24	23	धनु			6	12	18	21	6	11	18	19	6	17	18	24	5	48	17	55	18	बुध कन्या में 28/15, श्रीचन्द नवमी (उदासीन सम्प्रदाय महोत्सव),
	19	10	बु.	22	40	पू.षा.	10	35	शो.	25	26	मकर	17	22	6	13	18	19	6	12	18	18	6	17	18	23	5	49	17	54	19	
	20	11	गु.	25	16	उ.षा.	13	44	अ.	26	28	मकर			6	13	18	18	6	12	18	17	6	18	18	22	5	49	17	53	20	भ. 11/58 से 25/16 तक, पद्मा एकादशी व्रत (स.),
	21	12	शु.	27	41	श्रवण	16	46	सु.	27	21	कुम्भ	30	10	6	14	18	17	6	13	18	15	6	18	18	21	5	50	17	52	21	पंचक प्रारम्भ 30/10, वामन द्वादशी, श्रीवामन जयन्ती, श्रवण द्वादशी.
	22	13	श.	29	43	धनि.	19	30	धृ.	27	57	कुम्भ			6	14	18	16	6	13	18	14	6	19	18	20	5	50	17	51	22	शनिप्रदोष व्रत,
	23	14	र.	—	—	शत.	21	49	शू.	28	12	कुम्भ			6	15	18	14	6	14	18	13	6	19	18	19	5	50	17	50	23	गुरु विशाखा 3 में 26/45, सूर्य सायन तुला में 7/24, दक्षिण गोल (G)
	24	14	चं.	7	18	पू.भा.	23	40	गं.	28	4	मीन	17	15	6	15	18	13	6	14	18	12	6	20	18	17	5	51	17	49	24	भ. 7/18 से 19/50 तक, बुध हस्त में 16/12, श्रीसत्यनारायण व्रत, (H)
	25	15	मं.	8	22	उ.भा.	25	1	वृ.	27	32	मीन			6	16	18	12	6	15	18	11	6	20	18	16	5	51	17	48	25	पितृपक्ष (श्राद्ध) प्रारम्भ, प्रतिपदा का श्राद्ध,
आश्विन कृष्ण	26	1	बु.	8	56	रेवती	25	54	धृ.	26	38	मेष	25	54	6	17	18	10	6	15	18	9	6	20	18	15	5	51	17	47	26	आश्विन कृष्ण पक्ष प्रारम्भ, पंचक समाप्त 25/54, मंगल श्रवण मे (I)
	27	2	गु.	9	3	अश्वि.	26	22	व्या.	25	24	मेष			6	17	18	9	6	16	18	8	6	21	18	14	5	52	17	46	27	भ. 20/53 बाद, सूर्य हस्त में 12/14, तृतीया-श्राद्ध,
	28	3	शु.	8	44	भरणी	26	28	ह.	23	51	मेष			6	18	18	8	6	16	18	7	6	21	18	13	5	52	17	44	28	भ. 8/44 तक, श्रीगणेशचतुर्थी व्रत, चतुर्थी-श्राद्ध, भरणी श्राद्ध,
	29	4	श.	8	4	कृत्ति.	26	14	व.	22	2	वृष	8	26	6	18	18	7	6	17	18	6	6	22	18	12	5	53	17	43	29	पंचमी-श्राद्ध,
	30	5/ 6	र.	7 29	3 45	रोहि.	25	41	सि.	19	58	वृष			6	19	18	5	6	17	18	5	6	22	18	11	5	53	17	42	30	भ. 29/45 बाद, षष्ठी-श्राद्ध, चन्द्रषष्ठी व्रत, षष्ठी तिथिक्षय,

(A) (स्मा.) (रोहिणी योग/जयन्ती योग) (चन्द्रोदय देखें पृ. 11), (B) (नन्दोत्सव), अगस्त्य उदित, (C) आर्णा (कुराली) पं., (D) हरितालिका चतुर्थी, कलंक चतुर्थी (चन्द्रदर्शन निषिद्ध) (चन्द्रास्त 20/33), हिजरी सन् 1440 प्रारम्भ, (E) श्रीसिद्धि विनायक व्रत, (F) में 9/29, श्रीराधाष्टमी, श्रीमहालक्ष्मी व्रतारम्भ, (G) प्रारम्भ, विषुवदिन, श्री अनन्त चतुर्दशी व्रत, (H) प्रोष्ठपदी/श्राद्ध पूर्णिमा, महालय प्रारम्भ, पूर्णिमा-श्राद्ध, (I) 6/58, द्वितीया-श्राद्ध,

श्री वि. सं. 2075 तिथ्यादि पंचांग (भा. स्टैं. टा.) अक्टूबर, सन् 2018 ई.

मास पक्ष	अक्टूबर	तिथि	वार	समाप्ति-काल		नक्षत्र	समाप्ति-काल		योग	समाप्ति-काल		चन्द्रराशि-प्रवेशकाल			चण्डीगढ़				दिल्ली				जयपुर				वाराणसी				तारीख	भद्रा, ग्रहराशि नक्षत्र-प्रवेश एवं पर्वोत्सवादि (सर्वत्र भा. स्टैं. टा. दिया गया है।)
															सूर्योदय		सूर्यास्त		सूर्योदय		सूर्यास्त		सूर्योदय		सूर्यास्त		सूर्योदय		सूर्यास्त			
				घं.	मि.		घं.	मि.		घं.	मि.		घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.		
आश्विन कृष्ण	1	7	चं.	28	9	मृग.	24	51	व्य.	17	40	मिथुन	13	18	6	20	18	4	6	18	18	3	6	23	18	10	5	53	17	41	1	भ. 16/57 तक, प्लूटो मार्गी 7/31, सप्तमी का श्राद्ध,
	2	8	मं.	26	17	आर्द्रा	23	45	व.	15	9	मिथुन			6	20	18	3	6	18	18	2	6	23	18	8	5	54	17	40	2	बुध चित्रा में 10/34, अष्टमी का श्राद्ध, श्रीमहालक्ष्मी व्रत समाप्त,
	3	9	बु.	24	10	पुन.	22	23	प.	12	24	कर्क	16	45	6	21	18	2	6	19	18	1	6	24	18	7	5	54	17	39	3	नवमी का श्राद्ध, सौभाग्यवती श्राद्ध,
	4	10	गु.	21	49	पुष्य	20	48	शि./	9	28	कर्क			6	21	18	0	6	19	18	0	6	24	18	6	5	55	17	38	4	भ. 10/59 से 21/49 तक, दशमी का श्राद्ध, मेला फल्गु तीर्थ-(हरि.) 8 अक्टूबर
									सि.	30	21																					
	5	11	शु.	19	18	आश्ले.	19	2	सा.	27	7	सिंह	19	2	6	22	17	59	6	20	17	59	6	25	18	5	5	55	17	37	5	शुक्र वक्री 24/36, एकादशी का श्राद्ध, इन्दिरा एकादशी व्रत (स.),
	6	12	श.	16	40	मघा	17	10	शु.	23	49	सिंह			6	23	17	58	6	20	17	58	6	25	18	4	5	56	17	36	6	बुध तुला में 12/43, द्वादशी का श्राद्ध, संन्यासियों का श्राद्ध, मघा (A)
	7	13	र.	14	2	पू.फा.	15	18	शु.	20	33	कन्या	20	51	6	23	17	57	6	21	17	57	6	26	18	3	5	56	17	35	7	भ. 14/2 से 24/47 तक, त्रयोदशी का श्राद्ध, चतुर्दशी (अपमृत्यु (B)
	8	14	चं.	11	32	उ.फा.	13	33	ब्र.	17	25	कन्या			6	24	17	56	6	21	17	55	6	26	18	2	5	56	17	34	8	चतुर्दशी-अमा एवं अज्ञात मृत्युतिथि वालों का श्राद्ध, सर्वपितृ श्राद्ध, (C)
	9	30	मं.	9	17	हस्त	12	4	ऐं.	14	31	तुला	23	29	6	24	17	54	6	22	17	54	6	27	18	1	5	57	17	33	9	बुध पश्चिम में उदित 17/54, महालय/पितृपक्ष (श्राद्ध) समाप्त, (D)
आश्विन शुक्ल	10	1/	बु.	7	25	चित्रा	11	0	वै.	11	57	तुला			6	25	17	53	6	23	17	53	6	27	18	0	5	57	17	32	10	आश्विन शुक्ल पक्ष प्रारम्भ, चन्द्रदर्शन, मु.15, सूर्य चित्रा में 25/12, (E)
		2		30	7																											द्वितीया तिथिक्षय,
	11	3	गु.	29	28	स्वाती	10	30	वि.	9	52	वृश्चिक	28	34	6	26	17	52	6	23	17	52	6	28	17	59	5	58	17	31	11	गुरु विशाखा 4 वृश्चिक में 19/21,
	12	4	शु.	29	35	विशा.	10	40	प्री.	8	19	वृश्चिक			6	26	17	51	6	24	17	51	6	28	17	58	5	58	17	30	12	भ. 17/31 से 29/35 तक,
	13	5	श.	30	28	अनु.	11	35	आ.	7	21	वृश्चिक			6	27	17	50	6	24	17	50	6	29	17	57	5	59	17	29	13	उपांगललिता व्रत,
	14	6	र.	—	—	ज्येष्ठा	13	14	सौ.	7	0	धनु	13	14	6	28	17	49	6	25	17	49	6	29	17	56	5	59	17	28	14	शुक्र वार्धक्य प्रारम्भ 17/45, सरस्वती आवाहन, शुक्र अस्त 17 अक्टूबर
	15	6	चं.	8	5	मूल	15	33	शो.	7	11	धनु			6	28	17	47	6	25	17	48	6	30	17	55	6	0	17	27	15	सरस्वती पूजन,
	16	7	मं.	10	16	पू.षा.	18	22	अ.	7	49	मकर	25	8	6	29	17	46	6	26	17	47	6	30	17	54	6	0	17	26	16	भ. 10/16 से 23/33 तक, वक्री नेप्च्यून शत. 4 में 14/35,
	17	8	बु.	12	50	उ.षा.	21	28	सु.	8	45	मकर			6	30	17	45	6	27	17	46	6	31	17	53	6	1	17	25	17	सं. सूर्य तुला में 18/44, मु. 45, पुण्यकाल मध्याह्न बाद, शुक्र (F)
	18	9	गु.	15	29	श्रव.	24	33	धृ.	9	46	मकर			6	31	17	44	6	27	17	45	6	31	17	52	6	1	17	24	18	वक्री यूरेनस अश्विनी 2 में 17/22, महानवमी (बलिदान के लिए), (G)
	19	10	शु.	17	57	धनि.	27	24	शू.	10	42	कुम्भ	14	1	6	31	17	43	6	28	17	44	6	32	17	51	6	2	17	24	19	पंचक प्रारम्भ 14/1, बुध विशाखा में 16/18, नवरात्र-पारणा, (H)
	20	11	श.	20	1	शत.	29	47	ग.	11	21	कुम्भ			6	32	17	42	6	29	17	43	6	33	17	50	6	2	17	23	20	भ. 6/59 से 20/01 तक, शनि मूल 4 में 30/25, पापांकुशा एकादशी व्रत (स.),
	21	12	र.	21	31	पू.भा.	—	—	वृ.	11	37	मीन	25	12	6	33	17	41	6	29	17	42	6	33	17	49	6	3	17	22	21	
	22	13	चं.	22	23	पू.भा.	7	36	ध्रु.	11	25	मीन			6	33	17	40	6	30	17	41	6	34	17	48	6	3	17	21	22	सोमप्रदोष व्रत,
	23	14	मं.	22	36	उ.भा.	8	47	व्या.	10	43	मीन			6	34	17	39	6	31	17	40	6	34	17	47	6	4	17	20	23	भ. 22/36 बाद, सूर्य सायन वृश्चिक में 16/53, हेमन्त ऋतु प्रारम्भ,
	24	15	बु.	22	15	रेवती	9	22	ह.	9	32	मेष	9	22	6	35	17	38	6	31	17	39	6	35	17	46	6	4	17	19	24	भ. 10/26 तक, पंचक समाप्त 9/22, सूर्य स्वाती में 11/43, कार्तिक- (I)
कार्तिक कृष्ण	25	1	गु.	21	24	अश्वि.	9	26	व./	7	56	मेष			6	36	17	37	6	32	17	38	6	36	17	46	6	5	17	18	25	कार्तिक कृष्ण पक्ष प्रारम्भ, मंगल धनिष्ठा में 12/25,
									सि.	29	58																					
	26	2	शु.	20	9	भरणी	9	3	व्य.	27	43	वृष	14	53	6	36	17	36	6	33	17	37	6	36	17	45	6	6	17	18	26	बुध वृश्चिक में 20/46,
	27	3	श.	18	38	कृत्ति.	8	20	व.	25	16	वृष			6	37	17	35	6	33	17	36	6	37	17	44	6	6	17	17	27	भ. 7/23 से 18/38 तक, गुरु अनु. 1 में 23/6, श्रीगणेशचतुर्थी व्रत, (J)
	28	4	र.	16	54	रोहि./	7	23	प.	22	40	मिथुन	18	51	6	38	17	34	6	34	17	35	6	37	17	43	6	7	17	16	28	
						मृग.	30	17																								शुक्र उदित 31 अक्टूबर
	29	5	चं.	15	3	आर्द्रा	29	6	शि.	19	59	मिथुन			6	39	17	33	6	35	17	35	6	38	17	42	6	7	17	15	29	बुध अनु. में 9/43,
	30	6	मं.	13	8	पुन.	27	51	सि.	17	15	कर्क	22	10	6	39	17	32	6	35	17	34	6	39	17	41	6	8	17	15	30	भ. 13/8 से 24/9 तक, वक्री शुक्र चित्रा में 16/24,
	31	7	बु.	11	10	पुष्य	26	34	सा.	14	28	कर्क			6	40	17	31	6	36	17	33	6	39	17	41	6	9	17	14	31	शुक्र पूर्व में उदित 6/40, अहोई अष्टमी (पंजाब-हरियाणा),

(A) श्राद्ध, शनिप्रदोष व्रत, (B) वालों यानी शस्त्र-विषादि से मृतों) का श्राद्ध, (C) गजच्छाया योग (13/33 बाद), फल्गु योग (11/32 बाद), मेला फल्गु/पिहोवा (हरि.), (D) भौमवती अमा, नाना/नानी का श्राद्ध, गजच्छाया योग 9/17 तक, (E) बुध स्वाती में 18/16, शारद (आश्विन) नवरात्र प्रारम्भ (देखें पृ.15), महाराजा अग्रसेन जयन्ती, (F) पश्चिम में अस्त 17/45, महाष्टमी, श्रीदुर्गाष्टमी, सरस्वती के लिए बलिदान, महानवमी (उपवास/पूजा के लिए), (G) सरस्वती विसर्जन, नवरात्र समाप्त, विजयादशमी (दशहरा) (देखें पृ.16), आयुध-पूजा, अपराजिता पूजन, सीमोल्लंघन, (H) श्रीमाध्वाचार्य जयन्ती, भरत मिलाप, (I) स्नान प्रारम्भ, कोजागर व्रत, शरत् पूर्णिमा, श्रीसत्यनारायण व्रत, महर्षि वाल्मीकि जयन्ती, (J) करक चतुर्थी (करवाचौथ) (चन्द्रोदय देखें पृ 11),

श्री वि. सं. 2075 **तिथ्यादि पंचांग (भा. स्टैं. टा.)** **नवम्बर, सन् 2018 ई.**

मास पक्ष	नवम्बर	तिथि	वार	समाप्ति-काल		नक्षत्र	समाप्ति-काल		योग	समाप्ति-काल		चन्द्रराशि-प्रवेशकाल			चण्डीगढ़				दिल्ली				जयपुर				वाराणसी				तारीख	भद्रा, ग्रहराशि नक्षत्र-प्रवेश एवं पर्वोत्सवादि (सर्वत्र भा. स्टैं. टा. दिया गया है।)
															सूर्योदय		सूर्यास्त		सूर्योदय		सूर्यास्त		सूर्योदय		सूर्यास्त		सूर्योदय		सूर्यास्त			
				घं.	मि.		घं.	मि.		घं.	मि.		घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.		
कार्तिक कृष्ण	1	8	गु.	9	10	आश्ले.	25	16	शु.	11	41	सिंह	25	16	6	41	17	31	6	37	17	32	6	40	17	40	6	9	17	13	1	राहु पुष्य 1, केतु उ.षा. 3 में 14/25,
	2	9/	शु.	7	10	मघा	23	59	शु./	8	53	सिंह			6	42	17	30	6	37	17	31	6	41	17	39	6	10	17	13	2	भ. 18/10 से 29/10 तक,
		10		29	10				ब्र.	30	5																					दशमी तिथिक्षय,
	3	11	श.	27	14	पू.फा.	22	44	ऐं.	27	20	कन्या	28	26	6	43	17	29	6	38	17	31	6	41	17	39	6	10	17	12	3	शुक्रबाल्य समाप्त 6/40, रमा एकादशी व्रत (स्मा.),
	4	12	र.	25	24	उ.फा.	21	35	वै.	24	41	कन्या			6	43	17	28	6	39	17	30	6	42	17	38	6	11	17	11	4	रमा एकादशी व्रत (वै.), गोवत्स द्वादशी,
	5	13	चं.	23	47	हस्त	20	36	वि.	22	11	कन्या			6	44	17	27	6	40	17	29	6	43	17	37	6	12	17	11	5	भ. 23/47 बाद, धन त्रयोदशी, सोमप्रदोष व्रत, श्रीहनुमान् जयन्ती (A)
	6	14	मं.	22	27	चित्रा	19	55	प्री.	19	55	तुला	8	13	6	45	17	27	6	40	17	28	6	43	17	37	6	12	17	10	6	भ. 11/07 तक, सूर्य विशा. में 19/52, मंगल कुम्भ में 8/21, नरक (B)
	7	30	बु.	21	32	स्वाती	19	36	आ.	17	57	तुला			6	46	17	26	6	41	17	28	6	44	17	36	6	13	17	10	7	दीपावली, श्रीमहालक्ष्मी पूजन, श्रीमहावीर निर्वाण दिवस (जैन),
कार्तिक शुक्ल	8	1	गु.	21	8	विशा.	19	47	सौ.	16	23	वृश्चिक	13	41	6	47	17	25	6	42	17	27	6	45	17	35	6	14	17	9	8	कार्तिक शुक्ल पक्ष प्रारम्भ, गुरुवार्धक्य प्रारम्भ 17/23, गोवर्धन पूजा, (C)
	9	2	शु.	21	20	अनु.	20	34	शो.	15	17	वृश्चिक			6	47	17	24	6	43	17	27	6	46	17	35	6	14	17	9	9	चन्द्रदर्शन, मु. 30, यमद्वितीया, भाई दूज, विश्वकर्मा पूजा,
	10	3	श.	22	12	ज्येष्ठा	21	59	अ.	14	40	धनु	21	59	6	48	17	24	6	44	17	26	6	46	17	34	6	15	17	8	10	बुध ज्येष्ठा में 19/3,
	11	4	र.	23	44	मूल	24	2	सु.	14	35	धनु			6	49	17	23	6	44	17	25	6	47	17	34	6	16	17	8	11	भ. 10/57 से 23/44 तक, गुरु अस्त 17/23, गुरु अस्त 11 नवम्बर
	12	5	चं.	25	51	पू.षा.	26	37	धृ.	14	57	धनु			6	50	17	23	6	45	17	25	6	48	17	33	6	16	17	7	12	गुरु अनु. 2 में 7/28, ज्ञान पंचमी (जैन),
	13	6	मं.	28	22	उ.षा.	29	36	शू.	15	41	मकर	9	20	6	51	17	22	6	46	17	24	6	49	17	33	6	17	17	7	13	सूर्य षष्ठी (बिहार),
	14	7	बु.	—	—	श्रवण	—	—	गं.	16	39	मकर			6	52	17	21	6	47	17	24	6	49	17	32	6	18	17	6	14	
	15	7	गु.	7	4	श्रवण	8	44	वृ.	17	38	कुम्भ	22	17	6	53	17	21	6	47	17	23	6	50	17	32	6	19	17	6	15	भ. 7/4 से 20/22 तक, पंचक प्रारम्भ 22/17,
	16	8	शु.	9	40	धनि.	11	46	ध्रु.	18	29	कुम्भ			6	53	17	20	6	48	17	23	6	51	17	32	6	19	17	6	16	सं. सूर्य वृश्चिक में 18/31, मु. 15, पुण्यकाल मध्याह्न बाद, शुक्र (D)
	17	9	श.	11	54	शत.	14	25	व्या.	18	59	कुम्भ			6	54	17	20	6	49	17	23	6	52	17	31	6	20	17	5	17	मंगल शत. में 10/24, बुध वक्री 7/3,
	18	10	र.	13	33	पू.भा.	16	31	ह.	19	1	मीन	10	3	6	55	17	20	6	50	17	22	6	52	17	31	6	21	17	5	18	भ. 26/01 बाद,
	19	11	चं.	14	30	उ.भा.	17	54	व.	18	29	मीन			6	56	17	19	6	51	17	22	6	53	17	31	6	21	17	5	19	भ. 14/30 तक, सूर्य अनु. में 25/52, हरि-प्रबोधिनी एकादशी व्रत (स.), (E)
	20	12	मं.	14	40	रेवती	18	33	सि.	17	22	मेष	18	33	6	57	17	19	6	51	17	21	6	54	17	30	6	22	17	4	20	पंचक समाप्त 18/33, भौमप्रदोष व्रत, चातुर्मास्य व्रत-नियमादि समाप्त,
	21	13	बु.	14	6	अश्वि.	18	30	व्य.	15	41	मेष			6	58	17	18	6	52	17	21	6	55	17	30	6	23	17	4	21	बुध पश्चिम में अस्त 17/18, वैकुण्ठ चतुर्दशी,
	22	14	गु.	12	54	भरणी	17	50	व.	13	30	वृष	23	35	6	59	17	18	6	53	17	21	6	55	17	30	6	24	17	4	22	भ. 12/54 से 24/02 तक, वक्री बुध अनु. में 22/59, सूर्य सायन (F)
	23	15	शु.	11	9	कृत्ति.	16	40	प.	10	53	वृष			6	59	17	18	6	54	17	21	6	56	17	29	6	24	17	4	23	मेला पुष्करराज (राज.) भीष्म पंचक समाप्त, कार्तिक पूर्णिमा, (G)
मार्गशीर्ष कृष्ण	24	1/	श.	9	1	रोहि.	15	9	शि./	7	57	मिथुन	26	19	7	0	17	17	6	55	17	20	6	57	17	29	6	25	17	4	24	मार्गशीर्ष कृष्ण पक्ष प्रारम्भ, नेप्च्यून मार्गी 30/42,
		2		30	37				सि.	28	48																					द्वितीया तिथिक्षय,
	25	3	र.	28	6	मृग.	13	26	सा.	25	33	मिथुन			7	1	17	17	6	55	17	20	6	58	17	29	6	26	17	3	25	भ. 17/22 से 28/06 तक,
	26	4	चं.	25	35	आर्द्रा	11	37	शु.	22	17	कर्क	28	16	7	2	17	17	6	56	17	20	6	58	17	29	6	27	17	3	26	श्रीगणेशचतुर्थी व्रत,
	27	5	मं.	23	8	पुन.	9	49	शु.	19	4	कर्क			7	3	17	17	6	57	17	20	6	59	17	29	6	27	17	3	27	गुरु अनु. 3 में 7/9, शनि पू.षा. 1 में 18/14,
	28	6	बु.	20	51	पुष्य/	8	8	ब्र.	15	58	सिंह	30	38	7	4	17	17	6	58	17	20	7	0	17	29	6	28	17	3	28	भ. 20/51 बाद,
						आश्ले.	30	38																								
	29	7	गु.	18	46	मघा	29	20	ऐं.	13	2	सिंह			7	4	17	16	6	59	17	20	7	1	17	29	6	29	17	3	29	भ. 07/49 तक, श्रीकालाष्टमी (श्रीभैरवाष्टमी) (देखें पृ. 18),
	30	8	शु.	16	55	पू.फा.	28	17	वै.	10	16	सिंह			7	5	17	16	6	59	17	19	7	1	17	29	6	29	17	3	30	

(A) (उ.भा.) (देखें पृ.17), यम-प्रीत्यर्थ दीपदान, (B) चतुर्दशी (पूर्वारुणोदय वाली), (C) बलि पूजा, गोक्रीड़ा, अन्नकूट, (D) मार्गी 16/21 गोपाष्टमी (देखें पृ-18), अक्षय नवमी (देखें पृ. 18), कृष्माण्ड नवमी, (E) तुलसी विवाह, देव-प्रबोधोत्सव, भीष्म पंचक प्रारम्भ, (F) धनु में 14/31, श्रीसत्यनारायण व्रत, त्रिपुरोत्सव, (G) श्री गुरुनानक जयन्ती, कार्तिक-स्नान समाप्त,

श्री वि. सं. 2075 तिथ्यादि पंचांग (भा. स्टैं. टा.) दिसम्बर, सन् 2018 ई.

मास पक्ष	दिनांक	तिथि	वार	समाप्ति-काल		नक्षत्र	समाप्ति-काल		योग	समाप्ति-काल		चन्द्रराशि-प्रवेशकाल			चण्डीगढ़				दिल्ली				जयपुर				वाराणसी				तारीख	भद्रा, ग्रहराशि नक्षत्र-प्रवेश एवं पर्वोत्सवादि (सर्वत्र भा. स्टैं. टा. दिया गया है।)
															सूर्योदय		सूर्यास्त		सूर्योदय		सूर्यास्त		सूर्योदय		सूर्यास्त		सूर्योदय		सूर्यास्त			
				घं.	मि.		घं.	मि.		घं.	मि.		घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.		
मार्गशीर्ष कृष्ण	1	9	श.	[illegible]	19	उ.फा.	27	30	वि./	7	42	कन्या	10	4	7	6	17	16	7	0	17	19	7	2	17	29	6	30	17	3	1	भ. 26/40 बाद,
									प्री.	29	21																					
	2	10	र.	14	0	हस्त	27	0	आ.	27	14	कन्या			7	7	17	16	7	1	17	19	7	3	17	29	6	31	17	3	2	भ. 14/00 तक, सूर्य ज्येष्ठा में 30/13,
	3	11	चं.	13	0	चित्रा	26	49	सौ.	25	22	तुला	14	52	7	8	17	16	7	2	17	19	7	4	17	29	6	32	17	3	3	बुध पूर्व में उदित 7/8, उत्पन्ना एकादशी व्रत (स.),
	4	12	मं.	12	20	स्वाती	26	59	शो.	23	47	तुला			7	9	17	16	7	3	17	19	7	4	17	29	6	32	17	3	4	शुक्र स्वाती में 8/3, भौमप्रदोष व्रत,
	5	13	बु.	12	3	विशा.	27	34	अ.	22	31	वृश्चिक	21	22	7	9	17	16	7	3	17	20	7	5	17	29	6	33	17	3	5	भ. 12/3 से 24/08 तक, वक्री बुध विशाखा में 19/12,
	6	14	गु.	12	12	अनु.	28	35	सु.	21	36	वृश्चिक			7	10	17	16	7	4	17	20	7	6	17	29	6	34	17	4	6	बुध मार्गी 26/51, गुरु उदित 7/10, गुरु उदित 6 दिसम्बर
	7	30	शु.	12	50	ज्येष्ठा	30	6	धृ.	21	4	धनु	30	6	7	11	17	16	7	5	17	20	7	7	17	29	6	34	17	4	7	
मार्गशीर्ष शुक्ल	8	1	श.	13	59	मूल	—	—	शू.	20	56	धनु			7	12	17	17	7	5	17	20	7	7	17	29	6	35	17	4	8	मार्गशीर्ष शुक्ल पक्ष प्रारम्भ, चन्द्रदर्शन, मु. 30, मंगल पू.भा. में (A)
	9	2	र.	15	40	मूल	8	7	गं.	21	11	धनु			7	12	17	17	7	6	17	20	7	8	17	30	6	36	17	4	9	गुरुबाल्य समाप्त 7/10,
	10	3	चं.	17	50	पू.षा.	10	36	वृ.	21	47	मकर	17	18	7	13	17	17	7	7	17	20	7	9	17	30	6	36	17	4	10	भ. 31/6 बाद,
	11	4	मं.	20	22	उ.षा.	13	29	ध्रु.	22	39	मकर			7	14	17	17	7	8	17	21	7	9	17	30	6	37	17	5	11	भ. 20/22 तक, गुरु अनु. 4 में 30/24,
	12	5	बु.	23	6	श्रवण	16	36	व्या.	23	38	कुम्भ	30	11	7	14	17	17	7	8	17	21	7	10	17	30	6	38	17	5	12	पंचक प्रारम्भ 30/11, बलिदान दिन श्री गुरु तेग बहादुर जी,
	13	6	गु.	25	49	धनि.	19	45	ह.	24	37	कुम्भ			7	15	17	18	7	9	17	21	7	11	17	31	6	38	17	5	13	चम्पा षष्ठी (महा.), गुह/स्कन्द षष्ठी,
	14	7	शु.	28	16	शत.	22	42	व.	25	24	कुम्भ			7	16	17	18	7	10	17	21	7	11	17	31	6	39	17	6	14	भ. 28/16 बाद, मित्र सप्तमी,
	15	8	श.	30,	13	पू.भा.	25	13	सि.	25	50	मीन	18	38	7	16	17	18	7	10	17	22	7	12	17	31	6	40	17	6	15	भ. 17/15 तक,
	16	9	र.	—	—	उ.भा.	27	7	व्य.	25	46	मीन			7	17	17	19	7	11	17	22	7	13	17	32	6	40	17	6	16	सं. सूर्य मूल धनु में 9/9, मु. 45, पुण्यकाल 15/9 तक, शनि अस्त 17/19,
	17	9	चं.	7	29	रेवती	28	16	व.	25	7	मेष	28	16	7	18	17	19	7	11	17	23	7	13	17	32	6	41	17	7	17	पंचक समाप्त 28/16,
	18	10	मं.	7	57	अश्वि.	28	37	प.	23	50	मेष			7	18	17	19	7	12	17	23	7	14	17	32	6	41	17	7	18	भ. 19/46 बाद, मोक्षदा एकादशी व्रत (स्मा.),
	19	11/	बु.	7	35	भरणी	28	12	शि.	21	55	मेष			7	19	17	20	7	13	17	23	7	14	17	33	6	42	17	8	19	भ. 7/35 तक, मोक्षदा एकादशी व्रत (वै.), श्रीगीता जयन्ती,
		12		30	26																											द्वादशी तिथिक्षय,
	20	13	गु.	28	35	कृत्ति.	27	4	सि.	19	25	वृष	9	58	7	19	17	20	7	13	17	24	7	15	17	33	6	42	17	8	20	प्रदोष व्रत,
	21	14	शु.	26	9	रोहि.	25	22	सा.	16	24	वृष			7	20	17	21	7	14	17	24	7	15	17	34	6	43	17	9	21	भ. 26/9 बाद, शुक्र विशाखा में 28/39, सूर्य सायन मकर में 27/53, (B)
	22	15	श.	23	18	मृग.	23	15	शु.	13	0	मिथुन	12	21	7	20	17	21	7	14	17	25	7	16	17	34	6	43	17	9	22	भ. 12/43 तक, बुध ज्येष्ठा में 21/21, श्रीसत्यनारायण व्रत, श्री दत्त जयन्ती,
पौष कृष्ण	23	1	र.	20	12	आर्द्रा	20	51	शु./	9	19	मिथुन			7	21	17	22	7	15	17	25	7	16	17	35	6	44	17	10	23	पौष कृष्ण पक्ष प्रारम्भ, मंगल मीन में 12/57,
									ब्र.	29	29																					
	24	2	चं.	16	58	पुन.	18	22	ऐं.	25	37	कर्क	12	59	7	21	17	22	7	15	17	26	7	17	17	35	6	44	17	10	24	भ. 27/22 बाद,
	25	3	मं.	13	47	पुष्य	15	55	वै.	21	49	कर्क			7	22	17	23	7	16	17	26	7	17	17	36	6	45	17	11	25	भ. 13/47 तक, श्रीगणेशचतुर्थी व्रत,
	26	4	बु.	10	47	आश्ले.	13	39	वि.	18	12	सिंह	13	39	7	22	17	23	7	16	17	27	7	18	17	36	6	45	17	11	26	शनि पू.षा. 2 में 29/6, जोड़मेला श्री फतेहगढ़ साहिब (पं.),
	27	5/	गु.	8	3	मघा	11	41	प्री.	14	50	सिंह			7	23	17	24	7	16	17	28	7	18	17	37	6	46	17	12	27	भ. 29/43 बाद, गुरु ज्येष्ठा 1 में 13/54,
		6		29	43																											षष्ठी तिथिक्षय,
	28	7	शु.	27	49	पू.फा.	10	7	आ.	11	49	कन्या	15	47	7	23	17	25	7	17	17	28	7	18	17	38	6	46	17	12	28	भ. 16/46 तक, मंगल उ.भा. में 12/40,
	29	8	श.	26	27	उ.फा.	9	0	सौ./	9	10	कन्या			7	23	17	25	7	17	17	29	7	19	17	38	6	46	17	13	29	सूर्य पू.षा. में 11/26,
									शो.	30	56																					
	30	9	र.	25	35	हस्त	8	23	अ.	29	6	तुला	20	17	7	24	17	26	7	17	17	29	7	19	17	39	6	47	17	14	30	
	31	10	चं.	25	16	चित्रा	8	18	सु.	27	41	तुला			7	24	17	27	7	18	17	30	7	19	17	40	6	47	17	14	31	भ. 13/25 से 25/16 तक,

(A) 9/36, बुध अनु. में 12/12, (B) उत्तरायण एवं शिशिर ऋतु प्रारम्भ,

श्री वि. सं. 2075 तिथ्यादि पंचांग (भा. स्टैं. टा.) जनवरी, सन् 2019 ई.

मास पक्ष	जनवरी	तिथि	वार	समाप्ति-काल		नक्षत्र	समाप्ति-काल		योग	समाप्ति-काल		चन्द्रराशि-प्रवेशकाल			चण्डीगढ़				दिल्ली				जयपुर				वाराणसी				तारीख	भद्रा, ग्रहराशि नक्षत्र-प्रवेश एवं पर्वोत्सवादि (सर्वत्र भा. स्टैं. टा. दिया गया है।)
															सूर्योदय		सूर्यास्त		सूर्योदय		सूर्यास्त		सूर्योदय		सूर्यास्त		सूर्योदय		सूर्यास्त			
				घं.	मि.		घं.	मि.		घं.	मि.		घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.		
पौष कृष्ण	1	11	मं.	25	28	स्वाती	8	43	धृ.	26	40	वृश्चिक	27	22	7	24	17	27	7	18	17	31	7	20	17	40	6	47	17	15	1	बुध मूल धनु में 9/50, शुक्र वृश्चिक में 20/41, सफला एकादशी (A)
	2	12	बु.	26	10	विशा.	9	39	शू.	26	3	वृश्चिक			7	24	17	28	7	18	17	32	7	20	17	41	6	48	17	16	2	नेप्च्यून पू.भा. 1 में 24/0,
	3	13	गु.	27	21	अनु.	11	3	गं.	25	46	वृश्चिक			7	25	17	29	7	18	17	32	7	20	17	42	6	48	17	16	3	भ. 27/21 बाद, राहु पुन. 4, केतु उ.षा. 2 में 11/54, प्रदोष व्रत,
	4	14	शु.	28	57	ज्येष्ठा	12	53	वृ.	25	50	धनु	12	53	7	25	17	30	7	19	17	33	7	20	17	42	6	48	17	17	4	भ. 16/09 तक, शुक्र अनु. में 28/46,
	5	30	श.	30	58	मूल	15	7	ध्रु.	26	11	धनु			7	25	17	30	7	19	17	34	7	21	17	43	6	48	17	18	5	शनैश्चरी अमा,
पौष शुक्ल	6	1	र.	—	—	पू.षा.	17	42	व्या.	26	48	मकर	24	24	7	25	17	31	7	19	17	34	7	21	17	44	6	49	17	18	6	पौष शुक्ल पक्ष प्रारम्भ, यूरेनस मार्गी 25/58, प्लूटो उ.षा. 1 में 19/43,
	7	1	चं.	9	18	उ.षा.	20	35	ह.	27	37	मकर			7	25	17	32	7	19	17	35	7	21	17	45	6	49	17	19	7	चन्द्रदर्शन, मु. 45,
	8	2	मं.	11	54	श्रवण	23	40	व.	28	34	मकर			7	25	17	33	7	19	17	36	7	21	17	45	6	49	17	20	8	
	9	3	बु.	14	38	धनि.	26	49	सि.	29	34	कुम्भ	13	14	7	25	17	33	7	19	17	37	7	21	17	46	6	49	17	21	9	भ. 28/00 बाद, पंचक प्रारम्भ 13/14, बुध पू.षा. में 31/9, (B)
	10	4	गु.	17	22	शत.	29	54	व्य.	30	29	कुम्भ			7	25	17	34	7	19	17	38	7	21	17	47	6	49	17	21	10	भ. 17/22 तक,
	11	5	शु.	19	54	पू.भा.	—	—	व.	31	12	मीन	26	2	7	25	17	35	7	19	17	38	7	21	17	48	6	49	17	22	11	सूर्य उ.षा. में 13/20,
	12	6	श.	22	5	पू.भा.	8	43	प.	—	—	मीन			7	25	17	36	7	19	17	39	7	21	17	48	6	49	17	23	12	गुरु ज्येष्ठा 2 में 16/37,
	13	7	र.	23	42	उ.भा.	11	5	प.	7	34	मीन			7	25	17	37	7	19	17	40	7	21	17	49	6	49	17	24	13	भ. 23/42 बाद, अवतार दिन श्री गुरु गोबिन्द सिंह जी, लोहड़ी (C)
	14	8	चं.	24	37	रेवती	12	52	शि./	7	30	मेष	12	52	7	25	17	38	7	19	17	41	7	21	17	50	6	49	17	24	14	भ. 12/10 तक, पंचक समाप्त 12/52, सं. सूर्य मकर में 19/51, (D)
									सि.	30	52																					
	15	9	मं.	24	45	अश्वि.	13	55	सा.	29	37	मेष			7	25	17	39	7	19	17	42	7	21	17	51	6	49	17	25	15	पोंगल (द.भा.),
	16	10	बु.	24	3	भरणी	14	12	शु.	27	43	वृष	20	8	7	25	17	39	7	19	17	42	7	21	17	52	6	49	17	26	16	मंगल रेवती में 31/19,
	17	11	गु.	22	34	कृत्ति.	13	40	शु.	25	13	वृष			7	24	17	40	7	19	17	43	7	21	17	52	6	49	17	27	17	भ. 11/18 से 22/34 तक, शुक्र ज्येष्ठा में 21/55, पुत्रदा एकादशी व्रत (स.),
	18	12	शु.	20	22	रोहि.	12	25	ब्र.	22	9	मिथुन	23	32	7	24	17	41	7	19	17	44	7	21	17	53	6	49	17	27	18	बुध उ.षा. में 19/24, प्रदोष व्रत (देखें पृ. 18),
	19	13	श.	17	34	मृग.	10	31	ऐं.	18	36	मिथुन			7	24	17	42	7	18	17	45	7	21	17	54	6	49	17	28	19	शनि उदित 7/24,
	20	14	र.	14	19	आर्द्रा/	8	7	वै.	14	42	कर्क	24	5	7	24	17	43	7	18	17	46	7	21	17	55	6	49	17	29	20	भ. 14/19 से 24/33 तक, बुध मकर में 21/5, सूर्य सायन कुम्भ (E)
						पुन.	29	22																								
	21	15/	चं.	10	46	पुष्य	26	27	वि./	10	33	कर्क			7	23	17	44	7	18	17	47	7	20	17	55	6	49	17	30	21	पौषी पूर्णिमा, माघस्नान प्रारम्भ,
माघ कृष्ण		1		31	5				प्री.	30	17																					माघ कृष्णपक्ष प्रारम्भ, प्रतिपदा तिथिक्षय,
	22	2	मं.	27	26	आश्ले.	23	31	आ.	26	3	सिंह	23	31	7	23	17	45	7	18	17	47	7	20	17	56	6	48	17	30	22	
	23	3	बु.	23	59	मघा	20	46	सौ.	21	58	सिंह			7	23	17	46	7	17	17	48	7	20	17	57	6	48	17	31	23	भ. 13/42 से 23/59 तक,
	24	4	गु.	20	54	पू.फा.	18	21	शो.	18	11	कन्या	23	49	7	22	17	47	7	17	17	49	7	20	17	58	6	48	17	32	24	सूर्य श्रवण में 15/41, शनि पू.षा. 3 में 17/25, श्रीगणेश(संकष्ट) (F)
	25	5	शु.	18	18	उ.फा.	16	24	अ.	14	46	कन्या			7	22	17	47	7	17	17	50	7	19	17	59	6	48	17	33	25	
	26	6	श.	16	19	हस्त	15	4	सु.	11	51	तुला	26	39	7	21	17	48	7	16	17	51	7	19	17	59	6	47	17	33	26	भ. 16/19 से 27/41 तक, बुध श्रवण में 22/35, भारत गणतन्त्र दिवस,
	27	7	र.	15	2	चित्रा	14	24	धृ.	9	28	तुला			7	21	17	49	7	16	17	52	7	18	18	0	6	47	17	34	27	
	28	8	चं.	14	29	स्वाती	14	28	शू./	7	40	तुला			7	21	17	50	7	15	17	53	7	18	18	1	6	47	17	35	28	
									गं.	30	26																					
	29	9	मं.	14	41	विशा.	15	14	वृ.	29	45	वृश्चिक	8	58	7	20	17	51	7	15	17	53	7	18	18	2	6	46	17	36	29	भ. 27/07 बाद, शुक्र मूल धनु में 23/28,
	30	10	बु.	15	33	अनु.	16	40	ध्रु.	29	34	वृश्चिक			7	19	17	52	7	15	17	54	7	17	18	3	6	46	17	36	30	भ. 15/33 तक, गुरु ज्येष्ठा 3 में 9/55,
	31	11	गु.	17	2	ज्येष्ठा	18	40	व्या.	29	46	धनु	18	40	7	19	17	53	7	14	17	55	7	17	18	3	6	45	17	37	31	षट्तिला एकादशी व्रत (स.),

(A) व्रत (स.), इंगलिश नववर्ष सन् 2019 ई. प्रारम्भ, (B) बुध पूर्व में अस्त 7/25, (C) (पं., हरि., ज.क.), (D) मु. 30, पुण्यकाल मध्याह्न बाद और अगले दिन मध्याह्न तक, मकर संक्रान्ति, (E) में 14/29, श्रीसत्यनारायण व्रत, (F) चतुर्थी व्रत (देखें पृ.18) (चन्द्रोदय देखें पृ 11),

श्री वि. सं. 2075

तिथ्यादि पंचांग (भा. स्टैं. टा.)

फरवरी, सन् 2019 ई.

मास पक्ष	फरवरी	तिथि	वार	समाप्ति-काल		नक्षत्र	समाप्ति-काल		योग	समाप्ति-काल		चन्द्रराशि-प्रवेशकाल			चण्डीगढ़				दिल्ली				जयपुर				वाराणसी				तारीख	भद्रा, ग्रहराशि नक्षत्र-प्रवेश एवं पर्वोत्सवादि (सर्वत्र भा. स्टैं. टा. दिया गया है।)
															सूर्योदय		सूर्यास्त		सूर्योदय		सूर्यास्त		सूर्योदय		सूर्यास्त		सूर्योदय		सूर्यास्त			
				घं.	मि.		घं.	मि.		घं.	मि.		घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.		
माघ कृष्ण	1	12	शु.	18	59	मूल	21	7	ह.	30	18	धनु			7	18	17	54	7	13	17	56	7	16	18	4	6	45	17	38	1	
	2	13	श.	21	19	पू.षा.	23	54	व.	31	3	मकर	30	38	7	18	17	55	7	13	17	57	7	16	18	5	6	45	17	39	2	भ. 21/19 बाद, शनिप्रदोष व्रत, मेरु त्रयोदशी (जैन),
	3	14	र.	23	52	उ.षा.	26	54	सि.	—	—	मकर			7	17	17	56	7	12	17	58	7	15	18	6	6	44	17	39	3	भ. 10/36 तक, बुध धनि. में 16/21,
	4	30	चं.	26	33	श्रवण	30	1	सि.	7	57	मकर			7	16	17	56	7	12	17	58	7	15	18	7	6	44	17	40	4	मौनी अमा, सोमवती अमा , अर्धकुम्भ (प्रयागराज) (देखें पृ 22),(A)
माघ शुक्ल	5	1	मं.	29	15	धनि.	—	—	व्य.	8	55	कुम्भ	19	34	7	16	17	57	7	11	17	59	7	14	18	7	6	43	17	41	5	माघ शुक्ल पक्ष प्रारम्भ, पंचक प्रारम्भ 19/34, मंगल अश्विनी मेष (B)
	6	2	बु.	—	—	धनि.	9	7	व.	9	53	कुम्भ			7	15	17	58	7	10	18	0	7	14	18	8	6	43	17	41	6	चन्द्रदर्शन, मु. 15, सूर्य धनि. में 18/47, अर्द्धकुम्भ पर्व-प्रयागराज-4 फरवरी
	7	2	गु.	7	52	शत.	12	8	प.	10	47	कुम्भ			7	14	17	59	7	10	18	1	7	13	18	9	6	42	17	42	7	बुध कुम्भ में 10/10,
	8	3	शु.	10	18	पू.भा.	14	58	शि.	11	31	मीन	8	17	7	13	18	0	7	9	18	2	7	12	18	10	6	41	17	43	8	भ. 23/22 बाद, गौरी तृतीया (गोंतरी), वरद/तिल/कुन्द चतुर्थी,
	9	4	श.	12	26	उ.भा.	17	30	सि.	12	3	मीन			7	13	18	1	7	8	18	2	7	12	18	10	6	41	17	44	9	भ. 12/26 तक, श्री(लक्ष्मी) पंचमी (देखें पृ 19), वसन्त पंचमी, (C)
	10	5	र.	14	9	रेवती	19	37	सा.	12	16	मेष	19	37	7	12	18	2	7	8	18	3	7	11	18	11	6	40	17	44	10	पंचक समाप्त 19/37, बुध शत. में 26/46, शुक्र पू.षा. में 15/52,
	11	6	चं.	15	20	अश्वि.	21	12	शु.	12	5	मेष			7	11	18	2	7	7	18	4	7	10	18	12	6	39	17	45	11	
	12	7	मं.	15	54	भरणी	22	10	शु.	11	27	वृष	28	18	7	10	18	3	7	6	18	5	7	10	18	12	6	39	17	46	12	भ. 15/54 से 27/50 तक, रथ सप्तमी (पूर्वारुणोदय वाली), (D)
	13	8	बु.	15	46	कृत्ति.	22	27	ब्र.	10	17	वृष			7	9	18	4	7	5	18	5	7	9	18	13	6	38	17	46	13	सं. सूर्य कुम्भ में 8/48, मु. 30, पुण्यकाल 14/48 तक, भीष्माष्टमी,
	14	9	गु.	14	54	रोहि.	22	1	ऐं./	8	33	वृष			7	9	18	5	7	5	18	6	7	8	18	14	6	37	17	47	14	नवरात्र समाप्त,
									वै.	30	14																					
	15	10	शु.	13	18	मृग:	20	52	वि.	27	22	मिथुन	9	31	7	8	18	6	7	4	18	7	7	7	18	15	6	37	17	48	15	भ. 24/10 बाद, बुध पश्चिम में उदित 18/6, नवरात्र-पारणा,
	16	11	श.	11	2	आर्द्रा	19	5	प्री.	24	0	मिथुन			7	7	18	7	7	3	18	8	7	7	18	15	6	36	17	48	16	भ. 11/02 तक, जया एकादशी व्रत (स.), भीष्म द्वादशी,
	17	12/	र.	8	10	पुन.	16	45	आ.	20	12	कर्क	11	23	7	6	18	7	7	2	18	8	7	6	18	16	6	35	17	49	17	प्रदोष व्रत,
		13		28	50																											त्रयोदशी तिथिक्षय,
	18	14	चं.	25	11	पुष्य	14	1	सौ.	16	6	कर्क			7	5	18	8	7	1	18	9	7	5	18	17	76	34	17	49	18	भ. 25/11 बाद, बुध पू.भा. में 15/20, सूर्य सायन मीन में 28/34, (E)
	19	15	मं.	21	23	आश्ले.	11	2	शो.	11	48	सिंह	11	2	7	4	18	9	7	0	18	10	7	4	18	17	6	34	17	50	19	भ. 11/17 तक, सूर्य शत. में 23/18, माघी पूर्णिमा, श्रीसत्यनारायण (F)
फाल्गुन कृष्ण	20	1	बु.	17	36	मघा/	7	59	अ./	7	27	सिंह			7	3	18	10	6	59	18	11	7	3	18	18	6	33	17	51	20	फाल्गुन कृष्ण पक्ष प्रारम्भ, गुरु ज्येष्ठा 4 में 15/40,
						पू.फा.	29	3	सु.	27	12																					
	21	2	गु.	14	2	उ.फा.	26	26	धृ.	23	11	कन्या	10	22	7	2	18	11	6	58	18	11	7	2	18	19	6	32	17	51	21	भ. 24/26 बाद, शुक्र उ.षा. में 26/42,
	22	3	शु.	10	50	हस्त	24	17	शू.	19	32	कन्या			7	1	18	11	6	58	18	12	7	1	18	19	6	31	17	52	22	भ. 10/50 तक, श्रीगणेशचतुर्थी व्रत,
	23	4/	श.	8	11	चित्रा	22	47	गं.	16	24	तुला	11	26	7	0	18	12	6	57	18	13	7	1	18	20	6	30	17	52	23	
		5		30	13																											पंचमी तिथिक्षय,
	24	6	र.	29	4	स्वाती	22	2	वृ.	13	51	तुला			6	59	18	13	6	56	18	13	7	0	18	20	6	30	17	53	24	भ. 29/4 बाद, शुक्र मकर में 22/45,
	25	7	चं.	28	47	विशा.	22	7	ध्रु.	11	58	वृश्चिक	16	1	6	58	18	14	6	55	18	14	6	59	18	21	6	29	17	54	25	भ. 16/56 तक, मंगल भरणी में 17/37, बुध मीन में 8/59, (G)
	26	8	मं.	29	21	अनु.	23	3	व्या.	10	45	वृश्चिक			6	57	18	14	6	54	18	15	6	58	18	22	6	28	17	54	26	
	27	9	बु.	30	41	ज्येष्ठा	24	45	ह.	10	12	धनु	24	45	6	56	18	15	6	53	18	15	6	57	18	22	6	27	17	55	27	
	28	10	गु.	—	—	मूल	27	6	व.	10	13	धनु			6	55	18	16	6	52	18	16	6	56	18	23	6	26	17	55	28	भ. 19/40 बाद, बुध उ.भा. में 16/8,

(A) महोदय योग (7/57 बाद), (B) में 23/49, माघ गुप्त नवरात्र प्रारम्भ, (C) (देखें पृ.19), श्री लक्ष्मी/सरस्वती-पूजन, (D) आरोग्य सप्तमी, मर्यादा महोत्सव, (E) वसन्त ऋतु प्रारम्भ, (F) व्रत, श्रीगुरु रविदास जयन्ती, माघस्नान समाप्त, (G) शनि पू.षा. 4 में 23/50,

श्री वि. सं. 2075

तिथ्यादि पंचांग (भा. स्टैं. टा.)

मार्च, सन् 2019 ई.

मास पक्ष	मार्च	तिथि	वार	समाप्ति-काल		नक्षत्र	समाप्ति-काल		योग	समाप्ति-काल		चन्द्रराशि-प्रवेशकाल			चण्डीगढ़				दिल्ली				जयपुर				वाराणसी				तारीख	भद्रा, ग्रहराशि नक्षत्र-प्रवेश एवं पर्वोत्सवादि (सर्वत्र भा. स्टैं. टा. दिया गया है।)
															सूर्योदय		सूर्यास्त		सूर्योदय		सूर्यास्त		सूर्योदय		सूर्यास्त		सूर्योदय		सूर्यास्त			
				घं.	मि.		घं.	मि.		घं.	मि.		घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.		
फाल्गुन कृष्ण	1	10	शु.	8	39	पू.षा.	29	54	सि.	10	42	धनु			6	53	18	17	6	51	18	17	6	55	18	24	6	25	17	56	1	भ. 8/39 तक,
	2	11	श.	11	4	उ.षा.	—	—	व्य.	11	30	मकर	12	39	6	52	18	17	6	50	18	17	6	54	18	24	6	24	17	56	2	विजया एकादशी व्रत (स.),
	3	12	र.	13	44	उ.षा.	8	59	व.	12	29	मकर			6	51	18	18	6	48	18	18	6	53	18	25	6	23	17	57	3	प्रदोष व्रत,
	4	13	चं.	16	28	श्रवण	12	10	प.	13	32	कुम्भ	25	44	6	50	18	19	6	47	18	19	6	52	18	25	6	22	17	57	4	भ. 16/28 से 29/48 तक, पंचक प्रारम्भ 25/44, सूर्य पू.भा. में 29/36, (A)
	5	14	मं.	19	7	धनि.	15	16	शि.	14	31	कुम्भ			6	49	18	19	6	46	18	19	6	51	18	26	6	21	17	58	5	बुध वक्री 23/49, शुक्र श्रवण में 9/41,
	6	30	बु.	21	34	शत.	18	12	सि.	15	22	कुम्भ			6	48	18	20	6	45	18	20	6	50	18	26	6	20	17	58	6	
फाल्गुन शुक्ल	7	1	गु.	23	44	पू.भा.	20	53	सा.	16	2	मीन	14	15	6	47	18	21	6	44	18	21	6	49	18	27	6	19	17	59	7	फाल्गुन शुक्ल पक्ष प्रारम्भ, राहु पुन. 3 मिथुन, केतु उ.षा. 1 धनु में (B)
	8	2	शु.	25	34	उ.भा.	23	16	शु.	16	27	मीन			6	45	18	22	6	43	18	21	6	48	18	28	6	18	17	59	8	चन्द्रदर्शन, मु. 45, अवतारदिन श्रीरामकृष्ण परमहंस,
	9	3	श.	27	2	रेवती	25	18	शु.	16	37	मेष	25	18	6	44	18	22	6	42	18	22	6	47	18	28	6	17	18	0	9	पंचक समाप्त 25/18,
	10	4	र.	28	6	अश्वि.	26	57	ब्र.	16	30	मेष			6	43	18	23	6	41	18	22	6	46	18	29	6	16	18	0	10	भ. 15/34 से 28/06 तक,
	11	5	चं.	28	43	भरणी	28	9	ऐं.	16	2	मेष			6	42	18	24	6	40	18	23	6	45	18	29	6	15	18	1	11	वक्री बुध पू.भा. में 12/44,
	12	6	मं.	28	50	कृत्ति.	28	53	वै.	15	13	वृष	10	23	6	41	18	24	6	39	18	24	6	44	18	30	6	14	18	1	12	
	13	7	बु.	28	23	रोहि.	29	4	वि.	13	59	वृष			6	39	18	25	6	37	18	24	6	43	18	30	6	13	18	2	13	भ. 28/23 बाद,
	14	8	गु.	27	21	मृग.	28	42	प्री.	12	19	मिथुन	16	57	6	38	18	26	6	36	18	25	6	42	18	31	6	12	18	2	14	भ. 15/52 तक, सं. सूर्य मीन में 29/40, मु. 15, पुण्यकाल अगले (C)
	15	9	शु.	25	44	आर्द्रा	27	44	आ.	10	11	मिथुन			6	37	18	26	6	35	18	25	6	40	18	31	6	11	18	3	15	वक्री बुध कुम्भ में 8/58, होलाष्टक 14 से 21 मार्च
	16	10	श.	23	33	पुन.	26	13	सौ./	7	34	कर्क	20	38	6	36	18	27	6	34	18	26	6	39	18	32	6	10	18	3	16	शुक्र धनिष्ठा में 14/10,
									शो.	28	31																					
	17	11	र.	20	51	पुष्य	24	11	अ.	25	4	कर्क			6	35	18	28	6	33	18	27	6	38	18	32	6	9	18	4	17	भ. 10/12 से 20/51 तक, मंगल कृत्तिका में 15/0, आमला एकादशी व्रत (स.),
	18	12	चं.	17	43	आश्ले.	21	46	सु.	21	17	सिंह	21	46	6	33	18	28	6	32	18	27	6	37	18	33	6	8	18	4	18	सूर्य उ.भा. में 14/0, गोविन्द द्वादशी, सोमप्रदोष व्रत,
	19	13	मं.	14	18	मघा	19	4	धृ.	17	16	सिंह			6	32	18	29	6	31	18	28	6	36	18	33	6	7	18	5	19	
	20	14	बु.	10	45	पू.फा.	16	17	शू.	13	10	कन्या	21	35	6	31	18	30	6	29	18	28	6	35	18	34	6	6	18	5	20	भ. 10/45 से 20/58 तक, सूर्य सायन मेष में 27/28, उत्तरगोल (D)
	21	15/	गु.	7	12	उ.फा.	13	33	गं./	9	6	कन्या			6	30	18	30	6	28	18	29	6	34	18	34	6	5	18	6	21	शुक्र कुम्भ में 27/45, होलाष्टक समाप्त, वसन्तोत्सव, होला महल्ला (E)
चैत्र कृष्ण		1		27	52				वृ.	29	13																					चैत्र कृष्ण पक्ष प्रारम्भ, प्रतिपदा तिथिक्षय,
	22	2	शु.	24	55	हस्त	11	6	ध्रु.	25	40	तुला	22	1	6	28	18	31	6	27	18	29	6	33	18	35	6	4	18	6	22	मंगल वृष में 15/6, यूरेनस अश्विनी 3 में 20/58, बुध पूर्व में उदित (F)
	23	3	श.	22	32	चित्रा	9	5	व्या.	22	35	तुला			6	27	18	31	6	26	18	30	6	32	18	35	6	3	18	6	23	भ. 11/43 से 22/32 तक,
	24	4	र.	20	51	स्वाती	7	41	ह.	20	4	वृश्चिक	25	8	6	26	18	32	6	25	18	30	6	31	18	36	6	2	18	7	24	श्रीगणेशचतुर्थी व्रत,
	25	5	चं.	20	0	विशा.	7	3	व.	18	12	वृश्चिक			6	25	18	33	6	24	18	31	6	30	18	36	6	1	18	7	25	
	26	6	मं.	20	2	अनु.	7	15	सि.	17	3	वृश्चिक			6	23	18	33	6	23	18	32	6	28	18	37	6	0	18	8	26	भ. 20/2 बाद,
	27	7	बु.	20	55	ज्येष्ठा	8	18	व्य.	16	34	धनु	8	18	6	22	18	34	6	21	18	32	6	27	18	37	5	59	18	8	27	भ. 8/29 तक, शुक्र शत. में 16/57,
	28	8	गु.	22	34	मूल	10	10	व.	16	41	धनु			6	21	18	35	6	20	18	33	6	26	18	38	5	58	18	9	28	बुध मार्गी 19/29, श्री शीतलाष्टमी, मेला शीतला माता (कुराली) पं.,
	29	9	शु.	24	48	पू.षा.	12	40	प.	17	17	मकर	19	22	6	20	18	35	6	19	18	33	6	25	18	38	5	57	18	9	29	गुरु मूल 1 धनु में 20/5,
	30	10	श.	27	23	उ.षा.	15	37	शि.	18	11	मकर			6	19	18	36	6	18	18	34	6	24	18	39	5	56	18	10	30	भ. 14/05 से 27/23 तक,
	31	11	र.	30	4	श्रवण	18	46	सि.	19	14	मकर			6	17	18	37	6	17	18	34	6	23	18	39	5	55	18	10	31	सूर्य रेवती में 24/53, पापमोचिनी एकादशी व्रत (स्मा.) (देखें पृ 20),

(A) श्रीमहाशिवरात्रि व्रत (शिवयोग 13/32 बाद), (B) 9/36, बुध पश्चिम में अस्त 18/21, (C) दिन मध्याह्न तक, होलाष्टक प्रारम्भ, (D) प्रारम्भ, महाविषुव दिन, होलिकादहन (20/58 बाद) (देखें पृ. 20), श्रीसत्यनारायण व्रत, (E) श्री आनन्दपुर साहिब (पं.), जन्मदिन श्रीचैतन्य महाप्रभु, (F) 6/28, शक संवत्सर 1941 प्रारम्भ,

मास पक्ष	अप्रैल	तिथि	वार	समाप्ति-काल		नक्षत्र	समाप्ति-काल		योग	समाप्ति-काल		चन्द्रराशि-प्रवेशकाल			चण्डीगढ़ सूर्योदय		चण्डीगढ़ सूर्यास्त		दिल्ली सूर्योदय		दिल्ली सूर्यास्त		जयपुर सूर्योदय		जयपुर सूर्यास्त		वाराणसी सूर्योदय		वाराणसी सूर्यास्त		तारीख	भद्रा, ग्रहराशि नक्षत्र-प्रवेश एवं पर्वोत्सवादि (सर्वत्र भा. स्टैं. टा. दिया गया है।)
				घं.	मि.		घं.	मि.		घं.	मि.		घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.		
चैत्र कृष्ण	1	12	चं.	—	—	धनि.	21	54	सा.	20	17	कुम्भ	8	21	6	16	18	37	6	16	18	35	6	22	18	40	5	54	18	10	1	पंचक प्रारम्भ 8/21, पापमोचिनी एकादशी व्रत (वै.),
	2	12	मं.	8	38	शत.	24	49	शु.	21	9	कुम्भ			6	15	18	38	6	14	18	35	6	21	18	40	5	53	18	11	2	वारुणी योग (08/38 से सूर्यास्त तक), भौमप्रदोष व्रत,
	3	13	बु.	10	56	पू.भा.	27	24	शु.	21	47	मीन	20	47	6	14	18	38	6	13	18	36	6	20	18	41	5	52	18	11	3	भ. 10/56 से 23/53 तक, मेला पिहोवा तीर्थ (हरि.),
	4	14	गु.	12	51	उ.भा.	29	36	ब्र.	22	6	मीन			6	12	18	39	6	12	18	37	6	19	18	41	5	51	18	12	4	
	5	30	शु.	14	20	रेवती	—	—	ऐं.	22	6	मीन			6	11	18	40	6	11	18	37	6	18	18	42	5	50	18	12	5	चान्द्र संवत्सर 2075 वि. पूर्ण,

—: सौहार्द-श्रद्धाञ्जलि :—

(स्वर्गीय-ज्ञानी कर्तारसिंह जी गढ)

मित्रवरज्ञानी जी के देहावसान से हमारे परिवार को असह्य आघात पहुंचा है। ज्ञानी कर्तार सिंह जी सन् 1992 ई. से हमारी **'शिरोमणि तिथपत्रिका'** पंजाबी, **श्रीमार्त्तण्ड आलम जन्त्री (उर्दू)** के अनुवाद, पाण्डुलिपि-लेखन, प्रूफरीडिंग आदि श्रमसाध्य कार्य आत्मीयता, तन्मयता-परिश्रम तथा नि:स्वार्थ-भाव से करते रहे हैं। जिससे ये दोनों प्रकाशन प्रतिवर्ष उत्तरोत्तर समृद्ध कलेवर में हमारे पाठकों को उपलब्ध होने लगे।

अब तक **'श्रीमार्त्तण्ड पंचांग'** (हिन्दी) की ही संस्कार-समृद्धि की ओर हमारा अधिक झुकाव रहा। अत: ज्योतिष से सम्बद्ध लेखमाला तथा अन्य ज्ञानवर्धक स्तम्भ हम हिन्दी-पंचांग में ही प्रकाशित करते रहे। लेकिन प्रियमित्र ज्ञानी कर्तारसिंह जी की हमसे नि:स्वार्थ घनिष्ठता होने से हमारे लेखों एवं स्तम्भों को पंजाबी-उर्दू में Translate करके इन प्रकाशनों को अलंकृत करने का श्रेय श्री ज्ञानी कर्तार सिंह जी को ही जाता है। विगत लगभग 25 वर्षों से दिये जा रहे नये नये आकर्षक ज्ञानवर्धक-विषयों से समृद्ध कलेवर वाली **'शिरोमणि तिथपत्रिका'** का श्रेय आपको ही है। यही कारण है कि—आज यह तिथपत्रिका पंजाबी तिथपत्रिकाओं के क्षेत्र में अद्वितीय मानी जा रही है। उर्दू एवं पंजाबी तिथपत्रिका के अनुवाद आदि के भारी उत्तदायित्व को आप अपनी व्यस्त सामाजिक-धार्मिक दिनचर्या में से जैसे-तैसे समय निकाल कर हिन्दी के श्रीमार्त्तण्ड पंचांग की कम्पोजिंग-प्रूफरीडिंग का भी सहर्ष दायित्व निभाते रहे हैं। अपने प्रति इस नि:स्वार्थ सौहार्दातिशय के लिए हम सभी वस्तुत: ज्ञानी जी के ऋणी हैं। ज्ञानी जी! आपके सौहार्द-भरे स्पृहणीय सहयोग एवं सान्निध्य से हमारा प्रकाशन-भार तो हल्का हुआ ही, हमें इससे भारी आत्मिक सान्त्वना भी मिली। ऐसे कर्मठ, गुणसम्पन्न, अन्तरंग मित्रवर से यह विछोह वस्तुत: अपूरणीय क्षति और अरुन्तुद वेदना है।

अब तो ईश्वर से यही प्रार्थना है, कि वे उनकी दिवंगत आत्मा को अपनी चरण-शरण में लेकर उसे शाश्वत शान्ति प्रदान करें। हमें उनके इस असह्य निरन्तर विछोह को सहने की क्षमता प्रदान करें।

शोकाकुल—
प्रियव्रत शर्मा, इन्दुशेखर शर्मा,
('श्रीमार्त्तण्ड पंचांग' परिवार)

चन्द्रमा का नक्षत्रचरणों में प्रवेशकाल (भा. स्टैं. टा.), सन् 2018 ई.

चन्द्र नक्षत्रचरण		1		2		3		4	
जनवरी 2018 ई.	नक्षत्र	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.
31/ 1	मृग.	17	53	23	9	4	24	9	38
1/ 2	आर्द्रा	14	52	20	6	1	20	6	33
2/ 3	पुन.	11	47	17	1	22	16	3	32
3/ 4	पुष्य	8	48	14	6	19	25	0	45
4	आश्ले.	6	7	11	30	16	56	22	24
5	मघा	3	53	9	25	14	59	20	36
6	पू.फा.	2	15	7	57	13	42	19	29
7	उ.फा.	1	20	7	13	13	9	19	8
8	हस्त	1	9	7	14	13	22	19	32
9	चित्रा	1	45	8	1	14	20	20	41
10	स्वाती	3	4	9	30	15	58	22	28
11/12	विशा.	5	0	11	34	18	10	0	48
12/13	अनु.	7	26	14	7	20	48	3	30
13/14	ज्येष्ठा	10	14	16	58	23	43	6	28
14/15	मूल	13	14	20	0	2	46	9	32
15/16	पू.षा.	16	19	23	5	5	51	12	37
16/17	उ.षा.	19	22	2	7	8	51	15	35
17/18	श्रव.	22	18	5	0	11	42	18	22
19	धनि.	1	1	7	40	14	17	20	53
20	शत.	3	27	10	0	16	32	23	2
21/22	पू.भा.	5	30	11	57	18	22	0	45
22/23	उ.भा.	7	5	13	24	19	41	1	55
23/24	रेव.	8	8	14	18	20	25	2	30
24/25	अश्वि.	8	33	14	34	20	32	2	27
25/26	भर.	8	21	14	11	20	0	1	46
26/27	कृत्ति.	7	29	13	11	18	50	0	27
27	रोहि.	6	2	11	35	17	7	22	36
28	मृग.	4	4	9	30	14	55	20	19
29	आर्द्रा	1	42	7	3	12	24	17	44
29/30	पुन.	23	3	4	22	9	41	14	59
30/31	पुष्य	20	18	1	36	6	55	12	15

चन्द्र नक्षत्रचरण		1		2		3		4	
फरवरी 2018 ई.	नक्षत्र	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.
31/ 1	आश्ले.	17	35	22	56	4	18	9	41
1/ 2	मघा	15	5	20	31	1	59	7	28
2/ 3	पू.फा.	12	59	18	32	0	7	5	44
3/ 4	उ.फा.	11	23	17	6	22	50	4	38
4/ 5	हस्त	10	28	16	21	22	16	4	15
5/ 6	चित्रा	10	17	16	21	22	29	4	39
6/ 7	स्वाती	10	53	17	9	23	29	5	51
7/ 8	विशा.	12	15	18	43	1	12	7	45
8/ 9	अनु.	14	19	20	55	3	33	10	13
9/10	ज्येष्ठा	16	55	23	38	6	22	13	6
10/11	मूल	19	52	2	38	9	25	16	12
11/12	पू.षा.	22	59	5	45	12	32	19	18
13	उ.षा.	2	3	8	48	15	32	22	14
14/15	श्रव.	4	56	11	37	18	16	0	54
15/16	धनि.	7	30	14	6	20	39	3	11
16/17	शत.	9	42	16	10	22	38	5	3
17/18	पू.भा.	11	27	17	49	0	10	6	29
18/19	उ.भा.	12	46	19	1	1	15	7	27
19/20	रेव.	13	37	19	46	1	53	7	59
20/21	अश्वि.	14	2	20	4	2	5	8	4
21/22	भर.	14	1	19	56	1	50	7	43
22/23	कृत्ति.	13	34	19	23	1	11	6	57
23/24	रोहि.	12	42	18	26	0	8	5	48
24/25	मृग.	11	28	17	6	22	43	4	19
25/26	आर्द्रा	9	53	15	27	21	0	2	31
26/27	पुन.	8	2	13	32	19	2	0	31
27	पुष्य	5	59	11	28	16	56	22	23
28	आश्ले.	3	51	9	19	14	47	20	15

चन्द्र नक्षत्रचरण		1		2		3		4	
मार्च 2018 ई.	नक्षत्र	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.
1	मघा	1	44	7	14	12	44	18	15
1/ 2	पू.फा.	23	47	5	20	10	54	16	30
2/ 3	उ.फा.	22	8	3	46	9	27	15	10
3/ 4	हस्त	20	55	2	41	8	30	14	22
4/ 5	चित्रा	20	16	2	12	8	11	14	13
5/ 6	स्वाती	20	17	2	25	8	35	14	48
6/ 7	विशा.	21	3	3	22	9	43	16	7
7/ 8	अनु.	22	34	5	3	11	35	18	9
9	ज्येष्ठा	0	45	7	23	14	2	20	44
10	मूल	3	27	10	11	16	56	23	41
11/12	पू.षा.	6	28	13	15	20	1	2	48
12/13	उ.षा.	9	34	16	19	23	4	5	48
13/14	श्रव.	12	30	19	11	1	51	8	29
14/15	धनि.	15	6	21	40	4	13	10	43
15/16	शत.	17	12	23	38	6	2	12	24
16/17	पू.भा.	18	44	1	2	7	18	13	31
17/18	उ.भा.	19	43	1	52	8	0	14	5
18/19	रेव.	20	9	2	11	8	12	14	11
19/20	अश्वि.	20	8	2	4	7	58	13	52
20/21	भर.	19	44	1	35	7	24	13	13
21/22	कृत्ति.	19	1	0	48	6	34	12	20
22/23	रोहि.	18	4	23	48	5	32	11	15
23/24	मृग.	16	57	22	39	4	20	10	1
24/25	आर्द्रा	15	41	21	22	3	1	8	41
25/26	पुन.	14	20	19	59	1	38	7	16
26/27	पुष्य	12	55	18	33	0	11	5	49
27/28	आश्ले.	11	27	17	5	22	44	4	22
28/29	मघा	10	1	15	39	21	19	2	59
29/30	पू.फा.	8	39	14	19	20	1	1	43
30/31	उ.फा.	7	26	13	11	18	56	0	42

चन्द्रमा का नक्षत्रचरणों में प्रवेशकाल (भा. स्टैं. टा.), सन 2018 ई.

चन्द्र नक्षत्रचरण		1		2		3		4	
अप्रैल 2018 ई.	नक्षत्र	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.
31/ 1	हस्त	6	30	12	19	18	10	0	2
1	चित्रा	5	56	11	52	17	50	23	49
2/ 3	स्वाती	5	51	11	55	18	2	0	10
3/ 4	विशा.	6	21	12	35	18	51	1	10
4/ 5	अनु.	7	31	13	54	20	20	2	48
5/ 6	ज्येष्ठा	9	19	15	51	22	26	5	3
6/ 7	मूल	11	42	18	22	1	4	7	48
7/ 8	पू.षा.	14	32	21	17	4	3	10	50
8/ 9	उ.षा.	17	36	0	22	7	8	13	54
9/10	श्रव.	20	38	3	22	10	4	16	45
10/11	धनि .	23	24	6	1	12	37	19	9
12	शत .	1	40	8	8	14	34	20	57
13	पू.भा.	3	18	9	35	15	51	22	3
14	उ.भा.	4	13	10	20	16	25	22	27
15	रेव.	4	27	10	25	16	20	22	13
16	अश्वि.	4	4	9	54	15	41	21	27
17	भर.	3	12	8	54	14	36	20	17
18	कृत्ति.	1	56	7	35	13	13	18	50
19	रोहि.	0	27	6	3	11	39	17	15
19/20	मृग.	22	51	4	27	10	2	15	38
20/21	आर्द्रा	21	14	2	51	8	27	14	5
21/22	पुन.	19	42	1	20	6	59	12	38
22/23	पुष्य	18	18	23	58	5	39	11	20
23/24	आश्ले.	17	3	22	45	4	29	10	13
24/25	मघा	15	58	21	44	3	30	9	18
25/26	पू.फा.	15	5	20	54	2	44	8	34
26/27	उ.फा.	14	25	20	18	2	11	8	5
27/28	हस्त	14	0	19	56	1	54	7	52
28/29	चित्रा	13	52	19	54	1	56	8	0
29/30	स्वाती	14	6	20	14	2	23	8	33

चन्द्र नक्षत्रचरण		1		2		3		4	
मई 2018 ई.	नक्षत्र	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.
30/ 1	विशा.	14	46	21	1	3	17	9	35
1/ 2	अनु.	15	56	22	18	4	43	11	9
2/ 3	ज्येष्ठा	17	38	0	8	6	41	13	15
3/ 4	मूल	19	51	2	29	9	9	15	50
4/ 5	पू.षा.	22	32	5	16	12	1	18	46
6	उ.षा.	1	32	8	19	15	6	21	53
7/ 8	श्रव.	4	39	11	25	18	10	0	54
8/ 9	धनि .	7	37	14	19	20	59	3	36
9/10	शत .	10	12	16	46	23	17	5	45
10/11	पू.भा.	12	11	18	34	0	54	7	11
11/12	उ.भा.	13	25	19	36	1	44	7	49
12/13	रेव.	13	51	19	50	1	47	7	40
13/14	अश्वि.	13	31	19	19	1	5	6	49
14/15	भर.	12	30	18	9	23	47	5	22
15/16	कृत्ति.	10	56	16	28	22	0	3	30
16/17	रोहि.	8	58	14	27	19	54	1	21
17	मृग.	6	48	12	14	17	40	23	7
18	आर्द्रा	4	33	10	0	15	27	20	55
19	पुन.	2	23	7	52	13	22	18	53
20	पुष्य	0	25	5	58	11	32	17	8
20/21	आश्ले.	22	44	4	22	10	1	15	42
21/22	मघा	21	24	3	8	8	53	14	40
22/23	पू.फा.	20	28	2	17	8	8	14	0
23/24	उ.फा.	19	54	1	50	7	47	13	45
24/25	हस्त	19	45	1	46	7	49	13	53
25/26	चित्रा	19	58	2	6	8	14	14	24
26/27	स्वाती	20	36	2	49	9	3	15	19
27/28	विशा.	21	37	3	56	10	17	16	39
28/29	अनु.	23	3	5	29	11	56	18	24
30	ज्येष्ठा	0	55	7	27	14	0	20	35
31	मूल	3	12	9	50	16	29	23	10

चन्द्र नक्षत्रचरण		1		2		3		4	
जून 2018 ई.	नक्षत्र	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.
1/ 2	पू.षा.	5	52	12	35	19	19	2	4
2/ 3	उ.षा.	8	50	15	37	22	23	5	11
3/ 4	श्रव.	11	58	18	45	1	32	8	19
4/ 5	धनि .	15	5	21	49	4	33	11	16
5/ 6	शत .	17	56	0	35	7	12	13	47
6/ 7	पू.भा.	20	20	2	50	9	18	15	42
7/ 8	उ.भा.	22	4	4	23	10	39	16	52
8/ 9	रेव.	23	2	5	8	11	12	17	12
9/10	अश्वि.	23	9	5	4	10	55	16	43
10/11	भर.	22	29	4	12	9	52	15	30
11/12	कृत्ति.	21	5	2	39	8	10	13	39
12/13	रोहि.	19	7	0	33	5	57	11	20
13/14	मृग.	16	43	22	4	3	25	8	44
14/15	आर्द्रा	14	4	19	23	0	42	6	1
15/16	पुन.	11	21	16	40	22	1	3	22
16/17	पुष्य	8	43	14	6	19	29	0	54
17	आश्ले.	6	20	11	47	17	16	22	47
18	मघा	4	19	9	53	15	29	21	6
19	पू.फा.	2	46	8	28	14	11	19	57
20	उ.फा.	1	45	7	35	13	27	19	22
21	हस्त	1	18	7	17	13	18	19	21
22	चित्रा	1	26	7	33	13	43	19	54
23	स्वाती	2	7	8	23	14	40	20	59
24	विशा.	3	20	9	42	16	7	22	33
25/26	अनु.	5	0	11	30	18	0	0	33
26/27	ज्येष्ठा	7	6	13	42	20	18	2	56
27/28	मूल	9	34	16	14	22	56	5	38
28/29	पू.षा.	12	21	19	5	1	49	8	35
29/30	उ.षा.	15	21	22	7	4	54	11	41

2

चन्द्रमा का नक्षत्रचरणों में प्रवेशकाल (भा. स्टैं. टा.), सन 2018 ई.

चन्द्र नक्षत्रचरण		1		2		3		4	
जुलाई 2018 ई.	नक्षत्र	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.
30/ 1	श्रव.	18	28	1	16	8	3	14	50
1/ 2	धनि .	21	36	4	22	11	7	17	51
3	शत .	0	34	7	17	13	57	20	36
4	पू.भा.	3	13	9	49	16	22	22	54
5/ 6	उ.भा.	5	23	11	49	18	13	0	34
6/ 7	रेव.	6	53	13	9	19	22	1	32
7/ 8	अश्वि.	7	39	13	43	19	44	1	43
8/ 9	भर.	7	38	13	30	19	20	1	6
9	कृति.	6	50	12	31	18	10	23	46
10	रोहि.	5	20	10	52	16	21	21	49
11	मृग.	3	15	8	39	14	1	19	23
12	आर्द्रा	0	43	6	2	11	20	16	37
12/13	पुन.	21	54	3	10	8	26	13	42
13/14	पुष्य	18	58	0	15	5	31	10	48
14/15	आश्ले.	16	6	21	25	2	45	8	6
15/16	मघा	13	28	18	51	0	17	5	43
16/17	पू.फा.	11	12	16	43	22	15	3	50
17/18	उ.फा.	9	27	15	7	20	48	2	33
18/19	हस्त	8	19	14	9	20	1	1	55
19/20	चित्रा	7	53	13	53	19	55	2	1
20/21	स्वाती	8	9	14	20	20	33	2	49
21/22	विशा.	9	7	15	28	21	51	4	16
22/23	अनु.	10	43	17	13	23	44	6	18
23/24	ज्येष्ठा	12	53	19	29	2	7	8	47
24/25	मूल	15	28	22	9	4	52	11	36
25/26	पू.षा.	18	21	1	6	7	52	14	38
26/27	उ.षा.	21	25	4	12	10	59	17	45
28	श्रव.	0	32	7	19	14	5	20	51
29	धनि .	3	37	10	22	17	6	23	49
30/31	शत .	6	31	13	13	19	53	2	32

चन्द्र नक्षत्रचरण		1		2		3		4	
अगस्त 2018 ई.	नक्षत्र	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.
31/ 1	पू.भा.	9	10	15	46	22	21	4	54
1/ 2	उ.भा.	11	25	17	55	0	22	6	48
2/ 3	रेव.	13	12	19	33	1	53	8	10
3/ 4	अश्वि.	14	25	20	37	2	47	8	54
4/ 5	भर.	14	59	21	1	3	1	8	58
5/ 6	कृति.	14	53	20	45	2	35	8	22
6/ 7	रोहि.	14	7	19	50	1	30	7	8
7/ 8	मृग.	12	43	18	17	23	49	5	19
8/ 9	आर्द्रा	10	47	16	13	21	38	3	2
9/10	पुन.	8	24	13	45	19	6	0	25
10	पुष्य	5	44	11	1	16	19	21	37
11	आश्ले.	2	54	8	11	13	28	18	46
12	मघा	0	5	5	24	10	43	16	4
12/13	पू.फा.	21	26	2	50	8	14	13	41
13/14	उ.फा.	19	9	0	39	6	11	11	45
14/15	हस्त	17	22	23	1	4	42	10	26
15/16	चित्रा	16	13	22	2	3	54	9	50
16/17	स्वाती	15	48	21	49	3	53	10	0
17/18	विशा.	16	11	22	24	4	40	10	59
18/19	अनु.	17	20	23	45	6	12	12	41
19/20	ज्येष्ठा	19	13	1	47	8	23	15	1
20/21	मूल	21	40	4	22	11	4	17	48
22	पू.षा.	0	33	7	19	14	5	20	52
23	उ.षा.	3	39	10	26	17	13	24	0
24/25	श्रव.	6	47	13	33	20	19	3	4
25/26	धनि .	9	48	16	32	23	14	5	55
26/27	शत .	12	35	19	14	1	52	8	28
27/28	पू.भा.	15	3	21	37	4	8	10	39
28/29	उ.भा.	17	8	23	35	6	1	12	25
29/30	रेव.	18	48	1	8	7	28	13	45
30/31	अश्वि.	20	1	2	15	8	27	14	37

चन्द्र नक्षत्रचरण		1		2		3		4	
सितंबर 2018 ई.	नक्षत्र	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.
31/ 1	भर.	20	46	2	52	8	57	15	1
1/ 2	कृति.	21	2	3	1	8	59	14	54
2/ 3	रोहि.	20	48	2	40	8	30	14	18
3/ 4	मृग.	20	5	1	49	7	32	13	13
4/ 5	आर्द्रा	18	52	0	30	6	6	11	41
5/ 6	पुन.	17	14	22	46	4	16	9	45
6/ 7	पुष्य	15	13	20	40	2	6	7	31
7/ 8	आश्ले.	12	56	18	20	23	43	5	6
8/ 9	मघा	10	29	15	51	21	14	2	37
9/10	पू.फा.	8	1	13	24	18	49	0	14
10	उ.फा.	5	41	11	8	16	37	22	7
11	हस्त	3	39	9	12	14	47	20	25
12	चित्रा	2	4	7	46	13	31	19	17
13	स्वाती	1	7	6	59	12	54	18	52
14	विशा.	0	53	6	57	13	4	19	14
15	अनु.	1	27	7	43	14	2	20	24
16	ज्येष्ठा	2	49	9	17	15	47	22	19
17/18	मूल	4	54	11	32	18	11	0	51
18/19	पू.षा.	7	34	14	18	21	3	3	49
19/20	उ.षा.	10	35	17	22	0	9	6	57
20/21	श्रव.	13	44	20	30	3	16	10	1
21/22	धनि .	16	45	23	28	6	10	12	51
22/23	शत .	19	30	2	7	8	43	15	17
23/24	पू.भा.	21	49	4	19	10	48	17	15
24/25	उ.भा.	23	40	6	3	12	24	18	43
26	रेव.	1	1	7	17	13	31	19	43
27	अश्वि.	1	54	8	3	14	11	20	17
28	भर.	2	22	8	26	14	28	20	28
29	कृति.	2	28	8	26	14	23	20	19
30	रोहि.	2	13	8	7	13	59	19	51

चन्द्रमा का नक्षत्रचरणों में प्रवेशकाल (भा. स्टैं. टा.), सन 2018 ई.

चन्द्र नक्षत्रचरण		1		2		3		4	
अक्तूबर 2018 ई.	नक्षत्र	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.
1	मृग.	1	41	7	30	13	18	19	5
2	आर्द्रा	0	51	6	36	12	20	18	3
2/ 3	पुन.	23	45	5	26	11	6	16	45
3/ 4	पुष्य	22	23	4	1	9	37	15	13
4/ 5	आश्ले.	20	48	2	23	7	56	13	29
5/ 6	मघा	19	2	0	35	6	7	11	38
6/ 7	पू.फा.	17	10	22	42	4	14	9	45
7/ 8	उ.फा.	15	18	20	51	2	24	7	58
8/ 9	हस्त	13	33	19	9	0	46	6	24
9/10	चित्रा	12	4	17	46	23	29	5	14
10/11	स्वाती	11	0	16	49	22	41	4	34
11/12	विशा.	10	30	16	29	22	30	4	33
12/13	अनु.	10	40	16	49	23	2	5	17
13/14	ज्येष्ठा	11	35	17	55	0	19	6	45
14/15	मूल	13	14	19	45	2	19	8	55
15/16	पू.षा.	15	33	22	13	4	55	11	38
16/17	उ.षा.	18	22	1	8	7	54	14	41
17/18	श्रव.	21	28	4	15	11	2	17	48
19	धनि .	0	33	7	18	14	1	20	43
20	शत .	3	24	10	2	16	39	23	14
21/22	पू.भा.	5	47	12	18	18	46	1	12
22/23	उ.भा.	7	36	13	57	20	16	2	33
23/24	रेव.	8	47	14	59	21	9	3	17
24/25	अश्वि.	9	22	15	26	21	27	3	27
25/26	भर.	9	25	15	22	21	17	3	10
26/27	कृति.	9	3	14	53	20	43	2	32
27/28	रोहि.	8	20	14	7	19	53	1	38
28/29	मृग.	7	23	13	7	18	51	0	34
29	आर्द्रा	6	17	12	0	17	42	23	24
30	पुन.	5	5	10	47	16	28	22	10
31	पुष्य	3	51	9	32	15	12	20	53

चन्द्र नक्षत्रचरण		1		2		3		4	
नवंबर 2018 ई.	नक्षत्र	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.
1	आश्ले.	2	34	8	14	13	55	19	35
2	मघा	1	16	6	57	12	37	18	18
2/ 3	पू.फा.	23	59	5	39	11	21	17	2
3/ 4	उ.फा.	22	44	4	26	10	8	15	51
4/ 5	हस्त	21	35	3	19	9	4	14	49
5/ 6	चित्रा	20	36	2	24	8	13	14	3
6/ 7	स्वाती	19	55	1	48	7	42	13	38
7/ 8	विशा.	19	36	1	36	7	38	13	41
8/ 9	अनु.	19	47	1	56	8	6	14	19
9/10	ज्येष्ठा	20	34	2	52	9	12	15	34
10/11	मूल	21	59	4	26	10	56	17	28
12	पू.षा.	0	2	6	38	13	16	19	56
13	उ.षा.	2	37	9	20	16	5	22	50
14/15	श्रव.	5	36	12	23	19	10	1	57
15/16	धनि .	8	44	15	31	22	17	5	2
16/17	शत .	11	46	18	28	1	9	7	48
17/18	पू.भा.	14	25	21	0	3	33	10	3
18/19	उ.भा.	16	30	22	55	5	18	11	37
19/20	रेव.	17	54	0	8	6	19	12	28
20/21	अश्वि.	18	33	0	36	6	37	12	35
21/22	भर.	18	30	0	23	6	14	12	3
22/23	कृति.	17	50	23	35	5	18	11	0
23/24	रोहि.	16	40	22	19	3	57	9	34
24/25	मृग.	15	9	20	44	2	19	7	52
25/26	आर्द्रा	13	25	18	59	0	31	6	4
26/27	पुन.	11	37	17	9	22	42	4	16
27/28	पुष्य	9	49	15	23	20	58	2	33
28/29	आश्ले.	8	8	13	45	19	22	0	59
29	मघा	6	38	12	17	17	57	23	38
30	पू.फा.	5	20	11	3	16	47	22	32

चन्द्र नक्षत्रचरण		1		2		3		4	
दिसंबर 2018 ई.	नक्षत्र	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.
1	उ.फा.	4	17	10	4	15	52	21	40
2	हस्त	3	30	9	21	15	13	21	6
3	चित्रा	3	0	8	55	14	52	20	50
4	स्वाती	2	49	8	49	14	51	20	54
5	विशा.	2	59	9	5	15	13	21	22
6	अनु.	3	33	9	46	16	1	22	17
7	ज्येष्ठा	4	35	10	55	17	17	23	40
8/ 9	मूल	6	6	12	33	19	3	1	34
9/10	पू.षा.	8	7	14	42	21	18	3	57
10/11	उ.षा.	10	36	17	18	24	0	6	44
11/12	श्रव.	13	29	20	15	3	1	9	48
12/13	धनि .	16	36	23	23	6	11	12	58
13/14	शत .	19	45	2	31	9	16	15	59
14/15	पू.भा.	22	42	5	23	12	2	18	38
16	उ.भा.	1	13	7	46	14	16	20	43
17	रेव.	3	7	9	29	15	48	22	3
18	अश्वि.	4	16	10	26	16	33	22	36
19	भर.	4	37	10	35	16	30	22	22
20	कृति.	4	11	9	58	15	42	21	24
21	रोहि.	3	4	8	41	14	17	19	50
22	मृग.	1	22	6	52	12	21	17	48
22/23	आर्द्रा	23	14	4	40	10	4	15	28
23/24	पुन.	20	51	2	14	7	36	12	59
24/25	पुष्य	18	21	23	44	5	7	10	31
25/26	आश्ले.	15	55	21	19	2	45	8	11
26/27	मघा	13	39	19	7	0	37	6	8
27/28	पू.फा.	11	41	17	15	22	51	4	28
28/29	उ.फा.	10	7	15	47	21	30	3	14
29/30	हस्त	9	0	14	48	20	38	2	30
30/31	चित्रा	8	23	14	19	20	17	2	16

चन्द्रमा का नक्षत्रचरणों में प्रवेशकाल (भा. स्टैं. टा.), सन 2019 ई.

चन्द्र नक्षत्रचरण		1		2		3		4		चन्द्र नक्षत्रचरण		1		2		3		4		चन्द्र नक्षत्रचरण		1		2		3		4	
जनवरी 2019 ई.	नक्षत्र	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	फरवरी 2019 ई.	नक्षत्र	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	मार्च 2019 ई.	नक्षत्र	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.
31/ 1	स्वाती	8	18	14	21	20	27	2	34	**31/ 1**	मूल	18	39	1	14	7	50	14	28	**1**	पू.षा.	3	5	9	45	16	27	23	10
1/ 2	विशा.	8	43	14	54	21	7	3	22	**1/ 2**	पू.षा.	21	7	3	47	10	28	17	11	**2/ 3**	उ.षा.	5	54	12	39	19	25	2	12
2/ 3	अनु.	9	39	15	57	22	17	4	39	**2/ 3**	उ.षा.	23	54	6	38	13	23	20	8	**3/ 4**	श्रव.	8	59	15	46	22	34	5	22
3/ 4	ज्येष्ठा	11	3	17	28	23	54	6	23	**4**	श्रव.	2	54	9	40	16	27	23	14	**4/ 5**	धनि.	12	9	18	57	1	44	8	30
4/ 5	मूल	12	53	19	24	1	57	8	31	**5/ 6**	धनि.	6	1	12	47	19	34	2	21	**5/ 6**	शत.	15	16	22	1	4	46	11	29
5/ 6	पू.षा.	15	7	21	44	4	22	11	2	**6/ 7**	शत.	9	7	15	53	22	39	5	24	**6/ 7**	पू.भा.	18	12	0	54	7	35	14	15
6/ 7	उ.षा.	17	42	0	24	7	7	13	51	**7/ 8**	पू.भा.	12	8	18	52	1	35	8	17	**7/ 8**	उ.भा.	20	53	3	31	10	7	16	42
7/ 8	श्रव.	20	35	3	20	10	6	16	53	**8/ 9**	उ.भा.	14	58	21	38	4	16	10	54	**8/ 9**	रेव.	23	16	5	48	12	20	18	49
8/ 9	धनि.	23	40	6	27	13	14	20	2	**9/10**	रेव.	17	30	0	4	6	37	13	8	**10**	अश्वि.	1	18	7	45	14	10	20	34
10	शत.	2	49	9	36	16	23	23	8	**10/11**	अश्वि.	19	36	2	4	8	29	14	51	**11**	भर.	2	57	9	17	15	36	21	54
11/12	पू.भा.	5	53	12	38	19	21	2	2	**11/12**	भर.	21	12	3	30	9	46	15	59	**12**	कृति.	4	9	10	23	16	35	22	45
12/13	उ.भा.	8	43	15	21	21	58	4	33	**12/13**	कृति.	22	10	4	18	10	24	16	27	**13**	रोहि.	4	53	10	59	17	3	23	4
13/14	रेव.	11	5	17	36	0	4	6	29	**13/14**	रोहि.	22	27	4	24	10	19	16	11	**14**	मृग.	5	4	11	2	16	57	22	50
14/15	अश्वि.	12	52	19	12	1	29	7	44	**14/15**	मृग.	22	1	3	47	9	31	15	13	**15**	आर्द्रा	4	41	10	30	16	17	22	1
15/16	भर.	13	55	20	4	2	9	8	12	**15/16**	आर्द्रा	20	52	2	29	8	3	13	35	**16**	पुन.	3	44	9	24	15	2	20	38
16/17	कृति.	14	11	20	8	2	2	7	52	**16/17**	पुन.	19	5	0	33	5	59	11	23	**17**	पुष्य	2	12	7	45	13	15	18	44
17/18	रोहि.	13	40	19	25	1	7	6	47	**17/18**	पुष्य	16	45	22	6	3	26	8	44	**18**	आश्ले.	0	11	5	37	11	1	16	24
18/19	मृग.	12	24	17	59	23	32	5	2	**18/19**	आश्ले.	14	1	19	17	0	33	5	48	**18/19**	मघा	21	46	3	7	8	26	13	46
19/20	आर्द्रा	10	31	15	57	21	22	2	45	**19/20**	मघा	11	2	16	16	21	31	2	45	**19/20**	पू.फा.	19	4	0	23	5	41	10	58
20/21	पुन.	8	7	13	27	18	46	0	5	**20**	पू.फा.	7	59	13	14	18	30	23	46	**20/21**	उ.फा.	16	17	21	35	2	54	8	13
21	पुष्य	5	22	10	39	15	55	21	11	**21**	उ.फा.	5	3	10	22	15	41	21	3	**21/22**	हस्त	13	33	18	54	0	17	5	40
22	आश्ले.	2	27	7	42	12	58	18	15	**22**	हस्त	2	26	7	50	13	17	18	46	**22/23**	चित्रा	11	5	16	32	22	1	3	32
22/23	मघा	23	31	4	49	10	7	15	26	**23**	चित्रा	0	17	5	50	11	26	17	5	**23/24**	स्वाती	9	5	14	40	20	18	1	58
23/24	पू.फा.	20	46	2	8	7	30	12	55	**23/24**	स्वाती	22	47	4	31	10	18	16	9	**24/25**	विशा.	7	41	13	27	19	16	1	8
24/25	उ.फा.	18	21	23	49	5	19	10	50	**24/25**	विशा.	22	2	3	59	9	58	16	1	**25/26**	अनु.	7	2	13	1	19	2	1	7
25/26	हस्त	16	24	22	1	3	39	9	20	**25/26**	अनु.	22	7	4	17	10	29	16	44	**26/27**	ज्येष्ठा	7	15	13	26	19	40	1	58
26/27	चित्रा	15	4	20	50	2	39	8	30	**26/27**	ज्येष्ठा	23	3	5	24	11	49	18	15	**27/28**	मूल	8	18	14	42	21	9	3	38
27/28	स्वाती	14	24	20	21	2	20	8	23	**28**	मूल	0	45	7	17	13	51	20	27	**28/29**	पू.षा.	10	10	16	44	23	21	6	0
28/29	विशा.	14	28	20	35	2	45	8	58											**29/30**	उ.षा.	12	40	19	22	2	6	8	51
29/30	अनु.	15	14	21	32	3	52	10	15											**30/31**	श्रव.	15	37	22	24	5	11	11	58
30/31	ज्येष्ठा	16	40	23	7	5	36	12	7																				

(शेष पृष्ठ 197 पर)

दैनिक स्पष्ट निरयण ग्रह (प्रातः 5 घं. 30 मि., भा. स्टैं. टा.), 1 जनवरी 2018 ई. को अयनांश 24° 6' 19''

जनवरी	साम्पातिक काल 0.0 h GMT	सूर्य	चन्द्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	मध्यम राहु	स्पष्ट राहु	सूर्य क्रां.	चन्द्र क्रां.	चन्द्रशर
	घं. मि. से.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	अं. क.	अं. क.	अं. क.
1	6 42 24	8 16 24 10	2 0 41 48	6 20 3 41	7 23 50 56	6 22 49 47	8 14 25 9	8 7 17 6	3 22 47 41	3 21 15 19	-23 1	19 19	- 4 1
2	6 46 21	8 17 25 18	2 15 59 39	6 20 41 6	7 24 50 13	6 22 59 52	8 15 40 39	8 7 24 7	3 22 44 30	3 21 10 51	-22 56	20 3	- 3 0
3	6 50 17	8 18 26 25	3 1 14 48	6 21 18 30	7 25 52 48	6 23 9 50	8 16 56 8	8 7 31 8	3 22 41 19	3 21 7 49	-22 51	19 19	- 1 47
4	6 54 14	8 19 27 33	3 16 17 4	6 21 55 53	7 26 58 19	6 23 19 43	8 18 11 37	8 7 38 7	3 22 38 8	3 21 6 28	-22 45	17 13	- 0 26
5	6 58 10	8 20 28 41	4 0 58 27	6 22 33 15	7 28 6 27	6 23 29 29	8 19 27 7	8 7 45 6	3 22 34 57	3 21 6 37	-22 38	14 0	0 54
6	7 2 7	8 21 29 49	4 15 14 2	6 23 10 37	7 29 16 55	6 23 39 10	8 20 42 36	8 7 52 3	3 22 31 47	3 21 7 49	-22 31	10 3	2 9
7	7 6 3	8 22 30 57	4 29 1 58	6 23 47 57	8 0 29 28	6 23 48 44	8 21 58 4	8 7 59 0	3 22 28 36	3 21 9 25	-22 24	5 41	3 13
8	7 10 0	8 23 32 5	5 12 23 1	6 24 25 17	8 1 43 53	6 23 58 12	8 23 13 33	8 8 5 56	3 22 25 25	3 21 10 45	-22 16	1 11	4 5
9	7 13 57	8 24 33 14	5 25 19 45	6 25 2 36	8 2 59 58	6 24 7 33	8 24 29 2	8 8 12 50	3 22 22 14	3 21 11 16	-22 8	- 3 14	4 43
10	7 17 53	8 25 34 22	6 7 55 44	6 25 39 54	8 4 17 34	6 24 16 48	8 25 44 31	8 8 19 43	3 22 19 3	3 21 10 36	-22 0	- 7 23	5 6
11	7 21 50	8 26 35 31	6 20 15 1	6 26 17 11	8 5 36 32	6 24 25 56	8 26 59 59	8 8 26 35	3 22 15 53	3 21 8 42	-21 50	-11 8	5 14
12	7 25 46	8 27 36 39	7 2 21 36	6 26 54 26	8 6 56 44	6 24 34 57	8 28 15 28	8 8 33 25	3 22 12 42	3 21 5 44	-21 41	-14 21	5 8
13	7 29 43	8 28 37 47	7 14 19 17	6 27 31 41	8 8 18 5	6 24 43 52	8 29 30 56	8 8 40 14	3 22 9 31	3 21 2 3	-21 31	-16 57	4 49
14	7 33 39	8 29 38 56	7 26 11 21	6 28 8 54	8 9 40 29	6 24 52 39	9 0 46 24	8 8 47 2	3 22 6 20	3 20 58 7	-21 21	-18 48	4 17
15	7 37 36	9 0 40 4	8 8 0 41	6 28 46 6	8 11 3 52	6 25 1 19	9 2 1 52	8 8 53 48	3 22 3 9	3 20 54 25	-21 10	-19 50	3 35
16	7 41 32	9 1 41 11	8 19 49 40	6 29 23 17	8 12 28 9	6 25 9 52	9 3 17 19	8 9 0 32	3 21 59 59	3 20 51 20	-20 59	-20 0	2 43
17	7 45 29	9 2 42 19	9 1 40 24	7 0 0 27	8 13 53 17	6 25 18 17	9 4 32 46	8 9 7 15	3 21 56 48	3 20 49 10	-20 47	-19 17	1 44
18	7 49 25	9 3 43 26	9 13 34 48	7 0 37 34	8 15 19 13	6 25 26 35	9 5 48 13	8 9 13 55	3 21 53 37	3 20 48 2	-20 36	-17 42	0 40
19	7 53 22	9 4 44 32	9 25 34 44	7 1 14 41	8 16 45 56	6 25 34 45	9 7 3 39	8 9 20 34	3 21 50 26	3 20 47 53	-20 23	-15 20	- 0 26
20	7 57 19	9 5 45 37	10 7 42 16	7 1 51 46	8 18 13 23	6 25 42 48	9 8 19 5	8 9 27 11	3 21 47 15	3 20 48 32	-20 10	-12 16	- 1 32
21	8 1 15	9 6 46 42	10 19 59 43	7 2 28 49	8 19 41 32	6 25 50 42	9 9 34 30	8 9 33 46	3 21 44 5	3 20 49 41	-19 57	- 8 38	- 2 35
22	8 5 12	9 7 47 46	11 2 29 42	7 3 5 50	8 21 10 23	6 25 58 29	9 10 49 55	8 9 40 19	3 21 40 54	3 20 50 59	-19 44	- 4 35	- 3 31
23	8 9 8	9 8 48 49	11 15 15 3	7 3 42 51	8 22 39 54	6 26 6 8	9 12 5 19	8 9 46 49	3 21 37 43	3 20 52 7	-19 30	- 0 15	- 4 18
24	8 13 5	9 9 49 50	11 28 18 41	7 4 19 49	8 24 10 4	6 26 13 38	9 13 20 43	8 9 53 17	3 21 34 32	3 20 52 50	-19 16	4 11	- 4 53
25	8 17 1	9 10 50 51	0 11 43 11	7 4 56 46	8 25 40 54	6 26 21 1	9 14 36 5	8 9 59 43	3 21 31 22	3 20 53 1	-19 1	8 32	- 5 13
26	8 20 58	9 11 51 51	0 25 30 20	7 5 33 41	8 27 12 22	6 26 28 15	9 15 51 27	8 10 6 7	3 21 28 11	3 20 52 43	-18 47	12 33	- 5 16
27	8 24 54	9 12 52 50	1 9 40 35	7 6 10 34	8 28 44 28	6 26 35 20	9 17 6 48	8 10 12 28	3 21 25 0	3 20 52 2	-18 31	15 59	- 5 1
28	8 28 51	9 13 53 47	1 24 12 23	7 6 47 26	9 0 17 14	6 26 42 18	9 18 22 9	8 10 18 47	3 21 21 49	3 20 51 13	-18 16	18 31	- 4 25
29	8 32 48	9 14 54 44	2 9 1 49	7 7 24 17	9 1 50 39	6 26 49 6	9 19 37 29	8 10 25 3	3 21 18 38	3 20 50 27	-18 0	19 52	- 3 32
30	8 36 44	9 15 55 39	2 24 2 32	7 8 1 5	9 3 24 43	6 26 55 46	9 20 52 48	8 10 31 17	3 21 15 28	3 20 49 54	-17 44	19 50	- 2 23
31	8 40 41	9 16 56 33	3 9 6 25	7 8 37 52	9 4 [illegible]	6 27 2 37	9 22 8 6	8 10 37 27	3 21 12 17	3 20 49 38	-17 27	18 23	- 1 5

दैनिक स्पष्ट निरयण ग्रह (प्रातः 5 घं. 30 मि., भा. स्टैं. टा.), 1 फरवरी 2018 ई. को अयनांश 24° 6' 24''

फरवरी	साम्पातिक काल 0.0 h GMT			सूर्य				चन्द्र				मंगल				बुध				गुरु				शुक्र				शनि				मध्यम राहु				स्पष्ट राहु				सूर्य क्रां.		चन्द्र क्रां.		चन्द्रशर	
	घ.	मि.	से.	रा.	अं.	क.	वि.	रा.	अं.	क.	वि.	रा.	अं.	क.	वि.	रा.	अं.	क.	वि.	रा.	अं.	क.	वि.	रा.	अं.	क.	वि.	रा.	अं.	क.	वि.	रा.	अं.	क.	वि.	रा.	अं.	क.	वि.	अं.	क.	अं.	क.	अं.	क.
1	8	44	37	9	17	57	27	3	24	4	32	7	9	14	38	9	6	34	52	6	27	8	39	9	23	23	24	8	10	43	35	3	21	9	6	3	20	49	37	-17	10	15	40	0	18
2	8	48	34	9	18	58	19	4	8	48	33	7	9	51	22	9	8	10	59	6	27	14	53	9	24	38	41	8	10	49	41	3	21	5	55	3	20	49	46	-16	53	11	58	1	38
3	8	52	30	9	19	59	10	4	23	11	48	7	10	28	4	9	9	47	47	6	27	20	57	9	25	53	57	8	10	55	43	3	21	2	45	3	20	49	56	-16	36	7	38	2	51
4	8	56	27	9	21	0	0	5	7	10	2	7	11	4	44	9	11	25	18	6	27	26	52	9	27	9	13	8	11	1	43	3	20	59	34	3	20	50	2	-16	18	3	1	3	50
5	9	0	23	9	22	0	50	5	20	41	35	7	11	41	22	9	13	3	34	6	27	32	38	9	28	24	27	8	11	7	39	3	20	56	23	3	20	50	1	-16	0	-1	36	4	35
6	9	4	20	9	23	1	38	6	3	47	7	7	12	17	59	9	14	42	33	6	27	38	14	9	29	39	42	8	11	13	33	3	20	53	12	3	20	49	54	-15	42	-5	59	5	4
7	9	8	17	9	24	2	26	6	16	29	9	7	12	54	34	9	16	22	19	6	27	43	42	10	0	54	55	8	11	19	23	3	20	50	2	3	20	49	47	-15	23	-9	58	5	17
8	9	12	13	9	25	3	12	6	28	51	24	7	13	31	7	9	18	2	51	6	27	48	59	10	2	10	8	8	11	25	10	3	20	46	51	3	20	49	46	-15	4	-13	26	5	15
9	9	16	10	9	26	3	58	7	10	58	18	7	14	7	37	9	19	44	10	6	27	54	7	10	3	25	20	8	11	30	54	3	20	43	40	3	20	49	58	-14	45	-16	15	4	59
10	9	20	6	9	27	4	43	7	22	54	27	7	14	44	6	9	21	26	17	6	27	59	5	10	4	40	32	8	11	36	35	3	20	40	29	3	20	50	25	-14	26	-18	20	4	30
11	9	24	3	9	28	5	26	8	4	44	25	7	15	20	32	9	23	9	14	6	28	3	53	10	5	55	42	8	11	42	12	3	20	37	19	3	20	51	8	-14	7	-19	36	3	49
12	9	27	59	9	29	6	9	8	16	32	23	7	15	56	56	9	24	53	0	6	28	8	31	10	7	10	52	8	11	47	46	3	20	34	8	3	20	52	0	-13	47	-20	2	2	59
13	9	31	56	10	0	6	50	8	28	22	8	7	16	33	18	9	26	37	36	6	28	12	59	10	8	26	2	8	11	53	16	3	20	30	57	3	20	52	51	-13	27	-19	33	2	2
14	9	35	52	10	1	7	30	9	10	16	50	7	17	9	37	9	28	23	3	6	28	17	17	10	9	41	10	8	11	58	42	3	20	27	46	3	20	53	30	-13	7	-18	13	0	59
15	9	39	49	10	2	8	9	9	22	19	6	7	17	45	53	10	0	9	20	6	28	21	24	10	10	56	17	8	12	4	5	3	20	24	36	3	20	53	43	-12	46	-16	2	-0	8
16	9	43	46	10	3	8	46	10	4	30	57	7	18	22	7	10	1	56	28	6	28	25	22	10	12	11	23	8	12	9	24	3	20	21	25	3	20	53	20	-12	25	-13	7	-1	15
17	9	47	42	10	4	9	22	10	16	53	52	7	18	58	18	10	3	44	26	6	28	29	9	10	13	26	29	8	12	14	40	3	20	18	14	3	20	52	16	-12	5	-9	35	-2	19
18	9	51	39	10	5	9	56	10	29	28	56	7	19	34	26	10	5	33	13	6	28	32	45	10	14	41	33	8	12	19	51	3	20	15	3	3	20	50	33	-11	43	-5	34	-3	18
19	9	55	35	10	6	10	29	11	12	16	57	7	20	10	31	10	7	22	49	6	28	36	11	10	15	56	36	8	12	24	59	3	20	11	53	3	20	48	22	-11	22	-1	15	-4	8
20	9	59	32	10	7	11	0	11	25	18	31	7	20	46	33	10	9	13	11	6	28	39	26	10	17	11	38	8	12	30	2	3	20	8	42	3	20	46	0	-11	1	3	11	-4	45
21	10	3	28	10	8	11	29	0	8	34	12	7	21	22	33	10	11	4	17	6	28	42	30	10	18	26	38	8	12	35	2	3	20	5	31	3	20	43	50	-10	39	7	34	-5	9
22	10	7	25	10	9	11	56	0	22	4	26	7	21	58	29	10	12	56	4	6	28	45	24	10	19	41	38	8	12	39	57	3	20	2	20	3	20	42	14	-10	18	11	38	-5	16
23	10	11	21	10	10	12	21	1	5	49	27	7	22	34	22	10	14	48	28	6	28	48	7	10	20	56	36	8	12	44	49	3	19	59	10	3	20	41	26	-9	56	15	10	-5	5
24	10	15	18	10	11	12	45	1	19	49	6	7	23	10	13	10	16	41	22	6	28	50	39	10	22	11	32	8	12	49	36	3	19	55	59	3	20	41	33	-9	34	17	54	-4	36
25	10	19	15	10	12	13	6	2	4	2	32	7	23	46	0	10	18	34	41	6	28	53	0	10	23	26	27	8	12	54	18	3	19	52	48	3	20	42	26	-9	11	19	35	-3	50
26	10	23	11	10	13	13	26	2	18	27	53	7	24	21	44	10	20	28	17	6	28	55	11	10	24	41	21	8	12	58	57	3	19	49	37	3	20	43	43	-8	49	20	2	-2	49
27	10	27	8	10	14	13	43	3	3	1	59	7	24	57	25	10	22	21	59	6	28	57	10	10	25	56	13	8	13	3	31	3	19	46	27	3	20	44	56	-8	27	19	9	-1	36
28	10	31	4	10	15	13	59	3	17	40	15	7	25	33	3	10	24	15	36	6	28	58	58	10	27	11	4	8	13	8	1	3	19	43	16	3	20	45	30	-8	4	16	59	-0	17

दैनिक स्पष्ट निरयण ग्रह (प्रातः 5 घं. 30 मि., भा. स्टैं. टा.), 1 मार्च 2018 ई. को अयनांश 24° 6' 27''

मार्च	साम्पातिक काल 0.0 h GMT			सूर्य				चन्द्र				मंगल				बुध				गुरु				शुक्र				शनि				मध्यम राहु				स्पष्ट राहु				सूर्य क्रां		चन्द्र क्रां		चन्द्रशर	
	घं.	मि.	से.	रा.	अं.	क.	वि.	रा.	अं.	क.	वि.	रा.	अं.	क.	वि.	रा.	अं.	क.	वि.	रा.	अं.	क.	वि.	रा.	अं.	क.	वि.	रा.	अं.	क.	वि.	रा.	अं.	क.	वि.	रा.	अं.	क.	वि.	अं.	क.	अं.	क.	अं.	क.
1	10	35	1	10	16	14	13	4	2	17	0	7	26	8	38	10	26	8	54	6	29	0	36	10	28	25	53	8	13	12	26	3	19	40	5	3	20	45	1	-7	41	13	42	1	3
2	10	38	57	10	17	14	25	4	16	45	54	7	26	44	10	10	28	1	39	6	29	2	2	10	29	40	41	8	13	16	47	3	19	36	55	3	20	43	12	-7	18	9	37	2	18
3	10	42	54	10	18	14	35	5	1	0	51	7	27	19	38	10	29	53	31	6	29	3	17	11	0	55	28	8	13	21	3	3	19	33	44	3	20	40	5	-6	56	5	3	3	23
4	10	46	50	10	19	14	43	5	14	56	47	7	27	55	3	11	1	44	11	6	29	4	21	11	2	10	13	8	13	25	14	3	19	30	33	3	20	35	57	-6	33	0	19	4	15
5	10	50	47	10	20	14	50	5	28	30	22	7	28	30	24	11	3	33	15	6	29	5	14	11	3	24	56	8	13	29	21	3	19	27	22	3	20	31	18	-6	9	-4	18	4	50
6	10	54	44	10	21	14	55	6	11	40	17	7	29	5	43	11	5	20	17	6	29	5	55	11	4	39	39	8	13	33	23	3	19	24	12	3	20	26	45	-5	46	-8	35	5	9
7	10	58	40	10	22	14	58	6	24	27	15	7	29	40	57	11	7	4	52	6	29	6	26	11	5	54	19	8	13	37	21	3	19	21	1	3	20	22	52	-5	23	-12	20	5	12
8	11	2	37	10	23	15	0	7	6	53	44	8	0	16	8	11	8	46	28	6	29	6	45	11	7	8	59	8	13	41	13	3	19	17	50	3	20	20	9	-5	0	-15	28	5	0
9	11	6	33	10	24	15	0	7	19	3	28	8	0	51	14	11	10	24	36	6	29	6	53	11	8	23	37	8	13	45	1	3	19	14	39	3	20	18	49	-4	36	-17	50	4	35
10	11	10	30	10	25	14	59	8	1	1	2	8	1	26	17	11	11	58	43	6	29	6	49	11	9	38	13	8	13	48	44	3	19	11	29	3	20	18	50	-4	13	-19	23	3	58
11	11	14	26	10	26	14	56	8	12	51	28	8	2	1	16	11	13	28	17	6	29	6	34	11	10	52	48	8	13	52	21	3	19	8	18	3	20	19	57	-3	49	-20	5	3	11
12	11	18	23	10	27	14	51	8	24	39	52	8	2	36	10	11	14	52	46	6	29	6	8	11	12	7	22	8	13	55	54	3	19	5	7	3	20	21	38	-3	26	-19	53	2	16
13	11	22	19	10	28	14	45	9	6	31	9	8	3	11	0	11	16	11	40	6	29	5	30	11	13	21	54	8	13	59	22	3	19	1	57	3	20	23	14	-3	2	-18	48	1	15
14	11	26	16	10	29	14	37	9	18	29	46	8	3	45	46	11	17	24	29	6	29	4	41	11	14	36	25	8	14	2	44	3	18	58	46	3	20	24	5	-2	38	-16	51	0	10
15	11	30	13	11	0	14	27	10	0	39	29	8	4	20	26	11	18	30	45	6	29	3	41	11	15	50	54	8	14	6	2	3	18	55	35	3	20	23	32	-2	15	-14	8	-0	56
16	11	34	9	11	1	14	16	10	13	3	9	8	4	55	2	11	19	30	4	6	29	2	30	11	17	5	22	8	14	9	14	3	18	52	24	3	20	21	9	-1	51	-10	44	-2	0
17	11	38	6	11	2	14	2	10	25	42	34	8	5	29	33	11	20	22	4	6	29	1	7	11	18	19	48	8	14	12	20	3	18	49	14	3	20	16	48	-1	27	-6	47	-3	0
18	11	42	2	11	3	13	46	11	8	38	21	8	6	3	59	11	21	6	26	6	28	59	33	11	19	34	12	8	14	15	22	3	18	46	3	3	20	10	40	-1	4	-2	27	-3	52
19	11	45	59	11	4	13	29	11	21	50	1	8	6	38	19	11	21	42	56	6	28	57	47	11	20	48	34	8	14	18	18	3	18	42	52	3	20	3	17	-0	40	2	5	-4	32
20	11	49	55	11	5	13	9	0	5	16	4	8	7	12	34	11	22	11	24	6	28	55	51	11	22	2	55	8	14	21	8	3	18	39	42	3	19	55	27	-0	16	6	36	-4	58
21	11	53	52	11	6	12	47	0	18	54	26	8	7	46	44	11	22	31	43	6	28	53	44	11	23	17	13	8	14	23	54	3	18	36	31	3	19	48	5	0	8	10	51	-5	8
22	11	57	48	11	7	12	23	1	2	42	47	8	8	20	48	11	22	43	53	6	28	51	25	11	24	31	30	8	14	26	33	3	18	33	20	3	19	42	4	0	31	14	34	-5	0
23	12	1	45	11	8	11	57	1	16	38	55	8	8	54	47	11	22	47	58	6	28	48	56	11	25	45	45	8	14	29	7	3	18	30	9	3	19	37	59	0	55	17	31	-4	35
24	12	5	42	11	9	11	28	2	0	40	57	8	9	28	39	11	22	44	9	6	28	46	16	11	26	59	58	8	14	31	36	3	18	26	59	3	19	35	59	1	19	19	27	-3	53
25	12	9	38	11	10	10	57	2	14	47	26	8	10	2	26	11	22	32	43	6	28	43	25	11	28	14	8	8	14	33	59	3	18	23	48	3	19	35	46	1	42	20	12	-2	56
26	12	13	35	11	11	10	24	2	28	57	6	8	10	36	8	11	22	14	4	6	28	40	24	11	29	28	17	8	14	36	16	3	18	20	37	3	19	36	36	2	6	19	40	-1	49
27	12	17	31	11	12	9	48	3	13	8	36	8	11	9	43	11	21	48	42	6	28	37	12	0	0	42	23	8	14	38	28	3	18	17	27	3	19	37	26	2	29	17	54	-0	35
28	12	21	28	11	13	9	10	3	27	20	6	8	11	43	12	11	21	17	16	6	28	33	50	0	1	56	28	8	14	40	34	3	18	14	16	3	19	37	12	2	53	15	0	0	41
29	12	25	24	11	14	8	30	4	11	29	2	8	12	16	35	11	20	40	29	6	28	30	18	0	3	10	30	8	14	42	35	3	18	11	5	3	19	35	1	3	16	11	14	1	55
30	12	29	21	11	15	7	48	4	25	32	7	8	12	49	52	11	19	59	11	6	28	26	35	0	4	24	30	8	14	44	30	3	18	7	54	3	19	30	22	3	40	6	52	3	0
31	12	33	17	11	16	7	3	5	9	25	30	8	13	23	3	11	19	14	19	6	28	22	42	0	5	38	27	8	14	46	19	3	18	4	44	3	19	23	16	4	3	2	11	3	54

दैनिक स्पष्ट निरयण ग्रह (प्रातः 5 घं. 30 मि., भा.स्टै.टा.), 1 अप्रैल 2018 ई. को अयनांश 24° 6' 30"

अप्रैल	साम्पातिक काल 0.0h GMT			सूर्य				चन्द्र				मंगल				बुध				गुरु				शुक्र				शनि				मध्यम राहु				स्पष्ट राहु				सूर्य क्रां.		चन्द्रक्रां.		चन्द्रशर	
	घं.	मि.	से.	रा.	अं.	क.	वि.	रा.	अं.	क.	वि.	रा.	अं.	क.	वि.	रा.	अं.	क.	वि.	रा.	अं.	क.	वि.	रा.	अं.	क.	वि.	रा.	अं.	क.	वि.	रा.	अं.	क.	वि.	रा.	अं.	क.	वि.	अं.	क.	अं.	क.	अं.	क.
1	12	37	14	11	17	6	17	5	23	5	17	8	13	56	7	11	18	26	49	6	28	18	40	0	6	52	23	8	14	48	2	3	18	1	33	3	19	14	10	4	26	-2	32	4	34
2	12	41	11	11	18	5	28	6	6	28	14	8	14	29	5	11	17	37	42	6	28	14	28	0	8	6	17	8	14	49	40	3	17	58	22	3	19	3	56	4	49	-7	2	4	57
3	12	45	7	11	19	4	38	6	19	32	15	8	15	1	56	11	16	48	0	6	28	10	6	0	9	20	8	8	14	51	12	3	17	55	12	3	18	53	36	5	12	-11	5	5	4
4	12	49	4	11	20	3	45	7	2	16	49	8	15	34	39	11	15	58	41	6	28	5	34	0	10	33	57	8	14	52	38	3	17	52	1	3	18	44	11	5	35	-14	32	4	56
5	12	53	0	11	21	2	51	7	14	43	1	8	16	7	16	11	15	10	40	6	28	0	54	0	11	47	44	8	14	53	58	3	17	48	50	3	18	36	32	5	58	-17	16	4	34
6	12	56	57	11	22	1	55	7	26	53	24	8	16	39	45	11	14	24	50	6	27	56	4	0	13	1	29	8	14	55	13	3	17	45	39	3	18	31	5	6	21	-19	9	3	59
7	13	0	53	11	23	0	57	8	8	51	44	8	17	12	7	11	13	41	56	6	27	51	5	0	14	15	13	8	14	56	21	3	17	42	29	3	18	27	56	6	44	-20	9	3	15
8	13	4	50	11	23	59	57	8	20	42	40	8	17	44	20	11	13	2	38	6	27	45	57	0	15	28	54	8	14	57	24	3	17	39	18	3	18	26	44	7	6	-20	15	2	22
9	13	8	46	11	24	58	56	9	2	31	26	8	18	16	26	11	12	27	27	6	27	40	40	0	16	42	32	8	14	58	21	3	17	36	7	3	18	26	48	7	28	-19	27	1	24
10	13	12	43	11	25	57	53	9	14	23	28	8	18	48	23	11	11	56	51	6	27	35	15	0	17	56	9	8	14	59	12	3	17	32	57	3	18	27	12	7	51	-17	47	0	22
11	13	16	40	11	26	56	48	9	26	24	7	8	19	20	11	11	11	31	9	6	27	29	41	0	19	9	44	8	14	59	57	3	17	29	46	3	18	26	55	8	13	-15	19	-0	42
12	13	20	36	11	27	55	42	10	8	38	14	8	19	51	51	11	11	10	34	6	27	24	0	0	20	23	17	8	15	0	36	3	17	26	35	3	18	25	1	8	35	-12	8	-1	45
13	13	24	33	11	28	54	33	10	21	9	51	8	20	23	21	11	10	55	14	6	27	18	10	0	21	36	47	8	15	1	9	3	17	23	24	3	18	20	48	8	57	-8	20	-2	45
14	13	28	29	11	29	53	23	11	4	1	43	8	20	54	42	11	10	45	14	6	27	12	13	0	22	50	15	8	15	1	36	3	17	20	14	3	18	13	58	9	19	-4	4	-3	37
15	13	32	26	0	0	52	11	11	17	14	58	8	21	25	53	11	10	40	32	6	27	6	8	0	24	3	42	8	15	1	57	3	17	17	3	3	18	4	43	9	40	0	31	-4	19
16	13	36	22	0	1	50	57	0	0	48	48	8	21	56	54	11	10	41	6	6	26	59	56	0	25	17	5	8	15	2	12	3	17	13	52	3	17	53	42	10	2	5	10	-4	48
17	13	40	19	0	2	49	41	0	14	40	34	8	22	27	45	11	10	46	50	6	26	53	38	0	26	30	27	8	15	2	21	3	17	10	41	3	17	41	58	10	23	9	40	-5	1
18	13	44	15	0	3	48	23	0	28	46	2	8	22	58	25	11	10	57	35	6	26	47	12	0	27	43	46	8	15	2	25	3	17	7	31	3	17	30	45	10	44	13	43	-4	56
19	13	48	12	0	4	47	2	1	13	0	7	8	23	28	55	11	11	13	13	6	26	40	40	0	28	57	3	8	15	2	22	3	17	4	20	3	17	21	14	11	5	17	1	-4	32
20	13	52	9	0	5	45	40	1	27	17	45	8	23	59	14	11	11	33	34	6	26	34	2	1	0	10	17	8	15	2	13	3	17	1	9	3	17	14	12	11	25	19	18	-3	51
21	13	56	5	0	6	44	16	2	11	34	36	8	24	29	22	11	11	58	27	6	26	27	18	1	1	23	28	8	15	1	59	3	16	57	58	3	17	9	58	11	46	20	23	-2	56
22	14	0	2	0	7	42	49	2	25	47	35	8	24	59	18	11	12	27	40	6	26	20	29	1	2	36	37	8	15	1	39	3	16	54	48	3	17	8	11	12	6	20	8	-1	50
23	14	3	58	0	8	41	20	3	9	54	49	8	25	29	4	11	13	1	3	6	26	13	34	1	3	49	43	8	15	1	12	3	16	51	37	3	17	7	57	12	26	18	38	-0	38
24	14	7	55	0	9	39	49	3	23	55	24	8	25	58	37	11	13	38	24	6	26	6	35	1	5	2	47	8	15	0	40	3	16	48	26	3	17	8	0	12	46	16	0	0	36
25	14	11	51	0	10	38	16	4	7	48	54	8	26	27	58	11	14	19	34	6	25	59	31	1	6	15	48	8	15	0	3	3	16	45	16	3	17	6	59	13	6	12	27	1	47
26	14	15	48	0	11	36	41	4	21	34	54	8	26	57	8	11	15	4	22	6	25	52	22	1	7	28	46	8	14	59	19	3	16	42	5	3	17	3	47	13	26	8	16	2	51
27	14	19	44	0	12	35	3	5	5	12	35	8	27	26	5	11	15	52	39	6	25	45	9	1	8	41	41	8	14	58	30	3	16	38	54	3	16	57	43	13	45	3	43	3	45
28	14	23	41	0	13	33	24	5	18	40	40	8	27	54	49	11	16	44	15	6	25	37	53	1	9	54	33	8	14	57	35	3	16	35	43	3	16	48	43	14	4	-0	58	4	25
29	14	27	38	0	14	31	42	6	1	57	26	8	28	23	20	11	17	39	3	6	25	30	32	1	11	7	23	8	14	56	34	3	16	32	33	3	16	37	17	14	23	-5	33	4	51
30	14	31	34	0	15	29	59	6	15	1	7	8	28	51	38	11	18	36	54	6	25	23	9	1	12	20	9	8	14	55	28	3	16	29	22	3	16	24	23	14	41	-9	47	5	0

दैनिक स्पष्ट निरयण ग्रह (प्रातः 5 घं. 30 मि., भा.स्टै.टा.), 1 मई 2018 ई. को अयनांश 24° 6' 33"

मई	साम्पातिक काल 0.0h GMT			सूर्य				चन्द्र				मंगल				बुध				गुरु				शुक्र				शनि				मध्यम राहु				स्पष्ट राहु				सूर्य क्रां.		चन्द्रक्रां.		चन्द्रशर	
	घं.	मि.	से.	रा.	अं.	क.	वि.	रा.	अं.	क.	वि.	रा.	अं.	क.	वि.	रा.	अं.	क.	वि.	रा.	अं.	क.	वि.	रा.	अं.	क.	वि.	रा.	अं.	क.	वि.	रा.	अं.	क.	वि.	रा.	अं.	क.	वि.	अं.	क.	अं.	क.	अं.	क.
1	14	35	31	0	16	28	14	6	27	50	20	8	29	19	43	11	19	37	42	6	25	15	43	1	13	32	53	8	14	54	16	3	16	26	11	3	16	11	11	15	0	-13	31	4	54
2	14	39	27	0	17	26	27	7	10	24	28	8	29	47	33	11	20	41	19	6	25	8	14	1	14	45	34	8	14	52	58	3	16	23	0	3	15	58	53	15	18	-16	33	4	34
3	14	43	24	0	18	24	39	7	22	43	59	9	0	15	9	11	21	47	41	6	25	0	42	1	15	58	13	8	14	51	35	3	16	19	50	3	15	48	30	15	36	-18	47	4	1
4	14	47	20	0	19	22	49	8	4	50	32	9	0	42	30	11	22	56	41	6	24	53	9	1	17	10	48	8	14	50	6	3	16	16	39	3	15	40	39	15	53	-20	8	3	18
5	14	51	17	0	20	20	57	8	16	46	53	9	1	9	36	11	24	8	14	6	24	45	34	1	18	23	21	8	14	48	32	3	16	13	28	3	15	35	29	16	10	-20	34	2	26
6	14	55	13	0	21	19	5	8	28	36	50	9	1	36	26	11	25	22	16	6	24	37	57	1	19	35	51	8	14	46	53	3	16	10	17	3	15	32	46	16	27	-20	4	1	28
7	14	59	10	0	22	17	10	9	10	25	1	9	2	3	0	11	26	38	42	6	24	30	20	1	20	48	18	8	14	45	8	3	16	7	7	3	15	31	49	16	44	-18	41	0	27
8	15	3	7	0	23	15	14	9	22	16	39	9	2	29	17	11	27	57	30	6	24	22	41	1	22	0	42	8	14	43	17	3	16	3	56	3	15	31	41	17	1	-16	29	-0	36
9	15	7	3	0	24	13	17	10	4	17	13	9	2	55	17	11	29	18	35	6	24	15	2	1	23	13	4	8	14	41	22	3	16	0	45	3	15	31	18	17	17	-13	33	-1	38
10	15	11	0	0	25	11	19	10	16	32	8	9	3	21	0	0	0	41	56	6	24	7	23	1	24	25	23	8	14	39	21	3	15	57	34	3	15	29	40	17	33	-9	59	-2	37
11	15	14	56	0	26	9	19	10	29	6	17	9	3	46	24	0	2	7	30	6	23	59	44	1	25	37	39	8	14	37	15	3	15	54	23	3	15	25	58	17	49	-5	54	-3	29
12	15	18	53	0	27	7	18	11	12	3	33	9	4	11	29	0	3	35	15	6	23	52	5	1	26	49	52	8	14	35	3	3	15	51	13	3	15	19	48	18	4	-1	25	-4	13
13	15	22	49	0	28	5	16	10	25	26	7	9	4	36	15	0	5	5	10	6	23	44	27	1	28	2	2	8	14	32	47	3	15	48	2	3	15	11	15	18	19	3	15	-4	44
14	15	26	46	0	29	3	12	0	9	14	1	9	5	0	41	0	6	37	13	6	23	36	51	1	29	14	10	8	14	30	25	3	15	44	51	3	15	0	55	18	34	7	55	-5	0
15	15	30	42	1	0	1	6	0	23	24	40	9	5	24	47	0	8	11	24	6	23	29	16	2	0	26	14	8	14	27	59	3	15	41	40	3	14	49	47	18	48	12	17	-4	58
16	15	34	39	1	0	58	59	1	7	53	3	9	5	48	32	0	9	47	42	6	23	21	42	2	1	38	15	8	14	25	28	3	15	38	30	3	14	39	2	19	2	16	1	-4	38
17	15	38	36	1	1	56	51	1	22	32	18	9	6	11	56	0	11	26	6	6	23	14	11	2	2	50	13	8	14	22	51	3	15	35	19	3	14	29	49	19	16	18	49	-3	58
18	15	42	32	1	2	54	41	2	7	14	50	9	6	34	58	0	13	6	37	6	23	6	42	2	4	2	8	8	14	20	11	3	15	32	8	3	14	22	58	19	29	20	22	-3	3
19	15	46	29	1	3	52	30	2	21	53	38	9	6	57	38	0	14	49	14	6	22	59	16	2	5	13	59	8	14	17	25	3	15	28	57	3	14	18	49	19	42	20	33	-1	56
20	15	50	25	1	4	50	16	3	6	23	13	9	7	19	55	0	16	33	57	6	22	51	54	2	6	25	47	8	14	14	35	3	15	25	46	3	14	17	6	19	55	19	22	-0	42
21	15	54	22	1	5	48	2	3	20	40	1	9	7	41	49	0	18	20	47	6	22	44	34	2	7	37	32	8	14	11	41	3	15	22	36	3	14	17	2	20	8	16	56	0	34
22	15	58	18	1	6	45	45	4	4	42	23	9	8	3	20	0	20	9	44	6	22	37	19	2	8	49	13	8	14	8	42	3	15	19	25	3	14	17	27	20	20	13	33	1	47
23	16	2	15	1	7	43	27	4	18	30	2	9	8	24	27	0	22	0	46	6	22	30	7	2	10	0	50	8	14	5	38	3	15	16	14	3	14	17	7	20	32	9	28	2	52
24	16	6	11	1	8	41	8	5	2	3	30	9	8	45	9	0	23	53	54	6	22	23	0	2	11	12	24	8	14	2	31	3	15	13	3	3	14	15	0	20	43	4	59	3	46
25	16	10	8	1	9	38	47	5	15	23	34	9	9	5	26	0	25	49	6	6	22	15	57	2	12	23	53	8	13	59	20	3	15	9	53	3	14	10	26	20	54	0	19	4	27
26	16	14	5	1	10	36	24	5	28	30	58	9	9	25	17	0	27	46	19	6	22	8	59	2	13	35	19	8	13	56	4	3	15	6	42	3	14	3	19	21	5	-4	16	4	53
27	16	18	1	1	11	34	0	6	11	26	9	9	9	44	43	0	29	45	32	6	22	2	6	2	14	46	41	8	13	52	45	3	15	3	31	3	13	54	3	21	15	-8	36	5	3
28	16	21	58	1	12	31	34	6	24	9	21	9	10	3	41	1	1	46	41	6	21	55	19	2	15	57	59	8	13	49	22	3	15	0	20	3	13	43	26	21	25	-12	29	4	59
29	16	25	54	1	13	29	8	7	6	40	41	9	10	22	12	1	3	49	40	6	21	48	37	2	17	9	13	8	13	45	55	3	14	57	9	3	13	32	31	21	34	-15	45	4	40
30	16	29	51	1	14	26	40	7	19	0	28	9	10	40	16	1	5	54	24	6	21	42	1	2	18	20	23	8	13	42	24	3	14	53	59	3	13	22	19	21	44	-18	16	4	8
31	16	33	47	1	15	24	11	8	1	9	27	9	10	57	50	1	8	0	45	6	21	35	31	2	19	31	29	8	13	38	50	3	14	50	48	3	13	13	43	21	52	-19	56	3	25

दैनिक स्पष्ट निरयण ग्रह (प्रात: 5 घं. 30 मि., भा.स्टै.टा.), 1 जून 2018 ई. को अयनांश 24° 6' 37"

तिथि	साम्पातिक काल 0.0h GMT			सूर्य				चन्द्र				मंगल				बुध				गुरु				शुक्र				शनि				मध्यम राहु				स्पष्ट राहु				सूर्य क्रां.		चन्द्रक्रां.		चन्द्रशर	
	घं.	मि.	से.	रा.	अं.	क.	वि.	रा.	अं.	क.	वि.	रा.	अं.	क.	वि.	रा.	अं.	क.	वि.	रा.	अं.	क.	वि.	रा.	अं.	क.	वि.	रा.	अं.	क.	वि.	रा.	अं.	क.	वि.	रा.	अं.	क.	वि.	अं.	क.	अं.	क.	अं.	क.
1	16	37	44	1	16	21	41	8	13	9	2	9	11	14	55	1	10	8	34	6	21	29	7	2	20	42	30	8	13	35	12	3	14	47	37	3	13	7	18	22	1	-20	41	2	33
2	16	41	40	1	17	19	10	8	25	1	22	9	11	31	30	1	12	17	41	6	21	22	50	2	21	53	28	8	13	31	32	3	14	44	26	3	13	3	15	22	9	-20	30	1	35
3	16	45	37	1	18	16	38	9	6	49	24	9	11	47	33	1	14	27	54	6	21	16	40	2	23	4	22	8	13	27	48	3	14	41	15	3	13	1	26	22	17	-19	24	0	33
4	16	49	34	1	19	14	5	9	18	36	52	9	12	3	5	1	16	38	58	6	21	10	37	2	24	15	11	8	13	24	0	3	14	38	5	3	13	1	19	22	24	-17	28	-0	30
5	16	53	30	1	20	11	32	10	0	28	11	9	12	18	4	1	18	50	39	6	21	4	41	2	25	25	56	8	13	20	10	3	14	34	54	3	13	2	12	22	31	-14	47	-1	33
6	16	57	27	1	21	8	58	10	12	28	16	9	12	32	29	1	21	2	42	6	20	58	52	2	26	36	37	8	13	16	17	3	14	31	43	3	13	3	12	22	37	-11	27	-2	32
7	17	1	23	1	22	6	24	10	24	42	18	9	12	46	20	1	23	14	50	6	20	53	11	2	27	47	14	8	13	12	21	3	14	28	32	3	13	3	29	22	43	-7	35	-3	26
8	17	5	20	1	23	3	48	11	7	15	18	9	12	59	36	1	25	26	47	6	20	47	38	2	28	57	47	8	13	8	22	3	14	25	21	3	13	2	22	22	49	-3	17	-4	11
9	17	9	16	1	24	1	13	11	20	11	45	9	13	12	17	1	27	38	15	6	20	42	13	3	0	8	15	8	13	4	21	3	14	22	11	3	12	59	29	22	54	-1	16	-4	45
10	17	13	13	1	24	58	36	0	3	34	49	9	13	24	20	1	29	49	0	6	20	36	56	3	1	18	39	8	13	0	17	3	14	19	0	3	12	54	48	22	59	5	55	-5	4
11	17	17	9	1	25	55	59	0	17	25	47	9	13	35	46	2	1	58	47	6	20	31	48	3	2	28	58	8	12	56	11	3	14	15	49	3	12	48	42	23	4	10	25	-5	8
12	17	21	6	1	26	53	22	1	1	43	19	9	13	46	34	2	4	7	22	6	20	26	48	3	3	39	13	8	12	52	3	3	14	12	38	3	12	41	53	23	8	14	29	-4	52
13	17	25	3	1	27	50	44	1	16	23	8	9	13	46	43	2	6	14	32	6	20	21	57	3	4	49	23	8	12	47	53	3	14	9	27	3	12	35	12	23	11	17	47	-4	17
14	17	28	59	1	28	48	5	2	1	18	20	9	14	6	12	2	8	20	7	6	20	17	16	3	5	59	28	8	12	43	40	3	14	6	17	3	12	29	29	23	15	19	57	-3	24
15	17	32	56	1	29	45	25	2	16	20	16	9	14	15	2	2	10	23	57	6	20	12	43	3	7	9	29	8	12	39	26	3	14	3	6	3	12	25	24	23	18	20	45	-2	17
16	17	36	52	2	0	42	45	3	1	19	56	9	14	23	11	2	12	25	55	6	20	8	20	3	8	19	24	8	12	35	11	3	13	59	55	3	12	23	13	23	20	20	4	-1	0
17	17	40	49	2	1	40	4	3	16	9	22	9	14	30	39	2	14	25	54	6	20	4	6	3	9	29	14	8	12	30	53	3	13	56	44	3	12	22	47	23	22	18	0	0	21
18	17	44	45	2	2	37	22	4	0	42	36	9	14	37	26	2	16	23	49	6	20	0	2	3	10	38	59	8	12	26	35	3	13	53	33	3	12	23	34	23	24	14	47	1	38
19	17	48	42	2	3	34	39	4	14	56	7	9	14	43	31	2	18	19	37	6	19	56	8	3	11	48	38	8	12	22	15	3	13	50	23	3	12	24	51	23	25	10	46	2	48
20	17	52	38	2	4	31	56	4	28	48	34	9	14	48	53	2	20	13	13	6	19	52	23	3	12	58	11	8	12	17	54	3	13	47	12	3	12	25	47	23	26	6	16	3	46
21	17	56	35	2	5	29	12	5	12	20	20	9	14	53	33	2	22	4	35	6	19	48	49	3	14	7	39	8	12	13	32	3	13	44	1	3	12	25	39	23	26	1	34	4	30
22	18	0	32	2	6	26	27	5	25	32	49	9	14	57	29	2	23	53	43	6	19	45	25	3	15	17	1	8	12	9	9	3	13	40	50	3	12	24	3	23	26	-3	5	4	58
23	18	4	28	2	7	23	41	6	8	28	2	9	15	0	43	2	25	40	34	6	19	42	11	3	16	26	16	8	12	4	45	3	13	37	39	3	12	20	53	23	26	-7	29	5	11
24	18	8	25	2	8	20	55	6	21	8	6	9	15	3	12	2	27	25	8	6	19	39	7	3	17	35	26	8	12	0	21	3	13	34	29	3	12	16	24	23	25	-11	29	5	8
25	18	12	21	2	9	18	8	7	3	35	8	9	15	4	58	2	29	7	24	6	19	36	13	3	18	44	29	8	11	55	56	3	13	31	18	3	12	11	3	23	23	-14	55	4	50
26	18	16	18	2	10	15	21	7	15	51	0	9	15	5	59	3	0	47	21	6	19	33	30	3	19	53	25	8	11	51	31	3	13	28	7	3	12	5	30	23	22	-17	39	4	20
27	18	20	14	2	11	12	33	7	27	57	27	9	15	6	16	3	2	24	59	6	19	30	57	3	21	2	15	8	11	47	6	3	13	24	56	3	12	0	22	23	20	-19	35	3	38
28	18	24	11	2	12	9	45	8	9	56	7	9	15	5	48	3	4	0	17	6	19	28	35	3	22	10	58	8	11	42	41	3	13	21	45	3	11	56	9	23	17	-20	36	2	46
29	18	28	7	2	13	6	56	8	21	48	49	9	15	4	35	3	5	33	15	6	19	26	23	3	23	19	34	8	11	38	16	3	13	18	35	3	11	53	14	23	14	-20	42	1	48
30	18	32	4	2	14	4	7	9	3	37	35	9	15	2	36	3	7	3	51	6	19	24	21	3	24	28	4	8	11	33	51	3	13	15	24	3	11	51	43	23	11	-19	52	0	45

दैनिक स्पष्ट निरयण ग्रह (प्रातः 5 घं. 30 मि., भा.स्टै.टा.), 1 जुलाई 2018 ई. को अयनांश 24⁰ 6' 42"

जुलाई	साम्पातिक काल 0.0h GMT			सूर्य				चन्द्र				मंगल				बुध				गुरु				शुक्र				शनि				मध्यम राहु				स्पष्ट राहु				सूर्य क्रां.		चन्द्रक्रां.		चन्द्रशर	
	घं.	मि.	से.	रा.	अं.	क.	वि.	रा.	अं.	क.	वि.	रा.	अं.	क.	वि.	रा.	अं.	क.	वि.	रा.	अं.	क.	वि.	रा.	अं.	क.	वि.	रा.	अं.	क.	वि.	रा.	अं.	क.	वि.	रा.	अं.	क.	वि.	अं.	क.	अं.	क.	अं.	क.
1	18	36	1	2	15	1	19	9	15	24	51	9	14	59	53	3	8	32	5	6	19	22	31	3	25	36	26	8	11	29	26	3	13	12	13	3	11	51	31	23	7	-18	11	-0	20
2	18	39	57	2	15	58	30	9	27	13	29	9	14	56	24	3	9	57	56	6	19	20	51	3	26	44	41	8	11	25	2	3	13	9	2	3	11	52	23	23	3	-15	42	-1	24
3	18	43	54	2	16	55	41	10	9	6	53	9	14	52	10	3	11	21	21	6	19	19	22	3	27	52	49	8	11	20	38	3	13	5	51	3	11	53	53	22	59	-12	34	-2	25
4	18	47	50	2	17	52	53	10	21	8	54	9	14	47	10	3	12	42	18	6	19	18	3	3	29	0	49	8	11	16	15	3	13	2	41	3	11	55	33	22	54	-8	53	-3	20
5	18	51	47	2	18	50	5	11	3	23	46	9	14	41	26	3	14	0	47	6	19	16	55	4	0	8	43	8	11	11	53	3	12	59	30	3	11	56	55	22	48	-4	46	-4	7
6	18	55	43	2	19	47	17	11	15	55	50	9	14	34	58	3	15	16	43	6	19	15	58	4	1	16	28	8	11	7	32	3	12	56	19	3	11	57	37	22	43	-0	23	-4	44
7	18	59	40	2	20	44	29	11	28	49	20	9	14	27	45	3	16	30	4	6	19	15	12	4	2	24	6	8	11	3	12	3	12	53	8	3	11	57	27	22	36	4	9	-5	8
8	19	3	36	2	21	41	42	0	12	7	43	9	14	19	49	3	17	40	45	6	19	14	37	4	3	31	36	8	10	58	53	3	12	49	57	3	11	56	23	22	30	8	37	-5	16
9	19	7	33	2	22	38	55	0	25	53	11	9	14	11	11	3	18	48	44	6	19	14	13	4	4	38	58	8	10	54	35	3	12	46	46	3	11	54	37	22	23	12	49	-5	7
10	19	11	30	2	23	36	8	1	10	5	50	9	14	1	52	3	19	53	55	6	19	13	59	4	5	46	12	8	10	50	19	3	12	43	36	3	11	52	27	22	16	16	25	-4	39
11	19	15	26	2	24	33	22	1	24	43	12	9	13	51	52	3	20	56	12	6	19	13	57	4	6	53	17	8	10	46	5	3	12	40	25	3	11	50	17	22	8	19	7	-3	52
12	19	19	23	2	25	30	36	2	9	39	58	9	13	41	13	3	21	55	30	6	19	14	5	4	8	0	14	8	10	41	52	3	12	37	14	3	11	48	30	22	0	20	34	-2	49
13	19	23	19	2	26	27	50	2	24	48	24	9	13	29	57	3	22	51	43	6	19	14	24	4	9	7	2	8	10	37	41	3	12	34	3	3	11	47	20	21	52	20	34	-1	33
14	19	27	16	2	27	25	5	3	9	59	13	9	13	18	5	3	23	44	44	6	19	14	55	4	10	13	41	8	10	33	32	3	12	30	53	3	11	46	55	21	43	19	4	-0	10
15	19	31	12	2	28	22	20	3	25	3	4	9	13	5	39	3	24	34	25	6	19	15	36	4	11	20	11	8	10	29	25	3	12	27	42	3	11	47	8	21	34	16	14	1	13
16	19	35	9	2	29	19	35	4	9	51	46	9	12	52	41	3	25	20	39	6	19	16	28	4	12	26	31	8	10	25	21	3	12	24	31	3	11	47	49	21	24	12	22	2	30
17	19	39	5	3	0	16	50	4	24	19	22	9	12	39	13	3	26	3	17	6	19	17	30	4	13	32	41	8	10	21	19	3	12	21	20	3	11	48	40	21	14	7	52	3	35
18	19	43	2	3	1	14	5	5	8	22	31	9	12	25	17	3	26	42	11	6	19	18	44	4	14	38	41	8	10	17	20	3	12	18	9	3	11	49	24	21	4	3	4	4	25
19	19	46	59	3	2	11	21	5	22	0	19	9	12	10	55	3	27	17	11	6	19	20	9	4	15	44	31	8	10	13	23	3	12	14	59	3	11	49	50	20	53	-1	44	4	59
20	19	50	55	3	3	8	36	6	5	13	48	9	11	56	10	3	27	48	9	6	19	21	44	4	16	50	10	8	10	9	29	3	12	11	48	3	11	49	52	20	42	-6	19	5	15
21	19	54	52	3	4	5	52	6	18	5	23	9	11	41	5	3	28	14	55	6	19	23	29	4	17	55	37	8	10	5	38	3	12	8	37	3	11	49	32	20	31	-10	29	5	16
22	19	58	48	3	5	3	8	7	0	38	12	9	11	25	40	3	28	37	20	6	19	25	26	4	19	0	53	8	10	1	50	3	12	5	26	3	11	48	55	20	19	-14	5	5	1
23	20	2	45	3	6	0	25	7	12	55	45	9	11	10	0	3	28	55	15	6	19	27	33	4	20	5	57	8	9	58	5	3	12	2	15	3	11	48	11	20	7	-17	1	4	32
24	20	6	41	3	6	57	41	7	25	1	28	9	10	54	6	3	29	8	29	6	19	29	50	4	21	10	49	8	9	54	23	3	11	59	5	3	11	47	30	19	55	-19	9	3	52
25	20	10	38	3	7	54	58	8	6	58	35	9	10	38	1	3	29	16	56	6	19	32	18	4	22	15	29	8	9	50	44	3	11	55	54	3	11	46	59	19	42	-20	24	3	2
26	20	14	34	3	8	52	16	8	18	50	3	9	10	21	47	3	29	20	29	6	19	34	56	4	23	19	55	8	9	47	9	3	11	52	43	3	11	46	41	19	29	-20	45	2	4
27	20	18	31	3	9	49	34	9	0	38	29	9	10	5	28	3	29	19	1	6	19	37	45	4	24	24	9	8	9	43	38	3	11	49	32	3	11	46	35	19	16	-20	10	1	2
28	20	22	28	3	10	46	52	9	12	26	19	9	9	49	5	3	29	12	30	6	19	40	43	4	25	28	9	8	9	40	10	3	11	46	22	3	11	46	38	19	2	-18	41	-0	4
29	20	26	24	3	11	44	12	9	24	15	53	9	9	32	41	3	29	0	55	6	19	43	52	4	26	31	55	8	9	36	45	3	11	43	11	3	11	46	44	19	48	-16	25	-1	9
30	20	30	21	3	12	41	32	10	6	9	27	9	9	16	19	3	28	44	18	6	19	47	11	4	27	35	27	8	9	33	25	3	11	40	0	3	11	46	46	19	34	-13	25	-2	11
31	20	34	17	3	13	38	53	10	18	9	27	9	9	0	0	3	28	22	46	6	19	50	40	4	28	38	45	8	9	30	8	3	11	36	49	3	11	46	40	19	20	-9	52	-3	9

दैनिक स्पष्ट निरयण ग्रह (प्रातः 5 घं. 30 मि., भा.स्टै.टा.), 1 अगस्त 2018 ई. को अयनांश 24° 6' 47"

अगस्त	साम्पातिक काल 0.0h GMT			सूर्य				चन्द्र				मंगल				बुध				गुरु				शुक्र				शनि				मध्यम राहु				स्पष्ट राहु				सूर्य क्रां.		चन्द्रक्रां.		चन्द्रशर	
	घं.	मि.	से.	रा.	अं.	क.	वि.	रा.	अं.	क.	वि.	रा.	अं.	क.	वि.	रा.	अं.	क.	वि.	रा.	अं.	क.	वि.	रा.	अं.	क.	वि.	रा.	अं.	क.	वि.	रा.	अं.	क.	वि.	रा.	अं.	क.	वि.	अं.	क.	अं.	क.	अं.	क.
1	20	38	14	3	14	36	15	11	0	18	27	9	8	43	49	3	27	56	29	6	19	54	19	4	29	41	48	8	9	26	55	3	11	33	38	3	11	46	23	18	5	-5	52	-3	58
2	20	42	10	3	15	33	38	11	12	39	17	9	8	27	47	3	27	25	42	6	19	58	8	5	0	44	36	8	9	23	47	3	11	30	28	3	11	45	58	17	50	-1	34	-4	38
3	20	46	7	3	16	31	2	11	25	14	59	9	8	11	58	3	26	50	46	6	20	2	6	5	1	47	9	8	9	20	42	3	11	27	17	3	11	45	30	17	34	2	52	-5	5
4	20	50	3	3	17	28	28	0	8	8	38	9	7	56	23	3	26	12	7	6	20	6	15	5	2	49	25	8	9	17	42	3	11	24	6	3	11	45	7	17	18	7	17	-5	17
5	20	54	0	3	18	25	54	0	21	23	5	9	7	41	5	3	25	30	18	6	20	10	33	5	3	51	26	8	9	14	46	3	11	20	55	3	11	44	57	17	2	11	29	-5	13
6	20	57	57	3	19	23	22	1	5	0	31	9	7	26	7	3	24	45	55	6	20	15	1	5	4	53	9	8	9	11	54	3	11	17	45	3	11	45	6	16	46	15	12	-4	52
7	21	1	53	3	20	20	51	1	19	1	58	9	7	11	32	3	23	59	43	6	20	19	38	5	5	54	36	8	9	9	7	3	11	14	34	3	11	45	34	16	29	18	11	-4	13
8	21	5	50	3	21	18	22	2	3	26	40	9	6	57	22	3	23	12	27	6	20	24	25	5	6	55	45	8	9	6	25	3	11	11	23	3	11	46	16	16	13	20	8	-3	17
9	21	9	46	3	22	15	53	2	18	11	37	9	6	43	39	3	22	24	59	6	20	29	21	5	7	56	36	8	9	3	47	3	11	8	12	3	11	47	0	15	56	20	45	-2	7
10	21	13	43	3	23	13	26	3	3	11	25	9	6	30	27	3	21	38	12	6	20	34	27	5	8	57	8	8	9	1	14	3	11	5	2	3	11	47	32	15	38	19	55	-0	48
11	21	17	39	3	24	11	0	3	18	18	29	9	6	17	46	3	20	53	1	6	20	39	42	5	9	57	21	8	8	58	46	3	11	1	51	3	11	47	36	15	21	17	39	0	36
12	21	21	36	3	25	8	35	4	3	23	56	9	6	5	40	3	20	10	18	6	20	45	7	5	10	57	14	8	8	56	22	3	10	58	40	3	11	47	3	15	3	14	10	1	57
13	21	25	32	3	26	6	12	4	18	18	48	9	5	54	10	3	19	30	55	6	20	50	40	5	11	56	46	8	8	54	4	3	10	55	29	3	11	45	52	14	45	9	48	3	9
14	21	29	29	3	27	3	49	5	2	55	20	9	5	43	19	3	18	55	42	6	20	56	23	5	12	55	57	8	8	51	51	3	10	52	19	3	11	44	11	14	26	4	57	4	7
15	21	33	26	3	28	1	28	5	17	8	0	9	5	33	8	3	18	25	23	6	21	2	14	5	13	54	46	8	8	49	42	3	10	49	8	3	11	42	15	14	8	-0	2	4	48
16	21	37	22	3	28	59	7	6	0	53	55	9	5	23	38	3	18	0	37	6	21	8	15	5	14	53	12	8	8	47	39	3	10	45	57	3	11	40	25	13	49	-4	51	5	11
17	21	41	19	3	29	56	48	6	14	12	49	9	5	14	52	3	17	42	0	6	21	14	24	5	15	51	14	8	8	45	42	3	10	42	46	3	11	39	1	13	30	-9	17	5	16
18	21	45	15	4	0	54	29	6	27	6	33	9	5	6	50	3	17	30	1	6	21	20	42	5	16	48	51	8	8	43	49	3	10	39	36	3	11	38	21	13	11	-13	9	5	5
19	21	49	12	4	1	52	12	7	9	38	28	9	4	59	33	3	17	25	3	6	21	27	8	5	17	46	3	8	8	42	2	3	10	36	25	3	11	38	30	12	51	-16	19	4	39
20	21	53	8	4	2	49	56	7	21	52	44	9	4	53	3	3	17	27	24	6	21	33	43	5	18	42	48	8	8	40	20	3	10	33	14	3	11	39	27	12	32	-18	42	4	2
21	21	57	5	4	3	47	40	8	3	53	54	9	4	47	19	3	17	37	16	6	21	40	26	5	19	39	6	8	8	38	44	3	10	30	3	3	11	40	56	12	12	-20	11	3	14
22	22	1	1	4	4	45	26	8	15	46	26	9	4	42	24	3	17	54	46	6	21	47	18	5	20	34	55	8	8	37	13	3	10	26	53	3	11	42	36	11	52	-20	46	2	18
23	22	4	58	4	5	43	13	8	27	34	34	9	4	38	16	3	18	19	58	6	21	54	17	5	21	30	15	8	8	35	47	3	10	23	42	3	11	44	2	11	32	-20	25	1	17
24	22	8	55	4	6	41	1	9	9	22	2	9	4	34	57	3	18	52	48	6	22	1	25	5	22	25	4	8	8	34	27	3	10	20	31	3	11	44	48	11	11	-19	10	0	13
25	22	12	51	4	7	38	51	9	21	12	3	9	4	32	26	3	19	33	12	6	22	8	41	5	23	19	21	8	8	33	13	3	10	17	20	3	11	44	31	10	51	-17	4	-0	52
26	22	16	48	4	8	36	42	10	3	7	17	9	4	30	45	3	20	21	0	6	22	16	4	5	24	13	6	8	8	32	4	3	10	14	10	3	11	42	57	10	30	-14	14	-1	55
27	22	20	44	4	9	34	34	10	15	9	54	9	4	29	52	3	21	15	59	6	22	23	36	5	25	6	17	8	8	31	0	3	10	10	59	3	11	40	2	10	9	-10	46	-2	53
28	22	24	41	4	10	32	28	10	27	21	37	9	4	29	48	3	22	17	52	6	22	31	15	5	25	58	53	8	8	30	3	3	10	7	48	3	11	35	57	9	48	-6	49	-3	45
29	22	28	37	4	11	30	24	11	9	43	51	9	4	30	32	3	23	26	22	6	22	39	1	5	26	50	52	8	8	29	11	3	10	4	37	3	11	31	4	9	27	-2	32	-4	26
30	22	32	34	4	12	28	21	11	22	17	51	9	4	32	6	3	24	41	6	6	22	46	56	5	27	42	14	8	8	28	24	3	10	1	27	3	11	25	55	9	6	1	54	-4	55
31	22	36	30	4	13	26	20	0	5	4	50	9	4	34	28	3	26	1	40	6	22	54	57	5	28	32	57	8	8	27	44	3	9	58	16	3	11	21	9	8	44	6	20	-5	10

दैनिक स्पष्ट निरयण ग्रह (प्रातः 5 घं. 30 मि., भा.स्टै.टा.), 1 सितम्बर 2018 ई. को अयनांश 24° 6' 51"

तिथि	साम्पातिक काल 0.0h GMT			सूर्य				चन्द्र				मंगल				बुध				गुरु				शुक्र				शनि				मध्यम राहु				स्पष्ट राहु				सूर्य क्रां.		चन्द्रक्रां.		चन्द्रशर	
	घं.	मि.	से.	रा.	अं.	क.	वि.	रा.	अं.	क.	वि.	रा.	अं.	क.	वि.	रा.	अं.	क.	वि.	रा.	अं.	क.	वि.	रा.	अं.	क.	वि.	रा.	अं.	क.	वि.	रा.	अं.	क.	वि.	रा.	अं.	क.	वि.	अं.	क.	अं.	क.	अं.	क.
1	22	40	27	4	14	24	21	0	18	6	7	9	4	37	38	3	27	27	37	6	23	3	6	5	29	23	0	8	8	27	9	3	9	55	5	3	11	17	20	8	22	10	34	-5	10
2	22	44	24	4	15	22	24	1	1	23	3	9	4	41	36	3	28	58	31	6	23	11	23	6	0	12	22	8	8	26	40	3	9	51	55	3	11	14	56	8	1	14	23	-4	53
3	22	48	20	4	16	20	29	1	14	56	55	9	4	46	23	4	0	33	50	6	23	19	46	6	1	1	1	8	8	26	16	3	9	48	44	3	11	14	3	7	39	17	31	-4	20
4	22	52	17	4	17	18	36	1	28	48	37	9	4	51	57	4	2	13	5	6	23	28	17	6	1	48	54	8	8	25	59	3	9	45	33	3	11	14	31	7	17	19	44	-3	31
5	22	56	13	4	18	16	45	2	12	58	17	9	4	58	18	4	3	55	46	6	23	36	55	6	2	36	2	8	8	25	47	3	9	42	22	3	11	15	46	6	55	20	47	-2	28
6	23	0	10	4	19	14	55	2	27	24	46	9	5	5	27	4	5	41	23	6	23	45	40	6	3	22	22	8	8	25	41	3	9	39	12	3	11	17	5	6	32	20	29	-1	15
7	23	4	6	4	20	13	8	3	12	5	13	9	5	13	22	4	7	29	26	6	23	54	31	6	4	7	51	8	8	25	41	3	9	36	1	3	11	17	38	6	10	18	47	0	4
8	23	8	3	4	21	11	23	3	26	54	47	9	5	22	4	4	9	19	29	6	24	3	30	6	4	52	29	8	8	25	47	3	9	32	50	3	11	16	43	5	47	15	49	1	24
9	23	11	59	4	22	9	39	4	11	46	47	9	5	31	31	4	11	11	6	6	24	12	35	6	5	36	13	8	8	25	59	3	9	29	39	3	11	13	56	5	25	11	48	2	38
10	23	15	56	4	23	7	57	4	26	33	25	9	5	41	44	4	13	3	53	6	24	21	47	6	6	19	1	8	8	26	17	3	9	26	29	3	11	9	17	5	2	7	5	3	41
11	23	19	53	4	24	6	18	5	11	6	51	9	5	52	42	4	14	57	28	6	24	31	5	6	7	0	50	8	8	26	40	3	9	23	18	3	11	3	10	4	39	2	2	4	28
12	23	23	49	4	25	4	40	5	25	20	25	9	6	4	24	4	16	51	35	6	24	40	30	6	7	41	38	8	8	27	10	3	9	20	7	3	10	56	17	4	17	-3	1	4	58
13	23	27	46	4	26	3	3	6	9	9	34	9	6	16	50	4	18	45	55	6	24	50	1	6	8	21	23	8	8	27	45	3	9	16	57	3	10	49	30	3	54	-7	46	5	9
14	23	31	42	4	27	1	28	6	22	32	23	9	6	29	59	4	20	40	14	6	24	59	38	6	9	0	2	8	8	28	27	3	9	13	46	3	10	43	39	3	31	-11	58	5	2
15	23	35	39	4	27	59	55	7	5	29	24	9	6	43	50	4	22	34	21	6	25	9	22	6	9	37	32	8	8	29	14	3	9	10	35	3	10	39	21	3	8	-15	29	4	41
16	23	39	35	4	28	58	24	7	18	3	15	9	6	58	23	4	24	28	6	6	25	19	11	6	10	13	50	8	8	30	7	3	9	7	24	3	10	36	53	2	45	-18	11	4	6
17	23	43	32	4	29	56	54	8	0	17	57	9	7	13	36	4	26	21	20	6	25	29	7	6	10	48	53	8	8	31	6	3	9	4	14	3	10	36	8	2	21	-19	59	3	20
18	23	47	28	5	0	55	26	8	12	18	24	9	7	29	29	4	28	13	56	6	25	39	8	6	11	22	38	8	8	32	11	3	9	1	3	3	10	36	42	1	58	-20	50	2	27
19	23	51	25	5	1	53	59	8	24	9	50	9	7	46	1	5	0	5	50	6	25	49	15	6	11	55	2	8	8	33	22	3	8	57	52	3	10	37	51	1	35	-20	44	1	28
20	23	55	22	5	2	52	34	9	5	57	25	9	8	3	12	5	1	56	55	6	25	59	28	6	12	26	2	8	8	34	38	3	8	54	42	3	10	38	44	1	12	-19	43	0	25
21	23	59	18	5	3	51	11	9	17	46	0	9	8	20	59	5	3	47	10	6	26	9	46	6	12	55	34	8	8	36	0	3	8	51	31	3	10	38	31	0	48	-17	50	-0	38
22	0	3	15	5	4	49	50	9	29	39	50	9	8	39	23	5	5	36	32	6	26	20	10	6	13	23	34	8	8	37	28	3	8	48	20	3	10	36	28	0	25	-15	10	-1	41
23	0	7	11	5	5	48	30	10	11	42	22	9	8	58	22	5	7	24	59	6	26	30	39	6	13	50	0	8	8	39	2	3	8	45	9	3	10	32	8	0	2	-11	50	-2	39
24	0	11	8	5	6	47	12	10	23	56	9	9	9	17	56	5	9	12	30	6	26	41	13	6	14	14	48	8	8	40	42	3	8	41	59	3	10	25	25	-0	22	-7	57	-3	31
25	0	15	4	5	7	45	56	11	6	22	49	9	9	38	3	5	10	59	4	6	26	51	52	6	14	37	53	8	8	42	27	3	8	38	48	3	10	16	35	-0	45	-3	41	-4	13
26	0	19	1	5	8	44	42	11	19	3	3	9	9	58	44	5	12	44	42	6	27	2	37	6	14	59	14	8	8	44	18	3	8	35	37	3	10	6	17	-1	8	0	50	-4	44
27	0	22	57	5	9	43	30	0	1	56	44	9	10	19	56	5	14	29	23	6	27	13	27	6	15	18	46	8	8	46	14	3	8	32	27	3	9	55	30	-1	32	5	23	-5	1
28	0	26	54	5	10	42	20	0	15	3	12	9	10	41	40	5	16	13	8	6	27	24	21	6	15	36	25	8	8	48	16	3	8	29	16	3	9	45	18	-1	55	9	46	-5	3
29	0	30	51	5	11	41	12	0	28	21	34	9	11	3	55	5	17	55	58	6	27	35	21	6	15	52	8	8	8	50	24	3	8	26	5	3	9	36	43	-2	18	13	44	-4	48
30	0	34	47	5	12	40	7	1	11	51	3	9	11	26	40	5	19	37	53	6	27	46	25	6	16	5	52	8	8	52	37	3	8	22	54	3	9	30	28	-2	42	17	4	-4	17

दैनिक स्पष्ट निरयण ग्रह (प्रातः 5 घं. 30 मि., भा.स्टै.टा.), 1 अक्टूबर 2018 ई. को अयनांश 24° 6' 53"

अक्टूबर	साम्पातिक काल 0.0h GMT			सूर्य				चन्द्र				मंगल				बुध				गुरु				शुक्र				शनि				मध्यम राहु				स्पष्ट राहु				सूर्य क्रां.		चन्द्रक्रां.		चन्द्रशर	
	घं.	मि.	से.	रा.	अं.	क.	वि.	रा.	अं.	क.	वि.	रा.	अं.	क.	वि.	रा.	अं.	क.	वि.	रा.	अं.	क.	वि.	रा.	अं.	क.	वि.	रा.	अं.	क.	वि.	रा.	अं.	क.	वि.	रा.	अं.	क.	वि.	अं.	क.	अं.	क.	अं.	क.
1	0	38	44	5	13	39	4	1	25	31	9	9	11	49	54	5	21	18	54	6	27	57	34	6	16	17	33	8	8	54	56	3	8	19	44	3	9	26	50	-3	5	19	31	-3	32
2	0	42	40	5	14	38	3	2	9	21	36	9	12	13	37	5	22	59	3	6	28	8	47	6	16	27	8	8	8	57	21	3	8	16	33	3	9	25	30	-3	28	20	50	-2	33
3	0	46	37	5	15	37	4	2	23	22	20	9	12	37	49	5	24	38	20	6	28	20	6	6	16	34	34	8	8	59	50	3	8	13	22	3	9	25	39	-3	51	20	54	-1	24
4	0	50	33	5	16	36	8	3	7	32	55	9	13	2	28	5	26	16	46	6	28	31	29	6	16	39	47	8	9	2	26	3	8	10	11	3	9	26	7	-4	14	19	37	-0	10
5	0	54	30	5	17	35	14	3	21	52	14	9	13	27	35	5	27	54	22	6	28	42	56	6	16	42	46	8	9	5	7	3	8	7	1	3	9	25	37	-4	38	17	5	1	6
6	0	58	26	5	18	34	23	4	6	17	54	9	13	53	8	5	29	31	9	6	28	54	27	6	16	43	26	8	9	7	53	3	8	3	50	3	9	23	4	-5	1	13	28	2	18
7	1	2	23	5	19	33	33	4	20	46	1	9	14	19	7	6	1	7	9	6	29	6	3	6	16	41	47	8	9	10	45	3	8	0	39	3	9	17	47	-5	24	9	2	3	21
8	1	6	20	5	20	32	46	5	5	11	20	9	14	45	32	6	2	42	22	6	29	17	43	6	16	37	46	8	9	13	42	3	7	57	29	3	9	9	43	-5	47	4	7	4	11
9	1	10	16	5	21	32	1	5	19	27	47	9	15	12	21	6	4	16	50	6	29	29	27	6	16	31	23	8	9	16	44	3	7	54	18	3	8	59	23	-6	10	-0	59	4	45
10	1	14	13	5	22	31	18	6	3	29	27	9	15	39	36	6	5	50	32	6	29	41	15	6	16	22	35	8	9	19	52	3	7	51	7	3	8	47	44	-6	32	-5	57	5	0
11	1	18	9	5	23	30	37	6	17	11	29	9	16	7	14	6	7	23	29	6	29	53	8	6	16	11	23	8	9	23	4	3	7	47	56	3	8	36	0	-6	55	-10	29	4	58
12	1	22	6	5	24	29	58	7	0	30	56	9	16	35	16	6	8	55	43	7	0	5	3	6	15	57	48	8	9	26	23	3	7	44	46	3	8	25	22	-7	18	-14	24	4	40
13	1	26	2	5	25	29	21	7	13	27	3	9	17	3	41	6	10	27	13	7	0	17	3	6	15	41	51	8	9	29	46	3	7	41	35	3	8	16	46	-7	40	-17	30	4	7
14	1	29	59	5	26	28	46	7	26	1	14	9	17	32	28	6	11	57	59	7	0	29	6	6	15	23	34	8	9	33	14	3	7	38	24	3	8	10	43	-8	3	-19	41	3	24
15	1	33	55	5	27	28	13	8	8	16	34	9	18	1	36	6	13	28	3	7	0	41	13	6	15	3	1	8	9	36	47	3	7	35	13	3	8	7	11	-8	25	-20	54	2	31
16	1	37	52	5	28	27	41	8	20	17	27	9	18	31	6	6	14	57	24	7	0	53	23	6	14	40	15	8	9	40	26	3	7	32	3	3	8	5	42	-8	47	-21	7	1	33
17	1	41	49	5	29	27	11	9	2	9	3	9	19	0	56	6	16	26	1	7	1	5	37	6	14	15	23	8	9	44	9	3	7	28	52	3	8	5	26	-9	9	-20	23	0	31
18	1	45	45	6	0	26	43	9	13	56	55	9	19	31	5	6	17	53	55	7	1	17	54	6	13	48	31	8	9	47	57	3	7	25	41	3	8	5	18	-9	31	-18	45	-0	31
19	1	49	42	6	1	26	17	9	25	46	34	9	20	1	34	6	19	21	6	7	1	30	14	6	13	19	46	8	9	51	50	3	7	22	31	3	8	4	14	-9	53	-16	18	-1	32
20	1	53	38	6	2	25	52	10	7	43	12	9	20	32	22	6	20	47	31	7	1	42	37	6	12	49	19	8	9	55	48	3	7	19	20	3	8	1	14	-10	14	-13	9	-2	30
21	1	57	35	6	3	25	29	10	19	51	17	9	21	3	28	6	22	13	11	7	1	55	3	6	12	17	20	8	9	59	51	3	7	16	9	3	7	55	41	-10	36	-9	25	-3	22
22	2	1	31	6	4	25	8	11	2	14	19	9	21	34	51	6	23	38	3	7	2	7	32	6	11	43	59	8	10	3	58	3	7	12	58	3	7	47	20	-10	57	-5	12	-4	5
23	2	5	28	6	5	24	49	11	14	54	33	9	22	6	31	6	25	2	6	7	2	20	4	6	11	9	29	8	10	8	10	3	7	9	48	3	7	36	28	-11	18	-0	40	-4	37
24	2	9	24	6	6	24	32	11	27	52	47	9	22	38	28	6	26	25	17	7	2	32	39	6	10	34	5	8	10	12	26	3	7	6	37	3	7	23	48	-11	39	3	59	-4	56
25	2	13	21	6	7	24	17	0	11	8	19	9	23	10	41	6	27	47	34	7	2	45	16	6	9	57	59	8	10	16	47	3	7	3	26	3	7	10	26	-12	0	8	34	-4	59
26	2	17	18	6	8	24	3	0	24	39	7	9	23	43	9	6	29	8	54	7	2	57	56	6	9	21	27	8	10	21	13	3	7	0	15	3	6	57	40	-12	21	12	49	-4	46
27	2	21	14	6	9	23	52	1	8	22	14	9	24	15	52	7	0	29	13	7	3	10	39	6	8	44	44	8	10	25	42	3	6	57	5	3	6	46	41	-12	41	16	28	-4	16
28	2	25	11	6	10	23	43	1	22	14	21	9	24	48	51	7	1	48	26	7	3	23	24	6	8	8	5	8	10	30	17	3	6	53	54	3	6	38	24	-13	1	19	14	-3	31
29	2	29	7	6	11	23	36	2	6	12	29	9	25	22	4	7	3	6	29	7	3	36	12	6	7	31	45	8	10	34	55	3	6	50	43	3	6	33	10	-13	21	20	53	-2	33
30	2	33	4	6	12	23	31	2	20	14	17	9	25	55	30	7	4	23	16	7	3	49	2	6	6	55	59	8	10	39	38	3	6	47	32	3	6	30	42	-13	41	21	15	-1	25
31	2	37	0	6	13	23	28	3	4	18	14	9	26	29	11	7	5	38	39	7	4	1	55	6	6	21	2	8	10	44	25	3	6	44	22	3	6	30	9	-14	1	20	17	-0	12

दैनिक स्पष्ट निरयण ग्रह (प्रातः 5 घं. 30 मि., भा.स्टै.टा.), 1 नवम्बर 2018 ई. को अयनांश 24° 6' 56"

नवम्बर	साम्पातिक काल 0.0h GMT			सूर्य				चन्द्र				मंगल				बुध				गुरु				शुक्र				शनि				मध्यम राहु				स्पष्ट राहु				सूर्य क्रां.		चन्द्रक्रां.		चन्द्रशर	
	घं.	मि.	से.	रा.	अं.	क.	वि.	रा.	अं.	क.	वि.	रा.	अं.	क.	वि.	रा.	अं.	क.	वि.	रा.	अं.	क.	वि.	रा.	अं.	क.	वि.	रा.	अं.	क.	वि.	रा.	अं.	क.	वि.	रा.	अं.	क.	वि.	अं.	क.	अं.	क.	अं.	क.
1	2	40	57	6	14	23	28	3	18	23	24	9	27	3	5	7	6	52	31	7	4	14	49	6	5	47	7	8	10	49	16	3	6	41	11	3	6	30	15	-14	20	18	3	1	2
2	2	44	53	6	15	23	29	4	2	29	6	9	27	37	13	7	8	4	42	7	4	27	46	6	5	14	28	8	10	54	11	3	6	38	0	3	6	29	34	-14	39	14	44	2	13
3	2	48	50	6	16	23	33	4	16	34	22	9	28	11	33	7	9	15	3	7	4	40	45	6	4	43	16	8	10	59	11	3	6	34	49	3	6	26	54	-14	58	10	34	3	15
4	2	52	47	6	17	23	39	5	0	37	32	9	28	46	7	7	10	23	20	7	4	53	46	6	4	13	42	8	11	4	14	3	6	31	39	3	6	21	28	-15	17	5	50	4	5
5	2	56	43	6	18	23	47	5	14	36	3	9	29	20	52	7	11	29	20	7	5	6	49	6	3	45	57	8	11	9	22	3	6	28	28	3	6	13	6	-15	35	0	50	4	40
6	3	0	40	6	19	23	57	5	28	26	38	9	29	55	50	7	12	32	47	7	5	19	53	6	3	20	8	8	11	14	33	3	6	25	17	3	6	2	16	-15	54	-4	9	4	59
7	3	4	36	6	20	24	9	6	12	5	35	10	0	31	0	7	13	33	23	7	5	33	0	6	2	56	24	8	11	19	48	3	6	22	6	3	5	49	57	-16	12	-8	52	4	59
8	3	8	33	6	21	24	23	6	25	29	30	10	1	6	21	7	14	30	48	7	5	46	8	6	2	34	50	8	11	25	7	3	6	18	56	3	5	37	24	-16	29	-13	5	4	44
9	3	12	29	6	22	24	39	7	8	35	51	10	1	41	54	7	15	24	37	7	5	59	17	6	2	15	33	8	11	30	30	3	6	15	45	3	5	25	51	-16	47	-16	34	4	13
10	3	16	26	6	23	24	56	7	21	23	28	10	2	17	38	7	16	14	26	7	6	12	29	6	1	58	35	8	11	35	56	3	6	12	34	3	5	16	19	-17	4	-19	10	3	30
11	3	20	22	6	24	25	15	8	3	52	47	10	2	53	32	7	16	59	43	7	6	25	41	6	1	44	1	8	11	41	26	3	6	9	23	3	5	9	25	-17	20	-20	47	2	38
12	3	24	19	6	25	25	35	8	16	5	46	10	3	29	37	7	17	39	58	7	6	38	55	6	1	31	53	8	11	47	0	3	6	6	12	3	5	5	15	-17	37	-21	24	1	39
13	3	28	16	6	26	25	58	8	28	5	42	10	4	5	52	7	18	14	32	7	6	52	10	6	1	22	12	8	11	52	37	3	6	3	2	3	5	3	27	-17	53	-21	0	0	37
14	3	32	12	6	27	26	21	9	9	56	55	10	4	42	17	7	18	42	49	7	7	5	26	6	1	14	58	8	11	58	17	3	5	59	51	3	5	3	16	-18	9	-19	40	-0	26
15	3	36	9	6	28	26	46	9	21	44	30	10	5	18	51	7	19	4	4	7	7	18	44	6	1	10	12	8	12	4	0	3	5	56	40	3	5	3	44	-18	25	-17	29	-1	28
16	3	40	5	6	29	27	12	10	3	33	53	10	5	55	35	7	19	17	35	7	7	32	2	6	1	7	53	8	12	9	47	3	5	53	29	3	5	3	47	-18	40	-14	34	-2	26
17	3	44	2	7	0	27	39	10	15	30	37	10	6	32	27	7	19	22	38	7	7	45	21	6	1	8	0	8	12	15	37	3	5	50	19	3	5	2	28	-18	55	-11	1	-3	19
18	3	47	58	7	1	28	8	10	27	39	56	10	7	9	27	7	19	18	31	7	7	58	41	6	1	10	31	8	12	21	30	3	5	47	8	3	4	59	6	-19	9	-6	59	-4	3
19	3	51	55	7	2	28	38	11	10	6	21	10	7	46	36	7	19	4	35	7	8	12	2	6	1	15	24	8	12	27	27	3	5	43	57	3	4	53	21	-19	23	-2	33	-4	37
20	3	55	51	7	3	29	10	11	22	53	20	10	8	23	53	7	18	40	22	7	8	25	23	6	1	22	36	8	12	33	26	3	5	40	46	3	4	45	22	-19	37	2	5	-4	58
21	3	59	48	7	4	29	42	0	6	2	45	10	9	1	17	7	18	5	37	7	8	38	45	6	1	32	5	8	12	39	28	3	5	37	35	3	4	35	41	-19	51	6	46	-5	4
22	4	3	45	7	5	30	17	0	19	34	34	10	9	38	48	7	17	20	20	7	8	52	7	6	1	43	47	8	12	45	33	3	5	34	25	3	4	25	14	-20	4	11	16	-4	54
23	4	7	41	7	6	30	52	1	3	26	41	10	10	16	27	7	16	24	58	7	9	5	30	6	1	57	40	8	12	51	41	3	5	31	14	3	4	15	6	-20	17	15	17	-4	26
24	4	11	38	7	7	31	29	1	17	35	8	10	10	54	12	7	15	20	26	7	9	18	53	6	2	13	40	8	12	57	51	3	5	28	3	3	4	6	23	-20	29	18	31	-3	42
25	4	15	34	7	8	32	8	2	1	54	38	10	11	32	4	7	14	8	9	7	9	32	17	6	2	31	43	8	13	4	4	3	5	24	52	3	3	59	51	-20	41	20	40	-2	43
26	4	19	31	7	9	32	47	2	16	19	33	10	12	10	2	7	12	50	4	7	9	45	40	6	2	51	45	8	13	10	20	3	5	21	41	3	3	55	53	-20	53	21	29	-1	33
27	4	23	27	7	10	33	29	3	0	44	36	10	12	48	7	7	11	28	32	7	9	59	4	6	3	13	44	8	13	16	38	3	5	18	31	3	3	54	21	-21	4	20	52	-0	17
28	4	27	24	7	11	34	12	3	15	5	40	10	13	26	18	7	10	6	16	7	10	12	28	6	3	37	34	8	13	22	59	3	5	15	20	3	3	54	35	-21	15	18	55	1	0
29	4	31	20	7	12	34	56	3	29	19	53	10	14	4	35	7	8	46	0	7	10	25	53	6	4	3	13	8	13	29	22	3	5	12	9	3	3	55	34	-21	25	15	47	2	13
30	4	35	17	7	13	35	43	4	13	25	35	10	14	42	57	7	7	30	27	7	10	39	17	6	4	30	37	8	13	35	48	3	5	8	58	3	3	56	12	-21	36	11	47	3	16

दैनिक स्पष्ट निरयण ग्रह (प्रात: 5 घं. 30 मि., भा.स्टै.टा.), 1 दिसम्बर 2018 ई. को अयनांश 24° 7' 1"

दिसम्बर	साम्पातिक काल 0.0h GMT			सूर्य				चन्द्र				मंगल				बुध				गुरु				शुक्र				शनि				मध्यम राहु				स्पष्ट राहु				सूर्य क्रां.		चन्द्रक्रां.		चन्द्रशर	
	घं.	मि.	से.	रा.	अं.	क.	वि.	रा.	अं.	क.	वि.	रा.	अं.	क.	वि.	रा.	अं.	क.	वि.	रा.	अं.	क.	वि.	रा.	अं.	क.	वि.	रा.	अं.	क.	वि.	रा.	अं.	क.	वि.	रा.	अं.	क.	वि.	अं.	क.	अं.	क.	अं.	क.
1	4	39	14	7	14	36	30	4	27	21	55	10	15	21	26	7	6	21	57	7	10	52	41	6	4	59	41	8	13	42	16	3	5	5	48	3	3	55	29	-21	45	7	10	4	8
2	4	43	10	7	15	37	19	5	11	8	22	10	16	0	0	7	5	22	25	7	11	6	4	6	5	30	22	8	13	48	46	3	5	2	37	3	3	52	45	-21	54	2	16	4	44
3	4	47	7	7	16	38	10	5	24	44	27	10	16	38	40	7	4	33	13	7	11	19	28	6	6	2	36	8	13	55	19	3	4	59	26	3	3	47	50	-22	3	-2	41	5	4
4	4	51	3	7	17	39	2	6	8	9	27	10	17	17	25	7	3	55	11	7	11	32	51	6	6	36	20	8	14	1	53	3	4	56	15	3	3	41	2	-22	12	-7	27	5	7
5	4	55	0	7	18	39	55	6	21	22	29	10	17	56	16	7	3	28	38	7	11	46	13	6	7	11	30	8	14	8	30	3	4	53	4	3	3	33	2	-22	20	-11	47	4	54
6	4	58	56	7	19	40	50	7	4	22	35	10	18	35	11	7	3	13	30	7	11	59	35	6	7	48	2	8	14	15	8	3	4	49	54	3	3	24	45	-22	27	-15	31	4	25
7	5	2	53	7	20	41	45	7	17	8	59	10	19	14	12	7	3	9	22	7	12	12	57	6	8	25	54	8	14	21	49	3	4	46	43	3	3	17	7	-22	34	-18	26	3	43
8	5	6	49	7	21	42	42	7	29	41	22	10	19	53	18	7	3	15	35	7	12	26	17	6	9	5	2	8	14	28	31	3	4	43	32	3	3	10	53	-22	41	-20	26	2	51
9	5	10	46	7	22	43	40	8	12	0	11	10	20	32	28	7	3	31	23	7	12	39	37	6	9	45	24	8	14	35	15	3	4	40	21	3	3	6	34	-22	47	-21	26	1	52
10	5	14	43	7	23	44	39	8	24	6	45	10	21	11	44	7	3	55	57	7	12	52	56	6	10	26	56	8	14	42	1	3	4	37	10	3	3	4	18	-22	53	-21	24	0	49
11	5	18	39	7	24	45	38	9	6	3	19	10	21	51	3	7	4	28	24	7	13	6	14	6	11	9	35	8	14	48	48	3	4	33	59	3	3	3	54	-22	58	-20	23	-0	16
12	5	22	36	7	25	46	38	9	17	53	3	10	22	30	27	7	5	7	54	7	13	19	30	6	11	53	19	8	14	55	37	3	4	30	49	3	3	4	52	-23	3	-18	28	-1	20
13	5	26	32	7	26	47	39	9	29	39	54	10	23	9	55	7	5	53	40	7	13	32	46	6	12	38	5	8	15	2	27	3	4	27	38	3	3	6	35	-23	7	-15	48	-2	20
14	5	30	29	7	27	48	40	10	11	28	25	10	23	49	26	7	6	44	58	7	13	46	0	6	13	23	52	8	15	9	19	3	4	24	27	3	3	8	20	-23	11	-12	29	-3	15
15	5	34	25	7	28	49	42	10	23	23	38	10	24	29	1	7	7	41	8	7	13	59	13	6	14	10	36	8	15	16	12	3	4	21	16	3	3	9	28	-23	15	-8	38	-4	1
16	5	38	22	7	29	50	44	11	5	30	40	10	25	8	40	7	8	41	34	7	14	12	24	6	14	58	15	8	15	23	7	3	4	18	5	3	3	9	28	-23	18	-4	24	-4	38
17	5	42	18	8	0	51	46	11	17	54	32	10	25	48	22	7	9	45	44	7	14	25	34	6	15	46	49	8	15	30	2	3	4	14	55	3	3	8	4	-23	20	0	7	-5	2
18	5	46	15	8	1	52	49	0	0	39	39	10	26	28	7	7	10	53	10	7	14	38	42	6	16	36	13	8	15	36	59	3	4	11	44	3	3	5	16	-23	22	4	44	-5	13
19	5	50	12	8	2	53	53	0	13	49	17	10	27	7	56	7	12	3	27	7	14	51	49	6	17	26	28	8	15	48	56	3	4	8	33	3	3	1	22	-23	24	9	18	-5	8
20	5	54	8	8	3	54	57	0	27	25	4	10	27	47	46	7	13	16	14	7	15	4	53	6	18	17	30	8	15	50	55	3	4	5	22	3	2	56	52	-23	25	13	33	-4	45
21	5	58	5	8	4	56	1	1	11	26	23	10	28	27	40	7	14	31	13	7	15	17	56	6	19	9	19	8	15	57	54	3	4	2	11	3	2	52	24	-23	26	17	12	-4	6
22	6	2	1	8	5	57	6	1	25	50	9	10	29	7	36	7	15	48	6	7	15	30	57	6	20	1	52	8	16	4	55	3	3	59	1	3	2	48	34	-23	26	19	55	-3	9
23	6	5	58	8	6	58	11	2	10	30	54	10	29	47	35	7	17	6	41	7	15	43	56	6	20	55	8	8	16	11	56	3	3	55	50	3	2	45	51	-23	26	21	22	-1	59
24	6	9	54	8	7	59	16	2	25	21	30	11	0	27	35	7	18	26	44	7	15	56	53	6	21	49	5	8	16	18	58	3	3	52	39	3	2	44	28	-23	25	21	21	-0	41
25	6	13	51	8	9	0	22	3	10	14	5	11	1	7	39	7	19	48	6	7	16	9	48	6	22	43	42	8	16	26	0	3	3	49	28	3	2	44	22	-23	24	19	50	0	41
26	6	17	47	8	10	1	29	3	25	1	14	11	1	47	44	7	21	10	38	7	16	22	41	6	23	38	58	8	16	33	3	3	3	46	17	3	2	45	15	-23	22	16	59	2	0
27	6	21	44	8	11	2	36	4	9	36	52	11	2	27	51	7	22	34	11	7	16	35	31	6	24	34	50	8	16	40	7	3	3	43	7	3	2	46	36	-23	20	13	5	3	10
28	6	25	41	8	12	3	44	4	23	56	48	11	3	8	1	7	23	58	40	7	16	48	19	6	25	31	18	8	16	47	11	3	3	39	56	3	2	47	53	-23	17	8	30	4	6
29	6	29	37	8	13	4	52	5	7	58	45	11	3	48	12	7	25	23	58	7	17	1	4	6	26	28	21	8	16	54	16	3	3	36	45	3	2	48	37	-23	14	3	33	4	47
30	6	33	34	8	14	6	1	5	21	42	3	11	4	28	26	7	26	50	2	7	17	13	47	6	27	25	56	8	17	1	20	3	3	33	34	3	2	48	31	-23	11	-1	27	5	10
31	6	37	30	8	15	7	10	6	5	7	10	11	5	8	41	7	28	16	46	7	17	26	27	6	28	24	3	8	17	8	26	3	3	30	23	3	2	47	30	-23	7	-6	16	5	16

दैनिक स्पष्ट निरयण ग्रह (प्रातः 5 घं. 30 मि., भा.स्टै.टा.), 1 जनवरी 2019 ई. को अयनांश 24° 7' 6"

जनवरी	साम्पातिक काल 0.0h GMT			सूर्य				चन्द्र				मंगल				बुध				गुरु				शुक्र				शनि				मध्यम राहु				स्पष्ट राहु				सूर्य क्रां.		चन्द्रक्रां.		चन्द्रशर	
	घं.	मि.	से.	रा.	अं.	क.	वि.	रा.	अं.	क.	वि.	रा.	अं.	क.	वि.	रा.	अं.	क.	वि.	रा.	अं.	क.	वि.	रा.	अं.	क.	वि.	रा.	अं.	क.	वि.	रा.	अं.	क.	वि.	रा.	अं.	क.	वि.	अं.	क.	अं.	क.	अं.	क.
1	6	41	27	8	16	8	20	6	18	15	17	11	5	48	58	7	29	44	9	7	17	39	5	6	29	22	41	8	17	15	31	3	3	27	13	3	2	45	43	-23	2	-10	42	5	5
2	6	45	23	8	17	9	30	7	1	7	53	11	6	29	17	8	1	12	6	7	17	51	40	7	0	21	47	8	17	22	36	3	3	24	2	3	2	43	28	-22	57	-14	34	4	38
3	6	49	20	8	18	10	40	7	13	46	33	11	7	9	38	8	2	40	36	7	18	4	11	7	1	21	22	8	17	29	42	3	3	20	51	3	2	41	5	-22	52	-17	42	3	59
4	6	53	16	8	19	11	51	7	26	12	49	11	7	50	1	8	4	9	38	7	18	16	40	7	2	21	23	8	17	36	47	3	3	17	40	3	2	38	57	-22	46	-19	57	3	8
5	6	57	13	8	20	13	1	8	8	28	8	11	8	30	25	8	5	39	9	7	18	29	5	7	3	21	51	8	17	43	52	3	3	14	29	3	2	37	19	-22	40	-21	15	2	10
6	7	1	10	8	21	14	12	8	20	33	57	11	9	10	51	8	7	9	9	7	18	41	28	7	4	22	43	8	17	50	58	3	3	11	18	3	2	36	21	-22	33	-21	32	1	6
7	7	5	6	8	22	15	23	9	2	31	53	11	9	51	19	8	8	39	37	7	18	53	47	7	5	23	59	8	17	58	3	3	3	8	8	3	2	36	2	-22	26	-20	49	0	0
8	7	9	3	8	23	16	33	9	14	23	47	11	10	31	48	8	10	10	31	7	19	6	2	7	6	25	39	8	18	5	7	3	3	4	57	3	2	36	17	-22	18	-19	11	-1	5
9	7	12	59	8	24	17	43	9	26	11	55	11	11	12	18	8	11	41	53	7	19	18	14	7	7	27	40	8	18	12	11	3	3	1	46	3	2	36	55	-22	10	-16	44	-2	7
10	7	16	56	8	25	18	53	10	7	59	0	11	11	52	50	8	13	13	40	7	19	30	22	7	8	30	3	8	18	19	15	3	2	58	35	3	2	37	44	-22	2	-13	35	-3	4
11	7	20	52	8	26	20	3	10	19	48	19	11	12	33	22	8	14	45	55	7	19	42	27	7	9	32	46	8	18	26	18	3	2	55	24	3	2	38	33	-21	53	-9	55	-3	54
12	7	24	49	8	27	21	12	11	1	43	38	11	13	13	56	8	16	18	35	7	19	54	27	7	10	35	49	8	18	33	21	3	2	52	14	3	2	39	11	-21	43	-5	50	-4	33
13	7	28	45	8	28	22	20	11	13	49	6	11	13	54	30	8	17	51	43	7	20	6	24	7	11	39	11	8	18	40	22	3	2	49	3	3	2	39	35	-21	34	-1	28	-5	1
14	7	32	42	8	29	23	28	11	26	9	11	11	14	35	6	8	19	25	18	7	20	18	17	7	12	42	52	8	18	47	23	3	2	45	52	3	2	39	44	-21	23	3	2	-5	16
15	7	36	39	9	0	24	35	0	8	48	17	11	15	15	42	8	20	59	20	7	20	30	5	7	13	46	51	8	18	54	24	3	2	42	41	3	2	39	44	-21	13	7	31	-5	16
16	7	40	35	9	1	25	41	0	21	50	24	11	15	56	18	8	22	33	52	7	20	41	50	7	14	51	7	8	19	1	23	3	2	39	31	3	2	39	39	-21	2	11	49	-5	1
17	7	44	32	9	2	26	47	1	5	18	35	11	16	36	55	8	24	8	52	7	20	53	30	7	15	55	41	8	19	8	21	3	2	36	20	3	2	39	36	-20	50	15	40	-4	28
18	7	48	28	9	3	27	52	1	19	14	17	11	17	17	32	8	25	44	23	7	21	5	6	7	17	0	30	8	19	15	19	3	2	33	9	3	2	39	39	-20	38	18	47	-3	39
19	7	52	25	9	4	28	56	2	3	36	43	11	17	58	10	8	27	20	24	7	21	16	37	7	18	5	36	8	19	22	15	3	2	29	58	3	2	39	49	-20	26	20	50	-2	35
20	7	56	21	9	5	29	59	2	18	22	23	11	18	38	47	8	28	56	58	7	21	28	4	7	19	10	57	8	19	29	10	3	2	26	47	3	2	40	1	-20	14	21	33	-1	19
21	8	0	18	9	6	31	2	3	3	24	59	11	19	19	25	9	0	34	4	7	21	39	26	7	20	16	33	8	19	36	4	3	2	23	37	3	2	40	7	-20	1	20	43	0	4
22	8	4	14	9	7	32	5	3	18	36	2	11	20	0	3	9	2	11	44	7	21	50	44	7	21	22	24	8	19	42	56	3	2	20	26	3	2	40	2	-19	47	18	23	1	28
23	8	8	11	9	8	33	6	4	3	45	57	11	20	40	41	9	3	49	58	7	22	1	56	7	22	28	28	8	19	49	47	3	2	17	15	3	2	39	39	-19	34	14	47	2	45
24	8	12	8	9	9	34	7	4	18	45	25	11	21	21	20	9	5	28	48	7	22	13	4	7	23	34	47	8	19	56	37	3	2	14	4	3	2	38	59	-19	20	10	15	3	49
25	8	16	4	9	10	35	7	5	3	26	49	11	22	1	58	9	7	8	14	7	22	24	7	7	24	41	19	8	20	3	25	3	2	10	53	3	2	38	7	-19	5	5	13	4	38
26	8	20	1	9	11	36	7	5	17	45	2	11	22	42	36	9	8	48	18	7	22	35	5	7	25	48	3	8	20	10	12	3	2	7	43	3	2	37	15	-18	50	0	1	5	7
27	8	23	57	9	12	37	7	6	1	37	41	11	23	23	14	9	10	29	0	7	22	45	58	7	26	55	0	8	20	16	57	3	2	4	32	3	2	36	36	-18	35	-5	1	5	18
28	8	27	54	9	13	38	5	6	15	4	50	11	24	3	53	9	12	10	20	7	22	56	45	7	28	2	9	8	20	23	41	3	2	1	21	3	2	36	22	-18	20	-9	39	5	10
29	8	31	50	9	14	39	3	6	28	8	22	11	24	44	31	9	13	52	19	7	23	7	27	7	29	9	29	8	20	30	22	3	1	58	10	3	2	36	40	-18	4	-13	42	4	47
30	8	35	47	9	15	40	1	7	10	51	16	11	25	25	9	9	15	34	59	7	23	18	4	8	0	17	0	8	20	37	2	3	1	55	0	3	2	37	30	-17	48	-17	2	4	10
31	8	39	43	9	16	40	58	7	23	17	1	11	26	5	48	9	17	18	17	7	23	28	34	8	1	24	42	8	20	43	40	3	1	51	49	3	2	38	44	-17	31	-19	30	3	22

दैनिक स्पष्ट निरयण ग्रह (प्रातः 5 घं. 30 मि., भा.स्टै.टा.), 1 फरवरी 2019 ई. को अयनांश 24° 7' 11"

फरवरी	साम्पातिक काल 0.0h GMT			सूर्य				चन्द्र				मंगल				बुध				गुरु				शुक्र				शनि				मध्यम राहु				स्पष्ट राहु				सूर्य क्रां.		चन्द्रक्रां.		चन्द्रशर	
	घं.	मि.	से.	रा.	अं.	क.	वि.	रा.	अं.	क.	वि.	रा.	अं.	क.	वि.	रा.	अं.	क.	वि.	रा.	अं.	क.	वि.	रा.	अं.	क.	वि.	रा.	अं.	क.	वि.	रा.	अं.	क.	वि.	रा.	अं.	क.	वि.	अं.	क.	अं.	क.	अं.	क.
1	8	43	40	9	17	41	54	8	5	29	14	11	26	46	26	9	19	2	15	7	23	39	0	8	2	32	35	8	20	50	16	3	1	48	38	3	2	40	4	-17	15	-21	1	2	25
2	8	47	37	9	18	42	49	8	17	31	18	11	27	27	4	9	20	46	53	7	23	49	19	8	3	40	37	8	20	56	50	3	1	45	27	3	2	41	13	-16	57	-21	33	1	23
3	8	51	33	9	19	43	43	8	29	26	14	11	28	7	43	9	22	32	8	7	23	59	32	8	4	48	48	8	21	3	22	3	1	42	16	3	2	41	47	-16	40	-21	5	0	18
4	8	55	30	9	20	44	37	9	11	16	41	11	28	48	21	9	24	18	1	7	24	9	40	8	5	57	9	8	21	9	52	3	1	39	6	3	2	41	32	-16	22	-19	41	-0	47
5	8	59	26	9	21	45	29	9	23	4	55	11	29	28	59	9	26	4	28	7	24	19	41	8	7	5	39	8	21	16	19	3	1	35	55	3	2	40	14	-16	4	-17	26	-1	50
6	9	3	23	9	22	46	20	10	4	53	0	0	0	9	37	9	27	51	29	7	24	29	36	8	8	14	16	8	21	22	44	3	1	32	44	3	2	37	54	-15	46	-14	27	-2	49
7	9	7	19	9	23	47	10	10	16	42	56	0	0	50	15	9	29	38	59	7	24	39	25	8	9	23	2	8	21	29	7	3	1	29	33	3	2	34	40	-15	28	-10	53	-3	40
8	9	11	16	9	24	47	59	10	28	36	47	0	1	30	52	10	1	26	56	7	24	49	7	8	10	31	56	8	21	35	27	3	1	26	23	3	2	30	50	-15	9	-6	53	-4	21
9	9	15	12	9	25	48	46	11	10	36	53	0	2	11	29	10	3	15	12	7	24	58	42	8	11	40	57	8	21	41	45	3	1	23	12	3	2	26	49	-14	50	-2	35	-4	52
10	9	19	9	9	26	49	31	11	22	45	56	0	2	52	5	10	5	3	44	7	25	8	11	8	12	50	6	8	21	48	0	3	1	20	1	3	2	23	9	-14	31	1	51	-5	10
11	9	23	6	9	27	50	16	0	5	7	1	0	3	32	41	10	6	52	22	7	25	17	33	8	13	59	22	8	21	54	13	3	1	16	50	3	2	20	15	-14	11	6	18	-5	14
12	9	27	2	9	28	50	58	0	17	43	33	0	4	13	16	10	8	40	57	7	25	26	48	8	15	8	44	8	22	0	22	3	1	13	40	3	2	18	30	-13	52	10	34	-5	3
13	9	30	59	9	29	51	39	1	0	39	2	0	4	53	51	10	10	29	19	7	25	35	57	8	16	18	13	8	22	6	29	3	1	10	29	3	2	18	0	-13	32	14	29	-4	37
14	9	34	55	10	0	52	18	1	13	56	46	0	5	34	25	10	12	17	13	7	25	44	58	8	17	27	49	8	22	12	33	3	1	7	18	3	2	18	38	-13	11	17	47	-3	55
15	9	38	52	10	1	52	55	1	27	39	23	0	6	14	58	10	14	4	26	7	25	53	52	8	18	37	31	8	22	18	34	3	1	4	7	3	2	19	59	-12	51	20	12	-2	59
16	9	42	48	10	2	53	31	2	11	48	9	0	6	55	30	10	15	50	38	7	26	2	39	8	19	47	19	8	22	24	32	3	1	0	57	3	2	21	26	-12	30	21	28	-1	50
17	9	46	45	10	3	54	5	2	26	22	13	0	7	36	1	10	17	35	29	7	26	11	18	8	20	57	14	8	22	30	27	3	0	57	46	3	2	22	20	-12	10	21	20	-0	33
18	9	50	41	10	4	54	38	3	11	17	55	0	8	16	32	10	19	18	37	7	26	19	50	8	22	7	14	8	22	36	19	3	0	54	35	3	2	22	1	-11	49	19	42	0	49
19	9	54	38	10	5	55	9	3	26	28	35	0	8	57	1	10	20	59	34	7	26	28	15	8	23	17	20	8	22	42	8	3	0	51	24	3	2	20	9	-11	27	16	39	2	8
20	9	58	35	10	6	55	38	4	11	45	1	0	9	37	30	10	22	37	53	7	26	36	32	8	24	27	32	8	22	47	54	3	0	48	14	3	2	16	38	-11	6	12	26	3	19
21	10	2	31	10	7	56	6	4	26	56	43	0	10	17	57	10	24	13	1	7	26	44	41	8	25	37	49	8	22	53	36	3	0	45	3	3	2	11	48	-10	44	7	26	4	15
22	10	6	28	10	8	56	32	5	11	53	40	0	10	58	23	10	25	44	23	7	26	52	42	8	26	48	12	8	22	59	15	3	0	41	52	3	2	6	14	-10	23	2	5	4	52
23	10	10	24	10	9	56	57	5	26	27	47	0	11	38	49	10	27	11	24	7	27	0	36	8	27	58	40	8	23	4	51	3	0	38	41	3	2	0	44	-10	1	-3	15	5	10
24	10	14	21	10	10	57	20	6	10	34	7	0	12	19	14	10	28	33	26	7	27	8	22	8	29	9	14	8	23	10	23	3	0	35	31	3	1	56	3	-9	39	-8	15	5	8
25	10	18	17	10	11	57	42	6	24	10	58	0	12	59	37	10	29	49	49	7	27	15	59	9	0	19	52	8	23	15	51	3	0	32	20	3	1	52	47	-9	17	-12	39	4	48
26	10	22	14	10	12	58	2	7	7	19	30	0	13	40	0	11	0	59	56	7	27	23	28	9	1	30	35	8	23	21	17	3	0	29	9	3	1	51	12	-8	54	-16	18	4	14
27	10	26	10	10	13	58	22	7	20	2	54	0	14	20	22	11	2	3	9	7	27	30	49	9	2	41	22	8	23	26	38	3	0	25	58	3	1	51	12	-8	32	-19	3	3	28
28	10	30	7	10	14	58	39	8	2	25	33	0	15	0	43	11	2	58	53	7	27	38	2	9	3	52	15	8	23	31	56	3	0	22	48	3	1	52	20	-8	9	-20	50	2	33

दैनिक स्पष्ट निरयण ग्रह (प्रातः 5 घं. 30 मि., भा.स्टै.टा.), 1 मार्च 2019 ई. को अयनांश 24° 7' 14"

तारीख	साम्पातिक काल 0.0h GMT			सूर्य				चन्द्र				मंगल				बुध				गुरु				शुक्र				शनि				मध्यम राहु				स्पष्ट राहु				सूर्य क्रां.		चन्द्रक्रां.		चन्द्रशर	
	घं.	मि.	से.	रा.	अं.	क.	वि.	रा.	अं.	क.	वि.	रा.	अं.	क.	वि.	रा.	अं.	क.	वि.	रा.	अं.	क.	वि.	रा.	अं.	क.	वि.	रा.	अं.	क.	वि.	रा.	अं.	क.	वि.	रा.	अं.	क.	वि.	अं.	क.	अं.	क.	अं.	क.
1	10	34	4	10	15	58	55	8	14	32	19	0	15	41	3	11	3	46	35	7	27	45	6	9	5	3	11	8	23	37	10	3	0	19	37	3	1	53	54	-7	47	-21	36	1	33
2	10	38	0	10	16	59	10	8	26	28	4	0	16	21	22	11	4	25	46	7	27	52	1	9	6	14	12	8	23	42	20	3	0	16	26	3	1	55	2	-7	24	-21	22	0	30
3	10	41	57	10	17	59	23	9	8	17	17	0	17	1	40	11	4	56	4	7	27	58	47	9	7	25	16	8	23	47	26	3	0	13	16	3	1	54	57	-7	1	-20	11	-0	34
4	10	45	53	10	18	59	35	9	20	3	55	0	17	41	58	11	5	17	12	7	28	5	25	9	8	36	24	8	23	52	28	3	0	10	5	3	1	52	58	-6	38	-18	7	-1	37
5	10	49	50	10	19	59	45	10	1	51	14	0	18	22	14	11	5	29	0	7	28	11	53	9	9	47	36	8	23	57	26	3	0	6	54	3	1	48	42	-6	15	-15	17	-2	35
6	10	53	46	10	20	59	53	10	13	41	47	0	19	2	30	11	5	31	27	7	28	18	13	9	10	58	52	8	24	2	20	3	0	3	43	3	1	42	8	-5	52	-11	49	-3	26
7	10	57	43	10	21	59	59	10	25	37	34	0	19	42	45	11	5	24	40	7	28	24	23	9	12	10	10	8	24	7	10	3	0	0	33	3	1	33	35	-5	28	-7	52	-4	8
8	11	1	39	10	23	0	4	11	7	40	4	0	20	22	58	11	5	8	56	7	28	30	24	9	13	21	32	8	24	11	56	2	29	57	22	3	1	23	41	-5	5	-3	35	-4	40
9	11	5	36	10	24	0	6	11	19	50	31	0	21	3	11	11	4	44	43	7	28	36	16	9	14	32	57	8	24	16	37	2	29	54	11	3	1	13	20	-4	42	0	54	-5	0
10	11	9	33	10	25	0	7	0	2	10	10	0	21	43	22	11	4	12	40	7	28	41	58	9	15	44	24	8	24	21	14	2	29	51	0	3	1	3	32	-4	18	5	24	-5	6
11	11	13	29	10	26	0	5	0	14	40	26	0	22	23	33	11	3	33	35	7	28	47	30	9	16	55	55	8	24	25	47	2	29	47	50	3	0	55	12	-3	55	9	44	-4	57
12	11	17	26	10	27	0	1	0	27	23	5	0	23	3	42	11	2	48	27	7	28	52	53	9	18	7	28	8	24	30	15	2	29	44	39	3	0	49	4	-3	31	13	44	-4	34
13	11	21	22	10	27	59	55	1	10	20	15	0	23	43	50	11	1	58	22	7	28	58	6	9	19	19	3	8	24	34	39	2	29	41	28	3	0	45	23	-3	8	17	10	-3	56
14	11	25	19	10	28	59	47	1	23	34	20	0	24	23	57	11	1	4	33	7	29	3	10	9	20	30	42	8	24	38	58	2	29	38	18	3	0	43	58	-2	44	19	47	-3	5
15	11	29	15	10	29	59	36	2	7	7	42	0	25	4	2	11	0	8	17	7	29	8	3	9	21	42	23	8	24	43	13	2	29	35	7	3	0	44	7	-2	20	21	23	-2	3
16	11	33	12	11	0	59	23	2	21	2	14	0	25	44	6	10	29	10	51	7	29	12	47	9	22	54	6	8	24	47	23	2	29	31	56	3	0	44	48	-1	57	21	43	-0	52
17	11	37	8	11	1	59	8	3	5	18	41	0	26	24	9	10	28	13	32	7	29	17	20	9	24	5	51	8	24	51	28	2	29	28	45	3	0	44	50	-1	33	20	40	0	24
18	11	41	5	11	2	58	51	3	19	55	46	0	27	4	10	10	27	17	33	7	29	21	44	9	25	17	40	8	24	55	28	2	29	25	35	3	0	43	9	-1	9	18	13	1	41
19	11	45	2	11	3	58	32	4	4	49	32	0	27	44	10	10	26	23	58	7	29	25	57	9	26	29	30	8	24	59	24	2	29	22	24	3	0	39	2	-0	45	14	31	2	51
20	11	48	58	11	4	58	10	4	19	53	15	0	28	24	9	10	25	33	46	7	29	30	0	9	27	41	23	8	25	3	15	2	29	19	13	3	0	32	19	-0	22	9	50	3	51
21	11	52	55	11	5	57	47	5	4	57	52	0	29	4	6	10	24	47	45	7	29	33	53	9	28	53	18	8	25	7	1	2	29	16	3	3	0	23	24	0	2	4	33	4	34
22	11	56	51	11	6	57	21	5	19	53	31	0	29	44	2	10	24	6	34	7	29	37	35	10	0	5	15	8	25	10	42	2	29	12	52	3	0	13	11	0	26	-0	57	4	58
23	12	0	48	11	7	56	53	6	4	31	5	1	0	23	56	10	23	30	43	7	29	41	7	10	1	17	15	8	25	14	18	2	29	9	41	3	0	2	48	0	49	-6	17	5	2
24	12	4	44	11	8	56	24	6	18	43	48	1	1	3	49	10	23	0	34	7	29	44	29	10	2	29	17	8	25	17	50	2	29	6	30	2	29	53	26	1	13	-11	8	4	47
25	12	8	41	11	9	55	53	7	2	28	0	1	1	43	41	10	22	36	18	7	29	47	39	10	3	41	21	8	25	21	16	2	29	3	20	2	29	46	0	1	37	-15	15	4	16
26	12	12	37	11	10	55	19	7	15	43	13	1	2	23	31	10	22	18	3	7	29	50	40	10	4	53	27	8	25	24	37	2	29	0	9	2	29	40	58	2	0	-18	26	3	31
27	12	16	34	11	11	54	45	7	28	31	38	1	3	3	20	10	22	5	48	7	29	53	29	10	6	5	35	8	25	27	53	2	28	56	58	2	29	38	19	2	24	-20	37	2	37
28	12	20	31	11	12	54	8	8	10	57	14	1	3	43	8	10	21	59	30	7	29	56	8	10	7	17	45	8	25	31	4	2	28	53	47	2	29	37	30	2	47	-21	43	1	38
29	12	24	27	11	13	53	29	8	23	5	5	1	4	22	55	10	21	59	1	7	29	58	36	10	8	29	57	8	25	34	9	2	28	50	37	2	29	37	38	3	11	-21	45	0	35
30	12	28	24	11	14	52	49	9	5	0	38	1	5	2	41	10	22	4	10	8	0	0	52	10	9	42	11	8	25	37	9	2	28	47	26	2	29	37	37	3	34	-20	48	-0	29
31	12	32	20	11	15	52	7	9	16	49	19	1	5	42	25	10	22	14	45	8	0	2	58	10	10	54	27	8	25	40	4	2	28	44	15	2	29	36	21	3	57	-18	56	-1	30

दैनिक स्पष्ट निरयण ग्रह (प्रातः 5 घं. 30 मि., भा.स्टै.टा.), 1 अप्रैल 2019 ई. को अयनांश 24° 7' 17"

अप्रैल	साम्पातिक काल 0.0h GMT			सूर्य				चन्द्र				मंगल				बुध				गुरु				शुक्र				शनि				मध्यम राहु				स्पष्ट राहु				सूर्य क्रां.		चन्द्रक्रां.		चन्द्रशर	
	घं.	मि.	से.	रा.	अं.	क.	वि.	रा.	अं.	क.	वि.	रा.	अं.	क.	वि.	रा.	अं.	क.	वि.	रा.	अं.	क.	वि.	रा.	अं.	क.	वि.	रा.	अं.	क.	वि.	रा.	अं.	क.	वि.	रा.	अं.	क.	वि.	अं.	क.	अं.	क.	अं.	क.
1	12	36	17	11	16	51	23	9	28	36	4	1	6	22	8	10	22	30	33	8	0	4	53	10	12	6	44	8	25	42	54	2	28	41	5	2	29	32	57	4	21	-16	15	-2	27
2	12	40	13	11	17	50	38	10	10	25	12	1	7	1	50	10	22	51	19	8	0	6	36	10	13	19	2	8	25	45	38	2	28	37	54	2	29	26	52	4	44	-12	55	-3	18
3	12	44	10	11	18	49	50	10	22	20	11	1	7	41	31	10	23	16	50	8	0	8	9	10	14	31	23	8	25	48	17	2	28	34	43	2	29	17	57	5	7	-9	2	-4	1
4	12	48	6	11	19	49	1	11	4	23	36	1	8	21	10	10	23	46	50	8	0	9	30	10	15	43	44	8	25	50	50	2	28	31	32	2	29	6	31	5	30	-4	46	-4	33
5	12	52	3	11	20	48	10	11	16	37	7	1	9	0	49	10	24	21	6	8	0	10	40	10	16	56	7	8	25	53	17	2	28	28	22	2	28	53	20	5	53	-0	15	-4	53
6	12	56	0	11	21	47	16	11	29	1	37	1	9	40	26	10	24	59	24	8	0	11	39	10	18	8	31	8	25	55	40	2	28	25	11	2	28	39	28	6	16	4	21	-5	0
7	12	59	56	11	22	46	21	0	11	37	23	1	10	20	2	10	25	41	32	8	0	12	26	10	19	20	56	8	25	57	56	2	28	22	0	2	28	26	8	6	38	8	50	-4	52

(पृष्ठ181का शेष)

चन्द्रमा का नक्षत्रचरणों में प्रवेशकाल (भा.स्टै.टा.), सन् 2019 ई.

चन्द्र नक्षत्रचरण		1		2		3		4		चन्द्र नक्षत्रचरण		1		2		3		4		चन्द्र नक्षत्रचरण		1		2		3		4	
अप्रैल 2019 ई.	नक्षत्र	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	अप्रैल 2019 ई.	नक्षत्र	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	अप्रैल 2019 ई.	नक्षत्र	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.
31/1	धनि.	18	46	1	33	8	21	15	7	7/8	भरणी	8	44	15	1	21	16	3	30	13/14	पुष्य	8	58	14	41	20	22	2	1
1/2	शत.	21	53	4	39	11	23	18	6	8/9	कृत्तिका	9	42	15	53	22	3	4	12	14/15	आश्लेषा	7	39	13	16	18	52	0	26
3	पू.भा.	0	49	7	30	14	9	20	47	9/10	रोहिणी	10	19	16	24	22	29	4	31	15	मघा	5	59	11	31	17	2	22	31
4	उ.भा.	3	24	9	59	16	33	23	5	10/11	मृगशिरा	10	33	16	33	22	32	4	29	16	पू.फा.	4	1	9	29	14	56	20	23
5/6	रेव.	5	35	12	4	18	32	0	58	11/12	आर्द्रा	10	25	16	19	22	12	4	3	17	उ.फा.	1	50	7	16	12	43	18	9
6/7	अश्वि.	7	22	13	45	20	6	2	25	12/13	पुनर्वसु	9	53	15	42	21	29	3	14	17/18	हस्त	23	35	5	2	10	29	15	56

(पृष्ठ199का शेष)

चण्डीगढ़ में चन्द्रोदयास्त काल (भा.स्टै.टा.), सन् 2019 ई.

तारीख	अप्रैल 2019				तारीख	अप्रैल 2019				तारीख	अप्रैल 2019				तारीख	अप्रैल 2019				तारीख	अप्रैल 2019				तारीख	अप्रैल 2019			
	उदय		अस्त			उदय		अस्त			उदय		अस्त			उदय		अस्त			उदय		अस्त			उदय		अस्त	
	घं.	मि.	घं.	मि.		घं.	मि.	घं.	मि.		घं.	मि.	घं.	मि.		घं.	मि.	घं.	मि.		घं.	मि.	घं.	मि.		घं.	मि.	घं.	मि.
1	4	9	15	10	6	6	52	19	41	11	10	15	—	—	16	15	32	3	58	21	20	59	7	15	26	0	43	11	14
2	4	44	16	4	7	7	25	20	38	12	11	11	0	37	17	16	39	4	39	22	22	1	7	57	27	1	27	12	8
3	5	17	16	57	8	8	1	21	37	13	12	13	1	33	18	17	45	5	18	23	22	59	8	42	28	2	7	13	2
4	5	49	17	51	9	8	41	22	37	14	13	17	2	26	19	18	51	5	56	24	23	53	9	31	29	2	44	13	55
5	6	20	18	46	10	9	25	23	37	15	14	24	3	14	20	19	55	6	34	25	—	—	10	22	30	3	17	14	49

चण्डीगढ़ में चन्द्रोदयास्त काल (भा. स्टैं. टा.), सन् 2018 ई.

तारीख	जनवरी 2018				फरवरी 2018				मार्च 2018				अप्रैल 2018				मई 2018				जून 2018				जुलाई 2018				अगस्त 2018				तारीख
	उदय		अस्त		उदय		अस्त		उदय		अस्त		उदय		अस्त		उदय		अस्त		उदय		अस्त		उदय		अस्त		उदय		अस्त		
	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	
1	16	58	6	7	19	00	7	43	17	43	6	18	19	36	6	51	20	17	6	39	21	40	7	27	21	47	7	54	22	7	9	24	1
2	18	2	7	13	20	6	8	29	18	48	7	2	20	35	7	28	21	13	7	18	22	26	8	16	22	24	8	47	22	40	10	19	2
3	19	9	8	14	21	10	9	11	19	52	7	42	21	33	8	5	22	6	8	1	23	8	9	8	22	59	9	41	23	14	11	15	3
4	20	17	9	8	22	11	9	50	20	53	8	20	22	29	8	44	22	57	8	46	23	47	10	0	23	32	10	35	23	51	12	13	4
5	21	23	9	57	23	9	10	27	21	52	8	57	23	23	9	24	23	45	9	33	--	--	10	53	--	--	11	29	--	--	13	13	5
6	22	26	10	39	--	--	11	2	22	50	9	33	--	--	10	7	--	--	10	24	0	23	11	48	0	5	12	25	0	31	14	15	6
7	23	26	11	18	0	6	11	38	23	46	10	11	0	15	10	53	0	29	11	15	0	58	12	43	0	39	13	23	1	17	15	19	7
8	--	--	11	54	1	2	12	15	--	--	10	50	1	4	11	42	1	10	12	9	1	32	13	39	1	15	14	23	2	9	16	24	8
9	0	24	12	29	1	56	12	54	0	40	11	31	1	50	12	33	1	48	13	3	2	6	14	37	1	54	15	27	3	8	17	26	9
10	1	20	13	4	2	48	13	36	1	32	12	15	2	33	13	25	2	24	13	58	2	42	15	38	2	38	16	32	4	13	18	24	10
11	2	15	13	39	3	40	14	20	2	23	13	1	3	13	14	20	2	59	14	55	3	20	16	41	3	29	17	39	5	22	19	16	11
12	3	9	14	16	4	29	15	8	3	10	13	51	3	51	15	15	3	34	15	54	4	3	17	48	4	26	18	44	6	31	20	3	12
13	4	2	14	56	5	15	15	58	3	55	14	42	4	27	16	12	4	10	16	54	4	51	18	55	5	38	19	45	7	40	20	46	13
14	4	54	15	38	5	59	16	51	4	37	15	36	5	3	17	10	4	48	17	57	5	45	20	1	6	37	20	40	8	46	21	25	14
15	5	45	16	24	6	40	17	45	5	17	16	31	5	38	18	10	6	16	19	2	6	46	21	4	7	46	21	29	9	49	22	2	15
16	6	33	17	13	7	19	18	40	5	54	17	27	6	15	19	11	6	14	20	9	7	51	22	1	8	54	22	13	10	50	22	39	16
17	7	19	18	4	7	55	19	36	6	30	18	25	6	54	20	14	7	5	21	15	8	58	22	52	10	00	22	52	11	50	23	16	17
18	8	1	18	57	8	31	20	33	7	5	19	23	7	36	21	19	8	1	22	18	10	5	23	36	11	3	23	29	12	47	23	54	18
19	8	41	19	51	9	6	21	30	7	41	20	22	8	23	22	23	9	2	23	16	11	10	--	--	12	3	--	--	13	43	--	--	19
20	9	19	20	46	9	41	22	29	8	18	21	23	9	15	23	26	10	7	--	--	12	12	0	16	13	1	0	5	14	37	0	35	20
21	9	54	21	41	10	18	23	29	8	57	22	25	10	11	--	--	11	11	0	8	13	12	0	53	13	58	0	40	15	29	1	18	21
22	10	29	22	38	10	58	--	--	9	40	23	28	11	12	0	26	12	15	0	55	14	10	1	28	14	54	1	17	16	17	2	4	22
23	11	4	23	35	11	42	0	31	10	27	--	--	12	15	1	20	13	18	1	37	15	7	2	3	15	49	1	56	17	3	2	53	23
24	11	39	--	--	12	31	1	34	11	20	0	30	13	18	2	10	14	18	2	15	16	3	2	39	16	42	2	37	17	46	3	45	24
25	12	18	0	35	13	25	2	37	12	17	1	31	14	22	2	54	15	17	2	51	16	59	3	16	17	33	3	21	18	25	4	37	25
26	12	59	1	36	14	25	3	38	13	18	2	29	15	24	3	35	16	15	3	26	17	53	3	55	18	21	4	8	19	1	5	31	26
27	13	46	2	40	15	30	4	36	14	22	3	22	16	24	4	13	17	12	4	1	18	46	4	38	19	5	4	58	19	36	6	25	27
28	14	39	3	45	16	36	6	20	15	27	4	11	17	24	4	49	18	9	4	37	19	36	5	23	19	46	5	49	20	9	7	19	28
29	15	39	4	50					16	31	4	55	18	23	5	25	19	5	5	16	20	23	6	11	20	25	6	42	20	42	8	14	29
30	16	44	5	53					17	34	5	36	19	21	6	1	19	59	5	56	21	6	7	2	21	0	7	36	21	16	9	10	30
31	17	51	6	51					18	36	6	14					20	51	6	40					21	34	8	30	21	51	10	7	31

चण्डीगढ़ में चन्द्रोदयास्त काल (भा. स्टैं. टा.), सन् 2018—19 ई.

तारीख	सितंबर 2018				अक्तूबर 2018				नवंबर 2018				दिसंबर 2018				जनवरी 2019				फरवरी 2019				मार्च 2019				तारीख
	उदय		अस्त		उदय		अस्त		उदय		अस्त		उदय		अस्त		उदय		अस्त		उदय		अस्त		उदय		अस्त		
	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	
1	22	30	11	6	22	48	12	4	--	--	13	42	0	50	13	48	2	47	14	14	4	29	15	2	3	16	13	47	1
2	23	12	12	6	23	45	13	4	0	49	14	27	1	53	14	24	3	46	14	52	5	20	15	51	4	5	14	38	2
3	--	--	13	8	--	--	14	2	1	53	15	8	2	54	14	59	4	43	15	33	6	7	16	42	4	50	15	30	3
4	0	0	14	10	0	47	14	55	2	57	15	46	3	54	15	35	5	39	16	17	6	51	17	35	5	31	16	23	4
5	0	55	15	12	1	52	15	44	4	0	16	23	4	53	16	13	6	33	17	5	7	31	18	28	6	8	17	16	5
6	1	55	16	10	2	59	16	29	5	2	16	59	5	52	16	53	7	23	17	55	8	7	19	22	6	43	18	10	6
7	3	0	17	3	4	5	17	10	6	3	17	37	6	50	17	36	8	10	18	47	8	41	20	15	7	15	19	3	7
8	4	8	17	52	5	10	17	49	7	4	18	16	7	46	18	22	8	52	19	40	9	13	21	8	7	47	19	57	8
9	5	17	18	36	6	14	18	26	8	3	18	58	8	39	19	11	9	31	20	34	9	45	22	1	8	18	20	51	9
10	6	24	19	17	7	17	19	4	9	1	19	42	9	28	20	2	10	7	21	27	10	16	22	56	8	50	21	47	10
11	7	30	19	56	8	19	19	43	9	56	20	30	10	14	20	55	10	40	22	20	10	48	23	51	9	24	22	43	11
12	8	33	20	33	9	19	20	23	10	47	21	20	10	54	21	48	11	12	23	13	11	23	--	--	10	1	23	42	12
13	9	35	21	11	10	17	21	6	11	34	22	11	11	32	22	41	11	43	--	--	12	2	0	49	10	41	--	--	13
14	10	35	21	50	11	13	21	51	12	17	23	4	12	6	23	34	12	15	0	7	12	46	1	50	11	28	0	42	14
15	11	33	22	30	12	6	22	39	12	57	23	57	12	39	--	--	12	49	1	3	13	36	2	52	12	21	1	43	15
16	12	29	23	13	12	54	23	29	13	33	--	--	13	11	0	28	13	26	2	2	14	33	3	55	13	20	2	42	16
17	13	22	23	59	13	40	--	--	14	7	0	51	13	44	1	23	14	9	3	3	15	38	4	56	14	24	3	39	17
18	14	13	--	--	14	21	0	21	14	40	1	45	14	17	2	19	14	57	4	6	16	47	5	53	15	33	4	32	18
19	15	00	0	47	14	59	1	14	15	13	2	40	14	54	3	18	15	53	5	11	17	58	6	45	16	42	5	21	19
20	15	43	1	38	15	35	2	8	15	47	3	37	15	35	4	19	16	56	6	15	19	8	7	33	17	52	6	5	20
21	16	24	2	30	16	9	3	3	16	23	4	36	16	21	5	24	18	4	7	16	20	17	8	16	19	60	6	46	21
22	17	1	3	24	16	42	3	58	17	2	5	36	17	15	6	29	19	14	8	11	21	23	8	56	20	6	7	25	22
23	17	36	4	18	17	16	4	54	17	46	6	40	18	15	7	35	20	24	9	1	22	28	9	34	21	12	8	4	23
24	18	10	5	13	17	51	5	51	18	35	7	45	19	20	8	37	21	32	9	44	23	30	10	12	22	15	8	43	24
25	18	43	6	8	18	28	6	51	19	31	8	50	20	28	9	34	22	37	10	24	--	--	10	50	23	16	9	24	25
26	19	17	7	4	19	8	7	52	20	32	9	52	21	36	10	24	23	40	11	2	0	30	11	30	--	--	10	7	26
27	19	52	8	2	19	53	8	55	21	36	10	50	22	42	11	9	--	--	11	38	1	28	12	13	0	15	10	52	27
28	20	30	9	0	20	44	9	58	22	42	11	42	23	46	11	49	0	41	12	15	2	24	12	59	1	10	11	41	28
29	21	11	10	1	21	40	11	60	23	47	12	28	--	--	12	26	1	40	12	53					2	1	12	31	29
30	21	57	11	2	22	40	11	59	--	--	13	9	0	48	13	2	2	38	13	33					2	48	13	23	30
31					23	44	12	53					1	48	13	37	3	34	14	16					3	30	14	17	31

(शेष पृष्ठ 197 पर)

यूरेनस, नेप्च्यून, प्लूटो के निरयण भोगांश और भौमादि ग्रहों के क्रांति–शर (सन् 2018 ई.) (प्रातः 5 घं. 30 मि., भा. स्टैं. टा.)

तारीख सन्	यूरेनस	नेप्च्यून	प्लूटो	मंगल		बुध		गुरु		शुक्र		शनि		यूरेनस		नेप्च्यून		प्लूटो	
				क्रांति	शर	क्रांति	शर	क्रांति	शर	क्रांति	शर	क्रांति	शर	क्रांति	शर	क्रांति	शर	क्रांति	शर
2018 ई.	रा. अं. क.	रा. अं. क.	रा. अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.
जन. 1	0 0 28	10 17 48	8 24 41	-15 14	0 54	-20 54	2 0	-15 53	1 3	-23 38	-0 28	-22 32	0 54	8 59	-0 34	-7 56	-0 55	-21 40	0 27
4	0 0 28	10 17 52	8 24 47	-15 48	0 53	-21 34	1 34	-16 1	1 3	-23 27	-0 35	-22 32	0 54	8 59	-0 34	-7 55	-0 55	-21 40	0 27
7	0 0 28	10 17 56	8 24 53	-16 20	0 52	-22 11	1 8	-16 9	1 4	-23 9	-0 41	-22 32	0 54	9 0	-0 34	-7 53	-0 55	-21 39	0 27
10	0 0 29	10 18 1	8 24 59	-16 52	0 50	-22 43	0 42	-16 16	1 4	-22 45	-0 48	-22 31	0 53	9 0	-0 34	-7 51	-0 55	-21 38	0 26
13	0 0 31	10 18 6	8 25 5	-17 23	0 49	-23 8	0 17	-16 24	1 4	-22 15	-0 53	-22 31	0 53	9 1	-0 34	-7 49	-0 55	-21 38	0 26
16	0 0 33	10 18 11	8 25 11	-17 53	0 47	-23 23	-0 7	-16 30	1 5	-21 38	-0 59	-22 31	0 53	9 2	-0 34	-7 48	-0 55	-21 37	0 26
19	0 0 35	10 18 16	8 25 17	-18 21	0 46	-23 29	-0 29	-16 37	1 5	-20 56	-1 4	-22 30	0 53	9 2	-0 34	-7 45	-0 54	-21 37	0 26
22	0 0 38	10 18 21	8 25 24	-18 49	0 44	-23 23	-0 50	-16 43	1 5	-20 8	-1 9	-22 30	0 53	9 4	-0 33	-7 43	-0 54	-21 36	0 25
25	0 0 41	10 18 27	8 25 30	-19 15	0 43	-23 6	-1 8	-16 48	1 6	-19 15	-1 13	-22 29	0 53	9 5	-0 33	-7 41	-0 54	-21 35	0 25
28	0 0 45	10 18 32	8 25 35	-19 40	0 41	-22 37	-1 25	-16 53	1 6	-18 17	-1 17	-22 29	0 53	9 6	-0 33	-7 39	-0 54	-21 35	0 25
31	0 0 49	10 18 38	8 25 41	-20 4	0 39	-21 57	-1 39	-16 58	1 7	-17 14	-1 20	-22 28	0 53	9 8	-0 33	-7 37	-0 54	-21 34	0 25
फर. 1	0 0 50	10 18 40	8 25 43	-20 11	0 39	-21 40	-1 43	-17 0	1 7	-16 52	-1 21	-22 28	0 53	9 8	-0 33	-7 36	-0 54	-21 34	0 24
4	0 0 55	10 18 47	8 25 49	-20 34	0 37	-20 43	-1 53	-17 4	1 7	-15 44	-1 23	-22 27	0 53	9 10	-0 33	-7 34	-0 54	-21 34	0 24
7	0 1 0	10 18 53	8 25 55	-20 54	0 35	-19 33	-2 1	-17 8	1 8	-14 31	-1 25	-22 27	0 53	9 12	-0 33	-7 31	-0 54	-21 33	0 24
10	0 1 5	10 18 59	8 26 0	-21 14	0 33	-18 9	-2 5	-17 12	1 8	-13 15	-1 27	-22 26	0 53	9 14	-0 33	-7 29	-0 54	-21 32	0 24
13	0 1 11	10 19 6	8 26 5	-21 32	0 30	-16 34	-2 5	-17 15	1 8	-11 56	-1 28	-22 25	0 53	9 17	-0 33	-7 26	-0 54	-21 32	0 23
16	0 1 18	10 19 12	8 26 11	-21 49	0 28	-14 45	-2 2	-17 17	1 9	-10 34	-1 28	-22 25	0 53	9 19	-0 33	-7 24	-0 54	-21 31	0 23
19	0 1 24	10 19 19	8 26 16	-22 5	0 26	-12 43	-1 54	-17 20	1 9	-9 9	-1 27	-22 24	0 53	9 21	-0 33	-7 21	-0 54	-21 31	0 23
22	0 1 31	10 19 26	8 26 20	-22 19	0 23	-10 30	-1 42	-17 22	1 10	-7 42	-1 27	-22 23	0 53	9 24	-0 32	-7 19	-0 54	-21 30	0 23
25	0 1 38	10 19 32	8 26 25	-22 32	0 21	-8 5	-1 24	-17 23	1 10	-6 13	-1 25	-22 22	0 53	9 27	-0 32	-7 16	-0 54	-21 30	0 22
28	0 1 46	10 19 39	8 26 30	-22 44	0 18	-5 32	-1 0	-17 24	1 11	-4 43	-1 23	-22 22	0 53	9 30	-0 32	-7 13	-0 54	-21 30	0 22
मार्च 1	0 1 49	10 19 41	8 26 31	-22 48	0 17	-4 39	-0 51	-17 24	1 11	-4 13	-1 22	-22 22	0 53	9 31	-0 32	-7 12	-0 54	-21 29	0 22
4	0 1 57	10 19 48	8 26 35	-22 58	0 14	-1 58	-0 21	-17 25	1 11	-2 42	-1 19	-22 21	0 53	9 34	-0 32	-7 10	-0 54	-21 29	0 22
7	0 2 5	10 19 55	8 26 39	-23 6	0 11	0 42	0 15	-17 25	1 12	-1 9	-1 16	-22 20	0 53	9 37	-0 32	-7 7	-0 54	-21 29	0 22
10	0 2 14	10 20 2	8 26 43	-23 14	0 8	3 14	0 54	-17 24	1 12	0 23	-1 12	-22 19	0 53	9 40	-0 32	-7 5	-0 54	-21 28	0 21
13	0 2 22	10 20 9	8 26 47	-23 20	0 4	5 31	1 34	-17 24	1 13	1 56	-1 7	-22 19	0 53	9 43	-0 32	-7 2	-0 54	-21 28	0 21
16	0 2 31	10 20 15	8 26 50	-23 25	0 1	7 24	2 12	-17 23	1 13	3 28	-1 2	-22 18	0 53	9 46	-0 32	-6 59	-0 55	-21 28	0 21
19	0 2 41	10 20 22	8 26 53	-23 29	-0 3	8 47	2 46	-17 21	1 14	5 0	-0 57	-22 17	0 53	9 50	-0 32	-6 57	-0 55	-21 27	0 21
22	0 2 50	10 20 29	8 26 56	-23 31	-0 7	9 34	3 11	-17 19	1 14	6 31	-0 51	-22 17	0 53	9 53	-0 32	-6 54	-0 55	-21 27	0 20
25	0 3 0	10 20 35	8 26 59	-23 33	-0 11	9 42	3 25	-17 17	1 14	8 0	-0 45	-22 16	0 53	9 57	-0 32	-6 52	-0 55	-21 27	0 20
28	0 3 9	10 20 42	8 27 1	-23 33	-0 15	9 12	3 24	-17 14	1 15	9 28	-0 38	-22 16	0 53	10 0	-0 32	-6 49	-0 55	-21 27	0 20
31	0 3 19	10 20 48	8 27 3	-23 33	-0 19	8 8	3 7	-17 11	1 15	10 54	-0 31	-22 15	0 53	10 4	-0 32	-6 47	-0 55	-21 27	0 20

यूरेनस, नेप्च्यून, प्लूटो के निरयण भोगांश और भौमादि ग्रहों के क्रान्ति-शर (सन् 2018 ई.) (प्रात: 5 घं. 30 मि.) (भा.स्टैं.टा.)

तारीख सन्		यूरेनस			नेप्च्यून			प्लूटो			मंगल				बुध				गुरु				शुक्र				शनि				यूरेनस				नेप्च्यून				प्लूटो			
											क्रान्ति		शर		क्रान्ति		शर		क्रान्ति		शर		क्रान्ति		शर		क्रान्ति		शर		क्रान्ति		शर		क्रान्ति		शर		क्रान्ति		शर	
2018 ई.		रा.	अं.	क.	रा.	अं.	क.	रा.	अं.	क.	अं.	क.	अं.	क.	अं.	क.	अं.	क.	अं.	क.	अं.	क.	अं.	क.	अं.	क.	अं.	क.	अं.	क.	अं.	क.	अं.	क.	अं.	क.	अं.	क.	अं.	क.	अं.	क.
अप्रैल	1	0	3	23	10	20	50	8	27	4	-23	32	-0	21	7	41	2	58	-17	10	1	15	11	22	-0	29	-22	15	0	53	10	5	-0	32	-6	46	-0	55	-21	27	0	19
	4	0	3	33	10	20	56	8	27	6	-23	30	-0	25	6	11	2	23	-17	6	1	16	12	45	-0	21	-22	15	0	53	10	9	-0	32	-6	44	-0	55	-21	27	0	19
	7	0	3	43	10	21	3	8	27	7	-23	27	-0	30	4	36	1	38	-17	2	1	16	14	5	-0	14	-22	15	0	53	10	12	-0	32	-6	42	-0	55	-21	27	0	19
	10	0	3	53	10	21	8	8	27	9	-23	24	-0	35	3	10	0	49	-16	58	1	16	15	21	-0	6	-22	14	0	53	10	16	-0	32	-6	39	-0	55	-21	27	0	19
	13	0	4	3	10	21	14	8	27	10	-23	19	-0	41	2	1	0	1	-16	53	1	16	16	35	0	2	-22	14	0	53	10	20	-0	32	-6	37	-0	55	-21	27	0	18
	16	0	4	14	10	21	20	8	27	10	-23	14	-0	46	1	15	-0	43	-16	48	1	16	17	45	0	10	-22	14	0	53	10	23	-0	32	-6	35	-0	55	-21	27	0	18
	19	0	4	24	10	21	25	8	27	11	-23	9	-0	52	0	52	-1	22	-16	43	1	16	18	50	0	19	-22	14	0	53	10	27	-0	32	-6	33	-0	55	-21	27	0	18
	22	0	4	34	10	21	30	8	27	11	-23	2	-0	58	0	51	-1	54	-16	38	1	17	19	51	0	27	-22	14	0	53	10	31	-0	31	-6	31	-0	55	-21	28	0	18
	25	0	4	45	10	21	35	8	27	11	-22	56	-1	5	1	12	-2	20	-16	32	1	17	20	48	0	35	-22	14	0	53	10	34	-0	31	-6	29	-0	55	-21	28	0	17
	28	0	4	55	10	21	40	8	27	10	-22	49	-1	12	1	51	-2	39	-16	26	1	17	21	39	0	43	-22	14	0	53	10	38	-0	31	-6	28	-0	56	-21	28	0	17
मई	1	0	5	5	10	21	45	8	27	10	-22	41	-1	19	2	46	-2	52	-16	20	1	16	22	26	0	51	-22	15	0	53	10	42	-0	31	-6	26	-0	56	-21	29	0	17
	4	0	5	15	10	21	49	8	27	9	-22	34	-1	26	3	56	-2	59	-16	14	1	16	23	6	0	59	-22	15	0	53	10	45	-0	31	-6	24	-0	56	-21	29	0	17
	7	0	5	25	10	21	53	8	27	8	-22	27	-1	34	5	19	-3	0	-16	8	1	16	23	41	1	7	-22	15	0	53	10	49	-0	31	-6	23	-0	56	-21	29	0	16
	10	0	5	35	10	21	57	8	27	6	-22	20	-1	42	6	53	-2	55	-16	2	1	16	24	10	1	14	-22	16	0	53	10	52	-0	31	-6	21	-0	56	-21	30	0	16
	13	0	5	45	10	22	1	8	27	5	-22	13	-1	50	8	36	-2	46	-15	56	1	16	24	33	1	21	-22	16	0	53	10	56	-0	31	-6	20	-0	56	-21	30	0	16
	16	0	5	55	10	22	4	8	27	3	-22	6	-1	59	10	27	-2	31	-15	50	1	15	24	49	1	27	-22	17	0	53	10	59	-0	31	-6	19	-0	56	-21	31	0	16
	19	0	6	4	10	22	7	8	27	1	-22	0	-2	8	12	24	-2	12	-15	44	1	15	24	59	1	33	-22	17	0	53	11	2	-0	31	-6	18	-0	56	-21	32	0	15
	22	0	6	13	10	22	10	8	26	58	-21	55	-2	18	14	24	-1	48	-15	38	1	15	25	3	1	39	-22	18	0	53	11	6	-0	32	-6	17	-0	56	-21	32	0	15
	25	0	6	22	10	22	13	8	26	56	-21	50	-2	28	16	25	-1	21	-15	33	1	14	25	1	1	44	-22	18	0	53	11	9	-0	32	-6	16	-0	57	-21	33	0	15
	28	0	6	31	10	22	15	8	26	53	-21	46	-2	38	18	24	-0	51	-15	27	1	14	24	52	1	49	-22	19	0	53	11	12	-0	32	-6	15	-0	57	-21	33	0	14
	31	0	6	40	10	22	17	8	26	50	-21	44	-2	49	20	16	-0	19	-15	22	1	13	24	36	1	53	-22	20	0	53	11	15	-0	32	-6	14	-0	57	-21	34	0	14
जून	1	0	6	43	10	22	18	8	26	49	-21	43	-2	53	20	51	-0	8	-15	21	1	13	24	30	1	54	-22	20	0	53	11	16	-0	32	-6	14	-0	57	-21	34	0	14
	4	0	6	51	10	22	19	8	26	46	-21	42	-3	4	22	27	0	24	-15	16	1	12	24	6	1	57	-22	21	0	53	11	19	-0	32	-6	14	-0	57	-21	35	0	14
	7	0	6	59	10	22	21	8	26	43	-21	42	-3	16	23	43	0	53	-15	11	1	12	23	37	1	59	-22	22	0	52	11	22	-0	32	-6	13	-0	57	-21	36	0	14
	10	0	7	7	10	22	22	8	26	39	-21	44	-3	28	24	36	1	18	-15	7	1	11	23	1	2	0	-22	22	0	52	11	24	-0	32	-6	13	-0	57	-21	37	0	13
	13	0	7	15	10	22	22	8	26	35	-21	48	-3	41	25	4	1	38	-15	3	1	11	22	21	2	1	-22	23	0	52	11	27	-0	32	-6	13	-0	57	-21	38	0	13
	16	0	7	22	10	22	23	8	26	32	-21	53	-3	53	25	8	1	51	-15	0	1	10	21	35	2	1	-22	24	0	52	11	29	-0	32	-6	13	-0	57	-21	38	0	13
	19	0	7	29	10	22	23	8	26	28	-22	1	-4	7	24	49	1	58	-14	57	1	9	20	44	2	0	-22	25	0	52	11	32	-0	32	-6	13	-0	58	-21	39	0	12
	22	0	7	35	10	22	23	8	26	24	-22	10	-4	20	24	10	1	58	-14	55	1	8	19	48	1	58	-22	26	0	52	11	34	-0	32	-6	13	-0	58	-21	40	0	12
	25	0	7	41	10	22	22	8	26	19	-22	21	-4	33	23	16	1	52	-14	53	1	8	18	48	1	55	-22	27	0	51	11	36	-0	32	-6	13	-0	58	-21	41	0	12
	28	0	7	47	10	22	22	8	26	15	-22	33	-4	47	22	10	1	40	-14	51	1	7	17	44	1	52	-22	27	0	51	11	38	-0	32	-6	14	-0	58	-21	42	0	12

यूरेनस, नेप्च्यून, प्लूटो के निरयण भोगांश और भौमादि ग्रहों के क्रान्ति-शर (सन् 2018 ई.) (प्रात: 5 घं. 30 मि.) (भा.स्टैं.टा.)

तारीख सन्	यूरेनस			नेप्च्यून			प्लूटो			मंगल		बुध		गुरु		शुक्र		शनि		यूरेनस		नेप्च्यून		प्लूटो	
										क्रान्ति	शर	क्रान्ति	शर	क्रान्ति	शर	क्रान्ति	शर	क्रान्ति	शर	क्रान्ति	शर	क्रान्ति	शर	क्रान्ति	शर
2018 ई.	रा.	अं.	क.	रा.	अं.	क.	रा.	अं.	क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.
जुलाई 1	0	7	53	10	22	21	8	26	11	-22 48	-5 0	20 54	1 22	-14 50	1 6	16 36	1 47	-22 28	0 51	11 40	-0 32	-6 14	-0 58	-21 43	0 11
4	0	7	58	10	22	19	8	26	7	-23 4	-5 13	19 31	0 59	-14 49	1 5	15 24	1 42	-22 29	0 51	11 41	-0 32	-6 15	-0 58	-21 44	0 11
7	0	8	3	10	22	18	8	26	2	-23 21	-5 26	18 5	0 32	-14 49	1 5	14 10	1 35	-22 30	0 50	11 43	-0 32	-6 16	-0 58	-21 45	0 11
10	0	8	7	10	22	16	8	25	58	-23 40	-5 38	16 38	0 1	-14 50	1 4	12 53	1 28	-22 31	0 50	11 44	-0 32	-6 16	-0 58	-21 46	0 10
13	0	8	11	10	22	14	8	25	53	-24 0	-5 50	15 12	-0 34	-14 51	1 3	11 33	1 19	-22 31	0 50	11 46	-0 32	-6 17	-0 59	-21 47	0 10
16	0	8	14	10	22	11	8	25	49	-24 20	-6 0	13 50	-1 12	-14 52	1 2	10 11	1 10	-22 32	0 49	11 47	-0 32	-6 18	-0 59	-21 48	0 10
19	0	8	17	10	22	9	8	25	45	-24 39	-6 10	12 36	-1 52	-14 54	1 1	8 47	0 59	-22 33	0 49	11 48	-0 32	-6 19	-0 59	-21 49	0 10
22	0	8	20	10	22	6	8	25	40	-24 59	-6 18	11 31	-2 33	-14 56	1 1	7 22	0 48	-22 34	0 49	11 49	-0 32	-6 21	-0 59	-21 50	0 9
25	0	8	22	10	22	3	8	25	36	-25 17	-6 24	10 40	-3 14	-14 59	1 0	5 56	0 36	-22 34	0 48	11 49	-0 33	-6 22	-0 59	-21 50	0 9
28	0	8	24	10	22	00	8	25	32	-25 34	-6 30	10 6	-3 52	-15 2	0 59	4 28	0 23	-22 35	0 48	11 50	-0 33	-6 23	-0 59	-21 51	0 9
31	0	8	25	10	21	56	8	25	27	-25 49	-6 33	9 52	-4 23	-15 6	0 58	3 0	0 8	-22 36	0 48	11 50	-0 33	-6 25	-0 59	-21 52	0 8
अगस्त 1	0	8	26	10	21	55	8	25	26	-25 54	-6 34	9 52	-4 32	-15 7	0 58	2 31	0 3	-22 36	0 47	11 51	-0 33	-6 25	-0 59	-21 53	0 8
4	0	8	27	10	21	51	8	25	22	-26 6	-6 35	10 7	-4 50	-15 11	0 57	1 2	-0 12	-22 37	0 47	11 51	-0 33	-6 27	-0 59	-21 53	0 8
7	0	8	27	10	21	47	8	25	18	-26 16	-6 34	10 43	-4 55	-15 16	0 57	-0 26	-0 28	-22 37	0 47	11 51	-0 33	-6 28	-0 59	-21 54	0 8
10	0	8	27	10	21	43	8	25	14	-26 24	-6 32	11 36	-4 43	-15 21	0 56	-1 55	-0 45	-22 38	0 46	11 51	-0 33	-6 30	-0 59	-21 55	0 7
13	0	8	26	10	21	39	8	25	11	-26 28	-6 29	12 39	-4 15	-15 26	0 55	-3 22	-1 3	-22 38	0 46	11 50	-0 33	-6 32	-1 0	-21 56	0 7
16	0	8	25	10	21	34	8	25	7	-26 30	-6 24	13 44	-3 34	-15 32	0 55	-4 49	-1 22	-22 39	0 45	11 50	-0 33	-6 34	-1 0	-21 57	0 7
19	0	8	24	10	21	30	8	25	4	-26 29	-6 17	14 41	-2 44	-15 38	0 54	-6 15	-1 41	-22 39	0 45	11 49	-0 33	-6 35	-1 0	-21 57	0 6
22	0	8	22	10	21	25	8	25	0	-26 25	-6 10	15 24	-1 51	-15 45	0 53	-7 39	-2 1	-22 40	0 44	11 49	-0 33	-6 37	-1 0	-21 58	0 6
25	0	8	19	10	21	20	8	24	57	-26 20	-6 2	15 47	-0 59	-15 52	0 53	-9 2	-2 22	-22 40	0 44	11 48	-0 33	-6 39	-1 0	-21 59	0 6
28	0	8	17	10	21	16	8	24	54	-26 11	-5 53	15 45	-0 11	-15 59	0 52	-10 23	-2 43	-22 41	0 44	11 47	-0 33	-6 41	-1 0	-22 0	0 6
31	0	8	14	10	21	11	8	24	52	-26 1	-5 43	15 15	0 31	-16 6	0 51	-11 41	-3 5	-22 41	0 43	11 46	-0 33	-6 43	-1 0	-22 0	0 5
सितम्बर 1	0	8	13	10	21	9	8	24	51	-25 57	-5 40	14 59	0 42	-16 8	0 51	-12 6	-3 13	-22 42	0 43	11 45	-0 33	-6 44	-1 0	-22 0	0 5
4	0	8	9	10	21	4	8	24	49	-25 44	-5 30	13 52	1 12	-16 16	0 50	-13 21	-3 35	-22 42	0 43	11 44	-0 33	-6 46	-1 0	-22 1	0 5
7	0	8	5	10	20	59	8	24	46	-25 29	-5 19	12 21	1 33	-16 24	0 50	-14 33	-3 58	-22 43	0 42	11 43	-0 33	-6 47	-1 0	-22 2	0 5
10	0	8	0	10	20	54	8	24	45	-25 13	-5 8	10 29	1 44	-16 32	0 49	-15 41	-4 21	-22 43	0 42	11 41	-0 33	-6 49	-1 0	-22 2	0 4
13	0	7	56	10	20	49	8	24	43	-24 54	-4 58	8 24	1 48	-16 40	0 49	-16 46	-4 44	-22 43	0 41	11 39	-0 33	-6 51	-1 0	-22 3	0 4
16	0	7	51	10	20	44	8	24	41	-24 34	-4 47	6 8	1 46	-16 49	0 48	-17 46	-5 6	-22 44	0 41	11 38	-0 33	-6 53	-1 0	-22 3	0 4
19	0	7	45	10	20	39	8	24	40	-24 13	-4 36	3 48	1 38	-16 57	0 48	-18 42	-5 29	-22 44	0 40	11 36	-0 34	-6 55	-1 0	-22 4	0 3
22	0	7	40	10	20	35	8	24	39	-23 50	-4 25	1 25	1 26	-17 6	0 47	-19 32	-5 51	-22 44	0 40	11 34	-0 34	-6 57	-1 0	-22 4	0 3
25	0	7	34	10	20	30	8	24	39	-23 26	-4 14	-0 57	1 11	-17 15	0 47	-20 16	-6 12	-22 45	0 40	11 32	-0 34	-6 59	-1 0	-22 5	0 3
28	0	7	27	10	20	25	8	24	38	-23 0	-4 4	-3 16	0 53	-17 24	0 46	-20 54	-6 31	-22 45	0 39	11 30	-0 34	-7 1	-1 0	-22 5	0 3

यूरेनस, नेप्च्यून, प्लूटो के निरयण भोगांश और भौमादि ग्रहों के क्रान्ति-शर (सन् 2018 ई.) (प्रात: 5 घं. 30 मि.) (भा.स्टैं.टा.)

तारीख सन्		यूरेनस			नेप्च्यून			प्लूटो			मंगल		बुध		गुरु		शुक्र		शनि		यूरेनस		नेप्च्यून		प्लूटो	
											क्रान्ति	शर	क्रान्ति	शर	क्रान्ति	शर	क्रान्ति	शर	क्रान्ति	शर	क्रान्ति	शर	क्रान्ति	शर	क्रान्ति	शर
2018 ई.		रा.	अं.	क.	रा.	अं.	क.	रा.	अं.	क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.
अक्टूबर	1	0	7	21	10	20	21	8	24	38	-22 33	-3 53	-5 33	0 34	-17 33	0 46	-21 24	-6 49	-22 45	0 39	11 27	-0 34	-7 2	-1 0	-22 5	0 2
	4	0	7	14	10	20	16	8	24	38	-22 4	-3 43	-7 45	0 14	-17 42	0 45	-21 46	-7 4	-22 46	0 38	11 25	-0 34	-7 4	-1 0	-22 5	0 2
	7	0	7	7	10	20	12	8	24	39	-21 34	-3 33	-9 52	-0 7	-17 51	0 45	-21 58	-7 16	-22 46	0 38	11 23	-0 34	-7 6	-1 0	-22 6	0 2
	10	0	7	0	10	20	8	8	24	39	-21 3	-3 23	-11 53	-0 28	-18 0	0 44	-21 59	-7 24	-22 46	0 37	11 20	-0 34	-7 7	-1 0	-22 6	0 1
	13	0	6	53	10	20	4	8	24	40	-20 31	-3 13	-13 49	-0 49	-18 9	0 44	-21 48	-7 27	-22 46	0 37	11 18	-0 34	-7 9	-1 0	-22 6	0 1
	16	0	6	46	10	20	0	8	24	42	-19 57	-3 4	-15 37	-1 10	-18 19	0 44	-21 25	-7 24	-22 46	0 37	11 15	-0 34	-7 10	-1 0	-22 6	0 1
	19	0	6	39	10	19	57	8	24	43	-19 22	-2 55	-17 18	-1 29	-18 28	0 43	-20 49	-7 14	-22 46	0 36	11 13	-0 34	-7 11	-1 0	-22 6	0 1
	22	0	6	31	10	19	54	8	24	45	-18 46	-2 46	-18 51	-1 48	-18 37	0 43	-20 0	-6 56	-22 46	0 36	11 10	-0 34	-7 13	-1 0	-22 6	0 0
	25	0	6	24	10	19	51	8	24	47	-18 9	-2 37	-20 15	-2 5	-18 46	0 42	-19 0	-6 31	-22 46	0 36	11 8	-0 34	-7 14	-1 0	-22 6	0 0
	28	0	6	17	10	19	48	8	24	49	-17 30	-2 29	-21 30	-2 20	-18 55	0 42	-17 52	-6 0	-22 46	0 35	11 5	-0 34	-7 15	-1 0	-22 6	-0 0
	31	0	6	9	10	19	45	8	24	52	-16 51	-2 21	-22 35	-2 33	-19 4	0 42	-16 39	-5 22	-22 46	0 35	11 3	-0 34	-7 16	-1 0	-22 6	-0 1
नवम्बर	1	0	6	7	10	19	44	8	24	53	-16 37	-2 18	-22 54	-2 36	-19 7	0 42	-16 14	-5 8	-22 46	0 35	11 2	-0 34	-7 16	-1 0	-22 6	-0 1
	4	0	6	0	10	19	42	8	24	55	-15 56	-2 10	-23 44	-2 44	-19 16	0 41	-15 1	-4 25	-22 46	0 34	10 59	-0 33	-7 17	-1 0	-22 6	-0 1
	7	0	5	53	10	19	40	8	24	58	-15 14	-2 3	-24 20	-2 47	-19 24	0 41	-13 50	-3 40	-22 45	0 34	10 57	-0 33	-7 17	-0 59	-22 6	-0 1
	10	0	5	46	10	19	39	8	25	2	-14 31	-1 55	-24 43	-2 45	-19 33	0 41	-12 47	-2 54	-22 45	0 34	10 54	-0 33	-7 18	-0 59	-22 6	-0 1
	13	0	5	39	10	19	37	8	25	5	-13 47	-1 48	-24 49	-2 34	-19 41	0 41	-11 52	-2 10	-22 45	0 33	10 52	-0 33	-7 19	-0 59	-22 5	-0 2
	16	0	5	32	10	19	36	8	25	9	-13 2	-1 41	-24 36	-2 13	-19 50	0 40	-11 7	-1 27	-22 44	0 33	10 50	-0 33	-7 19	-0 59	-22 5	-0 2
	19	0	5	26	10	19	35	8	25	13	-12 16	-1 34	-24 1	-1 40	-19 58	0 40	-10 32	-0 47	-22 44	0 33	10 47	-0 33	-7 19	-0 59	-22 5	-0 2
	22	0	5	19	10	19	35	8	25	17	-11 29	-1 28	-23 1	-0 52	-20 6	0 40	-10 8	-0 10	-22 43	0 32	10 45	-0 33	-7 19	-0 59	-22 4	-0 3
	25	0	5	13	10	19	35	8	25	22	-10 42	-1 21	-21 35	0 6	-20 14	0 40	-9 54	0 24	-22 42	0 32	10 43	-0 33	-7 19	-0 59	-22 4	-0 3
	28	0	5	8	10	19	35	8	25	27	-9 54	-1 15	-19 54	1 7	-20 22	0 39	-9 49	0 54	-22 42	0 32	10 41	-0 33	-7 19	-0 59	-22 4	-0 3
दिसम्बर	1	0	5	2	10	19	35	8	25	31	-9 5	-1 9	-18 20	1 57	-20 29	0 39	-9 53	1 22	-22 41	0 32	10 40	-0 33	-7 19	-0 59	-22 3	-0 3
	4	0	4	57	10	19	36	8	25	36	-8 16	-1 3	-17 18	2 29	-20 36	0 39	-10 4	1 46	-22 40	0 31	10 38	-0 33	-7 18	-0 59	-22 3	-0 4
	7	0	4	53	10	19	37	8	25	41	-7 26	-0 58	-16 55	2 42	-20 44	0 39	-10 22	2 7	-22 39	0 31	10 36	-0 33	-7 18	-0 59	-22 2	-0 4
	10	0	4	49	10	19	38	8	25	47	-6 35	-0 52	-17 7	2 41	-20 50	0 39	-10 46	2 25	-22 38	0 31	10 35	-0 33	-7 17	-0 59	-22 2	-0 4
	13	0	4	45	10	19	40	8	25	52	-5 45	-0 47	-17 43	2 29	-20 57	0 38	-11 15	2 40	-22 37	0 30	10 34	-0 33	-7 17	-0 59	-22 1	-0 4
	16	0	4	41	10	19	42	8	25	58	-4 54	-0 42	-18 34	2 11	-21 4	0 38	-11 47	2 53	-22 36	0 30	10 32	-0 33	-7 16	-0 59	-22 1	-0 5
	19	0	4	38	10	19	44	8	26	3	-4 2	-0 37	-19 32	1 50	-21 10	0 38	-12 23	3 4	-22 34	0 30	10 31	-0 32	-7 15	-0 58	-22 0	-0 5
	22	0	4	35	10	19	47	8	26	9	-3 11	-0 32	-20 31	1 26	-21 16	0 38	-13 1	3 12	-22 33	0 30	10 31	-0 32	-7 14	-0 58	-22 0	-0 5
	25	0	4	33	10	19	50	8	26	15	-2 19	-0 28	-21 26	1 2	-21 22	0 38	-13 41	3 19	-22 32	0 29	10 30	-0 32	-7 13	-0 58	-21 59	-0 6
	28	0	4	31	10	19	53	8	26	21	-1 27	-0 23	-22 16	0 38	-21 27	0 38	-14 23	3 23	-22 30	0 29	10 29	-0 32	-7 11	-0 58	-21 58	-0 6
	31	0	4	30	10	19	57	8	26	27	-0 35	-0 19	-22 58	0 15	-21 33	0 38	-15 5	3 26	-22 29	0 29	10 29	-0 32	-7 10	-0 58	-21 58	-0 6

यूरेनस, नेप्च्यून, प्लूटो के निरयण भोगांश और भौमादि ग्रहों के क्रान्ति-शर (सन् 2019 ई.) (प्रातः 5 घं. 30 मि.) (भा.स्टैं.टा.)

तारीख सन्	यूरेनस			नेप्च्यून			प्लूटो			मंगल		बुध		गुरु		शुक्र		शनि		यूरेनस		नेप्च्यून		प्लूटो	
										क्रान्ति	शर	क्रान्ति	शर	क्रान्ति	शर	क्रान्ति	शर	क्रान्ति	शर	क्रान्ति	शर	क्रान्ति	शर	क्रान्ति	शर
2019 ई.	रा.	अं.	क.	रा.	अं.	क.	रा.	अं.	क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.
जनवरी 1	0	4	30	10	19	58	8	26	29	-0 18	-0 18	-23 10	0 7	-21 34	0 38	-15 19	3 26	-22 28	0 29	10 29	-0 32	-7 9	-0 58	-21 58	-0 6
4	0	4	29	10	20	2	8	26	35	0 34	-0 14	-23 40	-0 15	-21 39	0 38	-16 0	3 27	-22 26	0 29	10 29	-0 32	-7 8	-0 58	-21 57	-0 6
7	0	4	29	10	20	6	8	26	41	1 26	-0 10	-24 0	-0 35	-21 44	0 38	-16 41	3 26	-22 25	0 29	10 29	-0 32	-7 6	-0 58	-21 56	-0 7
10	0	4	29	10	20	10	8	26	47	2 17	-0 6	-24 8	-0 55	-21 49	0 37	-17 21	3 24	-22 23	0 28	10 29	-0 32	-7 5	-0 58	-21 56	-0 7
13	0	4	30	10	20	15	8	26	53	3 9	-0 3	-24 5	-1 12	-21 53	0 37	-17 59	3 20	-22 21	0 28	10 29	-0 32	-7 3	-0 58	-21 55	-0 7
16	0	4	31	10	20	19	8	26	59	4 0	0 1	-23 50	-1 27	-21 57	0 37	-18 34	3 16	-22 19	0 28	10 30	-0 31	-7 1	-0 58	-21 54	-0 8
19	0	4	33	10	20	24	8	27	5	4 51	0 4	-23 23	-1 41	-22 1	0 37	-19 7	3 10	-22 17	0 28	10 31	-0 31	-6 59	-0 58	-21 54	-0 8
22	0	4	35	10	20	30	8	27	11	5 41	0 8	-22 42	-1 51	-22 5	0 37	-19 37	3 3	-22 16	0 28	10 31	-0 31	-6 57	-0 58	-21 53	-0 8
25	0	4	37	10	20	35	8	27	17	6 31	0 11	-21 49	-1 59	-22 8	0 37	-20 3	2 55	-22 14	0 27	10 32	-0 31	-6 55	-0 58	-21 52	-0 8
28	0	4	40	10	20	41	8	27	23	7 20	0 14	-20 42	-2 4	-22 11	0 37	-20 26	2 47	-22 12	0 27	10 34	-0 31	-6 52	-0 58	-21 52	-0 9
31	0	4	44	10	20	46	8	27	29	8 9	0 17	-19 21	-2 5	-22 14	0 37	-20 44	2 38	-22 10	0 27	10 35	-0 31	-6 50	-0 58	-21 51	-0 9
फरवरी 1	0	4	45	10	20	48	8	27	31	8 25	0 17	-18 51	-2 5	-22 15	0 37	-20 49	2 35	-22 9	0 27	10 35	-0 31	-6 49	-0 58	-21 51	-0 9
4	0	4	49	10	20	54	8	27	37	9 14	0 20	-17 13	-2 0	-22 18	0 37	-21 1	2 25	-22 7	0 27	10 37	-0 31	-6 47	-0 58	-21 50	-0 9
7	0	4	54	10	21	1	8	27	42	10 1	0 23	-15 21	-1 52	-22 21	0 37	-21 9	2 14	-22 5	0 27	10 39	-0 31	-6 45	-0 58	-21 49	-0 10
10	0	4	59	10	21	7	8	27	48	10 48	0 25	-13 17	-1 38	-22 23	0 37	-21 12	2 4	-22 3	0 27	10 40	-0 31	-6 42	-0 58	-21 49	-0 10
13	0	5	4	10	21	13	8	27	53	11 33	0 28	-11 2	-1 18	-22 25	0 37	-21 10	1 52	-22 1	0 27	10 42	-0 31	-6 40	-0 58	-21 48	-0 10
16	0	5	10	10	21	20	8	27	58	12 18	0 30	-8 38	-0 52	-22 27	0 37	-21 2	1 41	-21 59	0 26	10 45	-0 30	-6 37	-0 58	-21 48	-0 10
19	0	5	16	10	21	26	8	28	4	13 3	0 32	-6 11	-0 20	-22 29	0 37	-20 50	1 29	-21 57	0 26	10 47	-0 30	-6 35	-0 58	-21 47	-0 11
22	0	5	22	10	21	33	8	28	8	13 46	0 35	-3 45	0 17	-22 31	0 37	-20 32	1 18	-21 55	0 26	10 49	-0 30	-6 32	-0 58	-21 47	-0 11
25	0	5	29	10	21	40	8	28	13	14 28	0 37	-1 30	0 59	-22 32	0 37	-20 9	1 6	-21 53	0 26	10 52	-0 30	-6 29	-0 58	-21 46	-0 11
28	0	5	36	10	21	46	8	28	18	15 9	0 39	0 26	1 43	-22 33	0 37	-19 41	0 54	-21 51	0 26	10 54	-0 30	-6 27	-0 58	-21 46	-0 12
मार्च 1	0	5	39	10	21	49	8	28	19	15 22	0 39	0 58	1 58	-22 34	0 37	-19 30	0 50	-21 50	0 26	10 55	-0 30	-6 26	-0 58	-21 46	-0 12
4	0	5	47	10	21	56	8	28	24	16 2	0 41	2 12	2 39	-22 35	0 37	-18 55	0 39	-21 48	0 26	10 58	-0 30	-6 23	-0 58	-21 45	-0 12
7	0	5	54	10	22	2	8	28	28	16 40	0 43	2 45	3 12	-22 36	0 38	-18 16	0 27	-21 46	0 26	11 1	-0 30	-6 21	-0 58	-21 45	-0 12
10	0	6	3	10	22	9	8	28	32	17 18	0 45	2 36	3 33	-22 37	0 38	-17 31	0 16	-21 45	0 25	11 4	-0 30	-6 18	-0 58	-21 44	-0 12
13	0	6	11	10	22	16	8	28	36	17 53	0 46	1 46	3 37	-22 38	0 38	-16 42	0 5	-21 43	0 25	11 7	-0 30	-6 15	-0 58	-21 44	-0 13
16	0	6	20	10	22	23	8	28	39	18 28	0 48	0 28	3 24	-22 38	0 38	-15 49	-0 6	-21 41	0 25	11 10	-0 30	-6 13	-0 58	-21 44	-0 13
19	0	6	29	10	22	30	8	28	42	19 1	0 49	-1 5	2 54	-22 39	0 38	-14 52	-0 16	-21 40	0 25	11 13	-0 30	-6 10	-0 58	-21 43	-0 13
22	0	6	38	10	22	36	8	28	45	19 33	0 51	-2 36	2 14	-22 40	0 38	-13 51	-0 26	-21 38	0 25	11 16	-0 30	-6 8	-0 58	-21 43	-0 14
25	0	6	47	10	22	43	8	28	48	20 4	0 52	-3 53	1 28	-22 40	0 38	-12 47	-0 35	-21 37	0 25	11 20	-0 30	-6 5	-0 58	-21 43	-0 14
28	0	6	57	10	22	49	8	28	51	20 33	0 53	-4 49	0 43	-22 40	0 38	-11 39	-0 44	-21 35	0 25	11 23	-0 30	-6 3	-0 58	-21 43	-0 14
31	0	7	7	10	22	56	8	28	53	21 0	0 55	-5 23	-0 1	-22 41	0 38	-10 28	-0 52	-21 34	0 25	11 26	-0 30	-6 0	-0 58	-21 43	-0 15

ग्रहों के निरयण राशि-नक्षत्रचरण-चार (1 जनवरी, 2018 से 5 अप्रैल, 2019 ई. तक)

सूर्य-चार (सन् 2018-2019 ई.)

तारीख 2018 ई.	राशि	नक्षत्र	चरण	घं. मि. (भा.स्टैं.टा.)		तारीख 2018 ई.	राशि	नक्षत्र	चरण	घं. मि. (भा.स्टैं.टा.)		तारीख 2018 ई.	राशि	नक्षत्र	चरण	घं. मि. (भा.स्टैं.टा.)	
जनवरी 1		पू.षा.	2	11	43	अप्रैल 10		रेवती	4	22	39	जुलाई 23		पुष्य	2	22	05
4		पू.षा.	3	18	14	14	मेष	अश्वि.	1	8	12	27		पुष्य	3	9	52
8		पू.षा.	4	0	45	17		अश्वि.	2	17	54	30		पुष्य	4	21	36
11		उ.षा.	1	7	16	21		अश्वि.	3	3	45	अगस्त 3		आश्ले.	1	9	15
14	मकर	उ.षा.	2	13	46	24		अश्वि.	4	13	47	6		आश्ले.	2	20	48
17		उ.षा.	3	20	18	27		भरणी	1	23	59	10		आश्ले.	3	8	14
21		उ.षा.	4	2	52	मई 1		भरणी	2	10	21	13		आश्ले.	4	19	35
24		श्रवण	1	9	30	4		भरणी	3	20	51	17	सिंह	मघा	1	6	50
27		श्रवण	2	16	12	8		भरणी	4	7	28	20		मघा	2	18	00
30		श्रवण	3	22	59	11		कृत्तिका	1	18	12	24		मघा	3	5	05
फ़रवरी 3		श्रवण	4	5	50	15	वृष	कृत्तिका	2	5	03	27		मघा	4	16	03
6		धनिष्ठा	1	12	45	18		कृत्तिका	3	16	00	31		पू.फा.	1	2	53
9		धनिष्ठा	2	19	44	22		कृत्तिका	4	3	06	सितम्बर 3		पू.फा.	2	13	34
13	कुम्भ	धनिष्ठा	3	2	48	25		रोहिणी	1	14	20	7		पू.फा.	3	0	05
16		धनिष्ठा	4	9	57	29		रोहिणी	2	1	42	10		पू.फा.	4	10	27
19		शत.	1	17	12	जून 1		रोहिणी	3	13	09	13		उ.फा.	1	20	41
23		शत.	2	0	35	5		रोहिणी	4	0	41	17	कन्या	उ.फा.	2	6	46
26		शत.	3	8	07	8		मृग.	1	12	16	20		उ.फा.	3	16	44
मार्च 1		शत.	4	15	47	11		मृग.	2	23	55	24		उ.फा.	4	2	33
4		पू.भा.	1	23	35	15	मिथुन	मृग.	3	11	36	27		हस्त	1	12	14
8		पू.भा.	2	7	30	18		मृग.	4	23	22	30		हस्त	2	21	44
11		पू.भा.	3	15	32	22		आर्द्रा	1	11	11	अक्टूबर 4		हस्त	3	7	04
14	मीन	पू.भा.	4	23	42	25		आर्द्रा	2	23	04	7		हस्त	4	16	13
18		उ.भा.	1	8	00	29		आर्द्रा	3	10	59	11		चित्रा	1	1	12
21		उ.भा.	2	16	27	जुलाई 2		आर्द्रा	4	22	55	14		चित्रा	2	10	02
25		उ.भा.	3	1	05	6		पुन.	1	10	50	17	तुला	चित्रा	3	18	44
28		उ.भा.	4	9	53	9		पुन.	2	22	44	21		चित्रा	4	3	17
31		रेवती	1	18	51	13		पुन.	3	10	36	24		स्वाती	1	11	43
अप्रैल 4		रेवती	2	3	59	16	कर्क	पुन.	4	22	27	27		स्वाती	2	20	00
7		रेवती	3	13	15	20		पुष्य	1	10	16	31		स्वाती	3	4	07

तारीख 2018 ई.	राशि	नक्षत्र	चरण	घं. मि. (भा.स्टैं.टा.)	
नवम्बर 3		स्वाती	4	12	04
6		विशा.	1	19	52
10		विशा.	2	3	32
13		विशा.	3	11	05
16	वृश्चिक	विशा.	4	18	31
20		अनु.	1	1	52
23		अनु.	2	9	07
26		अनु.	3	16	16
29		अनु.	4	23	18
दिसम्बर 3		ज्येष्ठा	1	6	13
6		ज्येष्ठा	2	13	03
9		ज्येष्ठा	3	19	48
13		ज्येष्ठा	4	2	30
16	धनु	मूल	1	9	09
19		मूल	2	15	46
22		मूल	3	22	21
26		मूल	4	4	55
29		पू.षा.	1	11	26
(सन् 2019 ई.)					
जनवरी 1		पू.षा.	2	17	56
5		पू.षा.	3	0	23
8		पू.षा.	4	6	51
11		उ.षा.	1	13	20
14	मकर	उ.षा.	2	19	51
18		उ.षा.	3	2	25
21		उ.षा.	4	9	01
24		श्रवण	1	15	41
27		श्रवण	2	22	23
31		श्रवण	3	5	07

ग्रहों के निरयण राशि-नक्षत्रचरण-चार (1 जनवरी, 2018 से 5 अप्रैल, 2019 ई. तक)

सूर्य-चार (सन् 2019 ई.)

तारीख 2019 ई.	राशि	नक्षत्र	चरण	घं.	मि.
				(भा.स्टैं.टा.)	
फरवरी 3		श्रवण	4	11	55
6		धनिष्ठा	1	18	47
10		धनिष्ठा	2	1	44
13	कुम्भ	धनिष्ठा	3	8	48
16		धनिष्ठा	4	15	59
19		शत.	1	23	18
23		शत.	2	6	43
26		शत.	3	14	14
मार्च 1		शत.	4	21	52
5		पू.भा.	1	5	36
8		पू.भा.	2	13	28
11		पू.भा.	3	21	29
15	मीन	पू.भा.	4	5	40
18		उ.भा.	1	14	00
21		उ.भा.	2	22	31
25		उ.भा.	3	7	10
28		उ.भा.	4	15	57
अप्रैल 1		रेवती	1	0	53
4		रेवती	2	9	57

मंगल-चार (सन् 2018 ई.)

तारीख 2018 ई.	राशि	नक्षत्र	चरण	घं.	मि.
जनवरी 1		विशा.	1	3	08
6		विशा.	2	11	32
11		विशा.	3	20	12
17	वृश्चिक	विशा.	4	5	13
22		अनु.	1	14	41
28		अनु.	2	0	39
फरवरी 2		अनु.	3	11	09
7		अनु.	4	22	12
13		ज्येष्ठा	1	9	56

मंगल-चार (सन् 2018-2019 ई.)

तारीख 2018 ई.	राशि	नक्षत्र	चरण	घं.	मि.
				(भा.स्टैं.टा.)	
फरवरी 18		ज्येष्ठा	2	22	30
24		ज्येष्ठा	3	12	04
मार्च 2		ज्येष्ठा	4	2	41
7	धनु	मूल	1	18	29
13		मूल	2	11	42
19		मूल	3	6	41
25		मूल	4	3	46
31		पू.षा.	1	3	17
अप्रैल 6		पू.षा.	2	5	41
12		पू.षा.	3	11	42
18		पू.षा.	4	22	28
25		उ.षा.	1	15	23
मई 2	मकर	उ.षा.	2	16	18
10		उ.षा.	3	4	34
18		उ.षा.	4	10	48
28		श्रवण	1	0	47
जून 9		श्रवण	2	20	44
27	वक्री			2	36
जुलाई 14		श्रवण	1	1	41
27		उ.षा.	4	13	31
अगस्त 9		उ.षा.	3	12	03
27	मार्गी			12	36
सितम्बर 14		उ.षा.	4	22	58
26		श्रवण	1	6	58
अक्टूबर 4		श्रवण	2	22	18
12		श्रवण	3	9	31
19		श्रवण	4	4	16
25		धनिष्ठा	1	12	25
31		धनिष्ठा	2	13	10
नवम्बर 6	कुम्भ	धनिष्ठा	3	8	21
नवम्बर 11		धनिष्ठा	4	23	07
17		शत.	1	10	24
22		शत.	2	19	01
28		शत.	3	1	33
दिसम्बर 3		शत.	4	6	20
8		पू.भा.	1	9	36
13		पू.भा.	2	11	38
18		पू.भा.	3	12	40
23	मीन	पू.भा.	4	12	57
28		उ.भा.	1	12	40
(सन् 2019 ई.)					
जनवरी 2		उ.भा.	2	11	52
7		उ.भा.	3	10	39
12		उ.भा.	4	9	05
17		रेवती	1	7	19
22		रेवती	2	5	28
27		रेवती	3	3	35
फरवरी 1		रेवती	4	1	42
5	मेष	अश्वि.	1	23	49
10		अश्वि.	2	22	00
15		अश्वि.	3	20	19
20		अश्वि.	4	18	51
25		भरणी	1	17	37
मार्च 2		भरणी	2	16	36
7		भरणी	3	15	48
12		भरणी	4	15	15
17		कृत्तिका	1	15	00
22	वृष	कृत्तिका	2	15	06
27		कृत्तिका	3	15	33
अप्रैल 1		कृत्तिका	4	16	18

बुध-चार (सन् 2018 ई.)

तारीख 2018 ई.	राशि	नक्षत्र	चरण	घं.	मि.
				(भा.स्टैं.टा.)	
जनवरी 3		ज्येष्ठा	4	22	47
6	धनु	मूल	1	19	45
9		मूल	2	11	42
12		मूल	3	0	29
14		मूल	4	11	07
16		पू.षा.	1	20	07
19		पू.षा.	2	3	52
21		पू.षा.	3	10	29
23		पू.षा.	4	16	10
25		उ.षा.	1	21	01
28	मकर	उ.षा.	2	1	02
30		उ.षा.	3	4	18
फरवरी 1		उ.षा.	4	6	47
3		श्रवण	1	8	30
5		श्रवण	2	9	29
7		श्रवण	3	9	43
9		श्रवण	4	9	13
11		धनिष्ठा	1	7	59
13		धनिष्ठा	2	6	03
15	कुम्भ	धनिष्ठा	3	3	24
17		धनिष्ठा	4	0	04
18		शत.	1	20	07
20		शत.	2	15	37
22		शत.	3	10	37
24		शत.	4	5	13
25		पू.भा.	1	23	32
27		पू.भा.	2	17	45

ग्रहों के निरयण राशि-नक्षत्रचरण-चार (1 जनवरी, 2018 से 5 अप्रैल, 2019 ई. तक)

बुध-चार (सन् 2018-19 ई.)

तारीख 2018 ई.	राशि	नक्षत्र	चरण	घं. मि. (भा.स्टैं.टा.)
मार्च 1		पू.भा.	3	12 07
3	मीन	पू.भा.	4	6 54
5		उ.भा.	1	2 35
6		उ.भा.	2	23 48
8		उ.भा.	3	23 29
11		उ.भा.	4	3 17
13		रेवती	1	14 50
16		रेवती	2	19 19
23	वक्री			5 48
30		रेवती	1	5 02
अप्रैल 3		उ.भा.	4	9 24
7		उ.भा.	3	18 54
15	मार्गी			14 50
23		उ.भा.	4	17 41
28		रेवती	1	3 31
मई 1		रेवती	2	13 55
4		रेवती	3	13 19
7		रेवती	4	5 54
9	मेष	अश्वि.	1	17 26
12		अश्वि.	2	1 20
14		अश्वि.	3	6 13
16		अश्वि.	4	8 30
18		भरणी	1	8 38
20		भरणी	2	6 51
22		भरणी	3	3 21
23		भरणी	4	22 18
25		कृत्तिका	1	15 55
27	वृष	कृत्तिका	2	8 22
28		कृत्तिका	3	23 43
30		कृत्तिका	4	14 10

तारीख 2018 ई.	राशि	नक्षत्र	चरण	घं. मि. (भा.स्टैं.टा.)
जून 1		रोहिणी	1	3 53
2		रोहिणी	2	16 59
4		रोहिणी	3	5 41
5		रोहिणी	4	18 06
7		मृग.	1	6 26
8		मृग.	2	18 52
10	मिथुन	मृग.	3	7 32
11		मृग.	4	20 40
13		आर्द्रा	1	10 22
15		आर्द्रा	2	0 51
16		आर्द्रा	3	16 19
18		आर्द्रा	4	8 51
20		पुन.	1	2 43
21		पुन.	2	22 05
23		पुन.	3	19 08
25	कर्क	पुन.	4	18 08
27		पुष्य	1	19 21
29		पुष्य	2	23 11
जुलाई 2		पुष्य	3	6 06
4		पुष्य	4	17 02
7		आश्ले.	1	8 52
10		आश्ले.	2	7 51
13		आश्ले.	3	18 18
18		आश्ले.	4	4 09
26	वक्री			10 32
अगस्त 3		आश्ले.	3	12 11
8		आश्ले.	2	1 40
12		आश्ले.	1	11 47
19	मार्गी			9 54
25		आश्ले.	2	18 57

तारीख 2018 ई.	राशि	नक्षत्र	चरण	घं. मि. (भा.स्टैं.टा.)
अगस्त 29		आश्ले.	3	3 16
31		आश्ले.	4	16 12
सितम्बर 2	सिंह	मघा	1	20 59
4		मघा	2	21 08
6		मघा	3	18 31
8		मघा	4	14 13
10		पू.फा.	1	8 54
12		पू.फा.	2	3 04
13		पू.फा.	3	21 03
15		पू.फा.	4	15 08
17		उ.फा.	1	9 29
19	कन्या	उ.फा.	2	4 15
20		उ.फा.	3	23 35
22		उ.फा.	4	19 33
24		हस्त	1	16 12
26		हस्त	2	13 36
28		हस्त	3	11 46
30		हस्त	4	10 45
अक्टूबर 2		चित्रा	1	10 34
4		चित्रा	2	11 13
6	तुला	चित्रा	3	12 43
8		चित्रा	4	15 04
10		स्वाती	1	18 16
12		स्वाती	2	22 22
15		स्वाती	3	3 21
17		स्वाती	4	9 19
19		विशा.	1	16 18
22		विशा.	2	0 24
24		विशा.	3	9 48
26	वृश्चिक	विशा.	4	20 46

तारीख 2018 ई.	राशि	नक्षत्र	चरण	घं. मि. (भा.स्टैं.टा.)
अक्टूबर 29		अनु.	1	9 43
नवम्बर 1		अनु.	2	1 26
3		अनु.	3	21 18
7		अनु.	4	0 12
10		ज्येष्ठा	1	19 03
17	वक्री			7 03
22		अनु.	4	22 59
25		अनु.	3	20 18
28		अनु.	2	7 22
30		अनु.	1	23 10
दिसम्बर 5		विशा.	4	19 12
7	मार्गी			2 51
8		अनु.	1	12 12
14		अनु.	2	3 11
17		अनु.	3	10 35
20		अनु.	4	6 42
22		ज्येष्ठा	1	21 21
25		ज्येष्ठा	2	8 58
27		ज्येष्ठा	3	18 31
30		ज्येष्ठा	4	2 42
(सन् 2019 ई.)				
जनवरी 1	धनु	मूल	1	9 50
3		मूल	2	16 07
5		मूल	3	21 44
8		मूल	4	2 43
10		पू.षा.	1	7 09
12		पू.षा.	2	11 01
14		पू.षा.	3	14 21
16		पू.षा.	4	17 09

ग्रहों के निरयण राशि-नक्षत्रचरण-चार (1 जनवरी, 2018 से 5 अप्रैल, 2019 ई. तक)

बुध-चार (सन् 2019 ई.)

तारीख 2019 ई.	राशि	नक्षत्र	चरण	घं. (भा.स्टैं.टा.)	मि.
जनवरी 18		उ.षा.	1	19	24
20	मकर	उ.षा.	2	21	05
22		उ.षा.	3	22	11
24		उ.षा.	4	22	41
26		श्रवण	1	22	35
28		श्रवण	2	21	54
30		श्रवण	3	20	36
फरवरी 1		श्रवण	4	18	45
3		धनिष्ठा	1	16	21
5		धनिष्ठा	2	13	28
7	कुम्भ	धनिष्ठा	3	10	10
9		धनिष्ठा	4	6	34
11		शत.	1	2	46
12		शत.	2	23	00
14		शत.	3	19	33
16		शत.	4	16	48
18		पू.भा.	1	15	20
20		पू.भा.	2	16	08
22		पू.भा.	3	20	50
25	मीन	पू.भा.	4	8	59
28		उ.भा.	1	16	08
मार्च 5	वक्री			23	49
11		पू.भा.	4	12	44
15	कुम्भ	पू.भा.	3	8	58
18		पू.भा.	2	22	19
23		पू.भा.	1	14	02
28	मार्गी	-		19	29
अप्रैल 3		पू.भा.	2	8	02

गुरु-चार (सन् 2018-19 ई.)

तारीख 2018-19 ई.	राशि	नक्षत्र	चरण	घं. (भा.स्टैं.टा.)	मि.
जनवरी 4		विशा.	2	6	12
27		विशा.	3	21	32
मार्च 9	वक्री			10	17
अप्रैल 19		विशा.	2	7	57
मई 16		विशा.	1	10	56
जून 18		स्वाती	4	5	43
जुलाई 10	मार्गी			22	33
अगस्त 2		विशा.	1	16	55
सितम्बर 3		विशा.	2	6	09
24		विशा.	3	2	45
अक्टूबर 11	वृश्चिक	विशा.	4	19	21
27		अनु.	1	23	06
नवम्बर 12		अनु.	2	7	28
27		अनु.	3	7	09
दिसम्बर 12		अनु.	4	6	24
27		ज्येष्ठा	1	13	54
जनवरी 12		ज्येष्ठा	2	16	37
30		ज्येष्ठा	3	9	55
फरवरी 20		ज्येष्ठा	4	15	40
मार्च 29	धनु	मूल	1	20	05

शुक्र-चार (सन् 2018 ई.)

तारीख	राशि	नक्षत्र	चरण	घं.	मि.
जनवरी 3		पू.षा.	2	0	22
5		पू.षा.	3	15	57
8		पू.षा.	4	7	33
10		उ.षा.	1	23	09
13	मकर	उ.षा.	2	14	45
16		उ.षा.	3	6	21
18		उ.षा.	4	21	58
21		श्रवण	1	13	37
24		श्रवण	2	5	16

शुक्र-चार (सन् 2018 ई.)

तारीख 2018 ई.	राशि	नक्षत्र	चरण	घं. (भा.स्टैं.टा.)	मि.	तारीख 2018 ई.	राशि	नक्षत्र	चरण	घं. (भा.स्टैं.टा.)	मि.
जनवरी 26		श्रवण	3	20	58	अप्रैल 17		कृत्तिका	1	8	38
29		श्रवण	4	12	41	20	वृष	कृत्तिका	2	2	08
फरवरी 1		धनिष्ठा	1	4	25	22		कृत्तिका	3	19	44
3		धनिष्ठा	2	20	11	25		कृत्तिका	4	13	28
6	कुम्भ	धनिष्ठा	3	11	59	28		रोहिणी	1	7	18
9		धनिष्ठा	4	3	48	मई 1		रोहिणी	2	1	15
11		शत.	1	19	38	3		रोहिणी	3	19	19
14		शत.	2	11	31	6		रोहिणी	4	13	30
17		शत.	3	3	26	9		मृग.	1	7	48
19		शत.	4	19	23	12		मृग.	2	2	13
22		पू.भा.	1	11	23	14	मिथुन	मृग.	3	20	46
25		पू.भा.	2	3	26	17		मृग.	4	15	26
27		पू.भा.	3	19	32	20		आर्द्रा	1	10	15
मार्च 2	मीन	पू.भा.	4	11	42	23		आर्द्रा	2	5	13
5		उ.भा.	1	3	55	26		आर्द्रा	3	0	21
7		उ.भा.	2	20	11	28		आर्द्रा	4	19	39
10		उ.भा.	3	12	30	31		पुन.	1	15	08
13		उ.भा.	4	4	53	जून 3		पुन.	2	10	48
15		रेवती	1	21	19	6		पुन.	3	6	39
18		रेवती	2	13	50	9	कर्क	पुन.	4	2	41
21		रेवती	3	6	24	11		पुष्य	1	22	56
23		रेवती	4	23	03	14		पुष्य	2	19	23
26	मेष	अश्वि.	1	15	46	17		पुष्य	3	16	05
29		अश्वि.	2	8	35	20		पुष्य	4	13	02
अप्रैल 1		अश्वि.	3	1	29	23		आश्ले.	1	10	16
3		अश्वि.	4	18	28	26		आश्ले.	2	7	48
6		भरणी	1	11	31	29		आश्ले.	3	5	39
9		भरणी	2	4	40	जुलाई 2		आश्ले.	4	3	51
11		भरणी	3	21	54	5	सिंह	मघा	1	2	25
14		भरणी	4	15	13	8		मघा	2	1	22

ग्रंहों के निरयण राशि-नक्षत्रचरण-चार (1 जनवरी, 2018 से 5 अप्रैल, 2019 ई. तक)

शुक्र-चार (सन् 2018-2019 ई.)

तारीख 2018 ई.	राशि	नक्षत्र	चरण	घं.	मि. (भा.स्टैं.टा.)
जुलाई 11		मघा	3	0	45
14		मघा	4	0	34
17		पू.फा.	1	0	54
20		पू.फा.	2	1	47
23		पू.फा.	3	3	18
26		पू.फा.	4	5	32
29		उ.फा.	1	8	33
अगस्त 1	कन्या	उ.फा.	2	12	27
4		उ.फा.	3	17	19
7		उ.फा.	4	23	18
11		हस्त	1	6	34
14		हस्त	2	15	18
18		हस्त	3	1	48
21		हस्त	4	14	28
25		चित्रा	1	5	47
29		चित्रा	2	0	28
सितम्बर 1	तुला	चित्रा	3	23	27
6		चित्रा	4	4	16
10		स्वाती	1	17	28
15		स्वाती	2	20	15
22		स्वाती	3	2	22
अक्टूबर 4		स्वाती	4	6	46
6	वक्री			0	36
7		स्वाती	3	17	57
19		स्वाती	2	5	19
25		स्वाती	1	4	10
30		चित्रा	4	16	24
नवम्बर 6		चित्रा	3	5	38
16	मार्गी			16	21
27		चित्रा	4	12	00
दिसम्बर 4		स्वाती	1	8	03

तारीख 2018 ई.	राशि	नक्षत्र	चरण	घं.	मि. (भा.स्टैं.टा.)
दिसम्बर 9		स्वाती	2	14	01
14		स्वाती	3	3	30
18		स्वाती	4	7	19
22		विशा.	1	4	39
25		विशा.	2	21	18
29		विशा.	3	10	22

(सन् 2019 ई.)

जनवरी 1	वृश्चिक	विशा.	4	20	41
5		अनु.	1	4	46
8		अनु.	2	11	04
11		अनु.	3	15	53
14		अनु.	4	19	26
17		ज्येष्ठा	1	21	55
20		ज्येष्ठा	2	23	27
24		ज्येष्ठा	3	0	09
27		ज्येष्ठा	4	0	08
29	धनु	मूल	1	23	28
फरवरी 1		मूल	2	22	14
4		मूल	3	20	31
7		मूल	4	18	23
10		पू.षा.	1	15	52
13		पू.षा.	2	13	01
16		पू.षा.	3	9	51
19		पू.षा.	4	6	25
22		उ.षा.	1	2	42
24	मकर	उ.षा.	2	22	45
27		उ.षा.	3	18	35
मार्च 2		उ.षा.	4	14	13
5		श्रवण	1	9	41
8		श्रवण	2	4	59

तारीख 2019 ई.	राशि	नक्षत्र	चरण	घं.	मि. (भा.स्टैं.टा.)
मार्च 11		श्रवण	3	0	10
13		श्रवण	4	19	13
16		धनिष्ठा	1	14	10
19		धनिष्ठा	2	9	00
22	कुम्भ	धनिष्ठा	3	3	45
24		धनिष्ठा	4	22	24
27		शत.	1	16	57
30		शत.	2	11	25
अप्रैल 2		शत.	3	5	49
5		शत.	4	0	09

शनि-चार (सन् 2018-19 ई.)

जनवरी 25		मूल	4	6	32
मार्च 2		पू.षा.	1	23	35
अप्रैल 18	वक्री			7	17
जून 5		मूल	4	6	32
जुलाई 22		मूल	3	17	09
सितम्बर 6	मार्गी			16	40
अक्टूबर 21		मूल	4	6	25
नवम्बर 27		पू.षा.	1	18	14
दिसम्बर27		पू.षा.	2	5	06
जनवरी 24		पू.षा.	3	17	25
फरवरी 25		पू.षा.	4	23	50

राहु-चार (सन् 2018-19 ई.)

फरवरी 22		आश्ले.	1	23	10
अप्रैल 26		पुष्य	4	21	12
जून 28		पुष्य	3	18	45
अगस्त 30		पुष्य	2	16	25
नवम्बर 1		पुष्य	1	14	25
जनवरी 3		पुन.	4	11	54
मार्च 7	मिथुन	पुन.	3	9	36

केतु-चार (सन् 2018-19 ई.)

तारीख 2018-19ई.	राशि	नक्षत्र	चरण	घं.	मि. (भा.स्टैं.टा.)
फरवरी 22		श्रवण	3	23	10
अप्रैल 26		श्रवण	2	21	12
जून 28		श्रवण	1	18	45
अगस्त 30		उ.षा.	4	16	25
नवम्बर 1		उ.षा.	3	14	25
जनवरी 3		उ.षा.	2	11	54
मार्च 7	धनु	उ.षा.	1	9	36

यूरेनस-चार (सन् 2018-19 ई.)

जनवरी 2	मार्गी			19	44
मार्च 31		अश्वि.	2	10	00
मई 31		अश्वि.	3	5	21
अगस्त 7	वक्री			22	21
अक्टूबर 18		अश्वि.	2	17	22
जनवरी 7	मार्गी			1	58
मार्च 22		अश्वि.	3	20	58

नेप्च्यून-चार (सन् 2018-19 ई.)

मार्च 9		पू.भा.	1	9	48
जून 19	वक्री			5	00
अक्टूबर 16		शत.	4	14	35
नवम्बर 25	मार्गी			6	42
जनवरी 2		पू.भा.	1	24	00

प्लूटो-चार (सन् 2018-19 ई.)

मार्च 7		उ.षा.	1	16	01
अप्रैल 22	वक्री			20	52
जून 9		पू.षा.	4	10	07
अक्टूबर 1	मार्गी			7	31
जनवरी 6		उ.षा.	1	19	43

ग्रहों के वक्र/मार्ग उदयास्त अगले पृष्ठ पर देखिये।

ग्रहों के वक्र-मार्ग/उदयास्त की तारीखें

(1 जनवरी, 2018 से 5 अप्रैल, 2019 ई. तक)

ग्रह	वक्री/मार्गी	तारीख
मंगल	वक्री	27 जून, 2018 ई.
मंगल	मार्गी	27 अगस्त, 2018 ई.
बुध	वक्री	23 मार्च, 2018 ई.
बुध	मार्गी	15 अप्रैल, 2018 ई.
बुध	वक्री	26 जुलाई, 2018 ई.
बुध	मार्गी	19 अगस्त, 2018 ई.
बुध	वक्री	17 नवम्बर, 2018 ई.
बुध	मार्गी	7 दिसम्बर, 2018 ई.
बुध	वक्री	5 मार्च, 2019 ई.
बुध	मार्गी	28 मार्च, 2019 ई.
गुरु	वक्री	9 मार्च, 2018 ई.
गुरु	मार्गी	10 जुलाई, 2018 ई.
शुक्र	वक्री	6 अक्टू., 2018 ई.
शुक्र	मार्गी	16 नवम्बर, 2018 ई.
शनि	वक्री	18 अप्रैल, 2018 ई.
शनि	मार्गी	6 सितम्बर, 2018 ई.
यूरेनस	मार्गी	2 जनवरी, 2018 ई.
यूरेनस	वक्री	7 अगस्त, 2018 ई.
यूरेनस	मार्गी	7 जनवरी, 2019 ई.
नेपच्यून	वक्री	19 जून, 2018 ई.
नेपच्यून	मार्गी	25 नवम्बर, 2018 ई.
प्लूटो	वक्री	22 अप्रैल, 2018 ई.
प्लूटो	मार्गी	1 अक्टू., 2018 ई.

ग्रह	उदय/अस्त	तारीख
मंगल	मंगल वि. संवत् 2075 में साल भर उदित रहेगा।	
बुध	पूर्व में अस्त	29 जनवरी, 2018 ई.
बुध	प. में उदित	5 मार्च, 2018 ई.
बुध	प. में अस्त	24 मार्च, 2018 ई.
बुध	पूर्व में उदित	9 अप्रैल, 2018 ई.
बुध	पूर्व में अस्त	26 मई, 2018 ई.
बुध	प. में उदित	17 जून, 2018 ई.
बुध	प. में अस्त	1 अगस्त, 2018 ई.
बुध	पूर्व में उदित	18 अगस्त, 2018 ई.
बुध	पूर्व में अस्त	7 सितम्बर, 2018 ई.
बुध	प. में उदित	9 अक्टू., 2018 ई.
बुध	प. में अस्त	21 नवम्बर, 2018 ई.
बुध	पूर्व में उदित	3 दिसम्बर, 2018 ई.
बुध	पूर्व में अस्त	9 जनवरी, 2019 ई.
बुध	प. में उदित	15 फरवरी, 2019 ई.
बुध	प. में अस्त	7 मार्च, 2019 ई.
बुध	पूर्व में उदित	22 मार्च, 2019 ई.
गुरु	अस्त	11 नवम्बर, 2018 ई.
गुरु	उदित	6 दिसम्बर, 2018 ई.
शुक्र	प. में उदित	1 फरवरी, 2018 ई.
शुक्र	प. में अस्त	17 अक्टू., 2018 ई.
शुक्र	पूर्व में उदित	31 अक्टू., 2018 ई.
शनि	उदित	8 जनवरी, 2018 ई.
शनि	अस्त	16 दिसम्बर, 2018 ई.
शनि	उदित	19 जनवरी, 2019 ई.

ग्रहोदयास्त निर्णय

सूर्य, चन्द्र आदि सभी ग्रहों के सूक्ष्म दैनिक उदयास्तकाल, चन्द्रदर्शन की तारीख तथा मंगल आदि के लोप-दर्शन की तारीखें ज्ञात करने की सरलातिसरल प्रक्रिया इस पुस्तक में आप पायेंगे। प्राचीन एवं नवीन ज्योतिर्गणित-ग्रन्थों में उपलब्ध ग्रहों के दैनिक उदयास्त का काल तथा लोप-दर्शन का दिन जानने की जटिल गणित-प्रक्रियाओं को लेखक ने स्वनिर्मित मौलिक सारणियों तथा शैली द्वारा आश्चर्यजनक रूप में सुबोध, सरल बना दिया है। अनेकों उदाहरणों द्वारा सभी गणित-प्रक्रियाओं को पूरी तरह स्पष्ट किया गया है।

0° से 63° तक के प्रत्येक अक्षांश का दैनिक सूक्ष्म सूर्योदयास्तकाल 48 पृष्ठों की एक विशाल सारणी में दिया गया है, जिससे विश्व के उत्तरी या दक्षिणी अक्षांश के किसी भी स्थल का सूर्योदयास्तकाल स्थानीय (क्षेत्रीय) स्टैं. टा. में तुरन्त जाना जा सकता है।

गुरु और शुक्र के उदयास्त (लोप-दर्शन) की सन् 2001 से 3000 ई. तक के (एक हज़ार वर्षों के) लिए 'उन्नतांश पद्धति' से निर्णीत वेधसिद्ध सूक्ष्म, शुद्ध तारीखें इस पुस्तक की अनुपम विशेषता है। किस वर्ष में किस भारतीय अक्षांश पर गुरु का लोप-दर्शन, शुक्र का पश्चिमलोप-पूर्वदर्शन या पूर्वलोप-पश्चिम-दर्शन किस तारीख को होगा?—यह पुस्तक में दी गयी विलक्षण सारणी पर दृष्टि डालते ही आप (ज्योतिषानभिज्ञ सामान्य व्यक्ति भी) तुरन्त विद्युद्गति से जान लेंगे। इसे अतिशयोक्ति न समझा जाए। लेखक की प्रतिज्ञा है—ग्रहों के उदयास्त, लोप-दर्शन पर उनका यह प्रकाशन सर्वथा अपनी ही तरह का है।

मूल्य Rs. 300/- + डाकव्यय Rs. 50/-

पुस्तक मिलने का पता—

श्रीमती वीना चतुर्वेदी, M.A., M.Phil,
'अभिजित् प्रकाशन', कोठी नं. 59/6,
P.O. पंचकूला (हरियाणा)-134 109,
Phone: 0172-2565303

अक्षांशादि सारणी (भारत के सभी ज़िला स्थलों एवम् प्रसिद्ध नगरों के लिए)

संक्षिप्तरुपः– अं. नि.= अण्डेमान एवं निकोबार, अरुणा.= अरुणाचल प्रदेश, आं.=आन्ध्र प्रदेश, आसा.= आसाम , उ.= उड़ीसा, उ.प्र.=उत्तरप्रदेश, उ.आं उत्तरांचल, क.= कर्णाटक , के.= केरल, गु.= गुजरात, गोवा= गोवा, का.= जम्मू–काश्मीर, ता.= तामिलनाडु, त्रि.= त्रिपुरा, दा.ना.= दादर एण्ड नागर हवेली, डा.= डामन ड्यू, ना.= नागालैण्ड, बं.= प. बंगाल, पं.= पंजाब, पां.= पाण्डिचेरी, बि.=बिहार, झा.ख.= झारखण्ड, मणि.= मणिपुर, म.प्र.= मध्यप्रदेश, छ.ग.= छत्तीसगढ़, म.= महाराष्ट्र, मिज़ो.= मिज़ोरम, मे.= मेघालय, रा.= राजस्थान, लक्ष.= लक्षद्वीप, सि.= सिक्किम, ह.= हरियाणा, हि.= हिमाचल प्रदेश,

नगर		अक्षांश (उत्तर) अं. क.	रेखांश (पूर्वी) अं. क.	स्टैंडर्ड अन्तर मि. से.
अकबरपुर	(उ.प्र.)	26 25	82 33	+ 0 12
अंकलेश्वर	(गु.)	21 38	73 02	−37 52
अकोला	(म.)	20 40	77 05	−21 40
अखनूर	(का.)	32 53	74 45	−31 00
अगरतला	(त्रि.)	23 48	91 15	+35 00
अगरोहा	(ह.)	29 21	75 38	−27 28
अंगुल	(उ.)	20 48	85 04	+10 16
अच्छीवाल	(का.)	33 41	75 14	−29 04
अजन्ता	(म.)	20 30	75 48	−26 48
अजनाला	(पं.)	31 51	74 48	−30 48
अजमेर	(रा.)	26 27	74 42	−31 12
अटारी	(पं.)	31 36	74 35	−31 40
अतनेर	(म.प्र.)	21 40	77 59	−18 04
अनन्तनाग	(का.)	33 44	75 10	−29 20
अनन्तपुर	(आं.)	14 42	77 36	−19 36
अनामलै	(ता.)	10 34	76 50	−22 40
अनूपगढ़	(रा.)	29 07	73 06	−37 36
अनूपशहर	(उ.प्र.)	28 22	78 16	−16 56
अबोहर	(पं.)	30 09	74 11	−33 16
अमरकंटक	(म.प्र.)	22 40	81 45	− 3 00
अमरनाथगुफा	(का.)	34 13	75 32	−27 52
अमरावती	(म.)	20 56	77 45	−19 00
अमरावती	(आं.)	16 35	80 20	− 8 40
अमरेली	(गु.)	21 36	71 18	−44 48
अमरोहा	(उ.प्र.)	28 54	78 29	−16 04
अमलापुरम्	(आं.)	16 36	82 03	− 1 48
अमलोह	(पं.)	30 37	76 14	−25 04
अमीनगांव	(आसा.)	26 13	91 45	+37 00
अमृतसर	(पं.)	31 37	74 55	−30 20
अमेठी	(उ.प्र.)	26 08	81 50	− 2 40
अम्ब	(हि.)	31 42	76 07	−25 32
अम्बाला	(ह.)	30 21	76 52	−22 32
अम्बाह	(उ.प्र.)	26 43	78 15	−17 00
अम्बिकापुर	(छ.ग.)	23 07	83 12	+ 2 48
अयोध्या	(उ.प्र.)	26 48	82 12	− 1 12
अरकोट	(ता.)	12 54	79 20	−12 40
अरकोणम्	(ता.)	13 05	79 40	−11 20
अर्की	(हि.)	31 09	76 58	−22 08
अर्वी.	(म.)	21 00	78 18	−16 48
अरारिया	(बि.)	26 08	87 24	+19 36
अल्मोड़ा	(उ.आं.)	29 37	79 40	−11 20
अलवर	(रा.)	27 34	76 38	−23 28
अलीगंज	(उ.प्र.)	27 30	79 11	−13 16
अलीगढ़	(उ.प्र.)	27 53	78 05	−17 40
अलीपुर	(बं.)	22 32	88 20	+23 20
अलीपुर दुआर	(बं.)	26 29	89 44	+28 56
अलीबाग	(म.)	18 38	72 55	−38 20
अवनिगड्डा	(आं.)	16 03	80 59	− 6 04
अशोकनगर	(म.प्र.)	24 33	77 43	−19 08
अहमदनगर	(म.)	19 05	74 44	−31 04
अहमदाबाद	(गु.)	23 03	72 40	−39 20
अहवा	(गु.)	20 44	73 41	−35 16
आगरा	(उ.प्र.)	27 11	78 01	−17 56
आजमगढ़	(उ.प्र.)	26 04	83 11	+ 2 44
आडोनी	(आं.)	15 38	77 16	−20 56
आदिलाबाद	(आं.)	19 40	78 31	−15 56
आनन्द	(गु.)	22 34	73 01	−37 56
आनन्दपुरसाहिब	(पं.)	31 15	76 31	−23 56
आनी	(हि.)	31 27	77 25	−20 20
आबू	(रा.)	24 40	72 45	−39 00
आरा	(बि.)	25 34	84 40	+ 8 40
आरामबाग	(बं.)	22 53	87 47	+21 08
आसनसोल	(बं.)	23 41	86 59	+17 56
आसिन्द	(रा.)	25 42	74 21	−32 36
इच्छापुरम्	(उ.)	19 10	84 43	+ 8 52
इटारसी	(म.प्र.)	22 37	77 45	−19 00
इटावा	(उ.प्र.)	26 47	79 02	−13 52
इन्दौर	(म.प्र.)	22 44	75 50	−26 40
इन्दौरा	(हि.)	32 07	75 40	−27 20
इम्फाल	(मणि.)	24 47	93 57	+45 48
इलाहाबाद	(उ.प्र.)	देखें	प्रयाग	–
ईटानगर	(अरुणा.)	27 05	93 40	+44 40
ईसागढ़	(म.प्र.)	24 50	77 53	−18 28
उखरूल	(मणि.)	25 07	94 23	+47 32
उगाला	(ह.)	30 11	76 59	−22 04
उज्जैन	(म.प्र.)	23 09	75 43	−27 08
उड़ी	(का.)	34 05	74 01	−33 56
उड्डुपी	(क.)	13 23	74 45	−31 00
उत्तरकाशी	(उ.आं.)	30 44	78 27	−16 12
उदयगिरि	(उ.)	19 08	84 10	+ 6 40
उदयपुर	(त्रि.)	23 32	91 29	+35 56

अक्षांशादि सारणी (भारत के सभी ज़िला स्थलों एवम् प्रसिद्ध नगरों के लिए)

नगर		अक्षांश (उत्तर) अं. क.	रेखांश (पूर्वी) अं. क.	स्टैंडर्ड अन्तर मि. से.	नगर		अक्षांश (उत्तर) अं. क.	रेखांश (पूर्वी) अं. क.	स्टैंडर्ड अन्तर मि. से.	नगर		अक्षांश (उत्तर) अं. क.	रेखांश (पूर्वी) अं. क.	स्टैंडर्ड अन्तर मि. से.
उदयपुर	(रा.)	24 35	73 41	−35 16	कपूरथला	(पं.)	31 23	75 23	−28 28	कालिकट	(के.)	11 15	75 46	−26 56
उन्नाव	(उ.प्र.)	26 32	80 30	− 8 00	करतारपुर	(पं.)	31 27	75 30	−28 00	कालिम्पोंग	(बं.)	27 04	88 29	+23 56
उपशी	(का.)	33 52	77 50	−18 40	कर्णप्रयाग	(उ.आं.)	30 13	79 17	−12 52	काशी	(उ.प्र.)	देखें	वाराणसी	− −
उमरकोट	(उ.)	19 39	82 18	− 0 48	करनाल	(ह.)	29 42	77 02	−21 52	कियारीघाट	(हि.)	31 00	77 05	−21 40
उरई	(उ.प्र.)	25 59	79 28	−12 08	करसोग	(हि.)	31 23	77 13	−21 08	किरकी	(म.)	18 36	73 57	−34 12
उल्हासनगर	(म.)	19 13	73 07	−37 32	कराड	(म.)	17 15	74 12	−33 12	किश्तवाड़	(का.)	33 19	75 48	−26 48
ऊटकमण्ड	(ता.)	11 24	76 44	−23 04	करूर	(ता.)	10 58	78 03	−17 48	किशनगंज	(बि.)	26 10	87 56	+21 44
ऊधमपुर	(का.)	32 54	75 06	−29 36	कालाअम्ब	(हि.)	30 30	77 13	−21 08	किशनगढ़ (अजमेर)	(रा.)	26 34	74 52	−30 32
ऊना	(हि.)	31 29	76 17	−24 52	काल्पा	(हि.)	31 32	78 15	−17 00	कीरतपुरसाहिब	(पं.)	31 11	76 34	−23 44
एकलिंगजी	(रा.)	24 43	73 46	−34 56	करीमगंज	(आसा.)	24 48	92 30	+40 00	कुड्डप्पा	(ता.)	14 28	78 50	−14 40
एटा	(उ.प्र.)	27 38	78 40	−15 20	करीमनगर	(आं.)	18 27	79 06	−13 36	कुड्डालूर	(ता.)	11 43	79 49	−10 44
एरोड	(ता.)	11 20	77 46	−18 56	करौली	(रा.)	26 30	77 01	−21 56	कुफरी	(हि.)	31 06	77 12	−21 12
एर्नाकुलम्	(के.)	10 00	76 16	−24 56	कर्नूल	(आं.)	15 50	78 05	−17 40	कुंभकोणम्	(ता.)	10 59	79 24	−12 24
एलिचपुर	(म.)	21 18	77 33	−19 48	कल्याण	(म.)	19 17	73 11	−37 16	कुमारी अन्तरीप	(ता.)	8 05	77 34	−19 44
एलुरु	(आं.)	16 43	81 09	− 5 24	कवरत्ती	(लक्ष.)	10 33	72 38	−39 28	कुम्हारहट्टी	(हि.)	30 53	77 03	−21 48
एलेप्पे	(के.)	9 30	76 22	−24 32	कवार्धा	(छ.ग.)	22 00	81 15	− 5 00	कुराली	(पं.)	30 50	76 35	−23 40
एलोरा	(म.)	20 04	75 15	−29 00	कसारागोड	(के.)	12 30	75 00	−30 00	कुरुक्षेत्र	(ह.)	29 59	76 50	−22 40
ऐजावल	(मिज़ो.)	23 43	92 44	+40 56	कसौली	(हि.)	30 55	76 57	−22 12	कुल्लू	(हि.)	31 58	77 06	−21 36
ओखा	(गु.)	22 26	69 02	−53 52	काकिनाडा	(आं.)	16 56	82 13	− 1 08	कूच बिहार	(बं.)	26 19	89 26	+27 44
ओंगोल	(आं.)	15 30	80 06	− 9 36	कांकेर	(म.प्र.)	20 17	81 32	− 3 52	कृष्णानगर	(बं.)	23 24	88 30	+24 00
औरैय्या	(उ.प्र.)	26 28	79 31	−11 56	कांगड़ा	(हि.)	32 05	76 18	−24 48	केओंजरगढ़	(उ.)	21 38	85 35	+12 20
ओस्मानाबाद	(म.)	18 09	76 06	−25 36	कांचीपुरम्	(ता.)	12 50	79 44	−11 04	केन्द्रपाड़ा	(उ.)	20 30	86 25	+15 40
औट	(हि.)	31 47	77 11	−21 16	काठगोदाम	(उ.आं.)	29 16	79 32	−11 52	केदारनाथ	(उ.आं.)	30 44	79 04	−13 44
औरंगाबाद	(म.)	19 52	75 22	−28 32	काठियावाड़	(गु.)	22 00	71 00	−46 00	केप कैमोरिन	(ता.)	देखें	कुमारी	अन्तरीप
कटक	(उ.)	20 26	85 56	+13 44	कादियां	(पं.)	31 49	75 23	−28 28	केसरी	(ह.)	30 14	76 54	−22 24
कटनी	(म.प्र.)	23 47	80 27	− 8 12	कानपुर	(उ.प्र.)	26 28	80 21	− 8 36	कैथल	(ह.)	29 48	76 26	−24 16
कटरा	(का.)	32 59	74 57	−30 12	कामठी (काम्पटी)	(म.)	21 12	79 16	−12 56	कैलाशहर	(त्रि.)	24 18	92 01	+38 04
कटराई	(हि.)	32 07	77 07	−21 32	कारकाल	(क.)	13 12	74 59	−30 04	कोचीन	(के.)	9 58	76 14	−25 04
कटिहार	(बि.)	25 30	87 35	+20 20	कारगिल	(का.)	34 31	76 13	−25 08	कोटकपूरा	(पं.)	30 36	74 54	−30 24
कठुआ	(का.)	32 22	75 32	−27 52	कारवाड़	(क.)	14 50	74 09	−33 24	कोटखाई	(हि.)	31 08	77 36	−19 36
कण्डाघाट	(हि.)	30 58	77 07	−21 32	कारिकाल	(पां.)	10 55	79 50	−10 40	कोटगढ़	(हि.)	31 19	77 29	−20 04
कन्नूर	(के.)	11 52	75 25	−28 20	कालका	(ह.)	30 50	76 56	−22 16	कोटा	(रा.)	25 10	75 52	−26 32
कन्नौज	(उ.प्र.)	27 04	79 55	−10 20	कालाहस्ती	(आं.)	13 48	79 42	−11 12	कोट्टागुडम्	(आं.)	17 32	80 39	− 7 24

अक्षांशादि सारणी (भारत के सभी ज़िला स्थलों एवम् प्रसिद्ध नगरों के लिए)

नगर		अक्षांश (उत्तर) अं. क.	रेखांश (पूर्व) अं. क.	स्टैंडर्ड अन्तर मि. से.	नगर		अक्षांश (उत्तर) अं. क.	रेखांश (पूर्व) अं. क.	स्टैंडर्ड अन्तर मि. से.	नगर		अक्षांश (उत्तर) अं. क.	रेखांश (पूर्व) अं. क.	स्टैंडर्ड अन्तर मि. से.
कोट्टायम्	(के.)	9 34	76 31	−23 56	गढ़चिराली	(म.)	20 12	80 00	−10 00	घरौण्डा	(ह.)	29 33	76 58	−22 08
कोटद्वारा	(उ.आं.)	29 45	78 32	−15 52	गढ़मुक्तेश्वर	(उ.प्र.)	28 48	78 06	−17 36	घाटल	(बं.)	22 40	87 43	+20 52
कोंटई	(बं.)	21 50	87 48	+21 12	गढ़वा (गरवा)	(झा.खं.)	24 10	83 52	+ 5 28	घाटसिला	(झा.खं.)	22 36	86 29	+15 56
कोडैकनाल	(ता.)	10 14	77 29	−20 04	गढ़शंकर	(पं.)	31 13	76 08	−25 28	घुमारवीं	(हि.)	31 26	76 43	−23 08
कोणार्क	(उ.)	19 54	86 07	+14 28	गदग	(क.)	15 26	75 42	−27 12	चच्योट	(हि.)	31 32	77 01	−21 56
कोप्पल	(क.)	15 21	76 09	−25 24	गया	(बि.)	24 49	85 01	+10 04	चण्डीगढ़	(यू.टी.)	30 45	76 50	−22 40
कोयम्बटूर	(ता.)	11 00	77 00	−22 00	गाजियाबाद	(उ.प्र.)	28 40	77 26	−20 16	चण्डीमन्दिर कैंट	(ह.)	30 42	76 52	−22 32
कोरबा	(छ.ग.)	22 22	82 42	+ 0 48	गाजीपुर	(उ.प्र.)	25 35	83 34	+ 4 16	चन्दननगर	(बं.)	22 51	88 21	+23 24
कोरापुट	(उ.)	18 48	82 41	+ 0 44	गांधीधाम	(गु.)	23 06	70 08	−49 28	चन्दौसी	(उ.प्र.)	28 27	78 46	−14 56
कोलकाता	(बं.)	22 34	88 24	+23 36	गिरडीह	(झा.खं.)	24 12	86 21	+15 24	चन्द्रपुर	(म.)	19 57	79 18	−12 48
कोल्हापुर	(म.)	16 42	74 19	−32 44	गिलगित	(का.)	35 55	74 21	−32 36	चम्बा	(हि.)	32 34	76 08	−25 28
कोलार	(क.)	13 10	78 10	−17 20	गुड़गांव	(ह.)	28 27	77 04	−21 44	चमौली	(उ.आं.)	30 24	79 21	−12 36
कोल्लेगाल	(क.)	12 08	77 06	−21 36	गुंटकल	(आं.)	15 11	77 24	−20 24	चरखी दादरी	(ह.)	28 37	76 18	−24 48
कोलेबीरा	(बि.)	22 43	84 42	+ 8 48	गुंटूर	(आं.)	16 20	80 27	− 8 12	चामुण्डा जी	(हि.)	32 07	76 23	−24 28
कोहिमा	(नागा.)	25 39	94 08	+46 32	गुड़ीवाड़ा	(आं.)	16 27	81 00	− 6 00	चायल	(हि.)	30 59	77 12	−21 12
क्विलोन	(के.)	8 54	76 38	−23 28	गुडूर	(आं.)	14 10	79 51	−10 36	चास	(झा.खं.)	23 38	86 10	+14 40
खजियार	(हि.)	32 32	76 04	−25 44	गुना	(म.प्र.)	24 40	77 20	−20 40	चिक मंगलूर	(क.)	13 19	75 47	−26 52
खड़गपुर	(बं.)	22 20	87 20	+19 20	गुम्मा	(हि.)	31 06	77 28	−20 08	चिंगलपुट	(ता.)	12 42	80 01	− 9 56
खंडवा	(म.प्र.)	21 50	76 23	−24 28	गुरदासपुर	(पं.)	32 02	75 27	−28 12	चित्तरंजन	(बं.)	23 52	86 52	+17 28
खतौली	(उ.प्र.)	29 17	77 43	−19 08	गुलबर्गा	(क.)	17 20	76 50	−22 40	चित्तूर	(आं.)	13 12	79 07	−13 32
खन्ना	(पं.)	30 42	76 13	−25 08	गुलमर्ग	(का.)	34 05	74 25	−32 20	चितौड़गढ़	(रा.)	24 54	74 40	−31 20
खम्भालिया	(गु.)	22 12	69 39	−51 24	गुवाहाटी	(आसा.)	26 10	91 45	+37 00	चित्रदुर्ग	(क.)	14 14	76 24	−24 24
खम्मम्	(आं.)	17 16	80 13	− 9 08	गोइन्दवाल	(पं.)	31 22	75 08	−29 28	चित्रौद	(गु.)	23 25	70 42	−47 12
खरगोन	(म.प्र.)	21 52	75 36	−27 36	गोंडल	(गु.)	21 56	70 50	−46 40	चिदम्बरम्	(ता.)	11 25	79 42	−11 12
खरड़	(पं.)	30 45	76 37	−23 32	गोंडा	(उ.प्र.)	27 08	82 01	− 1 56	चिन्तपूरणी	(हि.)	31 49	76 07	−25 32
खलीलाबाद	(उ.प्र.)	26 47	83 04	+ 2 16	गोधरा	(गु.)	22 49	73 40	−35 20	चिनसुरा	(बं.)	22 53	88 25	+23 40
खुर्जा	(उ.प्र.)	28 13	77 50	−18 40	गोपालगंज	(बि.)	26 28	84 26	+ 7 44	चिरगांव	(उ.प्र.)	25 35	78 49	−14 44
खुर्दा	(उ.)	20 10	85 38	+12 32	गोम्पा	(का.)	35 02	77 20	−20 40	चिराला	(आं.)	15 50	80 21	− 8 36
खेड़ा	(गु.)	22 45	72 45	−39 00	गोरखपुर	(उ.प्र.)	26 45	83 22	+ 3 28	चुंगतास	(का.)	35 37	78 37	−15 32
खेमकरण	(पं.)	31 08	74 34	−31 44	गोरस	(म.प्र.)	25 32	76 56	−22 16	चुनार	(उ.प्र.)	25 08	82 56	+ 1 44
गगरेट	(हि.)	31 40	76 04	−25 44	गोहाना	(ह.)	29 08	76 42	−23 12	चुशुल	(का.)	33 34	78 38	−15 28
गंगटोक	(सि.)	27 22	88 36	+24 24	गौंडीया	(म.)	21 26	80 14	− 9 04	चूड़चांदपुर	(मणि.)	24 19	93 40	+44 40
गंजम	(उ.)	19 28	85 05	+10 20	ग्वालियर	(म.प्र.)	26 14	78 10	−17 20	चूरू	(रा.)	28 19	75 01	−29 56

अक्षांशादि सारणी (भारत के सभी ज़िला स्थलों एवम् प्रसिद्ध नगरों के लिए)

नगर		अक्षांश (उत्तर) अं. क.	रेखांश (पूर्वी) अं. क.	स्टैंडर्ड अन्तर मि. से.
चेन्नई	(ता.)	देखें	मद्रास	–
चेरापूंजी	(मे.)	25 17	91 42	+36 48
चौपाल	(हि.)	30 57	77 36	−19 36
छतरपुर	(उ.)	19 24	85 00	+10 00
छतरपुर	(म.प्र.)	24 54	79 38	−11 28
छपरा	(बि.)	25 47	84 45	+ 9 00
छिंदवाड़ा	(म.प्र.)	22 03	78 58	−14 08
छिब्रामऊ	(उ.प्र.)	27 09	79 31	−11 56
छोटा उदयपुर	(गु.)	22 19	74 01	−33 56
जगदलपुर	(छ.ग.)	19 05	82 04	− 1 44
जगरांव	(पं.)	30 47	75 29	−28 04
जगाधरी	(ह.)	30 10	77 18	−20 48
जंगीपुर	(बं.)	24 28	88 04	+22 16
जण्ड्याला	(पं.)	31 36	75 03	−29 48
जतोग	(हि.)	31 06	77 07	−21 32
जनगांव	(आं.प्र.)	17 44	79 10	−13 20
जबलपुर	(म.प्र.)	23 10	79 59	−10 04
जम्बूसार	(गु.)	22 00	72 50	−38 40
जमशेदपुर	(बि.)	22 50	86 10	+14 40
जमालपुर	(बि.)	25 19	86 32	+16 08
जमूई	(बि.)	24 55	86 13	+14 52
जम्मू	(का.)	32 43	74 54	−30 24
जयपुर	(आसा.)	27 14	95 24	+51 36
जयपुर	(रा.)	26 55	75 52	−26 32
जलगांव	(म.)	21 03	75 39	−27 24
जलपाईगुड़ी	(बं.)	26 31	88 44	+24 56
जलालाबाद	(उ.प्र.)	27 43	79 40	−11 20
जशपुरनगर	(छ.ग.)	22 53	84 12	+ 6 48
जसरा	(उ.प्र.)	25 17	81 48	− 2 48
जसरोटा	(का.)	32 29	75 27	−28 12
जाखल	(ह.)	29 48	75 50	−26 40
जामनगर	(गु.)	22 28	70 06	−49 36
जालना	(म.)	19 50	75 58	−26 08
जालन्धर	(पं.)	31 19	75 34	−27 44
जालेश्वर	(उ.)	21 48	87 14	+18 56
जालोर	(रा.)	25 22	72 38	−39 28
जालौन	(उ.प्र.)	26 09	79 21	−12 36
ज़िरो	(अरुणा.)	27 32	93 47	+45 08
जींद	(ह.)	29 19	76 19	−24 44
ज़ीरा	(पं.)	30 58	74 59	−30 04
जुब्बल	(हि.)	31 07	77 39	−19 14
जूनागढ़	(गु.)	21 32	70 34	−47 44
जेतपुर	(गु.)	21 43	70 42	−47 12
जैतों	(पं.)	30 28	74 53	−30 28
जैसलमेर	(रा.)	26 55	70 54	−46 24
जोगिन्द्रनगर	(हि.)	31 59	76 46	−22 56
जोधपुर	(रा.)	26 18	73 04	−37 44
जोरहाट	(आसा.)	26 45	94 12	+46 48
जौनपुर	(उ.प्र.)	25 44	82 41	+ 0 44
ज्वालाजी	(हि.)	31 53	76 22	−24 32
ज्वालामुखी	(हि.)	31 53	76 19	−24 44
झज्जर	(ह.)	28 37	76 39	−23 24
झाबुआ	(म.प्र.)	22 45	74 38	−31 28
झरिया	(झा.खं.)	23 45	86 24	+15 36
झांसी	(उ.प्र.)	25 26	78 35	−15 40
झालरापाटन	(रा.)	24 33	76 10	−25 20
झालावाड	(रा.)	24 36	76 09	−25 24
झुंझुनू	(रा.)	28 06	75 25	−28 20
टांडा उरमुर	(पं.)	31 42	75 38	−27 28
टिकापाड़ा डैम	(उ.)	20 32	84 56	+ 9 44
टिथवाल	(का.)	34 24	73 47	−34 52
टिहरी	(उ.आं.)	30 20	78 30	−16 00
टीकमगढ़	(म.प्र.)	24 45	78 53	−14 28
टीहरा सुजानपुर	(हि.)	31 51	76 32	−23 52
टुंकुरें	(क.)	13 21	77 05	−21 40
टूटीकोरिन	(ता.)	8 48	78 11	−17 16
टुण्डला	(उ.प्र.)	27 12	78 17	−16 52
टोंक	(रा.)	26 11	75 50	−26 40
टोडा रायसिंह	(रा.)	26 00	75 29	−28 04
टोहाना	(ह.)	29 42	75 54	−26 24
ट्रावनकोर	(के.)	9 00	77 00	−22 00
ठयोग	(हि.)	31 07	77 21	−20 36
डगशाई	(हि.)	30 53	77 03	−21 48
डबवाली	(पं.)	29 58	74 45	−31 00
डमटाल	(हि.)	32 12	75 40	−27 20
डलहौज़ी	(हि.)	32 32	75 59	−26 04
डामन	(डा.)	20 25	72 53	−38 28
डायमंड हार्बर	(बं.)	22 12	88 12	+22 48
डालटनगंज	(झा.खं.)	24 02	84 04	+ 6 16
डिगबोई	(आसा.)	27 22	95 40	+52 40
डिंडीगुल	(क.)	10 22	78 00	−18 00
डिबाई	(उ.प्र.)	28 13	78 15	−17 00
डिब्रूगढ़	(आसा.)	27 29	94 56	+49 44
डीडवाना	(रा.)	27 24	74 34	−31 44
डीसा	(गु.)	24 14	72 13	−41 08
डूंगरपुर	(रा.)	23 50	73 43	−35 08
डोडा	(का.)	33 10	75 35	−27 40
ड्यू	(डा.)	20 42	71 01	−45 56
ढुबरी	(आसा.)	26 02	89 58	+29 52
तंजावर	(ता.)	10 46	79 09	−13 24
तपा	(पं.)	30 19	75 21	−28 36
तरनतारन	(पं.)	31 27	74 58	−30 08
तवांग	(अरुणा.)	27 35	91 52	+37 28
तांगला	(आसा.)	26 40	91 57	+37 48
ताड़पत्री	(आं.)	14 55	77 59	−18 04
तामलुक	(बं.)	22 18	87 55	+21 40
ताम्बरम्	(ता.)	12 55	80 07	− 9 32
तारकेश्वर	(बं.)	22 54	88 02	+22 08
तारा	(गु.)	24 00	71 51	−42 36

अक्षांशादि सारणी (भारत के सभी ज़िला स्थलों एवम् प्रसिद्ध नगरों के लिए)

नगर		अक्षांश (उत्तर) अं. क.	रेखांश (पूर्व) अं. क.	स्टैंडर्ड अन्तर मि. से.
तारादेवी	(हि.)	31 03	77 08	−21 28
तिनसुकिया	(आसा.)	27 28	95 20	+51 20
तिरुवनन्तपुरम्	(के.)	8 30	76 58	−22 08
तिरुपति	(आं.)	13 39	79 25	−12 20
तिरुप्पर	(क.)	11 05	77 20	−20 40
तिरुवन्नामलै	(ता.)	12 13	79 04	−13 44
तुरा	(मे.)	25 30	90 13	+30 52
तेजपुर	(आसा.)	26 38	92 49	+41 16
तेनाली	(आं.)	16 13	80 36	− 7 36
तेरुनेलवेली	(ता.)	8 45	77 43	−19 08
त्रिचुरापल्ली	(ता.)	10 49	78 41	−15 16
त्रिचूर	(के.)	10 32	76 14	−25 04
त्रिवेन्द्रम्	(के.)	देखें —	तिरुवनन्तपुरम्	
थराड	(गु.)	24 26	71 40	−43 20
थानेधार	(हि.)	31 20	77 34	−19 44
थानेसर	(ह.)	29 58	76 56	−22 16
दतिया	(म.प्र.)	25 39	78 27	−16 12
दन्तेवाड़ा	(छ.ग.)	18 52	81 22	− 4 32
दभोई	(गु.)	22 08	73 28	−36 08
दमोह	(म.प्र.)	23 50	79 29	−12 04
दरभंगा	(बि.)	26 10	85 57	+13 48
दसूहा	(पं.)	31 49	75 38	−27 28
दादरी	(ह.)	28 34	77 33	−19 48
दानापुर	(बि.)	25 38	85 05	+10 20
दार्जिलिंग	(बं.)	27 02	88 16	+23 04
दावनगेरे	(क.)	14 30	75 52	−26 32
दिल्ली	(यू.टी.)	28 38	77 12	−21 12
दीनानगर	(पं.)	32 09	75 28	−28 08
दीमापुर	(नागा.)	25 53	93 43	+44 52
दुजाना	(ह.)	28 41	76 37	−23 32
दुमका	(झा.खं.)	24 16	87 15	+19 00
दुर्ग	(म.प्र.)	21 11	81 17	− 4 52
दुर्गापुर	(बं.)	23 29	87 20	+19 20
देओगढ़	(उ.)	21 32	84 46	+ 9 04
देओट सिद्ध	(हि.)	31 28	76 34	−23 44
देवघर	(बि.)	24 30	86 42	+16 48
देवप्रयाग	(उ.आं.)	30 09	78 37	−15 32
देवबन्द	(उ.प्र.)	29 42	77 41	−19 16
देवरिया	(उ.प्र.)	26 31	83 47	+ 5 08
देवलाली	(म.)	19 58	73 52	−34 32
देवास	(म.प्र.)	22 58	76 06	−25 36
देहरा गोपीपुर	(हि.)	31 54	76 13	−25 08
देहरादून	(उ.आं.)	30 19	78 02	−17 52
देहरी	(बि.)	24 52	84 11	+ 6 44
दोराहा मण्डी	(पं.)	30 49	76 02	−25 52
दौसा	(रा.)	26 51	76 21	−24 36
द्रास	(का.)	34 27	75 46	−26 56
द्वारिका	(गु.)	22 14	69 02	−53 52
धनबाद	(झा.खं.)	23 47	86 30	+16 00
धनुष्कोडी	(ता.)	9 12	79 25	−12 20
धमतरी	(छ.ग.)	20 42	81 34	− 3 44
धर्मजयगढ़	(म.प्र.)	22 28	83 13	+ 2 52
धर्मपुर	(हि.)	30 53	77 02	−21 52
धर्मशाला	(हि.)	32 16	76 23	−24 28
धांगधरा	(गु.)	22 59	71 29	−44 04
धार	(म.प्र.)	22 35	75 20	−28 40
धारवाड़	(क.)	15 30	75 04	−29 44
धुले	(म.)	20 58	74 47	−30 52
धेन कानाल	(उ.)	20 40	85 39	+12 36
धौलपुर	(रा.)	26 42	77 53	−18 28
नईहाटी	(बं.)	22 57	88 25	+23 40
नकोदर	(पं.)	31 07	75 29	−28 04
नगर	(हि.)	32 07	77 08	−21 28
नगरोटा बगवां	(हि.)	32 06	76 22	−24 32
नजीबाबाद	(उ.प्र.)	29 38	78 20	−16 40
नडियाद	(गु.)	22 42	72 55	−38 20
नन्दापुर	(उ.)	18 32	82 52	+ 1 28
नन्दुरबार	(म.)	21 22	74 15	−33 00
नयागढ़	(उ.)	20 10	85 08	+10 32
नरवाणा	(ह.)	29 37	76 07	−25 32
नरसिंहपुरा	(उ.)	20 28	85 08	+10 32
नरेन्द्रनगर	(उ.आं.)	30 10	78 20	−16 40
नरैना	(रा.)	26 50	74 11	−33 16
नवद्वीप	(बं.)	23 25	88 22	+23 28
नवरंगपुर	(उ.)	19 15	82 39	+ 0 36
नवलगढ़	(रा.)	27 51	75 18	−28 48
नवसारी	(गु.)	20 52	72 56	−38 16
नवांशहर	(पं.)	31 07	76 08	−25 28
नसीराबाद	(रा.)	26 18	74 46	−30 56
नागापट्टनम्	(ता.)	10 45	79 50	−10 40
नागपुर	(म.)	21 10	79 10	−13 20
नागरकोयल	(ता.)	8 10	77 26	−20 16
नागौर	(रा.)	27 11	73 44	−35 04
नाचना	(रा.)	27 29	71 45	−43 00
नाथद्वारा	(रा.)	24 56	73 50	−34 40
नान्देड़	(म.)	19 11	77 21	−20 36
नानपाड़ा	(उ.प्र.)	27 52	81 30	− 4 00
नान्दोड़	(गु.)	21 52	73 32	−35 52
नाभा	(पं.)	30 22	76 08	−25 28
नारकण्डा	(हि.)	31 16	77 27	−20 12
नारनौल	(ह.)	28 03	76 14	−25 04
नारायणगढ़	(ह.)	30 29	77 08	−21 28
नालगोंडा	(आं.)	17 04	79 15	−13 00
नालन्दा	(बि.)	25 07	85 25	+11 40
नालागढ़	(हि.)	31 03	76 42	−23 12
नालिया	(गु.)	23 19	68 51	−54 36
नासिक	(म.)	20 00	73 52	−34 32
नाहन	(हि.)	30 33	77 21	−20 36

अक्षांशादि सारणी (भारत के सभी ज़िला स्थलों एवम् प्रसिद्ध नगरों के लिए)

नगर		अक्षांश (उत्तर) अं. क.	रेखांश (पूर्व) अं. क.	स्टैंडर्ड अन्तर मि. से.
निज़ामाबाद	(आं.)	18 40	78 07	−17 40
निम्बहेड़ा	(रा.)	24 37	74 45	−31 00
निरमण्ड	(हि.)	31 27	77 34	−19 44
नीमच	(म.प्र.)	24 27	74 52	−30 32
नीलगिरि	(उ.)	21 29	86 49	+17 16
नीलोखेड़ी	(ह.)	29 51	76 55	−22 20
नूरपुर	(हि.)	32 18	75 54	−26 24
नूरपुरबेदी	(पं.)	31 09	76 29	−24 04
नैनवा	(रा.)	25 45	75 57	−26 12
नैनीताल	(उ.आं.)	29 23	79 27	−12 12
नैल्लूर	(आं.)	14 29	80 00	−10 00
नोखामण्डी	(रा.)	27 35	73 29	−36 04
नोंगस्टोइन	(मे.)	25 31	91 16	+35 04
नोहर	(रा.)	29 11	74 46	−30 56
नौशहरा	(का.)	33 10	74 15	−33 00
पचपदरा	(रा.)	25 55	72 21	−40 36
पंचकूला	(ह.)	30 42	76 52	−22 32
पंचमढ़ी	(म.प्र.)	22 28	78 26	−16 16
पंजिम	(गोवा)	15 29	73 50	−34 40
पटना	(बि.)	25 37	85 13	+10 52
पटियाला	(पं.)	30 20	76 25	−24 20
पट्टी	(पं.)	31 17	74 51	−30 36
पटौदी	(ह.)	28 18	76 48	−22 48
पठानकोट	(पं.)	32 17	75 42	−27 12
पंढरपुर	(म.)	17 42	75 24	−28 24
पन्ना	(म.प्र.)	24 44	80 14	− 9 04
परभानी	(म.)	19 16	76 51	−22 36
पराकस्सम	(आं.)	15 30	80 06	− 9 36
पलवल	(ह.)	28 09	77 20	−20 40
पहलगाम	(का.)	34 01	75 20	−28 40
पाकौर	(झा.खं.)	24 38	87 54	+21 36
पाटन	(गु.)	23 50	72 09	−41 24
पाटनगढ़	(उ.)	20 43	83 09	+ 2 36
पाठलगांव	(म.प्र.)	22 34	83 28	+ 3 52
पाण्डिचेरी	(पां.)	11 58	79 54	−10 24
पणजी	(गोवा)	15 29	73 50	−34 40
पानीपत	(ह.)	29 23	77 00	−22 00
पापड़हांडी	(उ.)	19 22	82 34	+ 0 16
पालनपुर	(गु.)	24 12	72 29	−40 04
पालमपुर	(हि.)	32 07	76 33	−23 48
पालिताणा	(गु.)	21 30	71 50	−42 40
पाली	(रा.)	25 46	73 20	−36 40
पालयंकोट्टै	(ता.)	8 42	77 46	−18 56
पांवटा साहिब	(हि.)	30 27	77 37	−19 32
पासीघाट	(अरुणा.)	28 05	95 20	+51 20
पिठोरागढ़	(उ.आं.)	29 35	80 13	− 9 08
पिपली	(ह.)	29 58	76 53	−22 28
पिहोवा	(ह.)	29 57	76 37	−23 32
पीलीभीत	(उ.प्र.)	28 38	79 48	−10 48
पुंछ	(का.)	33 51	74 06	−33 36
पुट्टापर्त्ती	(आं.)	14 15	77 45	−19 00
पुदुक्कोट्टै	(ता.)	10 23	78 49	−14 44
पुरानेया	(बि.)	25 49	87 31	+20 04
पुरी	(उ.)	19 48	85 52	+13 28
पुरुलिया	(बं.)	23 20	86 22	+15 28
पुष्कर	(रा.)	26 30	74 33	−31 48
पूना	(म.)	18 34	73 53	−34 28
पोरबन्दर	(गु.)	21 40	69 36	−51 36
पोर्टब्लेयर	(अं.नि.)	11 41	92 43	+40 52
पोलाची	(ता.)	10 38	77 00	−22 00
पौड़ी	(उ.आं.)	30 09	78 47	−14 52
प्रतापगढ़	(उ.प्र.)	25 50	81 59	− 2 04
प्रतापगढ़	(म.प्र.)	24 02	74 47	−30 52
प्रयाग	(उ.प्र.)	25 28	81 54	− 2 24
प्रोद्दातूर	(ता.)	14 45	78 35	−15 40
[illegible]	(पं.)	31 14	75 46	−26 56
फतेहपुर	(उ.प्र.)	25 56	80 52	− 6 32
फतेहपुर सीकरी	(उ.प्र.)	27 06	77 40	−19 20
फतेहाबाद	(उ.प्र.)	27 01	78 19	−16 44
फतेहाबाद	(ह.)	29 31	75 28	−28 08
फरीदकोट	(पं.)	30 40	74 40	−31 20
फरीदाबाद	(ह.)	28 26	77 19	−20 44
फर्रूखाबाद	(उ.प्र.)	27 24	79 34	−11 44
फाज़िल्का	(पं.)	30 25	74 04	−33 44
फिरोज़पुर	(पं.)	30 55	74 40	−31 20
फिरोज़ाबाद	(उ.प्र.)	27 09	78 24	−16 24
फिल्लौर	(पं.)	31 01	75 47	−26 52
फुलेरा	(रा.)	26 52	75 16	−28 56
फूलबानी	(उ.)	20 30	84 18	+ 7 12
फैज़ाबाद	(उ.प्र.)	26 47	82 08	− 1 28
बक्सर	(बि.)	25 34	83 59	+ 5 56
बंगलौर	(क.)	13 00	77 35	−19 40
बंगा	(पं.)	31 11	75 59	−26 04
बटाला	(पं.)	31 48	75 12	−29 12
बठिण्डा	(पं.)	30 11	75 00	−30 00
बड़ानगर	(बं.)	22 38	88 22	+23 28
बड़ौदा	(गु.)	22 18	73 13	−37 08
बदायूं	(उ.प्र.)	28 03	79 07	−13 32
बद्दी	(हि.)	30 55	76 48	−22 48
बद्रीनाथ	(उ.आं.)	30 44	79 29	−12 04
बनगांव	(बं.)	23 04	88 49	+25 16
बनिहाल	(का.)	33 30	75 18	−28 48
बबीना	(उ.प्र.)	25 15	78 28	−16 08
बंबई	(म.)	देखें −	मुम्बई	
बरवाला	(ह.)	29 22	75 54	−26 24
बरेली	(उ.प्र.)	28 22	79 27	−12 12
बरौनी	(बि.)	25 30	85 58	+13 52
बर्दवान	(बं.)	23 16	87 52	+21 28
बलरामपुर	(उ.प्र.)	27 26	82 11	− 1 16

अक्षांशादि सारणी (भारत के सभी ज़िला स्थलों एवम् प्रसिद्ध नगरों के लिए)

नगर		अक्षांश (उत्तर) अं. क.	रेखांश (पूर्व) अं. क.	स्टैंडर्ड अन्तर मि. से.	नगर		अक्षांश (उत्तर) अं. क.	रेखांश (पूर्व) अं. क.	स्टैंडर्ड अन्तर मि. से.	नगर		अक्षांश (उत्तर) अं. क.	रेखांश (पूर्व) अं. क.	स्टैंडर्ड अन्तर मि. से.
बलिया	(उ.प्र.)	25 45	84 10	+ 6 40	बिलासपुर	(हि.)	31 20	76 47	−22 52	ब्यास	(पं.)	31 31	75 18	−28 48
बल्लभगढ़	(ह.)	28 21	77 19	−20 44	बिलासीपाड़ा	(आसा.)	26 13	90 13	+30 52	भटिण्डा	(पं.)	देखें	बठिण्डा	(पं.)
बसीरहाट	(बं.)	22 40	88 53	+25 32	बिष्णुपुर	(बं.)	23 05	87 19	+19 16	भण्डारा	(म.)	21 10	79 41	−11 16
बस्ति	(उ.प्र.)	26 48	82 43	+ 0 52	बिहारशरीफ	(बि.)	25 11	85 32	+12 08	भदोही	(उ.प्र.)	25 25	82 34	+ 0 16
ब्रह्मकुण्ड	(आसा.)	27 52	96 23	+55 32	बीकानेर	(रा.)	28 01	73 20	−36 40	भद्रक	(उ.)	21 05	86 30	+16 00
बहराईच	(उ.प्र.)	27 35	81 36	− 3 36	बीजापुर	(क.)	16 50	75 45	−27 00	भद्रवाह	(का.)	32 59	75 43	−27 08
बागलकोट	(क.)	16 14	75 47	−26 52	बीड़	(म.)	18 59	75 46	−28 56	भद्राचलम्	(आं.)	17 42	80 53	− 6 28
बाघ	(म.प्र.)	22 22	74 49	−30 44	बीदर	(क.)	17 56	77 35	−19 40	भरतपुर	(रा.)	27 15	77 30	−20 00
बातल	(हि.)	32 22	77 36	−19 36	बुक्क पत्तनम	(आं.)	14 12	77 46	−18 56	भरमौर	(हि.)	32 27	76 32	−23 52
बांकीपुर	(बि.)	25 40	85 12	+10 48	बुढलाडा	(पं.)	29 56	75 34	−27 44	भरूच	(गु.)	21 40	72 58	−38 08
बांकुरा	(बं.)	23 15	87 04	+18 16	बुटाणा	(ह.)	29 11	76 38	−23 28	भवानीपत्तन	(उ.)	19 54	83 10	+ 2 40
बाघपत	(उ.प्र.)	28 57	77 13	−21 08	बुद्धगया	(बि.)	24 41	84 58	+ 9 52	भागलपुर	(बि.)	25 15	87 00	+18 00
बाटानगर	(बं.)	22 31	88 15	+23 00	बुरनपुर	(बं.)	23 42	86 58	+17 52	भातपाड़ा	(बं.)	22 52	88 24	+23 36
बाड़मेर	(रा.)	25 45	71 25	−44 20	बुरहानपुर	(म.प्र.)	21 18	76 14	−25 04	भादसों	(पं.)	30 31	76 15	−25 00
बांदा	(उ.प्र.)	25 29	80 20	− 8 40	बुलन्दशहर	(उ.प्र.)	28 24	77 51	−18 36	भाभर	(गु.)	24 08	71 42	−43 12
बामनघाटी	(उ.)	22 13	86 15	+15 00	बुलसार	(गु.)	20 36	72 56	−38 16	भावनगर	(गु.)	21 46	72 10	−41 20
बारपेटा	(आसा.)	26 20	91 02	+34 08	बूंदी	(रा.)	25 27	75 40	−27 20	भिंड	(म.प्र.)	26 35	78 46	−14 56
बारसी	(म.)	18 14	75 44	−27 04	बृन्दावन	(उ.प्र.)	27 33	77 44	−19 04	भिलाई	(छ.ग.)	21 13	81 26	− 4 16
बारागढ़	(उ.)	21 25	83 35	+ 4 20	बेगूसराय	(बि.)	25 25	86 08	+14 32	भिवंडी	(गु.)	19 18	73 04	−37 44
बाराबंकी	(उ.प्र.)	26 55	81 12	− 5 12	बेट्टिया	(बि.)	26 48	84 33	+ 8 12	भिवानी	(ह.)	28 48	76 08	−25 28
बारामूला	(का.)	34 12	74 20	−32 40	बेलगांव	(क.)	15 54	74 36	−31 36	भीनमाल	(रा.)	25 00	72 19	−40 44
बारासत	(बं.)	22 43	88 29	+23 56	बेला	(पं.)	30 56	76 23	−24 28	भीमावरम्	(आं.)	16 34	81 35	− 3 40
बारीपाड़ा	(उ.)	21 56	86 44	+16 56	बेला(प्रतापगढ़)	(उ.प्र.)	25 54	82 01	− 1 56	भीलवाड़ा	(रा.)	25 21	74 40	−31 20
बालाघाट	(म.प्र.)	21 48	80 11	− 9 16	बेल्लारी	(क.)	15 11	76 54	−22 24	भुज	(गु.)	23 16	69 40	−51 20
बालामऊ	(उ.प्र.)	27 15	80 23	− 8 28	बैकुण्ठपुर	(छ.ग.)	23 15	82 33	+ 0 12	भुवनेश्वर	(उ.)	20 13	85 50	+13 20
बालासौर	(उ.)	21 31	86 54	+17 36	बैजनाथ	(हि.)	32 04	76 37	−23 32	भुसावल	(म.)	21 01	75 50	−26 40
बालीपाड़ा	(आसा.)	26 09	92 09	+38 36	बैरकपुर	(बं.)	22 46	88 24	+23 36	भोपाल	(म.प्र.)	23 16	77 24	−20 24
बालूरघाट	(बं.)	25 13	88 46	+25 04	बोम्डिला	(अरुणा.)	27 19	92 25	+39 40	मऊ	(उ.प्र.)	25 17	81 23	− 4 28
बालेश्वर	(उ.)	21 31	86 59	+17 56	बोरसाद	(गु.)	22 24	72 59	−38 04	मंगलोर	(क.)	12 54	74 51	−30 36
बालोतरा	(रा.)	25 49	72 14	−41 04	बोलपुर	(बं.)	23 40	87 43	+20 52	मंगलौर	(उ.आं.)	29 48	77 52	−18 32
बांसवाड़ा	(रा.)	23 30	74 24	−32 24	बोलानगिर	(उ.)	20 41	83 30	+ 4 00	मंगालादै	(आसा.)	26 28	92 02	+38 08
बिजनौर	(उ.प्र.)	29 22	78 08	−17 28	बौडा	(उ.)	20 50	84 22	+ 7 28	मछलीपट्टणम्	(आं.)	16 10	81 08	− 5 28
बिलासपुर	(छ.ग.)	22 05	82 09	− 1 24	ब्यावर	(रा.)	26 06	74 20	−32 40	मजीठा	(पं.)	31 46	74 57	−30 12

अक्षांशादि सारणी (भारत के सभी ज़िला स्थलों एवम् प्रसिद्ध नगरों के लिए)

नगर		अक्षांश (उत्तर) अं. क.	रेखांश (पूर्व) अं. क.	स्टैंडर्ड अन्तर मि. से.
मण्डला	(म.प्र.)	22 37	80 22	− 8 32
मण्ड्या	(क.)	12 34	76 55	−22 20
मण्डी	(हि.)	31 43	76 58	−22 08
मणिकर्ण	(हि.)	32 02	77 21	−20 36
मथुरा	(उ.प्र.)	27 30	77 41	−19 16
मदुरै	(ता.)	9 58	78 10	−17 20
मद्रास	(ता.)	13 05	80 18	− 8 48
मधुपुर	(झा.खं.)	24 16	86 39	+16 36
मधुबनी	(बि.)	26 22	86 05	+14 20
मधीपुरा	(बि.)	25 55	86 47	+17 08
मनाली	(हि.)	32 16	77 10	−21 20
मन्दसोर	(म.प्र.)	24 05	75 06	−29 36
मन्सूरी	(उ.आं.)	30 27	78 07	−17 32
मनसादेवी	(ह.)	30 43	76 51	−22 36
मनीमाजरा	(ह.)	30 42	76 52	−22 32
मलोट	(पं.)	30 13	74 29	−32 04
मवाना	(उ.प्र.)	29 06	77 55	−18 20
महबूबनगर	(आं.)	16 44	77 59	−18 04
महवा	(रा.)	27 03	76 56	−22 16
महाबलिपुरम्	(ता.)	12 37	80 12	− 9 12
महाबलेश्वर	(गु.)	17 58	73 43	−35 08
महुआ	(गु.)	21 05	71 48	−42 48
महेन्द्रगढ़	(ह.)	28 17	76 09	−25 24
महेसाणा	(गु.)	23 37	72 28	−40 08
माछीवाडा	(पं.)	30 55	76 11	−25 16
मांगरोल	(गु.)	21 07	70 08	−49 28
माण्डवी (कच्छ)	(गु.)	22 50	69 28	−52 08
मानसा	(पं.)	29 59	75 23	−28 28
मायूरम्	(ता.)	11 08	79 40	−11 20
मारवाड़ जं.	(रा.)	25 43	73 36	−35 36
मालदा	(बं.)	25 05	88 09	+22 36
मालेगांव(नासिक)	(म.)	20 32	74 38	−31 28
मालेरकोटला	(पं.)	30 31	75 52	−26 32

नगर		अक्षांश (उत्तर) अं. क.	रेखांश (पूर्व) अं. क.	स्टैंडर्ड अन्तर मि. से.
माहे	(पां.)	11 42	75 32	−27 52
मिदनापुर	(बं.)	22 25	87 21	+19 24
मिराज	(म.)	16 51	74 42	−31 12
मिर्जापुर	(उ.प्र.)	25 09	82 35	+ 0 20
मीरपुर	(का.)	33 32	73 51	−34 36
मुक्तसर	(पं.)	30 29	74 31	−31 56
मुकेरियां	(पं.)	31 57	75 37	−27 32
मुगलसराय	(उ.प्र.)	25 18	83 07	+ 2 28
मुंगेर	(बि.)	25 23	86 30	+16 00
मुजफ्फरनगर	(उ.प्र.)	29 28	77 41	−19 16
मुजफ्फरपुर	(बि.)	26 07	85 27	+11 48
मुजफ्फराबाद	(का.)	34 23	73 30	−36 00
मुद्रा	(म.प्र.)	24 43	77 35	−19 40
मुन्दरा	(गु.)	22 50	69 48	−50 48
मुम्बई	(म.)	19 00	72 54	−38 24
मुरवाडा	(म.प्र.)	23 51	80 22	− 8 32
मुरादाबाद	(उ.प्र.)	28 50	78 47	−14 52
मुरी	(झा.खं.)	23 51	82 34	+ 0 16
मुलाना	(ह.)	30 17	77 03	−21 48
मुर्शिदाबाद	(बं.)	24 11	88 16	+23 04
मेतूर	(ता.)	11 50	77 51	−18 36
मेढक	(आं.)	18 03	78 15	−17 00
मेरठ	(उ.प्र.)	28 59	77 42	−19 12
मेलघाट	(म.)	21 44	77 12	−21 12
मैनपुरी	(उ.प्र.)	27 14	79 01	−13 56
मैसूर	(क.)	12 18	76 37	−23 32
मैहर	(म.प्र.)	24 16	80 45	− 7 00
मोकोक चुंग	(नागा.)	26 19	94 32	+48 08
मोगा	(पं.)	30 48	75 10	−29 20
मोतीहारी	(बि.)	26 40	84 57	+ 9 48
मोरवी	(गु.)	22 50	70 50	−46 40
मोरार	(म.प्र.)	26 13	78 14	−17 04
मोरिण्डा	(पं.)	30 48	76 30	−24 00

नगर		अक्षांश (उत्तर) अं. क.	रेखांश (पूर्व) अं. क.	स्टैंडर्ड अन्तर मि. से.
मोरैना (मुरैना)	(म.प्र.)	26 23	78 04	−17 44
मोहनिया	(बि.)	25 11	83 37	+ 4 28
मोहाना	(म.)	25 54	77 45	−19 00
मोहाली	(पं.)	30 43	76 42	−23 12
यनम्	(पां.)	16 44	82 13	− 1 08
यमुनानगर	(ह.)	30 07	77 18	−20 48
यवतमाल	(म.)	20 24	78 08	−17 28
योल	(हि.)	32 11	76 23	−24 28
रक्सौल	(बि.)	26 58	84 51	+ 9 24
रंगिया	(आसा.)	26 28	91 35	+36 20
रतलाम	(म.प्र.)	23 21	75 07	−29 32
रतनगढ	(रा.)	28 05	74 39	−31 24
रत्नागिरि	(म.)	17 00	73 22	−36 32
राऊरकेला	(उ.)	22 15	84 52	+ 9 28
रांची	(झा.खं.)	23 23	85 23	+11 32
राजकोट	(गु.)	22 18	70 53	−46 28
राजगढ़	(म.प्र.)	24 01	76 45	−23 00
राजनन्दगांव	(छ.ग.)	21 05	81 05	− 5 40
राजपालैयम्	(ता.)	9 27	77 34	−19 44
राजपुरा	(पं.)	30 29	76 36	−23 36
राजमहल	(झा.खं.)	25 03	87 53	+21 32
राजमहेन्द्री	(आं.)	17 05	81 48	− 2 48
राजुला	(गु.)	21 01	71 26	−44 16
राजौरी	(का.)	33 22	74 17	−32 52
रादौर	(ह.)	30 01	77 08	−21 28
राधनपुर	(गु.)	23 52	71 36	−43 36
रानाघाट	(ब.)	23 11	88 35	+24 20
रानीखेत	(उ.आं.)	29 39	79 25	−12 20
रापर	(गु.)	23 33	70 38	−47 28
राबर्ट्सगंज	(उ.प्र.)	24 42	83 04	+ 2 16
रामनाथपुरम्	(ता.)	9 23	78 53	−14 28
रामपुर	(उ.प्र.)	28 49	79 02	−13 52
रामबन	(का.)	33 15	75 15	−29 00

अक्षांशादि सारणी (भारत के सभी ज़िला स्थलों एवम् प्रसिद्ध नगरों के लिए)

नगर		अक्षांश (उत्तर) अं. क.	रेखांश (पूर्व) अं. क.	स्टैंडर्ड अन्तर मि. से.	नगर		अक्षांश (उत्तर) अं. क.	रेखांश (पूर्व) अं. क.	स्टैंडर्ड अन्तर मि. से.	नगर		अक्षांश (उत्तर) अं. क.	रेखांश (पूर्व) अं. क.	स्टैंडर्ड अन्तर मि. से.
रामपुरबुशहर	(हि.)	31 27	77 38	−19 28	लुम्डिंग	(आसा.)	25 46	93 10	+42 40	शाहदरा	(दिल्ली)	28 41	77 17	−20 52
रामपुराफूल	(पं.)	30 17	75 14	−29 04	लूनावाड़ा	(गु.)	23 08	73 37	−35 32	शाहपुर	(हि.)	32 12	76 10	−25 20
रामानुजगंज	(छ.ग.)	23 48	83 42	+ 4 48	लूनी	(रा.)	26 00	73 00	−38 00	शाहाबाद	(ह.)	30 10	76 52	−22 32
रामेश्वरम्	(ता.)	9 18	79 19	−12 44	लेह	(का.)	34 09	77 35	−19 40	शाहाबाद	(उ.प्र.)	27 39	79 57	−10 12
रायकोट	(पं.)	30 39	75 36	−27 36	लैंस डाऊन	(उ.आं.)	29 50	78 41	−15 16	शिकोहाबाद	(उ.प्र.)	27 06	78 36	−15 36
रायगढ़	(छ.ग.)	21 54	83 26	+ 3 44	लोहारू	(ह.)	28 27	75 49	−26 44	शिमला	(हि.)	31 06	77 10	−21 20
रायचूर	(क.)	16 15	77 20	−20 40	वर्धा	(म.)	20 42	78 40	−15 20	शिमोग	(क.)	13 56	75 34	−27 44
रायपुर	(उ.प्र.)	30 19	78 06	−17 36	वलपरै	(ता.)	10 22	76 58	−22 08	शिलांग	(मे.)	25 36	91 53	+37 32
रायपुर	(छ.ग.)	21 15	81 41	− 3 16	वल्लभीपुर	(गु.)	20 52	71 58	−42 08	शिवपुरी	(म.प्र.)	25 26	77 40	−19 20
रायबरेली	(उ.प्र.)	26 14	81 16	− 4 56	वलसाड़	(गु.)	20 40	72 55	−38 20	शिवसागर	(आसा.)	26 58	94 39	+48 36
रायसिंहनगर	(रा.)	29 32	73 27	−36 12	वारंगल	(आं.)	18 00	79 35	−11 40	शिवहार (शिवविहार)	(बि.)	26 35	85 18	+11 12
रायसेन	(म.प्र.)	23 18	77 47	−18 52	वाल्टेअर	(आं.)	17 47	83 22	+ 3 28	शिवाकाशी	(ता.)	9 26	77 50	−18 40
रियांग	(अरुणा.)	27 32	92 55	+41 40	वाराणसी	(उ.प्र.)	25 20	83 00	+ 2 00	शेखपुरा	(बि.)	25 09	85 53	+13 32
रिवालसर	(हि.)	31 38	76 50	−22 40	विजयनगर	(क.)	15 20	76 30	−24 00	शैलम्	(आं.)	16 02	78 56	−14 16
रीवां	(म.प्र.)	24 31	81 19	− 4 44	विजयपुरी	(आं.)	16 52	79 35	−11 40	शोलापुर	(म.)	17 43	75 56	−26 16
रुड़की	(उ.आं.)	29 52	77 53	−18 28	विजयवाड़ा	(आं.)	16 31	80 39	− 7 24	श्योपुर	(म.प्र.)	25 40	76 40	−23 20
रुद्रप्रयाग	(उ.आं.)	30 16	78 59	−14 04	विदिशा	(म.प्र.)	23 32	77 50	−18 40	श्रीकाकुलम्	(आं.)	18 19	84 00	+ 6 00
रिवाड़ी	(ह.)	28 12	76 40	−23 20	विरामग्राम	(गु.)	23 08	72 04	−41 44	श्रीकालाहस्ती	(आं.)	13 48	79 42	−11 12
रोन्दू	(का.)	35 37	75 06	−29 36	विरुदुनगर	(ता.)	9 36	77 58	−18 08	श्रीगंगानगर	(रा.)	29 49	73 50	−34 40
रोपड़	(पं.)	30 57	76 32	−23 52	विल्लुपुरम्	(ता.)	11 56	79 29	−12 04	श्रीनगर	(उ.आं.)	30 13	78 47	−14 52
रोहड़ू	(हि.)	31 13	77 45	−19 00	विशाखापट्टनम्	(आं.)	17 42	83 18	+ 3 12	श्रीनगर	(का.)	34 07	74 50	−30 40
रोहतक	(ह.)	28 54	76 38	−23 28	विसनगर	(गु.)	23 41	72 36	−39 36	श्रीमाधोपुर	(रा.)	27 25	75 32	−27 52
लक्सर	(उ.आं.)	29 48	78 02	−17 52	वेंकटपलम्	(उ.)	18 05	81 40	− 3 20	श्रीरंगम्	(ता.)	10 52	78 40	−15 20
लखनऊ	(उ.प्र.)	26 51	80 55	− 6 20	वेरावल	(गु.)	20 53	70 28	−48 08	संगरूर	(पं.)	30 12	75 53	−26 28
लखपत	(गु.)	23 49	68 47	−54 52	वेल्लूर	(ता.)	12 56	79 09	−13 24	संगारेड्डी पेठ	(आं.)	17 37	78 04	−17 44
लखीमपुर	(उ.प्र.)	27 57	80 49	− 6 44	वैष्णोदेवी	(का.)	33 02	74 57	−30 12	सढौरा	(हि.)	30 23	77 13	−21 08
लखीसराय	(बि.)	25 12	86 06	+14 24	व्यारा	(गु.)	21 09	73 28	−36 08	सतना	(म.प्र.)	24 34	80 55	− 6 20
ललितपुर	(उ.प्र.)	24 41	78 25	−16 20	शहडोल	(म.प्र.)	23 20	81 22	− 4 32	सतारा	(म.)	17 49	74 05	−33 40
लातूर	(म.)	18 24	76 34	−23 44	शाजापुर	(म.प्र.)	23 26	76 18	−24 48	सदरा	(गु.)	23 20	72 48	−38 48
लाडवा	(ह.)	29 59	77 05	−21 40	शान्ति निकेतन	(बं.)	23 40	87 42	+20 48	सदिया	(अरुणा.)	27 48	95 38	+52 32
लालसोत	(रा.)	26 34	76 23	−24 28	शान्तिपुर	(बं.)	23 15	88 26	+23 44	सनौर	(पं.)	30 18	76 28	−24 08
लिम्बड़ी	(गु.)	22 36	71 48	−42 48	शामली	(उ.प्र.)	29 27	77 19	−20 44	सपाटू	(हि.)	30 59	76 59	−22 04
लुधियाना	(पं.)	30 55	75 54	−26 24	शाहजहांपुर	(उ.प्र.)	27 53	79 55	−10 20	समराला	(पं.)	30 51	76 11	−25 16

अक्षांशादि सारणी (भारत के सभी ज़िला स्थलों एवम् प्रसिद्ध नगरों के लिए)

नगर		अक्षांश (उत्तर) अं. क.	रेखांश (पूर्वी) अं. क.	स्टैंडर्ड अन्तर मि. से.
समाना	(पं.)	30 09	76 12	−25 12
समस्तीपुर	(बि.)	25 55	85 50	+13 20
सम्बलपुर	(उ.)	21 28	84 01	+ 6 04
सरदारशहर	(रा.)	28 27	74 30	−32 00
सरहिंद	(पं.)	30 38	76 22	−24 32
सलीम	(म.)	11 39	78 12	−17 12
सवाई माधोपुर	(रा.)	25 58	76 25	−24 20
सहरसा	(बि.)	25 55	86 35	+16 20
सहसवां	(उ.प्र.)	28 05	78 45	−15 00
सहारनपुर	(उ.प्र.)	29 58	77 33	−19 48
सागर	(म.प्र.)	23 50	78 50	−14 40
सांगला	(हि.)	31 29	78 12	−17 12
सांगली	(म.)	16 55	74 37	−31 32
सांगानेर	(रा.)	26 49	75 49	−26 44
सांचोर	(रा.)	24 40	71 50	−42 40
साम्बा	(का.)	32 32	75 08	−29 28
सांभर	(रा.)	26 54	75 13	−29 08
सारनाथ	(उ.प्र.)	25 24	83 01	+ 2 04
सासनी	(उ.प्र.)	27 43	78 05	−17 40
सासाराम	(बि.)	24 57	84 03	+ 6 12
साहिबगंज	(झा.खं.)	25 13	87 40	+20 40
सिऊनी	(म.प्र.)	22 06	79 35	−11 40
सिऊरी	(बं.)	23 55	87 32	+20 08
सिकती	(बि.)	26 24	87 33	+20 12
सिकन्दराबाद	(आं.)	17 27	78 30	−16 00
सिकन्दराराऊ	(उ.प्र.)	27 42	78 27	−16 12
सिन्दरी	(रा.)	25 33	71 55	−42 20
सिन्दरी	(बं.)	23 45	86 42	+16 48
सिवाना	(रा.)	25 36	72 27	−40 12
सिरसा	(ह.)	29 32	75 04	−29 44
सिरोही	(रा.)	24 53	72 54	−38 24
सिल्चर	(आसा.)	24 49	92 47	+41 08
सिल्वासा	(दा.ना.)	20 17	72 59	−38 04

नगर		अक्षांश (उत्तर) अं. क.	रेखांश (पूर्वी) अं. क.	स्टैंडर्ड अन्तर मि. से.
सिलीगुड़ी	(बं.)	26 42	88 26	+23 44
सिहोरा	(म.प्र.)	23 29	80 07	− 9 32
सिंहभूम	(झा.खं.)	22 24	85 30	+12 00
सीकर	(रा.)	27 36	75 09	−29 24
सीतापुर	(उ.प्र.)	27 34	80 41	− 7 16
सीतामढ़ी	(बि.)	26 35	85 32	+12 08
सीवां	(बि.)	26 12	84 23	+ 7 32
सुईगांव	(गु.)	24 10	71 23	−44 28
सुन्दरगढ़	(उ.)	22 07	84 02	+ 6 08
सुन्दरनगर	(हि.)	31 32	76 53	−22 28
सुनाम	(पं.)	30 08	75 48	−26 48
सुपौल	(बि.)	26 07	86 36	+16 24
सुरेन्द्रनगर	(गु.)	22 42	71 41	−43 16
सुल्तानपुर	(उ.प्र.)	26 16	82 04	− 1 44
सूरत	(गु.)	21 10	72 50	−38 40
सूरतगढ़	(रा.)	29 19	73 57	−34 12
सूरी	(बं.)	23 55	87 32	+20 08
सेरमपुर	(बं.)	22 45	88 21	+23 24
सैंज	(हि.)	31 49	77 19	−20 44
सोजत	(रा.)	25 56	73 42	−35 12
सोनगढ	(गु.)	21 42	71 58	−42 08
सोनपुर	(बि.)	25 42	85 12	+10 48
सोनपुर	(उ.)	20 50	83 58	+ 5 52
सोनहाट	(छ.ग.)	23 29	82 30	0 00
सोनामर्ग	(का.)	34 18	75 18	−28 48
सोनीपत	(ह.)	28 59	77 01	−21 56
सोमनाथ	(गु.)	21 04	70 26	−48 16
सोलन	(हि.)	30 55	77 09	−21 24
हजारीबाग	(झा.खं.)	23 59	85 25	+11 40
हडसर	(हि.)	32 22	76 33	−23 48
हनुमानगढ़	(रा.)	29 35	74 21	−32 36
हफलोंग	(आसा.)	25 11	93 02	+42 08
हमीरपुर	(उ.प्र.)	25 57	80 09	− 9 24

नगर		अक्षांश (उत्तर) अं. क.	रेखांश (पूर्वी) अं. क.	स्टैंडर्ड अन्तर मि. से.
हमीरपुर	(हि.)	31 41	76 31	−23 56
हरदोई	(उ.प्र.)	27 25	80 07	− 9 32
हरसीपत्तन	(हि.)	31 53	76 39	−23 24
हरिद्वार	(उ.आं.)	29 58	78 13	−17 08
हरिपुर	(हि.)	31 59	76 05	−25 40
हरिपुरधार	(हि.)	30 52	77 28	−20 08
हरीकेपत्तन	(पं.)	31 30	74 57	−30 12
हल्दवानी	(उ.आं.)	29 13	79 31	−11 56
हल्दिया	(बं.)	22 02	88 05	+22 20
हास्सन	(क.)	13 01	76 03	−25 48
हसनपुर	(ह.)	27 58	77 30	−20 00
हसनपुर	(उ.प्र.)	28 43	78 17	−16 52
हाजीपुर	(बि.)	25 43	85 14	+10 56
हाटकोटी	(हि.)	31 08	77 45	−19 00
हाथरस	(उ.प्र.)	27 36	78 03	−17 48
हापुड़	(उ.प्र.)	28 43	77 47	−18 52
हालीशहर	(बं.)	22 56	88 25	+23 40
हावड़ा	(बं.)	22 36	88 19	+23 16
हावेरी	(क.)	14 46	75 26	−28 16
हासपेट	(क.)	15 16	76 26	−24 16
हांसी	(हि.)	32 27	77 50	−18 40
हांसी	(ह.)	29 06	76 00	−26 00
हिंगनघाट	(म.)	20 32	78 52	−14 32
हिम्मतनगर	(गु.)	23 35	73 00	−38 00
हिसार	(ह.)	29 10	75 46	−26 56
हीराकुण्ड डैम	(उ.)	21 31	83 57	+ 5 48
हुबली	(क.)	15 20	75 14	−29 04
हैदराबाद	(आं.)	17 22	78 30	−16 00
होडल	(ह.)	27 53	77 22	−20 32
होशंगाबाद	(म.प्र.)	22 46	77 45	−19 00
होशियारपुर	(पं.)	31 32	75 57	−26 12
होसुर	(ता.)	12 45	77 51	−18 36

दैनिक लग्नसारणी, चण्डीगढ़ (U.T.) में लग्नों का समाप्तिकाल [भा.स्टैं.टा.]

अंग्रेज़ी तारीख		वैशाख प्रविष्टे	वैशाख											
			मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन
			घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.
अप्रैल	१३	१	७ ३६	९ ३०	११ ४४	१४ ०७	१६ २७	१८ ४४	२१ ०६	२३ २६	१ ३१	३ १२	४ ३७	५ ५९
	१४	२	७ ३२	९ २६	११ ४०	१४ ०३	१६ २३	१८ ४०	२१ ०२	२३ २२	१ २७	३ ०८	४ ३३	५ ५५
	१५	३	७ २८	९ २२	११ ३७	१३ ५९	१६ १९	१८ ३६	२० ५८	२३ १८	१ २३	३ ०४	४ २९	५ ५१
	१६	४	७ २४	९ १८	११ ३३	१३ ५५	१६ १५	१८ ३३	२० ५४	२३ १४	१ १९	३ ००	४ २५	५ ४७
	१७	५	७ २०	९ १४	११ २९	१३ ५१	१६ ११	१८ २९	२० ५०	२३ १०	१ १५	२ ५६	४ २१	५ ४३
	१८	६	७ १६	९ ११	११ २५	१३ ४७	१६ ०७	१८ २५	२० ४६	२३ ०६	१ ११	२ ५२	४ १७	५ ३९
	१९	७	७ १२	९ ०७	११ २१	१३ ४३	१६ ०३	१८ २१	२० ४२	२३ ०२	१ ०७	२ ४८	४ १३	५ ३५
	२०	८	७ ०८	९ ०३	११ १७	१३ ३९	१५ ५९	१८ १७	२० ३८	२२ ५८	१ ०३	२ ४४	४ ०९	५ ३१
	२१	९	७ ०४	८ ५९	११ १३	१३ ३५	१५ ५५	१८ १३	२० ३४	२२ ५४	० ५९	२ ४०	४ ०५	५ २८
	२२	१०	७ ००	८ ५५	११ ०९	१३ ३१	१५ ५१	१८ ०९	२० ३०	२२ ५१	० ५५	२ ३६	४ ०१	५ २४
	२३	११	६ ५६	८ ५१	११ ०५	१३ २७	१५ ४७	१८ ०५	२० २७	२२ ४७	० ५१	२ ३२	३ ५७	५ २०
	२४	१२	६ ५२	८ ४७	११ ०१	१३ २३	१५ ४३	१८ ०१	२० २३	२२ ४३	० ४७	२ २८	३ ५३	५ १६
	२५	१३	६ ४८	८ ४३	१० ५७	१३ १९	१५ ३९	१७ ५७	२० १९	२२ ३९	० ४३	२ २४	३ ४९	५ १२
	२६	१४	६ ४४	८ ३९	१० ५३	१३ १६	१५ ३६	१७ ५३	२० १५	२२ ३५	० ३९	२ २०	३ ४५	५ ०८
	२७	१५	६ ४१	८ ३५	१० ४९	१३ १२	१५ ३२	१७ ४९	२० ११	२२ ३१	० ३५	२ १६	३ ४२	५ ०४
	२८	१६	६ ३७	८ ३१	१० ४५	१३ ०८	१५ २८	१७ ४५	२० ०७	२२ २७	० ३२	२ १३	३ ३८	५ ००
	२९	१७	६ ३३	८ २७	१० ४२	१३ ०४	१५ २४	१७ ४१	२० ०३	२२ २३	० २८	२ ०९	३ ३४	४ ५६
	३०	१८	६ २९	८ २३	१० ३८	१३ ००	१५ २०	१७ ३७	१९ ५९	२२ १९	० २४	२ ०५	३ ३०	४ ५२
मई	१	१९	६ २५	८ १९	१० ३४	१२ ५६	१५ १६	१७ ३४	१९ ५५	२२ १५	० २०	२ ०१	३ २६	४ ४८
	२	२०	६ २१	८ १६	१० ३०	१२ ५२	१५ १२	१७ ३०	१९ ५१	२२ ११	० १६	१ ५७	३ २२	४ ४४
	३	२१	६ १७	८ १२	१० २६	१२ ४८	१५ ०८	१७ २६	१९ ४७	२२ ०७	० १२	१ ५३	३ १८	४ ४०
	४	२२	६ १३	८ ०८	१० २२	१२ ४४	१५ ०४	१७ २२	१९ ४३	२२ ०३	० ०८	१ ४९	३ १४	४ ३६
	५	२३	६ ०९	८ ०४	१० १८	१२ ४०	१५ ००	१७ १८	१९ ३९	२१ ५९	० ०४	१ ४५	३ १०	४ ३२
	६	२४	६ ०५	८ ००	१० १४	१२ ३६	१४ ५६	१७ १४	१९ ३५	२१ ५६	० ००	१ ४१	३ ०६	४ २९
	७	२५	६ ०१	७ ५६	१० १०	१२ ३२	१४ ५२	१७ १०	१९ ३२	२१ ५२	२३ ५६	१ ३७	३ ०२	४ २५
	८	२६	५ ५७	७ ५२	१० ०६	१२ २८	१४ ४८	१७ ०६	१९ २८	२१ ४८	२३ ५२	१ ३३	२ ५८	४ २१
	९	२७	५ ५३	७ ४८	१० ०२	१२ २४	१४ ४४	१७ ०२	१९ २४	२१ ४४	२३ ४८	१ २९	२ ५४	४ १७
	१०	२८	५ ४९	७ ४४	९ ५८	१२ २०	१४ ४०	१६ ५८	१९ २०	२१ ४०	२३ ४४	१ २५	२ ५०	४ १३
	११	२९	५ ४६	७ ४०	९ ५४	१२ १७	१४ ३६	१६ ५४	१९ १६	२१ ३६	२३ ४०	१ २१	२ ४६	४ ०९
	१२	३०	५ ४२	७ ३६	९ ५०	१२ १३	१४ ३३	१६ ५०	१९ १२	२१ ३२	२३ ३७	१ १८	२ ४३	४ ०५
	१३	३१	५ ३८	७ ३२	९ ४६	१२ ०९	१४ २९	१६ ४६	१९ ०८	२१ २८	२३ ३३	१ १४	२ ३९	४ ०१
	१४	ज्ये.१	५ ३४											

अंग्रेज़ी तारीख		ज्येष्ठ प्रविष्टे	ज्येष्ठ											
			वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन	मेष
			घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.
मई	१४	१	७ २८	९ ४३	१२ ०५	१४ २५	१६ ४२	१९ ०४	२१ २४	२३ २९	१ १०	२ ३५	३ ५७	५ ३०
	१५	२	७ २४	९ ३९	१२ ०१	१४ २१	१६ ३९	१९ ००	२१ २०	२३ २५	१ ०६	२ ३१	३ ५३	५ २६
	१६	३	७ २०	९ ३५	११ ५७	१४ १७	१६ ३५	१८ ५६	२१ १६	२३ २१	१ ०२	२ २७	३ ४९	५ २२
	१७	४	७ १७	९ ३१	११ ५३	१४ १३	१६ ३१	१८ ५२	२१ १२	२३ १७	० ५८	२ २३	३ ४५	५ १८
	१८	५	७ १३	९ २७	११ ४९	१४ ०९	१६ २७	१८ ४८	२१ ०८	२३ १३	० ५४	२ १९	३ ४१	५ १४
	१९	६	७ ०९	९ २३	११ ४५	१४ ०५	१६ २३	१८ ४४	२१ ०४	२३ ०९	० ५०	२ १५	३ ३७	५ १०
	२०	७	७ ०५	९ १९	११ ४१	१४ ०१	१६ १९	१८ ४०	२१ ०१	२३ ०५	० ४६	२ ११	३ ३४	५ ०६
	२१	८	७ ०१	९ १५	११ ३७	१३ ५७	१६ १५	१८ ३६	२० ५७	२३ ०१	० ४२	२ ०७	३ ३०	५ ०२
	२२	९	६ ५७	९ ११	११ ३३	१३ ५३	१६ ११	१८ ३३	२० ५३	२२ ५७	० ३८	२ ०३	३ २६	४ ५८
	२३	१०	६ ५३	९ ०७	११ २९	१३ ४९	१६ ०७	१८ २९	२० ४९	२२ ५३	० ३४	१ ५९	३ २२	४ ५४
	२४	११	६ ४९	९ ०३	११ २५	१३ ४५	१६ ०३	१८ २५	२० ४५	२२ ४९	० ३०	१ ५५	३ १८	४ ५०
	२५	१२	६ ४५	८ ५९	११ २२	१३ ४१	१५ ५९	१८ २१	२० ४१	२२ ४५	० २६	१ ५१	३ १४	४ ४७
	२६	१३	६ ४१	८ ५५	११ १८	१३ ३८	१५ ५५	१८ १७	२० ३७	२२ ४२	० २२	१ ४८	३ १०	४ ४३
	२७	१४	६ ३७	८ ५१	११ १४	१३ ३४	१५ ५१	१८ १३	२० ३३	२२ ३८	० १९	१ ४४	३ ०६	४ ३९
	२८	१५	६ ३३	८ ४७	११ १०	१३ ३०	१५ ४७	१८ ०९	२० २९	२२ ३४	० १५	१ ४०	३ ०२	४ ३५
	२९	१६	६ २९	८ ४४	११ ०६	१३ २६	१५ ४३	१८ ०५	२० २५	२२ ३०	० ११	१ ३६	२ ५८	४ ३१
	३०	१७	६ २५	८ ४०	११ ०२	१३ २२	१५ ४०	१८ ०१	२० २१	२२ २६	० ०७	१ ३२	२ ५४	४ २७
	३१	१८	६ २२	८ ३६	१० ५८	१३ १८	१५ ३६	१७ ५७	२० १७	२२ २२	० ०३	१ २८	२ ५०	४ २३
जून	१	१९	६ १८	८ ३२	१० ५४	१३ १४	१५ ३२	१७ ५३	२० १३	२२ १८	२३ ५९	१ २४	२ ४६	४ १९
	२	२०	६ १४	८ २८	१० ५०	१३ १०	१५ २८	१७ ४९	२० ०९	२२ १४	२३ ५५	१ २०	२ ४२	४ १५
	३	२१	६ १०	८ २४	१० ४६	१३ ०६	१५ २४	१७ ४५	२० ०५	२२ १०	२३ ५१	१ १६	२ ३८	४ ११
	४	२२	६ ०६	८ २०	१० ४२	१३ ०२	१५ २०	१७ ४१	२० ०२	२२ ०६	२३ ४७	१ १२	२ ३५	४ ०७
	५	२३	६ ०२	८ १६	१० ३८	१२ ५८	१५ १६	१७ ३७	१९ ५८	२२ ०२	२३ ४३	१ ०८	२ ३१	४ ०३
	६	२४	५ ५८	८ १२	१० ३४	१२ ५४	१५ १२	१७ ३४	१९ ५४	२१ ५८	२३ ३९	१ ०४	२ २७	३ ५९
	७	२५	५ ५४	८ ०८	१० ३०	१२ ५०	१५ ०८	१७ ३०	१९ ५०	२१ ५४	२३ ३५	१ ००	२ २३	३ ५५
	८	२६	५ ५०	८ ०४	१० २६	१२ ४६	१५ ०४	१७ २६	१९ ४६	२१ ५०	२३ ३१	० ५६	२ १९	३ ५१
	९	२७	५ ४६	८ ००	१० २३	१२ ४३	१५ ००	१७ २२	१९ ४२	२१ ४६	२३ २७	० ५२	२ १५	३ ४८
	१०	२८	५ ४२	७ ५६	१० १९	१२ ३९	१४ ५६	१७ १८	१९ ३८	२१ ४३	२३ २३	० ४९	२ ११	३ ४४
	११	२९	५ ३८	७ ५२	१० १५	१२ ३५	१४ ५२	१७ १४	१९ ३४	२१ ३९	२३ २०	० ४५	२ ०७	३ ४०
	१२	३०	५ ३४	७ ४९	१० ११	१२ ३१	१४ ४८	१७ १०	१९ ३०	२१ ३५	२३ १६	० ४१	२ ०३	३ ३६
	१३	३१	५ ३०	७ ४५	१० ०७	१२ २७	१४ ४५	१७ ०६	१९ २६	२१ ३१	२३ १२	० ३७	१ ५९	३ ३२
	१४	आ.१	५ २६											

दैनिक लग्नसारणी, चण्डीगढ़ (U.T.) में लग्नों का समाप्तिकाल [भा.स्टैं.टा.]

आषाढ़

अंग्रेज़ी तारीख		आषाढ़ प्रविष्टे	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन	मेष	वृष
			घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.
जून	१४	१	७ ४१	१० ०३	१२ २३	१४ ४१	१७ ०२	१९ २२	२१ २७	२३ ०८	० ३३	१ ५५	३ २८	५ २३
	१५	२	७ ३७	९ ५९	१२ १९	१४ ३७	१६ ५८	१९ १८	२१ २३	२३ ०४	० २९	१ ५१	३ २४	५ १९
	१६	३	७ ३३	९ ५५	१२ १५	१४ ३३	१६ ५४	१९ १४	२१ १९	२३ ००	० २५	१ ४७	३ २०	५ १५
	१७	४	७ २९	९ ५१	१२ ११	१४ २९	१६ ५०	१९ १०	२१ १५	२२ ५६	० २१	१ ४३	३ १६	५ ११
	१८	५	७ २५	९ ४७	१२ ०७	१४ २५	१६ ४६	१९ ०६	२१ ११	२२ ५२	० १७	१ ३९	३ १२	५ ०७
	१९	६	७ २१	९ ४३	१२ ०३	१४ २१	१६ ४२	१९ ०३	२१ ०७	२२ ४८	० १३	१ ३६	३ ०८	५ ०३
	२०	७	७ १७	९ ३९	११ ५९	१४ १७	१६ ३९	१८ ५९	२१ ०३	२२ ४४	० ०९	१ ३२	३ ०४	४ ५९
	२१	८	७ १३	९ ३५	११ ५५	१४ १३	१६ ३५	१८ ५५	२० ५९	२२ ४०	० ०५	१ २८	३ ००	४ ५५
	२२	९	७ ०९	९ ३१	११ ५१	१४ ०९	१६ ३१	१८ ५१	२० ५५	२२ ३६	० ०१	१ २४	२ ५६	४ ५१
	२३	१०	७ ०५	९ २७	११ ४७	१४ ०५	१६ २७	१८ ४७	२० ५१	२२ ३२	२३ ५७	१ २०	२ ५३	४ ४७
	२४	११	७ ०१	९ २४	११ ४४	१४ ०१	१६ २३	१८ ४३	२० ४८	२२ २८	२३ ५४	१ १६	२ ४९	४ ४३
	२५	१२	६ ५७	९ २०	११ ४०	१३ ५७	१६ १९	१८ ३९	२० ४४	२२ २४	२३ ५०	१ १२	२ ४५	४ ३९
	२६	१३	६ ५३	९ १६	११ ३६	१३ ५३	१६ १५	१८ ३५	२० ४०	२२ २१	२३ ४६	१ ०८	२ ४१	४ ३५
	२७	१४	६ ५०	९ १२	११ ३२	१३ ४९	१६ ११	१८ ३१	२० ३६	२२ १७	२३ ४२	१ ०४	२ ३७	४ ३१
	२८	१५	६ ४६	९ ०८	११ २८	१३ ४६	१६ ०७	१८ २७	२० ३२	२२ १३	२३ ३८	१ ००	२ ३३	४ २७
	२९	१६	६ ४२	९ ०४	११ २४	१३ ४२	१६ ०३	१८ २३	२० २८	२२ ०९	२३ ३४	० ५६	२ २९	४ २४
	३०	१७	६ ३८	९ ००	११ २०	१३ ३८	१५ ५९	१८ १९	२० २४	२२ ०५	२३ ३०	० ५२	२ २५	४ २०
जुलाई	१	१८	६ ३४	८ ५६	११ १६	१३ ३४	१५ ५५	१८ १५	२० २०	२२ ०१	२३ २६	० ४८	२ २१	४ १६
	२	१९	६ ३०	८ ५२	११ १२	१३ ३०	१५ ५१	१८ ११	२० १६	२१ ५७	२३ २२	० ४४	२ १७	४ १२
	३	२०	६ २६	८ ४८	११ ०८	१३ २६	१५ ४७	१८ ०८	२० १२	२१ ५३	२३ १८	० ४१	२ १३	४ ०८
	४	२१	६ २२	८ ४४	११ ०४	१३ २२	१५ ४३	१८ ०४	२० ०८	२१ ४९	२३ १४	० ३७	२ ०९	४ ०४
	५	२२	६ १८	८ ४०	११ ००	१३ १८	१५ ४०	१८ ००	२० ०४	२१ ४५	२३ १०	० ३३	२ ०५	४ ००
	६	२३	६ १४	८ ३६	१० ५६	१३ १४	१५ ३६	१७ ५६	२० ००	२१ ४१	२३ ०६	० २९	२ ०१	३ ५६
	७	२४	६ १०	८ ३२	१० ५२	१३ १०	१५ ३२	१७ ५२	१९ ५६	२१ ३७	२३ ०२	० २५	१ ५७	३ ५२
	८	२५	६ ०६	८ २९	१० ४९	१३ ०६	१५ २८	१७ ४८	१९ ५२	२१ ३३	२२ ५८	० २१	१ ५४	३ ४८
	९	२६	६ ०२	८ २५	१० ४५	१३ ०२	१५ २४	१७ ४४	१९ ४९	२१ २९	२२ ५५	० १७	१ ५०	३ ४४
	१०	२७	५ ५८	८ २१	१० ४१	१२ ५८	१५ २०	१७ ४०	१९ ४५	२१ २६	२२ ५१	० १३	१ ४६	३ ४०
	११	२८	५ ५५	८ १७	१० ३७	१२ ५४	१५ १६	१७ ३६	१९ ४१	२१ २२	२२ ४७	० ०९	१ ४२	३ ३६
	१२	२९	५ ५१	८ १३	१० ३३	१२ ५०	१५ १२	१७ ३२	१९ ३७	२१ १८	२२ ४३	० ०५	१ ३८	३ ३२
	१३	३०	५ ४७	८ ०९	१० २९	१२ ४७	१५ ०८	१७ २८	१९ ३३	२१ १४	२२ ३९	० ०१	१ ३४	३ २९
	१४	३१	५ ४३	८ ०५	१० २५	१२ ४३	१५ ०४	१७ २४	१९ २९	२१ १०	२२ ३५	२३ ५७	१ ३०	३ २५
	१५	३२	५ ३९	८ ०१	१० २१	१२ ३९	१५ ००	१७ २०	१९ २५	२१ ०६	२२ ३१	२३ ५३	१ २६	३ २१
	१६	श्रा१	५ ३४											

श्रावण

अंग्रेज़ी तारीख		श्रावण प्रविष्टे	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन	मेष	वृष	मिथुन
			घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.
जुलाई	१६	१	७ ५७	१० १७	१२ ३५	१४ ५६	१७ १६	१९ २१	२१ ०२	२२ २७	२३ ४९	१ २२	३ १७	५ ३१
	१७	२	७ ५३	१० १३	१२ ३१	१४ ५२	१७ १२	१९ १७	२० ५८	२२ २३	२३ ४५	१ १८	३ १३	५ २७
	१८	३	७ ४९	१० ०९	१२ २७	१४ ४८	१७ ०९	१९ १३	२० ५४	२२ १९	२३ ४१	१ १४	३ ०९	५ २३
	१९	४	७ ४५	१० ०५	१२ २३	१४ ४५	१७ ०५	१९ ०९	२० ५०	२२ १५	२३ ३८	१ १०	३ ०५	५ १९
	२०	५	७ ४१	१० ०१	१२ १९	१४ ४१	१७ ०१	१९ ०५	२० ४६	२२ ११	२३ ३४	१ ०६	३ ०१	५ १५
	२१	६	७ ३७	९ ५७	१२ १५	१४ ३७	१६ ५७	१९ ०१	२० ४२	२२ ०७	२३ ३०	१ ०२	२ ५७	५ ११
	२२	७	७ ३३	९ ५३	१२ ११	१४ ३३	१६ ५३	१८ ५७	२० ३८	२२ ०३	२३ २६	० ५८	२ ५३	५ ०७
	२३	८	७ ३०	९ ५०	१२ ०७	१४ २९	१६ ४९	१८ ५३	२० ३४	२१ ५९	२३ २२	० ५५	२ ४९	५ ०३
	२४	९	७ २६	९ ४६	१२ ०३	१४ २५	१६ ४५	१८ ५०	२० ३०	२१ ५६	२३ १८	० ५१	२ ४५	४ ५९
	२५	१०	७ २२	९ ४२	११ ५९	१४ २१	१६ ४१	१८ ४६	२० २७	२१ ५२	२३ १४	० ४७	२ ४१	४ ५६
	२६	११	७ १८	९ ३८	११ ५५	१४ १७	१६ ३७	१८ ४२	२० २३	२१ ४८	२३ १०	० ४३	२ ३७	४ ५२
	२७	१२	७ १४	९ ३४	११ ५२	१४ १३	१६ ३३	१८ ३८	२० १९	२१ ४४	२३ ०६	० ३९	२ ३३	४ ४८
	२८	१३	७ १०	९ ३०	११ ४८	१४ ०९	१६ २९	१८ ३४	२० १५	२१ ४०	२३ ०२	० ३५	२ ३०	४ ४४
	२९	१४	७ ०६	९ २६	११ ४४	१४ ०५	१६ २५	१८ ३०	२० ११	२१ ३६	२२ ५८	० ३१	२ २६	४ ४०
	३०	१५	७ ०२	९ २२	११ ४०	१४ ०१	१६ २१	१८ २६	२० ०७	२१ ३२	२२ ५४	० २७	२ २२	४ ३६
	३१	१६	६ ५८	९ १८	११ ३६	१३ ५७	१६ १७	१८ २२	२० ०३	२१ २८	२२ ५०	० २३	२ १८	४ ३१
अगस्त	१	१७	६ ५४	९ १४	११ ३२	१३ ५३	१६ १३	१८ १८	१९ ५९	२१ २४	२२ ४७	० १९	२ १४	४ २८
	२	१८	६ ५०	९ १०	११ २८	१३ ४९	१६ १०	१८ १४	१९ ५५	२१ २०	२२ ४३	० १५	२ १०	४ २४
	३	१९	६ ४६	९ ०६	११ २४	१३ ४६	१६ ०६	१८ १०	१९ ५१	२१ १६	२२ ३९	० ११	२ ०६	४ २०
	४	२०	६ ४२	९ ०२	११ २०	१३ ४२	१६ ०२	१८ ०६	१९ ४७	२१ १२	२२ ३५	० ०७	२ ०२	४ १६
	५	२१	६ ३८	८ ५८	११ १६	१३ ३८	१५ ५८	१८ ०२	१९ ४३	२१ ०८	२२ ३१	० ०३	१ ५८	४ १२
	६	२२	६ ३४	८ ५४	११ १२	१३ ३४	१५ ५४	१७ ५८	१९ ३९	२१ ०४	२२ २७	० ००	१ ५४	४ ०८
	७	२३	६ ३१	८ ५१	११ ०८	१३ ३०	१५ ५०	१७ ५५	१९ ३५	२१ ०१	२२ २३	२३ ५६	१ ५०	४ ०४
	८	२४	६ २७	८ ४७	११ ०४	१३ २६	१५ ४६	१७ ५१	१९ ३२	२० ५७	२२ १९	२३ ५२	१ ४६	४ ००
	९	२५	६ २३	८ ४३	११ ००	१३ २२	१५ ४२	१७ ४७	१९ २८	२० ५३	२२ १५	२३ ४८	१ ४२	३ ५७
	१०	२६	६ १९	८ ३९	१० ५६	१३ १८	१५ ३८	१७ ४३	१९ २४	२० ४९	२२ ११	२३ ४४	१ ३८	३ ५३
	११	२७	६ १५	८ ३५	१० ५३	१३ १४	१५ ३४	१७ ३९	१९ २०	२० ४५	२२ ०७	२३ ४०	१ ३४	३ ४९
	१२	२८	६ ११	८ ३१	१० ४९	१३ १०	१५ ३०	१७ ३५	१९ १६	२० ४१	२२ ०३	२३ ३६	१ ३१	३ ४५
	१३	२९	६ ०७	८ २७	१० ४५	१३ ०६	१५ २६	१७ ३१	१९ १२	२० ३७	२१ ५९	२३ ३२	१ २७	३ ४१
	१४	३०	६ ०३	८ २३	१० ४१	१३ ०२	१५ २२	१७ २७	१९ ०८	२० ३३	२१ ५५	२३ २८	१ २३	३ ३७
	१५	३१	५ ५९	८ १९	१० ३७	१२ ५८	१५ १८	१७ २३	१९ ०४	२० २९	२१ ५१	२३ २४	१ १९	३ ३३
	१६	भा१	५ ५५											

दैनिक लग्नसारणी, चण्डीगढ़ (U.T.) में लग्नों का समाप्तिकाल [भा.स्टैं.टा.]

भाद्रपद

अंग्रेज़ी तारीख		भाद्रपद तिथि	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन	मेष	वृष	मिथुन	कर्क
			घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.
अगस्त	१६	१	८ १५	१० ३३	१२ ५४	१५ १५	१७ १९	१९ ००	२० २५	२१ ४८	२३ २०	१ १५	३ २९	५ ५१
	१७	२	८ ११	१० २९	१२ ५०	१५ ११	१७ १५	१८ ५६	२० २१	२१ ४४	२३ १६	१ ११	३ २५	५ ४७
	१८	३	८ ०७	१० २५	१२ ४७	१५ ०७	१७ ११	१८ ५२	२० १७	२१ ४०	२३ १२	१ ०७	३ २१	५ ४३
	१९	४	८ ०३	१० २१	१२ ४३	१५ ०३	१७ ०७	१८ ४८	२० १३	२१ ३६	२३ ०८	१ ०३	३ १७	५ ३९
	२०	५	७ ५९	१० १७	१२ ३९	१४ ५९	१७ ०३	१८ ४४	२० ०९	२१ ३२	२३ ०४	० ५९	३ १३	५ ३६
	२१	६	७ ५६	१० १३	१२ ३५	१४ ५५	१६ ५९	१८ ४०	२० ०५	२१ २८	२३ ०१	० ५५	३ ०९	५ ३२
	२२	७	७ ५२	१० ०९	१२ ३१	१४ ५१	१६ ५६	१८ ३६	२० ०२	२१ २४	२२ ५७	० ५१	३ ०५	५ २८
	२३	८	७ ४८	१० ०५	१२ २७	१४ ४७	१६ ५२	१८ ३३	१९ ५८	२१ २०	२२ ५३	० ४७	३ ०२	५ २४
	२४	९	७ ४४	१० ०१	१२ २३	१४ ४३	१६ ४८	१८ २९	१९ ५४	२१ १६	२२ ४९	० ४३	२ ५८	५ २०
	२५	१०	७ ४०	९ ५७	१२ १९	१४ ३९	१६ ४४	१८ २५	१९ ५०	२१ १२	२२ ४५	० ३९	२ ५४	५ १६
	२६	११	७ ३६	९ ५४	१२ १५	१४ ३५	१६ ४०	१८ २१	१९ ४६	२१ ०८	२२ ४१	० ३६	२ ५०	५ १२
	२७	१२	७ ३२	९ ५०	१२ ११	१४ ३१	१६ ३६	१८ १७	१९ ४२	२१ ०४	२२ ३७	० ३२	२ ४६	५ ०८
	२८	१३	७ २८	९ ४६	१२ ०७	१४ २७	१६ ३२	१८ १३	१९ ३८	२१ ००	२२ ३३	० २८	२ ४२	५ ०४
	२९	१४	७ २४	९ ४२	१२ ०३	१४ २३	१६ २८	१८ ०९	१९ ३४	२० ५६	२२ २९	० २४	२ ३८	५ ००
	३०	१५	७ २०	९ ३८	११ ५९	१४ १९	१६ २४	१८ ०५	१९ ३०	२० ५२	२२ २५	० २०	२ ३४	४ ५६
	३१	१६	७ १६	९ ३४	११ ५५	१४ १६	१६ २०	१८ ०१	१९ २६	२० ४९	२२ २१	० १६	२ ३०	४ ५२
सितम्बर	१	१७	७ १२	९ ३०	११ ५२	१४ १२	१६ १६	१७ ५७	१९ २२	२० ४५	२२ १७	० १२	२ २६	४ ४८
	२	१८	७ ०८	९ २६	११ ४८	१४ ०८	१६ १२	१७ ५३	१९ १८	२० ४१	२२ १३	० ०८	२ २२	४ ४४
	३	१९	७ ०४	९ २२	११ ४४	१४ ०४	१६ ०८	१७ ४९	१९ १४	२० ३७	२२ ०९	० ०४	२ १८	४ ४०
	४	२०	७ ००	९ १८	११ ४०	१४ ००	१६ ०४	१७ ४५	१९ १०	२० ३३	२२ ०६	० ००	२ १४	४ ३७
	५	२१	६ ५७	९ १४	११ ३६	१३ ५६	१६ ००	१७ ४१	१९ ०६	२० २९	२२ ०२	२३ ५६	२ १०	४ ३३
	६	२२	६ ५३	९ १०	११ ३२	१३ ५२	१५ ५७	१७ ३८	१९ ०३	२० २५	२१ ५८	२३ ५२	२ ०६	४ २९
	७	२३	६ ४९	९ ०६	११ २८	१३ ४८	१५ ५३	१७ ३४	१८ ५९	२० २१	२१ ५४	२३ ४८	२ ०३	४ २५
	८	२४	६ ४५	९ ०२	११ २४	१३ ४४	१५ ४९	१७ ३०	१८ ५५	२० १७	२१ ५०	२३ ४४	१ ५९	४ २१
	९	२५	६ ४१	८ ५९	११ २०	१३ ४०	१५ ४५	१७ २६	१८ ५१	२० १३	२१ ४६	२३ ४०	१ ५५	४ १७
	१०	२६	६ ३७	८ ५५	११ १६	१३ ३६	१५ ४१	१७ २२	१८ ४७	२० ०९	२१ ४२	२३ ३७	१ ५१	४ १३
	११	२७	६ ३३	८ ५१	११ १२	१३ ३२	१५ ३७	१७ १८	१८ ४३	२० ०५	२१ ३८	२३ ३३	१ ४७	४ ०९
	१२	२८	६ २९	८ ४७	११ ०८	१३ २८	१५ ३३	१७ १४	१८ ३९	२० ०१	२१ ३४	२३ २९	१ ४३	४ ०५
	१३	२९	६ २५	८ ४३	११ ०४	१३ २४	१५ २९	१७ १०	१८ ३५	१९ ५७	२१ ३०	२३ २५	१ ३९	४ ०१
	१४	३०	६ २१	८ ३९	११ ००	१३ २१	१५ २५	१७ ०६	१८ ३१	१९ ५४	२१ २६	२३ २१	१ ३५	३ ५७
	१५	३१	६ १७	८ ३५	१० ५६	१३ १७	१५ २१	१७ ०२	१८ २७	१९ ५०	२१ २२	२३ १७	१ ३१	३ ५३
	१६	आ.१	६ १३											

आश्विन

अंग्रेज़ी तारीख		आश्विन तिथि	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह
			घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.
सितम्बर	१६	१	८ ३१	१० ५३	१३ १३	१५ १७	१६ ५८	१८ २३	१९ ४६	२१ १८	२३ १३	१ २७	३ ४९	६ ०९
	१७	२	८ २७	१० ४९	१३ ०९	१५ १३	१६ ५४	१८ १९	१९ ४२	२१ १४	२३ ०९	१ २३	३ ४५	६ ०५
	१८	३	८ २३	१० ४५	१३ ०५	१५ ०९	१६ ५०	१८ १५	१९ ३८	२१ १०	२३ ०५	१ १९	३ ४२	६ ०१
	१९	४	८ १९	१० ४१	१३ ०१	१५ ०५	१६ ४६	१८ ११	१९ ३४	२१ ०७	२३ ०१	१ १५	३ ३८	५ ५८
	२०	५	८ १५	१० ३७	१२ ५७	१५ ०२	१६ ४२	१८ ०८	१९ ३०	२१ ०३	२२ ५७	१ ११	३ ३४	५ ५४
	२१	६	८ ११	१० ३३	१२ ५३	१४ ५८	१६ ३९	१८ ०४	१९ २६	२० ५९	२२ ५३	१ ०७	३ ३०	५ ५०
	२२	७	८ ०७	१० २९	१२ ४९	१४ ५४	१६ ३५	१८ ००	१९ २२	२० ५५	२२ ४९	१ ०४	३ २६	५ ४६
	२३	८	८ ०३	१० २५	१२ ४५	१४ ५०	१६ ३१	१७ ५६	१९ १८	२० ५१	२२ ४५	१ ००	३ २२	५ ४२
	२४	९	८ ००	१० २१	१२ ४१	१४ ४६	१६ २७	१७ ५२	१९ १४	२० ४७	२२ ४१	० ५६	३ १८	५ ३८
	२५	१०	७ ५६	१० १७	१२ ३७	१४ ४२	१६ २३	१७ ४८	१९ १०	२० ४३	२२ ३८	० ५२	३ १४	५ ३४
	२६	११	७ ५२	१० १३	१२ ३३	१४ ३८	१६ १९	१७ ४४	१९ ०६	२० ३९	२२ ३४	० ४८	३ १०	५ ३०
	२७	१२	७ ४८	१० ०९	१२ २९	१४ ३४	१६ १५	१७ ४०	१९ ०२	२० ३५	२२ ३०	० ४४	३ ०६	५ २६
	२८	१३	७ ४४	१० ०५	१२ २५	१४ ३०	१६ ११	१७ ३६	१८ ५८	२० ३१	२२ २६	० ४०	३ ०२	५ २२
	२९	१४	७ ४०	१० ०१	१२ २२	१४ २६	१६ ०७	१७ ३२	१८ ५५	२० २७	२२ २२	० ३६	२ ५८	५ १८
	३०	१५	७ ३६	९ ५७	१२ १८	१४ २२	१६ ०३	१७ २८	१८ ५१	२० २३	२२ १८	० ३२	२ ५४	५ १४
अक्टूबर	१	१६	७ ३२	९ ५४	१२ १४	१४ १८	१५ ५९	१७ २४	१८ ४७	२० १९	२२ १४	० २८	२ ५०	५ १०
	२	१७	७ २८	९ ५०	१२ १०	१४ १४	१५ ५५	१७ २०	१८ ४३	२० १५	२२ १०	० २४	२ ४६	५ ०६
	३	१८	७ २४	९ ४६	१२ ०६	१४ १०	१५ ५१	१७ १६	१८ ३९	२० ११	२२ ०६	० २०	२ ४३	५ ०३
	४	१९	७ २०	९ ४२	१२ ०२	१४ ०६	१५ ४७	१७ १२	१८ ३५	२० ०८	२२ ०२	० १६	२ ३९	४ ५९
	५	२०	७ १६	९ ३८	११ ५८	१४ ०३	१५ ४३	१७ ०९	१८ ३१	२० ०४	२१ ५८	० १२	२ ३५	४ ५५
	६	२१	७ १२	९ ३४	११ ५४	१३ ५९	१५ ४०	१७ ०५	१८ २७	२० ००	२१ ५४	० ०८	२ ३१	४ ५१
	७	२२	७ ०८	९ ३०	११ ५०	१३ ५५	१५ ३६	१७ ०१	१८ २३	१९ ५६	२१ ५०	० ०५	२ २७	४ ४७
	८	२३	७ ०५	९ २६	११ ४६	१३ ५१	१५ ३२	१६ ५७	१८ १९	१९ ५२	२१ ४६	० ०१	२ २३	४ ४३
	९	२४	७ ०१	९ २२	११ ४२	१३ ४७	१५ २८	१६ ५३	१८ १५	१९ ४८	२१ ४३	२३ ५७	२ १९	४ ३९
	१०	२५	६ ५७	९ १८	११ ३८	१३ ४३	१५ २४	१६ ४९	१८ ११	१९ ४४	२१ ३९	२३ ५३	२ १५	४ ३५
	११	२६	६ ५३	९ १४	११ ३४	१३ ३९	१५ २०	१६ ४५	१८ ०७	१९ ४०	२१ ३५	२३ ४९	२ ११	४ ३१
	१२	२७	६ ४९	९ १०	११ ३०	१३ ३५	१५ १६	१६ ४१	१८ ०३	१९ ३६	२१ ३१	२३ ४५	२ ०७	४ २७
	१३	२८	६ ४५	९ ०६	११ २६	१३ ३१	१५ १२	१६ ३७	१७ ५९	१९ ३२	२१ २७	२३ ४१	२ ०३	४ २३
	१४	२९	६ ४१	९ ०२	११ २३	१३ २७	१५ ०८	१६ ३३	१७ ५६	१९ २८	२१ २३	२३ ३७	१ ५९	४ १९
	१५	३०	६ ३७	८ ५९	११ १९	१३ २३	१५ ०४	१६ २९	१७ ५२	१९ २४	२१ १९	२३ ३३	१ ५५	४ १५
	१६	का.१	६ ३३											

दैनिक लग्नसारणी, चण्डीगढ़ (U.T.) में लग्नों का समाप्तिकाल [भा.स्टैं.टा.]

अंग्रेज़ी तारीख		कार्तिक तिथि	कार्तिक											
			तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या
			घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.
अक्टूबर	१६	१	८ ५५	११ १५	१३ १९	१५ ००	१६ २५	१७ ४८	१९ २०	२१ १५	२३ २९	१ ५१	४ ११	६ २९
	१७	२	८ ५१	११ ११	१३ १५	१४ ५६	१६ २१	१७ ४४	१९ १६	२१ ११	२३ २५	१ ४७	४ ०७	६ २५
	१८	३	८ ४७	११ ०७	१३ ११	१४ ५२	१६ १७	१७ ४०	१९ १३	२१ ०७	२३ २१	१ ४४	४ ०४	६ २१
	१९	४	८ ४३	११ ०३	१३ ०८	१४ ४८	१६ १४	१७ ३६	१९ ०९	२१ ०३	२३ १७	१ ४०	४ ००	६ १७
	२०	५	८ ३९	१० ५९	१३ ०४	१४ ४५	१६ १०	१७ ३२	१९ ०५	२० ५९	२३ १३	१ ३६	३ ५६	६ १३
	२१	६	८ ३५	१० ५५	१३ ००	१४ ४१	१६ ०६	१७ २८	१९ ०१	२० ५५	२३ ०९	१ ३२	३ ५२	६ ०९
	२२	७	८ ३१	१० ५१	१२ ५६	१४ ३७	१६ ०२	१७ २४	१८ ५७	२० ५१	२३ ०६	१ २८	३ ४८	६ ०६
	२३	८	८ २७	१० ४७	१२ ५२	१४ ३३	१५ ५८	१७ २०	१८ ५३	२० ४७	२३ ०२	१ २४	३ ४४	६ ०२
	२४	९	८ २३	१० ४३	१२ ४८	१४ २९	१५ ५४	१७ १६	१८ ४९	२० ४४	२२ ५८	१ २०	३ ४०	५ ५८
	२५	१०	८ १९	१० ३९	१२ ४४	१४ २५	१५ ५०	१७ १२	१८ ४५	२० ४०	२२ ५४	१ १६	३ ३६	५ ५४
	२६	११	८ १५	१० ३५	१२ ४०	१४ २१	१५ ४६	१७ ०८	१८ ४१	२० ३६	२२ ५०	१ १२	३ ३२	५ ५०
	२७	१२	८ ११	१० ३१	१२ ३६	१४ १७	१५ ४२	१७ ०४	१८ ३७	२० ३२	२२ ४६	१ ०८	३ २८	५ ४६
	२८	१३	८ ०७	१० २८	१२ ३२	१४ १३	१५ ३८	१७ ०१	१८ ३३	२० २८	२२ ४२	१ ०४	३ २४	५ ४२
	२९	१४	८ ०३	१० २४	१२ २८	१४ ०९	१५ ३४	१६ ५७	१८ २९	२० २४	२२ ३८	१ ००	३ २०	५ ३८
	३०	१५	८ ००	१० २०	१२ २४	१४ ०५	१५ ३०	१६ ५३	१८ २५	२० २०	२२ ३४	० ५६	३ १६	५ ३४
	३१	१६	७ ५६	१० १६	१२ २०	१४ ०१	१५ २६	१६ ४९	१८ २१	२० १६	२२ ३०	० ५२	३ १२	५ ३०
नवम्बर	१	१७	७ ५२	१० १२	१२ १६	१३ ५७	१५ २२	१६ ४५	१८ १७	२० १२	२२ २६	० ४८	३ ०९	५ २६
	२	१८	७ ४८	१० ०८	१२ १२	१३ ५३	१५ १८	१६ ४१	१८ १३	२० ०८	२२ २२	० ४५	३ ०५	५ २२
	३	१९	७ ४४	१० ०४	१२ ०९	१३ ४९	१५ १५	१६ ३७	१८ ०९	२० ०४	२२ १८	० ४१	३ ०१	५ १८
	४	२०	७ ४०	१० ००	१२ ०५	१३ ४६	१५ ११	१६ ३३	१८ ०६	२० ००	२२ १४	० ३७	२ ५७	५ १४
	५	२१	७ ३६	९ ५६	१२ ०१	१३ ४२	१५ ०७	१६ २९	१८ ०२	१९ ५६	२२ ११	० ३३	२ ५३	५ १०
	६	२२	७ ३२	९ ५२	११ ५७	१३ ३८	१५ ०३	१६ २५	१७ ५८	१९ ५२	२२ ०७	० २९	२ ४९	५ ०७
	७	२३	७ २८	९ ४८	११ ५३	१३ ३४	१४ ५९	१६ २१	१७ ५४	१९ ४९	२२ ०३	० २५	२ ४५	५ ०३
	८	२४	७ २४	९ ४४	११ ४९	१३ ३०	१४ ५५	१६ १७	१७ ५०	१९ ४५	२१ ५९	० २१	२ ४१	४ ५९
	९	२५	७ २०	९ ४०	११ ४५	१३ २६	१४ ५१	१६ १३	१७ ४६	१९ ४१	२१ ५५	० १७	२ ३७	४ ५५
	१०	२६	७ १६	९ ३६	११ ४१	१३ २२	१४ ४७	१६ ०९	१७ ४२	१९ ३७	२१ ५१	० १३	२ ३३	४ ५१
	११	२७	७ १२	९ ३२	११ ३७	१३ १८	१४ ४३	१६ ०५	१७ ३८	१९ ३३	२१ ४७	० ०९	२ २९	४ ४७
	१२	२८	७ ०८	९ २९	११ ३३	१३ १४	१४ ३९	१६ ०२	१७ ३४	१९ २९	२१ ४३	० ०५	२ २५	४ ४३
	१३	२९	७ ०५	९ २५	११ २९	१३ १०	१४ ३५	१५ ५८	१७ ३०	१९ २५	२१ ३९	० ०१	२ २१	४ ३९
	१४	३०	७ ०१	९ २१	११ २५	१३ ०६	१४ ३१	१५ ५४	१७ २६	१९ २१	२१ ३५	२३ ५७	२ १७	४ ३५
	१५	मा. १	६ ५७											

अंग्रेज़ी तारीख		मार्गशीर्ष तिथि	मार्गशीर्ष											
			वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला
			घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.
नवम्बर	१५	१	९ १७	११ २१	१३ ०२	१४ २७	१५ ५०	१७ २२	१९ १७	२१ ३१	२३ ५३	२ १३	४ ३१	६ ५३
	१६	२	९ १३	११ १७	१२ ५८	१४ २३	१५ ४६	१७ १८	१९ १३	२१ २७	२३ ५०	२ १०	४ २७	६ ४९
	१७	३	९ ०९	११ १३	१२ ५४	१४ १९	१५ ४२	१७ १५	१९ ०९	२१ २३	२३ ४६	२ ०६	४ २३	६ ४५
	१८	४	९ ०५	११ १०	१२ ५०	१४ १६	१५ ३८	१७ ११	१९ ०५	२१ १९	२३ ४२	२ ०२	४ १९	६ ४१
	१९	५	९ ०१	११ ०६	१२ ४७	१४ १२	१५ ३४	१७ ०७	१९ ०१	२१ १६	२३ ३८	१ ५८	४ १५	६ ३७
	२०	६	८ ५७	११ ०२	१२ ४३	१४ ०८	१५ ३०	१७ ०३	१८ ५७	२१ १२	२३ ३४	१ ५४	४ १२	६ ३३
	२१	७	८ ५३	१० ५८	१२ ३९	१४ ०४	१५ २६	१६ ५९	१८ ५३	२१ ०८	२३ ३०	१ ५०	४ ०८	६ २९
	२२	८	८ ४९	१० ५४	१२ ३५	१४ ००	१५ २२	१६ ५५	१८ ५०	२१ ०४	२३ २६	१ ४६	४ ०४	६ २५
	२३	९	८ ४५	१० ५०	१२ ३१	१३ ५६	१५ १८	१६ ५१	१८ ४६	२१ ००	२३ २२	१ ४२	४ ००	६ २१
	२४	१०	८ ४१	१० ४६	१२ २७	१३ ५२	१५ १४	१६ ४७	१८ ४२	२० ५६	२३ १८	१ ३८	३ ५६	६ १७
	२५	११	८ ३७	१० ४२	१२ २३	१३ ४८	१५ १०	१६ ४३	१८ ३८	२० ५२	२३ १४	१ ३४	३ ५२	६ १३
	२६	१२	८ ३३	१० ३८	१२ १९	१३ ४४	१५ ०७	१६ ३९	१८ ३४	२० ४८	२३ १०	१ ३०	३ ४८	६ ०९
	२७	१३	८ ३०	१० ३४	१२ १५	१३ ४०	१५ ०३	१६ ३५	१८ ३०	२० ४४	२३ ०६	१ २६	३ ४४	६ ०६
	२८	१४	८ २६	१० ३०	१२ ११	१३ ३६	१४ ५९	१६ ३१	१८ २६	२० ४०	२३ ०२	१ २२	३ ४०	६ ०२
	२९	१५	८ २२	१० २६	१२ ०७	१३ ३२	१४ ५५	१६ २७	१८ २२	२० ३६	२२ ५८	१ १८	३ ३६	५ ५८
	३०	१६	८ १८	१० २२	१२ ०३	१३ २८	१४ ५१	१६ २३	१८ १८	२० ३२	२२ ५४	१ १४	३ ३२	५ ५४
दिसम्बर	१	१७	८ १४	१० १८	११ ५९	१३ २४	१४ ४७	१६ २०	१८ १४	२० २८	२२ ५१	१ ११	३ २८	५ ५०
	२	१८	८ १०	१० १५	११ ५५	१३ २१	१४ ४३	१६ १६	१८ १०	२० २४	२२ ४७	१ ०७	३ २४	५ ४६
	३	१९	८ ०६	१० ११	११ ५२	१३ १७	१४ ३९	१६ १२	१८ ०६	२० २०	२२ ४३	१ ०३	३ २०	५ ४२
	४	२०	८ ०२	१० ०७	११ ४८	१३ १३	१४ ३५	१६ ०८	१८ ०२	२० १७	२२ ३९	० ५९	३ १६	५ ३८
	५	२१	७ ५८	१० ०३	११ ४४	१३ ०९	१४ ३१	१६ ०४	१७ ५८	२० १३	२२ ३५	० ५५	३ १३	५ ३४
	६	२२	७ ५४	९ ५९	११ ४०	१३ ०५	१४ २७	१६ ००	१७ ५४	२० ०९	२२ ३१	० ५१	३ ०९	५ ३०
	७	२३	७ ५०	९ ५५	११ ३६	१३ ०१	१४ २३	१५ ५६	१७ ५१	२० ०५	२२ २७	० ४७	३ ०५	५ २६
	८	२४	७ ४६	९ ५१	११ ३२	१२ ५७	१४ १९	१५ ५२	१७ ४७	२० ०१	२२ २३	० ४३	३ ०१	५ २२
	९	२५	७ ४२	९ ४७	११ २८	१२ ५३	१४ १५	१५ ४८	१७ ४३	१९ ५७	२२ १९	० ३९	२ ५७	५ १८
	१०	२६	७ ३८	९ ४३	११ २४	१२ ४९	१४ ११	१५ ४४	१७ ३९	१९ ५३	२२ १५	० ३५	२ ५३	५ १४
	११	२७	७ ३५	९ ३९	११ २०	१२ ४५	१४ ०८	१५ ४०	१७ ३५	१९ ४९	२२ ११	० ३१	२ ४९	५ १०
	१२	२८	७ ३१	९ ३५	११ १६	१२ ४१	१४ ०४	१५ ३६	१७ ३१	१९ ४५	२२ ०७	० २७	२ ४५	५ ०७
	१३	२९	७ २७	९ ३१	११ १२	१२ ३७	१४ ००	१५ ३२	१७ २७	१९ ४१	२२ ०३	० २३	२ ४१	५ ०३
	१४	३०	७ २३	९ २७	११०८	१२ ३३	१३ ५६	१५ २८	१७ २३	१९ ३७	२१ ५९	० १९	२ ३७	४ ५९
	१५	पौ.१	७ १९											

दैनिक लग्नसारणी, चण्डीगढ़ (U.T.) में लग्नों का समाप्तिकाल [भा.स्टैं.टा.]

पौष

अंग्रेज़ी तारीख		पौष प्रविष्टे	धनु	मकर	कुम्भ	मीन	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक
			घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.
दिसम्बर	१५	१	९ २३	११ ४	१२ २९	१३ ५२	१५ २४	१७ १९	१९ ३३	२१ ५६	० १६	२ ३३	४ ५५	७ १५
	१६	२	९ १९	११ ००	१२ २५	१३ ४८	१५ २१	१७ १५	१९ २९	२१ ५२	० १२	२ २९	४ ५१	७ ११
	१७	३	९ १६	१० ५६	१२ २२	१३ ४४	१५ १७	१७ ११	१९ २५	२१ ४८	० ०८	२ २५	४ ४७	७ ०७
	१८	४	९ १२	१० ५३	१२ १८	१३ ४०	१५ १३	१७ ०७	१९ २२	२१ ४४	० ०४	२ २१	४ ४३	७ ०३
	१९	५	९ ०८	१० ४९	१२ १४	१३ ३६	१५ ०९	१७ ०३	१९ १८	२१ ४०	० ००	२ १७	४ ३९	६ ५९
	२०	६	९ ०४	१० ४५	१२ १०	१३ ३२	१५ ०५	१६ ५९	१९ १४	२१ ३६	२३ ५६	२ १४	४ ३५	६ ५५
	२१	७	९ ००	१० ४१	१२ ०६	१३ २८	१५ ०१	१६ ५६	१९ १०	२१ ३२	२३ ५२	२ १०	४ ३१	६ ५१
	२२	८	८ ५६	१० ३७	१२ ०२	१३ २४	१४ ५७	१६ ५२	१९ ०६	२१ २८	२३ ४८	२ ०६	४ २७	६ ४७
	२३	९	८ ५२	१० ३३	११ ५८	१३ २०	१४ ५३	१६ ४८	१९ ०२	२१ २४	२३ ४४	२ ०२	४ २३	६ ४३
	२४	१०	८ ४८	१० २९	११ ५४	१३ १६	१४ ४९	१६ ४४	१८ ५८	२१ २०	२३ ४०	१ ५८	४ १९	६ ३९
	२५	११	८ ४४	१० २५	११ ५०	१३ १२	१४ ४५	१६ ४०	१८ ५४	२१ १६	२३ ३६	१ ५४	४ १५	६ ३६
	२६	१२	८ ४०	१० २१	११ ४६	१३ ०९	१४ ४१	१६ ३६	१८ ५०	२१ १२	२३ ३२	१ ५०	४ १२	६ ३२
	२७	१३	८ ३६	१० १७	११ ४२	१३ ०५	१४ ३७	१६ ३२	१८ ४६	२१ ०८	२३ २८	१ ४६	४ ०८	६ २८
	२८	१४	८ ३२	१० १३	११ ३८	१३ ०१	१४ ३३	१६ २८	१८ ४२	२१ ०४	२३ २४	१ ४२	४ ०४	६ २४
	२९	१५	८ २८	१० ०९	११ ३४	१२ ५७	१४ २९	१६ २४	१८ ३८	२१ ००	२३ २०	१ ३८	४ ००	६ २०
	३०	१६	८ २४	१० ०५	११ ३०	१२ ५३	१४ २६	१६ २०	१८ ३४	२० ५७	२३ १७	१ ३४	३ ५६	६ १६
	३१	१७	८ २०	१० ०१	११ २६	१२ ४९	१४ २२	१६ १६	१८ ३०	२० ५३	२३ १३	१ ३०	३ ५२	६ १२
जनवरी	१	१८	८ १६	९ ५७	११ २२	१२ ४४	१४ १७	१६ ११	१८ २६	२० ४८	२३ ०८	१ २५	३ ४७	६ ०७
	२	१९	८ १२	९ ५३	११ १८	१२ ४०	१४ १३	१६ ०७	१८ २२	२० ४४	२३ ०४	१ २१	३ ४३	६ ०३
	३	२०	८ ०८	९ ४९	११ १४	१२ ३६	१४ ०९	१६ ०३	१८ १८	२० ४०	२३ ००	१ १७	३ ३९	५ ५९
	४	२१	८ ०४	९ ४५	११ १०	१२ ३२	१४ ०५	१५ ५९	१८ १४	२० ३६	२२ ५६	१ १४	३ ३५	५ ५५
	५	२२	८ ००	९ ४१	११ ०६	१२ २८	१४ ०१	१५ ५६	१८ १०	२० ३२	२२ ५२	१ १०	३ ३१	५ ५१
	६	२३	७ ५६	९ ३७	११ ०२	१२ २४	१३ ५७	१५ ५२	१८ ०६	२० २८	२२ ४८	१ ०६	३ २७	५ ४७
	७	२४	७ ५२	९ ३३	१० ५८	१२ २०	१३ ५३	१५ ४८	१८ ०२	२० २४	२२ ४४	१ ०२	३ २३	५ ४३
	८	२५	७ ४८	९ २९	१० ५४	१२ १६	१३ ४९	१५ ४४	१७ ५८	२० २०	२२ ४०	० ५८	३ १९	५ ३९
	९	२६	७ ४४	९ २५	१० ५०	१२ १३	१३ ४५	१५ ४०	१७ ५४	२० १६	२२ ३६	० ५४	३ १५	५ ३६
	१०	२७	७ ४०	९ २१	१० ४६	१२ ०९	१३ ४१	१५ ३६	१७ ५०	२० १२	२२ ३२	० ५०	३ १२	५ ३२
	११	२८	७ ३६	९ १७	१० ४२	१२ ०५	१३ ३७	१५ ३२	१७ ४६	२० ०८	२२ २८	० ४६	३ ०८	५ २८
	१२	२९	७ ३२	९ १३	१० ३८	१२ ०१	१३ ३३	१५ २८	१७ ४२	२० ०४	२२ २४	० ४२	३ ०४	५ २४
	१३	मा.१	७ २८											

माघ

अंग्रेज़ी तारीख		माघ प्रविष्टे	मकर	कुम्भ	मीन	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु
			घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.
जनवरी	१३	१	९ ०९	१० ३४	११ ५७	१३ २९	१५ २४	१७ ३८	२० ००	२२ २०	० ३८	३ ००	५ २०	७ २४
	१४	२	९ ०५	१० ३०	११ ५३	१३ २६	१५ २०	१७ ३४	१९ ५७	२२ १७	० ३४	२ ५६	५ १६	७ २०
	१५	३	९ ०१	१० २७	११ ४९	१३ २२	१५ १६	१७ ३०	१९ ५३	२२ १३	० ३०	२ ५२	५ १२	७ १७
	१६	४	८ ५८	१० २३	११ ४५	१३ १८	१५ १२	१७ २६	१९ ४९	२२ ०९	० २६	२ ४८	५ ०८	७ १३
	१७	५	८ ५४	१० १९	११ ४१	१३ १४	१५ ०८	१७ २३	१९ ४५	२२ ०५	० २२	२ ४४	५ ०४	७ ०९
	१८	६	८ ५०	१० १५	११ ३७	१३ १०	१५ ०४	१७ १९	१९ ४१	२२ ०१	० १९	२ ४०	५ ००	७ ०५
	१९	७	८ ४६	१० ११	११ ३३	१३ ०६	१५ ०१	१७ १५	१९ ३७	२१ ५७	० १५	२ ३६	४ ५६	७ ०१
	२०	८	८ ४२	१० ०७	११ २९	१३ ०२	१४ ५७	१७ ११	१९ ३३	२१ ५३	० ११	२ ३२	४ ५२	६ ५७
	२१	९	८ ३८	१० ०३	११ २५	१२ ५८	१४ ५३	१७ ०७	१९ २९	२१ ४९	० ०७	२ २८	४ ४८	६ ५३
	२२	१०	८ ३४	९ ५९	११ २१	१२ ५४	१४ ४९	१७ ०३	१९ २५	२१ ४५	० ०३	२ २४	४ ४४	६ ४९
	२३	११	८ ३०	९ ५५	११ १७	१२ ५०	१४ ४५	१६ ५९	१९ २१	२१ ४१	२३ ५९	२ २०	४ ४१	६ ४५
	२४	१२	८ २६	९ ५१	११ १४	१२ ४६	१४ ४१	१६ ५५	१९ १७	२१ ३७	२३ ५५	२ १६	४ ३७	६ ४१
	२५	१३	८ २२	९ ४७	११ १०	१२ ४२	१४ ३७	१६ ५१	१९ १३	२१ ३३	२३ ५१	२ १३	४ ३३	६ ३७
	२६	१४	८ १८	९ ४३	११ ०६	१२ ३८	१४ ३३	१६ ४७	१९ ०९	२१ २९	२३ ४७	२ ०९	४ २९	६ ३३
	२७	१५	८ १४	९ ३९	११ ०२	१२ ३४	१४ २९	१६ ४३	१९ ०५	२१ २५	२३ ४३	२ ०५	४ २५	६ २९
	२८	१६	८ १०	९ ३५	१० ५८	१२ ३०	१४ २५	१६ ३९	१९ ०२	२१ २२	२३ ३९	२ ०१	४ २१	६ २५
	२९	१७	८ ०६	९ ३१	१० ५४	१२ २७	१४ २१	१६ ३५	१८ ५८	२१ १८	२३ ३५	१ ५७	४ १७	६ २२
	३०	१८	८ ०२	९ २८	१० ५०	१२ २३	१४ १७	१६ ३१	१८ ५४	२१ १४	२३ ३१	१ ५३	४ १३	६ १८
	३१	१९	७ ५९	९ २४	१० ४६	१२ १९	१४ १३	१६ २८	१८ ५०	२१ १०	२३ २७	१ ४९	४ ०९	६ १४
फरवरी	१	२०	७ ५५	९ २०	१० ४२	१२ १५	१४ ०९	१६ २४	१८ ४६	२१ ०६	२३ २३	१ ४५	४ ०५	६ १०
	२	२१	७ ५१	९ १६	१० ३८	१२ ११	१४ ०५	१६ २०	१८ ४२	२१ ०२	२३ २०	१ ४१	४ ०१	६ ०६
	३	२२	७ ४७	९ १२	१० ३४	१२ ०७	१४ ०२	१६ १६	१८ ३८	२० ५८	२३ १६	१ ३७	३ ५७	६ ०२
	४	२३	७ ४३	९ ०८	१० ३०	१२ ०३	१३ ५८	१६ १२	१८ ३४	२० ५४	२३ १२	१ ३३	३ ५३	५ ५८
	५	२४	७ ३९	९ ०४	१० २६	११ ५९	१३ ५४	१६ ०८	१८ ३०	२० ५०	२३ ०८	१ २९	३ ४९	५ ५४
	६	२५	७ ३५	९ ००	१० २२	११ ५५	१३ ५०	१६ ०४	१८ २६	२० ४६	२३ ०४	१ २५	३ ४५	५ ५०
	७	२६	७ ३१	८ ५६	१० १९	११ ५१	१३ ४६	१६ ००	१८ २२	२० ४२	२३ ००	१ २१	३ ४२	५ ४६
	८	२७	७ २७	८ ५२	१० १५	११ ४७	१३ ४२	१५ ५६	१८ १८	२० ३८	२२ ५६	१ १७	३ ३८	५ ४२
	९	२८	७ २३	८ ४८	१० ११	११ ४३	१३ ३८	१५ ५२	१८ १४	२० ३४	२२ ५२	१ १४	३ ३४	५ ३८
	१०	२९	७ १९	८ ४४	१० ०७	११ ३९	१३ ३४	१५ ४८	१८ १०	२० ३०	२२ ४८	१ १०	३ ३०	५ ३४
	११	३०	७ १५	८ ४०	१० ०३	११ ३५	१३ ३०	१५ ४४	१८ ०६	२० २६	२२ ४४	१ ०६	३ २६	५ ३०
	१२	फा.१	७ ११											

दैनिक लग्नसारणी, चण्डीगढ़ (U.T.) में लग्नों का समाप्तिकाल [भा.स्टैं.टा.]

अंग्रेज़ी तारीख		फाल्गुन प्रविष्टे	फाल्गुन											
			कुम्भ	मीन	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर
			घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.
फरवरी	१२	१	८ ३६	९ ५९	११ ३२	१३ २६	१५ ४०	१८ ०३	२० २३	२२ ४०	१ ०२	३ २२	५ २६	७ ०७
	१३	२	८ ३३	९ ५५	११ २८	१३ २२	१५ ३६	१७ ५९	२० १९	२२ ३६	० ५८	३ १८	५ २३	७ ०४
	१४	३	८ २९	९ ५१	११ २४	१३ १८	१५ ३२	१७ ५५	२० १५	२२ ३२	० ५४	३ १४	५ १९	७ ००
	१५	४	८ २५	९ ४७	११ २०	१३ १४	१५ २९	१७ ५१	२० ११	२२ २८	० ५०	३ १०	५ १५	६ ५६
	१६	५	८ २१	९ ४३	११ १६	१३ १०	१५ २५	१७ ४७	२० ०७	२२ २५	० ४६	३ ०६	५ ११	६ ५२
	१७	६	८ १७	९ ३९	११ १२	१३ ०६	१५ २१	१७ ४३	२० ०३	२२ २१	० ४२	३ ०२	५ ०७	६ ४८
	१८	७	८ १३	९ ३५	११ ०८	१३ ०३	१५ १७	१७ ३९	१९ ५९	२२ १७	० ३८	२ ५८	५ ०३	६ ४४
	१९	८	८ ०९	९ ३१	११ ०४	१२ ५९	१५ १३	१७ ३५	१९ ५५	२२ १३	० ३४	२ ५४	४ ५९	६ ४०
	२०	९	८ ०५	९ २७	११ ००	१२ ५५	१५ ०९	१७ ३१	१९ ५१	२२ ०९	० ३०	२ ५०	४ ५५	६ ३६
	२१	१०	८ ०१	९ २३	१० ५६	१२ ५१	१५ ०५	१७ २७	१९ ४७	२२ ०५	० २६	२ ४६	४ ५१	६ ३२
	२२	११	७ ५७	९ २०	१० ५२	१२ ४७	१५ ०१	१७ २३	१९ ४३	२२ ०१	० २२	२ ४३	४ ४७	६ २८
	२३	१२	७ ५३	९ १६	१० ४८	१२ ४३	१४ ५७	१७ १९	१९ ३९	२१ ५७	० १९	२ ३९	४ ४३	६ २४
	२४	१३	७ ४९	९ १२	१० ४४	१२ ३९	१४ ५३	१७ १५	१९ ३५	२१ ५३	० १५	२ ३५	४ ३९	६ २०
	२५	१४	७ ४५	९ ०८	१० ४०	१२ ३५	१४ ४९	१७ ११	१९ ३१	२१ ४९	० ११	२ ३१	४ ३५	६ १६
	२६	१५	७ ४१	९ ०४	१० ३६	१२ ३१	१४ ४५	१७ ०७	१९ २७	२१ ४५	० ०७	२ २७	४ ३१	६ १२
	२७	१६	७ ३७	९ ००	१० ३३	१२ २७	१४ ४१	१७ ०४	१९ २४	२१ ४१	० ०३	२ २३	४ २८	६ ०८
	२८	१७	७ ३४	८ ५६	१० २९	१२ २३	१४ ३७	१७ ००	१९ २०	२१ ३७	२३ ५९	२ १९	४ २४	६ ०५
मार्च	१	१८	७ ३०	८ ५२	१० २५	१२ १९	१४ ३३	१६ ५६	१९ १६	२१ ३३	२३ ५५	२ १५	४ २०	६ ०१
	२	१९	७ २६	८ ४८	१० २१	१२ १५	१४ ३०	१६ ५२	१९ १२	२१ २९	२३ ५१	२ ११	४ १६	५ ५७
	३	२०	७ २२	८ ४४	१० १७	१२ ११	१४ २६	१६ ४८	१९ ०८	२१ २६	२३ ४७	२ ०७	४ १२	५ ५३
	४	२१	७ १८	८ ४०	१० १३	१२ ०८	१४ २२	१६ ४४	१९ ०४	२१ २२	२३ ४३	२ ०३	४ ०८	५ ४९
	५	२२	७ १४	८ ३६	१० ०९	१२ ०४	१४ १८	१६ ४०	१९ ००	२१ १८	२३ ३९	१ ५९	४ ०४	५ ४५
	६	२३	७ १०	८ ३२	१० ०५	१२ ००	१४ १४	१६ ३६	१८ ५६	२१ १४	२३ ३५	१ ५५	४ ००	५ ४१
	७	२४	७ ०६	८ २८	१० ०१	११ ५६	१४ १०	१६ ३२	१८ ५२	२१ १०	२३ ३१	१ ५१	३ ५६	५ ३७
	८	२५	७ ०२	८ २४	९ ५७	११ ५२	१४ ०६	१६ २८	१८ ४८	२१ ०६	२३ २७	१ ४८	३ ५२	५ ३३
	९	२६	६ ५८	८ २१	९ ५३	११ ४८	१४ ०२	१६ २४	१८ ४४	२१ ०२	२३ २३	१ ४४	३ ४८	५ २९
	१०	२७	६ ५४	८ १७	९ ४९	११ ४४	१३ ५८	१६ २०	१८ ४०	२० ५८	२३ २०	१ ४०	३ ४४	५ २५
	११	२८	६ ५०	८ १३	९ ४५	११ ४०	१३ ५४	१६ १६	१८ ३६	२० ५४	२३ १६	१ ३६	३ ४०	५ २१
	१२	२९	६ ४६	८ ०९	९ ४१	११ ३६	१३ ५०	१६ १२	१८ ३२	२० ५०	२३ १२	१ ३२	३ ३६	५ १७
	१३	३०	६ ४२	८ ०५	९ ३८	११ ३२	१३ ४६	१६ ०९	१८ २९	२० ४६	२३ ०८	१ २८	३ ३२	५ १३
	१४	चै.१	६ ३८											

अंग्रेज़ी तारीख		चैत्र प्रविष्टे	चैत्र											
			मीन	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ
			घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.
मार्च	१४	१	८ ०१	९ ३४	११ २८	१३ ४२	१६ ०५	१८ २५	२० ४२	२३ ०४	१ २४	३ २९	५ ०९	६ ३५
	१५	२	७ ५७	९ ३०	११ २४	१३ ३८	१६ ०१	१८ २१	२० ३८	२३ ००	१ २०	३ २५	५ ०६	६ ३१
	१६	३	७ ५३	९ २६	११ २०	१३ ३५	१५ ५७	१८ १७	२० ३४	२२ ५६	१ १६	३ २१	५ ०२	६ २७
	१७	४	७ ४९	९ २२	११ १६	१३ ३१	१५ ५३	१८ १३	२० ३०	२२ ५२	१ १२	३ १७	४ ५८	६ २३
	१८	५	७ ४५	९ १८	११ १२	१३ २७	१५ ४९	१८ ०९	२० २७	२२ ४८	१ ०८	३ १३	४ ५४	६ १९
	१९	६	७ ४१	९ १४	११ ०९	१३ २३	१५ ४५	१८ ०५	२० २३	२२ ४४	१ ०४	३ ०९	४ ५०	६ १५
	२०	७	७ ३७	९ १०	११ ०५	१३ १९	१५ ४१	१८ ०१	२० १९	२२ ४०	१ ००	३ ०५	४ ४६	६ ११
	२१	८	७ ३३	९ ०६	११ ०१	१३ १५	१५ ३७	१७ ५७	२० १५	२२ ३६	० ५६	३ ०१	४ ४२	६ ०७
	२२	९	७ २९	९ ०२	१० ५७	१३ ११	१५ ३३	१७ ५३	२० ११	२२ ३२	० ५२	२ ५७	४ ३८	६ ०३
	२३	१०	७ २५	८ ५८	१० ५३	१३ ०७	१५२९	१७ ४९	२० ०७	२२ २८	० ४९	२ ५३	४ ३४	५ ५९
	२४	११	७ २२	८ ५४	१० ४९	१३ ०३	१५ २५	१७ ४५	२० ०३	२२ २५	० ४५	२ ४९	४ ३०	५ ५५
	२५	१२	७ १८	८ ५०	१० ४५	१२ ५९	१५ २१	१७ ४१	१९ ५९	२२ २१	० ४१	२ ४५	४ २६	५ ५१
	२६	१३	७ १४	८ ४६	१० ४१	१२ ५५	१५ १७	१७ ३७	१९ ५५	२२ १७	० ३७	२ ४१	४ २२	५ ४७
	२७	१४	७ १०	८ ४२	१० ३७	१२ ५१	१५ १३	१७ ३३	१९ ५१	२२ १३	० ३३	२ ३७	४ १८	५ ४३
	२८	१५	७ ०६	८ ३८	१० ३३	१२ ४७	१५ १०	१७ ३०	१९ ४७	२२ ०९	० २९	२ ३३	४ १४	५ ३९
	२९	१६	७ ०२	८ ३४	१० २९	१२ ४३	१५ ०६	१७ २६	१९ ४३	२२ ०५	० २५	२ ३०	४ १०	५ ३६
	३०	१७	६ ५८	८ ३१	१० २५	१२ ३९	१५ ०२	१७ २२	१९ ४०	२२ ०१	० २१	२ २६	४ ०७	५ ३२
	३१	१८	६ ५४	८ २७	१० २१	१२ ३६	१४ ५८	१७ १८	१९ ३६	२१ ५७	० १७	२ २२	४ ०३	५ २८
अप्रैल	१	१९	६ ५०	८ २३	१० १७	१२ ३२	१४ ५४	१७ १४	१९ ३२	२१ ५३	० १३	२ १८	३ ५९	५ २४
	२	२०	६ ४६	८ १९	१० १३	१२ २८	१४ ५०	१७ १०	१९ २८	२१ ४९	० ०९	२ १४	३ ५५	५ २०
	३	२१	६ ४२	८ १५	१० १०	१२ २४	१४ ४६	१७ ०६	१९ २४	२१ ४५	० ०५	२ १०	३ ५१	५ १६
	४	२२	६ ३८	८ ११	१० ०६	१२ २०	१४ ४२	१७ ०२	१९ २०	२१ ४१	० ०१	२ ०६	३ ४७	५ १२
	५	२३	६ ३४	८ ०७	१० ०२	१२ १६	१४ ३८	१६ ५८	१९ १६	२१ ३७	२३ ५७	२ ०२	३ ४३	५ ०८
	६	२४	६ ३०	८ ०३	९ ५८	१२ १२	१४ ३४	१६ ५४	१९ १२	२१ ३३	२३ ५३	१ ५८	३ ३९	५ ०४
	७	२५	६ २७	७ ५९	९ ५४	१२ ०८	१४ ३०	१६ ५०	१९ ०८	२१ २९	२३ ५०	१ ५४	३ ३५	५ ००
	८	२६	६ २३	७ ५५	९ ५०	१२ ०४	१४ २६	१६ ४६	१९ ०४	२१ २६	२३ ४६	१ ५०	३ ३१	४ ५६
	९	२७	६ १९	७ ५१	९ ४६	१२ ००	१४ २२	१६ ४२	१९ ००	२१ २२	२३ ४२	१ ४६	३ २७	४ ५२
	१०	२८	६ १५	७ ४७	९ ४२	११ ५६	१४ १८	१६ ३८	१८ ५६	२१ १८	२३ ३८	१ ४२	३ २३	४ ४८
	११	२९	६ ११	७ ४३	९ ३८	११ ५२	१४ १४	१६ ३४	१८ ५२	२१ १४	२३ ३४	१ ३८	३ १९	४ ४४
	१२	३०	६ ०७	७ ४०	९ ३४	११ ४८	१४ ११	१६ ३१	१८ ४८	२१ १०	२३ ३०	१ ३४	३ १५	४ ४१
	१३	वै.१	६ ०३											

भारत के प्रमुख-प्रमुख नगरों में लग्नों का समाप्तिकाल

यहां पीछे जो दैनिक लग्नसारणी दी गई है, वह चण्डीगढ़ में लग्नों का समाप्तिकाल (भा.स्टै.टा.) बतलाती है। इसी लग्नसारणी से नीचे दिए गए कोष्ठक की सहायता से भारत के प्रमुख-प्रमुख नगरों में लग्नों का समाप्तिकाल (भा.स्टै.टा.) आसानी से इस प्रकार जाना जा सकता है :-दैनिक लग्नसारणी से अपनी अभीष्ट तारीख को चण्डीगढ़ में लग्न का समाप्तिकाल जान लीजिए और उसमें अपने नगर के आगे और लग्न के नीचे इस कोष्ठक में लिखे मिनटों को चिह्न के अनुसार जोड़ने या घटाने से उस नगर में लग्न का समाप्ति काल मालूम हो जाएगा। जैसे-मद्रास में ९ अप्रैल को मिथुन लग्न का समाप्ति काल जानना है। ९ अप्रैल को चण्डीगढ़ में मिथुन का समाप्तिकाल १२ घं. ० मि. है, यह हमने दैनिक लग्नसारणी से ज्ञात किया। नीचे कोष्ठक में मद्रास, के आगे मिथुन के नीचे +१९ मिनट लिखे हैं। + होने से १९ मिनटों को १२ घं. ० मिनट में जोड़ने पर १२ घं. १९ मिनट मद्रास में ९ अप्रैल को मिथुनलग्न का समाप्तिकाल (भा.स्टै.टा.) बन गया।

लग्न नगर	मेष मि.	वृष मि.	मिथुन मि.	कर्क मि.	सिंह मि.	कन्या मि.	तुला मि.	वृश्चिक मि.	धनु मि.	मकर मि.	कुंभ मि.	मीन मि.
अजमेर	+१७	+१८	+१७	+१४	+१०	+६	+१	-१	०	+४	+८	+१२
अम्बाला	०	०	०	०	०	०	-१	-१	-१	०	०	०
अमृतसर	+७	+६	+६	+७	+८	+९	+१०	+१०	+१०	+९	+८	+७
अलवर	+७	+८	+७	+५	+२	-२	-५	-६	-६	-३	०	+४
अलीगढ	+१	+२	+१	-१	-४	-८	-११	-१२	-१२	-९	-६	-२
अहमदाबाद	+३०	+३३	+३१	+२५	+१८	+११	+४	-१	+१	+८	+१५	+२३
आगरा	+१	+३	+२	-१	-४	-८	-११	-१३	-१३	-९	-६	-२
उज्जैन	+२८	+२१	+१९	+१३	+६	-१	-८	-१३	-११	-४	+३	+११
उदयपुर	+२४	+२६	+२५	+२०	+१४	+८	+२	-२	०	+५	+१२	+१८
इन्दौर	+१८	+२२	+२०	+१४	+५	-३	-१०	-१५	-१३	-६	+३	+१०
करनाल	+१	+१	+१	०	०	-१	-२	-२	-२	-१	-१	०
कलकत्ता	-३२	-२८	-३०	-३६	-४५	-५३	-६०	-६५	-६३	-५६	-४७	-४०
कांगड़ा	०	-१	-१	+१	+२	+३	+५	+६	+५	+४	+३	+१
कानपुर	-६	-५	-६	-९	-१३	-१७	-२२	-२४	-२३	-१९	-१५	-११
काशी	-१५	-१३	-१४	-१८	-२४	-२९	-३४	-३७	-३६	-३१	-२५	-२०
कुरुक्षेत्र	+२	+२	+२	+१	+१	०	-१	-१	-१	०	०	+१
कोटा	-१४	+१६	+१५	+११	+५	०	-५	-८	-७	-२	+४	+९
गुड़गांव	+४	+४	+४	+२	०	-२	-४	-५	-५	-३	-१	+१
गुरदासपुर	+३	+२	+२	+४	+५	+६	+८	+९	+८	+७	+६	+४
गोरखपुर	-१८	-१७	-१८	-२१	-२५	-२९	-३४	-३६	-३५	-३१	-२७	-२३
ग्वालियर	+३	+५	+४	०	-४	-९	-१३	-१६	-१५	-११	-६	-२
चम्बा	-१	-२	-१	०	+२	+५	+७	+८	+७	+६	+३	+१
जम्मू	+४	+३	+४	+५	+७	+१०	+१२	+१३	+१२	+११	+८	+६
जयपुर	+११	+१२	+११	+८	+५	+१	-३	-५	-४	०	+३	+७
जालन्धर	+५	+५	+५	+६	+६	+६	+६	+६	+६	+६	+६	+५
जीन्द	+५	+६	+५	+४	+३	+१	०	-१	-१	+१	+२	+४
जैसलमेर	+३१	+३२	+३१	+२८	+२५	+२१	+१७	+१५	+१६	+२०	+२३	+२७
जोधपुर	+२३	+२५	+२४	+२०	+१६	+११	+७	+४	+५	+९	+१४	+१८
झांसी	+३	+५	+४	०	-६	-११	-१६	-१९	-१८	-१३	-७	-२
दिल्ली	+३	+३	±३	+१	-१	३	-५	-६	-६	-४	-२	०
देहरादून	-५	-५	-५	-५	-५	-५	-६	-६	-६	-५	-५	-५
नागपुर	+८	+११	+१०	+२	-७	-१७	-२६	-३१	-३९	-२०	-११	-२
नाभा	+३	+३	+३	+३	+३	+३	+२	+२	+२	+[illegible]	+३	+३

लग्न नगर	मेष मि.	वृष मि.	मिथुन मि.	कर्क मि.	सिंह मि.	कन्या मि.	तुला मि.	वृश्चिक मि.	धनु मि.	मकर मि.	कुंभ मि.	मीन मि.
नैनीताल	-८	-७	-८	-९	-१०	-१२	-१३	-१४	-१४	-१२	-११	-९
पटियाला	+२	+२	+२	+२	+२	+२	+१	+१	+१	+२	+२	+२
पठानकोट	+१	+१	+१	+३	+४	+६	+८	+९	+८	+७	+५	+३
पटना	-२४	-२२	-२३	-२७	-३२	-३८	-४२	-४५	-४४	-३९	-३४	-२९
पुंछ	+४	+३	+४	+७	+१०	+१४	+१८	+२०	+१९	+१५	+१२	+८
प्रयाग	-११	-९	-१०	-१४	-१९	-२४	-२९	-३१	-३१	-२६	-२१	-१६
फरीदकोट	+८	+८	+८	+८	+८	+८	+८	+८	+८	+८	+८	+[illegible]
फिरोजपुर	+९	+९	+९	+९	+९	+९	+९	+९	+९	+९	+९	+९
बम्बई	+३६	+४१	+३८	+२९	+१८	+७	-४	-१०	-८	+३	+१४	+२५
बरेली	-६	-६	-६	-८	-१०	-१२	-१४	-१५	-१५	-१३	-११	-९
बंगलौर	+२६	+३३	+३०	+१७	०	-१६	-३२	-४०	-३७	-२२	-६	+११
बुलन्दशहर	०	०	०	-२	-४	-६	-८	-९	-९	-७	-५	-३
भटिण्डा	+८	+८	+८	+८	+८	+८	+७	+७	+७	+८	+८	+८
भरतपुर	+३	+५	+४	+१	-२	-६	-९	-११	-११	-७	४	०
भुवनेश्वर	-१८	-१४	-१६	-२४	-३४	-४४	-५४	-५८	-५७	-४८	-३८	-२८
भोपाल	+११	+१४	+१२	+६	-१	-८	-१५	-२०	-१८	-११	-४	+४
मद्रास	+१५	+२२	+१९	+६	-११	-२७	-४३	-५१	-४८	-३३	-१७	०
मथुरा	+३	+४	+३	+१	-२	-६	-९	-१०	-१०	-७	-४	०
मण्डी (हि.प्र.)	-२	-३	-३	-२	-१	०	+२	+२	+२	+१	०	-१
मलेरकोटला	+४	+४	+४	+४	+४	+४	+३	+३	+३	+४	+४	+४
मेरठ	-१	०	-१	-२	-३	-५	-६	-७	-७	-५	-४	-२
रोपड	+१	+१	+१	+१	+२	+२	+२	+२	+२	+२	+२	+१
रोहतक	+४	+५	+४	+३	+१	०	-२	-३	-३	-१	+१	+२
लखनऊ	-९	-८	-९	-१२	-१५	-१९	-२३	-२५	-२४	-२०	-१७	-१३
लुधियाना	+३	+३	+३	+३	+४	+४	+४	+४	+४	+४	+४	+३
शिमला	-२	-२	-२	-२	-१	-१	-१	-१	-१	-१	-१	-२
श्रीनगर (का.)	+१	०	+१	+४	+७	+११	+१५	+१७	+१६	+१२	+९	+५
सहारनपुर	-१	-१	-१	-२	-२	-३	-४	-४	-४	-३	-३	-२
हरिद्वार	-४	-४	-४	-५	-५	-६	-७	-७	-७	-६	-६	-५
हिसार	+७	+८	+७	+६	+५	+३	+२	+१	+१	+३	+४	+६
हैदराबाद	+१५	+२१	+१८	+८	-५	-१७	-२९	-३५	-३३	-२२	-९	+३
होशियारपुर	+२	+१	+१	+२	+३	+४	+५	+५	+५	+४	+३	+२

प्राचीन पद्धति द्वारा लग्न एवं दशम का साधन

जन्मपत्री एवं वर्षफल आदि की गणित में शुद्ध लग्न का साधन सबसे अधिक महत्त्वपूर्ण एवं श्रमसाध्य विषय है। इसके लिए ज्योतिषी को स्थानीयकाल का ज्ञान होना चाहिए, नगरों के अक्षांश–रेखांशों की प्रामाणिक सूची भी उसके पास होनी चाहिए, किञ्च भिन्न–भिन्न अक्षांशों की लग्नसारणियां उसके पास होना नितान्त आवश्यक है, क्योंकि किसी स्थान पर लग्न स्पष्ट करने के लिए उस स्थान के अक्षांश की लग्नसारणी का ही प्रयोग होता है। आगे हमने साम्पातिक काल द्वारा लग्न एवं दशम लग्न स्पष्ट करने की नवीन विधि दी है। यह विधि अपेक्षाकृत अधिक सूक्ष्म और सुविधाजनक है। इस विधि में अभीष्ट नगर का सूर्योदय, सूर्योदयात् इष्ट काल, दिनमान और इष्टकालिक सूर्य की जरुरत नहीं होती, जबकि प्रचीन विधि में इनकी जरूरत रहती है। यहां हम लग्न एवं दशम साधन की प्राचीन विधि दे रहे हैं।

लग्न साधनविधि

जिस नगर में लग्न स्पष्ट करना है, उस नगर में उस दिन का सूक्ष्म सूर्योदयकाल ज्ञात कीजिए। सूर्योदयकाल से अभीष्ट समय का सूर्योदयात् इष्ट (घ. प.) बना लीजिए और इष्टकालिक सूर्य स्पष्ट कर लीजिए। इस पंचांग में दी गई **"अक्षांशादि सारणी"** से अपने अभीष्ट नगर का अक्षांश ज्ञात कर लीजिए। अभीष्ट नगर के अक्षांश वाली लग्नसारणी द्वारा इस प्रकार लग्न स्पष्ट कीजिए:–

आगे 29, 30, 31 अक्षांशों की तीन लग्नसारणियां दी गई हैं, जो दिल्ली, पंजाब, तथा हरियाणा के लगभग सभी नगरों के लिए पर्याप्त हैं। अपने अभीष्ट नगर के अक्षांश वाली लग्नसारणी में इष्टकालिक स्पष्ट सूर्य की राशि के आगे और अंश के नीचे लिखे घड़ी, पलों को लेकर अलग लिख लीजिए। सारणी में इन घड़ी, पलों के दाईं ओर अगले अंश के नीचे जो घड़ी–पल दिए गए हैं, उनसे इन अलग लिखे गए घड़ी, पलों का अन्तर जानिए। अन्तर के इन पलों को **"सहायक सारणी"** (जो अगले पृष्ठ पर दी गई है) के बाईं ओर पहले कॉलम में देखिए। इसके आगे इस सारणी में जहां स्पष्ट सूर्य की कला–विकलाओं के बराबर या लगभग बराबर कला–विकलाएं लिखी हों, उनके बिल्कुल ऊपर सारणी की पहली लाईन में जो पल लिखे हों, उन्हें लेकर अलग लिखे हुए घड़ी, पलों में जोड दीजिए और उसमें इष्टकाल के घड़ीपल भी जोड दीजिए। इसे हम **"अभीष्ट घड़ी–पल"** कहेंगे। "अभीष्ट घड़ी–पल" यदि 60 घड़ी से अधिक हों तो उनमें से 60 घडी घटाकर, शेष ग्रहण करना चाहिए। "अभीष्ट घडी– पलों" के बराबर (बराबर न मिलें तो उनसे कुछ कम) घडी, पल लग्नसारणी में ढूंढिये, जिन्हें **"सारणीस्थ घड़ी–पल"** कहा जाएगा। "सारणीस्थ घड़ी–पलों" के बाईं ओर लग्नसारणी के पहले कॉलम में लिखी राशि और सबसे ऊपर लिखे अंशों को अलग लिख लीजिए। "सारणीस्थ घडी–पलों" के दाईं ओर सारणी के अगले अंश के नीचे दिए गए घडी–पलों का "सारणीस्थ घडी-पलों" से अन्तर कीजिए। इसे "सारणीस्थ अन्तर" कहेंगे। "सारणीस्थ घड़ी पलों" और "अभीष्ट घड़ी–पलों "का भी अन्तर कीजिए। अन्तर के ये पल "सहायक सारणी" के बिल्कुल ऊपर वाली लाईन में जहां लिखे हैं, उसके नीचे "सारणीस्थ अन्तर" के बराबर पलों के आगे जो कला– विकला मिलें, उन्हें अलग लिखे राशि, अंशों में जोड़ दें। अब इसमें अगले पृष्ठ पर दी गई "अयनांश संस्कार सारणी" से अपने संवत् के आगे दी गई कलाओं को लेकर चिन्ह के अनुसार जोड़ने या घटाने पर निरयण लग्न स्पष्ट हो जाएगा।

उदाहरण– मान लीजिए– वि. सं. 2029 के वैशाख प्रविष्टे 3 को 58 घ. 45 प. इष्ट पर शिमला (हि.प्र.) में लग्न स्पष्ट करना है। इस समय स्पष्ट सूर्य 0 रा., 2 अंश 37 क. 47 वि. है। शिमला के अक्षांश 31 अंश 6 क. (उत्तर) हैं, अतः 31 अक्षांश वाली लग्नसारणी में स्पष्ट सूर्य की 0 (मेष) राशि के आगे 2 अंश के नीचे 2 घ. 55 प. हैं, इन्हें अलग लिखा। सारणी में 2 घ. 55 प. के दाईं ओर 3 अंश के नीचे 3 घ. 2 प. लिखे हैं। इनका 2 घ. 55 प. से अन्तर 7 पल है। "सहायक सारणी" के बाईं ओर पहले कॉलम मे लिखे हुए 7 पल के आगे वाली पंक्ति में स्पष्ट सूर्य की 37 क. 47 वि. नहीं मिलीं। अतः सारणी में इनके लगभग बराबर 34 क. 17 वि. देखें, जिनके बिल्कुल ऊपर 4 पल लिखे हैं। इन्हें अलग लिखे 2 घ. 55 पल में जोड़ा और इष्टकाल के घ. प. भी इसमें जोड़े तो 61 घ. 44 प. (60 घ. घटाने पर 1 घ. 44 प.) 'अभीष्ट घड़ी–पल' हुए। लग्नसारणी में 'अभीष्ट घड़ी–पल' 1 घ. 44 प. नहीं हैं, अतः इससे कुछ कम 1 घ. 40 प. सारणी में देखें, जो "सारणीस्थ घडी पल" हैं। इनके बाईं ओर सारणी के पहले कॉलम में 11 राशि और बिल्कुल ऊपर की लाईन में 21 अंश लिखे हैं। इन 11 रा. 21 अं. को अलग लिखा। लग्न सारणी में "सारणीस्थ घड़ी–पलों" (1 घ. 40 प.) के दाईं ओर 22 अंश के नीचे 1 घ. 46 प. का 1 घ. 40 प. से अन्तर 6 पल 'सारणीस्थ अन्तर' है। "अभीष्ट घड़ी–पल" (1 घ. 44 प.) और सारणीस्थ घड़ी–पल (1 घ. 40 प.) का अन्तर 4 पल है। 'सहायक सारणी' की ऊपर वाली लाईन में लिखे गए 4 पल के नीचे सारणीस्थ अन्तर के बराबर 6 पल के आगे 40क. 00वि. लिखा है। इन्हें 11रा. 21 अं. में जोड़ने पर 11 रा. और 21अं. 40क. 00 वि. हुआ। "अयनांश संस्कार सारणी" में वि. सं. 2029 के आगे +1 कला लिखा है। इसे चिन्हानुसार 11 रा. 21 अं. 40 क. 0 वि. में जोड़ने पर 11 रा. 21 अं. 41 क. 00 वि. निरयण लग्न स्पष्ट हुआ।

दशम लग्नसाधन

आगे साम्पातिक काल द्वारा दशम लग्न साधन की सरल पद्धति दी है, जिससे अभीष्ट स्थल का सूर्योदय, दिनमान तथा तात्कालिक सूर्यस्पष्ट जानने की अवश्यकता नहीं होती है। प्राचीन पद्धति से, जिसका निर्देश यहां किया जा रहा है, इन सब की आवश्यकता रहती है।

सारणी (अक्षांश २९° उत्तर) (पलभा ६।३९।६)

दिल्ली, मेरठ, रोहतक, हिसार, जींद, नैनीताल, मुरादाबाद आदि के लिए।

अंश→	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०
मेष घ.	२	२	३	३	३	३	३	३	३	३	४	४	४	४	४	४	४	५	५	५	५	५	५	५	५	६	६	६	६	६	६
० प.	४८	५५	२	९	१६	२३	३०	३८	४६	५४	२	११	१९	२७	३५	४४	५२	०	८	१७	२५	३३	४२	५०	५८	६	१५	२३	३१	३९	४८
वृष घ.	६	६	७	७	७	७	७	७	७	८	८	८	८	८	८	९	९	९	९	९	९	१०	१०	१०	१०	१०	१०	११	११	११	११
१ प.	४८	५६	४	१२	२१	२९	३७	४६	५६	६	१६	२६	३६	४६	५६	६	१६	२६	३६	४६	५६	६	१७	२७	३७	४७	५७	७	१७	२७	३७
मि. घ.	११	११	११	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१३	१३	१३	१३	१३	१४	१४	१४	१४	१४	१५	१५	१५	१५	१५	१६	१६	१६	१६	१६	१७	१७
२ प.	३७	४७	५७	७	१७	२७	३७	४८	५९	१०	२२	३३	४५	५६	८	१९	३१	४२	५४	५	१७	२८	४०	५१	२	१४	२५	३७	४८	०	११
क. घ.	१७	१७	१७	१७	१७	१८	१८	१८	१८	१८	१९	१९	१९	१९	१९	२०	२०	२०	२०	२०	२१	२१	२१	२१	२१	२२	२२	२२	२२	२२	२३
३ प.	११	२३	३४	४६	५७	९	२०	३२	४३	५५	७	१८	३०	४२	५३	५	१७	२८	४०	५२	३	१५	२७	३८	५०	२	१३	२५	३७	४८	०
सिं. घ.	२३	२३	२३	२३	२३	२३	२४	२४	२४	२४	२४	२५	२५	२५	२५	२५	२६	२६	२६	२६	२६	२७	२७	२७	२७	२७	२७	२८	२८	२८	२८
४ प.	०	१२	२३	३५	४७	५८	१०	२२	३३	४४	५६	७	१९	३०	४१	५३	४	१६	२७	३८	५०	१	१३	२४	३५	४७	५८	१०	२१	३२	४४
क. घ.	२८	२८	२९	२९	२९	२९	२९	३०	३०	३०	३०	३०	३१	३१	३१	३१	३१	३१	३२	३२	३२	३२	३२	३३	३३	३३	३३	३३	३४	३४	३४
५ प.	४४	५५	७	१८	२९	४१	५२	४	१५	२६	३८	४९	१	१२	२३	३५	४६	५८	९	२०	३२	४३	५५	६	१७	२९	४०	५२	३	१४	२६
तु. घ.	३४	३४	३४	३५	३५	३५	३५	३५	३५	३६	३६	३६	३६	३६	३७	३७	३७	३७	३७	३८	३८	३८	३८	३८	३९	३९	३९	३९	३९	४०	४०
६ प.	२६	३७	४९	०	११	२३	३४	४६	५७	९	२१	३२	४४	५६	७	१९	३१	४२	५४	६	१७	२९	४१	५२	४	१६	२७	३९	५१	२	१४
वृ. घ.	४०	४०	४०	४०	४१	४१	४१	४१	४१	४१	४२	४२	४२	४२	४२	४३	४३	४३	४३	४३	४४	४४	४४	४४	४४	४५	४५	४५	४५	४५	४५
७ प.	१४	२६	३७	४९	१	१२	२४	३६	४७	५८	१०	२१	३३	४४	५६	७	१९	३०	४२	५३	५	१६	२८	३९	५०	२	१३	२५	३६	४८	५९
धनु घ.	४५	४६	४६	४६	४६	४६	४७	४७	४७	४७	४७	४८	४८	४८	४८	४८	४८	४९	४९	४९	४९	४९	४९	५०	५०	५०	५०	५०	५०	५१	५१
८ प.	५९	११	२२	३४	४५	५७	८	२०	३०	४०	५०	०	१०	२०	३०	४०	५०	०	१०	२०	३०	४०	५१	१	११	२१	३१	४१	५१	१	११
म. घ.	५१	५१	५१	५१	५१	५२	५२	५२	५२	५२	५२	५२	५३	५३	५३	५३	५३	५३	५३	५४	५४	५४	५४	५४	५४	५४	५४	५५	५५	५५	५५
९ प.	११	२१	३१	४१	५१	१	११	२२	३०	३८	४६	५५	३	११	१९	२८	३६	४४	५२	१	९	१७	२६	३४	४२	५०	५९	७	१५	२३	३२
कु. घ.	५५	५५	५५	५५	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५९	५९
१० प.	३२	४०	४८	५६	५	१३	२१	३०	३७	४४	५१	५८	५	१२	१९	२७	३४	४१	४८	५५	२	९	१७	२४	३१	३८	४५	५२	५९	६	१४
मी. घ.	५९	५९	५९	५९	५९	५९	५९	०	०	०	०	०	०	०	०	१	१	१	१	१	१	१	१	१	२	२	२	२	२	२	२
११ प.	१४	२१	२८	३५	४२	४९	५६	४	११	१८	२५	३२	३९	४६	५३	१	८	१५	२२	२९	३६	४३	५१	५८	५	१२	१९	२६	३३	४०	४८

लग्न सारणी ३०° उत्तर (पलभा ६।५५।४२)

अम्बाला, करनाल, कुरुक्षेत्र, देहरादून, नाभा, पटियाला, भटिण्डा, जैसलमेर, अल्मोड़ा, सहारनपुर और हरिद्वार आदि के लिए

अंश→	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०
मेष घ.	२	२	२	३	३	३	३	३	३	३	३	४	४	४	४	४	४	४	५	५	५	५	५	५	५	५	६	६	६	६	६
० प.	४४	५१	५८	५	१२	१९	२६	३२	४१	४९	५७	५	१३	२१	२९	३८	४६	५४	२	१०	१८	२६	३४	४३	५१	५९	७	१५	२३	३१	४०
वृष घ.	६	६	६	७	७	७	७	७	७	७	८	८	८	८	८	८	९	९	९	९	९	९	१०	१०	१०	१०	१०	१०	११	११	११
१ प.	४०	४८	५६	४	१२	२०	२८	३६	४६	५६	६	१६	२६	३६	४६	५६	६	१६	२६	३६	४६	५६	६	१६	२६	३६	४६	५६	६	१६	२६
मि. घ.	११	११	११	११	१२	१२	१२	१२	१२	१३	१३	१३	१३	१३	१३	१४	१४	१४	१४	१४	१५	१५	१५	१५	१५	१६	१६	१६	१६	१६	१७
२ प.	२६	३६	४६	५६	६	१६	२६	३६	४८	०	११	२३	३४	४६	५७	९	२०	३२	४३	५५	६	१८	२९	४१	५३	४	१६	२७	३९	५०	२
क. घ.	१७	१७	१७	१७	१७	१७	१८	१८	१८	१८	१८	१९	१९	१९	१९	१९	२०	२०	२०	२०	२०	२१	२१	२१	२१	२१	२२	२२	२२	२२	२२
३ प.	२	१३	२५	३६	४८	५९	११	२२	३४	४६	५८	१०	२१	३३	४५	५७	९	२०	३२	४४	५६	८	१९	३१	४३	५५	७	१८	३०	४२	५४
सिं. घ.	२२	२३	२३	२३	२३	२३	२४	२४	२४	२४	२४	२५	२५	२५	२५	२५	२६	२६	२६	२६	२६	२६	२७	२७	२७	२७	२७	२८	२८	२८	२८
४ प.	५४	६	१७	२९	४१	५३	५	१६	२८	४०	५२	३	१४	२६	३७	४९	१	१२	२४	३५	४७	५८	१०	२२	३३	४५	५६	८	१९	३१	४३
क. घ.	२८	२८	२९	२९	२९	२९	२९	३०	३०	३०	३०	३०	३१	३१	३१	३१	३१	३१	३२	३२	३२	३२	३२	३३	३३	३३	३३	३३	३४	३४	३४
५ प.	४३	५४	६	१७	२९	४०	५२	३	१५	२७	३८	५०	१	१३	२४	३६	४८	५९	११	२२	३४	४५	५७	९	२०	३२	४३	५५	६	१८	३०
तु. घ.	३४	३४	३४	३५	३५	३५	३५	३५	३६	३६	३६	३६	३६	३७	३७	३७	३७	३७	३८	३८	३८	३८	३८	३८	३९	३९	३९	३९	३९	४०	४०
६ प.	३०	४१	५३	४	१६	२७	३९	५०	२	१४	२६	३८	४९	१	१३	२५	३७	४८	०	१२	२४	३६	४७	५९	११	२३	३५	४६	५८	१०	२२
वृ. घ.	४०	४०	४०	४०	४१	४१	४१	४१	४१	४२	४२	४२	४२	४२	४३	४३	४३	४३	४३	४४	४४	४४	४४	४४	४५	४५	४५	४५	४५	४५	४६
७ प.	२२	३४	४५	५७	९	२१	३३	४४	५६	८	१९	३१	४२	५४	५	१७	२८	४०	५१	३	१४	२६	३७	४९	१	१२	२४	३५	४७	५८	१०
धनु घ.	४६	४६	४६	४६	४६	४७	४७	४७	४७	४७	४८	४८	४८	४८	४८	४८	४९	४९	४९	४९	४९	४९	५०	५०	५०	५०	५०	५०	५१	५१	५१
८ प.	१०	२१	३३	४४	५६	७	१९	३०	४०	५०	०	१०	२०	३०	४०	५०	०	१०	२०	३०	४०	५०	०	१०	२०	३०	४०	५०	०	१०	२०
म. घ.	५१	५१	५१	५१	५२	५२	५२	५२	५२	५२	५२	५३	५३	५३	५३	५३	५३	५३	५४	५४	५४	५४	५४	५४	५४	५४	५५	५५	५५	५५	५५
९ प.	२०	३०	४०	५०	०	१०	२०	३०	३९	४७	५५	३	११	१९	२७	३६	४४	५२	०	८	१६	२४	३२	४१	४९	५७	५	१३	२१	२९	३८
कु. घ.	५५	५५	५५	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५९	५९	५९
१० पु.	३८	४६	५४	२	१०	१८	२६	३४	४१	४८	५५	२	९	१६	२३	३०	३७	४४	५१	५८	५	१२	१९	२६	३३	४०	४७	५४	१	८	१५
मी. घ.	५९	५९	५९	५९	५९	५९	५९	०	१	०	०	०	०	०	०	०	१	१	१	१	१	१	१	१	२	२	२	२	२	२	२
११ प.	१५	२२	२९	३६	४३	५०	५७	३	१०	१७	२४	३१	३८	४५	५२	५९	३	१३	२०	२७	३४	४१	४८	५५	२	९	१६	२३	३०	३७	४४

लग्न सारणी (अक्षांश ३१ उत्तर) (पलभा ७।१२।३७)

कपूरथला, चण्डीगढ़, जालंधर, फरीदकोट, फिरोजपुर, रोपड़, लुधियाना, शिमला आदि के लिए

अंश →	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०
मेष घ	२	२	२	३	३	३	३	३	३	३	३	४	४	४	४	४	४	४	४	५	५	५	५	५	५	५	६	६	६	६	६
० प	४१	४८	५५	२	९	१६	२३	३०	३८	४६	५४	२	१०	१८	२६	३४	४२	५०	५८	६	१४	२२	३०	३८	४७	५५	३	११	१९	२७	३५
वृष घ	६	६	६	६	७	७	७	७	७	७	८	८	८	८	८	८	९	९	९	९	९	९	१०	१०	१०	१०	१०	१०	११	११	११
१ प	३५	४३	५१	५९	७	१५	२३	३१	४१	५१	१	११	२१	३१	४१	५१	१	११	२१	३१	४१	५१	१	११	२१	३१	४१	५१	१	११	२१
मि. घ	११	११	११	११	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१३	१३	१३	१३	१३	१४	१४	१४	१४	१४	१५	१५	१५	१५	१५	१५	१६	१६	१६	१६	१६
२ प	२१	३१	४१	५१	१	१०	२०	३०	४२	५४	५	१७	२८	४०	५१	३	१५	२६	३८	४९	१	१३	२४	३५	४७	५९	१०	२२	३३	४५	५६
क. घ	१६	१७	१७	१७	१७	१७	१८	१८	१८	१८	१८	१९	१९	१९	१९	१९	२०	२०	२०	२०	२०	२१	२१	२१	२१	२१	२२	२२	२२	२२	२२
३ प	५६	८	२०	३१	४३	५४	६	१७	२९	४१	५३	५	१७	२९	४०	५२	४	१६	२८	४०	५२	४	१५	२७	३९	५१	३	१५	२७	३८	५०
सिं. घ	२२	२३	२३	२३	२३	२३	२४	२४	२४	२४	२४	२५	२५	२५	२५	२५	२५	२६	२६	२६	२६	२६	२७	२७	२७	२७	२७	२८	२८	२८	२८
४ प	५०	२	१४	२६	३८	५०	२	१३	२५	३७	४८	०	१२	२३	३५	४७	५८	१०	२२	३३	४५	५७	८	२०	३२	४३	५५	७	१८	३०	४२
क. घ	२८	२८	२९	२९	२९	२९	२९	३०	३०	३०	३०	३०	३१	३१	३१	३१	३१	३२	३२	३२	३२	३२	३२	३३	३३	३३	३३	३३	३४	३४	३४
५ प	४२	५३	५	१७	२८	४०	५२	३	१५	२७	३८	५०	२	१३	२५	३७	४८	०	१२	२३	३५	४७	५८	१०	२२	३३	४५	५७	८	२०	३२
तु. घ	३४	३४	३४	३५	३५	३५	३५	३५	३६	३६	३६	३६	३६	३७	३७	३७	३७	३७	३८	३८	३८	३८	३८	३९	३९	३९	३९	३९	४०	४०	४०
६ प	३२	४३	५५	७	१८	३०	४२	५३	५	१७	२९	४१	५३	५	१६	२८	४०	५२	४	१६	२८	४०	५१	३	१५	२७	३९	५१	३	१४	२६
वृ. घ	४०	४०	४०	४१	४१	४१	४१	४१	४२	४२	४२	४२	४२	४२	४३	४३	४३	४३	४३	४४	४४	४४	४४	४४	४५	४५	४५	४५	४५	४६	४६
७ प	२६	३८	५०	२	१४	२६	३८	४९	१	१३	२४	३६	४७	५९	१०	२२	३४	४५	५७	८	२०	३१	४३	५४	६	१८	२९	४१	५२	४	१५
धनु घ	४६	४६	४६	४६	४७	४७	४७	४७	४७	४७	४८	४८	४८	४८	४८	४८	४९	४९	४९	४९	४९	४९	५०	५०	५०	५०	५०	५०	५१	५१	५१
८ प	१५	२७	३९	५०	२	१३	२५	३६	४६	५६	६	१६	२६	३६	४६	५६	६	१६	२६	३६	४६	५६	६	१६	२६	३६	४६	५६	६	१६	२६
म. घ	५१	५१	५१	५१	५२	५२	५२	५२	५२	५२	५३	५३	५३	५३	५३	५३	५३	५३	५४	५४	५४	५४	५४	५४	५४	५५	५५	५५	५५	५५	५५
९ प	२६	३६	४६	५६	६	१५	२५	३५	४४	५२	०	८	१६	२४	३२	४०	४८	५६	४	१२	२०	२८	३६	४४	५३	१	९	१७	२५	३३	४१
कु. घ	५५	५५	५५	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५९	५९	५९
१० प	४१	४९	५७	५	१३	२१	२९	३७	४४	५१	५८	५	१२	१९	२५	३२	३९	४६	५३	०	७	१४	२०	२७	३४	४१	४८	५५	२	८	१५
मी. घ	५९	५९	५९	५९	५९	५९	५९	०	०	०	०	०	०	०	०	०	१	१	१	१	१	१	१	१	२	२	२	२	२	२	२
११ प	१५	२२	२९	३६	४३	५०	५७	३	१०	१७	२४	३१	३८	४५	५१	५८	५	१२	१९	२६	३३	४०	४६	५३	०	७	१४	२१	२८	३४	४१

दशम लग्न सारणी (सर्वत्र उपयोगी)

अंश →	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०
मेष घ	३	३	३	४	४	४	४	४	४	५	५	५	५	५	५	६	६	६	६	६	६	७	७	७	७	७	७	८	८	८	८
० प	३८	४७	५६	६	१५	२४	३३	४३	५३	३	१३	२२	३२	४२	५२	२	१२	२२	३२	४२	५२	२	१२	२२	३२	४२	५२	२	१२	२२	३२
वृष घ	८	८	८	९	९	९	९	९	९	१०	१०	१०	१०	१०	१०	११	११	११	११	११	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१३	१३	१३	१३	१३
१ प	३२	४२	५२	२	१२	२२	३२	४२	५२	३	१४	२५	३५	४६	५७	८	१९	२९	४०	५१	२	१२	२३	३४	४५	५५	६	१७	२८	३८	४९
मि. घ	१३	१४	१४	१४	१४	१४	१४	१५	१५	१५	१५	१५	१५	१६	१६	१६	१६	१६	१७	१७	१७	१७	१७	१७	१८	१८	१८	१८	१८	१९	१९
२ प	४९	०	११	२२	३२	४३	५४	५	१५	२६	३७	४८	५८	९	२०	३१	४२	५२	३	१४	२५	३५	४६	५७	८	१८	२९	४०	५१	१	१२
क. घ	१९	१९	१९	१९	१९	२०	२०	२०	२०	२०	२०	२१	२१	२१	२१	२१	२१	२२	२२	२२	२२	२२	२२	२३	२३	२३	२३	२३	२३	२४	२४
३ प	१२	२३	३४	४५	५५	६	१७	२८	३८	४८	५८	७	१७	२७	३६	४७	५७	७	१७	२७	३७	४७	५७	७	१७	२७	३७	४७	५७	७	१७
सिं. घ	२४	२४	२४	२४	२४	२५	२५	२५	२५	२५	२५	२६	२६	२६	२६	२६	२६	२६	२७	२७	२७	२७	२७	२७	२८	२८	२८	२८	२८	२८	२९
४ प	१७	२७	३७	४७	५७	७	१७	२७	३६	४५	५४	४	१३	२२	३१	४०	५०	५९	९	१८	२७	३६	४६	५५	४	१३	२३	३२	४१	५०	०
क. घ	२९	२९	२९	२९	२९	२९	२९	३०	३०	३०	३०	३०	३०	३१	३१	३१	३१	३१	३१	३१	३२	३२	३२	३२	३२	३२	३३	३३	३३	३३	३३
५ प	०	९	१८	२८	३७	४६	५५	५	१४	२३	३२	४२	५१	०	९	१९	२८	३७	४७	५६	५	१४	२४	३३	४२	५१	१	१०	१९	२८	३८
तु. घ	३३	३३	३३	३४	३४	३४	३४	३४	३४	३५	३५	३५	३५	३५	३५	३६	३६	३६	३६	३६	३६	३७	३७	३७	३७	३७	३७	३८	३८	३८	३८
६ प	३८	४७	५६	६	१५	२४	३३	४३	५३	३	१३	२२	३२	४२	५२	२	१२	२२	३२	४२	५२	२	१२	२२	३२	४२	५२	२	१२	२२	३२
वृ. घ	३८	३८	३८	३९	३९	३९	३९	३९	३९	४०	४०	४०	४०	४०	४०	४१	४१	४१	४१	४१	४२	४२	४२	४२	४२	४२	४३	४३	४३	४३	४३
७ प	३२	४२	५२	२	१२	२२	३२	४२	५२	३	१४	२४	३५	४६	५७	८	१९	२९	४०	५१	२	१२	२३	३४	४५	५५	६	१७	२८	३८	४९
धनु घ	४३	४४	४४	४४	४४	४४	४४	४५	४५	४५	४५	४५	४५	४६	४६	४६	४६	४६	४७	४७	४७	४७	४७	४७	४८	४८	४८	४८	४८	४९	४९
८ प	४९	०	११	२२	३२	४३	५४	५	१५	२६	३७	४८	५८	९	२०	३१	४२	५२	३	१४	२५	३५	४६	५७	८	१८	२९	४०	५१	१	१२
म. घ	४९	४९	४९	४९	४९	५०	५०	५०	५०	५०	५०	५१	५१	५१	५१	५१	५१	५२	५२	५२	५२	५२	५२	५३	५३	५३	५३	५३	५३	५४	५४
९ प	१२	२३	३४	४५	५५	६	१७	२८	३८	४८	५८	७	१७	२७	३७	४७	५७	७	१७	२७	३७	४७	५७	७	१७	२७	३७	४७	५७	७	१७
कु. घ	५४	५४	५४	५४	५४	५५	५५	५५	५५	५५	५५	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५९
१० प	१७	२७	३७	४७	५७	७	१७	२७	३६	४५	५५	४	१३	२२	३१	४१	५०	५९	९	१८	२७	३६	४६	५५	४	१३	२३	३२	४१	५०	०
मी. घ	५९	५९	५९	५९	५९	५९	५९	०	०	०	०	०	०	१	१	१	१	१	१	१	२	२	२	२	२	२	३	३	३	३	३
११ प	०	९	१८	२८	३७	४६	५५	५	१४	२३	३२	४२	५१	०	९	१९	२८	३७	४७	५६	५	१४	२४	३३	४२	५१	१	१०	१९	२८	३८

दशमलग्न साधनविधि

इष्टकाल के घ. प. में से दिनार्ध (अभीष्ट नगर के दिनमान का आधा) घटाएं। यदि दिनार्ध से इष्ट कम हो तो इष्ट में ६० घड़ी जोड़कर दिनार्ध घटाएं, जो शेष बचे वह नतकाल होगा। नतकाल के घ. प. को इष्ट के घ. प. समझकर तात्कालिक स्पष्ट सूर्य द्वारा दशम लग्नसारणी से ठीक उसी तरह दशम लग्न स्पष्ट कीजिए जैसे कि ऊपर लग्नसारणी से लग्न स्पष्ट किया गया है। दशम लग्नसारणी सभी नगरों के लिए एक ही होती है।

दशमलग्न साधन का उदाहरणः– वि. सं. २०२६ के वैशाख प्रविष्टे ३ को शिमला में ५८घ. ४५ प. इष्ट पर दशमलग्न स्पष्ट करना है। इस समय स्पष्ट सूर्य ० रा. २ अं. ३७ क. ४७ वि. है। इस दिन शिमला में दिनमान ३१ घ. ५६ प. है, अतः दिनार्ध १६ घ. ० प. हुआ। इष्ट काल ५८ घ. ४५ प. में से दिनार्ध घटाने पर ४२ घ. ४५ प. नतकाल हुआ, जो दशमसाधन के लिए इष्टकाल है। दशमलग्न सारणी में स्पष्ट सूर्य की ० राशि के आगे २ अंश के नीचे ३ घ. ५६ प. मिला। इसे पृथक् लिखा। सारणी में ३ घ. ५६ प. के दाईं ओर (३ अं. के नीचे) ४ घ. ०६ प. लिखा है। ३।५६ और ४।६ का अन्तर १० पल है। सहायक सारिणी में १० पल के आगे स्पष्ट सूर्य की ३७ क. ४७ वि. के लगभग बराबर ३६ क. ०० वि. है। इसके ऊपर सारिणी में ६ पल लिखा है। इन ६ पलों को अलग लिखे ३ घ. ५६ प. में जोड़कर इसमें नतकाल जोड़ा तो ४६ घ. ४७ प. 'अभीष्ट घड़ी–पल' हुए। "दशम लग्नसारणी" में इन "अभीष्ट घड़ी–पलों" से कुछ कम घ. प. ४६।४२ 'सारणीस्थ घड़ी पल' धनु (८) राशि के आगे १६ अंश के नीचे लिखे हैं। अतः ८ रा. १६ अं. को अलग लिखा। सारणी में ४६।४२ के दाईं ओर (१७ अं. के नीचे) लिखे ४६।५२ का ४६।४२ से अन्तर १० पल का "सारणीस्थ अन्तर" हुआ। 'सारणीस्थ घड़ी–पल' ४६।४२ और अभीष्ट घड़ीपल ४६।४७ का अन्तर ५ पल है। अब 'सहायक सारणी' में १० पल के आगे ५ पल के नीचे ३० क. ०० वि. मिली। इन्हें अलग लिखे ८ रा. १६ अं. में जोड़ने पर ८ रा.१६ अं. में जोड़ने पर ८ रा. १६ अं. ३० क. ० वि. हुई। इसमें "अयनांश संस्कार सारणी" में वि. सं. २०२६ के आगे दिया गया अयनांश संस्कार + १क. चिह्नानुसार जोड़ने पर ८ रा. १६ अं. ३१ क. ०० वि. निरयण दशमलग्न स्पष्ट हुआ।

सहायक सारणी

पल	१		२		३		४		५		६		७		८		९		१०		११		१२		१३	
→ ↓	क.	वि.	क.	वि.	क.	वि.	क.	वि.	क.	वि.	क.	वि.	क.	वि.	क.	वि.	क.	वि.	क.	वि.	क.	वि.	क.	वि.	क.	वि.
६	१०	०	२०	०	३०	०	४०	०	५०	०	६०	०														
७	८	३४	१७	९	२५	४३	३४	१७	४२	५१	५१	२६	६०	०												
८	७	३०	१५	०	२२	३०	३०	०	३७	३०	४५	०	५२	३०	६०	०										
९	६	४०	१३	२०	२०	०	२६	४०	३३	२०	४०	०	४६	४०	५३	२०	६०	०								
१०	६	०	१२	०	१८	०	२४	०	३०	०	३६	०	४२	०	४८	०	५४	०	६०	०						
११	५	२७	१०	५५	१६	२२	२१	४९	२७	१६	३२	४४	३८	११	४३	३८	४९	५	५४	३३	६०	०				
१२	५	०	१०	०	१५	०	२०	०	२५	०	३०	०	३५	०	४०	०	४५	०	५०	०	५५	०	६०	०		
१३	४	३७	९	१४	१३	५१	१८	२८	२३	५	२७	४२	३२	१९	३६	५६	४१	३३	४६	१०	५०	४७	५५	२३	६०	०

अयनांश संस्कार सारणी

विक्रम संवत्	संस्कार कला	विक्रम संवत्	संस्कार कला	विक्रम संवत्	संस्कार कला	विक्रम संवत्	संस्कार कला	विक्रम संवत्	संस्कार कला	विक्रम संवत्	संस्कार कला	विक्रम संवत्	संस्कार कला
२०२३	+ ७	२०३१	०	२०३९	– ७	२०४७	– १३	२०५५	– २०	२०६३	–२६	२०७१	–३३
२०२४	+ ६	२०३२	– १	२०४०	– ८	२०४८	– १४	२०५६	– २१	२०६४	–२७	२०७२	–३४
२०२५	+ ५	२०३३	– २	२०४१	– ९	२०४९	– १५	२०५७	– २२	२०६५	–२८	२०७३	–३५
२०२६	+ ४	२०३४	– ३	२०४२	– ९	२०५०	– १६	२०५८	–२२	२०६६	–२९	२०७४	–३६
२०२७	+ ३	२०३५	– ४	२०४३	–१०	२०५१	– १७	२०५९	–२३	२०६७	–३०	२०७५	–३६
२०२८	+ २	२०३६	– ४	२०४४	–११	२०५२	– १८	२०६०	–२४	२०६८	–३१	२०७६	–३७
२०२९	+ १	२०३७	– ५	२०४५	–१२	२०५३	– १८	२०६१	–२५	२०६९	–३१	२०७७	–३८
२०३०	+ १	२०३८	– ६	२०४६	– १३	२०५४	– १९	२०६२	–२६	२०७०	–३२	२०७८	–३९

सूक्ष्म लग्न एवं दशमलग्न स्पष्ट करने की नवीन सरल विधि

यहां हम सूक्ष्म लग्न एवं दशमलग्न स्पष्ट करने की एक नवीन सरल विधि दे रहे है । स्पष्ट पूर्व द्वारा लग्न स्पष्ट करने में अधिक परिश्रम होता है, इसलिए इस विषय में पाश्चात्य ज्योतिषियों ने 'साम्पातिककाल' की पद्धति को अपनाया है । यहां हम ''साम्पातिककाल क्या है''- इस विषय का कुछ सैद्धान्तिक- विवेचन न करते हुए, इससे लग्न स्पष्ट-करने की सर्व- साधारणोपयोगी विधि प्रस्तुत कर रहे हैं ।

विधि:- सां. का. (साम्पतिककाल)से लग्न स्पष्ट करने के लिए सर्वप्रथम नीचे लिखे उपकरण (चीजें), जो इस पंचांग में दिए गए कोष्ठकों (सारणियों)से बिना किसी परिश्रम के तैयार किए जा सकते है, तैयार करें

(१) अभीष्ट नगर के अक्षांश (उत्तर या दक्षिण)
(२) अभीष्ट नगर के रेखांश (पूर्व या पश्चिम)
(३) अभीष्ट नगर का स्टैण्डर्ड अन्तर (+या-)

ये तीनों उपकरण 'अक्षांशादि सारणी 'से उठाइये ।

विशेष- यदि ''अक्षांशादि सारणी '' में अभीष्ट नगर न मिले तो उसके निकटतम किसी अन्य नगर के अक्षांशादि प्रयोग में लाए जा सकते है ।

ध्यान रहे- भारत के सभी नगरों के अक्षांश उत्तर और रेखांश पूर्व ही हैं ।

(४) अभीष्ट नगर का स्थानीयमध्यमकाल- जिस समय लग्न स्पष्ट करना हो उस समय के स्वदेशीय स्टैण्डर्ड - टाईम में अभीष्ट नगर (जहां का लग्न स्पष्ट करना हो, वहां) के स्टैण्डर्ड - अन्तर के मिनटादि(या घण्टादि) को चिन्हानुसार जोड़ने या घटाने से अभीष्ट नगर का ''**स्थानीयमध्यमकाल**'' बन जाता है + यह चिह्न जोड़ने की एवं- यह चिह्न घटाने की प्रक्रिया को बतलाता है ।

जैसे- चण्डीगढ में दोपहर के १२घं. ५७ मि. (भा. स्टैं टा.) पर स्थानीयमध्यकाल जानने के लिए इस (भा. स्टैं टा.)में से चण्डीगढ का स्टैण्डर्ड अन्तर -२२ मिनट ३२ सेकण्ड चिन्हानुसार घटाया, तो १२ घं. ३४ मि. २८ सें. स्थानीयमध्यमकाल बना।

१सितं.१९४२ ई. से १५ अक्तू १९४५ ई. तक भारत में युद्ध के कारण घड़ियां एक घण्टा आगे की गई थी । अतः इन दिनों में घड़ियों द्वारा जाने गए टाईम में से १ घण्टा घटा कर उसे भारतीय स्टैण्डर्ड टाईम समझना चाहिए।

जैसे- सन्१९४४ की २० अग. को कोई बच्चा भारत में युद्ध के समयानुसार दिन में १२ बज कर ४५ मि. पर पैदा हुआ । इसका जन्मपत्र बनाने के लिए हमें इस बच्चे का जन्म काल भा. स्टै.टा. के अनुसार ११ घं ४५ मि. मानना होगा ।

(५) अभीष्ट तारीख का अयनांश - आगे दो [नं.(१) और नं.(२)]अयनांशसारणियां दी गई है । अयनांशसारणी नं.(१) में से अभीष्ट सन् के आगे लिखाअंशादि अयनांश लें, और अयनांशसारणी नं. (२) में से अभीष्ट मास की अभीष्ट तारीख का विकलादि फल लेकर उसमें जोड़ दें; - यह अभीष्ट तारीख का अयनांश होगा ।

जैसे - १५ जुलाई १९६९ ई. को अयनांश जानने के लिए अयनांशसारणी नं.(१) में से सन् १९६९ ई. के आगे लिखा अयनांश २३अं.२५ क २९ वि. प्राप्त किया । इसमें अयनांशसारणी नं.(२)से प्राप्त की गई १५ जुलाई को २७ वि. जोड़ने पर २३ अं.२५क. ५६ वि. हमारा अभीष्ट अयनांश हुआ ।

(६) इष्टकालिक साम्पातिककाल - आगे साम्पातिककाल के चार कोष्ठक दिए गये है । इनके आधार पर इष्टकालिक साम्पातिककाल इस प्रकार सरलता से बनाया जा सकता है-

सां. का. कोष्ठक नं. (१) में से अभीष्ट सन् का सां. का. उठाएं। उसमें साम्पातिक काल कोष्ठक नं.(२)से अभीष्टमास की अभीष्ट तारीख का (लीप ईयर हो तो केवल फरवरी के बाद के महीनों में अभीष्ट तारीख की जगह उससे एक आगे की तारीख का) सां. का. लेकर जोड़ें । इसमें सां. का. कोष्ठक नं.(३)से अभीष्ट नगर के रेखांशों द्वारा सैकण्डात्मक संस्कार उठा कर चिन्हानुसार जोडें या घटाएं । इस प्रकार मिले सां. का के घं. मि. में अभीष्ट स्थानीयमध्यमकाल(जिसका साधन पहले बताया जा चुका है) के घण्टा- मिनटादि जोडें और फिर इस योगफल में स्थानीयमध्यमकाल के घण्टा- मिनटों द्वारा सां. का. कोष्ठक नं.(४)से प्राप्त किए गए मिनटादि जोड़ देने से इष्टसमय का घण्टादि सां. का बन जाएगा । इस प्रकार बना सां. का. यदि २४ घं. से अधिक हो तो उसमें से २४ घटा कर शेष ही ग्रहण करना चाहिए ।

साम्पातिककाल साधन का उदाहरण - यहां हम १५ जुलाई १९६९ को भा. स्टै.टा. के अनुसार प्रातः १०घं.४५मि. पर चम्बा (हि. प्र.)में सां. का. स्पष्ट करेंगें । अक्षांशादि सारणी में चम्बा के अक्षांश ३२ अं. २९ क. (उत्तर), रेखांश ७६ अं. १०क.(पूर्व)एंव स्टैं. अन्तर - २५ मि. २० से. है । स्टैण्डर्ड अन्तर ऋण चिह्न वाला है, अतः इसे १० घण्टे४५ मि. में से घटाने पर १० घं. १९ मि. ४० से. चम्बा का स्थानीयमध्यमकाल हुआ । सां. का . कोष्ठक नं. (१)से सन् १९६९ ई. का सां. का. (६घं.४१ मि. २ से.) लिया । इसमें कोष्ठक नं.(२)सें लिया गया १५ जुला. का सां का. (१२घं. ४८ मि. ४९ से.)जोड़ा तो १९ घं.२९ मि. ५१ सै. हुआ । चम्बा के रेखांश ७६अं.१० क. के लिए कोष्टक नं.(३)वाला संस्कार तो० है। अब १९घं. २९ मि. ५१सैं. चम्बा का स्थानीयमध्यमकाल १०घं.१९मि ४० सै. जोडा तो २९घं. ४९मि. ३१ सै. हुए। इसमें कोष्ठक न. (४)से स्थानीयमध्यमकाल के १०घं. २० मि. उठाए गए १ मि. ४२सै. जोड़ने पर २९ घं. ५१ मि. १३ से. हुए । क्योंकि यहां घण्टे२४से अधिक हैं अतः२४ घं. घटाए तो ५घं. ५१मि. १३से. अभीष्ट साम्पातिककाल हुआ ।

साम्पातिककाल बनाते समय नीचे लिखी इन बातों को भी ध्यान में रखें:-

(१)यदि धन (+)चिह्न वाले स्टैण्डर्डअन्तर (स्टैं. अं.)के मिनटों को स्टैण्डर्ड टाईम में जोड़ने पर स्थानीयमध्यमकाल २४ घं. या इससे ज्यादा हो जाए तब उसमें से २४ घण्टा घटा दें और ऊपर बतलाई विधि से प्राप्त साम्पातिककाल में ४ मि. जोड कर उसे शुद्ध साम्पातिककाल समझें । जैसे - कलकत्ता में २जन. १९७४ ई. को २३ घंटा ५५ मि. (रात के ११ बज कर ५५ मि.)भा. स्टै. टा. पर साम्पातिककाल ज्ञात करना है । कलकत्ता का रेखांश ८८अं. २४ क, (पूर्व)और स्टै अन्तर +२३ मि. ३६ से. है। **स्थानीयमध्यमकाल बनाने** के लिए२३ घं. ५५ मि. में २३ मि. ३६ सै. जोड़े तो २४ घं. १८ मि. [illegible] २४ घं. से ज्यादा हो गया है , अतः इसमें से २४ घं. घटाने पर ० घं. १८ मि. ३६ से.

स्थानीयमध्यमकाल हुआ । अब सां. का. बनाने के लिए कोष्टक नं.(१) से १९७४ के आगे लिखे ६ घं. ४० मि. १२ से. में कोष्टक नं.(२) से लिए गए २ जन. के ० घं. ३ मि. ५७ से. जोडने पर ६ घं. ४४ मि. ९ से. हुए। इसमें कोष्टक नं. (३) से कलकता के रेखांश ८८ से प्राप्त -८ से. चिह्न के अनुसार घटाए , तो ६ घं. ४४ मि. १ से. हुए । इसमें स्थानीयमध्यमकाल जोड़ने पर ७ घं. . २ मि. ३७ से. हुए । इसमें कोष्ठक नं.(४)से स्थानीयमध्यमकाल के ० घं. १९ मि. द्वारा प्राप्त ३ से. जोडने पर ७घं. २ मि. ४० से. हुए । क्योंकि स्टैं .टा. में स्टैं. अन्तर के मिनट जोडने पर स्थानीयमध्यमकाल २४ घं. से ज्यादा हो गया था । अतः उपरोक्त नियमानुसार इसमें ४ मि. और जोड़ने पर ७ घं. ६ मि. ४० से. हमारा अभीष्ट साम्पातिककाल बना । लग्न और दशम को स्पष्ट करने के लिए इसी सां. का. को प्रयोग में लाइए ।

(२)सां. का. बनाते समय दूसरी बात यह भी ध्यान में रखें कि यदि स्टैं. टा. से ऋण चिह्न वाले स्टैं. अन्तर के मिनटादि अधिक हों तो स्थानीयमध्यमकाल बनाने के लिए स्टैं. टा. में २४ घंटे जोड कर स्टैं. अन्तर घटाना चाहिए और ऐसी स्थिति में सा.का. कोष्टक नं. (४)का प्रयोग नहीं करना चाहिए । जैसे- जयपुर में १५ मार्च १९७० को ०घं. १५ मि.(भा. स्टै. टा.) पर साम्पातिककाल ज्ञात करना है । जयपुर के रेखांश ७५ अं. ५२ क. (पूर्व)और स्टैं अं.- २६ मि. ३२ से. है । यहां स्टैं टा. के घं. मि. में से स्टैं. अं. ज्यादा है , अतः स्टै. टा. में २४ घं. जोड़ कर स्टैं अं. घटाने पर २३ घं. ४८ मि. २८ से. स्थानीयमध्यमकाल बना । सां. का. के कोष्ठक नं.(१)से प्राप्त १९७० ई. के ६ घं. ४० मि. ५ से. में कोष्ठक नं. (२) से प्राप्त १५ मार्च के ४ घं. ४७ मि. ४९ से जोड़ने पर ११ घं. २७ मि. ५४ से. हुए । जयपुर के रेखांश ७६ (पूर्व) का कोष्ठक नं. ३ वाला संस्कार लगभग ० है । अब ११ घं. २७ मि. ५४ से. में स्थानीयमध्यमकाल जोड़ा तो ३५ घं. १६ मि. २२ से. हुए । क्योंकि हमारा स्टैं. टा. हमारे नगर के ऋण स्टैं. अं. के कम था अतः-यहां साम्पातिककाल कोष्ठक नं.(४)का प्रयोग हम नहीं करेगें । इसलिए हमारा अभीष्ट साम्पातिककाल ११घं. १६ मि. २२ से. ही हुआ । यहां घंटे २४ से अधिक होने से उसमें से २४ घंटे घटा दिए गए हैं।

(३)जैसाकि हम पहिले भी लिख चुके हैं - लीप इयर (२९ फरवरी वाले साल)में फरवरी के बाद के महीनों की किसी तारीख का सां. का. बनाना हो तो उस तारीख में एक जोड़ कर साम्पातिककाल कोष्ठक नं. (२) को प्रयोग में लाना चाहिए। जैसे -मान लीजिए , १५ मार्च सन् १९८४ को किसी नगर में सां. का. स्पष्ट करना है। साम्पातिककाल कोष्ठक नं. (१) में सन् १९८४ के आगे लिखे ६ घं. ३७ मि. १७ से. मिलें । क्योंकि हमारा सन् लीप इयर है और हमारी तारीख (१५ मार्च)फरवरी के बाद की भी है , इसलिए ''साम्पातिककाल कोष्ठक नं. (२)'' में से हम १५ मार्च की जगह १६ मार्च के घं. मि. सै. (४ घं.५१ मि. ४५ से.)ही लेगें और इन्हें ही ६ घं. ३७मि. १७ से. में जोड़ेंगे । ध्यान रहे- यदि सन् १९८४ की १० फर. को हमें सां. का. स्पष्ट करना हो तो ''साम्पातिककाल कोष्ठक नं.(२)''से १० फर. के ही घं. मि. से. लगाने होंगे ।

साम्पातिककाल से लग्नसाधन की विधिः-

उपर दी गई विधि से जाने गए अभीष्ट सां. का. (साम्पातिककाल) के घं. मि. को आगे दी गई लग्नसारणी के बाई और वाले पहिले कालम में देखें । इसके आगे अभीष्ट नगर के अक्षांश के नीचे जो लग्न की अंश कला लिखी हैं, उन्हें अलग नोट कर लें। क्योंकि सारणी में सां. का. ३०-३० मिनटों के अन्तर पर और लग्नसारणी ३-३ अक्षांशों के अन्तर पर दी हुई है । अतः अधिकतर यहां सम्भव है कि आपको लग्न सारणी में अभीष्ट सां. का. के घं. मिं. न मिले और यह भी अधिकतर सभव है कि आपको लग्नसारणी में अभीष्ठ सां का. के घं. मि. न मिलें और यह भी सम्भव है कि अभीष्ट अक्षांश वाली लग्नसारणी भी न मिले । ऐसी स्थिति में सारणी में अभीष्ट सां. का. के समीपतम (अभीष्ट सां. का. से कम)सां. का. के आगे और अपने अभीष्ट अक्षांश के समीपतम(अभीष्ट अक्षांश से कम) अक्षांश वाली लग्नसारणी में लिखीं लग्न की अंश - कलाएं नोट करें - यह ''स्थूलतम लग्न''है । अब ३० मि. में लग्न की गति सारणी से ही ज्ञात कीजिए, (अर्थात् यह ज्ञात कीजिए कि ३०मि. में लग्न कितना आगे बढ़ता है) ३० मि. की लग्नगति की कलाओं को सां. का. के शेष मिनटों से गुणा करके ३० से भाग देने पर कलाएं मिलेंगी । इन्हें ''स्थूलतम लग्न'' में जोड़ देने से ''स्थूललग्न'' बन जाएगा। अब सारणी से ही ३ अक्षांशों की लग्न की गति मालूम करें । ३ अक्षांशों में लग्न घटता है तो यह ''३ अक्षाशों की लग्नगति'' ऋण, अन्यथा धन होगी । अपने अक्षांश की शेष अंश- कलाओं की कलाएं बना कर उन्हें ''३ अक्षाशों की लग्नगति '' की कलाओं से गुणा करके १८० से भाग देने पर कलाएं मिलेंगी । इन्हें ''३ अक्षाशों की लग्नगति'' के धन,ऋण चिह्न के अनुसार स्थूललग्न में जोड़ने या घटाने से सायनलग्न स्पष्ट होगा । इसमें से उस दिन के अयनांश घटा देने पर फलितोपयोगी निरयण लग्न स्पष्ट हो जाएगा।

दशमलग्न स्पष्ट करने की विधि :- लग्नसारणी के दूसरे कालम में दशम (दशमलग्न)दिया गया है । इससे सभी नगरों में दशमलग्न स्पष्ट किया जा सकता है (अर्थात् -दशम स्पष्ट करने के लिए अंक्षाशों की जरूरत नहीं होती।) अभीष्ट सां. का. के घं. मि. के आगे सारणी में दशम (दशमलग्न)की अंश-कलाएं उठा लें। यह ''स्थूलदशमलग्न'' है। सां.का. के शेष मिनटों से दशमलग्न की ३० मि. की गति की कलाओं को गुणा करके ३०से भाग देने पर कलाएं मिलेगी। इन्हें ''स्थूलदशमलग्न'' में जोड़ने पर इष्टकालिक सायनदशम होगा । इसमें से उसदिन का अयनांश घटा देने पर निरयण दशमलग्न स्पष्ट हो जाएगा।

लग्नसाधन का उदाहरणः-चम्बा (हि.प्र.) में १५ जुलाई सन् १९६९ को प्रातः १० घं. ४५ मि. (भा. स्टै. टा.)पर लग्न स्पष्ट करना है ।

ऊपर हमने चम्बा में १५ जुलाई १९६९ को प्रातः १० घंटे ४५मि. (भा. स्टै. टा.)पर सां.का. ५ घं. ५१ मि. १३ सै. स्पष्ट किया है । चम्बा के अक्षांश ३२ अं.२९ क. है। लग्नसारणी में अक्षांश ३२ के नीचे सां. का. ५ घं. ३० मि. के आगे लग्न १७३ अं. ३४ क. लिखा है । यह ''स्थूलतम लग्न''है। लग्नसारणी में अक्षांश ३२ के नीचे सां. का. ५ घ. ३० मि. के आगे १७३ अं. ३४ क. और सां. का.६घं. ० मि. के आगे १८० अं.० क. लिखा है । इन दोनों का अन्तर ६अं. २६ क. (=३८६क.) लग्न की ३० मि. की गति है । हमारे अभीष्ट सां. का. ५ घ. ५१ मि. और ५ घं. ३० मि. का अन्तर २१ मि. है । इन २१ मि. (सा.का.के शेष मिनटों) से लग्न की ३० मिनट की गति कलाओं (३८६) को गुणा करके ३० का भाग देने पर २७० क. (= ४ अं. ३० क.) मिलीं। इन्हें '' स्थूलतम लग्न '' में जोड़ने पर १७८ अं. ४ क. ''स्थूल लग्न '' हुआ ।

लग्न सारणी (पूरे भारत के लिए) {भाग १ म}

साम्पातिक काल		सभी स्थलों के लिए		अक्षांश ८°(उ.)		अक्षांश ११°(उ.)		अक्षांश १४°(उ.)		अक्षांश १७°(उ.)		अक्षांश २०°(उ.)	
		दशम		लग्न		लग्न		लग्न		लग्न		लग्न	
घं.	मि.	अ.	क.	अं.	क.	अं.	क.	अं.	क.	अं.	क.	अं.	क.
०	०	०	०	९३	१२	९४	२५	९५	४०	९६	५६	९८	१४
०	३०	८	१०	१००	३	१०१	१५	१०२	२७	१०३	४१	१०४	५७
१	०	१६	१७	१०६	५४	१०८	३	१०९	१३	११०	२४	१११	३६
१	३०	२४	१८	११३	४७	११४	५३	११५	५९	११७	६	११८	१४
२	०	३२	११	१२०	४३	१२१	४५	१२२	४७	१२३	५०	१२४	५२
२	३०	३९	५५	१२७	४५	१२८	४३	१२९	४०	१३०	३६	१३१	३३
३	०	४७	२८	१३४	५४	१३५	४५	१३६	३६	१३७	२९	१३८	१८
३	३०	५४	५१	१४२	१०	१४२	५५	१४३	३९	१४४	२२	१४५	६
४	०	६२	५	१४९	३३	१५०	१०	१५०	४६	१५१	२३	१५१	५८
४	३०	६९	१२	१५७	३	१५७	३१	१५८	०	१५८	२७	१५८	५५
५	०	७६	११	१६४	३८	१६४	५८	१६५	१७	१६५	३६	१६५	५४
५	३०	८३	७	१७२	१८	१७२	२८	१७२	३८	१७२	४७	१७२	५७
६	०	९०	०	१८०	०	१८०	०	१८०	०	१८०	०	१८०	०
६	३०	९६	५३	१८७	४२	१८७	३२	१८७	२२	१८७	१३	१८७	३
७	०	१०३	४९	१९५	२२	१९५	२	१९४	४३	१९४	२४	१९४	६
७	३०	११०	४८	२०२	५७	२०२	२९	२०२	०	२०१	३३	२०१	५
८	०	११७	५५	२१०	२७	२०९	५०	२०९	१४	२०८	३७	२०८	२
८	३०	१२५	९	२१७	५०	२१७	५	२१६	२१	२१५	३८	२१४	५४
९	०	१३२	३२	२२५	६	२२४	१५	२२३	२४	२२२	३३	२२१	४२
९	३०	१४०	५	२३२	१५	२३१	१७	२३०	२०	२२९	२४	२२८	२७
१०	०	१४७	४९	२३९	१७	२३८	१५	२३७	१३	२३६	१०	२३५	८
१०	३०	१५५	४२	२४६	१३	२४५	७	२४४	१	२४२	५४	२४१	४६
११	०	१६३	४३	२५३	६	२५१	५७	२५०	४७	२४९	३६	२४८	२४
११	३०	१७१	५०	२५९	५७	२५८	४५	२५७	३३	२५६	१९	२५५	३
१२	०	१८०	०	२६६	४८	२६५	३५	२६४	२०	२६३	४	२६१	४६

साम्पातिक काल		सभी स्थलों के लिए		अक्षांश ८°(उ.)		अक्षांश ११°(उ.)		अक्षांश १४°(उ.)		अक्षांश १७°(उ.)		अक्षांश २०°(उ.)	
		दशम		लग्न		लग्न		लग्न		लग्न		लग्न	
घं.	मि.	अं.	क.	अं.	क.	अं.	क.	अं.	क.	अं.	क.	अं.	क.
१२	०	१८०	०	२६६	४८	२६५	३५	२६४	२०	२६३	४	२६१	४६
१२	३०	१८८	१०	२७३	४१	२७२	२७	२७१	११	२६९	५३	२६८	३३
१३	०	१९६	१७	२८०	३९	२७९	२५	२७८	९	२७६	५०	२७५	२९
१३	३०	२०४	१८	२८७	४३	२८६	३०	२८५	१५	२८३	५७	२८२	३५
१४	०	२१२	११	२९४	५७	२९३	४६	२९२	३३	२९१	१६	२८९	५५
१४	३०	२१९	५५	३०२	२१	३०१	१४	३००	४	२९८	५०	२९७	३२
१५	०	२२७	२८	३०९	५८	३०८	५६	३०७	५१	३०६	४२	३०५	२८
१५	३०	२३४	५१	३१७	४९	३१६	५४	३१५	५५	३१४	५३	३१३	४५
१६	०	२४२	५	३२५	५४	३२५	७	३२४	१७	३२३	२३	३२२	२५
१६	३०	२४९	१२	३३४	१२	३३३	३५	३३२	५५	३३२	१२	३३१	२६
१७	०	२५६	११	३४२	४१	३४२	१५	३४१	४८	३४१	१८	३४०	४५
१७	३०	२६३	७	३५१	१८	३५१	५	३५०	५१	३५०	३६	३५०	१९
१८	०	२७०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
१८	३०	२७६	५३	८	४१	८	५५	९	९	९	२४	९	४१
१९	०	२८३	४९	१७	१९	१७	४५	१८	१२	१८	४२	१९	१५
१९	३०	२९०	४८	२५	४८	२६	२५	२७	५	२७	४८	२८	३४
२०	०	२९७	५५	३४	६	३४	५३	३५	४३	३६	३७	३७	३५
२०	३०	३०५	९	४२	११	४३	६	४४	५	४५	७	४६	१४
२१	०	३१२	३२	५०	२	५१	४	५२	९	५३	१८	५४	३२
२१	३०	३२०	५	५७	३९	५८	४६	५९	५६	६१	१०	६२	२८
२२	०	३२७	४९	६५	३	६६	१४	६७	२७	६८	४४	७०	५
२२	३०	३३५	४२	७२	१७	७३	३०	७४	४५	७६	३	७७	२५
२३	०	३४३	४३	७९	२१	८०	३५	८१	५१	८३	१०	८४	३१
२३	३०	३५१	५०	८६	१९	८७	३३	८८	४९	९०	७	९१	२७
२४	०	०	०	९३	१२	९४	२५	९५	४०	९६	५६	९८	१४

अब लग्न सारणी में ३२ अक्षांश और ३५ अक्षांश वाले कालमों में सां.का. ५घं. ३० मि. के आगे क्रमश: १७३ अं. ३४ क. और १७३ अं. ४४ क. लिखा है। इन दोनों का अन्तर १० क. हुआ। यह लग्न की "३ अक्षांश की गति" है। क्योंकि लग्न ३५ अक्षांश में बढ़ रहा है। अत: यह गति धन है। ३२ अक्षांश और चम्बा के अक्षांश ३२ अं. २९ क. का अन्तर २९ क. है। इससे ३ अक्षांश की लग्न की गति कलाओं (१०) को गुणा करके १८० से भाग देने पर लब्धि १ क. मिली । क्योंकि ३ अक्षांशों की लग्न गति धन है अत: इसे "स्थूल लग्न" में जोड़ने पर १७८ अं. ५ क. सायन लग्न हुआ। इसमें से इस दिन का अयनांश २३अं. २६क. घटा देने पर १५४ अं. ३९ क. (=५ रा ४ अं. ३९ क.) निरयणलग्न बन गया।

दशमलग्न साधन का उदाहरण- १५ जुला. १९६९ ई. को प्रात: १० घं. ४५ मि. (भा.स्टै.टा.) पर ही चम्बा, हि.प्र. में दशमलग्न स्पष्ट करना है। इस समय चम्बा में सां का ५ घं. ५१ मि. है। लग्नसारणी के दूसरे कालमें में सां.का. ५ घं. ३० मिनट के आगे दशमलग्न८३ अं.७क. है, यह "स्थूल दशमलग्न" है । सारणी में सां.का. ५ घं.३०मि. और ६ घं. ० मि. के आगे क्रमश: ८३ अं. ७ क. एवं ९० अं. ० क. है इन दोनों का अन्तर ६ अं. ५३ क. (=४१३ क.) है, यह ३० मि. की दशमलग्न की गति है। इन कलाओं को सां. का. के शेष मि. (५ घं. ५१ मि.- ५घं. ३० मि.=२१ मि.) से गुणा करके ३० का भाग देने पर २८९ क. (=४अं.४९क.) मिली। इन्हें "स्थूलदशमलग्न" में जोड़ने पर ८७ अं. ५६ क. सायन दशमलग्न स्पष्ट हुआ। इसमें से इस दिन का अयनांश २३ अं. २६ क. घटा देने पर ६४ अं.३० क. (=२ रा.४अं. ३०क.) इष्टकालिक निरयण दशम लग्न हुआ।

ध्यान दें- यहां हमने सां.का. के सेकण्ड और अयनांश की विकलाओं को अनावश्यक समझकर छोड़ दिया है। क्योंकि लग्न और दशम में विकलाओं तक की सूक्ष्मता लाने का प्रयास वस्तुत: अर्थहीन है। कला तक की सूक्ष्मता भी लग्न में संभव नहीं है; इस तथ्य का विस्तार पूर्वक स्पष्टीकरण गणित द्वारा **"गणकमार्तण्ड"** में हमने किया है वहाँ पढ़ें।

लग्न सारणी (पूरे भारत के लिए) {भाग २ य}

साम्पातिक काल		सभी स्थलों के लिए		अंक्षाश २३° (उ.)		अंक्षाश २६° (उ.)		अंक्षाश २९° (उ.)		अंक्षाश ३२° (उ.)		अंक्षाश ३५° (उ.)	
		दशम		लग्न		लग्न		लग्न		लग्न		लग्न	
घं.	मि.	अं.	क.	अं.	क.	अं.	क.	अं.	क.	अं.	क.	अं.	क.
०	०	०	०	९९	३५	१००	५९	१०२	२६	१०३	५७	१०५	३४
०	३०	८	१०	१०६	१४	१०७	३४	१०८	५७	११०	२४	१११	५३
१	०	१६	१७	११२	४९	११४	४	११५	२२	११६	४३	११८	७
१	३०	२४	१८	११९	२२	१२०	३३	१२१	४५	१२३	०	१२४	१७
२	०	३२	११	१२५	५६	१२७	०	१२८	७	१२९	१७	१३०	२५
२	३०	३९	५५	१३२	३१	१३३	२९	१३४	२९	१३५	३०	१३६	३२
३	०	४७	२८	१३९	३	१४०	००	१४०	५२	१४१	४५	१४२	४०
३	३०	५४	५१	१४५	५०	१४६	३४	१४७	१८	१४८	४	१४८	५०
४	०	६२	५	१५२	३४	१५३	१०	१५३	४७	१५४	२४	१५५	९
४	३०	६९	२२	१५९	२२	१५९	५०	१६०	१७	१६०	४६	१६१	१४
५	०	७६	११	१६६	१३	१६६	३२	१६६	५०	१६७	९	१६७	२८
५	३०	८३	७	१७३	६	१७३	१५	१७३	२५	१७३	३४	१७३	४४
६	०	९०	०	१८०	००	१८०	००	१८०	०	१८०	०	१८०	०
६	३०	९६	५३	१८६	५४	१८६	४५	१८६	३५	१८६	२६	१८६	१६
७	०	१०३	४९	१९३	४७	१९३	२८	१९३	१०	१९२	५१	१९२	३२
७	३०	११०	४८	२००	३८	२००	१०	१९९	४३	१९९	१४	१९८	४६
८	०	११७	५५	२०७	२६	२०६	५०	२०६	१३	२०५	३६	२०४	५९
८	३०	१२५	५९	२१४	१०	२१३	२६	२१२	४२	२११	५६	२११	१०
९	०	१३२	३२	२२०	५१	२२०	००	२१९	८	२१८	१५	२१७	२०
९	३०	१४०	५	२२७	२९	२२६	३१	२२५	३१	२२४	३०	२२३	२८
१०	००	१४७	४९	२३४	४	२३३	०	२३१	५३	२३०	४५	२२९	३५
१०	३०	१५५	४२	२४०	३८	२३९	२७	२३८	१५	२३७	०	२३५	४३
११	०	१६३	४३	२४७	११	२४५	५६	२४४	३८	२४३	१७	२४१	५३
११	३०	१७१	५०	२५३	४६	२५२	२६	२५१	३	२४९	३६	२४८	७
१२	०	१८०	००	२६०	२५	२५९	३	२५७	३४	२५६	३	२५४	२६
१२	०	१८०	००	२६०	२५	२५९	१	२५७	३४	२५६	३	२५४	२६
१२	३०	१८८	१०	२६७	१०	२६५	४३	२६४	१२	२६२	३६	२६०	५४
१३	०	१९६	१७	२७४	३	२७२	३४	२७१	०	२६९	२१	२६७	३३
१३	३०	२०४	१८	२८१	९	२७९	३९	२७८	२	२७६	१९	२७४	२९
१४	०	२१२	११	२८८	३०	२८६	५९	२८५	२२	२८३	३६	२८१	४५
१४	३०	२१९	५५	२९६	९	२९४	४०	२९३	४	२९१	२०	२८९	२६
१५	००	२२७	२८	३०४	१०	३०२	४४	३०१	१२	२९९	२८	२९७	३८
१५	३०	२३४	५१	३१२	३३	३११	१५	३०९	४८	३०८	१३	३०६	२५
१६	०	२४२	५	३२१	२२	३२०	१३	३१८	५६	३१७	३०	३१५	५४
१६	३०	२४९	१२	३३०	३५	३२९	३९	३२८	३६	३२७	२५	३२६	४
१७	०	२५६	११	३४०	९	३३९	३०	३३८	४५	३३७	५४	३३६	५५
१७	३०	२६३	७	३५०	००	३४९	४०	३४९	१६	३४८	४९	३४८	१९
१८	०	२७०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
१८	३०	२७६	५३	१०	०	१४	२०	१०	४४	११	११	११	४१
१९	०	२८३	४९	१९	५१	२०	३०	२१	१५	२२	६	२३	४
१९	३०	२९०	४८	२९	२५	३०	२१	३१	२४	३२	३५	३३	५६
२०	०	२९७	५५	३८	३८	३९	४७	४१	४	४२	३०	४४	६
२०	३०	३०५	९	४७	२७	४८	४५	५०	१२	५१	४७	५३	३५
२१	०	३१२	३२	५५	५०	५७	१६	५८	४८	६०	३२	६२	२२
२१	३०	३२०	५	६३	५१	६५	२०	६६	५६	६८	४०	७०	३४
२२	०	३२७	४९	७१	३०	७३	१	७४	३८	७६	२४	७८	१५
२२	३०	३३५	४२	७८	५१	८०	२१	८१	५८	८३	४१	८५	३१
२३	०	३४३	४३	८५	५६	८७	२६	८९	०	९०	३९	९२	२६
२३	३०	३५१	५०	९२	५०	९४	१७	९५	४८	९७	२४	९९	६
२४	०	०००	०	९९	३५	१००	५९	१०२	२६	१०३	५७	१०५	३४

साम्पातिककाल कोष्ठक नं. १

सनृ	घं. मि. से.	सनृ	घं. मि. से.	सनृ	घं. मि. से.	सनृ	घं. मि. से.	सनृ	घं. मि. से.	सनृ	घं. मि. से.	सनृ	घं. मि. से.	सनृ	घं. मि. से.
१९७१	६ ३९ ०७	१९७८	६ ४० १९	१९८५	६ ४१ ३२	१९९२	६ ३८ ४७	१९९९	६ ३९ ५९	२००६	६ ४१ ११	२०१३	६ ४२ २३	२०२०	६ ३९ ३९
१९७२	६ ३८ १०	१९७९	६ ३९ २२	१९८६	६ ४० ३५	१९९३	६ ४१ ४६	२०००	६ ३९ ०२	२००७	६ ४० १४	२०१४	६ ४१ २६	२०२१	६ ४२ ३८
१९७३	६ ४१ १०	१९८०	६ ३८ २४	१९८७	६ ३९ ३८	१९९४	६ ४० ४९	२००१	६ ४२ ०१	२००८	६ ३९ १७	२०१५	६ ४० २९	२०२२	६ ४१ ४०
१९७४	६ ४० १२	१९८१	६ ४१ २३	१९८८	६ ३८ ४०	१९९५	६ ३९ ५२	२००२	६ ४१ ०४	२००९	६ ४२ १६	२०१६	६ ३९ ३१	२०२३	६ ४० ४३
१९७५	६ ३९ १५	१९८२	६ ४० २६	१९८९	६ ४१ ३९	१९९६	६ ३८ ५४	२००३	६ ४० ०७	२०१०	६ ४१ १९	२०१७	६ ४२ ३१	२०२४	६ ३९ ४६
१९७६	६ ३८ १९	१९८३	६ ३९ २९	१९९०	६ ४० ४१	१९९७	६ ४१ ५३	२००४	६ ३९ ०९	२०११	६ ४० २१	२०१८	६ ४१ ३३	२०२५	६ ४२ ४५
१९७७	६ ४१ १६	१९८४	६ ३८ ३२	१९९१	६ ३९ ४४	१९९८	६ ४० ५६	२००५	६ ४२ ०९	२०१२	६ ३९ २४	२०१९	६ ४० ३६	२०२६	६ ४१ ४८

साम्पातिक काल कोष्ठक नं० २

ता.	जनवरी			फरवरी			मार्च			अप्रैल			मई			जून			जुलाई			अगस्त			सितम्बर			अक्तूबर			नवम्बर			दिसम्बर			ता.
↓	घं.	मि.	से.	घं.	मि.	से.	घं.	मि.	से.	घं.	मि.	से.	घं.	मि.	से.	घं.	मि.	से.	घं.	मि.	से.	घं.	मि.	से.	घं.	मि.	से.	घं.	मि.	से.	घं.	मि.	से.	घं.	मि.	से.	↓
१	०	०	०	२	२	१३	३	५२	३७	५	५४	५१	७	५३	७	९	५५	२१	११	५३	३८	१३	५५	५०	१५	५८	४	१७	५६	२१	१९	५८	३४	२१	५६	५०	१
२	०	३	५७	२	६	९	३	५६	३३	५	५८	४७	७	५७	४	९	५९	१७	११	५७	३४	१३	५९	४७	१६	२	०	१८	०	१७	२०	२	३१	२२	०	४७	२
३	०	७	५३	२	१०	६	४	०	३०	६	२	४३	८	१	०	१०	३	१४	१२	१	३१	१४	३	४४	१६	५	५७	१८	४	१४	२०	६	२७	२२	४	४३	३
४	०	११	५०	२	१४	२	४	४	२६	६	६	४०	८	४	५७	१०	७	१०	१२	५	२७	१४	७	४०	१६	९	५३	१८	८	१०	२०	१०	२४	२२	८	४०	४
५	०	१५	४६	२	१७	५९	४	८	२३	६	१०	३६	८	८	५३	१०	११	७	१२	९	२४	१४	११	३६	१६	१३	५०	१८	१२	७	२०	१४	२०	२२	१२	३६	५
६	०	१९	४३	२	२१	५५	४	१२	१९	६	१४	३३	८	१२	५०	१०	१५	३	१२	१३	२१	१४	१५	३३	१६	१७	४६	१८	१६	३	२०	१८	१७	२२	१६	३३	६
७	०	२३	३९	२	२५	५२	४	१६	१६	६	१८	२९	८	१६	४६	१०	१९	०	१२	१७	१७	१४	१९	२९	१६	२१	४३	१८	२०	०	२०	२२	१३	२२	२०	३०	७
८	०	२७	३६	२	२९	४८	४	२०	१२	६	२२	२६	८	२०	४३	१०	२२	५६	१२	२१	१४	१४	२३	२६	१६	२५	४०	१८	२३	५७	२०	२६	१०	२२	२४	२७	८
९	०	३१	३२	२	३३	४५	४	२४	९	६	२६	२२	८	२४	३९	१०	२६	५३	१२	२५	१०	१४	२७	२३	१६	२९	३७	१८	२७	५४	२०	३०	६	२२	२८	२३	९
१०	०	३५	२९	२	३७	४२	४	२८	५	६	३०	१९	८	२८	३६	१०	३०	४९	१२	२९	६	१४	३१	२०	१६	३३	३३	१८	३१	५०	२०	३४	३	२२	३२	२०	१०
११	०	३९	२५	२	४१	३९	४	३२	२	६	३४	१६	८	३२	३२	१०	३४	४६	१२	३३	३	१४	३५	१६	१६	३७	३०	१८	३५	४७	२०	३८	०	२२	३६	१६	११
१२	०	४३	२२	२	४५	३५	४	३५	५९	६	३८	१३	८	३६	२९	१०	३८	४२	[illegible]	३६	५९	१४	३९	१३	१६	४१	२६	१८	३९	४३	२०	४१	५६	२२	४०	१३	१२
१३	०	४७	१८	२	४९	३२	४	३९	५६	६	४२	९	८	४०	२५	१०	४२	३९	१२	४०	५६	१४	४३	९	१६	४५	२३	१८	४३	४०	२०	४५	५२	२२	४४	९	१३
१४	०	५१	१५	२	५३	२८	४	४३	५२	६	४६	६	८	४४	४२	१०	४६	३५	१२	४४	५२	१४	४७	६	१६	४९	१९	१८	४७	३७	२०	४९	४९	२२	४८	६	१४
१५	०	५५	१२	२	५७	२५	४	४७	४९	६	५०	२	८	४८	१८	१०	५०	३२	१२	४८	४९	१४	५१	२	१६	५३	१६	१८	५१	३३	२०	५३	४५	२२	५२	२	१५
१६	०	५९	८	३	१	२१	४	५१	४५	६	५३	५९	८	५२	१५	१०	५४	२८	१२	५२	४५	१४	५४	५९	१६	५७	१२	१८	५५	३०	२०	५७	४२	२२	५५	५९	१६
१७	१	३	४	३	५	१८	४	५५	४२	६	५७	५५	८	५६	११	१०	५८	२५	१२	५६	४२	१४	५८	५५	१७	१	९	१८	५९	२६	२१	१	३९	२२	५९	५६	१७
१८	१	७	१	३	९	१४	४	५९	३८	७	१	५२	९	०	८	११	२	२१	१३	०	३८	१५	२	५२	१७	५	५	१९	३	२२	२१	५	३६	२३	३	५३	१८
१९	१	१०	५७	३	१३	११	५	३	३५	७	५	४८	९	४	४	११	६	१८	१३	४	३५	१५	६	४८	१७	९	२	१९	७	१९	२१	९	३२	२३	७	४९	१९
२०	१	१४	५४	३	१७	८	५	७	३१	७	९	४५	९	८	१	११	१०	१५	१३	८	३२	१५	१०	४५	१७	१२	५८	१९	११	१५	२१	१३	२९	२३	११	४६	२०
२१	१	१८	५१	३	२१	५	५	११	२८	७	१३	४१	९	११	५८	११	१४	११	१३	१२	२९	१५	१४	४१	१७	१६	५५	१९	१५	१२	२१	१७	२५	२३	१५	४२	२१
२२	१	२२	४८	३	२५	१	५	१५	२५	७	१७	३८	९	१५	५५	११	१८	८	१३	१६	२५	१५	१८	३८	१७	२०	५१	१९	१९	८	२१	२१	२२	२३	१९	३९	२२
२३	१	२६	४४	३	२८	५८	५	१९	२२	७	२१	३४	९	१९	५१	११	२२	५	१३	२०	२२	१५	२२	३४	१७	२४	४८	१९	२३	५	२१	२५	१८	२३	२३	३५	२३
२४	१	३०	४१	३	३२	५४	५	२३	१८	७	२५	३१	९	२३	४८	११	२६	१	१३	२४	१८	१५	२६	३१	१७	२८	४४	१९	२७	१	२१	२९	१५	२३	२७	३२	२४
२५	१	३४	३७	३	३६	५१	५	२७	१५	७	२९	२८	९	२७	४४	११	२९	५८	१३	२८	१५	१५	३०	२७	१७	३२	४१	१९	३०	५८	२१	३३	११	२३	३१	२८	२५
२६	१	३८	३४	३	४०	४७	५	३१	११	७	३३	२४	९	३१	४१	११	३३	५४	१३	३२	११	१५	३४	२४	१७	३६	३७	१९	३४	५४	२१	३७	८	२३	३५	२५	२६
२७	१	४२	३०	३	४४	४४	५	३५	८	७	३७	२०	९	३५	३७	११	३७	५१	१३	३६	८	१५	३८	२०	१७	४०	३४	१९	३८	५१	२१	४१	४	२३	३९	२१	२७
२८	१	४६	२७	३	४८	४०	५	३९	५	७	४१	१७	९	३९	३४	११	४१	४७	१३	४०	४	१५	४२	१७	१७	४४	३१	१९	४२	४८	२१	४५	१	२३	४३	१८	२८
२९	१	५०	२३	३	५२	३७	५	४३	१	७	४५	१३	९	४३	३०	११	४५	४४	१३	४४	१	१५	४६	१४	१७	४८	२८	१९	४६	४५	२१	४८	५७	२३	४७	१४	२९
३०	१	५४	२०				५	४६	५८	७	४९	१०	९	४७	२७	११	४९	४१	१३	४७	५७	१५	५०	११	१७	५२	२४	१९	५०	४१	२१	५२	५४	२३	५१	११	३०
३१	१	५८	१६				५	५०	५४				९	५१	२४				१३	५१	५४	१५	५४	७				१९	५४	३८				२३	५५	७	३१
																																		२३	५९	३	३२

लीप इयर हो तो केवल फरवरी के बाद के महीनों में अभीष्ट तारीख में एक जोड़ कर कोष्ठक नं० २ को प्रयोग में लाइए ।

साम्पातिक काल कोष्ठक नं० ३

रेखांश	०°	पू.२०°	पू.४०°	पू.६०°	पू.८०°	पू.१००°	पू.१२०°	पू.१४०°	पू.१६०°
संस्कार सेकण्ड	+५०	+३७	+२४	+११	-२	-१५	-२८	-४१	-५४
रेखांश	१८०°	प.१६०°	प.१४०°	प.१२०°	प.१००°	प.८०	प.६०°	प.४०°	प.२०°
संस्कार सेकण्ड	-६७/+१६९	+१५५	+१४२	+१२९	+११५	+१०३	+८९	+७७	+६३

साम्पातिक काल कोष्ठक नं० ४

मि.	०	५	१०	१५	२०	२५	३०	३५	४०	४५	५०	५५
घं.	मि. से.	मि. से.	मि. से.	मि. से.	मि. से.	मि. से.	मि. से.	मि. से.	मि. से.	मि. से.	मि. से.	मि. से.
०	० ००	० १	० २	० २	० ३	० ४	० ५	० ६	० ७	० ७	० ८	० ९
१	० १०	० ११	० ११	० १२	० १३	० १४	० १५	० १६	० १६	० १७	० १८	० १९
२	० २०	० २१	० २१	० २२	० २३	० २४	० २५	० २५	० २६	० २७	० २८	० २९
३	० ३०	० ३०	० ३१	० ३२	० ३३	० ३४	० ३४	० ३५	० ३६	० ३७	० ३८	० ३९
४	० ३९	० ४०	० ४१	० ४२	० ४३	० ४४	० ४४	० ४५	० ४६	० ४७	० ४८	० ४८
५	० ४९	० ५०	० ५१	० ५२	० ५३	० ५३	० ५४	० ५५	० ५६	० ५७	० ५७	० ५८
६	० ५९	१ ००	१ १	१ २	१ २	१ ३	१ ४	१ ५	१ ६	१ ७	१ ७	१ ८
७	१ ९	१ १०	१ ११	१ ११	१ १२	१ १३	१ १४	१ १५	१ १६	१ १६	१ १७	१ १८
८	१ १९	१ २०	१ २०	१ २१	१ २२	१ २३	१ २४	१ २५	१ २५	१ २६	१ २७	१ २८
९	१ २९	१ ३०	१ ३०	१ ३१	१ ३२	१ ३३	१ ३४	१ ३४	१ ३५	१ ३६	१ ३७	१ ३८
१०	१ ३९	१ ३९	१ ४०	१ ४१	१ ४२	१ ४३	१ ४३	१ ४४	१ ४५	१ ४६	१ ४७	१ ४८
११	१ ४८	१ ४९	१ ५०	१ ५१	१ ५२	१ ५३	१ ५३	१ ५४	१ ५५	१ ५६	१ ५७	१ ५७
१२	१ ५८	१ ५९	२ ०	२ १	२ २	२ २	२ ३	२ ४	२ ५	२ ६	२ ६	२ ७
१३	२ ८	२ ९	२ १०	२ ११	२ ११	२ १२	२ १३	२ १४	२ १५	२ १६	२ १६	२ १७
१४	२ १८	२ १९	२ २०	२ २०	२ २१	२ २२	२ २३	२ २४	२ २५	२ २५	२ २६	२ २७
१५	२ २८	२ २९	२ २९	२ ३०	२ ३१	२ ३२	२ ३३	२ ३४	२ ३४	२ ३५	२ ३६	२ ३७
१६	२ ३८	२ ३९	२ ३९	२ ४०	२ ४१	२ ४२	२ ४३	२ ४३	२ ४४	२ ४५	२ ४६	२ ४७
१७	२ ४८	२ ४८	२ ४९	२ ५०	२ ५१	२ ५२	२ ५२	२ ५३	२ ५४	२ ५५	२ ५६	२ ५७
१८	२ ५७	२ ५८	२ ५९	३ ०	३ १	३ २	३ २	३ ३	३ ४	३ ५	३ ६	३ ६
१९	३ ७	३ ८	३ ९	३ १०	३ ११	३ ११	३ १२	३ १३	३ १४	३ १५	३ १५	३ १६
२०	३ १७	३ १८	३ १९	३ २०	३ २०	३ २१	३ २२	३ २३	३ २४	३ २५	३ २५	३ २६
२१	३ २७	३ २८	३ २९	३ २९	३ ३०	३ ३१	३ ३२	३ ३३	३ ३४	३ ३४	३ ३५	३ ३६
२२	३ ३७	३ ३८	३ ३८	३ ३९	३ ४०	३ ४१	३ ४२	३ ४३	३ ४३	३ ४४	३ ४५	३ ४६
२३	३ ४७	३ ४८	३ ४८	३ ४९	३ ५०	३ ५१	३ ५२	३ ५२	३ ५३	३ ५४	३ ५५	३ ५६

अयनांश सारणी नं० १

ई. सन्	अयनांश	ई. सन्	अयनांश	ई. सन्	अयनांश
	अं. क. वि.		अं. क. वि.		अं. क. वि.
१९५१	२३ १० २१	१९७५	२३ ३० २८	१९९९	२३ ५० ३४
१९५२	२३ ११ १२	१९७६	२३ ३१ १७	२०००	२३ ५१ २४
१९५३	२३ १२ ०२	१९७७	२३ ३२ ०८	२००१	२३ ५२ १५
१९५४	२३ १२ ५२	१९७८	२३ ३२ ५९	२००२	२३ ५३ ०५
१९५५	२३ १३ ४२	१९७९	२३ ३३ ४९	२००३	२३ ५३ ५५
१९५६	२३ १४ ३३	१९८०	२३ ३४ ३९	२००४	२३ ५४ ४६
१९५७	२३ १५ २३	१९८१	२३ ३५ २९	२००५	२३ ५५ ३६
१९५८	२३ १६ १३	१९८२	२३ ३६ २०	२००६	२३ ५६ २६
१९५९	२३ १७ ०३	१९८३	२३ ३७ १०	२००७	२३ ५७ १७
१९६०	२३ १७ ५४	१९८४	२३ ३८ ००	२००८	२३ ५८ ०७
१९६१	२३ १८ ४४	१९८५	२३ ३८ ५१	२००९	२३ ५८ ५७
१९६२	२३ १९ ३५	१९८६	२३ ३९ ४१	२०१०	२३ ५९ ४८
१९६३	२३ २० २५	१९८७	२३ ४० ३१	२०११	२४ ०० ३८
१९६४	२३ २१ १५	१९८८	२३ ४१ २१	२०१२	२४ ०१ २८
१९६५	२३ २२ ०५	१९८९	२३ ४२ १२	२०१३	२४ ०२ १८
१९६६	२३ २२ ५५	१९९०	२३ ४३ ०२	२०१४	२४ ०३ ०९
१९६७	२३ २३ ४६	१९९१	२३ ४३ ५२	२०१५	२४ ०३ ५९
१९६८	२३ २४ ३६	१९९२	२३ ४४ ४२	२०१६	२४ ०४ ४९
१९६९	२३ २५ २६	१९९३	२३ ४५ ३३	२०१७	२४ ०५ ४०
१९७०	२३ २६ १६	१९९४	२३ ४६ २३	२०१८	२४ ०६ ३०
१९७१	२३ २७ ०७	१९९५	२३ ४७ १३	२०१९	२४ ०७ २०
१९७२	२३ २७ ५७	१९९६	२३ ४८ ०३	२०२०	२४ ०८ १०
१९७३	२३ २८ ४७	१९९७	२३ ४८ ५४	२०२१	२४ ०९ ०१
१९७४	२३ २९ ३७	१९९८	२३ ४९ ४४	२०२२	२४ ०९ ५१

अयनांश सारणी नं. २

तारीख	१	४	७	१०	१३	१६	१९	२२	२५	२८
	वि.	वि.	वि.	वि.	वि.	वि.	वि.	वि.	वि.	वि.
जनवरी	०	१	१	१	२	२	३	३	३	४
फरवरी	४	५	५	६	६	६	७	७	८	८
मार्च	८	९	९	१०	१०	१०	११	११	१२	१२
अप्रैल	१३	१३	१३	१४	१४	१५	१५	१५	१६	१६
मई	१७	१७	१७	१८	१८	१९	१९	२०	२०	२०
जून	२१	२१	२२	२२	२३	२३	२३	२४	२४	२५

तारीख	१	४	७	१०	१३	१६	१९	२२	२५	२८
	वि.	वि.	वि.	वि.	वि.	वि.	वि.	वि.	वि.	वि.
जुलाई	२५	२५	२६	२६	२७	२७	२८	२८	२८	२९
अगस्त	२९	३०	३०	३१	३१	३१	३२	३२	३३	३३
सितम्बर	३४	३४	३४	३५	३५	३६	३६	३६	३७	३७
अक्तूबर	३८	३८	३९	३९	३९	४०	४०	४१	४१	४१
नवम्बर	४२	४२	४३	४३	४४	४४	४४	४५	४५	४६
दिसम्बर	४६	४७	४७	४७	४८	४८	४९	४९	४९	५०

महर्षि–पराशरोक्त विंशोत्तरी महादशान्तर्दशा ज्ञान–चक्र

सूर्यदशा वर्ष ६ एक घड़ी में ३६ दिन	चंद्रदशा वर्ष १० एक घड़ी में ६० दिन	भौम दशा वर्ष ७ एक घड़ी में ४२ दिन	राहु दशा वर्ष १८ एक घड़ी में १०८ दिन	गुरु दशा वर्ष १६ एक घड़ी में ९६ दिन	शनिदशा वर्ष १९ एक घड़ी में ११४ दिन	बुधदशा वर्ष १७ एक घड़ी में १०२ दिन	केतुदशा वर्ष ७ एक घड़ी में ४२ दिन	शुक्रदशा वर्ष २० एक घड़ी में १२० दिन
कृ. उफा. उ.षा.	रो. ह. श्रव.	मृ. चि. ध.	आर्द्रा स्वा. श.	पुन. वि. पू.भा.	पु. अनु. उ.भा.	आश्ले. ज्ये. रे.	म. मू. अश्वि.	पू.फा. पूषा. भ.
तन्मध्येऽन्तरम्	तन्मध्येऽन्तरम्	तन्मध्येऽन्तरम्	तन्मध्येऽन्तरम्	तन्मध्येऽन्तरम्	तन्मध्येऽन्तरम्	तन्मध्येऽन्तरम्	तन्मध्येऽन्तरम्	तन्मध्येऽन्तरम्
ग्र. व. मा. दि.	ग्र. व. मा. दि.	ग्र. व. मा. दि.	ग्र. व. मा. दि.	ग्र. व. मा. दि.	ग्र. व. मा. दि.	ग्र. व. मा. दि.	ग्र. व. मा. दि.	ग्र. व. मा. दि.
र. ० ३ १८	चं. ० १० ०	मं. ० ४ २७	रा. २ ८ १२	बृ. २ १ १८	श. ३ ० ३	बु. २ ४ २७	के. ० ४ २७	शु. ३ ४ ०
चं. ० ६ ०	मं. ० ७ ०	रा. १ ० १८	बृ. २ ४ २४	श. २ ६ १२	बु. २ ८ ९	के. ० ११ २७	शु. १ २ ०	र. १ ० ०
मं. ० ४ ६	रा. १ ६ ०	बृ. ० ११ ६	श. २ १० ६	बु. २ ३ ६	के. १ १ ९	शु. २ १० ०	र. ० ४ ६	चं. १ ८ ०
रा. ० १० २४	बृ. १ ४ ०	श. १ १ ९	बु. २ ६ १८	के. ० ११ ६	शु. ३ २ ०	र. ० १० ६	चं. ० ७ ०	मं. १ २ ०
बृ. ० ९ १८	श. १ ७ ०	बु. ० ११ २७	के. १ ० १८	शु. २ ८ ०	र. ० ११ १२	चं. १ ५ ०	मं. ० ४ २७	रा. ३ ० ०
श. ० ११ १२	बु. १ ५ ०	के. ० ४ २७	शु. ३ ० ०	र. ० ९ १८	चं. १ ७ ०	मं. ० ११ २७	रा. १ ० १८	बृ. २ ८ ०
बु. ० १० ६	के. ० ७ ०	शु. १ २ ०	र. ० १० २४	चं. १ ४ ०	मं. १ १ ९	रा. २ ६ १८	बृ. ० ११ ६	श. ३ २ ०
के. ० ४ ६	शु. १ ८ ०	र. ० ४ ६	चं. १ ६ ०	मं. ० ११ ०६	रा. २ १० ६	बृ. २ ३ ६	श. १ १ ९	बु. २ १० ०
शु. १ ० ०	र. ० ६ ०	चं. ० ७ ०	मं. १ ० १८	रा. २ ४ २४	बृ. २ ६ १२	श. २ ८ ९	बु. ० ११ २७	के. १ २ ०

शिवोक्त योगिनी–दशाऽन्तर्दशा ज्ञानार्थ चक्र

मंगला व. १	पिंगला व. २	धान्या व. ३	भ्रामरी व. ४	भद्रा व. ५	उल्का व. ६	सिद्धा व. ७	संकटा व. ८	दशा तथा वर्ष
चन्द्र	सूर्य	गुरु	मंगल	बुध	शनि	शुक्र	केतु	दशेश ग्रह
आर्द्रा चि. श्रव.	पुन. स्वा. ध.	पुष्य वि. श.	अश्वि आश्ले अनु पूभा	म. म. ज्ये. उ.भा.	कृ. पूफा. मू. रे.	रो. उ.फा. पूषा.	मृ. ह. उ.षा.	जन्म नक्षत्र
मं. ० १०	पिं. १ १०	धा. ३ ०	भ्रा. ५ १०	भ. ८ १०	उ. १२ ०	सि. १६ १०	सं. २१ १०	अन्तर्दशा के मास, दिन
पिं. ० २०	धा. २ ०	भ्रा. ४ ०	भ. ६ २०	उ. १० ०	सि. १४ ०	सं. १८ २०	मं. २ २०	
धा. १ ०	भ्रा. २ २०	भ. ५ ०	उ. ८ ०	सि. ११ २०	सं. १६ ०	मं. २ १०	पिं. ५ १०	
भ्रा. १ १०	भ. ३ १०	उ. ६ ०	सि. ९ १०	सं. १३ १०	मं. २ ०	पिं. ४ २०	धा. ८ ०	
भ. १ २०	उ. ४ ०	सि. ७ ०	सं. १० २०	मं. १ २०	पिं. ४ ०	धा. ७ ०	भ्रा. १० २०	
उ. २ ०	सि. ४ २०	सं. ८ ०	मं. १ १०	पिं. ३ १०	धा. ६ ०	भ्रा. ९ १०	भ. १३ १०	
सि. २ १०	सं. ५ १०	मं. १ ०	पिं. २ २०	धा. ५ ०	भ्रा. ८ ०	भ. ११ २०	उ. १६ ०	
सं. २ २०	मं. ० २०	पिं. २ ०	धा. ४ ०	भ्रा. ६ २०	भ. १० ०	उ. १४ ०	सि. १८ २०	

वर्षकुण्डली में १२ भावों में स्थित ग्रहों का फल

ग्रह	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२
सूर्य	चिन्ता	नृपभय	धनलाभ	हानि	कष्ट	शत्रुनाश	पीड़ा	कष्ट	धर्मनाश	सुख	धनलाभ	पीड़ा
चन्द्र	पीड़ा	धनलाभ	हर्ष	शत्रुनाश	सुख	पीड़ा	कष्ट	दुःख	भाग्योदय	विजय	धनलाभ	व्यय
भौम	ज्वर	धननाश	जय	व्यसन	दुर्गति	शत्रुनाश	स्त्रीकष्ट	पीड़ा	पुण्योदय	राज्यलाभ	धनलाभ	विरोध
बुध	सुख	धनलाभ	सुख	द्रव्यलाभ	पुत्रलाभ	कलह	धनलाभ	व्यग्रता	सुख	मानलाभ	सुखलाभ	विग्रह
गुरु	सुख	धनलाभ	जय	वाहनलाभ	पुत्रलाभ	कष्ट	सुख	रोग	धर्मलाभ	राज्यलाभ	धनलाभ	शोक
शुक्र	मानप्राप्ति	धनप्राप्ति	कीर्तिलाभ	सुखलाभ	धनलाभ	शत्रुभीति	स्त्रीसुख	कष्ट	धर्मोदय	मानलाभ	धनलाभ	व्यय
शनि	वायुरोग	पीड़ा	धनलाभ	दुःख	पुत्रप्राप्ति	जय	स्त्रीकष्ट	रोग	भाग्यहानि	धनहानि	धनलाभ	चिन्ता
राहु	सिरदर्द	राजभय	सुख	दुःख	बुद्धिनाश	शत्रुनाश	रोगभय	दुःख	हानि	विजय	सुखलाभ	व्याधि
केतु	चिन्ता	क्लेश	आरोग्य	राजभय	दुर्बुद्धि	सुख	क्लेश	पीड़ा	भाग्यनाश	धनलाभ	लाभ	शोक
मुन्था	सुख	यश, अर्थ	पुष्टि	दुःख	सुखप्राप्ति	कष्ट	व्यसन	दुःख	भाग्योदय	राज्यप्राप्ति	लाभ	कष्ट

दशा का भुक्तभोग्य

गत नक्षत्र की घट्यादि को ६० में से घटाकर इष्ट–घटीपल जोड़ने से भयात होता है। ६० में से घटाए हुए अंकों में प्रवेश नक्षत्र के घट्यादि जोड़ने से भभोग होता है। भयात और भभोग की घटियों को ६० से गुणा कर पल बना लें। भयात के पलों को दशा के वर्षों से गुणाकर भभोग के पलों से भाग दें, लब्ध अंक वर्ष; फिर शेषांक को १२ से गुणा करें, भभोग के पलों से भाग दें, लब्ध मास; फिर शेषांक को ३० से गुणाकर भभोग के पलों से भाग दें, लब्ध दिन; फिर शेषांक को ६० से गुणाकर भभोग के पलों का भाग दें, लब्धांक घटी; फिर शेषांक को ६० से गुणाकर भभोग के पलों से भाग दें, लब्ध पल होंगे। यह वर्षादि दशा का भुक्त होता है। इसको दशा के वर्षों में से घटाने पर भोग्य दशा होगी।

सूर्यसिद्धान्तीय वर्षप्रवेश–सारणी

गताब्द	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५
वार	१	२	३	५	६	०	१	३	४	५	६	१	२	३	४	६	०	१	२	४	५	६	०	२	३
घटी	१५	३१	४६	२	१७	३३	४८	४	१९	३५	५०	६	२१	३७	५२	८	२३	३९	५४	१०	२६	४१	५७	१२	२८
पल	३१	३	३४	६	३७	९	४०	१२	४३	१५	४६	१८	४९	२१	५२	२४	५५	२७	५८	३०	१	३३	४	३६	७
विपल	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०

गताब्द	२६	२७	२८	२९	३०	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०	४१	४२	४३	४४	४५	४६	४७	४८	४९	५०
वार	४	५	०	१	२	४	५	६	०	२	३	४	५	०	१	२	३	५	६	०	१	३	४	५	६
घटी	४३	५९	१४	३०	४५	१	१६	३२	४७	३	१८	३४	४९	५	२१	३६	५२	७	२३	३८	५४	९	२५	४०	५६
पल	३९	१०	४२	१३	४५	१६	४८	१९	५१	२२	५४	२५	५७	२८	०	३१	३	३४	६	३७	९	४०	१२	४३	१५
विपल	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०

गताब्द	५१	५२	५३	५४	५५	५६	५७	५८	५९	६०	६१	६२	६३	६४	६५	६६	६७	६८	६९	७०	७१	७२	७३	७४	७५
वार	१	२	३	४	६	०	१	३	४	५	६	१	२	३	४	६	०	१	२	४	५	६	०	२	३
घटी	११	२७	४२	५८	१३	२९	४४	०	१५	३१	४७	२	१८	३३	४९	४	२०	३५	५१	६	२२	३७	५३	८	२४
पल	४६	१८	४९	२१	५२	२४	५५	२७	५८	३०	१	३३	४	३६	७	३९	१०	४२	१३	४५	१६	४८	१९	५१	२२
विपल	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०

गताब्द	७६	७७	७८	७९	८०	८१	८२	८३	८४	८५	८६	८७	८८	८९	९०	९१	९२	९३	९४	९५	९६	९७	९८	९९	१००
वार	४	५	०	१	२	३	५	६	०	१	३	४	५	०	१	२	३	५	६	०	१	३	४	५	६
घटी	३९	५५	१०	२६	४२	५७	१३	२८	४४	५९	१५	३०	४६	१	१७	३२	४८	३	१९	३४	५०	५	२१	३६	५२
पल	५४	२५	५७	२८	०	३१	३	३४	६	३७	९	४०	१२	४३	१५	४६	१८	४९	२१	५२	२४	५५	२७	५८	३०
विपल	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०

सूचना– वेधसिद्ध वर्षमान सूर्य सिद्धान्तीय वर्षमान से ८.५पल कम है। अतः सूक्ष्म–वर्षप्रवेशकालिक इष्ट निकालने के लिए गताब्दों को ८.५ से गुणा करके पलात्मक फल को सारणी से साधित इष्ट में से घटा देना चाहिए। यही सूक्ष्म–वर्ष मानानुसारी इष्ट होगा, चाहो तो इस इष्ट पर भी फल अनुभव करें।

वर्षफलसाधन–प्रकारः– (१) अभीष्ट संवत् (जिस संवत् का वर्ष निकालना हो) में से जन्म समय का संवत् हीन करने से जो शेष बचे उसे गतवर्ष, (गताब्द) जानें। स्मरण रहे, कि– मेषार्कप्रवेश से प्रथम और चैत्र शुक्ल प्रतिपदा के अनंतर का यदि वर्ष करना हो तो पिछले संवत् से करना होगा–वर्षायनर्तुयुगपूर्वकमत्र सौरात्– इस प्रकार गताब्द निकालकर उसी गताब्द अंक के नीचे सारणी में जो वारादि अंक हैं, उनमें जन्म का वार, इष्ट, घड़ी, पल जोड़ने से वर्षप्रवेशकालिक वारादि इष्ट ज्ञात हो जाता है। यदि नीचे घट्यादि अंक साठ से अधिक हों तो ६० का भाग देने से लब्धांक को ऊपर युक्त करते जाना। ऊपर से वारांक में सात से अधिक आ जाए तो सात का भाग देकर लब्ध त्याग देने से शेष को वर्षप्रवेश समय का स्पष्ट वारादि इष्ट समझें।

(२) जिस दिन जन्म समय के स्पष्ट सूर्यतुल्य वर्ष में सूर्य मिले, उसी दिन वर्षप्रवेश जानना। प्रविष्टों के अनुसार कभी–कभी वार नहीं मिलता। वहां पर गणितागत वार को ठीक जाने। इस इष्ट के अनुसार स्वदेशीय लग्नसारणी से लग्नसाधन करके वर्षकुण्डली लगाएं।

मुन्थानयनप्रकार– गताब्दसंख्या में जन्मलग्न जोड़कर उसमें १२ का भाग देना, जो शेष बचे उसे मुन्था जानें। यह मुन्था प्रति दिन पांच कला चलती है।

मुद्दा दशा– गत वर्ष में जन्मनक्षत्र जोड़कर, उसमें से दो घटाएं, ९ का भाग देने से जो शेष बचे उसे दशा समझें। १ शेष से सूर्य, २ से चन्द्रमा, ३ से मंगल, ४ से राहु, ५ से गुरु, ६ से शनि, ७ से बुध, ८ से केतु, और ९ शेष से शुक्र की दशा जानें।

दशा के दिन– सूर्य के १८ दिन, चन्द्रमा के ३०, मंगल २१, राहु ५४, गुरु ४८, शनि ५७, बुध ५१, केतु २१, शुक्र ६० – ये दशा के दिन हैं।

हर्ष स्थान बल– सूर्य वर्ष लग्न से ९, चन्द्रमा ३, मंगल ६, बुध १, गुरु ११वें, शुक्र ५वें और शनि १२ वें स्थान में हो तो ५ हर्ष बल देते हैं।

स्वोच्च बल– सू. १।५, चं. २।४, मं. १।८।१०, बुध ३।६, गुरु ९।१२।४, शु. २।७।१२ तथा श. १०।११ ७ राशियों में ५ बल देते हैं।

पुरुषस्त्री–ग्रह–बल– स्त्रीग्रह (चं., बु., शु., श.) १।२।३।७।८।९ और पुरुष ग्रह (सू., मं., बृ.) ४।५।६।१०।११।१२वें स्थानों में ५ बल देते हैं। **दिनरात्रि बल–**दिन के वर्षेष्ट में पुरुषग्रह ५ बल देते हैं और रात्रि के इष्ट में स्त्रीग्रह ५ बल देते हैं।

त्रिराशिपति चक्र

राशि→	मे.	वृ.	मि.	क.	सि.	क.	तु.	वृ.	ध.	म.	कुं.	मी.
दिनलग्नपति→	सू.	शु.	श.	शु.	गु.	चं.	बु.	मं.	श.	मं.	गु..	चं.
रात्रिलग्नपति→	गु.	चं.	बु.	मं.	सू.	शु.	श.	शु.	श.	मं.	गु.	चं.

वर्ष में दृष्टि–ज्ञान और फल

⁂ वर्ष में जो ग्रह जिस भाव में पडा हो उस भाव से ५वें, ९वें भाव को प्रत्यक्ष मित्र दृष्टि से देखता है। फल– कार्य में शीघ्र सफलता, सुख, प्रेम, लाभ और जिन मनुष्यों के साथ पहले शत्रुता होती है, उनसे प्रेम होता है। ⁂ तीसरे ग्यारहवें गुप्त मित्र दृष्टि से देखता है। फल– कार्य कठिनता से एवं गुप्त भाव से सफल हो।⁂ पहले, सातवें प्रत्यक्ष शत्रु दृष्टि होती है। फल– शत्रुता करे, मित्र से बैर, धनहानि, बनते काम को बिगड़ना आदि फल होते हैं।⁂ ४–१०वें गुप्तशत्रु दृष्टि से देखता है। फल– कार्य बड़ी कठिनता से सफल हो, गुप्तरूप से शत्रु भी उत्पन्न होते हैं।

अथ वर्षेश निर्णयः– जन्म लग्नेश १, वर्ष लग्नेश २, मुन्थेश ३, त्रैराशीश ४, समयेश ५ (दिन में वर्ष प्रवेश हो तो सूर्य जिस राशि पर हो उस राशि का स्वामी और रात्रि में हो तो चन्द्रराशि का स्वामी समयेश होता है।) इन पांच अधिकारियों में से जो सबसे बलवान् हो और लग्न को देखे वह वर्षेश होता है। यदि पांचों में से कोई भी लग्न को न देखता हो तो उन में से जो अधिक बलवान् हो वही वर्षेश्वर होगा। कई ग्रहों का बल समान हों तो जिसकी लग्न पर अधिक दृष्टि हो वह और बल, दृष्टि, अधिकार– तीनों समान हों तो मुन्थेश ही वर्षेश हो। यदि चन्द्रमा वर्षेश प्राप्त हो तो जिससे वह इत्थशाल करे या जिसकी राशि में बैठा हो वही वर्षेश हो। फल– वर्षेश ६।८।१२ वें व अस्तंगत, हीनबली हो तो वर्ष में दुःख, शोक, चिन्ता, भयविशेष होगा। यदि बलिष्ठ होकर शुभ स्थान में सुयोग के साथ बैठा हो तो वर्ष में सुखैश्वर्य की वृद्धि हो।

वर्ष में तबदीली का योग– वर्षकुण्डली में लग्नेश– तृतीयेश वा चतुर्थेश–नवमेश एक घर में हों या एक–दूसरे को मित्रदृष्टि से देखें तो उस वर्ष तबदीली होगी। अगर वर्षलग्नेश वक्री हो और वह मित्रग्रह से दृष्ट हो तो भी तबदीली का योग बनेगा।

सूक्ष्म, शुद्ध वर्षमान के अनुसार वर्षप्रवेशकाल

वेध द्वारा यह सिद्ध हो चुका है कि– सूर्यसिद्धान्तीय वर्षमान वास्तविक (शुद्ध) वर्षमान से १/२ मिनट अधिक है। शुद्ध वर्षफल बनाने के लिए सूक्ष्म वर्षप्रवेशकाल का होना आवश्यक है। हम यहां "सूक्ष्म वर्ष–प्रवेश–सारणी" दे रहे हैं। जो दैवज्ञ वर्षफल के लिए सूक्ष्म वर्षप्रवेशकाल जानना चाहते हैं, उन्हें इसी सारणी का प्रयोग करना चाहिए।

इस सारणी में घं. मि. का प्रयोग है, अतः इससे वर्षप्रवेशकाल जानने के लिए जातक के जन्म का स्टैं. टा. ही यहां प्रयोग में लाना होगा। जैसे– मान लीजिए, किसी व्यक्ति के दसवें वर्ष का प्रवेशकाल जानना है। उस व्यक्ति के जन्म का वार चन्द्र और जन्मकाल (भा. स्टैं. टा.) ८घं. २०मि. (प्रातः) है। उसके वारादि जन्मकाल (2 वा. 8 घं. 20 मि.) में सारणी से गताब्द 9 द्वारा प्राप्त वारादि काल 4 वा. 7 घं. 22 मि. जोड़ने पर 6 वा. 15 घं. 42 मि. मिले। इसका अर्थ हुआ कि इस व्यक्ति के दसवें वर्ष का प्रवेश शुक्रवार को 15 घं. 42 मि. (भा. स्टैं. टा.) पर होगा।

ध्यान रहे– इस सारणी के प्रयोग से प्राप्त वार रात्रि के 12 बजे बदलने वाला होगा। अतः यहां प्रयोग में लाया जाने वाला जन्मकालिक वार भी इसी प्रकार होना चाहिए।

सूक्ष्म वर्षप्रवेश सारणी

गताब्द	वार घं. मि.	गताब्द	वार घं. मि.	गताब्द	वार घं. मि.	गताब्द	वार घं. मि.	गताब्द	वार घं. मि.	गताब्द	वार घं. मि.	गताब्द	वार घं. मि.	गताब्द	वार घं. मि.	गताब्द	वार घं. मि.	गताब्द	वार घं. मि.
१	१/६/९	१३	२/७/५९	२५	३/९/४९	३७	४/११/३९	४९	५/१३/२९	६१	६/१५/१९	७३	०/१७/९	८५	१/१८/५९	९७	२/२०/४९	१०९	३/२२/३९
२	२/१२/१८	१४	३/१४/८	२६	४/१५/५८	३८	५/१७/४८	५०	६/१९/३८	६२	०/२१/२८	७४	१/२३/१८	८६	३/१/८	९८	४/२/५८	११०	५/४/४८
३	३/१८/२७	१५	४/२०/१७	२७	५/२२/७	३९	६/२३/५७	५१	१/१/४७	६३	२/३/३७	७५	३/५/२७	८७	४/७/१७	९९	५/९/७	१११	६/१०/५७
४	५/०/३७	१६	६/२/२७	२८	०/४/१६	४०	१/६/६	५२	२/७/५६	६४	३/९/४६	७६	४/११/३६	८८	५/१३/२६	१००	६/१५/१६	११२	०/१७/६
५	६/६/४६	१७	०/८/३६	२९	१/१०/२६	४१	२/१२/१६	५३	३/१४/०६	६५	४/१५/५६	७७	५/१७/४५	८९	६/१९/३५	१०१	०/२१/२५	११३	१/२३/१५
६	०/१२/५५	१८	१/१४/४५	३०	२/१६/३५	४२	३/१८/२५	५४	४/२०/१५	६६	५/२२/५	७८	६/२३/५५	९०	१/१/४५	१०२	२/३/३४	११४	३/५/२४
७	१/१९/०४	१९	२/२०/५४	३१	३/२२/४४	४३	५/०/३४	५५	६/२/२४	६७	०/४/१४	७९	१/६/४	९१	२/७/५४	१०३	३/९/४४	११५	४/११/३४
८	३/१/१३	२०	४/३/३	३२	५/४/५३	४४	६/६/४३	५६	०/८/३३	६८	१/१०/२३	८०	२/१२/१३	९२	३/१४/३	१०४	४/१५/५३	११६	५/१७/४३
९	४/७/२२	२१	५/९/१२	३३	६/११/२	४५	०/१२/५२	५७	१/१४/४२	६९	२/१६/३२	८१	३/१८/२२	९३	४/२०/१२	१०५	५/२२/२	११७	६/२३/५२
१०	५/१३/३२	२२	६/१५/२२	३४	०/१७/११	४६	१/१९/१	५८	२/२०/५१	७०	३/२२/४१	८२	५/०/३१	९४	६/२/२१	१०६	०/४/११	११८	१/६/१
११	६/१९/४१	२३	०/२१/३१	३५	१/२३/२१	४७	३/१/११	५९	४/०३/१	७१	५/४/५०	८३	६/६/४०	९५	०/८/३०	१०७	१/१०/२०	११९	२/१२/१०
१२	१/१/५०	२४	२/३/४०	३६	३/५/३०	४८	४/७/२०	६०	५/९/१०	७२	६/११/०	८४	०/१२/५०	९६	१/१४/४०	१०८	२/१६/२९	१२०	३/१८/१९

वर्षप्रवेश का लग्न किस स्थान का होना चाहिए।

जिस प्रकार जातक का जन्म जिस स्थान पर होता है उसी स्थान के अक्षांश–रेखांशानुसार ही लग्न का निर्णय किया जाता है, ठीक उसी प्रकार वर्षप्रवेश के समय जातक जिस स्थान पर हो उसी स्थान के अक्षांश–रेखांशानुसार ही वर्षप्रवेश का लग्न होना चाहिए, क्योंकि वर्ष प्रवेश भी जातक का एक 'उपजन्म' ही है। इस प्रकार न्यूयार्क (अमेरिका) में जन्म लेने वाला जातक यदि अपने किसी वर्ष के प्रवेश के समय दिल्ली (भारत) में मौजूद है तो उसके उस वर्ष का प्रवेशकालीन लग्न दिल्ली के अक्षांश–रेखांशानुसार ही लगाना चाहिए। इसी तरह यदि दिल्ली में जन्म लेने वाला जातक वर्षप्रवेश के समय न्यूयार्क में हो तो उसके उस वर्ष का प्रवेशकालीन लग्न न्यूयार्क के अक्षांश–रेखांशानुसार ही होना चाहिए। क्योंकि प्राचीनकाल में अधिकतर लोग अपने जन्मस्थान को छोड़कर बहुत कम दूसरे स्थान पर जाते थे, अतः ज्योतिषी लोगों में वर्षप्रवेश के लग्न को जन्मस्थान से ही जोड़ने की परम्परा बन गई, जो तर्कसंगत नहीं है।

इस विषय को स्पष्टता से जानने के लिए 'सं. 2052 वि. के' "श्रीमार्त्तण्ड पंचांग" में पृ. 41/42 पर मेरा लेख "वर्षप्रवेश का लग्न किस स्थान का होना चाहिए?" पढ़ें।

मास प्रवेशकाल

भिन्न–भिन्न राशियों में संचार करता हुआ सूर्य जब–जब जातक के जन्म–कालिक स्पष्ट सूर्य की अंश, कला, विकलाओं के तुल्य अंश, कला, विकलाओं पर आता है, तब–तब जातक के मासों का प्रारम्भ (मासप्रवेश) होता है। उदाहरणार्थ– यदि जातक का जन्मकालिक स्पष्ट सूर्य 2 रा. 10 अं. 25 क. 40 वि. है, तो जब जब (सूर्य) जातक की आयु के विभिन्न वर्षों में मेष आदि राशियों के 10 अं. 25 क. 40 वि. पर पहुँचेगा– इसका निर्णय सूर्य की मास–प्रवेश वाले दिन की गति और उस दिन के पंचांगस्थ दैनिक सूर्य तथा मास–प्रवेशकालिक सूर्य के अन्तर से त्रैराशिक द्वारा किया जा सकता है। (इसके लिए सं. 2050 वि. के "श्रीमार्त्तण्ड पंचांग" में पृष्ठ 41 पर दिया गया मेरा लेख "स्पष्टमान से मास–प्रवेशकाल" पढ़ें।)

–प्रियव्रत शर्मा

ग्रहशील-चक्र

रवि	चन्द्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	केतु	ग्रहाः
३/१०	३/१०	३/१०	३/१०	३/१०	३/१०	०	३/१०	३/१०	एकपाददृष्टिः
५/९	५/९	५/९	५/९	०	५/९	५/९	५/९	५/९	द्विपाददृष्टिः
४/८	४/८	०	४/८	४/८	४/८	४/८	४/८	४/८	त्रिपाददृष्टिः
७	७	४/७/८	७	५/७/९	७	३/७/१०	७	७	सम्पूर्णदृष्टिः
चं. मं. गु.	र. बु.	र. बृ. चं.	र. रा. शु.	र. चं. मं.	बु. रा. श.	बु. रा. शु.	बु. श. शु.	बुध	मित्र–ग्रहाः
बु.	मं.श.गु.शु.	शु. श.	मं. गु. श.	रा. श.	मं. गु.	गु.	गु.	०	समग्रहाः
श. रा. शु.	रा.	बु. रा.	चं.	बु. शु.	र. चं.	र. चं. मं.	र. चं. मं.	०	शत्रुग्रहाः
मेष	वृष	मकर	कन्या	कर्क	मीन	तुला	मिथुन	धनु	उच्चराशयः
१०	३	२८	१५	५	२७	२०	१५	१५	परमोच्चांशाः
तुला	वृश्चिक	कर्क	मीन	मकर	कन्या	मेष	धनु	मिथुन	नीचराशयः
१०	३	२८	१५	५	२७	२०	१५	१५	नीचांशाः
सिंह	कर्क	मे., वृश्चि.	मि., क.	ध., मी.	वृष, तुला	म., कुं.	कन्या	मीन	स्वगृहाणि
सिंह	वृष	मेष	कन्या	धनु	तुला	कुम्भ	कर्क	मकर	मूलत्रिकोण
क्षत्रिय	वैश्य	क्षत्रिय	शूद्र	विप्र	विप्र	शूद्र निषाद	निषाद	निषाद	वर्णः
पुरुष	स्त्री	पुरुष	नपुंसक	पुरुष	स्त्री	नपुंसक	पुरुष	पुरुष	पुरुष, स्त्री, नपुंसकः
मध्याह्न	अपराह्न	मध्याह्न	प्रभात	प्रभात	अपराह्न	अपराह्न	अपराह्न	अपराह्न	समय
पूर्व	वायव्य	दक्षिण	उत्तर	ईशान	आग्नेय	पश्चिम	नैर्ऋत्य	नैर्ऋत्य	दिशा
सुवर्ण	रौप्य	सुवर्ण	कांस्य	सुवर्ण	रौप्य	लौह	लौह	लौह	धातु
चतुष्पद	बहुपद	चतुष्पद	द्विपद	द्विपद	द्विपद	भुजंगपद	अपद	अपद	पाद
उग्र	सौम्य	उग्र	शुभ	शुभ	शुभ	पाप	पाप	पाप	सौम्यादि
सत्त्व	सत्त्व	तम	रज	सत्त्व	रज	तम	तम	तम	गुण
स्थिर	चर	चर	द्विस्व.	स्थिर	चर	पक्षी,स्थिर	चर	पक्षी	चरादि
तिक्त	क्षार	कटु	सर्वरस	मधुर	अम्ल	कषाय	कषाय	कषाय	रस
पशु	जलभू.	दुग्ध	श्मशान	वाणी	जल	उत्कट	ऊषर	ऊषर	भूमि
पित्त	श्लेष्म	पित्त	समधातु	समधातु	कफशुक्र	वायु	धूम्र	वायु	पित्तादि
वृद्ध	युवा	युवा	युवा	वृद्ध	युवा	अतिवृद्ध	वृद्ध	वृद्ध	अवस्था
पाटल	गौरश्वेत	रक्त	नील	पीत	श्वेत	नील	धूम्र	धूम्र	रंग
मूल	जीव	धातु	जीव	जीव	मूल	मूल	धातु	धातु	धात्वादि
वन	जल	वन	ग्राम	ग्राम	ग्राम	सन्धि	विवर.	विवर	स्थानम्

वर्ष में योगिनी के लिए जन्म–नक्षत्रसंख्या में गताब्द जोड़ें, 3 और जोड़ें, 8 से भाग दें, तो शेष मंगलादि योगिनी दशा होती है।

वर्षयोगिनीमतेन मुद्दादशा (मास–दिन)

मं.	पिं.	धा.	भ्रा.	भ.	उ.	सि.	सं.
०	०	१	१	१	२	२	२
१०	२०	०	१०	२०	०	१०	२०

गर्भयोग–

वर्ष–कुण्डली में लग्नेश पांचवें या सातवें पड़ा हो व पंचमेश और सप्तमेश लग्न में पड़े हों तो उस वर्ष गर्भयोग होता है। मुंथेश और चन्द्रमा बली होकर पांचवें हो और पंचमेश भी बली हो तो गर्भ होता है।

जन्मपत्री न हो तो वर्ष बनाने की रीति

स्पष्ट प्रश्नलग्न की राशि को छोड़कर अंशादिक की कला करें, फिर उसमें १५० (डेढ़ सौ) का भाग दें। लब्ध, जो राश्यादि चार फल आवे उसकी राशि के अंक में प्रश्नलग्न की राशि के अंक मिलाएं। प्राप्तांक को मुन्था का स्पष्ट लग्न समझें और प्रश्नलग्न से चतुर्थराशि के स्वामी को जन्मलग्नेश जानें अर्थात् पंचाधिकारियों में जन्मलग्नपति के स्थान में प्रश्नलग्न से चतुर्थराशि का स्वामी जो हो उसे लग्नेश समझिए। प्रश्नपत्र पर वर्ष बनाने में इतना ही विशेष है। अन्य सर्व रीति में कुछ न्यूनाधिक नहीं है।

अरिष्ट योग

यदि जन्मलग्न ही वर्ष लग्न् हो और जन्मनक्षत्र भी वर्ष में आ जाए तो यह द्विजन्मा वर्ष अशुभ है। वर्ष में गुरु, चन्द्र शुभ न हों तो अशुभ, कष्टभय होता है। वर्ष में गुरु, चन्द्र शुभ हों तो अशुभ फल नहीं होगा।

आवश्यक मुहूर्त्त

कोई भी कार्य यदि शास्त्र-सम्मत शुभ-मुहूर्त्त में किया जाए तो वह अवश्य सफल होकर सुखप्रद होता है। गया-गोदावरी-यात्रा में, नवरात्रकृत्य में एवम् चातुर्मास्य व्रत में गुरु-शुक्रास्त का दोष नहीं होता।

गर्भाधान संस्कार का मुहूर्त्त

शुभ तिथियां– १ २ ३ ५ ७ १० ११, १२, १३। **शुभ नक्षत्र**–तीनों उत्तरा, मृ., ह., अनु., रो., स्वा., श्र., ध., श.। **शुभ लग्न–** जब लग्न और ४, ५ ७, ९, १० स्थानों में शुभग्रह हों;३, ६, ११ स्थानों में पापग्रह हों; सूर्य, मंगल या गुरु लग्न को देखते हों, विषम राशि के नवांश में चन्द्रमा हो, रजोदर्शनकाल से पहली चार रात्रि छोड़ कर १६ रात्रि तक समरात्रि में गर्भ हो तो पुत्र, विषम में हो तो कन्या होती है।

चित्रा, पुन. पुष्य, अश्विनी गर्भाधान के लिए मध्यम हैं।

गर्भाधान के लिए अशुभकाल

भद्रा; ४, ६, ८, ९, १४, १५, ३० तिथियां; संक्रान्ति का दिन, सन्ध्याकाल, मंगल, रवि, शनिवार, रजोदर्शनकाल की पहली चार रात्रियां; ज्येष्ठा, रेवती और आश्लेषा नक्षत्रों के अन्त की दो-दो घड़ी; मूल, अश्विनी और मघा के आदि की २-२ घड़ी; ४, ८, १२ लग्नों के अन्त की आधी-आधी घड़ी; ५, ९, १ लग्नों की आधी-आधी घड़ी; ५, ९, १५ तिथियों के अन्त की एक-एक घड़ी; ६, ११, १ तिथियों के आदि की एक-एक घड़ी; निर्बल तारा, जन्मनक्षत्र, मूल, भरणी, अश्विनी, रेवती, मघा नक्षत्र एवम् ग्रहण के दिन, व्यतिपात, वैधृति योग; माता-पिता के श्राद्ध का दिन; दिन का समय; परिघ योग का आधा भाग; उत्पात से हत नक्षत्र; जन्मराशि से अष्टमलग्न; पापयुक्त लग्न तथा पापाकान्त नक्षत्र गर्भाधान के लिए वर्जित है।

गर्भमासों के स्वामी

मास	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०
स्वामी	शुक्र	मंगल	गुरु	सूर्य	चन्द्रमा	शनि	बुध	गर्भाधान समय का लग्नेश	चन्द्रमा	सूर्य

स्त्री-पुरुष के चन्द्रबल की विशेषता

गर्भाधान संस्कार में स्त्री का चन्द्रबल देखना चाहिए और अन्यकार्यो में पति का चन्द्रबल देखना चाहिए– यह सदा स्मरण रखें।

पुंसवन संस्कार का मुहूर्त्त

यह संस्कार गर्भधान के तीसरे मास में गुरु, रवि, मंगलवार को मृग., पुन., पु., ह., मू. और श्रवण नक्षत्रों में; १, २, ३, ५, ७, १०, ११, १३ १५ तिथियों में जब लग्न से १, ४, ५, ७, ९ और १० स्थानों में शुभग्रह और ३, ६, ११ स्थानों में पापग्रह हों तो शुभ होता है। तीनों उत्तरा, रोहिणी, रेवती नक्षत्र तथा सोम, बुध और शुक्रवार भी शुभ हैं।

सीमान्त संस्कार का मुहूर्त्त

गर्भाधान के छठे या आठवें मास में जब मास का स्वामी बली हो तब पुंसवन के मुहूर्त्त में निर्दिष्ट तिथियों, वारों, नक्षत्रों और लग्नों में सीमान्त शुभ होता है। "**सीमान्त जातकादीनि प्राशनान्तानि यानि वै। न दोषो मलमासस्य मौढ्यस्य गुरुशुक्रयोः।।**"

गर्भ-रक्षा के लिए विष्णुपूजा

गर्भाधान के आठवें मास में श्रवण, रोहिणी और पुष्य नक्षत्र में; शुभ लग्न, वार और तिथियों में जब लग्न से आठवां स्थान शुद्ध हो तब गर्भ की रक्षा के लिए विष्णु की पूजा करनी चाहिए।

मेधाजनन संस्कार

बालक के उत्पन्न होने के अनन्तर नाल काटने से पहले दाहिने हाथ की अनामिका अंगुली के अग्रभाग में सुवर्ण लगाकर सुवर्णसहित अंगुली से शहद और गौ के घी को मिलाकर "**ॐ भूस्त्वयि दधामि, ॐ भुवस्त्वयि दधामि, ॐ स्वस्त्वयि दधामि, ॐ भू भुंवः स्वस्त्वयि दधामि, ॐ भूर्भुवः स्वः सर्व त्वयि दधामि**"– इन पांचों मन्त्रों से बालक को थोड़ा-थोड़ा चार बार मधु चटावें– ऐसा करने से बालक बुद्धिमान् और यशस्वी होता है।

स्तनपान कराने व सूतिकापथ्य का मुहूर्त

रिक्ता., अमा, भद्रा, व्यतिपात एवं वैधृति को छोड़कर शुभ तिथियां हों; वार चं. बु. गु. श. हों; नक्षत्र मृग., पुन., पु., श्र., रे., म. हों– तब स्तनपान कराना शुभ है। आगे अन्नप्राशन में कही गई तिथि, नक्षत्रों में सूतिकापथ्य शुभ है।

प्रसूता स्त्री के स्नान का मुहूर्त्त

रेवती, तीनों उत्तरा, रोहिणी, मृग., ह., स्वा., अश्वि. और अनु. नक्षत्रों में; रवि, गुरु और भोम वारों में; १, २, ३, ५, ७, १०, ११, १३, १५ तिथियों में शुभ हैं। आर्द्रा, पुन., पु., श्र., म., भ., कृ., वि. मू. और चित्रा नक्षत्र तथा शनि और बुधवार त्याज्य हैं। अन्य नक्षत्र और वार मध्यम हैं।

प्रसूता स्त्री द्वारा जलपूजन का मुहूर्त्त

मास समाप्त होने पर बुध, गुरु या चन्द्रवार को ४, ९, १४, तिथियों को छोड़कर अन्य तिथियों में श्र., पुन., पु., मृ., ह., मू., अनु., नक्षत्रों में जलपूजन उत्तम है। परन्तु गुरु और शुक्र के अस्त में; चैत्र, पौष या अधिक मास में (मास पूरा होने पर भी) जलपूजन नहीं करना चाहिए।

जातकर्म और नामकरण का मुहूर्त्त

संक्रान्तिदिन, भद्रा और व्यतिपात को छोड़कर १, २, ३, ५, ७, १०, ११ १२, १३ तिथियों में जन्मकाल से ११वें या १२वें दिन सोम, बुध और शुक्रवार को मृ., रे., चि., अनु., तीनों उत्तरा, रो., ह., अश्विनी, पुष्य, अभि., स्वा., पुन., श्र., ध., श., नक्षत्रों में, जब लग्न से १, ४, ५, ७, १० स्थानों में शुभग्रह तथा ३, ६, ११ स्थानों में पापग्रह हों तब शुभ होता है।

अथ दोला (झूला) आरोहणमुहूर्त्त

जन्म दिन से १०, १२, १६, १८, ३२वें दिन शुक्रवार में; मृ., रे., चि., अनु., ह., अश्वि., पुष्य, अभि., तीनों उत्तरा, रो. नक्षत्रों में ४, ९, १४, ३० तिथियों के अलावा अन्य तिथियों में; १, ४, ७, १० लग्नों में शुभग्रह से युक्त होने पर एवं १, ४, ५, ६, ७, ९, १०, ११ वें शुभग्रह हों तथा ३, ६, ११ वें पापग्रह हो तो उत्तम होता है।

निष्क्रमण का मुहूर्त्त

स्वा., अश्वि., पुन., ह., मू., पु., अनु., श्र., रो., ध. नक्षत्रों में; भौम एवं शनि को छोड़कर अन्य वारों में, रिक्ता, अमा, भद्रादि से रहित शुभ दिन में; तीसरे, चौथे मास में शुभ है। शीघ्रता होने पर १२वें दिन बालक का निष्क्रमण करें। इसी दिन सूर्य और नक्षत्र पूजन पूर्वक सूर्य नक्षत्रों का दर्शन करा दें।

सूर्य नक्षत्र से चन्द्रनक्षत्र तक गिनें				
५ नैरोग्य	५ मरण	५ कृषता	५ व्याधि	७ सौख्य

भूम्युपवेशन–मुहूर्त्त

पांचवें महीने में पृथ्वी, वाराह का पूजन करके भौम के पूर्ण बल में तीनों उत्तरा, रो., मृग., ज्ये., अनु., अश्वि., हस्त, पुष्य, अभि– इन नक्षत्रों में; ४, ९, १४, ३०– इन तिथियों को छोड़कर स्थिर लग्न एवं शुभ दिन में बालक के करधनी का त्रिसूत्र बांधकर पृथ्वी पर बैठाएं।

भूम्युपवेशन के लिए मंत्र– " रक्षैनं वसुधे देवि सदा सर्वगतं शुभे। आयुः प्रमाणं सकलं निक्षिपस्व हरिप्रिये।" इति।।

इसी समय बालक के सामने पुस्तक, कलम, वस्त्र, शस्त्र, स्वर्ण, चांदी, तुला आदि वस्तु रखें। जिसको बालक ग्रहण करे उससे उसकी आजीविका होती है।

अन्नप्राशन का मुहूर्त्त

जन्ममास से ६, ८, १० या १२वें मास में पुत्र का और ५, ७, ९ या ११ वें मास में कन्या का भद्रादि दोषरहित १, ३, ५, ७, १०, १३, १५ तिथियों में; सोम, बुध, गुरु और शुक्रवार को म., रे., चि., अनु., ह., अश्वि., पु., अभि., स्वा., पुन., श्र., ध., श., तीनों उत्तरा, रोहिणी नक्षत्रों में; जन्मराशि या जन्मलग्न से आठवें लग्न या नवांशक तथा मेष, वृश्चिक और मीन लग्न को छोड़कर शेष लग्नों में; १, ३, ४, ५, ७, ९, १० स्थानों में शुभ ग्रह हों या शुभ ग्रह की दृष्टि हो; ३, ६, ११ स्थानों में पापग्रह हों; दशम स्थान पापग्रहरहित हो; १, ६, ८ स्थान में चन्द्रमा न हो तो शुभ होता है। किसी–किसी के मत से जन्मनक्षत्र अनु., शततारिका (शतभिषा) और स्वाती अशुभ हैं।

कर्णवेध का मुहूर्त्त

चैत्र, पौष देवशयन (आषाढ़ शुक्ल ११ से कार्त्तिक शुक्ल ११ तक), जन्ममास, जन्मनक्षत्र, ४, ९, १४ तिथियां, जन्मतारा, क्षयतिथि और सम वर्षों को छोड़कर जन्म के १२वें या १६वें दिन; ६वें, ७वें, ८वें मास या विषम वर्षों में सोम, बुध, गुरु, शुक्रवार को श्र., ध., पुन., मृ., रे., चि., अनु., ह., अश्वि., पुष्य, अभि. नक्षत्रों में जब लग्न से अष्टम स्थान शुद्ध हो; १, ४, ५, ७, ९, १० स्थानों में शुभ ग्रह हों; ३, ६, ११ स्थानों में पापग्रह हों; तुला, वृष, धनु या मीन लग्न में बृहस्पतिवार हो तो कर्णच्छेदन श्रेष्ठ है। इस संस्कार के समय पर करने से मनुष्य के हर्निया (अंत्रवृद्धि) जैसे भयानक रोग की जड़ ही कट जाती है।

कन्या के नासिकाच्छेदन का मुहूर्त्त

कर्णवेधोक्त नक्षत्रों में तथा उत्तरा ३, शत., स्वा. में शुभ तिथ्यादिक, शुक्लपक्ष में दिन के प्रथम प्रहर के समय नासिका वेध शुभ है।

मुण्डनमुहूर्त्त

गर्भाधानकाल से या जन्मकाल से विषम अर्थात् ३रे, ५वें, ७वें वर्ष में (मनु जी के मत से प्रथम वर्ष में भी) चैत्र को छोड़कर उत्तरायण सूर्य में चन्द्र, बुध, गुरु और शुक्रवार, लग्न तथा नवांशक में, जन्मराशि या जन्मलग्न से अष्टम लग्न को छोड़कर; २, ३, ५, ७, १०, ११, १३ तिथियों में संक्रान्तिदिन को छोड़कर जब लग्न से आठवां स्थान शुद्ध (ग्रहरहित) हो; ३, ६, ११ स्थानों में पापग्रह हों; ज्ये., मृ., रे., चि., स्वा., पुन., श्र., ध., श., ह., अश्वि., पुष्य और अभिजित् नक्षत्रों में मुण्डन शुभ है।

ध्यान रहे– लड़के की माता को पांच मास का गर्भ हो तो मुण्डन **निषिद्ध है, परन्तु पांच वर्ष से अधिक अवस्था के बालक के लिए निषेध नहीं है। जेठे लड़के का मुण्डन ज्येष्ठ मास में नहीं करना चाहिए।**

मुण्डनकर्म में विशेष–स्वकुल–शिष्टाचारानुसार पूर्वोक्त नक्षत्र, तिथ्यादि; शुभ समय में अपने–अपने इष्टदेव के स्थानों में मुण्डन तथा कर्णवेध का होना देखा जाता है, जो **"यथा कुलधर्म वः"**– इस स्मृति के अनुसार से ठीक ही है।

क्षौर बनवाने का मुहूर्त्त

मुण्डन के लिए जो तिथियां और नक्षत्र शुभ बतलाये गए हैं वे ही **हजामत** बनवाने के लिए शुभ हैं– वर्जित काल–शनि, रवि, भौमवार; हजामत में **नौवें** दिन, संध्याकाल, ४, ८, ९, १४, १५, ३० तिथियां, संक्रान्तिदिन, रात्रि में, **बिना** आसन, संग्राम में, यात्रा करने के दिन, स्नान करके, शरीर में उबटन लगवाकर और भोजन के पीछे हजामत बनवाना अशुभ है।

विशेष फल– यज्ञ, विवाह, मृतककर्म में, कारागार से छूटने पर, ब्राह्मण और राजा की आज्ञा से किसी भी समय(बिना मुहूर्त के भी) हजामत बनवाई जा सकती है। किसी–किसी आचार्य का मत है कि जो लोग राजकार्य में नियुक्त हैं वे रूपजीवी (जैसे– नट–भांड-आदि) किसी भी दिन हजामत बनवा सकते हैं।

कर्णवेध और क्षौर का वार– ब्राह्मण रविवार को,, क्षत्रिय सोमवार को, वैश्य और शूद्र शनिवार को क्षौरोक्त तिथ्यादि में हजामत बनवा सकते हैं।

अक्षरारम्भ का मुहूर्त्त

जन्म से ५वें या ७वें वर्ष में उत्तरायण सूर्य में गणेश, विष्णु, सरस्वती और लक्ष्मी का पूजन करके सोम, बुध, गुरु और शुक्रवार को हस्त, अश्वि., पुष्य, अभि., श्र., स्वा., रे., पुन., आर्द्रा, चित्रा, अनुराधा नक्षत्रों में बुरे योगों और भद्रा को छोडकर २, ३, ५, ६, १०, ११, १२ तिथियों में (शुक्लपक्ष उत्तम) अक्षरारम्भ शुभ होता है। लग्न में मेष, कर्क तुला और मकर राशियां नहीं लेनी चाहिए।

विद्यारम्भ का मुहूर्त्त

उत्तरायण में (कुम्भ के सूर्य को छोड़कर) रवि, बुध, गुरु और शुक्रवार को; २, ३, ५, ६, १०, ११, १२ तिथियों में; भ.., आर्द्रा, पुन., हस्त, चि., स्वा., श्र., ध., शत., अश्वि., म., तीनों पूर्वा, तीनों उत्तरा, रो., पुष्य, आश्ले., अनु., रेवती नक्षत्रों में; जब लग्न से १, ४, ५, ७, ९, १० स्थानों में शुभ ग्रह हों तो विद्यारम्भ शुभ है।

फारसी, अंग्रेज़ी विद्यारम्भ का मुहूर्त्त

सूर्य, भौम, शनिवार हों; ४, ९, १४ तिथि हों; ज्ये., आश्ले., म., तीनों पूर्वा, भ., कृ., वि., आर्द्रा, उ. षा., शत. नक्षत्र शुभ हैं।

सीने–पिरोने (सूचिकर्म) का मुहूर्त्त

अश्वि., पु., चि., अनु., ध. नक्षत्र; सूर्य, बुध, चन्द्र, गुरु, शनि वार एवम् १, २, ३, ४, ५, ६, ७, ८, ९ १०, ११, १३, १५ तिथियां शुभ हैं।

यज्ञोपवीत संस्कार का मुहूर्त्त

यज्ञ और उपवीत– इन दो शब्दों से यज्ञोपवीत बना है। देवताओं की पूजा, संगति (सम्मेलन या कान्फ्रेंस) और जिसमें दान हों, उसे यज्ञ कहते हैं। उपवीत का अर्थ है– पिरो देने वाला अर्थात् देवपूजा, सम्मेलन और दान के साथ पुरुष को मिला देने वाला संस्कृत (तन्तु–धागाविशेष)– यह यज्ञोपवीत का अर्थ हुआ। बालक को गुरु, चन्द्र शुद्धि देखकर जन्म से या गर्भ से **(गर्भाज्जनेर्वा इति पारस्करमन्वादीनां मते विकल्पः)** ब्राह्मण आठवें वर्ष, क्षत्रिय ११वें, वैश्य १२वें, वर्ष में करें। यदि इन वर्षों में न किया जा सके तो ब्राहमण १६, क्षत्रिय २२ और वैश्य २५वें वर्ष तक संस्कार कर सकते हैं। उसके बाद सावित्रीपतित व्रात्य संज्ञा वाले होते हैं। माघादि पांच मासों में देवशयनी से पूर्व ह., अश्वि., पुष्य, अभि., ३ उत्तरा, रो., आश्ले., स्वा., श्र., ध., मू., मृग., रे., चि., अनु., तीनों पूर्वा, आर्द्रा वेधरहित, इन नक्षत्रों में (क्षत्रिय, वैश्यों के लिए पुनर्वसु भी ग्राह्य है) सू., चं., बु., (बुधास्त हो तो बुधवार त्याज्य) श., गुरुवार को शुक्ल २, ३, १०, ११, १२ तथा कृष्ण पक्ष की २, ३, ५ तिथियों में शुभ है। किन्तु सोपपदा तिथि (जैसे– आषाढ़ शुक्ल १०, ज्येष्ठ शुक्ल २, पौष शुक्ल ११, माघ शुक्ल १२), संक्रान्तिदिन तथा रोगबाण को छोड़कर मध्याह्न से पहले शुभ है। शु., गु., चं. और लग्नेश ६, ८ स्थानों में चं., शु. १२वें स्थान में और १, ५, ८वें भावों में पापग्रह अशुभ है। शुभ ग्रह ६, ८, १२ स्थानों के सिवाय अन्य स्थानों में; पाप ग्रह ३, ६, ११ स्थानों; वृष या कर्क का पूर्ण चन्द्रमा लग्न में हो तो शुभ होता है। गुरु, शुक्र के बाल्य–वृद्धत्त्व–अस्त के समय को छोड़कर उपनयन शुभ है। यदि गोचराष्टक वर्ग से बालक के उपनयन संस्कार के लिए **समयशुद्धि** न मिले अथवा सिंह, मकर किंवा अशुभ स्थान में गुरु हो तो सौर चैत्र में उपनयन संस्कार किया जा सकता है–ऐसी शास्त्र की आज्ञा है।

...तुला और मकर राशियां नहीं होनी चाहिए। | उपनयन संस्कार किया जा सकता है–ऐसा शास्त्र की आज्ञा है।

मेलापक सारणी देखने की रीति और अष्टकूट दोषों के परिहार

लेखक:- प्रियव्रत शर्मा

आगे चार पृष्ठों पर 'मेलापक सारणी' दी गई है । इसके बाई ओर पहिले,दूसरे कालमों में लड़की की और सबसे ऊपर वाली पहिली,दूसरी पंक्तियों में लड़के की राशियां तथा चरण-नक्षत्र दिए गए हैं । लड़की के नक्षत्र चरण के आगे लड़के के नक्षत्र-चरण के नीचे वर्ण आदि अष्टकूटों के गुण और मिलान में होने वाले वर्ण आदि दोषों का निर्देश है । वर्ण आदि दोषों के लिए नीचे लिखे सांकेतिक अक्षरों का इस सारणी में प्रयोग किया गया है:-

वर्ण दोष के लिए = ब
वश्य दोष के लिए = व
तारा दोष के लिए = त
योनि दोष के लिए = य
राशीश दोष के लिए = र
गण दोष के लिए = ग
भकूट दोष के लिए = भ
नाडी दोष के लिए = न

उदाहरणार्थ - यदि लड़की का जन्म चित्रा के ४ र्थ चरण में और लड़के का पू. भा. के ३ य चरण में हुआ हो तो इनके मिलान में इस मेलापक सारणीसे अष्टकूटों के गुण १८ ½ मिले, और ज्ञात हुआ कि इस मिलान में त (तारा), य (योनि), ग (गण), तथा भ (भकूट) दोष हैं ।

अष्टकूट दोषों के परिहार-

वर, कन्या के राशीशों अथवा नवमांशेशों की मैत्री तथा राशीशों , नवमांशेशों की एकता से नाड़ी दोष के अलावा शेष सभी दोषों का परिहार हो जाता है । राशीश-नवमांशेशों की मैत्री-एकता के अलावा अन्य और भी अनेक परिहार हैं, जिनसे वर्ण आदि दोष दूर हो जाते हैं। इनका विवरण नीचे दिया जा रहा है -

(१) **वर्ण दोष का परिवार**:- वर की राशि के वर्ण से कन्या की राशि का वर्ण उत्तम होने पर वर्ण दोष होता है । लेकिन यदि वर के राशीश का वर्ण कन्या के राशीश के वर्ण से उत्तम हो तो वर्ण दोष का परिहार हो जाता है । सभी ग्रहों के वर्ण इस प्रकार है:-

रवि का वर्ण क्षत्रिय,चन्द्र का वैश्य,मंगल का क्षत्रिय,बुध का शूद्र, गुरु का ब्राह्मण, शुक्र का ब्राह्मण और शनि का शूद्र है ।

(२) **वश्य दोष का परिहार**:- वर कन्या की राशियों की योनिमैत्री होने पर वश्य दोष दूर हो जाता है

(३) **तारा दोष का परिहार**:-वर कन्या के राशीशों, नवमांशेशों की मैत्री या एकता के अलावा तारा दोष का दूसरा कोई परिहार नहीं है ।

(४) **योनि दोष का परिहार**:- भकूट और वश्य कूटों में से कोई एक भी यदि शुभ (ठीक) हो तो योनिदोष का परिहार हो जाता है ।

(५) **राशीश दोष का परिहार**:- भकूट शुभ होने पर (यानि द्विर्द्वादश, नवपंचम और षडष्टक का अभाव होने पर) राशीश दोष दूर हो जाता है ।

(६) **गण दोष का परिहार**:- वर -कन्या की राशि एक और नक्षत्र भिन्न-भिन्न हों [illegible] दोष दूर हो जाता है।

(७) **भकूट दोष का परिहार** :- वर कन्या के राशीशों, नवांशेशों की मैत्री या एकता ही भकूट दोष का प्रमुख परिहार है। यदि इसके साथ ताराशुद्धि या वश्यशुद्धि भी हो तो भकूट दोष का उत्तम परिहार माना जाता है ।

(८) **नाड़ी दोष का परिहार** :- वर,कन्या की राशि एक और नक्षत्र भिन्न-भिन्न हों, अथवा नक्षत्र एक और राशियां, भिन्न-भिन्न हों तो नाड़ी दोष दूर हो जाता है । दोनों के नक्षत्रों के चरणों का वेध न होने की स्थिति में भी नाड़ी दोष का परिहार माना जाता है ।

नाड़ी दोष के परिहार के प्रसंगमें वर-कन्या में से किसी एक का-जन्म नक्षत्र के प्रथम चरण में और दूसरे का चतुर्थ चरण में अथवा एक का द्वितीय चरण में और दूसरे का तृतीय चरण में हुआ हो तो पादवेध मान लिया जाता है । लेकिन यह नियम सर्वत्र लागू नहीं होता । इसके स्पष्टीकरण के लिए सं. २०४७ के 'श्री मार्त्तण्ड पंचांग' में पृष्ठ ३४ पर दिया गया मेरा लेख **''पाद वेध द्वारा नाड़ी दोष के परिहार में परम्परागत एक भ्रांति''** पढ़ना चाहिए । यह लेख मेरी पुस्तक **'ग्रहयोग एवं दाम्पत्य जीवन'** में भी है ।

ध्यान दें:-जैसा कि ऊपर भी बता चुके हैं,वर,कन्या के राशीशों,नवमांशों की मैत्री और एकता तो वर्ण,वश्य,तारा,योनि,राशीश,गण और भकूट दोषों का परिहार कर देती है,लेकिन नाड़ी दोष का परिहार इनसे नहीं होता । नाड़ी दोष का परिहार तो केवल उपरोक्त स्थितियों में ही होता है ।

दैवज्ञ को यह विशेष रूप से ध्यान में रखना चाहिए,कि नाड़ीदोष का यदि परिहार नहीं मिले तो किसी भी स्थिति में (भले ही अन्य सातों कूट शुद्ध क्यों न हों, मिलान में गुण अठाइस भी क्यों न प्राप्त हों), सम्बन्ध करने की अनुमति नहीं देनी चाहिए । इस बारे में मुहूर्तशास्त्रकारों का यही स्पष्ट निर्णय है ।

'नाड़ीदोषस्तु विप्राणाम' वाक्य को संहिताकारों ने मान्यता नहीं दी है । 'मुहूर्त चिन्तामणि' आदि अन्य प्रामाणिक मुहूर्तग्रन्थों ने भी इसकी उपेक्षा की है,अतः इसे मान्यता नहीं दी जा सकती।

'एकनक्षत्र जातानां नाड़ीदोषो न विद्यते'- वाक्य भी प्रामाणिक नहीं है । एक ही नक्षत्र में उत्पन्न वर,कन्या को नाड़ी दोष तब नहीं माना जाता, जबकि उनका जन्म भिन्न-भिन्न चरणों में हुआ हो । 'मुहूर्तचिन्तामणि' का वाक्य है -**'नक्षत्रैक्ये पादभेदे शुभं स्यात्'** (अर्थात् दोनों का नक्षत्र एक होने पर दोष (नाड़ीदोष) की निवृत्ति तभी होती है,जबकि दोनों के चरण भिन्न-भिन्न हों)। **ध्यान रहे**, दोनों का जन्म एक ही नक्षत्र के एक ही चरण में होने पर नाड़ी दोष परमाधिक माना जाता है। एक ही नक्षत्र में पादवेध भी नहीं माना जाता ।

दोषपूर्ण अष्टकूटों के ,परिहारों को प्रमाणित करने वाले शास्त्रवाक्य बहुत हैं,उनको विस्तारभय से यहां उद्धृत नहीं किया गया। उन्हें मेरी पुस्तक **''ग्रहयोग एवं दाम्पत्यजीवन''** में आप देख सकते हैं)

सरलता पूर्वक एक ही दृष्टि में सभी अष्टकूटों के परिहार आ जाएं- इसके लिए नीचे दिया गया यह कोष्ठक देखें :-

अष्टकूट परिहार कोष्ठक

कूट	परिहार
वर्ण	१ राशीशों या नवमांशेशों की मैत्री या एकता हो। २ वर के राशीश का वर्ण कन्या के राशीश के वर्ण से उत्तम हो।
वश्य	१ राशीशों या नवमांशेशों की मैत्री या एकता हो। २ योनिमैत्री हो ।
तारा	१ राशीशों या नवमांशेशों की मैत्री या एकता हो।
योनि	१ राशीशों या नवमांशेशों की मैत्री या एकता हो। २ वश्यशुद्धि हो। ३ सद्भकूट हो।
राशीश	१ दोनों के नवमांशेशों में मैत्री या एकता हो। २ भकूट दोष न हो।
गण	१ राशीशों या नवमांशेशों की मैत्री या एकता हो। २ भकूट दोष न हो। ३ दोनों की राशि एक और नक्षत्र भिन्न-भिन्न हों ।
भकूट	१ राशीशों या नवमांशेशों की मैत्री या एकता हो।*
नाडी	१ दोनों की राशि एक और नक्षत्र भिन्न - भिन्न हों । २ दोनों का नक्षत्र एक और राशियां भिन्न-भिन्न हों । ३ दोनों का नक्षत्र एक और चरण भिन्न - भिन्न हों । ४ पाद वेध न हो।

* यदि इस परिहार के साथ ताराशुद्धि , वश्यशुद्धि में से कोई एक भी हो तो यह परिहार उत्तम माना जाता है।

परिहत कूट के गुण

वर्ण आदि जो कूट दोषपूर्ण होता है, उसके लिए निर्धारित पूरे गुणों को छोड़ दिया जाता है। जब उस दोषपूर्ण कूट का कोई उपरोक्त परिहार मिल जाए तब उसके पूरे गुणों को पुनः स्वीकार कर उन्हें मेलापक सारणी से प्राप्त गुण संख्या में जोड़कर उस गुणसंख्या को वास्तविक गुणसंख्या माना जाए- ऐसा कुछ आचार्यों का मत है । कुछ आचार्यों का मत है कि परिहार द्वारा दोष का पूरा नहीं, अपितु आंशिक निवारण होता है,अतः परिहत कूट के आधे गुणों को ही स्वीकार करना चाहिए । यह (दूसरा)मत तर्कसंगत है। इसके अनुसार परिहत कूट के आधे गुण(उस कूट के लिए निर्धारित पूरे गुणों का आधा भाग)मेलापक सारणी से मिली गुणसंख्या में जोड़कर उसे ही यथार्थ गुणसंख्या मानना युक्तियुक्त है ।

कितने गुण मिलने पर सम्बन्ध कर देना चाहिए ?

परिहत कूटों की आधी गुणसख्या को मेलापक सारणी में उपलब्ध गुणसंख्या में जोड़ने. पर मिली गुणसंख्या यदि १६ ½ से कम है तो सम्बन्ध नहीं करना चाहिए । यदि षडष्टक भकूट का परिहार न मिल रहा हो तब २० से कम गुण संख्या होने पर सम्बन्ध नहीं करना चाहिए । ध्यान रहे- यहां प्रत्येक स्थिति में नाड़ी दोष का परिहार मिलना नितान्त आवश्यक है। यदि नाड़ी दोष के उपरोक्त परिहारों में से कोई एक भी परिहार न मिल रहा हो तब तो २८ गुण मिलने पर भी सम्बन्ध करने की अनुमति शास्त्रकारों ने नहीं दी है ।

यदि किसी विशेष कारण (विवशता) वश सम्बन्ध करना आवश्यक (अपरिहार्य)हो जाए, तब १६ से कम गुणों और षडष्टक तथा नाड़ीदोष के अपरिहार की स्थिति में भी गाय,अन्न,वस्त्र,सुवर्ण का यथाशक्ति दान, तथा जप -शान्ति करके सम्बन्ध किया जा सकता है । इस स्थिति में कन्या का नाम बदलकर मिलान को अनुकूल बनाने की भी परम्परा है । लेकिन दान,जप,शान्ति करना भी इस स्थिति में अत्यन्त आवश्यक है । साधाराण स्थिति में (नितान्त विवशता की स्थिति के अभाव में) लड़की का नाम बदलकर मिलान को अनुकूल बनाना सर्वथा अशास्त्रीय है । नाम बदलकर मिलान को अनुकूल बनाने का 'सिद्धान्त' अपनाने पर तो किसी भी लड़की का किसी भी लड़के के साथ और किसी भी लड़के का किसी भी लड़की के साथ सम्बन्ध बेरोक-टोक किया जा सकता है और वहां अष्टकूटों के गुण इच्छानुसार अधिकाधिक प्राप्त किए जा सकते हैं, जिससे दोषपूर्ण कूटों का परिहार बतलाने वाले सभी शास्त्रवाक्य अर्थहीन हो जायेंगे।

मिलान में कुछ और विचार्य विषय

यद्यपि संहिताओं में इन आठ कूटों के अतिरिक्त अनेक और भी विचार्य विषय मिलते हैं, लेकिन वर्गमैत्री और नूदूर का भी विचार करने की भी कुछ दैवज्ञों में परम्परा हैं,इन दोनों का विवेचन इस प्रकार है-

वर्गमैत्री-।

वर्गमैत्री का विचार वर कन्या के नाम के आदिम वर्णों से सम्बद्ध है। हिन्दी वर्णमाला के अकार आदि स्वर अवर्ग क आदि पांच वर्ण 'कवर्ग च' आदि पांच वर्ण चवर्ग ट आदि पाँच वर्ण टवर्ग त आदि पाच वर्ण तवर्ग प आदि पांच वर्ण 'पवर्ग य आदि पांच वर्ण यवर्ग तथा श' आदि पांच वर्ण 'शवर्ग' कहलाते हैं। इन अवर्ग आदि आठ वर्गों को उपरोक्त क्रमानुसार क्रमशः प्रथम वर्ग, द्वितीय वर्ग आदि संज्ञाएं दी गई हैं । इन आठ वर्गों के स्वामी क्रमशः गरुड़, मार्जार,सिंह, श्वान,

र्प, मूषक, मृग और मेष माने गये हैं । प्रत्येक वर्गेश अपने से पंचम वर्ग के स्वामी का शत्रु माना गया । जैसे :- गरुड़ और सर्प तथा मूषक और मार्जार परस्पर शत्रु हैं ।

नामाक्षरों से वर्ग ज्ञान कोष्ठक :

।	अवर्ग	कवर्ग	चवर्ग	टवर्ग	तवर्ग	पवर्ग	यवर्ग	शवर्ग
के ।	अ, इ, उ,ए	क, ख, ग, घ,ङ	च,छ,ज, झ,ञ	ट,ठ,ड, ढ,ण	त,थ,द, ध,न	प, फ,ब, भ,म	य,र, ल,व	श,ष, स,ह
श	गरुड	मार्जार	सिंह	श्वान	सर्प	मूषक	मृग	मेष

वर, कन्या के नामों के आदिम वर्णों के वर्गों के स्वामी परस्पर शत्रु हों तो अच्छा नहीं माना ता, उनका जीवन दुःखमय रहता है ।

यदि वर्गेशों में शत्रुता है तो अष्टकूटों से प्राप्त गुण १७ से अधिक होने पर ही सम्बन्ध करना ाहिए। यदि मिलान में अष्टकूटों से प्राप्त गुण लगभग १४,१५ ही हों और नाडी दोष न हो तब वर्गेश ो एकता (अभिन्नता) होने पर सम्बन्ध किया जा सकता है-ऐसा कुछ लोगों का मत है

नृदूर

वर का नक्षत्र या नक्षत्र चरण यदि कन्या के नक्षत्र या नक्षत्र चरण से तुरन्त परवर्ती हो तो 'नृदूर' दोष कहलाता है। जैसे - कन्या का जन्म नक्षत्र अश्विनी और वर का भरणी, अथवा कन्या का जन्म अश्विनी के प्रथम चरण में और वर का अश्विनी के द्वितीय चरण में हो तो भी नृदूर दोष होगा। 'नृदूर' दोष का फल मुहूर्त शास्त्रों में बहुत अशुभ लिखा है।

दोनों (वर ,कन्या) की राशि एक और नक्षत्र भिन्न-भिन्न या दोनों का नक्षत्र एक और राशियां भिन्न-भिन्न हों तो नृदूर का परिहार हो जाता है।

अष्टकूटों से प्राप्त गुण लगभग १६ $\frac{१}{२}$,१७,१८ हों और 'नृदूर' दोष का परिहार न मिले, तब नाड़ी दोष के अभाव में भी मिलान को कुछ मुहूर्तकार अच्छा नहीं मानते । १८ से अधिक गुण होने पर 'नृदूर' की उपेक्षा की जा सकती है।

नामराशि से अष्टकूटों का निर्णय

वर और कन्या-दोनों का यदि जन्मकाल ज्ञात न हो, तब दोनों की नामराशि, नामनक्षत्रों (नामों के आदिम अक्षरों से अवकहड़ा चक्र द्वारा निर्णीत राशि और नक्षत्रों) के आधार पर ही मेलापक सारणी से अष्ट कूटों के गुणों का निर्णय करना चाहिए। अपिच यदि वर, कन्या-दोनों में से किसी एक का जन्मकाल ज्ञात न हो तो भी दोनों की नामराशि, नामनक्षत्रों के आधार पर ही अष्टकूटों का निर्णय करना चाहिए। एक की जन्मराशि, जन्मनक्षत्र और दूसरे की नामराशि, नाम नक्षत्र के आधार पर अष्टकूटों का निर्णय करने की अनुमति शास्त्र नहीं देते।

कुज (मंगली) दोष-

निम्नलिखित स्थितियों में कुजदोष (मंगली दोष) माना गया है -

(१) जन्म कुण्डली में १,४,७,८,१२ वें भावमें मंगल या अन्य कोई क्रूर ग्रह हो।
(२) चन्द्र कुण्डली में १,४,७,८,१२ वें भाव में मंगल या कोई क्रूर ग्रह हो ।
(३) शुक्र से १,४,७,८,१२ वें भाव में मंगल या अन्य कोई क्रूर ग्रह हो ।

कुजदोष बनाने वाला ग्रह अस्त, नीचस्थ या शत्रुराशिस्थ हो तो कुजदोष का फल अधिक माना गया है । कुजदोष दाम्पत्य जीवन के लिए अच्छा नहीं माना जाता ।

कुजदोष के सामान्य कुछ परिहार -

इन स्थितियों में वर, कन्या का कुज दोष दूर हो जाता है -

(१) कुजदोष बनाने वाला ग्रह (क्रूरग्रह) उच्चस्थ स्वराशिस्थ, स्वनवांशस्थ, मित्रराशिस्थ, उच्चनवांश या मित्रनवांश में हो।
(२) कुजदोष बनाने वाले ग्रह पर वृहस्पति की पूर्णदृष्टि हो ।
(३) वर-कन्या दोनों की कुण्डलियों में कुजदोष विद्यमान हो तो दोनों के कुजदोष समाप्त हो जाते हैं।

ध्यान रहे, कुजदोष वाले वर और कन्या दोनों की कुण्डलियों में कुजदोषों का परिहार मिलने पर कुजदोष का कुफल समाप्त हो जाता है । दोनों की कुण्डलियों में से किसी एक की कुण्डली में ही कुजदोष परिहार हो तो कुजदोष का कुप्रभाव रहता है ।

कुण्डली मिलान की प्रामाणिकता

हमारे ज्योतिष के मानक ग्रन्थों (संहिता, जातक, मुहूर्त्त ग्रन्थों) में वर, कन्या का सम्बन्ध करने से पूर्व उनकी कुण्डलियों में ग्रहस्थितियों के मिलान द्वारा कुजदोष के परिहार की चर्चा कहीं भी नहीं की गई है। पुनरपि कुण्डली मिलान की परम्परा सभी भारतीय प्रदेशों में प्रचलित है । इसका शास्त्रीय मूल अभी तक अज्ञात है। आश्चर्य है-सभी वशिष्ठ, नारद, गर्ग आदि की संहिताओं, मुहूर्त्तमार्तण्ड, मुहूर्त्तचिन्तामणि आदि मुहूर्त्तग्रन्थों तथा वर-कन्या के सम्बन्ध की अनुकूलता के परीक्षण के लिए रचित 'विवाहवृन्दावन' आदि सभी ग्रन्थों में वर-कन्या के सम्बन्ध के लिए केवल अष्टकूटों के परीक्षण का ही [illegible] है, कुण्डली मिलान का कहीं भी नहीं ।

षट्कूट चक्र

वर्ण, वश्य, योनि, राशीश, गण और नाड़ी ज्ञापक चक्र।

राशि	मेष			वृष			मिथुन			कर्क			सिंह			कन्या		
नक्षत्र	अश्वि.	भर	कृ.	कृ.	रो.	मृ.	मृ.	आर्द्रा	पुन.	पुन.	पुष्य	आश्ले.	मघा	पू.फा.	उ.फा.	उ.फा.	ह.	चि.
चरण	१, २ ३, ४	१,२ ३,४	१	२,३ ४	१,२ ३,४	१,२	३,४	१,२ ३,४	१,२ ३	४	१,२ ३,४	१,२ ३,४	१,२ ३,४	१,२ ३,४	१	२,३ ४	१,२ ३,४	१,२
वर्ण	क्ष.	क्ष	क्ष.	वै.	वै.	वै.	शू.	शू.	शू.	ब्रा.	ब्रा.	ब्रा.	क्ष.	क्ष.	क्ष.	वै.	वै.	वै.
वश्य	च.	च	च.	च.	च.	च.	द्वि.	द्वि.	द्वि.	ज.	ज.	ज.	व.	व.	व.	द्वि.	द्वि.	द्वि.
योनि	अ.	ग.	मे.	मे.	स.	स.	स.	श्वा.	मा.	मा.	मे.	मा.	मू.	मू.	गौ.	गौ.	म	व्या.
राशीश	म.	म.	म.	शु.	शु.	शु.	बु.	बु.	बु.	चं.	चं.	चं.	सू.	सू.	सू.	बु.	बु.	बु.
गण	दे.	म.	रा.	रा.	म.	दे.	दे.	म.	दे.	दे.	दे.	रा.	रा.	म.	म.	म.	दे.	रा.
नाड़ी	आ.	म.	अ.	अ.	अ.	म.	म	आ.	आ.	आ.	म.	अ.	अ.	म.	आ.	आ.	आ.	म.
राशि	तुला			वृश्चिक			धनु			मकर			कुम्भ			मीन		
नक्षत्र	चि.	स्वा	वि.	वि.	अनु.	ज्ये.	मू.	पू.षा.	उ.षा.	उ.षा.	श्रव.	ध.	ध.	श.	पू.भा.	पू.भा.	उ.भा	रेव.
चरण	३,४	१,२ ३,४	१,२ ३	४	१,२ ३,४	१,२ ३,४	१,२ ३,४	१,२ ३,४	१	२,३ ४	१,२ ३,४	१,२	३,४	१,२ ३,४	१,२ ३	४	१,२ ३,४	१,२ ३,४
वर्ण	शू.	शू.	शू.	ब्रा.	ब्रा.	ब्रा.	क्ष.	क्ष.	क्ष.	वै.	वै.	वै.	शू.	शू.	शू.	ब्रा.	ब्रा.	ब्रा.
वश्य	द्वि.	द्वि.	द्वि.	की.	की.	की.	द्वि.	द्वि.	द्वि.	ज.	ज.	ज.	द्वि.	द्वि.	द्वि.	ज.	ज.	ज.
योनि	व्या.	म.	व्या.	व्या.	मृ.	मृ.	श्वा.	वा.	न.	न.	वा.	सि.	सि.	अ.	सि.	सि	गौ.	ग.
राशीश	शु.	शु.	शु.	म.	म.	म.	गु.	गु.	गु.	श.	श.	श.	श.	श.	श.	गु.	गु.	गु.
गण	रा.	दे.	रा.	रा.	दे.	रा.	रा.	म.	म.	म.	दे.	रा.	रा.	रा.	म.	म.	म.	दे.
नाड़ी	म.	अं.	अं.	अं.	म.	आ.	आ.	म.	अं.	अं.	अं.	म.	म.	आ.	आ.	आ.	म.	अं.

वर्ण- ब्रा.= ब्राह्मण, क्ष= क्षत्रिय, वै= वैश्य, शू.=शूद्र

योनि- अ.=अश्व, ग=गज, मे=मेष, स=सर्प, श्वा.=श्वान, मा.=मार्जार, मू = मूषक, म=महिष, व्या=व्याघ्र, मृ=मृग, वा=वानर, न=नकुल, सिं=सिंह

गण- दे=देव, म=मनुष्य, रा=राक्षस

वश्य- च=चतुष्पद, की=कीट, व= वनचर, द्वि=द्विपद, ज=जलचर

राशीश- सू=सूर्य, चं=चन्द्र, मं.=मंगल, बु=बुध, गु=गुरु, शु=शुक्र, श=शनि

नाड़ी- आ=आद्य, म=मध्य, अं=अन्त्य

अब प्रकाशित है

ग्रहयोग एवं दाम्पत्य जीवन

(मिलान सम्बन्धी सभी समस्याओं का आमूलचूड़ समाधान)

अब प्रकाशित है

वर्ण आदि अष्टकूट, मंगली दोष, विवाहमुहूर्त साधन आदि विवाह सम्बन्धी सभी ज्ञातव्य विषयों का सरल-सुबोध शैली में पूरा विस्तृत विवेचन इसमें आपको मिलेगा। गुण मिलान में घटित होने वाले अष्टकूट दोषों एवं उनके परिहारों का सप्रमाण सुस्पष्ट निर्देश करने वाली, वर-कन्या के जन्मनक्षत्रों के चरणों के अनुसार बनाई गई ३६ पृष्ठों पर फैली अद्वितीय मौलिक 'मेलापक सारणी' तथा मंगलीक दोष का बलाबल बतलाने वाले कोष्ठक इस पुस्तक की अपनी विशेषता है। सन् १९७० ई. से सन् २००० ई. तक पैदा हुए वर कन्याओं का जन्मलग्न, जन्मनक्षत्र-चरण और जन्मकुण्डली बिना किसी पुराने पंचांग की सहायता के आप इस पुस्तक में दिए गए अद्भुत कोष्ठकों द्वारा १०-१५ मिनटों में ही स्वयं जानकर वर-कन्या की ग्रहस्थितियों का मिलान कर सकते हैं। मिलान सम्बन्धी सभी विवादास्पद विषयों का शास्त्रीय समाधान किया गया है। दूसरा संस्करण उपलब्ध है।

प्रो. प्रियव्रत शर्मा, कोठी नं. 59, सैक्टर-6.पो. पंचकूला-134109

मेलापक सारणी (भाग 1)

वर / कन्या		मेष			वृष			मिथुन			कर्क			सिंह			कन्या		
		अश्वि. 1,2,3,4	भर. 1,2,3,4	कृत्ति. 1	कृत्ति. 2,3,4	रोहि. 1,2,3,4	मृग. 1,2	मृग. 3,4	आर्द्रा 1,2,3,4	पुन. 1,2,3	पुन. 4	पुष्य 1,2,3,4	आश्ले. 1,2,3,4	मघा 1,2,3,4	पू.फा. 1,2,3,4	उ.फा. 1	उ.फा. 2,3,4	हस्त 1,2,3,4	चित्रा 1,2
मेष	अश्वि. 1,2,3,4	28 न	33	28½ त	18½ ब भ त	21½ ब भ त	22½ ब भ त	26 ब त र	17 ब न त र	19 ब न त र	23½ न त	31½ त	28 ग	21 व भ ग	25 व भ	15½ व भ न त	11 ब भ नतर	9 तबभ यनर	13 व भ त र
	भर. 1,2,3,4	34	28 न	29 ग	19 ब ग भ	21½ ब भ त	14½ ब भ त न	18 न ब त र	26 ब त र	27 ब त र	31½ त	23½ न त	25½ ग त	20 ग व भ	18 व भ न	26 व भ	21½ ब भ र	20 ब भ र त	4 बभग नतर
	कृत्ति. 1	27½ ग त	29 ग	28 न	18 ब भ न	10 ग ब न भ	16½ ग ब भ त	20 ग ब त	20 ग ब त	21 ग ब त र	25½ ग त	26½ ग त	23½ न त	16½ व भ न त	20 ग व भ	20 ग व भ	15½ ग व भ	15½ ग व भ र	18 ब भ त
वृष	कृत्ति. 2,3,4	18½ ग भ त	20 ग भ	19 भ न	28 न	20 ग न	26½ ग त	17½ ग ब भ त	17½ ब ग भ त	18½ ग ब भ त	22 ग त र	23 ग त र	20 न त र	18½ न व त र	22 र व ग	22 र व ग	21 ग भ	21 ग भ	23½ भ त
	रोहि. 1,2,3,4	23½ भ त	23½ भ त	11 ग भ न	20 ग न	28 न	36	27½ ब भ	23½ ब भ त	22½ भ ब त य	26 त र य	27 त र	12 ग न तरय	10½ रवग नतय	24½ र व त य	27 र व	26 भ	26 भ	20 ग भ
	मृग. 1,2	23½ भ त	14½ भ न त	18½ भ त ग	27½ त ग	35	28 न	19 ब भ न	24 ब भ	22½ ब भ त य	26 त य र	19 त र न	21 त र य ग	19½ गरव त य	15½ र व नतय	24½ र व त	23½ भ त	26 भ	13 भ न ग
मिथुन	मृग. 3,4	27 तर	18 र त	22 त र ग	19½ भ ग त	27 भ	20 भ न	28 न	33	31½ त य	19 भ व तयर	12 भ न वतर	14 भवत यगर	23½ व त य ग	19½ व न त य	28½ व त	31½ त	34	21 न ग
	आर्द्रा 1,2,3,4	19 त र न	27 त र	21 त र ग	18½ ग भ त	24½ भ त	26 भ	34	28 न	25 न य	12½ भ न तयर	20 भ व त र	13 गभर वतय	23½ ग त व	29½ व त	21½ न व त	24½ न त	24½ न त	27 ग य
	पुन. 1,2,3	20 न त र	27 त र	23 त र	20½ भ त ग	22½ भ त	23½ भ त य	31½ त य	24 न य	28 न	15½ न भ व र	22½ भ व र	17 भ व तरग	22½ य व त ग	26½ य व त	21½ न व त	24½ न त	25½ न त	27½ त ग
कर्क	पुन. 4	22½ ब न त	29½ ब त	25½ ब त ग	22 ब ग त र	24 ब त य र	25 ब त य र	18 बभव रतय	10½ बभव नयर	14½ ब भ रनत	28 न	35	29½ त ग	16½ बभय ग त	20½ ब भ त य	15½ ब भ न त	18 न भ त र	19 न ब वतर	21 ब ग वतर
	पुष्य 1,2,3,4	30½ ब त	21½ ब न त	26½ ब त ग	23 ब त र ग	25 ब त र	18 ब न त र	11 बभन वतर	18 ब भ वतर	21½ ब भ व र	35	28 न	30 ग	19½ ब भ ग त	15½ ब भ न त	23½ ब भ त	26 ब व त र	27 ब व त र	12 नबवय तरग
	आश्ले. 1,2,3,4	26 ब ग	24½ ब ग त	22½ न ब त	19 न ब त र	11 गबत नयर	19 ग ब तयर	12 गबत भवयर	12 गबभ वतयर	15 गबत भवर	28½ ग त	29 ग	28 न	15 य ब भ न	15½ गबय भ त	18½ ग व भ त	21 ग ब वतर	21 ग ब वतर	26 ब व त र
सिंह	मघा 1,2,3,4	20 ग व भ	20 ग व भ	16½ व भ न त	17½ वब रनत	9½ वबत गरनय	17½ वबत गरय	21½ व ब गतय	22½ व ब ग त	20½ व ब गयत	16½ ग भ य त	19½ ग भ त	16 न भ य	28 न	30 ग	27½ ग त	16½ व ब गभत	16½ व ब गभत	21½ व ब भ त
	पू.फा. 1,2,3,4	26 व भ	18 व भ न	20 ग व भ	21 ब व र ग	23½ व ब रतय	15½ वबन रतय	19½ व ब नतय	28½ व ब त	26½ व ब त य	22½ य भ त	17½ भ न त	16½ ग भ य त	30 ग	28 न	35	24 व ब भ	22½ व ब भ त	7½ वबत गनभ
	उ.फा. 1	16½ व भ त न	26 व भ	20 व ग भ	21 व ब ग र	26 व ब र	24½ व ब र त	28½ व ब त	20½ व ब न त	21½ व ब न त	17½ भ न त	25½ भ त	19½ ग भ त	27½ ग त	35	28 न	17 व ब भ न	16 व ब भ न	13½ वयब तगभ
कन्या	उ.फा. 2,3,4	13 भ न त र	22½ भ र	16½ ग भ र	21 ग भ	26 भ	24½ भ त	31½ ब त	23½ न ब त	24½ न ब त	20 न व त र	28 व त र	22 ग ब त र	17½ ग व भ त	25 भ व	18 व भ न	28 न	27 न	24½ व ग त
	हस्त 1,2,3,4	10 य भ नतर	20 भ त र	17½ भ र ग	22 भ ग	25 भ	28 भ	33 ब	22½ न ब त	24½ न ब त	20 न व त र	28 व त र	23 व त र ग	18½ व भ त ग	22½ व भ त	16 व भ न	26 न	28 न	28 य ग
	चित्रा 1,2	13 गभत यर	5 गभन तयर	19 भ त य र	23½ भ त य	20 ग भ	12 ग भ न	19 ग ब न	26 ग ब य	25½ ग ब त	21 ग व त र	12 गनव तयर	27 व त र	22½ व भ त	8½ ग व भनत	14½ व य गभत	24½ ग य त	27 ग य	28 न

(ब =वर्णदोष। व =वश्यदोष। त =तारादोष। य =योनिदोष। र =राशीदोष। ग =गणदोष। भ =भकूट दोष। न =नाड़ी दोष।)

मेलापक सारणी (भाग 2)

वर / कन्या		तुला			वृश्चिक			धनु			मकर			कुम्भ			मीन		
		चित्रा 3,4	स्वाती 1,2, 3,4	विशा. 1,2,3	विशा. 4	अनु. 1,2, 3,4	ज्ये. 1,2, 3,4	मूल 1,2, 3,4	पू.षा. 1,2, 3,4	उ.षा. 1,	उ.षा. 2,3,4	श्रव. 1,2, 3,4	धनि. 1,2,	धनि. 3,4	शत. 1,2, 3,4	पू.भा. 1,2,3	पू.भा. 4	उ.भा. 1,2, 3,4	रेव. 1,2, 3,4
मेष	अश्वि. 1,2, 3,4	22½ ब य त ग	26½ ब य त	22½ त ब य ग	18½ ग भ त य	25½ भ त	14 भ न ग	13½ भ न ग	25 भ	23½ भ त	25 ब त र	26 ब त र	20 ब त यरग	20 ब त यरग	15 ब न तरग	16 ब न तयर	14½ न भ त य	24½ भ त	26 भ
	भर. 1,2, 3,4	13½ बगन तय	29½ ब त	21½ ग ब त य	17½ ग भ त य	17½ न भ त	19½ ग भ त	20 ग भ	18 न भ	26 भ	27½ ब र	26 ब त र	10 ब य गनतर	10 ब य गनतर	20 ग ब त र	24 ब य त र	22½ त भ य	17½ न भ त	26½ भ त
	कृत्ति. 1	27½ ब त य	15½ ब ग न त	19½ ब न त य	15½ भ न त य	19½ ग भ त	25½ भ त	24½ भ त	18 ग भ य	12 ग भ न	13½ ब ग न र	11½ ब य रगन	25 ब त य र	25 ब त य र	27 ब त र	19 ब ग तयर	17½ ग भ त य	19½ ग भ त	11½ ग भ त न
वृष	कृत्ति. 2,3,4	22½ ब भ त य	10½ ग ब भनत	14½ ब भ तनय	20½ न त य	24½ ग त	30½ त	20 भ तर	13½ य ग भ र	7½ ग भ न र	12 ग भ न	10 य ग भ न	23½ भ त य	29½ ब त य	31½ ब त	23½ ग ब त य	20 ग त य र	22 ग त र	14 ग न त र
	रोहि. 1,2,3,4	19 ग ब भ	15½ ब भ न त	9½ तबग न भ	15½ ग न त	29½ त	23½ ग त	14 ग भ त र	19 र भ त य	11½ य भ न र	16 भ य न	17 न भ य	20 ग भ	26½ ग ब	24½ ग ब त	30½ ब त	27 त र	27 त र	19 र न त
	मृग. 1,2	12 ब भ न ग	25 ब भ	18½ ब भ त ग	24½ त ग	21½ न त	24½ त ग	15 भ त र ग	10 न भ तयर	17 य भ तर	21½ भ य त	25 भ य	13 न भ ग	19 ब ग न	27 ब ग	29½ ब त	26 त र	18 न त र	27 त र
मिथुन	मृग. 3,4	14 न भ ग	27 भ	20½ भ त ग	14 भ व तरग	11 भवन त र	14 भ व तरग	23 त र ग	18 न त य र	25 य त र	20 भ य व त	23½ भ व य	11½ न भ व ग	13 न भ ग	21 भ ग	23½ भ त	25½ त व र	17½ न व त र	26½ व त र
	आर्द्रा 1,2,3,4	20 ग भ य	27 भ	20 ग भ य	13½ रगव भ य	17 त भ वयर	3 यतगव भनर	16 ग न त र	28 त र	28 त र	23 भ व त	23 भ व त	17½ ग भ व य	19 ग भ य	12 ग भ न	17 न भ य	19 न र व य	26½ व त र	26½ व त र
	पुन. 1,2,3	20½ भ त ग	28 भ	22 भ ग	15½ व भ र ग	21½ व भ र	7 रगव भनत	14 यरत न ग	27 त र	27 त र	22 व त भ	23 व त भ	17 वतभ य ग	18½ भ ग त य	14 न भ ग	16 न भ य	18 र न य व	28 र व	27½ व त र
कर्क	पुन. 4	20½ ब त र ग	28 व र ब	22 व र ब ग	20 ग भ	26 भ	11½ त ग भ न	8 वतब भगनय	21 ब भ व त	21 ब भ व त	26 ब त र	27 ब त र	21 बगत य र	12½ बभव तयगर	8 बभव नगर	10 बभर नवय	16 न भ य	26 भ	25½ भ त
	पुष्य 1,2,3,4	11½ गनबव तयर	26½ ब व त र	21 रबग व य	19 भ य ग	18 भ न	21 भ ग	17 गबभ व त	11 यबभ तनव	21 ब भ व त	26 ब त र	25 ब य त र	13 गबन तयर	4½ भबगय वनतर	14½ बवत रगभ	18 बभव य र	24 भ य	18 न भ	27 भ
	आश्ले. 1,2,3,4	25½ ब व त र	12½ गबव तरन	17½ नबव त र	15½ न भ त	20 ग भ	26 भ	22½ ब भ व य	16 गबव भ त	8 गबव भनत	13 गबर न त	13 बगत न र	26 ब त य र	17½ बभव तरय	19½ बभव त र	11½ गबभ वतयर	17½ ग भ त य	21 ग भ	13 ग भ न
सिंह	मघा 1,2,3,4	24½ ब व त र	11½ बवत रगन	16½ बवत र न	22½ न व त	25½ ग व त	33 व	25 भ व	19 ग व भ	8½ वगभ नतय	3½ बरतय गभन	4½ बरत गभन	18½ ब र त भ	24½ ब व त र	25½ ब व त र	18½ बवर ग त	18½ ग भ त	19½ ग भ त	13 ग भ न
	पू.फा. 1,2,3,4	10½ बवत रगन	25½ ब व त र	18½ बवर ग त	24½ ग व त	23½ न व त	25½ ग व त	19 ग व भ	17 भ व न	24 भ व न	17 ब र भ य	18½ ब त भ त	4½ बरत गभन	10½ बवत रगन	19½ बवर ग त	24½ ब व र त	24½ भ त	17½ न भ त	25½ भ त
	उ.फा. 1	16½ बवत नगर	25½ ब व त र	16½ बवय नतर	22½ य व ग त	31½ व त	17½ ग व त न	9½ ग व नभत	25 भ व	25 भ व	20 ब र भ	20 ब र भ	11½ बरत गभय	17½ बवत गरय	11½ बवत गनर	15½ बवत नरय	15½ न भ त य	26½ भ त	25½ भ त
कन्या	उ.फा. 2,3,4	16½ गबय भ त	25½ ब भ त	16½ गबय भ त	18 यवत ग र	27 व त र	13 गवत न र	14 ग न त र	29½ र	29½ र	24½ भ व	24½ भ व	16 ग भ वतय	16½ गबभ त य	10½ गबन भ त	14½ बभन तय	17½ तनव य र	28½ व त र	27½ व त र
	हस्त 1,2,3,4	20 ब भ य ग	26½ ब भ त	18½ ब भ तयग	20 व ग तयर	26 व त र	13 न व तरग	15 न त र ग	27 त र	28½ र	23½ भ व	24½ भ व	18½ भ ग व य	19 ब भ य ग	8½ बयभ नतग	13½ ब भ नतय	16½ वनत य र	26½ व त र	27½ व त र
	चित्रा 1,2	20 ब भ न	19 ग ब भ य	26½ ब भ त	28 व त र	11 गवन तयर	25 व त य र	27 त य र	14 ग न त र	22 ग त र	17 ग भ त	18½ ग भ व	15½ भ व न य	16 ब य भ न	24 ब भ य	16½ गबत भ य	19½ गवत य र	10½ गयव नतर	19½ वगत य र

(ब =वर्णदोष। व =वश्यदोष। त =तारादोष। य =योनिदोष। र =राशीशदोष। ग =गणदोष। भ =भकूट दोष। न =नाड़ी दोष।)

मेलापक सारणी (भाग 3)

वर		मेष			वृष			मिथुन			कर्क			सिंह			कन्या		
कन्या		अश्वि. 1,2,3,4	भर. 1,2,3,4	कृत्ति. 1	कृत्ति. 2,3,4	रोहि. 1,2,3,4	मृग. 1,2	मृग. 3,4	आर्द्रा 1,2,3,4	पुन. 1,2,3	पुन. 4	पुष्य 1,2,3,4	आश्ले. 1,2,3,4	मघा 1,2,3,4	पू.फा. 1,2,3,4	उ.फा. 1	उ.फा. 2,3,4	हस्त 1,2,3,4	चित्रा 1,2
तुला	चित्रा 3,4	22½ ग त य	14½ ग न त य	28½ त य	23½ भ त य	20 ग भ	12 ग भ न	13 ग भ न	21 ग भ	19½ ग भ त	20½ ग र व त	11½ गनय वरत	26½ व त र	25½ व र त	11½ वरग न त	17½ व य गरत	17½ य ग भ त	20 ग भ य	21 भ न
	स्वाती 1,2,3,4	27½ य त	29½ त	17½ न त	12½ भ न त	15½ भ न त	26 भ	27 भ	26 भ	28 भ	29 व र	27½ व त र	14½ न व त र	13½ व न त ग	25½ व र त	25½ व र त	25½ भ त	27½ भ त	21 भ य ग
	विशा. 1, 2,3	22½ त य ग	22½ त य ग	20½ त य न	15½ त भ न य	10½ ग भ त न	18½ ग भ त	19½ ग भ त	20 ग भ य	21 ग भ	22 ग व र	21 ग त र	18½ न व त र	17½ व र त न	19½ व र त ग	17½ वयर ग त	17½ य ग भ त	18½ ग भ त य	27½ भ त
वृश्चिक	विशा. 4	16½ बगभ य त	16½ बगभ य त	14½ ब भ नयत	19½ ब न य त	14½ ब ग न त	22½ ब ग त	12 बवर गभत	12½ वबय गभर	13½ ब व गभर	19 ग भ	18 ग भ य	15½ भ न त	21½ ब व न त	23½ ब व ग त	21½ ब व गयत	17 तबव गयर	18 बवग तयर	27 ब व त र
	अनु. 1,2,3,4	24½ ब भ त	15½ [illegible] भ त	19½ ब भ ग त	24½ ब त ग	27½ ब त	20½ ब न त	10 बवत नभर	15½ तबव रभय	20½ ब व भ र	26 भ	18 भ न	21 भ ग	24½ ब व त ग	20½ ब व त न	29½ ब व त	25 ब व त र	26 ब व त	11 बरव नतय
	ज्येष्ठा 1,2, 3,4	12 ब ग भ न	18½ ब ग त भ	24½ ब भ त	29½ ब त	22½ ब ग त	22½ ब ग त	12 तबव गभर	2 तवबय गभनर	5 तबवर गभन	10½ त ग भ न	20 ग भ	26 भ	31 ब व	23½ ब व ग त	16½ तबव ग न	12 तबव गनर	12 तबव गनर	24 बवत य र
धनु	मूल 1,2,3,4	12 ग भ न	20 ग भ	24½ भ त	19 ब भ त र	13 ब ग तभर	13 रबग त भ	21 ब ग त र	15 बगन त र	12 रबग तनय	8 यगभ वनत	17 ग भ व त	23½ भ व य	25 व भ	19 व ग भ	9½ तवग भ न	13 तरब ग न	13 तरब ग न	26 र ब त य
	पू.षा. 1,2,3,4	26 भ	18 भ न	18 ग भ य	12½ ब य गभर	18 ब भ तयर	10 रबभ तनय	18 ब न तयर	27 ब त र	27 ब त र	23 भ व त	13 य भ नवत	17 ग भ व त	19 व ग भ	17 व भ न	25 व भ	28½ ब र	27 ब त र	13 तबग न र
	उ.षा 1	24½ भ त	26 भ	12 ग भ न	6½ रबय भ न	10½ बयर भ न	17 ब य तभर	25 ब य त र	27 ब त र	27 ब त र	23 भ व त	23 भ व त	9 ग भ वनत	8½ तगव यभन	24 व भ य	25 व भ	28½ ब र	28½ ब र	21 ग ब त र
मकर	उ.षा. 2,3,4	27 त र	28½ र	14½ ग न र	12 ग भ न	16 भ न य	22½ य भ त	20 ब य त भ	22 ब भ त	22 ब भ व त	28 त र	28 त र	14 ग न त र	4½ तयर गभन	20 र भ य	21 र भ	24½ भ त	24½ व भ	17 ग भ व त
	श्रव. 1,2,3,4	27 त र	26 त र	13½ य न र	11 य भ ग न	16 भ न य	25 भ य	22½ ब भ व य	21 ब भ व त	22 ब भ व त	28 त	26 य त र	15 न त र	6½ तगर भ न	18½ र भ त	20 भ र	23½ भ व	24½ भ व	19½ भ व
	धनि. 1,2	20 ग त य र	11 यगन त र	26 त य र	23½ भ त य	20 ग भ	12 ग भ न	9½ वबग भ न	16½ वयब ग भ	16 बगव त भ	22 ग त र	13 रगन तय	28 त र	19½ र भ त	5½ तगर भ न	12½ तयर ग भ	16 गभव त य	17½ ग भ व	15½ भ न व य
कुम्भ	धनि. 3,4	20 ग त य र	11 यगत न र	26 त य र	30½ त य	27 ग	19 ग न	12 ग भ न	19 ग भ य	18½ ग भ त	13½ ग भ वतर	4½ तयर गभनव	19½ भ व त र	25½ व त र	11½ वतर ग न	18½ वरग त य	17½ ग भ त य	19 ग भ य	17 य भ न
	शत. 1,2,3,4	15 ग न त र	21 ग त र	28 त र	32½ त	25½ ग त	27 ग	20 ग भ	12 ग भ न	13 ग भ न	8 गभव न र	14½ गभव त र	20½ व भ त र	26½ व र त	20½ व र ग त	12½ वरत ग न	11½ त ग न भ	8½ तयग न भ	25 भ य
	पू.भा. 1,2,3	18 न त य र	25 य त र	20 ग र त य	24½ ग त य	31½ त	31½ त	24½ भ त	17 भ न य	18 भ न	13 भ न व	20 भ र व य	13½ गभव त र	19½ व र त ग	25½ व र त	16½ वरय न त	15½ भ न त	15½ भ न त य	17½ ग भ त य
मीन	पू.भा. 4	14½ बभत न य	21½ ब य त भ	16½ गबत भ य	19 गबत य र	26 ब त र	26 ब त र	25½ ब व त र	18 बनव य र	19 न ब व र	18 न भ	25 भ य	18½ ग भ त	17½ ब ग त भ	23½ ब भ त	14½ बभत न य	16½ रबन वतय	16½ रबन वतय	18½ रबग वतय
	उ.भा. 1,2,3,4	24½ ब भ त	16½ ब भ त न	18½ ग ब त भ	21 ग ब त र	26 ब त र	18 न ब त र	17½ न ब वतर	25½ ब र व त	28 ब व र	27 भ	19 भ न	21 ग भ	18½ ग ब त भ	16½ ब भ न	25½ ब भ त	27½ ब व त र	26½ ब व त र	9½ बतर वयगन
	रेव. 1,2,3,4	25 ब भ	24½ ब भ त	11½ तगब भ न	14 गबन त र	17 व न त र	26 ब त र	25½ ब र व त	24½ र ब व त	26½ र व व त	25½ भ त	27 भ	14 भ न ग	13 ब भ ग न	23½ ब भ त	23½ ब भ त	25½ ब र व त	26½ ब र व त	19½ बयर वतग

(ब =वर्णदोष। व =वश्यदोष। त =तारादोष। य =योनिदोष। र =राशीदोष। ग =गणदोष। भ =भकूट दोष। न =नाड़ी दोष।)

मेलापक सारणी (भाग 4)

वर / कन्या		तुला			वृश्चिक			धनु			मकर			कुम्भ			मीन		
		चित्रा 3,4	स्वाती 1,2, 3,4	विशा. 1,2,3	विशा. 4	अनु. 1,2, 3,4	ज्ये. 1,2, 3,4	मूल 1,2, 3,4	पू.षा. 1,2, 3,4	उ.षा. 1,	उ.षा. 2,3,4	श्रव. 1,2, 3,4	धनि. 1,2,	धनि. 3,4	शत. 1,2, 3,4	पू.भा. 1,2,3	पू.भा. 4	उ.भा. 1,2, 3,4	रेव. 1,2, 3,4
तुला	चित्रा 3,4	28 न	27 ग य	34½ त	23½ भ द त	6½ यगव तनभ	20½ भ व त य	27 त य र	14 ग भ त र	22 ग त र	25 ग त व	26½ ग व	23½ न व य	18 न भ य	26 भ य	18½ ग भ त य	12½ गभव तयर	3½ वतयग भनर	12½ यरग भवत
	स्वाती 1,2,3,4	28 य ग	28 न	20 न य ग	9 भवय न ग	21½ भ व त	16½ भ व त ग	23 त र ग	27 त र ग	19 त न र	22 न व त	23 न व त	26½ व य ग	21 य ग भ	20 ग य भ	25 य भ	19 व भ य र	19½ व त भ र	12½ वतभ न र
	विशा. 1,2,3	34½ त	19 ग न य	28 न	17 भ व न	16 ग व भ य	20½ भ व त य	27 त य र	22 ग त र	14 ग न त र	17 ग न व त	17 ग न व त	30 व त य	24½ भ त य	26 भ य	20 ग भ य	14 गभव य र	13 गयभ त र	4½ गभव नतयर
वृश्चिक	विशा. 4	22½ ब व भ त	7 बवग नभय	16 ब व न भ	28 न	27 ग य	31½ त य	21½ बवत य भ	16½ बवग भ त	8½ दवग नभत	12 गबन त र	12 बनग त र	25 ब त य र	24 बवत य र	25½ ब व य र	19½ बवग य र	19 ग भ य	18 ग य भ	9½ गभन त य
	अनु. 1,2,3,4	6½ बवतभ यगन	21½ ब व भ त	16 बवभ य ग	28 य ग	28 न	31 ग	15½ बवत गयभ	13½ तबव न भ	21½ ब व त भ	25 ब त र	26 ब त र	12 तयब नरग	11 तयबव नरग	21 बवत र ग	24½ ब व य र	24 भ य	18 न भ	27 भ
	ज्येष्ठा 1,2,3,4	19½ बवत भ य	15½ तबव ग भ	19½ बवभ त य	31½ त य	30 ग	28 न	14 बवन भ य	16½ बवत ग भ	16½ बवत ग भ	20 ग व त र	20 ग ब त र	25 ब त य र	24 बवत य र	18 बवन र त	10 तबवय गनर	9½ गभत न य	21 ग भ	21 ग भ
धनु	मूल 1,2,3,4	26 त ब य र	21 ग ब त र	26 त ब य र	22½ भ व त य	15½ गवभ य त	15 य व न भ	28 न	28 ग	26½ ग त	15 गबभ व त	15 गबभ व त	20 बभव त य	28½ ब व य	21½ ब न त	14½ गनब त य	16 गनव त य	25 ग व त	26 ग व
	पू.षा. 1,2,3,4	13 गबत न र	27 ब त र	21 ग ब त र	17½ ग व भ त	15½ भ व न त	17½ ग व भ त	28 ग	28 न	34	22½ ब भ व	23 ब भ व त	6 गबवभ नतय	14½ गबत न य	23½ ग ब त	28½ ब त य	30 व त य	23 न व त	31 व त
	उ.षा 1	21 ग ब त र	19 न ब त र	13 गबन त र	9½ गवभ न त	23½ भ व त	17½ ग व भ त	26½ ग त	34	28 न	16½ ब भ व न	14½ ब भ व न	15 गबव भ त	23½ ग ब त	23½ ग ब त	29½ ब त	31 व त	31 व त	23 न व त
मकर	उ.षा. 2,3,4	24 ग ब त	22 न ब व त	16 ग ब न त	13 ग न त र	27 त र	21 ग त र	16 ग भ व त.	23½ भ व	17½ न भ व	28 न	26 न	26½ ग त	17 गबभ व त	17 गबव भ त	23 ब भ व त	30½ त	30½ त	22½ न त
	श्रव. 1,2,3,4	26½ ब व ग	22 न ब व त	17 नबग व त	14 न त र	27 त र	22 त र	17 भ व त ग	23 भ व त	14½ न भ व	25 न	28 न	28 य ग	18½ बभव य ग	18 बभव त ग	21 बभव त य	28½ त य	29½ त	22½ न त
	धनि 1,2	22½ न ब व य	24½ ग ब द य	29 ब व त य	26 त य र	12 गनत य र	26 त य र	21 भ व त य	7 गभय दनत	16 ग भ व त	26½ ग त	27 ग य	28 न	18½ ब भ न व	23½ ब भ व य	19 गबव त भ	26½ ग त	15½ ग न त य	22½ ग य त
कुम्भ	धनि 3,4	18 न भ य	20 ग भ य	24½ भ त य	25 त व य र	11 गवय तनर	25 त व य र	29½ त य	15½ ग त न य	24½ त ग	18 ग भ व त	18½ ग भ व य	19½ भ व न	28 न	33 य	28½ ग त	18 ग भ व त	7 तगभ वनय	14 गयव भ त
	शत. 1,2,3,4	26 भ य	19 भ य ग	26 भ य	26½ य व र	21 ग व त र	19 न व त र	22½ न त	24½ ग त	24½ ग त	18 ग भ व त	18 ग भ व त	24½ भ व य	33 य	28 न	19 ग न य	8½ गभव न य	17 ग भ व त	16 ग भ व त
	पू.भा. 1,2,3	18½ ग भ त य	26 भ य	20 ग भ य	20½ ग व य र	26½ व य र	11 गवत यनर	15½ न ग त य	29½ त य	30½ त	24 भ व त	23 भ व त य	20 भ ग व त	28½ ग त	19 न ग य	28 न	17½ न भ व	22½ भ व य	20 भ य व त
मीन	पू.भा. 4	11½ गबवभ तयर	19 बभव य र	13 गबव भयर	19 ग भ य	25 भ य	9½ गभन त य	15 गबत न य	29 ब व त य	30 ब व त	29½ ब त	28½ ब त य	25½ ग ब त	17 ग ब भ त	7½ गबय भतन	16½ ब भ त न	28 न	33 य	30½ य त
	उ.भा. 1,2,3,4	2½ यवबर गभनत	19½ भवब त र	12 गवर भयब	18 ग य भ	19 न भ	21 ग भ	24 ग ब व त	22 न ब व त	30 ब व त	29½ ब त	29½ ब त	14½ गबत न य	6 गबवन भतय	16 गबव भ त	21½ ब भ त य	33 य	28 न	35
	रेव. 1,2,3,4	12½ बभव तयर	11½ बभत दनर	4½ बभवन तगयर	10½ नभत य ग	27 भ	22 भ ग	26½ ब ग व	29 ब व त	21 न ब व त	20½ न ब त	21½ न ब त	22½ ब य त ग	14 बवय भतग	16 बभव त ग	18 बयभ वत	29½ य त	34	28 न

(ब =वर्णदोष। व =वश्यदोष। त =तारादोष। य =योनिदोष। र =राशीदोष। ग =गणदोष। भ =भकूट दोष। न =नाड़ी दोष।)

लग्न–गण्डान्त

कर्क, सिंह, वृश्चिक, धनु, मीन और मेष के अन्त एवम् आदि की आधी–आधी घड़ी लग्नगण्डान्त होता है। वह जन्म में ही भयप्रद होता है।

अथ विवाहमासाः–आचार्य चूड़ामणौ "माङ्गल्येषु विवाहेषु कन्या–संवरणेषु च। दशमासाः प्रशस्यन्ते चैत्र–पौष–विवर्जिताः॥" वर्षासु पाणिग्रहणं न केचित् केचिद्वदन्तीत्यपरो विशेषः। तस्मात्सदाचार इह प्रमाणं देशे यथा यत्र तथैव तत्र॥ केशवेन यदि नोररीकृतं श्रावणादिषु च पाणिपीडनम्। तेन चोदतमपरैरुदाहृतं तद्विकल्प इति मन्यते मया॥

अथ जन्म–मासादिषु निषेधः– सबसे बड़े (जेठे) लड़के अथवा सबसे बड़ी लड़की (जेठी) के जन्ममास (अर्थात् जन्मतिथि से ३० दिन) जन्मनक्षत्र अथवा जन्मतिथि में विवाह करना शुभ नहीं है। द्वितीयादि गर्भोत्पन्न को दोष नहीं है। **अत्यावश्यके परिहारः–** जातं दिनं दूषयते वशिष्ठः पञ्चैव गर्गास्त्रिदिनं तथात्रिः। तज्जन्मपक्षं किल भागुरिश्च व्रते विवाहे गमने क्षुरे च॥

यदि दो कार्यों की आवश्यकता हो तो– एक घर में दो शुभ काम करना मना है, परन्तु अति आवश्यकता में ९ दिन का अन्तर देकर दो घरों में अलग–अलग मण्डप गाड़कर और जो पुरोहित पहला कार्य करा चुका हो, उसी से दूसरा कार्य न करावें, दूसरे आचार्य से करावें। इसी प्रकार जिस गृह में पहला कार्य हुआ हो तो दूसरे कार्य में दूसरे घर में मण्डप गाड़कर कार्य को करें।

अथ ज्येष्ठ विचारः– ज्येष्ठ पुत्र व कन्या का ज्येष्ठ मास में विवाह करना अशुभ है। अत्यावश्यकता में कृत्तिका के सूर्य को छोड़कर दानादि पूर्वक करें।

षट्मास के भीतर दो विवाह आदि का निर्णय– दो सगी बहनों का विवाह एक साथ या छः मास के अन्दर करे तो निस्संदेह ३ वर्ष के अन्दर अशुभ फल हो। पुत्र के विवाह के पीछे षट्मास तक कन्या का विवाह न करें और कन्या व पुत्र के पीछे छः मास तक यज्ञोपवीत न करें, अर्थात् पहले कर लें और मंगलकार्य के पीछे अमंगल अर्थात् श्राद्ध, तिलतर्पण भी न करें। मुण्डन भी विवाह, जनेऊ के पीछे न करें। वर्ष पलटने पर फिर भले ही शुभकार्य कर लें। वहां छः मास का विचार नहीं है। यह ६ महीने का निषेध तीन पीढ़ी तक ही है।

विवाहादि शुभ कार्यों में मरणाशौच– साहे चिट्ठी (कुंकम पत्रिका) आने पर विवाह दिन निश्चित हो जाने पर किसी की मृत्यु हो जावे तो माता के मरण से ६ मास, पिता के मरण से एक साल, स्त्री के मरण से तीन मास, भाई व पुत्र के मरण से १½ मास, कुल वालों के मरण से २२½ दिन तक कोई शुभ कार्य न करें। अति संकट में ३० दिन बाद शान्ति करके अथवा विशेष शान्ति और गोदान करके अशौच के बाद करें।

त्रिबल शुद्धि विचार

विवाह के शुद्ध मुहूर्त पंचांग के अन्त में दिए गए हैं। उनमें से उत्तम मुहूर्त देखकर और उसी दिन वर की राशि से सूर्य, चन्द्र देखिए तथा कन्या राशि से चन्द्र, गुरु देखिए। बस, इसी को त्रिबलशुद्धि कहते है। यह त्रिबलशुद्धि जिस उत्तम विवाहलग्न के दिन मिले वही विवाह–दिन उत्तम है। यदि रवि, गुरु पूज्य हों तो मध्यम है, यदि सूर्य नेष्ट हो तो विवाह नहीं बनेगा–ऐसा समझें। इसी प्रकार कुमार के उपनयन में भी त्रिबल (गु.सू.चं.) शुद्धि प्रथम देखें– **"झष–चाप–कुलीरस्थो जीवोप्यशुभगोचरः अतिशोभनतां दद्याद्विवाहोपनयनादिषु॥ (बृहस्पतिः)॥** अत्यावश्यकता में **"द्विरर्च्यो द्वादशस्तुर्योऽथाष्टमस्त्रिगुणार्चनात्। उच्च उच्चांशके ग्राह्यः चन्द्रादष्टमगो रविः। नीचे नीचांशके त्याज्यः अरिलाभादिगोऽपि चेत्॥"**

तुलाराशौ अपूज्यःरविः–धर्म–धी–धनगतो दिवाकरस्तौलिराशि–जनितस्य शोभनः।।

आवश्यके पज्यरवि–परिहारः– गार्ग्याङ्गिरोवत्स वशिष्ठ गौतम पराशराद्याः मुनयो वदन्ति। द्वितीयपञ्चांकगतो दिवाकरस्त्रयोदशाहात्परतः शुभावहः॥ (मु.प्र.सा.)।

विवाहादौ त्रिबल–शोधनम्

पूज्यगुरुः– १०/६/३/१
श्रेष्ठगुरुः–९/५/११/२/७
नेष्टगुरुः– ४/८/१२
श्रेष्ठरविः– ३/६/१०/११
पूज्यरविः– २/५/९
विशेष पूज्य रविः– १/७
नेष्टरविः– ४/८/१२
नेष्टचन्द्रः– ४/८
श्रेष्ठचन्द्रः–१/२/३/५/६//७/९/१०/११/१२

कन्या–वरयोःतैलादि–लापन (बन्न)–दिन–संख्या

राशि →	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२
तैल सं.	७	१०	५	१०	५	७	७	५	५	५	५	७

अथ विवाहे तिथि–वार–नक्षत्राणि–रो., मृ., उत्तरा. ३, म., ह., स्वा., अनु., मू., रे. एतद्वेध–रहितेषु शुभेऽह्नि। अमाक्षय–रहित–तिथिषु कात्यायनमते अश्वि., चि., श्र., धनिष्ठास्वपि शुभम्॥

अथ विवाहांगकृत्यारम्भ मुहूर्त्तः

वर, कन्या की चन्द्रशुद्धि विचार कर विवाहदिन से पहिले ३/६/९– इन दिनों को छोड़कर विवाह के नक्षत्रों में चन्द्रशुद्धि वाली सौभाग्यवती स्त्री के प्रथमोद्योग से हल्दी हाथ, दलना, पीसना, कूटना, मंगलकशादि स्थापन करना, घर लीपना, आंगनसफाई, भूषण घढ़ाना, वस्त्र सिलाना, वेदी रचना, चन्दोया बांधना, गणेशादि पूजन और नान्दीश्राद्ध, मंगलस्नानादि सर्वकार्य का आरम्भ करना शुभ होता है।

विवाह–मुहूर्त्त में दस दोषों का विचार

विवाह के मुहूर्त्त में लत्ता, पात, युति, वेध, जामित्र, पञ्चवाण, एकार्गल, उपग्रह, क्रान्तिसाम्य और दग्धातिथि– इन दस दोषों का विचार करना आवश्यक है। इन सबका विचार करके इस वर्ष के विवाहमुहूर्त्त लग्न दिए हुए हैं। इन दसों दोषों में जो दोष जिस मुहूर्त्त में हैं, वे क्रमानुसार टेढी रेखा से सूचित किए गए हैं। उक्त दसों दोषों का विचार इस प्रकार किया जाता है।

(१) लत्तादोष–ज्ञान चक्र

सूर्य	पूर्णचन्द्र	भौम	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	ग्रहाः
१२	२२	३	७	६	५	८	९	← लग्न नक्षत्र
दक्षिण	वाम	दक्षिण	वाम	दक्षिण	वाम	दक्षिण	वाम	← दिशा
धननाशः	भयम्	मृत्युः	भयम्	बन्धुनाशः	कार्यहानिः	कुलक्षयः	मरणम्	← फलम्

यथा–सूर्य अश्विनी नक्षत्र पर हो और विवाह उ.फा. का हो। सूर्यस्थित अश्विनी नक्षत्र से गिना तो, उ.फा. १२वां हुआ, यह सूर्य की लत्तादोषयुक्त साहा हुआ। इसी प्रकार अन्य ग्रहों की लत्ता भी जानें।

(२) पातदोष ज्ञानचक्र

रो.	मृ.	मघा	उ.फा.	ह.	स्वा.	अनु.	मू.	उ.षा.	उ.भा.	रे.	विवाह नक्षत्र
आर्द्रा पुन. श. पू.फा. चि. मू.	मृ. आ. ज्ये. ध. म. ह.	अ. मृ. ज्ये. पुष्य ह. रे.	कृ. आ. वि. पू.फा. उ.भा. पू.भा.	भ. मृ. श. पू.भा. स्वा. म.	कृ. श्र. ध. पुष्य ह. रे.	अ. आ. उ.षा. पू.भा. पू.षा. पू.फा.	रो. ज्ये. ध. आश्ले. मू. उ.भा.	भ. पुन. श. वि. अनु. उ.षा.	भ. श. वि. उ.फा. पू.फा. मू.	अ. ज्ये. ध. म. पू.फा. स्वा.	सूर्यस्थित नक्षत्र

हर्षण, वैधृति, साध्य, व्यतिपात, गंड और शूल योगों का अन्त जिस नक्षत्र में हो वह पात से दूषित होता है। इन नक्षत्रों में विवाह करने से पात दोष होता है।

(३) युतिदोष

जिस नक्षत्र का विवाह हो उसी नक्षत्र में यदि कोई ग्रह हो तो वहां उस ग्रह की युति का दोष समझा जाता है। चन्द्र उच्च, मित्र वा स्वक्षेत्री हो तो युति दोष नहीं होता, किन्तु श्रेष्ठ है। सू., मं., शु., श., रा., के. की युति दारिद्र्य, मृत्यु आदि भयप्रद मानी गई है। शुक्र की युति विशेष करके वर्जित है।

(४) वेध दोषचक्र

अश्वि.	रोहि.	मृग.	मघा	उ.फा.	हस्त	चित्रा	स्वा.	अनु.	मूल	उ.षा.	श्रव.	धनि.	उ.भा.	रेव.
पू.फा.	अभि.	उ.षा.	श्रव.	रेव.	उ.भा.	पू.भा.	शत.	भर.	पुन.	मृग.	मघा	आश्ले.	हस्त	उ.फा.

ऊपर के नक्षत्र का विवाह हो और नीचे के नक्षत्र पर ग्रह हो तो वेधदोष होता है। यह सर्वत्र अवश्य ही त्याग देना चाहिए।

(५) जामित्र दोषचक्र

विवाह नक्षत्र→	रो.	मृग.	म.	उ.फा.	ह.	स्वा.	अनु.	मू.	उ.षा.	उ.भा.	रे.
ग्रह नक्षत्र→	अनु.	ज्ये.	ध.	पू.भा.	उ.भा.	अ.	कृ.	मृग.	पुन.	उ.फा.	ह.

विवाहलग्न से सातवें ग्रह होने से जामित्रदोष होता है। ऊपर वैवाहिक नक्षत्र और नीचे ग्रह नक्षत्र हैं। यानी 14वें नक्षत्र में पापी ग्रह का जामित्रदोष वर्जनीय है।

(६) बाणज्ञान–चक्र

बाण नाम	गतांशाः प्रति राशौ अर्कस्य	कर्मसु वर्ज्याः	वारे वर्ज्याः	समयपरत्वेन वर्ज्याः
रोगः	८/१७/२६	व्रतबंध	रवौ	रात्रौ त्याज्यम्
अग्निः	२/११/२०/२९	गेहगोपे	भौमे	सदैव वर्ज्यम्
नृपः	४/१३/२२	नृपसेवायम्	मन्दे	दिवा त्याज्यम्
चौरः	६/१५/२४	यात्रायाम्	भौमे	रात्रौ वर्ज्यम्
मृत्युः	१/१०/१९/२८	विवाहे	बुधे	संध्ययोः वर्ज्यम्

(७) एकार्गल दोष

व्याघात, गण्ड, व्यतिपात, विष्कम्भ, शूल, वैधृति, वज्र, परिघ, अतिगण्ड–ये योग हों और सूर्य के नक्षत्र से विवाह का नक्षत्र अभिजित् सहित गिनने से विषम हो तो एकार्गल दोष होता है।

(८) उपग्रहदोष

सूर्य के नक्षत्र से ५, ७, ८, १०, १४, १५, १८, १९, २१, २२, २३, २४ और २५वें नक्षत्र पर चन्द्रमा हो तो उपग्रह दोष होता है।

(९) स्थूल–क्रान्तिसाम्य–दोषचक्र

मेष	वृष	मिथुन	कर्क	कन्या	तुला
सिंह	मकर	धनु	वृश्चि	मीन	कुम्भ

नीचे और ऊपर की राशि पर कहीं भी सूर्य एव चन्द्रमा हो तो स्थूल रूप से क्रान्तिसाम्य दोष होता है। यह सर्वत्र वर्जित है। जैसे–मेष के सूर्य और सिंह के चन्द्रमा में या सिंह के सूर्य और मेष के चन्द्रमा में। सूक्ष्म क्रान्तिसाम्य ही सर्वत्र वर्जित है। जिसका निर्णय महापातगणित से करना चाहिए।

(१०) दग्धातिथि–दोषचक्र

९	२	४	६	५	१०	← सूर्य राशयः
१२	११	१	३	८	७	
२	४	६	८	१०	१२	← तिथयः

इन संक्रान्तियों में ये तिथियां दग्धा होती हैं। विशेषतः ये मध्यप्रदेश में ही वर्ज्य हैं।

"भुजंगं क्रान्तिसाम्यञ्च बाणवेधं तथैव च। लग्नहीन–विवाहन्तु कलौ पञ्च विवर्जयेत्।। *–कश्यपः*

लत्तादि–दोषाणां परिहारवाक्यानि

लत्ता मालवके (उज्जैन प्रान्ते) देशे, पातश्च कुरु (कुरुक्षेत्रबांगरे) जांगले (फिरोजपुर–भटिण्डाप्रान्ते)। एकार्गलं च काश्मीरे वेधं सर्वत्र वर्जयेत्।। उपग्रहर्क्षं कुरुवाह्लिकेषु (कुरुक्षेत्र, आगराप्रान्ते) कलिंगबंगेषु (जगन्नाथपुरी–बंगाल–अयोध्यायां) च पातितं भम्। सौराष्ट्रे (काठियावाड़े) शाल्वे (उज्जैनप्रान्ते) च लत्तितं भं त्यजेत्तु विद्धं किल सर्वदेशे।। युतिदोषो भवेद्गौडे (बंगाले) जामित्रस्य च यामुने (मथुराप्रान्ते)। मासदग्धाश्च तिथयो मध्यदेशे विवर्जिताः।।

विशेष परिहारः– चित्रांगते पातविचित्रदेशे मैत्रे मघा मालवके निषिद्धाः पौष्णश्रुतिश्चोत्तरदेशजातः सर्वत्र वर्ज्यश्च भुजंगपातः।।

युतिपरिहारः–स्वक्षेत्रगः स्वोच्चगो वा मित्रक्षेत्रगतो विधुः।
युतिदोषाय न भवेद्दम्पत्योः श्रेयसे तदा ॥

अत्यावश्यके वेध–परिहारः–"पादमेकं शुभैविद्धमशुभैर्नैव कृत्स्नतः।"
–(नारदः)

ग्रह प्रथम चरण में हो तो चतुर्थ चरण में वेध होता है, यदि चतुर्थ चरण में हो तो प्रथम चरण विद्ध होता है। द्वितीय में हो तो तृतीय, तथा तृतीय चरण में ग्रह हो तो द्वितीय चरण विद्ध होता है। आवश्यकता में चरणमात्र का त्याग किया जाता है– भुक्तं भोग्यं तथाक्रान्तं विद्धं पापग्रहेण च। शुभाशुभेषु कार्येषु वर्जनीयं प्रयत्नतः ॥

अस्यापवादः– ऋक्षाणि क्रूरविद्धानि क्रूरयुक्तादिकानि च। भुक्त्वा चन्द्रेण युक्तानि शुभार्हाणि प्रचक्षते।।

एकार्गलोपग्रह-पात-लत्ता-जामित्रकर्तर्युदयास्त दोषाः। नश्यन्ति चन्द्रार्क-बलोपपन्ने लग्ने यथार्काभ्युदये तु दोषाः॥ - (मु.चिं.)

उक्तानुक्ताश्च ये दोषास्तान्निहन्ति बली गुरुः।
केन्द्रसंस्थः सितो वापि पन्नगान् गरुडो यथा।।

विवाहे लग्न–शुद्धिचक्रम्

१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	←भावाः
चं. पाप.	०	शु.	रा.	०	चं. शु. लग्नेश	सर्वे	चं. मं. शुभाः लग्नेश	०	मं.	०	श.	← त्याज्याः
चं. मं.	कुलिकं क्रान्तिसाम्यश्च				चं.	मं.	चं. मं.	विद्धभश्च				← गोधूलौ त्याज्याः

लग्नभंगयोगा :– व्यये शनिः खेऽवनिजस्तृतीये भृगुस्तनौ चन्द्रखला न शस्ताः। लग्नेट् कविग्लौ च रिपौ मृतौ ग्लौ लग्नेट् शुभाराश्च मदे न सर्वे (अस्तेऽब्जगुरु समौ)॥ वर्गोत्तमं विनान्त्यांशो विवाहे न शुभप्रदः। वर्गोत्तमश्चेदन्त्यांशः पुत्रपौत्रादिवृद्धिदः॥ दम्पत्योरष्टमं लग्नन्त्वष्टमो राशिरेव च। यदि लग्नंगतः सोऽपि दम्पत्योर्निधनप्रदः॥ पंग्वन्धादिलग्नानां गौडमालवयोरेव त्यागः। बादरायणः मासशून्याह्वयास्तारा राशयो वधिरादयः। गौडमालवयोस्त्याज्यास्त्वन्यदेशे न गर्हिताः।।

कर्तरी दोषः– लग्नस्य पृष्ठाग्रगयोश्च साध्वोः सा कर्तरी स्यादृजुवक्रगत्योः। तावेव शीघ्रौ यदि वक्रचारौ न कर्तरी चेति पितामहोक्तिः॥ इय कर्तरी चन्द्रस्यपि द्रष्टव्या। **केषाञ्चिल्लग्नदोषाणां परिहाराः** –पापौ कर्तरिकारकौ रिपुगृहनीचास्तंगौ कर्तरी दोषो नैव सितेऽरिनीचगृहगे तत्पष्ठदोषेऽपि न। भौमेऽस्ते रिपुनीचगे नहि भवेद्: भौमोऽष्टमो दोषकृन्नीचे नीचनवांशके शशिनि रिःफाष्टारिदोषोऽपि न॥

दोषापवादाः ज्योतिर्निबन्धे– दोषाश्च बहव सन्ति गुणाः स्वल्पाः कलौ युगे। तथापि दोषा नश्यन्ति स्वापवादगुणैः सह॥

अपवादान्तरम्– उक्तानुक्ताश्च ये दोषस्तान्निहन्ति बली गुरुः। केन्द्र-संस्थः सितो वापि पन्नगान्गारुडो यथा॥ मुहूर्त्तलग्नषड्वर्गकुनवांश ग्रहोद्भवाः। ये दोषास्तान्निहन्त्येव यत्रैकादशगःशशी॥ अब्दायनर्तुमासोत्थाः पक्षतिथ्यृक्षसम्भवाः। ते सर्वे नाशमायान्ति केन्द्रसंस्थे शुभग्रहे॥ लग्नाधिपो यदा केन्द्रे लग्नादेकादशालये। सर्वग्रहकृतं रिष्टमेकोपि विलयं नयेत्॥ बलवान् केन्द्रगः सौम्यो हन्ति दोष–शतत्रयम्। घूनं विहाय दैत्येज्यः सहस्रं लक्षमंगिरा॥ स्मरण रहे कि– पूवोक्त अपवाद वाक्यों में सप्तमरहित केन्द्र (१/४/१०) ही ग्रहण करना चाहिए।

विवाहे ग्रहाणां रेखाप्रद–स्थानानि

र.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.	ग्रहाः	मुहूर्त्त गणपतौ
३	२	३	१	१	१	३	३	३		लग्नं शुभं विवाहे स्याद
६	३	६	२	२	२	६	६	६		दशविंशोपकाधिकंम्।
८	११	११	३	३	४	८	८	८		
११			४	४	५	११	११	११		
			५	५	९					
			६	६	१०					
			९	९	११					
			१०	१०						
			११	११						
३॥	५	१॥	२	३	२	१॥	१॥	१॥		विंशोपकबलम्

अथ गोधूलि लग्नविचारः– लग्नशुद्धिर्यदा नास्ति कन्या यौवनशालिनी। तदा वै सर्ववर्णानां लग्नं गोधूलिकं शुभम्॥ लग्नं यदा नास्ति विशुद्धमन्यद गोधूलिकं साधु तदा वदन्ति। लग्ने विशुद्धे सति वीर्ययुक्ते गोधूलिकं नैव फलं विधत्ते॥ मार्ग., माघ, फाल्गुन में संध्यासमय सूर्य गोलक समान दृष्टिगोचर होने पर चैत्र, वैशाख में गौओं की धूली से आकाश आच्छदित होने पर, ज्येष्ठ, आषाढ़ में सूर्य आधा अस्त होने पर, श्रावण भाद्रपद, आश्विन, कार्त्तिक में सूर्य पूर्ण अस्त होने पर गोधूलि लग्न होता है।

गोधूलिके त्याज्या दोषाः– कुलिकं क्रातिसाम्यञ्च लग्ने षष्ठेऽष्टमे शशी। तथा गोधूलिके त्याज्यं पञ्चदोषैस्तु दूषितम्। अस्तं याते गुरुदिवसे सौरे सार्के। अर्थात् बृहस्पतिवार को सूर्य अस्त होने के पीछे।क्योंकि सूर्य अस्त से पहले वारबेला होगी और शनिवार को सूर्य अस्त से पहले (क्योंकि सूर्य अस्त हो जाने में कुलिकं मुहूर्त्त होगा) गोधूलि समझना चाहिए।

संकीर्ण वर्णसंकर चाण्डालादि जाति का विवाह मुहूर्त्त

कृष्णपक्ष क्रूरवार निषिद्ध नक्षत्र ग़ोगों में संकीर्ण जाति वालों का विवाह धन, पुत्र आयु प्रीती लाभ देता है। ऐसा शौनकादि मुनि कहते हैं।

पुनर्विवाहे (रीत) सूर्यभात् शुभाशुभज्ञानाय चक्रम्

नक्षत्र→	३	३	३	३	३	३	३	३
फल→	मृत्यु	धन	मरण	मृत्यु	पुत्र	दुर्भग	श्री	उन्नति

अन्यच्च– सूर्यभात् ४/११/१८/२५ संख्यकसाभिजिदभेषु पुनर्विवाहे मृत्युः। अत्र तिथि–मासवेध भृगु–गुर्वस्तादि दोषोऽपि नावलोकनीयः।

वधू प्रवेश का मुहूर्त्त

जब वधू विवाह होने पर पति के घर पहले आती है वह वधू प्रवेश कहा जाता है। विवाह के १६ दिन के भीतर सम दिनों में अथवा ५, ७, ९वें दिन; इनके उपरान्त एक मास तक विषम दिनों में; एकवर्ष के भीतर विषम मास में; एक वर्ष के उपरान्त ३रे, ५वें वर्ष में भी स्थिर लग्न में वधू प्रवेश शुभ है। ५वर्ष के उपरान्त जब चाहे तब शुभ मुहूर्त्त में हो सकता है। १६ दिन के भीतर पूर्वोक्त दिनों में तिथ्यादि पंचांगशुद्धि, चन्द्रबल, गुरुशुक्र के मूढत्व का भी विचार नहीं करना– व्यतिपाते क्षयतिथौ ग्रहणे वैधृतौ तथा अमासंक्रान्ति–तिथ्यादौ प्राप्तकालेऽपि नाचरेत्॥ रेव., अश्वि., रोहि., मृग., श्रव., धनि., हस्त, चित्रा, स्वा., मघा, मूल, उत्तरा ३, पुष्य, अनु., इन नक्षत्रों में और चं., बु., बृ. शु. श. इन वारों में १/२/३/५/६/७/८/१०/११/१२/१३/१५ तिथियों में, ५/८/११ लग्नों में चतुर्थाष्टम शुद्ध हों तो **वधू** प्रवेश शुभ है।

वधू-प्रवेश-समय

वधूप्रवेशो न दिवा–प्रशस्तः राजप्रवेशो न निशि–प्रशस्तः।
दिवा च रात्रौ च गृहप्रवेशः सत्कीर्तिदः स्यात्त्रिविधः प्रवेशः॥

विवाहतः प्रथम वर्षे वधू–निवासफलम्– विवाह के बाद आषाढ़ मास ें कन्या पति के घर रहे तो अपनी सास को, क्षय मास में अपने शरीर को, ज्येष्ठ में ज्येष्ठ को, पौष में श्वसुर को और अधिक मास में पति को नाश करती है। विवाह के बाद चैत्र मास में पिता के घर रहे तो पिता को अशुभ है, सास आदि के अभाव में उस मास का कोई दोष नहीं होता।

द्विरागमन का मुहूर्त्त

प्योके (पितृगृह) से दूसरी बार पति के घर जाने को द्विरागमन कहते हैं। विवाह से एक वर्ष के भीतर अथवा तीसरे या पांचवें वर्ष वृश्चिक कुम्भ, मेष के सूर्य में जब सूर्य और बृहस्पति शुद्ध हो तब सोम, बुध, गुरु, शुक्रवार को २, ३, ६, ७ या १२ वीं राशि के लग्न में हस्त, अश्वि., पुष्य, अभिजित्, तीनों उत्तरा, रोहि. स्वा., पुन., श्रवण, धनि., शत., मूल, मृग., रेव., चित्रा, अनुराधा नक्षत्रों में शुभ है। शुक्र सामने या दाहिने हो तो अशुभ है।

विशेषः– द्विरागमं षोडशवासरान्ते एकादशाहे समवासरेषु। न चात्र ऋक्षं न तिथिर्न योगो न वारशुद्ध्यादि विचारणीयम्।।

शुक्र सम्मुख व दक्षिण में निषेध– सम्मुख या दक्षिण शुक्र में यदि नूतन वधू जावे तो वन्ध्या हो, छोटे बालक को साथ लेकर जावे तो बालक की मृत्यु हो, गर्भिणी जावे तो गर्भ का सुख न पावे। यदि ऐसे समय राजविद्रोह–राजपीड़न आदि उपद्रव या दुर्भिक्ष के दुःख से यात्रा करनी पड़े एवम् विवाह. सम्बन्धी यात्रा में या देवतीर्थ यात्रा के सम्बन्ध में जाना पड़े तो सम्मुख या दक्षिण शुक्र का दोष नहीं होता। यदि रेवती से मृगशिर तक के चन्द्रमा में भी जावे तो दोष नहीं, क्योंकि तब तक शुक्र अन्धा होता है।

विशेषः– सिंहस्थे वा गुरौ शुक्रे सम्मुखेऽस्तंगतेऽपि वा। शुभो दीपोत्सवे वध्वाः प्रवेशः पतिमन्दिरे।।

अत्यावश्यकेऽभिमुखे शुक्रदोषनाशाय शान्तिः– राजते वाथ सौवर्णे कांस्यपात्रेऽथवा पुनः। शुक्लपुष्पांबरयुते श्वेततण्डुलपूरिते।। निधाय राजतं शुक्रं शुचिमुक्ता फलान्वितम्। महाश्वेत गवायुक्तं सामगाय निवेदयेत्।

प्रथम स्त्रीसंगम मुहूर्त्त

रजोदर्शनानन्तर १६ रात्रि पर्यन्त, ४ रात्रि के बाद समरात्रि में, (पञ्चदशवर्षोपरि रजोदर्शनाभावेऽपि) रो., मृ., पुष्य, ह., चि. अनु., ध., उत्तरा. ३, रिक्ता अमावस रहित तिथि में, शुभवार, रात्रि के प्रथम पहर को छोड़कर। शुभ समय में चित्त को प्रसन्न कर, प्रथम दिन स्त्री संगम करें।

मनुष्य का स्त्री के प्रति कर्त्तव्य–स्त्री का अपमान या तिरस्कार न करें, आदर सत्कार करें। विशेष गुप्त बात न कहें और विशेषाधिकार भी न दें, क्योंकि स्त्री जाति पुरुष की समान कोटि में नहीं आ सकती। अपवाद में एक–दो हो सकती है। प्रभुकृत शरीर रचना भी कोई वस्तु है, उसे समझना चाहिए। उसका दिल और दिमाग तथा ओज प्रकृति ने पुरुष से न्यून बनाया है। पशुओं में भी घोड़े, हाथी, सांड, भैंसा आदि अपनी स्त्री जाति पर पूर्ण प्रभुत्व रखते हैं।

नववधू द्वारा पाककर्म मुहूर्त्त

द्विरागमनोत्तरं मृग., उत्तरा. ३, पुष्य, कृ., ज्ये., श्रव., धनि., श., रो., वि., रे. एषु नक्षत्रेषु शुभवासरे (रविभौमवर्जिते), रिक्ताक्षयरहिततिथौ, २/५/८/११ लग्नेषु, चतुर्थाष्टमशुद्धे सप्तमभावे च बलान्विते सति पाककर्म शुभम्।

सधवा स्त्री का वस्त्र, सुवर्णरत्नभूषणादिधारण करने का मुहूर्त्त

हस्त., चित्रा., स्वा., अनु., धनि., रेवती., अश्वि. एषु भेषु, बु., गु., शु., वारेषु रिक्तामावस्यारहित तिथिषु, नूतन वस्त्रसौवर्णरत्नरजत–दन्तादि भूषणानां धारणं प्रशस्तम्।।

चूड़ीचक्र में विशेषः– सूर्य नक्षत्र से गणना करने पर ८ अशुभ। ३ शुभ। २ अशुभ। ७ शुभ। २ अशुभ। ४ शुभ। १ अशुभ। गुरुशुक्रोदय में शुभ।

वस्त्रधारणे विशेषः– विप्रादेशात्तथोद्वाहे क्षमापालने समर्पितम्। निन्द्येपि धिष्ण्ये वारादौ धारयेच्च नवाम्बरम्।।

आभूषण बनवाने का मुहूर्त्त

हस्त., अ., पुष्य, अभि., स्वा., पुन., श्रव., धनि., शत., उत्तरा.३, रोहि. एषु नक्षत्रेषु रिक्तामाक्षयरहित तिथौ, शुभवासरे द्विपुष्करत्रिपुष्करयोगे वा भूषणं कार्यम्।।

दुकान खेलने का मुहूर्त्त

हस्त, चित्रा, रोहि., रेव., उत्तरा. ३, पुष्य, अश्वि., अभि. इन नक्षत्रों में ४। ९। १४। ३० इन तिथियों को छोड़कर अन्य तिथियों में, मंगलवार को छोड़कर अन्यवारों में, कुम्भ लग्न को छोड़कर अन्य लग्नों में, २। १०। ११ स्थानों में शुभ ग्रह बैठे हों, ३। ६ में पापग्रह हों, ८। १२ वां स्थान पाप रहित हो, शुभ दशा भी हो तो दुकान करना शुभ है, चन्द्र लग्न में हो तो अत्यन्त शुभ है।

भर्तृगृह से पितृ गृहागमन मुहूर्त्त

पूर्वा.३, भ., मू., म. ज्ये., आर्द्रा, आश्ले. एतदभिन्नेषु, चं., बु., शु., वारेषु सत्तिथौ शुभलग्ने कुयोगादिराहित्ये प्रशस्तः।।

घोड़े पर चढ़ने का मुहूर्त्त

भ., आर्द्रा, आश्ले., म., पूर्वा. 3, ज्ये., मू. इन नक्षत्रों को छोडकर, शेष नक्षत्रों में रविवार को शुभ है।

हट्टचक्रः— सूर्य नक्षत्र से दुकान खेलने के दिन तक, नक्षत्र गिन कर चक्र से शुभाशुभ फल जानें।

हट्टचक्र

नक्षत्र	२	३	४	४	३	४	४	४
स्थान	आसन	मुख	अग्नि	नैर्ऋत	सम्मुख	वायव्य	ईशान	मध्य
फल	सौख्य	विक्रयनाश	अर्थनाश	सुख	महाश्रेष्ठ	चोरभय	सर्वहानि	शुभप्रद

सेवाकर्म (नौकरी) मुहूर्त्त

अ., मृ., चि., ह., पुष्य, अनु., रे. एषु भेषु रिक्तामारहिततिथौ, र., बु., बृ., शु. वारेषु शुभः। लग्नस्थे, १०, ११ सूर्ये–भौमे वा स्वामिसेवकयोः राशीश–योनि–मैत्र्यां सत्यां शुभः।

व्यवहार (बही) पत्रारम्भ मुहूर्त्त

अश्वि., रो., मू., पुन., पु., उत्तरा. ३, ह., चि., अनु., श्रव., रे. एषु भेषु रिक्तामारहिततिथौ, सू., चं., बु., बृ., श. वारेषु शुभे युते शुभे लग्ने चरे द्विस्वभावे च व्यायाप्टरहिते पापैः केन्द्रकोणगैः शुभैः स्यात्।।

द्रव्यप्रयोगमुहूर्त्त

पुन., स्वा., मृग., रे., चि., अनु., वि., पुष्य., श्रव., ध., श., अश्वि. एषु नक्षत्रेषु १। ४। ७। १०, लग्नेषु ९। ८। ५ शुद्धिरहिते द्रव्यप्रयोगः शुभः। अत्रावसरे ९। ५ शुभः, ग्रहाणां तु न कोऽपि दोषः।।

ऋण लेने के लिए वर्जितकाल

मंगलवार, संक्रान्ति दिन, वृद्धियोग, हस्तनक्षत्रयुक्त रविवार को ऋण ले तो कभी मुक्त न हो। मंगलवार को ऋण चुकाना अच्छा है। बुधवार को धन न देना चाहिए। कृ., रो., आर्द्रा, आश्ले., उत्तरा ३, वि., ज्ये., मू. नक्षत्रों में भद्रा, व्यतिपात और अमावस में गया धन फिर मिलता नहीं या झगडे आदि पर उतारू होना पड़ता है।

श्रीकाशीनाथ के मत से क्रयविक्रय मुहूर्त्त

पुष्य, पू.भा., अनु., श्रव., ह., म., स्वा., उत्तरा.३, आश्ले., रे., एषु भेषु सत्तिथौ, शुभदिने उत्तमशकुनं विचार्य क्रयविक्रयणं कार्यम्।

वस्तु खरीदने के नक्षत्रः— रे., शत., अश्वि., स्वा., श्रव., चि., वारों में, बुध, रवि श्रेष्ठ माने गए हैं।

वस्तु बेचने के नक्षत्रः— पू. फा., पू. षा., पू. भा., वि., कृ., आश्ले., भ. ये ७ नक्षत्र और गुरुवार, चन्द्रवार श्रेष्ठ माने गए हैं।

नोटः— बेचने के नक्षत्रों में खरीदना और खरीदने के नक्षत्रों में बेचने वालों को ९५ फीसदी नुकसान रहेगा, इसमें संशय नहीं। इसी कारण खरीदने–बेचने के नक्षत्र दिखाए गए हैं, परन्तु सम्प्रति प्रचलित सट्टे जैसे भयानक व्यापार में तो धैर्य का काम ही नहीं, सिवाय घबराहट के दिन भर में [illegible] खरीदना। ऐसे व्यापारी क्या करेंगे, इन नक्षत्रों को।

लेकिन हमारा कहना है कि विश्वास करके परीक्षा तो कीजिये, बात कहां तक सच है। सट्टे में भी प्रथम बार व्यापार करने वाले व्यापारी अवश्य ध्यान करें तभी मालूम होगा कि ऋषियों के वाक्य कहां तक सत्य हैं।

प्रार्थनापत्र (अर्जी) देने का मुहूर्त्त

४। ९। १४ तिथि हों, मं., श. वार हों, कृ., आर्द्रा, भ., अश्वि., आश्ले., म., ज्ये., मू. वि., पूर्वा. ३ नक्षत्र हों, भद्रा होवे तो अत्युत्तम है।

गृहादि निर्माण में आय विचार

गृहस्वामी् के हस्तादि लम्बाई–चौड़ाई को परस्परगुणाकर, आठ का भाग देवें, जो शेष रहे वह क्रम से ध्वजादि आय होते हैं। १ ध्वज, २ धुम्र, ३ सिंह, ४ श्वान, ५ वृषभ, ६ गर्दभ, ७ हस्ति, ८ (०)। इनमें एकादि विषम संख्या की आय शुभ और २ आदि सम संख्या को अशुभ जानना। गृह की भूमि को अन्दर से मापना चाहिए और देवस्थान की भूमि को बाहर से मापना चाहिए। ३२ हाथ चौड़े घर में आयादि विचार की आवश्यकता नहीं है और न चार द्वार वाले घर में ही। ब्राह्मण को ध्वजाय, क्षत्रिय को सिंहाय वैश्य को गजाय और शुद्र को वृषभाय विशेष शुभ होती है। अन्य आय नीच जाति के लिए शुभ है।

ग्रामभात् वासकर्तुः नक्षत्रं यावद् साभिजित् गणना कार्या

स्थान	नक्षत्र	फलम्
मस्तके	७	धनलाभः
पृष्ठे	७	हानिःनैस्वम्
हृदये	७	सुखलाभः
पादे	७	पर्यटनम्

घर का नक्षत्र और व्यय ज्ञान

घर केक्षेत्रफल (हस्तादि लम्बाई–चौड़ाई के गुणन) को आठ से गुणाकर २७ का भाग दें। जो अंक शेष रहे, तदनुसार अश्विन्यादि गृह का नक्षत्र जानें। इस नक्षत्र को ८ से भाग देवें। शेषांक तुल्य व्यय जानें। आय से व्यय कम हो तो शुभ, अन्यथा अशुभ।

वास्तुभूमि का शुभाशुभ जानना

नई बस्ती में गृहादि बनाना हो तो भुमिपूजन पूर्वक शाम को एक हाथ चौड़ा, एक हाथ लम्बा और एक हाथ गहरा गड्ढा बनाकर, उसको जल से भर देवें। प्रातःकाल उसको देखें यदि जलयुक्त हो तो शुभ, निर्जल मध्यम, निर्जल फटा हुआ हो तो अशुभ है।

मकान बनाने के लिए पृथ्वी की शुभाशुभ परीक्षा

मकान की नींव को इतना गहरा खोदें कि जल दीखने लगे अथवा दूसरी मिट्टी जब तक निकले अथवा साढे तीन हाथ गहरी खोदें अर्थात् मनुष्य के बराबर खोदें। खोदते समय यदि ज़मीन में पत्थर निकले तो धन–आयु की वृद्धि हो; अगर गुठली निकले तो धननाश हो और अगर अस्थि, राख, बाल निकले तो मकान बनाने वाले को व्याधि–पीड़ा हो।

गृहारम्भमुहूर्त्त

वैशा., श्रा., मार्ग., माघ, फाल्गुन सौर महीने गृहारम्भ में श्रेष्ठ कहे हैं; भाद्रपद और कार्त्तिक मास मध्यम हैं। २। ३। ५। ६। ७। १०। ११। १२। १३। १५ और कृष्णपक्ष की प्रतिपदा, इन तिथियों में चं., बु., गु., शु., श. वारों में; रो., मृ., चि., ह., स्वा., अनु., उत्तरा. ३, ध., श., रे. वेधरहित नक्षत्रों में; २। ३। ५। ६। ८। ११। १२ लग्नों में; पञ्चवाण और भूमिशयन से रहित दिनों में; लग्न से केन्द्र त्रिकोण स्थानों में शुभग्रह और ३। ६। ११ वें स्थान में पापग्रह तथा अष्टम स्थान शुद्ध होने पर गृहारम्भ मुहूर्त्त शुभ होता है। केवल तृणमय गृहारम्भ में वत्सचक्र व मासादि का विचार नहीं करना।

विशेषः– पुष्य, उत्तरा. ३, रो., म., आश्ले., पू.षा., इनमें से जिस पर बृहस्पति हो, उस नक्षत्र में बृहस्पतिवार को गृहारम्भ हो तो पुत्र और सम्पत्तिदायक होता है। रो., ह., अ., उ. फा., चि. इनमें से जिस पर बुध हो उस नक्षत्र में बुधवार को गृहारम्भ हो तो सुख और पुत्र होते हैं। वि., अ., चि., ध., श., आर्द्रा इनमें से जिस पर शुक्र हो उस नक्षत्र में और शुक्रवार को गृहारम्भ हो तो धनधान्यदायक होता है।

गृहारम्भे वत्सचक्रम्

सूर्यनक्षत्र से गृहारम्भ नक्षत्र तक अभिजित् सहित गणना करें।

स्थानानि	न.	फलानि
शीर्षे	३	अग्निदाहः
अ. पादे	४	शून्यमसत्
पृ. पादे	४	स्थिरता
पृष्ठे	३	लक्ष्मीप्राप्तिः
द. कुक्षौ	४	लाभःशुभम्
पुच्छे	३	स्वामिनाशः
वामकुक्षौ	४	निर्धनता
मुखे	३	पीड़ा असत्

भूमिप्रसुप्तज्ञानम्ः– "संक्रान्ति मिति दिन पांचवें सप्तम नवम जोय।

१०। २१। २४ में षंड्दिन पृथ्वी सोय।। तत्रात्यावश्यके क्रमात् ५। ११। ७। ६। २। १० एताः घटिका भूमिकर्मण्यवश्यं वर्जनीयाः।" **अन्यच्च–** सूर्य के नक्षत्र से ५। ७। ९। १२। १९। २६ इतनी संख्या के नक्षत्रों में पृथ्वी शयन के कारण मकान की नींव, तड़ाग, वापी, कूपादि का खोदना उत्तम नहीं होता।

गृहमध्य में कूपविचार								
मध्य	ई.	पू.	आ.	द.	नै.	प.	उ.	वा.
र्थहानि	सुपुष्टि	सुप्राप्ति	पुत्रनाश	स्त्रीनाश	गृहेशनाश	संपत्	सुख	शत्रुभय

अथ चुल्लिचक्र–विचार

सूर्य के नक्षत्र से ६ नक्षत्रपीठ के सुखप्रद। ४ मस्तक के मृत्युप्रद। ८ बाहु के सुन्दर–सुख–भोगदायक। ५ गर्भ के नाशक। २ भुज के भोगदायक। २ चरण के नाशक। यह चुल्लिचक्र गर्गाचार्य ने कहा है, पण्डित जन विचार करें। उपरोक्त शुभ नक्षत्रों में चुल्हा बनावें तथा इन्हीं शुभ नक्षत्रों में प्रथम अग्नि जलावें।

नूतनगृह प्रवेश मुहूर्त्त

माघ–फाल्गुन–वैशाख–ज्येष्ठ मासेषु शोभनाः। प्रवेशो मध्यमो ज्ञेयः सौम्य (मार्ग.)कार्त्तिक मासयोः।। (यहां चन्द्रमास लेना) उत्तरा. ३, अनु., रो., मृ., चि., रे. इन नक्षत्रों में रिक्तामारहित तिथियों में। चं., बृ., श. इन वारों में। २। ५। ८। ११ लग्नों में; **अत्यावश्यके** ३। ६। ९। १२ लग्नों में भी; लग्न से १। २। ३। ५। ७। ९। १० इन स्थानों में शुभ ग्रह हों, ३। ६। ११ में क्रूर हों १। ६। ८। १२वें चन्द्रमा न हो; चौथा, ८वां स्थान शुद्ध हो; जन्म लग्न या जन्म राशि से ८वीं राशि लग्न में न हो; चन्द्र–तारा शुभ हो और कुम्भ चक्र की भी शुद्धि हो, तो आगे गौ, कन्या, जलपूर्ण–पुष्पमाला युक्तकलश, शंखध्वनि व मंगलगान के साथ दम्पति का गृह प्रवेश शुभ है।

गृहप्रवेश का विशेष मुहूर्त्त

पुराने अर्थात् जीर्ण या तृणकुटीर अथवा अ[illegible] से बनवाये हुए नए घर में भी वैशाख., श्रावण, कार्त्तिक., मार्गशीर्ष और फाल्गुन मास में शत., पुष्य, स्वा. और धनि. नक्षत्रों तथा गुरु, शुक्र के अस्त में भी गृह प्रवेश हो सकता है।

सूर्यराशिवशात् खातज्ञानम्				
खाते राहोर्मुखात्पृष्ठदिग्भागःशुभदो भवेत्।				
राहुमुखम्	ऐशान्यां	वायव्यां	नैर्ऋत्यां	आग्नेय्यां
देवालया-रम्भे सूर्यः	मीन, मेष, वृष	मिथुन, कर्क,सिंह	कन्या,तुला, वृश्चिक	धनु,मकर, कुम्भ
गृहारम्भे सूर्यः	सिंह, कन्या, तुला	वृश्चि., धनु, मकर	कुम्भ, मीन, मेष,	वृष, मिथुन, कर्क
जलाशया-रम्भे सूर्यः	मकर,कुम्भ, मीन	मेष, वृष, मिथुन	कर्क, सिंह, कन्या	तुला,वृश्चि., धनु
खातदिशा-ज्ञानम्	आग्नेय्यां	ऐशान्यां	वायव्यां	नैर्ऋत्यां

द्वारशाखाचक्रम्		
सूर्यनक्षत्रात्		
स्थान.	न	फलानि
शिरसि	४	श्रीप्राप्तिः
कोणे	८	उद्धसनं
शाखा	८	सौख्यमं
देहल्यां	३	गृहेशनाशः
मध्ये	४	सौख्यम्

चक्रमिदं विलोक्य सुधिया द्वारं विधेयं शुभम्।

गृहप्रवेशे कुम्भचक्रम्			
सूर्यभात्			
५	८	८	६
अशुभ	शुभ	अशुभ	शुभ

कूप, तालाब और बावड़ी खुदवाने का मुहूर्त्त

अनु., हस्त., उत्तरा. ३, रोहि., धनि., शत., भरणी, पू.षा., रेवती, पुष्य, मृग. नक्षत्र हों व चन्द्रमा मकर के उत्तरार्ध, मीन या कर्क में हो, लग्न में बुध या गुरु हो, शुक्र १०वें स्थान में हो और पापग्रह निर्बल हों तो शुभ है। यदि २। १०। ४। ११। १२ लग्न हों तो अत्यउत्तम है।

सूर्यनक्षत्रात्कूप–नलचक्रम्			सूर्यभात्तड़ागचक्रम्		
ईशान ३ क्षार जल	पूर्व ३ खण्डितजल	आग्ने. ३ सुजल	ईशान २ जलनाश	पूर्व २ शोक	आग्ने. २ जलाधिक्य
उत्तर ३ उत्तम जल	मध्य ३ स्वादु तथा शीघ्रजल	दक्षिण ३ निर्जल	उत्तर २ अमृतजल	मध्य ५ बहुजल	दक्षिण २ जलनाश
वायव्य ३ मिश्रितजल	पश्चिम ३ [illegible]	नैर्ऋत्यां ३ अमृतजल	वायव्य ३ जलनाश	पश्चिम २ बहुजल	नैर्ऋत्य २ अमृतजल

गणनाक्रमः—मध्य–पूर्व–आग्नेय–दक्षिणादिक्रमेण बोध्यम्– अवशिष्टानि ६ नक्षत्राणि 'वारिवाह' संज्ञकानि सन्ति। तत्फलम्—वारिवाहे वारिहानिः। गणनाक्रमः– पूर्व, आग्नेय, दक्षिण, नैर्ऋत्य, पश्चिम, वायव्य, उत्तर, ईशान, मध्य में वारिवाह।

रोहिणीभात् वापीचक्रम्

ईशान अश्विनी, भरणी, कृत्तिका मध्यजलम्	पूर्व पुनर्वसु, पुष्य, आश्लेषा जलाभावः	आग्ने. मघा, पू.फा., उ.षा. मध्यजलम्
उत्तर पू.भा., उ.भा., रेवती मिष्ठजलम्	मध्य रोहिणी, मृगशिरा, आर्द्रा शीघ्रजलम्	दक्षिण हस्त, चित्रा., स्वाती जलाभाव
वायव्य श्रवण, धनिष्ठा, शतभिषा. क्षारजलम्	पश्चिम मूल, .पू.,षा., उ.षा. अमृतजलम्	नैर्ऋत्यां विशाखा, अनुराधा, ज्येष्ठा बहुजलम्

जलाशयारामदेवप्रतिष्ठामुहूर्त्त

"देवतारामवाप्यादिप्रतिष्ठामुत्तरायणे। माघादिपञ्चमासेषु कृष्णेऽप्यापञ्चमीदिने।।
मातृ–भैरववाराहनारसिंहत्रिविक्रमाः। महिषासुरहंत्री च स्थाप्या वै दक्षिणायने।।"

अश्वि., रोहिणी, मृग., पुष्य, हस्त, चित्रा, स्वाती, अनु., श्रवण, धनि., शत., उत्तरा. 3, रेवती एषु भेषु कुजशनिवर्जितवारेषु २। ३। ५। ७। ८। १०। ११। १२। १३ तिथिषु शुक्ले १। २। ३। ५ तिथिषु कृष्णे, गुरुशुक्रयोः नीचनिर्ब–लास्तादिरहितकाले, कर्तुः सूर्यचन्द्रतारानुकूल्ये सति जन्मलग्नयोरष्टमराशिलग्नरहिते स्थिर (२। ५। ८। ११) लग्नेषु लग्नात् १। ४। ७। १०। ९। ५। २। ११ स्थानेषु शुभैः, ६। ११ सेन्दुभिः पापैः पूर्वाह्णे देवप्रतिष्ठा कार्या।

देवता–विशेषेण लग्नम्:– सिंहे सूर्यः शिवो द्वन्द्वे लग्ने स्थाप्यः स्त्रियां हरिः। कुम्भे वेधाश्चरे क्षुद्राद्यंगदेव्यः स्थिरेऽखिलाः।। यस्य देवस्य यत्तिथिवारनक्षत्रादिकं तद्दिनेयदि तस्य प्रतिष्ठा मुहूर्त्तो भवेत्तदा अत्युत्तमः।।

वास्तुशान्ति मुहूर्त्त

श्रव., धनि., मृग., मूल, अनु., रेवती, हस्त, चित्रा, स्वा., उत्तरा. 3, पुन., पुष्य, रोहि., अश्वि. एषु भेषु शुभेऽह्नि सत्तिथौ बलिदानपुरस्सरं वास्त्वर्चनं कार्यम्।

अग्नि का वास किस लोक में है

जिस दिन हवन करना हो, उस दिन तिथि और वार क संख्या जोड़कर एक ओर जोड़ना, पुनः ४ का भाग देना। यदि पूरा भाग लग जाए, (०–शेष रहे) अथवा तीन शेष रहे, तब अग्नि का वास पृथ्वी पर सुखकारक होता है, शेष १ बचने पर आकाश में प्राणहानिकारक, शेष २ बचने पर पाताल में धनहानि करता है। तिथि की गणना शुक्ल प्रतिपदा से तथा वार की गणना रविवार से करनी। इसके बाद आहुतिचक्र जरूर देखिए।

विशेष:– यात्राविवाहव्रतगोचरेषु चौलोपनीताद्याखिलव्रतेषु। दुर्गाविधानेषु सुतप्रसूतौ नैवाग्निचक्रं परिचिन्तनीयम्।। महारुद्रे व्रतेऽमायां ग्रस्तेन्द्वर्कास्तराहुणा। नित्यनैमित्तिके कार्ये अग्निचक्रं न दर्शयेत्।। दिग्दाहेप्यथवा घोरे ग्रहास्ते भूमिकम्पने। केतूनामुदये शान्तौ चक्रं यत्नेन चिन्तयेत्।। लक्षकोटिहवने मखेऽखिले चातिरुद्रकरणेमहाविधौ। देवखातभवने सुरालयादग्निचक्रमवलोकयेत्सुधीः।। दुर्गभंगे गृहे वापि विवादे शत्रुविग्रहे। शान्तिकार्ये नृपक्रोधे चक्रं तत्र निरीक्षयेत्।।

ग्रहमुखे होमाहुतिज्ञानाय चक्रम्

(सूर्य नक्षत्र से दिन नक्षत्र तक गिनना)

ग्रहाः	सू.	बु.	शु.	श.	चं.	मं.	गु.	रा.	के.
नक्षत्र	३	३	३	३	३	३	३	३	३
फलम्	नेष्ट	श्रेष्ठ	श्रेष्ठ	नेष्ट	श्रेष्ठ	नेष्ट	श्रेष्ठ	नेष्ट	नेष्ट

पापग्रहमुखे–हवने कृते शान्तिः—क्रूरग्रहमुखे चैव सञ्जाते हवने शुभे। शान्तिं विधाय गां दद्याद् ब्राह्मणाय कुटुम्बिने। आयसीं प्रतिमां कृत्वा निक्षिपेतामधोमुखीम्। गोमूत्र–मधुगन्धाद्यैरर्चितां प्रतिमां ततः। कुण्डे निधाय सम्पूज्य तत्र होमो विधीयते।।

अथ ऋणी–धनी विचार– स्ववर्ग द्विगुणं कृत्वा परवर्गेण योजयेत्। अष्टभिश्च हरेद् भागं योऽधिकः स ऋणी भवेत्।।(अर्थात् अपने वर्ग को दूना कर, दूसरे के वर्ग में जोड़ना, फिर ८ का भाग देना। फिर दूसरे का वर्ग दूना करके, अपना वर्ग जोड़ना, फिर ८ का भाग देना। जिसका शेषांक अधिक बचे, वह दूसरे का ऋणी होगा।), लेकिन वशिष्ठ आदि का मत है कि जिसका शेषांक कम बचे, वह दूसरे का ऋणी होता है– यही प्रामाणिक है।

हलप्रवहण मुहूर्त्त

मृग., रेव., चित्रा, अनु., रोहि., उत्तरा.३, हस्त, अश्वि., पुष्य, अभि., स्वा., पुन., श्रवण, धनि., श., मूल, मघा, विशा. एषु भेषु रिक्तामाषष्ट्यष्ठमीरहित सत्तिथौ शुभ–ग्रंहस्य वासरे, १। ५। ७। १०। ११ लग्नेषु भूमिशयन–भद्रादीन् वर्जयित्वा हलचक्रशुद्धौ सत्यां हलप्रवहणं शुभम्।

हलचक्रम्					बीजवपने राहुचक्रम्								
सूर्यभुक्तनक्षत्र से दिन नक्षत्र तक गिनें					राहुनक्षत्रात् दिनभं यावत् गणना कार्या								
नक्षत्र	३	७	९	८	८	३	१	३	१	३	१	३	४
फल	अशुभ	शुभ	अशुभ	शुभ	अशुभ	शुभ	अशुभ	शुभ	अशुभ	शुभ	अशुभ	शुभ	अशुभ

बीजवपने मुहूर्त्त

हस्त, अश्वि., पुष्य, उत्तरा. 3, चित्रा, अनु., मृग., रेवती, स्वा., धनि., मघा, मूल एषु भेषु सत्तिथौ भौमातिरिक्तिवारेषु सुशकुने राहुचक्रशुद्धौ सत्यां शुभः।

विशेषः– रवौ रौद्रा(आर्द्रा) द्यपादस्थे भूमेः संजायते रजः।
तस्मादिनत्रयं तत्तु बीजवापे परित्यजेत्।।

नवान्न–भक्षण–मुहूर्त्त

मृग., रेवती, चित्रा, अनु., हस्त, अश्वि., पुष्य, अभि., स्वा., पुन., श्रवण, धनि., शत. एवम् विषघटी रहित नक्षत्रों में शुभ है, नन्दा–रिक्ता तिथियों और पौष–चैत्र को छोड़कर अन्य मासों में सू., बु., गु., शुक्रवार शुभ है।

गौ, बैल आदि पशु लेने का मुहूर्त्त

अश्वि., पुन., पुष्य, हस्त, विशा., ज्ये., धनि., शत., रेव. नक्षत्र में गौ लेना–बेचना। अन्य पशु पुन., पूर्वा. 3, हस्त, अनु., ज्ये., मूल, धनि., रेवती में लेना–बेचना शुभ है। गाय लेनी हो तो उ.फा. से दिन नक्षत्र तक गिने। ३ तक लाभदायक, ५ तक हानि, ११ तक अर्थलाभ, १६ तक सुख, २२ तक महालाभ, २३ तक वृद्धि, २७ तक भय होता है। वृषभ (बैल) लेना हो तो ६ नक्षत्र लाभदायक; फिर दो–दो के क्रम से गाय के समानफल जानें। महिषी (भैंस) लेनी हो तो भी गौ नक्षत्रगणना क्रम से शुभाशुभफल हेतु सूर्य नक्षत्र तक गिनें– नौमी चौदस चौथ चौपाया। मंगल हान करे घर आया।।

सूर्यनक्षत्रात्काष्ठादि (गुहारा आदि) संस्थापनचक्रम्							
नक्षत्र संख्या फल	६ उत्तमपाक शुभ	२ शवदहन नेष्ट	४ सर्पभय नेष्ट	४ मित्रलाभ शुभ	४ रोगभय नेष्ट	४ क्वाथकर्म नेष्ट	४ सुख शुभ

लतावृक्षाद्यारोपण मुहूर्त्त

मृग., रेवती, चित्रा, अनु., उत्तरा. 3, रोहि., हस्त., पुष्य, अश्वि., शत., मूल, विशा. नक्षत्रों में रिक्तारहित शुभ तिथियों में और चं., बु., बृ., शुक्रवार हों, शुक्लपक्ष में ४। १०। ११। १२ लग्न में शुभ हैं।

तृणकाष्ठादिसंग्रहे निषेधः – तृण–काष्ठ का सञ्चय और पलंग बनवाना आदि कर्म कुम्भ–मीन के चन्द्रमा (पञ्चककाल) में नहीं करना चाहिए।

औषधसेवन का मुहूर्त्त

हस्त, अ., पुष्य, अभि., मृग., रेवती, चित्रा, अनु., स्वा., पुन., श्रव., धनि., शत. व मूल में जन्मनक्षत्र को छोड़कर, इन नक्षत्रों में ४। ९। १४ को छोड़कर, शुभ तिथियों में, भौम–शनि को छोड़कर, अन्यवारों में शुभ है।

अथ यात्रा—मुहूर्त—विचारः

हस्त, मृग., श्रव., अश्वि., पुष्य, पुन., धनि., अनु., रेवती, एषु भेषु यात्रा अत्युत्तमा; रोहि., उत्तरा. ३, पूर्वा. ३, एषु भेषु मध्या; भरणी, कृत्ति., आर्द्रा, आश्ले., मघा, चित्रा, स्वा., विशा., ज्ये., एतद्भेषु निन्द्याः। तत्रात्यावश्यकेऽपि यात्रायां भरण्यादि भानां क्रमात् ७। २१। १४। १४। ११। ४०। १४। १४। १४ एता घटिकाः गमन कर्मण्यवश्यं वर्जनीयाः। २। ३। ५। ७। १०। ११। १२ कृष्णपक्षस्य प्रतिपत्सु द्विग्द्वारलग्नेषु वा यात्रा शुभा।

द्विग्द्वारलग्नानि				
दिशा→	पूर्व	दक्षिण	पश्चिम	उत्तर
शुभम्→	१। ५। ९	२। ६। १०	३। ७। ११	४। ८। १२
मध्यमम्→	२। ६ १०	३। ७। ११	४। ८। १२	१। ५। ९
भयम्→	४। ८ १२	१। ५। ९	२। ६। १०	३। ७। ११
महद्भयम्→	३। ७। ११	४। ८। १२	१। ५। ९	२। ६। १०

यात्रा में शुभाशुभ लग्नः— जन्मलग्न और जन्मराशि से अष्टमलग्न तथा कुम्भ या कुम्भ के नवांश में यात्रा कदापि न करें। शुभलग्न वह है, जब १। ४। ५। ७। ९। १० स्थानों में शुभ ग्रह और ३। ६। १०। ११ वें पापग्रह हों। अशुभ लग्न वह है— जब १। ६। ८। १२वें चन्द्रमा, १०वें शनि, ६वें शुक्र, १२। ६। ८वें लग्नेश हो। **अन्यच्च**— यात्रायामष्टमं शुद्धं विवाहे सप्तमं तथा। दशमं तु गृहारम्भे चतुर्थं तु प्रवेशने।।

जन्मलग्नेश, दशेश अस्त हों व मारकदशा हो तो सुमुहूर्त में भी दूर की यात्रा न करें, प्रथम तीर्थयात्रा व देवदर्शन गुरु—शुक्रास्त में वर्जित है।

दिक्शूलज्ञानाय चक्रम्									नक्षत्रशूलचक्रम्			
दिशा	पूर्व	आ.	दक्षि.	नैर्ऋ.	पश्चि.	वाय.	उत्तर	ईशा.	पू.	द.	प.	उ.
वार	चं.,श.	चं.,बृ.	गुरु	सू.,शु.	सू.,शु.	भौम	मं.	बु.,श.	ज्ये.	पू.भा.	रोहि.	उ.फा.

दिक्शूलपरिहारः— न वारदोषाः प्रभवन्ति रात्रौ देवेज्यदैत्येज्यदिवाकराणाम्। दिवा शशांकार्कजभूसुतानां सर्वत्र निन्द्यो बुधवारदोषः॥१॥ सूर्यवारे घृतं प्राश्य चन्द्रवारे पयस्तथा। गुड़मंगारके वारे बुधवारे तिलानपि। गुरुवारे दधि प्राश्यं शुक्रवारे यवानपि। माषान्भुक्त्वा शनेर्वारे शूले गच्छञ्छूले न दोषभाक् ॥२॥

यात्रायां कालज्ञान चक्रम्							
सम्मुखे	शनौ	शुक्रे	गुरौ	बुधे	भौमे	चन्द्रे	रवौ
नेष्टः	पूर्वे	आग्नेय्यां	दक्षिणे	नैर्ऋत्यां	पश्चिमे	वायव्ये	उत्तरे

योगिनीवास—चक्रम्								
दिशा	पूर्व	आग्ने.	दक्षि.	नैर्ऋ.	पश्चि.	वाय.	उत्तर	ईशा.
तिथि	१। ६	३। ११	५। १३	४। १२	६। १४	७। १५	२। १०	८। ३०

योगिनी साधारण यात्रा में सामने और दाहिने अशुभ होती है, पीछे और बाएं की शुभ किंवा युद्ध यात्रा में बाएं ओर की और सम्मुख की विशेष त्याज्य है।

समयशूलः— उषाकाल में पूर्व को, गोधूलि में पश्चिम को, अर्द्धरात्रि में उत्तर को और मध्याह्नकाल में दक्षिण को नहीं जाना चाहिए।

गर्ग—गुरु—अङ्गिरामत— गर्ग जी के मत से ५ या ४ घड़ी रात रहे तो गमन करें। बृहस्पति के मत से अच्छा शकुन मिलने पर यात्रा करें। अङ्गिरा के मत से जब मन प्रफुल्लित हो तब ही चला जाए। भगवान् के मत से ब्राह्मण की आज्ञा लेकर यात्रा करने से शुभ होता है। पंच—पंच (५५) उषाकालः सप्तपञ्चाशद (५७) रुणोदयः। अष्ट पंच (५८) भवेत्प्रातः शेषः सूर्योदयो भवेत्।।

<table>
<tr><td colspan="4">चन्द्रवासचक्रम्</td><td colspan="9" rowspan="3">एकस्मिन् राशौ आवश्यके तात्कालिक—यात्रायां घट्यात्मकं चन्द्रवासचक्रम्</td><td>घट्यात्मक चन्द्रवास</td></tr>
<tr><td>पूर्वे</td><td>दक्षि.</td><td>पश्चि.</td><td>उत्तरे</td><td rowspan="4">जिस दिशा का चन्द्र होवे उस दिशा से गिनना चाहिए। कुम्भ और मीन के चन्द्रमा में दक्षिण को कदापि न जाएं।</td></tr>
<tr><td>मेष</td><td>वृष</td><td>मिथुन</td><td>कर्क</td></tr>
<tr><td>सिंह</td><td>कन्या</td><td>तुला</td><td>वृश्चि.</td><td>दिशा</td><td>पू.</td><td>द.</td><td>प.</td><td>उ.</td><td>पू.</td><td>द.</td><td>प.</td><td>उ.</td></tr>
<tr><td>धनु</td><td>मकर</td><td>कुम्भ</td><td>मीन</td><td>घटी</td><td>१७</td><td>१५</td><td>२१</td><td>१६</td><td>१७</td><td>१५</td><td>२०</td><td>१४</td></tr>
</table>

चन्द्रफलम्:— सम्मुखे अर्थलाभाय दक्षिणे सुख—सम्पदः। पृष्ठतो मरणं चैव वामे चन्द्रे धनक्षयः ॥१॥ सर्वे दोषाःलयं यान्ति पूर्णचन्द्रे हि सम्मुखे॥

सम्मुखे चन्द्रप्रशंसा—भगणदोषं वार—संक्रान्ति—दोषं कुतिथिकुलिकदोषं यामयामार्धदोषम्। कुजशनिरविदोषं राहुकेत्वादि दोषं हरति सकलदोषं चन्द्रमाः सम्मुखस्थः॥

सर्वाङ्कसिद्धियोग—यात्राकालिक शुक्लादि तिथि तथा वार की संख्या को जोड़कर तीन जगह रखें। क्रमशः ७। ८। ३ का भाग दें। शेष प्रथम स्थान में शून्य हो तो क्लेश, मध्य में हो तो धनक्षति और अन्त में हो तो मृत्यु होती है। सर्वत्र अङ्क आने से सौख्य, जयलाभ हो। विजयादशमी को बिना सर्वांकादि मुहूर्त्त के भी यात्रा सफल होती है। बायां स्वर चलते समय पूर्व व ईशान को, दायां चलते समय दक्षिण व नैर्ऋत्य को मत जाएं, हानि होती है। जाने वाले का अच्छे मुहूर्त्त और अच्छे शकुन में भी जाने को मन न चाहे तो भी कदापि न जाएं, क्योंकि मुहूर्त्त एवम् शकुन से मन की इच्छा प्रबल है।

वर्ण के क्रम से प्रस्थान का विधान— यदि यात्रा मुहूर्त्त में किसी अत्यावश्यक कार्यवश विलम्ब हो जाय, तो उसी मुहूर्त्त में ब्राह्मण जनेऊ, माला, क्षत्रिय शस्त्र, वैश्य मधु—घृत व रुपया और शूद्र फल को अपने वस्त्र में बांध, किसी घर के या नगर के बाहर जाने की दिशा में प्रस्थान के समय रखे। अथवा मन की सबसे प्यारी वस्तु को रख देना चाहिए।

यात्रा से पहले त्याज्य वस्तुः— यात्रा के तीन दिन पहले दूध त्याग दें, पांच दिन पूर्व हजामत, तीन दिन पूर्व तैल, सात दिन पूर्व मैथुन और समर्थ न हो तो एक दिन पहले तो सब त्याज्य वस्तुओं का त्याग अवश्य ही करें।

दिने चतुर्घटिका मुर्हूत्तम्		रात्रौ चतुर्घटिका मुर्हूत्तम्
सूर्य, चन्द्र, मंगल, बुध, गुरु, शुक्र, शनि	घटि.	सूर्य, चन्द्र, मंगल, बुध, गुरु, शुक्र, शनि
उद्वेग, अमृत, रोग, लाभ, शुभ, चर, काल	३॥।	शुभ, चर, काल, उद्वेग, अमृत, रोग, लाभ
चर, काल, उद्वेग, अमृत, रोग, लाभ, शुभ	७॥	अमृत, रोग, लाभ, शुभ, चर, काल, उद्वेग
लाभ, शुभ, चर, काल, उद्वेग, अमृत, रोग	११।	चर, काल, उद्वेग, अमृत, रोग, लाभ, शुभ
अमृत, रोग, लाभ, शुभ, चर, काल, उद्वेग	१५	रोग, लाभ, शुभ, चर, काल, उद्वेग, अमृत
काल, उद्वेग, अमृत, रोग, लाभ, शुभ, चर	१८॥।	काल, उद्वेग, अमृत, रोग, लाभ, शुभ, चर,
शुभ, चर, काल, उद्वेग, अमृत, रोग, लाभ	२२॥	लाभ, शुभ, चर, काल, उद्वेग, अमृत, रोग
रोग, लाभ, शुभ, चर, काल, उद्वेग, अमृत	२६।	उद्वेग, अमृत, रोग, लाभ, शुभ, चर, काल
उद्वेग, अमृत, रोग, लाभ, शुभ, चर, काल	३०	शुभ, चर, काल, उद्वेग, अमृत, रोग, लाभ

सूचनाः— यदि ३० घटी से न्यूनाधिक दिन या रात्रि का मान हो तो उसमें ८ का भाग देने से एक भाग के घटी—पल ज्ञात होंगे।

यात्रा में शुभ शकुन— मृग बाएं ते दाहिने जो आवे तत्काल। अन्न धन लक्ष्मी बहू मिले चलते प्रातःकाल॥ विप्र, दो अश्व, गजमद, फल, अन्न, दुग्ध, गोदधि, सर्षप, कमल, निर्मलवस्त्र, वाद्य, वेश्या, मयूर, नकुल, सिंहासन, शस्त्र, मांस, दीप्ताग्नि, मत्स्य, ससुत—स्त्री, गोरी कन्या, धोबी, कार्यसिद्धि वाक्य, जलपूर्णघट। यात्रा पश्चात् रिक्तघट यात्रा के समय देखने में शुभ है।

यात्रा में अशुभ शकुन :— बन्ध्या स्त्री, चर्म, अस्थि, इन्धन, संन्यासी, भैंसों का युद्ध, सर्प, शत्रु, मार्जारयुद्ध, कुटुम्बकलह, विधवास्त्री, जातिभ्रष्ट, अङ्गहीन, छिक्का, दुष्टवाणी यात्रा के समय देखना अशुभ तथा कष्टप्रद है।

आवश्यके रामदैवज्ञोक्त यात्रामुहूर्त्तचक्रम्

पौ.	मा.	फा.	चै.	वै.	ज्ये.	आ.	श्रा.	भा.	आ.	का.	मा.	पूर्व	दक्षिण	पश्चि.	उत्तर
१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	सौख्य	क्लेश	भीति	लाभ
२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१	शून्य	दारिद्रय	दारिद्रय	मिश्र
३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१	२	हानि	दुःख	लाभ	लाभ
४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१	२	३	लाभ	सौख्य	शुभ	लाभ
५	६	७	८	९	१०	११	१२	१	२	३	४	लाभ	लाभ	लाभ	सुख
६	७	८	९	१०	११	१२	१	२	३	४	५	भय	लाभ	मृत्यु	लाभ
७	८	९	१०	११	१२	१	२	३	४	५	६	लाभ	कष्ट	लाभ	सुख
८	९	१०	११	१२	१	२	३	४	५	६	७	कष्ट	सौख्य	क्लेश	सुख
९	१०	११	१२	१	२	३	४	५	६	७	८	सौख्य	लाभ	सिद्धि	कष्ट
१०	११	१२	१	२	३	४	५	६	७	८	९	क्लेश	सिद्धि	लाभ	धन
११	१२	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	मृत्यु	लाभ	लाभ	शुभ
१२	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	शुभ	सौख्य	मृत्यु	कष्ट

तृतीया—त्रयोदशी, चतुर्थी—चतुर्दशी, पञ्चमी—पूर्णमासी का फल समान जानना। अमावस्या में यात्रा वर्जित है, पक्ष का विचार नहीं है।

यात्रा में सदैव चल रही नासिका के श्वास की ओर का पांव आगे उठाकर चले, इसी तरह सवारी पर चढ़े। कार्य सिद्ध हो, यात्रा सफल होगी।

नौकायात्रा—मुहूर्त्तः

चित्रा, हस्त, पु., मृग., पूर्वा. 3, अनु., श्रव., धनि.—एषु भेषु सत्तिथौ शुभेऽह्नि चन्द्र—तारानुकूल्ये सति शुभः।

यात्रानिवृत्तौ प्रवेशमुहूर्त्तः

मृग., रेवती, अनु., रोहि., उत्तरा. 3, हस्त, अश्वि., पुष्य, स्वा., श्रवण, धनि. —एषु भेषु; चं., बु., बृ., शु., श. वारेषु; १। २। ३। ५। ७। १०। ११। १३ तिथिषु; ३। ५। ८। ९। ११। १२ एषु लग्नेषु; १। ४। ७। १०। ५। ९ स्थानेषु शुभैः; ३। ६। ११ स्थानेषु पापैः; ४। ८ शुद्धौ शुभः। विशा., कृत्ति., पूर्वा. ३, भरणी, मघा, मूल, ज्ये., आर्द्रा, आश्ले., नक्षत्राणि; ४। ९। १४। ६। १२। ८। ३० तिथयः; सू., मं. वारौ; १। ४। ७। १० लंग्नानि सर्वदा वर्जनीयानि।

मंगलवार को मिलाप कष्टप्रद सिद्ध होता है।

विशेषः— **प्रवेशान्निर्गमश्चैव निर्गमाच्च प्रवेशनम्। नवमे जातु नो कुर्याद्दिने वारे तिथाविति।।**

अथ घातचन्द्रवारादीनां चक्रम्

राशि→	मे.	वृ.	मि.	क.	सिं.	क.	तु.	वृ.	ध.	म.	कुं.	मी.
घात चन्द्र	मे.	क.	कुं.	सिं.	म.	मि.	ध.	वृष	मी.	सिंह	ध.	कुम्भ
घात वार	र.	श.	चं.	बु.	श.	श.	बृ.	शु.	शु.	मं.	बृ.	शु.
घात नक्षत्र	म.	ह.	स्वा.	अनु.	मू.	श्र.	श.	रे.	भ.	रो.	आ.	आश्ले.
स्त्री चन्द्रघात	मे.	ध.	ध.	मि.	वृश्चि.	वृश्चि.	मी.	ध.	कन्या	वृश्चि.	मि.	मेष
घात मास	का.	मार्ग.	पौ.	मा.	फा.	चैत्र	वैशा.	ज्ये.	आषा.	श्रावण	भाद्र.	आ.
घातयोग	वि.	सु.	प.	धृ.	प्री.	सु.	अ.गं.	वृ.	वै.	गं.	व्या.	वै.
घातलग्न	१	२	४	७	१०	१२	६	८	९	११	३	५
घाततिथि	१	५	२	२	३	५	४	१	३	४	३	५
घाततिथि	६	१०	७	७	८	१०	९	६	८	९	८	१०
घाततिथि	११	१५	१२	१२	१३	१५	१४	११	१३	४	१३	१५

युद्ध, विवाद, राजसेवा,वाहन, रोगादि कार्यों में घातचक्र देखना और तीर्थयात्रा तथा विवाहादि शुभ कार्यों में घाततिथि आदि देखने की आवश्यकता नहीं होती। **"घाततिथिर्घातवारः घातनक्षत्रमेव च। यात्रायां वर्जयेत्प्राज्ञैरन्यकर्मसु शोभनम्।।"**

वाम—दक्षिणनिर्देश

अग्रे चक्रोक्त सर्व फल पुरुषों के दक्षिण अंग में और स्त्रियों के वामांग में विचार करना, पुरुषों के वाम भाग में और स्त्रियों के दक्षिण भाग में विपरीत अशुभ, भयकारी फल होता है। जो फल पल्लीपात का है, वही सरट (गिरगिट) के चढ़ने का समझें। सरट के गिरने का तथा पल्ली के चढ़ने का फल वृथा होता है।

अथाङ्ग विभाग में पल्ली—(छिपकली, कोढ़किरली) पतन का फल

स्थानम्	फलम्	स्थानम्	फलम्	स्थानम्	फलम्
शिरसि	राज्यलाभः	भ्रूमध्ये	राज्यसंबंधः	वामपादे	नाशः
नासाग्रे	व्याधिः	वामकर्णे	बहुलाभः	अधरोष्ठे	ऐश्वर्यलाभः
वामभुजे	राज्यभयम्	स्तनयोः	दौर्भाग्यम्	दक्षिणभुजे	नृपतुल्यता
जानुद्वये	शुभागमः	हस्तयोः	वस्त्रलाभः	पृष्ठदेशे	बुद्धिनाशः
कटिभागे	अश्वलाभः	वा. मणिबंधे	कीर्तिनाशः	नाभौ	बहुधनम्
गुल्फद्वये	बन्धनम्	दक्षिणपादे	गमनम्	मुखे	मिष्ठान्नभोजनम्
ललाटे	बन्धुदर्शनम्	उत्तरोष्ठे	धननाशः	पादमध्ये	स्त्रीनाशः
दक्षिणकर्णे	आयुवृद्धिः	नेत्रयोः	धनप्राप्तिः	पादान्ते	मृत्युः
कण्ठे	शत्रुनाशः	उदरे	भूषणलाभः	केशान्ते	रणम्
जंघयोः	शुभम्	स्कन्धयोः	विजयः	नखेषु	धान्यलाभः
द.मणिबंधे	मनस्तापः	हृदये	धनलाभः	दक्षिणांगुष्ठे	धनलाभः

पल्लीपतने प्रशस्तवारतिथ्यर्क्षाणि

यदि छिपकली १। २। ३। ५। ६। १०। ११। १२। १३— इन तिथियों में गिरे तो श्रेष्ठ फलदायक है तथा चं., बु., गु., शु.— इन वारों में भी शुभ फल देती है। पुष्य, अश्वि., रोहि., मूल, पुन., उ.फा., हस्त, चित्रा, स्वा., धनि., रेवती, अनु., शत.— ये नक्षत्र शुभफलदायक हैं। इसके अलावा अन्य नक्षत्रों में गिरे तो शुभ नहीं— **अतोऽन्यद्भेषु निन्द्याः।**

पल्ली (किरली) पतनोपरान्त कर्तव्य—पल्ली (किरली) तथा सरट (गिरगिट) स्पर्श होने पर वस्त्रसहित स्नान करें। जन्मनक्षत्र, मृत्युयोग, दग्धा–तिथि, भद्रा आदि से दूषित दिन को पापग्रहयुक्त लग्न में तथा अष्टम चन्द्रमा से पल्ली आदि के स्पर्श होने से अरिष्ट होता है। उसकी शान्ति के लिए जप, होम, मृत्युञ्जय जाप एवम् तिल, स्वर्ण, दान और पञ्चगव्य से स्नान तथा घृत का छायापात्र दान भी करना उत्तम है।

छिक्का फलम्

छिक्का प्रायः सब दिशाओं की नेष्ट होती है। गौ की छिक्का मरण करती है– 'मदिरा के योग अथवा छींक सूंघनी छल कर लीन्हीं, पीन सरदी घास फल हीनी। छींक पीठी की कुशवाल उचारे; बाईं कारज सवै सवारे॥१॥ सम्मुख छींक लड़ाई भापै; छींक दाहिनी द्रव्य विनाशै ॥२॥ ऊंची छींक कहे जयकारी; नीची छींक होय भयकारी। अपनी छींक महा दुखदाई; ऐसे छींक विचारो भाई ॥३॥

कन्या, विधवा, मालिन, धोबिन, रजस्वला, वैश्या, चमारी की छींक विशेष अशुभप्रद होती है। भोजनान्त में छींक होय तो दूसरे दिन प्रिय भोजन मिले।

अथ शुभ छिक्काः— आसने शयने शौचे दाने चैव तु भोजने। वामांगे पृष्ठतश्चैव षट् छिक्कास्तु शुभावहाः। एक नाक से दो छींक भी शुभ मानी जाती है– एक नाक दो छींक; काम बने सब ठींक॥

तीर्थ में मुण्डनविचार

मुण्डनं चोपवासञ्च सर्वतीर्थेष्वयं विधिः। वर्जयित्वा कुरुक्षेत्रं विशालां (उज्जयिनीं) गिरिजां गयाम्।।

<table>
<tr><th colspan="8">अथ वारपरत्वेन तैलाभ्यंगे फलं–विधिश्च</th><th rowspan="2">तैलाभ्यंगे वर्ज्यानि</th></tr>
<tr><th>सू.</th><th>चं.</th><th>मं.</th><th>बु.</th><th>गु.</th><th>शु.</th><th>श.</th><th>वाराः</th></tr>
<tr><td>तापम्</td><td>सुकीर्ति</td><td>मृतिः</td><td>श्री.</td><td>वित्त हानि</td><td>विपत्ति</td><td>सुख सुयोग</td><td>फलम्</td><td rowspan="2">तदत्राह–
रवौ भौमे व्यतिपाते संक्रांतौ वैधृतावपि । षष्ट्यष्टम्योश्च विष्ट्यां च तैलाभ्यंगो न पर्वसु।।</td></tr>
<tr><td>पुष्पं</td><td>०</td><td>मृत्तिका</td><td>०</td><td>दूर्वा</td><td>गोमय</td><td>०</td><td>पातनम्</td></tr>
</table>

विशेष— यदि प्रतिदिन तेल लगाने का स्वभाव हो तब अथवा उत्सव के दिन व वातरोग में तेल लगाने में दोष नहीं है। अभिमन्त्रित औषधि में पकाया हुआ सरसों का तेल व सुगंधित तेल लगाने से किसी दिन दोष नहीं है।

अंग–स्फुरण का फल

पुरुषों का दायां और स्त्रियों का बायां अंग फरकना शुभ है।
मस्तक का स्फुरण (फरकना) स्त्री–पुरुष दोनों के लिए शुभ है।

स्थान	फल	स्थान	फल	स्थान	फल
मस्तक	पृथ्वीलाभ	वक्षस्थल	विजय	ओष्ठ	प्रियवस्तुप्राप्ति
ललाट	स्थानलाभ	हृदय	इष्टसिद्धि	हनु	महाभाग्य
स्कन्ध	भोगवृद्धि	कटि	प्रमाद	कण्ठ	ऐश्वर्यलाभ
भ्रूमध्य	सुखप्राप्ति	कटिपार्श्व	प्रीति	ग्रीवाधोभाग	शत्रुभय
भ्रूयुग्म	महत्सौख्य	नाभि	स्त्रीनाश	पृष्ठ	पराजय
कपोल	शुभप्राप्ति	आंत्रिक	कोषवृद्धि	मुख	मित्रप्राप्ति
नेत्र	धनप्राप्ति	भग	पतिप्राप्ति	भुज	मधुरभोजन
नेत्रकोण	लक्ष्मीलाभ	कुक्ष	सुप्रीति	भुजमध्य	धनागम
नेत्रसमीप	प्रियसंगम	उदर.	कोषलाभ	वस्तिदेश	भाग्योन्नति
नेत्रपक्षम	राज्यलाभ	लिंग	स्त्रीलाभ	ऊरु	वस्त्रलाभ
हस्त	सद्द्रव्यलाभ	गुदा	वाहनलाभ	जानु	शत्रुवृद्धि
नेत्रोर्ध्व	विजय	वृषण	पुत्रलाभ	जंघा	स्वामीप्रीति
पादोर्ध्व	स्थानलाभ	पादतल	नृपत्व–बुद्धि		

इन्हीं अंगों में तिल, लसन, मस्सा हो व खुजली उठे तो भी चक्रोक्त फल जानें। पैर के तलुओं में खुजली उठे तो यात्रा हो। राजाओं के हाथ में तिल व खाज हो तो जय होती है। साधारण व्यक्ति को लाभ होता है।

काकस्पर्श का फल

मस्तक पर काक स्पर्श धननाश, मरण तथा कलह करता है। कमर, कन्धे पर अशुभ होता है। स्त्री के मस्तक पर काक बैठना पति–पुत्र का नाश करता है। वृक्ष के नीचे दहीं आदि के उत्तम भोजन के कारण काक का स्पर्श दोषकारक नहीं होता, किन्तु अकस्मात् स्पर्श दोष करता है। काकमैथुन का देखना छः मास में मृत्यु अथवा मृत्युतुल्य कष्ट व इच्छितकार्य का नाश करता है। इसके दोष दूर करने के निमित्त उडद के आटे की काकप्रतिमा मृण्मय (मिट्टी के) पात्र में स्थापित कर उडद, चावल, घी, मीठे का नैवेद्य देवें। ग्राम में दक्षिण की ओर बाहर चौराहे पर गन्ध, पुष्प, धूप, दीप, दक्षिणादि से पूजन कर मृत्युञ्जय मन्त्र का यथाशक्ति जप करें (या करावें), घृतच्छाया–पात्र दान, पञ्चगव्य से स्नान भी करे। इस विधान के करने से सम्पूर्ण दोष नष्ट होते हैं।

काकविष्ठा विचार :– शिरसि–मृत्युः वा कष्टम्। स्कन्धयोः रोगः। भुजयोः प्रियार्तिः। उदरे शोकः। गुह्ये सन्तानकष्टम्। जंघयोः वाहनपीडा। पादयोः प्रवासः।

कौवा उडता हुआ या किसी सूखे पेड पर बैठा हुआ किंवा पूर्व की तरफ बैठा हुआ अथवा दक्षिण दिशा की ओर मुंह किए किसी के ऊपर काली बीट कर दे तो अशुभ होता है। यदि किसी हरे–भरे या फूले–फले पीपल, बड आदि श्रेष्ठ पेड पर बैठा हुआ सफेद बीट कर दे तो [illegible]

से किसी दिन दोष नहीं है।

विवाहादि मुहूर्त्त (सं. २०७५ वि.)

प्रो. प्रियव्रत शर्मा, 59/6 (अभिजित्), P.O. पंचकूला-134 109;

(इन विवाहादि मुहूर्त्तों के शोधन में नालाबलोग (पंचकूला) निवासी, मेरे योग्य शिष्य चि. सुरेशानन्द शर्मा, B.A. का पर्याप्त सहयोग मिला है।)

—: समयशुद्धि :—

शुक्र-अस्त :- शुक्र इस वर्ष आश्वि. शु. ८ बु. से कार्त्ति. कृ. ६ मं. (१७ से ३० अक्तू., २०१८ ई.) तक अस्त रहेगा।

गुरु-अस्त :- गुरु इस वर्ष कार्त्ति. शु. ४ र. से मार्ग. कृ. १३ बु. (११.नवं. से ५ दिसं.,२०१८ ई.) तक अस्त रहेगा।

गुरु-शुक्र के अस्त का यह उपरोक्त काल पंजाब, हरियाणा, हि.प्र., दिल्ली आदि के लिए है। क्योंकि, अक्षांशभेद से इन ग्रहों के उदय-अस्त की तारीखें भिन्न-भिन्न होती हैं, इसलिए अपने अभीष्ट स्थल के अक्षांशानुसार उस स्थल के गुरु-शुक्र की उदय-अस्त की तारीख नीचे दिये गये कोष्ठक से जानकर विवाहादि मुहूर्त्तों का दैवज्ञ को निर्णय करना चाहिए।

अक्षांशभेद से भारत के विभिन्न स्थलों पर गुरु-शुक्र का उदय-अस्त 'सं. २०७५ वि.'

अक्षांश →	+५°	+१५°	+२५°	+३५°
शुक्र पश्चिम में अस्त	२१ अक्तू.,'१८	२० अक्तू.,'१८	१८अक्तू.,'१८	१५ अक्तू.,'१८
शुक्र पूर्व में उदित	३० अक्तू.,'१८	३१ अक्तू.,'१८	३१ अक्तू.,'१८	१ नवं.,'१८
गुरु अस्त	१४ नवं.,'१८	१३ नवं.,'१८	१२ नवं.,'१८	९ नवं.,'१८
गुरु उदित	६ दिसं.,'१८	६ दिसं.,'१८	६ दिसं.,'१८	७ दिसं.,'१८

ध्यान रहे :- गुरु-शुक्र के अस्तकाल में तो शुभकृत्य वर्जित रहते ही हैं, इनके अस्तदिन से ३ दिन पहले वार्धक्यदोष और उदयदिन के ३ दिन बाद तक भी बाल्यदोष के कारण शुभकृत्य नहीं किये जाते। **ध्यान दें :-** मुहूर्त्तों में जिस लग्न का कुछ भाग किसी विशेष दोष के कारण वर्जित है, उस लग्न के आगे कोष्ठक में भारतीय स्टैण्डर्ड टाईम के अनुसार यह निर्देश दिया गया है कि—इस लग्न को इस टाईम के बाद अथवा पहले ही मुहूर्त्तों में स्वीकार करें।

दैवज्ञ ध्यान दें—

(विवाहलग्नों की संख्या में वृद्धि)

इन आगे दिये जा रहे शुद्ध विवाहमुहूर्त्तों को देखने से आपको ज्ञात होगा कि—शुद्ध विवाहलग्नों की संख्या अब हमारे पंचांग में पहले की अपेक्षा अधिक हो गयी है। दैवज्ञों के लिए इस अधिक संख्या का कारण यहां स्पष्ट कर देना आवश्यक है।

भारत के अधिकतर पंचांगों में लग्नस्थ चन्द्र-पापग्रह, षष्ठस्थ चन्द्र-शुक्र-लग्नेश, सप्तमस्थ सूर्य-मंगल-बुध-शुक्र-शनि-राहु-केतु तथा अष्टमस्थ चन्द्र-मंगल-लग्नेश या शुभग्रह होने पर परम्परया लग्नभंग माना जा रहा है। ऐसी स्थिति में उस लग्न को पंचांगकार तभी विवाहयोग्य मानते हैं, जबकि वहां लग्नभंग का परिहार हो। इस परम्परा में लग्नस्थ चन्द्र और पापीग्रह तथा षष्ठस्थ लग्नेश और सप्तमस्थ सूर्य-मंगल-बुध-शुक्र-शनि-राहु-केतु एवं अष्टमस्थ लग्नेश का परिहार बिल्कुल नहीं माना जाता और इन स्थितियों में उस लग्न को विवाह में सर्वथा अयोग्य दैवज्ञ लोग मानते चले आते रहे हैं। लेकिन संहिताओं में अनेक ऐसे विशेष स्पष्टवाक्य हमें मिलते हैं, जो सप्तमहीन केन्द्र-त्रिकोणस्थ बुध-शुक्र-गुरु, एकादशस्थ सूर्य-चन्द्र, सप्तमहीन केन्द्रस्थ या एकादशस्थ लग्नेश आदि दस ग्रहादि-स्थितियों को सभी प्रकार के लग्नभंगों का परिहारक घोषित करते हैं। लग्नभंग के इन संहितोक्त विशेष परिहारिों में से यदि केवल एक भी परिहार लग्नकुण्डली में प्राप्त हो जाये तब संहिताकारों का कहना है कि—उस एकमात्र परिहार से ही वहां लग्नभंगकारक सभी दोष पूरी तरह नष्ट हो जाते हैं। **ये परिहार दशमस्थ मंगल, चतुर्थस्थ राहु, तृतीयस्थ शुक्र, सप्तमस्थ गुरु-चन्द्र और द्वादशस्थ शनि की पूजा वाले दोषों का भी पूरी तरह निवारण करते हैं। यह भी इन परिहार वाक्यों से सुस्पष्ट है।** संहिताओं के इन्हीं प्रबल प्रमाणवाक्यों के आधार पर अब हम लग्नभंगकारक दोषों के इन संहितोक्त विशेष परिहारों को भी दृष्टि में रखते हुए विवाहार्थ शुद्ध लग्नों का निर्णय करते हैं, जिससे शुद्ध विवाहलग्नों की संख्या में यह वृद्धि हुई है।

ध्यान दें—पहले शुद्धविवाहलग्नों के आगे कोष्ठक में लग्नभंगकारक उन ग्रहों का निर्देश किया रहता था, जिनका वहां परिहार हुआ है। अब यह निर्देश अनावश्यक समझकर हमने छोड़ दिया है। विशेष स्पष्टता के लिए मेरी पुस्तक **"मुहूर्त्तगजानन"** के पृष्ठ १५१ पर दिया लेख '**लग्नभंगपरिहार (एक संशोधन)**' अवश्य पढ़िये। इस लेख का सारांश ४-५ वर्ष पूर्व पंचांग में भी मैंने दिया था।—**प्रियव्रतशर्मा**

शुद्ध विवाहमुहूर्त्त (सं. २०७५ वि.)

मास-तिथि-वार	प्रविष्टा	तारीख २०१८ ई.	विवाह नक्षत्र	विवाह-लग्न के समय			शुद्धलग्न (सर्वत्र भा. स्टैं. टा. दिया गया है।)
				चन्द्रराशि	सूर्यराशि	गुरुराशि	
वैशा. शु. ३ बु.	वैशा. ५	अप्रै. १८	रोहि.	वृष	मेष	तुला	ल. ९ (२४/२७ बाद), १०, ११,
वैशा. शु. ४ गु.	वैशा. ६	अप्रै. १९	रोहि.	वृष	मेष	तुला	दि.ल. ३, ४ (१२/१९ तक),
वैशा. शु. ४ गु.	वैशा. ६	अप्रै. १९	मृग.	वृष	मेष	तुला	ल. ९ (२३/८ बाद), १०, ११
वैशा. शु. ५ शु.	वैशा. ७	अप्रै. २०	मृग.	वृष/मिथुन	मेष	तुला	दि.ल. २, ३ (११/१० तक), ४ (१३/३४ बाद), ५, ६, गोधू.,
वैशा. शु. ११ गु.	वैशा. १३	अप्रै. २६	उ.फा.	सिंह/कन्या	मेष	तुला	दि.ल. ५ (१४/२५ बाद), ६ (१६/३९ तक), रा.ल. ८ (२०/१५ बाद), ९, १०, ११,
वैशा. शु. १२ शु.	वैशा. १४	अप्रै. २७	उ.फा.	कन्या	मेष	तुला	दि.ल. २, ३, ४, ५ (१४/०० तक), (बुधवेध-परिहार),
वैशा. शु. १२ शु.	वैशा. १४	अप्रै. २७	हस्त	कन्या	मेष	तुला	दि.ल. ५ (१४/०० बाद), ६, गोधू., ९, १०, ११, (बुधवेध-परिहार),
वैशा. शु. १३ श.	वैशा. १५	अप्रै. २८	हस्त	कन्या	मेष	तुला	दि.ल. २, ३, ४ (१२/५६ तक),
वैशा. शु. १३ श.	वैशा. १५	अप्रै. २८	चित्रा	कन्या/तुला	मेष	तुला	दि.ल. ५ (१४/८ बाद), ६, गोधू., ९, १०, ११,
वैशा. शु. १४ र.	वैशा. १६	अप्रै. २९	चित्रा	तुला	मेष	तुला	दि.ल. २ (६/३७ तक),
वैशा. शु. १४ र.	वैशा. १६	अप्रै. २९	स्वा.	तुला	मेष	तुला	ल. ८, ९, १०, ११,
वैशा. शु. १५ चं.	वैशा. १७	अप्रै. ३०	स्वा.	तुला	मेष	तुला	दि.ल. २, ३ (१०/२२ तक),
प्र.ज्ये. कृ. ३ गु.	वैशा. २०	मई ३	मूल	धनु	मेष	तुला	ल. ९, १०, ११, (मृत्युपरिहार),
प्र.ज्ये. कृ. ४ शु.	वैशा. २१	मई ४	मूल	धनु	मेष	तुला	दि.ल. २, ३, ४, ५, ६, गोधू., ९ (२२/३२ तक), (मृत्यु-परिहार),
प्र.ज्ये. कृ. ८ मं.	वैशा. २५	मई ८	धनि.	मकर/कुम्भ	मेष	तुला	दि.ल. २ (७/३७ बाद), ३, ४, ५, ६, गोधू., ९, १०, ११,
प्र.ज्ये. कृ. ९ बु.	वैशा. २६	मई ९	धनि.	कुम्भ	मेष	तुला	दि.ल. २, ३, ४ (१०/१२ तक),
प्र.ज्ये. कृ. ११ शु.	वैशा. २८	मई ११	उ.भा.	मीन	मेष	तुला	दि.ल. ६ (१४/५७ बाद), रा. ल. ९, १०, ११,
प्र.ज्ये. कृ. १२ श.	वैशा. २९	मई १२	उ.भा.	मीन	मेष	तुला	दि.ल. २, ३, ४, ५ (१३/५१ तक),
प्र.ज्ये. कृ. १२ श.	वैशा. २९	मई १२	रेव.	मीन	मेष	तुला	दि.ल. ५ (१३/५१ बाद), ६, रा.ल. ९, १०, ११;
द्वि.(शु.)ज्ये.शु. ६ मं.	आषा. ५	जून १९	उ.फा.	सिंह	मिथुन	तुला	ल. १ (२५/४५ बाद),
द्वि.(शु.)ज्ये.शु. ९ गु.	आषा. ७	जून २१	हस्त	कन्या	मिथुन	तुला	दि.ल. ४, ५, ६, ७, ८, गोधू., १०, ११, १२, १ (२५/२६ तक),
द्वि.(शु.)ज्ये.शु. ९ गु.	आषा. ७	जून २१	चित्रा	कन्या	मिथुन	तुला	ल. १ (२५/२६ से २६/६ तक),
द्वि.(शु.)ज्ये.शु. १० शु.	आषा. ८	जून २२	चित्रा	कन्या/तुला	मिथुन	तुला	दि.ल. ६ (१३/३६ बाद), ७, ८, गोधू., १०, ११, १२, १ (२६/८ तक),
द्वि.(शु.)ज्ये.शु. १० शु.	आषा. ८	जून २२	स्वा.	तुला	मिथुन	तुला	ल. १ (२६/८ बाद),
द्वि.(शु.)ज्ये.शु. ११ श.	आषा. ९	जून २३	स्वा.	तुला	मिथुन	तुला	दि.ल. ४, ५, ६, ७ (१५/३६ तक),
द्वि.(शु.)ज्ये.शु. १३ चं.	आषा. ११	जून २५	अनु.	वृश्चिक	मिथुन	तुला	दि.ल. ४, ५, ६, ७, ८, गोधू., १०, ११, १२, १, (मृत्यु-परिहार),
द्वि.(शु.)ज्ये.शु. १३ मं.	आषा. १२	जून २६	अनु.	वृश्चिक	मिथुन	तुला	दि.ल. ४ (७/७ तक), (मृत्यु-परिहार),

शुद्ध विवाहमुहूर्त्त (सं. २०७५ वि.)

मास-तिथि-वार	प्रविष्टा	तारीख २०१८ ई.	विवाह नक्षत्र	विवाह-लग्न के समय चन्द्रराशि	सूर्यराशि	गुरुराशि	शुद्धलग्न (सर्वत्र भा. स्टैं. टा. दिया गया है।)
आषा. कृ. १ शु.	आषा. १५	जून २९	उ.षा.	धनु/मकर	मिथुन	तुला	दि.ल. ७, ८, रा.ल. १०, ११, १२, १,
आषा. कृ. ३ र.	आषा. १७	जुला. १	धनि.	मकर	मिथुन	तुला	ल. १० (२१/३६ बाद), ११, १२, १, (शुक्रवेध-परिहार),
आषा. कृ. ४ चं.	आषा. १८	जुला. २	धनि.	मकर/कुम्भ	मिथुन	तुला	दि.ल. ४, ५, ७, ८, गोधू., १०, ११, १२ (२४/३५ तक), (शुक्रवेध-परिहार)
आषा. कृ. ७ गु.	आषा. २१	जुला. ५	उ.भा.	मीन	मिथुन	तुला	दि.ल. ७, ८, गोधू., १०, ११, १, २, (मृत्यु-परिहार),
आषा. कृ. ८ शु.	आषा. २२	जुला. ६	उ.भा.	मीन	मिथुन	तुला	दि.ल. ४ (६/५३ तक), (मृत्यु-परिहार),
आषा. कृ. ८ शु.	आषा. २२	जुला. ६	रेव.	मीन	मिथुन	तुला	दि.ल. ५ (९/३४ बाद), ७, ८, गोधू., १०, ११, १, २, (मृत्यु-परिहार),
आषा. कृ. ९ श.	आषा. २३	जुला. ७	रेव.	मीन	मिथुन	तुला	दि.ल. ४ (७/३९ तक),
आषा. कृ. ९ श.	आषा. २३	जुला. ७	अश्वि.	मेष	मिथुन	तुला	दि.ल. ४ (७/३९ बाद), ५, ७, ८, गोधू., १०, ११, १, २,
आषा. कृ. १० र.	आषा. २४	जुला. ८	अश्वि.	मेष	मिथुन	तुला	दि.ल. ४ (७/३८ तक),
आषा. कृ. १२ मं.	आषा. २६	जुला. १०	रोहि.	वृष	मिथुन	तुला	दि.ल. ४, ५, ७, ८,
आषा. शु. ५ मं.	श्राव. २	जुला. १७	उ.फा.	सिंह/कन्या	कर्क	तुला	दि.ल. ५ (९/२७ बाद), ७ (१४/३ तक), रा.ल. १ (२४/४८ बाद), (मृत्यु परिहार),
आषा. शु. ६ बु.	श्राव. ३	जुला. १८	हस्त	कन्या	कर्क	तुला	दि.ल. ५ (८/१९ बाद), ७, ८, ९, गोधू., ११, १, २, ३, (मृत्यु परिहार),
आषा. शु. ७ गु.	श्राव. ४	जुला. १९	हस्त	कन्या	कर्क	तुला	दि.ल. ५ (७/५३ तक),
आषा. शु. ७ गु.	श्राव. ४	जुला. १९	चित्रा	कन्या/तुला	कर्क	तुला	दि.ल. ५ (७/५३ बाद), ७ (१३/३७ तक), रा.ल. २ (२५/२८ बाद), ३,
आषा. शु. ८ शु.	श्राव. ५	जुला. २०	चित्रा	तुला	कर्क	तुला	दि.ल. ५ (८/९ तक),
आषा. शु. ८ शु.	श्राव. ५	जुला. २०	स्वा.	तुला	कर्क	तुला	दि.ल. ५ (८/९ बाद), ७, ८, ९, गोधू., ११, १, २, ३,
आषा. शु. ९ श.	श्राव. ६	जुला. २१	स्वा.	तुला	कर्क	तुला	दि.ल. ५ (९/७ तक),
आषा. शु. १० र.	श्राव. ७	जुला. २२	अनु.	वृश्चिक	कर्क	तुला	दि.ल. ७, ८, ९, गोधू., ११, १, २, ३,
श्राव. कृ. ४ बु.	श्राव. १७	अग. १	उ.भा.	मीन	कर्क	तुला	दि.ल. ६ (११/२५ बाद), ७, ९, गोधू., ११, १२, १, २, ३,
श्राव. कृ. ५ गु.	श्राव. १८	अग. २	उ.भा.	मीन	कर्क	तुला	दि.ल. ६, ७, (१३/१२ तक),
श्राव. कृ. ५ गु.	श्राव. १८	अग. २	रेव.	मीन	कर्क	तुला	दि.ल. ७ (१३/१२ बाद), ९, गोधू., ११, १, २, ३, (शुक्रवेध-परिहार),
श्राव. कृ. ६ शु.	श्राव. १९	अग. ३	रेव.	मीन	कर्क	तुला	दि.ल. ६, ७, (१२/४ तक), (शुक्रवेध-परिहार),
श्राव. कृ. ९ चं.	श्राव. २२	अग. ६	रोहि.	वृष	कर्क	तुला	ल. ११ (२०/१ से २०/५४ तक), (मृत्यु-परिहार), (१२/३२ से २०/१ तक क्रां.सा.),
श्राव. कृ. १० मं.	श्राव. २३	अग. ७	रोहि.	वृष	कर्क	तुला	दि.ल. ६ (१०/५ बाद), ७ (१२/४४ तक),
श्राव. शु. २ चं.	श्राव. २९	अग. १३	उ.फा.	सिंह/कन्या	कर्क	तुला	ल. ११, १, २, ३,
श्राव. शु. ४ मं.	श्राव. ३०	अग. १४	उ.फा.	कन्या	कर्क	तुला	दि.ल. ६, ७, ८, ९ (१६/३७ तक),
श्राव. शु. ४ मं.	श्राव. ३०	अग. १४	हस्त	कन्या	कर्क	तुला	ल. ३ (२७/२८ बाद), (मृत्यु-परिहार),

शुद्ध विवाहमुहूर्त्त (सं. २०७५ वि.)

मास-तिथि-वार	प्रविष्टा	तारीख २०१८ ई.	विवाह नक्षत्र	विवाह-लग्न के समय			शुद्धलग्न (सर्वत्र भा. स्टैं. टा. दिया गया है।)
				चन्द्रराशि	सूर्यराशि	गुरुराशि	
श्राव. शु. ८ श.	भाद्र. २	अग. १८	अनु.	वृश्चिक	सिंह	तुला	दि.ल. १० (१७/२० बाद), गोधू., १, २, ३, ४, (मृत्यु-परिहार),
श्राव. शु. ९ र.	भाद्र. ३	अग. १९	अनु.	वृश्चिक	सिंह	तुला	दि.ल. ६, ७, ८, (१४/४९ तक), (मृत्यु-परिहार),
श्राव. शु. १४ श.	भाद्र. ९	अग. २५	धनि.	मकर/कुम्भ	सिंह	तुला	दि.ल. ६, ७, ८, ९ (१५/१६ तक), रा.ल. ४ (२८/२१ बाद), (बुधवेध-परिहार),
श्राव. शु. १५ र.	भाद्र. १०	अग. २६	धनि.	कुम्भ	सिंह	तुला	दि.ल. ६, ७, ८ (१२/३६ तक), (बुधवेध-परिहार),
भाद्र. कृ. २ मं.	भाद्र. १२	अग. २८	उ.भा.	मीन	सिंह	तुला	दि.ल. १० (१७/८ बाद), गोधू., १ (२१/१९ तक), २ (२३/११ बाद), ३, ४, (मृत्यु-परिहार),
भाद्र. कृ. ३ बु.	भाद्र. १३	अग. २९	उ.भा.	मीन	सिंह	तुला	दि.ल. ६ (९/८ तक),
भाद्र. कृ. ४ गु.	भाद्र. १४	अग. ३०	अश्वि.	मेष	सिंह	तुला	ल. १, २, ३, ४,
भाद्र. कृ. ५ शु.	भाद्र. १५	अग. ३१	अश्वि.	मेष	सिंह	तुला	दि.ल. ६, ७, ८, ९, १०, गोधू.,
भाद्र. कृ. ७ र.	भाद्र. १७	सितं. २	रोहि.	वृष	सिंह	तुला	ल. १ (२०/४८ बाद), ३, ४,
भाद्र. कृ. ८ चं.	भाद्र. १८	सितं. ३	रोहि.	वृष	सिंह	तुला	दि.ल. ७, ८, ९ (१५/२७ बाद), १०, गोधू.,
भाद्र. शु. १ चं.	भाद्र. २५	सितं. १०	उ.फा.	कन्या	सिंह	तुला	ल. १ (२०/३५ बाद), ३, ४ (२७/३९ तक),
भाद्र. शु. १ चं.	भाद्र. २५	सितं. १०	हस्त	कन्या	सिंह	तुला	ल. ४ (२७/३९ बाद),
भाद्र. शु. २ मं.	भाद्र. २६	सितं. ११	हस्त	कन्या	सिंह	तुला	दि.ल. ७, ८, ९, १०, रा.ल. १, ३, ४,
भाद्र. शु. २ मं.	भाद्र. २६	सितं. ११	चित्रा	कन्या	सिंह	तुला	ल. ४ (२६/४ बाद),
भाद्र. शु. ३ बु.	भाद्र. २७	सितं. १२	चित्रा	तुला	सिंह	तुला	दि.ल. ९ (१३/३७ बाद), १०, गोधू., १, ३ (२५/७ तक), (८/५३ से १३/३७ तक क्रां. सा.),
भाद्र. शु. ३ बु.	भाद्र. २७	सितं. १२	स्वा.	तुला	सिंह	तुला	ल. ३ (२५/७ बाद), ४ (२७/२९ तक),
भाद्र. शु. ४ गु.	भाद्र. २८	सितं. १३	स्वा.	तुला	सिंह	तुला	दि.ल. ९ (१४/५२ बाद), १०, गोधू., १, ३ (२४/३६ तक),
भाद्र. शु. ५ शु.	भाद्र. २९	सितं. १४	अनु.	वृश्चिक	सिंह	तुला	ल. ३ (२५/२७ बाद), ४, (मृत्यु-परिहार),
भाद्र. शु. ६ श.	भाद्र. ३०	सितं. १५	अनु.	वृश्चिक	सिंह	तुला	दि.ल. ७, ८, ९, १०, गोधू., १, ३, ४ (२६/४९ तक), (मृत्यु-परिहार),
भाद्र. शु. १२ शु.	आश्वि. ५	सितं. २१	धनि.	मकर	कन्या	तुला	दि.ल. ११ (१६/४६ बाद), १, ३, ४,
भाद्र. शु. १३ श.	आश्वि. ६	सितं. २२	धनि.	कुम्भ	कन्या	तुला	दि.ल. ७, ८, ९, १०, ११, गोधू., १ (१९/३० तक),
आश्वि. शु. १ बु.	आश्वि. २४	अक्तू. १०	स्वा.	तुला	कन्या	तुला	दि.ल. ९ (१३/९ बाद), १०, ११, रा.ल. १, ३, ४,
आश्वि. शु. ३ गु.	आश्वि. २५	अक्तू. ११	स्वा.	तुला	कन्या	वृश्चिक	दि.ल. ७, ८ (१०/३० तक),
आश्वि. शु. ४ शु.	आश्वि. २६	अक्तू. १२	अनु.	वृश्चिक	कन्या	वृश्चिक	दि.ल. ८ (१०/४० बाद), १०, ११, गोधू.,
आश्वि. शु. ५ श.	आश्वि. २७	अक्तू. १३	अनु.	वृश्चिक	कन्या	वृश्चिक	दि.ल. ७, ८,

शुद्ध विवाहमुहूर्त्त (सं. २०७५ वि.)

मास-तिथि-वार	प्रविष्टा	तारीख २०१८-१९ ई.	विवाह नक्षत्र	विवाह-लग्न के समय			शुद्धलग्न (सर्वत्र भा. स्टैं. टा. दिया गया है।)
				चन्द्रराशि	सूर्यराशि	गुरुराशि	
कार्त्ति. कृ. ११ श.	कार्त्ति. १८	नवं. ३	उ.फा.	सिंह	तुला	वृश्चिक	ल. ४ (२२/४४ बाद), ५,
मार्ग. शु. ५ बु.	मार्ग. २७	दिसं. १२	धनि.	मकर	वृश्चिक	वृश्चिक	ल. गोधू. ३, ४, ५, ७,
मार्ग. शु. ६ गु.	मार्ग. २८	दिसं. १३	धनि.	कुम्भ	वृश्चिक	वृश्चिक	दि.ल. १०, ११, १२, गोधू., ३, ४ (१९/४५ तक),
पौष शु. ९ मं.	माघ २	जन. १५	अश्वि.	मेष	मकर	वृश्चिक	दि.ल. ११, १२,
पौष शु. ११ गु.	माघ ४	जन. १७	रोहि.	वृष	मकर	वृश्चिक	दि.ल. ११, १२, गोधू., ५,
पौष शु. १२ शु.	माघ ५	जन. १८	रोहि.	वृष	मकर	वृश्चिक	दि.ल. ११, १२
माघ कृ. २ मं.	माघ ९	जन. २२	मघा	सिंह	मकर	वृश्चिक	ल. ८,
माघ कृ. ३ बु.	माघ १०	जन. २३	मघा	सिंह	मकर	वृश्चिक	दि.ल. ११, १२,
माघ कृ. ५ शु.	माघ १२	जन. २५	हस्त	कन्या	मकर	वृश्चिक	ल. गोधू., ५, ८, (मृत्यु-परिहार),
माघ कृ. ६ श.	माघ १३	जन. २६	हस्त	कन्या	मकर	वृश्चिक	दि.ल. ११, १२,
माघ कृ. ६ श.	माघ १३	जन. २६	चित्रा	तुला	मकर	वृश्चिक	ल. ८ (२७/४१ बाद),
माघ कृ. ७ र.	माघ १४	जन. २७	चित्रा	तुला	मकर	वृश्चिक	दि.ल. ११ (९/२८ तक), १२,
माघ कृ. ९ मं.	माघ १६	जन. २९	अनु.	वृश्चिक	मकर	वृश्चिक	ल. गोधू., ५, ८ (२७/७ तक),
माघ शु. १ मं.	माघ २३	फर. ५	धनि.	कुम्भ	मकर	वृश्चिक	ल. ९ (२९/१५ बाद),
माघ शु. २ बु.	माघ २४	फर. ६	धनि.	कुम्भ	मकर	वृश्चिक	दि.ल. ११, १२ (९/७ तक),
माघ शु. ३ शु.	माघ २६	फर. ८	उ.भा.	मीन	मकर	वृश्चिक	ल. गोधू., ५, ६,
माघ शु. ४ श.	माघ २७	फर. ९	उ.भा.	मीन	मकर	वृश्चिक	दि.ल. ३,
माघ शु. ४ श.	माघ २७	फर. ९	रेव.	मीन	मकर	वृश्चिक	ल. गोधू., ५, ६, ८, ९,
माघ शु. ५ र.	माघ २८	फर. १०	रेव.	मीन	मकर	वृश्चिक	दि.ल. ११, १२, १, गोधू., ५ (१९/३७ तक),
माघ शु. ९ गु.	फाल्गु. २	फर. १४	रोहि.	वृष	कुम्भ	वृश्चिक	दि.ल. १२ (८/३३ तक), (मृत्यु-परिहार),
माघ शु. १५ मं.	फाल्गु. ७	फर. १९	मघा	सिंह	कुम्भ	वृश्चिक	दि.ल. ४, ५, ६, ८, ९,
फाल्गु. कृ. २ गु.	फाल्गु. ९	फर. २१	उ.फा.	सिंह/कन्या	कुम्भ	वृश्चिक	दि.ल. १२, १, ४, ६,
फाल्गु. कृ. ३ शु.	फाल्गु. १०	फर. २२	चित्रा	कन्या	कुम्भ	वृश्चिक	ल. ८, ९,
फाल्गु. कृ. ४ श.	फाल्गु. ११	फर. २३	चित्रा	तुला	कुम्भ	वृश्चिक	दि.ल. ४, गोधू., ६, (११/२६ तक बुध-पादवेध), (मृत्यु-परिहार),
फाल्गु. कृ. १२ र.	फाल्गु. १९	मार्च ३	श्रव.	मकर	कुम्भ	वृश्चिक	दि.ल. १ (८/५९ बाद), २,
फाल्गु. शु. १ गु.	फाल्गु. २३	मार्च ७	उ.भा.	मीन	कुम्भ	वृश्चिक	ल. ८, १०,
फाल्गु. शु. २ शु.	फाल्गु. २४	मार्च ८	उ.भा.	मीन	कुम्भ	वृश्चिक	दि.ल. १२, १, २, ४, ६, ७ (२३/१६ तक),

शुद्ध विवाहमुहूर्त्त (सं. २०७५ वि.)

मास-तिथि-वार	प्रविष्टा	तारीख २०१९ ई.	विवाह नक्षत्र	विवाह-लग्न के समय			शुद्धलग्न (सर्वत्र भा. स्टैं. टा. दिया गया है।)
				चन्द्रराशि	सूर्यराशि	गुरुराशि	
फाल्गु. शु. २ शु.	फाल्गु. २४	मार्च ८	रेव.	मीन	कुम्भ	वृश्चिक	ल. ७ (२३/१६ बाद), ८, १०,
फाल्गु. शु. ३ श.	फाल्गु. २५	मार्च ९	रेव.	मीन	कुम्भ	वृश्चिक	दि.ल. १२, १, २, ४, ६, ७ (२१/३४ तक), (२१/३४ से २६/४० तक क्रां.सा.),
फाल्गु. शु. ३ श.	फाल्गु. २५	मार्च ९	अश्वि.	मेष	कुम्भ	वृश्चिक	ल. १०, (२६/४० तक क्रां.सा.),
फाल्गु. शु. ४ र.	फाल्गु. २६	मार्च १०	अश्वि.	मेष	कुम्भ	वृश्चिक	दि.ल. १२, १, २, ४ (१५/३४ तक),
फाल्गु. शु. ६ मं.	फाल्गु. २८	मार्च १२	रोहि.	वृष	कुम्भ	वृश्चिक	ल. १० (२८/५३ बाद),

नोट–आगामी सं. २०७६ वि. के मुहूर्त्तों में वर्ज्य गुरु-शुक्रास्तादि-काल एवं सम्भावित विवाहमुहूर्त्तों की तारीखों के लिए अगला पृष्ठ देखें।

विवाहमुहूर्त्तों के शोधन में मृत्युबाण-वेध-युति आदि दोषों के शास्त्रीय परिहार

इस पंचांग में दिये जाने वाले विवाहमुहूर्त्तों में जहां वेध, युति, कर्त्तरी, दग्धातिथि, षष्ठाष्टमस्थ चन्द्र, भौम, शुक्र के दोषों के परिहार मिल जाते हैं, वहां उन मुहूर्त्तों को शास्त्रानुसार शुद्ध मान लिया जाता है और विवाहलग्न लगा दिये जाते हैं। इन दोषों के परिहार निम्नांकित स्थितियों में माने गये हैं– ***मृत्युबाण का परिहार***–यहां विवाहमुहूर्त्तों में मृत्युबाण को तभी दोषकारक (त्याज्य) माना गया है, जबकि वह बुधवार को घटित हो, क्योंकि मुहूर्त्तकारों ने इसे इसीवार को त्याज्य लिखा है–"बुधे मृत्युं परित्यजेत्।" ***सौम्यग्रह द्वारा विद्ध नक्षत्र के दोष का परिहार***–मुहूर्त्तकारों ने क्रूरग्रह का वेध होने पर पूर्णनक्षत्र को त्याज्य लिखा है, लेकिन शुभ ग्रह द्वारा विद्ध नक्षत्र के एक चरण को ही विद्ध माना गया है। जैसे–**वेधक नक्षत्र** के प्रथम, द्वितीय, तृतीय, चतुर्थ चरण में स्थित शुभ ग्रह **विद्ध नक्षत्र** के क्रमशः चतुर्थ, तृतीय, द्वितीय, प्रथम चरण को ही वेधता है। लेकिन 'मुहूर्त्तमार्त्तण्ड' कार एवं वशिष्ठ का मत है कि–यदि लग्नेश एकादश में हो, चन्द्र पर शुभग्रह की दृष्टि हो, लग्न में चन्द्ररहित कोई शुभग्रह हो या कालहोरा शुभग्रह की हो तो वेधदोष समाप्त हो जाता है–**"लग्नेशे भवगेऽथवा शशिनि सद्दृष्टे शुभे वांऽगगे। होरायां च शुभस्य वा व्यधमयं नास्तीतिपूर्वेजगुः॥"** हमने शुभग्रह द्वारा विद्ध नक्षत्र के मुहूर्त्तशोधन में इस मत का भी प्रयोग किया है। वैसे तो क्रूरग्रह-विद्ध नक्षत्र-दोष का भी परिहार इस मतानुसार युक्तिसंगत सिद्ध होता है। ***युतिदोष का परिहार***–नक्षत्र के साथ सौम्यग्रह की युति का दोष सामान्य माना जाता है, लेकिन क्रूरग्रह की युति बहुत ही अशुभ फलप्रद मानी जाती है। यदि चन्द्रमा अपनी उच्च राशि (वृष) या मित्रराशि (सिंह, मिथुन, कन्या) में हो तो क्रूरग्रह की युति का दोष भी समाप्त हो जाता है। ***कर्त्तरीदोष का परिहार***–मुहूर्त्त के लग्न से सप्तमरहित केन्द्र या त्रिकोण में गुरु, शुक्र या बुध स्थित हो तो कर्त्तरीदोष का परिहार हो जाता है। कर्त्तरी बनाने वाले ग्रह यदि शत्रुराशि या अपनी नीचराशि में हों या दोनों अस्त हों तो भी लग्न का कर्त्तरीदोष नहीं रहता। यदि मुहूर्त्तलग्न से द्वितीय भाव में कोई शुभ ग्रह बैठा हो अथवा बारहवें भाव में गुरु बैठा हो तो भी कर्त्तरीदोष निष्प्रभाव हो जाता है और ऐसा कर्त्तरीदोष विवाहमुहूर्त्त को अग्राह्य नहीं बना सकता। चन्द्र-कर्त्तरीदोष का परिहार भी चन्द्रमा के स्थान को लग्न समझकर, इन्हीं योगों से देखना चाहिए। ***दग्धातिथि का परिहार***–मुहूर्त्त के लग्न से सप्तमरहित केन्द्र या त्रिकोण में गुरु, शुक्र या बुध बैठा हो तो दग्धातिथि का परिहार हो जाता है, इस परिहार की स्थिति में दग्धातिथि में विवाहलग्न शुद्ध माना जाता है। ***षष्ठाष्टमस्थ चन्द्र का परिहार***–नीचराशि (वृश्चिक) में चन्द्रमा हो तो वह लग्न से छठे या आठवें भाव में होने पर भी दोषकारक नहीं होता। यदि चन्द्रमा लग्नेश होकर षष्ठाष्टमस्थ हो, तब तो उसका कोई परिहार शास्त्रों में नहीं मिलता। ***अष्टमस्थ मंगल का परिहार***–मंगल अस्त (अदृश्य) हो या वह नीचराशि (कर्क) अथवा शत्रु राशि (मिथुन या कन्या) में हो तो लग्न से अष्टमस्थ होने पर भी वह दोषकारक नहीं होता। यदि मंगल लग्नेश होकर अष्टम में हो. तो किसी भी स्थिति में उसके दोष का परिहार नहीं माना जाता। ***षष्ठाष्टमस्थ शुक्र का परिहार***–शुक्र यदि नीचराशि (कन्या) अथवा शत्रुराशि (कर्क या सिंह) में हो तो वह षष्ठाष्टमस्थ होने पर भी अशुभ फल नहीं करता। यदि शुक्र लग्नेश होकर षष्ठाष्टमस्थ हो, तो उसका भी कोई परिहार नहीं है।

ध्यान रहे–ये लग्नभंग के सामान्य (अपूर्ण) परिहार हैं, जिन्हें पंचांगकार परम्परया प्रयोग में ला रहे हैं। लेकिन इनसे अतिरिक्त अन्य लग्नभंग के विशेष परिहार भी हैं, जिनका हमने सं. २०७० वि. से लग्नशोधन में प्रयोग करना प्रारम्भ किया है। इसकी विस्तृत जानकारी के लिए मेरी पुस्तक **"मुहूर्त्तगजानन"** में दिया **"लग्नभंग-परिहार (एक संशोधन)"** लेख पढ़ना चाहिए। यह लेख सं. २०७० वि. के पंचांग में भी प्रकाशित हुआ है।

वि. सं. 2076 में (6 अप्रैल, 2019 ई. से 24 मार्च, 2020 ई. तक) सम्भावित शुद्ध विवाहमुहूर्त्त

प्रतिवर्ष हमें ऐसे दैवज्ञों एवं अन्य अनेक लोगों के Phone Calls/पत्र आते हैं, जो यह जानना चाहते हैं कि—आगामी वर्ष में *शुद्ध विवाहमुहूर्त्त* किन-किन दिनों में सम्भावित हैं। उनकी इस जिज्ञासा की शान्ति के लिए यह स्तम्भ प्रारम्भ किया गया है। इससे यह पर्याप्त स्पष्टता से ज्ञात हो जाता है कि—आगामी वर्ष के किन-किन दिनों में *शुद्ध विवाहमुहूर्त्त* सम्भावित हैं और किन-किन दिनों में नहीं। **यहां जिन तारीखों के आगे गुणनचिह्न (×) दिया गया है, उन दिनों में शुद्ध विवाहमुहूर्त्त बिल्कुल नहीं बनते। इनके अतिरिक्त जहां गुणनचिह्न नहीं दिया है, उन दिनों में शुद्ध मुहूर्त्त बनने की पर्याप्त सम्भावना है।** —प्रियव्रत शर्मा

तारीख	अप्रै.'19	मई '19	जून '19	जुला.'19	अग.'19	सितं.'19	अक्तू.'19	नवं.'19	दिसं.'19	जन.'20	फर.'20	मार्च '20	तारीख
1	—		×	×	×	×	×			×		×	1
2	—	×	×	×	×	×				×	×		2
3	—	×	×	×	×	×				×		×	3
4	—	×		×	×	×			×	×		×	4
5	—	×	×		×	×				×		×	5
6	×		×		×	×		×		×	×	×	6
7	×		×		×	×		×		×	×	×	7
8	×				×	×				×	×	×	8
9	×	×			×	×			×	×		×	9
10	×	×			×	×	×			×			10
11	×	×			×	×			×	×			11
12	×				×	×		×	×	×	×		12
13	×				×	×			×	×	×	×	13
14	×	×	×		×	×			×	×		×	14
15		×	×	×	×	×			×			×	15
16				×	×	×	×	×	×			×	16
17				×	×	×	×	×	×			×	17
18				×	×	×		×	×			×	18
19				×	×	×			×			×	19
20				×	×	×	×		×			×	20
21				×	×	×	×		×		×	×	21
22				×	×	×	×		×	×	×	×	22
23			×	×	×	×			×	×	×	×	23
24				×	×	×		×	×	×	×	×	24
25				×	×	×		×	×			—	25
26				×	×	×	×	×	×			—	26
27				×	×	×	×	×	×	×		—	27
28				×	×	×	×		×	×		—	28
29	×		×	×	×	×	×		×		×	—	29
30	×		×	×	×	×			×		—	—	30
31	—		—	×	×	—		—	×		—	—	31

इस वर्ष (सं. 2076 वि. में) इन निम्नांकित प्रमुख दोषों के कारण निम्नांकित ये तारीखें विवाहकृत्य के लिए स्पष्टरूप में सर्वथा वर्जित हैं—

मीनस्थ सूर्यदोष

(6 से 13 अप्रैल, 2019 ई. तक)

ग्रहणवेधदोष

(15 से 19 जुला., 2019 ई. तक)

शुक्रलोप-दोष

(16 जुला. से 1 अक्तू., 2019 ई. तक)

श्राद्ध(महालय)दोष

(13 सितं. से 28 सितं., 2019 ई. तक)

गुरुलोप-दोष

(11 दिसं., 2019 से 13 जन., 2020 ई. तक)

धनुःस्थ सूर्य-दोष

(16 दिसं., 2019 से 14 जन., 2020 ई. तक)

होलाष्टक-दोष

(3 से 9 मार्च, 2020 ई. तक)

मीनस्थ सूर्यदोष

[14 से वर्षान्त(24 मार्च, 2020) तक]

ध्यान दें—इन उपरोक्त तारीखों तथा अन्य उन तारीखों को भी जो विवाहकृत्य में वर्जित हैं, इस बायीं ओर दिये कोष्ठक में गुणनचिह्न से अंकित किया गया है।

सं. २०७५ वि. में भिन्न-भिन्न राशि वाले वरों और कन्याओं के विवाह-निर्णय के लिए त्रिबल-शुद्धि

(अर्थात् किस राशि वाले वर और कन्या के लिए सं. २०७५ वि. में कुल कितने विवाहमुहूर्त्त किन-किन तारीखों को शुद्ध (ग्राह्य) बनते हैं?)

लोग अपनी सुविधा के अनुसार किसी खास महीने में या किसी खास तारीख के आस-पास ही विवाहमुहूर्त्त (साहा) निकालने के लिए ज्योतिषियों से अनुरोध किया करते हैं। ऐसी स्थिति में ज्योतिषी को विवाहमुहूर्त्तों में जगह-जगह त्रिबल-शुद्धि जानने का झंझट करना पड़ता है। इस झंझट से ज्योतिषियों को छुटकारा दिलाने के लिए हम यहां नीचे 'त्रिबलशुद्धि कोष्ठक' दे रहे हैं। संवत् २०७५ वि. के शुद्ध विवाह-मुहूर्त्त इस पंचांग में पृ पर दिये गये हैं। किस-किस महीने में किस-किस तारीख वाले विवाहमुहूर्त्त में, किस-किस राशि वाले लड़के-लड़कियों के विवाह हो सकते हैं, यह त्रिबलशुद्धि के अनुसार नीचे दिये गये 'त्रिबल-शुद्धि कोष्ठक' में लिख दिया गया है। अमुक राशि वाले लड़के (वर) और अमुक राशि वाली कन्या के लिए इस वर्ष कुल कितने विवाहमुहूर्त्त किन-किन तारीखों को बनते हैं—इस कोष्ठक द्वारा साधारण व्यक्ति भी एक ही नजर में यह तुरन्त जान सकता है। इस कोष्ठक से यह भी तुरन्त जाना जा सकता है, कि अमुक राशि वाली लड़कियों और लड़कों का विवाह इस वर्ष किन-किन तारीखों वाले विवाहमुहूर्त्तों में हो सकता है। वर के लिए 'सूर्य की पूजा' और कन्या के लिए 'गुरु की पूजा' वाला समय भी इस कोष्ठक में दिया गया है।

लड़का-लड़की की राशियों वाले कॉलमों/कोष्ठकों में जो-जो तारीखें समानरूप से मिलती हों, उन तारीखों वाले विवाहमुहूर्त्तों में उस लड़के-लड़की का विवाह हो सकता है। जैसे—**मेषराशि** वाले लड़के और **सिंहराशि** वाली लड़की का विवाह सं. २०७५ वि. में जुलाई (२०१८ ई.) के महीने में किन-किन तारीखों वाले विवाहमुहूर्तें में हो सकता है?—यह मालूम करना है। नीचे 'त्रिबल-शुद्धि कोष्ठक' देखें,—लड़के वाले कॉलम में जन्मराशि **मेष** के आगे जुलाई, २०१८ ई. की १, २, ५, ६, ७, ८, १० तारीखें हैं, जबकि लड़की वाले कॉलम में जन्मराशि **सिंह** के आगे जुलाई की १, २, ७, ८, १०, १७, १८, १९, २०, २१ तारीखें हैं। इसलिए यह समझना चाहिए कि जुलाई, २०१८ ई. में मेष राशि वाले लड़के और सिंह राशि वाली लड़की का विवाह त्रिबलशुद्धि के अनुसार जुलाई की केवल १, २, ७, ८, १० तारीखों वाले विवाहमुहूर्त्तों में ही हो सकता है, क्योंकि जुलाई की केवल यही तारीखें, दोनों (लड़का-लड़की) की राशियों (मेष-सिंह) वाले कॉलमों (कोष्ठकों) में एक-सी मिलती हैं। इस प्रकार विवाह की तारीखों का निश्चय करके शुद्ध विवाहमुहूर्त्तों से उस दिन विवाह के लग्न का निर्णय कर लीजिये। क्योंकि, आजकल लड़कियों का विवाह बड़ी अवस्था में होता है, अतः चतुर्थ-अष्टम-द्वादश गुरु को शास्त्रनिर्देशानुसार नेष्ट न मानकर पूज्य ही माना गया है।

ध्यान दें—लड़के की राशि से १, २, ५, ७, ९ वें स्थित सूर्य एवं कन्या की राशि से १, ३, ६, १०वें स्थित गुरु यदि स्वराशि, मित्रराशि या स्वोच्चराशि में हों तो उन्हें शास्त्र-निर्देशानुसार यहां पूज्य न मानकर शुभ ही माना जाता है। इस वर्ष गुरु तुला एवं वृश्चिक राशियों में विचरण करेगा। तुला राशि का गुरु कर्क, वृश्चिक और मीन राशि वाली लड़की के लिए पूज्य रहेगा, जबकि वृश्चिक राशि में गुरु मित्रक्षेत्री होने से किसी भी राशि वाली कन्या के लिए पूज्य नहीं होगा।

नाम/जन्म-राशि	त्रिबल-शुद्धि कोष्ठक (सं. २०७५ वि.) (१८ मार्च, सन् २०१८ ई. से ५ अप्रैल, सन् २०१९ ई. तक) (कोष्ठकों में दिया गया काल भा. स्टैं. टा. है।)			इस वर्ष जिस राशि में स्थित गुरु लड़की के लिए पूज्य है–
	लड़का	सौर मास, जिनमें लड़के के लिए सूर्य पूज्य है–	लड़की	
मेष	अप्रैल १८, १९, २०, २६, २७, २८, २९, ३०; मई ३, ४, ८, ९, ११, १२; जून १९, २१, २२, २३, २९; जुला. १, २, ५, ६, ७, ८, १०; अग. २५, २६, २८, २९, ३०, ३१; सितं. २, ३, १०, ११, १२, १३, २१, २२; अक्तू. १०, ११; नवं. ३; जन. १५, १७, १८, २२, २३, २५, २६, २७; फर. ५, ६, ८, ९, १०, १४, १९, २१, २२, २३; मार्च ३, ७, ८, ९, १०, १२;	ज्येष्ठ, कार्त्तिक,	अप्रैल १८, १९, २०, २६, २७, २८, २९, ३०; मई ३, ४, ८, ९, ११, १२; जून १९, २१, २२, २३, २९; जुला. १, २, ५, ६, ७, ८, १०, १७, १८, १९, २०, २१; अग. १, २, ३, ६, ७, १३, १४, २५, २६, २८, २९, ३०, ३१; सितं. २, ३, १०, ११, १२, १३, २१, २२; अक्तू. १०, ११; नवं. ३; दिसं. १२, १३; जन. १५, १७, १८, २२, २३, २५, २६, २७; फर. ५, ६, ८, ९, १०, १४, १९, २१, २२, २३; मार्च ३, ७, ८, ९, १०, १२;	- - -
वृष	जून २१, २२, २३, २५, २६, २९(२२/७ बाद); जुला. १, २, ५, ६, ७, ८, १०, १७(१५/७ बाद), १८, १९, २०, २१, २२; अग. १, २, ३, ६, ७, १३ (२४/३९ बाद), १४; सितं. २१, २२; अक्तू. १०, ११, १२, १३; दिसं. १२, १३; जन. १५, १७, १८, २५, २६, २७, २९; फर. ५, ६, ८, ९, १०, १४, २१(१०/२२ बाद), २२, २३; मार्च ३, ७, ८, ९, १०, १२;	ज्येष्ठ, आषाढ़, आश्विन, माघ,	अप्रैल १८, १९, २०, २६(२०/१८ बाद), २७, २८, २९, ३०; मई ८, ९, ११, १२; जून २१, २२, २३, २५, २६, २९(२२/७ बाद); जुला. १, २, ५, ६, ७, ८, १०, १७(१५/७ बाद), १८, १९, २०, २१, २२; अग. १, २, ३, ६, ७, १३(२४/३९ बाद), १४, १८, १९, २५, २६, २८, २९, ३०, ३१; सितं. २, ३, १०, ११, १२, १३, १४, १५, २१, २२; अक्तू. १०, ११, १२, १३; दिसं. १२, १३; जन. १५, १७, १८, २५, २६, २७, २९; फर. ५, ६, ८, [illegible] बाद), २२, २३; मार्च ३, ७, ८, ९, १०, १२;	- - -

त्रिबल-शुद्धि कोष्ठक (सं. २०७५ वि.) (१८ मार्च, सन् २०१८ ई. से ५ अप्रैल, सन् २०१९ ई. तक)

(कोष्ठकों में दिया गया काल भा. स्टैं. टा. है।)

नाम/जन्म-राशि	लड़का	सौर मास, जिनमें लड़के के लिए सूर्य पूज्य है—	लड़की	इस वर्ष जिस राशि में स्थित गुरु लड़की के लिए पूज्य है—
मिथुन	अप्रैल १८, १९, २०, २६(२०/१८ तक), २८(२५/५६ बाद), २९, ३०; मई ३, ४, ८(२०/५९ बाद), ९, ११, १२; जून १९, २२(१३/४३ बाद), २३, २५, २६, २९(२२/७ तक); जुला. २(११/७ बाद), ५, ६, ७, ८, १०, १७(१५/७ तक), १९(१९/५५ बाद), २०, २१, २२; अग. १, २, ३, ६, ७, १३(२४/३९ तक), १८, १९, २५(२३/१४ बाद), २६, २८, २९, ३०, ३१; सितं. २, ३, १२, १३, १४, १५; नवं. ३; दिसं. १३, फर. १४, १९, २१(१०/२२ तक), २३; मार्च ७, ८, ९, १०, १२;	आषाढ़, कार्त्तिक, फाल्गुन,	अप्रैल १८, १९, २०, २६(२०/१८ तक), २८(२५/५६ बाद), २९, ३०; मई ३, ४, ८(२०/५९ बाद), ९, ११, १२; जून १९, २२(१३/४३ बाद), २३, २५, २६, २९(२२/७ तक); जुला. २(११/७ बाद), ५, ६, ७, ८, १०, १७(१५/७ तक), १९(१९/५५ बाद), २०, २१, २२; अग. १, २, ३, ६, ७, १३(२४/३९ तक), १८, १९, २५(२३/१४ बाद), २६, २८, २९, ३०, ३१; सितं. २, ३, १२, १३, १४, १५, २२; अक्तू. १०, ११, १२, १३; नवं. ३; दिसं. १३, जन. १५, १७, १८, २२, २३, २६, २७, २९, फर. ५, ६, ८, ९, १०, १४, १९, २१(१०/२२ तक), २३; मार्च ७, ८, ९, १०, १२;	- - -
कर्क	अप्रैल १८, १९, २०, २६, २७, २८(२५/५६ तक); मई ३, ४, ८(२०/५९ तक), ११, १२; जुला. १७, १८, १९(१९/५५ तक), २२; अग. १, २, ३, ६, ७, १३, १४, १८, १९, २५(२३/१४ तक), २८, २९, ३०, ३१; सितं. २, ३, १०, ११, १४, १५, २१; अक्तू. १२, १३; दिसं. १२; जन. १५, १७, १८, २२, २३, २५, २६, २९; फर. ८, ९, १०;	माघ,	अप्रैल १८, १९, २०, २६, २७, २८(२५/५६ तक); मई ३, ४, ८(२०/५९ तक), ११, १२; जून १९, २१, २२(१३/४३ तक), २५, २६, २९; जुला. १, २(११/७ तक), ५, ६, ७, ८, १०, १७, १८, १९(१९/५५ तक), २२; अग. १, २, ३, ६, ७, १३, १४, १८, १९, २५(२३/१४ तक), २८, २९, ३०, ३१; सितं. २, ३, १०, ११, १४, १५, २१; अक्तू. १२, १३; नवं. ३; दिसं. १२; जन. १५, १७, १८, २२, २३, २५, २६, २९; फर. ८, ९, १०, १४, १९, २१, २२; मार्च ३, ७, ८, ९, १०, १२;	तुला
सिंह	अप्रैल १८, १९, २०, २६, २७, २८, २९, ३०; मई ३, ४, ८, ९; जून १९, २१, २२, २३, २९; जुला. १, २, ७, ८, १०; अग. २५, २६, ३०, ३१; सितं. २, ३, १०, ११, १२, १३, २१, २२; अक्तू. १०, ११; नवं. ३; जन. १५, १७, १८, २२, २३, २५, २६, २७; फर. ५, ६, १४, १९, २१, २२, २३; मार्च ३, ९, १०, १२;	आश्विन, फाल्गुन,	अप्रैल १८, १९, २०, २६, २७, २८, २९, ३०; मई ३, ४, ८, ९; जून १९, २१, २२, २३, २९; जुला. १, २, ७, ८, १०, १७, १८, १९, २०, २१; अग. ६, ७, १३, २५, २६, ३०, ३१; सितं. २, ३, १०, ११, १२, १३, २१, २२; अक्तू. १०, ११; नवं. ३; दिसं. १२, १३; जन. १५, १७, १८, २२, २३, २५, २६, २७; फर. ५, ६, १४, १९, २१, २२, २३; मार्च ३, ९, १०, १२;	- - -
कन्या	जून १९, २१, २२, २३, २५, २६, २९(२२/७ बाद); जुला. १, २, ५, ६, ७, १०, १७, १८, १९, २०, २१, २२; अग. १, २, ३, ६, ७, १३, १४; सितं. २१, २२; अक्तू. १०, ११, १२, १३; नवं. ३; दिसं. १२, १३, जन. १७, १८, २२, २३, २५, २६, २७, २९; फर. ५, ६, ८, ९, १०, १४, १९, २१, २२, २३; मार्च ३, ७, ८, ९, १२;	ज्येष्ठ, आश्विन, कार्त्तिक, माघ,	अप्रैल १८, १९, २०, २६, २७,२८, २९, ३०; मई ८, ९, ११, १२; जून १९, २१, २२, २३, २५, २६, २९(२२/७ बाद); जुला. १, २, ५, ६, ७, १०, १७, १८, १९, २०, २१, २२; अग. १, २, ३, ६, ७, १३, १४, १८, १९, २५, २६, २८, २९; सितं. २, ३, १०, ११, १२, १३, १४, १५, २१, २२; अक्तू. १०, ११, १२, १३; नवं. ३; दिसं. १२, १३, जन. १७, १८, २२, २३, २५, २६, २७, २९; फर. ५, ६, ८, ९, १०, १४, १९, २१, २२, २३; मार्च ३, ७, ८, ९, १२;	- - -
तुला	अप्रैल २०(१०/२ बाद), २६ २७, २८, २९, ३०; मई ३, ४, ८(२०/५९ बाद), ९, ११, १२; जून १९, २१, २२, २३, २५, २६, २९(२२/७ तक); जुला. २(११/७ बाद), ५, ६, ७, ८, १७, १८, १९, २०, २१, २२; अग. १, २, ३, १३, १४, १८, १९, २५(२३/१४ बाद), २६, २८, २९, ३०, ३१; सितं. १०, ११, १२, १३, १४, १५; नवं. ३; दिसं. १३; फर. १९, २१, २२, २३; मार्च ७, ८, ९, १०;	आषाढ़, कार्त्तिक, फाल्गुन	अप्रैल २०(१०/२ बाद), २६ २७, २८, २९, ३०; मई ३, ४, ८(२०/५९ बाद), ९, ११, १२; जून १९, २१, २२, २३, २५, २६, २९(२२/७ तक); जुला. २(११/७ बाद), ५, ६, ७, ८, १७, १८, १९, २०, २१, २२; अग. १, २, ३, १३, १४, १८, १९, २५(२३/१४ बाद), २६, २८, २९, ३०, ३१; सितं. १०, ११, १२, १३, १४, १५, २२; अक्तू. १०, ११, १२, १३; नवं. ३; दिसं. १३; जन. १५, २२, २३, २५, २६, २७, २९; फर. ५, ६, ८, ९, १०, १९, २१, २२, २३; मार्च ७, ८, ९, १०;	- - -

त्रिबल-शुद्धि कोष्ठक (सं. २०७५ वि.) (१८ मार्च, सन् २०१८ ई. से ५ अप्रैल, सन् २०१९ ई. तक)

(कोष्ठकों में दिया गया काल भा. स्टैं. टा. है।)

नाम/जन्म-राशि	लड़का	सौर मास, जिनमें लड़के के लिए सूर्य पूज्य है :–	लड़की	इस वर्ष जिस राशि में स्थित गुरु लड़की के लिए पूज्य है–
वृश्चिक	अप्रैल १८, १९, २०(१०/२ तक), २६, २७, २८, २९, ३०; मई ३, ४, ८ (२०/५९ तक), ११, १२; जुला. १७, १८, १९, २०, २१, २२; अग. १, २, ३, ६, ७, १३, १४, १८, १९, २५(२३/१४ तक), २८, २९, ३०, ३१, सितं. २, ३, १०, ११, १२, १३, १४, १५, २१; अक्तू. १०, ११, १२, १३; दिसं. १२; जन. १५, १७, १८, २२, २३, २५, २६, २७, २९; फर. ८, ९, १०;	ज्येष्ठ,	अप्रैल १८, १९, २०(१०/२ तक), २६, २७, २८, २९, ३०; मई ३, ४, ८ (२०/५९ तक), ११, १२; जून १९, २१, २२, २३, २५, २६, २९; जुला. १, २(११/७ तक), ५, ६, ७, ८, १०, १७, १८, १९, २०, २१, २२; अग. १, २, ३, ६, ७, १३, १४, १८, १९, २५(२३/१४ तक), २८, २९, ३०, ३१, सितं. २, ३, १०, ११, १२, १३, १४, १५, २१; अक्तू. १०, ११, १२, १३; नवं. ३; दिसं. १२; जन. १५, १७, १८, २२, २३, २५, २६, २७, २९; फर. ८, ९, १०, १४, १९, २१, २२, २३; मार्च ३, ७, ८, ९, १०, १२;	तुला
धनु	अप्रैल १८, १९, २०, २६, २७, २८, २९, ३०; मई ३, ४, ८, ९; जून १९, २१, २२, २३, २५, २६, २९; जुला. १, २, ७, ८, १०; अग. १८, १९, २५, २६, ३०, ३१; सितं. २, ३, १०, ११, १२, १३, १४, १५, २१, २२; अक्तू. १०, ११, १२, १३; नवं. ३; जन. १५, १७, १८, २२, २३, २५, २६, २७, २९; फर. ५, ६, १४, १९, २१, २२, २३; मार्च ३, ९, १०, १२;	आषाढ़, माघ,	अप्रैल १८, १९, २०, २६, २७, २८, २९, ३०; मई ३, ४, ८, ९; जून १९, २१, २२, २३, २५, २६, २९; जुला. १, २, ७, ८, १०, १७, १८, १९, २०, २१, २२; अग. ६, ७, १३, १४, १८, १९, २५, २६, ३०, ३१; सितं. २, ३, १०, ११, १२, १३, १४, १५, २१, २२; अक्तू. १०, ११, १२, १३; नवं. ३; दिसं. १२, १३; जन. १५, १७, १८, २२, २३, २५, २६, २७, २९; फर. ५, ६, १४, १९, २१, २२, २३; मार्च ३, ९, १०, १२;	- - -
मकर	जून २१, २२, २३, २५, २६, २९; जुला. १, २, ५, ६, ७, १०, १७(१५/७ बाद), १८, १९, २०, २१, २२; अग. १, २, ३, ६, ७, १३(२४/३९ बाद), १४; सितं. २१, २२; अक्तू. १०, ११, १२, १३; दिसं. १२, १३; जन. १७, १८, २५, २६, २७, २९; फर. ५, ६, ८, ९, १०, १४, २१(१०/२२ बाद), २२, २३; मार्च ३, ७, ८, ९, १२;	ज्येष्ठ, आश्विन, माघ, फाल्गुन,	अप्रै. १८, १९, २०, २६(२०/१८ बाद), २७, २८, २९, ३०; मई ३, ४, ८, ९, ११, १२; जून २१, २२, २३, २५, २६, २९; जुला. १, २, ५, ६, ७, १०, १७(१५/७ बाद), १८, १९, २०, २१, २२; अग. १, २, ३, ६, ७, १३(२४/३९ बाद), १४, १८, १९, २५, २६, २८, २९; सितं. २, ३, १०, ११, १२, १३, १४, १५, २१, २२; अक्तू. १०, ११, १२, १३; दिसं. १२, १३; जन. १७, १८, २५, २६, २७, २९; फर. ५, ६, ८, ९, १०, १४, २१(१०/२२ बाद), २२, २३; मार्च ३, ७, ८, ९, १२;	- - -
कुम्भ	अप्रैल २०(१०/२ बाद), २६(२०/१८ तक), २८(२५/५६ बाद), २९, ३०; मई ३, ४, ८, ९, ११, १२; जून १९, २२(१३/४३ बाद), २३, २५, २६, २९; जुला. १, २, ५, ६, ७, ८, १७(१५/७ तक), १९(१९/५५ बाद), २०, २१, २२; अग. १, २, ३, १३(२४/३९ तक), १८, १९, २५, २६, २८, २९, ३०, ३१; सितं. १२, १३, १४, १५; नवं. ३; दिसं. १२, १३; फर. १९, २१(१०/२२ तक), २३; मार्च ३, ७, ८, ९, १०;	आषाढ़, कार्त्तिक, फाल्गुन,	अप्रैल २०(१०/२ बाद), २६(२०/१८ तक), २८(२५/५६ बाद), २९, ३०; मई ३, ४, ८, ९, ११, १२; जून १९, २२(१३/४३ बाद), २३, २५, २६, २९; जुला. १, २, ५, ६, ७, ८, १७(१५/७ तक), १९(१९/५५ बाद), २०, २१, २२; अग. १, २, ३, १३(२४/३९ तक), १८, १९, २५, २६, २८, २९, ३०, ३१; सितं. १२, १३, १४, १५, २१, २२; अक्तू. १०, ११, १२, १३; नवं. ३; दिसं. १२, १३; जन. १५, २२, २३, २६, २७, २९; फर. ५, ६, ८, ९, १०, १९, २१(१०/२२ तक), २३; मार्च ३, ७, ८, ९, १०;	- - -
मीन	अप्रैल १८, १९, २०(१०/२ तक), २६, २७, २८(२५/५६ तक); मई ३, ४, ८, ९, ११, १२; जुला. १७, १८, १९(१९/५५ तक), २२; अग. १, २, ३, ६, ७, १३, १४, १८, १९, २५, २६, २८, २९, ३०, ३१; सितं. २, ३, १०, ११, १४, १५, २१, २२; अक्तू. १२, १३; दिसं. १२, १३; जन. १५, १७, १८, २२, २३, २५, २६, २९; फर. ५, ६, ८, ९, १०;	आश्विन,	अप्रैल १८, १९, २०(१०/२ तक), २६, २७, २८(२५/५६ तक); मई ३, ४, ८, ९, ११, १२; जून १९, २१, २२(१३/४३ तक), २५, २६, २९; जुला. १, २, ५, ६, ७, ८, १०, १७, १८, १९(१९/५५ तक), २२; अग. १, २, ३, ६, ७, १३, १४, १८, १९, २५, २६, २८, २९, ३०, ३१; सितं. २, ३, १०, ११, १४, १५, २१, २२; अक्तू. १२, १३; नवं. ३; दिसं. १२, १३; जन. १५, १७, १८, २२, २३, २५, २६, २९; फर. ५, ६, ८, ९, १०, १४, १९, २१, २२; मार्च ३, ७, ८, ९, १०, १२;	तुला

१७, १८, २२, २३, २५, २६, २९; फर. ५, ६, ८, ९, १०; | ५, ६, ८, ९, १०, १४, १९, २१, २२; मार्च ३, ७, ८, ९, १०, १२;

अशुद्ध विवाह-मुहूर्त्त (सं. २०७५ वि.)

प्रतिवर्ष हमें ज्योतिषियों एवं अन्य लोगों के ऐसे अनेकों पत्र उपलब्ध होते हैं, जिनमें वे ऐसे अनेक विवाहमुहूर्त्तों के बारे में हमसे स्पष्टीकरण चाहते हैं, जिन्हें हमने अपने पंचांग में तो अशुद्ध विवाहमुहूर्त्तों की कोटि में रखा होता है, लेकिन किसी अन्य पंचांग में उन्हें शुद्ध विवाहमुहूर्त्त मानकर, उनमें विवाहलग्न लगाये होते हैं। इस समस्या को दृष्टि में रखकर अशुद्ध विवाहमुहूर्त्तों का स्पष्टीकरण हम इस स्तम्भ में दिया करते हैं। यह स्तम्भ ज्योतिषियों को शुद्ध और अशुद्ध विवाहमुहूर्त्त-सम्बन्धी दुविधा से मुक्त कराने में काफी हद तक समर्थ सिद्ध हुआ है और इससे ज्योतिषी लोग स्वयं यह भलीभांति जान सकते हैं कि– अमुक नक्षत्र, अमुक दिन, अमुक समय या अमुक लग्न में विवाह करना शास्त्रविरुद्ध क्यों है? यहां साथ-साथ उन दोषों का निर्देश भी किया गया है, जिनके कारण विवाहनक्षत्र होते हुए भी, वहां विवाह नहीं किया जा सकता। जहां भद्रा, व्यतीपात, क्रूरग्रहवेध आदि दोषों से रहित होने से विवाहनक्षत्र का काल शुद्ध होने पर भी लग्नभंग-परिहार नहीं हो सकता, वहां '**लग्नाभाव**' दोष लिखा गया है। *ध्यान रहे*—यहां जिन युति, वेध आदि दोषों का निर्देश किया गया है, वे सभी ऐसे हैं, जिनका कोई परिहार नहीं है। नीचे सं. २०७५ वि. के अशुद्ध विवाहमुहूर्त्त दिये जा रहे हैं।– **प्रियव्रत शर्मा।**

तिथि-वार				तारीख २०१८ ई.		विवाह नक्षत्र	दोष
वर्षारम्भ (१८ मार्च, २०१८ ई.) से वैशा. कृ. १२ शु. (१३ अप्रै., २०१८ ई.) तक मीनस्थ सूर्य।							
वैशा.	शु.	९	मं.	अप्रैल	२४	मघा	केतुवेध,
वैशा.	शु.	१०	बु.	अप्रैल	२५	मघा	केतुवेध,
प्र.ज्ये.	कृ.	१	मं.	मई	१	अनु.	सूर्यवेध,
प्र.ज्ये.	कृ.	२	बु.	मई	२	अनु.	सूर्यवेध,
प्र.ज्ये.	कृ.	५	श.	मई	५	उ.षा.	भौमयुति अपरिहार्य,
प्र.ज्ये.	कृ.	६	र.	मई	६	उ.षा.	भौमयुति अपरिहार्य,
प्र.ज्ये.	कृ.	६	र.	मई	६	श्रव.	केतुयुति अपरिहार्य,
प्र.ज्ये.	कृ.	७	चं.	मई	७	श्रव.	केतुयुति अपरिहार्य,
प्र.ज्ये.	कृ.	८	मं.	मई	८	श्रव.	केतुयुति अपरिहार्य,
ज्येष्ठ अधिकमास—१६ मई से १३ जून, २०१८ ई. तक।							
द्वि.(शु.)ज्ये.शु.		१	गु.	जून	१४	मृग.	मासान्त, क्षीणचन्द्र,
द्वि.(शु.)ज्ये.शु.		४	र.	जून	१७	मघा	भौम-केतुवेध,
द्वि.(शु.)ज्ये.शु.		५	चं.	जून	१८	मघा	भौम-केतुवेध,
द्वि.(शु.)ज्ये.शु.		८	बु.	जून	२०	उ.फा.	भद्रा, व्यतीपात,
द्वि.(शु.)ज्ये.शु.		८	बु.	जून	२०	हस्त	लग्नाभाव,
द्वि.(शु.)ज्ये.शु.		१२	र.	जून	२४	अनु.	लग्नाभाव,
द्वि.(शु.)ज्ये.शु.		१४	बु.	जून	२७	मूल	शनियुति अपरिहार्य,
द्वि.(शु.)ज्ये.शु.		१५	गु.	जून	२८	मूल	शनियुति अपरिहार्य,
आषा.	कृ.	२	श.	जून	३०	उ.षा.	वैधृति,
आषा.	कृ.	२	श.	जून	३०	श्रव.	वैधृति, भद्रा, भौम-केतुयुति अपरिहार्य,
आषा.	कृ.	३	र.	जुला.	१	श्रव.	भौम-केतुयुति अपरिहार्य,
आषा.	कृ.	६	बु.	जुला.	४	उ.भा.	भद्रा,
आषा.	कृ.	१२	मं.	जुला.	१०	मृग.	क्षीणचन्द्र,
आषा.	कृ.	१३	बु.	जुला.	११	मृग.	क्षीणचन्द्र,
आषा.	शु.	३	र.	जुला.	१५	मघा	भौम-केतुवेध, मासान्त,
आषा.	शु.	४	चं.	जुला.	१६	मघा	भौम-केतुवेध, संक्रान्ति,
आषा.	शु.	६	बु.	जुला.	१८	उ.फा.	मृत्युबाण,
आषा.	शु.	११	चं.	जुला.	२३	अनु.	भद्रा,
आषा.	शु.	१२	मं.	जुला.	२४	मूल	शनियुति अपरिहार्य,
आषा.	शु.	१३	बु.	जुला.	२५	मूल	शनियुति अपरिहार्य,
२६ से ३० जुला., २०१८ ई. तक चन्द्रग्रहणवेध।							
श्राव.	कृ.	६	शु.	अग.	३	अश्वि.	भुजंगपात,
श्राव.	कृ.	७	श.	अग.	४	अश्वि.	भुजंगपात,
श्राव.	कृ.	१०	मं.	अग.	७	मृग.	भौमवेध,
श्राव.	कृ.	१२	बु.	अग.	८	मृग.	भौमवेध,
श्राव.	शु.	१	र.	अग.	१२	मघा	केतुवेध,
श्राव.	शु.	५	बु.	अग.	१५	हस्त	मृत्युबाण,
श्राव.	शु.	५	बु.	अग.	१५	चित्रा	मृत्युबाण,
श्राव.	शु.	६	गु.	अग.	१६	चित्रा	मासान्त,
श्राव.	शु.	६	गु.	अग.	१६	स्वा.	मासान्त,
श्राव.	शु.	७	शु.	अग.	१७	स्वा.	संक्रान्ति,
श्राव.	शु.	१०	चं.	अग.	२०	मूल	शनियुति अपरिहार्य,
श्राव.	शु.	११	मं.	अग.	२१	मूल	शनियुति अपरिहार्य,
श्राव.	शु.	११	बु.	अग.	२२	उ.षा.	ग्रहण-नक्षत्र, भौमयुति-अपरिहार्य,
श्राव.	शु.	१२	गु.	अग.	२३	उ.षा.	ग्रहण-नक्षत्र, भौमयुति-अपरिहार्य,
श्राव.	शु.	१३	शु.	अग.	२४	उ.षा.	ग्रहणनक्षत्र,
श्राव.	शु.	१३	शु.	अग.	२४	श्रव.	ग्रहणनक्षत्र, सूर्यवेध, केतुयुति अपरिहार्य,

अशुद्ध विवाह-मुहूर्त्त (सं. २०७५ वि.)

तिथि-वार				तारीख २०१८ ई.		विवाह नक्षत्र	दोष
श्राव.	शु.	१४	श.	अग.	२५	श्रव.	ग्रहण-नक्षत्र, सूर्यवेध, केतुयुति अपरिहार्य,
भाद्र.	कृ.	३	बु.	अग.	२९	रेव.	भुजंगपात,
भाद्र.	कृ.	४	गु.	अग.	३०	रेव.	भुजंगपात,
भाद्र.	कृ.	८	चं.	सितं.	३	मृग.	भौम-केतुवेध,
भाद्र.	कृ.	९	मं.	सितं.	४	मृग.	भौम-केतुवेध,
भाद्र.	शु.	७	र.	सितं.	१६	मूल	मासान्त,
भाद्र.	शु.	८	चं.	सितं.	१७	मूल	संक्रान्ति,
भाद्र.	शु.	९	मं.	सितं.	१८	मूल	शनियुति अपरिहार्य,
भाद्र.	शु.	१०	बु.	सितं.	१९	उ.षा.	ग्रहण-नक्षत्र, भौम-केतुयुति अपरिहार्य,
भाद्र.	शु.	११	गु.	सितं.	२०	उ.षा.	ग्रहण-नक्षत्र, भौम-केतुयुति अपरिहार्य,
भाद्र.	शु.	११	गु.	सितं.	२०	श्रव.	ग्रहण-नक्षत्र,
भाद्र.	शु.	१२	शु.	सितं.	२१	श्रव.	ग्रहण-नक्षत्र,
भाद्र.शु. १४ चं. से आश्वि. कृ. ३० मं. (२४ सितं. से ९ अक्तू., २०१८ ई.) तक महालयश्राद्ध।							
आश्वि.	शु.	१	बु.	अक्तू.	१०	चित्रा	क्षीणचन्द्र, वैधृति,
आश्वि.	शु.	६	र.	अक्तू.	१४	मूल	शनियुति अपरिहार्य,
आश्वि. शु. ६ र. से कार्त्ति. कृ. ९ शु. (१४ अक्तू. से २ नवं. २०१८ ई.) तक शुक्रास्त दोष।							
कार्त्ति.	कृ.	१२	र.	नवं.	४	उ.फा.	वैधृति,

तिथि-वार				तारीख २०१८-१९ ई.		विवाह नक्षत्र	दोष
कार्त्ति. शु. १ गु. से मार्ग. शु. १ श. (८ नवं. से ८ दिसं., २०१८ ई.) तक गुरु अस्तदोष।							
मार्ग.	शु.	२	र.	दिसं.	९	मूल	भुजंगपात,
मार्ग.	शु.	३	चं.	दिसं.	१०	उ.षा.	ग्रहणनक्षत्र, केतुयुति अपरिहार्य,
मार्ग.	शु.	४	मं.	दिसं.	११	उ.षा.	ग्रहणनक्षत्र, केतुयुति अपरिहार्य,
मार्ग.	शु.	४	मं.	दिसं.	११	श्रव.	ग्रहणनक्षत्र,
मार्ग.	शु.	५	बु.	दिसं.	१२	श्रव.	ग्रहणनक्षत्र,
मार्ग.	शु.	८	श.	दिसं.	१५	उ.भा.	मासान्त,
मार्ग.शु. ९ र. से पौष शु. ७ र. (१६ दिसं., २०१८ ई. से १३ जन., २०१९ ई.) तक धनुःस्थ सूर्य।							
पौष	शु.	८	चं.	जन.	१४	रेव.	संक्रान्ति,
पौष	शु.	८	चं.	जन.	१४	अश्वि.	संक्रान्ति,
पौष	शु.	१२	शु.	जन.	१८	मृग.	सूर्य-केतुवेध,
पौष	शु.	१३	श.	जन.	१९	मृग.	सूर्य-केतुवेध,
माघ	कृ.	४	गु.	जन.	२४	उ.फा.	भौमवेध,
माघ	कृ.	५	शु.	जन.	२५	उ.फा.	भौमवेध,
माघ	कृ.	७	र.	जन.	२७	स्वा.	भुजंगपात,
माघ	कृ.	८	चं.	जन.	२८	स्वा.	भुजंगपात,
माघ	कृ.	१०	बु.	जन.	३०	अनु.	लग्नाभाव,
माघ	कृ.	११	गु.	जन.	३१	मूल	राहुवेध,
माघ	कृ.	१२	शु.	फर.	१	मूल	राहुवेध,

तिथि-वार				तारीख २०१९ ई.		विवाह नक्षत्र	दोष
माघ	शु.	५	र.	फर.	१०	अश्वि.	भौमयुति अपरिहार्य,
माघ	शु.	६	चं.	फर.	११	अश्वि.	भौमयुति अपरिहार्य,
माघ	शु.	८	बु.	फर.	१३	रोहि.	संक्रान्ति,
माघ	शु.	९	गु.	फर.	१४	मृग.	वैधृति, विष्कंभ, केतुवेध,
माघ	शु.	१०	शु.	फर.	१५	मृग.	केतुवेध,
फाल्गु.	कृ.	१	बु.	फर.	२०	मघा	लग्नाभाव,
फाल्गु.	कृ.	१	बु.	फर.	२०	उ.फा.	लग्नाभाव,
फाल्गु.	कृ.	२	गु.	फर.	२१	हस्त	भद्रा, भुजंगपात,
फाल्गु.	कृ.	३	शु.	फर.	२२	हस्त	भुजंगपात,
फाल्गु.	कृ.	४	श.	फर.	२३	स्वा.	सूर्यवेध,
फाल्गु.	कृ.	६	र.	फर.	२४	स्वा.	सूर्यवेध,
फाल्गु.	कृ.	७	चं.	फर.	२५	अनु.	भौमवेध,
फाल्गु.	कृ.	८	मं.	फर.	२६	अनु.	भौमवेध,
फाल्गु.	कृ.	९	बु.	फर.	२७	मूल	राहुवेध,
फाल्गु.	कृ.	१०	गु.	फर.	२८	मूल	राहुवेध,
फाल्गु.	कृ.	१०	शु.	मार्च	१	उ.षा.	व्यतीपात, केतुयुति अपरिहार्य,
फाल्गु.	कृ.	११	श.	मार्च	२	उ.षा.	केतुयुति अपरिहार्य,
फाल्गु.	.शु.	७	बु.	मार्च	१३	रोहि.	मासान्त,
फाल्गु शु. ८ गु. से फाल्गु. शु. १५ (१४ से २१ मार्च, २०१९ ई.) तक होलाष्टक तथा वर्षान्त तक मीनस्थ सूर्य।							

मुण्डनादि अन्य मुहूर्त्त (सं. २०७५ वि.) (सर्वत्र भा.स्टैं.टा. दिया गया है।)

(मुण्डन, उपनयन, गृहारम्भ, गृहप्रवेश आदि के शुद्ध मुहूर्त्त प्रतिवर्ष इतने कम क्यों होते हैं?)

मुण्डनादि इन मुहूर्त्तों के शोधन में हम भद्रा, क्रूरग्रहयुति, क्रूरग्रहवेध, क्रान्तिसाम्य, कलशचक्रदोष, वृषवास्तुचक्रदोष, व्यतीपात, अतिगण्ड आदि योग तथा अन्य मुहूर्त्तशास्त्रोक्त निरवशेष निषिद्ध पदार्थों का पूरी तरह विचार कर शुद्धकाल का निर्णय करते हैं, जिससे कई बार तो इनके शुद्ध मुहूर्त्त वर्ष में असह्यरूप से कम (एक-एक या दो-दो भी) हो जाते हैं। सर्वथा दोषमुक्त शास्त्रीय मुहूर्त्तसाधन के आग्रह के कारण इन मुहूर्त्तों की संख्या हमारे पंचांग में अन्य पंचांगों से, जिनके सम्पादक इन विचार्य विषयों की उपेक्षा करके मुहूर्त्तों की संख्या बढ़ाने की शास्त्रविरुद्ध प्रवृत्ति लिये हैं;काफी कम होती है। विश्वास रखिये, हमारे 'मार्त्तण्ड पंचांग' में दिये गये शुद्ध मुहूर्त्तों के अतिरिक्त जो मुहूर्त्त अन्य पंचांगों में आपको मिलते हैं, उनकी मुहूर्त्तशास्त्रीय शुद्धता वस्तुतः विचारणीय है। ध्यान रहे—मुण्डनादि इन मुहूर्त्तों के शोधन में हमने केवल शुद्धकाल का निर्णय किया है, शुद्ध लग्नों का नहीं। अतः दैवज्ञों को चाहिए कि—आवश्यक मुहूर्त्त के लिए दिये गये शुद्धकाल की अवधि में गुरु, शुक्र, बुध, सूर्य एवं लग्नेश आदि की शुभस्थानों में स्थिति को ध्यान में रखते हुए बलवान् लग्न का वे स्वयं निर्णय करें। यदि शुद्ध काल के समय 'अभिजित्-मुहूर्त्त' भी उपलब्ध हो तो शुभकार्य के लिए लग्न के स्थान पर 'अभिजित्-मुहूर्त्त' का प्रयोग करना चाहिए; क्योंकि 'अभिजित्-मुहूर्त्त' में बलवान् लग्न की शक्ति मानी गयी है।

मुण्डन-मुहूर्त्त (सन् २०१८-१९ ई.)

तिथि-वार	तारीख	नक्षत्र	शुद्धकाल (भा.स्टैं.टा.)
वैशा. शु. ५ शु.	अप्रै. २०	मृग.	११/१० तक,
वैशा. शु. १२ शु.	अप्रै. २७	हस्त	१४/०० बाद,
प्र.ज्ये. कृ. १० गु.	मई १०	शत.	१०/५८ तक,
माघ कृ. ५ शु.	जन. २५	हस्त	१६/२४ बाद,
माघ कृ. ११ गु.	जन. ३१	ज्ये.	१७/५ तक,
माघ शु. २ बु.	फर. ६	धनि.	९/७ तक,
माघ शु. २ गु.	फर. ७	शत.	१२/८ तक,
फाल्गु. कृ. १३ चं.	मार्च ४	श्रव.	१२/१० तक,
फाल्गु. कृ. १३ चं.	मार्च ४	धनि.	१२/१० से १६/२८ तक,

मुण्डन में विशेष—किसी देवस्थल/तीर्थ पर बिना मुहूर्त्त के भी मुण्डन करवाना शुभ माना गया है। नवरात्रों के दिनों में भी शक्तिपीठों (देवी-मन्दिरों) के समीप मुण्डन करवाने की पंजाब, हिमाचल आदि प्रदेशों में पुरानी परम्परा है।

अक्षरारम्भ-मुहूर्त्त (सन् २०१९ ई.)

माघ कृ. ५ शु.	जन. २५	हस्त	१६/२४ बाद,
माघ कृ.१० बु.	जन. ३०	अनु.	१५/४७ से १६/४० तक, (१५/४७ तक क्रां.सा.),
माघ कृ. ११ गु.	जन. ३१	ज्ये.	

विद्यारम्भ-मुहूर्त्त (सन् २०१८-१९ ई.)

तिथि-वार	तारीख	नक्षत्र	शुद्धकाल (भा.स्टैं.टा.)
वैशा. शु. ५ शु.	अप्रै. २०	मृग.	
वैशा. शु. ११ गु.	अप्रै. २६	उ.फा.	१४/२५ से १६/३९ तक,
वैशा. शु. १२ शु.	अप्रै. २७	उ.फा.	८/७ तक,
प्र.ज्ये. कृ. ४ शु.	मई ४	मूल	११/१ बाद,
प्र.ज्ये. कृ. १० गु.	मई १०	शत.	१०/५८ तक,
प्र.ज्ये. कृ. ११ शु.	मई ११	उ.भा.	१४/५७ बाद,
द्वि.ज्ये. शु. ४ र.	जून १७	आश्ले.	११/३९ बाद,
माघ कृ. १० बु.	जन. ३०	अनु.	१५/४७ से १६/४० तक, (१५/४७ तक क्रां.सा.),
माघ शु. २ बु.	फर. ६	धनि.	९/७ तक,
माघ शु. २ गु.	फर. ७	शत.	१२/८ तक,
माघ शु. २ गु.	फर. ७	पू.भा.	१२/८ बाद,
माघ शु. ३ शु.	फर. ८	पू.भा.	१०/१८ तक,
माघ शु. ५ र.	फर. १०	रेव.	
माघ शु. १२ र.	फर. १७	पुन.	८/१० तक,(राहुयुति-परिहार)
फाल्गु. कृ. २ गु.	फर. २१	उ.फा.	
फाल्गु. कृ. १२ र.	मार्च ३	श्रव.	८/५९ से १२/२९ तक,
फाल्गु. शु. २ शु.	मार्च ८	उ.भा.	

अक्षरारम्भ और विद्यारम्भ के मुहूर्त्तों का प्रयोग—बच्चे को वर्णमाला का ज्ञान करवाने के लिए अक्षरारम्भ के और संस्कृत, अंग्रेजी, गणित, रसायन आदि विषयों का अध्ययन प्रारम्भ करने के लिए विद्यारम्भ के मुहूर्त्तों का प्रयोग करना चाहिए।

उपनयन-मुहूर्त्त (सन् २०१८-१९ ई.)

तिथि-वार	तारीख	नक्षत्र	शुद्धकाल (भा.स्टैं.टा.)
वैशा शु. ५ शु.	अप्रै. २०	मृग.	११/१० तक,
वैशा शु. ११ गु.	अप्रै. २६	पू.फा.	९/२० बाद,
वैशा शु. १२ शु.	अप्रै. २७	उ.फा.	८/७ तक,
प्र.ज्ये. कृ. २ बु.	मई २	अनु.	९/२१ तक, (रोगबाण विचार्य),
पौष शु. १२ शु.	जन. १८	रोहि.	
माघ कृ. २ मं.	जन. २२	आश्ले.	(रोगबाण विचार्य),
माघ शु. २ गु.	फर. ७	शत.	
माघ शु. ३ शु.	फर. ८	पू.भा.	१०/१८ तक,
माघ शु. ५ र.	फर. १०	रेव.	(रोगबाण विचार्य),
फाल्गु. कृ. २ गु.	फर. २१	उ.फा.	(रोगबाण विचार्य),
फाल्गु. शु. २ शु.	मार्च ८	उ.भा.	

द्विरागमन-मुहूर्त्त (सन् २०१८-१९ ई.)

वैशा. शु. ५ शु.	अप्रै. २०	मृग.	११/१० तक, १३/३४ से २१/१४ तक,
वैशा. शु. ८ चं.	अप्रै. २३	पुष्य	१४/१६ तक,
वैशा. शु. ११ गु.	अप्रै. २६	उ.फा.	१४/२५ से १६/३९ तक,
वैशा. शु. १२ शु.	अप्रै. २७	उ.फा.	१४/०० तक,
वैशा. शु. १५ चं.	अप्रै. ३०	स्वा.	१४/४६ तक,
मार्ग. शु. ६ गु.	दिसं. १३	धनि.	१९/४५ तक,
मार्ग. शु. ७ शु.	दिसं. १४	शत.	२२/४२ तक,
फॉल्गु. शु. २ शु.	मार्च ८	उ.भा.	२३/१६ तक,

द्विरागमन में विशेष—विवाह के दिन से १६ दिन के भीतर द्विरागमन के इन मुहूर्त्तों के बिना भी द्विरागमन हो सकता है। यदि नव-विवाहिता वधू का द्विरागमन दिवाली के दिन प्रदोष के समय दीपकों के प्रकाश में हो तो अच्छा माना जाता है।

गृहारम्भ-मुहूर्त्त (सन् २०१८-१९ ई.)

तिथि-वार	तारीख	नक्षत्र	शुद्धकाल (भा.स्टैं.टा.)
वैशा. शु. ८ चं.	अप्रै. २३	पुष्य	१४/१६ तक,
वैशा. शु. १५ चं.	अप्रै. ३०	स्वा.	१०/१२ तक,
*श्राव. कृ. ५ गु.	अग. २	रेव.	१३/१२ बाद,
*श्राव. कृ. ६ शु.	अग. ३	रेव.	९/१५ तक, (९/१५ बाद भूशयन),
*श्राव. शु. ५ बु.	अग. १५	चित्रा	१६/१३ बाद,
श्राव. शु. ८ श.	अग. १८	अनु.	१७/२० बाद,
*मार्ग. शु. ५ बु.	दिसं. १२	धनि.	१६/३६ बाद,
*मार्ग. शु. ६ गु.	दिसं. १३	धनि.	
पौष शु. १२ शु.	जन. १८	रोहि.	१२/२५ तक,
पौष शु. १५ चं.	ज़न. २१	पुष्य	
*माघ कृ. ८ चं.	जन. २८	स्वा.	७/४० तक, १०/४ से १४/२८ तक,
*माघ कृ. १० बु.	जन. ३०	अनु.	१५/४७ से १६/४० तक, (१५/४७ तक क्रां.सा.)
*माघ शु. २ बु.	फर. ६	धनि.	९/७ तक,
*माघ शु. २ गु.	फर. ७	शत.	१२/८ तक,
*माघ शु. ४ श.	फर. ९	उ.भा.	१२/२६ से १७/३० तक,
फाल्गु. कृ. २ गु.	फर. २१	उ.फा.	
फाल्गु. कृ. ४ श.	फर. २३	चित्रा	८/११ बाद,
*फाल्गु. कृ. ११ श.	मार्च २	उ.षा.	११/३० बाद,
*फाल्गु. शु. २ शु.	मार्च ८	उ.भा.	
*फाल्गु. शु. ३ श.	मार्च ९	रेव.	

*(तारा) अंकित मुहूर्त्तों में केवल वृष-वास्तुचक्र शुद्धि नहीं है, अन्यथा ये मुहूर्त्त सर्वथा शुद्ध हैं।

गृहप्रवेश-मुहूर्त्त (सन् २०१८-१९ ई.)

तिथि-वार	तारीख	नक्षत्र	शुद्धकाल (भा.स्टैं.टा.)
*वैशा. शु. ५ शु.	अप्रै. २०	मृग.	११/१० तक, १३/३४ बाद,
वैशा. शु. ११ गु.	अप्रै. २६	उ.फा.	२०/१५ बाद,
वैशा. शु. १२ शु.	अप्रै. २७	उ.फा.	१४/०० तक,
प्र.ज्ये. कृ. ११ शु.	मई ११	उ.भा.	१४/५७ बाद,
प्र.ज्ये. कृ. १२ श.	मई १२	उ.भा.	१३/५१ तक,
*माघ कृ. ६ श.	जन. २६	चित्रा	१५/४ से १६/१९ तक,
माघ कृ. १० बु.	जन. ३०	अनु.	१५/४७ से १६/४० तक, (१५/४७ तक क्रां.सा.),
*माघ शु. ४ श.	फर. ९	उ.भा.	१२/२६ से १७/३० तक,
*माघ शु. ४ श.	फर. ९	रेव.	१७/३० बाद,
*फाल्गु. कृ. २ गु.	फर. २१	उ.फा.	२३/११ तक,
*फाल्गु. कृ. ४ श.	फर. २३	चित्रा	८/११ से २२/४७ तक,
*फाल्गु. कृ. ७ चं.	फर. २५	अनु.	२२/७ बाद,
*फाल्गु. शु. १ गु.	मार्च ७	उ.भा.	२०/५३ बाद,-
*फाल्गु. शु. २ शु.	मार्च ८	उ.भा.	२३/१६ तक,
*फाल्गु. शु. २ शु.	मार्च ८	रेव.	२३/१६ बाद,
*फाल्गु. शु. ३ श.	मार्च ९	रेव.	२१/३४ तक, (२१/३४ बाद क्रां.सा.),

*(तारा) अंकित मुहूर्त्तों में कलशचक्र-शुद्धि नहीं है, अन्यथा ये निर्दोष हैं।

सर्वदेव-प्रतिष्ठा-मुहूर्त्त (सन् २०१८-१९ ई.)

तिथि-वार	तारीख	नक्षत्र	शुद्धकाल (भा.स्टैं.टा.)
(उत्तरायणकाल)			
वैशा. शु. ५ शु.	अप्रै. २०	मृग.	११/१० तक,
वैशा. शु. ७ र.	अप्रै. २२	पुन.	
वैशा. शु. ८ चं.	अप्रै. २३	पुष्य	
वैशा. शु. १२ शु.	अप्रै. २७	उ.फा.	
वैशा. शु. १५ चं.	अप्रै. ३०	स्वा.	१०/२२ तक,
प्र.ज्ये. कृ. २ बु.	मई २	अनु.	९/२१ तक,
प्र.ज्ये. कृ. १० गु.	मई १०	शत.	१०/५८ तक,
प्र.ज्ये. कृ. १२ श.	मई १२	उ.भा.	
पौष शु. १२ शु.	जन. १८	रोहि.	
पौष शु. १५ चं.	जन. २१	पुष्य	
माघ कृ. ६ श.	जन. २६	हस्त	
माघ कृ. ७ र.	जन. २७	चित्रा	९/२८ तक,
माघ कृ. ८ चं.	जन. २८	स्वा.	७/४० तक, १०/४ बाद,
माघ शु. २ बु.	फर. ६	धनि.	९/७ तक,
माघ शु. २ गु.	फर. ७	शत.	
माघ शु. ५ र.	फर. १०	रेव.	
माघ शु. १२ र.	फर. १७	पुन.	११/२२ तक,
फाल्गु. कृ. २ गु.	फर. २१	उ.फा.	
फाल्गु. कृ. ४ श.	फर. २३	चित्रा	८/११ बाद,
फाल्गु. कृ. ६ र.	फर. २४	स्वा.	९/४२ तक, (९/४२ बाद क्रां.सा.),
फाल्गु. शु. २ शु.	मार्च ८	उ.भा.	
फाल्गु. शु. ३ श.	मार्च ९	रेव.	

तामसदेव-प्रतिष्ठा-मुहूर्त्त (सन् २०१८ ई.)

तिथि-वार	तारीख	नक्षत्र	शुद्धकाल (भा.स्टैं.टा.)
(दक्षिणायनकाल)			
द्वि.ज्ये. शु. ११ श.	जून २३	स्वा.	
द्वि.ज्ये. शु. १३ चं.	जून २५	अनु.	
आषा. कृ. ८ शु.	जुला. ६	रेव.	९/३४ बाद,
आषा. कृ. १० र.	जुला. ८	अश्वि.	७/३८ तक,
आषा. शु. ६ बु.	जुला. १८	उ.फा.	८/१९ तक,
आषा. शु. ६ बु.	जुला. १८	हस्त	८/१९ बाद,
आषा. शु. ७ गु.	जुला. १९	हस्त	७/५३ तक,
आषा. शु. ७ गु.	जुला. १९	चित्रा	७/५३ बाद,
आषा. शु. ८ शु.	जुला. २०	चित्रा	८/९ तक,
आषा. शु. ८ शु.	जुला. २०	स्वा.	८/९ बाद,
मार्ग शु. ६ गु.	दिसं. १३	धनि.	
मार्ग शु. ७ शु.	दिसं. १४	शत.	

विपणि-मुहूर्त्त (सन् २०१८ ई.)

तिथि-वार	तारीख	नक्षत्र	शुद्धकाल (भा.स्टैं.टा.)
वैशा. शु. ५ शु.	अप्रै. २०	मृग.	११/१० तक, १३/३४ से २१/१४ तक,
वैशा. शु. ८ चं.	अप्रै. २३	पुष्य	१७/३ तक,
वैशा. शु. १२ शु.	अप्रै. २७	उ.फा.	१४/०० तक,
वैशा. शु. १३ श.	अप्रै. २८	हस्त	७/१२ तक,
प्र.ज्ये. कृ. २ बु.	मई २	अनु.	९/२१ तक,
प्र.ज्ये. कृ. ११ शु.	मई ११	उ.भा.	१४/५७ बाद,
प्र.ज्ये. कृ. १२ श.	मई १२	उ.भा.	१३/५१ तक,
द्वि.ज्ये. शु. १० शु.	जून २२	चित्रा	१३/३७ बाद,
द्वि.ज्ये. शु. १३ चं.	जून २५	अनु.	
आषा. कृ. १ शु.	जून २९	उ.षा.	१५/२१ बाद,
आषा. कृ. ७ गु.	जुला. ५	उ.भा.	१२/३७ बाद,
आषा. कृ. ८ शु.	जुला. ६	रेव.	९/३५ बाद,
आषा. कृ. १० र.	जुला. ८	अश्वि.	७/३८ तक,
आषा. शु. ६ बु.	जुला. १८	उ.फा.	८/१९ तक,
आषा. शु. ६ बु.	जुला. १८	हस्त	८/१९ बाद,
आषा. शु. ७ गु.	जुला. १९	हस्त	७/५३ तक,
आषा. शु. ७ गु.	जुला. १९	चित्रा	७/५३ से १३/३६ तक,
आषा. शु. ८ शु.	जुला. २०	चित्रा	८/९ तक,
आषा. शु. १० र.	जुला. २२	अनु.	१०/४४ बाद,
श्राव. कृ. ४ बु.	अग. १	उ.भा.	११/२५ बाद,
श्राव. कृ. ५ गु.	अग. २	उ.भा.	१३/१२ तक,
श्राव. कृ. ५ गु.	अग. २	रेव.	१३/१२ बाद,
श्राव. कृ. ६ शु.	अग. ३	रेव.	१२/८ तक,
श्राव. कृ. ७ श.	अग. ४	अश्वि.	१२/५८ तक,
श्राव. शु. २ चं.	अग. १३	उ.फा.	११/९ बाद,
श्राव. शु. ५ बु.	अग. १५	हस्त	१६/१३ तक,
श्राव. शु. ८ श.	अग. १८	अनु.	१७/२० बाद,
श्राव. शु. ९ र.	अग. १९	अनु.	१४/४९ तक,
भाद्र. कृ. ३ बु.	अग. २९	उ.भा.	९/८ तक,
भाद्र. कृ. ८ चं.	सितं. ३	रोहि.	१४/१५ तक, १५/२७ बाद,
भाद्र. शु. १ चं.	सितं. १०	उ.फा.	
भाद्र. शु. ३ बु.	सितं. १२	चित्रा	१३/३७ से १६/७ तक, (८/५३ से १३/३७ तक क्रां.सा.),
भाद्र. शु. ६ श.	सितं. १५	अनु.	
आश्वि. शु. ५ श.	अक्तू. १३	अनु.	११/३५ तक,

विपणि-मुहूर्त्त (सन् २०१९ ई.)

तिथि-वार	तारीख	नक्षत्र	शुद्धकाल (भा.स्टैं.टा.)
पौष शु. १२ शु.	जन. १८	रोहि.	१२/२५ तक,
पौष शु. १५ चं.	जन. २१	पुष्य	
माघ कृ. ५ शु.	जन. २५	हस्त	१६/२४ बाद,
माघ कृ. ६ श.	जन. २६	हस्त	१५/४ तक,
माघ कृ. ६ श.	जन. २६	चित्रा	१५/४ से १६/११ तक,
माघ कृ. ७ र.	जन. २७	चित्रा	९/२८ तक, ११/२८ से १४/२४ तक,
माघ कृ. १० बु.	जन. ३०	अनु.	१५/४७ से १६/४० तक, (१५/४७ तक क्रां.सा.),
माघ शु. ४ श.	फर. ९	उ.भा.	१२/२६ से १७/३० तक,
माघ शु. ४ श.	फर. ९	रेव.	१७/३० बाद,
माघ शु. ५ र.	फर. १०	रेव.	१९/३७ तक,
माघ शु. १२ र.	फर. १७	पुष्य	१६/४५ बाद,
फाल्गु. कृ. २ गु.	फर. २१	उ.फा.	
फाल्गु. कृ. ४ श.	फर. २३	चित्रा	८/११ बाद,
फाल्गु. शु. २ शु.	मार्च ८	उ.भा.	
फाल्गु. शु. ३ श.	मार्च ९	रेव.	

दशावतार-प्रतिष्ठा

श्रीराम, कृष्ण आदि देवताओं की मूर्ति-प्रतिष्ठा इन देवताओं की अपनी-अपनी अवतार-तिथियों (श्रीरामनवमी आदि) के दिन पूर्वाह्णकाल में बिना पंचांग-शुद्धि के भी की जा सकती है। अवतार की तिथि यदि गुरु-शुक्रास्त-काल में पड़े, तब तो उस दिन मूर्ति-प्रतिष्ठा नहीं करनी चाहिए।

श्रीगणेश, शिव, गौरी, दुर्गा, विष्णु, कृष्ण, राम, भैरव, हनुमान्, स्कन्द, नाग और परशुराम की मूर्ति-प्रतिष्ठा के विशेष मुहूर्त्त (सं. २०७५ वि.) (सन् २०१८-१९ ई.) (सर्वत्र भा.स्टैं.टा. दिया गया है।)

पृष्ठ 280 पर सर्वदेव एवं तामसदेवों की प्रतिष्ठा के मुहूर्त्त दिये गये हैं। यद्यपि इन श्रीगणेश आदि 12 देवों की प्रतिष्ठा उन मुहूर्त्तों में निःशंक की जा सकती है, पुनरपि मुहूर्त्तशास्त्र में इन देवों की प्रतिष्ठा इनकी अपनी-अपनी तिथियों, नक्षत्रों एवं वारों में भी करने का विशेष निर्देश है। तदनुसार हम यहां इन गणेशादि देवों की प्रतिष्ठा के मुहूर्त्त इनकी अपनी-अपनी तिथियों, नक्षत्रों, वारों के अनुसार भी साधित कर निर्दिष्ट करना हमने विगत वर्ष से प्रारम्भ किया है। श्रद्धालु लोग इन 12 देवों के इन अतिरिक्त प्रतिष्ठा-मुहूर्त्तों को भी अपेक्षानुसार उपयोग में ला सकते हैं। जान लीजिये—गणेश की तिथि कृ. चतुर्थी, शिव की तिथि कृ. चतुर्दशी और नक्षत्र आर्द्रा, गौरी की तिथि शु. तृतीया, दुर्गा की तिथि शु. नवमी और नक्षत्र मूल, विष्णु की तिथि शु. द्वादशी और नक्षत्र श्रवण, कृष्ण की तिथि कृ. अष्टमी, राम की तिथि शु. नवमी, हनुमान् की तिथि कृ. चतुर्दशी और वार मंगल, स्कन्द की तिथि शु. षष्ठी, नाग की तिथि शु. पंचमी, भैरव की तिथि कृ. अष्टमी तथा परशुराम की तिथि शु. तृतीया है। ध्यान दें—यहां इन सभी देवताओं की अपनी-अपनी तिथियां तो हैं, लेकिन अपना नक्षत्र कुछ ही देवताओं का है। किञ्च—अपना वार श्री हनुमान् जी का ही है। शेष देवताओं का कोई अपना वार भी नहीं है। ध्यान दें—कुछ नक्षत्र ऐसे भी हैं, जिनमें किसी भी देवता की प्रतिष्ठा की जा सकती है, जिनका प्रयोग हमने गत पृष्ठों पर "सर्वदेव प्रतिष्ठा मुहूर्त्तों" में किया है। यदि कहीं उन नक्षत्रों में से कोई नक्षत्र हमें इन गणेशादि देवों के मुहूर्त्तकाल में प्राप्त हुआ है, उसका भी यहां हमने निर्देश नक्षत्र वाले कॉलम में किया है, अर्थात् उस नक्षत्र का वहां प्रयोग किया गया है।

यहां यह भी स्पष्ट कर देना आवश्यक है कि—इन 12 देवताओं की प्रतिष्ठा के ये मुहूर्त्तकाल गत पृष्ठ पर दिये सर्वदेव और तामसदेवों के प्रतिष्ठा-मुहूर्त्तकालों की ही तरह युति, वेध, क्रान्तिसाम्य, गुरु-शुक्रास्त, भद्रा आदि सभी दोषों से सर्वथा मुक्त हैं। ये सर्वथा शुद्ध हैं। इन्हें निःशंक प्रयोग में लाइये। अपि च—दैवज्ञ को यह भी जान लेना चाहिए कि—देवताओं की प्रतिष्ठा पूर्वाह्न (दिन के पूर्वार्ध) में ही की जाती है। यहां "शुद्धकाल" वाले कॉलम में अनेकत्र शुद्धकाल न देकर केवल "......" इस प्रकार की भग्न रेखा ही अंकित की गयी है। ऐसे स्थलों पर समझना चाहिए कि वहां प्रतिष्ठा के लिए पूरा पूर्वाह्न काल दोषमुक्त है।

श्रीगणेश-प्रतिष्ठा मुहूर्त्त (तिथि कृ. चतुर्थी)

तिथि-वार	तारीख	नक्षत्र	शुद्धकाल (भा.स्टैं.टा.)
प्र.ज्ये. कृ. ४ शु.	मई ४	---	११/९ तक, -
माघ कृ. ४ गु.	जन. २४	---	---
फाल्गु. कृ. ३ शु.	फ़र. २२	हस्त	१०/५० बाद,
फाल्गु. कृ. ४ श.	फ़र. २३	चित्रा	८/११ तक,

श्रीशिव-प्रतिष्ठा मुहूर्त्त (तिथि कृ. १४, आर्द्रा)

माघ कृ. १४ र.	फर. ३	---	१०/३६ बाद,
फाल्गु. कृ. १४ मं.	मार्च ५	धनि.	---

श्रीगौरी-प्रतिष्ठा मुहूर्त्त (तिथि शु. ३)

वैशा. शु. ३ बु.	अप्रै. १८	---	---
द्वि.ज्ये. शु. ३ श.	जून १६	पुन.	८/४३ तक,
माघ शु. ३ शु.	फर. ८	---	---
फाल्गु. शु. ३ श.	मार्च ९	रे.	---

श्रीदुर्गा-प्रतिष्ठा मुहूर्त्त (तिथि शु. ९, मूल)

वैशा. शु. ९ मं.	अप्रैल २४	---	---
पौष शु. ९ मं.	जन. १५	अश्वि.	---
माघ शु. ९ गु.	फर. १४	रो.	८/३३ तक,

श्रीविष्णु-प्रतिष्ठा मुहूर्त्त (तिथि शु. १२, श्रवण)

वैशा. शु. १२ शु.	अप्रै. २७	उ.फा.	८/७ तक,
पौष शु. १२ शु.	जन. १८	रो.	---

श्रीकृष्ण-प्रतिष्ठा मुहूर्त्त (तिथि कृ. ८)

तिथि-वार	तारीख	नक्षत्र	शुद्धकाल (भा.स्टैं.टा.)
प्र.ज्ये. कृ. ८ मं.	मई ८	धनि.	७/३७ बाद,
माघ कृ. ८ चं.	जन. २८	स्वा.	१०/०४ बाद,
फाल्गु. कृ. ८ मं.	फर. २६	अनु.	---

श्रीराम-प्रतिष्ठा मुहूर्त्त (तिथि शु. ९)

वै. शु. ९ मं.	अप्रै. २४	---	---
द्वि.ज्ये. शु. ९ गु.	जून २१	हस्त	---
पौष शु. ९ मं.	जन. १५	अश्वि.	---
माघ शु. ९ गु.	फर. १४	रो.	८/३३ तक,

श्रीभैरव-प्रतिष्ठा मुहूर्त्त (तिथि कृ. ८)

प्र.ज्ये. कृ. ८ मं.	मई ८	धनि.	७/३६ बाद,
आषा. कृ. ८ शु.	जुला. ६	उ.भा./रे.	७/१० तक,
श्राव. कृ. ८ र.	अग. ५	---	---
भाद्र कृ. ८ चं.	सितं. ३	रो.	---
माघ कृ. ८ चं.	जन. २८	स्वा.	७/४० तक, १०/०४ बाद,
फाल्गु. कृ. ८ मं.	फर. २६	अनु.	---

श्रीहनुमान्-प्रतिष्ठा मुहूर्त्त (तिथि कृ. १४, मंगल)

वै. शु. २ मं.	अप्रै. १७	---	---
प्र.ज्ये. कृ. १ मं.	मई १	---	९/३९ बाद,
प्र.ज्ये. कृ. ८ मं.	मई ८	धनि.	७/३७ बाद,
द्वि.ज्ये. शु. ६ मं.	जून १९	---	---
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

श्रीहनुमान्-प्रतिष्ठा मुहूर्त्त (तिथि कृ. १४, मंगल)

तिथि-वार	तारीख	नक्षत्र	शुद्धकाल (भा.स्टैं.टा.)
माघ कृ. १४ र.	फर. ३	---	१०/३६ बाद,
माघ शु. १ मं.	फर. ५	धनि.	८/५५ बाद,
माघ. शु. १५ मं.	फर. १९	---	११/१७ बाद
फा. कृ. ८ मं.	फर. २६	अनु.	---
फा. कृ. १४ मं.	मार्च ५	धनि.	---

श्रीस्कन्द-प्रतिष्ठा मुहूर्त्त (तिथि शु. ६)

वैशा. शु. ६ श.	अप्रै. २१	---	---
द्वि.ज्ये. शु. ६ मं.	जून १९	---	---
माघ शु. ६ चं.	फर. ११	---	---
फा. शु. ६ मं.	मार्च १२	---	---

श्रीनाग-प्रतिष्ठा मुहूर्त्त (तिथि शु. ५)

वैशा. शु. ५ शु.	अप्रै. २०	मृग.	११/१० तक,
द्वि.ज्ये. शु. ५ चं.	जून १८	---	८/५५ तक,
माघ शु. ५ र.	फर. १०	रे.	---
फा. शु. ५ चं.	मार्च ११	---	---

श्रीपरशुराम-प्रतिष्ठा मुहूर्त्त (तिथि शु. ३)

वैशा. शु. ३ बु.	अप्रै. १८	---	---
द्वि.ज्ये. शु. ३ श.	जून १६	पुन.	८/४३ तक,
माघ शु. ३ शु.	फर. ८	---	---
फा. शु. ३ श.	मार्च ९	रेव.	---

सर्वार्थसिद्धि आदि योग (सं. २०७५ वि.) (भा. स्टैं. टा.)

इन सर्वार्थसिद्धि योग, रवियोग आदि के प्रारम्भ-समाप्तिकालों के साधन में श्रीमार्त्तण्ड ज्योतिष कार्यालय--कुराली (पं.) के सुयोग्य कार्यकर्त्ता श्रीकृष्ण शर्मा, शास्त्री, M.A., वेदाचार्य, साहित्याचार्य द्वारा पूर्ण सहयोग प्राप्त हुआ है। तदर्थ मेरा इन्हें सधन्यवाद आशीर्वाद है।--प्रियव्रत शर्मा

इस स्तम्भ के अन्तर्गत हम पाठकों की सुविधा के लिए सर्वार्थसिद्धि, अमृतसिद्धि, सिद्धि, द्विपुष्कर, त्रिपुष्कर एवं रवि--इन तिथि-भ-वार से बनने वाले एवं सूर्य और चन्द्र के नक्षत्र-संयोग से उत्पन्न सुयोगों के शास्त्रोक्त काल का सूक्ष्म निर्णय करते हैं। अत्यन्त शीघ्रता की स्थिति में किसी भी शुभकार्य को सम्पन्न करने के लिए यदि गुरु-शुक्रास्त आदि दोषों के कारण शुभ (शुद्ध) समय न मिल पा रहा हो तो वहां इन शुभ (सर्वार्थसिद्धि आदि) योगों का प्रश्रय लेना चाहिए--ऐसी शास्त्राज्ञा है। अत: इन सुयोगों के काल में आप किसी भी शुभकार्य को नि:संकोच सम्पन्न कर सकते हैं। **ध्यान रहे**--इन सुयोगों के कालनिर्णय में भद्रा, गुरु-शुक्रास्तादि दोषों का विचार नहीं होता।

सर्वार्थसिद्धि एवं अमृतसिद्धि योग--जैसा कि इनके नाम से ही स्पष्ट है, इन योगों के समय कोई भी शुभ कार्य किया जाये, तो वह सफल होता है। यात्रा, गृहप्रवेश, नूतन-कार्यारम्भ आदि सभी कार्यों के लिए शीघ्रता या अन्य किसी अपरिहार्य कारणवश गुरु-शुक्रास्त आदि का विचार असम्भव होने पर इन सर्वार्थसिद्धि आदि योगों का आश्रय लेना चाहिए। **यहां ब्रैकेटों (Brackets) में दिये गये अमृतसिद्धि योग संज्ञा वाले सर्वार्थसिद्धि योग विशेष फलदायक माने गये हैं।** ये योग (अमृतसिद्धि संज्ञक सर्वार्थसिद्धि योग) जिन-जिन वारों में घटित हुए हैं, उनका निर्देश भी हमने यहां साथ-साथ कर दिया है। **ध्यान रहे**--गुरुवार वाले अमृतसिद्धि योग (जिन्हें गुरुपुष्यामृत योग भी कहा जाता है) के समय विवाह, मंगलवार वाले अमृतसिद्धि योग के समय नये घर में प्रवेश तथा शनिवार वाले अमृतसिद्धि योग के समय यात्रा नहीं करनी चाहिए। शेष सभी कार्यों के लिए इन्हें नि:संकोच प्रयोग में लाइये।

रवियोग--रवियोग भी सर्वार्थसिद्धि योगों की भांति ही सभी कार्यों के लिए शुभ माने जाते हैं। रवियोग सभी बुरे योगों को नष्ट करने की अद्‌भुत शक्ति रखता है--**"कुयोगविध्वंस-करा: शुभेषु।"**

सिद्धियोग--**सिद्धियोग भी सर्वार्थसिद्धि** और **रवियोगों** की भांति ही प्रत्येक कार्य के लिए महत्त्वशाली माने गये हैं। सिद्धियोग में **यमघण्ट**, **विष** आदि कुयोगों का प्रभाव प्राय: समाप्त हो जाता है--ऐसा शास्त्रनिर्देश है।

त्रिपुष्करयोग--मुहूर्त्तविदों का कथन है कि--इस योग में सम्पन्न किया गया या घटित कोई शुभकार्य अथवा कोई शुभाशुभ घटना कालान्तर में त्रिगुणित हो जाती है। इसमें बहुमूल्य वस्तुओं (आभूषण, भूमि, गाड़ी आदि) का क्रय (खरीदना) त्रिगुणकारी माना जाता है।

द्विपुष्करयोग--ये योग त्रिपुष्करयोगों की ही भांति शुभाशुभ सभी घटनाओं को द्विगुणित करते हैं। त्रिपुष्कर एवं द्विपुष्कर--इन सुयोगों का सत्यापक शास्त्रवचन इस तरह है--**"त्रिपुष्करस्त्रिगुणदो द्विगुणो यमलांघ्रिभे।"**

सर्वार्थसिद्धि योग (सन् २०१८ ई.) (भा. स्टैं. टा.)

प्रारम्भ			समाप्त			प्रारम्भ			समाप्त			प्रारम्भ			समाप्त			प्रारम्भ			समाप्त		
२०१८ ई.	घं.	मि.	२०१८ ई.	घं.	मि.	२०१८ ई.	घं.	मि.	२०१८ ई.	घं.	मि.	२०१८ ई.	घं.	मि.	२०१८ ई.	घं.	मि.	२०१८ ई.	घं.	मि.	२०१८ ई.	घं.	मि.
मार्च १८	सू.	उ.	मार्च १८	२०	०९	अप्रैल ८	१७	३६	अप्रैल ९	सू.	उ.	मई ७	सू.	उ.	मई ८	सू.	उ.	जून ४	सू.	उ.	जून ४	१५	०५
(मार्च २०	सू.	उ.	मार्च २०	११	४४)मं.	अप्रैल ९	२०	३९	अप्रैल १०	सू.	उ.	मई १३	१३	३१	मई १४	सू.	उ.	जून ८	२३	०२	जून ९	सू.	उ.
मार्च २१	११	०१	मार्च २२	सू.	उ.	अप्रैल १६	४	०५	अप्रैल १६	सू.	उ.	मई १५	१०	५६	मई १७	सू.	उ.	जून १०	सू.	उ.	जून १०	२२	२९
मार्च २६	१२	५५	मार्च २७	सू.	उ.	अप्रैल १८	१	५६	अप्रैल १९	सू.	उ.	मई १९	२	२३	मई १९	सू.	उ.	जून १२	सू.	उ.	जून १२	११	०७
मार्च २७	११	२७	मार्च २८	सू.	उ.	अप्रैल २२	१८	१८	अप्रैल २३	१७	०३	मई २०	सू.	उ.	मई २०	२२	४४	जून १३	सू.	उ.	जून १४	सू.	उ.
मार्च ३०	सू.	उ.	मार्च ३०	७	२७	अप्रैल २४	सू.	उ.	अप्रैल २४	१५	५८	मई २६	२०	३६	मई २७	सू.	उ.	जून १५	११	२१	जून १६	सू.	उ.
(अप्रैल ४	७	३१	अप्रैल ५	सू.	उ.)बु.	(मई २	सू.	उ.	मई २	१७	३८)बु.	मई २८	२३	०३	मई २९	सू.	उ.	जून १७	सू.	उ.	जून १७	६	२०
अप्रैल ५	सू.	उ.	अप्रैल ५	९	१९	मई ६	सू.	उ.	मई ७	४	३९	जून ३	सू.	उ.	जून ३	११	५८	जून २१	१	१८	जून २१	सू.	उ.

सर्वार्थसिद्धि योग (सन् २०१८ ई.) (भा. स्टैं. टा.)

प्रारम्भ			समाप्त		
२०१८ ई.	घं.	मि.	२०१८ ई.	घं.	मि.
जून २३	सू.	उ.	जून २४	३	२०
जून २५	सू.	उ.	जून २६	सू.	उ.
जून ३०	१८	२९	जुलाई १	सू.	उ.
(जुलाई ६	६	५३	जुलाई ७	सू.	उ.)शु.
जुलाई ८	सू.	उ.	जुलाई ८	७	३८
जुलाई १०	५	२०	जुलाई १०	सू.	उ.
जुलाई ११	सू.	उ.	जुलाई १२	०	४३
जुलाई १२	२१	५४	जुलाई १३	१८	५८
जुलाई १८	८	१९	जुलाई १९	सू.	उ.
जुलाई २१	सू.	उ.	जुलाई २१	९	०७
जुलाई २३	सू.	उ.	जुलाई २३	१२	५३
जुलाई २८	०	३२	जुलाई २९	३	३७
अग. २	१३	१२	अग. ३	सू.	उ.
(अग. ३	सू.	उ.	अग. ३	१४	२५)शु.
अग. ६	१४	०७	अग. ७	सू.	उ.
अग. ८	सू.	उ.	अग. ८	१०	४७
अग. ९	८	२४	अग. १०	५	४४
(अग. १०	५	४४	अग. १०	सू.	उ.)गु.
अग. १५	सू.	उ.	अग. १५	१६	१३
अग. २४	६	४७	अग. २५	९	४८
अग. २८	१७	०८	अग. २९	सू.	उ.
अग. ३०	सू.	उ.	अग. ३१	२०	४६
सितं. ३	सू.	उ.	सितं. ३	२०	०५
(सितं. ३	२०	०५	सितं. ४	सू.	उ.)चं.
सितं. ६	सू.	उ.	सितं. ६	१५	१३
(सितं. ६	१५	१३	सितं. ७	सू.	उ.)गु.
सितं. १०	५	४१	सितं. १०	सू.	उ.
सितं. १७	४	५४	सितं. १७	सू.	उ.
सितं. २१	सू.	उ.	सितं. २१	१६	४६
सितं. २५	सू.	उ.	सितं. २६	१	०१
सितं. २७	सू.	उ.	सितं. २८	२	२२
(सितं. ३०	२	१४	सितं. ३०	सू.	उ.)श.
(अक्तू. १	सू.	उ.	अक्तू. २	०	५१)चं.
(अक्तू. ४	सू.	उ.	अक्तू. ४	२०	४८)गु.

प्रारम्भ			समाप्त		
२०१८ ई.	घं.	मि.	२०१८ ई.	घं.	मि.
अक्तू. ७	१५	१८	अक्तू. ८	सू.	उ.
अक्तू. १४	१३	१४	अक्तू. १५	सू.	उ.
अक्तू. २३	सू.	उ.	अक्तू. २३	८	४७
अक्तू. २५	सू.	उ.	अक्तू. २५	९	२६
(अक्तू. २७	८	२०	अक्तू. २८	सू.	उ.)श.
नवं. २	२३	५९	नवं. ३	सू.	उ.
नव. ४	सू.	उ.	नवं. ४	२१	३५
(नवं. ४	२१	३५	नवं. ५	सू.	उ.)र.
नवं. ८	१९	४७	नवं. ९	सू.	उ.
नवं. ११	सू.	उ.	नवं. १२	०	०२
नवं. १८	१६	३१	नवं. १९	सू.	उ.
(नवं. २०	१८	३३	नवं. २१	सू.	उ.)मं.
(नवं. २४	सू.	उ.	नवं. २४	१५	०९)श.
नवं. ३०	सू.	उ.	दिसं. १	४	१७
(दिसं. २	सू.	उ.	दिसं. ३	३	००)र.
(दिसं. ६	३	३४	दिसं. ६	सू.	उ.)बु.
दिसं. ६	सू.	उ.	दिसं. ७	४	३५
दिसं. ९	सू.	उ.	दिसं. ९	८	०७
दिसं. १६	सू.	उ.	दिसं. १७	३	०७
(दिसं. १८	सू.	उ.	दिसं. १९	४	३७)मं.
दिसं. २०	४	१२	दिसं. २०	सू.	उ.
दिसं. २४	१८	२२	दिसं. २५	सू.	उ.
दिसं. २५	१५	५५	दिसं. २६	सू.	उ.
दिसं. २८	सू.	उ.	दिसं. २८	१०	०७
(दिसं. ३०	सू.	उ.	दिसं. ३०	८	२३)र.

(सन् २०१९ ई.)

(जन. २	९	३९	जन. ३	सू.	उ.)बु.
जन. ३	सू.	उ.	जन. ३	११	०३
जन. ६	१७	४२	जन. ७	सू.	उ.
जन. ७	२०	३५	जन. ८	सू.	उ.
जन. १३	सू.	उ.	जन. १३	११	०५
(जन. १५	सू.	उ.	जन. १५	१३	५५)मं.
जन. १६	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

प्रारम्भ			समाप्त		
२०१९ ई.	घं.	मि.	२०१९ ई.	घं.	मि.
जन. २१	५	२२	जन. २२	२	२७
जन. २२	सू.	उ.	जन. २२	२३	३१
(जन. ३०	सू.	उ.	जन. ३०	१६	४०)बु.
फर. ३	सू.	उ.	फर. ४	२	५४
फर. ४	सू.	उ.	फर. ५	६	०१
फर. १०	१९	३७	फर. ११	सू.	उ.
फर. १२	२२	१०	फर. १४	सू.	उ.
फर. १७	१६	४५	फर. १८	१४	०१
फर. १९	सू.	उ.	फर. १९	११	०२
फर. २३	२२	४७	फर. २४	सू.	उ.
फर. २५	२२	०७	फर. २६	सू.	उ.
मार्च ३	सू.	उ.	मार्च ३	८	५९
मार्च ४	सू.	उ.	मार्च ४	१२	१०
(मार्च ८	२३	१६	मार्च ९	सू.	उ.)शु.
मार्च १०	सू.	उ.	मार्च ११	२	५७
मार्च १२	सू.	उ.	मार्च १३	४	५३
मार्च १३	सू.	उ.	मार्च १४	सू.	उ.
मार्च १६	३	४४	मार्च १६	सू.	उ.
मार्च १७	सू.	उ.	मार्च १८	०	११
मार्च २३	९	०५	मार्च २४	सू.	उ.
मार्च २५	७	०३	मार्च २६	सू.	उ.
मार्च ३०	१५	३७	मार्च ३१	सू.	उ.
अप्रैल ५	५	३६	अप्रैल ५	सू.	उ.
(अप्रैल ५	सू.	उ.	अप्रैल ६	सू.	उ.)शु.

रवियोग (सन् २०१८ ई.) (भा. स्टैं. टा.)

मार्च २०	१९	४४	मार्च २१	१९	०१
मार्च २२	१८	०४	मार्च २३	१६	५७
मार्च २५	१४	२०	मार्च २७	११	२७
मार्च २९	८	३९	मार्च ३०	७	२७
अप्रैल ६	११	४२	अप्रैल ७	१४	३२
अप्रैल १९	०	२७	अप्रैल १९	२२	५१
अप्रैल २०	२१	१४	अप्रैल २१	१९	४२
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	१५	०६

रवियोग (सन् २०१८ ई.) (भा. स्टैं. टा.)

प्रारम्भ			समाप्त		
२०१८ ई.	घं.	मि.	२०१८ ई.	घं.	मि.
अप्रैल २७	१४	००	अप्रैल २७	२३	५९
अप्रैल २८	१३	५२	अप्रैल २९	१४	०६
मई ६	१	३२	मई ७	४	३९
मई १८	४	३३	मई १९	२	२३
मई २०	०	२५	मई २०	२२	४४
मई २२	२०	२८	मई २४	१९	४५
मई २५	१४	२०	मई २५	१९	५९
मई २७	२१	३७	मई २८	२३	०३
जून ४	१५	०५	जून ५	१७	५६
जून १६	८	४३	जून १७	६	२०
जून १८	४	१९	जून १९	२	४६
जून २१	१	१८	जून २४	३	२०
जून २६	७	०७	जून २७	९	३४
जुलाई ४	३	१४	जुलाई ५	५	२३
जुलाई १५	१३	२८	जुलाई १६	११	१२
जुलाई १७	९	२७	जुलाई १८	८	१९
जुलाई २०	८	०९	जुलाई २०	१०	१६
जुलाई २१	९	०७	जुलाई २३	१२	५३
जुलाई २५	१८	२१	जुलाई २६	२१	२५
अग. २	१३	१२	अग. ३	९	१५
अग. ३	१४	२५	अग. ४	१४	५९
अग. १३	१९	०९	अग. १४	१७	२२
अग. १५	१६	१३	अग. १६	१५	४८
अग. १७	६	५०	अग. १७	१६	११
अग. १९	१९	१३	अग. २२	०	३३
अग. २४	६	४७	अग. २५	९	४८
सितं. १	२१	०२	सितं. २	२०	४८
सितं. १२	२	०४	सितं. १३	१	०७
सितं. १३	२०	४१	सितं. १४	०	५३
सितं. १५	१	२७	सितं. १६	२	४९
सितं. १८	७	३४	सितं. २०	१३	४४
सितं. २२	१९	३०	सितं. २३	२१	४९
अक्तू. १	१	४१	अक्तू. २	०	५१
अक्तू. १२	१०	४०	अक्तू. १३	११	३५

रवियोग (संन् २०१८ ई.) (भा. स्टैं. टा.)

प्रारम्भ			समाप्त		
२०१८ ई.	घं.	मि.	२०१८ ई.	घं.	मि.
अक्तू. १४	१३	१४	अक्तू. १५	१५	३३
अक्तू. १७	२१	२८	अक्तू. २०	३	२४
अक्तू. २२	७	३६	अक्तू. २३	८	४७
अक्तू. ३०	५	०६	अक्तू. ३१	३	५१
नवं. १०	२१	५९	नवं. १२	०	०२
नवं. १३	२	३७	नवं. १४	५	३६
नवं. १६	११	४६	नवं. १८	१६	३१
नवं. २१	१८	३०	नवं. २२	१७	५०
नवं. २८	८	०८	नवं. २९	६	३८
दिसं. १०	१०	३६	दिसं. ११	१३	२९
दिसं. १२	१६	३६	दिसं. १३	१९	४५
दिसं. १६	१	१३	दिसं. १६	९	०९
दिसं. १७	३	०७	दिसं. १९	४	३७
दिसं. २१	३	०४	दिसं. २२	१	२२
दिसं. २७	११	४१	दिसं. २८	१०	०७
(सन् २०१९ ई.)					
जन. ८	२३	४०	जन. १०	२	४९
जन. ११	५	५४	जन. ११	१३	२०
जन. १२	८	४३	जन. १३	११	०५
जन. १५	१३	५५	जन. १७	१३	४०
जन. १९	१०	३१	जन. २०	८	०७
जन. २६	१५	०४	जन. २७	१४	२४
फर. ८	१४	५८	फर. ९	१७	३०
फर. १०	१९	३७	फर. ११	२१	१२
फर. १३	२२	२७	फर. १५	२०	५२
फर. १७	१६	४५	फर. १८	१४	०१
फर. २४	२२	०२	फर. २५	२२	०७
मार्च १०	१	१८	मार्च ११	२	५७
मार्च १२	४	०९	मार्च १३	४	५३
मार्च १५	४	४२	मार्च १७	२	१३
मार्च १९	१९	०४	मार्च २०	१६	१७
मार्च २६	७	१५	मार्च २७	८	१८

सिद्धियोग

(सन् २०१८-१९ ई.) (भा. स्टैं. टा.)

प्रारम्भ			समाप्त		
२०१८ ई.	घं.	मि.	२०१८ ई.	घं.	मि.
मार्च २१	१९	०१	मार्च २२	सू.	उ.
मार्च ३०	सू.	उ.	मार्च ३०	७	२७
अप्रैल ९	२०	३९	अप्रैल १०	सू.	उ.
अप्रैल १८	सू.	उ.	अप्रैल १८	०	२७
मई ७	सू.	उ.	मई ८	सू.	उ.
मई १६	सू.	उ.	मई १६	८	५९
मई २६	२०	३६	मई २७	सू.	उ.
जून ४	सू.	उ.	जून ४	१५	०५
जून २३	सू.	उ.	जून २४	३	२०
जुलाई १२	२१	५४	जुलाई १३	सू.	उ.
जुलाई २१	सू.	उ.	जुलाई २१	९	०७
अग. ९	८	२४	अग. १०	५	४४
अग. २८	१७	०८	अग. २९	सू.	उ.
सितं. ६	सू.	उ.	सितं. ६	१५	१३
सितं. १७	४	५४	सितं. १७	सू.	उ.
सितं. २५	सू.	उ.	सितं. २६	१	०१
अक्तू. १४	१३	१४	अक्तू. १५	सू.	उ.
अक्तू. २३	सू.	उ.	अक्तू. २३	८	४७
नवं. २	२३	५९	नवं. ३	सू.	उ.
नवं. ११	सू.	उ.	नवं. १२	०	०२
नवं. ३०	सू.	उ.	दिसं. १	४	१७
दिसं. ९	सू.	उ.	दिसं. ९	८	०७
दिसं. २०	४	१२	दिसं. २०	सू.	उ.
दिसं. २८	सू.	उ.	दिसं. २८	१०	०७
(सन् २०१९ ई.)					
जन. ७	२०	३५	जन. ८	सू.	उ.
जन. १६	१४	१२	जन. १७	सू.	उ.
फर. ४	सू.	उ.	फर. ५	६	०१
फर. १३	सू.	उ.	फर. १३	२२	२७
फर. २३	२२	४७	फर. २४	सू.	उ.
मार्च ४	सू.	उ.	मार्च ४	१२	१०
मार्च २३	९	०५	मार्च २४	सू.	उ.

द्विपुष्करयोग

(सन् २०१८-१९ ई.) (भा. स्टैं. टा.)

प्रारम्भ			समाप्त		
२०१८ ई.	घं.	मि.	२०१८ ई.	घं.	मि.
मार्च २४	सू.	उ.	मार्च २४	१०	०६
अप्रैल १	१७	०४	अप्रैल २	५	५१
मई २६	सू.	उ.	मई २६	१७	४०
जून ५	९	१६	जून ५	१७	५६
जुलाई २१	४	२०	जुलाई ३०	सू.	उ.
अग. ८	५	१५	अग. ८	सू.	उ.
अक्तू. १	५	४५	अक्तू. १	सू.	उ.
नवं. २४	१५	०९	नवं. २५	६	३७
जन. २६	१६	१९	जन. २७	१४	२४
फर. ६	५	१५	फर. ६	सू.	उ.
अप्रैल १	६	०४	अप्रैल १	सू.	उ.

त्रिपुष्करयोग

(सन् २०१८ ई.) (भा. स्टैं. टा.)

अप्रैल १७	१	५६	अप्रैल १७	३	४५
अप्रैल २१	१९	४२	अप्रैल २२	१६	१७
मई १	६	४८	मई १	१५	५६
मई ६	१५	५५	मई ७	४	३९
जून २०	१	४५	जून २०	४	५९
जून २४	३	५२	जून २५	४	५४
जून ३०	सू.	उ.	जून ३०	१५	२०
अग. २८	सू.	उ.	अग. २८	१७	०८
सितं. १	२१	४४	सितं. २	२०	४७
अक्तू. २१	५	४७	अक्तू. २१	२१	३१
अक्तू. ३०	१३	०८	अक्तू. ३१	३	५१
नवं. ४	३	१४	नवं. ४	२१	३५
नवं. १४	४	२२	नवं. १४	५	३६
दिसं. २३	२०	५१	दिसं. २४	सू.	उ.
जन. २	१	२८	जन. २	सू.	उ.
फर. १६	१९	०५	फर. १७	८	१०
फर. २५	५	०४	फर. २५	सू.	उ.
मार्च २	११	०४	मार्च ३	८	५९
मार्च १३	४	५०	मार्च १३	४	५३

अमृतसिद्धियोग

(सन् २०१८-१९ ई.) (भा. स्टैं. टा.)

प्रारम्भ			समाप्त		
२०१८ ई.	घं.	मि.	२०१८ ई.	घं.	मि.
(मार्च २०	सू.	उ.	मार्च २०	११	४४)मं.
(अप्रैल ४	७	३१	अप्रैल ५	सू.	उ.)बु.
(मई २	सू.	उ.	मई २	१७	३८)बु.
(जुलाई ६	६	५३	जुलाई ७	सू.	उ.)शु.
(अग. ३	सू.	उ.	अग. ३	१४	२५)शु.
(अग. १०	५	४४	अग. १०	सू.	उ.)गु.
(सितं. ३	२०	०५	सितं. ४	सू.	उ.)चं.
(सितं. ६	१५	१३	सितं. ७	सू.	उ.)गु.
(सितं. ३०	२	१४	सितं. ३०	सू.	उ.)श.
(अक्तू. १	सू.	उ.	अक्तू. २	०	५१)चं.
(अक्तू. ४	सू.	उ.	अक्तू. ४	२०	४८)गु.
(अक्तू. २७	८	२०	अक्तू. २८	सू.	उ.)श.
(नवं. ४	२१	३५	नवं. ५	सू.	उ.)र.
(नवं. २०	१८	३३	नवं. २१	सू.	उ.)मं.
(नवं. २४	सू.	उ.	नवं. २४	१५	०९)श.
(दिसं. २	सू.	उ.	दिसं. ३	३	००)र.
(दिसं. ६	३	३४	दिसं. ६	सू.	उ.)बु.
(दिसं. १८	सू.	उ.	दिसं. १९	४	३७)मं.
(दिसं. ३०	सू.	उ.	दिसं. ३०	८	२३)र.
(सन् २०१९ ई.)					
(जन. २	९	३९	जन. ३	सू.	उ.)बु.
(जन. १५	सू.	उ.	जन. १५	१३	५५)मं.
(जन. ३०	सू.	उ.	जन. ३०	१६	४०)बु.
(मार्च ८	२३	१६	मार्च ९	सू.	उ.)शु.
(अप्रैल ५	सू.	उ.	अप्रैल ६	सू.	उ.)शु.

पृष्ठ सं. 604
चिरस्थायी बहुमूल्य कागज

विश्वलग्न सारणी

साईज़-24x18½ सें.मी.
सुदृढ़, आकर्षक टाईटल

विश्व के किसी भी स्थल का सूक्ष्म लग्न केवल साधारण जोड़–घटाव द्वारा बतलाने वाला लग्नसम्बन्धी प्रचुर सामग्री से समृद्ध अपूर्व प्रकाशन

(i) 0° से 50° अक्षांश तक 30–30 और 50° से 66° अक्षांश तक 15–15 अक्षांश–कलाओं के अन्तर पर बनाई गई 332 पृष्ठों पर फैली 166 लग्नसारणियां साम्पातिक काल के 1–1 मिनट के अन्तर पर विकलान्त सूक्ष्म लग्न बतलाती हैं। इनसे विश्व के किसी भी उत्तरी तथा दक्षिणी अक्षांश वाले नगर का इष्टकालिक राश्यादि लग्न स्पष्ट करने के लिए 2 मिनट से अधिक समय नहीं लगता है।

(ii) मेषादि बारह लग्नों का दैनिक प्रारम्भ तथा समाप्तिकाल बतलाने वाली 25 पृष्ठों की विलक्षण सारणियां 5–5 अक्षांश–कलाओं के अन्तर पर 0° से 60° अक्षांशों के लिए बनाई गई हैं, जिनसे विश्व के किसी भी नगर में किसी भी दिन (तारीख को) किसी भी सायन एवं निरयण लग्न का प्रारम्भ तथा समाप्तिकाल (अभीष्ट देश के स्टैं. टा. में) मात्र मौखिक जोड़–घटाव द्वारा तुरन्त (लगभग एक मिनट में ही) जाना जा सकता है। क्योंकि, ये सारणियां लग्न का प्रारम्भ तथा समाप्तिकाल सेकण्ड तक सूक्ष्म बतलाती हैं, अतः सन्दिग्ध (सन्धिगत) लग्न का निर्णय इन सारणियों से वस्तुतः चुटकियों में अनायास ही हो जाता है। सन्देहास्पद लग्नराशि के निर्णय का यह नवीनतम अत्यन्त सरल प्रकार है।

(iii) सन् 1900 से 2100 ई. तक का सेकण्ड तक सूक्ष्म साम्पातिक काल और स्पष्ट अयनांश दिया गया है।

(iv) भारत के 4,000 नगर/उपनगरों तथा विश्व के अन्य 210 देशों के प्रसिद्ध लगभग 5,000 नगरों के अक्षांश–रेखांश तथा स्था. म. का. और स्टैं. टा. का अन्तर 80 पृष्ठों पर दिया गया है।

(v) विश्व के लगभग छः सौ (600) देश / द्वीप/ उपद्वीपों की स्टैं. टाईम मेरिडियन्स तथा उनके स्टैं.टा. का G. M. T. एवं भा. स्टैं. टा. से अन्तर 21 पृष्ठों के विशाल कोष्ठक में विवरणसहित दिया है।

(vi) क्रान्ति और अक्षांश की 20–20 कलाओं के अन्तर पर 0° से 66° अक्षांशों के लिए सेकण्ड तक सूक्ष्म 24 पृष्ठों की मौलिक चरसारणी है, जिससे विश्व के किसी भी स्थल का सेकण्ड तक शुद्ध सूर्योदयारतकाल आसानी से तुरन्त जाना जा सकता है।

(vii) अमेरिका, कनाडा आदि सभी विशाल देशों के अलग–अलग Time-Zones (कालक्षेत्रों) में पड़ने वाले सम्पूर्ण प्रान्तों (राज्यों) की लम्बी सूची दी गई है, जिससे स्पष्ट हो जाता है कि– इन देशों के किस प्रदेश में कौन सा टाईम प्रचलित है और उसका भा. स्टैं. टा. से कितना अन्तर है।

(viii) विश्व के विभिन्न देशों में 1940 ई. के बाद आज तक हुए सभी समय–परिवर्तनों के वर्षादि का विस्तृत रिकॉर्ड 7 पृष्ठों के कोष्ठक में अंकित हैं।

(ix) अमेरिका, कनाडा आदि देशों में प्रचलित समरटाईम (D.S.T.) के प्रारम्भ और समाप्ति की तारीखों तथा प्रथम/द्वितीय विश्वयुद्धों के दौरान विभिन्न देशों द्वारा किए गए सभी समय-परिवर्तनों के वर्ष–मास–तारीखों का विवरण 9 पृष्ठों पर दिया गया है।

(x) सारणियों से लग्नसाधन आदि की प्रत्येक गणित–प्रक्रिया को छः छः, सात–सात विभिन्नदेशीय नगरों के उदाहरणों द्वारा पूरी तरह स्पष्ट किया गया है।

अनेक उपयोगी क्रान्ति, वेलान्तर आदि के कोष्ठक तथा लग्न एवं द्वादशभावसाधन आदि से सम्बद्ध "सन्धिगत लग्न का निर्णय", "विषम विभागात्मकभाव–एक समीक्षा" आदि अनेक मौलिक लेख आप इस पुस्तक में पढ़ेंगे।

इस पुस्तक की सभी सारणियां Electronic Computer द्वारा बनाई और मुद्रित की गई हैं, जिससे इनमें गणित एवं मुद्रणसम्बन्धी अशुद्धि की कोई सम्भावना ही नहीं है।

लग्न पर ऐसी व्यापक जानकारी देने वाली परिपूर्ण, प्रौढ़ एवं प्रामाणिक पुस्तक आपको और कोई नहीं मिलेगी– यह हम विश्वासपूर्वक कह सकते हैं।

मूल्य Rs. 750/– + डाकव्यय Rs. 60/–

पुस्तक मिलने का पताः– श्रीमती वीना चतुर्वेदी, M.A., M.Phil.,
'अभिजित् प्रकाशन,' कोठी नं. 59, सैक्टर–6, P.O. पंचकूला (हरियाणा) – 134 109,
Phone: 0172-2565 303

श्रीमार्त्तण्ड पञ्चाङ्ग (सं. 2075 वि.) का 'शोधनिबन्ध' विशेषांक

(लेखक एवं सम्पादक—प्रियव्रत शर्मा)

इस विशेषांक के विषय :-

विषय पृष्ठ

(i) फलित ज्योतिष—मेरी दृष्टि में........................ 289

(ii) हमारे व्रत-पर्वों की तारीखों में मतभेद?........................ 300

(iii) विश्व के देशों में हिन्दू व्रत-पर्वों की तारखों में अन्तर........................ 304

[पाठको! कृपया ध्यान दें—स्वास्थ्य-सम्बन्धी समस्या के कारण मैं इस वर्ष " समस्याएं और समाधान " स्तम्भ न दे पाया, तदर्थ मैं क्षमाप्रार्थी हूँ। अग्रिम वर्षों के पंचांग में यह स्तम्भ पूर्ववत् लगातार प्रकाशित होता रहेगा।—प्रियव्रत शर्मा।]

' अभिजित् प्रकाशन' की पुस्तकों के विज्ञापन इस पंचांग में कहां-कहां?

पुस्तक	पृष्ठ	पुस्तक	पृष्ठ
(i) ग्रहोदयास्त-निर्णय....................	210	(vi) मुहूर्त्त-गजानन........................	टा.पृ.4
(ii) गणक मार्त्तण्ड........................	288	(vii) ग्रहयोग एवं दाम्पत्य जीवन............	29
(iii) शताब्दी ग्रहभोगांश....................	306	(viii) विश्व लग्नसारणी........................	286
(iv) शताब्दी विश्वकुण्डली दर्पण.......	306	(ix) ग्रहणादर्श........................	308
(v) व्रत-पर्व-विवेक........................	307		

ग्राहकों के लिए हर्षप्रद समाचार

अभिजित् प्रकाशन' की उपरोक्त इन सभी पुस्तकों में से Rs. 1000/- या इससे अधिक मूल्य की पुस्तकें मंगवाने वाले ग्राहक को पुस्तक मूल्य पर 20 प्रतिशत की छूट दी जायेगी और डाकखर्च भी माफ किया जायेगा।

पुस्तकों का डाकव्ययसहित मूल्य आप हमारे (अभिजित् प्रकाशन, पंचकूला—हरियाणा के) O.B.C. Bank (ORIENTAL BANK OF COMMERCE) के Account no. 09 88 11 31 00 13 92 (IFSC- ORBC- 0100988) में भी जमा करवा सकते हैं। हमारे इस बैंक खाता में पैसे जमा करवाने के बाद हमारे फोन नं. 090413 30161 पर हमें अपना नाम, पता, फोन नं. और पुस्तकें, जो आप मंगवाना चाहते हैं, SMS द्वारा सूचित करना न भूलें।

वीना चतुर्वेदी, M.A., 'अभिजित् प्रकाशन',
कोठी नं. 59, सैक्टर 6, P.O. पंचकूला (हरियाणा) - 134 109
Phone: 0172-2565 303

110 वर्ष का सर्वप्रथम खगोलसिद्ध सूक्ष्मतम पंचांग (दो भागों में)

(द्वितीय संस्करण उपलब्ध)

पृष्ठ संख्या 826

गणकमार्त्तण्ड

साईज 24X18 सें. मी.

कम्प्यूटर द्वारा तैयार और मुद्रित किया गया भारत का सबसे पहिला 110 वर्ष (सन् 1941 से 2050 ई. तक) का सूक्ष्मतम पंचांग, जिसकी तुलना विश्व के किसी भी प्रामाणिक Ephemeris से की जा सकती है।

लेखक– प्रियव्रत शर्मा, एम.ए., सिद्धान्तज्योतिषाचार्य, साहित्याचार्य (सम्पादक – श्रीमार्त्तण्डपंचांग),

दो भागों (जिल्दों) में विभाजित इस महाग्रन्थ में जन्मपत्र आदि निर्माण के लिए अत्यन्त महत्त्वपूर्ण, ज्योतिषियों के लिए नितान्त उपयोगी अनेक विषयों में से कुछेक इस प्रकार हैं –

1–भारत के सभी (35) प्रान्तों के प्रसिद्ध 4,000 से भी अधिक नगर–उपनगरों के अक्षांश, रेखांश और स्टैण्डर्ड अन्तर (स्था. म. का. का भा. स्टैं. टा. से अन्तर)।

2–विश्व के प्रमुख 230 नगरों के अक्षांश, रेखांश, स्टैण्डर्ड अन्तर तथा G.M.T. और भा. स्टैं. टा. से उनके स्टैं.टा. का अन्तर।

3–विश्व के लगभग 120 देशों की स्टैण्डर्ड मेरिडियन्स, उनके स्टैं. टा. का G.M.T. और भा. स्टैं. टा. से अन्तर ।

4–0° से 60° अक्षांश तक के दैनिक सूर्योदयास्तकाल तथा सेकण्ड तक सूक्ष्म सूर्योदयास्तसाधन की विधि।

5–विदेश में उत्पन्न जातक की जन्मपत्री बनाने की सोदाहरण विस्तृत, सरल विधि तथा भारतीय पंचांग के तिथि–नक्षत्र–योग आदि को अन्य देशों के स्टैं. टा. में परिवर्तित करने की सोदाहरण विधियां और Summer Time का विवेचन।

6–इष्टकालिक सूर्यादि ग्रह स्पष्ट करने की अनेक सरल पद्धतियों का सोदाहरण निर्देश एवम् तदर्थ अनेक मौलिक सारणियां।

7–'अन्तर्न्यासपद्धति' द्वारा चन्द्र एवम् बुध जैसे द्रुतगति ग्रहों को सूक्ष्मतापूर्वक इष्टकालिक बनाने की नवीन प्रकिया को अत्यन्त सरल बना देने वाली सारणियां और उनका सोदाहरण स्पष्टीकरण।

8–प्राचीनपद्धति (इष्टकाल और स्पष्टसूर्य) से इष्टकालिक लग्न स्पष्ट करने के लिए सम्पूर्ण भारत (8° से 35° अक्षांश तक) की आधा–आधा अक्षांशान्तर पर लग्नसारणियां एवम् उनसे इष्टकालिक लग्नसाधन का सोदाहरण विस्तृत स्पष्टीकरण।

9–नवीन पद्धति (साम्पातिककाल पद्धति) से लग्नसाधन के लिए अखिल भारतीय लग्नसारणियां, तदनुसार इष्टकालिक लग्नसाधन की सोदाहरण विधि तथा सन् 1941 से 2050 ई. तक का सूक्ष्म साम्पातिक काल और अयनांश।

10– समस्त भारत के नगरों (अक्षांशों) के लिए मेषादि लग्नों का प्रारम्भकाल बतलाने वाली अद्भुत सारणियां, जिनकी मदद से किसी भी नगर में किसी भी दिन अभीष्ट लग्न का प्रारम्भकाल (भा. स्टैं. टा.) केवल एक मिनट में ही बिना गणित किए जाना जा सकता है।

11– ***सन् 1941 से 2050 ई. तक (110 वर्षों) का चन्द्रसहित सभी ग्रहों का सूक्ष्म राशिप्रवेशकाल (भा.स्टैं. टा.) 92 पृष्ठों पर दिया गया है, जिससे जातक की जन्मकुण्डली 2–3 मिनट में ही बनाई जा सकती है।***

12– ***220 पृष्ठों पर सन् 1941 से 2050 ई. तक के तिथि, नक्षत्र, योगों का दैनिक समाप्तिकाल (भा.स्टैं.टा.) है।***

13– ***220 पृष्ठों पर सूक्ष्म दैनिक स्पष्ट सूर्य और चन्द्रमा दिए गए हैं।***

14– ***110 पृष्ठों पर सन् 1941 से 2050 ई. तक के साप्ताहिक स्पष्ट मंगल, बुध, गुरु, शुक्र, शनि एवम् राहु दिए गए हैं। यहां एक विशेष कोष्ठक भी दिया गया है, जिसकी मदद से साप्ताहिक स्पष्टग्रह को तुरन्त ही इष्टकालिक बना सकते हैं। ग्रहों के वक्री–मार्गी होने की तारीखें भी दी गई हैं।***

15– 2001 से 2050 ई. तक के सूर्य–चन्द्रग्रहणों की सूची, गुरु–शुक्र के अस्तोदय की तारीखें, श्रीरामनवमी, जन्माष्टमी, दीपमाला आदि प्रमुख–प्रमुख सभी मासिक पर्व तथा हरिद्वार आदि के चारों महाकुम्भों की तारीखें दी गई हैं।

ध्यान रहे– 110 वर्ष के इस पंचांग की गणित और मुद्रण–दोनों Electronic Computer द्वारा ही किए गए है, जिससे इसमें गणित एवम् मुद्रणसम्बन्धी किसी भी प्रकार की अशुद्धि की तनिक भी गुंजायश नहीं है।

पुस्तक के दोनों भाग उत्कृष्ट Imported Paper पर मुद्रित एवम् आकर्षक टाईटलों में निबद्ध हैं।

मूल्य **Rs. 1150/–** + डाकव्यय **Rs. 60/–**

पुस्तक का डाकव्ययसहित मूल्य **M.O.**या **D.D.** द्वारा नीचे लिखे पते पर भेजिए।

पुस्तक मिलने का पता :– श्रीमती वीना चतुर्वेदी, M.A., M.Phil., 'अभिजित् प्रकाशन,
कोठी नं. 59, सैक्टर–6, P.O. पंचकूला (हरियाणा) – 134 109, Phone: 0172-2565 303

ध्यान दें– हमारी पुस्तकों को बेचने का अधिकार केवल "अभिजित् प्रकाशन" 59/6, पंचकूला को ही है, अन्य किसी भी विक्रेता को इन्हें बेचने का अधिकार नहीं है।

फलित-ज्योतिष—मेरी दृष्टि में

—प्रियव्रत शर्मा

फलितज्योतिष की विवादास्पद प्रामाणिकता के बारे में प्रकाशित अपने अनेक शोधनिबन्धों, फलितसम्बन्धी ग्रन्थों तथा विद्वत्समितियों में एतद्विषयक अपनी उन्मुक्त चर्चा के कारण मैं ज्योतिषक्षेत्र में पूर्वाग्रहाक्रान्त ज्योतिर्विदों की कटु आलोचना और तर्कनिष्ठ सुशिक्षित विज्ञसमाज की प्रशंसा–दोनों का लक्ष्य बना हुआ हूं। " फलित ज्योतिष पर ऐसी गम्भीर अनास्था के बावजूद मैं '**मुहूर्त्त गजानन**' तथा '**ग्रहयोग एवं दाम्पत्य जीवन**' जैसी फलित ज्योतिष-विषयक रचनाएं कर रहा हूँ "–इसे कुछ लोग मुझमें चारित्रिक विरोध समझते हैं। ऐसे लोगों ने, स्पष्ट है, मेरी ये रचनाएं पढ़ी नहीं हैं। मैंने अपनी इन रचनाओं में तर्कच्युत किसी भी सिद्धान्त को प्रश्रय नहीं दिया है। शिथिल तर्क वाले प्रत्येक पक्ष का दृढ़ता से प्रतिवाद मैंने किया है। मैं यहां (अग्रिम पृष्ठों पर) अपनी तीन फलित ज्योतिषसम्बन्धी रचनाओं (**धूम्रकेतु का विश्व और हम पर प्रभाव, ग्रहयोग एवं दाम्पत्य जीवन** तथा **मुहूर्त्त गजानन**) की भूमिकाएं यथावत् उद्धृत कर रहा हूं, इन्हें पढ़कर वे समझ जायेंगे, ज्योतिष की इस शाखा के ये अद्भुत प्रतिपादन कहां तक बुद्धिस्पर्शी या सम्माननीय हैं।

मुहूर्त्तशास्त्र की प्रामाणिकता

(मुहूर्त्त गजानन की भूमिका)

भले ही ग्रहादि-स्थित्यादि-मूलक विविध योगायोगों द्वारा फलित साहित्य में प्रतिपादित त्रिकालदर्शन की क्षमता का मैं समर्थक नहीं हूँ, पुनरपि फलिताधारभूत अनेक विषयों पर कुछ लिखने की अपनी उग्र प्रवृत्ति का मैं संवरण नहीं कर पाता, क्योंकि एतत्सम्बद्ध जीवन भर के अनवरत परिशीलन से श्रमपूर्वक अर्जित अपने इस भारी विषयवस्तु-संचय को अपने मस्तिष्क में यूँ ही जीर्ण-शीर्ण होते सहन करने की धीरता मुझमें नहीं है। इस शास्त्र के विविध सिद्धान्तों, नियमों के आधारान्वेषण की प्रयासप्रक्रिया में मैं यह जान पाया हूँ कि–अधिकतर दैवज्ञ लोग फलितनिर्धारण की प्रामाणिक गणितादि-प्रक्रियाओं और विधाओं से परिचित नहीं हैं। उन्हें उनके इस अबोध से अवगत कराते हुए एतत्-शास्त्रगत अनेक अतार्किक प्रतिपादनों एवं अक्षम्य विसंगतियों को उद्घाटित करना मेरे इस लेखनक्रम का उद्देश्य है।

इसी उद्देश्य से मैंने मेलापक पर "**ग्रहयोग एवं दाम्पत्य जीवन**" पुस्तक प्रकाशित की, जिसका तर्कनिष्ठ, पूर्वाग्रहमुक्त विद्वत्समाज ने सहर्ष स्वागत किया। इसी शृंखला में मुहूर्त्तशास्त्र पर मेरा वह "**मुहूर्त्तगजानन**" नया प्रकाशन है। मुझे विश्वास है, इसे सत्यान्वेषण की भावना से पढ़ता हुआ पाठक मुहूर्त्तशास्त्र की प्रामाणिकता को भांप सकेगा। मैंने यहां इस शास्त्र के सिद्धान्तों का विवेचन करते हुए यत्र-तत्र इस शास्त्र के विधि-निषेधों की तर्कविरोधिता की ओर पाठक का ध्यान आकृष्ट भी किया है। मुहूर्त्तशास्त्र के प्रामाणिक तथोक्त आर्ष एवं अन्य साहित्य का यथाशक्य गहनता से मैंने आलोडन किया है, जिसके परिणामस्वरूप फलित की अन्य शाखाओं की भांति इस शाखा पर भी मेरी आस्था ऋणात्मक ही है। इसे वैज्ञानिक मानने वालों को मैं उन्मुक्त चिन्तक नहीं मानता, वे पूर्वाग्रहाक्रान्त हैं। हमारे फलितज्योतिष-ग्रन्थों के नाम, जो उन्हें दिव्यद्रष्टा ऋषियों (वसिष्ठ, नारद आदि) द्वारा प्रणीत बतलाते हैं, सामान्यजन की बुद्धि पर एक ऐसा अपारदर्शक आवरण डाल देते हैं, जिसके कारण वह उनके द्वारा प्रतिपादित विषय को आदर्शरूप में अन्तिम, वैज्ञानिक परिणाम मानने को बाधित हो जाता है और प्रणेता पर परम श्रद्धावश वह उसे तार्किक विश्लेषण का विषय नहीं मानता। मेरा ऐसे सम्मोहित पाठकों से अनुरोध है, वे इस शास्त्र को सांसारिक विद्वज्जनों द्वारा ही प्रणीत समझें, तथोक्त दिव्यदृष्टि ऋषियों द्वारा प्रणीत नहीं। ऐसा समझकर पूर्वाग्रहमुक्त हो सत्यान्वेषण की भावना से इस शास्त्र का परिशीलन उन्हें इसका वास्तव स्वरूप वस्तुतः समझा सकेगा। इस शास्त्र के प्रति अनास्था के उद्भावक अनेक कारणों में से ये कुछ कारण विश्लेषण-पुरस्सर यहां नीचे '**स्थालीपुलाक न्यायेन**' उद्धृत किये जा रहे हैं। पूर्वाग्रह को तिलांजलि देकर इन्हें पाठक स्वयं भी तर्कनिकष पर कसें–

1. **यह शास्त्र धर्म-विशेष से सम्बद्ध है**–हमारा निःशेष मुहूर्त्तसाहित्य हिन्दू (आर्य) ऋषि-मुनि-आचार्यों द्वारा प्रणीत है। इसमें प्रयुक्त कालगणना चैत्रादि मास-तिथि- नक्षत्र-योग आदि हिन्दू-नक्षत्रशास्त्र की है। शुभकृत्य (मुहूर्त्त) के लिए ग्राह्यकाल नवरात्र आदि; पुण्यस्थान हरिद्वार, गया, प्रयागादि तीर्थ; वर्जितकाल देवशयन, श्राद्धपक्ष, होलाष्टक, भीष्मपंचक आदि

सभी हिन्दूधर्म से साक्षात् सम्बद्ध हैं। गोधूलिलग्न में (सायं चरागाह से लौटती गायों के चरणों से उठती पवित्र धूल के समय) सभी शुभकृत्यों को बिना मुहूर्त्तशोधन के करने की अनुमति इस शास्त्र को गोपूजक हिन्दूधर्म की आस्था से जोड़ती है। हिन्दुओं के परमपवित्र वेदों-गृह्यसूत्रों से इसका उद्‌गम है। अश्विनी आदि नक्षत्रों के अधिष्ठातृदेव (अश्विनी कुमार, यम आदि) भी, जिनकी प्रकृति-गुणधर्मानुसार विवाहादि मुहूर्त्तों से इनका सम्बन्ध स्थापित है, सभी वैदिक हैं। मुहूर्त्तों के अंगभूत ग्रह-देवों का पूजादि-अनुष्ठान सभी कुछ हिन्दूधर्ममूलक है। इसके अतिरिक्त इस शास्त्र की आर्यधर्मिता के पोषक अन्य सैकड़ों प्रमाण हमारे मुहूर्त्तसाहित्य में पदे-पदे उपलब्ध हैं, जिनके कारण इतरधर्मी लोग इसे प्रामाण्य नहीं देते। इससे स्पष्ट है—यह शास्त्र विश्वजनीन नहीं है।

2. तथोक्त निम्नवर्ण के लिए यह न्यायशील नहीं हैं—चतुर्वर्ण (ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य, शूद्रों) में से प्रथम तीन वर्णों (त्रिवर्ण=ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य) के लिए हमारे इन मुहूर्त्तशास्त्रों द्वारा निर्दिष्ट मुहूर्त्तनिर्णायक नियमों में तो कोई आपत्तिजनक विशेष अन्तर नहीं है। लेकिन शूद्रों (अन्त्यजों) के विवाहमुहूर्त्त के निर्धारण का सिद्धान्त तो इन धर्मशास्त्राचार्यों ने त्रिवर्णसम्बन्धी सिद्धान्त से सर्वथा भिन्न (विपरीत) बतलाया है। इस विषय में ये शास्त्र कहते हैं—'त्रिवर्ण (ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्यों) का विवाह-शास्त्रोक्त शुभकाल (भद्रा, व्यतीपात, वैधृति, अधिमास, गुरु-शुक्रास्तकाल आदि दोषों से रहितकाल) में और शूद्रों का इसके विपरीत अशुभ (भद्रादि दोषों से दूषित) काल में ही करना चाहिए, क्योंकि अशुभ काल ही शूद्रों के लिए शुभफलप्रद है। इस विषय में '**शृङ्ग ऋषि**' का यह वाक्य है—

> **"कृष्णे पक्षे भानु-भौमाऽर्कजानां वारे योगे चापि धिष्ण्ये निषिद्धे।**
> **संकीर्णानां दारकर्म प्रशस्तं प्रीत्यर्थायु:प्राप्तये शौनकाद्या: ॥"**

'एक हीभोगांशादि वाले ये ग्रह और लग्नादि त्रिवर्ण और शूद्र—दोनों के लिए भिन्न-भिन्न प्रभाव रखते हैं'—मुहूर्त्तकारों का यह प्रतिपादन कौन से वैज्ञानिक सिद्धान्त पर आधारित है, समझ में नहीं आता। हमारे '**समदर्शी**' ऋषि-मुनियों की जातिगत उच्च-नीच भावना का कितना जघन्य निदर्शन है यह। शुभवेला में विवाहित शूद्र कहीं त्रिवर्ण के समान या उससे उच्च स्तर पर न पहुंच जाये—यह दूषित भावना उनके इस विषम चिन्तन का मूल है।

3. इसके निर्णय सार्वत्रिक नहीं हैं—हमारे मुहूर्त्तशास्त्रीय सिद्धान्त प्रान्तभेद से बुरी तरह बदलते हैं। यह प्रान्तीय सिद्धान्तभेद एक दूसरे से सर्वथा प्रतिकूल होता है। इस स्थिति में दुविधाग्रस्त दैवज्ञ को मुहूर्त्तशास्त्रकारों ने प्रान्तीय परम्परानुसार ही मुहूर्त्तनिर्णय का परामर्श दिया है—"**देशाचारस्तावदादौ विचिन्त्य: देशे देशे या स्थिति: सैव कार्या** "।—*(बृहत्संहिता)*। इस विषय में शास्त्रकारों ने प्रान्तीय परम्पराओं के उल्लंघन को शास्त्रीय निर्णय के उल्लंघन से अधिक दोषावह लिखा है। कालिदास ने तो मुहूर्त्त के बारे में पारिवारिक परम्परा को भी शास्त्रीय निर्णय से बलवती बतलाया है। एक ही प्रकार की ग्रहस्थित्यादि विभिन्न स्थलों पर परस्पर विरोधी परिणाम दे—इसमें कोई वैज्ञानिक स्पष्टीकरण या तर्क है क्या ? (विशेष विवेचन मेरी पुस्तक '**मुहूर्त्त गजानन**' के पृष्ठ 157 पर दिये '**मुहूर्त्त-शोधन में प्रादेशिकता**' लेख में पढ़िये)।

4. कालभेद से यह परिवर्तनशील है—वैदिक काल में मुहूर्त्त के निर्णय में तिथि और नक्षत्रों का ही विशेषेण प्रयोग होता था*। उसी के आधार पर विवाहादि संस्कारों की वैधावैधता का निर्णय किया जाता था। भौमादि ग्रहों का वहां कोई योगदान नहीं था। रवि आदि वार तब अज्ञात थे। मेषादि राशियों के अज्ञान के कारण मुहूर्त्त में लग्नशुद्धि, नवांशशुद्धि जैसी कोई चीज़ नहीं थी। गुरु-शुक्रास्त, वेध, युति, क्रान्तिसाम्य आदि दोषों का विशाल दल भी वहां कोई बाधा नहीं डालता था। तब मुहूर्त्तसाधन सचमुच बाललीला थी। लेकिन अब तिथि, नक्षत्र के अलावा वार, योग, करण, सूर्य-चन्द्र से अन्य भौमादि सात और ग्रहों की भी स्थित्यादि तथा मेषादि लग्नों, नवांशों एवं गुरु-शुक्रास्त, सिंह-मकरस्थ गुरु, खर मास, वेध, युति, क्रान्तिसाम्य आदि 40-50 दोषों का विचार मुहूर्त्तों के निर्धारण में अनिवार्यत: करना होता है। इससे स्पष्ट है, हमारा अद्यतनीन मुहूर्त्तनिर्णय वैदिक मुहूर्त्तनिर्णय से सर्वथा भिन्न है। जो मुहूर्त्त वैदिक मुहूर्त्तपद्धति से शुद्ध है, 99 प्रतिशत सम्भव है, वह आधुनिक मुहूर्त्तशास्त्रीय पद्धति से अशुद्ध

---

* *ध्यान दें—वैदिक कालीन तिथि-नक्षत्र भी आधुनिक सिद्धान्तागत हमारे तिथि-नक्षत्रों से पर्याप्त भिन्न हैं।*

भी होगा और जो मुहूर्त वर्तमान प्रणाली से शुद्ध है, वह भी वैदिक प्रणाली से अनेकत्र अशुद्ध हो सकता है। इससे सिद्ध है, मुहूर्त्तीय शुद्धकाल की परिभाषा युगानुसार बदल गयी है। परमपावन अनादि वेदों द्वारा निर्दिष्ट या आदिष्ट मुहूर्त्तसिद्धान्तों का भी कायाकल्प हमने कर डाला है। मुहूर्त्तशास्त्र को विज्ञान मानने वालों का मुहूर्त्तसिद्धान्तों में इस महाक्रान्ति के बारे में क्या स्पष्टीकरण है? वैज्ञानिक सिद्धान्त तो कालानुसार नहीं बदला करते, वे तो सार्वकालिक (त्रिकालाबाधित) हुआ करते हैं।

यहां हम एक ऐसे कुत्सित मुहूर्त्त के बारे में भी कुछ लिखना आवश्यक समझते हैं, जिसका उत्तरभारत में प्रवेश अभी 40-45 वर्ष पूर्व ही हुआ है, वह है **'राहुकाल'**, जिसे शुभकार्यों में वर्जित माना जाता है। राहुकाल का प्रयोग द. भारत में तो प्राचीनकाल से ही चला आ रहा है। शक्तिशाली प्रचार/संचार-माध्यमों (Media) की कृपा से अब उ.भारत में भी यह प्रविष्ट हो, सामान्यजन में पूरी तरह प्रचरित हो गया है। संहिताओं तथा अन्य किसी भी मुहूर्त्तग्रन्थ में इसकी तनिक भी चर्चा नहीं है। उत्तर भारत में अभी तक जनसामान्य में राहुकाल के स्थान पर **यामार्धकाल (प्रहरार्धकाल)** का शुभकृत्यों में वर्ज्यकाल के रूप में पूर्ण प्रचार रहा है। लेकिन अब उसका स्थान राहुकाल ने ले लिया है। हमारे संहितादि मुहूर्त्तसाहित्य में विवाहादि शुभकृत्यों के मुहूर्त्तशोधन में यामार्ध को अनिवार्यत: वर्जित करने का निर्देश है। **वसिष्ठ** का कथन है–यामार्ध में शुभकृत्य करने पर कर्ता की मृत्यु होती है–**" निधनं प्रहरार्धे तु "**। यह ध्यातव्य है कि, यामार्धकाल भी राहुकाल की ही भांति दिन के समय रवि आदि सातों वारों में डेढ़-डेढ़ घण्टा की विभिन्न अवधियों में ही घटित होता है। केवल बुधवार को छोड़कर शेष सभी वारों में राहुकाल और यामार्ध भिन्न-भिन्न कालों में घटित होते हैं। इसके परिणामस्वरूप उत्तरभारत का वह व्यक्ति, जो अब यामार्ध के स्थान पर राहुकाल को शुभकार्य में वर्जित करने लगा है, अब वह यामार्ध, जिसे वह आज से 50 वर्ष पूर्व तक कार्यनाशक मानता था, में शुभकार्य कर रहा है। क्या इससे यह सिद्ध नहीं होता–वह व्यक्ति 50 वर्ष पूर्व ('राहुकाल' के उ. भा. में प्रवेश से पूर्व) यामार्ध को कार्यनाशक, अशुभकारी मानता रहा, अब वह राहुकाल को कार्यनाशक, अशुभकारी मान रहा है। अत: उसी से वह बचना चाहता है, यामार्ध से नहीं। द.भारत के लोग तो शताब्दियों से राहुकाल को ही वर्ज्य मानते चले आ रहे हैं, यामार्ध में भी वे शुभकृत्य करते रहे हैं और कर रहे हैं। कालभेद और स्थानभेद से शुभ-अशुभ काल की परिभाषा बिल्कुल बदल जाती है। कितनी दुर्दशा है, बेचारे मुहूर्त्तशास्त्र की। क्या इससे यह प्रमाणित नहीं होता कि–शुभ और अशुभकाल की कल्पना वैज्ञानिक नहीं, मनोवैज्ञानिक मात्र है। इस प्रकार समय-समय पर परिवर्तनशील एवं नवागन्तुक ये मुहूर्त्तसिद्धान्त हमें बतलाते हैं कि–शुभ मुहूर्त्त की परिभाषा नित्य नहीं, वह कभी भी बदल सकती है। आज जिस क्षण को हम शुभ मान रहे हैं, वह आगे चलकर कभी अशुभ भी हो सकता है और जिसे आज हम अशुभ मान रहे हैं, आगे भविष्य में वह शुभ भी।

(इसी सन्दर्भ में मेरी पुस्तक 'मुहूर्त्त गजानन' पृष्ठ 159 पर 'राहुकाल–एक समीक्षा' और पृष्ठ 163 पर 'कालसर्प योग–एक प्रवंचना' लेख भी पढ़िये।)

5. इसके निर्धारण निरुपपत्तिक सादृश्यमूलक हैं–फलित ज्योतिष की प्रत्येक शाखा में फलादेश का निर्धारण किसी न किसी रूप में किसी सादृश्य से अनुप्राणित रहता है। यह सादृश्य अनेकत्र स्पष्ट लक्षित भी होता है। **उदाहरणार्थ इस प्रकार के मुहूर्त्तशास्त्रीय तीन रोचक सादृश्यमूलक फलादेशों की ओर हम यहां पाठकों का ध्यान आकृष्ट करते हैं**–

(i) पाणिग्रहण के समय वर यदि कन्या का अंगुष्ठ पकड़े तो पुत्र, अंगुलि पकड़े तो लड़कियां पैदा होती हैं।

(ii) कूपादि जलाशय के खननमुहूर्त्त में जलचरराशि (कर्क, मकर-उत्तरार्ध, कुम्भ, मीन) चतुर्थ भाव में हो तो पर्याप्त जल प्राप्त होता है।

(iii) मनुष्य का पुतला सिंह लग्न के समय कृषिक्षेत्र में गाड़ने से मृग भाग जाते हैं।

देखिये–'पाणिग्रहण के समय कन्या के अंगुष्ठग्रहण से पुत्र और अंगुलिग्रहण से पुत्री प्राप्त होती है'–इस फलादेश की **गृह्यसूत्रकारों** ने विलक्षण उपपत्ति यह बतलाई है कि–अंगुष्ठ शब्द पुल्लिंग है और अंगुलि शब्द स्त्रीलिंग। अत: पाणिग्रहण में इनका ग्रहण इनके लिंगानुसार पुत्र या पुत्री सन्तति देगा। यह संस्कृत की दृष्टि से तो ठीक है, लेकिन भाषान्तर में इन शब्दों के लिंग और भी तो हो सकते हैं। English में अंगुष्ठ और अंगुलि के वाचक शब्द क्रमश: Thumb एवं Finger–दोनों

नपुंसकलिंग है। जिससे English भाषा को इस विषय में प्रमाण मानने पर तो परिणाम हमेशा अवांछित ही रहेगा।

शब्द के लिंग में ऐसी तर्कहीन दिव्य क्षमता की कल्पना करने वाले ये मुहूर्त्तशास्त्री सचमुच धन्य हैं।

चतुर्थभावस्थ जलचर राशि (कर्क, मकर-उत्तरार्ध, कुम्भ, मीन) के समय भूखनन से प्रचुर जल प्राप्त होता है–यह एक भारी निर्युक्तिक कल्पना है। चतुर्थभाव हमेशा पृथ्वी के अधोभाग में, हमसे 180° की दूरी पर (पाताल की ओर) रहता है। इस स्थल पर जलचरराशि की स्थिति से वहां प्रचुर जलस्रोत देखने वाले मुहूर्त्तशास्त्रियों का ध्यान पृथ्वी के अक्षभ्रमण की ओर नहीं गया–आश्चर्य है। **ध्यान रहे**–पृथ्वी के अक्षभ्रमण के कारण कोई भी राशि किसी स्थल पर मध्यममानेन दो घण्टा से अधिक नहीं टिकती। पृथ्वी के अक्षभ्रमण के कारण वह खगोलस्थ ताराओं की भांति पूर्व से पश्चिम की ओर चलती हुई लगभग 24 घं. में पृथ्वी की पूरी परिक्रमा कर लेती है। इससे स्पष्ट है– कोई भी जलचर या अन्य राशि, जो अब हमारे चतुर्थभाव में है, लगभग छह घण्टा बाद हमारे पूर्वीक्षितिज पर तदनन्तर छह-छह घण्टों के अन्तराल पर वह क्रमशः हमारे मध्याकाश (दशमभाव), अस्तक्षितिज (सप्तमभाव) और तदनन्तर पुनः (24 घण्टा बाद) चतुर्थभाव में पहुंच जाती है। देखिये, इससे यह भी सिद्ध होता है कि–जलचरराशि के साथ-साथ भूगत जलस्रोत भी 24 घण्टों में पृथ्वी का पूरा भ्रमण कर जाता है। इस अटपटी कल्पना पर, भूगर्भशास्त्री का तो छोड़िये, सामान्यजन (Man in the street) भी सहमत नहीं होगा। अब आप ही बताइये--जलाशयखनन के इस मुहूर्त्त में क्या वैज्ञानिकता है?

सिंहलग्न में रोपित पुतला मृगों को सिंह की भांति भयंकर लगेगा, यह कल्पना "**जन्मकालिक राशिनक्षत्र के गुण-कर्म जातक में संक्रान्त हुआ करते हैं**", फलित के इस तथोक्त सिद्धान्त पर आधारित हैं। फलित प्रवर्त्तकों ने फलितसाहित्य के निर्माण में इस सादृश्यमूल काल्पनिक सिद्धान्त का प्रयोग जी भर किया है। इसी भ्रामक आधार पर लोग अपने बच्चों के नाम अवतार एवं महापुरुषों के नामों पर रखना पसन्द करते हैं। नाम के अनुरूप व्यक्ति के गुणादि धर्मों की कल्पना में मनोवैज्ञानिक धारणा के अतिरिक्त और कुछ भी नहीं है।

इस प्रकार मुहूर्त्तशास्त्र-प्रतिपादित फलादेश का बहुत बड़ा भाग मिथ्यासादृश्य की देन है, तर्क से इसका कोई वास्ता नहीं है। इसमें विज्ञान के तत्त्व ढूंढना शशकशृंग ढूंढने के समान निष्फल है।

6. स्त्रीजाति के प्रति यह संकीर्ण-हृदय है–प्रत्येक मुहूर्त्तग्रन्थ में स्त्रियों के प्रथम रजोदर्शन जैसी गोपनीय घटना का अनावश्यक प्रयोगानर्ह शुभाशुभ फल विस्तार से चर्चित है। पू.फा., पू.षा., पू.भा., भर., आश्ले. नक्षत्रों में प्रथम रजोदर्शन कन्या को निश्चित विधवा बनाता है–"**पूर्वात्रये याम्यभुजंग-धिष्ण्ये वैधव्यमस्या भवतीति नूनम्**" । प्रथम रजःस्राव के समय कन्या नीले वस्त्र पहने हो या नग्न हो तो भी मुहूर्त्तकारों ने उसका फल वैधव्य लिखा है। कुछ तिथि, नक्षत्र तथा अवस्थाएं ऐसी भी बतलाई हैं, जिनमें प्रथमार्त्तव का आविर्भाव कन्या को दुर्वृत्ता या सद्‌वृत्ता, सधना या निर्धना, सपुत्रा या अपुत्रा बनाता है। यही नहीं प्रथमरजस् के अधोवस्त्र पर लगे सम या विषमसंख्यांक रक्तबिन्दुओं से भी मुहूर्त्ताचार्यों ने पुत्र-पुत्री के जन्म की भविष्यवाणी की है। कोई भी कन्या शालीनतावश अपने आद्य रजःस्राव का काल कभी नहीं बतलाती। यदि यह मान लें कि--उसकी प्रथम रजःप्रवृत्ति कब, किस स्थिति में हुई, यह दैवज्ञ जान भी लेता है तो भी इससे सम्बद्ध उसके वैधव्य, सौभाग्य आदि फलों का विनियोग (Application) वह कहां, कैसे करेगा? मेलापकविचार-प्रसंग में कन्या के वैधव्य, सौभाग्य का निर्धारण उसकी प्रथम रजःप्रवृत्ति के आधार पर भला कोई दैवज्ञ करता देखा है और उसके गर्भस्थ शिशु के लिंगनिर्धारण के लिए प्रथम रजःस्राव में अधोवस्त्र पर लगे सम-विषमसंख्यांक रक्तबिन्दुओं की गणना भला कोई दैवज्ञरत्न करता किसी ने पाया है क्या? जब इसका कोई उपयोग ही नहीं, प्रयोग नहीं, तब इस विषय पर मुहूर्त्तशास्त्रियों का इस प्रकार का फलादेशनिर्देश स्पष्टतःअर्थहीन सिद्ध होता है। वैसे, इस सर्वथा अप्रयोज्य एवं गोप्य स्त्रीधर्म का इतना सप्रपंच व्याख्यान मुहूर्त्तशास्त्रियों की बुद्धिमत्ता का निदर्शन नहीं है।

स्त्रियों के प्रति फलित ज्योतिष न्यायशील नहीं है। इसे मेलापकप्रक्रिया एवं जातकीय फलादेश तथा हमारे प्रकृतविषय मुहूर्त्त से सम्बद्ध प्रतिपादनों में पाठक स्पष्ट रूप में देख सकते हैं। इस मुहूर्त्तसाहित्य के परिशीलन से पता चलता है कि--कन्या को हमारे मुहूर्त्तकार अनभीप्सित-सी सन्तति समझते हैं। इसके पोषक अनेकों प्रमाण हैं, जिनमें से एक ऐसे प्रमाण को यहां

उपन्यस्त किया जा रहा है—

गर्भाधानादि षोडश संस्कारों में एक **'पुंसवन संस्कार'** है। अन्य संस्कारों की भांति यह भी अनिवार्य है। गर्भ के तीसरे मास में, जबकि शिशु का लिंग निर्धारित होता है, यह संस्कार करना होता है। इस संस्कार का उद्देश्य है कि—गर्भवती स्त्री पुमान् सन्तति को जन्म दे। यह इस संस्कार के वाचक शब्द **'पुंसवन'** (पुरुषप्रसूति) से भी स्पष्ट है। प्राचीन काल से ही अनेक धार्मिक तथा अन्य कारणों से हिन्दूसमाज कन्या को अवांछित सी सन्तति मानता चला आ रहा है। हमारे षोडश संस्कारों में **'पुंसवन संस्कार'** का समावेश इसमें प्रमाण है। **देखिये—'स्त्रीसवन'** की कल्पना उन्होंने नहीं की। माना जाता है—पुंसवन संस्कार करने पर पुत्र ही उत्पन्न होता है। यदि कहीं यह संस्कार मुहूर्त्त-शास्त्रीय प्रतिज्ञानुरूप सचमुच प्रभावी होता, तो सोचिये, इस मुहूर्त्त को अनिवार्यत: अनुष्ठित करने वाले इस समाज की क्या दशा होती? पुरुषों का ही समाज कितने दिन चलता? पुंसवनमुहूर्त्त की अनुकम्पा से स्त्रीजाति के विलय के कारण वह स्वयं भी कभी का विलीन (Extinct) हो गया होता। प्रभु की अपार कृपा से यह मुहूर्त्त व्यभिचरणशील है, क्योंकि इसका कोई वैज्ञानिक आधार नहीं है। इससे आप अन्य मुहूर्त्तों की 'वैज्ञानिकता' का भी अनुमान भलीभांति लगा सकते हैं।

वैसे तो मुहूर्त्तों के बारे में समालोच्य भारी विषयसामग्री है, लेकिन तर्कशील प्रेक्षावान् पाठक के लिए इतना पर्याप्त है*।

मुहूर्त्तसम्बन्धी उल्लिखित विवेचन से स्पष्ट है—फलितज्योतिष की यह शाखा भी किसी ठोस आधार पर नहीं टिकी है। स्थानभेद, जातिभेद, लिंगभेद एवं समयभेद से इसके नियम, आधारभूत तत्त्व परिवर्तनशील हैं। किसी भी युग में कभी कोई नया निर्णायक तत्त्व भी इनमें आसानी से प्रविष्ट हो जाता है, जिससे शताब्दियों तक बद्धमूल पुराने निर्णायक सिद्धान्त बुरी तरह धराशायी हो जाते हैं। इसकी तर्कप्रतिकूलता चिन्तनशील बुद्धिजीवी को बुरी तरह अखरती है। सारांश यह है—यह शास्त्र विश्वजनीन, सार्वदैशिक एवं त्रिकालाबाधित नहीं है, फिर ऐसे इस शास्त्र को प्रामाणिक या वैज्ञानिक भला कैसे कहा जा सकता है?

दाम्पत्यजीवन और गुण-कुण्डली-मिलान

(ग्रहयोग एवं दाम्पत्यजीवन की भूमिका)

जबकि मैं फलितज्योतिष के व्यवसाय से अपने आपको सुदूर रखने का पूरा प्रयास करता हूं, तथापि फलित पर आस्थावान् मेरे कुछ मित्र-बन्धु एवं उनके भी मित्र-बन्धु अपनी ग्रहसमस्याओं के फलितीय समाधान के लिए मेरा परामर्श बलात् उद्धृत करने के लिए मेरे यहां आते ही रहते हैं। आश्चर्य की बात तो यह है कि—इस शास्त्र की विश्वसनीयता पर अभिव्यक्त मेरे स्वच्छन्द विचारों को सुनने के बावजूद भी अपने जन्मपत्र का रोल मेरे सम्मुख स्वयं रखते हुए, उस पर कुछ न कुछ फलितशास्त्रीय टिप्पणी करने के लिए मुझे बाधित करने से वे चूकते नहीं हैं। इन लोगों की समस्याओं में एक विशेष समस्या, जिसके लिए अपेक्षाकृत अधिकतर मित्र-बन्धु मुझे यदा-कदा कष्ट देते रहते हैं, वर-कन्या की कुण्डलियों के मिलान की है। ये दोनों मंगली हैं या नहीं?, अष्टकूटों में गण, नाड़ीदोष है, षडष्टक भी है—इनका क्या परिहार सम्भव है? इन दोनों का सम्बन्ध कर देने पर क्या इनका दाम्पत्यजीवन सुख-समृद्धि-सम्पन्न रहेगा?, अमुक ज्योतिषी इस मिलान को ठीक बतला रहा है, अमुक इसके पक्ष में नहीं है—इत्यादि अनेक बातों के स्पष्टीकरण या समाधान के लिए वर-कन्या के माता, पिता तथा कई बार तो उनके साथ उनके दैवज्ञ भी पधारते हैं। मैंने अधिकतर दैवज्ञों को मिलान के विषय में बुरी तरह उलझा पाया। मैंने उनका मेलापकसम्बन्धी निर्धारण नितान्त स्थूल, स्पष्ट शब्दों में कहूं तो, अक्सर अशास्त्रीय ही देखा। यही कारण है—मुझे, फलित की किसी भी विधा पर आस्था न होते हुए भी, इस पर आस्थावान् लोगों के लिए मिलान पर यह पुस्तक लिखने के लिए उद्यत होना पड़ा।

** शताब्दियों से प्रयुज्यमान हमारे प्राचीन सिद्धान्तग्रन्थों द्वारा निर्दिष्ट राशिचक्र और सूर्य आदि ग्रहों के भोगांशादि में 'पंचांग-संशोधन' जन्य परिवर्तन तो जातक, मुहूर्त्त आदि सभी फलितशाखाओं के फलादेश में असह्य व्यत्यय पैदा करता है। विस्तारापेक्षी इस विषय को मैं यहां प्रपंचित नहीं करना चाहता। इसके लिए मेरी पुस्तक 'ग्रहयोग एवं दाम्पत्यजीवन' के पृष्ठ 229 पर दिया लेख* ***'भारतीय राशियों के विचलित प्रारम्भबिन्दु'*** *पढ़ना चाहिए।*

फलितज्योतिष की प्रत्येक,शाखा, प्रशाखा भारी अन्तर्विरोधों का शिकार है, जिससे फलित की किसी भी शाखा पर शुचिता एवं प्रतिज्ञापूर्वक प्रामाणिक लिखने का प्रयास करने वाला तर्कशील व्यक्ति भारी धर्मसंकट में फंस जाता है। इस शास्त्र के विभिन्न लेखकों, आचार्यों, मुनियों, ऋषियों द्वारा प्रणीत रचनाओं (संहिता-जातक-मुहूर्तसाहित्य) को पढ़ते हुए प्रत्येक साधारण पाठक को भी पदे-पदे इतने स्पष्ट विरोधों से साक्षात्कार होता है कि—वह इस शास्त्र की प्रामाणिकता को सन्देह की कोटि में रखे विना नहीं रह सकता। मिलान की यह शाखा भी ऐसे विरोधों से वंचित नहीं है। इस विषय पर शास्त्रकारों में तो मतभेद है ही, प्रान्तीय या स्थानीय परम्पराओं के अनुसार भी मिलान के सिद्धान्तों में भारी मतभेद देखने को मिलता है, जिससे एक प्रान्त की परम्परानुसार निर्धारित मिलान की ग्राह्याग्राह्यता दूसरे प्रान्त की परम्परानुसार बिल्कुल बदल जाने की स्थिति में अनेक बार आती है। द.भारत में द्वितीय भाव को भी दाम्पत्य जीवन की समृद्धि, व्यृद्धि के लिए उत्तरदायी माना गया है, जबकि उ.भारत के अधिकतर भाग में केवल सप्तमभाव को ही इस विषय में उत्तरदायी मानने की दैवज्ञ- परम्परा है। उ.भारत तथा द.भारत के जातकग्रन्थों में भी यह भेद स्पष्ट लक्षित होता है। इस मतभेद के कारण कुजदोष (मंगलीदोष) या कुण्डलीमिलान के बारे में दोनों पक्षों के अनुयायी दैवज्ञ एक परिणाम पर नहीं पहुंच पाते। यही नहीं, द. भारतीय दैवज्ञों द्वारा वर-कन्या के कुजदोष के जो बलाबल (या सप्तमभाव के दूषक क्रूर ग्रहों के जो बलाबल) परम्परया अपनाये जा रहे हैं, वे अधिकतर जातक-मुहूर्त्त-संहिताग्रन्थों में निर्दिष्ट सिद्धान्तों के अनुरूप नहीं हैं। अतः इन जातक-संहिता-मुहूर्त्तग्रन्थों के अनुसार किये गये मिलान की शुभाशुभता उनके मिलान की शुभाशुभता से अनेकत्र वैमत्य रखती है। मैंने इस पुस्तक में प्रामाणिक जातक, संहिता तथा मुहूर्त्तग्रन्थों में निर्दिष्ट नियम-सिद्धान्तों को अपनाकर मतभेद के स्थलों पर बहुमत का सम्मान करते हुए अन्तिम निर्धारण करने का पूरा प्रयास किया है। जिन योगायोगों को दाम्पत्यजीवन की सुख-दुःखमयता के प्रतिपादक के रूप में मैंने यहां स्वीकार किया है, उन सबके समर्थक संहितादि के प्रमाणवाक्यों को मैंने यहां प्राचुर्येण उद्धृत भी किया है।

ध्यान रहे—मैंने जो कुछ इस पुस्तक में सिद्धान्तरूप में प्रतिपादित किया है, वह किसी भी दृष्टि से मेरा अपना नहीं है। वह सब फलित के मूल एवं परम्परया दैवज्ञों द्वारा सम्मानित फलित ग्रन्थों से मैंने किसी पूर्वाग्रह से मुक्त होकर लिया है, और उसे यथावत् यहां उपस्थापित कर दिया है। जहां कहीं भी मुझे अन्तर्विरोध दीख पड़ा, वहां मैंने फलितशास्त्रीय सिद्धान्त तथा तर्कों से उसका समाधान करते हुए तर्कसंगत किसी एकमत को सिद्धान्तत्वेन मान्यता देने का परामर्श अवश्य दिया है।

इससे पूर्व कि—इस पुस्तक के प्रतिपाद्य विषय का परिचय दूं, मैं मिलान एवं इससे सम्बद्ध कुछ सिद्धान्तों के कुछ पहलुओं पर अपना स्पष्ट मन्तव्य यहां प्रकट करना आवश्यक समझता हूं—

सभी **वसिष्ठ, नारद** आदि संहिताग्रन्थों में वर-कन्या के विवाहसम्बन्ध के निर्णय के लिए केवल वर्ण, गण, नाड़ी आदि कूटों के विचार की ही बात लिखी है। इन ग्रन्थों के मिलानप्रकरणों में इन कूटों के कुफल एवं इनके परिहार आदि की सुविस्तृत विवेचना मिलती है और इन्हीं-कूटों के आधार पर ही वर-कन्या के विवाहसम्बन्ध की शक्याशक्यता का वहां निर्णय किया गया है। लेकिन वहां कहीं भी कुण्डली-मिलान की चर्चा तक नहीं है। 16वीं शती के **मुहूर्त्तचिन्तामणि, मुहूर्त्तमार्त्तण्ड** आदि मुहूर्त्तग्रन्थों में भी मिलान के प्रसंग में अष्टकूटों को ही विचार्य लिखा गया है। जन्मकालिक मंगल आदि की स्थिति आदि से मिलान का कोई सम्बन्ध इन मौहूर्त्तिकों ने कदापि नहीं माना। 17वीं शती के **'प्रश्नमार्ग'** का आनुकूल्य (मिलान) प्रकरण सुविस्तृत है। वहां भी वर्ण आदि कूटों को ही विवाहसम्बन्ध के लिए एकमात्र आधार लिखा गया है। **'ज्योतिर्विदाभरण'** आदि समस्त प्राचीन मुहूर्त्तग्रन्थों में भी कूटों को ही वर-कन्या के सम्बन्ध के लिए विचारणीय विषय बतलाया गया है। परम आश्चर्य है—**'विवाहवृन्दावन'**, जिसका एकमात्र विषय वर-कन्या के सफल विवाहसम्बन्ध के ज्योतिषशास्त्रीय आधार का सांगोपांग विवेचन ही है, केवल अष्टकूटों का ही विवेचन करता है। इसके रचयिता **केशवार्क** ने भी वर-कन्या की जन्मकालिक ग्रहस्थिति के आधार पर विवाह-सम्बन्ध की सफलता-विफलता की ओर यत्किंचित् भी संकेत नहीं किया। लगभग 500 वर्ष से भी पुरानी कृति सुप्रसिद्ध मुहूर्त्तग्रन्थ **शीघ्रबोध** के रचयिता श्री **काशिनाथ** ने भी मिलान के प्रसंग में अष्टकूटों के अलावा अन्य किसी विषय को नहीं माना। **'बृहज्जातक'** (5-6ठी शती) आदि के सभी प्राचीन जातकग्रन्थकारों ने दाम्पत्यजीवन को दौर्भाग्य-सौभाग्यशाली बनाने वाली ग्रहस्थिति, युति आदि का सुविस्तृत फलितशास्त्रीय विवरण अवश्य दिया है, लेकिन वर-कन्या की

ग्रहस्थिति के मिलान से उसका कोई सम्बन्ध उन्होंने कहीं भी प्रदर्शित नहीं किया। हां, अत्यन्त परवर्ती (शायद 16वीं शताब्दी के) दैवज्ञ **वैद्यनाथ** की कृति '**जातकपारिजात**' में वर-वधू की ग्रहस्थितियों के मिलान से दाम्पत्यसुखहारी कुयोग के कुफल की निवृत्ति की बात केवल इस श्लोक में अवश्य मिलती है–

"**द्यून-कुटुम्बगतौ यदि पापौ दारवियोगज-दुःखकरौ तौ। तादृशयोगज-दारयुतश्चेत् जीवति-पुत्र-धनादियुतश्च॥**"

इस पद्य के अलावा अन्यत्र किसी भी (जहां तक मेरा अध्ययन है) फलित ज्योतिषग्रन्थ में वर-कन्या की जन्मकालिक ग्रहस्थितियों की तुलना से दाम्पत्यसम्बन्ध के शुभाशुभ फलादेश का उल्लेख नहीं है। '**मुहूर्त्त चिन्तामणि**', '**धर्म-सिन्धु**' तथा '**भाव कुतूहल**' आदि के कर्त्ताओं ने वर-कन्या की जन्मकालिक ग्रहस्थिति से उत्पन्न वैधुर्य एवं वैधव्य योग के दोष की निवृत्ति के लिए प्राजापत्य, चान्द्रायणव्रत तथा कुम्भ-प्रतिमाविवाह को ही बतलाया है। '**मार्कण्डेय पुराण**' में भी वैधव्य योग की शान्ति के लिए कन्या के कुम्भ-द्रुम-प्रतिमादि के साथ विवाह की प्रक्रिया का निर्देश है। इसके प्रतिकार के रूप में कुण्डलीमिलान का इन शास्त्रकारों ने संकेतमात्र भी नहीं किया है।

समान रूप से दाम्पत्यसुख-विरोधी कुयोगों में जन्मे वर, कन्या का विवाह कर देने पर उनके कुयोग परस्पर टकराकर नष्ट-भ्रष्ट हो जायेंगे–ऐसा ग्रहस्थिति-मिलान के पक्षपाती दैवज्ञों का कहना है। इसके समर्थन में वे '**विषस्य विषमौषधम्**' का तर्क देते हैं। वह सर्वथा असंगत तर्क या तर्काभास है। जबकि दोनों (वर-कन्या) की ग्रहस्थितियां एक दूसरे की मारक हैं, तब वे एक दूसरे को (वर की ग्रहस्थिति कन्या को, कन्या की वर को) ही मारेंगी। एक की ग्रहस्थिति दूसरे की ग्रहस्थिति की तो मारक नहीं है। यहां तो '**सुन्दोपसुन्द**' न्याय से वर-कन्या को और कन्या वर को–इसप्रकार दोनों एक दूसरे को निश्चित रूप से मारने की स्थिति में हैं। यदि वर-कन्या की इस प्रकार की ग्रहस्थितियां, जो दोनों की परस्पर मारक हैं, विवाह-सम्बन्ध हो जाने पर शान्त (अमारक) हो जायेंगी, तब तो इसी सादृश्य के आधार पर हमें यह भी स्वीकार करना होगा कि–'कुलटा पत्नी' योग वाले वर का 'वेश्यागामि-पति' योग वाली कन्या से विवाह-सम्बन्ध हो जाने पर वर-कन्या दोनों सच्चरित्र भी हो जाने चाहिएं। इसी नियम के अनुसार तो अपुत्रयोग वाली कन्या का अपुत्र योग वाले वर से तथा दारिद्र्य योग वाली कन्या का दारिद्र्य योग वाले वर से विवाहसम्बन्ध भी क्रमशः पुत्रसुख एवं सम्पत्तिशालिता का कारण हो जाना चाहिए।

किंच–ग्रहस्थितियों के मिलान से वर, कन्या की दीर्घायु (आकालिक वैधुर्य और वैधव्य के अभाव) के सिद्धान्त को मान्यता देने से जातकग्रन्थोक्त अल्पायु बतलाने वाले योग निरर्थक सिद्ध हो जाते हैं। इससे तो यह भी हमें मानने के लिए बाधित होना पड़ता है कि–**वराहमिहिर, सत्याचार्य, यवनाचार्य, जैमिनि, केशव** दैवज्ञ आदि द्वारा बतलाई गयी जो जातक एवं जातिका (वर-कन्या) की आयु के वर्ष-मासादि साधन की लम्बी प्रक्रियाएं हैं, वे प्रतिबन्धात्मक (conditional) हैं। अर्थात् आयुसाधन की श्रमसाध्य प्रक्रिया से जो व्यक्ति की आयु के वर्ष-मासादि दैवज्ञ लोग ज्ञात करते हैं, उनकी सत्यता या असत्यता विवाहसम्बन्ध के लिए अपनाये जाने वाले मिलान-सिद्धान्त पर निर्भर करती है। दूसरे शब्दों में हमें ऐसा कहना होगा कि–आयुसाधन-प्रक्रिया से प्राप्त जातक की आयु के वर्ष आदि का मान उसके जीवनसाथी के सप्तमभाव-सम्बन्धी कुयोगों या सुयोगों पर निर्भर करता है, यानी उसके सुयोग उसे बढ़ायेंगे और कुयोग उसे कम या लगभग शून्य भी कर देंगे, क्योंकि मिलान ठीक न होने पर तीव्र वैधव्ययोग वाली कन्या से विवाहित वर या तीव्र वैधुर्य योग वाले वर से विवाहित कन्या अल्पकाल में ही दिवंगत हो जाती है–ऐसा मेलापक का सिद्धान्त है। लेकिन आयु का साधन करते हुए मेलापक से उत्पन्न आयुःक्षय या आयुवृद्धि करने का कोई संकेत हमारे **केशव, जैमिनि** आदि ने बिल्कुल नहीं किया। मेलापक का यह सिद्धान्त मारकेश की दशा, अन्तर्दशा के आधार पर **पराशरानुयायी** दैवज्ञों द्वारा की जाने वाली जातकों की मृत्यु-रोग आदि की भविष्यवाणियों की स्वातन्त्र्येण प्रवृत्ति को भी झुठलाता है।

यही नहीं, वर-कन्या के अष्टकूटों का मिलान करते हुए जो नाड़ी, नवपंचम, मृत्युषडष्टक, गण, राशिकूट आदि दोषों के पति-पत्नी-मृत्यु, सन्तानाभाव आदि कुफल बतलाये जाते हैं, वे भी वर-कन्या की जन्मकालीन ग्रहस्थिति आदि द्वारा उत्पादित फलों से अनेकत्र समन्वय नहीं रखते। जातककारों ने भी ग्रहस्थितिजन्य फलादेश को ही अन्तिम रूप से जातक पर प्रभावक माना है। इस फलादेश में अष्टकूटजन्य सुफल, कुफल द्वारा किसी प्रकार के परिवर्तन, परिवर्धन आदि की ओर वे इंगित भी नहीं करते।

उपरोक्त विवेचन से स्पष्ट है कि—वर, कन्या के कूटों तथा ग्रहस्थितियों से सम्बद्ध मिलान की प्रक्रिया से ज्ञात फलादेश जातकीय फलादेश (जन्मपत्र के माध्यम से की जाने वाली भविष्यवाणियों) से कोई सामंजस्य नहीं रखता। मिलानप्रक्रिया एवं जातकोक्तपद्धति—दोनों से आदिष्ट फलादेशों में अनेकत्र प्रत्यक्ष विरोध भी रहता है।

किंच—वैदिक साहित्य तथा स्मृतियों में भी वर-वधू के चयन में उनकी जन्मकालिक ग्रहस्थिति, नक्षत्र-राशि के विचार का निर्देश नहीं है। विवाहसम्बन्ध के लिए वर, कन्या के केवल स्वास्थ्य, सौन्दर्य, शिक्षा, सद्वंश, गोत्र आदि को ही वहां विचार्य लिखा है। वेद, पुराण, महाकाव्य आदि में जो उपाख्यान आदि हमें मिलते हैं, उनमें भी सर्वत्र स्त्री एवं पुरुष को दाम्पत्यबन्धन में बांधने का अधिकतर कारण उनका एक दूसरे के प्रति आकर्षण ही बतलाया गया है। उनके जन्मकालिक नक्षत्र, राशियों या ग्रहस्थितियों का कोई नियन्त्रण उनके प्रणय-विवाह पर नहीं दिखाई पड़ता। संस्कृत के सभी नाटकों, काव्यों और कथाओं के नायक एवं नायिकाओं का दाम्पत्यभाव भी अष्टकूट तथा कुण्डली मिलान जैसे किसी ज्योतिषशास्त्रीय अनुशासन से प्रतिबद्ध नहीं दीख पड़ता। वहां सर्वत्र उन दोनों के एकमात्र चक्षूराग को ही विवाहसम्बन्ध का प्रवर्त्तक बतलाया गया है। मेलापक द्वारा निर्धारित विवाहसम्बन्ध का युग अब बड़ी द्रुतगति से समाप्त होने जा रहा है, जीवनसाथी का चुनाव अपनी ही रुचि के अनुरूप करने की संस्कृति पनपने लगी है। ऐसा स्पष्ट दीख पड़ रहा है कि—जाति, गोत्र आदि के परम्परागत धार्मिक नियन्त्रणों को विच्छिन्न कर स्वयंवरण की चिरव्यवहित पौराणिक परम्परा अब दो-तीन दशाब्दियों के भीतर ही नवयुवक-युवतियों में पूरी तरह प्रसृत हो जाने को है। प्रणयोद्वेग में उन्मत्त नवयुवक-युवतियों को मेलापक का प्रतिकूल निर्णय एक दूसरे से विलग रखने की क्षमता नहीं रखता है—इसका पूर्ण आभास हमारे प्राचीन ज्योतिषशास्त्रियों को भी था, इसीलिए तो परस्पर आसक्त वर, कन्या के लिए मेलापक को उन्होंने अनावश्यक घोषित कर डालना ही उचित समझा। यह सब कहने का सारांश है कि—वर, कन्या के पारस्परिक गुणों से उद्दीप्त अनुराग पर अवलम्बित दाम्पत्यभाव के इस आगामी विवाहयुग में मेलापक-प्रक्रिया को विवाहसम्बन्ध का निर्धारक मानने की परम्परा अब अप्रयुक्त होने की स्थिति में लगभग पहुंच चुकी है।

जाति, प्रान्त एवं धर्मभेद से मिलान तथा विवाहादि मुहूर्त्तों के निर्णायक तत्त्वों में भिन्नता भी हमारी मिलान-मुहूर्त्तप्रक्रिया में तर्कसंगति एवं वैज्ञानिकता का प्रतिवाद करती है। गाय हिन्दुओं के लिए पूज्य, पवित्र है, अत: उसके चरण-रज से व्याप्त काल गोधूलिवेला को विवाह के लिए मंगलकर मानने में धार्मिक भावना के अतिरिक्त और कोई रहस्य नहीं है। उच्च वर्ण के नक्षत्रवाली कन्या से विवाहसम्बन्ध को त्याज्य बतलाने वाले वर्णकूट का मूल भी हिन्दू धर्मशास्त्र द्वारा निषिद्ध प्रतिलोम विवाह ही तो है। मृत्युबाण जैसे परम अमंगल (घातक) काल की निर्णायक प्रक्रिया में दक्षिणी एवं उत्तरी भारत में उपलब्ध भिन्नता भी मुहूर्त्तशास्त्रीय पदार्थों को परम्परामूलक ही सिद्ध करती है। सिंहस्थ गुरु का काल गंगा और गोदावरी के मध्यस्थ प्रदेश के लिए ही वर्ज्य है—यह भी तो प्रादेशिक परम्परा ही है। हमारे सभी मुहूर्त्तशास्त्रकार मांगलिक कृत्यों के शुभाशुभकाल के निर्णय में पदे-पदे सुलभ इस प्रकार के पारम्परिक मतभेदों से व्याकुल दैवज्ञों को देश-परम्परा का अनुसरण करने का स्पष्ट परामर्श देते हैं—**'दैवज्ञोऽतो लोकमार्गेण यायात्।'** जातक की जाति आदि के कारण ग्रहस्थिति आदि से उत्पन्न फल में व्यत्यय का सिद्धान्त तर्कनिकष पर अणुमात्र भी ठीक नहीं उतरता।

स्त्रीजाति के प्रति हमारा फलितशास्त्र, विशेषत: इसकी मेलापक शाखा, न्यायशील नहीं है—यह बात बहुत अखरती है। फलित के योगायोगों के स्रष्टा फलिताचार्यों की स्त्रीजाति के प्रति अन्याय्य-प्रकृति के निदर्शक पचासों दृष्टान्तों में परम **'उज्ज्वल'** दृष्टान्त **'विषकन्या योग'** की कल्पना है। जबकि फलितशास्त्रीय सर्वसम्मत सिद्धान्तानुसार इस कुयोग के लक्षणक्षेत्र में पुरुषजातक भी समान रूप से निर्विवादरूपेण आता है, पुनरपि इस योग के प्रवर्त्तक तथा तदनन्तरवर्त्ती अन्य सभी पुरुषपक्षपाती फलितविदों ने इस जघन्य योग में उत्पन्न स्त्रीजातक को ही इसके कुफल का एकमात्र लक्ष्य घोषित कर उसे विषधर नागिन की तरह दूरत: त्याज्य बना डाला। **किंच**—राक्षसगण की कन्या से मानवगण के वर के विवाह को उन्होंने वर की मृत्यु का कारण बतलाया है। लेकिन आश्चर्य है, इसके विपरीत राक्षसगण के वर द्वारा मानवगण की कन्या के वरण में उन्हें शुभता के अतिरिक्त और कुछ भी नहीं दीख पड़ा—

"राक्षसी यदि वा नारी नरो भवति मानुषः। मृत्युस्तत्र न सन्देहो विपरीतः शुभावहः॥"

हमारे मौहूर्त्तिकों, फलिताचार्यों एवं पौराणिकों की पुरुषपक्षपातिता की चरम सीमा तो वहां स्पष्ट दीख पड़ती है, जहां उन्होंने वैधव्ययोग वाली कन्या के वैधव्य-दोष- मार्जनार्थ तो कलश, अश्वत्त्थ, विष्णुप्रतिमा आदि से उसके विवाह का विधान सप्रपंच बतलाया, लेकिन वर के वैधुर्ययोगजन्य दोष की शान्ति के लिए उन्हें न जाने कोई विधान क्यों नहीं सूझा।[1]

स्त्री के प्रथमरज:स्रावकालिक तिथि, नक्षत्र, योग एवं स्थान आदि के कुफल-सुफलों का भी हमारे मुहूर्त्तग्रन्थों में सविस्तर निर्देश है। पू.फा., पू.षा., पू.भा., भरणी, आश्लेषा नक्षत्रों में प्रथमरजोदर्शन कन्या को निश्चित विधवा बनाता है–

'पूर्वात्रये याम्य-भुजङ्ग-धिष्ण्ये वैधव्यमस्या भवतीति नूनम्।'

प्रथमरज:प्रवृत्ति के समय वह नीले वस्त्र पहने हो या नग्न हो तो भी मुहूर्त्तकारों ने उसका फल वैधव्य लिखा है। इसी प्रकार अष्टमी, षष्ठी, अमा , रिक्ता, द्वादशी, संक्रान्ति, व्यतीपात, वैधृति, ग्रहण, भद्रा, सन्ध्याकाल या निद्रा में प्रथमस्राव कन्या को दुर्भगा (पतिपरित्यक्ता) बनाता है। कुछ तिथि, नक्षत्र आदि ऐसे भी हैं, जिनमें प्रथमार्त्तव का आविर्भाव सौभाग्यकारक माना गया है। प्रथमरजोदर्शन से सम्बद्ध इन वैधव्य-सौभाग्य योगों की दैवज्ञ लोग उपेक्षा नहीं कर सकते। जन्मकालिक ग्रहस्थित्यादि से उत्पन्न वैधव्य-सौभाग्य योगों की ही भांति इन वैधव्य-सौभाग्य योगों को भी कुण्डली-मिलान का विषय बनाना आवश्यक है, अन्यथा कुण्डलीमिलान से निर्णीत कन्या के सौभाग्य-वैधप्य योगों का निर्णय अधूरा ही माना जायेगा। यह भी अनेकत्र सम्भव है कि- कन्या का सप्तमभाव सर्वथा निर्दोष हो (अर्थात् कुजदोष से वह सर्वथा मुक्त हो)। लेकिन प्रथमरज:प्रवृत्ति के कालानुसार वह वैधप्ययोगवती हो। इस प्रकार स्पष्ट है, प्रथमरजआविर्भाव के काल से निर्धारित वैधव्य-सौभाग्य योग वर-कन्या के कुण्डली-मिलान के परिणाम को बदल डालने की पूरी क्षमता में है। लेकिन प्रश्न यह है कि–यहां प्रथमरजोदर्शनजन्य फल का विचार क्या सम्भव है? प्रथमरज:प्रवृत्ति तो आज के इस प्रगत सभ्यता के युग में भी कन्या के लिए नितान्त गोपनीय घटना है। शायद इसीलिए आज तक कभी किसी दैवज्ञ ने इस घटना को कुण्डलीमिलान की प्रक्रिया में समाविष्ट करने का उपक्रम नहीं किया और मेलापक के निर्धारक तत्त्वों में इसके समावेश के लिए मुहूर्त्तादि के ग्रन्थों में भी कहीं कोई संकेत नहीं मिलता। इस घटना से सम्बद्ध वैधव्य आदि फलों का, जिन्हें संहिताकारों ने प्रतिज्ञापूर्वक निर्दिष्ट किया है, मिलान-शास्त्रियों को मिलान के निर्णायक पदार्थों में अनिवार्यत: समावेश करना होगा, अन्यथा इन्हें किसी भी कारणवश उपेक्षित कर केवल अष्टकूट, कुण्डलीमिलान द्वारा निर्णीत परम्परा-प्राप्त इस मिलानप्रक्रिया द्वारा निर्धारित वर-कन्या के विवाहसम्बन्ध की ग्राह्याग्राह्यता को भला अन्तिम कैसे माना जा सकता है?

यही नहीं, वर-कन्या के सामुद्रिक (शारीरिक) लक्षण, ग्रहों की त्रिशांश आदि मे स्थिति, उनकी नृत्य, शयन, सुप्त, जाग्रत्, बाल, वृद्ध आदि अवस्था-जैसे बीसों और भी पदार्थ हैं, जिनसे सप्तमभावसम्बन्धी शुभाशुभ फल का प्रतिपादन संहिता-जातक-ग्रन्थकारों ने प्राचुर्येण किया है। लेकिन मिलान की प्रक्रिया में उनका विमर्श करने की परम्परा दैवज्ञों में नहीं है। इन सभी पदार्थों को अस्पृष्ट रखकर मात्र पारम्परीण प्रणाली से निर्णीत मिलान को भी विश्वसनीय नहीं माना जा सकता।

ये तो रहे मिलान के कुछ पहलुओं पर मेरे तर्कानुगत कुछ विचार, जिनसे पाठकों को वंचित रखना मैंने उचित नहीं समझा। यह बात अलग है कि–पूर्वाग्रहाक्रान्त कुछ दैवज्ञों को इनमें से मेरे कुछ विचार रुचिकर न लगे हों। इस पुस्तक के प्रकरण (6) में दिये गये निबन्धों को भी यथाक्रम (जिस क्रम में ये निबन्ध यहां दिये गये हैं, ठीक उसी क्रम में)' जिज्ञासु पाठक अवश्य पढ़ें–ऐसा मेरा आग्रह है। ये निबन्ध फलित ज्योतिष के आधारभूत तत्त्वों पर विशेष प्रकाश डालते हैं।

जो लोग मेलापक के सिद्धान्त को प्रामाणिकता की कोटि में रखते हैं, उनके लिए मैंने इस पुस्तक द्वारा मेलापकीय सिद्धान्तों पर पूर्ण प्रकाश डाला है। इस विषय के विवेचन में मैं एतद्विषयक सिद्धान्तों की परिधि के सर्वथा अन्तर्भूत रहा हूं। जो कुछ भी यहां मैंने इस विषय पर उपस्थापित किया है, वह सब, जहां तक मैं समझता हूं, फलित की इस शाखा से सम्बद्ध प्रामाणिक कृतियों में निर्दिष्ट प्रतिपादन का छायाचित्र ही है। जहां-जहां मतभेद घटित होते हैं, वहां-वहां उनका निर्देश अनिवार्यतः किया गया है, ताकि मतविशेष को मान्यता देने वाला दैवज्ञ उसका प्रयोग कर वहां स्वमतानुसारी परिणाम प्राप्त करने के लिए स्वतन्त्र रहे।

---

[1] *जहां तक मुझे ज्ञात है, वर के वैधुर्यहारक जो कुछ चान्द्रायणव्रतादि के आचरण का विधान हमें मिलता है, वह परवर्त्ती धर्मग्रन्थकारों के बाद के चिन्तन का परिणाम है।*

लेकिन यहां यह समझ लेना चाहिए कि—मेलापक का परिणाम प्राप्त करने के लिए की जाने वाली प्रक्रिया में जो बीसों मतभेद हमारे सम्मुख आते हैं, उन सबको पृथक् पृथक् मान्यता देने वाले दैवज्ञों के परिणाम भी अधिकतर (लगभग शत-प्रतिशत स्थलों पर) भिन्न-भिन्न ही प्राप्त होंगे। उदाहरणार्थ—कुण्डलीमिलान में चलितकुण्डली, भावों के स्पष्ट राश्यादि और राशिकुण्डली—इन तीनों के पृथक् पृथक् प्रयोग से प्राप्त परिणाम एकरूप नहीं हो सकते। इसी प्रकार केवल सप्तमभाव से और सप्तम तथा द्वितीय—दोनों भावों से समुदितरूप में किये गये कुजदोपनिर्णयों में भारी वैषम्य होगा। इन मतभेदों से उत्पन्न मेलापक के परिणामों की इस विविधता का कोई प्रतीकार नहीं है, क्योंकि निष्पक्ष तत्त्वदर्शी परीक्षकों के सुदीर्घ अनुभव बतलाते हैं कि—इन सभी मतों से ज्ञात परिणामों की सत्यता के व्यभिचार की मात्रा समान ही है। हां, मतभेद के स्थलों पर दैवज्ञ अपनी परम्परा या मन्तव्य के अनुसार मतविशेष को आत्मसात् कर परिणाम प्राप्त करने में स्वतन्त्र हैं।

धूम्रकेतु का विश्व और हम पर प्रभाव

(धूम्रकेतु का विश्व पर प्रभाव की भूमिका)

मानव की बुद्धि में ईश्वर के अस्तित्व की भावना को प्रतिष्ठापित करने में ब्रह्माण्ड (Cosmos) की नितान्त रहस्यमयी संघटना और अनन्तता का बहुत बड़ा हाथ है। जो ईश्वर को कपोलकल्पना समझता है, उसे ब्रह्माण्डशास्त्र (Cosmology) के प्रारम्भिक कुछ पृष्ठ पढ़ लेने के बाद ही अपने चिन्तन पर अवश्य सन्देह उत्पन्न होने लग जायेगा—ऐसा मेरा विश्वास है। ब्रह्माण्ड के एक अत्यन्त नगण्य पदार्थ धूम्रकेतु[1] को लेकर लिखी गयी मेरी यह लघुपुस्तिका भी ऐसे अनस्तित्ववादियों में कुछ अस्तित्वबुद्धि अंकुरित करने में सहायक होगी—ऐसी धारणा लिये हुए हूं।

अनन्त ब्रह्माण्ड की असंख्य, परम रहस्यमय, नीहारिकाएं और ग्रह, सूर्य, नक्षत्र आदि के विशाल आकारों की तुलना में यद्यपि धूम्रकेतु एक बहुत ही उपेक्ष्य छोटा अणुमात्र-सा है, लेकिन फिर भी आज के इस युग के मूर्धन्य वैज्ञानिक भी इसकी यथार्थता के उद्घाटन में अभी तक पूरी तरह सफल नहीं हुए हैं। " धूम्रकेतु किन-किन तत्त्वों से बने हैं, उनकी पूंछ में कौन-कौन से तत्त्व किस मात्रा में विद्यमान रहते हैं, ये कहां से आते हैं, इनका उद्गम कैसे हुआ, उल्काओं (Meteors) और उल्काप्रस्तरों (Meteorites) से इनका क्या सम्बन्ध है?" इत्यादि अनेक प्रश्नों के उत्तर आज के शीर्षस्थ वैज्ञानिक भी प्रतिज्ञापूर्वक देने में अक्षमता प्रकट करते हैं। जो कुछ आज तक वे इनके बारे में अपने तर्क-वितर्कों, शक्तिशाली दूरदर्शक आदि उपकरणों तथा नाक्षत्रभौतिकी (Astrophysics) के अनेक अद्यतनीन सिद्धान्तों द्वारा जान पाये हैं, उन्हें मैंने इस पुस्तक में इस प्रकार निबद्ध किया है कि—विज्ञान के ज्ञान से सर्वथा अस्पृष्ट मति वाले सर्वसाधारण पाठक को भी इन्हें समझने में अपनी बुद्धि पर थोड़ा सा भी भार देने का कष्ट उठाना नहीं पड़ेगा। इसी बात को दृष्टि में रखते हुए मैंने यहां पारिभाषिक शब्दों का प्रयोग लगभग नहीं के बराबर ही किया है, यदि कहीं किया भी है तो उसे सामान्य भाषा में स्पष्ट करके आगे बढ़ा हूं।

इस पुस्तक को तीन (प्रथम, द्वितीय, तृतीय) भागों में बांटा गया है—

प्रथम भाग में धूम्रकेतुओं के उद्गम आदि के विषय में आज तक के ज्ञात सभी वैज्ञानिक सिद्धान्तों को सरल और रोचक शैली में उपस्थापित किया गया है, जिसे साधारण हिन्दी जानने वाला बच्चा भी सरलतापूर्वक कौतूहलभरी रुचि से पढ़ सकेगा।

द्वितीय भाग में भारत के ऋषि-मुनियों एवं आचार्यों द्वारा प्रणीत प्राचीन (**वसिष्ठसंहिता, बृहत्संहिता, भद्रबाहुसंहिता आदि**) ग्रन्थों में दिये गये धूम्रकेतु-सम्बन्धी विवरण का विस्तृत, समीक्षात्मक निर्देश है। जहां-तहां मैंने ऋषियों-मुनियों-आचार्यों द्वारा निर्दिष्ट उन सिद्धान्तों की पूर्वाग्रहमुक्त होकर आलोचना भी की है, जो स्पष्टत: तर्क की कसौटी पर खरे नहीं उतरते।

हमारे सभी प्राचीन आचार्यों-ऋषियों ने विश्व के अन्य अनेक विद्वानों की भांति ही धूम्रकेतुओं के उदय को प्राकृतिक, राजनैतिक तथा वैयक्तिक आपदाओं का आमन्त्रक या सूचक माना है। आप इस पुस्तक के द्वितीय भाग में दिये एतत्सम्बन्धी विवरणों की समीक्षा को ध्यान से पढ़ेंगे तो, मुझे विश्वास है, आप धूम्रकेतुओं के उदय से उत्पन्न ऐसी किसी भी प्रकार की भीति की आधार-शून्यता जान जायेंगे।

---

[1] संस्कृत में Comet के लिए केवल 'केतु' शब्द का ही अधिकतर प्रयोग है, धूमकेतु शब्द भी यत्र-तत्र प्रयुक्त है। हिन्दी में इसके लिए धूम्रकेतु और धूमकेतु—दोनों का प्रयोग मिलता है। यहां मैंने सर्वत्र धूम्रकेतु शब्द का ही प्रयोग किया है।

किसी घटना का हेतु रहस्यमय बना रहे तो उस घटना मे कौतूहल और भय का उत्पन्न होना एक मनोवैज्ञानिक तथ्य है। यदि अज्ञातकारण वाली घटना कहीं भयावह भी हो तो केवल भय ही उसका परिणाम होता है। धूम्रकेतु का काली रात्रि में भीषण ज्वाला सी विशाल पूंछ लिये अकस्मात् आकाश से पृथ्वी की ओर आता हुआ देखकर उससे आतंकित हो उठना मनुष्य के लिए अस्वाभाविक नहीं है। ऐसी विलक्षण घटनाओं का परवर्त्ती घटनाओं से कार्य-कारण-सम्बन्ध स्थापित करने की भी मनुष्य में एक परम्परागत प्रवृत्ति है। वह युगों से इस भ्रांत धारणा का, जिसे अन्धविश्वास भी कहते हैं, शिकार बनता चला आ रहा है कि—पूर्ववर्त्ती घटना अनेकत्र परवर्त्ती किसी विशिष्ट घटना का कारण हुआ करती है, जबकि इस प्रकार के अधिकतर अनुमान हेत्वाभाव (Fallacy) के दोष से मुक्त नहीं होते। विश्व की ऐतिहासिक विशेष घटनाओं को उनके पहले घटित होने वाले किसी धूम्रकेतु के (विशेषत: किसी विशाल धूम्रकेतु के) दर्शन (उदय) के साथ जोड़ने की एक बहुत प्राचीन विश्वव्यापी परम्परा है। 70 ई. में येरूशलम के पतन का कारण 66 ई. में दिखाई पड़ा विशाल हैली धूम्रकेतु मान लिया गया। 1066 ई. में हैली के उदय को England के सम्राट् Harold (II) की Hastings के युद्ध में Normandy के Duke William से पराजय का निमित्त समझ लिया गया। लेकिन धूम्रकेतु के उदय के दुष्परिणामों के समर्थक यह भूल जाते हैं कि—सन् 1066 ई. का वही धूम्रकेतु Normandy के Duke William की विजय का निमित्त भी तो था। रूस पर नेपोलियन ने 1812 ई. में आक्रमण किया, क्योंकि इससे कुछ समय पूर्व ही एक विशाल धूम्रकेतु वहां दिखाई पड़ा था। 455 ई. में दिखाई पड़े धूम्रकेतु को रोमन सम्राट् वेलेण्टिनियन की मृत्यु का कारण बतलाया गया। इस प्रकार ऐतिहासिक दुर्घटनाओं के कुछ आंकड़ों के आधार पर धूम्रकेतुओं के उदय को बिना किसी तार्किक आधार के दुर्घटनाओं का प्रवर्त्तक मान लिया गया। जब हम तर्क-निकष पर इस कल्पित कार्य-कारण-सम्बन्ध को कसते हैं, तब यह निराधार सिद्ध होता है। जैसा कि—आप इस पुस्तक में पढ़ेंगे—प्रति शताब्दी कम से कम 8-10 उज्ज्वल धूम्रकेतु दिखाई पड़ जाते हैं। विश्वभर में एक शताब्दी के भीतर प्राकृतिक, राजनैतिक दुर्घटनाएं, जिन्हें ऐतिहासिक कहा जा सकता है, मध्यममान से सैकड़ों-हजारों घटित होती हैं—इसमें इतिहास साक्षी है। इन्हें इन धूम्रकेतुओं के दर्शनों (Appearances) से जोड़ देना बहुत ही आसान काम है। यदि हम ध्यान से समीक्षा करें तो स्पष्ट होगा कि—ये दुर्घटनाएं धूम्रकेतुओं के उदय के अनुपात से कहीं ज्यादा बैठती हैं। हमारे समाचार-पत्र प्रतिवर्ष जितने असंख्य ऐतिहासिक, राजनैतिक, प्राकृतिक तथा अन्य भीषण उत्पातों या दुर्घटनाओं से भरे मिलते हैं, उतने तो शताब्दी में भी धूम्रकेतु नहीं दिखाई देते। यहां पर यह कहना कि—एक धूम्रकेतु का उदय आगामी अनेक वर्षों में होने वाले सभी प्रकार के उत्पातों का उत्पादक है, हास्यास्पद, निराधार तर्क है।

एक बात यहां पाठकों को बतला देना उपयुक्त समझता हूं कि—हमारे संहिताग्रन्थों में 1000 प्रकार के धूम्रकेतुओं की चर्चा है, और उनमें से कुछ के स्वरूपों का वर्णन और उनका फल वहां दिया गया है। उनके स्वरूप को देखकर उनके फल की भविष्यवाणी कर सकना असम्भव है, क्योंकि उनके संहिताओं में प्रतिपादित स्वरूप काफी अस्पष्ट हैं। किसी भी धूम्रकेतु को देखकर संहितोक्त उसके स्वरूप के आधार पर उस धूम्रकेतु का वर्गीकरण एवं नामकरण ही जब असम्भव है, तब उसके फलविशेष की भविष्यवाणी करने का प्रश्न ही उत्पन्न नहीं होता। भारत का कोई भी आज का ज्योतिषी इन संहिताओं में वर्णित स्वरूप के आधार पर यह नहीं बतला सकता कि—यह धूम्रकेतु, जिसे वह आज आकाश में देख रहा है "**भव**" नाम वाला है या "**काश्यप**" नाम वाला। और तो और विश्वविदित "**हैली धूम्रकेतु**" को संहिताओं में किस संज्ञा से पुकारा गया है—यह जानना भी एक टेढ़ी खीर है। जब यही निर्णय कर सकना उसके लिए असम्भव है, तब '**भव**' या '**काश्यप**' धूम्रकेतुओं के विभिन्न प्रकार के संहितोक्त फलों की घोषणा उससे कैसे प्रत्याशित की जा सकती है। जैसाकि मैंने इस पुस्तक के द्वितीय भाग में स्पष्ट भी किया है—संहिताओं में धूम्रकेतुओं के वर्गीकरण या नामकरण आकृतिमूलक (Morphological) हैं, जबकि प्रत्येक धूम्रकेतु सूर्य और पृथ्वी के सापेक्ष कोणात्मक (Angular) स्थिति के अनुसार अपनी आकृति आदि को प्रत्येक भ्रमणकाल में बदलता रहता है। अथवा ऐसा कहना अधिक संगत है कि—एक ही दर्शनकाल में वह कुछ-कुछ दिनों बाद अपनी आकृति आदि बदलता रहता है। इससे यह भी स्पष्ट हो जाता है कि—आकृतिमूलक नामकरण या वर्गीकरण के आधार पर धूम्रकेतुओं के संहितोक्त फल भी अस्थिर आधार पर टिके हैं।

इस प्रकार यद्यपि संहिताओं मे निर्दिष्ट धूम्रकेतुओं के फल तर्कभूमिका पर स्थित नहीं हैं, फिर भी मैंने इस पुस्तक के तृतीय भाग में सन् 1986 ई. में दिखाई देने वाले '**हैली धूम्रकेतु**' के कुफलों का संहिता और जातक ग्रन्थों के अनुसार दैशिक और वैयक्तिक कुप्रभाव विस्तार से दिया है और उसकी शान्ति के शास्त्रोक्त उपाय भी बतलाये हैं, ताकि इस धूम्रकेतु के शास्त्रनिर्दिष्ट कुप्रभाव पर विश्वास करने वाले और उससे आतंकित सर्वसाधारण को भी इस पुस्तक से निराशा न मिले।

हमारे व्रत-पर्वों की तारीखों में मतभेद का प्रमुख कारण

भूपृष्ठीय भेद

भले ही हम पञ्चाङ्गगणित के आधारभूत पक्ष (दृक्, सौर आदि), अयनांश तथा सूर्यचन्द्रोदयास्तकाल आदि तत्त्वों पर पूरी तरह एकमत होकर अपने पंचांगों का निर्माण करें, तथापि हमें अनेक स्थानों पर भूपृष्ठीय (अक्षांश, रेखांश से सम्बद्ध) भिन्नता के कारण व्रत-पर्वों की तिथियों में अनैकमत्य की समस्या से मुक्ति नहीं मिल सकती। हमारी भारतीय ज्योतिष-पद्धति के अनुसार वारप्रवृत्ति, तिथि आदि के घट्यादि समाप्तिकाल आदि तत्त्व सूर्योदय से सम्बद्ध हैं, जो अक्षांश-रेखांशभेद से सभी स्थानों पर एकरूप नहीं रहते। चण्डीगढ़, बनारस, दिल्ली आदि विभिन्न नगरों से प्रकाशित होने वाले पंचांगों में दिये जाने वाले वार, घटी-पलात्मक तिथ्यादि काल तथा सूर्यचन्द्रोदयास्त आदि उनके अपने-अपने नगरों के ही होते हैं, जिससे इन सभी पंचांगों में दिये जाने वाले व्रत-पर्वादि की तिथियों में सहमति अनेकदा सम्भव नहीं होती। इस असहमति को दूर करने के लिए यह आवश्यक है कि—**सभी पंचांगकार किसी एक ही केन्द्रस्थल के अक्षांश-रेखांश के आधार पर ही अपने पंचांगों का निर्माण करें। भारत सरकार द्वारा प्रकाशित राष्ट्रीयप्रचांगों तथा 'The Indian Ephemeris And Nautical Almanac' में 82°-30′ (पू.) रेखांश तथा 23°-11′ (उ.) अक्षांश वाले स्थल को केन्द्र मानकर, इसी केन्द्रस्थल के सूर्यचन्द्रोदयास्त तथा तिथ्यादि के अनुसार व्रत-पर्वों का निर्णय किया जाता है। मैं समझता हूं—सभी भारतीय पंचांगकारों को इसी स्थल को अपनी गणना का आधार बना लेना चाहिए, अन्यथा मतभेद की समाप्ति कदापि सम्भव नहीं है।**

ध्यान रहे—विभिन्न नगरों के अक्षांश-रेखांशों के आधार पर बनाये गये पंचांग व्रत-पर्वों की तिथियों में मतभेद का प्रमुख कारण हैं।

एक ही केन्द्रस्थल के वार, सूर्योदयास्त आदि से समस्त भारत के लिए व्रतादि का निर्णय करने में धर्मशास्त्र का उल्लंघन नहीं समझना चाहिए, क्योंकि व्यवहार-लाघव की दृष्टि से हम लोग पहले से ही परम्परया व्रतादि धार्मिक कृत्यों के लिए एक ही स्थल के पंचांग को समीप एवं दूरवर्ती पर्याप्त विस्तृत प्रदेश तथा प्रदेशों में बिना पंचांग-परिवर्तन (बिना चरान्तर, देशान्तर-संस्कार) के ही प्रयोग में लाते आ रहे हैं। मुम्बई, अहमदाबाद, चण्डीगढ़, दिल्ली, बनारस आदि के स्थानीय पंचांगों को आज भी अपने-अपने प्रदेशों तथा दूर के प्रदेशों में भी धार्मिक लोगों द्वारा धर्म-कृत्यों के लिए यथावस्थित रूप में ही स्वीकार करने की परम्परा है। इससे स्पष्ट है, कि—लाघव और सुविधा की दृष्टि से किसी एक ही स्थल के पंचांग को अन्य स्थलों के लिए भी उस पंचांग के अनुयायी लोगों द्वारा पहले से ही ग्राह्य माना हुआ है। यदि हम स्थानीय पंचांगगणना को मान्यता देने का आग्रह न छोड़ना चाहें, तब तो हमें भारत के विभिन्न प्रान्तों, जिलों तथा नगरों के लिए व्रतादि का निर्णय करते समय तत्तत्स्थानों के सूर्योदयास्तादि को दृष्टि में रखना होगा। जिसका परिणाम यह होगा कि—अनेक सन्धिगत स्थलों पर हमें एक ही प्रदेश, जिला, तहसील और कभी-कभी एक ही नगर में एक ही व्रत-पर्व को दो भिन्न-भिन्न (आगे-पीछे वाली) तारीखों में मनाने के लिए बाधित होना पड़ेगा। कोलकाता, मुम्बई, दिल्ली जैसे महानगरों में इस प्रकार की स्थिति अन्य नगरों की अपेक्षा अधिक उत्पन्न होगी। ऐसी स्थिति में दीपावली, विजयादशमी के लिए एक ही नगर में दो-दो दिन अवकाश करने होंगे। नगर के एक भाग में आज दीवाली होगी और दूसरे भाग में कल। क्या भारतीय पर्वों की यह व्यवस्था व्यावहारिक दृष्टि से दोषमुक्त कही जा सकती है?—कदापि नहीं। **ध्यान रहे—**पर्वों की तिथियों में इस प्रकार की समस्या (दिन-भेद) उत्पन्न होने के अवसर जिला, प्रदेश तथा देश में उत्तरोत्तर अधिक होंगे। भारत के पंचांगकार भी अपने केन्द्रस्थल के लिए निर्णीत व्रत-पर्वों को अपने पूरे

प्रभावक्षेत्र में प्रचारित करने की परम्परा को बहुत पहले से ही अपनाये हुए हैं। पर्वों में स्थानभेद से उत्पन्न वारभेद की चर्चा वे अपने पंचांगों में अक्सर करते ही नहीं हैं। किसी भी पंचांग से विगत वर्षों के ऐसे असंख्य प्रसंग उद्धृत किये जा सकते हैं, जहां स्थानभेद से किसी व्रत-पर्व के वार में भेद उपस्थित हुआ, लेकिन उस पंचांगकार ने उस व्रत-पर्व को अपने स्थानीय सूर्यचन्द्रोदयास्त एवं तिथ्यादि के काल के अनुसार निर्णीत वार के दिन ही लिखा एवं उस पंचांग के भक्त धार्मिक लोगों ने स्थानभेद से उत्पन्न वारभेद को न जानते हुए अथवा वारभेद की उपेक्षा करते हुए, वह व्रतपर्व उसी वार को मान लिया, जिस वार को वह उस पंचांग में लिखा गया था, जबकि उनके अपने स्थानों के सूर्यचन्द्रोदयास्त-तिथ्यादिकाल के अनुसार वह व्रत-पर्व उस (पंचांग में निर्दिष्ट) वार से एक दिन आगे या पीछे मनाया जाना चाहिए था।*

उपरोक्त विवेचन से स्पष्ट है—यदि स्थानीय पंचांग को ही व्रतादि की तिथियों के निर्णय के लिए अनिवार्य माना जाये तो प्रतिवर्ष अनेक स्थलों पर भारत के मानचित्र पर रेखाएं खींचकर यह बतलाना अनिवार्य होगा कि—अमुक-अमुक पर्व इस रेखा से पूर्व में स्थित स्थानों पर अमुक तारीख को और पश्चिम में स्थित स्थानों पर अमुक तारीख को मनाना होगा। क्योंकि, प्रतिवर्ष कुछ न कुछ ऐसे व्रतपर्व अवश्य आते हैं, जो स्थानीय सूर्योदयादि में भिन्नता के कारण भारत के विभिन्न स्थलों पर दो भिन्न-भिन्न तारीखों में मनाये जाने की स्थिति में होते हैं, परन्तु ऐसा करना व्यवहारोचित नहीं है। क्योंकि, ये रेखाएं प्रदेशों, जिलों, तहसीलों, यहां तक कि कुछ नगरों को भी दो भागों में विभाजित करेंगी। ऐसी रेखाएं अधिकतर पंचांगों में नहीं दी होतीं, जिससे हमें इन पंचांगकारों द्वारा भी एक केन्द्र-स्थलीय पंचांग को सर्वत्र स्वीकार करने की स्वीकृति परम्परया स्पष्टरूप में मिलती है।

जब हम स्थानीय सूर्योदयास्तादि की उपेक्षा करके किसी एक ही स्थल के सूर्योदयास्तादि से ही सैकड़ों मील विस्तृत प्रदेश/प्रदेशों में व्रतादि का निर्णय सुविधार्थ पहले से ही परम्परया करते आ रहे हैं, तब उसी से विश्व के अन्य सभी देशों के लिए भी व्रतादि का निर्णय क्यों न करें? विश्व के सभी देशों में धार्मिक हिन्दू रहते हैं। यदि स्थानीय पंचांग के प्रयोग का आग्रह हम नहीं छोड़ेंगे, तब तो हमें विश्व के सभी देशों तथा उनके प्रदेशों के लिए सैकड़ों पंचांग प्रतिवर्ष बनाने पड़ेंगे, क्योंकि, स्थानीय पंचांग को प्रयोग में लाने पर प्रतिवर्ष लगभग प्रत्येक व्रत-पर्व भूगोल के अलग-अलग स्थलों पर अनिवार्यरूप से दो-दो तारीखों में (एकदिन आगे-पीछे) पड़ेगा। **ध्यान रहे—लगभग आधे भूगोल पर लगभग प्रत्येक हिन्दू व्रत-पर्व की तारीख शेष आधे भूगोल से भिन्न हुआ करती है।** यदि हम सैकड़ों पंचांग न भी बनाना चाहें तो भी हमें प्रतिवर्ष सभी देश/प्रदेशों के लिए, प्रत्येक पर्व की भिन्न-भिन्न तारीखों की सूची तैयार करनी होगी। इसके लिए हमें प्रत्येक व्रत-पर्व की दो तारीखों का क्षेत्र (Area) स्पष्ट करने के लिए अक्षांश-रेखांशों द्वारा विश्व-मानचित्र पर सीमारेखाओं का निर्देश करना होगा। परन्तु ऐसा कर सकना भले ही जैसे-तैसे सम्भव हो भी जाये, तथापि इसे व्यावहारिक रूप देना असम्भव एवं हास्यास्पद होगा⊕। **अतः सारे विश्व के लिए एक ही केन्द्रस्थल के पंचांग को निर्णायक के रूप में स्वीकार करने के अलावा कोई विकल्प है ही नहीं। भारतीय केन्द्रस्थल के**

---

* ***ध्यान रहे—****प्रति वर्ष चार-पांच ऐसे व्रत-पर्व अवश्य उपस्थित होते हैं, जो स्थानीय सूर्य-चन्द्रोदयास्त आदि में भिन्नता के कारण भारत के दो भिन्न-भिन्न भागों में दो अलग-अलग तारीखों में मनाये जाने चाहिएं, लेकिन अमृतसर, चण्डीगढ़, दिल्ली, वाराणसी आदि से प्रकाशित होने वाले ये सभी पंचांग अपने स्थानीय सूर्यचन्द्रोदयास्तादि के अनुसार निर्णीत तारीख वाले दिन ही इन व्रत-पर्वों का निर्देश करते हैं।*

⊕ इसकी स्पष्टता के लिए मेरी 'व्रतपर्व विवेक' पुस्तक के पृष्ठ 194 पर छपा लेख **"स्थान(भूपृष्ठ) भेद से विश्व के विभिन्न देशों में हिन्दु-व्रतोत्सवों की तारीखों में अन्तर"** देखें।

पंचांग द्वारा निर्णीत व्रतादि की Gregorian date को ही समस्त विश्व में मान्यता देनी होगी⊘। इससे हमारे व्रत-पर्वों की तारीखों में भारत तो क्या, विश्व के किसी भी कोने में दो मत नहीं होंगे।

ध्यान रहे—कनाडा, U.K., अमेरिका आदि देशों में बसे हुए अधिकतर हिन्दु लोग भारतीय पंचांगों अथवा 'भारतीय नाटिकल आल्मनाक' द्वारा निर्धारित Gregorian dates के अनुसार ही दीपावली आदि त्योहार पहले से ही मनाते चले आ रहे हैं। उन्होंने कभी अपने निवास स्थान के सूर्योदयादि द्वारा इन पर्वों की तारीख का निर्णय करने की बात सोची भी नहीं। विदेशों में स्थित भारतीय दूतावासों में भी दीपावली, जन्माष्टमी आदि हिन्दु पर्वोत्सवों का आयोजन Positional Astronomy Centre द्वारा निर्णीत व्रतपर्व तिथियों के अनुसार ही किया जाता है। इस प्रकार विश्वभर के लिए भारतीय केन्द्रस्थलके पंचांग के प्रयोग का समर्थन परम्परया हमें स्पष्ट रूप में प्राप्त है।

किञ्च- यदि स्थानीय पंचांग के प्रयोग पर ही हम अड़े रहें तो धर्मशास्त्र के अनेक व्रत-पर्व-निर्णायक सिद्धान्त सुदूर विदेशों में पंगु हो जायेंगे। उदाहरणार्थ—स्कॉटलैंड, अलास्का, नॉर्वे, स्वीडन, फिन्लैण्ड आदि देशों में, जहां परमाल्प दिनमान 15 घटी से भी कम हो जाता है, पार्वणश्राद्ध को अनेक बार धर्मशास्त्रीय निर्णायक वचनों से मनाना असम्भव हो जायेगा। स्त्रियों के लिए नित्य दूर्वाव्रत को अगस्त्योदय में न करने की शास्त्राज्ञा है, लेकिन द. आस्ट्रेलिया, न्यूजीलैण्ड तथा दक्षिण अमेरिका के दक्षिणी प्रदेशों में अगस्त्य कभी अस्त (लुप्त) होता ही नहीं है। वह प्रतिदिन वर्ष-भर रात्रि में दिखाई देता रहता है। वहां इस नित्यव्रत का लोप हो जायेगा, क्योंकि इन देशों में जहां भी दक्षिणी ध्रुव की ऊंचाई अगस्त्य तारा के द्युज्याचापांश (37 अंश) से अधिक है, वहां यह तारा क्षितिज से कभी नीचे जाता ही नहीं है।

एक और भी बात है—जहां परमाल्प दिनमान 10 घटी या इससे भी कम होगा, वहां तिथि की दशक्षयस्थिति में (जब तिथि का भोगकाल केवल 50 घड़ी होगा तब) अनेकत्र पूर्वविद्धा एवं परविद्धा तिथि का निर्णय नहीं हो सकेगा और आपाद्या (साकल्यापादित) तिथि का अस्तित्व भी अनेक स्थलों पर लुप्त हो जायेगा, जिससे अनेक व्रत-पर्वों के लोप का प्रसंग उपस्थित होगा। ग्रीनलैण्ड, बैफिन आईलैण्ड, आइस्लैण्ड, नॉर्वे, स्वीडन, फिन्लैण्ड आदि देशों में अनेकत्र परमचर 12 घटी से भी अधिक हो जाने से परमाल्प दिनमान 6 घटी से भी कम तथा परमाधिक दिनमान 54 घटी से भी ज्यादा हो जाता है। ऐसे स्थलों पर तो अनेकदा हमारे इन धर्मशास्त्रों से श्राद्ध-व्रतादि का निर्णय सम्भव नहीं होगा। अपि च—इन देशों में स्थानीय अक्षांश से चन्द्रमा का द्युज्याचापांश कम होने पर चन्द्रमा कभी कई दिनों तक अस्त और कभी उदित ही रहता है। ऐसे स्थलों पर श्री गणेशचतुर्थी, करकचतुर्थी एवं श्रीकृष्णजन्माष्टमी आदि व्रतों का निर्णय करना असम्भव होगा। इन्हीं प्रदेशों में 66°-33′ से अधिक अक्षांश वाले प्रदेशों में कई-कई दिन सूर्य उदय या अस्त ही रहता है, वहां प्रदोष आदि घटित नहीं होंगे। अत: प्रदोषव्रत आदि की तिथि का निर्णय वहां सम्भव नहीं होगा।

ऐसी समस्याओं के समाधान के लिए हमें या तो लगभग प्रत्येक व्रत-पर्व के निर्णायक आर्षवाक्यों में संशोधन करने होंगे या भारत के केन्द्रस्थलीय निर्णय को मान्यता देनी होगी। धर्मशास्त्र के नियमों/सिद्धान्तों को संशोधित-परिवर्तित करने का अधिकार हमारे शास्त्र हमें नहीं देते, किञ्च—वैसे भी धर्मशास्त्र के अंग-प्रत्यंग को विकृत करने की

⊘ *उदाहरणार्थ मान लीजिये—भारतीय केन्द्रस्थल के अनुसार यदि किसी वर्ष दीपावली 22 अक्तूबर (भारतीय तारीख) को पड़ती है, तब उस वर्ष स्थानीय प्रदोपकाल में कार्ति. अमा की व्याप्ति या अव्याप्ति का विचार किये बिना ही विश्व के सभी देशों में वहां की स्थानीय तारीख 22 अक्तूबर को ही स्थानीय प्रदोष में दीपावली मनानी होगी।*

अपेक्षा द्वितीय विकल्प उत्तम है—“ **अर्के चेन्मधु विन्देत किमर्थं पर्वतं व्रजेत्** ”। ऐसा करने से हमारे पर्वोत्सव हमारे अपने देश से पूरी तरह बद्ध भी हो जायेंगे। कुछ कट्टरवादी धर्माचार्यों का मत है, कि—विदेश में रहने वाले हिन्दुओं को व्रतादि के अनुष्ठान का अधिकार नहीं है। लेकिन, इसे आज के प्रगतिशील युग में स्वीकार नहीं किया जा सकता। इससे हिन्दुधर्म का स्वाभाविक प्रचार भी रुक जायेगा। **अपि च—हमारे पुराण साक्षी हैं—मान्धाता राजा विश्वविजय के लिए घूमते-घूमते उत्तरी ध्रुव के पास गये थे, जहां उन्होंने एकादशी आदि व्रतों का अनुष्ठान किया था। उत्तरी ध्रुवस्थान पर तो छः महीने का दिन और इतनी ही रात्रि होती है, जिसके कारण हमारे धर्मशास्त्रों के सभी नियम वहां खण्डित हो जाते हैं। अतः भारत के केन्द्रस्थलीय तिथ्यादि को ही इस विषय में मान्यता देनी होगी। इसी में लाघव एवं व्यावहारिकता भी निहित है। इससे हमारे परम्पराप्राप्त आर्षग्रन्थ भी विकृत होने से बच सकेंगे।**

व्रतादि की व्यवस्था में धर्मशास्त्रकारों का लक्ष्य भी लाघव एवं व्यावहारिकता का ही रहा है। अनेक स्थलों पर भूपृष्ठीय भेद से उत्पन्न गणनाभेद की उपेक्षा करते हुए धर्मशास्त्रकारों ने धर्मकृत्य आदि की व्यवस्था की है। जैसे—प्रदोष एवं अरुणोदयकाल यद्यपि अक्षांश एवं सूर्यक्रान्ति के भेद से प्रतिस्थल एवं प्रतिदिन बदलते रहते हैं, **(देखें—'पुरुषार्थचिन्तामणि' आदि में प्रदोष, अरुणोदयसम्बन्धी विवेचन)**, तथापि लाघवार्थ इनके मान कई ऋषियों-आचार्यों ने स्थिर ही मान लिये हैं। व्यवहारलाघव के लिए ही संक्रान्तियों के पुण्यकाल भी स्थूल ही स्वीकार किये गये हैं [*], जबकि सूर्य के तात्कालिक स्पष्टबिम्ब तथा स्पष्टगति से ही इन कालों का मान निकालना चाहिए। संक्रान्ति के दिन उपवास और पुण्यकाल में दानादि करने का शास्त्रीय विधान है, परन्तु कुछ लोग विधिलाघव के लिए उपवास और दानादि दोनों का अनुष्ठान पुण्यकाल में ही करते हैं [⊛]। इत्यादि उदाहरणों से भी निर्विवाद सिद्ध हो जाता है कि—व्रतादि-निर्णय में व्यवहार-लाघव का अनुमोदन परम्पराप्राप्त है। एक केन्द्रस्थल के पंचांग को समस्त भूगोल के लिए प्रयोग में लाने का हमारा आग्रह भी लाघव पर ही आधारित है।

विज्ञानभवन में हुई पंचांगगोष्ठी में केवल श्रीकृष्णजन्माष्टमी और रामनवमी की तिथि के निर्णय के लिए यह प्रस्ताव पारित किया गया था—इन दोनों पर्वों का निर्णय क्रमशः मथुरा (श्रीकृष्णजन्मभूमि) तथा अयोध्या (श्रीरामजन्मभूमि) के अक्षांश-रेखांशों द्वारा ही किया जाये और उन्हें समस्त भारत में मान्यता दी जाये। यह निर्णय जहां इन दो पर्वों के विषय में भूपृष्ठीय मतभेद को दूर करता है, वहां अन्य महापुरुषों और अवतारों की जयन्तियों के निर्णय के लिए उनके जन्मस्थानों के अक्षांश-रेखांश का विचार करने के बारे में मूक होने से अपूर्ण है। हमारा मत है—सभी पर्वों के लिए गणनास्थल हमें एक ही मानना चाहिए, अन्यथा अव्यवस्था हो सकती है।

---

[*] *संक्रान्तिकालादुभयत्र नाडिकाः पुण्या मताः षोडशषोडशोष्णगोः। — (मुहूर्तचिन्तामणिः)*

[⊛] *अत्रोपवासः संक्रमदिने, दानादि तु पुण्यकालदिन-इत्याचार्यचूडामणिः।*
विधिलाघवात् पुण्यकालदिन एवोभयम् इति वृद्धाः। — (निर्णयसिन्धुः)

स्थान (भूपृष्ठ) भेद से विश्व के विभिन्न देशों में हिन्दूव्रतोत्सवों की तारीखों में अन्तर

अभी ऊपर दिये गये विमर्श में इस बात पर जोर दिया गया है कि—विश्व के सभी देशों में हमारे व्रतपर्वों को उसी तारीख को मनाना संगत है, जिस तारीख को वे भारत में मनाये जाते हैं, अन्यथा प्रत्येक देश के भिन्न-भिन्न प्रदेशों के लिए, और तो और उसके अनेक नगरों के भिन्न-भिन्न भागों के लिए भी इन व्रतपर्वों की तारीखों का अलग-अलग निर्णय करने की विकट समस्या उत्पन्न होगी। इस समस्या का सोदाहरण स्पष्ट निर्देश नीचे दो मानचित्रों द्वारा किया जा रहा है। देखिये—

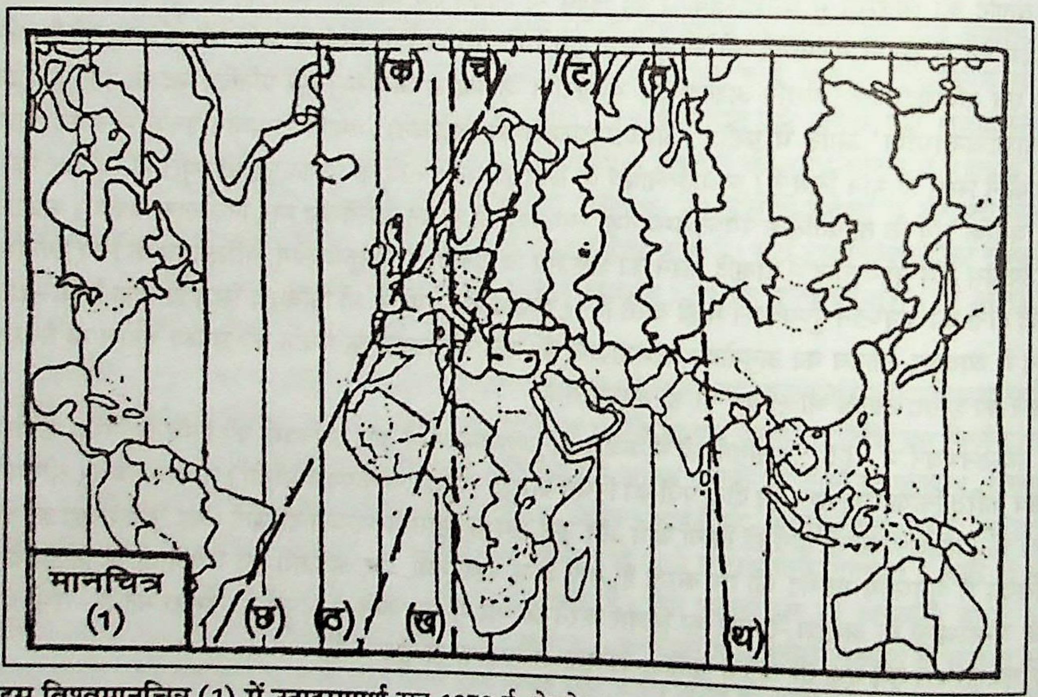

इस विश्वमानचित्र (1) में उदाहरणार्थ सन् 1979 ई. के केवल चार (मकरसंक्रान्ति, शिवरात्रि, नवरात्रप्रारम्भ और श्री गुरुनानकजयन्ती) पर्वों की तारीखों में स्थान(भूपृष्ठ)भेद से उत्पन्न अन्तर को दर्साने वाली चार रेखाएं आसन्नमान से खींची गयी हैं [1]। स्थानीय अक्षांश-रेखांश (स्थानीय सूर्य-चन्द्रोदयास्त आदि) के आधार पर पर्वोत्सवों के निर्णय के सिद्धान्त अनुसार सन् 1979 में **'च-छ'** रेखा से दायीं ओर वाले देश-प्रदेशों में मकरसंक्रान्ति का उत्सव 14 जनवरी को और इससे बायीं ओर वाले देश-प्रदेशों में 13 जनवरी को मनाने की स्थिति थी [2]।

इसी प्रकार शिवरात्रिव्रत **'क-ख'** रेखा से दायीं ओर 25 फरवरी को और बायीं ओर 24 फरवरी को; नवरात्रप्रारम्भ,

---

[1] *यद्यपि ये रेखाएं कुछ वक्र होनी चाहिएं, तथापि गणनासुविधा के लिए इन्हें आसन्नमान से सरल रेखा के रूप में ही अंकित किया गया है।*

[2] *पंजाब, हरियाणा, दिल्ली आदि में परम्परानुसार सूर्योदय से यत्किंचित् भी पहले घटित होने वाली संक्रान्ति को पहले दिन मे ही मनाते हैं।*

घटस्थापन, संवत्सरारम्भ **'त-थ'** रेखा से दायीं ओर 29 मार्च को और बायीं ओर 28 मार्च को तथा श्रीगुरुनानकजयन्ती **'ट-ठ'** रेखा से दायीं ओर 4 नवम्बर को एवं बायीं ओर 3 नवम्बर को मनायी जानी चाहिए थी।

इस तरह स्पष्ट है—स्थानीय सूर्योदयास्तादि अनुसार ही व्रत-पर्व की तारीख के निर्णय का आग्रह यदि न छोड़ा जाये तो प्रतिवर्ष इसी प्रकार प्रत्येक व्रत-पर्व की तारीख का क्षेत्र बतलाने वाली रेखाएं भूगोल-चित्र पर हमें खींचनी पड़ेंगी। क्योंकि हमारे प्रमुख-प्रमुख व्रत-पर्वों की संख्या कम से कम 100 तो है ही, अत: स्थानभेद से भूगोल पर इनकी भिन्न-भिन्न तारीखों का निर्णय करने के लिए हमें प्रतिवर्ष कम से कम 100 विभाजक रेखाएं भूगोल-चित्र पर अंकित करनी ही होंगी। यही नहीं, जिन देश-प्रदेशों को यह काट रही होंगी, उनके विस्तृत मानचित्रों पर भी पृथक्-पृथक् इन विभाजक रेखाओं का मार्ग स्पष्टता से दिखाना अनिवार्य होगा। क्योंकि, ये रेखाएं जिलों व नगरों को भी विभाजित करती हैं, अत: प्रत्येक व्रतपर्व के लिए यह समस्या उपस्थित होगी कि—किसी जिला या नगर के एक भाग में वह आज और दूसरे भाग में कल मनाना होगा।

यहां हम सन् 1977 की तुला-संक्रान्ति की एक ऐसी ही समस्या प्रकट करने वाला मानचित्र (2) प्रस्तुत कर रहे हैं, जिसमें नयी दिल्ली के एक भाग में यह तुलासंक्रान्ति 16 अक्तूबर को और दूसरे भाग में 17 अक्तूबर को पड़ रही थी। दायीं ओर दिये गये मानचित्र (2) को देखिये। इसमें दो गयी 'क-ख' रेखा से दायीं ओर 17 अक्तूबर को और बायीं ओर 16 अक्तूबर को सन् 1977 की तुला-संक्रान्ति सिद्ध होती है। क्योंकि इस रेखा से दायीं ओर सूर्य का तुला में संक्रमण 17 अक्तूबर के सूर्योदय के कुछ ही बाद हुआ और इससे बायीं ओर कुछ पहले।

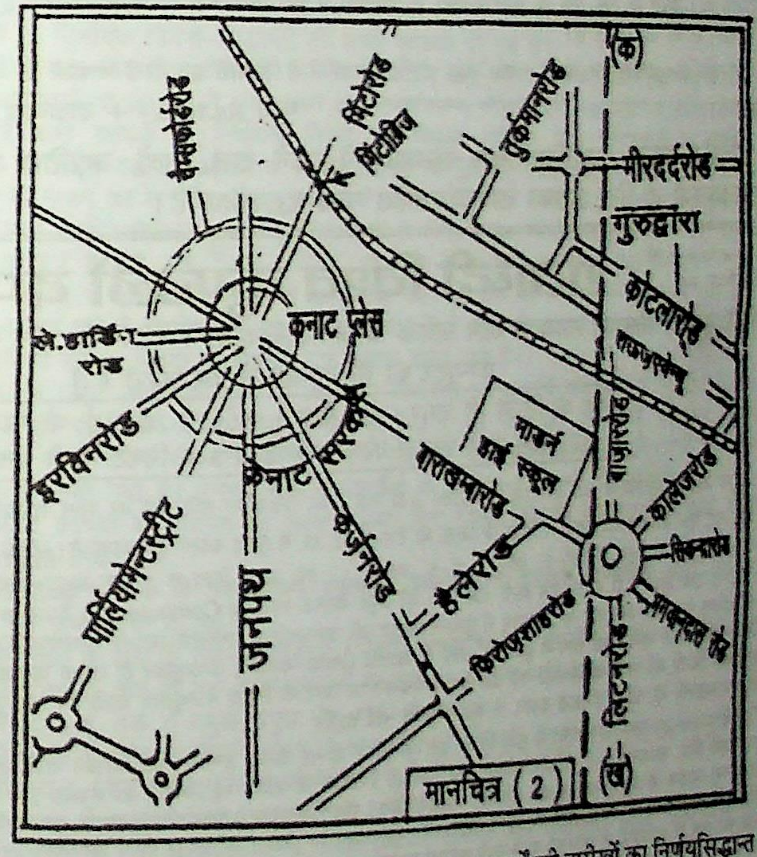
मिंटोरोड
मिंटोब्रिज
तुर्कमानरोड
(क)
मीरदर्दरोड
गुरुद्वारा
कोटलारोड
ले.हार्डिंग रोड
कनाट प्लेस
इरविनरोड
कनाट सरकस
बाराखम्बारोड
माडर्न हाई स्कूल
कालेजरोड
पार्लियामेन्टस्ट्रीट
जनपथ
कर्जनरोड
हैलीरोड
फिरोजशाहरोड
लिटनरोड
(ख)

मानचित्र (2)

इस विवेचन का सारांश यह है कि—स्थानीय सूर्योदयास्त आदि के आधार पर व्रतपर्वों की तारीखों का निर्णयसिद्धान्त भारी समस्याजनक है। **इस समस्या का एकमात्र समाधान यही है कि—व्रतपर्व की भारतीय केन्द्रस्थल से सम्बद्ध तारीख को ही प्रामाणिक (Standard)** मानकर तदनुसार ही इन व्रतपर्वों को विश्व में मनाया जाये।

साईज़ 28 x 21 सें. मी. (एटलस साईज़).
पृष्ठसंख्या 722

THE PLANETARY EPHEMERIS FOR HUNDRED YEARS
(1951 To 2050 A.D.)

चिरस्थायी **Imported** पेपर
आकर्षक **Colourful** टाईटल

शताब्दी ग्रहभोगांश

(सन् 1951 से 2050 ई. तक के सूक्ष्म स्पष्ट दैनिक ग्रह एवं उनका राशि–नक्षत्रप्रवेश व वक्र–मार्गकाल)

(इंग्लिश एवं हिन्दी–दोनों भाषाओं में) (इस समय उपलब्ध है।)

बडे साईज के 722 पृष्ठों के इस विशाल ग्रन्थ में सन् 1951 से 2050 ई. तक के प्रातः 5 घं. 30 मि. (भा.स्टैं.टा.) कालिक विकलान्त सूक्ष्म दृक्सिद्ध दैनिक स्पष्ट सूर्य, चन्द्र, मंगल, बुध, गुरु, शुक्र, शनि, मध्यम राहु , स्पष्ट राहु, यूरेनस, नेप्च्यून, प्लूटो दिए गए हैं। चन्द्र के अलावा सभी ग्रहों का भा. स्टैं. टा. में राशि, नक्षत्र–प्रवेशकाल तथा वक्र–मार्गकाल भी दिया गया है। चन्द्र का केवल राशि–प्रवेशकाल ही दिया है। प्रत्येक मास की पहिली तारीख का स्पष्ट अयनांश भी दिया गया है।

इसकी गणित एवं मुद्रण दोनों **Computer Program** द्वारा ही किए गए हैं, जिससे यह किसी भी प्रकार की अशुद्धि से सर्वथा मुक्त है।

ज्योतिर्विदों का मन्तव्य है कि– यह प्रकाशन ज्योतिषजगत् के लिए वरदान है। इसमें वह सभी कुछ है, जिसका चिरकाल से हमारे पञ्चांगों में अभाव खटकता था। **भारत के अब तक के ज्योतिषजगत् के इतिहास में यह अपने ढंग का पहला प्रकाशन है,** जिसकी तुलना इस विषय के किसी भी पाश्चात्त्य प्रकाशन से की जा सकती है।

पुस्तक **English** एवं हिन्दी– एक साथ दोनों भाषाओं में है, जिससे इन दोनों भाषाओं के वेत्ता इस एक ही ग्रन्थ से समानरूप में लाभान्वित होंगे।

मूल्य Rs.1000/- + डाकव्यय Rs. 60/-

विशेष छूट– ज्योतिषशिक्षण संस्थाओं में पढ़ने वाले छात्रों, ज्योतिष अनुसंधानरत संस्थाकेन्द्रों एवम् सभी पुस्तकालयों के लिए इसका डाकव्ययसहित मूल्य Rs. 800/- है।

साईज़ 24 x 18½ सें. मी.
पृष्ठसंख्या 280

शताब्दी विश्व कुण्डली दर्पण

मनोहारी बहुरंगा टाईटल
पुस्तक उपलब्ध है।

[एक ऐसी पुस्तक, जिसकी मदद से आप जातक के जन्मकालिक लग्न का निर्णय और उसकी जन्मकुण्डली का निर्माण कम्प्यूटर की सी द्रुतगति से कर सकते हैं।]

विश्व के किसी भी नगर/ग्राम में सन् 1951 से 2050 ई. के मध्य उत्पन्न हुए/होने वाले जातक की जन्मकुण्डली 3–4 मिनट में ही बनाइए।

इस अद्भुत पुस्तक में 100 वर्ष (1951 से 2050 A.D. तक) का चन्द्रसहित सभी ग्रहों का सूक्ष्म राशिप्रवेशकाल (भा. स्टैं. टा.) दिया गया है, जिसे पुस्तक में दिए गए एक कोष्ठक की मदद से विश्व के किसी भी देश के स्टैं. टा. में तुरन्त बदला जा सकता है। 0° से 66½° अक्षांश तक प्रत्येक अक्षांश–कला के अन्तर पर (अर्थात् 0°–1′, 0°–2′, 0°–3′, 0°–4′, 0°–5′ अक्षांश ...... इस प्रकार विश्व के प्रत्येक अक्षांश–कला के लिए) मेषादि 12 लग्नों का दैनिक उदयकाल सेकण्ड तक सूक्ष्मता से बतला देने वाली 136 पृष्ठों की अपूर्व मौलिक सारणियां **Computer** द्वारा तैयार करके दी गई हैं, जिनकी मदद से आप विश्व के किसी भी दक्षिण या उत्तर अक्षांशीय नगर/ग्राम में उत्पन्न जातक की जन्मकालिक लग्नराशि अत्यन्त सूक्ष्मतापूर्वक वस्तुतः सिर्फ एक मिनट में ही जान सकते हैं। **ध्यान रहे – बच्चे का जन्म जिस ग्राम में हुआ हो, उसी के अक्षांशों (अक्षांश–कलाओं) के अनुसार ही उसके जन्मकालिक लग्न का निर्णय करना चाहिए। उस ग्राम के पार्श्ववर्ती किसी बड़े नगर के अक्षांशों को वहां प्रयोग में लाने पर लग्न के निर्णय में स्थूलता रहती है। इस पुस्तक में विश्व के हर ग्राम की अक्षांशकला की सूक्ष्मतम लग्नसारणी दी गई है, जिसके प्रयोग से यह स्थूलता नहीं रहती।**

यदि जातक का जन्म लग्नसन्धि में हुआ हो तो इस पुस्तक में दी गई दैनिक लग्नारम्भकाल बतलाने वाली जन्मस्थलीय अक्षांश की सारणी से आप तुरन्त (बिना गुणा–भाग किए, साधारण 2–3 मौखिक जोड़–घटाव द्वारा ही) अधिक से अधिक 1½ मिनट (90 सेकण्ड) में ही यह जान लेंगे कि– यह सन्निगत लग्न (सन्देहास्पद लग्न) जातक के जन्मस्थल पर कब (कितने बजकर, कितने मिनट और कितने सेकण्ड पर) प्रारम्भ या समाप्त हो रहा है। भूगोल के किसी भी स्थल पर स्थित छोटे से छोटे ग्राम में भी (उस ग्राम के अपने कला तक शुद्ध वास्तविक अक्षांश के आधार पर) लग्नराशि का सेकण्ड तक शुद्ध प्रारम्भ एवं समाप्तिकाल आश्चर्यजनक सरलता से चुटकियों में बतलाने वाली ऐसी अद्भुत पुस्तक आपको विश्व की किसी भी भाषा में नहीं मिलेगी–यह हम प्रतिज्ञापूर्वक कह सकते हैं।

1951 से 2050 A.D. तक दुनिया के किसी भी कोने में उत्पन्न हुए अथवा उत्पन्न होने वाले किसी भी जातक की जन्मकुण्डली इस विलक्षण पुस्तक द्वारा आप सिर्फ 3–4 मिनटों में ही बिना गुणा–भाग किए आसानी से बना सकते हैं।

स्पष्टता के लिए देश–विदेश के विभिन्न नगरों में उत्पन्न जातकों के जन्मकालिक लग्न एवम् जन्मकुण्डलियां बनाने के 28 उदाहरण दिए गए हैं। भारत के प्रसिद्ध–प्रसिद्ध लगभग 1000 तथा विश्व के अन्य सभी देशों के लगभग सभी महानगरों के अक्षांश, रेखांश, स्टैं. अं. (स्था. म. का. और क्षेत्रीय स्टैं. टा. का अन्तर) तथा G.M.T. एवं भा.स्टैं.टा. से उनके क्षेत्रीय स्टैण्डर्ड टाईम का अन्तर दिया गया है।

मूल्य Rs. 500/- + डाकव्यय Rs. 50/-

इन दोनों पुस्तकों का डाकव्ययसहित मूल्य नीचे लिखे पते पर M.O. द्वारा अथवा "अभिजित् प्रकाशन" के नाम बनवाए गए D.D.(D.D. drawn in favour of 'Abhijit Prakashan') द्वारा भी भेजा जा सकता है। पुस्तकें रजिस्टर्ड डाक द्वारा भेजी जाती हैं। V.P.P. से भेजने की व्यवस्था नहीं है।

पुस्तकों का प्राप्तिस्थान :– श्रीमती वीना चतुर्वेदी, M.A., M.Phil., 'अभिजित् प्रकाशन,
कोठी नं. 59, सैक्टर–6, **P.O.** पंचकूला (हरियाणा) – 134 109, Phone: 0172-2565 303

पृष्ठ संख्या 271

चिरस्थायी बहुमूल्य कागज़ पर मुद्रित

व्रतपर्व–विवेक

साईज़-24x18½ C.M.

सुदृढ़, आकर्षक टाईटल

[व्रतपर्वों की तिथियों (तारीखों) के निर्णायक नियमों पर सरल–सुबोध भाषा–शैली में लिखा एक प्रामाणिक अपूर्व प्रकाशन]

[सन् 2001 से 2050 ई. तक के रामनवमी, दशहरा, दीपावली आदि सभी हिन्दु व्रतपर्वों की तारीखों की तैयार लम्बी सूची।]

इस पुस्तक में हिन्दुओं के चैत्र आदि 12 मासों के व्रतपर्वों के निर्णय का विशद विवेचन, निर्णयसिन्धु, धर्मसिन्धु आदि धर्मशास्त्रीय ग्रन्थों के प्रमाण–वाक्यों के आधार पर ऐसी सरल भाषा–शैली में किया गया है कि– हिन्दी जानने वाला कोई भी इसे पढ़कर, रामनवमी आदि किसी भी व्रतपर्व की तारीख का निर्णय आसानी से कर सकता है। विभिन्न पंचांगों में किसी व्रतपर्व की तारीख के बारे में मतभेद होने पर इस पुस्तक में दिए गए नियमों के अनुसार यह निर्णय आप अधिकारपूर्वक कर सकते हैं कि– किस पंचांग की तारीख शुद्ध है।

व्रतपर्वों की तारीख का निर्णय पञ्चाङ्गकार किन नियमों के आधार पर करते हैं– यह सब शास्त्रीय प्रमाणों द्वारा विस्तारपूर्वक हिन्दी में समझाया गया है। व्रतपर्वों के निर्णायक धर्मशास्त्रीय सैकड़ों संस्कृतवाक्य, श्लोक हिन्दी–अनुवादसहित उद्धृत किए गए हैं। प्रातः, संगव, मध्याह्न, अपराह्न, सायं, प्रदोष, अरुणोदय, निशीथ, पूर्वविद्धा–परविद्धा तिथि आदि सभी पारिभाषिक कठिन शब्दों की (जिनका प्रयोग व्रतपर्व–निर्णय के प्रसंग में बार–बार आता है) सुस्पष्ट व्याख्या की गई है और इन्हें जानने की गणितप्रक्रिया से मुक्ति दिलाने वाले अनेक कोष्ठक आपको यहां मिलेंगे।

इस पुस्तक में दिए गए अनेक महत्वपूर्ण विषयों में से कुछेक की ओर हम पाठकों का ध्यान यहां आकृष्ट करते हैं:–

(i) हिन्दु व्रतपर्वों के निर्णायक नियमों–सिद्धान्तों की सरल व्याख्या दी गई है।

(ii) हिन्दु व्रतपर्वों में यदा–कदा पैदा होने वाले मतभेद के कारण और उनके प्रतिकार बतलाए गए हैं।

(iii) चैत्रादि 12 चान्द्रमासों के 24 पक्षों में मनाए जाने वाले नवरात्रारम्भ, श्रीरामनवमी, अक्षयतृतीया, श्रीकृष्ण जन्माष्टमी, श्राद्धारम्भ–समाप्ति, दीपावली आदि सभी व्रतपर्वों के निर्णायक नियमों का विस्तृत विवेचन तथा धर्मशास्त्रों के सभी अपेक्षित व्रतपर्वनिर्धारक संस्कृत–प्रमाणवाक्यों को उद्धृत कर, इन व्रतपर्वों की तिथि (तारीख) का निर्धारण–प्रकार सोदाहरण स्पष्ट किया गया है।

(iv) किस व्रतपर्व के मनाने का शास्त्रीय–विधान क्या है ? व्रतदिन की चर्या कैसी हो ? व्रतदिन में पूजा–पाठ कैसे किया जाए ? व्रतदेवता की पञ्चोपचार या षोडशोपचार पूजा कैसे, किस मन्त्र से, किन उपकरणों (सामग्री) से की जाए, व्रत में देवता का ध्यानमन्त्र क्या है ? व्रत में क्या खाएं, क्या न खाएं ? व्रती के लिए क्या विधि–निषेध है ? व्रतपारणा (व्रत के अन्त में किए जाने वाले भोजन) का समय क्या है ? पारणा में कौन–कौन से पदार्थ भक्ष्य और कौन से वर्ज्य हैं ? सूतक–पातक में व्रत कैसे किया जाए ? रजस्वला स्त्री व्रत के दिन क्या करे ? व्रतभंग होने पर क्या प्रायश्चित्त है ? सूर्य–चन्द्रग्रहण के समय स्नान–दान–जपादि का क्या विधान है ? – इत्यादि पचासों ज्ञातव्य विषयों पर सप्रमाण पूर्ण प्रकाश डाला गया है।

(v) आधुनिक युग के व्यस्त जीवन को दृष्टि में रखते हुए व्रतदेवता की पूजादि का सारगर्भ संक्षिप्त विधान दिया गया है, जिसे 10–15 मिनटों में ही कोई भी व्यक्ति स्वयं कर्मकाण्डी विद्वान् की सहायता के बिना ही कर सकता है। नवरात्र–घटस्थापन, रामनवमी–पूजा, श्राद्ध–तर्पण, दीपावली पर महालक्ष्मी पूजनादि सभी व्रतपर्वसम्बन्धी अनुष्ठानों को आप स्वयं कर सकें– ऐसी बालबोध शैली में समझाया गया है। लगभग सभी व्रतदेवताओं के संस्कृत–स्तोत्र भी दिए गए हैं।

(vi) करवाचौथ आदि व्रतपर्वों के उद्यापन की सरल प्रक्रिया बिना किसी विशेषज्ञ की मदद के कोई भी गृहिणी स्वयं कर सके–ऐसा सरल विधानसहित निर्देश है।

(vii) सन् 2001 से 2050 ई. तक के नवरात्रारम्भ, प्रदोषव्रत, एकादशीव्रत, दशहरा, दीपावली आदि लगभग सभी हिन्दु–व्रतपर्वों की अंग्रेजी तारीखों की लम्बी सूची दी गई है।

(viii) सन् 2001 से 2050 ई. तक के सूर्य–चन्द्रग्रहणों, हरिद्वार, प्रयाग, नासिक, उज्जैन के कुम्भपर्वों की तारीखें।

(ix) सन् 2001 से 2050 ई. तक के गुरु–शुक्रास्तकाल, गजच्छाया, अर्धोदय आदि पर्व।

(x) सन् 2001 से 2050 ई. तक के प्रमुख–प्रमुख जैन–पर्वों की तारीखें।

(xi) सन् 2001 से 2050 ई. तक के चैत्रादि मासों के चन्द्रदर्शन की तारीखें, तदनुसार मुहर्रम आदि मुस्लिम मासों की प्रारम्भ–तारीखें एवम् मुहर्रम, ईद–उल–फित्र आदि मुस्लिम त्योहारों की तारीखों का ज्ञानप्रकार।

(xii) सन् 2001 से 2050 ई. तक के सिक्ख–गुरुपर्वों की तारीखें।

(xiii) सन् 2001 से 2050 ई. तक के ईस्टर सण्डे, गुडफ्राईडे की तारीखें और तदनुसार अन्य क्रिश्चियन पर्वों की तारीखों का तुरन्त निर्णय करने वाली अद्भुत तालिका।

(xiv) सभी प्रमुख व्रतों की माहात्म्य कथाएं।

(xv) सभी प्रमुख व्रतों के देवी–देवताओं की आरतियां एवं स्तोत्र।

इन उपरोक्त विषयों के अलावा व्रतपर्वों से सम्बद्ध अन्य बीसों विषय आपको इस पुस्तक में मिलेंगे। इसे खरीद लीजिए। बस, आगामी 43 वर्षों तक (सन् 2050 ई. तक) व्रतपर्वों की तारीखें जानने के लिए पंचांग, डायरी या कैलेण्डर खरीदने की आपको ज़रुरत नहीं होगी।

मूल्य Rs. 525/– + Rs. 50/– डाकव्यय

हमारी पुस्तकें केवल "अभिजित् प्रकाशन, कोठी नं. 59/6, पंचकूला से ही मिलेंगी। इन्हें बेचने का अधिकार अन्य किसी भी बुक्सेलर को नहीं दिया गया है।

सम्पर्कसूत्र– श्रीमती वीना चतुर्वेदी, M.A., M.Phil., 'अभिजित् प्रकाशन,' कोठी नं. 59, सैक्टर–6,
P.O. पंचकूला (हरियाणा) – 134 109, Phone: 0172-2565 303

ग्रहणादर्श

लेखक–प्रियव्रत शर्मा

[सन् 2016 से 2050 ई. तक भारत में दृश्य सूर्य–चन्द्र ग्रहणों का सांगोपांग विवरण]

इस पुस्तक में सन् 2016 से 2050 ई. तक (35 वर्षों में) भारतभूमि पर दिखलाई पड़ने वाले समी सूर्य–चन्द्र ग्रहणों का सर्वाङ्गीण विवेचन है। चन्द्रग्रहण के स्पर्श, मध्य, मोक्ष और खग्रासारम्भ–समाप्ति के सेकण्ड तक शुद्ध काल, ग्रासमान तथा ग्रस्तोदय, ग्रस्तास्त ग्रहण वाले भारतीय स्थलों के अक्षांश–रेखांश निर्दिष्ट हैं।

इस 35 वर्षीय अवधि में भारतीय क्षेत्र में घटित होने वाले सूर्यग्रहणों के विभिन्न अक्षांश–रेखांशीय स्थलों के स्पर्श, मध्य, मोक्ष के सेकण्ड तक शुद्ध काल तथा परमग्रासमान पृथक्–पृथक् कोष्ठकों में दिए गए हैं। सूर्यग्रहण के ग्रस्तोदयास्तवाले स्थलों के अक्षांश–रेखांशों को भी पृथक् कोष्ठकों में दिया गया है। खग्रास एवम् कंकण सूर्यग्रहणों के प्रारम्भ–समाप्तिकाल तथा खग्रास–कंकण ग्रहण के पथ (पट्टी) की दक्षिणोत्तरी सीमाओं के अक्षांश, रेखांश किंच खग्रास–कंकणग्रहण के मार्ग (पट्टी) की मध्यवर्त्ती रेखाओं के अक्षांश–रेखांश भी दिए गए हैं, जिनकी मदद से यह अनायास जाना जा सकता है कि– भारत में अमुक खग्रास या कंकण ग्रहण कहां–कहां, कब–कब दिखाई देगा तथा किन स्थलों पर खग्रास, कंकण ग्रहण की अवधि कितनी होगी ? इसके साथ ही भारत के प्रसिद्ध 225 नगरों में प्रत्येक सूर्यग्रहण के स्पर्श, मोक्ष आदि काल भी पृथक् कोष्ठक में प्रदर्शित हैं।

यहां दिए गए सूर्यग्रहण के विभिन्न अक्षांश–रेखांशीय स्पर्श–मोक्षादि के कालों द्वारा कोई भी व्यक्ति भारत–मानचित्र पर स्पर्श–मोक्षादिदर्शक रेखाएं भी आसानी से अंकित कर सकता है और उनसे किसी भी नगर/ग्राम में उस सूर्यग्रहण के स्पर्शादि काल एक ही दृष्टि में तुरन्त जान सकता है।

ग्रहण विश्व के अन्य किन–किन देशों में दृश्य होगा, इसका निर्देश करने वाले भूगोल-चित्र भी दिए गए हैं। भारतीय भूभाग पर दृश्य सूर्य–चन्द्रग्रहणों के सभी खगोलीय चमत्कारों **(Celestial Phenomona)** का इसके सदृश स्पष्ट एवं परिपूर्ण विवेचन आपको अन्यत्र कहीं नहीं मिलेगा, यह हम प्रतिज्ञापूर्वक कह सकते हैं।

भारतीय पञ्चाङ्गकारों के लिए तो यह प्रकाशन वरदान सिद्ध होगा। यह पुस्तक 2018 ई. के मध्य तक प्रकाशित हो जाएगी– प्रतीक्षा कीजिए।

यदि आप ज्योतिष का व्यवसाय करते हैं तो आपको आवश्यकता है 'अभिजित् प्रकाशन' की पुस्तकों की। 'अभिजित् प्रकाशन' की पुस्तकों से सम्बद्ध जानकारी पृष्ठ 287 पर देखिए।

श्री राम श्री राम

राशि रत्न भाग्य

सभी राशियों के रत्न, सभी राशियों के उपरत्न, नवरत्न लूज सेट, नवरत्न अंगूठी व पेन्डेन्ट, सभी राशियों पर लगने वाली राशि की अंगूठियां व पेन्डेन्ट शुद्ध चांदी में, पूजा के काम में आने वाले श्री यंत्र, गणेश, शिवलिंग, रुद्राक्ष के मुखदार दाने । से 14 मुखी व सभी प्रकार की मूर्तियाँ तथा रुद्राक्ष मालाऐं उचित रेट पर मिलती हैं।

पन्ना हीरा मोती
पुखराज माणिक मूंगा
लहसुनिया नीलम गोमेद

मुफ्त मूल्य सूची के लिए स्वयं मिलें, फोन करें, पत्र व्यवहार करें अथवा हमारी वेबसाइट पर लागऑन करें।

ज्योतिषाचार्यों के लिए विशेष छूट, ज्योतिषी कृपया सम्पर्क करें।

पूरणमल शंकरलाल

हाउस नं. 150, ग्राउण्ड फ्लोर, हल्दिया हाऊस,
जौहरी बाजार, जयपुर-302003

माल पार्सल या वी.पी.पी द्वारा भी भेजा जाता है।

(M) 09829019860 (Shankarlal Soni), (M) 09829069860 (Vikas Soni)
Phones- (O) 0141-2566750, 0141-4106750, (R) 0141-2296141
Email- Rashiratanbhagya@gmail.com
Website- www.rashiratanbhagya.com

''ज्योतिष रत्न''

(ज्योतिष पर आधारभूत पुस्तक)

इस पुस्तक में ज्योतिष और दर्शन शास्त्र का समन्वय कर इसे सत्य व रोचक बना दिया है। चूंकि दर्शनशास्त्र व ज्योतिष दोनों एक ही सिक्के के दो पहलू हैं, अतः एक अच्छा ज्योर्तिविद् वही हो सकता है जिसे ज्योतिष के साथ-साथ दर्शनशास्त्र का भी ज्ञान हो, क्योंकि समस्त पराविद्याओं का सम्बन्ध दर्शनशास्त्र से है। यही कारण था कि हमारे ऋषि-मुनि त्रिकालदर्शी होने के साथ-साथ उच्चकोटि के दार्शनिक भी थे। इसके अलावा इस पुस्तक में खगोल गणित व फलित ज्योतिष का संक्षिप्त परिचय देते हुए षोड्षवर्ग सिद्धान्त की सरल व्याख्या की गई है तथा साथ में सभी ग्रहों का पौराणिक, वैज्ञानिक और सामान्य परिचय देते हुए भौतिक और अभौतिक स्तर पर उनके सम्पूर्ण कारकत्व की तार्किक विवेचना की गई है।

इस पुस्तक में फलादेश की ''सम्यक'' विधि की व्याख्या ठोस फलित सूत्रों के साथ की गई है तथा साथ ही इसमें एक संक्षिप्त ज्योतिष शब्द कोश व प्रश्नोत्तर माला भी दी गई है।

मूल्य : 125/- रुपये + 35/- (डाक व्यय)

सुख-समृद्धि की राह : गृह-वास्तु

लेखिका- सुमन पंडित मूल्य : रुपये 125/- + 35/-

वास्तुशास्त्र मानवमात्र के अधिकतम शारीरिक, मानसिक और भावनात्मक कल्याण के लिए है। एक वास्तु सम्मत घर आपकी सभी कामनाओं और लक्ष्यों की प्राप्ति में सहायक सिद्ध हो सकता है और आपको प्रदान कर सकता है :-

- सुख और समृद्धि
- स्वास्थ्य और रोग से मुक्ति
- घर और व्यवसाय में सफलता
- एक बेहतर जीवन प्रणाली
- उत्तम दाम्पत्य जीवन
- उत्तम शिक्षा और

इस पुस्तक में वास्तुशास्त्र के सिद्धांत एवम् व्यवहार दोनों पक्षों का आधुनिक संदर्भ में संश्लिष्ट रूप से विवेचन किया गया है। भूखण्ड का चयन, भवन निर्माण प्रक्रिया, वास्तु नियोजन से लेकर आंतरिक साज-सज्जा तक प्रयोग में आने वाले वास्तु नियमों का इस पुस्तक में एक व्यवहारिक, क्रमबद्ध और सहज सुगम रूप से प्रस्तुत किया गया है। फ्लैट्स के चयन और आंतरिक साज-सज्जा द्वारा उनमें अधिकतम ऊर्जा के संचार के लिए सरल सटीक उपाय भी इस पुस्तक में दिए गये हैं जो आधुनिक संदर्भ में अत्यन्त प्रासंगिक हैं। वास्तुशास्त्र के विद्यार्थियों, विद्वानों और सुखसमृद्धि की कामना करने वाले सामान्य व्यक्तियों-सभी के लिए यह अत्यन्त उपयोगी और अनिवार्य पुस्तक है।

प्राप्ति स्थान:- **अग्रवाल बुक डिपो** 460, खारी बावली, दिल्ली - 110 006 ☎ 23943254

ज्ञान सागर

लेखक-रविन्द्र लाखोटिया

आज के आधुनिक एवं प्रतियोगी जीवन में मनुष्य इतना व्यस्त हो गया है कि उसके पास अपनी दैनिक दिनचर्या से कुछ समय निकालना कठिन सा प्रतीत होता है यदि व्यक्ति 15 मिनट प्रतिदिन स्वाध्याय के लिए खाली समय में (जिसका प्रयोग वह अपने कार्य की सोच में बिताता है) या यात्रा के दौरान या सोने से पहले निकाल ले। यह पुस्तक तब न केवल उसके ज्ञान की वृद्धि भी करेगी बल्कि एक सच्ची मार्गदर्शक भी साबित होगी। इस पुस्तक में *"पिता के पत्र पुत्री के नाम"* एक मनोवैज्ञानिक दृष्टिकोण लिए हुए तनाव युक्त बच्चों में आत्मविश्वास तथा विवेक आदि बढ़ाने वाले प्रेरणात्मक पत्रों का संकलन है। मूल्य : रुपये 45.00 *(डाक व्यय अलग)*

लाल किताब
(सम्पूर्ण)

उर्दू भाषा की 1200 पृष्ठों की प्रसिद्ध एवं प्राचीन पुस्तक का हुबहू सरल हिन्दी अनुवाद

(9x14 इंच साइज में हिन्दी भाषा में प्रथम बार तीन खण्डों में फोटो स्टेट रूप में)

- यह अनोखी पुस्तक बहुत से आश्चर्यजनक ज्योतिष नियमों एवं विचित्र ज्ञानके लिये प्रसिद्ध है।
- ग्रहों की शान्ति के लिये सरल, व्यवहार में आ सकने वाले अचूक टोटके व उपाय जो प्रत्येक व्यक्ति आसानी से व कम खर्च में कर सकता है।
- साथ ही जन्म कुंडली की ग्रह स्थिति का हस्तरेखाओं के साथ मिलान करने की विधि का वर्णन है।
- जिनकी जन्मकुंडली नहीं या गलत है उनके मकान की कुंडली बनाकर ग्रह स्थिति और उसके फलित का मिलान करने की विधि इत्यादि।
- इसमें वर्ष कुंडली बनाने और वर्षफल निकालने की एक ऐसी विधि बताई गई है, जिससे 10 मिनट में किसी भी वर्ष की कुंडली और फलित निकाला जा सकता है अर्थात् लम्बे-चौड़े गणित की आवश्यकता नहीं रही।

चमत्कारी फलादेश के लिये प्रसिद्ध दुर्लभ एवं बेजोड़ ग्रन्थ प्रथम बार दो खण्डों में (हिन्दी भाषा में) स्वयं पढ़िये और आजमाइये।

- उर्दू की फोटोस्टेट प्रति ज्यों की त्यों भी उपलब्ध की जा सकती है।

मूल्य रु. 2500/- सम्पूर्ण दोनों खण्ड

- कृपया आदेश के साथ पेशगी 1000/- रुपये अवश्य भेजें। डाक व्यय 200 रुपये अलग।

सफलता की राह : कार्यस्थल - वास्तु

लेखिका- सुमन पंडित मूल्य : रुपये 125.00 (डाक व्यय अलग)

भवन निर्माण एक कला है और जिस भवन में आप रहते हैं या जहाँ से आपका कारोबार चलता है, आपके लिए सौभाग्यदायक भी हो सकता है और दुर्भाग्यपूर्ण भी। हममें से अधिकांश लोग प्रतिदिन कम-से-कम आठ घंटे अपने कार्यस्थल पर बिताते हैं। आप नौकरी पेशा हों, अपना व्यवसाय चलाते हों, कन्सल्टेंट हों या उद्योगपति, कार्यक्षेत्र में सफलता और समृद्धि की कामना सर्वोपरि होती है। वास्तुशास्त्र एक दक्ष एवम् तनाव मुक्त कार्यस्थल का निर्माण करता है। कार्यस्थल वास्तु का लक्ष्य एक स्फूर्तिदायक, उत्साहवर्धक और कार्य सक्षम परिवेश प्रदान करता है। *इस पुस्तक में वास्तुशास्त्र के शास्त्रीय रूप के साथ-साथ आधुनिक परिप्रेक्ष्य में :-*

- कार्यालय
- अस्पताल/नर्सिंग होम
- बहुमंजिला भवन
- शोरूम तथा दुकानें
- सिनेमा हाल / परिसर
- होटल/रिसार्ट
- उद्योग
- शापिंग सेंटर
- बैंक/ शिक्षा संस्थान

को अधिक लाभप्रद, उत्पादक और सफल बनाने के वास्तुसम्मत, सहज और सटीक उपाय, सुझाव और समाधान दिए गये हैं। इसमें व्यावसायिक भूखण्ड के चयन से लेकर बने हुए भवनों में विद्यमान वास्तु दोषों से मुक्ति के उपाय भी बताए गये हैं। इस प्रकार बिना तोड़-फोड़ और कम खर्च में किए गए परिवर्तनों द्वारा आप अपने कारोबार को सौभाग्य का प्रतीक बना सकते हैं। आप चाहे नौकरी पेशा हों या उद्योगपति, कार्यक्षेत्र में सफलता और समृद्धि की कामना करने वाले प्रत्येक व्यक्ति के लिए यह एक अत्यन्त उपयोगी और अनिवार्य पुस्तक है।

"सम्पूर्ण हिन्दू चिन्तन" (हिन्दी) एवं
Complete Hindu Thought (English)

मूल्य- 35/-(हिन्दी), 40/- (English) (डाक व्यय अलग)

इस किताब में हिन्दू धर्म से सम्बन्धित हर पक्ष और कोण का समावेश है। यह पुस्तक न केवल हिन्दू धर्म के प्रत्येक जिज्ञासु के लिए बल्कि सर्वसाधारण के लिए भी बहुत उपयोगी है। विशिष्ट विषयों पर चर्चा छोटे-छोटे निबन्धों के रूप में की गई है। पुस्तक की भाषा बहुत ही सरस व सरल है।

प्रसन्न मन व स्वस्थ शरीर का रहस्य

-ले.: पण्डित रविन्द्र लाखोटिया

इस पुस्तक में कार्मिक ज्ञान, मन्त्र अराधना, दैनिक दिनचर्या में व्यवहार, ध्यान व योग (मुद्रा सहित), भारतीय आयुर्वेदिक मालिश (मुद्रा सहित), मुद्रा चिकित्सा, रेकी, क्रिस्टल हिलिंग, डाउसिंग एवं फूलों के द्वारा चिकित्सा सभी पूर्ण रूप से रंगीन चित्रों सहित दी गई है। मूल्य 80/- रुपये (डाक खर्च सहित)

सभी पुस्तकों के लिए मनीऑर्डर निम्न पते पर भेजें-

अग्रवाल बुक डिपो

460, खारी बावली, दिल्ली - 6 फोन : 011-23943254

शताब्दी की सबसे महत्त्वपूर्ण विलक्षण घटना

लंकाधिपति दशानन रावण कृत ज्योतिष, औषधिविज्ञान,
रसायन शास्त्र, दार्शनिक विचारों और नीति शास्त्र के अनुपम ग्रन्थ

रावण संहिता

का हस्तलिखित रूप में प्रकाशन

लंकाधिपति महाराज रावण जहां प्रबल प्रतापी त्रिलोक्य विजेता वीर थे वहीं वे ज्योतिषशास्त्र और तन्त्रशास्त्र के प्रकाण्ड विद्वान भी थे। औषधि विज्ञान और रस निर्माण में वे महर्षि चरक के समकक्ष थे तो ज्योतिष में भी महाराज भृगु से कम नहीं। नीतिशास्त्र का ज्ञान तो उनका इतना अथाह था कि भगवान श्री राम ने अपने भाई लक्ष्मण को उनके पास नीति वचन श्रवण करने हेतु भेजा था।

परमपिता परमात्मा की महती कृपा, आप जैसे धर्मप्राण विज्ञजनों के अनुग्रह तथा विद्यावारिद् ब्राह्मणों एवं दर्शनशास्त्र और प्राचीन साहित्य के मर्मज्ञों के विपुल श्रम एवं सहयोग से आज लंकेश रचित प्राचीन दुर्लभ ग्रन्थ रावण संहिता का प्रकाशन संभव हो सका है। बीस वर्षों से सतत् अनुसंधान, दुर्गम क्षेत्रों की यात्राओं और जहां से भी किंचित् मात्र प्रामाणिक सामग्री प्राप्त हो सकती थी वहां से उस सामग्री के संकलन और समायोजन का महकता हुआ पुष्प है पन्द्रह सौ से अधिक पुराणाकार पृष्ठों का यह हस्तलिखित असली प्राचीन ग्रन्थ संहिता।

महान् विद्वान रावण द्वारा रचित ज्योतिष, औषधि-विज्ञान और तंत्रशास्त्र का यह ज्ञान यद्यपि मूल रूप में
रचित एक ग्रंथ के रुप में कहीं उपलब्ध नहीं, परन्तु ज्ञान की धारा दृष्टि से ओझल भले ही हो जाए वह विलुप्त नहीं
होती। ज्ञान के यत्र-तत्र बिखरे इन बिन्दुओं, किरणों और मोतियों को एक स्थान पर संग्रहित किया गया है
रावण संहिता नामक इस हस्तलिखित वृहद् ग्रंथ में। प्रस्तुत ग्रंथ पांच खण्डों में विभक्त है। प्रथम खण्ड में
लंकाधिपति रावण के वंश का परिचय, जन्म की कथा, उनके महान् कार्यों और ज्ञानवान स्वरूप की झांकी
प्रस्तुत की गई है। द्वितीय खण्ड में लंकेश द्वारा रचित माने जाने वाले चिकित्सा विज्ञान और औषधिशास्त्र से
संबंधित एक हजार एक सौ श्लोकों का हिन्दी अनुवाद तथा अनेक जटिल रोगों के निदान से संबंधित जानकारियां
संग्रहित हैं। तृतीय खण्ड में तंत्रशास्त्र एवं तांत्रिक क्रियाओं से संबंधित प्राचीनतम ज्ञान का संकलन है तो चतुर्थ
खण्ड में हैं सहस्राधिक कुण्डलियां। पंचम खण्ड में कुण्डलियों के फलादेश दिए गए हैं जो लगभग साढ़े छः सौ
पृष्ठों में हैं।

धर्म में आस्था रखने वाले गुण ग्राहक ज्ञानीजनों, ज्योतष के गूढ़ रहस्यों को समझने के आकांक्षी
ज्योतिषाचार्यों, यंत्र-मंत्र-तंत्र शास्त्र के आराधकों एवं प्राचीन चिकित्सा पद्धति के प्रेमियों के लिए तो यह
हस्तलिखित ग्रंथ परम उपयोगी सिद्ध होगा ही, भक्ति भाव से इसका पाठ-पाठन और श्रद्धापूर्वक नमन करने
वाले भी मनवांछित सिद्धियों की प्राप्ति कर सकेंगे, ऐसा विश्वास किया जाता है। विपुल श्रम और राशि व्यय
करने पर ही इस ग्रंथ का प्रकाशन संभव हो सका है फिर भी जन-कल्याण और प्राचीन विलुप्त साहित्य को
जन-जन में लोकप्रिय बनाने की भावना से मात्र 3100/- इक्तीस सौ रुपये एवं डाक खर्च 250/- रुपये
अतिरिक्त रखी गई है। रु. 1000/- (एक हजार रुपये) पेशगी भेजकर शेष 2350/- (दो हजार तीन सौ पचास
रुपये) की वी.पी. द्वारा यह ग्रंथ आप घर बैठे भी प्राप्त कर सकते हैं। मंगाने का पता-

इसके अतिरिक्त हमारे यहाँ ज्योतिष, हस्तरेखा, तंत्र-मंत्र-यंत्र एवं कर्मकाण्ड संबंधी पुस्तकों का विशाल
भण्डार है। कुछ दुर्लभ एवं प्राचीन ग्रंथ भी समय-समय पर आते रहते हैं। नवीन पुस्तकों के लिए भी सम्पर्क रखें।

अग्रवाल बुक डिपो

460, खारी बावली, दिल्ली - 110 006 ☎ 011-23943254

॥ श्री राम ॥

पन्ना	हीरा	मोती
पुखराज	माणिक	मूंगा
लहसुनिया	नीलम	गोमेद

राशि-रत्न + उपरत्न

Certified Gems

ज्योतिषाचार्यों के लिये विशेष

हमारे यहाँ हर प्रकार के राशि-रत्न + उपरत्न एवं नवरत्नों के ओपन सेट, 1 से 21 मुखी रूद्राक्ष, स्फटिक और रूद्राक्ष की मालाऐं इत्यादि **100% शुद्ध गारन्टी के साथ मिलते हैं।**

मुफ्त रेट लिस्ट के लिये लिखें

अधिक जानकारी के लिये स्वयं मिले या पत्र-व्यवहार करें।

माल V.P.P. या बैंक द्वारा भी भेजा जाता है।

S. पूरणमल कमलकिशोर. ज्वैलर्स (रजि.)

दु. नं. 30-31, कानोता हाऊस, दूसरा चौराहा, हल्दियों का रास्ता, जौहरी बाजार, जयपुर (राज.) 302003
फोन : (दु.) 91-0141-2570540, 2568446, मो. : 98292 16124
E-mail : vijay.8380.soni@gmail.com • Website : www.astralsgems.com

दुर्लभ, प्राचीन भृगु संहिता

(संस्कृत-हिन्दी)

यह ग्रंथ प्राचीन काल से ही श्रवणगोचर होता रहा है। इस विद्या के प्रमुख आचार्य श्री भृगु जी महाराज हैं इसी कारण यह महाविद्या शास्त्र भृगु संहिता के नाम से जहां तहां प्रकट है एवं जन्मपत्र के फलित के विषय में अद्वितीय जाना और माना गया है। यह ग्रंथ प्राचीन एवं जीर्ण दशा में कठिनता से प्राप्त किया गया है। इस अनुपलब्ध ग्रन्थ में दस खण्ड हैं:-

1. संतान उपाय खण्ड
2. कुंडली खंड
3. फलित खंड
4. स्त्री फलित खंड
5. नरपति जयचर्या
6. नष्ट जन्मांग दीपिका
7. मूक प्रश्न विचार
8. राज खंड
9. जातक प्रकरणम्
10. सर्वारिष्ट निवारण खंड

अब इस अप्राप्य, दुर्लभ भृगुसंहिता के फुलस्कैप आकार के 2500 पृष्ठों की इलैक्ट्रोस्टेट प्रति उपलब्ध की जा सकती है।

तीन जिल्दों में फुलक्लाथ बाइडिंग सहित (बड़ा साईज)

मूल्य 5500/-

★ कृपया आदेश के साथ पेशगी 1000/- रुपया अवश्य भेजें।

अनुभूत फलित सिद्धांत

लेखक - श्री सीताराम स्वामी ज्योतिषाचार्य

एम.ए., बी.एड., प्रभाकर, दैवज्ञभूषण, ज्योतिष शिरोमणि, ज्योतिष वाचस्पति

मूल्य : 80/- + 40/- (डाक व्यय)

इस ग्रन्थ में राशि, ग्रह व भिन्न-भिन्न भावों के कारकों से उत्पन्न शुभाशुभ योग, धनयोग, विवाह योग आदि महत्वपूर्ण फलित सिद्धान्तों को सरल सरस एवं सुरुचिपूर्ण भाषा द्वारा लघु ग्रन्थ के रूप में पिरोकर ज्योतिष प्रेमी पाठकों के कर-कमलों में समर्पित किया है। "हर्षल" एवं "नेपच्यून का मानव जीवन पर प्रभाव" विषय पर अलग से संभवतया, प्रथम बार प्रकाश डालकर विद्वान् लेखक ने इस लघु ग्रन्थ की विशेषता को उजागर किया है। "कालसर्प योग" पर वर्गीकरण बड़े विस्तारेण कर लेखक ने संभवत: प्रथम बार प्रकाश में लाकर लघुग्रन्थ की विशेषता को चार चाँद लगाने जैसा कार्य कर अति श्रम का परिचय दिया है जो स्पष्टतया झलकता है।

ज्योतिष के विद्यार्थियों के लिए तो यह पुस्तक एक निधि से कम मूल्य नहीं रखती है। यहाँ पर ग्रहों, भावों, भावेश के कारकत्व के संबंध में ऐसी अनेकों सूचियाँ दी हैं कि अन्य ग्रन्थों से इसकी विशेषता का पृथक् आभास स्वयमेव हो जाता है।

प्राप्ति स्थान:- **अग्रवाल बुक डिपो**
460, खारी बावली, दिल्ली - 6 ☎ 23943254,

श्री मार्त्तण्ड ज्योतिष कार्यालय के नियम

1. **'श्रीमार्त्तण्ड ज्योतिष कार्यालय'**—यह शताब्दी पुराना उत्तरभारत का एकमात्र ऐसा ज्योतष कार्यालय है, जिसने असंख्य लोगों की जटिल से जटिलतर समस्याओं का फलितशास्त्रीय चमत्कृतिपूर्ण समाधान प्रस्तुत कर भारी अक्षुण्ण यश अर्जित किया है। हमारे यहां से चित्रापक्षीय निरयण गणनापद्धति द्वारा क्षेत्रीय (Zonal), जन्म समय, जन्म तारीख और जन्म स्थान के शुद्ध अक्षांश आदि के आधार पर अक्षांश, सूर्योदयास्त, अयनांश आदि में सभी अपेक्षित सूक्ष्म संस्कार देकर स्वनिर्मित अत्याधुनिक/कम्प्यूटरीकृत सारणियों द्वारा भारतीय/विदेशी जन्मपत्र, टेवा/दशा और निवास स्थानीय अक्षांश आदि से वर्षफल अतीव सूक्ष्मतापूर्वक बनाये जाते हैं, जिनमें स्वास्थ्य, सन्तान, स्त्री, धन-सम्पत्ति, भाग्योदय, कार्यक्षेत्र, प्रगति आदि का निर्णय किया जाता है। जन्मपत्रादि हिन्दी में सुन्दर व संक्षिप्त फलोदशसहित अत्यन्त सावधानी से बनाये जाते हैं।

नोट—प्रत्येक कार्य की पूरी फीस ऑर्डर के साथ ही भेजें। V.P.P. नहीं की जायेगी। बिना पेशगी के कोई भी कार्य नहीं किया जायेगा। डाकव्यय अलग से होगा।

(i)	भारतीय साधारण जन्मपत्र की फीस	Rs. 800/-
(ii)	भारतीय विस्तृत (बड़े) जन्मपत्र की फीस	Rs. 1200/-
(iii)	विदेशी जन्मपत्र की फीस	Rs. 1500/-
(iv)	भारतीय टेवा/दशा की फीस	Rs. 300/-
(v)	विदेशी दशा की फीस	Rs. 500/-
(vi)	भारतीय वर्षफल की फीस	Rs. 500/-
(vii)	विदेशी वर्षफल की फीस	Rs. 1000/-
(viii)	शुद्ध विवाहमुहूर्त्त/कुण्डली मिलान की फीस	Rs. 1100/-
(ix)	फोन पर मुहूर्त्त/मिलान की फीस	Rs. 2100/-
(x)	सर्वसाधारण प्रश्न की फीस	Rs. 1100/-

2. हमारे यहां मन्त्रादि साधनाकाल के विशेष समय में नवग्रहयन्त्र, महालक्ष्मी यन्त्र, सिद्धगोपाल यन्त्र आदि भी बनाये जाते हैं। जिनमें से कुछ का संक्षिप्त विवरण यह है—

(i) सिद्ध शनियन्त्र—इस यन्त्र को धारण करने से शनिजन्य अशुभ पीड़ा से मुक्ति मिलती है। **फीस—Rs. 2100/-**

(ii) श्रीलक्ष्मी यन्त्र—अष्टगन्ध आदि से विधिवत् शुभ वेला में बनाये इस यन्त्र को पूजास्थल या गल्ले में रखने से लक्ष्मीजी की अपार कृपा रहती है। **फीस—Rs. 5100/-**

(iii) अठाराहा नाशक यन्त्र—जिन औरतों के बच्चे अठाराहा, मसान दोष आदि के कारण मर जाते हैं, उनके संरक्षणार्थ यह यन्त्र वरदान रूप है। **फीस—Rs. 2100/-**

(iv) सिद्धगोपाल यन्त्र—इस यन्त्र को श्रद्धासहित स्त्री धारण करे तो चिरंजीवी पुत्ररत्न की प्राप्ति होती है। **फीस—Rs. 2100/-**

व्यापारियों के लिए चांस (तेजी-मन्दी)

समय-समय पर हम रुई, [illegible] गुड़, खाण्ड, शेयर मार्कीट, सोना, चांदी आदि के चांस की लिखित Report देते हैं। वर्षों से अनेकों व्यापारी हमारे परामर्श से लाभ उठाते आ रहे हैं। एक जिन्स (चना, [illegible] आदि अनाज, तिल-तेल सरसों, बिनौला आदि तिलहन, रुई, गुड़, खाण्ड एवं शेयर मार्कीट तथा सोना, चांदी, तांबा आदि धातुओं) की लिखित Report की अडवांस फीस Rs. 5100/- प्रतिमास एवं वर्षभर की फीस Rs. 51000/- के हिसाब से चार्ज किये जाते हैं। विस्तृत विज्ञापन 'व्यापार- विमर्श' के अन्त में देखें।

नोट—Report के अतिरिक्त Phone पर प्रतिदिन बात करने की फीस अलग से होगी।

पत्रव्यवहार हेतु अपने साफ-साफ डाक पते के साथ फोन नं. एवं Pincode लिखना न भूलें।

—: पण्डित जी से मिलने हेतु :—

क्रमांक (Token) प्राप्ति का समय—7 से 10 A.M.

पण्डित जी से मिलने का समय—9 A.M. से

(दूर से आने वाले सज्जन टेलीफोन से पूज्य पण्डित जी से मिलने का दिन व समय निश्चित कर लें।)

गुरुवार को कार्यालय में अवकाश रहता है।

पत्र-व्यवहार के लिए पता—
पं. संयमी शर्मा, M.A., ज्योतिषाचार्य, धर्मशास्त्राचार्य,
सुपुत्र पं. इन्दुशेखर शर्मा शास्त्री, M.A., ज्योतिषाचार्य,
श्रीमार्त्तण्ड ज्योतिष कार्यालय (नजदीक रेलवे स्टेशन),
मु.पो. कुराली, जिला मोहाली (पंजाब) पिन-140103,
फोन—0160-2641277, 09988407010
Website : www.shrimartand.com

पृष्ठ संख्या 222
चिरस्थायी बहुमूल्य कागज़ पर मुद्रित

मुहूर्त्त गजानन

साईज़-'मार्त्तण्ड पंचांग' के बराबर

लेखकः– प्रियव्रत शर्मा,

(गर्भाधान, पुंसवन, नामकरण, मुण्डन, उपनयन एवम् विवाहादि मुहूर्त्तों के साधन का सरल भाषा/शैली में विस्तृत प्रतिपादन)

वशिष्ठादि संहिताओं, मुहूर्त्तमार्त्तण्ड, मुहूर्त्तचिन्तामणि आदि ग्रन्थों में दिया गया मुहूर्त्त का साधनप्रकार संस्कृत के विद्वान् दैवज्ञों को भी उलझाने वाला है। इस पुस्तक में सभी आवश्यक विभिन्न मुहूर्त्तों के ग्राह्य एवम् वर्ज्य काल आदि का विशद विवेचन किया गया है, जिसे पढ़कर कोई भी व्यक्ति पंचांग में दिए गए तिथ्यादि के अनुसार अभीष्टकाल में अभीष्ट मुहूर्त्त का शुद्धकाल एवम् लग्न जान सकता है। किस मुहूर्त्त में कौन–सा मास–तिथि–वार–नक्षत्र–योग ग्राह्य हैं, कौन–सा काल लग्नमुहूर्त्त के लिए शास्त्रोक्त है, मृताशौच, जननाशौच जैसी प्रतिकूल स्थिति आ पड़ने पर मंगलकृत्य का विधान कैसे हो–इत्यादि मुहूर्त्तसम्बन्धी अनेक उलझे प्रश्नों के सुस्पष्ट समाधान मुहूर्त्तशास्त्रोक्त प्रमाणों द्वारा सुलझाए गए हैं।

शुभकृत्य के मुहूर्त्त को दूषित करने वाले अधिकमास, भद्रा, गुरु–शुक्रास्त, मासान्त–संक्रान्ति, ग्रहणशूल, क्रान्तिसाम्य आदि सभी दोषों का विस्तृत विवरण तथा उनके सम्भव परिहार भी सप्रमाण दिए गए हैं।

देवप्रतिष्ठा, गृहारम्भ, गृहप्रवेश, वधूप्रवेश, राज्याभिषेक, विपणि, यात्रा, पुनर्विवाह, मन्त्रदीक्षा, पशु आदि का क्रय–विक्रय आदि अनेकों आवश्यक कृत्यों के शुभमुहूर्त्त–ज्ञान का विस्तृत विवेचन शास्त्रीय प्रमाणवाक्यों–सहित किया गया है। सभी उद्धृत संस्कृत–प्रमाणवाक्यों को हिन्दी में सुस्पष्ट किया गया है।

भारतीय पंचांगों में दिए गए विवाहादि लग्न केवल भारत के लिए ही होते हैं। इन्हें भारत से अन्य देशों में प्रयोग में लाना अपराध है। इस पुस्तक में अनेक उदाहरणों द्वारा समझाया गया है कि– किसी अभीष्ट विदेशी नगर में प्रयोग में लाने के लिए इन विवाहादि लग्नों में कौन–कौन से संस्कार कैसे करने चाहिएं। विगत एक वर्ष का पूरा तिथ्यादि पंचांग भी दिया गया है। जिसकी मदद से विभिन्न मुहूर्त्तों के शुद्धकाल एवं लग्न के निर्णय–प्रकार अनेक उदाहरणों द्वारा बालबोध शैली में समझाए गए हैं।

मुहूर्त्तशास्त्रों में उपलब्ध जाति, धर्म, लिंग एवं प्रादेशिक परम्पराओं पर आधारित मतभेदों का पूर्वाग्रहमुक्त विश्लेषण किया गया है। अनेक शोधलेख, जो मुहूर्त्तसम्बन्धी अज्ञात रहस्य उद्घाटित करते हैं, इसमें आपको मिलेंगे।

यमघण्ट, क्रकच आदि कुयोग, सर्वार्थसिद्धि, द्विपुष्कर, त्रिपुष्कर आदि सुयोग तथा गृहप्रवेश, गृहारम्भादि में अपेक्षित वृषवास्तु, भूशयन तथा कलशशुद्धि–ज्ञापक आदि बीसों मौलिक कोष्ठक दिए गए हैं।

भारत के प्रसिद्ध 200 नगरों में मेषादि लग्नों की प्रारम्भ–समाप्ति जानने के लिए दो कोष्ठक दिए गए हैं। जिनसे मौखिक जोड़–घटाव द्वारा ही किसी भी दिन इन नगरों में मुहूर्त्तकालिक लग्न का प्रारम्भ–समाप्तिकाल वस्तुतः 30 सेकण्ड में ही जाना जा सकता है।

पुस्तक का डाकव्ययसहित मूल्य नीचे लिखे पते पर M.O. द्वारा अथवा "अभिजित् प्रकाशन" के नाम बनवाए गए D.D.(D.D. drawn in favour of 'Abhijit Prakashan') द्वारा भी भेजा जा सकता है। पुस्तकें रजिस्टर्ड डाक द्वारा भेजी जाती हैं। V.P.P. नहीं की जाती।

मूल्य Rs. 500/– + डाकव्यय Rs. 50/–

ध्यान दें– हमारी पुस्तकों को बेचने का अधिकार केवल "अभिजित् प्रकाशन" कोठी नं. 59, सेक्टर–6, **P.O.** पंचकूला को ही है, अन्य किसी भी विक्रेता को इन्हें बेचने का अधिकार नहीं है।

पता– श्रीमती वीना चतुर्वेदी, M.A., M.Phil., 'अभिजित् प्रकाशन,' कोठी नं. 59, सैक्टर–6,
P.O. पंचकूला (हरियाणा) – 134 109, Phone: 0172-2565 303